January to March 2025
E-Journal
Volume I, Issue XLIX

RNI No. – MPHIN/2013/60638
ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793
Scientific Journal Impact Factor- 8.054
ISO 9001:2015 - E2024049304
(Quality Management System)

Naveen Shodh Sansar

(An International Refereed/ Peer Review Research Journal)

नवीन शोध संसार

Editor - Ashish Narayan Sharma

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, **NEEMUCH** (M.P.) 458441, (INDIA)
Mob. 09617239102, **Email** : nssresearchjournal@gmail.com, **Website** www.nssresearchjournal.com

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Index

01. Index 02
02. Regional Editor Board / Editorial Advisory Board 08/09
03. Referee Board 10
04. Spokesperson 12
05. Effect of GST on Small and Micro Enterprises in Himachal Pradesh: A Study of South Zone 14
(Dr. Bhumander Singh Jaswal)
06. Rural Women's Development and Self-Help Groups (Narendra Singh Panwar) 20
07. Study of Ethno-Medicinal Plant's Use Increasing Immunity (Dr. Sarita Ghanghat) 23
08. Ethnobotany: Traditional herbal remedies used by Tribals of Dhar district, Madhya Pradesh, ... 27
India (Dr. Kamal Singh Alawa)
09. New Education Policy 2020 - Opportunities and Skill Building (Dr. Ruchi Rathore) 31
10. Issues and Prospects in Teacher Education Programme (Dr. Kalpana Singh) 33
11. Enhancing Environmental Education Through Pre-Service Teacher Training: 36
Strategies, Benefits, and the Role of Educators (Ranjana Sharma, Ramesh Chandra Nagda)
12. Comparison of Perceived Motivational Climate by Male and Female Intercollegiate Players 41
of Selected Team Games (Manish Mukherjee, Dr. Jai Shankar Yadav)
13. Chemical Study of Indigenous Plants for Respiratory Health of Nimar Region of 45
Madhya Pradesh (Vineeta Dawar, Dr. Pramod Pandit)
14. Culture of Madhya Pradesh : GOND TRIBAL ART (Dr. Vandana Sharma) 48
15. Characteristic Studies of 2D Materials PVA Augmented by Vanadium Oxide 51
(Shiwani Jat, Anubha Vijay Pandya)
16. Incubation Centers in Academic Institutions and Expectations of Students who Aspire to be 55
Entrepreneurs (Sunder L Dindugal)
17. Negative Impact of Rhesus Monkeys in some states of North India 60
(Dr. Neha Shrivastava, Mr. Vikas Shrivastava)
18. Effect of Over Consumption and Lack of Sugar on Human Being (Dr. Rajesh Masatkar) 63
19. Understanding Indian Popular Literature (Pr Minu Gidwani) 66
20. Exploration of Indian Medicinal Plant i.e, *Uraria Picta* in term of their extraction and 71
processing for pharmacological and toxicological studies (Mahesh Kumar Ahirwar, Asha Verma,
Santosh Ambhore, Laxmi Bareliya)
21. Advancing Green Catalysis: Pioneering Innovations and Sustainable Applications in 74
Chemistry (Dr. S.K. Udaipure)
22. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में बालिका नामांकन एक अध्ययन (जोधपुर जिले के संदर्भ में) 78
(डॉ. नीति चौहान)
23. महिला कथाकारों के उपन्यासों में मानवीयता (डॉ. राजेश श्रीवास) 84
24. महात्मा गाँधी और उनका दर्शन (डॉ. श्रीमती बिन्दू परस्ते) 87
25. भारतीय जनता पार्टी में धार जिले की जनजातीय महिला नेतृत्व की भूमिका 89
(दयाराम डावर, डॉ. ममता पाण्डेय, डॉ. सीमा सस्त्या)
26. कार्यक्षेत्र में तनाव प्रबंधन का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव (डॉ. आराधना श्रीवास) 92
27. भारतीय ज्ञान परम्परा में स्त्री विमर्श (श्रीमती अनीता अग्रवाल) 95
28. उषा प्रियवंदा के उपन्यासों में नारी जीवन के विविध आयाम (डॉ. अर्चना बापना) 98
29. रावजोधा की प्रमुख उपलब्धियाँ (डॉ. सुमित मेहता) 103
30. पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवैधानिक दृष्टिकोण (विजय लक्ष्मी जोशी) 105
31. दमोह जिले के पर्यटन स्थलों पर उपलब्ध संरचनात्मक सुविधाओं का अध्ययन 108
(ललित ताम्रकार, डॉ. आभा वार्ष्णेय)
32. भारत के पुनरुत्थान के लिए पर्यावरण संरक्षण पर भारतीय दृष्टीकोण एवं उसका समग्र अध्ययन 111
(गरीमा राठौर, महेन्द्र पटेल)
33. न्याय की देवी : भंगाराम माई (बस्तर के विशेष संदर्भ में) (डॉ. (श्रीमती) बसंत नाग, प्रो. एन. आर. साव) 114
34. शासकीय कन्या महाविद्यालय सीहोर में पाए जाने वाले इथनोमेडिसनल पौधों का अध्ययन 116
(डॉ. राजेश बकोरिया)

35. Civil-Military Relations: A Comparative Study of India and Pakistan 119
(Dr. Vinay Girotra, Dr. Ranjit Singh)
36. NEP 2020: Transforming Higher Education in India (Dr. Nayia Mahajan) 125
37. Legal Response to Mob Lynching: Effectiveness, Challenges, and Recommendations 129
(Sarvesh Kumar, Dr. Surya Sharma)
38. Innovative Materials for Environmental Remediation: A Comprehensive Review 132
(Dr. Rashmi Ahuja)
39. India's Role as a Mediator in the US-China Hegemony Conflict: A Comprehensive Study 137
(Kaustubh Nihal)
40. Impact of Monetary policy on Inflation in India (Anil Chouhan) 141
41. कृषि क्षेत्र के विकास में भूमि सुधार का योगदान (श्रीमती सुमन भवर, डॉ. नीमा चुण्डावत) 144
42. किशोरियों का साथियों के साथ समायोजन का अध्ययन (डॉ. ममता खपेडिया, रिंकी भाबर) 146
43. व्यवसायिक शिक्षा के क्षेत्र एवं रोजगार (नई शिक्षा नीति के सन्दर्भ में) (डॉ. पूजा तिवारी) 148
44. वेद, उपनिषद एवं भारतीय साहित्य में महिलाओं की भूमिका : श्रीमद्भगवद्गीता के विशेष संदर्भ में 150
(भावना तिवारी)
45. भारत में पर्यावरण सम्बन्धी कानून एवं नीतियों का अध्ययन (डॉ. नीतू) 154
46. जीव विज्ञान की उपलब्धि में इण्टरनेट की उपयोगिता का अध्ययन (डॉ. नाजिया कौशर, रेनुका शर्मा) 157
47. भारतीय इतिहास में भक्तिकालीन संत पीपाजी का जीवन एवं कृतित्व एक अध्ययन (डॉ. ओमप्रकाश गेहलोत) 159
48. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिलाषाओं का विश्लेषण 161
(राकेश कुमार जीनगर, डॉ. राखी शर्मा)
49. छठी शताब्दी ईसापूर्व में पर्यावरण चेतना का विकास (डॉ. नीलम सोनी) 164
50. पृथ्वी पर जलीय चक्र एवं जल चक्र की क्रिया–विधि का अध्ययन (नेहा शर्मा, डॉ. राजू शर्मा) 167
51. लिंगीय असमानता और चुनौतियां (डॉ. पिंकी सोमकुवर) 169
52. आधुनिक कृषि यंत्रीकरण में नवीन तकनिकी ज्ञान का अध्ययन मध्यप्रदेश के बड़वानी एवं धार जिले 173
के सन्दर्भ में (श्रीमती सुमन भवर, डॉ. नीमा चुण्डावत)
53. मुंशी प्रेमचन्द के लघु उपन्यास, निर्मला, प्रतिज्ञा का अनुशीलन (डॉ. अर्चना बापना) 175
54. Study of Effect of Temperature, Light intensity and Irradiation time during Decolouration 178
Process of Methyl Green Dye (Dr. David Swami)
55. Role of Judiciary in the Elimination of Juvenile Delinquency in the Present 180
Social Justice System (Vikram Singh Chandel)
56. डिजिटल मार्केटिंग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (अख) का उपयोग (डॉ. अनिल तौहेल) 184
57. नई शिक्षण क्षमताएँ: आधुनिक शिक्षा में नवाचार और तकनीकी एकीकरण (डॉ. अनिल तौहेल) 187
58. डाकघर की सुकन्या योजना का आलोचनात्मक मूल्यांकन इन्दौर जिले के सन्दर्भ में 191
(डॉ. जे.के. जैन, डॉ. पी.के. सन्से, विभा सोहरा)
59. स्वामी दयानंद सरस्वती के वैचारिक आंदोलन का भारतीय शिक्षा नीति पर प्रभाव 194
(हीरा लाल अहीर, डॉ. राखी शर्मा)
60. नवीकरणीय ऊर्जा : भविष्य की आवश्यकता (प्रो. रेणुका पाटीदार) 196
61. Digital Farming: New Perspective in Agricultural Development 200
(Dr. Kumud Dubey, Dr. Avinash Dube)
62. Digital Data Protection and Artificial Intelligence: A New Era in the World (Deepika Joshi) 202
63. The Future of Fintech and its Role in Streamlining the Commerce Experience 205
(Dr. Preeti Anand Udaipure)
64. Sustainable Marketing Strategies and Their Impact on Consumer Purchase Intentions 212
(Ritvik Roonwal)
65. फैशन ब्रांडों की बिक्री बढ़ाने में सोशल कॉमर्स की भूमिका (डॉ. रुक्मणि यादव,प्रो. प्रमोद यादव) 220
66. ई.एम.आई. चार्वाक दर्शन और मानव जीवन (सुभाषनगर, सागर के संदर्भ में) (प्रिया ठाकुर डॉ. सुनील साहू) 223
67. To Study the Dietary Pattern in the Second Trimester of Pregnancy 227
(Dr. Mamta Khapediya, Roshni Singh)

68. मध्य प्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था का वित्तीय मूल्यांकन (छतरपुर जिले की चयनित पंचायतों के विशेष संदर्भ में) (डॉ. संगीता कुम्भारे) 229
69. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लैंगिक असमानता : कारण, प्रभाव और समाधान (प्रो. आरती बारोठिया) 233
70. Water Quality Index of MansarovarPond at Dhar (M.P.) 236
(Dr. Dara Singh Waskel, Dr. Bhagwan Singh Patel)
71. Unemployment in India: A Qualitative Exploration of Challenges and Possibilities 238
(Dr. Vibha Nigam)
72. Financial Literacy and Portfolio Diversification: Evidence from India's Middle-Class 243
Investors (Dr. Preeti Anand Udaipure)
73. Study of Ambient Air Quality in Rewa City (M.P.) in Reference of Respirable Suspended 248
Particulate Matter (Rspm), Sulphur Di Oxide and Nitrogen Oxide. (Shrishti Singh, Dr. Atul Tiwari)
74. सिंदूर पौधे का महत्व एवं उपयोगिता (डॉ. मनीषा दंडवते) 252
75. Status, Cause and Resurrection of Rare, Endangered and Threatened Forest Tree 255
species of Madhya Pradesh (Dr. Dinesh Kumar Dahare)
76. Effect of Yoga as a Relaxation Technique on Sleep quality among School Students 258
Appearing Board Exam (Ms. Sushruta Sahu, Dr. Varsha Sharma)
77. प्राचीन भारतीय प्रतिरक्षा एवं सैन्य संगठन व युद्ध में नैतिक नियमों की उपयोगिता वर्तमान संदर्भ में 261
(डॉ. जे.के. संत)
78. 21वीं सदी का भारत और गांधीवाद (डॉ. नीरज कुमार) 263
79. English for a Specific Purpose: Essay Writing for Undergraduate Students in North India 269
(Dr. Omprakash Upadhyay)
80. सोनभद्र जिले में मनरेगा का क्रियान्वयन : एक सामाजिक अंकेक्षण (डॉ. गुंजन श्रीवास्तव) 271
81. Impact of Ayushman Bharat Scheme on Beneficiaries in Rewa, Madhya Pradesh 276
(Eshika Agrawal, Dr. Kumud Shrivastava)
82. भारतीय चित्रकला के वर्तमान आयाम व प्रो0 भगवती प्रकाश काम्बोज (कुलदीप कुमार,डॉ. निशा गुप्ता) 278
83. सरकारी कामकाज में हिंदी : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (डॉ. आराधना सिंह) 280
84. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के प्ररीक्षणार्थियो की उपलब्धि अभिप्रेरणा का सृजनात्मकता के संदर्भ में अध्ययन 283
(राधा रानी गौतम, डॉ. खेल शंकर व्यास)
85. मध्य प्रदेश में कृषि विकास की आधारभूत संरचना (फसल में नियोजन का अध्ययन) (डॉ. भावना भटनागर) 286
86. 'संचार के आधुनिक साधन मोबाईल' का युवाओं के सामाजीकरण पर प्रभाव का अध्ययन कसरावद शहर 289
के महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विशेष सन्दर्भ में (डॉ. उषा यादव)
87. The Role of Incubation Centers in Nurturing Startups: Fostering Innovation, Growth, ... 292
and Sustainability (Anchal Ramtake)
88. Between the Space and the Earth : A Study of 'Orbital' as Creative Non-Fiction 295
(Dr. Kiran Sitole)
89. राष्ट्र निर्माण एवं शैक्षिणिक समस्याएँ एक अध्ययन (श्रीमती चित्रमाला भिमटे) 297
90. राष्ट्रीय सेवा योजना का राष्ट्र निर्माण में योगदान का अध्ययन (डॉ. प्रदीप कुमार भिमटे) 299
91. मध्यप्रदेश के धार जिले में ग्रामीण महिला साक्षरता का वितरण प्रतिरूप : एक भौगोलिक अध्ययन 302
(डॉ. किरण मण्डलोई)
92. आचार्य विशुद्धसागर के साहित्य में अध्यात्म और दर्शन : एक समीक्षात्मक दृष्टिकोंण 305
(डॉ. रचना तैलंग, दिलीप कुमार जैन)
93. किशोरावस्था के विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव पर योग का प्रभाव (अनीता स्वामी, डॉ. उषा राठौर) 307
94. गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षा के विकास में शिक्षक की भूमिका (श्रीमति नीलम खासकलम) 312
95. Daisy's Quest for Self-Actualization: A Maslowian Analysis of Female Agency in 314
R.K. Narayan's *The Painter of Signs* (Manoj Bajaj, Dr. O. P. Tiwari)
96. The Role of International Organisations in Mediating Global Conflicts (Divya Chaudhary) 320
97. Chemical Composition and Nutrient Release Mechanisms of Organic Fertilizers 329
in Indian Soil Conditions (Dr. Salil Kumar Udaipure)

98. अथर्ववेद में गोधन चिन्तन (डॉ. नारायण सिंह राव, अंकिता शर्मा) 334
99. मेरठ परिक्षेत्र की वीरांगनाओं का आजादी के समर में योगदान (डॉ. सचिन कुमार) 337
100. जीएसटी का समीक्षात्मक अध्ययन (डॉ. आलोक कुमार यादव) 340
101. Sanskrti as A Treasure of Knowledge and Inspiration for the Youth (Dr. Seema Sharma) 343
102. Perceived Social Support and Optimism among Caregivers of Breast Cancer Patients 345
(Reena Salvi, Dr. Rashmi Singh)
103. इतिहास के आइने में भारतीय ज्ञान प्रणाली (डॉ. खुमेश सिंह ठाकुर, डॉ. जी. एल. मालवीय) 350
104. मध्य प्रदेश में उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा आर्थिक विकास में योगदान एक समग्र विश्लेषण मालवा और निमाड़ 354
क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में (डॉ. सुनिता तोतला, सपना सोनी)
105. चित्रा मुद्गल की कहानियों में स्त्री – जीवन के विभिन्न आयाम (प्रकाश वास्कले) 358
106. A Conceptual Exploration of E-Marketing Strategies: Implications for Organizational 362
Promotion and Consumer Response Analysis (Dr. Prashant Gurudev, Dr. Shaizal Batra)
107. The Critical Analysis of *the Forest of Enchantment* under the Ecological values of Indian 371
Knowledge System (Dr. Sehba Jafri)
108. वर्तमान परिदृश्य में टमाटर कृषि का भौगोलिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन (धार जिले के विशेष संदर्भ में) 374
(डॉ. रानी वास्केल)
109. The Seismic Growth of Atheism and Blasphemy in Nineteenth Century Literature 378
(Parth Pachar)
110. भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति एवं सामाजिक समस्याएँ : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (रुची गौतम) 383
111. भारत की 5 ट्रिलियन डालर अर्थव्यवस्था : चुनौतियाँ और रोडमैप (डॉ. विवेक कुमार पटेल श्री राजपाल यादव) 387
112. भारतीय संविधान में संशोधनों की आवश्यकता एवं प्रासंगिकता (डॉ. नियाज अहमद अन्सारी, राखी गुप्ता) 393
113. भीलवाड़ा जिले में वास्तु का तथा मानव का अन्त:सम्बन्ध का अध्ययन (डॉ. नीता सीकलीगर) 397
114. महेश्वर में सांस्कृतिक पर्यटन की संभावनाएँ: धरोहर संरक्षण और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के संदर्भ में 399
(श्रीमती कविता आर्य रामाणी, श्री पवन पाटीदार)
115. राजनीतिक दलों के माध्यम से भारत में चुनावी–जनसहभागिता की स्थिति (डॉ. डी.के.वर्मा) 403
116. A Comprehensive Study of the Retail Sector's Impact on India's GDP 406
(Mr. Sourabh Kudarya, Mr. Saurabh Awasthi, Ms. Vaishnavi Rajpoot)
117. A Comprehensive Study on the Functioning and Services of APMC with Reference to 412
Shajapur District (Nitya Sharma, Dr. Sunil Advani)
118. भारतेन्दुयुगीन राज्योन्मुख राष्ट्रीयता (प्रियंका शर्मा) 417
119. A Comparative Study on Male and Female Beneficiaries of Mudra Yojana: Growth, ... 422
Utilization, and Challenges in Shajapur District (Shubhangi Sharma, Dr. Sunil Advani)
120. कृषि आधारित उद्योग और ग्रामीण विकास का सुक्ष्म भौगोलिक अध्ययन (अनिल कुमार यादव, डॉ. ए.के. सिंह) 425
121. Koran-Crochet Lace: A Cultural Art and Its Sociological Relevance Among the Alavi Bohra 428
Community of Baroda (Ms. Tehzib Barodawala, Dr. Virendra Singh)
122. Persist with Purpose: The Path to True Happiness Through Pranayama and Habit Formation ... 433
(Dr. Pooja Dikshit Joshi, Ms. Manjari Nandy, Mr. Paul Thomas)
123. बड़े घर की बेटी पारिवारिक विघटन की कथा (रीता मौर्य) 436
124. चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य और उज्जैयिनी सामंत राव वेताल भट्ट का परिचय 438
(मंगल सिंह बुटड़ेसा, डॉ.हेमेन्द्र सिंह सारंग देवोत)
125. मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों का सांस्कृतिक भूगोल और जीवन शैली: एक समीक्षात्मक अध्ययन 442
(अनबर खान)
126. Free Legal Aid In India: A Critical Analysis (Dr. Anoop Kumar Singh, Anand Mishra) 449
127. The Impact of Nutrition and Physical Conditioning on Volleyball Performance: A 452
Comparative Study in Rajasthan (Dr. Santosh Lamba, Harish Chandra Patidar)
128. A Study to Examine How Education Influences Women's Political Participation in 455
Rongnihang (Tamhidi Terangpi)
129. बाठेड़ा रावत एकलिंगदास सारंगदेवोत का मेवाड़ इतिहास में योगदान 460
(शिल्पा मल्लिक, डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत)

130. A Five-Year Analysis of Changes in Vegetable Arrivals at the APMC in Shajapur District: 463
A Case Study of Potatoes, Onions and Garlic (Nitya Sharma, Dr. Sunil Advani)
131. Revival of Folktales and Culture Through Digital Media in Rajasthan 467
(Reena Dadhich, Dr. Lokesh Sharma)
132. खुदरा प्रबंधन और उपभोक्ता व्यवहार पर डिजिटल परिवर्तन का प्रभाव (गोवर्धन सिंह लोधी, डॉ. विक्रम सिंह चुण्डावत) .. 473
133. अनुसूचित जनजाति का आर्थिक शोषण के संरक्षणात्मक उपाय एवं उसका प्रभाव (म.प्र. के धार जिले 480
के विशेष संदर्भ में) (अरूणा गेहलोत, डॉ. पी. सी. बंसल)
134. The Challeges of Divorce & Remarriage in Hindu Law (Prof. (Dr.) Bijay Kumar Yadav) 483
135. Mental Hygiene of College & University Students: Challenges and Solutions 486
(Prof. (Dr.) Bijay Kumar Yadav)
136. कालिदास एवं वर्डज्वर्थ : पारस्परिक तुलना (डॉ. हिमांशु शर्मा) 491
137. An Analytical Study on the Impact of Pradhan Mantri Mudra Yojana on Small Enterprises 496
in Shajapur District (Shubhangi Sharma, Dr. Sunil Advani)
138. Birhor Tribe and Their Health Status (Dr. Ranjana Mishra) 499
139. India-Fiji Relations: The Indian Diaspora's Role on the Formation of Bilateral Relations 502
(Dr. Aaditya Swaroop)
140. शेखावाटी प्रदेश के ग्रामीण पर्यटन स्थलों का एक समीक्षात्मक अध्ययन (संजू बिशू) 510
141. A Study on the Health and Nutritional Benefits of Millets (Dr. Priyanka Devara) 514
142. Impact of Social Media Addiction on Social Withdrawal Among Adolescents 517
(Dr. Kirti Dashora, Priya Joe)
143. Survey Study Among the Students on the Environmental Awareness and Their 521
Perspective on Forest Conservation (Mrs. Seema Naik)
144. किशोरों में मद्यसेवन : एक चिन्ताजनक विषय (डॉ. सुनीता खण्डेलवाल) 523
145. An Exploratory Study of Hate Speech on Social Media: Causes, Consequences, and 525
Mitigation Strategies (Sarvesh Kumar)
146. नैतिक मूल्य और मानव जीवन (डॉ. सीमाबाला अवास्या) 536
147. भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित (डॉ. अरविन्द कुमार शर्मा) 539
148. A Study of Creativity Among Senior Secondary Students in Government and Private Schools 545
(Dr. Sheela Salvi, Surendra Malvi)
149. भारत में जाति और समुदाय की पहचान को बनाए रखने में विवाह की भूमिका (डॉ. योगेन्द्र जैन) 547
150. Leadership in Inclusive Education: Understanding the Perspectives of School Principals 550
(Dipteshwari Rathore, Dr. Surekha Jain)
151. E-Governance and Service Delivery: Transforming Citizen–Government Interface 557
(Dr. Kartikay Gadiya)
152. अनामिका के 'तृन धरि ओट' उपन्यास में पारिस्थितिक नारीवाद और सीता की नई व्याख्या 561
(राजविन्द्र कौर, डॉ.पूजा धमीजा)
153. मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक के ध्येय, उद्देश्य एवं मूल्यों का विवेचन (डॉ. तृप्ति शुक्ला) 565
154. Assessing Rural Sanitation Progress through Individual Household Latrine (IHHL) Implementation ... 568
: A Case Study of Four Villages in Sidhi distt. (M.P.) (Aman Singh Gaharwar, Dr. Kumud Shrivastava)
155. A Study of the Role of Indian Transportation System in the Economic Development of our 571
Country (Dr. Dharmesh Jain, Dr. Yogendra Singh Thakur, Dr. Suchitra Srivastava)
156. Artificial Intelligence and the Future of Legal Profession (Raj Mishra) 576
157. छत्तीसगढ़ की प्रचलित वैवाहिक रस्म : एक ऐतिहासिक अध्ययन (डॉ. महेश कुमार शुक्ला, सोनिया तिवारी) 580
158. डिजीटल भुगतान की दिशा में ई–वॉलेट प्रणाली की बढ़ती उपयोगिता का अध्ययन (डॉ. दीपिका यादव) 583
159. Digital Democracy in Central India: Social Media Usage Trends of MP's from 587
Madhya Pradesh (Dr. Priya Dave)
160. Ancient Indian Scripts: A Comprehensive Overview (Dr. Rajkumari Sudhir) 589
161. वागड़ क्षेत्र में पाषाण पर उत्कीर्ण लोक देवी–देवताओं एवं पूर्वजों की प्रतिमाएं (सीमा डामोर) 591
162. हिंदुओं में विवाह विच्छेद की उभरती प्रवृत्तियों का राजस्थान के विशेष संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 594
(पुष्पा लौहार, डॉ. मीता चौधरी)

163. Legal Rights of Individuals Under India's Data Protection Laws (Dr. Surendra Singh Baghel) 597
164. Study of Water Quality Analysis of Surface Water Bodies of Jabalpur City 600
(Yagyesh Narayan Shrivastava, Priyansh Sharma)
165. समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता में भारतीय ज्ञान परंपरा की भूमिका (श्रीमती रूचि पालीवाल) 605
166. वेदों में स्त्री माहात्म्य (डॉ. रागिनी श्रीवास्तव) 610
167. Tourism in Darbhanga District, Bihar: Problems and Sustainable Solutions for Regional 612
Development (Rahul Kumar Jha)
168. भारत में जनजातीय अधिकारों पर संवैधानिक विमर्श: एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन और समकालीन 615
प्रासंगिकता (राहुल रोत)
169. बाह्य देशों से प्राचीन एवं आरंभिक मध्यकालीन भारत का व्यापारिक सम्बन्ध (डॉ. सीमा गौतम) 621
170. सागर जिले में महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक विकास में महिला एवं बाल विकास विभाग की योजनाओं 624
का विश्लेषणात्मक अध्ययन (डॉ. मन्सूर खान, सुदर्शन केशरवानी)
171. ऋषभदेव की वर्तमान जनांकिकी एवं आधुनिकता का परिप्रेक्ष्य (डॉ. विनिता श्रीमाली, हिमांशु जैन) 628
172. भारतीय विदेश नीति : परम्परागत व समकालीन आयामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (डॉ. शोभा गौतम) 630
173. Access and Aspiration: Higher Education and The Class Divide in Professor Vikas Sharma's 633
Tomorrow and Tomorrow and Tomorrow (Sapna Singh)
174. Ethnophytological Magic Therapies Used by Tribal People of Sehore District of M.P. 638
(Mrs. Madhurima Tiwari)
175. महाराजा तुकोजीराव होल्कर द्वितीय का व्यक्तित्व : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (डॉ. मंजुला निंगवाल) 646
176. ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका (डॉ. ममता पंवार) 648
177. Intertwining Nature and Womanhood: An Ecofeminist Reading of Sara Joseph's 650
Translated Novels (Shema S Palathar, Dr. Anu Saxena)
178. Cultural Transitions and Aspirations: Analyzing the Identity of New Generation Indians 653
in the Works of Chetan Bhagat (Jibi Joseph, Dr. Anu Saxena)
179. पर्यावरण प्रबंधन में भौगोलिक सूचना प्रणाली का महत्व (डॉ. मोहन निमोले, डॉ. प्रमिला बघेल) 656
180. जन्मकुण्डली में न्यायाधीश बनने के योग – एक अध्ययन (महामहोपाध्याय डॉ. गोविन्द गन्धे, डॉ. कुलदीप श्रीवास्तव) 658
181. मध्य प्रदेश में उद्यमिता विकास और रोजगार सृजन: उज्जैन एवं रतलाम जिले का तुलनात्मक अध्ययन 662
(कु. पूजा झाला, डॉ. एल. एन. शर्मा)
182. Cyber Crime Against Women and Children in India (Dr. Anoop Kailasia) 668
183. Understanding the New Education Policy 2020 in the light of Swami Vivekananda's Concept 671
of Education: An Analysis (Dr. Akhilesh Mani Tripathi)
184. मध्य प्रदेश में कमजोर वर्ग की महिलाओं हेतु मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन 674
(सतना जिले के विशेष संदर्भ में) (डॉ. गायत्री मिश्रा, शहाना परवीन)
185. छत्तीसगढ़ राज्य के जांजगीर–चांपा जिले में ग्रामीण क्षेत्र की एनीमिक महिलाओं एवं सामान्य महिलाओं 678
के स्वास्थ्य पर किए गए व्यय का तुलनात्मक अध्ययन (सुनील साहू, डॉ. सुचि शर्मा)
186. मुस्लिम किशोरियों के समायोजन पर बालिका सशक्तिकरण के प्रभाव का अध्ययन (कुलदीप, डॉ. महेश कुमार तिवारी) 681
187. किशोर न्याय बालकों की देख रेख और संरक्षण अधिनियम (भूमिका छापिया) 683
188. Ayurvedic Management of Central Sensitization: Mechanistic Insights in Fibromyalgia Care 686
(Dr. Rajesh Yadav)
189. New Areas of Skill Development and Infrastructure in India (Sh. Harjeet Singh) 694
190. घरेलू हिंसा समाप्ति में शिक्षा की भूमिका का एक समाशास्त्रीय विश्लेषण (डॉ. अनिता टॉक) 699
191. मेवाड़ की लोक–संस्कृति और सांस्कृतिक पहचान: संरक्षण की आवश्यकता और चुनौतियाँ 701
(डिम्पल चावला, डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत)
192. समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों मेंचित्रित मानवीय संबंधों का विश्लेषण (डॉ. झेलम चंद्रकांत झेंडे) 706

Regional Editor Board - International & National

1. Dr. Manisha Thakur - Fulton College, Arizona State University, America.
2. Mr. Ashok Kumar - Employbility Operations Manager, Action Training Centre Ltd. London, U.K.
3. Ass. Prof. Beciu Silviu - Vice Dean (Management) Agriculture & Rural Development, UASVM, Bucharest, Romania.
4. Mr. Khgendra Prasad Subedi - Senior Psychologist, Public Service Commission, Central Office, Anamnagar, Kathmandu, Nepal.
5. Prof. Dr. G.C. Khimesara - Former Principal, Govt. PG College, Mandsaur (M.P.) India
6. Prof. Dr. Pramod Kr. Raghav - Research Guide, Jyoti Vidhyapeeth Women University, Jaipur (Raj.) India
7. Prof. Dr. Anoop Vyas - Former Dean, Commerce, Devi Ahilya University, Indore (India) India
8. Prof. Dr. P.P. Pandey - Dean, Commerce, Avadesh Pratapsingh University, Rewa (M.P.) India
9. Prof. Dr. Sanjay Bhayani - HOD, Business Management Deptt., Saurashtra University, Rajkot (Guj.) India
10. Prof. Dr. Pratap Rao Kadam - HOD, Commerce, Govt. Girls PG College, Khandwa (M.P.) India
11. Prof. Dr. B.S. Jhare - Professor, Commerce Deptt., Shri Shivaji College, Akola (Mh.) India
12. Prof. Dr. Sanjay Khare - Prof., Sociology, Govt. Auto. Girls PG Excellence College, Sagar (M.P.) India
13. Prof. Dr. R.P. Upadhayay - Exam Controller, Govt. Kamlaraje Girls Auto. PG College, Gwalior (M.P.) India
14. Prof. Dr. Pradeep Kr. Sharma - Professor, Govt. Hamidia Arts & Commerce College, Bhopal (M.P.) India
15. Prof. Akhilesh Jadhav - Prof., Physics, Govt. J. Yoganandan Chattisgarh College, Raipur (C.G.) India
16. Prof. Dr. Kamal Jain - Prof., Commerce, Govt. PG College, Khargone (M.P.) India
17. Prof. Dr. D.L. Khadse - Prof., Commerce, Dhanvate National College, Nagpur (Maharastra) India
18. Prof. Dr.Vandna Jain - Prof., Hindi, Govt. Kalidas Girls College, Ujjain (M.P.) India
19. Prof. Dr. Hardayal Ahirwar - Prof.,Economics, Govt. PG College, Shahdol (M.P.) India
20. Prof. Dr. Sharda Trivedi - Retd. Professor, Home Science, Indore (M.P.) India
21. Prof. Dr. Usha Shrivastav - HOD, Hindi Deptt., Acharya Institute of Graduate Study, Soldevanali, Bengaluru (Karnataka) India
22. Prof. Dr. G. P. Dawre - Professor, Commerce, Govt. College, Badwah (M.P.) India
23. Prof. Dr. H.K. Chouarsiya - Prof., Botany, T.N.V. College, Bhagalpur (Bihar) India
24. Prof. Dr. Vivek Patel - Prof., Commerce, Govt. College, Kotma, Distt., Anooppur (M.P.) India
25. Prof. Dr. Dinesh Kr. Chaudhary - Prof., Commerce, Rajmata Sindhiya Govt. Girls College, Chhindwara (M.P.) India
26. Prof. Dr. P.K. Mishra - Prof., Zoological, Govt. PG College, Betul (M.P.) India
27. Prof. Dr. Jitendra K. Sharma - Prof., Commerce, Maharishi Dayanand Uni. Centre, Palwal (Haryana) India
28. Prof. Dr. R. K. Gautam - Prof., Govt. Manjkuwar Bai Arts & Commerce College, Jabalpur (M.P.) India
29. Prof. Dr. Gayatri Vajpai - Professor, Hindi, Govt. Maharaja Autonomus College, Chhattarpur (M.P.) India
30. Prof. Dr. Avinash Shendare - HOD, Pragati Arts & Commerce College, Dombivali, Mumbai (Mh.) India
31. Prof. Dr. J.C. Mehta - Fr. HOD, Research Centre, Commerce, Devi Ahilya Uni., Indore (M.P.) India
32. Prof. Dr. B.S. Makkad - HOD, Research Centre Commerce, Vikram University, Ujjain (M.P.) India
33. Prof. Dr. P.P. Mishra - HOD, Maths, Chattrasal Govt. PG College, Panna (M.P.) India
34. Prof. Dr. Sunil Kumar Sikarwar - Professor, Chemistry, Govt. PG College, Jhabua (M.P.) India
35. Prof. Dr. K.L. Sahu - Professor, History, Govt. PG College, Narsinghpur (M.P.) India
36. Prof. Dr. Malini Johnson - Professor, Botany, Govt. PG College, Mahu (M.P.) India
37. Prof. Dr. Ravi Gaur - Asso. Professor, Mathematics, Gujarat University, Ahmedabad (Gujarat) India
38. Prof. Dr. Vishal Purohit - M.L.B. Govt. Girls PG College, Kila Miadan, Indore (M.P.) India

Editorial Advisory Board, INDIA

1. Prof. Dr. Narendra Shrivastav - Scientist , ISRO, Bengaluru (Karnataka) India
2. Prof. Dr. Aditya Lunawat - Director, Swami Vivekanand Career Guidance deptt. M.P. Higher Education, M.P. Govt., Bhopal (M.P.) India
3. Prof. Dr. Sanjay Jain - O.S.D., Additional Director Office, Bhopal (M.P.) India
4. Prof. Dr S.K. Joshi - Former Principal, Govt. Arts & Science College, Ratlam (M.P.) India
5. Prof. Dr. J.P.N. Pandey - Fr. Principal, Govt. Auto.Girls P.G. Excellence College, Sagar (M.P.) India
6. Prof. Dr. Sumitra Waskel - Principal, Govt. Girls P.G. College, Moti Tabela, Indore (M.P.) India
7. Prof. Dr. P.R. Chandelkar - Principal, Govt. Girls P.G. College, Chhindwara (M.P.) India
8. Prof. Dr. Mangal Mishra - Principal, Shri Cloth Market, Girls Commerce College, Indore (M.P.) India
9. Prof. Dr. R.K. Bhatt - Former Principal, Govt. Girls College, Narsinghpur (M.P.) India
10. Prof. Dr. Ashok Verma - Former HOD, Commerce (Dean) Devi Ahilya University, Indore (M.P.) India
11. Prof. Dr. Rakesh Dhand - HOD, Student Welfare Deptt., Vikram University, Ujjain (M.P.) India
12. Prof. Dr. Anil Shivani - HOD, Commerce /Management, Govt. Hamidiya Arts And Commerce Degree College, Bhopal (M.P.) India
13. Prof. Dr. PadamSingh Patel - HOD, Commerce Deptt., Govt. College, Mahidpur (M.P.) India
14. Prof. Dr. Manju Dubey - HOD (Dean), Home Science Deptt. Jiwaji University, Gwalior (M.P.) India
15. Prof. Dr. A.K. Choudhary - Professor, Psychology, Govt. Meera Girls College, Udiapur (Raj.) India
16. Prof. Dr. T. M. Khan - Principal, Govt. College, Dhamnod, Distt. Dhar (M.P.) India
17. Prof. Dr. Pradeep Singh Rao - Principal, Govt. College, Sailana, Distt. Ratlam (M.P.) India
18. Prof. Dr. K.K. Shrivastava - Professor, Eco., Vijaya Raje Govt. Girls P.G. College, Gwalior (M.P.) India
19. Prof. Dr. Kanta Alawa - Professor, Pol. Sci., S.B.N.Govt. P.G. College, Badwani (M.P.) India
20. Prof. Dr. S.C. Jain - Professor, Commerce, Govt. P.G. College, Jhabua (M.P.) India
21. Prof. Dr. Kishan Yadav - Asso. Professor, Research Centre Bundelkhand College, Jhasi (U.P.) India
22. Prof. Dr. B.R. Nalwaya - Chairman,Commerce Deptt.,Vikram University, Ujjain (M.P.) India
23. Prof. Dr. Purshottam Gautam - Dean, Commerce Deptt.,Devi Ahilya University, Indore (M.P.) India
24. Prof. Dr. Natwarlal Gupta - HOD, Commerce Deptt.,Devi Ahilya University, Indore (M.P.) India
25. Prof. Dr. S.C. Mehta - Former, Professor/HOD, Govt. Bhagat Singh P.G. College, Jaora (M.P.) India
26. Prof. Dr. A. K. Pandey - HOD, Economics Deptt., Govt. Girls College, Satna (M.P.)

Referee Board

Maths	-	(1)	Prof. Dr. V.K. Gupta, Director Vedic Maths - Research Centre, Ujjain (M.P.)
Physics	-	(1)	Prof. Dr. R.C. Dixit, Govt. Holkar Science College, Indore (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. Neeraj Dubey, Govt. Arts & Commerce College, Sagar (M.P.)
Computer Science	-	(1)	Prof. Dr. Umesh Kr. Singh, HOD, Computer Study Centre, Vikram University, Ujjain (M.P.)
Chemistry	-	(1)	Prof. Dr. Manmeet Kaur Makkad, Govt. Kalidas Girls College,Ujjain (M.P.)
Botany	-	(1)	Prof. Dr. Suchita Jain, Govt. Girls P.G. College, Kota (Raj.)
		(2)	Prof. Dr. Akhilesh Aayachi, Govt. Adarsh Science College, Jabalpur (M.P.)
		(3)	Prof. Dr. Jolly Garg,HOD, D.A.K. P.G. College, Moradabad (U.P.)
Life Science	-	(1)	Prof. Dr. Manjulata Sharma, M.S.J. Govt. College, Bharatpur (Raj.)
	-	(2)	Prof. Dr. Amrita Khatri, Mata Jijabai Govt. Girls P.G. College, Moti Tabela, Indore (M.P.)
Statitics	-	(1)	Prof. Dr. Ramesh Pandya, Govt. Arts - Commerce College, Ratlam (M.P.)
Military Science	-	(1)	Prof. Dr. Kailash Tyagi, Govt. Motilal Science College, Bhopal (M.P.)
Biology	-	(1)	Dr. Kanchan Dhingara, Govt. M.H. Home Science College, Jabalpur (M.P.)
Geology	-	(1)	Prof. Dr. R.S. Raghuvanshi, Govt. Motilal Science College, Bhopal (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. Suyesh Kumar, Govt. Adarsh College, Gwalior (M.P.)
Medical Science	-	(1)	Dr.H.G. Varudhkar, R.D. Gardi Medical College, Ujjain (M.P.)
Microbiology Sci.	-	(1)	Anurag D. Zaveri, Biocare Research (I) Pvt. Ltd., Ahmedabad (Gujarat)
			***** Commerce *****
Commerece	-	(1)	Prof. Dr. P.K. Jain, Govt. Hamidia College, Bhopal (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. Shailendra Bharal, Govt. Kalidas Girls College, Ujjain (M.P.)
		(3)	Prof. Dr. Laxman Parwal, Govt. Commerce College, Ratlam (M.P.)
		(4)	Prof. Naresh Kumar, NSCBM Govt. College, Hamirpur (H.P.)
			***** Management *****
Management	-	(1)	Prof. Dr. Anand Tiwari, Govt. Autonomus PG Girls Excellence College, Sagar (M.P.)
Human Resources	-	(1)	Prof. Dr. Harwinder Soni, Pacific Business School, Udaipur (Raj.)
Business Admin.	-	(1)	Prof. Dr. Kapildev Sharma, Govt. Girls P.G. College, Kota (Raj.)
		(2)	Dr. Kuldeep Agnihotri, Modern Group of Institutions, Indore (M.P.)
			***** Law *****
Law	-	(1)	Prof. Dr. S.N. Sharma, Principal, Govt. Madhav Law College, Ujjain (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. Narendra Kumar Jain, Principal, Shri Jawaharlal Nehru PG Law College, Mandsaur (M.P.)
		(3)	Prof. Lok Narayan Mishra, Govt. Law College, Rewa (M.P.)
		(4)	Dr. Bijay Kumar Yadav, Om Sterling Global University, Hisar (Haryana)
			***** Arts *****
Economics	-	(1)	Prof. Dr. P.C. Ranka, Sri Sitaram Jaju Govt. Girls P.G. College, Neemuch (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. J.P. Mishra, Govt. Maharaja Autonomus College, Chhattarpur (M.P.)
		(3)	Prof. Dr. Anjana Jain, M.L.B. Govt. Girls P.G. College, Kila Maidan, Indore (M.P.)
		(4)	Prof. Rakesh Kumar Gupta, Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur (C.G.)
Political Science	-	(1)	Prof. Dr. Ravindra Sohoni, Govt. P.G. College, Mandsaur (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. Anil Jain, Govt. Girls College, Ratlam (M.P.)
		(3)	Prof. Dr. Sulekha Mishra, Mankuwar Bai Govt. Arts & Commerce College, Jabalpur (M.P.)
Philosophy	-	(1)	Prof. Dr. Hemant Namdev, Govt. Madhav Arts, Commerce & Law College, Ujjain (M.P.)
Sociology	-	(1)	Prof. Dr. Uma Lavania, Govt. Girls College, Bina (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. H.L. Phulvare, Govt. P.G. College, Dhar (M.P.)
		(3)	Prof. Dr. Indira Burman, Govt. Home Science College, Hoshangabad (M.P.)

Hindi	-	(1)	Prof. Dr. Vandana Agnihotri, Chairperson, Devi Ahilya University, Indore (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. Kala Joshi , ABV Govt. Arts & Commerce College, Indore (M.P.)
		(3)	Prof. Dr. Chanda Talera Jain, M.J.B. Govt. Girls P.G. College, Indore (M.P.)
		(4)	Prof. Dr. Amit Shukla, Govt. Thakur Ranmatsingh College, Rewa (M.P.)
		(5)	Prof. Dr. Anchal Shrivastava, Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur (C.G.)
English	-	(1)	Prof. Dr. Ajay Bhargava, Govt. College, Badnagar (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. Manjari Agnihotri, Govt. Girls College, Sehore (M.P.)
Sanskrit	-	(1)	Prof. Dr. Bhawana Srivastava, Govt. Autonomus Maharani Laxmibai Girls P.G. College, Bhopal (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. Balkrishan Prajapati, Govt. P.G. College, Ganjbasauda, Distt. Vidisha (M.P.)
History	-	(1)	Prof. Dr. Naveen Gidiyan, Govt. Autonomus Girls P.G. Excellence College, Sagar (M.P.)
Geography	-	(1)	Prof. Dr. Rajendra Srivastava, Govt. College, Pipliya Mandi, Distt. Mandsaur (M.P.)
		(2)	Prof. Kajol Moitra, Dr. C.V. Raman University, Bilaspur (C.G.)
Psychology	-	(1)	Prof. Dr. Kamna Verma, Principal, Govt. Rajmata Sindhiya Girls P.G. College, Chhindwara (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. Saroj Kothari, Govt. Maharani Laxmibai Girls P.G. College, Indore (M.P.)
Drawing	-	(1)	Prof. Dr. Alpana Upadhyay, Govt. Madhav Arts-Commerce-Law College. Ujjain (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. Rekha Srivastava, Maharani Laxmibai Govt. Girls P.G. College, Bhopal (M.P.)
		(3)	Prof. Dr. Yatindera Mahobe, Govt. Girls College, Narsinghpur (M.P.)
Music/Dance	-	(1)	Prof. Dr. Bhawana Grover (Kathak),Swami Vivekanand Subharti University, Meerut (U.P.)
		(2)	Prof. Dr. Sripad Aronkar, Rajmata Sindhiya Govt. Girls College, Chhindwara (M.P.)
			***** Home Science *****
Diet/Nutrition	-	(1)	Prof.Dr. Pragati Desai, Govt. Maharani Laxmibai Girls P.G. College, Indore (M.P.)
Science		(2)	Prof. Madhu Goyal, Swami Keshavanand Home Science College, Bikaner (Raj.)
		(3)	Prof. Dr. Sandhya Verma, Govt. Arts & Commerce College, Raipur (Chhattisgarh)
Human	-	(1)	Prof. Dr. Meenakshi Mathur, HOD, Jainarayan Vyas University, Jodhpur (Raj.)
Development		(2)	Prof. Dr. Abha Tiwari, HOD, Research Centre, Rani Durgawati University, Jabalpur (M.P.)
Family Resource Management	-	(1)	Prof. Dr. Manju Sharma, Mata Jijabai Govt. Girls P.G. College, Moti Tabela, Indore (M.P.)
		(2)	Prof. Dr. Namrata Arora, Vansthali Vidhyapeeth (Raj.)
			***** Education *****
Education	-	(1)	Prof. Dr. Manorama Mathur, Mahindra College of Education, Bangluru (Karnataka)
		(2)	Prof. Dr. N.M.G. Mathur, Principal/Dean, Pacific EducationCollege, Udaipur (Raj.)
		(3)	Prof. Dr. Neena Aneja, Principal, A.S. College Of Education, Khanna (Punjab)
		(4)	Prof. Dr. Satish Gill, Shiv College of Education,Tigaon, Faridabad (Haryana)
		(5)	Prof. Dr. Mahesh Kumar Muchhal, Digambar Jain (P.G.) College, Baraut (U.P.)
			***** Architecture *****
Architecture	-	(1)	Prof. Kiran P. Shindey, Principal,School of Architecture,IPS Academy, Indore (M.P.)
			***** Physical Education *****
Physical Education	-	(1)	Prof. Dr. Joginder Singh, Physical Education, Pacific University, Udaipur (Raj.)
		(2)	Dr. Ramneek Jain, Associate Professor, Madhav University, Pindwara (Raj.)
		(3)	Dr. Seema Gurjar, Associate Professor, Pacific University, Udaipur (Raj.)
			***** Library Science *****
Library Science	-	(1)	Dr. Anil Sirothia, Govt. Maharaja College, Chhattarpur (M.P.)

Spokesperson's

1.	Prof. Dr. Davendra Rathore	-	Govt. P.G. College, Neemuch (M.P.)
2.	Prof. Smt. Vijaya Wadhwa	-	Govt. Girls P.G. College, Neemuch (M.P.)
3.	Dr. Surendra Shaktawat	-	Gyanodaya Institute of Management - Technology, Neemuch (M.P.)
4.	Prof. Dr. Devilal Ahir	-	Govt. College, Jawad, Distt. Neemuch (M.P.)
5.	Shri Ashish Dwivedi	-	Govt. College, Manasa, Distt. Neemuch (M.P.)
6.	Prof. Manoj Mahajan	-	Govt. College, Sonkach, Distt. Dewas (M.P.)
7.	Shri Umesh Sharma	-	Shree Sarvodaya Institute Of Professional Studies, Sarwaniya Maharaj, Jawad, Distt. Neemuch (M.P.)
8.	Prof. Dr. S.P. Panwar	-	Govt. P.G. College, Mandsaur (M.P.)
9.	Prof. Dr. Puralal Patidar	-	Govt. Girls College, Mandsaur (M.P.)
10.	Prof. Dr. Kshitij Purohit	-	Jain Arts, Commerce & Science College, Mandsaur (M.P.)
11.	Prof. Dr. N.K. Patidar	-	Govt. College, Pipliyamandi, Distt. Mandsaur (M.P.)
12.	Prof. Dr. Y.K. Mishra	-	Govt. Arts & Commerce College, Ratlam (M.P.)
13.	Prof. Dr. Suresh Kataria	-	Govt. Girls College, Ratlam (M.P.)
14.	Prof. Dr. Abhay Pathak	-	Govt. Commerce College, Ratlam (M.P.)
15.	Prof. Dr. Malsingh Chouhan	-	Govt. College, Sailana, Distt. Ratlam (M.P.)
16.	Prof. Dr. Gendalal Chouhan	-	Govt. Vikram College, Khachrod, Distt. Ujjain (M.P.)
17.	Prof. Dr. Prabhakar Mishra	-	Govt. College, Mahidpur, Distt. Ujjain (M.P.)
18.	Prof. Dr. Prakash Kumar Jain	-	Govt. Madhav Arts, Commerce & Law College, Ujjain (M.P.)
19.	Prof. Dr. Kamla Chauhan	-	Govt. Kalidas Girls College, Ujjain (M.P.)
20.	Prof. Abha Dixit	-	Govt. Girls P.G. College, Ujjain (M.P.)
21.	Prof. Dr. Pankaj Maheshwari	-	Govt. College, Tarana, Distt. Ujjain (M.P.)
22.	Prof. Dr. D.C. Rathi	-	Swami Vivekanand Career Gudiance Deptt., Higher Education Deptt., M.P. Govt., Indore (M.P.)
23.	Prof. Dr. Anita Gagrade	-	Govt. Holkar Science College, Indore (M.P.)
24.	Prof. Dr. Sanjay Pandit	-	Govt. M.J.B. Girls P.G. College, Moti Tabela, Indore (M.P.)
25.	Prof.Dr. Rambabu Gupta	-	Govt. Arts & Commerce College, Indore (M.P.)
26.	Prof. Dr. Anjana Saxena	-	Govt. Maharani Laxmibai Girls P.G. College, Indore (M.P.)
27.	Prof. Dr. Sonali Nargunde	-	Journalism & Mass Comm .Research Centre, D.A.V.V., Indore (M.P.)
28.	Prof. Dr. Bharti Joshi	-	Life Education Department, Devi Ahilya University, Indore (M.P.)
29.	Prof. Dr. M.D. Somani	-	Govt. M.J.B. Girls P.G. College, Moti Tabela, Indore (M.P.)
30.	Prof. Dr. Priti Bhatt	-	Govt. N.S.P. Science College, Indore (M.P.)
31.	Prof. Dr. Sanjay Prasad	-	Govt. College, Sanwer, Distt. Indore (M.P.)
32.	Prof. Dr. Meena Matkar	-	Suganidevi Girls College, Indore (M.P.)
33.	Prof. Dr. Mohan Waskel	-	Govt. College, Thandla Distt. Jhabua (M.P.)
34.	Prof. Dr. Nitin Sahariya	-	Govt. College, Kotma Distt. Anooppur (M.P.)
35.	Prof. Dr. Manju Rajoriya	-	Govt. Girls College, Dewas (M.P.)
36.	Prof. Dr. Shahjad Qureshi	-	Govt. New Arts & Science College, Mundi, Distt. Khandwa (M.P.)
37.	Prof. Dr. Shail Bala Sanghi	-	Maharani Lakshmibai Govt. Girls P.G. College, Bhopal (M.P.)
38.	Prof. Dr. Praveen Ojha	-	Shri Bhagwat Sahay Govt. P.G. College, Gwalior (M.P.)
39.	Prof. Dr. Omprakash Sharma	-	Govt. P.G. College, Sheopur (M.P.)
40.	Prof. Dr. S.K. Shrivastava	-	Govt. Vijayaraje Girls P.G. College, Gwalior (M.P.)
41.	Prof. Dr. Anoop Moghe	-	Govt. Kamlaraje Girls P.G. College, Gwalior (M.P.)
42.	Prof. Dr. Hemlata Chouhan	-	Govt. College, Badnagar (M.P.)
43.	Prof. Dr. Maheshchandra Gupta	-	Govt. P.G. College, Khargone (M.P.)
44.	Prof. Dr. Mangla Thakur	-	Govt. P.G. College, Badhwah, Distt. Khargone (M.P.)
45.	Prof. Dr. K.R. Kumhekar	-	Govt College, Sanawad, Distt. Khargone(M.P.)

46.	Prof. Dr. R.K. Yadav	-	Govt. Girls College, Khargone (M.P.)
47.	Prof. Dr. Asha Sakhi Gupta	-	Govt. P.G. College, Badwani (M.P.)
48.	Prof. Dr. Hemsingh Mandloi	-	Govt. P.G. College, Dhar (M.P.)
49.	Prof. Dr. Prabha Pandey	-	Govt. P.G. College, Mehar, Distt. Satna (M.P.)
50.	Prof. Dr. Rajesh Kumar	-	Govt. College, Amarpatan, Distt. Satna (M.P.)
51.	Prof. Dr. Ravendra singh Patel	-	Govt. P.G. College, Satna (M.P.)
52.	Prof. Dr. Manoharlal Gupta	-	Govt. P.G. College, Rajgarh, Biora (M.P.)
53.	Prof. Dr. Madhusudan Prakash	-	Govt. College, Ganjbasauda, Distt. Vidisha (M.P.)
54.	Prof. Dr. Yuwraj Shirvatava	-	Dr. C.V. Raman Univeristy, Bilaspur (C.G.)
55.	Prof. Dr. Sunil Vajpai	-	Govt. Tilak P.G. College, Katni (M.P.)
56.	Prof. Dr. B.S. Sisodiya	-	Govt. P.G. College, Dhar (M.P
57.	Prof. Dr. Shashi Prabha Jain	-	Govt. P.G. College, Agar-Malwa (M.P.)
58.	Prof. Dr. Niyaz Ansari	-	Govt. College, Sinhaval, Distt. Sidhi (M.P.)
59.	Prof. Dr. ArjunSingh Baghel	-	Govt. College, Harda (M.P.)
60.	Dr. Suresh Kumar Vimal	-	Govt. College, Bansadehi, Distt. Betul (M.P.)
61.	Prof. Dr. Amar Chand Jain	-	Govt. Arts & Commerce College, Sagar (M.P.)
62.	Prof. Dr. Rashmi Dubey	-	Govt. Autonomus Girls P.G. Excellence College, Sagar (M.P.)
63.	Prof. Dr. A.K. Jain	-	Govt. P.G. College, Bina, Distt. Sagar (M.P.)
64.	Prof. Dr. Sandhya Tikekar	-	Govt. Girls College, Bina, Distt. Sagar (M.P.)
65.	Prof. Dr. Rajiv Sharma	-	Govt. Narmada P.G. College, Hoshangabad (M.P.)
66.	Prof. Dr. Rashmi Srivastava	-	Govt. Home Science College, Hoshangabad (M.P.)
67.	Prof. Dr. Laxmikant Chandela	-	Govt. Autonomus P.G. College, Chhindwara (M.P.)
68.	Prof. Dr. Balram Singotiya	-	Govt. College, Saunsar, Distt. Chhindwara (M.P.)
69.	Prof. Dr. Vimmi Bahel	-	Govt. College, Kalapipal, Distt. Shajapur (M.P.)
70.	Dr. Aprajita Bhargava	-	R.D.Public School, Betul (M.P)
71.	Prof. Dr. Meenu Gajala Khan	-	Govt. College, Maksi, Distt. Shajapaur (M.P.)
72.	Prof. Dr. Pallavi Mishra	-	Govt. College, Mauganj Distt. Rewa (M.P.)
73.	Prof. Dr. N.P. Sharma	-	Govt. College, Datia (M.P.)
74.	Prof. Dr. Jaya Sharma	-	Govt. Girls College, Sehore (M.P.)
75.	Prof. Dr. Sunil Somwanshi	-	Govt. College, Nepanagar, Distt. Burhanpur (M.P.)
76.	Prof. Dr. Ishrat Khan	-	Govt. College, Raisen (M.P.)
77.	Prof. Dr. Kamlesh Singh Negi	-	Govt. P.G. College, Sehore (M.P.)
78.	Prof. Dr. Bhawana Thakur	-	Govt. College, Rehati, Distt. Sehore (M.P.)
79.	Prof. Dr. Keshavmani Sharma	-	Pandit Balkrishan Sharma New Govt. College, Shajapur (M.P.)
80.	Prof. Dr. Renu Rajesh	-	Govt. Nehru Leading College ,Ashok Nagar (M.P.)
81.	Prof. Dr. Avinash Dubey	-	Govt. P.G. College, Khandwa (M.P.)
82.	Prof. Dr. V.K. Dixit	-	Chhatrasal Govt. P.G. College, Panna (M.P.)
83.	Prof. Dr. Ram Awdesh Sharma	-	M.J.S. Govt. P.G. College, Bhind (M.P.)
84.	Prof. Dr. Manoj Kr. Agnihotri	-	Sarojini Naidu Govt. Girls P.G. College, Bhopal (M.P.)
85.	Prof. Dr. Sameer Kr. Shukla	-	Govt. Chandra Vijay College, Dhindori (M.P.)
86.	Prof. Dr. Anoop Parsai	-	Govt. J. Yoganand Chattisgarh P.G. College, Raipur (Chattisgarh)
87.	Prof. Dr. Anil Kumar Jain	-	Vardhaman Mahavir Open University, Kota (Rajasthan)
88.	Prof. Dr. Kavita Bhadiriya	-	Govt. Girls College, Barwani (M.P.)
89.	Prof. Dr. Archana Vishith	-	Govt. Rajrishi College, Alwar (Rajasthan)
90.	Prof. Dr. Kalpana Parikh	-	S.S.G. Parikh P.G. College, Udaipur (Rajasthan)
91.	Prof. Dr. Gajendra Siroha	-	Pacific University, Udaipur (Rajasthan)
92.	Prof. Dr. Krishna Pensia	-	Harish Anjana College, Chhotisadri, Distt. Pratapgarh (Rajasthan)
93.	Prof. Dr. Pradeep Singh	-	Central University Haryana, Mahendragarh (Haryana)
94.	Prof. Dr. Smriti Agarwal	-	Research Consultant, New Delhi

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Effect of GST on Small and Micro Enterprises in Himachal Pradesh: A Study of South Zone

Dr. Bhumander Singh Jaswal*

***Assistant Professor (Commerce) Govt. College, Bilaspur (H.P.) INDIA**

Abstract : The introduction of GST simplified the country's indirect tax structure, ensuring smooth commercial transactions across the country. In this system there are four GST types namely Integrated Goods and Services Tax (IGST), State Goods and Services Tax (SGST), Central Goods and Services Tax (CGST), and Union Territory Goods and Services Tax (UTGST). The government must make GST a landmark tax reform rather than a tax regime laden with fears and apprehensions. TheGST is help to avoid the tax on tax of production distribution chain of the business. By implementation of GST get many changes in the tax system.
Keyword: Indirect Tax, GST, Impact of GST, Cost Effect.

Introduction - The Central Government and the State Governments each levy their own taxes under the taxation system in India. A few small taxes are also collected by local governments like the municipality and other local governments. All the tax system is classified into two categories i.e. direct and indirect system. In 2017 a major change occurred in indirect tax system when GST implemented in India. The introduction of GST simplified the country's indirect tax structure, ensuring smooth commercial transactions across the country. In this system there are four GST types namely Integrated Goods and Services Tax (IGST), State Goods and Services Tax (SGST), Central Goods and Services Tax (CGST), and Union Territory Goods and Services Tax (UTGST). GST imposed by specific State governments on the intra-state trade and services or trade within the state is called SGST (State-GST). Here the revenues are earned by the state govt. due to SGST as the transaction occurred within the state. For example: suppose goods manufactured and sold within Himachal state then SGST will be collected by the Himachal state. In case of union territories such as Chandigarh, instead of state govt. the GST is collected by the central administration and is referred to as UGST (Union-GST). Intra-State transaction of goods and services, CGST (Central-GST) is levied by the central government. It is collected along with the SGST or UGST, and the revenues collected are distributed between the state and the central govt. For example: if the goods or services are provided within State Himachal, then along with SGST or UGST, CGST will also be collected. IGST: Integrated GST is collected on goods and services transactions between different states.

The government must make GST a landmark tax reform rather than a tax regime laden with fears and apprehensions. TheGST is help to avoid the tax on tax of production distribution chain of the business. It is also applied to imports or exports of goods and services. Here the SGST portion of the tax collected is given to the state, which is the consumer of the said goods or services. The IGST earned is then divided between the state and the central government.The impact of GST on retail sector is going to be positive from taxation and operation point of view. During the implementation stage of GST, the retailers faced some complexities because they were not fully aware about GST. Sometimes consumers feel higher price for goods and services after the implementation of GST. But in certain circumstances, they will also get benefits from GST. They were relieved from earlier overall tax burden. Whether the impact of GST is good or bad, its implementation in retail shops helps our society work in more efficient and cost-effective manner.

Literature Review

Abhijith and Meenu Suresh (2019) have concluded that most of the retailers are worrying about the fact that complex formalities and documentation coupled with vague or low clarity provisions has been adversely affected the retailers in their daily routine. Pre-GST is preferred to Post-GST in certain aspects constituting demand for products, services and compliance costs whereas Post-GST is dominated in transparency and tax credit availability. The study discovered that the implementation of GST created a bleak impact even though various wholesalers and retailers had benefitted from the same. Despite the idea is tenable and exemplary, still GST has mad e certain problems to the

business to operate. The major portion of the respondents have an opinion that GST can be revamped to an ideal system by eliminating technicality issues, diminishing tax rates, more clarity on provisions and avoiding needless complications. It can be concluded that GST is a scientific system of taxation but in India it needs lot of amendments, convenience e and rationalizations.

Sheela et al. (2019) observed that theGST is help to avoid the tax on tax of production distribution chain of the business. By implementation of GST get many changes in the tax system. GST system is an invoice matching by the way to ensure flow of return in various parts of country. By the GST return is use common language to filling the tax it so easy to understand to everyone in the country. GST increase the paying of tax payer and also increase the revenue level of the county. Now most of the retailer is get awareness about GST. The study also suggested that the GST is good to their business by avoiding the black money it makes digital India it benefits for the future business retailers. GST is improving step by step in future period cashless transaction are realized than the black money fully destroy in our economy.

Priyanka Sharma (2020) observed that the government is trying to smoothen the road to GST. It is important to take a leaf from global economies that have implemented GST (like France was the first country to implement GST in 1954) and who overcame the teething troubles to experience the advantage of having a unified tax system and easy input credits. GST will make taxation easy for industries. Customer will also be benefited as the overall tax burden on goods and services are reduced. The government must make GST a landmark tax reform rather than a tax regime laden with fears and apprehensions.

P. Sarkar and S. Rani (2020) have observed that theIndian business situation producing industry is the assuming critical job, in business world. Assembling part is financial development of country. At the point when the nation centre's on assembling industry, the nation conquers mechanical hindrances. In-spite of the fact that the positive effects are reliant on an unbiased and sound plan of the GST, adjusting the clashing interests of different partners, full political duty for a major expense change with a protected alteration, the switchover to an impeccable GST has been a major jump in the backhanded tax assessment framework and furthermore give another driving force to India's financial change.

P. Varalakshmi and K. Santha Kumari (2021) have exhibited that the **c**ustomers may be pleased about the reduction in the amount of payments they are paying now in order to please their taste buds and hotel and restaurant owners can celebrate because they can now claim input tax credits easily. The restaurant industry has been burdened with high and multiple taxations. However, liquor should be included in GST. Exempting it defeats the very purpose of bringing in a uniform single tax structure. This is neither beneficial for 'ease of doing business' nor for the customers, "Everybody likes consolidation of taxes as it leads to greater transparency and will help guests and buyers understand the overall costs. Overall, GST should be positive for the sector assuming that the multiplicity of taxes will go away in food and beverages.

Anchal Ojha et al. (2022) has observed that the tax policies play a vital role in the economy as a source of money. With the new online policies of Good and services tax, it will break all barriers between central and state government and help in boost the economy. The journey of indirect taxation is momentous. Few years ago the concept of GST was introduced in India but the bill was not passed; now the enforcement of GST has done under the guidance of honorable Prime Minister Mr. NarendraModi. After this dynamic step, all the sectors in economy have clearer and transparent taxation system as all the process is online. It has reduced the hidden and embedded taxes. The Central and State Government's levies havebeen unified with the introduction of GST. The drawbacks of previous taxes have been overcome by GST as it removed the cascading effect of tax and multiple taxes to boost up the economy. With the implementation of GST, the difficulty of filing indirect taxes has decreased. Doing business at National and International level is easier now because of GST.

S. Bhuvaneswari and Deepak. M (2022) suggested that the Government has to create awareness regarding rules, regulations, and compliances of GST by arranging workshops, seminars, conferences to educate proprietors of SSIs, the government of India should have to increase threshold limit from 20 lakhs to 1.5 crores hence that reduces tax burden to small businesses, the government has to take initiative measures to reduce compliance cost. This will help full to lower their product prices. The study also suggested that the GST is IT backed infrastructure that needs necessary training to the employees hence government should provide necessary training facility to employees and proprietors of SSIs. The business is in different states needs separate registration may increases compliance cost hence one registration should be there for entire business. That encourages business to diverse their business activities beyond their states. The study also revealed that exemption should be given to certain products of small industries in order encourage small traders in the country.

Kanimozhi (2023) has analyzed that the GST is one of the most significant tax reforms since independence. It has consolidated multiple indirect taxes into a single statute in order to achieve consistency in the form of "One Nation, One Tax." However, in order for it to be acceptable to everyone, it is critical that everyone's representation be taken into account. It should take into account the issues that MSMEs face and make it easier for them to accept it as a normal business element rather than a requirement for compliance. To obtain a broadly acknowledged

conclusion, the impact of GST on the economy must be examined in its entirety. The introduction of GST simplified the country's indirect tax structure, ensuring smooth commercial transactions across the country and beyond the world.

Rajeev Kumar Gupta (2023) conclusion has been drawn and has found that Direct tax collection is showing increasing trend. ii. In comparison to direct tax indirect tax collection is showing decreasing trend. iii. Direct tax to GDP ratio is also showing increasing trend. iv. Indirect tax to GDP ratio is not showing stationary trend but it was found that indirect tax contribution is continuously decreasing in trend total tax collection during the study period. v. Total tax collection to GDP ratio is also showing increasing trend.

M. Senthil kumar (2023) has observed that implementation of GST in retail shops affects our everyday lives in different ways. Implementation of GST is one of the best decisions taken by the Indian government. The impact of GST on retail sector is going to be positive from taxation and operation point of view. During the implementation stage of GST, the retailers faced some complexities because they were not fully aware about GST. Sometimes consumers feel higher price for goods and services after the implementation of GST. But in certain circumstances, they will also get benefits from GST. They were relieved from earlier overall tax burden. Whether the impact of GST is good or bad, its implementation in retail shops helps our society work in more efficient and cost-effective manner.

K. Rithu Varjitha (2023) has concluded that the tourism has been an important aspect in Agra since many decades' not only domestic but also international tourists visits the destination for its spiritual significance. The introduction of GST rates in tourism and hotel industry was initially from the company owners and it effects in understanding its implementation in various tourism companies in Agra, a city in the state of UP. The sector May benefit in the form of lower tax rates which should help in attracting more tourists in India. Since Agra is one among the leading tourist destinations in India thanks to its pilgrimage and spiritual significance, the taxes should be maintained intrinsically to chop down the value of the services. The rates should be maintained simultaneously in order that the tourist count doesn't fall and therefore the destination doesn't decline. GST may be a glimmer of hope for the Hotel and Tourism Industry if we will keep the GST rate between 10 to fifteen. GST might herald its uniformity of tax. To combat such issues steps should be taken not only by the government but also the host community and tourists to guard the rates of the services within the destination.

Deepti Daga and P. Ganesh Anand (2024) has observed that existing enterprises, GST has simplified the tax structure, unified the market hence improved the overall operational efficiencies of small, so far the unorganized small enterprises were growing fast than the organized ones because of the tax avoidance, with GST in effect, it has made the taxation system has got transparent thus making the entities liable for tax payment. For a new entrepreneur, the application of GST, made the registration for taxation easy, relieved them from previous VAT registration. The Government has implemented GST with a view of long-term better prospect for the country by various aspects. The goods and services tax (GST) makes the tax system easy and thus contributing in the growth of the country. The Government applied GST by summing up of various taxes under CGST & SGST, transparent taxation, reduced raw material cost, to bring down the cost of goods and services and the ease of doing business in India. Initially there was huge chaos regarding the enactment of GST, but many successful businesspersons supported it and considered it as a boon for the long-term development of the nation. GST being the big step of Government of India to simplify the previous tax system has both positive and negative impact on business regulations of Micro, Medium & Small Enterprises.

Objectives of the Study: The objectives of the study will be as under:

1. To examine the impact of GST on Inflationary cost, income, documentary process, manual work etc.
2. To analyses the qualification-wise impact of GST on Income of entrepreneurs business.

Methodology adopted: The study primarily based on the primary data which is collected from 500 entrepreneurs selected randomly is base for the analysis. A questionnaire was developed exclusively for the purpose of collecting the primary data, particularly to examine the impact of GST oncompliance factors. Consistent with the objective of the study, different techniques like the simple percentage, mean, standard deviation, skewness, kurtosis and chi-square have been used for the analysis of the collected data.

Results and Discussion

Impact of GST (Compliance Factors): It is evident from the table-1 that the mean score of the respondent views regarding the impact of the GST on inflationary cost is more the standard average score. The variation in their opinions is recorded at 1.1934, while skewness is -0.591. It depicts that their opinion is distributed more towards the higher side to agree and strongly agree. Further, the calculated value of kurtosis reveals that the distribution is scattered towards the higer side of the mean score which supports the above opinion. The X^2 test of goodness of fit is significant at 1 percent level of significance; so null hypothesis is rejected. It reveals that the opinions of the respondents are not equally distributed. Thus, it can be concluded that the major chunk of the respondents have opined that GST successful in reduction the inflation cost in the economy, around 24.8% of the businessman's considers that GST has failed in reducing the inflation.

It is revealed that the mean of the entrepreneurs views regarding the impact of the GST on income is more than

the standard average score. The standard deviation is 1.1627, while skewness is -0.443. Thus, the major chunk of the respondents (56.4.%) either agrees or strongly agrees with the statement that the GST helps increase the income. The calculated value of kurtosis also supports the above opinion. Further, the value of X^2 when compared with the table value is at 1 percent level of significance. It shows that the opinions of the respondents are not equally distributed. Thus, the above analysis reveals that the GST has helped in increasing the income of the businessman's of Himachal Pradesh.

It is inferred from the table that the mean score of the businessman's views regarding the Introduction of GST has increased the documentary processis above the standard average score. The standard deviation is 1.3144. Further, the negative value of skewness implies that an overwhelming majority of the respondents either agree or strongly agree to the statement that the implementation of GST has increased the documentary work in the state. The test of goodness of fit also indicates significant difference in the distribution of opinions of these respondents with maximum concentration towards the higher side on the five point scale. Thus 55.8% of the responded answered that GST has increased in their documentation as for each transaction they need proofreading.

It is exhibited that the mean score is 3.566 and it is above the average mean score (3). It depicts that the majority opinion is divided between agree and strongly agree responses. The standard deviation is 1.3570 and negative value of skewness is (-0.812), which also point out that the majority of opinions of the respondents are highly concentrated towards the higher side on the five point scale. The X^2 test of goodness of fit also supports the above findings as there is significant difference in the distribution of opinions of the respondents. Thus, it is clear from the above statistical analysis that the GST has made it mandatory to provide bill to the customers.

It is inferred that the mean of the responses of entrepreneurs relating to the impact of the GST on reduction of manual work is higher than the standard average mean score. It reveals that the majority of the respondents agree with the statement that the reduced the manual work by providing the online registration in the filing process of tax. The value of skewness also supports that the opinion of the businessmen is tilted towards the higher side of the mean score. The calculated value of kurtosis is 1.127 which depicts that the distribution of responses is platy kurtic. The highly significant value of c2 also supports the fact that the opinion is not equally distributed. Thus, it is clear from the above statistical analysis that a large number of respondents, about 55.02 percent are of the opinion that the introduction of online filling of tax has reduced their manual work as they need to submit the framed form with required information in the state.

Table 1 (See last page)

Educational Level and Impact of GST on Income: The total sample of 500 businessmen is categorized into four different education groups, matric, 10+2, graduate and post graduate or above. It is exhibited from Table 2 and Figure-1 that the mean scores of the respondents of each qualification level is more than the mean standard score. It infers that an overwhelming majority of the respondents either agree or strongly agree to the statement that the GST has increased the income of the respondents and their business in the state.

Table 2 & Fig. (See last page)

The standard deviation is recorded more in the respondents of the graduate group and the lowest in the matric group. The value of skewness of the aggregate opinion of the respondents is negative (-0.443) and it ranges between -0.431 to -0.819 qualification wise. It also indicates that the responses are highly concentrated towards the upper side of the standard mean score. While applying the test of goodness of fit, it depicts significant difference in the distribution of opinion of the respondents. Thus, it is clear from the above statistical analysis that a large chunk of the respondents opine that the GST has helped to increase the income of the entrepreneurs and their enterprise in the state.

Conclusion : The major portion of the respondents have an opinion that GST can be revamped to an ideal impact on cost reduction, increasing income of retailors, GST increase easy way for implementation of documentary process and reduced manual work. After implementation of GST it reduces technicality issues, diminishing tax rates, more clarity on provisions and avoiding needless complications. It can be concluded that GST is a scientific system of taxation but in India it needs some amendments, convenience e and rationalizations.

References:-

1. Abhijith and Meenu Suresh, "A Study on Impact and Influence of GST on Retailers in Kerala With Special Reference to Kottayam District," *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR),"* Vol. 6, No. 6, June 2019, pp. 171-177.
2. Sheela and R. Murugesan, A. Subangini Devi, "A Empirical Research on Retailer Perception on GST in Vellore District," *International Journal of Innovative Technology and Exploring Engineering,"* Vol. 9, Issue 2S3, December 2019, pp. 419-421.
3. Priyanka Sharma, "Impact of Goods and Services Tax (GST) on Indian Economy," *Turkish Journal of Computer and Mathematics Education,"* Vol. 11, No. 2, August 2020, pp. 803-807.
4. PurnimaSarkar and Sangeeta Rani, "The Impact of GST on Manufacturing Sector in India," *Journal of Engineering Science*," Vol. 11, No. 7, July 2020, pp. 560-565.
5. SahooAditya and Nayak, YajnyaDutta, "Impact of GST

on Hotel Industry- A Study in Bhubaneswar City in Odisha," International Journal of Innovative Research in Engineering & Management (IJIREM) 2021," Vol. 8, No. 3, May 2021, pp. 8-11.

6. AnchalOjha, IshikaChouriya and NileshAnute, "Impact of Indirect Tax Reforms in India," *Journal of Accounting Research, Business and Finance Management,"* Vol.3, No. 2, July-December 2022, pp. 1-8.
7. S. Bhuvaneswari, Deepak. M, "Impact of GST among Small Scale Business," *International Journal of Research Publication and Reviews,"* Vol. 3, No.12, December 2022, pp. 425-429.
8. Kanimozhi, "A Study on Impact of GST on MSME in India," *International Journal of Research Publication and Reviews,"* Vol. 4, No.2, February 2023, pp. 859-864.
9. Rajeev Kumar Gupta, "Comparative Study of Direct and Indirect Tax Collection in India (from 2000-2001 to 2018-2019)," *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research,"* Vol. 10, No.2, Feb. 2023, pp. 490-495.
10. M. Senthilkumar, "Impact of GST in Retail Shops at Urban Areas," *International Journal of Novel Research and Development,"* Vol. 8, No.8, August 2023, pp. 790-792.
11. K. RithuVarjitha, "Impact of GST on Tourism Sector," *American Journal of Engineering Research (AJER),"* Vol. 12, No.7, July 2023, pp. 25-34.
12. DeeptiDaga and P. Ganesh Anand, "Impact of GST on Small Business Enterprises," *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research*," Vol. 11, No.1, January 2024, pp. 432-434.

Table 1: Respondents Views Regarding Impact of GST on Compliance Factors

Responses	Nature of Response					Total	Mean	S.D.	SKW	Kurt.	X^2	P. Value
	Strongly agree	Agree	Undec -ided	Disagree	Strongly agree							
Inflationary cost reduce due to GST	84(16.8)	215(43.0)	77(15.4)	81(16.2)	43(8.6)	500(100)	3.432	1.1934	-0.591	-0.641	176.20	<0.01
GST Effect the Income	100(20.0)	182(36.4)	101(20.2)	88(17.6)	29(5.8)	500(100)	3.472	1.1627	-0.443	-0732	119.10	<0.01
Implementation of GST increase the Documentary Process	85(17.0)	194(38.8)	83(16.6)	60(12.0)	78(15.6)	500(100)	3.296	1.3144	-0.521	-0911	114.34	<0.01
GST Made it Mandatory to Provide bills to the Customers	134(26.8)	205(41.0)	45(9.0)	42(8.4)	74(14.8)	500(100)	3.566	1.3570	-0.812	-0.602	192.46	<0.01
Implementations of GST Reduces the Manual works	98(19.6)	178(35.6)	99(19.8)	41(8.2)	84(16.8)	500(100)	3.330	1.3374	-0.549	-0.861	98.26	<0.01

Note: Figures in parenthesis indicate the percentages of the row total
Source: Various Questionnaires from Respondents.

Table 2: Educational Level and Impact of GST on Income

Educational Level	Nature of Response					Total	Mean	σ	SKW	X^2	P. Value
	S.A.	A.	UD.	D.	S.D.						
Matric	5(10.4)	16(33.3)	10(20.9)	15(31.3)	2(4.1)	48(100)	3.708	1.091	-0.819	32.76	<0.01
10+2	12(7.9)	77(50.7)	21(13.8)	25(16.4)	17(11.2)	152(100)	3.520	1.139	-0.471	76.55	<0.01
Graduation	47(21.0)	92(41.1)	31(13.8)	34(15.2)	20(8.9)	224(100)	3.420	1.199	-0.431	154.63	<0.01
PG & Above	20(26.3)	30(39.5)	15(19.8)	7(9.2)	4(5.3)	76(100)	3.382	1.143	-0.196	29.20	<0.01
Total	84(16.8)	215(43.0)	77(15.4)	81(16.2)	43(8.6)	500(100)	3.472	1.163	-0.443	119.10	<0.01

Note: Figures in parenthesis indicate the percentages of the row total
Source: Various Questionnaires from Respondents

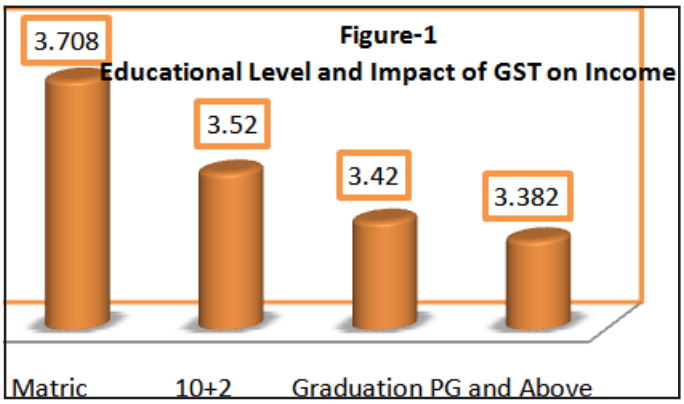

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Rural Women's Development and Self-Help Groups

Narendra Singh Panwar*

***Research Scholar (Sociology) Mohanlal Sukhadia University, Udaipur (Raj.) INDIA**

Introduction - Self-help groups play a crucial role in the development and upliftment of rural women. In India, several government and non-government organizations are organizing women into self-help groups to make them self-reliant and economically empowered by providing various employment opportunities and skill training. These groups have played a significant role in making women financially capable. During the COVID-19 pandemic, when millions of people lost their jobs, self-help groups in India carried out commendable work. While cities witnessed mass migrations and rising unemployment, self-help groups contributed significantly by making masks, distributing sanitizers, and engaging in other essential activities to combat the pandemic. Their efforts proved highly effective during COVID-19, and various global organizations also appreciated the contributions of India's self-help groups during this crisis.

In July 2018, the Prime Minister of India, Shri Narendra Modi, interacted with over 10 million women associated with self-help groups through an app. During the interaction, the Prime Minister emphasized the vital role of women in the development of domestic industries, stating that progress cannot be envisioned without their participation. He mentioned that around 5 million self-help groups are operating in India, and by inspiring and encouraging them, the vision of a developed India can be realized.

A self-help group is a collective of individuals formed to achieve a specific goal. These small groups are created to support each other. The members voluntarily join without dependency on external support, as the name suggests**- Self-Help-**which means assisting themselves. Such groups typically consist of 10 to 20 members, all belonging to a common social background. Women's self-help groups include only women as members. Each member contributes a fixed amount monthly, which is collected and recorded by designated office-bearers in a register. A savings account is opened in the group's name, managed by its office-bearers. Banks also provide loans to these groups at an interest rate, further assisting them in their economic activities.

Origin of Self-Help Groups: The origin of self-help groups in India dates back to the 1970s. In 1972, Dr. Ela Bhatt founded the Self-Employed Women's Association (SEWA), which played a significant role in poverty eradication, women's employment, and women's empowerment. However, the self-help group movement became more organized and systematic under the leadership of Bangladesh's Nobel Prize winner, Muhammad Yunus. His working model influenced the entire world and achieved remarkable success in inculcating the habit of saving among people.

Objectives of Self-Help Groups:

1. To uplift the poor in rural India who have a strong will to eradicate their poverty and to develop their potential to achieve progress.
2. To improve the living standards of poor women and families in rural societies while fostering a sense of social solidarity, enabling them to grow as a strong organization and awaken their true potential.
3. To spread awareness among women, enhance their skills, and strengthen women's empowerment.
4. To provide employment opportunities to rural poor families at the local level, ensuring the fulfillment of their basic needs.

Members and Formation Process of Self-Help Groups:

1. Extremely poor women or those below the poverty line are included in these groups.
2. The age of women joining the group should be between 18 and 65 years.
3. Members of the group contribute a fixed amount every month, so it is essential that members are capable of depositing the agreed minimum amount regularly.
4. Women willing to engage in collective work when required should be included in the group.
5. Members must attend regular group meetings.
6. The group should consist of 10 to 20 female members.
7. The activities assigned to self-help groups are categorized as priority tasks.

Rules and Conditions of Self-Help Groups:

1. The group should have been actively operating for at least six months.
2. Members should have been consistently saving their

monthly contributions from their available resources.
3. The group should have provided loans to its members from the accumulated savings, maintaining complete records of transactions, including details of loans and monthly savings, in a register.
4. Regular weekly or monthly meetings should be held, with meeting details recorded in a register.
5. The group should operate democratically, ensuring the participation of all members, with everyone's opinions being considered.
6. The primary objective of the group should be mutual support and self-employment rather than merely obtaining loans from banks.
7. Banks evaluate these aspects carefully before granting loans. The bank officer or branch manager must be satisfied that the group genuinely aims at self-employment and mutual assistance. A rating table on the application form determines eligibility based on a specific score.
8. All members should belong to the same background, meaning they should be engaged in the same type of occupation. For example, if the group is involved in selling milk, all members should be engaged in the dairy business; if the group is focused on tailoring, all members should be engaged in tailoring work.

Regular Group Meetings:

1. Determining the weekly savings amount for members.
2. Deciding the time and place for weekly meetings.
3. Taking the initiative for collective organizational activities.
4. Making collective decisions and implementing them.
5. Informing group members about the five key principles (Panchsutra).
6. The group is managed by a president, a treasurer, and a secretary.

To understand the functioning and operational process of women's self-help groups, we are studying a case from Udaipur district, where institutions like Seva Mandir Udaipur and Rajasthan Bal Kalyan Samiti Jhadol are running self-help groups. With institutional support, women from Kaliwas village in Girwa Tehsil of Udaipur district have become self-reliant through self-help groups by engaging in activities such as agriculture, horticulture, and tailoring. By saving money and contributing to their family's livelihood, they have emerged as exemplary role models.

Case Study 1

Pipliya Village Development Group

Village: Kaliwas
Tehsil: Girwa
District: Udaipur
Group Formation: September 2021
Key Activities: Development of irrigation and drinking water sources, Construction of a Chekdem, tank, and well's
Supporting Organization: Seva Mandir, Udaipur

Pipliya is a village group under the Kaliwas Gram Panchayat in the Girwa Panchayat Samiti of Udaipur district. In September 2021, a Village Development Committee was formed here through Seva Mandir. Due to awareness created by this committee, an anicut, a well, and a tank were constructed with the support of Seva Mandir. In March 2022, the village faced an issue where debris would fall into the well while drawing water using a motor. The Village Development Committee held a meeting and, with collective agreement, decided that the beneficiary families using the water source would contribute small amounts to clear the debris. During this process, 10 financially capable families collected Rs 1,000 in the name of the women, hired an external vehicle, and removed the debris from the well. Through the unity and organization of the group, the drinking water problem was resolved.

Conversations with rural women revealed that, two years ago, there was a severe drinking water crisis in the village. Women had to walk 2 to 3 kilometers to fetch water. With the village group's efforts and the construction of the anicut, the issue of drinking water for agriculture and livestock was resolved. From July to December, water was available within 1 to 2 kilometers. However, from January to June, people had to walk 4 to 5 kilometers to fetch water, which took 2 to 4 hours.

Previously, agriculture was entirely dependent on rainfall, and in years of poor rainfall, the problems of farming, drinking water, and livestock rearing became severe. Earlier, farmers only cultivated maize, but with the availability of wells, anicuts, and other facilities, they started growing cash crops and vegetables, leading to an increase in household income and an improvement in their economic condition. Thus, the inspirational efforts of the Women's Self-Help Group not only solved the drinking water crisis but also boosted agricultural productivity and enhanced household income.

Personal Study 2

Respondent's Name: Dharmi Gameti
Age: 50 years
Husband's Name: Pratap Bhil
Occupation: Agriculture
Village: Popalti
Tehsil: Girwa
District: Udaipur
Group Formation Year: 2020
Supporting Organization: Seva Mandir, Udaipur
Main Activities: Rose, Jamun, Marigold (Genda Hajari) Flower Nursery etc.

In the Popalti Panchayat under the Girwa Tehsil of Udaipur district, there are 8 revenue villages. Seva Mandir has been working in this village for several years. However, in the year 2020, with the support of the Colgate Project and Seva Mandir, Dharmi Gameti, wife of Pratap Ji, planted 950 marigold and rose plants in Purnia. From these plants, she earned an income of Rs 55,000 in 2021, which she utilized for house construction and household expenses.

In the same year, Dharmi and Pratap Ji, along with other rose cultivators, received training from the Seva Mandir team for a rose nursery. In November 2020, they prepared a nursery of 5,000 rose plants through cuttings from their existing rose plants. By selling these plants in April 2021, they earned Rs 41,000 from the rose nursery, which they used to pay their daughter-in-law's BSTC course fees. In February 2022 alone, they earned Rs 20,000 and sold 20-25 kg of roses daily. With this income, they completed the work of installing doors, windows, and painting in their house. Dharmi and Pratap Ji initially started with three cultivators, which has now increased to nine rose cultivators in the village. Additionally, 26 other cultivators started growing roses by using the cuttings discarded by Dharmi and Pratap Ji. These cuttings were properly trimmed and directly planted in the fields, yielding good results and generating significant income annually. Like every year, in 2021, Pratap Ji prepared around 12,000 plants, and approximately 130,000 plants are being cultivated. Many families in the village are now engaged in making flower garlands, providing them with daily employment. Inspired by Dharmi and Pratap Ji, many people from other villages have also started flower farming.

For the past two years, with the support of the Seva Mandir organization, many other women in self-help groups such as Sai Baba Ki Leela in Akeli and Kaliwas villages have been cultivating flowers. These families earn an additional annual income of Rs 35,000 to Rs 50,000. The villagers sell flowers at rates ranging from Rs 80 to Rs 150 per kg. Several families also prepare garlands and sell them on the roadside, earning Rs 200 to Rs 500 per day.

Case Study 3

Kheemaj Mata Women's Savings Group

Respondent's Name: Manisha

Age: 35 years

Husband's Name: Laxman

Occupation: Beauty products, grocery, and tailoring

Alsigarh, located about 70 kilometers from Udaipur in the Girwa tehsil, has had the Kheemaj Mata Women's Savings Group since 2018 with the support of Seva Mandir. This group consists of 13 women who each contribute Rs 100 per month in a meeting held on the 5th of every month. In January 2021, Manisha Laxman took a loan of Rs 28,000 from the women's savings group and started a beauty products, grocery, and clothing shop. Initially, she was nervous about how she would repay the money, but as people in the area became aware of her shop, they started purchasing from her. Gradually, her confidence grew, and she began earning Rs 4,000 to Rs 5,000 per month. Later, she purchased a sewing machine. Now, Manisha earns around Rs 9,000 per month, covering her household expenses, including food and daily needs. By taking a loan from the women's savings group, Manisha successfully established a grocery and beauty products shop at home, playing a crucial role in sustaining her family's livelihood. Encouraged by her growing confidence, she also took tailoring training and opened a clothing shop. Today, the couple works together and earns Rs 2 to Rs 3 lakh annually while staying at home, leading a self-sufficient and happy life. Currently, Seva Mandir is promoting vegetable farming, goat rearing, fish farming, and poultry farming in this village and surrounding areas. They have also provided goats for goat farming, increasing goat sales and helping families sustain themselves.

In Rajasthan, the formation of women's self-help groups (SHGs) has played a significant role in making women financially independent. The Rajasthan Child Welfare Committee, in collaboration with NABARD, is actively working in rural areas to enhance livelihoods. Under this initiative, farmer groups have been formed to promote agriculture. In the Jhadol region, the local community is being encouraged to cultivate ginger, arbi (taro root), ratalu (sweet potato), and chilies. Efforts are also being made for water conservation, infrastructure development, and skill training to enhance self-sufficiency. According to reports from 2019-20, around 170 wells were deepened and concretized, 15 farmers received seed distribution, and 2,000 families were linked to amla (Indian gooseberry) farming for commercial production. With the support of the Government of India, livelihood enhancement programs focus on land, water, livestock, and agricultural development & management. Additionally, horticulture, floriculture, and medicinal plant cultivation are being promoted in partnership with self-help groups. NABARD is also helping establish the Mewar Pottery Cluster, training and supporting potter families in pottery-making and marketing. For poor families, microcredit initiatives are encouraging savings, benefiting around 400 families in the region. Efforts are also being made to ensure fair prices for their produce. Thus, by working together, government and non-government organizations are identifying economically weaker families in rural and tribal areas, forming self-help groups, and creating employment opportunities. These initiatives are significantly contributing to women's empowerment, family development, societal progress, and national growth.

References:-

1. Kumawat, Lalit (2004): Emerging Leadership in Panchayati Raj & Women's Groups
2. Annual Report 2021: Rajasthan Child Welfare Committee
3. Jain, M.K. (2020): Tribal Women's Condition & Health, Udaipur Ankur Publications
4. Bi-Annual Report 2021: Seva Mandir Regional Office, Jhadol

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Study of Ethno-Medicinal Plant's Use Increasing Immunity

Dr. Sarita Ghanghat*

***Assistant Professor (Botany) Govt. Sanjay Gandhi Smriti P.G. College, Ganj basoda, District Vidisha (M.P.) INDIA**

Abstract: The present paper reported with Ethno-medicinal plant use for increasing immunityin rural area of Vidisha district, Madhya Pradesh. Total 28 plants belonging to 17 families were identified which were being used by people of the study area. The information about the plants for immunity booster was gathered from rural area people, Hakims, Local Vaidya etc. if our immune system is not properly taken care of, it can result in disease.
Keywords: increasing immunity, Ethno-medicinal, Plants, Vidisha, District.

Introduction - In India medicinal plants have long been used to treat different kinds of disease. People living in the developing countries rely quite effectively on traditional medicine for primary health care (Sullivan and Shealy 1997;singh,2002).

Indian tradition medicine is based on different system such as Ayurveda, Siddha and Unani used by various communities (Gadgil,1996).

Medicinal plants are main ingredients of local medicine and are of vital importance in traditional healthcare. Villagers have a good knowledge about these plants since ancient times. Atharvaveda is oldest word literature on the plants used against several diseases. Moreover, there are considerable economic benefits in the development of medicine and in the use of medicinal plants for treatment of various diseases.

There is still much that researchers do not know about the intricacies and interconnectedness of the immune response. Nature has blessed mankind with abundant medicinal herbs which provide timely and adequate remedies to several health disorders.Several medicinal plants have been used since times immemorial for treatment of enhance immune system. Some Special plants like Giloy, Tulsi, Ginger, Cinnamon, Turmeric, Clove, Kali Mirch, Amla, Lemon, have been used of increasing immunityplants in rural area of vidishadistrict. Even today, in many villages of this district, so much ethno-medicinal plants are being used to increase immunity boosting.

Study area-The present paper on 28 selected Ethno-medicinal plants (belonging to 17 families) of Vidisha district, with correct identification, Botanical Names, Family, Local names,parts used in diseases, by tribal and rural population.For centuries plants have been an important source of drugs.

Vidisha district is one of the most important and centrally located district of M.P. The total area of the district is about 7,433sq K.M. which lies between 23º21‘ and 24º22‘N latitude and 77º15.30‘ and 78º18‘E longitude forming eastern part of Malwa region. The forest cover is about two fifth of the total area in the district(fig.1). Vidisha district is inhabited by tribals like Sahariya, Bhil, Meena.The area is very rich in indigenous ethno-medicinal plants. These are collected by local inhabitant for the preparation of medicines. Perusal of literature (Jain 1995, Ghanghat and Sahu 2006,) revealed that no specific study on ethno-medicinal uses of plants in Vidisha district has been carried out.

Fig.1 Map (vidisha district)

Research Design and Methodology-The following methods were adopted by the author during the-

1. The study was conducted in the rural area of Vidisha district in Madhya Pradesh.
2. The survey was conducted to collect the information forest department and local people specially Sahariya,

tribes in Vidisha district.

3. The information about plants was gathered during filed visit by contacting and interviewing traditional healers and other rural people, Vaidya, Hakims for immunity booster. with Help of local medical practitioners was also taken.
4. Plants were identified by referring to Flora of Bhopal by Oommachan,M.(1977) and Flora of M.P. from Wikipedia.

Enumeration- In the following enumeration, plant names have been arranged alphabetically in botanical name wise. (Table-1)

Table -1 (see in last page)

Results and Discussion-A total of 28 ethno-medicinal plants for enhance immunity booster distributed in 17 families are documented in Table-1.

The people of studied area still had strong belief in ethno-medicinal herbal plants treatment. Herbal treatment is cheap. convenient and easily available in local areas. In the present study, it was found that plants commonly used in immunity booster in rural areas were still found in urbanareas of Vidisha. It is essential that ethno-medicinal plants investigation should persistently be carried on and efforts. should be made for proper protections cultivation and conservation of these precious medicinal plants on large scale. Consequently, natural products derived from medicinal herbs are potential candidates for immune boosting therapeutic drugs. if not as the main, then as the accompanying therapy in combination with medications, aimed at boosting immunity for prevention.

Conclusion- In summary, We should make people aware about the usefulness of these plants as well as their conservation so that a healthy society can be created. To maintain a strong immunity, we should use plants in which we can get all the multivitamins and we are not prone to disease.Many plants are used to enhance the immune system, which are given in table No.1. But some are mainly used Giloy,Tulsi,Garlic, Ginger, Dalchini,Turmeric,Tejpataa, Clove, Kali Mirch, Mint, Mithi Neem,Sahijanetc. Alone with this, plants from which vitamin **C** is obtained such as Amla, Guava, Lemon,Orange are also prominent. By using these plants, can increase our immune system, so that we will be healthy and we will not get any disease.

Acknowledgement-The author thankful to all the tribes, local people, Hakims,Vedas for the valuable information required for this survey. who provided merelated to this research. I am sincerely grateful to Dr.M.M.Mehta, Principal Govt. S.G.S.P.G. College, Ganj Basoda

References:-

1. Balkrishna Murthy, P. (2008). Vegetation of different place. Journal of Environment Biology, 29 (1):522-523.
2. Flora of M.P. from Wikipedia.
3. G. Anywar, E. Kakudidi, R. Byamukama, J. Mukonzo, A. Schubert, H. Oryem- Origa, (2020), Medicinal plants used by traditional medicine practitioners to boost the immune system in people living with HIV/AIDS in Uganda, *J. Eur. J. Integr. Med.*
4. Ghanghat,Sarita and Sahu, Brajesh (2006) Medicinal climbers of Vidisha District . I.J.Applied Life Science.,Vol 1,no 1,pp 24-25.
5. Gudgil ,M ; 1996 Documentriy diversity : An experiment curr.ci ; 70 (1) : 36
6. J.P. Kaushik (1941). Flora of Shivpuri, Madhya Pradesh (1983). Jiwaji University Gwalior, M.P.
7. Jain ,S.K., 1991 Dictionary of Indian Flok medicine and Ethnobotany .Deep publication, New Delhi. ISBN : 8185622000.
8. Jain, A.K. (1992). Ethno-botanical studies on Sahariya tribals of Madhya Pradesh with special reference to medicinal plants. *J. Econ. Taxonomic Bot.,* Add. Ser. 10, 227-232.
9. Jain,S.K.(1995): Ethnobotanical studies around vidisha district . Ph-D Thesis. Barkatullah University, Bhopal.
10. Jatav, R.D. (2021) Ethno-medicinal Plants use for Immunity Booster in Rural Area of Shivpuri District Madhya Pradesh. Journal of IJSR, ISSN :2319-7064 .793-796.
11. Oommachan, M. (1977): The flora of Bhopal J.K. jain Brothers, Bhopal
12. 05-Olga Babich, Stanislav Sukhikh *et. All.,* (2020): Medicinal Plants to Strengthen Immunity during Pandemic. Pharmaceuticals, 13, 313.
13. Sullivan,K.andC.N.Shealy ,1997 Complete Natural Home Remedies.Element Book Limited, Shaftsbury, U.K.
14. Uzun, M. Kaya, A. (2016). Ethnobotanical research of medicinal plants in Mihalgazi. *J. Pharm, Biol*. 54.

Plants pictures

Muraya leaves

Neem leaves,fruits

Munga leaves,drumstick

Amla fruit

Kali Mirch Seeds

Mintl eaves

Ashwagandha seeds

Tulsi leves,manjri

Mulethi stem

Bahera fruits

Giloy roots

Gokhuro seeds

Harra seeds

Pippli Fruits

Table -1 : Ethno- medicinal plants Useincreasing immunity

S.	Botanical Name	Family	Local Name	Part used
1.	*Allium sativum*	Liliaceae	Lehasun	Bulb
2.	*Aloe veraL.*	Liliaceae	Ghritkumari	Gel inside the leaves
3.	*Azadirachta indica*	Meliaceae	Neem	Leaf,
4.	*Cassia tora*	Caesalpiniaceae	Puar	Leaves
5.	*Cinnamomum tamala*	Lauraceae	Tej Patta	Leaves
6.	*Cinnamomum verum*	Lauraceae	Dalchini	Bark
7.	*Citrus limon*	Rutaceae	Nimboo	Fruit
8.	*Citrus reticulata*	Rutaceae	Santra	Fruit
9.	*Curcuma longa*	Zingiberaceae	Haldi	Rhizomes
10.	*Emblica officinalis Gaert.*	Euphorbiaceae	Amla	Fruit
11.	*Eugenia jambolana*	Myrtaceae	Jamun	Fruit
12.	*Glycyrrhiza glabra*	Fabaceae	Mulethi	Stem
13.	*Mentha arvensis*	Lamiaceae	Pudina	Leaves
14.	*Moringa oleifera Lam.*	Moringaceae	Sahijan	Leaves, flower,seed,Fruit.
15.	*Murrayakoenigii*	Rutaceae	Meethi Neem	Leaves
16.	*Ocimum sanctum*	Lamiaceae	Tulsi	Leaves
17.	*Piper longum*	Piperaceae	Pippli	Fruit
18.	*Piper Nigrum*	Piperaceae	Kali Mirch	Seed
19.	*Psidium guayava*	Myrtaceae	Amrud	Leaves, Fruit
20.	*Punica granatum*	Lythraceae	Anar	Seed
21.	*Solanum nigrum*	Solanaceae	Makoi	Leaves, Fruit.
22.	*Syzygium aromaticum*	Myrtaceae	Long	Bud
23.	*Terminalia bellarica*	Combretaceae	Bahera	Fruit
24.	*Terminalia chebula*	Combretaceae	Harra	Fruit
25.	*Tribulus terrestris*	Zygophyllaceae	Gokhru	Fruit, Seeds
26.	*Tinospora cordifolia*	Menispermaceae	Giloy	Leaves, Stem, Root
27.	*Withaniasominifera(L)Dunal*	Solanaceae	Ashwagandha	Whole plant, mainly root
28.	*Zingiber officinale Roscoe.*	Zingiberaceae	Adrak	Rhizome

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Ethnobotany: Traditional herbal remedies used by Tribals of Dhar district, Madhya Pradesh, India

Dr. Kamal Singh Alawa*

***Department of Botany, PM College of Excellence, Maharaja Bhoj Govt. P.G. College, Dhar (M.P.) INDIA**

Abstract : The present paper deals with 40 plant species which are used traditionally since ancient times by Tribals used for the treatment of various ailments, such as mouth ulcer, constipation, earache, headache, asthma, ringworm, jaundice, snake bite, etc. A total of 40 plant species belonging to 29 genera and 18 families were identified as scientific name, local name and uses. The present observation puts into record some novel traditional uses of certain plants as medicines. Herbal remedies medicinal plants are arranged alphabetically which represents their botanical names, family, vernacular name and medicinal uses.
Keywords: Dhar district, Herbal remedies, Medicinal plants, Tribals, Madhya Pradesh.

Introduction - Dhar district is situated in the western most part of Madhya Pradesh. Most of village's habitants of Dhar district belong to tribal communities of the remote and rural areas. Major parts of the district is covered by dense forest area in which various tribes, like Bheel, Bhilala, Barela and Patelia are the dominant tribals of Dhar district, Madhya Pradesh. Out of these tribes Bheel and Bhilala stand high in strength Scattered in most of the villages of the study areas. These tribal peoples live close to the forest and mostly dependent on the wild Bioresources for their daily requirement of food, fuel, herbs, tools and implements. The Bheel tribes is an ancient tribal community of archers spread in many parts of India but presently living preponderantly in the forests of Madhya Pradesh and surrounding region of the world. Bheel stands for bow and thus represents archers who traditionally used bows and arrow dating back to hunter-stage of human evolution in the subcontinent. A review of Literature survey of ethnobotanical work was done (Srivastava 1984, Samvatser *et al*. 2004, Jain 2004, Jadhav 2007, Wagh *et al*, 2010, Vijay *et.al* 2010, Alawa *et al*. 2012, Shaikh *et al*. 2012, Alawa 2015, Alawa *et al*. 2016, Alawa 2018, Alawa 2021). Still there are some interior areas which need to be surveyed intensively like Dhar district for searching new traditional remedies medicinal plants. The present paper first time documented of the study area.

Materials and Methods: The present paper is outcome of extensive field survey of different tribal villages of Dhar district during 2024- 2025 to collect information on medicinal uses of different plant species. Herbarium of the collected plants specimen was prepared following customary method (Jain and Rao,1977). During field work, interviews were conducted with local knowledgeable villagers; local elders and experienced tribal peoples (both men and women) were interviewed and cross -interviewed again and again. Local 'Vaidyas,' 'Badwa' and 'Ojhas'.The collected plant species are arranged alphabetically along with their botanical name and family, local names, method of preparation of drug and mode of administration are given below in observation. The plant specimens were collected and identified with local flora available literature (Varma *et al*. 1993, Mudgal *et al*. 1997 & Khanna *et al*. 2001). Herbarium preserved in Department of Botany, PMB Gujarati Science College, Indore, Madhya Pradesh. Under enumeration, plant names have been arranged alphabetically followed by Botanical names, family, vernacular names and medicinal uses.

Enumeration of species: During ethnobotanical survey of Dhar district it was found that some wild medicinal plants are used by tribal of Dhar district Madhya Pradesh. The enumerations of field observation are given below:

1. ***Abrus precatorius*** L. (Fabaceae) **V.Ns**.-Ghumchi, Lal chirmi, Lal jurang, Ratti.

Uses: 1.Leaf paste with jaggery mixed is given twice a day for 2-3 days to control typhoid.

2. The leaves are chewed in mouth ulcer.

3. Seed powder is mixed with cow's ghee is used 1-2 drops to during conjunctivitis.

2. ***Achyranthes aspera*** **L**. (Amaranthaceae) **V.Ns** : Chirchita

Uses: Root paste is applied on a bitten area in scorpion bite.

3. ***Alangium salvifolium*** **(L.F.)** Wang ((Cornaceae) **V.Ns**: Okali

Uses: Root powder is mixed with water and given orally twice a day in constipation.

4. ***Alstonia scolaris*** **(L.) R.Br.** (Apocynaceae) **V.Ns**: Saptaparni
Uses: A glassful stem bark decoction is given twice a day in tuberculosis.
5. ***Butea monosperma*** (Lam.) Taub. (Fabaceae) **V.Ns.-** Palas, Dhak, Khankro.
Uses: 1.Paste of seed with water is taken twice a day for 3 day to remove intestinal worms.
2. Powder bark is taken during bodyache and abdominal pain.
6***. Butea superba*** Roxb.ex Willd. (Fabaceae)**V.Ns.-** Palasvel, Bodla.
Uses: Dried root powder with cow's milk is given during debility.
7. ***Borassus flabellifer*** **L.** (Arecaceae) **V.Ns**: Tad
Uses: Leaf base is burned and squashed and the formed juice is put in ear in earache.
8. ***Caesalpinia bonduc*** **(L.) Roxb**.(Caesalpiniaceae) **V.Ns**: Ghatar
Uses: One teaspoonful seed powder is given twice a day in burning sensation during urination.
9. ***Celastrus paniculatus*** **Willd**. (Celastraceae) **V.Ns**: Kangan
Uses: Seed oil is applied on forehead in half headache.
10***. Costus speciosus*** **(J. Koeing) Sm.** (Costaceae) **V.Ns**: Jangali Aadu
Uses: Rhizome paste is applied on the forehead in chronic headache.
11**.** ***Cajanus cajan*** **(L.) Huth. (**Fabaceae**) V.Ns**.- Arhar
Uses: Paste of leaves is applied on mouth ulcer.
12**.** ***Clitoria ternate*** **L. (**Fabaceae**)V.Ns.** Aparajita
Uses: The extract of leaves is given orally to cure vermicide.
13. ***Crotalaria medicaginea*** Lamk. (Fabaceae) **V.Ns.-** Piliabuti
Uses: Powder of roots is mixed in water and taken orally to cure jaundice.
14***. Crotalaria Juncea*** L.(Fabaceae) **V.Ns.–**Sann, Sanai
Uses: 1.Seed powder with milk is given orally twice day to cure paralysis.
2.Root powder with leaf of (*piper betle*) beetle is given twice a day for a week to cure jaundice.
15**.** ***Dalbergia sissoo*** Roxb. ex DC. (Fabaceae) **V.Ns.–** Sissoo, Sisham.
Uses: 1. Leaf Juice with sugar candy is given twice a day for 3 days to cure diarrhoea.
2. Paste of leaves is given orally cure for diabetes.
3. Oil of wood is also massage to cure for paralysis.
16**.** ***Desmodium gangeticum*** (L.) DC. (Fabaceae) **V.Ns.-** Chipti
Uses: Root powder with honey is given orally twice a day to cure cough and fever.
17.***Desmodium triflorum*** (L.) DC. (Fabaceae) **V.Ns.–** Kodawla
Uses: 1. Paste of fresh leaf is applied wounds twice a day to relive fast healing.
2.Root powder with Kukad kand (*Geodorum densiflorm*) to made into "Laddu" given to one week in early morning in the empty stomach to cure spermatorrhoea.
18.***Desmodium gangeticum*** **(L.) DC**. (Fabaceae) **V.Ns**: Rinzado
Uses: Fresh leaves juice is applied externally on scabies and ringworm.
19. .***Euphorbia nerrifolia*** **L.** (Euphorbiaceae) **V.Ns**: Hathlo thuvar
Uses: Latex of plant is given in Pan (*Piper betel)* leaf in asthma.
20. ***Ficus benghalensis*** **L**. (Moraceae) Local name: Bargad
Uses: Latex of the plant is applied in mouth ulcers.
21. ***Haldinia cordifoila*** **(Roxb.) Ridsd.** (Rubiaceae) **V.Ns**: Haldu
Uses: Stem bark pounded overnight and the decoction is given twice a day in Jaundice.
22. ***Indigofera tintoria*** L. (Fabaceae) **V.Ns.–**Neel, Nili.
Uses: Powder of root with water is given orally to cure for cardiac, hepatic and dropsy.
23. ***Lannea coromondelica*** **(Houtt.)Merr**. (Anacardiaceae) **V.Ns**: Moyan
Uses: Stem bark is crushed with 500 ml water and heated gently for 5-20 minutes and the decoction is given twice a day to treat rheumatism.
24***. Malilotus indica (***L.) Ali.(Fabaceae) **V.Ns.**- Van methi
Uses: Leaves with salt to eaten in case of constipation.
25.***Momordica dioica*** **Roxb. ex Willd**. (Cucurbitaceae) **V.Ns**: - Kicoda, Katle
Uses: Root tuber paste is applied on bitten area in snakebite.
26. ***Mucuna pruriens*** (L.) DC. (Fabaceae) **V.Ns**.-Kevach, Konch
Uses: 1.Root paste is given twice a day for 3 days to cure dysentery.
2. Burn seeds are eaten to cure for cough and cold.
27. ***Ocimum basilicum*** **L**. (Lamiaceae) **V.Ns**: - Safed Bhabdi,
Uses: Seed pounded in water overnight, and the extract is given orally in pimple and blemishes.
28. ***Ougeinia oogeinsis*** (Roxb.) Hocker. (Fabaceae) **V.Ns**.- Tinsa
Uses: Bark paste is given twice a day for 3 days to cure diarrhea and dysentery.
29. ***Pongamia pinnata*** (L.) Pierre.(Fabaceae) **V.Ns**.- Karanj, Karanji, Kanji.
Uses: 1. Seed oil is applied on skin for itching, ringworm and eczema.
2. Seed powder with cow's milk is given twice a day for bodyache.
3. Leaf juice is applied as ointment in the cure of urinary.
30. ***Pterocarpus marsupium*** **Roxb.** (Fabaceae) **V.Ns**: - Rangatroeda
Uses: Decoction of stem bark is given orally twice a day in

kidney stone.

31. ***Pterocarpus marsupium*** Roxb. (Fabaceae) **V.Ns**.- Karanj, Bija-sal, Bilawa.

Uses: 1. Decoction of stem bark is given twice a day for a week to cure anemia.

2.Decoction of stem bark is given twice a day for only women after delivery.

32. ***Pueraria tuberosa*** (Roxb.) DC. (Fabaceae) **V.Ns**.-Patal tumbadi,Bhui kumbra

Uses: 1.Tuber powder is given twice a day for 3 days to cure urinary disorder.

2.Decoction of leaves and tuber is given twice a day for a week to treat increase male potency.

33. ***Sesbenia bispinosa*** (Jacq.) Steud. (Fabaceae) **V.Ns.-** Dadon, Daden

Uses: 1. Seed powder is given with water twice a day for arthritis. 2. Seed paste is applied as an ointment on cuts, burns and wounds.

34. ***Syzygium cumini*** **(L.)** Skeels (Myrtaceae) **V.Ns**: - Jamun

Uses: One teaspoonful seed powder is given orally twice a day for blood purification.

35. ***Tamarindus indica*** **L**. (Mimosaceae) **V.Ns**: - Aamli,

Uses: seed powder mixed with honey and the made pills are given twice a day in diabetes.

36. ***Tephrosia candida*** L. (Fabaceae) **V.Ns.**-Safed serpunkha

Uses: Root powder is given orally to cure diarrhea.

37. ***Tephrosia Purpurea*** (L.) Pers. (Fabaceae) **V.Ns.-** Sarpankha, Bayonia

Uses: 1. Decoction of root is given twice a day for 3 days to cure diarrhoea and urinary disorder.

2. Decoction of plant is used for children to cure blood purification.

38. ***Urginea indica*** **(Roxb.) Kunth** (Liliaceae) **V.Ns**: - Jangali pyaz

Uses: Bulb paste is bandaged on the swelling in rheumatism.

39. ***Uraria picta*** (Jacq.) Desv.ex.DC. (Fabaceae) **V.Ns.** Prastparni

Uses: Root powder is given to cure fever.

40. ***Wrightia tinctoria*** **R. Br**. (Euphorbiaceae) **V.Ns**: - Kueda

Uses: One teaspoonful seed powder is given orally thrice a day for one week in Malaria.

Results and Discussion: The present study includes information on the total 40 plant species belonging to 29 genera and 18 families were identified as scientific name, local name, and uses. Generally local medicine men are known as 'Badwa' or Vaidyas. The rich treasure of indigenous knowledge of local medicinal plant is also under serious threat in rural areas due to the availability of allopathic medicines and treatment of ailments and disease. The indigenous knowledge of the tribal communities must be properly documented and preserved so that their knowledge could be passed on the future generation. Such studies and documents provide important for understanding the complex heritage of tribal communities and their association with environment and nature. the important medicinal plants were used again cough and cold, diarrhea and urinary disorder of 3 species; abdominal pain, intestinal worms, typhoid, jaundice, mouth ulcer, eczyma, paralysis, fever of 2 species each and arthritis, male impotency, diabetes, anemia, dysentery, spermatorrhoea and blood purification of 1 species. The collection of remote areas of traditional herbal remedies plants of photo graphs (Fig. 1 to 6).

Acknowledgement : The author is thankful to Dr. S.S.Baghel, Principal and Dr. K.S. Alawa, Head of Botany Department, Govt. P.G. College, Dhar for their help and support. We are also thankful to Divisional forest officer, Dhar for help during the ethno botanical survey in tribal villages and forest areas of the district. We are thankfully acknowledging the informants for the important information giving regarding ethnomedicinal plants.

Fig.1 ***Abrus precatorius***

Fig.2 ***Momordica dioica***

Fig.3 ***Mucuna pruriens***

Fig.4 ***Butea monosperma***

Fig. 5 Tribal medicine men

Fig.6 Tribal medicine men

Plate1: Traditional herbal remedies used by tribals of Dhar district (M.P.)

References:-

1. **Alawa, K.S. and Ray S. 2012**. Ethnomedicinal plants used by tribals of Dhar district, Madhya Pradesh, India. *CIBTech. Jour. Of Pharmaceutical Science,* 2012; 1(2-3): 7-15.

2. **Alawa, K.S. 2015**. Ethnomedicinal plants used for gynecological disorders by tribals of Dhar district, Madhya Pradesh, India. *Naveen shodh Sansar* 2 : 21-22
3. **Alawa, K.S., Ray S., Dubey, A. 2016**. Folklore claims of ethnomedicinal plants used by Bhil tribes of Dhar district Madhya Pradesh. Bioscience discovery 7(1): 60-62.
4. **Alawa, K.S. 2021**. Ethnomedicinal plants used for antifertility by tribals of Dhar district, Madhya Pradesh, India*. European Jour. Of Biome. and pharma.Science* 8 (8): 495-497.
5. **Jadhav, D. 2007**. Ethnomedicinal plants used by *Bhil* tribes of Matrunda, District,Ratlam, Madhya Pradesh, *India. Bull. Bot. Surv. India.* 49 (1-4): 203-206.
6. **Jain, S.P., 2004**. Ethno-Medico-Botanical Survey of Dhar district Madhya Pradesh. *Journal of Non-Timber Forest products*, Vol. 11(2): 152-157.
7. **Jain, S.K. and Rao R.R., 1977**. *A handbook of field and Herberium methods*. Today and Tomorrow Publishers, New Delhi.
8. **Mudgal, V., Khanna K.K. and Hajra P.K., 1997**. *Flora of Madhy Pradesh*, Vol. II. BSI. Calcutt
9. **Srivastava, R.K., 1984**. Tribals of Madhya Pradesh and Forest Bill of 1980.*Man in India*. 64(3): 320-321.
10. **Singh, N.P., Khanna, K.K. Mudgal, V. and Dixit, R.D., 2001**. *Flora of Madhya Pradesh*, Vol. III, BSI, Calcatta.
11. **Samvatsar, S. and Diwanji, V.B., 2004**. Plant used for the treatment of different types of fever by *Bheels* and its sub tribes in India. *Indian J. Traditional Knowledge*: 3(1): 96-100.
12. **Verma, D.M., Balakrishan, N.P. and Dixit, R.D., 1993**. *Flora of Madhya Pradesh*, Vol. I, BSI, Calcatta.
13. **Wagh, V.V. and Jain, A.K., 2010.** Traditional herbal remedies among Bheel and Bhilala tribes of Jhabua district Madhya Pradesh*. Inter. Jour. of Biological technology*, 1(2):20-24
14. **Wagh, V.V. and Jain, A.K., 2010**. Ethnomedicinal observations among the *Bheel* and *Bhilala* tribe of Jhabua District, Madhya Pradesh, India *Ethnobotanical Leaflets,* 14: 715-720.

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

New Education Policy 2020 - Opportunities and Skill Building

Dr. Ruchi Rathore*

***Assistant Professor (Economics) Govt. P.G. College, Rehli (M.P.) INDIA**

Abstract : The new Education Policy has been approved by the Union Cabinet of India on 29 July 2020. This is the third education policy of India. Many major changes have been made. It will be beneficial for raising the employability. When we talk about present condition youth is running towards seeking the job, they are wandering here and there. The question is why? was the former education policy not perfect according to the present condition. People have skill and talent but their skill and talent was not with the demand. This research paper is an attempt to find out how new education policy 2020 has internship opportunities. This NEP has many beneficial factors in many regards but here we will find out how is it internship opportunities.

Keywords : Introduction, objective of the study, research methodology, objective of the new education policy, How does internship help in skill building and finding job opportunities.

Introduction - The first NEP was promulgated by the government of India by Prime Minister Indira Gandhi in 196, the second by Prime Minister Rajiv Gandhi in 1986, and the third by Prime Minister Narendra Modi 2020. This policy aim to transform India's education system by 2040.

As we know very well that the education policy of any country plays a very important role for the development of country and its students. The future of any country depends on its education policy because we know very well that education is an important issue in one's life. It is the key of success in the future and to have many opportunities in our life. With the help of these opportunities not only we are making our future bright but the future of our country too.

Objective of the Study :

1. To find out how it's internship opportunities.
2. To find out what are the strong pillar in NEP, which will be used to raise employment.

Research Methodology : The present study is an attempt to analyze the impact of new education policy on the internship opportunities. This study has been based on secondary information. The data for the study has been taken from different magazine, books, pdf provided by the higher education related to NEP.

Objective of New Education Policy 2020:

1. The education policy aims to encourage the spirit of creative thinking, logical decision making and innovation in the students.
2. Paying attention on technical uses for removing linguistic barriers.
3. NEP 2020 is to pay special attention to issues like access to education for everyone.
4. NEP 2020 emphases on equality quality, afterdable education and responsibility.
5. NEP 2020 envisages a shift from summative assessment to regular and formative assessment, which is more competency based higher order skills, such as analysis, critical thinking, and conceptual clarity.
6. It encourages a multidisciplinary approach, allowing students to choose subjects of their interest across streams like science, humanities and commerce.
7. NEP 2020 holds immense potential to revolutionize India's education system and empower its youth for a brighter future.
8. Its success lies in swift and efficient implementation, driven by collaborative efforts and adequate resource allocation.

How does Internship help in Skill Building and Finding Job Opportunities: Major subject, minor subject, elective subject, vocational subject, project, internship, community engagement and apprenticeship are the part of NEP-2020. These are the major changes in education system, which have been made. NEP emphasizes the importance of research and internships in undergraduate education. The internship will be mandatory for students in three year and four year degree programs, with a duration of 60 to 120 hours. Internship programme helps students to test themselves in a real work environment. They can check for themselves whether and with what degree of proficiency

the theoretical lessons that they would have learnt in the classroom can be applied in the workplace. For students pursuing a three year UG degree an internship of 60 to 120 hours duration after the fourth semester will be mandatory, and for those who will opt for a four-year degree a research internship during the eighth semester will be a mandatory component. Here are some benefits of an internship for students.

1. Provides work experience
2. Creates a professional network.
3. Offers career guidance.
4. Builds confidence.
5. Creates a strong resume.
6. Offers mentorship opportunities.
7. Apply theoretical knowledge in the real world.
8. Expand on your transferrable skills.
9. Better job stability.

Above all these are the benefits of an internship for students. With the help of internship programme they can gain real-world experience of what it takes to drive business operation forward. Students will know how to choose strategies to address these issues and how to plan and execute the tactics needed to achieve these goals.

Normal internship can be done with government or private organizations, non-government organizations, enterprises, business organization, local industry, artistes, crafts people and similar other entities, research internship experience can be gained by working with faculty, mentors in higher education institutions, research institutions, universities, nationally and internationally reputed organization, formers and entrepreneurs, the guidelines started.

Conclusion: Now we conclude this paper and find that internship courses are the strong pillar of NEP. It is very helpful for students to achieve their goals not only job side students will set their mind about skill enhancement too. Now this is that time when students can show and enhance their talent and make their future bright instead of running towards job. The integration of formal and internship education under NEP 2020 will help foster future ready skills among the students, making them more adaptable versatile, and well-prepared to excel in the dynamic and competitive landscape of the 21st century.

References :-

1. Ministry of skill development and entrepreneurship 'My iGot', October 2004.
2. Madhya Pradesh Government, Higher Education Department, National Education Policy 2020, Orientation Program, August-19, 2021
3. Hindustan Times, Retrieved 30 July 2020.
4. https://www.ugc.in
5. https://bhartifoundation.org
6. Jagranhose.com
7. PM Address on NEP_Jagran_Dainik (29 July 2021).
8. https://www.educationtimes.com

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Issues and Prospects in Teacher Education Programme

Dr. Kalpana Singh*

***Assistant Professor, Manyawar Kanshiram Govt. Degree College, Ninowa, Farrukhabad (U.P.) INDIA**

Abstract : Teacher's education is important programme to improve the quality of higher education. In a landmark directive towards ensuring quality teacher education, the National Council of Teacher Education has made sweeping changes from this academic session. It has increased the duration of B.Ed. programme from one year to two years with major changes in curriculum. However, the revision in the norms regarding duration of the course and curriculum is the result of extensive and exclusive debates and discussions. It has emerged as an idea that has been expressed at various forums over the years. Now that the execution phase has begun, the idea is to be analysed in terms of its actual feasibility. It is to be seen whether the prolonged course duration proves into historical transformation in the system of education or turns to be rather 'a not so preferable profession' in the era of professionalism and human capital. However, it is even more pertinent to understand why such changes were felt needed and what strategies have been evolved to implement the revisions effectively. So far the studies have established that the existing training programme does not provide adequate opportunities to the student teachers to develop competency because of the anomalies and defects in the system of implementation of the programme and curriculum of the programme.
Keywords: Teacher education programme,Issues.

Introduction - A student teacher should know the meaning of education, its objectives, the socio-cultural and politico-economics background, the principles that guide construction of curriculum etc. Teacher performance is the most crucial input in the field of education. Whatever policies may be laid down, in the ultimate analysis these have to be interpreted and implemented by teachers, as much through their personal example as through the teaching learning processes. We are on the threshold of the development of new technologies likely to revolutionize teaching in classrooms. But unfortunately, the process of updating curricula of teacher education has been very slow. Today teaching is a profession requiring specialization in terms of knowledge and skills. There exists a wide gap between theory and the knowledge and skills of teaching required in the actual classroom curriculum transaction. For this reason, a routine-bound teacher cannot act in accordance with the emerging needs unless he or she is trained and frequently oriented. One of the most important requirements to promote and strengthen education is the training of teachers who are the key resources in the reform, redirection and renewal of education. In this backdrop the present paper reflects upon the actual reasons of revision in the programme. The paper also focuses on various challenges and issues considerable enough in the implementation of the programme. Some of such challenges are increased financial burden on the parents of aspiring B. Ed. Students, setting up of enriched infrastructure to meet the needs of various curricular enhancements and most importantly the restructuring of teacher education curriculum that aims at all round human development. The paper tries to reflect upon the feasibility of the prolonged programme from the vantage point of the aspiring B. Ed. students and various stakeholders such as administrators, school managements, parents of aspiring candidates and curriculum designers.

Development of Teacher Education in India : The training of teachers assumes great significance in the educational system. Teacher education system is an important vehicle to improve the quality of school education. It is a continuous process. It is well recognized that the overall quality in education depends amongst other things on the quality of teacher and that a sound programme of profession education of teachers is essential. The Government of India realized the importance of Teacher Education as a result of which many reforms were brought out particularly after independence. Various committees and commissions have time and again made recommendations to bring about required changes in teacher education programme. The University Education Commission (1948) recommended that theory and practice of pre-service teacher education must support each other. The Secondary Education Commission (1952-53) recommended the adoption of new techniques of evaluation and suggested that more capable

and intelligent persons should be attracted to teaching profession. Education commission (1966) stated that the professional preparation of teachers had been recognized to be crucial for the qualitative improvement of education since the 1960s. In the year 1973, the government of India constitutes the National Council of Teacher Education (NCTE) to act as national advisory body on all matters relating to teacher education and review the progress plan scheme to ensure adequate standards in the field of Teacher Education. The expansion of pre service teacher education is impressive if one looks at the continuous growth in the number of teacher education institutes. From a mere 10 secondary teacher training institutions in 1948, the number increased to 50 in 1965 and 633 in 1995. These figures grew as high as 4868 in 2002 and 11712 in 2010. The significant revisions in the teacher education programme were last recommended in National Curriculum Framework for Teacher Education in 2009 and subsequently with amendment in the constitution to make Education a Fundamental Right, curricular reforms and duration of the programme were reviewed.

Issue of implementation of the two year programme : The primary issue that may emerge due to implementation of two year programme is of lack of interest among the students towards the B.Ed. course. Given the fact that two year programme would require higher financial burden on the parents of the aspiring student teachers, such parents are very likely to be reluctant to spend in the course. As far as the attitude of the students is concerned, it may be hypothesized that because of the prolonged duration and increased financial burden, students' participation in the B. Ed. Programme would go down. Importantly, the enrolment in various courses of Education discipline has been slightly fluctuating in the previous years. According to AISHE Report of 2011-12 the enrolment in Education discipline was 3.10%, which remained same in the session 2012-13. As concerns the data of 2013-14 the figures grew to 5.42% of the total enrolment in higher education. Though the pertinent data of 2015, the year in which two year B. Ed. Programme was launched is yet not available. It may be speculated as has been unofficially reported by number of B. Ed. Colleges across the country that the admission in B. Ed. Two year programme is going to be very scant. My visits as external examiner for B.Ed. practicals in couple of colleges affiliated to Kanpur University have revealed the ground realities of fewer admissions in the two year programme so far.

It is important to note that the attitude of the students who earlier got attracted towards the course and the profession was primarily guided by the possibility of easy access and short duration of the course. But now given the fact that the duration of the programme is prolonged and certain eligibility criteria is fixed for the entry in the profession, the students who found it an easy and attractive profession are likely to be reluctant. It has been observed that quite a few students have also dropped the course and most of them have reported the long duration of the course to be the reason for their withdrawal. Moreover, in the neo liberal and globalised world where human capital and professionalism is cherished, less number of students would get attracted towards a long and expansive course which leads to a low paid profession.

Implementation of Two Year B. Ed. Programme would also require great deal of infrastructural adjustments to meet the curricular requirements of the revised course. The revised curriculum as has been prescribed by the National Council of Teacher Education primarily requires the semester system to be in place, and the duration of teaching practice to be increased to not less than six months. Considering these revisions, there would be a need of more number of faculty members, experimental schools attached to various colleges, enriched library to fulfill the additional course requirements and proactive administration to execute the innovative programme more efficiently. As far as the new course curriculum is concerned, it has been observed that the curriculum constructed by NCTE is focused around complete personal and professional development of the pupil teachers. Drawing upon the constructivist approach of teaching, various changes have been called for. As has been earlier reported by various studies that one year B.Ed. programme is insufficient in realizing the goals of education, the new course focuses on the knowledge construction. Now the idea of learning is not remaining to be a passive process, as it has been established that learner its active himself in the process of learning. Courses like Gender and Education, Art Education and Curriculum Development are some of the newer additions making the B.Ed. course to be much more comprehensive and sensitive towards the present social scenario. However, it would be interesting to observe whether such courses are also transacted with adequate vigor and sensitivity. It is also to be seen whether the combination of theory and practical works towards the intellectual as well as the professional development of the pupil teachers.

Reasons for revisions in teacher education programme : An immense writing has appeared on educational quality in recent years, examining factors that help improve education and proposing ways to promote better learning in schools. The issue of quality has become critical in many countries. In countries like India where with constrained resources, the successful effort to increase access to basic education has often led to declining quality of education. In a search for the factors that promote quality, programs as well as the literature increasingly emphasize teachers, schools, societies and communities as the engines of quality, with teacher quality identified a primary focus. The rapid changes in society led to teachers facing new and complex issues, resulting in changes in the area of teacher education. Advances in technology have also posed an issue for future educators. Many educators have focused

on ways to incorporate technology into the classroom. Television, computers, radio, and other forms of mass media are being utilized in an educational context, often in an attempt to involve the student actively in their own education. Hence, many teacher education programs now include courses both in technology operation and how to use technology for education purposes. With the coming on of distance learning utilizing mobile technologies and the internet understanding of technology or we can say e-learning has become crucial for new teachers in order to keep up with the knowledge and interests of their students in these delivery systems. The emergence of a networked knowledge economy presents both opportunities and challenges for teacher education Considering these changes in the socio economic and political system of the nation, revisions in the existing teacher education programme appears to be the immediate need of the hour.

Conclusion: Revisions and experimentations in the existing B.Ed. programme was felt needed and required immediate implementation. However, it's too early to reach to any conclusions about the impact of the programme, as it has only been a few months that the revised programme is in practice. Various curriculum frameworks have time and again pointed out that teacher education programme have direct impact on education system of any country. Therefore, pedagogical revisions and addition of new courses in the existing programme would certainly result in revolution in the education system. It may be concluded that changes in teacher education programme was indeed required at the ideological as well as practical level. The new course should focus around critical pedagogy and realize the agency in every individual learner so that the true meaning of education may be realized. The new course should produce sensitive and innovative teachers trained in their profession of guiding children in building new knowledge. There is a need of effective campaigning of the new and prolonged programme which can attract quality students to pursue teaching as their profession. It is important to highlight that the new course should be implemented efficiently by all the stake holders involved. Though, critics point to the rundown nature of education and the public has accepted that it is because the teachers shirk work and are the problem. This decline in the status of academics has enabled the politicians, bureaucrats and businessmen to intervene even though they neither understand the ground realities nor accept their own role in running the system down. Therefore, it is expected that all those who have stake in the system of education should contribute in their specific and significant ways. In brief, if talent is to be nurtured, the revised Two Year B. Ed. Programme must overhaul the entire education system based on the ground realities and a holistic perspective. For this, diverse academic voices need to be heard rather than only of those at the top and who have actually been creating the problem and whose agenda may not be real reform.

References :-

1. All India Survey on Higher Education Report, Ministry of Human Resource and Development, Government of India, 2011-12.
2. All India Survey on Higher Education Report, Ministry of Human Resource and Development, Government of India, 2012-13.
3. Goel ER, Chhaya Goyal. Teacher Education Scenario in India: Current Problems & Concerns in MIER Journal of Educational Studies Trends & Practices. 2012 Nov;2(2):231-242.
4. Policy Perspective in Teacher Education: Critique and Documentation, National Council of Teacher Education, New Delhi, 1998.
5. Arora GL, Pranati Panda (Eds.). Fifty Years of Teacher Education in India: Post Independence developments, NCERT, New Delhi, 2004
6. Annual Report, Ministry of Human Resource and Development, Government of India, New Delhi, 2011.
7. Annual Report, Ministry of Human Resource and Development, Government of India, New Delhi, 2012.
8. Annual Report, Ministry of Human Resource and Development, Government of India, New Delhi, 2013.
9. Annual Report, University Grants Commission, Government of India, New Delhi, 2013.
10. All India Survey on Higher Education Report, Ministry of Human Resource and Development, Government of India, 2013-14.
11. Annual Report, Ministry of Human Resource and Development, Government of India, New Delhi, 2014.
12. Annual Report, University Grants Commission, Government of India, New Delhi, 2014.
13. Education For All Towards Quality and Equity India Report, National University of Educational Planning and Administration, New Delhi, 2014.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Enhancing Environmental Education Through Pre-Service Teacher Training: Strategies, Benefits, and the Role of Educators

Ranjana Sharma* **Ramesh Chandra Nagda****

***Assistant Prof. (Education) Nathdwara Institute of Biotechnology & Management, Nathdwara (Raj.) INDIA**
****Principal,The Nobles T.T. College, Kherwara, (Raj.) INDIA**

Abstract : Environmental challenges such as climate change, pollution, deforestation, and biodiversity loss pose significant threats to global sustainability. Education plays a critical role in addressing these challenges, with teachers serving as key facilitators in fostering environmental awareness and sustainable behaviors. This paper explores the role of pre-service teacher training in enhancing the effectiveness of environmental education (EE). It examines how well-structured training programs equip future educators with the knowledge, pedagogical skills, and values necessary to deliver impactful EE. The study highlights the benefits of integrating EE into teacher education programs, including improved content knowledge, increased confidence, interdisciplinary teaching strategies, and action-oriented learning approaches. Additionally, it discusses strategies to enhance EE in teacher training, such as hands-on learning experiences, collaboration with environmental organizations, and the integration of sustainability practices. Furthermore, the paper emphasizes the pivotal role of teachers in developing students' environmental responsibility through curriculum integration, critical thinking, eco-friendly role modeling, and community engagement. By effectively preparing teachers through pre-service training, education systems can foster a generation of environmentally conscious individuals who actively contribute to sustainability efforts.

Keywords: Environmental Education (EE), teacher education, pre-service teacher training,environmental awareness, sustainability.

Introduction - Environmental challenges such as climate change, deforestation, pollution, and biodiversity loss pose significant threats to global sustainability. Education is essential in tackling these challenges, with teachers playing a vital role in raising environmental awareness and encouraging sustainable practices. Achieving sustainable development requires a fundamental shift in society's attitude toward nature and the environment, which can be facilitated through moral and ethical education. It is essential to instill and reinforce environmental values in young minds to develop a sense of responsibility toward nature. By imparting knowledge and sensitizing both students and society about environmental issues, teachers contribute to tackling environmental challenges.

Professional development through training is a key strategy to improve the effectiveness of environmental education (EE). Strengthening pre-service and in-service teacher training programs in EE is crucial for preparing educators who can effectively promote environmental literacy and inspire future generations to engage in sustainable practices[3,4,8]. Studies indicate that many science teachers, who often serve as EE instructors, lack adequate preparation to teach Education for Sustainable Development (ESD). Their understanding of ESD remains limited, highlighting the need to enhance their capacity to teach environmental concepts effectively[9]. While EE is implemented across all levels of education through structured approaches, few institutions offer specialized EE training alongside general teacher education programs[5]. This gap in teacher training programs, both pre-service and in-service, limits the effectiveness of EE integration in curricula.

Since EE intersects multiple disciplines and levels of study, policymakers and education planners should integrate it as a mandatory component across all educational levels. Teacher training curricula should incorporate EE through both theoretical and practical courses. A structured approach to EE should begin by fostering student awareness of the environment, followed by an understanding of the relationship between humans and nature. Teachers play a crucial role in helping students develop the knowledge and skills needed to address environmental challenges while encouraging participation in environmental protection initiatives. From an early stage,

educators must instill environmental knowledge and cultivate a positive attitude toward conservation and sustainability. There is a growing need to organize and implement educational programs focusing on environmental issues, solutions, and attitudes toward preservation and conservation[7].

Environmental education training is one of the most commonly attended programs by science teachers and those specializing in environmental studies. Several initiatives have been conducted, including EE training for prospective teachers[6], EE for sustainability[11], and EE integrated into science learning[10,12]. Such training programs provide teachers with opportunities to utilize natural surroundings as a learning resource, enhancing students' understanding of environmental concepts[1] As mastering subject knowledge and pedagogical skills is essential for achieving Sustainable Development Goals (SDGs), continuous professional development through EE training can significantly contribute to the professionalism of teaching and the advancement of environmental education[2]. This paper highlights the significance of pre-service teacher training in enhancing the effectiveness of environmental education (EE). It explores how equipping future educators with environmental knowledge, attitudes, and skills positively impacts their ability to integrate EE into their teaching practices. Additionally, the paper examines the key benefits of incorporating EE into teacher training programs, emphasizing its role in fostering environmental awareness, critical thinking, and responsible behavior among students. Various strategies for improving EE within teacher training are also discussed, including experiential learning opportunities, interdisciplinary integration, and hands-on activities that bridge theory with practice. Furthermore, the paper underscores the crucial role of teachers in shaping students' environmental consciousness and promoting sustainable practices, ultimately contributing to a more environmentally responsible society.

Research Questions: This study aims to address the following research questions:

1. How does pre-service teacher training influence the effectiveness of environmental education?
2. What are the key benefits of incorporating environmental education into pre-service teacher training programs?
3. What strategies can be adopted to improve environmental education in teacher training programs?
4. How do teachers contribute to enhancing students' environmental awareness and responsibility?

Research Methodology: This paper is theoretical in nature.

Influence of Pre-Service Teacher Training on the Effectiveness of Environmental Education: Pre-service teacher training is essential in enhancing the impact of environmental education (EE). Well-designed training programs equip future teachers with the necessary knowledge, skills, and attitudes to deliver impactful EE in classrooms.

Enhancing content knowledge is essential for effective environmental education, as teachers need a strong understanding of environmental concepts, sustainability, and ecological interconnections. Pre-service teacher training programs are instrumental in establishing this foundation by incorporating subjects like environmental science, climate change education, and sustainable development. These programs provide future educators with thorough and precise knowledge, empowering them to teach environmental topics with confidence and clarity. A well-rounded understanding of these concepts allows teachers to present complex environmental issues in an accessible and engaging manner, helping students develop a deeper awareness of sustainability and ecological responsibility.

Developing pedagogical skills is also crucial for effective environmental education, as it enables teachers to create engaging and student-centered learning experiences. Pre-service training equips future educators with interactive teaching strategies such as inquiry-based learning, problem-solving, and experiential education, which encourage students to think critically about environmental issues. Additionally, methods like outdoor education, project-based learning, and interdisciplinary approaches make environmental education more practical and relevant by connecting classroom lessons to real-world environmental challenges. By mastering these teaching strategies, educators can foster deeper student engagement and inspire meaningful discussions on sustainability and ecological responsibility.

Fostering environmental attitudes and values in teachers is essential for promoting a meaningful and impactful approach to environmental education. Educators with strong environmental awareness and a personal commitment to sustainability are more likely to inspire students to develop a sense of responsibility toward the environment. Pre-service training programs that incorporate eco-literacy and value-based learning help cultivate this intrinsic motivation, encouraging teachers to integrate environmental education into their teaching practices. By fostering a deep appreciation for nature and sustainability, these programs empower educators to instill similar values in their students, ultimately contributing to a more environmentally conscious generation.

Building confidence and competence is crucial for pre-service teachers, as many feel unprepared to teach environmental education due to a lack of knowledge or effective teaching methods. Hands-on experiences, micro-teaching, and exposure to real-world environmental challenges help them develop the confidence and skills needed to deliver impactful lessons. Similarly, encouraging interdisciplinary approaches enhances the effectiveness of environmental education by integrating it across subjects such as science, social studies, ethics, and policy

discussions. This interdisciplinary connection enables teachers to present environmental concepts in a more holistic and meaningful way.

Providing access to resources and networks further strengthens pre-service training by introducing educators to environmental organizations, teaching materials, and technological tools that support environmental education. Collaborations with NGOs, environmental agencies, and community-based projects enhance the practical application of environmental education in schools, giving teachers valuable opportunities to engage with real-world environmental issues. Additionally, promoting action-oriented education ensures that environmental learning leads to tangible behavior changes. Training programs that incorporate service-learning projects, eco-clubs, and community engagement activities encourage teachers to design lessons that inspire students to take real-world environmental action.

Despite the benefits of environmental education, many teachers face challenges such as curriculum constraints, lack of administrative support, and inadequate resources. Pre-service training that includes discussions on overcoming these barriers equips future educators with strategies to integrate environmental education effectively, even in challenging circumstances. By addressing these obstacles, training programs empower teachers to become advocates for environmental education, fostering a generation of students who are knowledgeable, engaged, and committed to sustainability.

Key Benefits of Incorporating Environmental Education into Pre-Service Teacher Training Programs: Incorporating environmental education (EE) into pre-service teacher training programs provides a range of key benefits that enhance both teacher preparedness and student outcomes. Pre-service teachers gain a solid understanding of environmental concepts, sustainability, and ecological issues, allowing them to deliver accurate and well-informed lessons. Training in EE equips educators with effective, student-centered teaching strategies such as inquiry-based learning, experiential education, and project-based approaches, making lessons more engaging and interactive. Many teachers may feel unprepared to teach environmental topics, but pre-service training builds their confidence through hands-on experiences, lesson planning, and practice teaching. Additionally, exposure to EE fosters environmental literacy and a personal commitment to sustainability, encouraging teachers to integrate these values into their lessons and inspire students to adopt eco-friendly behaviors.

EE training also promotes an interdisciplinary approach, allowing teachers to incorporate sustainability topics across various subjects such as science, social studies, ethics, and policy discussions. Pre-service training connects future educators to environmental organizations, teaching materials, and digital tools, providing resources that enhance the learning environment. Furthermore, EE training encourages action-oriented education by involving students in real-world projects, eco-clubs, and community engagement activities that inspire them to take environmental action. Teachers are also prepared to overcome barriers, such as curriculum limitations and lack of resources, by gaining strategies to integrate EE effectively despite challenges. Finally, teachers trained in EE are more likely to inspire students to develop critical thinking skills, environmental responsibility, and sustainable habits, creating a lasting impact on student engagement and contributing to a more environmentally conscious future generation.

Strategies to Improve Environmental Education in Teacher Training Programs: Enhancing the integration and effectiveness of environmental education (EE) in teacher training programs requires strategic approaches. Incorporating experiential learning opportunities—such as field trips, outdoor classrooms, and community-based projects—helps pre-service teachers bridge theoretical knowledge with practical applications, strengthening their ability to teach environmental concepts effectively. Additionally, embedding EE across various disciplines, including social studies, ethics, and the arts, fosters a holistic understanding of environmental issues. This interdisciplinary approach encourages educators to view EE as a fundamental, cross-cutting theme that enriches the overall curriculum.

Training programs should also focus on specific pedagogical strategies for teaching EE, such as project-based learning, inquiry-based learning, and problem-solving approaches, which foster critical thinking and action-oriented learning. Emphasizing eco-literacy and sustainability practices allows future teachers to model sustainable behaviors in their classrooms, promoting values like energy conservation, waste reduction, and green technologies. Collaborations with environmental organizations and NGOs can provide teachers with valuable resources, guest speakers, and service-learning opportunities that enhance the environmental education experience.

Incorporating technology and digital tools, such as environmental apps and virtual field trips, can make EE more engaging and interactive. Teacher training programs should also offer continuous professional development opportunities, including workshops and conferences, to keep educators up-to-date on the latest environmental issues and teaching strategies. Encouraging reflective practices helps teachers connect their personal environmental values to their teaching, fostering a deeper commitment to sustainability. Additionally, fostering collaboration and networking with fellow educators, environmental experts, and community leaders provides teachers with fresh ideas and resources to enhance their teaching. Lastly, creating a school culture of sustainability

within teacher training programs by adopting eco-friendly practices reinforces the importance of environmental stewardship. By adopting these strategies, teacher training programs can better prepare future educators to teach environmental education in innovative and impactful ways.

The Role of Teachers in Enhancing Students' Environmental Awareness and Responsibility: Teachers play a critical role in fostering environmental awareness and responsibility among students by shaping how they perceive and interact with the environment. They contribute in several impactful ways. By incorporating environmental education into the curriculum, teachers embed topics such as ecosystems, human impact, and sustainability across subjects like science, social studies, and language arts, helping students understand the interconnectedness of the world around them. This integration highlights the urgency and relevance of environmental issues in students' daily lives. Teachers also model sustainable practices, demonstrating eco-friendly behaviors like waste reduction, energy conservation, and recycling. When students see their teacher's practicing sustainability, they are more likely to adopt similar habits.

Through promoting critical thinking and problem-solving skills, teachers encourage students to engage with real-world environmental challenges, empowering them to explore solutions and develop a deeper understanding of sustainability. Teachers also facilitate environmental action and engagement by organizing initiatives like eco-clubs and service-learning projects, motivating students to take responsibility for positive change in their communities. By creating spaces for open discussions on environmental topics, teachers help students develop a sense of environmental justice, raising awareness about issues like climate change and pollution.

Teachers who connect students to the outdoors, through field trips to parks or reserves, help them develop a deeper appreciation for nature and an understanding of the importance of protecting natural resources. Instilling values of sustainability in their lessons, teachers foster a sense of responsibility and stewardship, teaching students the long-term benefits of making environmentally conscious choices. Finally, by empowering students to become advocates for environmental causes, teachers provide the knowledge and skills needed to participate in campaigns and raise awareness. Through these efforts, teachers not only educate students about environmental issues but also inspire them to act with care and responsibility, contributing to the development of environmentally conscious citizens.

Conclusion: Incorporating environmental education into pre-service teacher training programs is essential for equipping future educators with the knowledge, skills, and values necessary to address the environmental challenges of the 21st century. By enhancing content knowledge, developing pedagogical skills, fostering environmental attitudes, and providing hands-on learning experiences, pre-service training programs can empower teachers to deliver impactful environmental education in the classroom. Teachers, in turn, play a critical role in shaping students' environmental awareness and responsibility, contributing to the development of a sustainable, environmentally conscious society.

References;-

1. Cheah, K. S. (2019). Implementation of Environmental Education Program (EEP) in A Nature Education School (NES): Strategies, Benefits & Challenges. *MOJEM: Malaysian Online Journal of Educational Management, 7*(2), 92-121. Retrieved from https://mojem.um.edu.my/article/view/17308
2. Darmawan, M. D., & Dagamac, N. H. (2021). Situation of environmental education in senior high school programs in Indonesia: Perspectives from the teachers of Palembang. *Interdisciplinary Journal of Environmental and Science Education, 17*(3), e2241. https://doi.org/10.21601/ijese/9605
3. Eliyawati, E., Widodo, A., Kaniawati, I., & Fujii, H. (2023a). The Development and Validation of an Instrument for Assessing Science Teacher Competency to Teach ESD. Sustainability, 15(4), 3276. https://doi.org/10.3390/su15043276
4. Eliyawati, E., Widodo, A., Kaniawati, I., & Fujii, H. (2023b). Merancang Program Pelatihan Guru Yang Dapat Mengembangkan Kompetensi Guru IPA dalam Mengajarkan ESD. Paper presented at the Proceeding Seminar Nasional IPA, Semarang.
5. Gautam, G. (2015). Need of Environmental Education in Teacher Education, International Journal for Research in Education (IJRE), 4(7), 34-37.
6. Gulomiddinovna, A. U., & Musayevich, O. S. (2022). Ways of environmental education in the teaching of chemistry in higher education. Asian Journal of Research in Social Sciences and Humanities, 12(5), 341-343.http://dx.doi.org/10.5958/2249-7315.2022.00293.3
7. Kaur, S. (2013). Role of Teachers in Imparting Environmental Education for Sustainable Development. International Educational E-Journal, 2(2), 10-16.
8. Mulyadi, D., Ali, M., Ropo, E., & Dewi, L. (2023). Correlational Study: Teacher Perceptions and The Implementation of Education for Sustainable Development Competency for Junior High School Teachers. Journal of Education Technology, 7(2). https://doi.org/10.23887/jet.v7i2.62728
9. Novidsa, I., Purwianingsih, W., & Riandi, R. (2020). Exploring knowledge of prospective biology teacher about education for sustainable development. JPBI (Jurnal Pendidikan Biologi Indonesia), 6(2), 317-326. https://doi.org/10.22219/jpbi.v6i2.12212
10. Purwianingsih, W., Novidsa, I., & Riandi, R. (2022).

Program for Integrating Education for Sustainable Development (ESD) into Prospective Biology Teachers' Technological Pedagogical Content Knowledge (TPACK). Jurnal Pendidikan IPA Indonesia, 11(2). Retrieved from https://journal.unnes.ac.id/nju/index.php/jpii/a rticle/view/34772

11. Wahyudin, D., & Malik, R. S. (2019). Teaching environmental education for sustainable development: strategies and challenges. *Journal of Sustainable Development Education and Research, 3*(1), 51-70. https://doi.org/10.17509/jsder.v3i1.17172
12. Wichmann, C.-S., Fischer, D., Geiger, S. M., HonoratoZimmer, D., Knickmeier, K., Kruse, K., Thiel, M. (2022). Promoting pro-environmental behavior through citizen science? A case study with Chilean schoolchildren on marine plastic pollution. Marine Policy, 141, 105035. https://doi.org/10.1016/j.marpol.2022.105035

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Comparison of Perceived Motivational Climate by Male and Female Intercollegiate Players of Selected Team Games

Manish Mukherjee* **Dr. Jai Shankar Yadav****

*Research Scholar (Physical Education) Dr. CV Raman University, Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.) INDIA
** Professor and Dean (Education and Physical Education) Dr. CV Raman University, Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.) INDIA

Abstract : The present study aims to assess the difference in perceived motivational climate by male and female players from selected team games namely basketball, volleyball and soccer. In the present study, 300 intercollegiate players from Chhattisgarh were selected in which equal representation was given to male and female players. The sample consists of 150 male and 150 female players. Out of these, 50 male and 50 female basketball players, 50 male and female volleyball players and 50 male and 50 female soccer players were selected. The age group of the sample was 18 to 27 years. To assess athletes' perceptions of the motivational climate, the Perceived Motivational Climate in Sport Questionnaire – 2 (PMCSQ-2) prepared by Newton, Duda, and Yin (2000) was used. The result reveals male players high perception of both mastery and performance climate as compared to female players. Hence it can be concluded that male players' higher mastery and performance climate perceptions are consistent with the theory of gender socialization, competitiveness, and motivation differences and therefore an inclusive training program is prepared for a balanced motivational climate for both genders.
Keywords: Motivational Climate, male and female players, team games.

Introduction - Motivation is a key element of sports performance and athletes experience in sports. Motivation also plays a part in the efforts put in by athletes. Motivation is a psychological force that drives a person to think, behave and act towards achieving a goal with sustained effort. Motivation affects decision-making processes and it shapes human acts that are beneficial for success in allied fields in life. Motivation can be extrinsic or intrinsic. The term "motivational climate" is derived from achievement goal theory. Motivational climate is related to environmental factors. How these environmental factors affect motivational climate i.e. regarding a person's goal setting and perception of abilities. Nicholls (1989) and Elliot (1999) opined that personal and social attributes form a motivational climate which then affects the goals pursued by an individual. In simple terms, motivational climate defines the environment created by the surroundings and coaching induced atmosphere around a person. McArthur and Baron (1983) and Nicholls (1989) opined that every individual has a perception of success and goal achievement which are their own beliefs. Motivational climates are mainly of two types i.e. mastery and performance climate. Biddle et al. (1995) suggest that motivation is influenced by personal goals as well as situational factors i.e. if a person is more inclined to self-improvement a mastery climate will be useful for success. It has been opined that a mastery climate is conducive and more suited to achieving goals (success) because it encourages the development of new skills which eventually helps in winning and performing better than others. The second motivational climate described in achievement goal theory is performance climate. Ames and Archer, 1988 defined it as a climate created by trainers, coaches and teachers which stressed the need for competition, comparing achievement with others and winning as the sole objective. The present study will offer useful information on gender-specific differences in the perception of motivational climate by players. This will enable coaches to customize their training plan to create a supportive environment for players and facilitate athletes' performance and motivation.

Review Of Literature

Castro-Sánchez et al. (2018) explored the relationship between motivational climate, emotional intelligence, and anxiety in Spanish athletes from different team and individual sports. **Jakobsen (2021)** investigated how ice hockey players' perceptions of coach support, motivation, and goal orientation are connected. It was observed that when young players feel that their decisions are supported

by coaches, then they are much more motivated to adopt task-oriented pursuits to improve their game with more rigorous effort. **Morales-Sánchez et al. (2022)** assessed young soccer players' perception of motivational climate and its impact on competitive anxiety and self-confidence. It was found that an increase in ego orientation leads to a decrease in self-confidence and an increase in anxiety in young soccer players. In contrast, the task-oriented climate was positively linked to self-confidence in soccer players. Male players perceive a stronger ego climate than girls while ego orientation has a more detrimental effect on female players than male players. **Tomar and Shubam Kumar (2023)** highlighted the impact of motivational climate on badminton players' success. A positive climate, with supportive coaching and teamwork, boosts motivation, dedication, and growth. Encouraging intrinsic motivation and resilience helps players excel. **Rismayanthi et al. (2023)** in this study found that male athletes are significantly more motivated to achieve success than female athletes but the result was not proven statistically. **Azzahra et al. (2024)** used a quantitative descriptive method to examine the motivational climate of athletes based on the nature of sports. Results showed that team athletes had a slightly higher motivational climate than individual athletes. **Kiss and Nagy (2024)** explored the link between sports motivation and psychological factors like perceived motivational climate, coping skills, and anxiety in 293 Hungarian ice hockey players. The authors emphasized the need to address amotivation to enhance performance, self-confidence, and resilience in athletes. **Nunes et al. (2024)** explained the effect of various coaching styles on soccer players' perception towards motivational climate. It was concluded that coaching behaviour is directly linked to players' thoughts on the training environment and while a supportive and feedback-driven approach creates a task-oriented climate whereas too much punishment and lack of encouragement lead to the creation of an ego-oriented climate.

Objective: The present study aims to assess the difference in perceived motivational climate by male and female players from selected team games namely basketball, volleyball and soccer.

Hypothesis: There will be a significant dissimilarity in the perceived motivational climate by male and female players.

Methodology: The Following Methodological Steps Were Taken To Conduct The Present Study.

Sample: The sample consists of 150 male and 150 female players. Out of these, 50 male and 50 female basketball players, 50 male and female volleyball players and 50 male and 50 female soccer players were selected. The age group of the sample was 18 to 27 years

Tools:

Perceived Motivational Climate in Sport Questionnaire – 2 (PMCSQ-2): To assess athletes' perceptions of the motivational climate, the Perceived Motivational Climate in Sport Questionnaire – 2 (PMCSQ-2) prepared by Newton, Duda, and Yin (2000) was used. The questionnaire assesses motivational climate in two dimensions namely mastery-orientated and performance-oriented goals. It consists of 33 items of which 17 items are for the assessment of mastery-oriented climate and 16 items for the assessment of performance-oriented climate. In this questionnaire, subjects rate statements on a 5-point Likert Scale about their perception of the motivational climate in a team environment. The five choices are strongly disagree, disagree, neutral, agree and strongly agree with a numerical weightage of 1 to 5. This questionnaire is highly reliable and valid.

Procedure: 150 male and 150 female intercollegiate players were selected from different team games namely basketball, volleyball and soccer. Perceived Motivational Climate in Sport Questionnaire – 2 (PMCSQ-2) prepared by Newton, Duda, and Yin (2000) was administered and responses were scored for mastery and performance climate. After the classification of data, an independent sample 't' test was applied and results were obtained.

Result And Discussion

Table 1 (See in last page)

Results given in Table 1 indicate that male players (55.50±13.38) have a significantly higher perception of mastery climate as compared to female players (48.68±14.32). The t-value of 4.26 proves that the mean difference of 6.82 is statistically significant (p<.01).

Results given in Table 1 indicate that male players (48.30±12.74) have significantly higher perceptions of performance climate as compared to female players (43.78±11.61). The t-value of 3.21 proves that the mean difference of 4.52 is statistically significant (p<.01).

Results in Table 1 show that male players perceive both the characteristics of motivational climate (mastery and performance) more favourably than female players.

Table 2 (See in last page)

Results given in Table 2 indicate that male basketball players (57.12±10.90) have a significantly higher perception of mastery climate as compared to female basketball players (48.48±16.14). The t-value of 3.13 proves that the mean difference of 8.64 is statistically significant (p<.01).

Results given in Table 2 indicate that male basketball players (48.16±10.42) have significantly higher perceptions of performance climate as compared to female basketball players (43.92±9.73). The t-value of 2.10 proves that the mean difference of 4.24 is statistically significant (p<.05).

Results in Table 2 show that male basketball player's perception of both the characteristics of motivational climate (mastery and performance) are more favourable than female basketball players.

Table 3 (See in last page)

Results given in Table 3 indicate that male volleyball players (55.22±13.59) have a significantly higher perception of mastery climate as compared to female volleyball players

(48.82±11.76). The t-value of 2.51 proves that the mean difference of 6.40 is statistically significant (p<.05).

Results given in Table 3 indicate that although male volleyball players (46.60±13.79) have a higher perception of performance climate as compared to female volleyball players (44.32±11.51). The t-value of 0.89 did not prove that the mean difference of 2.28 was statistically significant.

Table 4(See in last page)

Results given in table 4 indicate that although male soccer players (54.16±15.37) have a higher perception of mastery climate as compared to female soccer players (48.74±15.00). The t-value of 1.78 did not prove that the mean difference of 5.42 is statistically significant (p>.05).

Results given in Table 4 indicate that male soccer players (50.16±13.73) have significantly higher perceptions of performance climate as compared to female soccer players (43.12±13.48). The t-value of 2.58 proves that the mean difference of 7.04 is statistically significant at 0.01 level.

Discussion: The result reveals male players high perception of both mastery and performance climate as compared to female players. This may be due to gender socialization which encourages boys to be more competitive and for that, they need to acquire and learn new skills. The higher perception of performance climate denotes that male players are more inclined towards social identity and rewards. Mastery climates augment intrinsic motivation by nurturing capability and self-sufficiency, which male players may experience more. In contrast, female players' lower insight of performance climate indicates that they are less prejudiced by external competition or reward or find it less conducive to their motivation and growth.

Conclusion:

1. The perception of mastery climate in male players was higher as compared to female players.
2. The perception of performance climate in male players was higher as compared to female players.
3. The perception of both types of motivational climate was higher in male players as compared to female players across different team games namely basketball, volleyball and soccer.

Hence it can be concluded that male players' higher mastery and performance climate perceptions are consistent with the theory of gender socialization, competitiveness, and motivation differences and therefore an inclusive training program is prepared for a balanced motivational climate for both genders.

References:-

1. Ames, C. (1992a). Classrooms: goals, structures, and motivation. Journal of Educational Psychology, 84, 261-271.
2. Azzahra, S. F., Fitri, M., Zaky, M., & Apriady, H. (2024). Understanding motivational climate in sports: A comparative perspective on team and individual athletes Syabani Fatimah Azzahra. Jurnal SPORTIF/ : Jurnal Penelitian Pembelajaran, 10(4), 1–16.
3. Biddle, S. J. H., Cury, F., Goudas, M., Sarrazin, P., Famose, J. P., & Durand, M. (1995). Development of scales to measure perceived physical education class climate: A cross-national project. British Journal of Educational Psychology, 65, 341-358.
4. Castro-Sánchez, M.; Zurita-Ortega, F.; Chacón-Cuberos, R.; López-Gutiérrez, C.J.; and Zafra-Santos, E. (2018). Emotional Intelligence, Motivational Climate and Levels of Anxiety in Athletes from Different Categories of Sports: Analysis through Structural Equations. Int. J. Environ. Res. Public Health, 15, 894.
5. Elliot, A. (1999). Approach and avoidance motivation and achievement goals. Educational Psychologist, 34, 169-189.
6. Jakobsen, A.M. (2021). The relationship between Motivation, Perceived Motivational Climate, Task and Ego Orientation, and Perceived Coach Autonomy in young ice hockey players. Balt J Health Phys Act.; 13(2):79-91.
7. Kiss, C. and Nagy, A. (2024). Motivation Profiles, Perceived Motivational Climate, Coping Perceptions and Anxiety Among Elite Young Ice Hockey Players. Physical Culture and Sport. Studies and Research, Vol. 105, 65-81.
8. McArthur, L. Z., & Baron, R. M. (1983). Toward an ecological theory of social perception. Psychological Review, 90, 215-238.
9. Morales-Sánchez, V., Caballero-Cerbán, M., Postigo-Martín, C., Morillo-Baro, J.P., Hernández-Mendo, A. and Reigal, R.E. (2022). Perceived Motivational Climate Determines Self-Confidence and Precompetitive Anxiety in Young Soccer Players: Analysis by Gender. Sustainability; 14(23):15673.
10. Nicholls, J. G. (1989). The competitive ethos and democratic education. Cambridge, MA: Harvard University Press.
11. Nunes, N.A., Doncom, T. and Discombe, R. (2024). Variation in Perceived Motivational Climate in Sports Among Young Football Players: A Case Study During a Tournament Preparation. Advances in Social Sciences and Management, Vol-2, No-2, pp. 17-25.
12. Rismayanthi, C., Tomoliyus, A.A., and Fauzi, E.R.S. (2023). Analysis of Achievement Motivation in Male and Female Tennis Athletes at the Competitive Level of Yogyakarta," International Journal of Human Movement and Sports Sciences, Vol. 11, No. 5, pp. 1168-1173.
13. Tomar, V.S. and Shubam Kumar (2023). Enhancing Performance and Passion in Badminton: The Role of Motivational Climate. International Journal of Science and Research, 12(8), 7-9.

Table 1: Comparison of Perception of the Motivational Climate by Male and Female Players

Motivational Climate	Male Players (N=150)		Female Players (N=150)		Mean Diff.	't'
	Mean	S.D.	Mean	S.D.		
Mastery Climate	55.50	13.38	48.68	14.32	6.82	4.26**
Performance Climate	48.30	12.74	43.78	11.61	4.52	3.21**

** p value < 0.01

Table 2: Comparison of Perception of the Motivational Climate by Male and Female Basketball Players

Motivational Climate	Male Basketball Players (N=50)		Female Basketball Players (N=50)		Mean Diff.	't'
	Mean	S.D.	Mean	S.D.		
Mastery Climate	57.12	10.90	48.48	16.14	8.64	3.13**
Performance Climate	48.16	10.42	43.92	9.73	4.24	2.10*

** p value < 0.01, * p value < 0.05

Table 3: Comparison of Perception of the Motivational Climate between Male and Female Volleyball Players

Motivational Climate	Male Volleyball Players (N=50)		Female Volleyball Players (N=50)		Mean Diff.	't'
	Mean	S.D.	Mean	S.D.		
Mastery Climate	55.22	13.59	48.82	11.76	6.40	2.51*
Performance Climate	46.60	13.79	44.32	11.51	2.28	0.89NS

* p value < 0.05, NS Not Significant

Table 4: Comparison of Perception of the Motivational Climate between Male and Female Soccer Players

Motivational Climate	Male Basketball Players (N=50)		Female Basketball Players (N=50)		Mean Diff.	't'
	Mean	S.D.	Mean	S.D.		
Mastery Climate	54.16	15.37	48.74	15.00	5.42	1.78 NS
Performance Climate	50.16	13.73	43.12	13.48	7.04	2.58**

** p value < 0.01, NS Not Significant

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Chemical Study of Indigenous Plants for Respiratory Health of Nimar Region of Madhya Pradesh

Vineeta Dawar* **Dr. Pramod Pandit****

***Research Scholar, Holkar Science College, Indore (M.P.) INDIA**
****HOD (Chemistry) Govt. P.G. College, Barwani (M.P.) INDIA**

Abstract: In recent years, there has been a growing focus on indigenous plants that have been traditionally used by local communities for the treatment of various ailments. In the Nimad region of Madhya Pradesh, India, respiratory diseases are a significant health concern, particularly among rural populations (Prakash 2024). The use of medicinal plants by indigenous communities in the Nimad region of Madhya Pradesh (M.P.), India (Figure 1.1), represents a longstanding tradition deeply rooted in cultural heritage and practical healthcare solutions.

This research study documents the medicinal uses and local names of eight native plants that are commonly used by folk healers. The plants were collected, dried and ground into powder for phytochemical and antimicrobial analysis. The study focused on preliminary phytochemical screening and spectroscopic analysis of these plants that are used in both Monoherbal and polyherbal formulations to treat respiratory disorders.

Keywords: Indigenous Plants, Respiratory Health, Nimar region.

Introduction - In rural and tribal regions, where access to modern healthcare facilities is scarce, traditional medicine plays a vital role in meeting the healthcare needs of communities. These areas, rich in natural biodiversity, rely heavily on local healers and ethnobotanical knowledge passed down through generations. Medicinal plants like **Neem**, **Tulsi**, and **Amla** are commonly used to treat ailments such as fevers, skin conditions, and respiratory issues. Tribal healers prepare remedies using roots, leaves, and fruits, often combined with spiritual practices.

Research emphasizes the importance of medicinal plants such as aloe, ginger, turmeric and Tulsi in addressing numerous common respiratory conditions. These plants are rich in bioactive compounds, including tannins, alkaloids, sugars, terpenoids, steroids, and flavonoids, which have various therapeutic applications (Shrinet 2021; Chanda and Ramachandra 2019). Certain medicinal plants, especially *Echinacea purpurea* and *Zingiberofficinale*, show promise as adjunctive treatments for respiratory disorders like chronic obstructive pulmonary disease (COPD), bronchitis, asthma, the common cold, cough, and whooping cough (Rayburn 2007).

Leaves from plants such as Acacia torta, Ocimum sanctum, Convolvulus pluricaulis, and Acalyphaindica are frequently utilized for treating pneumonia, bronchitis, asthma, colds, and coughs (Firdaus *et al* 2024). The study seeks to highlight particular medicinal plants with therapeutic potential, offering valuable insights for researchers in herbal medicine (Anand *et al* 2019). These plants may serve as innovative therapeutic agents in combating respiratory diseases (Izah*et al* 2024).

The study of physico-chemical properties of Indigenous medicinal plants for respiratory diseases is essential in understanding the therapeutic potential of these traditional remedies (Saeidy*et al* 2021). Indian medicinal plants have long been used in Ayurveda and traditional medicine to treat various ailments, including respiratory diseases. By analyzing the physico-chemical properties of these plants, researchers can identify key compounds responsible for their medicinal properties, such as antioxidants, anti-inflammatory agents, and antimicrobial substances (Sinha 2016; Shahrajabian and Sun 2023).

Fig 1.1: Madhya Pradesh, Nimar Region

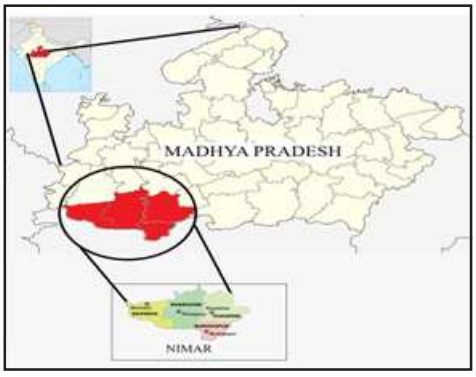

Source:https://en.wikipedia.org/wiki/List_of_districts_of_Madhya_Pradesh

Objective of the study: To conduct chemical study of

native plants for respiratory health of Nimar region of Madhya Pradesh.

Material and Methods : This section details the procedures and methodologies employed in the physico-chemical study of certain indigenous medicinal plant parts used for respiratory diseases by the tribal community of the Nimad region of Madhya Pradesh (M.P.). The objective of this study is to evaluate the chemical composition, phytochemical properties, and potential therapeutic benefits of these plants. This investigation is crucial for validating traditional medicinal practices and possibly discovering new therapeutic agents.

The study documented medicinal uses and vernacular names of eight indigenous plants commonly used by folk practitioners. The plants were collected, dried, and ground into powder for phytochemical and antimicrobial analysis. The study focused on the preliminary phytochemical screening and spectroscopic analysis of these plants, which are used in both monoherbal and polyherbal formulations to treat respiratory disorders.

This study undertook the preliminary phytochemical screening and spectroscopic analysis of these 8 plants.

Name of Indigenous plants for respiratory health

S.	Symbol	Plant Name	Family Name	Plant Parts
1	P_1	*Albizialebbeck*	Fabaceae	Seed
2	P_2	*Curcuma amada*	Zingiberaceae	Rhizome
3	P_3	*Madhucaindica*	Sapotaceae	Flower
4	P_4	*Solanum xanthocarpum*	Solanaceae	Berries
5	P_5	*Lantana camara*	Verbenaceae	Leaves
6	P_6	*Acacia nilotica*	Fabaceae	Bark
7	P_7	*Ocimum sanctum*	Lamiaceae	Leaves
8	P_8	*Zingiberofficinale*	Zingiberaceae	Rhizome

Results and Discussion: The discussion interprets these results in the context of existing literature and their implications for traditional medicine and potential therapeutic applications. Herbal medicine, or ethnomedicine, is a traditional healing practice used by indigenous people to treat human and animal illnesses. It integrates cultural perspectives on health and illness and is increasingly important due to antibiotic resistance. Phytochemicals from plants are used in ethnopharmacology to treat plant-based illnesses, but their chemical compositions are still unknown.

Analysis of the plant used in respiratory disorders revealed the presence of phytoconstituents including n-Hexadecanoic acid, 9,12-Octadecadienoic acid, Phthalic acid, bis(2-pentyl) ester, Hentriacontane, 17-Pentatriacontene, Vitamin E, Campesterol, Tetradecane, (Z,Z)-9-Hexadecenoic acid, 9-octadecenyl ester, Tetrapentacontane, 1,54-dibromo, α-Curcumene,β-Curcumene, Camphor, Curzerenone, 1,8-Cineole, Curcumin, Demethoxy Curcumin, Bis-Demethoxy Curcumin, Caffeic Acid, Ferulic Acid, Ethane, 1,2-bis[(4-amino-3-furazanyl)oxy]-, 1,3-Cyclopentenedione, 5-Isopropyl-2-methylbicyclo[3.1.0]hex-2-ene,1,2-Cyclohexanedione, Ethanone, 1-(6-methyl-7-oxabicyclo [4.1.0]hept-1-yl)-, 7-Octen-2-ol, 2,6-dimethyl-, Propanoic acid, 2-oxo-, 1-(Methylencyclopropyl)-ethanol, 2,2,6-Trimethyl-3,5-heptanedione,1-Pyrrolid-2-one,N-carboxyhydrazide, Hexanoic acid, ethyl ester, Dodecanoic acid, (1R,3R,4R,5R)-(-)-Quinic acid, Tetradecanoic acid, 3,7,11,15-Tetramethyl-2-hexadecen-1-ol, n-Hexadecanoic acid, Hexadecanoic acid, ethyl ester, Phytol, 9,12-Octadecadienoic acid (Z,Z)-, 9,12,15-Octadecatrienoic acid, (Z,Z,Z)-, 2-Propanone, 1-hydroxy-, Propargyl alcohol, Furfuryl alcohol, 2,3-Dihydro-2,5-dihydroxy-6-methyl-4H-pyran-4-one, Cyclohexasiloxane, dodecamethyl-, 4-Vinylguaiacol, Bicyclo[5.2.0]nonane, 2-methylene-4,8,8-trimethyl, Germacrene-D, 4-Epi-cubedol, Caryophyllene oxide, Oct-2-ynoic acid, Bergamotol, Z-Alpha-Trans, Neophytadiene, Octadecanoic acid, 1,E-6,Z-11-Hexadecatriene, 9,12-Octadecadienoyl chloride, (Z,Z)-, 9-Octadecenamide, 12-Hydroxy-9-Octadecenoic acid (Ricinolic acid), Stigmast-5-En-3-ol, Oleate, Stigmast-5-En-3-ol, (3.Beta.)-, Bicyclo[2.2.1]heptan-2-ol, 1,7,7-trimethyl, Cyclohexane, 1-ethenyl-1-methyl-2,4-bis(1-methylethenyl)-, [1S-(1.alpha.,2.beta.,4.beta.), 1,4,8-Cycloundecatriene, 2,6,6,9-tetramethyl-, (E,E,E), decahydro-4a-methyl-1-methylene-7-(1-methylethenyl)-, [4aR-(4a.alpha.,7.alph)], 1,1,4,7-Tetramethyldecahydro-1H-cyclopropa[e]azulene-4,7-diol, Neophytadiene, Ethyl 9-hexadecenoate, Dotriacontane, 1-iodo-, Tetrapentacontane, Hexatria contane, α-Pinene, Camphene, β-Pinene, 1-Phellandrene, 1,8-Cineol, Z-Citral, E-Citral, Ar-Curcumene, Zingiberene, α-Farnesene, attributed activity like antibronchitic, antibacterial, bronchodilator, antioxidant, COX-2 inhibitor, antispasmodic, bronchotonic, antitussive, antipharyngitic candidicidal, antiviral, anticancer (lung), anticystic antibacterial, antiseptic, antiedemic, antimicrobial, analgesic and anti-inflammatory properties. In the present investigation the antimicrobial activity of benzene, acetone, chloroform, ethyl acetate and distilled water extracts of 8 (eight) plants against 6 (six) clinically important disease-causing microorganisms was analyzed using disk diffusion methods.

Various plant species used in treating respiratory disorders include P1, P2, P3, P4, P5, P6, P7, P8. Extracts from these plants demonstrated sensitivity to the pathogen *Streptococcus pneumoniae* and showed inhibitory effects against *Corynebacterium diphtheriae*. Additionally, these extracts exhibited antimicrobial activity against *Mycobacterium tuberculosis* and sensitivity to *Pseudomonas aeruginosa*. *Bordetella pertussis* also displayed antimicrobial sensitivity to extracts from Pistacia, a plant traditionally used for respiratory issues. It is concluded that *Streptococcus pneumoniae*, *Corynebacterium diphtheriae*, *Candida albicans*, and *Streptococcus pharyngitis* were particularly sensitive to the extracts from these respiratory disorder treatments.

Furthermore, the extracts reacted to all tested Gram-negative bacteria.

Conclusion: The comprehensive physico-chemical study of indigenous medicinal plant parts used for respiratory diseases by the tribal community of the Nimad region in Madhya Pradesh (M.P.) has yielded significant insights into the traditional medicinal practices and the potential therapeutic properties of these plants. This research has underscored the importance of integrating traditional knowledge with modern scientific techniques to validate and potentially expand the applications of these natural remedies in contemporary medicine.

The tribal communities of Nimad, including the Bhil, Bhilala, and Barela tribes, have utilized local flora for generations to treat respiratory ailments such as asthma, bronchitis, and tuberculosis. The ethnobotanical survey conducted as part of this research provided a wealth of information on the methods of preparation, dosage, and administration of these plants, thus preserving this invaluable traditional knowledge.

Infectious agents, which are mostly transmitted by respiratory droplets expelled while coughing, sneezing, talking, singing, or physical exertion, play a critical role in the research of respiratory disorders. The danger of transmission is greatly increased by crowded environments and close closeness. The common pathogens that cause respiratory infections include adenoviruses, rhinoviruses, and human coronaviruses. Bacteria like Mycobacterium TB and Streptococcus pneumoniae also play a significant role. Vulnerable groups, such as the elderly, young children, and those with long-term medical issues, are disproportionately affected by these illnesses.

A wide variety of secondary metabolites with distinct solubility profiles were identified by phytochemical investigations of these plants. Potential therapeutic uses and the choice of suitable extraction techniques are informed by this variety in solubility, which ranges from wide to selective. Flavonoids, tannins, alkaloids, and steroids are among the important substances that have been found; each has unique solubility properties that affect their potential as therapeutic agents.

References:-

1. Abate, L., Bachheti, R. K., Tadesse, M. G., &Bachheti, A. (2022). Ethnobotanical uses, chemical constituents, and application of Plantagolanceolata L. *Journal of Chemistry*, *2022*(1), 1532031.
2. Ahmad, I., Zahin, M., Aqil, F., Hasan, S., Khan, M. S. A., &Owais, M. (2008). Bioactive compounds from Punicagranatum, Curcuma longa and Zingiberofficinale and their therapeutic potential. *Drugs of the Future*, *33*(4), 329.
3. Ahmed, D., Kumar, V., Verma, A., Gupta, P.S., Kumar, H., Dhingra, V., Mishra, V. and Sharma, M., 2014. Antidiabetic, renal/hepatic/pancreas/cardiac protective and antioxidant potential of methanol/dichloromethane extract of Albizzia LebbeckBenth. stem bark (ALEx) on streptozotocin induced diabetic rats. *BMC complementary and alternative medicine*, *14*, pp.1-17.
4. Ahmed, M. U. (2019). Isolation of marker compounds from the leaves of adhatodavasica and their biological activities.
5. Akbar, S., & Akbar, S. (2020). Justiciaadhatoda L.(Acanthaceae) (Syns.: AdhatodavasicaNees.; A. pubescensMoench.; A. zeylanicaMedik.; Diantheralati -foliaSalisb). *Handbook of 200 Medicinal Plants: A Comprehensive Review of Their Traditional Medical Uses and Scientific Justifications*, 1059-1066.
6. Bhadra, P., &Sethi, L. (2020). A review paper on the Tulsi plant (Ocimum sanctum). *Indian Journal of Natural Sciences*, *10*(60), 20854-20860.
7. Bhargava, S. (1986). Estrogenic and postcoitalanti conceptive activity in rats of butin isolated from Buetamonosperma Seed, J Ethnopharmacol, 1: 95-101.
8. Bhat, S. G. (2021). Medicinal plants and its pharmacological values. *Natural medicinal plants*, *12*, 217-228.
9. Bhowmik, D., Tripathi, K. K., Chandira, M. R., & Kumar, K. P. (2010). Zingiberofficinale the herbal and traditional medicine and its therapeutically importance. *Research Journal of Pharmacognosy and Phytochemistry*, *2*(2), 102-110.
10. Jain, J. B., Kumane, S. C., & Bhattacharya, S. (2006). Medicinal flora of Madhya Pradesh and Chattisgarh–a review.
11. Jamshidi-Kia, F., Lorigooini, Z., &Amini-Khoei, H. (2017). Medicinal plants: Past history and future perspective. *Journal of herbmed pharmacology*, *7*(1), 1-7.
12. Sinha, R. (2016). *A Pharmaceutico-Analytical Study of TriphalaMasi and its Anti-Microbial Activity* (Doctoral dissertation, Rajiv Gandhi University of Health Sciences (India)).
13. Sobia, H. N., Khan, S., & Nadeem, F. (2018). Use ofmalabar nut (Justiciaadhatoda L.) from traditional medicine to current pharmacopeia–A review study. *Int J ChemBiochem Sci*, *13*, 46-51.
14. Zhukovets, T., &Özcan, M. M. (2020). A review: composition, use and bioactive properties of ginger (Zingiberofficinale L.) rhizoms. *J. Agroaliment. Proc. Technol*, *26*, 216.
15. Zia-Ul-Haq, M., Ahmad, S., Qayum, M., &Ercişli, S. (2013). Compositional studies and antioxidant potential of Albizialebbeck (L.) Benth. Pods and seeds. *Turkish journal of Biology*, *37*(1), 25-32.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Culture of Madhya Pradesh : GOND TRIBAL ART

Dr. Vandana Sharma*

***Atal Bihari Vajpayee Hindi Vishwavidyalaya, Bhopal (M.P.) INDIA**

Abstract : The tribal community is a symbolic of a country's culture and its values. The gond is the only tribe that has a presence in all the district of Madhya Pradesh. The Gond tribe, one of the India's largest tribal communities is of around four million people spread all over Central India. Gonds have a recorded history of 1400 years.

Over the past few decades, gond paintings have gained global recognition. It reflects the rich culture heritage of the gond tribe from Madhya Pradesh India. The work of gond artist is rooted in the folk Tales of culture.

Gond artist allow themselves the freedom to depict anything their furtile imagination creates. They believe that natural objects, mountains, lakes and animals are inhabited by a spirit of life force. The gond also have a tradition of painting the wall and floors of their hurts during important Hindu festivities.

Gold art is known for its striking use of colors. The Artist also uses geometrical shapes and patterns to add motion and vitality to their work. The painting express enthusiasm and happiness with various vibrant and dynamic primary colours.

Primarily, thanks to the work of artist Jangarh Singh Shyam, for many years members of the gond tribe have continued to practice the and pass down this traditional art from through generations.

Introduction - Scholars believe that the word "Gond" is derived from the word "Konda" which means "the green mountains". The gond are one of the largest tribal groups in India with a population of around 13 million, who lives in the states of Madhya Pradesh, Maharashtra, Telangana, Andhra Pradesh, Bihar and Odisha. The majority of their presence can be found in Madhya Pradesh.

The languages of Gond are regional such as Marathi, Odia and Hindi. Their native their native language is "Gondi".

Art of gond was traditionally done as wall paintings that originated from folk and tribal art. Lines dots and dashes are commonly used in the painting by applying bold hues like red, green, yellow and blue. Natural materials such as cow dung, colours obtained from sand, plants, leaves and flowers have been used as sources of colour traditionally para change art of gold was traditionally.

Gond art is a famous art of gond tribal community of Central India which not only include painting but also include folk dances, song and performances. It is performed in traditional way to preserve and communicate the culture of Gond tribal community.

In the 80's a group of researchers, in search of indigenous art found a relief made by a young Pradhan Gond. Jangarh Singh Shyam (1962-2001). He is he was astonished by the talent of jangarh and was persuaded to study painting and he started painting and he started painting on the paper and canvas. Besides his awn painting work Jangarh taught the village people how to paint. This gave rise to Gond art as we know now and is flourishing as g gond artist worldwide.

Historical Background : Gond art is a traditional Indian tribal art form, that originated in Central India particularly in the regions of Madhya Pradesh, Maharashtra, Chhattisgarh, Odisha and Andhra Pradesh.

Gond art reflects the tribe's cultural heritage mythology and connection to nature. Traditionally this art was not confined to paper or canvas but was created as wall murals on the mud walls of their homes. These murals depicted animals, trees and scenes from everyday life, often believed to bring prosperity and ward off Evil spirits.

Today gond art has gained international recognition, celebrated for its vibrant aesthetics and cultural depth. It continues to serve as a medium for story telling and reflection of the gone communities way of life. Artist uses complex shapes and patterns that represents the various components of nature. The paintings are not just an expression of nature worship but also a means of protection and presenting evil.

Techniques : Gond art is a traditional Indian folk-art form practiced by the gond tribe, one of the largest indigenous communities in India. Gond artists traditions utilized natural material sourced from their surroundings including plant based colours brushes made from natural fibers and surfaces such as walls, floors and clothes. However, with

modernization artists have embraced new materials such as acrylic paints canvas and papers allowing for greater experimentation in their artwork. Originating from Madhya Pradesh and neighboring states gond is characterized by intricate patterns, vivid colours and storytelling. Below are some key techniques used in Gond art.

Texture & patterns : Artists apply different dots to create texture and patterns that form the structure of the artwork. These dots are often used to represent elements of nature such as trees animals and people. This is the most distinctive features of Gond art.

Geometric pattern : Gond artists often incorporate geometrical shapes and patterns including spiritual circles and triangles to fill in spaces and add detail to the composition. Use of both straight and curved lines are used to define shapes and outlines outline various figures. The lines the lines are sometimes thick bold and geometric but they can also be delicate for also so be delicate forming patterns within the artwork. These patterns help create a rhythm and flow in the artwork.

Colours : Gond art is known for its textural contrast and bright vibrant colour palette. Artist traditionally uses natural pigments such as white, yellow, red and green to create contrast. Modern artist may use synthetic paints but the emphasis is always be bold contrasting colours.

Contrast : Gond artist often used contrasting textures such a shiny and matte surfaces. They use a combination of techniques to achieve this effect including the layering of different types of paint.

Nature : The subjects of Gond art represent nature including animals, birds, trees and other elements, often blending reality with fantasy. Many elements of gond art are symbolic, representing aspects of the natural world. For example, the fish might symbolize abundance or the tree could represent life and growth.

Traditionally Gond artistcreate their design free hand without any preliminary sketches relying on their imagination. These techniques combined with the unique artistic vision of each artist, result in the rich and dynamic art form that gond painting is known for.

Culture : Gond art painting is a captivating and lively form of tribal artwork that pays homage to the gond tribes culture. The gond tribe is one of the largest and oldest tribes in India, with a rich history and a unique culture. The tribe is renowned for its distinctive artistic and manufacturing techniques developed for centuries.

The gond artist utilize many natural resources including plant sap, charcoal cow dung and apply them to various surfaces such as walls, floors and many more.Through these techniques their artwork evokes atmosphere of nature and countryside living. Tribal paintings often depict scenes of nature, designs and ornamentations that reflects their culture cultural traditions. Artists use complex shapes and patterns that represents the various components of nature. The paintings are not just an expression of nature worship but also a means of protection and preventing evil.

Contribution In Society : Don't art at traditional art from practice by the Gond community in India make significance significant cultural social and economical contribution to society.

Cultural prevention: Preventing gond art in society involves integrating it into border cultural educational and economic frameworks. Gond tribal community in India carries immense cultural significance. Preserving this art form is essential for maintaining the cultural heritage of gond people.

Environmental awareness: Gond art frequently defects animals trees and natural landscapes which reflect the community deep connection with the environment which case Awareness to society. It also inspires respect for nature and promotes harmony with the environment with global consciousness.

Economic empowerment: The commercialization of gold art has provided livelihoods for tribal artist particularly in rural communities. It also contributes to the economy, attracting tourist by Indian handicraft in international markets.

Women empowerment : It highlights the talent and history of indigenous communities many gold artist a woman and their participation in the art form help elevate their status and Independence within the community.

Education impact: Gond art introduces students and artists worldwide to the richness of tribal traditionsencouraging cultural exchange.

Creative expression is a vital to healthy and open-minded society. The artist has a unique skillset to influence, inspire and help others.

Art contributes the role in the development in society. It can communicate information shape our everyday lives. In 1880's one of the known GondartistJangarh Singh Shyam created art on paper and Canvas. Besides his own painting work Jangarh taught the village people to paint. This gave rise to gond art as we know. His effort made him worldwide fame.

By bridging tradition and modernity gond art enriches culture diversity promotes sustainability and supports social development making it a valuable contribution to society.

Suggestions:

1. Gond tribal art represents a deep connection between the gond community and their environment beliefs and cultural traditions.
2. The gond people believe that viewing a good image brings good luck. That is why they decorate their homes and tradition, tattoos and motifs.
3. Their art often depicts nature-based themes because they because they believe that spirits recide in every element of nature.
4. The hypothesis can be explored through various dimensions such as connection with nature. This art frequently features animals, trees and natural elements

which reflects that tribes, respect and depend on their environment.

5. The art illustrates stories from gond mythology, emphasizing preventing cultural narratives.
6. The pattern and techniques of using dots, lines, dash and vibrant colours may be symbolic of the interconnectedness of life and the vibrant spirit of the community.
7. The hypothesis posits those functions as both a storytelling medium and spiritual practice, reflecting the tribe's values and ecological awareness.

Conclusion: The don't drive is the most diverse and largest tribal group in India. They have a rich heritage traditions and creativity of the indigenous Gond community. Go on ART with its integrate integrate pattern vibrant colours and deep connection to nature mythical story and daily life is rooted in a tradition traditional believe that viewing good image being good fortune.

In the modern era Gond art has progressed from traditional wall painting to Canvas and papers.With the support of government and other organizations, artist have got numerous opportunities to showcase their work on a global scale through exhibitions and trade fairs.

Lastly it can conclude that gond tribal art is a vital part of Madhya Pradesh's cultural identity preserving ancient traditions while adapting to modern contexts ensuring the survival across generations. It serves bridge between past and present bending storytelling and artistic expression and continues to inspire both local and global audience.

Thus, it becomes a way to preserve this heritage art and promote it on international platforms.

References:-

1. Gupta, Sanjay-"Tribes of Madhya Pradesh (Heritage, folk culture of folk literature) Vol-10
2. Kumar Anup- "Indian Folk and tribal Art."
3. Restogi. Twinkle (2022)" Temple in Gond art of Madhya Pradesh (Gwalior) International Journal of Crative Research thought vol.10.
4. Deshmukh, Ranjit- "Folk and Triable art of India.
5. Saxena, Anupam (2018) An account of dots and lines- "The Gond Triable Art of Madhya Pradesh".
6. Mittra, Channa Subhadra- "Anthropological perspectius of India Tribes" FIRST Edition.
7. Paul, Anuradha- "The gounds" (genesis History and Culture)

Websites:-

1. https://gondartindia.com>gond_art
2. https://www.studio3india.com >ce...
3. https://en.wikipedia.org?wiki>G…
4. https://iaeme.com/Master Admin/journal uploads/IJFARD/VOLUME_2_ISSUE_1/IJFARD-02_01_001.pdf

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Characteristic Studies of 2D Materials PVA Augmented by Vanadium Oxide

Shiwani Jat* **Anubha Vijay Pandya****

***Department of Chemistry, PMCoE Rajiv Gandhi Govt. P. G. College, Mandsaur (M.P.) INDIA**
****Department of Chemical Sciences, Christian Eminent College, Indore (M.P.) INDIA**

Abstract : Blends of vanadium pentoxide (V_2O_5) and polyvinyl alcohol (PVA) have attracted significant interest for their potential applications in electrochemical devices, sensors, batteries, and optical coatings. V_2O_5, a transition metal oxide with semiconducting and catalytic properties, enhances the thermal stability, conductivity, and mechanical strength of PVA, a flexible, water-soluble polymer. The structural and morphological characteristics of these composites are often analysed using FTIR spectroscopy. The blend exhibits strong UV-visible absorption, making it suitable for photodetectors and optical coatings. V_2O_5 doping improves PVA's electrical conductivity, enabling applications in electrochemical energy storage, including lithium-ion and sodium-ion batteries, supercapacitors, and solid-state electrolytes. Additionally, PVA-V_2O_5composites contribute to electrochromic devices for smart displays and windows, leveraging V_2O_5's ability to undergo color changes under applied voltage. This study highlights the multifunctionality of PVA-V_2O_5composites and their potential for next-generation energy and sensing technologies.
Keywords-Electrochemical devices, sensor, optical, composite, electrochromic devices.

Introduction - Two-dimensional (2D) materials have attracted significant research interest due to their remarkable electrical, optical, and mechanical properties, making them promising candidates for next-generation electronic, sensing, and energy-storage applications [1]. Among these materials, transition metal oxides (TMOs) such as vanadium pentoxide (V_2O_5) are particularly noteworthy due to their ability to exist in multiple oxidation states, a result of their half-filled d-orbitals. This characteristic enhances their catalytic and electronic properties, enabling their use in applications ranging from semiconductors and photovoltaics to electrodes and environmental sensors [2-4].However, despite their advantages, many 2D materials face challenges related to structural stability, mechanical flexibility, and processability, which limit their widespread adoption.

To address these limitations, researchers have focused on integrating TMOs with polymeric matrices to develop novel composite materials with enhanced functionality. Polyvinyl alcohol (PVA) has emerged as a suitable polymer for this purpose due to its excellent film-forming ability, mechanical flexibility, biocompatibility, and environmental friendliness. The incorporation of V_2O_5 into a PVA matrix offers a unique approach to developing hybrid materials with improved conductivity, mechanical integrity, and stability while maintaining flexibility [5-7]. These PVA-V_2O_5 composites hold significant potential for various applications, including electrochemical sensing, photodetection, and energy-efficient coatings [8].

Fourier Transform Infrared (FTIR) spectroscopy is a powerful analytical technique used to study the structural and chemical interactions within composite materials. In the case of PVA-V_2O_5 composites, FTIR spectroscopy provides crucial insights into the bonding mechanisms, phase interactions, and functional group modifications that occur during the blending process. The analysis of characteristic vibrational modes helps in understanding how V_2O_5 interacts with PVA at the molecular level, influencing the material's overall properties. The study of these interactions is essential for optimizing the composite's electrical, optical, and mechanical behaviour.

Electrochemical sensors based on 2D nanomaterials have been extensively studied for detecting environmental contaminants such as heavy metals, toxic gases, organic pollutants, pesticides, and bacteria [9-11]. The incorporation of V_2O_5 into PVA-based composites can enhance sensor sensitivity, selectivity, and stability, making them promising candidates for industrial safety and environmental monitoring. Additionally, V_2O_5 is strong UV-absorbing properties, when combined with PVA, enable the development of advanced optical coatings and flexible photodetectors for UV-visible light detection, which can be incorporated into wearable sensors and optoelectronic devices.

Beyond sensing applications, PVA-V_2O_5 films exhibit potential in biomedical applications due to their antibacterial properties, making them suitable for coatings on medical devices, wound dressings, and controlled drug release systems [12]. Furthermore, the integration of these composites into flexible electronics enables their use in transparent conductive films, thin-film transistors, and electrochromic displays, where mechanical flexibility and electrical conductivity must be balanced.

The goal of the current study is to offer some information on new compounds that are expected to be easily exfoliable from a parent bulk molecule and have anisotropies that significantly outperform those of previously found 2-dimensional substances [13,14]. The findings of this study will be a comprehensive guide for future research on anisotropic response in thin crystals and will highlight opportunities and challenges for the creation of gauges based on two-dimensional materials [15,16].

This research investigates the physicochemical properties of PVA-V_2O_5 composites, with a particular focus on their structural, electronic, and magnetic characteristics. By utilizing FTIR spectroscopy, we aim to analyse the molecular interactions and bonding changes that contribute to the enhanced properties of these composites. Additionally, this study explores how the integration of V_2O_5 with PVA can improve the electrical performance of 2D materials, contributing to advancements in high-performance electronic, optical, and sensing technologies. The findings will provide valuable insights into the design and development of novel anisotropic 2D materials and their potential applications in flexible electronics, environmental monitoring, and biomedical engineering.

Materials and Methods: Vanadium pentoxide (V_2O_5), PVAc with the medium molecular weight of 86.09g mol^{-1}, were obtained from Merck Chemical Co. (Germany). Sodium hydroxide (NaOH), Hydrochloric Acid (HCl), was acquired from Sigma-Aldrich (Germany). Ethanol and distilled water were attained from local market.

Preparation of Poly Vinyl Alcohol solution: Exactly 1gm of Polyvinyl acetate (PVAc) is dissolved in a mixture of ethyl alcohol and distilled water around 30ml. The temperature has been maintained at around 60–80°C to ensure proper dissolution. The solution stirred continuously to achieve a homogeneous mixture. A measured amount of sodium hydroxide solution has been added to the PVAc solution. The catalyst facilitates the hydrolysis (saponification) of PVAc into PVA and acetic acid. The reaction mixture has been maintained at 60–80°C and stir continuously. The reaction progress monitored. Partial hydrolysis yields partially hydrolyzed PVA, while complete hydrolysis produces fully hydrolyzed PVA. Once the desired degree of hydrolysis is achieved, the reaction mixture has been neutralized by adding a weak acid (e.g., acetic acid or hydrochloric acid). This step prevented further reaction and stabilizes the PVA solution. The PVA precipitated by pouring the reaction mixture into a large volume of cold water. The PVA precipitate has been collected by filtration or centrifugation. The precipitate washed multiple times with water to remove residual catalysts and by-products. The washed PVA dried under in an oven at a low temperature (50–70°C) until a const ant weight is achieved [17].

Preparation of PVA-V_2O_5 composite: Exactly 1g of PVA dissolved in 30 ml of distill water. The temperature has been maintained at around 60-80°C to ensure proper dissolution. The solution stirred continuously to achieve homogeneous mixture. In another beaker 0.1 g of V_2O_5 is dissolved in minimum quantity of H_2SO_4 by continuous stirring at room temperature until orange homogenous solution was obtained. Then V_2O_5 solution was added dropwise to PVA solution with continuous stirring for 2-3 hr, solution color turns to lemon green. The reaction temperature is maintained between 60-80°C. A black color precipitate starts to appear of PVA-V_2O_5 composite then later filtered withBuchner funnel using vacuum pump, washed 2-3 times with distill water and left for complete drying in air for 2-3 days. A black amorphous solid of PVA-V_2O_5 was obtained.

Results and Discussion: The incorporation of V_2O_5 into PVA results into enhancement in several properties of polymer.The FTIR spectrum provides insights into the chemical bonding, structural changes, and interactions between PVA and V_2O_5 . Additionally, FTIR spectroscopy has been employed to identify the functional groups present in the synthesized compounds.

The Table 1 shows the most characteristic bands of PVA and their respective assignment. Fig.2 shows the FTIR spectra of PVA. All major peaks related to hydroxyl group were observed. The large bands observed between 3550 and 3200 cm^{-1} are linked to the stretching O–H from the intermolecular and intramolecular hydrogen bonds (Fig.2). The vibrational band observed between 2840 & 3000cm^{-1} refers to the stretching C–H from alkyl groups (Fig.2) and the peaks between 1750–1735 cm^{-1} (Fig.2) are due to the stretching C=O and C=O from acetate group remaining from PVA [17].

The FTIR spectra to PVA crosslinked with V_2O_5 is presented in Fig.3. The reaction of the PVA with the V_2O_5 results in a considerable reduction of the intensity of the O–H peaks (in Fig.3) from the composite, indicating a possible formation of acetal bridges. For instance, FTIR spectra of PVA-V_2O_5 samples (Fig.3) reveal bands at (v=3090–2990 cm^{-1}) signifies the C-H stretching, (Fig.3) a duplet absorption with peaks attributed to the alkyl chain. Also, strong band from carbonyl group was verified (C=O at v=1677–1685 cm^{-1}). These bands are overlapping and broadening PVA bands in these regions. In addition to that, by crosslinking PVA with V_2O_5, the O–H stretching vibration peak (v= 3250–3450 cm^{-1}) was relatively decreased when compared to pure PVA. Stretching vibration peak (v=1143 cm^{-1}) for C-O crystallinity. C-O-C stretching vibration peak

(v=1038–1073 cm^{-1}) which remained almost constant. CH_2 Bending vibration peak (δ=1384 cm^{-1}) which is constant. Polymer composite show the same pattern with additional stretching bands at (v=400-600 cm^{-1}) which is due to V_2O_5 vibrations [18]. It is apparent from the fig.3 that the intensity of peaks is getting decrease with addition of V_2O_5. It is due to the compatibility of V_2O_5 with polymer.

Figure 1.FTIR spectra of V_2O_5

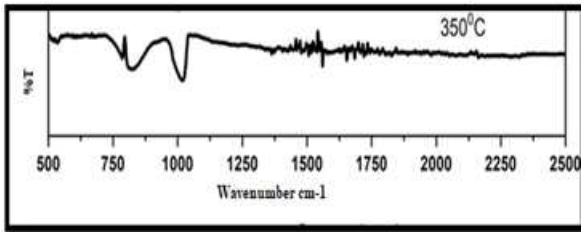

Figure 2.FTIR spectra of PVA

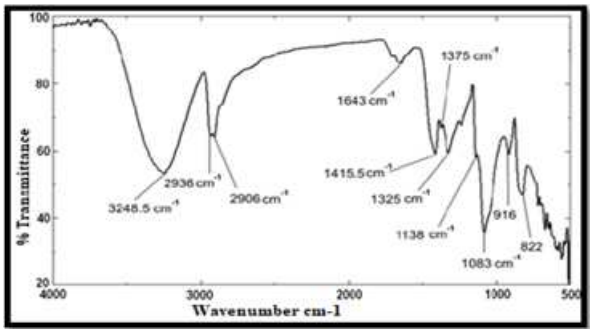

Figure 3. FTIR Spectra of PVA-V_2O_5 (Original)

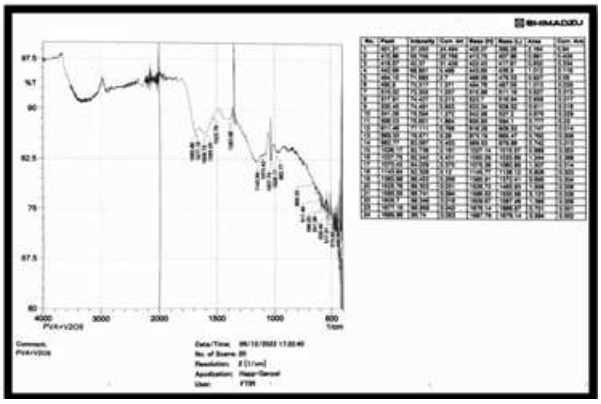

Table 1:FTIR of PVA-V_2O_5 (extracted)

No.	Peak	Intensity	Corr. Int
1	401.21	37.055	24.494
2	410.86	55.705	25.768
3	418.57	42.37	31.428
4	442.68	66.951	5.488
5	484.15	71.685	2.7
6	490.9	73.317	1.371
7	515.02	73.305	1.037
8	517.91	74.427	0.213
9	530.45	74.491	0.853
10	541.06	75.594	1.272
11	596.03	75.601	1.864
12	611.46	77.111	0.769
13	669.33	79.571	0.28
14	982.77	83.587	0.453
15	1026.17	82.738	0.181
16	1037.75	82.242	5.431
17	1073.43	84.029	0.375
18	1143.84	82.308	0.12
19	1363.98	88.453	0.259
20	1525.76	89.303	0.131
21	1585.65	87.741	0.094
22	1609.87	86.346	0.08
23	1677.18	86.859	0.042
24	1685.86	86.74	0.053

Conclusion and Future Scope: The incorporation of vanadium pentoxide (V_2O_5) into polyvinyl alcohol (PVA) matrices results in multifunctional composite materials with enhanced mechanical strength, thermal stability, and electrical conductivity. These composites exhibit significant potential for various applications, including electrochromic smart windows, energy-efficient coatings, flexible photodetectors, and biomedical coatings. The PVA-V_2O_5 films also demonstrate high sensitivity to environmental gases such as humidity, ammonia (NH_3), and nitrogen dioxide (NO_2), making them suitable for industrial safety and environmental monitoring. Additionally, the antibacterial properties of PVA-V_2O_5 composites enable their use in wound dressings and medical device coatings, with the potential for controlled drug release applications.

FTIR spectroscopy has been instrumental in analysing the chemical interactions and bonding mechanisms within these composites, providing valuable insights for optimizing their properties. The results highlight the role of V_2O_5 in significantly improving the physicochemical characteristics of PVA, where the degree of enhancement is influenced by factors such as particle size, concentration, and dispersion within the polymer matrix.

Further studies can focus on optimizing the size, concentration, and distribution of V_2O_5 particles within the PVA matrix to achieve superior mechanical, optical, and electronic properties. Advanced surface modifications and functionalization techniques can be explored to enhance the compatibility of V_2O_5 with PVA. Investigating the potential of PVA-V_2O_5 composites as electrode materials for supercapacitors and lithium-ion batteries. Exploring their role as solid polymer electrolytes to improve ionic conductivity and battery cycle life. Enhancing the sensitivity and selectivity of PVA-V_2O_5 composites for detecting toxic gases and pollutants in environmental applications. Integration into flexible and wearable sensor devices for real-time monitoring. Expanding research on the biocompatibility and antimicrobial efficiency of these composites for advanced wound healing and infection control. Studying their potential for controlled drug release in targeted therapy. Developing high-performance optical coatings, UV-blocking films, and flexible photodetectors for

wearable electronics. Investigating the potential of these composites in smart windows and electrochromic display technologies.

By addressing these research directions, the PVA-V_2O_5 composite system can be further refined for widespread adoption in various industrial, environmental, and biomedical applications, paving the way for next-generation functional materials.

Conflict of Interest: The writers have indicated that they have no conflicts of interest.

Funding Source: none

Authors' Contributions : Author-1 performed experiments and researched literature and conceived the study. Author-2 involved in protocol development. Both authors reviewed and edited the manuscript and approved the final version of the manuscript.

Acknowledgements: We thank our institutes for providing research facilities as well as the infrastructure and the UGC-DAE Consortium for Scientific Research (formerly known as IUC-DAEF), Indore for providing the sample characterization facilities.

References :-

1. Y.-G. Guo, J.-S. Hu, and L.-J. Wan, "Nanostructured materials for electrochemical energy conversion and storage devices," Advanced Materials, Vol.20, Issue 15, pp.2878-2887, 2008.
2. H. Cheon, Y. J. Kim, M. C. Hwang, J. Hong, T. K. An, S.-K. Kwon, and Y.-H. Kim, "Synthesis and characterization of new TPD-based copolymers and applications in bulk heterojunction solar cells," Macromolecular Research, Vol.26, pp.29-34, 2018.
3. Y. Liu, L. J. Duan, M. J. Kim, J.-H. Kim, and D. J. Chun, "In situ sodium alginate-hyaluronic acid hydrogel coating method for clinical applications," Macro molecular Research, Vol.22, pp.240-247,2014.
4. R. Raguvaran, B. K. Manuja, M. Chopra, R. Thakur, T. Anand, A. Kalia and A. Manuja, "Sodium alginate and gum acacia hydrogels of ZnO nanoparticles show wound healing effect on fibroblast cells," International Journal of Biological Macromolecules, Vol.96, pp.185-191, 2017.
5. R. M. Abdel-Latif, "DC Electrical measurements on evaporated thin films of vanadium pentoxide,"Physica B: Condensed Matter, Vol.254, Issues 3-4, pp.273-276, 1998.
6. J. Haemers, E. Baetens, and J. Vennik,"On the electrical conductivity of V_2O_5 single crystals," Physica Status Solidi A-Appl.Res.,Vol.20,Issue1,pp.381-386, 1973.
7. D. A. Semenenko, D. M. Itkis, E. M. Pomerantseva, E. A. Goodilin, T. L. Kulova, A. M. Skundin, and Y. D. Tretyakov,"LixV_2O_5 nanobelts for high capacity lithium-ion battery cathodes,"Electrochemistry Communi cations, Vol.12, Issue 9, pp.1154-1157, 2010.
8. K. Sieradzka, D. Wojcieszak, D. Kaczmarek, J. Domaradzki, G. Kiriakidis, E. Aperathitis, V. Kambilafka, F. Placido, and S. Song, "Structural and optical properties of vanadium oxides prepared by microwave-assisted reactive magnetron sputtering," Optica Applicata, Vol.41, No. 2, pp.463-469, 2011.
9. O. W. Guirguis and M. T. H. Moselhey, "Thermal and structural studies of poly (vinyl alcohol) and hydroxypropyl cellulose blends," Natural Science, Vol.4, No.1,pp.57-67, 2012.
10. C. Navone, J. P. Pereira-Ramos, R. Baddour-Hadjean, and R. Salot, in Proceedings of the International Workshop "Advanced Techniques for Energy Sources Investigation and Testing", 4–9 Sept, Sofia, Bulgaria.
11. M. C. Rao, "Vanadium Pentoxide Cathode Material for Fabrication of All Solid-State Lithium-Ion Batteries - A Case Study,"Research Journal of Recent Sciences, Vol.2(3), pp.67-73, 2013.
12. C. K. Chan, H. Peng, R. D. Twesten, K. Jarausch, X. F. Zhang, and Y. Cui, "Fast, completely reversible Li insertion in vanadium pentoxide nanoribbons," Nano Letters, Vol.7, issue 2, pp.490-495, 2007.
13. S. L. J. Ling, K. Li, F. Yao, O. Oderinde, Z. Zhang, and G.Fu, "Bio-inspired and lanthanide-induced hierarchical sodium alginate/graphene oxide composite paper with enhanced physicochemical properties," Composites Science and Technology, Vol.145, pp.62-70, 2017.
14. P. Zahedi, I. Rezaeian, S. H. Jafari, and Z. Karami, "Preparation and release properties of electrospun poly(vinyl alcohol)/poly([-caprolactone) hybrid nanofibers: Optimization of process parameters via D-optimal design method," Macromolecular Research, Vol.21, pp.649-659, 2013.
15. R. Y. M. Huang and J. W. Rhim, "Modification of poly (vinyl alcohol) using maleic acid and its application to the separation of acetic acid water mixtures by the pervaporation technique,"Polymer International, Vol.30, Issue 1, pp.129-135, 1993.
16. B. Jin, J. Shen, R. Peng, Y. Shu, S. Chu, and H. Dong,"Synthesis, characterization, and thermal stability properties of PVTNP-co-PVAA through the azidoacetylation of polyvinyl 2,4,6-trinitrophenylacetal," Macromolecular Research, Vol.22, pp.117-123, 2014.
17. S. Jat, A. V. Pandya, "Synthesis and study of novel material using zinc oxide and PVA," Global Journal of Engineering Science and Researches, Vol.11, Issue 2, pp.1-6, 2024.
18. A.M. Abdelghany and H. A. ElBatal,"Optical and ì-FTIR mapping: a new approach for structural evaluation of V_2O_5-lithium fluoroborate glasses", Materials & Design, Vol.89, pp.568-572, 2016.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Incubation Centers in Academic Institutions and Expectations of Students who Aspire to be Entrepreneurs

Sunder L Dindugal*

***Indian Institute of Management, Indore (M.P.) INDIA**

Abstract : Governments across the world are keen on encouraging entrepreneurship and innovation. This is driven by the expectation that new and small businesses create jobs and will help in reducing unemployment. Further introduction of new products lead to increased competition in the market.

One important policy decision of the government of India is to encourage setting up of incubation centers across the country that will support and handhold nascent entrepreneurs in their entrepreneurial journey. The support provided by the government comes in various forms and the most important one is the grant provided to set up and run incubation centers. Many educational institutions have set up incubation centers and are actively trying to promote entrepreneurship.

This study explores the expectations of students with respect to the incubation centers. Data was collected from students of a course on entrepreneurship using a questionnaire in an open-ended format. Subsequently some of the students were interviewed to identify the key support expected from incubation centers. One of the interesting findings was the importance placed on mentoring support. Based on the findings, suggestions are provided on what academic institutions planning to set up incubation centers should focus on.

Considering the increasing interest in entrepreneurship among students and the support extended by central and states governments to promote entrepreneurship, insights from this study can also be used for policy decisions.

Keywords: Incubators, Startups, Entrepreneurs.

Introduction - Launching a new business is a life-changing event for an entrepreneur. Many think about becoming an entrepreneur, but not all of them take the plunge. Entrepreneurship is not easy, and it requires a lot of courage because, for many, it involves committing more resources than one has and having to deal with the risk of losing it all. It is a widely acknowledged fact that more than 70% offirst-generation entrepreneurs fail within the first three years. The high rate of failures can be attributed to any of the numerous factors that contribute to the success or failure of a new venture, like prior experience in the industry or in entrepreneurship, access to resources and the liability of newness.This highlights the need to handhold and support nascent entrepreneurs. Given the belief that new venture creation is important as it contributes to innovation and economic growth, governments across the world have been introducing policies to encourage and support entrepreneurs. One such policy initiative is providingaccess to funds. The government of India has categorized loans to small business as priority sector lending and this has helped many small startups in accessing funds from commercial banks. The benefit of this categorization is that these loans have a lower interest rate and up to a certain limit, additional collateral is not required. Another important policy decision of the government is the support extended to business incubators. The government through various schemes has been providing financial support to institutions and encouraging them to establish business incubators that support startups. The table 1, below lists the numbers of incubators supported by the government of India in some of the states.

Table 1: Number of Incubators supported by DST in various states.

Sr.	State	No. of Incubators
1	Andhra Pradesh	5
2	Delhi	6
3	Goa	3
4	Gujarat	18
5	Haryana	1
6	Himachal Pradesh	2
7	Jammu & Kashmir	2
8	Jharkhand	1

9	Karnataka	19
10	Kerala	8
11	Madhya Pradesh	2
12	Maharashtra	19
13	Mizoram	1
14	Odisha	3
15	Punjab	9
16	Rajasthan	4
17	Tamil Nadu	26
18	Telangana	13
19	Uttar Pradesh	9
20	Uttarakhand	4
21	West Bengal	5

Sources of data: https://dst.gov.in/sites/default/files/75-Impactful-Startup-DST-Incubation-Program.pdf

Table 2: Number of Incubators supported by Atal Incubation Centre in various states.

Sr.	State	No. of Incubators
1	Andhra Pradesh	2
2	Assam	2
3	Chhattisgarh	1
4	Delhi	6
5	Goa	1
6	Gujarat	6
7	Haryana	1
8	Jammu & Kashmir	1
9	Karnataka	11
10	Kerala	2
11	Madhya Pradesh	3
12	Maharashtra	8
13	Pondicherry	1
14	Odisha	2
15	Punjab	1
16	Rajasthan	4
17	Sikkim	1
18	Tamil Nadu	6
19	Telangana	5
20	Uttar Pradesh	4
21	Uttarakhand	0

Sources of data:https://www.nstedb.com/List-NSTEDB-TBIs.pdf
https://www.pib.gov.in/PressReleseDetailm.aspx?PRID=1898728#:~:text=632%20Host%20Institutes%20(HIs)%20have,Innovation%20Centres%20across%20the%20country.

What is Business Incubation: Sherman and Chappel (1998) state that Business Incubators are economic development tools primarily designed to help create a new business in a community. Business incubators help emerging businesses by providing various support services such as assistance in developing business & marketing plans, building management teams, obtaining capital and providing access to a range of more specialized professional services. Entrepreneur.com (nd)defines the business incubator as "an organization designed to accelerate the growth and success of entrepreneurial companies through an array of business support resources and services that could include physical space, capital, coaching, common services, and networking connections". Allen and Mccluskey (1991) define incubators as a facility that provides affordable space, shared office services, and business development assistance in an environment conducive to new venture creation, survival, and early-stage growth. Business Incubators (BIs)provide support to new ventures with the expectation that they will develop into self-sustaining and profitable companies.

Services offered by Incubators: The services offered by the incubators directly affect the performance, survival rates and growth of the incubated firms (Peters and Sunderarajan 2004).During the 80's business incubators became widespread offering office space and some support services (Bruneel et al., 2012).With time, their role expanded, and they offered other services like training, consulting, business support services and networking. Hansen et al (2000) opined that networking is the most important factor in successful BI programs, which view is also supported by others who claim that access to networks is critical for incubating companies' growth and development. (McAdam and McAdam, 2008).A list of services offered through incubation centers are listed in table 3 below. It is important to note that it is rare for any incubator to offer all the services mentioned in the table.

Table 3: List Of Services Offered By Incubators

Office Space on subsidized rent	Accounting & Financial Management Assistance	Security/Technology transfer/commerc-ialization services
Shared resource (reception, car parking, meeting rooms and commodities)	Intellectual Property Rights management	Support for R&D activities /product development
Coaching/Mentoring	Virtual services to offsite clients	Access to business and alumni networks
Training & education	Access to training room/conference room/Meeting room	Labs/Workshops
Business assistance /Advise/Consulting	Basic Utility (Water, electricity, commun-ication, transport)	Access to Local/ Regional National/ International events, conferences etc.
Financial assistance Access to providers of capital (Angel Investors, Venture Capitalists).	Marketing Assistance Organizing events for networking.	Library service Stipend
PC/computer	Connect to Banks	Social Activities

Sources of data: Compiled from various sources and interactions with some incubators.

Challenges faced by Incubators: Despite the success of some business Incubators in attracting and growing startups, many incubators fail to achieve their objectives. Broadly speaking, the success of the business incubator can be determined by the ability of Incubators to (i) attract and select incubatees that have potential for success and (ii) the ability to attract and retain skilled professionals for managing the activities and functions of the incubators. However, a review of literature suggests that criteria used for measuring success differs, no standard or uniform measures of success exist.

Incubators also require resources in the form of funds and talented manpower for carrying out their activities. Lack of funding can impede the growth and success of the incubator as it impacts infrastructure creation, and the ability to attract and retain talented executives to manage the operations. As many of the services offered by the incubators are free, availability of funds is critical to the success of the incubators. In addition, incubators also require funding that can be offered to the startups as seed money support. It is therefore important that the incubators look at various sources of funding both from the private and public sectors (Thobekani, Lose. & Robertson, Tengeh., 2015). Funding for incubators can be in the form of grants, donations, funding support for targeted activities, rent and charges paid by the incubated startups etc. An important source of funding in India is the grants from the state and central governments towards running the incubator and to be offered as seed money to the startups. When an incubator offers seed money, it is normal that they take a small stake in the venture. If the ventures are successful, on exit, the incubators can expect high returns which can again be invested in other incubated entities.

Identifying, attracting, and selecting startups that are likely to make the best use of the support services and succeed is a major challenge for the incubators. In the initial years, the focus is on increasing awareness about the incubator and attracting an adequate number of applicants. Once this stage is crossed, the challenge is how to select from the available pool, the most promising applicants. It is important to understand that the business plans of the applicants are often exaggerated and do not have any hard data to support their projections. There is also the question of whether the selected venture survives because of the incubation support, or whether they would have survived even without incubation. One of the criteria used by some incubation centers is the assessment of commitment by the entrepreneur or the team towards their venture.

In this context Bergek and Norrman (2008) find that selection of incubates can be categorized in idea-focused selection and entrepreneur-focused selection, whereas Merrifield (1987) proposed a method of selection based on qualitative business attractiveness factors by rating each factor on a scale of 0–10. It is also argued that the incubate selection model must incorporate survivability prediction because the incubate survival rate is an importantmeasure of success of the incubator.

Motivation for the study and identification of a gap: As the services offered by incubators are numerous and varied, all incubators will not be able to offer all the services. The focus of most university incubators are their students and nascent entrepreneurs and therefore, it would be helpful if we can identify services that students who are aspiring to become entrepreneurs expect from an incubator. This can help the design of the structure and offerings of the incubator.

Objectives of this study: To identify the expectations of students who are aspiring to become entrepreneurs on what they expect from an incubator. These would be students who have shown interest in taking up a career in entrepreneurship after their graduation (probably immediately after their degree).

Methodology: As the study is exploratory in nature, it uses qualitative research methodology to understand the expectations of students who are aspiring to be entrepreneurs on what they would like an incubator to provide. The researcher identified students who had registered for an advanced course on entrepreneurship and requested them to participate in the study. The researcher explained the objectives of the exercise and requested them to think about the support services they would like to have from an incubator. They were asked to write down in detail their expectations and send them to the researcher. The documents were analyzed to come up with a list of the most important services a student aspirant hopes to get from an incubator. As it is an exploratory study, convenience sampling was used.

Findings: Five students agreed to participate in the study and sent their detailed response to the researcher. An analysis of the responses showed that the expectations of the participants in the study varied and as such, initially all the expectations were listed. Subsequently the common expectations were across identified and they were ranked based on how many of the participants expected to receive the service from the incubator. Where there was a doubt with respect to the response, the participants were contacted, and clarifications sought. The services expected by the respondents from an incubator are listed below.

Expectations of the student entrepreneurial aspirants:

a. Funding: All the participants of the study considered Funding Support in the form of seed money or providing access to funding organizations an important service to be provided by the incubation center. While some funding from the incubator was considered desirable, they acknowledged the fact that they would have to pitch and acquire funding from external sources like government schemes, angel investors and venture capitalists.
b. All the participants considered Mentorship as an important service to be provided by the incubator. Some

of them were very elaborate on why this was important. They said that students planning to start after graduation had zero or very low work experience and this could affect their ability to run a business. They also mentioned that the nature of activities carried out by an entrepreneur was different from that of a manager in an established organization and as such knowledge of entrepreneurial decision making was important. They suggested that mentoring from the faculty alone would not be sufficient and the mentors should also be industry experts and /or entrepreneurs from different sectors.

c. All the participants felt that networking was important to entrepreneurial success. They were particular that the incubator should organize networking events with alumni who were working in the industry, were successful entrepreneurs or industry leaders. They suggested that these events can be organized both on a the regional and national level.
d. Keeping in mind the lack of industrial and entrepreneurial experience, all the participants suggested that workshops, accelerator programmes etc., should be organized to help the incubatees access knowledge on challenges faced during running a business and their resolution. Some of them suggested that workshops on how to approach international markets could also be organized by the incubators.
e. Some of the participants emphasized on the importance of the incubator developing strategic partnerships with funding organizations, local industry, other incubators so that these can be leveraged to the benefit of the incubatees.
f. Some of the participants suggested that technology support by the way of laboratories or access to these in other institutions would be helpful. These would help in product development and prototyping.
g. Some of the participants suggested that marketing support was critical to a nascent entrepreneur and as such connect to potential customers through the alumni network or industry contacts was important.
h. One of them suggested that the incubator should provide for some ongoing support to the incubatees even after the end of the incubation programme.
i. Some of the participants suggested that their business plans should be vetted by the incubator and feedback provided on how to improve them.
j. One of the participants suggested that the university incubator should have structural mechanisms wherein the incubatee could hire student interns for marketing, product development etc.

Additional data Collection: Subsequently twenty candidates interested in entrepreneurship were requested to identify the top three expectations from the above list. They were provided with the above list and requested to place a tick mark against three of the above they considered important. They were specifically told that they could put a tick only against three of the above. When the data was analyzed the top three services expected from incubators were as follows,

1. Funding support.
2. Mentoring
3. Marketing support

While some of the other listed services also were ticked by some students, the highest number of ticks were for the above three.

Discussions and Conclusions: Many support services are being offered by incubators across the world. The number and extent of these offerings depends on the financial strength of the incubators and their age. Some incubators are sector specific while others are sector agnostic. This study focusses on incubators set up by academic institutions. While these incubators are expected to support the entrepreneurial aspirations of their students, many of them also accept incubatees from outside. It is expected that the university incubator will leverage their faculty expertise, laboratories, workshops, and other infrastructure that is available to support the incubatees. Some educational institutions in science and technology have the advantage of huge investments in laboratories and workshops which can be used by the incubatees to develop new technological products and services. Others may have to tie up with other institutions or industry to offer these services. Management institutions can leverage their faculty expertise (both regular and visiting faculty) in mentoring incubatees on various managerial aspects of the businesses.

A review of literature suggests that understanding the needs and expectations of students who have entrepreneurial aspirations could be useful to design the offerings of the incubation center set up in academic institutions. This would facilitate a smooth transition from academics to business for these aspiring entrepreneurs. The findings of the study suggest that access to funding and mentoring are very high on the list of expectations of the students. A very interesting finding is the fact that students recognize their limitations with respect to lack of industry and entrepreneurial experience. As such they expect the incubator to offer networking opportunities to overcome these limitations. They also expect that many of the mentors would be from the industry experts or entrepreneurs from various sectors who could guide them through their entrepreneurial journey. Students also recognize the importance of knowledge, be it technological or market related, and suggest workshops and knowledge sharing sessions. The follow-up study in identifying the top three expectations showed that marketing support was also very important in addition to the funding and mentoring support.

The study provides a basic understanding of the expectations of students (who are aspiring to become

entrepreneurs) from an incubator. The findings are important because the participants of the study were those who had clearly expressed a desire to pursue a career in entrepreneurship after their graduation. This will help universities or academic institutions planning to start incubators structure their offerings in a way that meets the expectations of the aspiring entrepreneurs. This would increase the survival rate of the incubatees and the performance of the incubator. Thesefindings can also be used by policymakers in their design of incubator support schemes, courses on entrepreneurship etc. Course on entrepreneurship can factor theseexpectations of the aspiring entrepreneurs.

The limitation of the study is that the sample size was small. A quantitative survey-based study with a larger number of participants can provide additional insights.

References:-

1. Allen, D. N., &Mccluskey, R. (1991). Structure, Policy, Services, and Performance in the Business Incubator Industry. *Entrepreneurship Theory and Practice*, *15*(2).
2. Bergek, A., Norrman, C., (2008). Incubator best practice: a framework. Technovation 28 (1–2).
3. Bruneel, J., Ratinho, T., Clarysse, B., & Groen, A. (2012). The Evolution of Business Incubators: Comparing demand and supply of business incubation services across different incubator generations. *Technovation*, *32*(2).
4. Entrepreneur.com (nd). Business Incubator. Accessed at https://www.entrepreneur.com/encyclopedia/business-incubator
5. Hansen, M.T., Chesbrough, H.W., Nohria, N., Sull, D.N., (2000). Networked incubators. Harvard Business Review 78 (5).
6. Merrifield, D.B., (1987), New Business Incubators._ Journal of Business Venturing 2.
7. McAdam, M., McAdam, R., (2008). High tech start-ups in University Science Park incubators: the relationship between the start-up's lifecycle progression and use of the incubator's resources. Technovation 28 (5), 277–290.
8. Peters, L., Rice, M., Sundararajan, M., (2004). The role of incubators in the entrepreneurial process. The Journal of Technology Transfer 29 (1).
9. Sherman, H., Chappell, D.S., (1998). Methodological challenges in evaluating business incubator outcomes. Economic Development Quarterly 12 (4).
10. Thobekani Lose and Robertson K. Tengeh (2016). An evaluation of the effectiveness of business incubation programs: a user satisfaction approach. Investment Management and Financial Innovations, 13(2-2).

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Negative Impact of Rhesus Monkeys in some states of North India

Dr. Neha Shrivastava* Mr. Vikas Shrivastava**

*Associate Professor (Zoology) Govt. College, Kota (Raj.) INDIA
** Naturalist, Kota District, Kota (Raj.) INDIA

Abstract : Rhesus monkeys (*Macaca mulatta*)are primates, native to forest in Northern India. The population of monkeys has grown at an alarming rate during the last decade. Rhesus monkeys have been leaving forests and are constantly migrating to urban, semi urban and rural areas. Rhesus monkeys are very aggressive and unsociable towards humans.This wild species affects the life of a human beings in the forms of physicalattacks, damage tolivestock, property,crops, etc.This is considered as HWC-Human Wildlife Conflict. Damage to human property & harassment by the rhesus monkeys are common occurrences in various parts of India. Due to intolerable activities, a majority of residents strongly believe that these monkeys are unwanted species than a species to be conserved.There have been several strategies to solve the problem in India.
Keywords: Rhesus Monkey, North India,Damage.

Introduction - Rhesus monkeys (*Macaca mulatta*) are native to mainland Asia. Their natural habitat spans across Afghanistan, Pakistan, India, Bhutan Nepal, Bangladesh Thailand and China. There has been consistent increase in rhesus monkey population over the years in some states of North India like HimachalPradesh, Uttarakhand, Madhya Pradesh and Rajasthan. The rhesus monkeys are leaving forests and are constantly migrating to urban, semi urban and rural areas because of their shrinking habitat, and availability of delicious and easy food in urban areas. High levels of macaque aggressive towards humans are common in such places, leading to physical attacks and high level of stress posing risk to humans.The monkey menace is not restricted to crop raiding, biting and fear psychosis but it also includes raiding kitchens, breaking chimneys, breaking electricity bulbs, chewing internet and electric wires, bursting water pipes. City dwellers are also struggling to cope with monkey menace. According to the Primate Research Centre, Jodhpur, which is one of the three Union government-run institutes on primates, more than 1,000 cases of monkey bites are reported every day in Indian cities. 'Monkey Management' is one of the most challenging issues in North India.They have become a big nuisance. Human-monkey conflict has attained a serious problem.

Rhesus Monkeys: Rhesus monkeys (*Macacamulatta*) aresand-coloredprimates. They are wild animals and very aggressive in nature. Theyare native to forest but also found coexisting with humans in northern India. They adapt todifferent environments; they are both arboreal and terrestrial. They are usually medium sized monkeys at 18-22 inchesin length, tail 8.27 -9 inches and 4-10 kg in weight.These wild and free ranging monkeys have life span of 25-30 years. They are found to be docile askids but bad tempered as adults. They are omnivorous. They live in groups consists of several adults of both sexes and their young's. A socialgroup of monkeys is made up of a few male adults, a number of females and their offsprings. They live in large families called troops. There may be 20 to 200 members in a troop. These troops are found in urban areas near human settlement, river side and forests. Their natural diet consists of fruits, seeds, roots, herbs and insects.In area of human habituation, they also eat crops and search through garbage for food.

Population of Rhesus monkeys: The population of rhesusmonkeys has grown at an alarming rate during the last decade. According to the last count there were 50 million monkeys in India. This has resulted in their migration from the forest areas towards towns and cities and also to the cultivated areas. The rapid increase in the number of rhesus monkeys' population has led to increased competition for food & space between humans&monkeys.

Rhesus monkey-Human Conflict: When wild species affect the life of a human beings in the form of physical attacks, damageto livestock, property and crops, itis considered as HWC-Human Wildlife Conflict. Damage to human property & harassment by the monkeys are common features in various parts of India.It was reported by variouspeople that they entered houses, stole food, clothing and other goods, uprooted vegetables and garden plants,

pulled on electric wires and TV antennae, threatened and attacked peoples, often causing serious bites. Rhesus monkeys are especially aggressive and unsociable towards humans. Due to their intolerable activities a majority of residents strongly consider the monkeys as unwanted species than a species of conservation. Damage and harassment caused by macaques is very common features that can be seen in many parts of India. They colonized area aroundthe parliament and officesof the finance and defense ministries, frightening both civil servants and the public. They snatched food from people as they werewalking, tore files and documents by climbing in through windows, according to the home ministry employee. Biting humans, destroying orchards crops and studdinghousehold things are the major damages caused by rhesus monkeys. Rhesus monkey learned to exploit human habitat.

Damage of crop and biodiversity caused by Rhesus monkey: In India rhesus monkeys cause significant damage to crops and gardens and have a part to play in economic loss. Farmers claimed20 to 30 % damage to their crops has been caused due to monkeys. Many mango orchard owners claimed 20 to 25% annual damage to mango crops was due to these monkeys.Rhesusmonkeys had been declared vermin in 93 tehsils of the state by the union ministry of forest, environment and climate in 2016. Later they were declared vermin in Shimla. The damage to the maize crop from monkey ranges from 20 to 90 %. They cause financial losses to farmers due to crop depredation. Besides of direct loss, they also cause indirect loss like feeding upon the fruiting trees and the flowers, which reduces the fruit production considerably.They cause severe threat ofloss of biodiversity since they destroybiodiversity a lot.Rhesus monkeys eat tender leaves and immature leaves of plantsand photosynthesis is seriously affected. Theydestroy the seedling of wild and cultivated plants in early stage. They pluck and uproot the plants. They eat unripe frits of several plants therefore fruits not ripe on the trees for regeneration. Seeds and kernel of several plants are eaten up by rhesus monkeys therefore regeneration is seriously affected. Theydestroythe twigs and branches of trees and shrubs while jumping and playing. They eat flower buds and flowers of several plants therefore the development of fruits and seeds are seriously affected.

Rhesus monkeys'bites and carriers of diseases : High levels of macaque aggressive towards humans are commonand cause high level of stressto humans. Sometimes people get fatally attacked by troops of monkeys hiding nearby.On an average 60 to70 cases of monkey bites are reported monthly at two hospitals in Shimla, theIndra Gandhi Medical college and Deen Dayal Upadhyay hospital.Monkeys are carriers of rabies and other zoonotic diseases.B virus can spread from infected macaque monkeys to people and exposure can result in the transmission of the Herpes B viruses which has a 70% mortality rate in humans if not treated immediately. Patients of rhesus monkey bites carry risk of tetanus, bacterialinfection, rabies and herpes virus.The bite of rhesus can transmit Herpes virus that can cause a potentially fatal swelling of spina. In urban areas, these monkeys commonlycarry viruses especially free ranging monkeys.

Decisions on Rhesus monkeys taken by Government in North India: During hearing of a public interest petition field by the residents of New Friend colony in Delhi in 2000, Delhi high court banned feeding monkeys in public areas, and allowed municipal authorities to fine those who violate the directive and directed the government to round up monkeys from human habit actions and translocate them to the Asola-Bhatti wildlife Sanctuary on Delhi -Haryana border. The court also asked a special committee to explore the option of sterilization of monkeys. Rhesus monkeys has finally been declared as vermin in Himachal Pradesh. In December 2022, the center removed rhesus monkeys from schedule II of the wild life act. Stripped of the protection that comes with being labeled as an endangered species whose killing and hunting is illegal,rhesus macaques are now akin to stay cats and dogs. Himachal Pradesh has reported damage to life and property, including large scale destruction of agriculture by rhesus monkeys in areas outside forests and Central Government has considered it necessary to mitigate the damage to human life, crops and other properties of the state for ensuring conservation of wild life in forest. The state Government has officially informed the high court about the urgency of the situation. The government assured the court that it would collaborate to control the monkey problem. The notification was issued on May 2024 and the monkeys will be treated as vermin for a period of one year in 38 tehsils of 10 districts of Himachal Pradesh.

Solution of Rhesus monkey problem: Indian authoritieshave tried several strategies to solve the problem of rhesus monkeys. The management practices can be followed to manage rhesus monkeys in India particularly in North India. It involves both preventive and reactive management practices.

1. Translocation: Translocation of monkeys to forest areas can be successful technique for their rehabilitation.In 1995–2001 in orchards in Mathura District, India, found that rhesusmonkeys *Macaca mulatta* reintroduced into forest patches without resident macaques along with other interventions, remained at their release sites for at least four years. A post-translocation study in 2001 confirmed that all of the 600 monkeys captured from 12 troops and translocated to eight different forest patches, had settled, were healthy, showed no signs of stress, and behaved normally.

2. Preventing management: Behavioral biologists and primatologist narrate thatby offering food to monkeys, we accept the dominance of monkeys. So, the monkeys start

commanding us. All primatologists are against the feeding of monkeys in public places except within permanent shelters /parks specially designed for them. In Shimla municipal limits, under section 302 of municipal corporation Act. People offer bananas, gram and bread to monkeys along theroads. This often results into traffic jams and accidents. Installing of solar fencing, electric fencing (non-lethal), monkeyrepellent, monkey scare guns and laser guided alarm around the field installing motion -activated sprinkler system can startle and discourage monkeys from entering gardens. Monkeys have a strong sense of smell and be repelled by certain scents. Consider using citrus peels, garlic cloves vinegar -soaked rays placed strategically around gardens to deter them.

3. Sterilization: Sterilization can be a better option. The work carried out by the wildlife wing of the "Himachal Pradesh Forest Department" had a major impact on the control of monkeys throughout India and can be adopted. It is easily possible for one small team to efficiently sterilize at least 60 monkeys in a day. Himachal Pradesh has sterilised at least 1.4million monkeys since 2006 to 2018. As a result of the constant efforts put in by the forest department of HP, now the numbers of Rhesus macaques have started dwindling.

Fig.1:encroachment of road

Fig.2:Destruction of biodiversity

Fig.3: Rhesus monkey Fig.4: Damage the crop

Conclusion: Rhesus monkey are wild animals and they cannot be treated as pets. They are primates and native to forest. They live in groups consisting of several adults of both sexes and their young ones.There has been consistent increase in population of rhesus monkey over the years. The rapid increase in the number of rhesus monkeys' population has led to increased competition for food & space between human &monkey. Destruction of habitats, overpopulation and improper disposal of wastes are major causes of human monkey conflict. In India rhesus monkeys cause significant damage to crops and gardens and therefore are responsible for economic lossin Himachal Pradesh, Rajasthan, Uttar Pradesh Madhya Pradesh and Delhi.The magnitude of the problem is so high that farmers have formed associations to raise their voice against rhesus monkey problem. They are observed to wreak havoc in major cities of northern India. Later they were declared vermin in Shimla. 'Monkey Management' is one of the most challenging issue the forest and wildlife managers of India are facing today. Sterilization can be a better option. Translocation of monkeys to forested areas can be successful technique for their rehabilitation.

References:-

1. Chakraborty, D.,Borah,R.K.and Chakraborty, A. (2022). Does a divinityturn into a nuisance? Mankind-Rhesus Macaque Relationship in Assam, North East India. Plant health Archives .1(1):16-17.
2. Cauhan, A.&Pirta, R. (2010). Public Opinion regarding Human-Monkey Conflict inShimla, HimachalPradesh. Journal of Human Ecology .30:105-109.
3. Rathi, R. andBhatt, D. (2020) Human-monkey conflict in human dominated land scape of Naziabad ForestdivisionBijnor. Indian Journal of Animal Sciences.90(5):788-791.
4. Reddy, A.R.M. and Chander J. (2016). Human Monkey conflict in India: Some available solutions for conflict Mitigation with special reference to Himachal Pradesh.142(10):104-130.
5. Sharma, G.,Ram, C., Lal,D. and Rajpurohit, L.C. (2011). Study of man-monkey conflict and its management in Jodhpur, Rajasthan (India). Journal of Evolutionary Biology Research.3(1):1-3.
6. Shrivastava, A. (1999) Primates of Northeast India,Bikaner Rajasthan.Mega diversity Press, Bikaner.
7. Tomar, S. and Sikarwar,R.L.S. General Economic loss caused by Rhesus Monkey Macaca mulatta ssp. (2013). National Journal of Life Sciences.10(2):159-163.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Effect of Over Consumption and Lack of Sugar on Human Being

Dr. Rajesh Masatkar*

***Govt. Degree College, Nainpur, Distt. Mandla (M.P.) INDIA**

Abstract: Overconsumption of sugars on health, particularly as a risk factor for overweight, obesity or diabetes mellitus. Current guidelines recommend a daily limit of intake, and notably a restriction on added sugars. Keto diets and intermittent fasting are trending in this era of sugar mistrust. However, the metabolic benefits are not yet clearly established, and the underlying risks should restrain the prescription of these diets to a population of carefully selected patients.
Keywords – Obesity, Diabetes, Drains Energy, Craving.

Introduction - Sugar is a sweet, crystalline substance obtained primarily from sugarcane and sugar beets. It is used as a sweetener in food and beverages. Chemically, sugar refers to a group of compounds known as carbohydrates, which include glucose, fructose, and sucrose. Sugar provides a quick source of energy, but consuming too much can have health implications, such as weight gain and an increased risk of diabetes. It's important to enjoy sugar in moderation as part of a balanced diet.

Objectives – The main objectives are as given below.

1. To clean and detoxify an individuals' body naturally.
2. To save the individuals from side effects of sugar.
3. To make the people of the country healthy and wealthy.
4. To make the people of the country useful in the development of our nation.
5. To increases the economic status of the people.
6. To minimizes the intake of medicines.
7. To reduces the cost of treatment of an individual at zero level.
8. To save the time of people from unnecessary treatments.
9. To improve the overall health of an individuals.

Methodology – By observing the lifestyle of an individual.

Symptoms – Signs and symptoms caused by the sugar will vary depending on how much sugar eat an individual. Some general signs and symptoms associated with sugar.

1. Digestive problems.
2. Energy crashes.
3. Frequently craving sugary foods and drinks.
4. Increased headaches.
5. Increased hunger or thirst.
6. Mood swings.
7. Skin related issues
8. Sugar causes glucose levels to spike and plummet
9. Sugar accelerates aging
10. Sugar causes tooth decay
11. Sugar affects cognition in children
12. Sugar can cause gum disease, which can lead to heart disease

Weight Gain – Obesity rates are rising worldwide and evidence suggests that added sugar often from sugar-sweetened beverages is a major contributor to obesity. Sugar sweetened drinks like Sodas, Juices and sweet teas are loaded with fructose, a type o simple sugar. Consuming fructose increase your hunger and desire for food more than glucose, the main type of sugar found in starchy foods. Additionally, animal studies show that excessive fructose consumption may cause resistance to leptin, an important hormone that regulates hunger and tells your body to stop eating. Also, drinking a lot of sugar-sweetened beverages is linked to an increased amount of visceral fat. A kind of deep belly fat associated with conditions with diabetes and heart disease.

Risk of Heart Disease – Evidence suggests that high-sugar diets can lead to obesity and. inflammation as well as high triglycerides, blood sugar and blood pressure levels all of which are risk factors for heart disease. Additionally, consuming too much sugar, especially from sugar – sweetened drinks, has been linked to atherosclerosis, a disease characterized by fatty, artery clogging deposits. A study in over 25,877 adults found that individuals who consumed more added sugar had a greater risk of developing heart disease and coronary complications

compared to individuals who consumed less added sugar. Not only does increased sugar intake increase cardiovascular risk, but it can also increase risk of stroke.

Acne– A diet high in refined carbs, including sugary foods and drinks, has been associated with a higher risk of developing acne. Foods with a higher glycemic index, such as processed sweets, raise your blood sugar more rapidly than foods with a lower glycermic index. Consuming sugary foods can cause a spike in blood sugar and insulin levels, leading to increased androgen secretion, oil production, and inflammation all of which play a role in acne-development Additionally, many population studies have shown that rural communities that consume traditional, non-processed foods have much lower rates of acne compared to more urban, high-income areas where processed food is part of a standard diet.

Risk of Type 2 Diabetes – Diabetes is a leading cause of mortality and reduced life expectancy. Its prevalence has more than doubled over the past 30 year and projection estimate its burden will continue to rise. Excessive sugar consumption has been historically associated with an increased risk of diabetes. Eating large amount of sugar can indirectly raise diabetes risk by contributing to weight gain and increased body fat both of which are risks for developing diabetes. Prolonged high sugar consumption drives resistance to insulin, a hormone produced by the pancreas that regulates blood sugar levels. A study including individuals who drank sugar beverages for over a 4-year period found that increased consumption of sugary beverages including soft drinks and 100% fruit juice is associated with a higher risk for type 2 diabetes.

Risk of Cancer – Eating excessive amount of sugar may increase your risk of developing certain cancers. Diets high in sugar increase inflammation in your body and may cause insulin resistance, both of which increase cancer risk. A study in over 22,720 men source spanning over 9 years found that increased sugar consumption from sugar sweetened beverage was associated with a greater risk of prostate cancer.

Risk of Depression – A healthy diet can help improve your mood, a diet high in added sugar and processed

Foods may contribute to change in mood and emotions. It may even increase your chances of developing depression. High sugar consumption has been linked to cognitive impairments, memory problems, and emotional disorders like anxiety and depression. Researchers believe that chronic systemic inflammation, inulin resistance, and a disrupted dopaminergic reward signaling system all of which can be caused by increased sugar consumption may contribute to sugar detrimental impact on mental health.

Accelerate the Skin Aging Process- Wrinkles are a natural sign of skin aging. However, poor food choices can worsen wrinkles and speed up the skin aging process. Advanced glycation end products (AGEs) are compounds formed by reactions between sugar and protein in your body. They are suspected to play a key role in skin aging. AGEs damage collagen and elastin, which are protein that help the skin stretch and keep its youthful appearance. When collagen and elastin become damaged, the skin loses its firmness and begins to sag.

Can Increase Cellular Aging – Telomere are structure found at the end of chromosomes, which are molecules that hold part or all of your genetic information. Telomere act as protective caps, preventing chromosomes from deteriorating or fusing together. Although the shortening of telomeres is a natural part of aging, certain lifestyle choices can speed up the process. Consuming high amounts of sugar has been shown to accelerate telomere shortening, which increases cellular aging.

Drains your Energy – Foods high in added sugar quickly spike blood sugar and insulin levels, leading to increased energy. Product that are loaded with sugar but lacking in protein, fiber, or fat lead to a brief energy boost that's quickly followed by a sharp drop in blood sugar, often referred to as a crash. Having constant blood sugar swings can lead to major fluctuations in energy levels. A meta-analysis examining sugar's effect on mood found that carbohydrate consumption, especially sugar, lowers alertness within 60 minutes of consumption, and increases fatigue within 30 minutes after consumption. To avoid this energy-draining cycle, choose carb sources that are low in added sugar and rich in fiber. Pairing carbs with protein or fat is another great way to keep your blood sugar and energy levels stable.

Lead to Fatty Liver – a high intake of fructose has been consistently linked to an increased risk of fatty liver. Unlike glucose and other types of sugar, which are taken up by many cells throughout the body, fructose is almost exclusively broken down by the liver. In the liver, fructose is converted into energy or stored as glycogen. Large amounts of added sugar in the form of fructose overload your liver, leading to nonalcoholic fatty liver disease (NAFLD), a condition characterized by excessive fat buildup in the liver.

Cognitive Decline –. Excessive added sugar intake promotes inflammation, insulin resistance and stress in the body. Over time, these things can damage neurons and disrupt communication.

Discussion – Overconsumption and a lack of sugar in human beings can have notable effects on health, though they exist on opposite ends of the spectrum. Here's a closer look at both sides: Excessive sugar intake can lead to a variety of health problems**. Obesity and weight gain** added sugars are calorie-dense and can contribute to weight issues. **Diabetes** constantly high blood sugar levels strain the body's ability to manage insulin**. Heart Disease** overconsumption is linked to inflammation and increased triglyceride levels. **Tooth Decay** sugary foods and drinks promote the growth of harmful bacteria in the mouth. **Energy Fluctuations** the "sugar rush" is often followed by an energy crash, affecting productivity and mood. It's a significant issue in modern diets, as sugar is hidden in many

processed foods and drinks, sometimes making it harder to control intake. On the flip side, insufficient sugar—or glucose, the body's primary energy source—can lead to Low Blood Sugar (Hypoglycaemia) symptoms include fatigue, dizziness, confusion, and fainting. Brain function decline the brain relies heavily on glucose to function, so deprivation can impair cognitive abilities. Physical weakness without enough glucose, muscles may feel weak or fatigued, affecting daily tasks. Mood swings lack of glucose can disrupt hormonal balance, leading to irritability and anxiety. Risk for ketoacidosis (in extreme cases) prolonged glucose scarcity forces the body to break down fat for energy, producing acidic ketones that can affect overall health. A healthy diet focuses on moderating sugar intake while ensuring the body has enough glucose from natural and nutrient-rich sources like fruits, vegetables, and whole grains. It's also worth noting that "added sugars" (such as those in sodas or candies) differ from natural sugars found in whole foods, which come bundled with fibers and nutrients that help regulate absorption.

Findings :

1. Maintain ideal weight.
2. Eat a healthy diet.
3. Maintain calorie intake.

Suggestion :

1. Avoid junk food and fast food.
2. Stop smoking and drinking.
3. Avoid excess sugar.
4. Eat natural sugar.
5. Avoid added sugar.
6. Eat alternatives of added sugar.

Conclusion : It is old says that "Health is Wealth". If health is well then, all things is in our hand. But being author of this paper, I want to aware the people of our country to minimize the intake of sugar by developing healthy active lifestyle. it is advisable to pay special attention to what you eat. avoid junk food simple carb as much as possible and avoid intake of medicines for the little reason. Make a healthy routine for long time with consistently will minimize the side effect of sugar.

References :–

1. https://www.healthline.com/nutrition/too-much-sugar#how-to-reduce
2. https://www.verywellhealth.com/what-happens-if-you-eat-too-much-sugar-8718337

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Understanding Indian Popular Literature

Pr Minu Gidwani*

***Asst. Professor (English) PMCoE, BKSN Govt. College, Shajapur (M.P.) INDIA**

Introduction

"Literature adds to reality, it does not simply describe it."
— C. S. Lewis
"You don't have to burn books to destroy a culture. Just get people to stop reading them."
— Ray Bradbury

Defining Popular Literature: The term "popular" derives from the Latin *populus* (people), signifying works created for and consumed by the masses (Frow 23). As John Frow argues, popular literature functions as a "cultural practice" that both reflects and shapes societal values, often serving as a mirror to the anxieties and aspirations of its time (24). In the Indian context, this includes fiction and non-fiction works that prioritize broad accessibility over elitist literary conventions, straddling the tension between "high" and "low" culture (Anjaria 5).

Popular literature distinguishes itself from "high literature"—a category historically associated with experimental forms, thematic complexity, and institutional validation (Bourdieu 112). While canonical texts like Rabindranath Tagore's *Gitanjali* emphasize artistic innovation, popular literature prioritizes immediate engagement, often through genre-driven narratives designed for commercial success (Gelder 8).

Key Characteristics of Popular Literature

1. **Accessibility:** Popular texts employ straightforward language and linear narratives to cater to diverse audiences. For instance, ChetanBhagat's*Five Point Someone* (2004) uses colloquial English to critique India's education system, selling over 1.5 million copies (Amazon India). This aligns with Ken Gelder's assertion that popular fiction "invites readers in rather than excluding them" (14).
2. **Genre Orientation:** Organized into recognizable genres (romance, thriller, fantasy), popular literature relies on familiar tropes to ensure reader comfort. The *Feluda* detective series by Satyajit Ray, modeled on Arthur Conan Doyle's Sherlock Holmes, exemplifies this through its formulaic mysteries (Chaudhuri 89). As John G. Cawelti notes, genre conventions act as "cultural rituals" that reinforce shared societal myths (35).
3. **Commercial Focus:** Market viability drives production, with publishers prioritizing trends like mythological retellings (e.g., Amish Tripathi's*Shiva Trilogy*, 4 million+ copies sold) or campus romances (Bhagat, *2 States*). TabishKhair critiques this as the "commodification of storytelling," where profit motives overshadow artistic risk (*Babu Fictions* 67).
4. **Ephemeral Nature:** Unlike high literature's pursuit of timelessness, popular works often reflect transient cultural moments. For example, Hindi pulp fiction of the 1990s, such as Ved Prakash Sharma's *VardiWalaGunda*, capitalized on post-liberalization urban anxieties but faded from mainstream discourse (Gupta 112).

Debates: Literary Merit vs. Market Forces: The tension between artistic value and commercial appeal remains central to Indian popular literature. While critics like Pankaj Mishra dismiss mass-market fiction as "intellectual fast food" (23), scholars like UlkaAnjaria argue that texts like *The White Tiger* (Adiga 2008) challenge elitist hierarchies by democratizing access to literary culture (*Reading India Now* 45). Similarly, the Progressive Writers' Movement (1930s–50s) blended social critique with populist themes in works like Mulk Raj Anand's*Untouchable* (1935), bridging the gap between art and activism (Rajan 78).

Popular literature serves as a vital cultural mirror, reflecting everyday experiences and aspirations while shaping collective consciousness. Unlike canonical works, it prioritizes accessibility over aesthetic complexity, offering insights into socio-political anxieties and values (Frow 45). In India, this is evident in the success of mythological retellings like Amish Tripathi's*Shiva Trilogy* (4 million+ copies sold) and socially charged narratives such as Mulk Raj Anand's*Untouchable* (1935), which critiques caste hierarchies (Anjaria 78; Sen 112). These works inspire film adaptations like *3 Idiots* (2009) and academic inquiries into postcolonial identity (Khair 34).

Leslie Fiedler argued that popular literature encompasses "song and story, mostly story," forms often dismissed by academia (*What Was Literature?* 23). He critiqued their marginalization, noting their cultural ubiquity despite being "ghettoized" (27). This includes genres like

"kitchen maid romances" and oral folktales, which reflect gendered and class-based struggles yet remain excluded from syllabi (Spivak 56). For example, Tamil *kadhai* (folktales) and Bengali *kavigan* (bardic poetry) preserve subaltern voices, gaining academic traction only recently (Dharwadker 89).

Popular literature spans genres like detective fiction, spy thrillers, and mythological graphic novels. Arthur Conan Doyle's *Sherlock Holmes* and Satyajit Ray's *Feluda* series exemplify mystery writing's adaptability across cultures (Gelder 67). Similarly, Ian Fleming's *James Bond* inspired Hindi pulp novels like Ved Prakash Sharma's *VardiWalaGunda* (Gupta 102). Contemporary forms, such as *Amar Chitra Katha* and *Terribly Tiny Tales*, blend oral traditions with digital storytelling (Natarajan 45).

Debates about artistic merit persist. Critics like Pankaj Mishra dismiss mass-market fiction as "intellectual fast food" (21), while Ken Gelder defends its role as "cultural rituals" reinforcing shared myths (*Popular Fiction* 15). In India, ChetanBhagat's campus novels, despite simplistic prose, democratize access to English-language literature (Anjaria 112).

Inverse Relationship between Literary Merit and Popular Literature

Popular literature attain success in market, but they are not taught in schools and colleges on the notion floated by elitist critics is that they are not worthy for serious attention and cannot be admitted into academia. These so-called guardians of "good" taste "ghettoize" certain writers even before reading their works. Even librarians "ghettostack" these books. They call them as juveniles, teenage diction and pornography. Such books are never considered for any major prize. Fiedler calls this an "untouchable category." However, today, the borders that divide the pop from the elite are merging. Media also has a role in this.

Literature and Media: In the last two decades, a paradigm shift has happened for literature as other modes of representations – cinema, stage, television, comic books, etc –have promoted them. As mass public culture, art practice and vehicle of propaganda, literary adaptations on celluloid and cinema have created an extended narrative text for the audience. About 50 per cent of the films today are based on popular literature. Ian Fleming's James Bond spy thrillers is an example. Film Adaptations Overview

Indian cinema has a long tradition of adapting popular literature, bringing stories from books to the screen. These films often capture the essence of Indian society, from urban youth struggles in "3 Idiots" to historical epics like "Padmaavat." They are typically in Hindi, Bengali, or other Indian languages, produced in India, and reflect the popularity of the source material through sales and cultural impact.

Notable Examples:

1. "3 Idiots" (2009), based on ChetanBhagat's "Five Point Someone," sold over 7 million copies, satirizing the education system with stars like Aamir Khan.
2. "Devdas" (2002), from Sarat Chandra Chattopadhyay's novel, is a classic romantic tragedy, with multiple adaptations winning awards.
3. "GangubaiKathiawadi" (2022), based on S. Hussain Zaidi's "Mumbai Fables," explores Mumbai's underworld, starring Alia Bhatt.
4. The White Tiger (2021, Netflix): RaminBahrani's Oscar-nominated film adapts AravindAdiga's 2008 Booker Prize-winning novel, exposing class struggle in modern India. The book has sold 2+ million copies worldwide.

Popular Literature Today: Popular literature has now got the attention of a literate reading public. For example, ChetanBhagat, the creator of campus novels, has captured the pulse of the youngsters. This is because he gives them narratives in which the youth live and survive. Some writers like Surender Mohan Pathak, who writes in Hindi, are no longer considered as trashed. They have now been the subject of literary and academic conferences and university curricula. The doyen of chick-lit, Advaita Kala and several of her kind would like to equally claim academic space within the elite corridors, but they are yet to be included. Marc Angenot in Pawling's Popular Fiction and Social Change says, "Para literature occupies the space outside the literary enclosure, as a forbidden taboo, a degraded product." Flash fiction has emerged as a significant form of literature. Ernest Hemmingway's "For sale: Baby shoes, never worn" was applauded as a story with intense depth, gravity and minimal expressions. Today flash fiction provides a unique reading experience. The United States made significant contributions in flash fiction with Narrative and Smith magazines. In India Terribly Tiny Tales has been popular on social media in 2013 with **AnujGosalia**. Launched in 2016, Mirakee is another writing mobile application that has been a platform for flash fiction writers. It allows a writer embellish their writing in an image form. Mirakee has become an instrument which helps writers to explore the realm of flash fiction. In the 21st century, India saw the rise of a new kind of readers who have become an increasingly emboldened social class. **ChetanBhagat's** Five Point Someone (2004), One Night at a Call Centre (2008) and The 3 Mistakes of My Life (2008) have seen commercial success. Romance and campus fiction became the two genres that gave the Indian audience a literature that was thoroughly Indian. Post 2000s, the new brigade of engineers or management graduates- turned authors held, the baton of commercial Indian fiction. DurjoyDatta who was not just a commercial author, but a social media person, is an example. Post 2000s, the new brigade of engineers or management graduates-turned authors held, the baton of commercial Indian fiction such **as DurjoyDatta** who was not just a commercial author, but a social media person

The scope of Indian popular literature, deeply rooted in **ancient oral traditions** like the *Panchatantra* (3rd century BCE) and epics such as the *Mahabharata* and *Ramayana*—

later reimagined in regional narratives like the Tamil *KambaRamayanam* (12th century)—has evolved dynamically since India's independence in 1947. Post-independence democratization of vernacular languages spurred growth, blending folk storytelling with modern themes, exemplified by the socially driven Progressive Writers' Movement (1930s–50s) and works like Mulk Raj Anand's*Untouchable*. The 1950s witnessed a pulp fiction boom, with magazines merging traditional motifs with contemporary issues. Globalization post-1990s liberalization amplified Western influences and English-language literature, epitomized by Arundhati Roy's *The God of Small Things* (1997), while mythological retellings like Amish Tripathi's*Shiva Trilogy* bridged ancient sagas with modern secularity. The 21st-century digital revolution democratized access further through e-books, blogs, and platforms like Wattpad and Pratilipi, alongside social media's rise in micro-stories (Instagram/Twitter poets) and diaspora voices (JhumpaLahiri). From folk *Pandvani* performances to Netflix adaptations (*Sacred Games*), Indian popular literature mirrors the nation's socio-cultural metamorphosis, balancing regional heritage with globalized modernity.

Beyond the Divide: Blurring the Lines Between Pulp and Prestige: The rigid distinctions between "popular"/ "pulp" fiction and "mainstream" literature have increasingly dissolved in contemporary literary discourse, reflecting shifting cultural, academic, and commercial paradigms. This convergence is particularly evident in India, where postcolonial identity crises, globalization, and digital democratization have reshaped literary hierarchies.

Critics argue that the academy's historical disdain for popular literature—derided as "lowbrow" or "commercial"—is waning. Leslie Fiedler's seminal essay *"Cross the Border—Close the Gap"* (1975) posited that the divide between high and low culture is artificial, urging scholars to embrace "the guilty pleasures of pulp" (Fiedler 12). This is exemplified by the inclusion of authors like **ChetanBhagat** (*Five Point Someone*) in university syllabi, despite critiques of his "simplistic prose" (Khair, *Babu Fictions* 89). Similarly, **Amish Tripathi's***Shiva Trilogy* (2010–2013), a mythological pulp series, is now studied alongside classical texts like the *Ramayana* in courses on Indian epics (Sen, "Mythopoeic Modernity" 45).

Postmodernism's rejection of rigid categories has enabled authors to blend literary depth with populist appeal. **Salman Rushdie's***Midnight's Children* (1981), though celebrated as canonical literature, employs magical realism and pulp-style cliffhangers. Rushdie himself acknowledges borrowing from "Bollywood's melodrama and comic-book vitality" (*Imaginary Homelands* 15). Similarly, **Amitav Ghosh's***Ibis Trilogy* (2008–2015) merges historical scholarship with swashbuckling adventure, a genre once dismissed as "nautical pulp" (Dharwadker 112).

The commercial success of popular fiction has pressured mainstream publishers to prioritize marketability. **Arundhati Roy's***The Ministry of Utmost Happiness* (2017), despite its experimental structure, was marketed as a "global bestseller" akin to pulp thrillers (Roy, Penguin India). Conversely, pulp authors like **DurjoyDatta** (*Of Course I Love You!*) now collaborate with literary festivals, signaling a bid for cultural legitimacy (Anjaria, *Reading India Now* 76). TabishKhair critiques this as "the neoliberal commodification of storytelling," where "literary merit is conflated with sales figures" (*The New Xenophobia* 134). Despite this blending, purists resist the trend. **Pankaj Mishra** laments that "the Rushdie-esque ambition to marry art and commerce has birthed a generation of writers who prioritize plot over prose" ("The Cult of the Besteller" 21). Others, like **GayatriChakravortySpivak**, caution against conflating accessibility with intellectual compromise, arguing that "popular forms can subvert hegemony if critically engaged" (*Death of a Discipline* 72).

Exploring Colours of Indian Popular Literature: Indian popular literature is a vibrant field, deeply rooted in ancient oral traditions, myths, and epics like the Mahabharata and Ramayana, which have been retold across regional languages for centuries. This literature has evolved significantly, especially post-independence in 1947, reflecting India's socio-cultural transformation. The Progressive Writer's Movement, active from the 1930s to the 1950s, emphasized socially relevant narratives, with Mulk Raj Anand's"Untouchable" highlighting Dalit struggles, setting a precedent for literature engaging with societal issues.

Fiction: Best-Sellers and Cultural Resonance: Fiction is a cornerstone of Indian popular literature, with authors like ChetanBhagat leading the charge. His novels, such as "Five Point Someone" and "The 3 Mistakes of My Life," have sold over 7 million copies, resonating with young urban readers (Amazon.in). Amish Tripathi's "Shiva Trilogy," including "The Immortals of Meluha," has sold over 4 million copies, blending mythology with fantasy, and reflecting a modern reinterpretation of ancient tales (Booksetgo.com). Arundhati Roy's "The God of Small Things" (1997), with over 5 million copies sold globally, won the Booker Prize, showcasing India's literary global impact.

Poetry: From Tradition to Digital Platforms: Poetry in India has a long history, with Rabindranath Tagore's "Gitanjali" earning the Nobel Prize in Literature in 1913, selling widely and influencing global literature (Nobel Prize website). Other notable poets include Nissim Ezekiel, JayantaMahapatra, and A.K. Ramanujan, whose works explore urban and cultural themes. While poetry sales may not match fiction, social media platforms like X have boosted visibility, with contemporary poets like Rupi Kaur (of Indian origin) selling millions of copies of "Milk and Honey."

Non-Fiction: Diverse and Impactful: Non-fiction spans biographies, history, and self-help, with A.P.J. Abdul Kalam's "Wings of Fire" selling over 1 million copies, inspiring readers with his life story (Goodreads).

RamachandraGuha's "India After Gandhi" has been critically acclaimed, offering a detailed history of post-independence India, with strong sales figures (Goodreads). Other best-sellers include S. Hussain Zaidi's "Dongri to Dubai" and AmartyaSen's "The Argumentative Indian," reflecting diverse interests.

Essays: Intellectual Discourse and Cultural Insights: Essays by Indian authors like Tagore, Jawaharlal Nehru, and Nirad C. Chaudhuri have shaped intellectual discourse, exploring India's societal and political landscape. Modern essayists like ShashiTharoor and Amitav Ghosh continue this tradition, with collections addressing contemporary issues, often gaining traction through digital platforms.

Impact of Globalization and Digital Platforms: Globalization has exposed Indian literature to international audiences, with authors like JhumpaLahiri (of Indian origin) gaining global acclaim for "The Namesake." Digital platforms like Amazon Kindle and Flipkart have revolutionized access, with e-books and self-publishing through Amazon KDP enabling new voices. Social media, particularly X, has been pivotal, with authors like ChetanBhagat and PreetiShenoy using it to promote works and engage readers, enhancing visibility and sales. Platforms like Wattpad have also allowed amateur writers to gain popularity, democratizing the literary landscape.

Table1: Top-Selling Indian Authors and Their Works

Author	Work	Copies Sold	Genre
Chetan Bhagat	Five Point Someone	Over 7 million	Fiction
Amish Tripathi	Shiva Trilogy	Over 4 million	Fiction
Arundhati Roy	The God of Small Things	Over 5 million	Fiction
A.P.J. Abdul Kalam	Wings of Fire	Over 1 million	Non-Fiction
Ramachandra Guha	India After Gandhi	High sales	Non-Fiction

Social Media Trends: Instagram/Facebook/ Rekhta/ KavitaKosh Poets and Micro-Fiction: Social media has been a game-changer, especially for poetry and short-form content. Instagram poets have gained immense popularity, using the platform to share their work and connect with global audiences. Notable examples include:

1. Rupi Kaur: An Indian-born poet based in Canada, her collection "Milk and Honey" (2014) has sold over 3 million copies worldwide, spending 77 weeks on the New York Times Best-Seller List PR Newswire. While specific sales in India are not detailed, her work resonates strongly, given her cultural roots and social media presence.
2. KarunaEzara Parikh: A poet and screenwriter, her Instagram posts explore themes like love and social issues, gaining a significant following for their emotional depth Harpers Bazaar.
3. Pavana: Known for vivid, personal poetry, her work on Instagram appeals to a broad audience, reflecting everyday experiences Vogue India.

Micro-fiction platforms have also flourished, offering concise narratives for quick consumption. Terribly Tiny Tales, launched by AnujGosalia in 2013, is India's largest micro-fiction community, with stories limited to 140 characters. It boasts over 1.5 million weekly engagements and has published "Terribly Tiny Tales: Volume 1" with Penguin Random House India, featuring over 100 writers Terribly Tiny Tales website. Another platform, Mirakee (2016), combines text with images, enhancing visual appeal and reaching diverse audiences Homegrown.

Facebook : Facebook: Beyond mere promotion, Facebook has birthed literary works in India. Authors like Ira Trivedi and JeetThayil leverage their followings, but a striking example is Atul Kumar Rai, whose viral Hindi posts on everyday life evolved into a published book by Hind Yugm. This phenomenon—posts turning into books—highlights how Facebook fosters grassroots creativity, with over 100 writers credited annually for such transitions [Hindustan Times, 2017]. The platform's 400 million+ Indian users (2023) make it a literary incubator.

Literary Platforms: Rekhta and KavitaKosh

Rekhta: Dedicated to Urdu literature, Rekhta hosts over 130,000 works by 8,000+ poets, drawing 2 million monthly visitors (2023). A surprising detail: 60% of its users are under 35, proving Urdu poetry's appeal to youth, often non-readers of Perso-Arabic script [The Hindu, 2017]. Its Jashn-e-Rekhta festival (Delhi, 10th edition in 2024) attracts 200,000+ attendees, blending live performances with digital access. Rekhta's e-books, like Ghalib's collections, see 500,000+ downloads annually, reviving classics.

KavitaKosh: The world's largest online Indian poetry library, KavitaKosh offers over 60,000 pages across languages like Hindi, Urdu, and Bhojpuri, with 500,000 monthly visitors reading 2 million pages (2013 data, likely higher now) [World Records India, 2013]. A salient fact: it includes folk songs from 25+ Indian dialects and translations from 40 foreign languages into Hindi, showcasing unexpected diversity. Volunteers, not professionals, built this free resource, a surprising testament to community effort since its 2006 launch by Lalit Kumar.

Audiobooks and Podcasts: Growing Popularity: Audiobooks have seen a surge in India, driven by platforms catering to diverse tastes and languages. Key players include:

1. Kuku FM: Founded in 2018, it has over 1 crore listeners and 6 crore listening hours, offering audiobooks in 7 languages like Hindi, Marathi, and Tamil. It adds one new book weekly, with spiritual texts like the Bhagavad Gita available The Hindu BusinessLine.
2. Pocket FM: With 15 million monthly active listeners and over 3 billion minutes of monthly audio streaming, it covers Hindi, Bengali, and other regional languages, hosting over 12,000 stories The Hindu BusinessLine.
3. Audible: Backed by Amazon, it offers over 200,000 audiobooks and 40,000 podcasts, popular among Indian

listeners for its vast library and offline access TechRadar.

4. Storytel: A subscription-based platform with 700,000 books in its catalog, it provides access in over 30 languages, including Indian languages, for Rs.149–199 monthly Himalayan Writing Retreat.

Specific examples highlight their impact. "The Palace of Illusions" by Chitra Banerjee Divakaruni, a retelling of the Mahabharata, is noted for high listenership, with claims of over 1 million listens, though exact figures are unverified Audible. Other popular titles include Ravinder Singh's works on Audible, reflecting the growing market for audio formats.

Cultural and Market Impact: These digital formats have not only increased accessibility but also fostered a new generation of writers and readers. Social media platforms like X enhance visibility, with authors like ChetanBhagat using X posts to engage fans, boosting sales and reach. ChetanBhagat's X profile. The audiobook market, valued at Rs.739 billion in 2020, continues to grow, with platforms like Kuku FM boasting 1.5 lakh paid subscribers India Today.

Conclusion: Indian popular literature is a living, breathing entity that mirrors the nation's socio-cultural evolution, from ancient oral traditions to the digital age. Rooted in epics like the *Mahabharata* and *Ramayana*, it has dynamically adapted to reflect changing times—whether through the socially charged narratives of the Progressive Writers' Movement, the pulp fiction boom of the 1950s, or the mythological reimaginings of Amish Tripathi. Authors like ChetanBhagat (7+ million copies sold) and Arundhati Roy (Booker Prize-winning *The God of Small Things*) exemplify how popular literature bridges accessibility and artistic ambition, while digital platforms like Wattpad and Instagram democratize storytelling for a new generation. Films like *3 Idiots* and *Sacred Games* further amplify literature's reach, proving that stories thrive when they resonate with the masses. Despite elitist critiques, Indian popular literature has carved its niche, balancing commercial success with cultural relevance. Its future lies in embracing globalization while preserving regional authenticity, ensuring it remains a mirror to India's pluralistic soul.

References:-

1. Anjaria, Ulka. *Reading India Now: Contemporary Formations in Literature and Popular Culture*. Temple UP, 2019.
2. Bourdieu, Pierre. *The Field of Cultural Production*. Columbia UP, 1993.
3. Cawelti, John G. *Adventure, Mystery, and Romance: Formula Stories as Art and Popular Culture*. U of Chicago P, 1976.
4. Dharwadker, Aparna. *Theatres of Independence: Drama, Theory, and Urban Performance in India Since 1947*. U of Iowa P, 2005.
5. Fiedler, Leslie. *Cross the Border—Close the Gap*. Stein and Day, 1975.
6. —. *What Was Literature? Class Culture and Mass Society*. Simon & Schuster, 1982.
7. Frow, John. *Cultural Studies and Cultural Value*. Oxford UP, 1995.
8. Gelder, Ken. *Popular Fiction: The Logics and Practices of a Literary Field*. Routledge, 2004.
9. Gupta, Charu. *Sexuality, Obscenity, Community: Women, Muslims, and the Hindu Public in Colonial India*. Permanent Black, 2001.
10. Khair, Tabish. *Babu Fictions: Alienation in Contemporary Indian English Novels*. Oxford UP, 2001.
11. Mishra, Pankaj. "The Cult of the Bestseller." *The New York Review of Books*, vol. 55, no. 2, 2008, pp. 19–22.
12. Natarajan, Srividya. *Dalit Pulp: Print Capitalism and New Marginalities in India*. Oxford UP, 2021.
13. Roy, Arundhati. *The Ministry of Utmost Happiness*. Penguin India, 2017.
14. Sen, Sankar. *Mythopoeic Modernity: Postcolonial Reimaginings in Indian Popular Fiction*. HarperCollins, 2019.
15. Spivak, GayatriChakravorty. *Death of a Discipline*. Columbia UP, 2003.
16. —. *In Other Worlds: Essays in Cultural Politics*. Routledge, 1988.

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Exploration of Indian Medicinal Plant i.e, *Uraria Picta* in term of their extraction and processing for pharmacological and toxicological studies

Mahesh Kumar Ahirwar* **Asha Verma**** **Santosh Ambhore***** **Laxmi Bareliya******

*Research Scholar, Barkatullah University, Bhopal (M.P.) INDIA
** Professor (Chemistry) Govt. Shyama Prasad Mukherjee Mahavidyalaya, Bhopal (M.P.) INDIA
*** Asst. Professor (Chemistry) Govt. Motilal Vigyan Mahavidyalaya, Bhopal (M.P.) INDIA
**** Asst. Professor (Chemistry) Govt. Motilal Vigyan Mahavidyalaya, Bhopal (M.P.) INDIA

Abstract: *Uraria picta* is a woody herb found throughout Asia, Africa and Australia. It has been long known to possess significant ethno-medicinal value. It is a key ingredient of more than a hundred Ayurvedic formulations and an important component of many patents in countries like India, China, Japan and USA. *U. picta* is commercially important and in high demand in India and Western African countries. As a consequence, *U.picta* has now been classified as a rare, bioactive and threatened species in India. Biochemical analysis of different plant parts of *U. picta* and its tissue culture has shown that it is a valuable source of several bioactive phytochemicals. In this work, relevant details on ethnobotany, bioactive compounds, pharmacology, toxicology, tissue culture and commercial applicability.The plant possesses several medicinal properties viz., anticancer, anti-inflammatory, anti-diabetic, antimicrobial, etc.
Keywords–ethno-medicinal , phyto-chemicals,bioactive, investigation, endangered.

Introduction

Geographical Distribution: *Uraria Picta* is widely distributed throughout India .It is commonly found in dry grasslands, growing densely and producing poorly viable seeds and it also extend upto Tarai Region of the Himalayas .Apart from India it can also be found in various parts of Asia including China, Japan, Bangladesh, Pakistan, Bhutan and Nepal. The plant is also found in regions of Africa like Nigeria, Egypt, Ethiopia, Congo, South Africa, Queensland Australia and in Philippines, Malaysia.

Uraria Picta (Syn.doodia Picta, family- Leguminasae) is commonly called prishnaparni or pithvan plant. It is also found throughout India and almost all place in Madhya Pradesh and Uttar Pradesh, Uttarakhand , New Delhi, Jammu and Kashmir, Andhra Pradesh, Kerala and this Bundelkhand comprises, Agra, Jhansi, Lucknow, (All in Uttar Pradesh). The study sitewise regularly visited to collect the plant sample. The whole plant *Uraria Picta* samples were collected from the natural habitate plant sample were identified by using the available literature.

Various therapeutic values and traditional uses of *Uraria Picta:* It is an interdisciplinary science that connects knowledge of biology,chemistry, physics,engineering and material science. Remarkable advance are made in the field of biotechnology and nanotechnology to harness the benefit of life science, health care and industrial biotechnology. It also have extensively been achieved for the treatment of cancer diabetes allergy, infection, inflammation.

Almost all parts of the *U. picta* have therapeutic value and used for treating fatigue, oral sores and several gynecological disorders in Indian system of medicine (Yadav et al., 2009; Bhattacharya and Datta, 2010; Kale et al., 2012; Saxena et al., 2016). It has also been reported as an antidote to snake *Echis carinatus* and in fracture healing It has antiseptic, antimicrobial, acaricidal, antiulcerogenic, anti-hypodyanamic and anti-pulmonary hypertensive properties and exhibited partial vasorelaxing effect (Yadav et al., 2009; Pathak et al., 2005).

Besides use in the traditional system of medicines, it is highly exploited by the drug and pharmaceutical industries for preparation of various formulations. The quality and efficacy of herb depend on their biologically active compound rhoifolin (Apigenin-7-o-neohesperidoside) which is used as a chemical marker and the rhoifolin content considerably influenced by the environment, genotype, season, etc. (Saxena et al., 2016). Saxena et al. (2016), reported that the rhoifolin content varied from 0.039 % to 0.195 % among the aerial part of samples collected from eight places belonging to seven agro-climatic regions of the Madhya Pradesh. The highest content was found in aerial parts collected from Pandado, Sehore (0.25 %)

followed by Kapoornala, Chhindwara (0.167 %) and Pamakhedi, Khandwa (0.152 %) and lowest content in plant sample from Navali, Mandsaur (0.039 %). Prishniparni herb sold in market @ Rs. 1,500–2000/kg with frequent adulteration and substitution of Desmodium gangeticum. Due to high demand and indiscriminate collections from wild, the natural population of this plant is depleting day-by-day and has become rare and critically endangered species (Anand et al.,1998) and enlisted in threatened species in the red list of IUCN (Groom, 2012). WHO and modern pharmacopeia are also giving strong emphasis on quality and efficacy of medicinal plants concerning their biologically active ingredients (Saxena et al., 2016).

Uraria picta. (Prishnaparni) is one of the most important medicinal plants used in different traditional systems of medicines including the Ayurveda and Traditional Chinese medicine. The major use of this plant was found in the most popular Ayurvedic formulation “Dashmula” and in several many other important Ayurvedic formulations. IUCN placed this woody herb in the least concern category as per version 3.1. It has extensive therapeutic uses and pharmacological activities. Though this plant is a source of many phytochemicals, the uses are uncertain because the raw plant parts or crude extracts are being used in all formulations. Therefore, extensive investigations are necessary to focus on the identification of these phytochemicals. It is an urgent need to give special attention to collecting various aspects and more efforts are required in all areas for utilization and conservation of this valuable medicinal herb. Herein, a compilation of all information with various aspects has been presented, including the authors published work on *Uraria picta*. This review pursues attention towards biological activity, phytochemical profile, utilization, propagation and conservation of *Uraria picta.*

Traditionaly various species of *Uraria Picta* are used by the in habitat of Indian country for the treatment of variety of including asthma, cough, fever, cancer, renal diseases. Several pharmacological attributes of *Uraria Picta* species such as anti oxidant , anti viral, anti bacterial , anti tumor have already been provided.In the recent years , plenty of research has been conducted to explore the phytochemical composition and pharmacological activities crude extract and isolated compounds obtained from different parts of *Uraria Picta.*

Botanical Description: *Uraria picta* is annual herb, stem woody at maturity, and it covered with scarce modified fine, short, straight and hooked hairs. Plant body is erect, height ranging from 0.5 to 2.0 m. Leaves are dimorphic, young leaves are simple and at maturity they are odd-pinnately compound covered with the hairs as present of stem (Figure 1). Inflorescence is of raceme type. Racemes are terminal and elongated upto 1.5 feet. The flowers are small, present in large number (35-75) on dense spike (figure 1). The inflorescence axis is pink, purple or pale lead in colour. Flowers are purple, pink or bluish in colour. Flowers are bracteate, bracts persistent at the base and apex. Calyx is four mm long; teeth plumose much longer than the short tube. Corolla papilionaceous, sepals are 4-5 mm long.Pods are segmented with 3-6 segments, each 2-3 mm broad and 5-9 mm long, smooth, polished, folded on one another (Bhattacharya & Datta, 2010). Pods contain 2-6 seed and segments are nearly separated (Waghire et al.,2011).

Figure 1

Material and Methodology: The prepared extract of *Uraria Picta* was used to detect the presence of various compounds in the aerial part of plant to confirm the presence of nanoparticle. The available information about the traditional uses phytochemical and pharmacological properties of Uraria Picta was searched through web of science , google, scholar science direct and springer using english as the search language. The keywords use are *Uraria Picta* prishnaparnia traditional use, phytochemistry, bioactive substance, pharmacological activities, toxicological and other related words investigation the essential oils from 25 species of medicinal plant were tested as mycelia growth inhibitors six important pathogenic and toxinogenic fungal species (Zabka et.al.2009).

Recently develop techniques like UV, IR, NMR and ,mass spectroscopy can be used for spectral analysis and structural elucidation of the isolated biodynamic constituets.Common separation techniques like thin layer chromatography, column chromatography can be used and important biophysical technique that enable the separation, identification, purification of the components of a mixture for qualitative and quantitative analysis.

Quantitative analysis accounts for the quantity or the concentration of the phyto-chemical present in the plant sample. It’s a part of the analytical chemistry, in which quantitative analysis help in the determination of the absolute or relative abundance (often expressed as a concentration) of one, several or all particular substance present in the sample. Column chromatography is a preparative technique used to purify compounds depending on their polarity. In column chromatography, a mixture of molecules is seprated based on their differentials partitioning between a mobile phase and a stationary phase (Dhanalakshmi et.al. 2023).

Morphological Characteristics : *Uraria Picta* is a straight free between one and two meter tall. At the bottom are

wooden stems. The leaves are composed of 2-6 leaves and pinnate pares. In the vegetation phase, in the pare of leaves appear without the final sugar and honey, powdered route prishnaparni with meat soup for promotion adhesion fractured bone.

Photochemistry, Pharmacology, Toxicology : The plant is said to contain alkaloids steroids, terpenoids, phenols and all the which are components of plants the tannis were not in the stem and root the glycosides in the internal organs were in the roots(26). Recently flavanoid (Apigenin 7- o-neohesperido side) has been isolated from this plant (10).Pharmacological activities like antioxidant , anti-diabetic, anti-inflammatory, anti-arthritis , antimicrobial, antifungal, anticancer.

A cute toxicity studies on different extract of *Uraria Picta* were conducted using albino mouse and rat models. Three different seed extract i.e. petroleum ether, ethyl acetate and alcoholic did not provoke any of toxicities during the first 24 hours and no mortality in any of the test groups was observed (Jalalpure at.al.2013)

Conclusion: This study t is based on the comprehensive study conducted on *U. picta,* which summarizes the botany, geographical distribution, propagation, phytochemical constituents and pharmacological properties of plant. This shows that the plant treasures a great medicinal wealth as each part of the plant reportedly has various phytochemical constituents having their respective pharmacological properties. These pharmacological properties are providing the evidence to various ethno-medicinal uses of the plant which have been in practice in many continents for centuries. Hence the whole plant plays an important area of research and developmental properties for pharmacologists and researchers. Due to its high therapeutic use and growing need, the plant is becoming rare and endangered; therefore it is necessary to create awareness of this plant to support its propagation in large numbers.

The development of modern drugs from less toxic plant products with proven medicinal properties is now being supported globally. There is no doubt that the products of this plant consecrate bright prospects as a reliable cure for various ailments.

The study of nanoparticle and flavenoid constituents and their antimicrobial properties may be an important substitution for various important drugs. *Uraria Picta* as an excellent medicinal plant with traditional bioactive ingredients such as antioxidant , anti-diabetic, anti-inflammatory, anti-arthritis , antimicrobial, antifungal, anticancer. The reported pharmacological studies indicated that this plant.These synthesis methods may be require the use of different raw material and yield reaction by using toxic products or wastes. This formulation also known as green chemistry, an environmental- friendly approach has become a new option in chemistry.

References:-

1. Anand A, Lognay G, Wathelet B, Malaisse F. Micropropagation of Uraria picta, a medicinal plant, through axillary bud culture and callus regeneration. In vitro Cellular and Developmental Biology- Plant. 1998;34:136-140. DOI: 10.1007/BF02822778
2. *Antifungal effect of Pimenta dioica essential oil against dangerous pathogenic and toxinogenic fungi*- Martin Zabka, Roman Pavela, Ludmila Slezakova .Industrial crops and products Volume-30, Issue 09, pages 250-253, September 2009
3. AYUSH. Agro-techniques of Selected Medicinal Plants (Vol. 1). National Medicinal Plants Board, Government of India. 2008;211-213. ISBN 978-81-7993-154-7
4. Bhattacharya, A., & Datta, A. K. (2010) *Uraria picta*: An overview. *Medicinal and Aromatic Plant Science and Biotechnology*, *4*, 1-4.
5. Central Council for Research in Ayurvedic Sciences (CCRAS) and the CSIR-National Botanical Research Institute (NBRI) 2020-21 annual report2020-21.
6. Dhanalakshmi, K., Jaswanth, A.,& Subramainan, E. Anti inflammatory Antioxidant and Antimicrobial activity of green Synthesized Silver nanoparticles from combined leaf extract-An In Vitro Approach. August 2023; DOI:10.14704/NQ.2022.20.9.NQ442697.
7. Kale, R. H., Halde, U. K., & Biyani, K. R. (2012). Protective effect of aqueous extract of *Uraria picta* on acetaminophen induced nephrotoxicity in rats. *International Journal of Research in Pharmaceutical and Biomedical Sciences, 3*, 110-113.
8. Pathak,J.M.,Krishnamurthy,R.,Chandorkar,M.S., Gulkari,V., Gupta, R., 2005. Identification of high yielding geno types of Dashmool Shalparni (Desmodium gangeticum) drug plant and its cultivation under high density planting. Indian J.Hortic.62(4),378–384.
9. S.S. Jalalpure *etal "Antiarthritic activity of various extracts of Mesuaferrea Linn. SeedJ. Ethnopharmacol. (2011)"*
10. Saxena HO, Soni A, Mohammad N, Kakkar A, Singh N. HPLC analysis of rhoifolin in different plant parts of *Uraria picta*: A dashmool species. Indian J Trop Biodivers 2014;22:199-201.
11. Waghire, H. B., Shaikh, F. K., Jaiwal, B. V., & Pokle, D. S. (2013). Polymorphism of albumin like proteins in three species of genus *Uraria*. *International Journal of Research in Pharmaceutical and Biomedical Sciences, 4*, 939-942.
12. Yadav, A. K., Yadav, D., Shanker, K., Verma, R. K., Saxena, A. K., & Gupta, M. M. (2009). Flavone glycoside based validated RP-LC method for quality evaluation of Prishniparni (*Uraria Picta).* Chromatographia, 69,653-658.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Advancing Green Catalysis: Pioneering Innovations and Sustainable Applications in Chemistry

Dr. S.K. Udaipure*

***Professor, Govt. Narmada College, Narmadapuram (M.P.) INDIA**

Abstract : Green catalysis, an alternative sustainable option to replace traditional catalytic techniques has, in fact, appeared with the surging interest in green chemistry in process chemical synthesis. Unlike traditional catalytic techniques, this paper discussed the developments as well as advantages of sustainability achieved by green catalysis. The study examines the economic and environmental impacts of introducing green catalysts in the energy production, agrochemical, and pharmaceutical sectors, keeping in mind factors such as energy consumption, waste output, CO_2 emissions, and cost-effectiveness. The findings indicate significant sustainability gains as green catalysis is associated with less energy consumption, waste generation, and CO_2 emissions. Green catalysts have good recyclability and higher turnover frequency, with drastic cost savings with each cycle, at a higher start-up cost. Green catalysts further drive the economic and environmental benefits by doubling the product yields and reducing the energy consumption at the industrial scale. This study stresses the way green catalysis could be a game-changing technology, promoting more environmentally friendly chemical manufacturing and reducing the footprint of industrial processes on the environment.
Keywords: Green Catalysis, Traditional Catalysis, Sustainability, Pioneering Innovations, Chemistry.

Introduction - Chemistry has now brought revolution by finding ways through the name green catalysis. In these approaches, this concept works toward increasing the product by decreasing environmental negative impacts while eliminating the excess energy wastage through by-products as waste material, also the harmful chemical substance being utilized within catalytic procedures. This new area of catalyst improvement is supposed to maintain its economic viability, thereby simultaneously reducing the environmental impact that the older catalytic process caused.

Recently, the development of green catalyst has been accelerated because of increased demands for an industrial method being sustainable in multiple industries such as agrochemical, medicines, cleanup of contaminants, and energy creation. Due to these developments more effective and better catalysts designed which not only reduce their pollution impact but even give a strong cost advantage over others through efficient productivity and even longer catalytic life. This study aims to investigate the recent breakthroughs in green catalysis, with emphasis on its application in industrial processes, relative benefits over conventional catalytic techniques, and the possibility of future advancements in improving sustainability.

Literature Review

Rothenberg, G. (2017)included every facet of catalysis. With more than 600 references, it also connected green chemistry, industrial applications, and computational approaches. With numerous examples and practical exercises, the book was appropriate for senior undergraduate and graduate-level courses and was written with chemistry and chemical engineering students in mind. The author, who was a well-known catalysis researcher, was elected “lecturer of the year” by the chemistry students for his lucid writing and instruction. The book covered the fundamentals of catalysis and green chemistry before delving into the concepts and uses of bio catalysis, heterogeneous catalysis, and homogeneous catalysis. Industry examples that illustrated how catalysis aided in our society’s pursuit of sustainable development objectives were included in each chapter. The most widely used catalysis textbook since its release in 2008 was Catalysis: Concepts and Green Applications. The most recent advancements in academic and industrial catalysis research were incorporated into this second edition. Based on recommendations from chemistry and chemical engineering instructors and students worldwide, it included fifty more activities.

Nagpal, S. (2023) intended to showcase state-of-the-art studies and significant developments in sustainable industrial technology, green chemistry, and green chemical engineering. The following were included (though not only) in the area of coverage:-Green catalysis, green solvents and reagents, atom-economy synthetic methods, and other environmentally friendly chemical syntheses and processes

were utilized.-Green energy and chemicals were made from carbon dioxide, biomass, and other renewable materials-New technologies and materials for energy production and storage (such as fuel cells, solar cells, lithium-ion batteries, hydrogen, bio-fuels and bio energies, etc.) were developed.-Green chemical engineering methods (e.g., efficient separation procedures, energy conservation, waste reduction, materials variety, and process integration) were utilized.-Green technology contributed to environmental sustainability (e.g., pollution prevention, carbon dioxide capture, treatment of waste and hazardous chemicals, environmental redemption, etc.) For postgraduate students, academic researchers, and industry professionals who were interested in green chemistry and technologies for sustainable development, the Green Chemistry and Sustainable Technology series aimed to offer an easily accessible reference resource.

Idoko, et al. (2024) offered a thorough analysis of the ways in which green chemistry concepts were used in different manufacturing industries to reduce energy use and hazardous waste. The first section of the paper outlined the fundamental ideas of green chemistry and emphasized how they related to environmentally friendly industrial processes. The utilization of renewable raw materials, energy-efficient procedures, and waste reduction were highlighted as key developments in chemical engineering. The study illustrated how the use of green chemistry had greatly decreased the environmental impact of the pharmaceutical, textile, and automobile industries through in-depth case studies. The evaluation also looked at the difficulties businesses had implementing green chemistry and where the sector was headed, with a focus on how policy and regulatory frameworks might have spurred more innovation. The results indicated that although there had been progress, there was still a lot of room for improvement, particularly in terms of extending the application of green chemistry to a wider range of industries. In order to support sustainable production, this paper ended with suggestions for more study and wider use of green chemistry.

Slimani, Y., &Hannachi, E. (2021) explained the principles and measurements of GChem and how they affected the entire chemical life cycle, from design to removal. In order to maintain global economies and to support upcoming scientific and technological advancements in new products, less toxicological materials, highly efficient industrial processes, and renewable energy products, the chemical industry was crucial. The goal of green chemistry (GChem) was to create novel chemical products that were more efficient and contained less harmful compounds for the environment and human health. The nanotechnology instance had been taken into consideration once the key measurements and the most recent advancements in the theme had been reported inside this framework. The effects and uses of GChem were investigated, and the context provided by nanotechnology made it easier. The transformation of the nature of technology was the goal of both disciplines' interdisciplinary innovations. Future opportunities for interdisciplinary collaborations were explored, along with the uses and implications of emerging green technologies.

RESEARCH METHODOLOGY

Research Design: The research study design that has been followed is that of comparative quantitative research, where the performance comparison of traditional catalysis and green catalysis is brought about through key parameters such as energy consumption, waste generation, cost effectiveness, and environmental sustainability. This empirical data is collected through industrial-scale case studies and laboratory experiments. The objective is to evaluate the advances in sustainability, cost competitiveness, and environmental value brought about by green catalysts and further amplify their impact on fields like pharmaceuticals, agrochemicals, and energy production.

Data Collection : Examples of secondary sources, where the data for this study were collected, are from peer-reviewed journal papers, industry reports, and experimental research in respectable scientific databases such as ScienceDirect, Wiley Online Library, and Springer. These resources offered the empirical information related to the performance and effectiveness of traditional and eco-friendly catalysts in real industrial scenarios. The accompanying data contains comprehensive statistics on the use of energy, waste production, CO_2 emissions, and other factors pertinent to assessing catalytic processes as well. The accompanying vital data parameters are the emphasis of this study:

1. Energy Consumption (kWh/kg reaction)
2. Waste Generated (kg/reaction)
3. CO_2 Emissions (kg CO_2 /kg product)
4. Catalyst Cost ($/kg)
5. Recyclability and Turnover Frequency
6. Annual Output and Energy Usage
7. CO_2 Emissions Reduction

Data Analysis Techniques: The study will use both descriptive and inferential statistical techniques in analyzing the data collected. Some of the analysis methods include:

1. Percentage Change Calculation: This technique is for calculating improvement in energy consumption, waste production, and CO_2 emission between conventional and green catalysis, which quantifies the benefits of the adoption of green catalysis technology.

2. Comparative Analysis: Data for both traditional and green catalysis are compared using multiple parameters for the assessment of the overall influence of green catalysts on sustainability, productivity, and cost-effectiveness.

3. Economic Impact Assessment: This takes the view of assessing the economic performance of green catalysts in terms of factors like the cost of the catalyst, ability to recycle, frequency of turnover, and cost per cycle. This will

effectively account for how green catalysts can reduce costs and improve efficiency.

4. Environmental Impact Assessment: Environmental impact is evaluated through reductions in CO_2 emissions and energy consumption as green catalysis highlights greener and more sustainable catalytic processes.

Data Analysis : The comparison of key performance indicators on traditional and green catalysis is done under the data analysis section, and the focus areas are on energy consumption, waste generation, CO_2 emissions, and cost efficiency. Descriptive and inferential statistical techniques are employed to evaluate the environmental and economic advantages of green catalysis.

Table 1: Reduction of Waste and Energy

Parameter	Traditional Catalysis	Green Catalysis	Improvement (%)[(Traditional Catalysis-Green Catalysis)/ Traditional Catalysis)×100
Energy Consumption (kWh/kg reaction)	100	65	35%
Waste Generated (kg/reaction)	3.5	2.1	40%
CO_2 Emissions ($kgCO_2$/kg product)	2.8	1.4	50%

From the data in Table 1 (Reduction of Waste and Energy), the improvements in the use of green catalysis include improved energy efficiency, waste reduction, and CO_2 emissions compared to the traditional catalysis. In more detail, there is a decrease of 35% in energy consumption from 100 kWh/kg reaction to 65 kWh/kg reaction, meaning green catalysis will consume less energy to produce the same reaction output. In terms of waste generation, green catalysis has a reduction of 40%, which is lowering the waste from 3.5 kg per reaction to 2.1 kg per reaction. This depicts a significant advancement in the process sustainability. Secondly, the amount of CO_2 emitted is halved, where it decreases from 2.8 kg of CO_2 per kg of product to 1.4 kg, which reflects a 50% reduction in the environmental footprint. In general, such results emphasize environmental and energy efficiencies when green catalysis is integrated into industrial operations.

Table 2: Cost and Efficiency of Catalysis

Parameter	Traditional Catalyst	Green Catalyst	Improvement
Catalyst Cost ($/kg)	150	200	Higher by 150(200-150) ×100=33.33%
Recyclable Cycles	1	10	1(10-1) ×100=900% increase
Cost per Cycle ($)	150	20	150-20=130 saved per cycle
Turnover Frequency (TOF, mol/hour)	2	5	(5-2) ×100=150% increase

Cost and Efficiency of Catalysis, the comparison between the green and traditional catalysts regarding the cost efficiency and effectiveness of catalysis is reflected in table 2. The catalyst's cost for the green catalysts is at $200 per kg compared to the traditional catalysts, priced at $150 per kg, meaning a 33.33% increase in the former.However, that initial cost higher than the regular catalyst is overcome by a greatly improved recyclability; green catalysts can run 10 times, an unbelievable 900 percent improvement over single-use traditional catalysts. Therefore, it resulted in a reduction of the per-cycle cost-150 dollars from traditional catalyst to just 20 dollars for green catalysts, translating to a cost saving of 130 dollars in every cycle. In addition, the turnover frequency of green catalysts is much higher, at 150% more than that of traditional catalysis, from 2 mol/hour in traditional catalysis to 5 mol/hour in green catalysis. This is an improvement in TOF, which means a better catalytic efficiency, thus making green catalysts more efficient in driving reactions at higher rates.

Table 3: Industrial Scale Impact

Parameter	Traditional Catalyst	Green Catalyst	Improvement (%)
Annual Output (kg)	5,000	6,500	(6,500-5,000)/ 5,000 ×100=30%
Annual Energy Usage (kWh)	500,000	350,000	(500,000-350,000) / 500,000×100 =30%
CO_2 Emissions Reduction (tons/year)	150	75	Reduction by 50% (calculated as 150×0.5=75)

In contrast, Table 3 represents industrial scale benefits, where the difference between the yield of green catalysis and that of the old catalysis lies in 30% productivity higher with green catalysis compared with the traditional catalysis. Thus, the products amount to 5,000 kg per year versus 6,500 kg of product in case of green catalysis. Again, 30% annual reduction in energy utilization is witnessed. The value reaches 350,000 kWh/year from 500,000 kWh/year. This saves energy and hence reduces the cost and also decreases the environmental footprint. In addition, the reduction in CO_2 emissions is impressive at 50%, from 150 tons/year for traditional catalysis to 75 tons/year for green catalysis. This shows the huge environmental advantage of using green catalysts, especially in reducing greenhouse gas emissions.

Conclusion: This research has emphasized the sustainability, cost-effectiveness, and environmental

implications of green catalysis in comparison with the conventional catalytic process. In demonstrating large reductions in energy consumption, waste generation, and CO, emissions, green catalysis is considered to be more sustainable for industrial applications in several fields such as pharmaceuticals, agrochemicals, and energy production. Although the initial investment in green catalysts is much higher, the higher recyclability and turnover frequency enhance long-term savings and efficiency gains. Results of both laboratory-scale and industrial applications indicate the enormous potential of green catalysis for reducing environmental footprints while increasing productivity. This study strengthens further efforts to push into green catalysis technologies that necessitate even broader applications and therefore will propel toward more environmentally sound and less-harmful chemical processes for future times.

References :-

1. Anastas, P. T., & Beach, E. S. (2007). Green chemistry: the emergence of a transformative framework. Green Chemistry Letters and Reviews, 1(1), 9-24.
2. Anastas, P., &Eghbali, N. (2010). Green chemistry: principles and practice. Chemical Society Reviews, 39(1), 301-312.
3. Beach, E. S., Cui, Z., & Anastas, P. T. (2009). Green Chemistry: A design framework for sustainability. Energy & Environmental Science, 2(10), 1038-1049.
4. Ciriminna, R., & Pagliaro, M. (2013). Green chemistry in the fine chemicals and pharmaceutical industries. Organic Process Research & Development, 17(12), 1479-1484.
5. Idoko, F. A., Ezeamii, G. C., &Ojochogwu, O. J. (2024). Green chemistry in manufacturing: Innovations in reducing environmental impact. World Journal of Advanced Research and Reviews, 23(3), 2826-2841.
6. Kar, S., Sanderson, H., Roy, K., Benfenati, E., &Leszczynski, J. (2021). Green chemistry in the synthesis of pharmaceuticals. Chemical Reviews, 122(3), 3637-3710.
7. Kartal, O. (2024). Navigating the Future of Chemistry: Priorities and Opportunities for Sustainable Innovation. Bulletin of the LN Gumilyov Eurasian National University. Chemistry. Geography. Ecology Series, 147(2), 61-80.
8. Nagpal, S. (2023). Green Chemistry and Sustainable Technology: Pioneering a Greener Future. Green Chemistry, 10(6).
9. Rothenberg, G. (2017). Catalysis: concepts and green applications. John Wiley & Sons.
10. Sanghi, R., & Singh, V. (Eds.). (2012). Green chemistry for environmental remediation. John Wiley & Sons.
11. Sarangi, P. K., Singh, A. K., Ganachari, S. V., Pengadeth, D., Gunda, M., &Aminabhavi, T. M. (2024). Biobased heterogeneous renewable catalysts: Production technologies, innovations, biodiesel applications and circular bioeconomy. Environmental Research, 119745.
12. Shaikh, I. R. (2014). Organocatalysis: key trends in green synthetic chemistry, challenges, scope towards heterogenization, and importance from research and industrial point of view. Journal of Catalysts, 2014(1), 402860.
13. Slimani, Y., &Hannachi, E. (2021). Green chemistry and sustainable nanotechnological developments: Principles, designs, applications, and efficiency. In Green Polymer Chemistry and Composites (pp. 1-18). Apple Academic Press.
14. Tiwari, A. (2023). Advancement of materials to sustainable & green world. Advanced Materials Letters, 14(3), 2303-1724.
15. Trucillo, P., &Campardelli, R. (2023). Editorial Overview of the Special Issue “Innovation in Chemical Plant Design”. Processes, 11(10), 3023.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में बालिका नामांकन एक अध्ययन (जोधपुर जिले के संदर्भ में)

डॉ. नीति चौहान*

* सहायक प्रोफेसर (शिक्षा) चोपासनी महाविद्यालय, चोपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – किसी भी राष्ट्र के विकास में उच्च शिक्षा अपनी अहम भूमिका अदा करती है क्योंकि व्यक्ति को उसके ज्ञान, संश्लेषण, विश्लेषण, आलोचनात्मक चिन्तन के विकास, दृष्टिकोण व कार्यकरने के ढंग में उच्चता की ओर अग्रसर करती है। भारत में माध्यमिक शिक्षा पर विचार करने पर ध्यान स्वत: ही राष्ट्र की प्रजातांत्रिक व्यवस्था की ओर आकृष्ट हो जाता है। जहां सभी नागरिक समान है, और सभी को अपनी योग्यतानुसार कार्य करने तथा शिक्षा के अवसर प्राप्त होने चाहिए। वहीं दूसरी ओर हमारा ध्यान ऐसे वर्गों पर भी जाता है। जो किन्हीं कारणों से महत्वाकांक्षी होते हुए भी शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। जिनमें से 'बालिका' भी एक ऐसा ही वंचित वर्ग है जो चाहते हुए भी अपनी विभिन्न समस्याओं के कारण माध्यमिक शिक्षा से वंचित है। अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक कारणों के साथ-साथ विद्यालयों की न्यूनता अथवा दूरी, बालिका विद्यालयों की कमी/अनुपलब्धता भी माध्यमिक शिक्षा में बालिकाओं की पहुँच में बाधक रही है। अब यद्यपि सरकारी, अनुदानित एवं गैर सरकारी विद्यालयों की बढ़ी संख्या ने विद्यालयी शिक्षा में बालिका सहभागिता पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। किन्तु अब भी बालिकाओं की अपेक्षित जनसंख्या माध्यमिक शिक्षा का लाभ नहीं उठा पा रही है, किन्तु अब उनके समक्ष खुली-शिक्षा व्यवस्था का विकल्प आने से माध्यमिक शिक्षा में उनकी सहभागिता में सुधार नितान्त अपेक्षित है। यह ज्ञातव्य है कि खुली शिक्षा-प्रणाली में समय, स्थान, आयु एवं जाति सम्बन्धी कोई सीमा नहीं रखी गई तथा उसे अधिक लचीली एवं व्यावहारिक बनाने की कोशिश की गई है। खुली शिक्षा द्वारा ऐसे व्यक्तियों को शिक्षित करने की बात की गई है जो किन्हीं व्यक्तिगत अथवा सामाजिक कारणों से विद्यालय नहीं जा पाते, अथवा बीच में ही विद्यालय त्याग कर देते है। ऐसे ही व्यक्तियों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने हेतु विद्यालय स्तर पर सत्र 1989 में राष्ट्रीय खुला विद्यालय की स्थापना की गई।

शब्द कुंजी – सांस्कृतिक, प्रजातांत्रिक व्यवस्था।

प्रस्तावना – राजस्थान एक ऐसा राज्य है जहां कि भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थिति के कारण शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँच नहीं पाई है। यद्यपि राजस्थान की साक्षरता दर बढ़ाने, शिक्षा का सार्वभौमीकरण करने और नामांकन बढ़ाने की दिशा में सरकार निरन्तर प्रयासरत है। इसके लिए प्रत्येक शैक्षिक स्तर पर अनेक कार्यक्रम चलाये जा रहे है। प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण हेतु सरकार द्वारा अनेक प्रयास किये गये है। इस संदर्भ में लोक जुम्बिश, गुरु मित्र परियोजना, मध्याह्न पोषण कार्यक्रम, शिक्षा आपके द्वार और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के तहत् भी अनेक कार्यक्रम चलाये जा रहे है। इन कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप, राज्य के अनेक जिलों को पूर्ण साक्षर घोषित करने के बावजदू भी आज राजस्थान मे शैक्षिक पिछड़ापन दृष्टिगोचर होता है। विद्यार्थियों को पुन: इस धारा से जोड़ने तथा माध्यमिक स्तर पर नामांकन संख्या में वृद्धि करने हेतु राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान द्वारा माध्यमिक स्तर पर खुली शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया गया है।

यह एक छत्र (Umbrell) की भांति है जो सम्पूर्ण राष्ट्र में अधिक संख्या में स्थित अपने क्षेत्रीय केन्द्रों एवं अध्ययन केन्द्रों के जाल के सहयोग से भारत की प्रत्येक जनशक्ति से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। इसके प्रमुख अधि-देश (Mandate) इस प्रकार है-

1. समाज के सभी वर्गों को उच्च गुणवत्ता मुक्त शिक्षा उपलब्ध कराना।
2. विभिन्न स्तरों पर उच्च गुणवत्ता के नवीन और आवश्यकता आधारित कार्यक्रम चलाना।
3. सुविधा वंचित वर्गों के लिए देश के सभी भागों में शैक्षिक कार्यक्रम वहन योग्य लगात में उपलब्ध कराना।
4. देश में दूर तथा मुक्त शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शिक्षा के मानकों का संवर्धन, समन्वयन और विनिमयन करना।

अधिकाधिक लोगों तक पहुँचने और सुविधाओं की समानता, अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में निरन्तर व्यावसायिक क्षमता का विकास तथा प्रशिक्षण उपलब्ध कराने के लिए विद्यालयी शिक्षा प्रदान करने हेतु विविध संचार माध्यमों एवं प्रौद्योगिकी का उपयोग करता है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत है। सम्पूर्ण राजस्थान राज्य के जिलों में इसके अध्ययन केन्द्रों का जाल बिछा है जो राजस्थान के लगभग सभी जिलों का प्रतिनिधित्व करते है। अत: इसे राजस्थान के राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के प्रति बालिका अनुक्रियाशीलता के अध्ययन का आधार बनाया जाना उपर्युक्त प्रतीत होता है।

मुक्त विद्यालयी व्यवस्था को मूल्य प्रभावी (Cost effective) बनाने के लिए बालिकाओं की अधिकतम अनुक्रियाशीलता अनिवार्य है क्योंकि देश की आय का एक बड़ा भाग इसके विभिन्न कार्यक्रमों के व्यवस्थापन एवं संचालन पर व्यय हो रहा है और यदि इसका लाभ जनसामान्य न उठाये तो

यह निवेश तब तक सार्थक नहीं होगा जब तक कि वांछित परिणाम सामने न आये।

अत: यह जानने की आवश्यकता है कि इस प्रकार की वैकल्पिक एवं आवश्यकता आधारित व्यवस्था उपलब्ध होने पर कितनी बालिकाएँ ऐसी है जो औपचारिक शिक्षा से वंचित रहने पर इसका लाभ उठा रही है? संभवत: वे सभी बालिकाएँ जो किन्हीं कारणों से औपचारिक शिक्षा में अध्ययनरत नहीं है वे सभी इस व्यवस्था में सहयोगी होनी चाहिए। अत: प्रश्न यह भी उठता है कि मुक्त अधिगम व्यवस्था में प्रवेश लेने वाली बालिकाएँ कौन है? वे राजस्थान राज्य के किस जिले में निवास करती है? उनका शैक्षिक स्तर (माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक) क्या है? वे किस संवर्ग की है? क्या केवल कतिपय जाति संवर्गों की बालिकाएँ ही इस व्यवस्था से लाभान्वित हो रही है? अथवा वंचित वर्गों यथा- अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं द्वारा भी इस लचीली एवं सुविधाप्रदायक व्यवस्था का उपयोग अपने माध्यमिक शिक्षा सम्बन्धी विकास के लिए किया जा रहा है। रक्षा संवर्ग की बालिकाएँ जिनके अधिकांश परिवारों के निवास स्थान में स्थायित्व नहीं होने के कारण क्या ये बालिकाएँ भी अपनी शैक्षिक व सामाजिक उन्नति हेतु इसके प्रति सजग है? शारीरिक विकलांग वर्ग की बालिकाएँ जिनके समक्ष अनेक शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक चुनौतियाँ है क्या इस संवर्ग की बालिकायें भी अपने जीवन साफल्य हेतु उसके प्रति अनुक्रियाशील है? क्या राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में इन सभी संवर्गों की बालिकाओं की समान अनुक्रियाशीलता है? अथवा वे अलग-अलग अनुपात में अपनी उपस्थिति दर्ज कर रही है?

विभिन्न संवर्गों की वे बालिकाएँ जो मुक्त विद्यालयी शिक्षा में अनुक्रियाशील है वे किन क्षेत्रों से सम्बन्ध रखती है? क्या ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाली बालिकायें इस व्यवस्था का समान लाभ उठा रही है? किन क्षेत्रों की बालिकाओं ने इस व्यवस्था के प्रति अधिक अनुक्रियाशीलता व्यक्त की है?

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था में स्तरवार बालिकाओं की अनुक्रियाशीलता किस प्रकार की है? माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर पर कितनी बालिकाएँ अधिक सहभागी हो रही है? दोनों ही स्तरों पर सत्रवार इनकी सहभागिता किस प्रकार की है? क्या सत्रवार उनके नामांकन में परिवर्तन परिलक्षित होता है?

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में राजस्थान राज्य के अन्तर्गत माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर सत्रवार कुल नामांकन में प्रविष्ट बालिकाओं की सहभागिता कैसी है? अर्थात् इस व्यवस्था में सत्रवार कुल (बालक-बालिकाएँ) नामांकन में से कितने प्रतिशत बालिकाएँ में लाभन्वित हो रही है? क्या सत्रवार कुल नामांकन में बालिका नामांकन की प्रवृत्ति बढ़ी है? इस मुक्त विद्यालयी व्यवस्था में सामान्य, अन्य पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, शारीरिक विकलांग एवं रक्षा संवर्ग की बालिकाओं की सत्रवार कुल नामांकन में अनुक्रियाशीलता की प्रवृत्ति किस प्रकार की है? राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में नामांकित जनसंख्या में बालिकाओं का जिलेवार, स्तरवार, संवर्गवार, क्षेत्रवार एवं माध्यमवार प्रवृत्ति किस प्रकार की है? क्या जनसांख्यिकी अनुपात के अनुसार राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के नामांकन में इनकी सहभागिता है।

इस प्रकार मुक्त राष्ट्रीय विद्यालयी शिक्षा संस्थान में बालिका अनुक्रियाशीलता के संदर्भ में इन सभी प्रश्नों पर गहनता से विचार करने की आवश्यकता प्रतीत होती है। इन प्रश्नों के साथ-साथ प्रश्न यह भी है कि मुक्त विद्यालयी शिक्षा में बालिका अनुक्रियाशीलता की प्रवृत्ति किस प्रकार की है। अत: इन प्रश्नों के उत्तर जानने हेतु अनुसंधात्री द्वारा अग्रांकित विषय का शोध अध्ययन हेतु चयन किया गया है।

समस्या कथन – राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में बालिका नामांकन एक अध्ययन (जोधपुर जिले केसंदर्भ में)।

अध्ययन के उद्देश्य –

(1) जोधपुर जिले के राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में बालिका नामांकन (सत्र 2005-06 से सत्र 2014-15 तक) की प्रवृत्ति का निम्न संदर्भों में अध्ययन करना।

- **कक्षा स्तर –** माध्यमिक व उच्च माध्यमिक।
- **संवर्गवार –** रक्षा संवर्ग, शारीरिक विकलांग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, सामान्य जाति।
- **क्षेत्रवार –** ग्रामीण व शहरी।

जनसंख्या एवं न्यादर्श – प्रस्तुत शोध में चूंकि राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में बालिका नामांकन का जोधपुर जिले के संदर्भ में अध्ययन करने का उद्देश्य रखा गया है। अत: माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर विभिन्न संवर्ग (रक्षा संवर्ग, विकलांग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य जाति), क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) की वे सभी बालिकाएं जो (सत्र 2005-06 से 2014-15 तक) जोधपुर जिले के राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में नामांकित है, प्रस्तुत शोध अध्ययन की जनसंख्या है।

प्रदत्तों के स्रोत – प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित स्रोतों से द्वितीयक प्रदत्ता प्राप्त किए गए-

(1) राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (NIOS) के मुख्य कार्यालय (दिल्ली) व क्षेत्रीय कार्यालय (जयपुर) में उपलब्ध अभिलेख।

(2) राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान की वार्षिक रिर्पोट।

(3) राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के जोधपुर जिले में स्थित अध्ययन केन्द्र।

प्रदत्तों की प्रकृति – प्रस्तुत अध्ययन में संवर्ग, क्षेत्र एवं कक्षा स्तर में नामांकन के रूप में प्राप्त होने के कारण प्रदत्तों की प्रकृति संख्यात्मक (आंकिक) है।

प्रदत्ता संकलन हेतु उपकरण – शोध अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार उपरिलिखित स्रोतों से विस्तृत संख्यात्मक द्वितीयक प्रदत्तों को प्राप्त करने के लिए, स्वनिर्मित समंक सारणी का प्रयोग किया गया है। इसके लिए विभिन्न चर व सत्रवार सारणी निर्मित की गई है।

विश्लेषण प्रक्रिया – प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राप्त प्रदत्तों का प्रतिशत विश्लेषण एवं रेखाचित्रिय निरूपण द्वारा विश्लेषण किया गया।

जोधपुर – सूर्य नगरी के नाम से अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए इस जिले की स्थापना 1459 ई. राठौड़ सरदार राव जोधा ने की थी। जिले का क्षेत्रफल 22,850 वर्ग किलोमीटर है।

सन् 2001 की जनगणनानुसार स्त्री पुरुष लिंगानुपात 907 : 1000 है। यहाँ की कुल जनसंख्या 28,86,505 है। ग्रामीण क्षेत्रीय जनसंख्या 66.15% तथा शहरी क्षेत्र में 33.85% है। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति क्रमश : 15.81% एवं 2.76% है।

इस जिले में सत्र 2013-14 में पुरुष साक्षरता दर 72.96% एवं महिला

साक्षरता दर 38.64% है। ग्रामीण क्षेत्र में 46.21% तथा शहरी क्षेत्र में 75.54% है।

जिले में माध्यमिक स्तर पर कुल 162 राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में से 15 राजकीय माध्यमिक बालिका विद्यालय है। अनुदानित माध्यमिक बालिका विद्यालय एक तथा गैर अनुदानित माध्यमिक बालिका 11 है। इस प्रकार माध्यमिक स्तरीय कुल 389 विद्यालयों में से 27 बालिका विद्यालय है। उच्च माध्यमिक स्तर पर कुल 106 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में से 23 बालिका विद्यालय है। अनुदानित बालिका विद्यालय 3 तथा एवं गैर अनुदानित विद्यालय 7 है। इस प्रकार कुल 201 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में से 33 उच्च माध्यमिक बालिका विद्यालय है।

जोधपुर जिले में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के 3 अध्ययन केन्द्र शहरी क्षेत्र में स्थित हैं।

जोधपुर जिला देश भक्ति साहस, त्याग, संस्कृति तथा विकास के लिए सदा गौरवाशाली रहा है। तथा अपने कलात्मक एवं नैसर्गिक सौन्दर्य के कारण धोरो के मरुस्थल का प्रवेश द्वारा कहे जाने वाले इस जिले की राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में बालिका नामांकन सम्बन्धी प्रदत्तों को सारणी 1 में प्रस्तुत किया है।

सारणी 1 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

माध्यमिक स्तर पर संवर्गवार बालिका नामांकन प्रवृत्ति – राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के माध्यमिक स्तर पर रक्षा संवर्ग में बालिका नामांकन सत्र 2005-06 से सत्र 2009-10 तक (सत्र 2008-09 के अतिरिक्त) यथावत होने के उपरान्त आगामी सत्र में नगण्य 0.9% (कुल 111 विद्यार्थियों में से 1 बालिकाएँ) रहा है। तथा सत्र 2011-12 में यह शून्य दृष्टव्य है। तत्पश्चात् सत्र 2012-13 से सत्र 2014-15 तक नामांकन प्रतिशत आंशिक विचलन के साथ स्थिर बना हुआ है। सत्र 2005-06 में बालिका नामांकन सर्वाधिक 3.9% (कुल 52 विद्यार्थियों में से 2 बालिकाएँ) रहा है। सत्र 2005-06 की तुलना में सत्र 2014-15 में बालिका नामांकन 2.1% कम हुआ है। अत: कहा जा सकता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति अधोगामी दृष्टिगोचर है।

मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति में बालिका नामांकन सत्र 2005-06 से सत्र 2008-09 तक स्थिर, तत्पश्चात् आगामी सत्र में 1.3% की गिरावट दिखाई दी है। सत्र 2010-11 की तुलना में सत्र 2011-12 में नामांकन प्रतिशत में 2.4% की वृद्धि तथा 2012-13 से सत्र 2014-15 तक नामांकन में सतत् गिरावट दृष्ट्व्य है। सत्र 2014-15 में सर्वाधिक न्यूनतम बालिका नामांकन 3.6% (कुल 168 विद्यार्थियों में से 6 बालिकाएँ) रहा है एवं सत्र 2011-12 में सर्वाधिक बालिका नामांकन 9.6% (कुल 124 विद्यार्थियों में से 12 बालिकाएँ) है। सत्र 2005-06 की तुलना में सत्र 2014-15 में बालिका नामांकन में 2.2% कमी हुई है। स्पष्टत: कहा जा सकता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति अधोगामी दृष्ट्व्य है। है।

मुक्त विद्यालयी शिक्षा में सामान्य संवर्ग के अन्तर्गत बालिका नामांकन सत्र 2005-06 से सत्र 2012-13 तक यथावत रहने के उपरान्त आगामी सत्र में इसमें 4.7% की वृद्धि दिखाई दी है। सत्र 2014-15 में बालिका नामांकन प्रतिशत सर्वाधिक 35.2% (कुल 168 विद्यार्थियों में से 59 बालिकाएँ) रहा है। सत्र 2005-06 के सापेक्ष सत्र 2014-15 में नामांकन प्रतिशतता में 6.3% वृद्धि हुई है। अत: कहा जा सकता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति ऊर्ध्वगामी दृष्टिगोचर है।

पश्चिमी दिशा में जोधपुर जिले की सीमा जैसलमेर से होती हुई पाकिस्तान की सीमा तक जाती है। अत: जिले में वायु सेना के सैनिक एयर फोर्स क्षेत्र में तथा बनाड छावनी में आर्मी के जवान रहते है। वायु सेना व थल सेना की यहाँ पर अलग-अलग यूनिट बनी हुई हैं। इन सभी यूनिट को केन्द्रीय सरकार के द्वारा विशेष सुविधाएँ प्रदान की जाती है। जिसके कारण इस संवर्ग की बालिकाएँ इन क्षेत्रों में रहते हुए इन विशेष सुविधाओं का लाभ उठा रही होगी तथा अपनी माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर रही होगी।

जिले में अनुसूचित जाति की जनसंख्या 15.81% है जो कि कुल जनसंख्या के सापेक्ष बहुत कम है। अत: इस संवर्ग की बालिकाओं का मुक्त विद्यालयी शिक्षा में वास्तविक नामांकन कम होना उचित होगा।

जोधपुर जिले में मुख्यत: खरीफ की फसल में बाजरा, मोठ, ग्वार, तिल, मूंग, ज्वार, मिर्च, कपास, मक्का तथा रबी की फसल में गेहूँ, चना, जौ, जीरा, सरसों की खेती होती है। जीरा उत्पादन अत्यधिक होने के कारण जिले में गुजरात की ऊंझा मण्डी के पैटर्न पर जीरा मण्डी बनी है। सामान्य संवर्ग की बालिकाओं का कृषि व इससे सम्बन्धित कार्यो में सहयोग रहता है। फलस्वरूप वह अपने अध्ययन हेतु अधिक समय नहीं निकाल पाती है। अत: समय की नियमितता न होने के कारण इस संवर्ग की बालिकाओं को मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान आकर्षित कर रहा होगा।

माध्यमिक स्तर पर क्षेत्रवार बालिका नामांकन प्रवृत्ति – राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में बालिका नामांकन में सत्र 2005-06 से सत्र 2010-11 तक (सत्र 2008-09 को छोड़कर) आंशिक विचलन के साथ स्थिर है। तथा सत्र 2011-12 की तुलना में सत्र 2012-13 में नामांकन 0.9% बढ़ा है। सत्र 2014-15 में बालिका नामांकन सर्वाधिक 37.6% (कुल 168 विद्यार्थियों में से 63 बालिकाएँ) हैं। सत्र 2005-06 के सापेक्ष सत्र 2014-15 में बालिका नामांकन प्रतिशतता में 8.8% वृद्धि हुई है। अत: कहा जा सकता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति ऊर्ध्वगामी दृष्ट्व्य है।

मुक्त विद्यालयी शिक्षा में शहरी क्षेत्र में बालिका नामांकन प्रतिशत सत्र 2005-06 से सत्र 2010-11 तक (सत्र 2009-10 को छोड़कर) नामांकन प्रतिशत यथावत है तथा सत्र 2011-12 में इसमें 2.6% की कमी दिखाई दी है। तदुपरान्त सत्र 2012-13 की तुलना में सत्र 2013-14 में नामांकन प्रतिशत में पूर्व सत्र के अनुरूप 6.1% दृष्ट्व्य है। सत्र 2014-15 में सर्वाधिक न्यूनतम नामांकन 3.6% (कुल 168 विद्यार्थियों में से 6 बालिकाएँ) है। सत्र 2005-06 में अधिकतम बालिका नामांकन 9.7% (कुल 52 विद्यार्थियों में से 5 बालिकाएँ) रहा है। सत्र 2005-06 के सापेक्ष सत्र 2014-15 में बालिका नामांकन प्रतिशतता में 6% कमी दृष्टिव्य है। अत: कहा जा सकता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति अधोगामी दृष्ट्व्य है।

जोधपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में विश्नोई सम्प्रदाय के परिवार अधिक निवास करते है। इन परिवारों का मुख्य व्यवसाय अफीम की खेती, उसकी तस्करी तथा पशुपालन करना है। अन्य परिवारों के द्वारा बादले (मेटल की सुराही पर शनील चढ़ाया जाता है।) लाख का सामान, एल्यूमिनियम के खिलौने व सजावटी वस्तुएं तथा जोधपुर चित्र शैली, जिसमें प्रमुख रूप से भूमल निहालदे, ढोला मारु, कल्याण रागिनी, दरबारी जीवन, राजसी ठाठ, मारु के टीले, इत्यादि चित्रों को बनाते समय पीले रंग को प्रधानता दी जाती

है। इन सभी खिलौने, सजावटी वस्तुएं, चित्र शैली बादलें इत्यादि को बनाने में तथा रंगों के संयोजन व चयन करने पर विशेष ध्यान दिया जाता है। जिसमें कि महिलाओं व बालिकाओं की अहम् भूमिका होती है। अत: इन परिवारों की बालिकाओं की शिक्षा पर पूर्ण ध्यान नहीं दिया जाता है। किन्तु फिर भी वे बालिकाएँ जो कि इन परम्परागत कुटीर उद्योगों में उत्कृष्टता प्राप्त करना चाहती है वह राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में नामांकित होकर शिक्षा द्वारा अपनी सृजन क्षमता को उन्नत कर लाभान्वित हो रही होगी।

जिले में अनुदानित माध्यमिक बालिका विद्यालय एक तथा गैर अनुदानित 11 है। एवं राजकीय माध्यमिक बालिका विद्यालय कुल 15 है। अधिकांश बालिका विद्यालय शहरी क्षेत्र में स्थित होंगे। फलत: इन विद्यालयों की भव्य इमारतें व आकर्षक सुविधाओं से आकर्षित होकर शहरी क्षेत्र की बालिकाएँ इस प्रकार के विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त करने में अधिक रुचि रखती होगी।

जोधपुर जिले में माध्यमिक स्तर पर कुल बालिका नामांकन प्रवृत्ति – राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में संवर्ग एवं क्षेत्रवार, माध्यमिक स्तर पर कुल बालिका नामांकन प्रवृत्ति के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 2005-06 से सत्र 2014-15 तक नामांकन प्रतिशत में घटाव एवं बढ़ोतरी के साथ विचलन दृष्ट्व्य है तथा सत्र 2014-15 में सर्वाधिक बालिका नामांकन 41.1% रहा है तथा सत्र 2005-06 के सापेक्ष सत्र 2014-15 में बालिका नामांकन प्रतिशतता में 2.6% वृद्धि हुई हैं।

समेकन (Conslidation)– समग्र रूप से राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में इस जिले की बालिका नामांकन प्रवृत्ति के संदर्भ में कहा जा सकता है कि राजस्थान नहर परियोजना से कृषि की पैदावार अच्छी है। वहीं हस्तशिल्प (बंधेज, बादले, एल्ज्यूमिनियम के खिलौने आदि) से तैयार उत्पाद के अच्छे बाजार ने जिले में प्रति व्यक्ति आय को बढ़ावा दिया है। जिससे निवेश का उचित प्रतिफल मिलने के कारण अनेक वृहत, लघु एवं माध्यम उद्योगों की स्थापना हुई है। फलत: विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की वृद्धि हुई है व मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान की ओर बालिकाएँ आकर्षित हुई हैं। जिले में मुक्त विद्यालयी शिक्षा के तीन अध्ययन केन्द्रों के शहरी क्षेत्र में उपलब्ध होने के कारण कम दूरी एवं आसान पहुँच वाले अध्ययन केन्द्रों तक बालिकाओं के पहुँचने में सरलता हुई हैं। अत: माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं की नामांकन प्रतिशतता बढ़ी है।

आबादी के लिहाज से राजस्थान में दूसरा स्थान रखने वाले इस जिले में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के मात्र 3 अध्ययन केन्द्र होने के बावजूद ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं ने शैक्षिक अवसरों का पर्याप्त लाभ उठाया है। जो बालिकाओं की शैक्षिक सजगता को प्रकट करता है किन्तु संभवत: रक्षा संवर्ग की बालिकाओं को सरकार द्वारा दी जा रही विशेष सुविधाओं के कारण तथा अनुसूचित जनजाति संवर्ग बालिकाओं में शैक्षिक जागरुकता एवं मुक्त विद्यालयी शिक्षा के प्रति व्यापक दृष्टिकोण की कमी होने के कारण इन दोनों संवर्गों की बालिकाओं की नामांकन प्रतिशतता अत्यन्त कम है। माध्यमिक स्तर पर सामान्य संवर्ग, ग्रामीण क्षेत्र में बालिका नामांकन प्रतिशतता अधिक दृष्ट्व्य है। संभवत: जिले में खुली शिक्षा प्रणाली के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में अध्ययन केन्द्रों की संख्या में बढ़ोतरी करने पर माध्यमिक स्तर पर बालिका नामांकन में वृद्धि की जा सकती है।

राजस्थान की सूर्य नगरी व मरुस्थल का प्रवेश द्वार कहा जाने वाला यह जिला राजस्थान का सबसे बड़ा संभाग है। यहाँ राज्य की कुल आबादी लगभग 5.10% जनसंख्या निवास करती हे। जिले में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में बालिकाओं की माध्यमिक शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण व मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता होने के बावजूद भी कुल विद्यार्थियों की तुलना में बालिकाओं का नामांकन 50% से भी कम होना इस ओर संकेत करता है कि यह बालिकाएँ सामाजिक व पारिवारिक कारणों से माध्यमिक शिक्षा का लाभ नहीं उठा पा रही है। अत: इन बालिकाओं को और अधिक जागरुक बनाकर इन्हें राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के लिए और अधिक प्रेरित करने की आवश्यकता है।

उच्च माध्यमिक स्तर पर संवर्गवार बालिका नामांकन प्रवृत्ति – राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में उच्च माध्यमिक स्तर पर रक्षा संवर्ग में बालिकाओं का नामांकन प्रतिशत सत्र 2005-06 में 2.7% रहा, तत्पश्चात् आगामी दो सत्रों में नामांकन प्रतिशत यथावत है। तथा सत्र 2011-12 में सत्र 2014-15 तक बालिका नामांकन प्रतिशत में 1.1% की कमी के उपरान्त अन्तिम सत्र में यह नगण्य 0.8% दृष्ट्व्य है। सत्र 2008-09 में बालिका नामांकन प्रतिशत सर्वाधिक 3.6% (कुल 7 विद्यार्थियों में से 2 बालिकाएँ) रहा है। सत्र 2005-06 के सापेक्ष सत्र 2014-15 में बालिका नामांकन प्रतिशत में 1.9% की कमी हुई हैं। स्पष्टत: कहा जा सकता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति अधोगामी है।

मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में उच्च माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति में बालिका नामांकन प्रतिशतता सत्र 2005-06 की तुलना में सत्र 2008-09 में आंशिक वृद्धि 0.8% दिखाई दी है। तत्पश्चात् सत्र 2009-10 से सत्र 2012-13 तक बालिका नामांकन 6.3% की बढ़ोतरी के साथ यथावत् दृष्ट्व्य है। न्यूनतम बालिका नामांकन सत्र 2014-15 में 4.9% (कुल 132 विद्यार्थियों में से 6 बालिकाएँ) रहा है। सत्र 2005-06 के सापेक्ष सत्र 2014-15 में बालिका नामांकन प्रतिशत में 2.2% की गिरावट दिखाई दी हैं। स्पष्टत: कहा जा सकता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति अधोगामी दृष्ट्व्य है।

खुली शिक्षा प्रणाली में उच्च माध्यमिक स्तर पर सामान्य संवर्ग के अन्तर्गत बालिका नामांकन प्रतिशतता सत्र 2005-06 से सत्र 2009-10 में आंशिक विचलन के साथ स्थिर है। तत्पश्चात् सत्र 2010-11 में 3.3% की वृद्धि दिखाई दी है। सत्र 2011-12 से सत्र 2005-06 तक बालिका नामांकन में आंशिक विचलन तथा आगामी सत्रों में निरन्तर वृद्धि दिखाई दी है। सत्र 2014-15 में सर्वाधिक नामांकन 47.7% (कुल 132 विद्यार्थियों में से 63 बालिकाएँ) है एवं सत्र 2012-13 के सापेक्ष सत्र 2014-15 में बालिका नामांकन प्रतिशतता में अत्यधिक वृद्धि 14.4% दिखायी दी हैं। अत: कहा जा सकता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति ऊर्ध्वगामी दृष्टिगोचर है।

जोधुपर जिले में केन्द्रीय सरकार द्वारा इस संवर्ग की बालिकाओं को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष सुविधा दी गई है। जिसके अन्तर्गत इस जिले में एयर फोर्स सेन्ट्रल स्कूल तथा आर्मी सेन्ट्रल स्कूल लगभग 10 है। नौकरी में स्थानान्तरण अधिक होने के कारण यह अभिभावक बालिकाओं को इन विद्यालयों में शिक्षा दिलवाना अधिक पसन्द करते होंगे।

जिले में अनुसूचित जाति के परिवार अधिकांशत: ग्रामीण पिछड़े क्षेत्रों में निवास करते है। इस संवर्ग के परिवारों की अफीम की खेती, शराब बनाना व बेंचना तथा कचरा चुगने इत्यादि कार्यों पर अत्यधिक निर्भरता होती है।

जिसके कारण इनकी प्रति व्यक्ति आय भी कम है। अत: इन परिवारों की बालिकाओं की शिक्षा पर पूर्ण ध्यान नहीं दिया जाता है। तथा आर्थिक व सामाजिक कारणों से सभी बालिकाएँ मुक्त विद्यालयी शिक्षा का लाभ नहीं उठा पाती होगी।

जिले में सर्वाधिक जनसंख्या सामान्य संवर्ग की है। अधिकांश परिवार जोधपुरी कोट पेन्ट बनाने, जोधपुरी साफा बनाने व बांधने, बंधेज की साड़ियों की रंगाई करने तथा चमड़े से निर्मित मोजड़ी (जूतियाँ), डूंगरशाही ओढ़नी बनाने इत्यादि परम्परागत उद्योगों से जुड़े हुए हैं। संभावना व्यक्त की जा सकती है कि सामान्य संवर्ग की वे बालिकाएँ जो कि इन उद्योगों के द्वारा परिवार की आर्थिक रूप से सहायता कर रही है वह नियमित अध्ययन नहीं कर सकने के कारण राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में नामांकित होती होगी।

उच्च माध्यमिक स्तर पर क्षेत्रवार बालिका नामांकन प्रवृत्ति – राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में उच्च माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में बालिका नामांकन प्रतिशत सत्र 2005-06 की तुलना में सत्र 2008-09 में 7.3% की वृद्धि तथा आगामी सत्र में आंशिक कमी दिखाई दी है। सत्र 2011-12 में पूर्व सत्र 2008-09 के समरूप बालिका नामांकन 35.3% दृष्ट्व्य है एवं सत्र 2012-13 से सत्र 2014-15 तक बालिका नामांकन प्रतिशतता में निरन्तर बढ़ोतरी दृष्टिगोचर है। सत्र 2014-15 तक नामांकन प्रतिशतता सर्वाधिक 50.0% (कुल 132 विद्यार्थियों में से 66 बालिकाएँ) रही है। तथा सत्र 2005-06 के सापेक्ष सत्र 2014-15 में बालिका नामांकन प्रतिशतता में 22.2% की वृद्धि हुई है। अत: स्पष्टत: कहा जा सकता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति ऊर्ध्वगामी दृष्टिगोचर हैं।

मुक्त विद्यालयी शिक्षा में शहरी क्षेत्र में उच्च माध्यमिक स्तर पर बालिका नामांकन में सत्र 2005-06 से सत्र 2009-10 तक (सत्र 2008-09 को छोड़कर) स्थिर तत्पश्चात् सत्र 2010-11 में नामांकन में 4.5% की कमी दिखाई दी है। सत्र 2011-12 की तुलना में सत्र 2012-13 में बालिका नामांकन 1.6% कम होने के उपरान्त अन्तिम सत्र 2014-15 में न्यूनतम 3.0% (कुल 132 विद्यार्थियों में से 4 बालिकाएँ) हैं। तथा सत्र 2009-10 में बालिका नामांकन सर्वाधिक 11.4% (कुल 61 विद्यार्थियों में से 7 बालिकाएँ) रहा है। सत्र 2005-06 के सापेक्ष सत्र 2014-15 में नामांकन प्रतिशतता में (8.2%) कमी दिखायी दी है। अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति शहरी क्षेत्र में अधोगामी दृष्टव्य हैं।

सर्वाधिक परती भूमि तथा विभिन्न प्रकार के बालूका स्तूप वाले इस जिले के खारिया खंगार कस्बे में सफेद सीमेन्ट का राज्य का सबसे बड़ा करखाना हैं यहाँ ग्रामीण क्षेत्रों के अधिकांश परिवारों के सदस्य कार्य करते हैं। विभिन्न उद्योगों के साथ-साथ यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। राजस्थान नहर परियोजना से जिले में सिंचाई की अच्छी व्यवस्था है। जिसके फलस्वरूप यहाँ बाजरा 5000 हेक्टेयर भूमि में उत्पादित होता है। साथ ही ग्वार, मोठ,तिल, मूंग, कपास आदि की भी अच्छी पैदावार होती है। गरिमा गुप्ता (शून्य गुरुत्वाकर्षण वाली फ्लाइट में जीरो ग्रेविटी प्रयोग करने वाली), कु समता शर्मा (चमड़े पर स्वर्ण नक्काशी के लिए प्रसिद्ध), गवरी बाई (साढी मांड गायिका) तथा जमीला बानू (राजस्थान की प्रसिद्ध गायिका) जैसी महान विभूतियों के विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ने से ग्रामीण क्षेत्रों में भी बालिका शिक्षा के प्रति जागरुकता आयी है। तथा ग्रामीण क्षेत्रों की अधिकांश बालिकाएँ विभिन्न कार्यों में व्यस्त होते हुए भी राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के माध्यम से उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने की चाह रखती होगी। अत: यह बालिकाएँ मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में नामांकित होकर उच्च माध्यमिक शिक्षा का लाभ उठा रही होगी।

ग्रामीण जनसंख्या बाहुल्य इस जिले में ग्रामीण क्षेत्र में जनसंख्या 66.15% तथा शहरी क्षेत्र में 33.85% है। जिसके कारण मुक्त विद्यालयी शिक्षा में इन बालिकाओं का वास्तविक नामांकन कम है। संभवतया शहरी क्षेत्र की यह बालिकाएँ जिले में स्थिति विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में नामांकित होकर उच्च माध्यमिक शिक्षा से लाभान्वित हो रही होगी।

जोधपुर जिले में उच्च माध्यमिक स्तर पर कुल बालिका नामांकन प्रवृत्ति – राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में उच्च माध्यमिक स्तर पर संवर्ग एवं क्षेत्रवार बालिकाओं की नामांकन प्रतिशतता देखने से स्पष्ट होता है कि सत्र 2005-06 से सत्र 2014-15 तक (सत्र 2011-12 से सत्र 2012-13 को छोड़कर) बालिका नामांकन प्रतिशतता में सतत् वृद्धि दृष्टव्य है। सत्र 2014-15 में बालिका नामांकन प्रतिशतता सर्वाधिक 53.0% है। तथा 2005-06 की तुलना में सत्र 2014-15 में बालिका नामांकन प्रतिशतता में 14.1% की अत्यधिक बढ़ोतरी हुई हैं।

समेकन (Consolidation) – जोधपुर जिले के राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में उच्च माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं की नामांकन प्रवृत्ति के संदर्भ में कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक शिक्षा में बालिकाओं का नामांकन प्रतिशत 50% से अधिक होना जिले में बालिकाओं की शैक्षिक प्रगति का द्योतक है। ग्रामीण क्षेत्र तथा हिन्दी माध्यम में बालिकाओं का नामांकन प्रतिशत उच्च होना जिले में बालिका शिक्षा के विकास का बेहतरीन उदाहरण है। सिंचाई और परम्परागत उद्योगों में निवेश के उत्पादन और आय में इजाफा हुआ है। जिससे बालिकाओं में शैक्षिक जागरुकता तथा शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास हुआ है। अत: यह बालिकाएँ मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान से अधिक से अधिक लाभान्वित होने लगी हैं।

जिले में जनसंख्या 15.81% भाग का निर्माण करने वाली अनुसूचित जाति तथा रक्षा संवर्ग के परिवारों की उन्नति के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएँ चलाई जा रही है। शैक्षिक संस्थानों और नौकरियों में इन दोनों वर्ग के लिए आरक्षण एवं स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न ऋण और अनुदानों की व्यवस्था सरकार द्वारा की गई है। संभवतया इन सभी सुविधाओं के मिलने के कारण अनुसूचित जाति व रक्षा संवर्ग की बालिकाओं का मुक्त विद्यालयी शिक्षा के प्रति आकर्षण कम रहा है। जिले में शहरी क्षेत्र में उच्च माध्यमिक स्तर पर कुल 201 विद्यालयों के होने के कारण इस क्षेत्र की बालिकाएँ इन विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने में अधिक रुचि रखती होंगी। फलत: खुली शिक्षा प्रणाली में इन बालिकाओं का नामांकन प्रतिशत कम दृष्टव्य है।

निष्कर्षत: प्रगतिशील जिला जोधपुर में निवेश हेतु अनुकूल माहौल है। आर्थिक स्तर उन्नत होने के कारण उपभोक्ता बाजार का विस्तार हो रहा है। जिससे सभी क्षेत्रों में रोजगार का सृजन हो रहा है। बालिकाओं को राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में उच्च माध्यमिक शिक्षा हेतु पर्याप्त व अनुकूल अवसर उपलब्ध होने से जिले की प्रगति व विकास के लिए मजबूत आधार तैयार हो रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. **आप्टे, प्रभा :** भारतीय समाज में नारी, क्लासिक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 1996

2. **गोयल, अरूना एवं गोयल, एस.एल.:** डिस्टेन्स एज्युकेशन इन द 21 सेन्चुरी, दीप एण्ड पब्लिकेशन्स प्रा.लि. न्यू देहली, 2001
3. **गुड, सी.वी. :** डिक्शनरी ऑफ एज्यकेशन, मैकग्राव हिल कम्पनी, न्यूर्याक, 1989
4. **तपन नीता :** नीड फॉर एमपावरमेन्ट रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर एण्ड न्यू देहली, 2000
5. **दत्ता, आर, 1987 :** डिस्टेन्स एज्युकेशन वर्सेज ट्रेडीशनल हायर एज्युकेशन : ए फास्ट कम्पैरीज इन बी.एल. कॉल एड ऑल (एडी) स्टेडीज इन डिस्टेंस एज्युकेशन न्यू देहली, ए.आई.यू. एण्ड इग्नू इन ओपन एण्ड डिस्टेंस इन फिफ्थ सर्वे एज्युकेशनल रिसर्च (1988-92) वॉल्यूम-1, एन.सी.ई.आर.टी., न्यू देहली।
6. **प्रधान, सुसान्ता कुमार एण्ड प्रधान प्रतिभा 1997 :** एटीट्यूड टुवर्डस ओपन लर्निंग सिस्टम ए कम्परेटिव स्टेडी ऑफ फॉर्मल लेंन्स, इन जनरल ऑफ एज्युकेशनल रिसर्च, वोल्यूम 34(1) जुलाई-सितम्बर, 1997 बायउड पब्लिशिंग कम्पनी इन्क।
7. **प्रेसर हैरीट वी. एवं सेन गीता :** वूमेन्स एम्पावरमेन्ट एण्ड डेमाग्राफिक प्रोसिस मूविंग बियोंड केयर, वोल्यूम-1, पब्लिशिड ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, प्रेस, 2002
8. **मृदुला 1991 :** इकोनोमिक्स ऑफ द ओपन लर्निंग सिस्टम : कम्परेटिव फास्ट ऑफ हायर एज्युकेशन थ्रो इग्नू पी.एच.डी. एज्युकेशन जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी इन फिफ्थ सर्वे एज्युकेशनल रिसर्च (1988-92), एन.सी.ई.आर.टी. न्यू देहली।
9. **मुखोपाध्याय, एम.एण्ड सुजाता, के. 1988 :** ओपन लर्निंग सिस्टम एट स्कूल लेवल जनरल ऑफ एज्युकेशनल प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, इन फिफ्थ सर्वे एज्युकेशन रिसर्च (1988-92) वोल्यूम-1, एन.सी.ई.आर.टी. न्यू देहली।
10. **राव, सुधा के, 1988 :** ओपन लर्निंग सिस्टम : कॉनसेप्ट एण्ड फयूचर : जनरल आूफ एज्युकेशनल प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, इन फिफ्थ सर्वे एज्युकेशन रिसर्च (1988-92) वोल्यूम-1, एन.सी.ई.आर.टी. न्यू देहली।

सारणी 1:जोधपुर जिले के एन.आई.ओ.एस. में बालिका नामांकन(बालिका नामांकन कुल नामांकन की प्रतिशतता के रूप में)

कक्षा स्तर		वर्ग	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15
माध्यमिक स्तर	संवर्ग	रक्षा संवर्ग	3.9	3.5	3.8	2.7	3.1	0.9	-	1.4	2.1	1.8
		विकलांग	-	-	-	-	-	-	0.9	1.4	0.7	0.5
		अनु.जाति	5.8	5.4	5.8	5.3	4.0	7.2	9.6	6.3	5.4	3.6
		अनु.ज.जाति	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
		सामान्य	28.9	28.5	28.9	28.0	28.5	28.8	28.2	28.9	33.6	35.2
	क्षेत्र	ग्रामीण	28.8	28.6	28.8	26.7	28.6	27.9	32.3	33.2	34.2	37.6
		शहरी	9.7	9.4	9.6	9.4	7.2	9.1	6.5	5.6	6.1	3.6
उच्च माध्यमिक स्तर	संवर्ग	रक्षा संवर्ग	2.7	2.3	2.7	3.6	3.3	2.3	1.2	1.9	1.0	0.8
		विकलांग	-	-	-	-	-	-	-	1.9	-	-
		अनु.जाति	2.7	2.4	2.7	3.5	9.8	9.8	9.5	9.9	8.2	4.9
		अनु.ज.जाति	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
		सामान्य	33.3	33.5	33.3	33.3	32.8	36.1	34.2	33.4	40.8	47.7
	क्षेत्र	ग्रामीण	27.8	27.6	27.8	35.1	34.4	41.7	35.3	39.3	45.9	50.0
		शहरी	11.2	11.4	11.2	5.3	11.4	6.9	9.5	7.9	4.1	3.0

नोट - सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि जोधपुर जिले में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर विकलांग, अनुसूचित जनजाति संवर्ग में बालिका नामांकन प्रतिशत शून्य अथवा नगण्य मात्र होने से इन संवर्गों की बालिका नामांकन प्रवृत्ति का पता नही लगाया जा सकता है।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

महिला कथाकारों के उपन्यासों में मानवीयता

डॉ. राजेश श्रीवास*

* सहा.प्राध्यापक (हिन्दी) सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति महा., नवापारा (राजिम) रायपुर (छ.ग.) भारत

प्रस्तावना – साहित्य मनाव–मानस की विशिष्ट एवं रमणीय अनुभूति है। 'साहित्य का पहला अंग है –भाव, जिसके लिए कल्पना का योगदान अपेक्षित है, परन्तु कल्पना ऐसे जो अनुभूति के आधार पर निर्मित हो।'[1] इसी यथार्थानुभूति की विशिष्ट व्यंजना करने वाला साहित्यिक रूप–विधान कथा (उपन्यास, कहानी) साहित्य है। इसीलिए इसमें ह्रदय को स्पंदित करने की शक्ति होती है। मानव–चेतना समाज–सापेक्ष हुआ करती है और उपन्यास, कहानी–जो मानव चेतना का संवाहक है–नितांत समाज–निरपेक्ष हो ही नही सकता, वह तो जीवन की परिकल्पनात्मक अभिव्यक्ति है, जिसके द्धारा जीवन के सौंदर्यात्मक और आनंदात्मक पक्ष का उद्धाटन होता है। 'साहित्य के सृजन में साहित्यकार के संस्कार, पारिवारिक वातावरण उसके मानस–पटल पर अंकित प्रभाव तथा इस प्रभाव के द्धारा निर्मित विचारधारा और मान्यताओं का महत्वपूर्ण स्थान होता है।'[2] क्योंकि किसी भी साहित्यकार का जीवन तथा साहित्य संस्कार, अनुभूतिजन्य मान्यताओं एवं विचारधाराओं का उनके साहित्य पर अवश्य प्रभाव पड़ता है। इसीलिए किसी भी साहित्यकार के साहित्य को समझने के लिए उसके जीवन एवं व्यक्तित्व से भली–भाँति परिचित होना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि उसका संपूर्ण जीवन किसी न किसी रूप में उसकी रचनाओं में अवश्य प्रतिबिम्बित होता है।

आज के संघर्षशील, यथार्थवादी युग में जीने वाली नारी का दृष्टिकोण उसके पारिवारिक एवं सामाजिक परिपेक्ष्य में परखने के लिए समाज और परिवार को लेकर पनपी अभिनव मान्यताओं की चर्चा कर लेना युक्तिसंगत होगा। भारतीय समाज की संरचना आदिकाल से पुरूषप्रधान रही है। मातृप्रधान समाज के दर्शन यदा–कदा ही मानव–इतिहास में होते है। परन्तु समय परिवर्तनशील होता है और साहित्य के क्षेत्र में सदा ही परिवर्तित समय की प्रतिच्छवि अंकित की जाती रही है। स्वतंत्रता–पूर्व तक के हिंदी कथा–साहित्यों में नारी को घर की चहारदीवारी में सीमित रखकर समाज में उसकी महत्ता, पुरूष सापेक्ष चित्रित की गई। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत देश की सामाजिक व आर्थिक, राजनीतिक तथा धार्मिक परिस्थितियों में उल्लेखनीय परिवर्तन आये हैं। आज परिवार एवं समाजविषयक अनेक प्राचीन मान्यताएँ टूटती जा रही है और उनका स्थान नयी मान्यताएँ लेती जा रही है। आधुनिक कथा–साहित्य की विधा इस नवीनता और प्राचीनता के संधि–स्थल की ओर संकेत करने में सतत गतिमान है। पारिवारिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में नारी की मानसिकता को विविध रूपों में रेखांकित करने की चेष्टा आलोच्य वर्षो के उपन्यास–कहानियों में परिलक्षित होती है। विगत दो से तीन दशकों का समय नारी की पारिवारिक और सामाजिक मान्यताओं में होने वाले परिवर्तनों का काल रहा है। वैसे तो यह परिवर्तन स्वतंत्रता संघर्ष के समय से ही दृष्टिगोचर होने लगा था। किन्तु पाँचवे दशक के उपरांत देश के सामाजिक गतिविधियों में बड़ी तेजी से परिवर्तन आया, जो नारी सशक्तिकरण का दौर था। यही वह समय था, जब महिला कथाकारों ने अपने जीवन की विभिन्न घटनाओं, दुखः, दर्द, पीड़ा, संत्रास, कुंठा, घरेलू अत्याचार जैसी अमानवीय घटनाओं पर खुलकर समाज के सम्मुख अपने उपन्यास, कहानियों के माध्यम से बात रखने की साहस की। और अपने अनुभूति की प्रखर अभिव्यक्ति में वे काफी सीमा तक आज सफल भी हो सकी। उन महिला कथाकारों में –महादेवी वर्मा, मन्नू भण्डारी, ममता कालिया, अमृता प्रीतम, कृष्णा सोबती, शिवानी, उषा प्रियंवदा, मैत्रेयी पुष्पा, चित्रा मुद्गल, मधु कांकरिया, मृदुला गर्ग, डॉ. उर्मिला शुक्ल, डॉ. जया जादवानी, श्रद्धा थवाईत, शुभ्रा ठाकुर, डॉ. नलिनी श्रीवास्तव आदि जैसे साहित्यकारों ने परिवार, समाज में घुट रही नारी आवाज को बुलंद की। इस प्रकार आधुनिक महिला कथाकारों की लेखनी ने नारी के उस रूपाभाव को उजागर किया है जो अंधेरी बंद कमरे में सिसक रही थी। महादेवी वर्मा का नारी चिंतन व लेखन नारी वेदना और आत्म–पीड़ा की अभिव्यक्ति के साथ इसीलिए शिक्षा पर भी जोर देता है। महादेवी वर्मा नारी के अधिकारों के प्रति हमेशा सजग व पक्षधर रही है। उन्होंने हमेशा नारी के सम्मान और बराबरी के अधिकारों के लिए पुरजोरता से आवाज उठाई है। नारी अधिकारों पर अपनी बात को स्पष्ट करते हुए कहती है कि 'हमें न किसी पर जय चाहिए, न किसी से पराजय, न किसी पर प्रभुता चाहिए, न किसी का प्रभुत्व। केवल अपना वह स्थान, वे स्वत्व चाहिए जिनका पुरूषों क निकट कोई उपयोग नही है, परन्तु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग नही बन सकेंगी।'[3] महादेवी वर्मा ने नारी के शिक्षित होने पर बल दिया है। उनका मानना है कि नारी को यदि सम्मान जनक स्थान प्राप्त हो सकता है तो शिक्षा के माध्यम से ही।

समकालीन परिवेश में न सिर्फ नारी के संघर्षो, चुनौतियों को व्यक्त किया है बल्कि उसकी संवेदनाओं से गहरे जुड़ते हुए नारी मन में विश्वास की रोशनी से सराबोर करने का प्रयास हुआ है। मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में चित्रित नारी आज समाज की संरचना में पुरूष के समकक्ष होने का दावा करती है। 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास की रंजना मध्यकालीन भारतीय नारी की मानसिकता में जीने वाली नारी है। संपूर्ण निष्ठा के साथ प्यार समर्पण करना अपना दायित्व समझती है। प्रतिदान स्वरूप पति का संपूर्ण प्यार पाना अपना अधिकार मानना रंजना की स्वभावगत विशेषता है। वह सुशिक्षित एवं सुन्दर है। सामान्य परिवार का होकर भी अपने परिक्षम से

कॉलेज में प्राध्यापिका है और अपनी आर्थिक स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक स्वतंत्रता का निर्णय भी स्वंय लेती है। वह अपना जीवनसाथी अमर को बना चुकी है। घरवालो की किसी प्रकार की बाधा अपने विवाह के संबंध में अस्वीकार है। परन्तु अमर की महिला मित्र अमला को लेकर अंतिम सीमा तक विरोध बढ़ जाती है। और बात टुट कर ही रहती है। यहाँ रंजना एक साहसी एवं स्वतंत्र निर्णय लेने वाली नारी के रूप में उपस्थित होती है। जिस साहस के साथ उसने अमर के लिए पिता का घर त्याग दिया था, उसी साहस के साथ अपने प्यार एवं स्वाभिमान की रक्षा के लिए अमर का भी परित्याग करके चली जाती है। अमर उसकी मानसिकता की व्याख्या करता हुआ कहता है-'उसने शुरू से ही अपने आस-पास देखा है कि पति नौकरी करता है। इसके बाद दोनों या तो कहीं घुमने, सिनेमा चले जाते है या किसी को बुला लेते है। .....अब उसे न मेरे मित्र पसंद है न मेरा व्यवहार, न मेरी दिनचर्या। मेरे पुरूष मित्र उसे पसंद नही है और महिला-मित्रों से वह ईर्ष्या करने को विवश है.....दूसरे पति के महिला-मित्रों से ईर्ष्या करने की परम्परा है। वह तो साफ कहती है यह मित्र क्या चीज है ? या तो पत्नी होती है या बहन-भाभी।'[4] रंजना, अमर को संपूर्ण मन की गहराई से प्रेम करती है परन्तु जिस क्षण इस निष्ठा में व्याघात अनुभव करती है किसी साहसी नारी की तरह-अपना मार्ग स्वयं तय कर नये जीवन पथ पर बढ़ जाती है।

सूक्ष्म संवेदनशीलता के धरातल पर नारी का वास्तविक मन अपनी पूरी गहराई के साथ शिवानी के उपन्यास 'कृष्ण कली' में चित्रित हुआ है। नारी-मन की गहरी पकड़ शिवानी में है, और वे अपनी सजग दृष्टि से परिवेश को यथार्थ के धरातल पर अंकित करने में सक्षम है। 'कृष्ण कली' में शिवानी ने नारी की मानसिकता को आंतरिक एवं बाह्य धरातलों पर बड़ी सूक्ष्मता से चित्रित किया है। उपन्यास में अवचेतन की रहस्यात्मकता की थाह पाने के लिए शिवानी का नारी-मन सदैव सचेत रहा है। उपन्यास में एक ओर जहाँ रोमांस से ओत-प्रोत, स्नेह ओर ममता से भीगी हुई नारी का चित्रण है तो दूसरी ओर मानसिक वृत्तियों की जटिलता से जूझती नारी का भी सशक्त चित्रण है। कृष्ण कली, उपन्यास की प्रमुख नारी-पात्र है। 'कली' का जन्म और परवरिश दोनों ही अस्वाभाविक परिस्थितियों में हुए है जिसका कुप्रभाव कली के मानस पर गहरे पड़ता है। कली के चरित्र की ये दुर्बलताएँ कुछ तो उसकी आत्मकुंठा का परिणाम थी कुछ उसे अपनी जन्मदात्री से विरासत में भी मिली थी। कली अपनी विद्रोहणी नारी को लिए अपने अन्तस् की ज्वाला से सारे संसार को फूँकना चाहती थी, संसार के लिए 'बुरी लड़की' बनना अपनी नियति मानने को उसका निष्कलुष हृद्य तैयार नहीं होता, इसे भूलने के लिए वह मसान साधती है, गांजा चरस पीती है, हिप्पियों की गाईड बन उनकी प्रमोद-लीला की प्रेरणास्त्रोत बनती है। कली का मादक सौन्दर्य किसी को वासना की आग में झुलसा देने वाला है तो किसी के संतप्त हृदय पर शीतल प्रलेप का कार्य करता है। अपने अधिकारी शेखरन को वह रहस्यमयी ढंग से अनेक रूपों में प्रभावित करने की कोशिश करती है, परन्तु यह कली का दुर्भाग्य था कि पुरूष की लोलुप दृष्टि ने उसमें मादक सौन्दर्य को ही देख सकी, उसकी भूखी आत्मा को कभी नही देखा। इस संदर्भ में कली सोचती है -'क्या कभी भी कोई उसके अन्तर की व्यथा को नही जान पायेगा ? कोई मुग्ध दृष्टि से उसकी बड़ी-बड़ी आँखों को ही देखता रहता है, कोई निर्लज्ज दृष्टि का अदृश्य भाला उसके सुडौल वक्ष के आर-पार भेदकर उसकी वैकलैस चोली के बंधन शिथिल कर देता है। जितने भी लोलुप पुरूष, उतनी ही विभिन्न-विभिन्न दृष्टियाँ। पर क्या आज तक एक भी दृष्टि में उसे सच्चे-निश्छल स्नेह की ऐसी झलक मिल सकी है।'[5] यही निश्छल स्नेह की प्यास कली को दर-ब-दर भटकाती है। इस भटकाव का अंत प्रवीर के मोहपाश में पड़कर होता है। प्रवीर कली का सिद्धि-सोपान सिद्ध होता है। वह उसके समक्ष अपने हृदय की समस्त पवित्रता से आत्मा का दुख उड़ेल देती है। कली का अतीत गर्व करने लायक नहीं है, इस कारण वर्तमान का ऐश्वर्य भी उसे अतीत की घृणास्पद स्थिति में उबरने नही देता। यही कली की विडम्बना है। कली का आरंभ जितना वीभत्सता लिये था, अन्त उतना ही कारूणिक होता है।

'सूरजमुखी अंधेरे के' में कृष्णा सोबती ने एक ऐसी लड़की (रत्ती) के अनुभवों की कहानी कही है जो बचपन में बलात्कार की शिकार हो जाती है। इस दुर्घटना के परिणाम स्वरूप वह अपने आस-पास के परिवेश को अपने प्रतिकूल पाती है। रत्ती के मनोमस्तिष्क में एक बद्धमूल मानसिक ग्रंथि है, जिसमें वह पूरी तरह गिरफ्तार है -'वह तीव्र इच्छा से भर उठती है और हताश हो अपने में ही लौट आती है। अपने से टकराती है, संघर्षरत होती है। लड़ाई लड़ती है कही बाहर नही, बाहरी शक्ति से नही, अपने से ही-गहरे में कही भीतर-अपनी ही मानसिक ग्रंथि से जिसके कारण वह सिर्फ एक चिथड़ा है जिससे वह एक बार भी समुची औरत नही बन पाती। हर बार कहीं पहूँच सकने की न मारने वाली चाह और हर बार वीरान वापसी अपनी ओर।'[6] कैशी उससे कहता भी है हमेशा अपने से अपने अन्दर लड़ने का कोई फायदा नहीं। पर रत्ती भीतर की लड़ाई को बाहर नही मोड़ पाती। इस मानसिक पीड़ा से छुटकारा पाने का अहसास रक्तिका को कुछ-कुछ असद भाई से मिलने पर होता है। असद से मिल कर वह असद की अकृत्रिम सहृदयता पा अपने आपकों मानों बदले हुए परिधान में पाती है। असद उसके पुराने खोल से मुक्ति दिलाने की शक्ति जुटाता कि इससे पूर्व ही उसकी अचानक मृत्यु रत्ती को एक बार फिर उसी पुरानी आंतरिक घुटन भोंगने को विवश कर देती है। असद के बाद रोहित, मुकुल, राजन, भानुराव, सुमेर सुब्रामनियम, श्रीपत अनेक पुरूष रत्ती की देह पर घात लगाये दिखाई देते है। प्रेम और सहृदयता का नाम लेकर ये सभी रत्ती की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाते है पर तुरंत ही वे उसे बिस्तर पर खींचने को बेताब दिखाई देते है। जब-जब रत्ती किसी पुरूष के संसर्ग में आती है वह एक काला जहरीला क्षण हर बार उसे झपट लेता है और रत्ती काठ हो जाती है। आधुनिक उपन्यास में स्त्री-पुरूष का संबंध भावात्मक धरातल पर ही गहराने की अपेक्षा अब नये आयामों के अनुरूप शारीरिक संपर्कों को लेकर ही अधिक मुखर हुआ है। किन्तु रक्तिका का मानस ही सारे फसाद की जड़ है। 'ममता कालिया' का 'बेघर' संजीवनी को इसीलिए 'बेघर' बनाता है, क्योंकि परमजीत संभोग के क्षणों में अपने को पहला पुरूष नही पाता। पुरूष द्वारा पहला होने की धारणा ही नारी के दुर्भाग्य का कारण बने यह हर स्थिति में आवश्यक नहीं। स्वयं नारी भी अपने आपसे इस लड़ाई में कहीं हारी हुई स्वयं को पाती है। रत्ती, सुब्रामनियम से अपनी इसी बेबसी का इकबाल करती है-'जिसने गरीबी को ओढ़ने के लिए कीमती कपड़े पहने हो, जिसके संबंधो की कोई रियासत न हो-दिखाने के नाम पर एक तेवर तक नही.....।'[7] मानों सारी बेबसी रत्ती की अपनी निर्मित की गई है। इस प्रकार 'सूरजमुखी अँधेरे के' अकेली रत्ती की ही कथा है जिसमें स्त्री के मन को परत-दर-परत उकेरने का प्रयास है। मानवीय-मन की नितांत उलझी हुई चाहत और जीवट भरे संघर्ष का संकेत रत्ती के जीवन का संघर्ष है।

भारतीय नारी की सामाजिक-आर्थिक विषमताओं से जन्मी मानसिक

यंत्रणा का अत्यंत मार्मिक चित्रण उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' में देखने को मिलता है। छात्रावास के पचपन खम्भे और उसकी लाल दीवारों के सदृश्य ही अपनी हमचाही उलझनों में कैद सुषमा को एक घुटन का तीखा अहसास होता है। उन उलझनों को सुलझाने के लिए नील जैसा सुलझा हुआ युवक सुषमा के जीवन में सहभागी होने की इच्छा व्यक्त करता है किन्तु सुषमा का अन्तर्मन स्वयं अपनी ही खींची सीमा-रेखाओं में बँधा रहता है। इन परिस्थितयों के बीच जीना ही उसकी नियति बन गई है। आधुनिक नारी-जीवन की भी यही विडम्बना रही है कि वह जिन परिस्थितियों को स्वीकार करने के लिए कतई तैयार नहीं उन्हें ही झेलने की विवशता में उसे जीना पड़ता है। परम्परागत बंधनकारा से मुक्ति पाने की स्थिति का स्पर्श करने का चाव लेकर भी भारतीय नारी ऐसा आत्मसाहस नहीं जुटा पाती। यही उसके चरित्र का भावात्मक पहलू उसे दूसरों की तुलना में अकिंचन बना देता है। सुषमा छोटी बहिन नीरू का विवाह धूमधाम से कराती है और स्वयं नील के प्रणय-निवेदन को ठुकराने के लिए विवश कर दी जाती है।

सुषमा महाविद्यालय में इतिहास विभाग की लेक्चरार तथा गर्ल्स होस्टल की वार्डन है। तैंतीस वर्ष की आयु, अपाहिज पिता, छोटे भाई-बहिन तथा माँ की आर्थिक माँग को पूरा करने के निमित्त कर देती है। जीवन की भाग-दौड़ और आजीविका के प्रश्नों में चुपचाप विलीन हो गये वे वर्ष-और अब तो उसके चारों ओर दीवारें खिंच गई थी, दायित्व की, कुंठाओं की, अपने पद की गरिमा और परिवार की।'' '.....कभी-कभी उसका मन न जाने क्यों डूबने लगता। अपने परिवार का सारा बोझ अपने उपर लिए सुषमा काँपने लगती। तब वह चाह उठती कि दो बाँहें उसे भी सहारा देने को हों। इस नीरवता में कुछ अस्फुट शब्द उसे भी सम्बोधन करें।'[8] नील की सबल बाँहे सुषमा के जीवन की नीरसता को रस-स्निग्ध बनाने के लिए आगे बढ़ती है किन्तु सुषमा की आत्मकुंठा उसे नील पर भरोसा नही करने देती है। सुषमा घर से दूर रह कर गर्ल्स कालेज में पढ़ाने और घर रूपया भेजने में ही अपने जीवन की पूर्णता मानने को विवश है। सुषमा का अन्तर्मुखी व्यक्तित्व आत्मपीड़न में ही सुखानुभव करने का अभ्यस्त बन गया है। नील का संपूर्ण समर्पण भी उसमें साहस नही भर पाता है। अकेलेपन का दर्द उसकी नियति बन गया है। भारतीय समाज की यह स्थिति आज की नही है, बल्कि यह पुरूषवादी सोच का परिणाम है। महिला कथाकारों ने इसीलिए लेखनी से अपनी बात रखकर विकृत समाज में बदलाव लाना चाहती है। मैत्रेयी पुष्पा जी ने भी अपनी रचनाओं में जहाँ एक ओर उत्पीड़न, यातना और अपमान का प्रत्यक्ष चरित्र-चित्रण किया है, वहीं उन्होंने आत्मविश्वास और स्वाभिमान जैसी ऊर्जा को अंतर्मन में बिठाने का भी काम किया है। वे रूढ़िवादी परंपराओं में जकड़े वर्चस्वादी समाज को सोते से जगाने का काम बखूबी करती दिखाई देती है। जीवन को परखती-खंगालती उनकी रचनाएँ सामाजिक रीतियों-कुरीतियों के अनेक पक्षों को अपने में समेटे हुए हैं। मैत्रेयी का 'चाक' उपन्यास ग्रामीण परिवेश में स्त्री चेतना को आख्यायित करता है। उपन्यास की नायिका सारंग है। वह अपनी फुफेरी बहन रेशमा की हत्या से विद्रोह हो उठती है। इस गाँव की औरतें पुरूष, अंह, शील और सतीत्व की रक्षा के नाम पर बलि चढ़ा दी जाती है। इसका वर्णन लेखिका ने इस प्रकार किया है कि-'इस गाँव के इतिहास में दर्ज दस्तानें बोलती है-रस्सी के फंदे पर झूलती रूखमणी, कुएँ में कूदने वाली समदेई, करबन नदी में समाधिस्थ नारायणी-ये बेबस औरतें सीता मईया की तरह 'भूमि प्रवेश' कर अपना शील-सतीत्व की खातिर कुरबान हो गई। ये ही नहीं, और न जाने कितनी.....।'[9] मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में ब्राहम्णवादी-सामंतवादी पूँजीवादी, बौद्धिक सोच को तोड़ते हुए वंचित, उत्पीड़ित समूहों-आदिवासी, दलित, पिछड़ी जाति की स्त्रियों के क्षमता कों उन्मुक्त और सक्रिय करने पर बल दिया है। इनके उपन्यासों में स्त्री का संघर्ष दरअसल एक ऐसी समाज व्यवस्था के लिए संघर्ष है जिसमें बराबरी हासिल करने की आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियाँ मौजूद हो। इसी तरह से चित्रा मुद्गल की उपन्यास 'नाला सोपारा' प्रभा खेतान की 'अन्या से अनन्या' मधु कांकरिया के उपन्यास 'ढलती सांझ का सूरज', मृदुला गर्ग के 'कठगुलाब' साथ ही डॉ. जया वादवानी, डॉ. उर्मिला शुक्ल की कहानियों में भी नारी अस्मिता को लेकर, संघर्ष की आधुनिक समस्याओं को रेखांकित किया गया है।

अत: निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि महिला कथाकारों का साहित्य वर्तमान सामाजिक परिवेश से जूझते व्यक्ति के दुखों का साहित्य है। वह जिन्दगीं के सही अर्थो में जीने का पर्याय बनकर टुकड़ों में बँटी आदमी की जिन्दगी को जोड़ने का प्रयास करता है। रचनाकारों ने समाज के विभिन्न मुद्दों पर अपनी लेखनी चलायी है। इनमें समाज के वे तबके शामिल है जिन्हें सदियों से उपेक्षित तथा शोषित किया जाता रहा है। महिला कथाकारों ने कथा साहित्य समाज में हो रहे बदलाव के लिए जन संघर्ष के प्रति पूर्ण समर्पित है। इस दौर की महिला कथाकार मुक्ति का मार्ग तलाशती आधुनिक स्त्री जीवन के विविध पहलुओं को परत-दर-परत उकेरती नजर आती है। चाहे वह स्त्री की 'आर्थिक स्वायत्तता' का प्रश्न हो, या 'यौन सुचिता' का प्रश्न हो या स्त्री के अन्त: संबंधों का प्रश्न हो, अथवा उनकी स्वतंत्र सत्ता एवं अस्तित्व का प्रश्न हो, चाहे पुरूष के हवस का शिकार होती स्त्री का प्रश्न हो, या आधुनिक स्त्री का प्रतिक्रियात्मक आक्रोश हो। उनकी पीड़ा, त्रासदी, संत्रास तथा संपूर्ण कष्टपूर्ण जीवन को महिला रचनाकारों ने सर्जनात्मक स्तर पर पुरूष-समाज की स्त्री-विरोधी मूल्य-मर्यादाओं, मिथकों, आदर्शो एवं विधि-निषेधों आदि की कड़ी आलोचना करते हुए उन्हें तोड़ने के लिए अपने कथा-साहित्य में अपने मन तथा विचार के अनुकूल 'स्त्री-पात्रों' को गढ़ा है और लेखन में उन्हें प्रस्तुत करने का पूरा प्रयास किया है। जिससे समाज में नवचेतना का संचार हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. सिंह, डॉ. त्रिभुवन - हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद - पृष्ठ - 31
2. शुक्ला, डॉ. इन्दू - साहित्यकार भागवतीचरण वर्मा - पृष्ठ - 01
3. वर्मा, महादेवी - श्रृंखला की कड़ियाँ, अपनी बाते से - आमुख
4. यादव, राजेन्द्र, मन्नू भण्डारी - एक इंच मुस्कान - पृष्ठ - 192
5. शिवानी, कृष्ण कली -पृष्ठ - 130
6. मोहन, डॉ. नरेन्द्र - आधुनिकता और समकालीन रचना संदर्भ - पृष्ठ - 130
7. सोबती, कृष्णा - सूरजमुखी अँधेरे के - पृष्ठ - 85
8. प्रियंवदा, उषा - पचपन खम्भें लाल दीवारें - पृष्ठ - 26
9. पुष्पा, मैत्रेयी - 'चाक' - पृष्ठ - 07

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

महात्मा गाँधी और उनका दर्शन

डॉ. श्रीमती बिन्दू परस्ते*

* सहा. प्रा. (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी, शा. कला एवं वाणिज्य महा. इन्दौर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – महात्मा गाँधी ना तो एक दार्शनिक थे जिन्होंने गहन अध्ययन एवं मनन के पश्चात एक सुव्यवस्थित दर्शन प्रस्तुत किया हो ना ही वे एक राजनीतिज्ञ थे जिन्होंने राजनीति को राजनीति मानकर एक नेता की भूमिका निभाई हो और न ही वे एक संत थे जिन्होंने इस जगत को मिथ्या मानकर अपने को ब्रह्म में लीन कर लिया हो। किंतु अजीब बात है – वे यह सब कुछ न होते हुए भी यही सब कुछ थे। अपने जीवन दर्शन को व्यवस्थित रूप देने का अवकाश नहीं था। फिर भी दार्शनिक मुद्रा में कठोर सिद्धांतों का पालन किया। राजनीतिक राजनीतिज्ञ ना होते हुए भी उन्होंने अपने देश और विदेश की राजनीति से हर क्षण सम्बन्ध रखा। गुफावासी संसार त्यागी संत न होते हुए भी मसीहायी अन्दाज प्रखर रहा। उनका सर्व व्यापी व्यक्तित्व अक्षितिज फैला रहा तथा उनके कृतित्व में मानव जीवन के हर पहलू को सधिकार आत्मसात किया। व्यक्ति, परिवार, समाज, जाति, संस्कार, संपत्ति, भोजन, चिकित्सा, वाणिज्य, कला, विज्ञान, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मानव शास्त्र, मनोविज्ञान, प्रेम, सौन्दर्य, विवाह, ब्रह्मचर्य, पठन–पाठन, भाषण, लेखन, सम्पादन, आंदोलन, अहिंसा, सत्य, ईश्वर, धर्म, नीति, नियम, जीवन, मृत्यु, इन सभी विषयों पर उन्होंने चिंतन किया। लोगों ने उन्हें देखा, सुना, पढ़ा, सहमत असहमत हुए, उनका तीव्र समर्थन किया, उनका घोर विरोध किया किंतु प्रेम और श्रृद्धा उन्हें जितना मिला, उतना विश्व में किसी एक व्यक्ति को नहीं मिला, क्योंकि उनके विरोधी भी उन्हें एक व्यक्ति के रूप में प्रेम करते रहे ।

राजदर्शन के महारथियों का नाम यदि इस संदर्भ में लिया जाए तो प्लेटो के बजाय सुकरात का नाम निश्चय ही सार्थक होगा– मार्क्स नहीं रूसो अधिक निकट सिद्ध होंगे –रसेल नहीं तालज्ताप की भाव – भूमि गाँधी जी की अपनी भावभूमि सिद्ध होगी किन्तु इन चिन्तकों का नाम भी गाँधी जी के संदर्भ में लेना न्यायसंगत नहीं होगा क्योंकि गाँधी जी किसी भी रूप में केवल मात्र दार्शनिक नहीं थे। 'मेरा जीवन ही मेरी वाणी है'– कहने वाले गाँधी जी दार्शनिक एवं आंदोलनकर्ता दोनों थे। यदि वे केवल आंदोलन करता होते तो मैजिनी और लेनिन होते, सर्वथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले। किंतु गाँधी जी केवल बहिर्मुखी तो नहीं थे वे अंतर्मुखी भी थे और अंतर्मुखी भी इतने की भीषण आंदोलन के दौर में भी 'स्व' को नहीं भूल पाए। वे हर क्षण अपने कड़े टटोलते रहे, खोजते रहे, प्रयोग करते रहे। किंतु यह अंतर्मुखी प्रक्रिया किसी दम्भिक अहमवादी की 'स्व' को निर्मित कर उसे प्रतिष्ठित करने की प्रक्रिया नहीं थी। यह आत्मबोध की प्रक्रिया थी। इस प्रकार की एक प्रक्रिया से लगातार गुजरते रहने के कारण गाँधी जी न तो विशुद्ध बुद्धि वादी बन सके और न ही एक सन्त की तटस्थता उनमें आरोपित हो सकी। वे बच्चों की तरह खुलकर हंसते थे और संवेदना आने पर खुलकर रोने में भी नहीं हिचकिचाए। करूणा और संवेदना उनमें इतनी थी कि हर किसी का दर्द बाँटने के लिए वह लालायित रहते थे किन्तु अनुशासन में भी इतने कठोर भी थे कि किसी को दण्ड देने में वह नहीं हिचकिचाते थे। उनका व्यक्तित्व विविधता और विचित्रता के साथ एकसपना एवं अनुशासन को इस प्रकार संजोए हुए था कि उनमें व्यक्तित्व और विचारों के विरोधाभास का चमत्कारी सह –अस्तित्व सर्वथा सहज प्रतीत होता है।

महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सूक्ष्म अध्ययन का यदि प्रयास किया जाए तो उसे पर हजारों पृष्ठ लिखने पर भी संतोष नहीं होगा। श्री तन्दूलकर ने आठ भागों में उनकी जीवनी को उतारा है। किन्तु उसे भी पढ़कर लगता है कि बहुत कुछ छूट गया है। उनके जीवन का हर दिन या यह कहना अधिक उपयुक्त होगा, हर क्षण इतना महत्वपूर्ण था कि उनके व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए कौनसा क्षण छोड़ दिया जाए और कौनसा क्षण ग्रहण किया जाए, एक समस्या बन जाती है। इसलिए गाँधी जी के जीवन का हर पहलू किसी न किसी रूप में किसी दूसरे महापुरूष के समकक्ष रखा जा सकता है। किन्तु अपने ही विचारों को व्यवहारिक रूप में परिवर्तित करने के लिए स्वयं आंदोलन छेड़ने और उन्हें संचालित करना गाँधी जी के व्यक्तित्व को एक अनुष्ठान प्रदान करता है। इसलिए गाँधी जी का संपूर्ण जीवन हमारे लिए हर पल एक आदर्श प्रस्तुत करता है। उनका जीवन मनुष्य के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

गाँधी जी ने अपने जीवन काल में बहुत कुछ लिखा कई संदर्भों में लिखा। इस प्रकार उनका लिखा हुआ साहित्य काफी व्यापक है। किन्तु उन्होंने अपने विचारों को छोटे या बड़े निबन्धों के रूप में या प्रश्नों के उत्तारों के रूप में लिखा। पुस्तक के रूप में उन्होंने काम ही लिखा। इस दृष्टि से यदि हम गाँधी जी द्धारा किए गए साहित्य का विश्लेषण करें तो हम पाएंगे की मौलिक पुस्तक के रूप में उन्होंने जितना लिखा, उससे कई गुना अधिक उनके विचारों का संकलन प्रस्तुत हुआ। यह एक अजीब बात है कि गाँधी जी ने बहुत कुछ लिखा कई विषयों पर लिखा किंतु अपने दर्शन को क्रमबद्ध रूप में एक थीसिस के रूप में कभी नहीं लिखा। अंतिम दिनों में उनकी श्रद्धा थी कि वह अपने विचारों की थीसिस प्रस्तुत करें किन्तु कर्मयोगी होने के नाते उन्हें जीवन के संघर्षों के ने इतना बांध रखा था कि वे व्यापक व्यापक धरातल पर केवल एकान्तिक लेखन नहीं कर सके। वे अपने विविध कार्यों के बीच मे समय निकालकर निबंध लिखते रहे जो अलग–अलग संकलन के रूप में

प्रस्तुत किया है। अत: गाँधी जी द्वारा लिखे गए, साहित्य की कोस मूल रूप में गाँधी जी के बिखरे हुए विचार ही मान सकते हैं। गाँधी जी से संबंधित दूसरे प्रकार का साहित्य, विशाल है जिसमें गाँधी जी के जीवन से संबंधित है और विचारों से संबंधित है। इसके अतिरिक्त गाँधी जी साहित्य के संबंध में कई बायोग्राफी भी प्रकाशित हुई है।

स्वयं गाँधी जी ने अपने जीवन काल में बहुत अधिक नहीं पढ़ा था किंतु उन्होंने स्वयं अपने द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों को उँगलियों पर गिनाया है किंतु उनकी अपनी मौलिकता एवं सृजनशीलता इतनी प्रखर थी कि वे जो कुछ पढ़ते थे उसे आत्मसात करने की प्रक्रिया में उस पुस्तक को अपने अनुरूप ढाल लेते थे। इस संदर्भ में उनके जीवन से संबंधित एक संस्मरण प्रस्तुत है। गाँधी जी ने स्वयं अपनी जीवनी में लिखा है– एक बार दक्षिणी अफ्रीका में रेलगाड़ी में सफर करते हुए उन्होंने टस्किन की लिखी हुई पुस्तक अद्योपांत पढ़ डाली। पुस्तक पढ़ने के बाद उन्हें रात भर चैन नहीं आई और उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे अपने जीवन को उसे पुस्तक के अनुसार ढ़ालेंगे और उसी के आधार पर उन्होंने दक्षिणी अफ्रीका में अपना प्रसिद्ध 'फोनेक्स आश्रम संगठित किया। इस संबंध में प्रसिद्ध इतिहासकार लुई फिशर ने लिखा है कि टस्किन की पुस्तक में इतना कोई चमत्कार नहीं था कि किसी के जीवन को रातों–रात बदल दे। यह तो गाँधी जी की विशेषता थी कि जब किसी पुस्तक को पढ़ते थे तो केवल उसमें पाठक नहीं बने रहते थे बल्कि उसमें सह लेखक की भी बन जाते थे और जो कुछ भी उसमें लिखा होता उसे अपनी कल्पना से जोड़ लेते थे। तो इस प्रकार हम देखते हैं कि पुस्तक को पढ़ने में अंतर होता है इसलिए विद्वान के लिए यह आवश्यक होता है कि वह जो कुछ पढ़े उसे पर अपनी मौलिकता की छाप भी छोड़ दें।

यूं तो थोड़ा विरोध हर विचारक में होता है विशेषताया ऐसे विचारक में जो एक लंबे समय तक विचारों की बुनियाद में चिंतन मनन होता है कभी–कभी जो विचारक पहले जो बात करता है उसे बात में बदल देता है कभी पहले जिम मान्यता को उसने प्रतिबद्धित किया है उसे मान्यता को बाद में अस्वीकार कर देता है। गाँधी जी के लेखन में यह प्रवृत्ति कुछ ज्यादा ही है इसलिए उन्हें अक्सर विरोधाभासी विचारक कहा जाता है। समय–समय पर गाँधी जी के सामने ही उन पर यह आरोप लगाया गया है कि इसके प्रतिउत्तार में गाँधी जी की स्वीकारोक्ती बड़ी यांत्रिक है। उन्होंने यही मान्यता प्रतिपादित की है कि वे एक सत्यार्थी है। इस नाते वे हमेशा, हर घड़ी सत्य का अन्वेषण कर रहे हैं सत्य के साथ प्रयोग कर रहे हैं। इस प्रक्रिया में वे सत्यों के बीच से गुजरते हैं। उनका आज का सत्य निश्चय ही कल का सत्य है। यह सत्य अनुभव जन्म सत्य है, चरम सत्य नहीं। इसलिए हो सकता है कि कल का सत्य आज के सत्य को अस्वीकार कर दे और उस समय गाँधी जी विगत सत्य के साथ जिद के कारण चिपके रहे वे सत्य के अन्वेषक हैं। सत्य का उनका अन्वेषण ही उन्हें इस बात पर अधिक अमादा करता है कि उन्हें यदि विगत कल के कथन का प्रतिवाद करना पड़े तो उन्हें हिचकिचाना नहीं चाहिए।

महात्मा गाँधी जी के जीवन के शुरुआती दौर से लेकर एक महान स्वतंत्रता सेनानी बनने तक के सफर के बारे में उनसे बेहतर आखिर कौन जान सकता है। ऐसे उनकी लिखी अमूल्य किताब सत्य के साथ मेरे प्रयोग पूरे देश, पूरे राष्ट्र, पूरे समाज का मार्गदर्शन पथ प्रदर्शन करती है। इस पुस्तक को 1920 में खत्म किया गया। इस दौरान गाँधी जी एक चर्चित व्यक्ति बन चुके थे। गाँधी जी ने इस पुस्तक का नाम सत्य के प्रयोग इसलिए रखा है कि क्योंकि उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम और अभियानों में सत्य के प्रयोग यानी सत्याग्रह के जारिये सभी लड़ाईयाँ लड़ी। इस पुस्तक को गाँधी जी ने गुजराती में लिखा हिंदी में यह पुस्तक गाँधी जी की आत्मकथा सत्य के प्रयोग के नाम से जानी जाती है। हिंद स्वराज महात्मा गाँधी द्वारा लिखी गई प्रसिद्ध पुस्तकों में से एक मानी जाती है। इस किताब को भी गाँधी जी गुजराती भाषा में लिखा है। इसलिए गाँधी जी ने विदेशी सभ्यता संस्कृति की आलोचना की है। साथ ही मौजूदा समय में मानवता की समस्याओं के बारे में भी बताया है। इस किताब की प्रमुख विशेषताएं यह है कि यह प्रश्न उत्तार के प्रारूप में लिखी गई है। इसमें कानूनी पेसे से संबंधित वकीलों, डॉक्टरों तथा रेलवे से जुड़े लोगों और उनके विचारों के बारे में लिखा गया है।

महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह का जो मार्ग अपनाया वह केवल राजनीति में ही नहीं मनुष्य के सारे कार्यकलापों के साथ बंधा हुआ है। मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन में, पारिवारिक जीवन में, सामूहिक जीवन में, प्रादेशिक राष्ट्रीय जीवन में, सत्याग्रह का प्रयोग किया जा सकता है। गाँधी जी के जीवन में ऐसे बहुत से उदाहरण भरे पड़े हैं, जब उन्होंने जीवन के कई क्षेत्रों में सत्याग्रह का प्रयोग किया है, और सफल भी रहे हैं। इतिहास में हमें कितने ही उदाहरण मिलते हैं जिसमें मनुष्य के जीवन में सत्याग्रह का सफल प्रयोग हुआ है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. महात्मा गाँधी सत्य के साथ मेरे प्रयोग
2. डॉ. प्रभात कुमार भट्टाचार्य – गाँधी दर्शन
3. गाँधी, हिज लाइफ एंड मैसेज फॉर दी वर्ल्ड – लुई फिशर
4. माय फाउंड नो पीस – वेब मिलर

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय जनता पार्टी में धार जिले की जनजातीय महिला नेतृत्व की भूमिका

दयाराम डावर* डॉ. ममता पाण्डेय डॉ. सीमा सत्या*****

* शोधार्थी, शासकीय महाविद्यालय, जयसिंह नगर, शहडोल (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) शासकीय महाविद्यालय, जयसिंह नगर, शहडोल (म.प्र.) भारत
*** सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) शास. महाविद्यालय, अमरपुर, डिण्डौरी (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारतीय जनता पार्टी एक राष्ट्रवादी राजनीतिक दल हैं, जो भारत को एक सुदृढ़ एवं शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर स्थापित करने के लिए कृतसंकल्प है। भारतीय जनता पार्टी में प्रत्येक जिले में जनजातीय क्षेत्रीय पंचायतों और राज्य विधानसभा की आरक्षित सीटों का विशेष महत्व है। मध्यप्रदेश के जिलों में भाजपा ने जनजाति समाज के मुद्दों पर अपनी चुनावी रणनीतियाँ तैयार की हैं, और यहाँ की जनजातीय महिलाओं को विशेष रूप से राजनीतिक सक्रियता का अवसर दिया गया हैं।

भारत में जनजाति समुदाय की विशेष सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक पहचान रही है। जनजाति समुदाय लंबे समय तक मुख्यधारा की राजनीति और समाज से अलग-थलग रहा, लेकिन पिछले कुछ दशकों में भारत की राजनीति में जनजाति समुदाय की भागीदारी और विशेष रूप से जनजाति महिला नेतृत्व का महत्व बढा है। भारतीय जनता पार्टी जैसे राष्ट्रीय राजनीतिक दल में जनजाति समुदाय के सदस्य, विशेष रूप से महिलाएं, अब अधिक सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं और नेतृत्व की भूमिकाओं में उभर रही हैं। मध्यप्रदेश में धार जिला पश्चिमी हिस्से में स्थित है और यह आदिवासी समुदायों, विशेष रूप से भील, पंवार और अन्य जनजातियों का गढ़ है। इस जिले में जनजातीय क्षेत्रीय पंचायतों, राज्य विधानसभा और लोकसभा की आरक्षित सीटों का विशेष महत्व है। धार जिले में भाजपा ने जनजाति समाज के मुद्दों पर अपनी चुनावी रणनीतियाँ तैयार की हैं, और यहाँ की महिला को विशेष रूप से राजनीतिक सक्रियता का अवसर दिया गया हैं।

शब्द कुंजी – भाजपा, राजनीति, सांस्कृतिक, सामाजिक-आर्थिक, जनजाति, महिला सशक्तिकरण।

प्रस्तावना – भारतीय राजनीति में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण रहा हैं, लेकिन जनजाति महिला नेतृत्व पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया हैं। मध्य प्रदेश में जहां जनजातीय समुदाय की महत्वपूर्ण संख्या है, भारतीय जनता पार्टी ने समय-समय पर इन समुदायों के बीच नेतृत्व को प्रोत्साहित किया है। मध्य प्रदेश में जनजाति समुदाय का प्रभाव चुनावी राजनीति में विशेष है। राज्य में जनजातियों के लिए आरक्षित सीटों का बड़ा हिस्सा भाजपा के लिए एक रणनीतिक अवसर है। भाजपा ने विशेष रूप से इन समुदायों में महिला नेताओं को अपनी पार्टी में शामिल किया है, ताकि वे अधिक प्रभावी रूप से इन समुदायों के मुद्दो को उठाकर अपनी स्थिति मजबूत कर सकें। पार्टी ने महिला सशक्तिकरण के नारे के तहत जनजाति महिलाओं को मंच देने का प्रयास किया।

मध्यप्रदेश के पश्चिम क्षेत्र के धार जिला जनजाति बहुल्य क्षेत्र है, आदिवासी जनजाति समुदाय में सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत परिवार बुजुर्ग महिला मुखिया होती हैं। भारत देश वास्तव में एक विविधतापूर्ण और विशाल राष्ट्र हैं, जिसमें गावों की एक बड़ी संख्या है, और जनजातियों का भी महत्वपूर्ण स्थान हैं। भारत के विभिन्न हिस्सों में खासकर आदिवासी क्षेत्रों में, जनजातियों की बड़ी आबादी बसती हैं। भारत में जनजाति समुदाय की विशेष सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक पहचान रही है। जनजाति समुदाय लबें समय तक मुख्यधारा की राजनीति और समाज से अलग-थलग रहा, लेकिन पिछले कुछ दशकों में भारत की राजनीति में जनजाति समुदाय की भागीदारी और विशेष रूप से जनजाति महिला नेतृत्व का महत्व बढा है। भारतीय जनता पार्टी जैसे राष्ट्रीय राजनीतिक दल में जनजाति समुदाय के सदस्य, विशेष रूप से महिलाएं, अब अधिक सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं और नेतृत्व की भूमिकाओं में उभर रही हैं।

भारत में महिलाओं के प्रति आदर का भाव रहा है उन्हें देवी और शक्ति की उपमा दी गई है। वह परिवार में स्नेहमयी दुलारी बनी है तो माता के रूप में ममतामयी और वात्सल्य की प्रतिभूति धर्मपत्नी के रूप में पति की अनुगामिनी सहचरी, सहयोगी और मार्गदर्शिका आदि सही अर्थो में यह परिवार की धूरी है। कहा गया है कि नारी धरती जैसा फर्ज निभाती है और अपने अंक में समुद्र जैसी ममता समेटे आकाश हो जाती है। महिलाओं को अधिकार संपन्न बनाने के लिये सर्वप्रथम उन्हें विकास के बारे में जाग्रत करना होगा सदियों से होती आ रही बालिकाओं की उपेक्षा और उनके प्रति भेदभाव एक दिन में तो बदला नहीं जा सकता है लेकिन सभ्य समाज के सहयोग से देशभर में उनकी शिक्षा का स्तर ऊँचा उठाने की योग्यताएँ यदि सावधानी पूर्वक बनायी जायें तो स्त्रियों का सशक्तिकरण अवश्य ही संभव है। आज की महिलाएँ प्रत्येक क्षेत्र में अपना वर्चस्व दिखा रही हैं। सामाजिक, आर्थिक व्यवसायिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक आदि सभी क्षेत्रों में उपलब्धियां बढ़ी है। आज वे किसी भी सम-सामयिक विषय पर किसी भी व्यक्ति के साथ सफलतापूर्वक चर्चा कर सकती है। उसने अपनी संकीर्ण मानसिकता को त्याग कर अपने में आत्मविश्वास पैदा कर लिया

है। आज महिलाएँ अपने दोहरे रूप को भी सफलतापूर्वक अंजाम दे रही है। एक तरह वह कैरियर वूमेन का खिताब हासिल किये हुये है तो दूसरी और होम मेकर के रूप में घर गृहस्थी की तमाम जिम्मेदारियों का सफलतापूर्वक निर्वाह कर रही है।

वर्तमान में महिला सही मायने में आधुनिक है, उन्होंने अपनी सामान्य दुर्बलताओं को दूर करके अपने आपको मजबूत करने अपनी स्वतंत्र पहचान कायम करने और पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने की कोशिश की है। केन्द्र सरकार ने महिलाओं के चहुंमुखी विकास के लिये वर्ष 2001 के 'महिला सशक्तिकरण वर्ष' घोषित किया। इसमें महिलाऐं अधिक सशक्त है, तो ऐसा ध्येय रखा गया। हाल के वर्षों में महिलाओं ने अपनी विशेष पहचान इस समाज के सामने प्रस्तुत की है, जिसमें वह साहसी, परिपक्व, सहिष्णु और एक मजबूत इरादे वाली महिला के रूप में उभर कर सामने आयी है।

मध्यप्रदेश में धार जिला पश्चिमी हिस्से में स्थित है और यह आदिवासी समुदायों, विशेष रूप से भील, पंवार और अन्य जनजातियों का गढ़ है। इस जिले में जनजातीय क्षेत्रीय पंचायतों, राज्य विधानसभा और लोकसभा की आरक्षित सीटों का विशेष महत्व है। धार जिले में भाजपा ने जनजाति समाज के मुद्दों पर अपनी चुनावी रणनीतियाँ तैयार की हैं, और यहाँ की महिला को विशेष रूप से राजनीतिक सक्रियता का अवसर दिया गया हैं।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत अध्ययन मध्यप्रदेश के धार जिले पर आधारित है। उक्त जिले का चयन सविचार निदर्शन विधि के आधार पर चयन किया गया है। **'भारतीय जनता पार्टी में धार जिले की जनजातीय महिला नेतृत्व की भूमिका'** का अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक समंकों पर आधारित है।

द्वितीयक समंक : द्वितीयक समंकों का संकलन, पुस्तकों, पत्र-पत्रिका, जिला सांख्यिकी विभाग, तहसील कार्यालय, विकासखण्ड, कार्यालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय रिपोर्ट, इंटरनेट से प्राप्त सामग्री एवं संबंधित विषय में विगत वर्षों से प्रकाशित लेखों इत्यादि से समंकों का संकलन किया गया है।

प्राथमिक समंक : प्राथमिक समंकों का संकलन धार जिले में 13 विकासखण्ड, 7 विधानसभा पद, 1 ससंद सदस्य, 761 ग्राम पंचायत, नगर परिषदों एवं नगर पालिका क्षेत्रों में कार्यरत विभिन्न राजनीतिक दलों की महिला कार्यकर्ताओं एवं जनप्रतिनिधियों में दैव निदर्शन विधि द्वारा जनजातीय महिलाओं नेत्रियों का चयन किया। दैव निदर्शन विधि से चयनित जनजातीय महिला उत्तरदाताओं से राजनीति में भूमिका एवं ग्रामीण विकास के अध्ययन के लिए साक्षात्कार अनुसूची के आधार पर ग्रामीण विकास में जनजातीय महिलाओं की भूमिका सम्बन्धित समंक संकलित किये गए।

जनजाति महिलाओं की पंचायत में नेतृत्व – जनजाति महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता सभी राजनीतिक गतिविधियॉ में सम्मिलित होना, स्वैच्छिक रूप से निर्णय लेना, यंत्र के रूप में, निर्णय निरूपण तथा क्रियान्वयन रूप एवं किसी कार्य की सहमति देना या सहमति न देना आदि गतिविधियॉ मे सम्मिलित हैं। स्वतंत्र भारत की लोकतांत्रिक राजनितिक संरचना सहभागिता के मूल्य पर आधारित हैं। राजनीतिक व्यवस्था के प्रदान किया गया है। समाज के निर्बल वर्ग, विशेषकर अनुसूचित जाति और जनजाति के व्यक्तियों को राजनीतिक सहभागिता का अवसर प्रदान करने के लिए तीन प्रकार की व्यवस्थाओं को मुख्य रूप से अपनाया गया है। प्रथम, अनुसूचित जनजाति समुदाय की सामाजिक-आर्थिक उन्नति के लिए शैक्षणिक कल्याण की योजनाएं अपनायी गयी है। द्वितीय, सरकारी नौकरियों में आरक्षण की व्यवस्था। इस व्यवस्था के अधीन लोकसभा, विधानसभा एवं त्रिस्तरीय पंचायतों के कुछ स्थानों में अनुसूचित जनजाति के सदस्यों के लिए आरक्षित कर दिए गए हैं। भारतीय जनता पार्टी की राजनीति में 16 प्रतिशत के लगभग जनजाति महिलाएं प्रतिनिधि बन कर नेतृत्व कर रही हैं।

भाजपा में आदिवासी महिला नेतृत्व की नयी समीकरण – भाजपा गढ़ रही नए समीकरण के माध्यम से आदिवासी जनजाति महिलाओं को नेतृत्वकी नयी अवसर मिल रही हैं। भाजपा को जीत का पर्याय बनाने के लिए जनाधार बढ़ाने का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का अपना ही अदांज हैं। जो वर्ग सियासत के लिए कमजोर माने गए, उन्हीं को मजबूत कर भाजपा चुनावी बाजी पलटने के लिए माहिर माने जाते हैं। ऐसा ही एक वर्ग इस लोकसभा, विधानसभा एवं त्रिस्तरीय पंचायत चुनावों में उभर कर सामपे आया हैं, जिसे ताश कर मोदी भाजपा को मजबूत कर रहे हैं। राजनीति मे दशकों तक उपेक्षित आदिवासी वर्ग की राजनीतिक पार्टीयों द्धारा पूछ-परख तो बढ़ी, पर इस जनजाति वर्ग की महिलाओं को अधिक मौका देकर भाजपा नए समीकरण गढ़ रही हैं। आदिवासी जनजाति बहुल राज्य मध्यप्रदेश हो या झारखण्ड, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जब भी प्रवास पर जाते हैं, तो आदिवासी जनजाति महिलाओं से संवाद अवश्य करते हैं उनकी जीवन शैली, संस्कृति, कला और परंपराओं से न केवल रूबरू होते हैं, बल्कि अपने अनुभव साझा कर उन्हें प्रभावित करने में भी सफल रहत हैं। जनजाति महिलाओं के बीच ऐसा अनुभव कभी नहीं रहा, जब प्रधानमंत्री ने उनके गांवों तक पहुंच कर मुलाकात की हो। मध्यप्रदेश में विशानसभा चुनाव से पहले शहडोल आए प्रधानमंत्री मोदी ने गोंड (कोयतोर), कोल और बैगा वर्ग की महिलाओं के साथ संवाद किया था। लोकसभा से पहले झाबुआ आए थे तो विलुप्त हो रही विशिष्ट पिछड़ी जनजाति सहरिया महिलाओं से बातचीत की थी। तब मोदी की दूरदृष्टि का अंदाज किसी को नहीं था। आदिवासी वर्ग की महिलाओं को नेतृत्व के लिए प्रोत्साहित करने का यह तरिका कोई भाप नहीं सका था।

भाजपा राजनीति में जनजाति महिला नेतृत्व का योगदान:

1. भारतीय जनता पार्टी एक राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टी हैं, जिसमें जनजाति महिलाओं की महत्वपूर्ण योगदान हैं।
2. जनजातीय महिलाओं को विशेष रूप से राजनीतिक सक्रियता का अवसर दिया गया हैं।
3. भारत में जनजाति समुदाय की विशेष रूप से प्राकृतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पहचान रही है।
4. भारत देश में जनजाति समुदाय मूलत: गांवों में निवास करने वाली होती हैं। यह जनजाति समुदायों में महिला प्रधान या नेतृत्व युक्त परिवार होती हैं।
5. भजपा राष्ट्रीय समानता, एकता और अखण्डता के लिए हमेशा से प्रयासरत रही हैं। भाजपा ने यह जनजाति महिला नेतृत्व को मुख्यधारा में लाने के लिए हमेशा से आगो रही हैं।
6. आज भी देश में राष्ट्रीय अखण्डता के मुद्दे उठाना पृथकतावाद से जूझना एवं इस निमित्त समाज को निरन्तर जाग्रत रखने का काम भाजपा ही कर रही है।

जनजातीय महिला नेतृत्व का समीक्षात्मक विश्लेषण :

1. जनजातीय महिला प्रतिनिधियों के क्षेत्र में ग्रामीण विकास योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए नेतृत्व की स्थिति।

2. जनजातीय महिला जनप्रतिनिधियों की यामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विश्लेषण करना।
3. शिक्षण संस्थाओं में जनजाति महिलाओं नेतृत्व से सामाजिक स्तर में परिवर्तन करना।
4. पंचायत राज संस्थाओं में जनजाति महिला नेतृत्व की सहभागिता व सक्रियता का विश्लेषण करना।
5. त्रिस्तरीय पंचायती राज की कार्यप्राणली में जनजाति महिला जनप्रतिनिधियों की भूमिका का विश्लेषण करना।

जनजातीय महिला नेतृत्व की आवश्यकता – भारत की विभिन्न जातियों तथा समाजों मे महिलाओं की स्थिति अत्यन्त पिछड़ी हुई है। महिलाऐं अपने जीवन में परिवार तथा समाज से अपनी पहचान के लिए संघर्ष कर रहीं है। सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों के विभिन्न पहलुओं को अभिव्यक्त करना तथा परिवर्तनों पर जनजाति महिला नेतृत्व की चिन्तन के द्वारा मार्ग प्रस्तुत करना ही शोध प्रबंध का प्रमुख उद्देश्य है। केन्द्र तथा मध्यप्रदेश सरकार द्वारा महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिये विभिन्न प्रकार की योजनाएँ संचालित है जैसे संपूर्ण साक्षरता अभियान, सार्वजनिक प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम, अनुपूरक सम्पोषण कार्यक्रम, परिवार कल्याण कार्यक्रम, महिला बाल एवं विकास कार्यक्रम के साथ ही पंचायती राज संस्थाओं द्वारा स्वैच्छिक संगठनों जैसे महिला मण्डल युवा क्लब स्वावलंबी समूह आदि संस्थाओं को प्रोत्साहित कर महिलाओं को विकास की मुख्य धारा में जोड़ा जा सके। यद्यपि शासन सभी वर्ग की महिलाओं को स्वावलंबी बनाने की दिशा में सक्रिय है। फिर भी लाभान्वित हो सकने वाली महिलाओं का विकास कार्यक्रमों से जुड़ने के प्रति रूझान कम है इस तथ्य को ध्यान में रखकर उक्त शोध का उद्देश्य धार जिले की जनजातीय महिलाओं में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि परिवर्तनों की जाँच करना तथा विकास कार्यक्रमों में भागीदारी की स्थिति का अध्ययन करना तथा महिला जनजाप्रतिनिधियों के जीवन स्तर में आये बदलाव का विश्लेषण करना है।

वर्तमान स्थिति – वर्तमान समय में आज भाजपा प्रदेश एवं देश में एक प्रमुख राष्ट्रवादी शक्ति के रूप में उभर चुकी है और विभिन्न प्रदेशों एवं देश के सुशासन, विकास, एकता एवं अखंडता के लिए कृतसंकल्प है। 12 साल पार्टी ने विपक्ष की सक्रिय और शानदार भूमिका निभाई। भारतीय जनता पार्टी में जनजाति महिलाओं की नेतृत्व भारतीय राजनीति में भागीदारी प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही हैं। भाजपा नीतिगत राजनीति के माध्यम से समिति, संगठनों, त्रिस्तरीय पंचायत, विधानसभा और लोकसभा में जनजाति महिलाओं के द्वारा प्रत्येक में नेतृत्व की भूमिका निभा रही हैं। जनजातीय महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में एक तरफ जहां भाजपा सरकार ने इस समाज की महिला को राष्ट्रपति पद पर विराजमान किया। वहीं दमसरी ओर प्रदेश स्तर पर भी इस समाज से जुड़ी हूई महिलाओं को बड़े स्तर सशक्तिकरण का माध्यम बनाया। इनमें जनजीय राजनैतिक भागीदारी, जनजातीय महिलाओं पर विभिन्न योजनाओं का प्रभाव, प्रवासन और सामाजिक – सांस्कृतिक रूप से जनजातियों को किस प्रकार प्रभावित करता हैं।

निष्कर्ष – भारतीय जनता पार्टी एक राष्ट्रवादी राजनीतिक दल हैं, जो भारत को एक सुदृढ़ एवं शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर स्थापित करने के लिए कृतसंकल्प है। भारतीय जनता पार्टी में प्रत्येक जिले में जनजातीय क्षेत्रीय पंचायतों और राज्य विधानसभा की आरक्षित सीटों का विशेष महत्व है। मध्यप्रदेश के जिलों में भाजपा ने जनजाति समाज के मुद्दों पर अपनी चुनावी रणनीतियाँ तैयार की हैं, और यहाँ की जनजातीय महिलाओं को विशेष रूप से राजनीतिक सक्रियता का अवसर दिया गया हैं।

भारत में जनजाति समुदाय की विशेष सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक पहचान रही है। जनजाति समुदाय लबें समय तक मुख्यधारा की राजनीति और समाज से अलग–थलग रहा, लेकिन पिछले कुछ दशकों में भारत की राजनीति में जनजाति समुदाय की भागीदारी और विशेष रूप से जनजाति महिला नेतृत्व का महत्व बढ़ा है। भारतीय जनता पार्टी जैसे राष्ट्रीय राजनीतिक दल में जनजाति समुदाय के सदस्य, विशेष रूप से महिलाएं, अब अधिक सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं और नेतृत्व की भूमिकाओं में उभर रही हैं। मध्यप्रदेश में धार जिला पश्चिमी हिस्से में स्थित है और यह आदिवासी समुदायों, विशेष रूप से भील, पंवार और अन्य जनजातियों का गढ़ है। इस जिले में जनजातीय क्षेत्रीय पंचायतों, राज्य विधानसभा और लोकसभा की आरक्षित सीटों का विशेष महत्व है। धार जिले में भाजपा ने जनजाति समाज के मुद्दों पर अपनी चुनावी रणनीतियाँ तैयार की हैं, और यहाँ की महिला को विशेष रूप से राजनीतिक सक्रियता का अवसर दिया गया हैं। जिससे धार जिले की जनजाति महिलाऍं अपने क्षेत्रिय मुद्दों और शासकीय योजनाओं को अपनी नेतृत्व क्षमता के द्वारा जन समुदाय एवं समाज के लोगों तक पहुचाने का कार्य बखूबी निभा रही हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. मिश्रा, डॉ, गायत्री एवं चर्मकार, बेबी (2022), भारतीय राजनीति में भारतीय जनता पार्टी का इतिहास एवं विकास, ijrrss 0(4); अक्टूम्बर–दिसंबर, 2022.
2. वाजपेयी, अटल बिहार (1996), अटल बिहारी वाजपेयी के कुछ भाषण और कुछ लेख, दिल्ली, 1996, 4अ – 225.
3. Constitution and Rules Of Bharatiya Janta Party (New Delhi A BJP Publication)1984.
4. Sisodia, Yatindra Singh and Jha Sumit Kumar (2024); Explaining the BJP's Triumph in the 2023 Madhya Pradesh Electons, Economic & Political weekly EPW (2024), Vol. Lix No. 13.
5. अहुजा, गुरूदास (1996); भारतीय राजनीति भाजपा का आगमन दिल्ली 1996, पेज – 24।
6. वैदय, नरेश कुमार (2023);'जनजाति विकास' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर एवं नई दिल्ली।
7. श्रीवास्तव, अरूण कुमार (1994) : भारत में पंचायती राज, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर, पृष्ठ 7।
8. सिसोदिया, यतीन्द्र सिंह (2000): पंचायतीराज एवं अनुसूचित जाति महिला नेतृत्व, रावत रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृष्ठ 48।
9. सिंह, लता (1995): 'विकास में महिलाओं की भागीदारी' कुरूक्षेत्र।
10. उपाध्याय, हेमंत कुमार (2024):'आदिवासी महिलाओं के नेतृत्व, भाजपा के नयी समीकरण' नई दुनिया, मार्च, 2024।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

कार्यक्षेत्र में तनाव प्रबंधन का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

डॉ. आराधना श्रीवास*

* सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (गृह विज्ञान) शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय, दमोह (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – तनाव प्रबंधन कार्यक्रम कर्मचारियों को तनाव की प्रकृति और स्त्रोतों, स्वास्थ्य पर तनाव के प्रभावों और तनाव को कम करने के लिए व्यक्तिगत कौशल के बारे में सिखाते है–उदाहरण के लिए, समय प्रबंधन या विश्राम अभ्यास। कार्यस्थल का तनाव आज की तेज रफ्तार जीवनशैली में एक आम समस्या बन गया है। यदि इसका सही प्रबंधन न किया जाए तो यह न केवल मानसिक बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य को भी गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है। तनाव प्रबंधन की उचित रणनीतियाँ अपनाने से व्यक्ति के समग्र स्वास्थ्य और उत्पादकता में सुधार होता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य शारीरिक एवं मानसिक तनाव प्रबंधन की प्रभावी रणनीतियों का विश्लेषण करना है।

प्रस्तावना – 'स्वास्थ्य मानव जीवन की शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक व मानसिक निरोगता व सामान्यता की स्थिति है।'

प्रत्येक व्यक्ति को अपना जीवन स्वस्थ एवं सामान्य बनाये रखने के लिये शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य का निरन्तर सहारा लेना पडता है। शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य से ही व्यक्ति समय–समय पर उत्पन्न होने वाली समस्याओं, अर्न्तद्वन्दों तथा परेशानियों से बचकर निकल सकता है। अपने जीवन को सुखमय, शान्तिमय तथा समायोजित बनाने के लिये हम शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य की अवहेलना नहीं कर सकते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार–'स्वास्थ्य सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक व सामाजिक निरोग्यता की अवस्था है तथा मात्र बीमारी या दुर्बलता की अनुपस्थिति को स्वास्थ्य नहीं माना जा सकता।'

तनाव मनोवैज्ञानिक, जैविक एवं पर्यावरणीय कारणों से उत्पन्न होता है जो दीर्धकालिक रूप से हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, अवसाद एवं चिन्ता जैसी बीमारियों का कारण बन सकता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 2019 में कार्यशील आयु वर्ग के लगभग 15 वयस्क किसी न किसी मानसिक विकार से ग्रस्त थे। इसके परिणामस्वरूप, हर वर्ष अवसाद और चिंता के कारण वैश्विक स्तर पर अनुमानित 12 अरब कार्य दिवसों का नुकसान होता है, जिससे उत्पादकता में लगभग 1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की हानि होती है।

ब्रेटेन में 2023–24 के दौरान कार्य संबंधित बीमारियों के कारण प्रति व्यक्ति औसतन 17.7 कार्य दिवसों का नुकसान हुआ। विशेष रूप से तनाव, अवसाद या चिंता के मामलों में यह औसत 21.1 दिन प्रति व्यक्ति था।

इन आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि कार्यस्थल पर तनाव प्रबंधन न केवल कर्मचारियों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि यह संगठन की उत्पादकता और आर्थिक स्थिरता के लिए भी आवश्यक है। कार्यस्थल पर तनाव प्रबंधन के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव होते है। उचित तनाव प्रबंधन तकनीकों को अपनाने से कर्मचारियों के स्वास्थ्य में सुधार होता है, जबकि तनाव के उच्च स्तर से विभिन्न स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हो सकती है।

कार्य तनाव –छोटी मात्रा में तनाव आपको समयसीमा को पूरा करने और काम पर लक्ष्य हासिल करने के लिए प्रेरित कर सकता है। हालांकि, जब काम से संबंधित तनाव पुराना हो जाता है, तो यह चिंता और अवसाद जैसी मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं और हृदय रोग और उच्चचाप जैसी शारीरिक स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दे सकता है।

कार्य क्षेत्र में तनाव–प्रबन्धन – स्वस्थ व्यक्ति अपने व्यवसाय से सदैव सन्तुष्ट नहीं रहता है। यदि देखा जाये तो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में उसके व्यवसाय का विशेष महत्व होता है। व्यवसाय के प्रति व्यक्ति का दृष्टिकोण विशेष महत्व रखता है। जो व्यक्ति अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट नहीं है वह किसी दशा में अपने आपको स्वस्थ नहीं रख सकता। वास्तव में व्यवसाय से सन्तुष्ट होने के लिये एक विशेष प्रकार का रूख अपनाना पड़ता है। जिस व्यक्ति को अपना व्यवसाय आनंदमय प्रतीत होता है, वह व्यक्ति अपने व्यवसाय से संतुष्ट होता है। यदि किसी व्यक्ति के लिये उसका व्यवसाय केवल धन उपार्जन का साधन मात्र है तो वह व्यक्ति वास्तव में अपने व्यवसाय से संतुष्ट नहीं माना जायेगा। इस प्रकार का व्यवसाय कुछ समय बाद बोझ प्रतीत होने लगता है। अपने व्यवसाय से असन्तुष्ट व्यक्ति तनाव से ग्रसित हो जाता है।

तनाव का शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव– वर्तमान समय में शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जो इस तनाव से मुक्त हो। तनाव अपने आप में अच्छा है न बुरा। यह सिर्फ जीवन की सच्चाई है, अनुसंधान बताता है कि तनाव की चिरकालिक अधिकता रोग पूर्व की स्थिति है प्रकृति ने प्रत्येक व्यक्ति को एक जीवन शक्ति दी है। जो सदा बीमारी रोकने और हमें स्वस्थ रहने में लगी हुई है। यह जीवन शक्ति कार्य करना बंद कर देती है जैसे ही तनाव साधारण सीमाओं से अधिक हो जाता है अत: तनाव की अधिकता तुरन्त रक्तचाप और हृदय गति की अधिकता, रक्तप्रभाव में वसा युक्त अम्लों और शर्कराओं के षामिल होने, माँसपेशियों के तनाव, पाचन प्रक्रिया में उपद्रव आदि उत्पन्न कर देती है।

1.हाइपोथैलेमस से एड्रोनेलिन व कार्टिसोल का अधिक स्त्रावण रक्त	1.पुतलियों का फैलना।

में होना।	
2.माँसपेशियों में अधिक रक्त पहुँचना।	2.फेफड़ों में श्वसन दरका बना।
3.एड्रिनल ग्रन्थि द्वारा अधिक एड्रिनेलिन हार्मोन का स्त्राव। बढना।	3.अत्यधिक पसीना ग्रन्थियों द्वारा स्त्राविक होना हृदय दर का

शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

हृदय स्वास्थ्य – लंबे समय तक तनाव रहने से रक्तचाप बढ़ सकता है और हृदय रोग का खतरा बढ़ सकता है।

प्रतिरक्षा प्रणाली – दीर्घकालिक तनाव प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर कर सकता है जिससे संक्रमण और बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।

मानसिक स्वास्थ्य पर तनाव का प्रभाव– मानसिक अस्वस्थता व्यक्ति की वह मानसिक स्थिति या दशा है जिसमें उसका व्यवहार एवं कार्य असामान्य हो जाते है। मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्ति का जीवन अव्यवस्थित तथा असन्तुलित हो जाता है ऐसा व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में समायोजन नहीं कर पाता। मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्ति जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में असफल रहता है परन्तु समय सामान्य रूप से वह अपनी असफलताओं का जिम्मेदार अपने आप को नहीं स्वीकार करता, ऐसा व्यक्ति अपनी समस्त असफलताओं का दोष अन्य लोगों के सिर मढता है तथा परिस्थितियों को प्रतिकूल कहकर स्वयं को दोष मुक्त करने का प्रयास करता है। मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्ति अपने मुख्य व्यवसाय को न तो अधिक महत्व देता है और न ही उसमें रूचि ही लेता है।

कार्यभार प्रबंधन– अत्यधिक कार्यभार मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। प्रबंधनीय कार्यभार वाले कर्मचारी, काम से अभिभूत कर्मचारियों की तुलना में 27 बेहतर मानसिक स्वास्थ्य की रिपोर्ट करते है।

कार्यस्थल संस्कृति– सकारात्मक कार्यस्थल संस्कृति मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देती है। प्रबंधकों और सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध रखने वाले कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य स्तर 33 अधिक होते है।

कार्यक्षेत्र पर तनाव – हम अनेक कारणों से तनाव का अनुभव कर सकते है।

1. यदि अनुपस्थिति की दर अत्यधिक हो।
2. अपने सहकर्मी आपकी अंर्तक्रिया अथवा अंतवैयक्तिक सम्बन्ध ठीक न हो।
3. संस्थान में सुरक्षा की कमी हो।
4. गुणवत्ता नियंत्रण उचित न हो।
5. कार्य, उलझन, कार्य से असन्तुष्टि, पदोन्नति के अवसर का न होना।
6. संप्रेषण के उचित तरीकों का विकसित न होना।

लक्षणों की पहचान– एकतनाव ग्रसित व्यक्ति अनेक लक्षणों से ग्रसित हो सकता है।

शारीरिक लक्षण	सांवेगिक लक्षण
1. अनिद्राअति सांवेगिक अथवा 2. निरन्तर थकान महसूस करना 3. सिर दर्द 4. त्वचा रोग 5. पाचन सम्बन्धी बीमारियाँ 6. अल्सर 7. भूख न लगना 8. अत्यधिक खाना में कमी। 9. शरीर में दर्द	आक्रमकता अव्यवस्थित रहन-सहन अवधान केद्रण में कमी अवसाद पश्चाताप, असफलता के मनोभावों की उपस्थिति आत्मविश्वास

व्यवहारिक लक्षण:

1. सिगरेट अथवा शराब का अत्यधिक सेवन।
2. चाय कॉफी के सेवन में वद्धि।
3. तम्बाकू का सेवन इत्यादि।

कार्यस्थल पर तनाव के कारण –काम से संबंधित तनाव कई स्त्रोतों से उत्पन्न हो सकता है और तनाव कारक व्यक्तिगत कर्मचारियों, टीम की गतिशीलता, कंपनी की संस्कृति और समग्र उत्पादकता को प्रभावित कर सकते है। दीर्घकालिक तनाव और विशाक्त तनाव नकारात्मक कार्य वातावरण, उच्च टर्नओवर दरों, काम के दौरान उपस्थित न होने और कंपनी के लिए कम दक्षता का कारण बन सकते है।

1. **चुनौती या संलगता का अभाव–** यदि आपको लगता है कि आपके कौशल और प्रतिभा का कम उपयोग किया जा रहा है, तो आप ऊब, असंलगंता और संतुष्टि की कमी से जूझ सकते है।
2. **अस्पष्ट प्रदर्शन अपेक्षाएँ–**जब आपको यह स्पष्ट नहीं होता कि आपसे क्या अपेक्षित है, तो इससे भ्रम, चिंता और तनाव हो सकता है। आपसे जो अपेक्षित है और आप जो करने में सक्षम महसूस करते है, उसके बीच भी बेमेल हो सकता है।
3. **नियंत्रण की कमी–**कार्य प्रक्रियाओं या परिणामों पर कम या कोई नियंत्राण न होने से तनाव का स्तर बढ़ सकता है।
4. **कम वेतन–**ऐसा वेतन जो कार्यभार, अपेक्षित कौशल स्तर या उद्योग मानकों को प्रतिबिंबित नहीं करता, वित्तीय तनाव का कारण बन सकता है, जो कार्यसंबंधी तनाव को और बढ़ा देता है।
5. **अत्यधिक कार्यभार–**लंबे समय तक काम करना, अवास्तविक समय सीमाएँ और लगातार पीछे रहने की भावना आपको परेशान कर सकती है, जिससे थकान, उत्पादकता में कमी स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती है।
6. **विकास के सीमित अवसर–** विकास के कम अवसर आपको अटका हुआ और कम मूल्यवान महसूस करा सकते है, जिससे निराशा और अलगाव पैदा हो सकता है।
7. **अनिश्चितता–**अपनी नौकरी में क्या अपेक्षा की जाये, जैसे कि नौकरी की सुरक्षा या भविष्य की संभावनाएं, यह न जानना तनावपूर्ण हो सकता है।
8. **संघर्ष–**कार्य वातावरण में सहकर्मियों या पर्यवेक्षकों के साथ पारम्परिक संघर्ष बहुत अधिक भावनात्मक स्थान ले सकता है।
9. **समर्थन की कमी–**समर्थन की कमी से आप अलग-अलग और परेशान महसूस कर सकते है, जिससे तनाव का प्रबंधन करना मुश्किल हो जाता है।
10. **कार्य जीवन असंतुलन–**अपने निजी जीवन के साथ व्यावसायिक जिम्मेदारियों को संतुलित करना कठिन हो सकता है।

तनाव से निपटने की रणनीतियाँ– व्यक्ति के लिये उत्तम शारीरिक विकास तथा स्वास्थ्य संबंधी उपायों एवं नियमों का पालन करना आवश्यक है उसी प्रकार मानसिक विकास तथा स्वास्थ्य की रक्षा तथा संवृद्धि के लिये उपायों का ज्ञान व पालन करना अति आवश्यक है।

1. **समस्या केन्द्रित समायोजी उपाय–** इस तरह के उपायों में व्यक्ति तनावपूर्ण परिस्थिति या समस्या का मूल्यांकन करता हैं।

- **नियंत्रण उपाय–** जब व्यक्ति तनावपूर्ण घटना पर नियन्त्रण कायम करने में सफल होता है तो तनाव की गंभीरता स्वत: कम हो जाती है।
- **पूर्वकथन उपाय–** इसके लिये समाधान के अनेकों विकल्प पहले से

खोज कर रखे जाते है।

2. **संवेग केन्द्रित उपाय–** इस तरह के उपाय में व्यक्ति समस्या से उत्पन्न सांवेगिक अनुक्रिया पर ध्यान केन्द्रित करता है।

- **व्यवहारात्मक उपाय–**व्यक्ति खास तरह के व्यवहार करके अपना तनाव दूर करने का प्रयास करता है।
- **संज्ञानात्मक उपाय–**इसमें तनावपूर्ण परिस्थिति का पुर्नमूल्यांकन किया जाता है।

निष्कर्ष– तनाव के कारण शरीर में होने वाले शारीरिक परिवर्तनों से अवगत है। अल्पकालिक और दीर्घकालिक तनाव के आधार पर शरीर में ऐसे परिवर्तनों को मापना आसान है, जैसे कि हृदय गति, चयापचय परिवर्तन, श्वसन पद्धति, त्वचा की समस्याएँ आदि। तनाव से कोर्टिसोल का स्तर बढ़ जाता है, जिसके कारण रोग और बीमारी की अधिक घटनाएँ होती है। इसमें हृदय रोग, संज्ञान संबंधी हानि, टाइप 2 मधुमेह आदि शामिल है। कई अध्ययनों ने कार्यस्थल पर तनाव को अस्थमा, पेट के अल्सर, शराब और तंबाकू के दुरूपयोग और अनिद्रा से भी जोड़ा है।

न केवल शारीरिक परिणाम बल्कि मनोवैज्ञानिक परिणाम भी है जो दीर्घकालिक तनाव के कारण समान रूप से समस्या है। अवसाद और चिन्ता सामान्य मनोवैज्ञानिक विकार है, जो इस सदी की पीढ़ी में विकसित हो रहे है। अवसाद एक ऐसी स्थिति है जब व्यक्ति उदासी और निराशा की अनुभूति करता है। चिंता किसी भी अज्ञात चीज के बारे में आशंका या घबराहट की समान्य स्थिति है। ये दोनों समस्याएँ लंबे समय तक तनाव के कारण मस्तिष्क रसायन विज्ञान में परिवर्तन के कारण होती है। चिंतन भी एक अन्य मनोवैज्ञानिक समस्या है, जो तनाव के कारण होती है। यह पिछली घटनाओं के बारे में सोचना बंद करने और उनके बारे में निरंतर सोचने की असमर्थता है। अतीत के बारे में निरंतर सोचने से भविष्य की मनोदशा प्रभावित हो सकती है। अफवाह तनाव के स्तर में और वृद्धि करती है। यहाँ तक कि निराषा और उत्तेजना भी कार्यस्थल तनाव के सामान्य मनोवैज्ञानिक परिणाम है। लंबे समय तक थकावट और कार्यक्षेत्र में रूचि में कमी से बर्नआउट होता है, जिसके परिणामस्वरूप एक व्यक्ति जिस काम में संलग्न है वह ऊर्जा के निम्न स्तर या नौकरी में असंतोष की भावनाओं के कारण नौकरी की मांगों का सामना करने में सक्षम नहीं होता है।

कार्यस्थल में तनाव को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करना न केवल मानसिक स्वास्थ्य बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है। सही तकनीकों और आदतों को अपनाकर हम न केवल कार्यक्षमता बढ़ा सकते है बल्कि एक स्वस्थ और संतुलित जीवन भी जी सकते है। कार्यस्थल पर तनाव को सही ढंग से प्रबंधित करना न केवल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है, बल्कि कार्यक्षमता और जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार लाता है। तनाव को नियंत्रित करने के लिए जागरूकता, स्वस्थ जीवनशैली और मानसिक संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

कार्यक्षेत्र में तनाव प्रबंधन के सुझाव:

1. **समय प्रबंधन–**कार्यों को प्राथमिकता दें, यथार्थवादी समय सीमाएं निर्धारित करें और बढ़ी परियोजनाओं को छोटे, प्रबंधनीय कार्यों में विभाजित करें। अपने कार्यभार को व्यवस्थित करने में मदद के लिए कैलेंडर का और सूचियों का उपयोग करें।
2. **विश्राम तकनीकें–**तनावपूर्ण स्थितियों में मन को षांत करने के लिए गहरी सांस लेने, प्रगतिशील मांसपेशी विश्राम और निर्देशित कल्पना जैसी तकनीकों का अभ्यास करें।
3. **शारीरिक गतिविधि–**व्यायाम आपके मूड को बेहतर बना सकता है, नींद में सुधार कर सकता है और चिंता, अवसाद के लक्षणों को कम कर सकता है। तनाव को दूर करने और सेहत को बेहतर बनाने के लिए पैदल चलना, दौड़ना, योग या टीम स्पोर्ट्स आजमाएँ।
4. **सामाजिक समर्थन–**तनावपूर्ण समय में भावनात्मक समर्थन और व्यावहारिक मदद के लिए मित्रों, परिवार और सहकर्मियों का एक सहायक नेटवर्क बनाएं और उसे बनाए रखें।
5. **सकारात्मक सोच–**अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने से आपको तनाव से अधिक प्रभावी ढंग से निपटने में मदद मिल सकती है। कतृज्ञता का अभ्यास करें, नकारात्मक विचारों को सकारात्मक विचारों मे बदलें और समस्याओं के बजाय समाधानों पर ध्यान केंन्द्रित करें।
6. **स्पष्ट संचार प्रदान करें–**नियमित प्रतिक्रिया और स्पष्ट अपेक्षाएं अनिश्चितता को कम कर सकती है और आत्मविश्वास का निर्माण कर सकती है।
7. **प्रतिस्पर्धी वेतन प्रदान करें–**उचित वेतन वित्तीय तनाव को कम कर सकता है और मनोबल में सुधार कर सकता है।
8. **कार्यभार की संतुलित करें–**कार्य को पर्याप्त रूप से वितरित करने और उच्च मांगों को प्रबंधित करने के लिए संसाधन उपलब्ध कराने से बर्नआउट को रोका जा सकता है।
9. **विकास के अवसर सृजित करना–**उन्नति के लिए स्पष्ट मार्ग विकसित करना तथा प्रशिक्षण और विकास के विकल्प प्रदान करना कर्मचारियों को प्रेरित और संलग्न कर सकता है, जिससे नौकरी से संतुष्टि में वृद्धि होगी।
10. **सहायक वातावरण का निर्माण करें–**टीमवर्क को प्रोत्साहित करना, सहायता प्रणालियां प्रदान करना तथा सकारात्मक संस्कृति को बढ़ावा देना, कर्मचारियों को मूल्यवान और समर्थित महसूस करने में मदद कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. महेश भर्गव 'शिक्षा मनोविज्ञान' पेज नं. 231–.239
2. श्री जागरन, 'तनाव दूर करने के लिए सोच बदले' 12 जुलाई 2022
3. श्री अरूण कुमार सिंह, उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जावाहर नगर, दिल्ली।
4. श्री आर. डी. सिंह, स्वास्थ्य मनोविज्ञान, जगदम्बा पब्लिशिंग कम्पनी, दरियागंज, नई दिल्ली।
5. डॉ. मयूरनाथ रेड्डी, मानसिक रोगों की चिकित्सा, 06 फरवरी 2023

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय ज्ञान परम्परा में स्त्री विमर्श

श्रीमती अनीता अग्रवाल*

* पूनमचंद गुप्ता वोकेशनल महाविद्यालय, खंडवा(म.प्र.) भारत

शोध सारांश – स्त्री विमर्श समकालीन साहित्य की महान उपलब्धी है। यह महिलाओ को मिले लोकतान्त्रिक अधिकार शिक्षा और स्वावलम्बन का परिणाम है, इसका श्रेय सिर्फ उन्ही को जाता है। इस विमर्श में नारी जीवन के उन पक्षों को प्रस्तुत किया है जिनकी चर्चा से साहित्य और समाज विज्ञान में परहेज किया जाता था। स्त्री विमर्श सिर्फ भारत तक ही सीमित नही है अपितु पूरी दुनिया इसके दायरे में है जहाँ स्त्रियां अपनी पीड़ा और समस्या को ही नही व्यक्त कर रही बल्कि अपनी शक्ति की समीक्षा भी कर रही है। भारतीय चिंतन को नई धारा देने में स्त्री विमर्श ने अपनी विशिष्ट भूमिका निभाई है।काल और परिस्थितयों द्वारा उत्पन्न चुनौतियों को समकालीन स्त्री शक्ति के अवसरों में बदल दिया है। वर्तमान सन्दर्भ में आधुनिक स्त्री ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सफलता के दम पर अपनी पहचान बनाई है। स्त्री की बदलती सोच परिवार, समाज, धर्म, राजनीति, राष्ट्र और संस्कृति पर नये सिरे से सोचने को प्रेरित किया है। अंग्रेजी साहित्य में भी भारतीय लेखकों द्वारा स्त्री विमर्श पर विचार किया गया है। स्त्री विमर्श एक ऐसा विमर्श है जो जाति, धर्म, वर्ग, वंश, प्रीत और देश आदि से अलग हटकर है, जहां स्त्री अपने उऊपर हो रहे अत्याचार, शोषण, उत्पीडन,उपेक्षा आदि का विरोध करती है। स्त्री विमर्श को पश्चिम से आई एक अवधारणा के रूप में देखा और विचार किया जाता है। स्त्री के स्वभाव, मन और उसकी सम्वेदनाओ को समझने के लिए स्त्री विमर्श एक महत्वपूर्ण दृष्टि है। बदलते हुए समाज में स्त्री के पारंपरिक मंडन को तोड़ने की पहल स्त्री विमर्श है ताकि स्त्री को समानता का अधिकार सम्मान अस्तित्व और स्वतंत्रता प्राप्त हो सके।

प्रस्तावना – स्त्री विमर्श एक वैश्विक विचारधारा है जिसने पूरे विश्व की स्त्रियों का संघर्ष अपने पितृसत्तात्मक समाज के विरोध में देखने को मिलता है। स्त्री विमर्श एक प्रकार का साहित्यिक आंदोलन है जिसके केंद्र में समानता का अधिकार, स्त्री अस्मिता और मुक्ति का सवाल है। यह सब स्त्री को तभी प्राप्त हो सकता है जब पुरुषों की मानसिकता को बदला जाए। स्त्री विमर्श चेतना और जागृति का विषय है। स्त्री की विविध समस्याएं उनके अपने सवाल हैं और उनका अपना अधिकार है। यह सब स्त्री विमर्श के अंतर्गत शामिल है। समय के साथ परिस्थितयों में आए बदलाव के कारण स्त्री की सोच, स्वभाव, स्थिति में बदलाव आना ही स्त्री विमर्श है। स्त्री विमर्श का एक मात्र उद्देश स्त्री को उसकी गुलामी से अवगत करना है तथा उसे उसके अधिकारों और कर्तव्य तथा समाज में परिवार में उसकी क्या स्थिति है इससे अवगत कराना है। स्त्री विमर्श को अंग्रेजी में फेमिनिज्म बोला जाता है। शुरूआत में हिंदी में इसके लिए नारीवाद शब्द प्रचार में रहा। नारीवाद लैंगिक समानता के लिए प्रयास करता है और महिलाओं के जीवन को प्रभावित करने वाली समस्याओं को सुधारने में मदद करता है। पश्चिमी विचारको ने नारी मुक्ति के लिए जो विचार प्रस्तुत किए हैं उन्ही से स्त्री विमर्श का उदय हुआ। यह माना जाने लगा कि स्त्री ने अपना पिंजरा तोड़ डाला, स्त्री की वेशभूषा तथा देह मुक्ति के सवाल तेजी से उठे और धीरे से स्त्री मुक्ति का रूपांतरण देह मुक्ति में हो गया। यह समझा जाने लगा कि यही स्त्री सशक्तिकरण है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में स्त्री विमर्श –स्त्री चिंतन उतना ही प्राचीन है जितना हमारा साहित्य। फ्रेडरिक एंजल्स की पुस्तक 'परिवार, निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति' के अनुसार व्यक्ति संपत्ति के विकास के साथ स्त्री के शोषण का आरंभ होता है। जिस प्रकार का रिश्ता मजदूरों का पूंजीपतियों से है कुछ उसी प्रकार का रिश्ता स्त्रियों का पुरूषों से है। इस संबंध के क्रूर विरोधाभास आज भी महसूस किये जा रहें है।

जॉन स्टुअर्ट मिल की रचना के अनुसार स्त्री और पुरुष के बीच शरीरिक विषमता जरूर है पर बौद्धिक क्षमता में दोनों बराबर है। वैसे भी विषमता को असमानता मनाना अमानविय है। सिमोन द वोउवार, 'द सेकंड सेक्स' में अकारण नहीं लिखती है कि 'स्त्री पैदा नहीं होती, स्त्री बना दी जाती है'।स्त्री विमर्श समकालीन साहित्य की महान उपलब्धि है यह महिलाओं को मिले लोकतांत्रिक अधिकार, शिक्षा और स्वावलंबन का परिनाम है। इसका श्रेय केवल उन्ही को जाता है। इस विमर्श ने नारी जीवन के उन पक्षों को प्रस्तुत किया है जिनकी चर्चा से साहित्य और समाज विज्ञान में परहेज किया जाता था। स्त्री विमर्श सिर्फ भारत तक ही सीमित नहीं है अपितु पूरी दुनिया इसके दायरे में है। यहां स्त्रिया अपनी पीड़ा और समस्या को ही नहीं व्यक्त कर रही है बल्किअपनी शक्ति की समीक्षा भी कर रही है। स्त्रीवादी विमर्श से संबंधी आदर्शों का मूल्य यही रहता है कि कानूनी अधिकारों का आधार लिंग ना बने। आधुनिक स्त्रीवादी विमर्श की मुख्य आलोचना हमेशा से यही रही है कि इसके सिद्धांत एवं दर्शन मुख्य रूप से पश्चिमी मुल्यो एवं दर्शन पर आधारित रहे हैं। नारीवाद राजनीतिक आंदोलन का एक सामाजिक सिद्धांत है जो स्त्रियों के अनुभवों से जनित है। हालांकि मूल रूप से यह सामाजिक संबंधों से अनुप्रेरित है लेकिन कहीं स्त्रीवादी विचारक का मुख्य जोर लैंगिक समानता और महिलाओं के अधिकार इत्यादी पर ज्यादा बल देते हैं।

स्त्री विमर्श का आरम्भ– नारी विमर्श का प्रारम्भ कब हुआ इसके सम्बन्ध में विदवानों में सुनिशचित एक मतता नहीं है। कुछ लोगों के अनुसार इसका

प्रारम्भ 19वीं शताब्दी में हुआ जब पश्चिम में स्त्रियों के माताधिकार और पाश्चात्य संस्कृति में स्त्रियोंके योगदान पर चर्चा होने लगी थी। लेकिन वास्तविकता यह है कि यह विमर्श 20वीं शताब्दी की शुरुआत है।20वीं शताब्दी में भी कुछ लोग इसका आरंभ फ्रांसिसी लेखक सिमोन द बुआ (1949) के प्रकाशन वर्ष से शुरू हुआ और कुछ मैरी एल्मन की पुस्तक 'थिंकिंग अबाउट वीमेन' 1968 के प्रकाशन वर्ष से। लेकिन अधिकाँश विद्वान इस तरह के किसी वर्ष विशेष को स्त्री विमर्श का प्रस्थान बिंदु मनाना उचित नहीं समझते, क्योंकि 20वीं शताब्दी में ही इस पहले भी स्त्री की अलग पहचान उसके स्वतंत्र अस्तित्व और उसके अधिकारों की श्रृंखलाओं को उठाया जाने लगा था। वर्जीनिया वुल्फ ने अपनी पुस्तक 'ऐ रूम आफ वन्स ओन' 1929 में यूरोप और अमेरिका के स्त्री विमर्श को ही नहीं,भारतीय स्त्री विमर्श को भी प्रभावित किया है। हिंदी की घोषित नारीवादी लेखिका प्रभा खेतान भी इस पुस्तक से प्रभावित हुई है। यूरोप और अमेरिका में नारी वाद में 20वीं शताब्दी के आखिरी दशक में खूब जोर पकड़ा।

अंग्रेजी साहित्य में स्त्री विमर्श – अंग्रेजी में लिखने वाले भारतीय लेखकों को कई पीढ़ियों के प्रयासों के पश्चात अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सफलता मिली है, खासकर सलमान रुश्दी द्वारा मिडनाइट्स चिल्ड्रन 1981 के प्रकाशन के बाद से, और अंग्रेजी में भारतीय उपन्यास को आखिरकार एक महत्वपूर्ण साहित्यिक प्रयास के रूप में स्वीकार किया गया है। धीरे-धीरे भारतीय महिला लेखकों ने अंग्रेजी साहित्य में लेखन करना शुरू कर दिया। जिसका मुख्य श्रेय 1997 में द गॉड ऑफ स्मॉल थिंग्स के लिए बुकर पुरस्कार जीतने वाले अरुंधति रॉय को जाता है। परंपरागत रूप से, पुरुषप्रधान होने के कारणस्त्रियों को कम महत्व दिया गया।अंग्रेजी में भारतीय महिला लेखक भी पुरुषो की तुलना में आगे बढ़ रही थी। पितृसत्तात्मक धारणाओं के कारण भारतीय महिला लेखकों के काम को कम आंका गया है।

इसके अतिरिक्त, अंग्रेजी में भारतीय महिला लेखक भी पुरुषो की तुलना में आगे बढ़ रही थी। चूँकि अंग्रेजी में लेखन केवल बौद्धिक, समृद्ध, शिक्षित वर्ग के लेखकों के लिए उपलब्ध है, इसलिए ऐसा माना जाता था कि लेखक और उनके लेखन कार्य सामाजिक स्तर से संबंधित हैं, और भारतीय जीवन की वास्तविकता से कटे हुए हैं ।अधिकार उपन्यास दुखी ग्रहणी की मन की व्यथा के बारे में बताते हैं। महिलाओं के उत्पीडन के चित्रों को सही माना जाता है। गीतों और दंतकथाओं के माध्यम से कहानी कहने की मौखिक परम्परा की शुरुआत करने वाली महिलाएँ ही थीं जब धीर-धीरे समाज में साक्षरता फैलने लगी तों इन कहानियों को नाटक व उपन्यास में रूपांतरित किया गया। अंग्रेजी में लिखे गए भारतीय साहित्य की मात्रा विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में लिखे गए साहित्य से कम है, और यह समय की एक छोटी सी सीमा को कवर करता है, जिसकी शुरुआत अंग्रेजी भाषा और शिक्षा के प्रसार के साथ ही हुई। लेकिन पिछले दो दशकों में अंग्रेजी में भारतीय महिलाओं के लेखन में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है, इस अवधि का साहित्य भारत और अन्य जगहों पर प्रकाशित हुआ है।

भारतीय महिलाओं ने पारंपरिक रूप से सौंपी गई भूमिकाओं के आगे समर्पण करके और खुद को हावी होने देकर पितृसत्तात्मक मूल्य प्रणाली की सर्वोच्चता को सचेत रूप से स्वीकार कर लिया है। लेकिन बढ़ती शिक्षा, बेहतर नौकरी के अवसर और अधिकारों और विशेषाधिकारों के बारे में जागरूकता ने लगातार बदलाव की शुरुआत की है लेखिकाएँ ज्यादातर पश्चिमी शिक्षा प्राप्त हैं। मध्यवर्गीय लेखिका महिलाएँ जो अपने लेखन में बाल-विवाह, दहेज, महिलाओं की शिक्षा पर प्रतिबंध, तयशुदा विवाह, सती प्रथा और जबरन विधवा विवाह जैसी दमनकारी संस्थाओं में फँसी उच्च जाति और वर्ग की पारंपरिक हिंदू महिलाओं की दुर्दशा के प्रति अपना असंतोष व्यक्त करती हैं। उत्तर-औपनिवेशिक भारत में महिला लेखकों ने महिलाओं को बदलते सामाजिक परिदृश्य के संदर्भ में रखते हुए, विशेष रूप से ऐसी महिलाओं की मानसिकता पर ध्यान केंद्रित करते हुए, अपना खुद का साहित्य रचा है।

अंग्रेजी में भारतीय कथा साहित्य में विषय वस्तु के रूप में महिलाएं कोई नई बात नहीं है, लेकिन उपन्यासकारों का दृष्टिकोण निश्चित रूप से अलग है। 1960के दशक के उपन्यास में भारतीय कथा साहित्य में महिलाओं को विभिन्न गुणों वाली आदर्श स्त्री के रूप में चित्रित किया गया था, जिसमें विद्रोह का कोई स्थान नहीं थी, जबकि बाद के उपन्यासों में महिलाओं को शिक्षित और अपने अधिकारों और विशेषाधिकारों के प्रति जागरूक दिखाया गया है जो समाज में अपने उचित स्थान की मांग कर रही हैं कमला मार्कंडेय, अनीता देसाई, शशि देशपांडे, शोभा डे, भारती मुखर्जी और कुछ अन्य लेखकों ने शुरू में अपने लेखन में किसी भी तरह के नारीवादी पूर्वाग्रह से इनकार किया है, लेकिन गहराई से विश्लेषण करने पर एक मजबूत नारीवादी इरादे का पता चलता है।क्योंकि महिलाओं के मुद्दे उनके कथानक का मुख्य विषय हैं अरुंधति रॉय ने 'द गॉड ऑफ स्मॉल थिंग्स' में अलगाव, उत्पीड़न, अवसाद, हताशा और समामेलन के केंद्र से पूरे सांस्कृतिक परिदृश्य की कल्पना की है। गीता हरिहरन, नमिता गोखले, अनीता नायर और मंजू कपूर नामक भारतीय महिला उपन्यासकारों की नई पीढ़ी ने बहुत आलोचनात्मक ध्यान आकर्षित किया है। महिलाओं के बीच बढ़ती साक्षरता के बावजूद और उन्हें अधिक संवैधानिक अधिकार दिए जाने के बावजूद और न केवल सामान्य कल्याण के लिए बहुत बड़ा योगदान देने के बावजूद, बल्कि पारंपरिक रूप से सौंपी गई घरेलू जिम्मेदारियों की उपेक्षा किए बिना परिवार और समाज में एक प्रमुख सहायक भूमिका निभाने के बावजूद, लिंग-केंद्रित समाज समुदाय में उनके रचनात्मक और सकारात्मक योगदान की सराहना करने में विफल रहता है। साहित्य के द्वारा हम किसी भी मुद्दे को उजागर तथा स्थिति को दोहरा सकते है।स्वतंत्रता के बाद से भारत में महिलाओ का रचनात्मक लेखन कार्य निरंतर बढ़ रहा है फिर भी पुरुष प्रधान भारतीय सहित्य ने जान बुझकर उनकी भूमिका को नजरंदाज कर दिया है। हाल के वर्षों में सिमोन डी ब्यूवोइर सेकेंड सेक्स, 1952 बेट्टी फ्रीडन फेमिनिन मिस्टिक, 1963और केट मिलेट सेक्सुअल पॉलिटिक्स, 1970जैसे लेखकों द्वारा प्रस्तुत पश्चिमी नारीवादी सिद्धांतों का प्रभाव देखा गया है। इन प्रभावों के तहत भारतीय महिला लेखकों ने अतीत के साहित्यिक और सामाजिक मानदंड को तोड़ने का सफलतापूर्वक प्रयास किया है। वे अपने पात्रों की मानसिकता में गहराई से उतरते हैं और नैतिकता की एक नई अवधारणा की शुरुआत भी करते हैं।

कविता में भारतीय महिलाएँ–स्वतंत्रता के बाद भारतीय अंग्रेजी कविता ने कई जबरदस्त विकास देखे हैं। महिला काव्य स्वरों का उदय उनमें से सबसे महत्वपूर्ण है। महिला कविता, वास्तव में, एक पत्नी और माँ के रूप में महिला की पारंपरिक भूमिका के खिलाफ एक विद्रोह है।भारतीय महिला कवियों द्वारा पश्चिमी नारीवादी सिद्धान्तो को अंग्रेजी की भारतीय कविताओ में अपनाया।महिला कवियों ने प्रतिरोध और आत्मविश्वास दोनों को व्यक्त करना शुरू कर दिया। तोरु दत्ता (1856-77) अंग्रेजी में लिखने वाली

पहली भारतीय महिला कवि थीं और उनकी रचना में भारतीय नारीत्व के आदर्श उदाहरण, जैसे सीता और सावित्री, महिलाओं को पीड़ित, आत्म-बलिदान की भूमिकाओं में दिखाती हैं।

स्वतंत्रता के बाद बड़ी संख्या में भारतीय महिला कवि परिदृश्य में उभरी हैं और आज भी लिखना जारी रखती हैं। वे प्रेम में हताशा, निराशा और अकेलेपन की भावना को व्यक्त करने में पुरुषों की तुलना में अधिक तीव्र, प्रामाणिक और जरूरी हैं। ऐसी महिला कवियों में कमला दास, लीला रे, मोनिका वर्मा, गौरी देशपांडे, यूनिस डीसूजा, ममता कालिया, सुनीति नामजोशी, मीना अलेक्जेंडर, रोशन अल्काजी हमारा ध्यान आकर्षित करने लायक हैं। कमला दास ने एक जोरदार और मार्मिक स्त्री स्वीकारोक्ति कविता की शुरुआत की। अंग्रेजी में लिखने वाली सभी भारतीय महिला कवियों में कमला दास (1934-2009) का स्थान सबसे ऊपर है। वे स्त्री-पुरुष संबंधों के विषय पर आधारित एक सशक्त और मार्मिक स्त्री-कविता के लिए जानी जाती हैं।महिला लेखिकाएँ सहनशील, आत्म-बलिदान करने वाली महिलाओं के पारंपरिक चित्रण से हटकर पहचान की तलाश करने वाली संघर्षशील महिला पात्रों की ओर बढ़ी हैं, जिन्हें अब केवल उनकी पीड़ित स्थिति के संदर्भ में चित्रित और परिभाषित नहीं किया जाता है। बल्कि उनकी वीर गाथाओं से साहित्य को सजाया जाता है।पहले के उपन्यासों के विपरीत, 1980 के दशक के बाद की महिला पात्र खुद को मुखर करती हैं और विवाह और मातृत्व को चुनौती देती हैं। हाल के लेखकों ने महिलाओं के जीवन को एक आदर्श तक सीमित करने के बजाय, महिलाओं की विविधता और प्रत्येक महिला के भीतर की विविधता दोनों को दर्शाया है।

अमृता प्रीतम के अनुसार-जब कोई पुरुष महिलाओं की शक्ति को नकारता है तो वह अपने ही अवचेतन को नकार रहा होता है ऐसी कई कहानियाँ हैं जो कागजों में नहीं हैं, बल्कि औरतों के शरीर और उनके अंदर लिखी हुई हैं।यह पंक्ति अमृता प्रीतम के लेखों में देखने को मिलती है, पश्चिमी विचारों ने नारी मुक्ति के लिए जो विचार प्रस्तुत किये उन्हीं से स्त्री विमर्श का उदय हुआ।स्त्री की वेशभूषा तथा देहमुक्ति के सवाल तेजी से उठे और धीरे से स्त्री मुक्ति का रूपांतरणदेह मुक्ति में हो गया। यह समझा जाने लगा कि यही स्त्री सशक्तिकरण है अपने शुरूआती विकास में स्त्री लेखन एक निश्चित सन्देश और सन्दर्भ में रूढ़ हो गयासिमोन द बौबा ने कहा था- औरत पैदा नहीं होती बनाई जाती है ।कृपा बाई सत्यानंद अंग्रेजी में उपन्यास लिखने वाली पहली भारतीय महिला थी। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से हिंदू स्त्री के जीवन की दुर्दशा बयान की थी ।कृपा बाई ने जनाना मिशन स्कूल मेंजाकर महिलाओं को पढाया और मुस्लिम लड़कियों के लिये एक स्कूल भी खोला। कृपा बाई स्त्री के प्रति जागरूक थी और लगातार स्थानीय अखबारों और पत्रिकाओं में लिखती थी। पुरुष प्रधान देश होने के कारण भारतीय पुरुष एक बुद्धिमान स्त्री बर्दाश्त नहीं कर सकता क्योंकि वह स्त्री को अपने से ऊपर देख नहीं सकता था । समय के साथ साथ महिलाओं की स्थिति बदल रही है साथ ही महिला चिंतन और लेखन धारा भी बदल रही है। स्त्री चिंतन इतना ही प्राचीन है जितना हमारा साहित्य है। जॉन स्टुअर्ट मिल की रचना डी सब्जेक्शण ऑफ वूमेन के अनुसार 'स्त्री और पुरुष बौद्धिक क्षमता में दोनों बराबर हैं'। सेकेंड सेक्स के अनुसार 'स्त्री पैदा नही होती स्त्री बना दी जाती है'। हिंदी प्रसिद्ध लेखिका प्रभा खेतान का साहित्य स्त्री जीवन के संघर्ष, मनोकामना, उसकी इच्छा ,पीड़ा एवं मानसिकता का जीवंत उदाहरन है। पुरुष प्रधान संस्कृति रुढ़ी परंपरा का संघर्ष करने वाले नारी का वर्णन उनके लेखों में मिलता है प्रभा खेतान में अपनी रचनाओं में नारीयों को भावनाओं में बहता हुआ ना बता कर और उसके समग्र खड़े होने की मांग है ताकि उनका मानसिक सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक विकास हो विकास हो सके।

निष्कर्ष- लेख महिलाओं के अधिकारों का समाज में उनकी स्थिति पर आधारित है भारतीय महिला लेखको द्धार समाज को महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरूक किया गया है समाज में स्त्री और पुरुष दो गाड़ी के पहिये हैं जब दोनों ठीक बाराबारी में चलेंगे तभी समाज भी परिवार की तरक्की होगी यह विमर्श स्त्री को पुरानी सोच से निकल कर आगे मार्ग प्रशस्त करने का कार्य कर रहा है स्त्री विमर्श के प्रश्नों ने समाज को एक नई सोच प्रदान की है जिसके समाज में एक नई ऊर्जा उत्पन्न हो रही है जो समानता पर आधारित है और स्त्री विमर्श के मध्यम से स्त्री के मन को आत्मविश्वास धर्म मनोबल प्रदान किया गया है। निष्कर्ष रूप में यहीं कहा जाएगा कि अब भारतीय नारीअबला नहीं रही सबला हो चुकी है क्योंकि यह वह शक्ति है जिसके आगे देवता भी नतमस्तक हुए हैं तो पुरुष क्या चीज है, नारी के बिना परिवार, समाज, राष्ट्र की उन्नति नहीं हो सकती है। नारी कोमल है, कमजोर नहीं शक्ति का नाम ही नारी है ।कमजोर और कोमल समझकर जिसको सबने देखा है, वह कमजोर नहीं शक्तिशाली है और सभी गुणों की अवतार है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. अभिषेक कुमार गौड़ हिंदी विभाग सागर।
2. आदमी की निगाह में औरत,राजेंद्र यादवराजकमल प्रकाशन 2021 पृष्ठ 15
3. मेरी प्रिय कहानिया,अमृता प्रीतम राजपाल प्रकाशन 2014 पृष्ठ15
4. मोनोग्राफी,रघुवीर सहाय प्रथम संस्करण 2014 पृष्ठ63
5. आधी जमीन,सरोज चौबे अक्तूबर 2001 पृष्ठ79
6. जनसत्ता,चन्द्रभान सिंह यादव जनवरी 11, 2021
7. संध्या तिवारी, अंग्रेजी में उत्तर आधुनिक भारतीय महिला लेखिकाए: आलोचनात्मक चिंताए और रुझान, रिसर्च इंडिया प्रेस ।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

उषा प्रियवंदा के उपन्यासों में नारी जीवन के विविध आयाम

डॉ. अर्चना बापना*

* सहा. प्राध्यापक, एडवास महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – नारी, समाज का एक अभिन्न अंग है। 'नारी के बिना सृष्टि की कल्पना नहीं की जा सकती' है। यही कारण है कि अपने जन्मकाल से ही हिन्दी उपन्यास नारी जीवन और उसकी विभिन्न समस्याओं के प्रति सजग रहा है। प्रेमचन्द पूर्व के उपन्यासों में प्राचीन आदर्शो के प्रति गहरी निष्ठा होने के कारण उपन्यासकारों ने उन्ही आदर्शो के सहारे नारी का चित्रण किया और उन आदर्शो के परिप्रेक्ष्य में ही नारी, जीवन की सार्थकता को दिखाने का प्रयास किया।

प्रेमचन्द के आदर्शो–मुख यथार्थवाद उपन्यासों में परिवार में पुरूष को प्रधान मानते हुए भी वे नारी को समान अधिकार देने के पक्ष में थे। नारी शिक्षा की आवश्यकता मानते हुए भी वे नारी के स्वतंत्र अर्थोपार्जन को उचित नहीं समझते थे और सामाजिक, राजनीतिक कार्यो में नारी की रूचि को श्रेयस्कर माना पर भी पाश्चात्य नारी जीवन को गलत मानते थे।

जैनेन्द्र ने नारी–जीवन को कुछ अधिक गहराई से समझने का प्रयास किया। उन्होने नारी जीवन की विविधता का चित्रण किया। यशपाल ने राजनीतिक दल में काम करने वाली नारी व समाज में नारी के विभिन्न बंधनों का रूप उपस्थित किया। इस समय के उपन्यासों में नारी के प्रेम की समस्या, वैवाहिक असंगति की समस्या और घर बाहर की समस्या पर लेखकों ने दृष्टि– पात किया।

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में पुरूष मन का जितना मनोविश्लेषण मिलता है उतना नारीमन का नहीं मिलता। अधिकांश उपन्यासों में पुरूष के परिपेक्ष्य में ही नारी के मनोविज्ञान का अध्ययन किया गया है। जिसके कारण नारी–मन के बहुत से सूक्ष्म पहलू अछूते रह गये है। नारी के मनोविज्ञान का चित्रण भी कहीं–कहीं ही दिखाई देता है।

कुछ महिला उपन्यासकारों ने नारी जीवन को चित्रित करने का प्रयास किया परन्तु उन्होने भी नारी का केवल स्वप्नशील और भावुक रूप में ही देखा।

उपन्यासकार उषा प्रियवंदा ने नारी जीवन का गहरा यथार्थ और सटीक चित्रण प्रभावशाली ढ़ंग से करने की चेष्टा की है। प्रेमचन्द के होरी, अज्ञेय शेखर की तरह ही उनके उपन्यासों की राधिका, सुषमा और अनुका ये पात्र पाठक पर छाप छोडते हैं।

नारी के हर पहलु और हर विशेषता का चित्रण उषा–प्रियवंदा के उपन्यासों में दिखाई देता है।

आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी जीवन के एक और पहलु पर भी प्रकाश नहीं डाला गया है। सन् 1935 के आर्थिक संकट से ही भारतीय नारी अर्थोपार्जन की ओर ध्यान देती आई है और सन्1950 तक हम अनेक पुरूषोचित धन्धों में नारी को प्रवेश करते पाते है। क्लर्क, अध्यापिका, अभिनेत्री, लेड़ी डॉक्टर, लेडी वकील, राजनीतिक कार्यकर्ता, मंत्रालय, दूतावास में भी नारी की प्रतिष्ठा हो चुकी है। परन्तु नारी के इन अनेक रूपों में सें उपन्यासकार लेखक ने केवल दो–तीन की ओर ही ध्यान दिया है इस प्रकार के व्यवसाय अपनाने से उनके पारिवारिक, सामाजिक जीवन में जो परिवर्तन आता है, जिन कठिनाईयों का उसे सामना करना पड़ता है उनका कोई उल्लेख हिन्दी उपन्यासकारों ने नहीं किया है। परन्तु उषा–प्रियवंदा के तीनों उपन्यासों में इस प्रकार की कई समस्याओं का कठिनाईयों का प्रशंसनीय प्रयास हमें देखने को मिलता है।

इसी प्रकार स्वावलम्बिनी नारी के अस्वाभाविक जीवन का और विवाह को अपनी स्वतंत्रता का अपहरण समझ कर उससे दूर रहने वाली नारी का चित्रण हमें हिन्दी उपन्यासों में नहीं मिलता। उषा प्रियवंदा के तीनों उपन्यासों की नायिकाए कुछ हद तक ऐसी ही है, जो स्वावलम्बी तो है और पुरूष विशेष को केवल उतना ही महत्व देती है, जहॉ तक वे उनके विकास में सहायक होते हैं। अन्यथा ये नारियॉ पुरूष से दूर रखकर ही अपना जीवन जीने को प्रस्तुत दिखाई देती है।

स्वालम्बन की इस दौड़ में इसी प्रयत्न में उसे अपने परिवार से अनेक प्रकार का संघर्ष करना पड़ता है उसे प्राचीन संस्कार एवं समाज की रूढिवादिता से जुझना पड़ता था। समाज की संकीर्ण मानसिकता से उसे लोहा लेना पड़ता था। उपन्यासकारों ने उसके संघर्ष को अनदेखा किया था। साथ ही उपन्यासकारों की दृष्टि भी नारी को परिवार व पति से मिलने वाली यातनाओं की और नहीं गई। न उस तेजस्विनी नारी का चित्रण किया गया है जो इन सारी बाधाओं और संकटों को पार करती हुई अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेती है।

नारी जीवन की उपरोक्त बहुत सारी कमियों को उपा प्रियंवदा के उपन्यासों के कारण दूर हो गई है उषा जी ने नारी के पिछडेपन की निन्दा की जगह पुरूष के पिछडेपन का वर्णन किया।

उषा जी ने अपने उपन्यास पचपन खम्भे, लाल दीवारे, रूकेगी नहीं राधिका एवं शेषयात्रा इन तीनों उपन्यासों में नारी जीवन का जो विविधतापूर्ण और सूक्ष्म चित्रण किया है, उसे हम निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत कर सकते है।

1. भारतीय और पाश्चात्य संस्कारों से प्रभावित नारियॉ।
2. उच्च वर्ग की नारियॉ।

3. उच्च मध्य वर्ग की नारियॉ।
4. मध्य वर्ग की नारियॉ।
5. निम्न वर्ग की नारियॉ।
6. किशोर वर्ग की नारियॉ।

पाश्चात्य और भारतीय संस्कारों से प्रभावित नारियॉ।

1. सुषमा।
2. राधिका।
3. अनुका।

सुषमा मध्य वर्ग की एक शिक्षित युवती है। घर की बड़ी बेटी होने के नाते, पिता की बिमारी में वह घर की जिम्मेदारी संभालती है। दिल्ली के एक कॉलेज में वह अपनी नौकरी एवं घर की जिम्मेदारी निभाने का कार्य पूरी ईमानदारी से करती है। इस प्रकार सुषमा जानती है कि वह अर्थ प्राप्ति का एक साधन मात्र बनी हुई है। क्योंकि पिता उसकी शादी नहीं करना चाहते थे। जिम्मेदारी होने के साथ-साथ सुषमा भी चाहती है कि उसकी शादी हो, उसका घर हो परन्तु घर के जिम्मेदारी के कारण वह शादी नहीं कर सकती। सुषमा एक भारतीय नारी है। इसलिए वह पहले दूसरों के सुख का विचार करती है। कृष्णा मौसी जब उसके विवाह की बात छेडती है तो सुषमा कहती है जीवन में बहुत महत्वपूर्ण काम है, सिर्फ विवाह ही तो नहीं ओर देशों में देखिए बिना शादी किए ही औरते कैसे मजे से रहती है।

नील नामक एक युवक को मित्र बना लेती है वह सुषमा के इस अकेले पन और दु:ख से उभारने का एक सहारा उसे मिल जाता है। नील से सुषमा को सच्चे प्यार है परंतु वह यह खुले तौर पर स्वीकार नहीं कर सकती, अपनी इसी विवशता से उसे चिढ़ है। नील के बिना उसका जीवन अर्थहीन होगा यह जानकर भी वह उससे दूर जाने का निश्चय कर लेती है। सुषमा के मानसिक अर्न्तद्वन्द्व, कर्तव्य, भावना के संघर्ष अशन्ति अतृष्ति आदि मनोभावों के परिस्थिति सापेक्ष मनोवैज्ञानिक चित्र अंकित करने में लेखिका विशेष रूप से सफल हुई है। सुषमा अपने समाज की अनेक अदृष्य में मर्यादाओं और नीति नियमों की चौखट में बंधी है। उसका मानस और अंतकरण उसे कुछ और करने को कहता है तो उसके बाह्य परिवेश की मांग कुछ और ही है।

अत: सुषमा उन भारतीय नारियों का प्रतिनिधित्व करती है, जो आज के आधुनिक युग में भारतीय और पाश्चात्य संस्कारों से प्रभावित होकर, द्वन्द्वावस्था के कारण अपना सुख और चैन खो बैठती है। न वो पूरी तरह से भारतीय जीवन जी सकती है न पूर्णत: पाश्चात्य जीवन अपना सकती है और इस बीच की अनिर्णित और अत्यन्त संघर्षम्य अवस्था में उपन्यास की नायिका जीवन जीने के लिए मजबूर होती है।

राधिका – 'रूकेगी नहीं राधिका' उपन्यास की नायिका राधिका अपने विचारों के अनुसार जीवन जीने वाली उच्चवर्ग की एक स्वतंत्र व्यक्तित्व की युवती है वह मेधावी है तथा उसमें आत्मविश्वास पूर्ण गरिमा है प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली वह एक आकर्षक युवती है। अपनी जिद के कारण पिता से झगड़कर पीटरसन संवाददाता के साथ विदेश जाकर राधिका शिकागों विश्वद्यिालय में प्रवेश लेती है। अपने घर की बिगड़ी हुयी असहनीय परिस्थिति से उबरने का राधिका, यह एक अच्छा मार्ग ढूंढ निकालती है। राधिका के लिए विदेश यात्रा एक स्वप्न था, वह एक महत्वाकांक्षी युवती होने के कारण उसे यह स्थान वास्तविकता में ले जाता है।

अन्यत्र कहीं रहने की व्यवस्था न हो सकने के कारण राधिका करीबन एक साल तक डेनियल के साथ ही रह लेती है। राधिका पर भारतीय संस्कारों की छाप गहरी होने के कारण विदेशी संस्कृति की अनेक बातें उसे खटकती है। जब वह विदेश यात्रा से लौटकर पहली बार अपने पापा से मिलने जाती है तो रास्ते में उसे ऊँट मिल जाते हैं तो वह मन ही मन कामना करती है कि उसका पापा से मिलना ठीक तरीके से हो जाए। राधिका को इस बात की निरर्थकता मालूम है परंतु वह बात को दिल से पूरी तरह निकाल भी नहीं सकती। पिता के मिलने पर उन्हें आदर पूर्वक नमस्कार करना, मामा के घर अतिथि धर्म को जानकर कुशलक्षेम पूछना, उनके बच्चों को आशीष देना चाहना। इन सभी छोटी-छोटी बातों से राधिका पर हुए गहरे भारतीय संस्कारों का दर्षन होता है। इसके विपरीत राधिका पर पाश्चात्प आधुनिक संस्कारों का भी पर्याप्त प्रभाव है जैसे विदेश में पढना, साथ में रहना आदि।

अत: राधिका उन नारियों का प्रतिनिधित्व करती है, जो संस्कारों से भारतीय तथा शिक्षा एवं विचारों से पाश्चात्य होती है। संस्कारों एवं विचारों के परस्पर भिन्नत्व के कारण ऐसी नारियों का जीवन एक पहेली बन जाती है। ये किसी भी परिस्थिति एवं परिवेश में संतोष का अनुभव नहीं कर सकती। उनका भविष्य अनिर्णित एवं प्रषनचिन्हित ही रह जाता है।

अनुका

'शेषयात्रा' उपन्यास की नायिका अनुका मध्यवर्ग में पली हुई एक साधारण युवती है बचपन में ही माता-पिता केचल बसने के कारण वह नैनिहाल में पली है। वह स्वभाव से अत्यन्त नर्म-मिजाज और सहनशील है। उसकी शादी डॉ. प्रणव कुमार के साथ तय होती है। एक घरौदे से निकलकर अपने पति के साथ चकाचौध वाली विदेशी दुनिया में अनुका चली जाती है। जीवन के नये सुख और खुशियॉ प्रदान करने वाले पति के प्रति अनुका कृतज्ञता से उसके पैरों पर समर्पित हो जाती है। अनुका की हर बात प्रणव के संकेतों पर चलती है। वह सखी सम्मेलन की सदस्य है परन्तु वहॉ की औरतों के साथ कभी वह खरीदारी के लिए भी नहीं जाती। प्रणव की सलाह के बिना वह कोई भी निर्णय नहीं लेती। बचपन से ही अनुका के व्यक्तित्व को किसी ने अलग रूप से स्वीकार नहीं किया। वह हमेशा किसी न किसी संदर्भ में पहचानी गयी है। आदर्शो को ग्रहण करने वाली वह एक कठपुतली मात्र रह गयी है। अपने स्वत्व को जानने का उसे कभी मौका ही नहीं मिला। अपने जीवन से संबधित निर्णय भी उसने खुद नहीं लिये।

अनुका अपने सौदर्य से भी बेखबर है प्रवासी भारतीयों पर डाक्यूमेंटरी फिल्म बनाने के लिए जब उसे चुना जाता है तब वह उत्तेजना से कॉप उठती है। एक ओर जब वह परिणाम के भय से आंतकित है। तभी दूसरी और अपनी जिंदगी के अत्यधिक आनन्द की चरमसीमा के अनुभव से रोमाचिंत है। घर आये हुऐ बड़े-बड़े मेहमानों से प्रशंसा सुनकर वह शर्म से लाल हो जाती है। उन्हें जलपान देते हुए वह एक सहज स्वाभाविक कुशल गृहस्थिन की तरह लगती है। फिल्म की डायरेक्टर चंद्रिका राणा जब उसे पूछती है कि क्या वह सिर्फ यही काम करती है। तो अनु को यह प्रश्न बमगोले की तरह लगता है। अनु ने इस पर कभी सोचा ही नहीं है। उस समय प्रणव ही आगे बढ़कर सफाई पेश करते हुए कहता है मुझे कैरियर गर्ल नहीं चाहिए थी। मैं चाहता था सरल स्नेहशीला बीबी, जिसके साथ बैठकर मुझे सुख-चैन मिले।

उसी रात से प्रणव के बर्ताव में लाक्षणिक फर्क आता है। उसके व्यवहार में रूखापन आ जाता है। वह सनकी बन जाता है। डॉक्टरी छोड़ के वह फिल्मे बनाने की ठान लेता है। इस निर्णय से अनु चिंताग्रस्त हो जाती है। परन्तु कुछ कहने-सुनने की उसकी हिमत नहीं होती। अनु कों प्यार और विश्वास

के बदले दुनियॉ के ऐशोआराम देने से ही अपनी पति की जिम्मेदारी खत्म होती है ऐसा प्रणव को लगता है। पति के बदले हुए तेवर के सामने अनु विवश है। अनु पति के स्वभाव को जानकर सब कुछ चुपचाप सहना ही उचित समझती है। पति पर बोझ न बनने तथा उन्हे कष्ट न देने का वह प्रयत्न करती है। एक बार पार्टी में प्रणव जब सबके सामने अनु को एक बंधन के रूप में अपनी प्रगति का रोड़ा कह देता है तब अनु अपमान से जल जाती है। पति के कठिन शब्दों से उसका कोमल हृदय घायल हो जाता है। अनु पति के व्यवहार और सनकीपन का अर्थ जानना चाहती है, पर असफल रहती है एक बार प्रणव से झगडा हो जाने पर वह अनु से कहता है, छोड दो मुझे अलग हो जाओं। मुझसे अब तुम्हें कुछ भी संतोष नहीं मिलता।

फिर भी अनु अपने बिगडे हुए दाम्पत्य जीवन के बारे में कुछ नहीं कहती।

अनुका मूलत: एक पारंपरिक और पुराने ख्यालों की भारतीय नारी है। भारतीय संस्कारों की जकड़ में वह आबद्ध है। परन्तु धीरे-धीरे वह अपने को उससे मुक्त करती है। इस प्रकार एक आदर्ष भारतीय नारी है, एक आधुनिक से पाश्चात्य नारी की ओर अनुका की यह यात्रा है।

उच्चवर्ग की नारियॉ- उषाजी ने अपने उपन्यासों में प्रधानता आधुनिक नारियों का चित्रण किया है। आधुनिक युग की उच्च वर्ग की नारियों का रहन-सहन आचार-विचार प्रकृति एवं स्वभाव का यथार्थ वर्णन करने में उषा जी सफल हुई है।

उषाजी ने उच्चवर्ग की जिन नारियों का चित्रण किया है वे अपने वर्ग की प्रतिनिधि पात्र के रूप में है एवं दिखाई देती है। उषाजी के उपन्यासों में निम्नलिखित प्रमुख पात्रों का चित्रण हुआ है। पहला उपन्यास पचपन खम्बे, लाल दिवारे में कौशल्याजी, नील की मॉ, नील की बहन, विद्या, भाभी, विजया, नयनतारा, कारिन, गोगी, अंजलि, अक्षय, के अफसर की पत्नी, क्रिस्त, डॉ. विभाषहा, कीरत, चन्द्रिका राणा, रोजलिन हैं।

कौशल्याजी:- कौशल्याजी सुषमा की कृष्णा मौसी की सहेली है। वही नील की बुआ है। सुषमा की साड़ियॉ कौशल्याजी नील के हाथों होस्टल पहुचाती है वह खुद मेहमान बनकर आती है। कौशल्या जी एक आधुनिका है। वहा सुस्वभावी औरत है। पति के साथ क्लब जाने जैसा आधुनिक रिवाज निभाते हुए भी उसकी संस्कृति प्रतिभा उसके बर्ताव से झलकती है।

नील की मॉ:- नील की मॉ अपने उच्च वर्ग की हैसियत एवं प्रतिष्ठा से रहने वाली एक कुलीन स्त्री है। वह अपने खानदान तथा रहन सहन आदि के बारे में बहुत सतर्क है। नील की मॉ नील की शादी अपने जैसे ही बड़े खानदान में करना चाहती है। सुषमा से प्यार होने के कारण नील जब शादी के लिए तैयार नहीं होता तब कृष्णा मौसी से झगड़ती है कि उनकी भानजी के पीछे नील शादी नहीं कर रहा है। इस प्रकार नील की मॉ संकीर्ण विचारों की तथा अपने ही घेरे में रहने वाली एक अमीर औरत है।

नील की बहन:- नील की बहन एक नवयौवना किशोरी है। सुषमा के प्रति उसके मन में उत्सुकता कुढन तथा खिंचवा का भाव है। अपने भाई को फुसलाने वाली सुषमा की बदनामी करने में वह मॉ का साथ देती है।

विद्या:- विद्या 'रूकोगी नहीं राधा' उपन्यास का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पात्र है, जो अपने प्रभावशील व्यक्तित्व से पाठकों पर एक अनूठी छाप छोडती है। विद्या राधिका की विमाता है। राधिका कभी विद्या को समझने की कोशिश नहीं करती। विद्या और राधिका के पिता के बीच भी मनमुटाव है इसीलिए वे विद्या से अलग अकेले गंगापार वाली कोठी में रहने लगते है। इससे विद्या अपनी उपेक्षा और अपमान सह नहीं सकती। जब वह जिंदगी से उब जाती है तो एक रात नींद की गोलियॉ खाकर अत्महत्या कर होती है। इस उपन्यास में विद्या एक उच्च वर्गीय शिक्षित स्वाभिमानी नारी का प्रतिनिधित्व करती है।

राधिका की भाभी:- राधिका की भाभी अपने अमीर पिता की एक इकलौती संतान है। उसके पति ने शादी के बाद उसके पिता का सारा कारोबार संभाला है। बेशुमार धन और दौलत का असीम अहंकार उसमें भरा हुआ है। अपनी विदेश यात्रा से लौटी युवा नन्द की शादी हो जाए ऐसी भाभी की इच्छा है। इसलिए वह उसे क्लब ले जाती है।

विजया:- एक सुंदर युवती है। वह मनीष की वागदत्ता है। मनीष के द्वारा अस्वीकार किए जाने पर वह बेहद दु:खी हो जाती है। वह अमीर और ऐयाशी युवक के मनोरंजन का साधन बनी हुई नारी के रूप में विजया को हम पाते है ऐसी नारियॉ जो धनवान युवकों की शान और सुख प्राप्त कर उन्हे भूला देते है। ऐसी ही धोखा खाई हुई आहत नारी का प्रतिनिधित्व विजया करती है।

नयन तारा:- एक अत्यन्त सुंदर युवती है। उसकी सुंदरता किसी प्राचीन मंदिर के स्तम्भ पर खुदी यक्षिणी की बराबरी करती है। मनीष उसकी सुंदरता से प्रभावित है और उसी के पीछे अपनी बागदत्ता विजया से सम्बन्ध विच्छेद कर देता है। मनीष जैसे धनवान युवकों के मनोविनोद का साधन बन जाने वाली नारियों में सें नयनतारा भी एक है।

कारिन:- यह राधिका के मित्र मनीष की सहेली और छात्रा भी है। कारिन एक खूबसूरत युवती है वह किसी भी सुंदर युवक से झट से प्रभावित हो जाती है। कारिन आर्ट इन्स्ट्रीटयूट के रिसर्च ट्रेनिंग में काम कर रही है, जिसे मनीष ही एक अधिकारी के रूप में संभाल रहा है कारिन मनीष को चाहती है। वह मनीष को अपना समझती है। कारिन मनीष के साथ शादी करना चाहती है।

गोगी:- कीरत की लडकी तथा एक अमीर घर की बेटी है। वह उद्धण्ड और लाड प्यार से बिगडी हुई है। उसके बर्ताव की तरह उसके कपड़ें भी अत्यन्त वीभत्स है। गोगी ने कास्मेटिशन का कोर्स किया है वह और उसकी मां दोनो ब्यूटी ट्रटमेंट ले रही है। अपनी मुख-मुद्रा का ख्याल रखना, मेकअप की कई परतें चेहरे पर चढाना ये उनका रोजमर्रा का काम है। गोगी को अगर लडका पसन्द आए तो वे उनकी शादी करा देने। परंतु गोगी का अपने युवा दोस्तो के साथ मजे लुटना और घुमना रहना इन बातों से माता-पिता अनजान है। पाश्चात्य संस्कारों में पली और बिगड़ी हुई गोगी एक साधारण प्रतिनिधि पात्र है।

डॉ. विभा शहा:- डॉ. शहा की पत्नी है। विदेश में रहने वाली यह एक उच्च वर्गीय औरत है। उसकी प्रकृति उच्छखल औरत की तरह है। वह डॉ. प्रणव में बड़ी दिलचस्पी रखती है। विभा का आचार-विचार व्यवहार अत्यन्त मुक्त है। वह नव विवाहित प्रणव की बॉहे पकडकर उसे घर ले जाती है। अनु के मौन रहने पर वह उसे टोकती है। प्रणव उसे कहता है कि अब विभा ही उसे अपनी तरह सब कुछ सीखा दें। विभा को इस बात में अपना सम्मान और प्रशंसा नजर आती है। विभा को अपनी डॉक्टरी पर घमंड है।

चन्द्रिका राणा:- चन्द्रिका राणा न्यूयार्क में टी.बी. स्टेशन में प्रोग्रामों की प्रोडयूसर है, चन्द्रिका पूरी तरह से पाश्चात्य ढंग की औरत है, जो लगातार सिगरेट और बीच-बीच में बोतल से बीयर के घूंट पीती रहती है। अनु की अतिथेया बनकर सबको जलपान देते हुए देखकर चन्द्रिका व्यंग्य से मुस्कुराती है और अनु से पूछती है कि क्या अनु हमेशा सिर्फ यही काम करती है तव अनु निरूत्तर हो जाती है, प्रणव और चन्द्रिका दोंनों एक दूसरे के प्रति

आकर्षित है, इसी कारण प्रणव को अनु के साथ का जीवन लंचर और बेमानी लगने लगता है।

अंजलि:- अंजलि यह राधिका की परिचित मित्र की बडी बहन है। वह एक समाज सुधारक है वह चाहती है कि उसका भाई ऐसी ही किसी कन्या से विवाह करके उसका उद्धार करे जो बहुत बेचारी और निरूपाय है। सामाजिक सुधार के लिए प्रयास करने वाली नारियों का प्रतिनिधि पात्र अंजलि है। परंतु अंजलि ने समाज सुधार के जो उपाय ढूंढे है वे अनुचित एवं असफल होते हुए दिखाई देते है।

अफसर की पत्नि:- अक्षय के अफसर की पत्नि को भारतीय तिब्बतियों में बड़ी रूचि है। वह उनके लिए स्कूल चलाती है जिसमें उन्हे ट्रेनिंग देकर नौकरी करने योग्य बनाया जाता है। उसके घर में ऐसे ही एक गरीब तिब्बती को रसोईये के रूप में रखा है। अपनी अमीरी और अपने समय का सदुपयेग करके समाज के कल्याण के लिए प्रयत्न करने वाली विवेकशील नारियों का प्रतिनिधित्व अक्षय के अफसर पत्नि करती है।

क्रिस्त:- क्रिस्त का असली नाम कृष्णा है। मनीष एक बहुत बडी पार्टी आयोजित करता है। इस पार्टी में क्रिस्त अपने सौदंर्य, श्रेष्ठता और संपत्ति का प्रदर्शन करने के लिए ही आती है। वह अपने मद्यपान की आदत के बारे में चढाचढाकर बातें कर रही है। उसे कोरी शराब पसंद है और उसकी इस पसंद पर उसे गर्व है। क्रिस्त का अंहकारी स्वभाव तथा उसकी निम्न मनोवृत्ति का दर्शन होता है। क्रिस्त का संभाषण भी बडा कृत्रिम और नाटकीय है।

कीरत:- सखी सम्मेलन नामक एक विदेशी संगठन की सदस्या है। उसके पति धनराज ने घर में बार लगवाया है। एक अमीर स्त्री की सारी विशेषताएँ उसमें है। बाहर और पार्टियों में उसका रूप चकाचौंध करा देने वाला होता है। तो घर में वह एकदम सीधी-सादी और अलग दिखाई देती है।

रोजलिन:- अनु की पडोसिन है। यह संवेदनशील दयालु और उदार नारी है जो अनु की कठिन और असहाय स्थिति में अनु की पूछताछ करती है अनु का दिल बहलाने के लिए वह अनु को सहैलियों के पास चली जाने के लिए कहती है। उषा जी ने अपने उपन्यासों में हर वर्ग की नारियों के जीवन का चित्रण किया है। समाज में उच्च मध्यवर्ग ही कुछ नारियों में अपनी आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थान एवं दर्जे को लेकर अत्यधिक आत्म सम्मान की भावना होती है। घमंड से दूर रहती है जिनका आचरण स्वाभाविक होता है।

उच्च मध्यवर्ग की नारियाँ:-

उषा जी द्वारा चित्रित उच्च मध्य वर्ग के प्रमुख पात्र निम्ननुसार है।

1.प्रिंसिपल 2. रमा 3. दिवाकर 4. प्रेमा 5. अनिला 6. नीना 7. दिव्या 8. दिव्या की मॉ 9. नीरजा 10. ज्योत्स्मा पटेल 11. नमिता 12. डौली दीदी

प्रिंसिपल:- सुषमा के कालेज की प्रिंसिपल एक बुजुर्ग, गंभीर महिला है सुषमा के काम से वह संतुष्ट है। सुषमा के प्रति उसके मन में सहज स्नेह एवं सद्भावना है। सुषमा के बारे में ऐसी वैसी बातें सुनकर उन्हें गहरा धक्का पहुंचता है। सुषमा को वे एक गंभीर जिम्मेदार टीचर बार्डन समझती है। सुषमा प्रिंसिपल के प्रति आदर का भाव रखती है। प्रिंसिपल अपनी जिम्मेदारी पूरी ईमानदारी से निभाती है।

रमा:- रमा यह राधिका की सहपाठिनी है। रमा राधिका की विमाता विघा की छोटी बहन है। वह एक मुखर और बर्हिमुख प्रवृति की नारी है। रमा राधिका को सीधे स्पष्ट शब्दों में कहती है। न जाने कहॉ-कहॉ का सैर-सपाटा, जाने किस-किस घाट का पानी पीकर तुम आई हो। राधिका के पास रमा को बताने के लिए बहुत-सी बातें होगी ऐसे संभाषण से असभ्यता ही झलकती है।

दिवाकर:- दिवाकर ने मैकमिल युनिवर्सिटी फिजिक्स विषय में डाक्टरेट की है। असंतुष्ट जीवन की त्रुटियों और अभावों से परेशान दिवाकर को दिवाकर की बीबी अपने देश के लिए त्याग करने की बाते सीखाती है।

प्रेमा:- प्रेमा राधिका की मकान मालिकन है। वह एक साधारण गृहस्थीन का प्रतिनिधित्व प्रेमा करती है। प्रेमा एक व्यवहार कुशल औरत है इसीलिए वह राधिका के सामने अपने मकान की तारिफ करती है। वह वहां की अनेक असुविधाओं को सुविधा साबित कर देती है।

अनिला:- राधिका के मकान मालिक एवं अक्षय के मित्र शंकर की बडी बेटी है। वह बीस-इक्कीस बरस की युवती है। वह अक्षय की ओर आकर्षित है। और उससे मुग्ध प्यार करती है। वह सजने संवारने को अतिरिक्त महत्व देती है।

नीना:- नीना राधिका के मकान मालिक की बेटी है। वह कॉलेज में बीए. में पढती है। नीना अल्हड है। वह जोर-जोर से बातें करती रहती है। उसका आचरण और उसकी बातें सहज और अक्रत्रिम है। वह राधिका के विदेश जीवन के बारे में वह कौतहुल भरे प्रश्न करती है। खासकर टेलीवीजन और फिल्मों के विषय में उस ज्यादा दिलचस्पी है। उसके मन है कि अगर मजे की जिंदगी हो तो वह कभी मेहनत से नहीं घबराएगी। नीना को ऐशो आराम और सुविधापूर्ण जीवन पसंद है।

दिव्या:- दिव्या अनु की बचपन की सहेली है। यह उच्च मध्यवर्ग के परिवार की लडकी है। दिव्या की मॉ फैशन बुल औरत है। दिव्या का बचपन बडे से बंगले में फुलवारी, कुत्तों और नौकर चाकरों तथा भाई बहनों के बीच रहने वाली अमीर लडकी है। एम.ए. करते-करते दिव्या की शादी जयन्त से हो जाती है। और दोंनों साथ-साथ आगे पढने के लिए विदेश चले जाते है। इस परिवर्तन से दिव्या बदल जाती है। आत्म विश्वास आचरण का खुलापन, सहज मुस्कान और बर्ताव का सीधापन उसके स्वभाव की महत्वपूर्ण विशेषताएं बन जाती है।

नीरजा:- सखी सम्मेलन की सदस्या है। नीरजा ने दूसरी शादी कर ली है और शादी के दस महीने बाद उसे बेटा हुआ है। वह अपने बेटे का जन्मोत्सव बडे धूमधाम से मनाती है। वह बहुत बड़ी पार्टी का आयोजन करके अपनी सम्पति का प्रदर्शन करती है। नीरजा खुद पढ़ी लिखी जिम्मेदार पद पर नौकरी करने वाल स्वतंत्र व्यक्तित्व की स्त्री है।

ज्योत्स्ना:- एक अधेड़ उम्र की बुजूर्ग स्त्री है जो अपने पति के साथ कैलिफोर्निया में रह रही है। वह अनु और प्रणव से परिचित है। प्रणव को जब वह चन्द्रिका राणा के साथ देखती है तो उसे दु:ख होता है कि अनु इन सब बातों से बेखबर है। अनु को इस बात की खबर करा देना ज्योत्स्मा अपना कर्तव्य समझती है। ज्योत्सना एक जिम्मेदार स्त्री है। वह पुराने ख्यालों की है। अत: दूसरों की भलाई के लिए हमेशा तत्पर रहती है।

निम्न वर्ग की नारियॉ:- उषा जी ने अपने उपन्यासों में ज्यादातर आधुनिक उच्च मध्यवर्ग की नारियों का ही चित्रण किया है। अत: निम्नवर्ग नारियों का चित्रण स्वाभाविक तौर पर बहुत कम हुआ है। प्रसंग कहीं-कहीं निम्न वर्ग की नारियों का चित्रण मिलता है। निम्न वर्ग की इन प्रतिनिधि नारी पात्रों से उनके जीवन की झलक दिखाई देती है ये प्रमुख पात्र है।

1. **मौरी**
2. **देकी**

उषा प्रियंवदा उन कथाकारों में सें एक है। जिन्होंने आधुनिक जीवन की उब छटपटाहट संत्रास और अकेलेपन की अनुभूति के सार को पहचान कर अपने रचनाओं में व्यक्त किया है। उच्च वर्ग के साथ–साथ उन्होने मध्य वर्ग की नारियॉ के जीवन की विभिन्न प्रकार की सामाजिक धार्मिक संस्कृतिक समस्याओं को भी स्त्री चेतना की दृष्टि से बहुत ही सारगर्भित अभिव्यक्ति दी है। भारतीय मध्यवर्गीय परिवार अपनी कन्या का विवाह प्रवासी से कराकर बहुत खुश होते है परन्तु जब अनु का मोहभंग तब होता है जब अमेरिका आने का सौभाग्य दुर्भाग्य में परिणित होता प्रतीत होता है।

भारतीय मध्यवर्गीय परिवार बेहतर अवसर की खोज में जीवन से प्रभावित होकर प्रवासी भारतीयों से अपनी कन्याओं का विवाह करा देने पर स्वंय को बहुत सौभाग्यशाली समझने लगते है परन्तु विदेश जाने के बाद शुरू होता है संघर्ष और मोहभंग का अटूट सिलसिला। आज का व्यक्ति नई परिस्थिति में स्वयं से टूटते हुए जिन्दगी से जूझते हुए आर्थिक संकट से संघर्ष कर रहा है। स्त्री अस्मिता को लेकर बाहरी और भीतरी मोर्चे का अत: संघर्ष लम्बे समय तक चला और इसे सामाजिक साहित्यिक विमर्श का स्वाभाविक हिस्सा उषा जी ने बनाया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. डॉ. प्रमिला कपूर– भारत में विवाह और कामकाजी महिला पृष्ठ. 4
2. उषा प्रियंवदा– पचपन खंभे लाल दीवारें उपन्यास
3. उषा प्रियंवदा– रूकोगी नहीं राधिका उपन्यास
4. उषा प्रियंवदा– शेष यात्रा उपन्यास

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

रावजोधा की प्रमुख उपलब्धियाँ

डॉ. सुमित मेहता*

* सहायक आचार्य, राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर (राज.) भारत

प्रस्तावना – राजस्थान के इतिहासमें ही नहीं अपितु भारतीय इतिहास में भी जोधपुर राज्य का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। अपनी वीरता, शौर्य, स्वामिभक्ति और बलिदान के लिए विख्यात जोधपुर ने राजस्थान के इतिहास को एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया है। जोधपुर के राठौड़ नरेशों ने अपने शौर्य और बलिदान से पश्चिमी राजस्थान में अपनी सीमा का निरन्तर विस्तार किया। प्रारम्भिक राठौड़ इतिहास में लगभग सभी शासकों को युद्ध में अपनी जान गवानी पड़ी। राव जोधा द्वारा जोधपुर दुर्ग की स्थापना किये जाने के पश्चात् राठौड़ों को एक सुरक्षित स्थान मिल गया।

राव जोधा को ही राठौड़ साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक एवं राठौड़ साम्राज्य को निश्चित स्वरूप प्रदान करने वाला माना जाता है।(1)महाराणा मोकल की हत्या के पश्चात् राव जोधा के पिता राव रणमल ने चित्तौड़ को ही अपना निवास स्थान बनाया था। अनेकों शत्रुओं से घिरे होने एवं अल्पव्यस्क होने के कारण(2) मेवाड़ के महाराणा कुम्भा ने भी मारवाड़ की प्रशासनिक व्यवस्था की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। राव रणमल का पुत्र जोधा भी चित्तौड़ दुर्ग की तलहटी के महलों में रहता था।(3)राव रणमल की हत्या के बाद राव जोधा के सम्मुख अनेकों कठिनाईयां थी। मारवाड़ के सभी प्रदेशों पर अलग-अलग वंशज शासन कर रहे थे। सीवाना पर जैतमालोत, नागौर पर खानजादा, जैतारण पर सिंधल राठौड़ आदि।

राव रणमल की मृत्यु की सूचना प्राप्त होते ही राव जोधा लगभग 700 साथियों(4)के साथ मंडौर की ओर रवाना हो गये। रेउजी के अनुसार जोधा की सेना की प्रथम मुठभेड़ चित्तौड़ के रावत चूंडा की सेना से हुई, जो पहले से ही उनका पीछा कर रही थी। ओझाजी के मतानुसार प्रथम युद्ध कपासन नामक स्थान पर हुआ। रावत चूंडा के पास अत्यधिक सैनिक थे एवं इस युद्ध में जोधा के लगभग 200 सैनिक वीरगति को प्राप्त हो गये। अत: जोधा की सेना अवसर पाकर युद्धभूमि से निकल गई।

मार्ग में जोधा की सेना ने अनेकों युद्धों का सामना किया। अत: सोमेश्वर पँहुचतें-पँहुचतें उसके पास केवल 250 सैनिक ही बचे।(5) जिनका उद्देश्य राव जोधा को सकुशल मंडोर तक पंहुचाना था। सोमेश्वर में पीछा करती हुई मेवाड़ की सेना के साथ जोधा की सेना का भीषण युद्ध हुआ। इस युद्ध में जोधा के लगभग सभी सैनिक मारे गये(6)किन्तु जोधा को सकुशल मंडौर पंहुचा दिया गया। जोधा के चचेरे भाई बरजांग भींवोत को बंदी बना लिया गया।

मंडोर में भी सुरक्षित महसूस न करने के कारण जोधा जांगलू की तरफ निकल गये तथा वहां पर काहुनी नामक गाँव में ठहरे। चित्तौड़ की सेना ने मंडोर पर अपना अधिकार कर लिया।राव जोधा की सूचना प्राप्त होते ही मेवाड़ की सेना ने काहूनी पर आक्रमण कर दिया। अत: जोधा को काहुनी से भी भागना पड़ा। इसके बाद जोधा इधर-उधर भटकता रहा और धीरे-धीरे उसने अपनी सैनिक शक्ति में वृद्धि कर ली।

जोधा का चचेरा भाई बरजांग, जो कि मेवाड़ की कैद में था, कैद से निकल भागा। उसने गागरोन के स्वामी खीचीं-चौहान चाचिगदेव की कन्या से विवाह कर लिया और यहां से पर्याप्त आर्थिक और सैनिक सहायता प्राप्त कर जोधा के पास पँहुचा। पर्याप्त सैन्य बल हो जाने के उपरान्त भी राव जोधा के पास सैन्य बल का अभाव था। अत: राव जोधा ने,सेतरावा के रावत लूणा जिनके पास पर्याप्त घोडे थे, से सहायता मांगी। रावत लूणा की पत्नी जोधा की मौसी थी। रावत लूणा ने तो घोडे देने से इन्कार कर दिया। किन्तु अपनी मौसी के सहयोग से उसको 140 घोडों की सहायता प्राप्त हो गई। पर्याप्त सैन्य बल इकट्ठा होने के बाद राव जोधा ने मंडौर पर आक्रमण करने का निश्चय किया। उसने अपने विश्वासपात्र मंगलिया काला को दुर्ग की स्थिति का पता लगाने हेतु भेजा एवं स्वयं मंडौर से थोडी दूरी पर अपनी सेना सहित रूक गया। मंगलिया से दुर्ग की स्थिति का पता लगा जोधा ने अर्धरात्रि में दुर्ग पर आक्रमण कर दिया। मेवाड़ी सेना के प्रमुख योद्धा मारे गये और मंडोर दुर्ग पर राव जोधा का अधिकार हो गया।(7) इस तरह से राव जोधा ने मंडोर में अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली। उसके बाद जोधा ने मारवाड़ में स्थापित मेवाड़ की अन्य सैनिक चौकियों पर भी आक्रमण कर दिये। सबसे पहले जोधा ने चौकडी पर आक्रमण किया। जहां पर मेवाड़ के राणा की ओर से जोधा का चचेरा भाई राघवदेव सहसमलोत को नियुक्त किया हुआ था। युद्ध के बाद राघवदेव भाग खड़ा हुआ और चौकड़ी पर जोधा का अधिकार हो गया। उसके बाद उसने कोसाना पर अधिकार किया और सोजत के निकट धणला गांव में मेवाड़ी सेना को पराजित किया। इस तरह से राव जोधा ने मारवाड़ को मेवाड़ी आधिपत्य से मुक्त करवाया।

मंडोर पर आधिपत्य के बाद राव जोधा ने महाराणा कुंभा से अपने पिता की हत्या का बदला लेने की योजना बनाई। इधर महाराणा कुंभा भी मारवाड़ में मेवाडी सेना के परास्त होने एवं अपने कई योद्धाओं एवं सामतों के मारे जाने के कारण क्रुद्ध था। रावत चूंडा भी राव जोधा का प्रबल विरोधी था। जोधा की एक विशाल सेना मारवाड़ पर आक्रमण के उद्देश्य से पाली की तरफ रवाना हुई। अश्वों का अभाव होने के कारण मारवाड़ी सेना बैलगाडियों में सवार होकर ही युद्ध के लिए निकल गई।उधर मेवाड़ की भी एक विशाल सेना मारवाड़ की ओर रवाना हुई। किन्तु जब यह ज्ञात हुआ कि जोधा की

सेना बैलगाड़ियों में आ रही है और वे युद्ध से कदापि पीछे नहीं हटेगें तो मेवाड़ी सेना में आतंक छा गया और वह बिना युद्ध किये ही पाली से वापस लौट गई।

इससे राव जोधा की सेना बहुत ही ज्यादा उत्साहित हो गई और उन्होनें मेवाड़ी भूमि में प्रवेश कर चित्तौड़ दुर्ग के द्वार जला दिये। चित्तौड़ आक्रमण से लौटते समय सेना मेवाड़ के सेठ पदमचंद को बंदी बना लाई। यह सेठ बहुत सारा धन भेंट कर कैद से मुक्त हुआ। सेठ के धन से मेहरानगढ़ किले के निर्माण में भी सहायता मिली। किले के पास सेठ की स्मृति में पदमसागर तालाब बनवाया गया।

सांखला नापा के कहने पर महाराणा कुंभा ने भी राव जोधा से विरोध नहीं बढाया। महाराणा ने राजकुमार ऊदा व सांखला नापा को भेजकर राव जोधा से संधि कर ली। संधि की शर्त के अनुसार आंवले के पेड़ों वाली भूमि महाराणा के और बबूल के पेडों वाली भूमि राव जोधा के अधिकार मे रहेगी।(8)1458 ई. में मंडोर के किले में राव जोधा का राज्याभिषेक हुआ। राव जोधा के नाम पर मंडोर के पास ही जोधेलाव तालाब का निर्माण करवाया गया।(9)1459 में राव जोधा ने एक पहाड़ी पर सुदृढ दुर्ग का निर्माण करवाया। 1516 ई. में राव जोधा ने अपनी माता कोडमदेसर के नाम पर एक तालाब का निर्माण करवाया तथा एक कीर्ति स्तम्भ की स्थापना की।

राव जोधा द्वारा जैतारण के सींधलों पर भी आक्रमण किया गया। सींधलों के द्वारा राव जोधा के चचेरे भाई आसकरण सत्तावत की हत्या कर दी गई थी। नरसिंह सींधल जो कि जैतारण का स्वामी थी उसकी मृत्यु होने के पश्चात् उसका पुत्र मेघा वंहा का स्वामी था। राव जोधा ने अपने पुत्र दूदा को जैतारण भेजा। दोनो के बीच में द्वन्द युद्ध हुआ जिसमें मेघा मारा गया।(10)

छापर-द्रोणमुख के मोंहिलों पर हुई विजय राव जोधा की महत्वपूर्ण विजयों में से थी। राव जोधा भी अब नवीन प्रदेशों को विजित करना चाहता था। छापर के स्वामी अजीतसिंह मोहिल, जो कि राव जोधा का संबंधी भी था, ने मारवाड़ में उपद्रव मचा रखे थे। अत: अजीत सिंह व जोधा के बीच गगराणा में भंयकर युद्ध हुआ जिसमें अजीतसिंह मारा गया। कुछ समय पश्चात् जोधा ने छापर के स्वामी बच्छराज, जो कि अजीतसिंह का भतीजा था, पर भी आक्रमण कर दिया। बच्छराज की मृत्यु हो गई और छापर-द्रोणमुख पर जोधा का अधिकार हो गया। जोधा ने वहां बीदा का नियुक्त कर दिया। लोदी वंश के सामंत सारंगखां और राव जोधा के छोटे भाई कांधल के बीच में युद्ध हुआ जिसमें कांधल की मृत्यु हो गई। कांधल की मृत्यु की सूचना जोधा के पुत्र बीका ने राव जोधा को दी। अपने भाई की मृत्यु का बदला लेने के लिए राव जोधा ने बीका की सेना के साथ मिलकर झांसल नामक स्थान पर सारंगखां से युद्ध किया।युद्ध में सांरगखां की मृत्यु हो गई। इस युद्ध के पश्चात् जोधा का साम्राज्य विस्तार हिसार तक हो गया। भारतीय सत्ता में महत्वपूर्ण माने जाने वाले लोदी वंश के सामंत को पराजित करने के बाद जोधा की गणना उत्तरी भारत के महत्वपूर्ण शासकों में होने लगी।

राव जोधा के पुत्र बीका द्वारा ही बीकानेर की स्थापना की गई। राव दूदा और वरसिंग द्वारा मेडते की स्थापना की गई। मारवाड़ में दृढ़ रूप से सामंत प्रथा की स्थापना भी जोधा के शासन काल में ही मानी जाती है। महाराणा कुंभा की हत्या कर ऊदा मेवाड़ का स्वामी बन गया किन्तु राव जोधा के शौर्य और प्रताप को देख उसने राव जोधा को सांभर व अजमेर दे दिये। अत्यन्त प्रतापी होने के साथ जोधा धार्मिक भी थे। उन्होनें गया व प्रयाग की यात्राएं की और गया में लगने वाले करों को समाप्त कराने का प्रयास किया।

उनकी एक रानी हाडी जसमादेवी ने किले पास रानीसर तालाब और दूसरी रानी चांद कुंवरी ने चांद बावड़ी का निर्माण करवाया। राव जोधा को राठौड़ साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना गया। अपने शासन काल में उन्होनें राठौड़ साम्राज्य की सीमाओं में अत्यधिक वृद्धि की। मंडोर राज्य को एक विशाल साम्राज्य में परिवर्तित करने के साथ-साथ मारवाड़ में सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित की। 1545 ई को 73 वर्ष की आयु में जोधपुर में राव जोधा का देहान्त हो गया। उनके स्थापित किये हुए साम्राज्य के बल पर ही उनकी पीढ़ियों ने अनेक वर्षों तक शासन किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. दशरथ शर्मा, लेक्चर्स ऑन राजपूत हिस्ट्री एण्ड कल्चर, पृ. 85
2. श्यामलदास, वीर विनोद, भाग-1, पृ. 315
3. मारवाड़ रा परगनां री विगत, भाग-1, पृ. 29
4. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, जोधपुर राज्य का इतिहास, भाग-1, पृ. 236
5. मारवाड़ रा परगनां री विगत, भाग-1, पृ. 31
6. नैणसी री ख्यात, भाग-2, पृ. 119
7. मारवाड़ रा परगनां री विगत, भाग-1, पृ. 34
8. मारवाड़ रा परगनां री विगत, भाग-1, पृ. 36
9. पं. विश्वेश्वरनाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, भाग-1, पृ. 91
10. नैणसी री ख्यात, भाग-2, पृ. 131-133

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवैधानिक दृष्टिकोण

विजय लक्ष्मी जोशी *

* सहायक प्राध्यापक, शासकिय विधि महाविद्यालय, शाजापुर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – पर्यावरण और प्राणी एक दूसरे पर आश्रित है। यही कारण हैं कि भारतीय चिंतन में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा उतनी ही प्राचीन हैं जितना मानव जाति का ईतिहास। भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के महत्व को समझने के लिए इसे प्राचीन काल से ही जीवन दर्शन के साथ पिरोह कर रखा गया हैं। भारतीय वेदों ने प्राकृतिक शक्तियों को देवी देवताओं का रूप देकर पर्यावरण संरक्षण को ऊँचा दर्जा दिया है। हमारें यहॉ शास्त्रों में कहा गया हैं–

यावत् भूमंडलं धत्ते, सशैलवन काननम्।
तावत्तिष्ठति में दिन्यां संतति: पुत्र पौत्रिकी।।

अर्थात् जब तक धरती पर पर्वत और हरे–भरे वन रहेंगें, तब तक हम और हमारी भावी पीढियॉ जीवित और खुशहाल रहेगी। आधुनिक जीवन शैली और वैश्वीकरण ने पर्यावरण को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है। औद्योगीकरण के कारण पर्यावरण प्रदूषण लगातार बढ़ रहा हैं, पर्यावरण प्रदूषण से निपटने एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए कई कानून बनाए जा चुके है, किन्तु प्रस्तुत शोध पत्र में उनका वर्णन न करके केवल भारतीय संविधान द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए किए गए प्रावधानों का संक्षिप्त में वर्णन कर पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवैधानिक दृष्टिकोण को समझाया गया है।

शब्द कुंजी– पर्यावरण, पर्यावरण संरक्षण, भारतीय संविधान।

पर्यावरण की परिभाषा :– पर्यावरण शब्द दो शब्दों परि+आवरण से मिलकर बना है। परि का अर्थ है चारों ओर तथा आवरण का अर्थ है वातावरण। अत: पर्यावरण का अर्थ हुआ हमारे चारों ओर का वातावरण। अंग्रेजी भाषा में पर्यावरण को Environment कहते है। Environment शब्द दो अंग्रेजी शब्दों Environ+ment से मिलकर बना है। Environ का अर्थ है to encircle अर्थात घेरना है एवं ment का अर्थ है from all sides अर्थात् चारों ओर से घेरना है। अतएव पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है चारों ओर से घेरने से है। अत: पर्यावरण बाह्य आवरण का द्योतक है।

प्रथम बार पर्यावरण को वृहद रूप में पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 की धारा 2(क) में परिभाषित किया गया है। धारा 2 (क) के अनुसार – 'पर्यावरण के अंतर्गत जल, हवा और भूमि तथा जल, भूमि और हवा तथा मानव प्राणी, अन्य जीवित प्राणी, पौधे, सूक्ष्म जीवाणु तथा संपत्ति और उनके बीच विद्यमान अंतर्सम्बन्ध सम्मिलित है।' उपर्युक्त परिभाषा के अनुसार पर्यावरण में

(1) भूमि, जल, वायु शामिल है और
(2) भूमि, जल, वायु तथा मानव प्राणियों एवं अन्य

जीवित प्राणियों, पादपों, सूक्ष्म जैविक और सम्पत्ति तथा उनके बीच पारस्परिक संबंध शामिल है।

वुडवर्थ के अनुसार :– 'पर्यावरण शब्द का अभिप्राय उन सब बाहरी शक्तियों एवम् तत्वों से हैं, जो व्यक्ति को आजीवन प्रभावित करते हैं।'

पर्यावरण का सामान्य अभिप्राय उस वातावरण से हैं, जो हमारे चारों ओर फैला हुआ है। जल, वायु, मृदा, वन, वन्य जीव पादप सभी पर्यावरण के घटक है। पृथ्वी पर पर्यावरण की उपस्थिति के कारण ही मानव जीवन का अस्तित्व संभव हो सका है। वायु, जल के बिना मानव जीवन की कल्पना करना अशक्य है। अत: पर्यावरण का संरक्षण मानव जीवन के अस्तित्व के लिए नितांत आवश्यक है।

पर्यावरण संरक्षण :– पर्यावरण संरक्षण से आशय है– पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाना एवं प्रकृति के अनवीनीकरण स्त्रोत जैसे–जल, कोयला, डीजल, पेट्रोल आदि को भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित रखना।

वर्तमान में आर्थिक विकास हेतु प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के कारण एवं वाहनों, कारखानों से निकलते धुएँ के कारण, कारखानों से नदियों में हानिकारक रसायनों के बहाव के कारण पर्यावरण का अत्यधिक क्षरण हो रहा है एवं पर्यावरण प्रदूषण की समस्या बढ़ती जा रही है। ओजोन की परत में छिद्र होने के कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ता जा रहा हैं जिससे भविष्य मे बर्फीले ग्लेशियरों के पिघलने के परिणामस्वरूप पृथ्वी पर जल का स्तर बढ़ जाएगा एवं पृथ्वी जल में समाहित हो जाएगी, जिससे मानव जीवन खतरे में आ जाएगा। अत: पर्यावरण संरक्षण मानव जीवन के अस्तित्व के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए संवैधानिक दृष्टिकोण :– भारत विश्व के उन चुनिंदा देशों में से एक हैं जिसके संविधान में पर्यावरण संरक्षण को विशेष दर्जा दिया गया है। भारतीय संविधान में मूल अधिकार, राज्य के नीति निदेशक तत्व, जिन्हें संविधान की अंतर्रात्मा कहा गया है, के साथ–साथ मूल कर्तव्यों में भी पर्यावरण संरक्षण को समाहित किया गया है। स्टॉक होम घोषणा 1972 जिसे 119 देशों ने स्वीकार किया जिसमें भारत भी शामिल

था, के परिणामस्वरूप भारत में पर्यावरणीय सोच में चतुर्दिक विकास हुआ, संविधान का 42वॉ संशोधन अधिनियम 1976 इस विकसित सोच का स्पष्ट उदाहरण है। इस संशोधन के द्वारा भारतीय संविधान के नीति निदेशक तत्वों, मूल कर्तव्यों तथा विधायी प्रविष्टियों में संशोधन करके पर्यावरण संरक्षण के प्रति गंभीरता को व्यक्त कर संविधान ने पर्यावरण संरक्षण में अपनी महत्ती भूमिका निभाई है। इसके अतिरिक्त न्यायपालिका ने सृजनात्मक व्याख्या के द्वारा मूल अधिकारों में स्वस्थ पर्यावरण के अधिकार को शामिल करके इसे मूल अधिकार का दर्जा दिया है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवैधानिक दृष्टिकोण को निम्नलिखित संवैधानिक प्रावधानों की सहायता से समझा जा सकता है–

अनुच्छेद 21 प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता का अधिकार : – संविधान के अनुच्छेद 21 के अधीन प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता के मूल अधिकार के अधीन न्यायपालिका ने स्वच्छ पर्यावरण के अधिकार को भी शामिल माना है। निम्नलिखित वाद इसके जीवंत उदाहरण हैं–

वाद– सुभाष कुमार बनाम बिहार राज्य

के मामलें में यह अभिनिर्धारित किया गया कि प्रदूषण मुक्त जल एवं वायु के उपभोग का अधिकार अनुच्छेद 21 में प्रदत्त प्राण के अधिकार में शामिल है।

वाद– चरनलाल साहू बनाम भारत संघ

में उच्चतम न्यायालय ने प्रदूषण मुक्त वायु एवं जल को अनुच्छेद 21, 48–क, और 51–क(छ) के अंतर्गत प्रत्याभूत अधिकार माना।

वाद–विरेन्द्र गौर बनाम हरियाणा राज्य

के वाद में मानव गरिमा के साथ जीने के अधिकार के अंतर्गत पर्यावरण का संरक्षण एवं संवर्द्धन, वायु एवं जल प्रदूषण से मुक्त पारिस्थैतिकी संतुलन और आरोग्य को शामिल माना।

वाद– एम.सी मेहता बनाम भारत संघ

के वाद में न्यायालय ने दिल्ली स्थित श्रीराम फूड एण्ड फर्टिलाइजर कंपनी को ऑलियम नामक खतरनाक गैस बनाने से रोक दिया, जब तक कि कंपनी गैस के रिसाव को रोकने हेतु उचित उपाय नहीं अपनाती है। इस वाद में उच्चतम न्यायालय ने प्रदूषण मुक्त पर्यावरण के अधिकार को अनुच्छेद 21 में मूल अधिकार के रूप में विवक्षित रूप से स्वीकार किया।

वाद– एस. के. कूलवाल बनाम राजस्थान राज्य

के मामलें में यह अभिनिर्धारित किया गया कि 'पर्यावरण की शुद्धता, सफाई और स्वास्थय का रख–रखाव संविधान के अनुच्छेद 21 के अंतर्गत वर्णित प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता के अंतर्गत आता है।

वाद– राजीव रंजन सिंह बनाम बिहार राज्य

के वाद में यह विचार व्यक्त किया गया कि डिस्टीलरी के बहाव एवं दुर्गंध के जहरीले और हानिकारक प्रभाव से आवासियों को सुरक्षित करने की असफलता संविधान के अनुच्छेद 47 और 48–क के साथ पठित अनुच्छेद 14 और 21 में प्रत्याभूत अधिकार का उल्लंघन है।

वाद– एम. सी. मेहता बनाम भारत संघ

में पत्थर पिसाई से उत्पन्न पर्यावरण संकट को ध्यान में रखकर उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली, फरीदाबाद और वल्लभगढ़ की फैक्ट्रियों को बंद करने का आदेश देते हुए कहा कि 'प्रत्येक नागरिक का शुद्ध वायु एवं प्रदूषण मुक्त पर्यावरण में जीने का अधिकार है।'

वाद– वी. ए. जैकब बनाम सुपरिटेण्डेट ऑफ पुलिस, कोट्टायम

के मामले में न्यायालय ने निर्णय दिया कि अनुच्छेद 21 में जीने के अधिकार के अंतर्गत सुरक्षित पर्यावरण का अधिकार है और सुरक्षित पर्यावरण में सुरक्षित ध्वनि, सुरक्षित हवा की गुणवत्ता भी शामिल है।

अनुच्छेद 32 :– अनुच्छेद 32 नागरिकों को भाग 3 में प्रदत्त मूल अधिकारों को लागू कराने के लिए न्यायालय में लोकहित वाद दायर करने का अधिकार देता है। इस अधिकार का प्रयोग कर कई समाजसेवियों एवं संगठनों ने पर्यावरण संरक्षण के मूल अधिकार को लागू करने के लिए अनुच्छेद 32 के अधीन लोकहित वाद दायर कर पर्यावरण संरक्षण में इस अनुच्छेद 32 के महत्व को सार्थक किया है।

वाद– वेल्लोर सिटिजन्स वेलफेयर फोरम बनाम भारत संघ

के वाद में वेल्लोर नागरिक कल्याण फोरम ने अनुच्छेद 32 के अधीन लोकहित वाद दायर करके तमिलाण्डु में चमड़ा तथा अन्य व्यवसाय करने से निकलने वाले अशुद्ध मलवे से पर्यावरण को होने वाली भंयकर हानि की ओर न्यायालय का ध्यान आकृष्ट करने पर न्यायालय ने चमड़ा कारखाानों को बंद करने एवं प्रत्येक चमड़ा कारखाने पर 10 हजार रूपये प्रदूषण दण्ड लगाने का आदेश दिया।

वाद– इण्डियन काउन्सिल फॉर इनविरोमेंटल लीगल एक्शन बनाम भारत संघ

के वाद में एक पर्यावरण वादी संस्था द्वारा अनुच्छेद 32 के अधीन लोकहित वाद दायर कर देश के रासायनिक कारखानों के आस–पास रहने वाले लोगो की दयनीय स्थिति की ओर न्यायालय का ध्यान आकृष्ट करने पर न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि ऐसे कारखाने जो सरकार से लाइसेंस प्राप्त किए बिना स्थापित किए जाते है और कानून का उल्लंघन करके अपने आस–पास रहने वाले नागरिकों को प्राप्त दैहिक स्वाधीनता को हानि पहुँचाते है, उनके विरूद्ध समुचित कार्यवाही करने की शक्ति न्यायालय को प्राप्त है। न्यायालय ने दोषी कंपनी को पीड़ितों को प्रतिकर देने का आदेश दिया।

अनुच्छेद 48क :– अनुच्छेद 48क संविधान के 42वें संशोधन 1976 द्वारा जोड़ा गया, इसके अनुसार 'राज्य देश के पर्यावरण की संरक्षा तथा उसमें सुधार करने का और वन तथा वन्य जीवों की रक्षा करने का प्रयास करेगा।'

वाद– सच्चिदानंद पाण्डेय बनाम पश्चिमी बंगाल राज्य

के मामलें में उच्चतम न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि जब कभी न्यायालय के समक्ष पारिस्थैतिकी से संबंधित कोई समस्या प्रस्तुत की जाएगी, न्यायालय अनुच्छेद 48क और अनुच्छेद 51क(छ) को ध्यान में रखने के लिए बाध्य है।

वाद– टी. दामोदर राव बनाम एस. ओ. म्यूनिसिपल कारपोरेशन हैदराबाद

के मामले में न्यायालय ने यह अभिमत व्यक्त किया कि अनुच्छेद 48क और 51क(छ) के आलोक में यह स्पष्ट कि पर्यावरण संरक्षण का कर्तव्य केवल नागरिकों पर ही नहीं है बल्कि न्यायालय सहित राज्य के सभी अंगों का दायित्व है।

अनुच्छेद 51क(छ) :– स्टॉकहोम घोषणा 1972 से प्रेरित होकर किए गए 42वें संविधान संशोधन 1976 के द्वारा संविधान के भाग 4क मूल कर्तव्य में 51क(छ) के रूप में पर्यावरण संबंधी नागरिकों का मूल कर्तव्य जोड़ा गया है। संविधान का अनुच्छेद 51क(छ) यह उपबंधित करता है कि 'भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव है रक्षा करे और उनका

संवर्द्धन करे तथा प्राणी मात्र के प्रति दया भाव रखे।

अनुच्छेद 252 :- संविधान के अनुच्छेद 252(1) के अनुसार 'यदि किन्हीं दो या अधिक राज्यों के विधान मंडलों ने यह संकल्प पारित कर दिया है कि राज्य सूची के किसी विषय पर संसद को विधि बनाना वांछनीय है तो संसद उस विषय पर विधि बना सकती है। ऐसी विधि को अन्य राज्य भी संकल्प पारित करके अंगीकार कर सकते है। संसद ने इस अनुच्छेद के तहत विभिन्न राज्य मण्डलों की सहमति पर जल प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण अधिनियम 1954 पारित किया है।

अनुच्छेद 253 :- संविधान के अनुच्छेद 253 के अधीन संसद को अंतर्राष्ट्रीय संधियों और करारों के क्रियान्वयन के लिए, चाहे वह राज्य सूची का विषय क्यों न हो भारत के संपूर्ण राज्य क्षेत्र या किसी भाग के लिए विधि बनाने की शक्ति है। संसद ने इस अनुच्छेद में दी गई विधयी शक्ति का प्रयोग कर वायु प्रदूषण निवारण और नियंत्रण अधिनियम 1981 और पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 पारित किया है।

निष्कर्ष :- अत: निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि भारतीय संविधान ने पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किंतु फिर भी पर्यावरण प्रदूषण को रोकने में हम पूर्णत: सफल नहीं हो पाये है। पर्यावरण प्रदूषण के कारण न केवल मानव स्वास्थय पर बल्कि अर्थव्यवस्था पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी की गई **मुद्रा और वित्त रिपोर्ट 2022-23** के अनुसार जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण के कारण 2030 तक जीडीपी में 4.5% तक की गिरावट का अनुमान है। अत: इससे यह स्पष्ट है कि पर्यावरण का संरक्षण करना अति आवष्यक हैं। अत: हम सब को मिलकर यह प्रयत्न करना चाहिए कि हम अपनी आनी वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर एक हरी-भरी पृथ्वी छोड़कर जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. अनिरूद्ध प्रसाद, पर्यावरण एवं पर्यावरणीय संरक्षण विधि की रूपरेखा, चतुर्थ संस्करण, इलाहाबाद, सेन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन्स, 2006
2. डॉ. जयनारायण पाण्डेय, भारत का संविधान, 42वां संस्करण, इलाहाबाद, CLA, 2009
3. The study IQ, 21 october 2021, पर्यावरण की परिभाषा, 22 march, 2024, https://www.thestudyiq.com.
4. Social-work.in, 22 february 2023, Paryavaran-Kya-hai, 21march,2024, https://socialwork.in.
5. Drishti Ias, How pollution impact Economic growth?, 4 may 2024, https://youtu.be/0Nuyk9lSh70?si=m7PkWfbTXZd47gOj.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

दमोह जिले के पर्यटन स्थलों पर उपलब्ध संरचनात्मक सुविधाओं का अध्ययन

ललित ताम्रकार* डॉ. आभा वार्ष्णेय**

* शोधार्थी (भूगोल) जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक, कमला राजा महिला महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – पर्यटन किसी भी क्षेत्र की आर्थिक और सांस्कृतिक वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दमोह जिला प्राकृतिक सुंदरता, ऐतिहासिक धरोहरों और धार्मिक स्थलों से भरपूरहै।परंतुसंरचनात्मक सुविधाओं की कमी के कारण यह क्षेत्र अपेक्षित पर्यटन विकास प्राप्त नहीं कर सका है।

इतिहास में जाकर यदि देखा जाए तो हमें यह पता चलता है कि इस जिले का पुराना नाम तुंडीकेर था तथा इसे अपना वर्तमान नाम राजा नल की पत्नी रानी दमयंती के नाम से मिला।14वीं शताब्दी में दमोह मुगलों के अधिकार क्षेत्र में रहा तत्पश्चात 15वीं शताब्दी में गौड़ शासक संग्राम शाह ने दमोह को अपने साम्राज्य में शामिल किया। बुंदेलो और मराठों का भी कुछ समय इस क्षेत्र पर अधिकार रहा। इस प्रकार अपने समृद्ध इतिहास के साथ दमोह जिले ने अपना वर्तमान स्वरूप प्राप्त किया। यही कारण है कि यहां पर ऐतिहासिक अवशेष बिखरेपड़े हुए हैं, जिनके उचित रखरखाव से लाभ प्राप्त किया जा सकता है। परंतु वर्तमान में इस जिले के पर्यटन स्थल लाभ प्राप्त करने की स्थिति में नहीं है बल्कि अल्प विकसित होने के कारण आसपास के पर्यटकों के लिए भी अंजान बने हुए हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य स्थलों पर उपलब्ध आवश्यक संरचनात्मक सुविधाओं पर विमर्श करना है ताकि इन सुविधाओं की उपलब्धता में जो कमियां है उन पर प्रकाश डाला जा सके एवं भविष्य में इन कमियों को पूरा कर इस क्षेत्र में आदर्श पर्यटन स्थलों का विकास किया जा सके।

अनुसंधान प्रश्न

(अ) दमोह जिले के के पर्यटन स्थलों पर कौन–कौन सी संरचनात्मक सुविधा उपलब्ध हैं?
(ब) इन सुविधाओं में क्या कमियां है?
(स) इस क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ाने के लिए कौन–कौन से उपाय किए जा सकते हैं?

अनुसंधान विधि–यह शोध गुणात्मक प्रकृति का है। जिसके लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्योंका प्रयोग किया गयाहै।प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु सर्वेक्षण एवं क्षेत्रीय अवलोकन किया गया है तथा चयनित स्थानों पर आने वाले पर्यटकों से, आसपास के लोगों से, वहां के कर्मचारीयों आदि से साक्षात्कार करके भी शोधार्थी द्वारा गुणात्मक तथ्यों का संकलन किया गया है। जबकि द्वितीय तथ्यों के संकलन हेतु सरकारी रिपोर्ट, जिले की वेबसाइट, पत्र– पत्रिकाओं आदि का प्रयोग किया गयाहै।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय–दमोह जिला मध्य प्रदेश के उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित है, जो 23° 09' उत्तरी अक्षांश से 24° 27' उत्तरी अक्षांश तक तथा 79°03' पूर्वी देशांतर से 79° 57' पूर्वीदेशांतर तक फैला है। इसका क्षेत्रफल 7306 वर्ग किलोमीटर है।यह जिला सोनार नदी के दक्षिण–पूर्व में लगभग 12 मील पठारी क्षेत्र में स्थित है तथा यह क्षेत्र 595 मीटर की औसत ऊंचाई में स्थित है।यह जिला भौगोलिक रूप से रीवा–पन्ना के पठारपर स्थित होने के कारण यहां की जलवायु उष्ण कटिबंधीय मानसूनी है। यहां गर्म और आर्द्र ग्रीष्म काल, मध्यम और शुष्क सर्दी तथा वर्षा का मौसम होता है। औसत वार्षिक वर्षा 125 सेंटीमीटर तथा गर्मियों और सर्दियों का औसत तापमान क्रमश: 35.5 डिग्री सेल्सियस तथा 12.5 डिग्री सेल्सियस रहता है।

यह जिला सागर संभाग के अंतर्गत आता है। यह जिला रेल तथा सड़क मार्ग द्वारा अपने आसपास के जिलों से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है।यह जिला पश्चिम में सागर से दक्षिण में जबलपुर और नरसिंहपुर से तथा पूर्व में पन्ना और कटनी से घिरा हुआ है। शहर का नाम पौराणिक हिंदू कथाओं के राजा नल की पत्नी दमयंती के नाम पर रखा गया है।

जिले के प्रमुख पर्यटन स्थल एवं संरचनात्मक सुविधाओं की उपलब्धता

(अ)बांदकपुर–यह स्थान दमोह कटनी–मार्ग पर दमोह से लगभग 16 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसी स्थान पर भगवान जागेश्वर नाथ स्वयंभू रूप में स्थापित हैं इस कारण इस स्थान को जागेश्वर धाम भी कहा जाता है। इसी मंदिर परिसर में संस्कृत विद्यालय, मुंडन स्थल एवं विवाह मंडप बने हुए हैं यहां का संस्कृत विद्यालय भी अपने धार्मिक प्रशिक्षण हेतु प्रसिद्ध है।इस स्थान की मान्यता है कि महाशिवरात्रि पर सवा लाख कांवड़ियोंद्वारा लाए गए जल को भगवान शिव पर चढ़ाने से माता पार्वती तथा भगवान शिव के मंदिरों पर लगी दो–दो ध्वज जो माता पार्वती एवं भगवान शिव के प्रतीक हैं एक दूसरे की ओर झुककर आपस में मिलकर अपने आप बंध जाते हैं। इस साक्षात चमत्कार के दर्शन हेतु दर्शनार्थी लाखों की संख्या में यहां उपस्थित होते हैं।

यदि इस क्षेत्र के संरचनात्मक विकास की बात की जाए तो यह क्षेत्र रेल तथा सड़कों द्वारा अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है लेकिन प्रसिद्ध स्थल होने के बाद भी यहां का रेलवे स्टेशन विकसित नहीं है तथा मूलभूत सुविधाओं का अभाव है। मंदिर क्षेत्र तथा आसपास के क्षेत्र की बात की जाए तो पता चलता है कि मंदिर का बाहरी क्षेत्र पूर्णत: ग्रामीण है एवं स्वच्छता का अभाव है तथा बाहर से आने वाले पर्यटकों के लिए आवासीय सुविधा नहीं है। यह

क्षेत्र सिर्फ अपने धार्मिक महत्व के कारण ही प्रसिद्धि प्राप्त है किसी अन्य प्रकार के पर्यटन या भ्रमण क्षेत्र न होने के कारण इस क्षेत्र का पर्यटन सीमित है। यद्यपि यह स्थान आसपास के क्षेत्र में 13वें ज्योतिर्लिंग के रूप में विख्यात है परंतु फिर भी उचित प्रचार तथा मार्केटिंग केअभाव में यह क्षेत्र कम पर्यटक प्राप्त कर पा रहा है।

(ब) कुंडलपुर–यह स्थान जैन तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध है। यह दमोह–पटेरा मार्ग पर दमोह से लगभग 45 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यहां पहाड़ी के ऊपर तथा नीचे 58 जैन मंदिर बने हुए हैं जो 16वीं–17वीं शताब्दी में निर्मित माने जाते हैं यहां अंबिका मठ तथा रुक्मणी मठ नाम के दो राज्य संरक्षित स्मारक भी है जिसमें से रुक्मणी मठसे 2002 में चोरी हुई प्रतिमा को पुन: स्थापित कर दिया गया है। वैसे तो इस जगह पर मंदिरों वाले स्थान पर सभी प्रकार की सुविधा पर्याप्त रूप से उपलब्ध है पर मंदिर के चारों ओर का क्षेत्र अभी भी अविकसित और ग्रामीण अवस्था में है जिससे यह पता चलता है कि इस क्षेत्र के पर्यटन का लाभ स्थानीय लोगों को नहीं मिल पा रहा है। यहां विश्व भर से जैन धर्म के अनुयायियों का आगमन होता रहता है। विशेष मौकों पर यहां पर पर्यटकों की संख्या लाखों में भी पहुंच जाती है।

यहां के लोग मुख्य रूप से कृषि कार्य एवं अन्य ग्रामीण कार्यों द्वारा अपना जीवन बसर करते हैं। यदि सुरक्षा और स्वच्छता व्यवस्था को देखें तो यह क्षेत्र एक आदर्श क्षेत्र है यहां सुरक्षा हेतु पर्याप्त संख्या में सुरक्षा गार्ड तैनात होते हैं जो 24 घंटे यहां उपलब्ध होते हैं। यहां धार्मिक क्षेत्र की सीमा के अंदर पर्याप्त मात्रा में स्वच्छ छना हुआ जल एवं भोजन की उपलब्धता है जो जैन रीति के अनुसार बनाया जाता है। यद्यपि यह क्षेत्र सड़क मार्ग द्वारा जिला मुख्यालय से ठीक तरह से जुड़ा हुआ है परंतु यहां पर रेल मार्ग अभी तक नहीं पहुंच पाया है जो वर्षों से यहां के लिए प्रस्तावित है। पर्यटकों के लिए आवासीय सुविधा भी पर्याप्त मात्रा में इस स्थान पर उपलब्ध है।

(स) सिंग्रामपुर–यह स्थान दमोह से लगभग 55 किलोमीटर की दूरी पर दमोह–जबलपुर मार्ग पर स्थित सिंग्रामपुर प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण एक मनोरम ग्रामीण क्षेत्र है।यह क्षेत्र ऐतिहासिक पर्यटन, पारिस्थितिक पर्यटन तथा धार्मिक पर्यटन को अपने आप में समेटे हुए हैं क्योंकि यहां बिल्कुल पास–पास ही कई पर्यटन स्थल स्थित है जिसमें सिंगौरगढ़ किला, निदान कुंड (भैंसा घाट), नजाराप्वाइंट, सद्भावना शिखर, रानी दुर्गावती अभयारण्य आदि प्रमुख है। सिंगौरगढ़ किला इस क्षेत्र का सर्वप्रमुख आकर्षण है रानी दुर्गावती इसी किले से अपना राज–काज देखा करती थीं।

सद्भावना शिखर विंध्य पर्वत श्रृंखला की सबसे ऊंची चोटी है जिसे कलुमर या कालुम्बे नाम से भी जाना जाता है। नजारा पॉइंट का नाम यहां से देखी जा सकने वाले जंगलों के विहंगम दृश्य के कारण पड़ा है जहां से सैकड़ो मीटर की ऊंचाई से सारे जंगल को देखा जा सकता है। निदान कुंड जलप्रपात (भैंसा घाट) भी अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है जहां से जल ऊंची पहाड़ी से सुंदर दृश्य बनाते हुए नीचे गिरता है। वैसे तो सिंग्रामपुर के सभी पर्यटन स्थल अपने में अपार संभावनाएं समेटे हुए हैं परंतु यह स्थान वर्तमान में अपनी योग्यता अनुसार पर्यटकों को प्राप्त नहीं कर सका है।

इसके अतिरिक्त यहां सुरक्षा व्यवस्था जंगली क्षेत्र होने के कारण एकदम शून्य है, जिससे हर समय इस क्षेत्र में पर्यटकों के लिए खतरा बना रहता है। यहां किसी भी प्रकार की आवासीय व्यवस्था नहीं है नही पर्यटकों हेतु आसपास खाने–पीने की सुविधा है अत: पर्यटकों को अपने साथ ही भोजन–पानी लाना पड़ता है। इन्हीं सब कठिनाइयों के कारण इस क्षेत्र में पर्यटन अपर्याप्त है।

(द) नोहलेश्वर मंदिर–यह स्थान दमोह से 24 किलोमीटर दूर दमोह–जबलपुर मार्ग पर स्थित नोहटा ग्राम में स्थित है। इस ग्राम में बड़ी संख्या में प्राचीन मंदिरों के ध्वंसावशेष देखे जा सकते हैं। इन सभी अवशेषों मेंनोहलेश्वर मंदिर प्रमुख है जो अभी भीअच्छी अवस्था में है। यह मंदिर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का संरक्षित स्मारक है। कलचुरी नरेश युवराज देव प्रथम की रानी नोहला देवी द्वारा निर्मित यह मंदिर नागर शैली में निर्मित है जो वास्तु कला की अनुपम कृतिहै।यह मंदिर भगवान शंकर को समर्पित है।

मुख्य मार्ग पर स्थित होने के कारण यहां पहुंचना आसान है। स्वच्छता के मामले में भी मंदिर क्षेत्र अच्छी स्थिति मेंहै। इस क्षेत्र में सिर्फ प्रचार तथा मार्केटिंग का अभाव होने के कारण पर्यटन अपर्याप्त है।

(ई) रानी दमयंती संग्रहालय दमोह–यह संग्रहालय दमोह नगर के मध्य स्थान में ही बना हुआ है। इस संग्रहालय का शुभारंभ 25 अगस्त 1989 ई में तत्कालीन राज्यपाल सरला ग्रेवाल द्वारा किया गया था। यह संग्रहालय एक पुराने किले में बना हुआ है। इस संग्रहालय की 5 वीथिकाओं में कलचुरी काल की विशिष्ट कृतियां प्रदर्शित की गई है।इस संग्रहालय में छठवीं से लेकर 11वीं–12वीं शताब्दी तक की अद्भुत प्रतिमाओं को रखा गया है जिसमें अभिविज्ञान राम,त्रिविक्रम विष्णु, बुद्ध भगवान, हेग्रीव विष्णु अवतार, सूर्य प्रतिमा, नृत्य गणेश, स्वरसुंदरी प्रतिमा आदि प्रमुख है।

जैसा कि ज्ञात है यह संग्रहालय शहर में ही स्थित है अत: यहां पहुंचना आसान है। स्वच्छता एवं सुरक्षा भी शहरी क्षेत्र होने के कारण यहां पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। यहां की मुख्य समस्या इस संग्रहालय का उचित प्रचार–प्रसार ना होना है।

तालिका क्र. 01:– जिले के पर्यटन स्थलों पर संरचनात्मक सुविधाओं का विश्लेषण।

क्र.	स्थान	स्वच्छता	सुरक्षा	आवास	परिवहन	भोजन –पानी	मार्के टिंग
1	बाँदकपुर	अपर्याप्त	औसत	अपर्याप्त	पर्याप्त	औसत	औसत
2	कुण्डलपूर	अच्छा	अच्छा	अच्छा	औसत	अच्छा	औसत
3	सिंग्रामपुर	–	अनुप लब्ध	अनुप लब्ध	अपर्याप्त	अनुप लब्ध	अपर्याप्त
4	नोहलेश्वर मंदिर	पर्याप्त	पर्याप्त	–	अच्छा	औसत	औसत
5	रानी दमयंती संग्राहालय	अच्छा	अच्छा	–	अच्छा	पर्याप्त	अपर्याप्त

जिले में पर्यटन की प्रमुख समस्याएं–ऐसे तो दमोह जिले में बहुत सारे पर्यटन स्थल है जिनमें पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं पर यदि ध्यान दियाजाए तो पता चलता है कि देश तथा प्रदेश में पर्यटन हेतु दमोह जिले का नाम कहीं भी नहीं आता। कुछ प्रमुख समस्याएं हैं जिन्हें सुलझाकर दमोह जिले को पर्यटन मानचित्र पर उचित स्थान दिलाया जा सकता है–

(अ) जिले के पर्यटन स्थलों का उनकी विशेषताओं के साथ ठीक तरह से प्रचार–प्रसार नहीं किया जाना।

(ब) परिवहन साधनों तथा मार्गों का अपर्याप्त विकास।

(स) स्थलों का अविकसित तथा जीर्ण अवस्था में होना।

(द) कई स्थलों पर सुरक्षा बलों की अनुपस्थिति होना जिससे सुरक्षा की समस्या होती है।

(ई) पर्यटकों के लिए अच्छे होटलों तथा अन्य आवासीय सुविधाओं की कमी होना।

पर्यटन विकास हेतु सुझाव–जैसा कि इस अध्ययन से हमें ज्ञात होता है कि अध्ययन हेतु चुने गए पर्यटक स्थलों में प्रत्येक की अपनी अपनी समस्याएं हैं। अत: प्रत्येक स्थान के विकास के लिए निम्न सुझाव दिए जा सकते हैं–

(अ) बांदकपुर क्षेत्र में पर्यटन विकास हेतु दूर से आने वाले दर्शनार्थियों के लिए उचित आवासीय व्यवस्था की जानी चाहिए तथा मंदिर के द्वार निर्माण का जो प्लान प्रस्तावित है उसे शीघ्र कार्यान्वित किया जाना चाहिए ताकि मंदिर के अंदर होने वाली भीड़–भाड़ को कम किया जा सके और मंदिर के बाहर लगने वाली अस्त–व्यस्त दुकानों से होने वाली असुविधा से बचा जा सके। इसके साथ ही क्षेत्र के विकास के लिए रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

(ब) कुंडलपुर क्षेत्र विशाल जैन तीर्थ क्षेत्र है जिसका प्रचार राष्ट्रीय स्तर पर किया जाना चाहिए। साथ ही यहां प्रस्तावित रेल मार्ग निर्माण पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

(स) सिंग्रामपुर एक अपार संभावनाओं वाला पर्यटन क्षेत्र है परंतु यहां पर पर्यटन के विकास के लिए आवश्यक सभी प्रकार की आधारभूत सुविधाओं का अभाव है। अत: यहां पर चहुँमुखी विकास की आवश्यकता है, जिसमें परिवहन, आवास, स्वच्छता, सुरक्षा, पेय जल, प्रचार–प्रसार सभी शामिल है। यहां मुख्य सड़क से पर्यटन स्थलों तक पहुंचने के लिए सड़कों का निर्माण भी किया जाना चाहिए।

(द) नोहलेश्वर मंदिर की प्राचीनता की प्रादेशिक स्तर पर मार्केटिंग की जानी चाहिएतथा इस स्थान पर आयोजित किए गए नोहलेश्वर उत्सव को और भी व्यापक रूप से प्रतिवर्ष आयोजित किया जानाचाहिए।

(ई) रानी दमयंती संग्रहालय दमोह शहर का मुख्य आकर्षण है। शहर के स्कूली तथा महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को इसस्थान केशैक्षणिक भ्रमण हेतु प्रशासन द्वारा व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे इस स्थान का प्रचार हो सके।

निष्कर्ष– पर्यटन की संभावनाओं की बात की जाए तो दमोह जिले में ऐतिहासिक अवशेष, प्राकृतिक सौंदर्य तथा मनोरंजन के साधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है परंतु निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि यह जिला पर्यटन की दृष्टि से अभी पिछड़ा हुआ है।इस अध्ययन में जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर उपलब्ध संरचनात्मक सुविधाओं और उनकी कमियों का विश्लेषण किया गया है जिसमें पाया गया कि उचित संरचनात्मक सुधारों और सरकारी योजनाओं के माध्यम से दमोह जिले में पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है। बेहतर सड़क, होटल, स्वच्छता, सुरक्षा और प्रचार–प्रसार से यह जिला एक महत्वपूर्ण पर्यटन केंद्र बन सकता है।

संदर्भग्रंथ सूची:–

1. Damoh.nic.in
2. www.mpinfo.org
3. जॉनसन धीरज, दमोह दर्शन
4. दैनिक भास्कर
5. दमोह दृष्टि पत्र – 2047
6. Bais Priyanka Sing, role of historical monuments of Bundelkhand region of Madhya Pradesh in tourism development (Jiwaji University Gwalior), 2023

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारत के पुनरुत्थान के लिए पर्यावरण संरक्षण पर भारतीय दृष्टीकोण एवं उसका समग्र अध्ययन

गरीमा राठौर* महेन्द्र पटेल**

* सहायक प्राध्यापक, शासकीय विधि महाविद्यालय, अशोकनगर (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक, शासकीय विधि महाविद्यालय, बीना (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारत के पुनरुत्थान के लिए पर्यावरण संरक्षण एक महत्त्वपूर्ण विषय है। जो कि मानव जाति के विकास के साथ ही देश यानि भारत का विकास सुनिश्चित है और मानव जाति के लिए उनके पद–पद पर विकास के लिए पर्यावरण संरक्षण एक आवश्यक प्रक्रिया है जो कि स्वस्थ मन के साथ स्वस्थ मनुष्य को जन्म देती है जिससे व्यक्ति बेहतर तरीके से भारत के पुनरुत्थान में योगदान देगा। जल, जीव, जन्तु, मनुष्य एवं वनस्पति यह सब पर्यावरण का एक भाग है। यदि हम एक विकसित भारत की कल्पना करते हैं, तो हमारे लिए मानव जाति के विकास के लिए पर्यावरण का संरक्षण भी एक महत्तवपूर्ण विषय है। पर्यावरण संरक्षण पुराने काल में कुछ ऐसी परंपराओं के साथ किया जाता था, कि उसका केन्द्र बिन्दु मनुष्य एवं उसके साथ जीव–जन्तु और वनस्पति की रक्षा करना होता था। इसलिए हमें एक होकर मानव जाति के लिए और भारत वर्ष के लिए पर्यावरण संरक्षण को आगे लाना होगा, इसी से ही भारत का पुनरुत्थान निश्चित होगा।

शब्द कुंजी –पर्यावरण, नियम, संरक्षण, वातावरण, व्यक्ति, परंपराऐं, प्राचीन, भारतीय, पुनरुत्थान, दृष्टिकोण, जीवन।

पर्यावरण संरक्षण – पर्यावरण के शब्द में यह ध्वनित होता है कि'परि' एवं 'आवरण' से मिलकर 'पर्यावरण' शब्द का जन्म हुआ। 'परि' अर्थात् चारों ओर एवं आवरण यानि घेरा। मतलब पर्यावरण प्रकृति की ऐसी संरचना है, जो कि हमारे चारों तरफ एक आवरण की तरह है। इसके अन्तर्गत जैविक और अजैविक यानि मृदा, जल, वायु तथा रसायन, पौधे, पशु तथा सूक्ष्म जीवाणु आते है और इन्ही सभी चीजों के संरक्षण को जो स्थलमण्डल, वायुमण्डल एवं जलमण्डल से मिलकर बना है, इसी को पर्यावरण संरक्षण कहा जाता है। इसी के अन्तर्गत विधिक पर्यावरण की बात की जाए, तो विधिक पर्यावरण का आशय उन कानूनों, नियमों, विनियमों और नीतियों से है जो कि किसी देश, राज्य या समाज में व्यवसायिक गतिविधियों, व्यक्तिगत व्यवहार और सामाजिक संबंधों को नियंत्रित करता है।

पर्यावरण संरक्षण मे भारतीय दृष्टिकोण – पर्यावरण संरक्षण में भारतीय दृष्टिकोण एक अलग ही महत्व प्रदान करता है हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत भारतीय दृष्टिकोण पर्यावरण संरक्षण के लिए अत्यधिक आवश्यक है भारतीय परंपरा के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण जैविक और अजैविक एक संरक्षण है जो कि हमारे आसपास रहता है इसके अंतर्गत हमें अपने आसपास की चीजों को संरक्षण प्रदान करना होता है भारतीय संस्कृति के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण का अपना ही महत्व है प्राचीन काल से ही व्यक्तियों के बीच इस विचारधारा को विकसित किया गया है कि पर्यावरण संरक्षण एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है भारतीय दृष्टिकोण को अगर देखा जाए तो पर्यावरण संरक्षण में भारत ने हमेशा ही भाग लिया है उसने कई अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण जैसे गंभीर मुद्दों पर अपनी सहभागी व्यक्त की है और उसे भारतीय स्तर पर लाने का पुरजोर प्रयास किया है भारतीय दृष्टिकोण की अगर बात की जाए तो हमेशा ही भारत में पर्यावरण संरक्षण के लिए एक आध्यात्मिक अभिवृद्धि को बढ़ावा दिया है उसने इसे संस्कृत से भी जोड़ा है आदिवासी लोगों के द्वारा पर्यावरण संरक्षण के कई उपायों को उसने शहर में भी लागू करने की प्रक्रिया की है सबसे ज्यादा पर्यावरण संरक्षण जंगलों में अनुसूचित जनजातियों के द्वारा किया जाता है क्योंकि उनका यह मानना होता है कि उनकी देखभाल करने वाला अगर कोई है तो यह पर्यावरण है जहां पर वह जीवित रहते हैं और इसी पर्यावरण के द्वारा ही वह अपनी दिनचर्या को पूरा करते हैं। इसीलिए भारतीय दृष्टिकोण में वनों और जंगलों में रह रहे व्यक्तियों के खान–पान और उनके रहने के तरीके और उनके पर्यावरण संरक्षण के तरीके, इलाज करने के तरीके पर शोध किया जा रहा है, कि किस प्रकार हम पर्यावरण को बचा सकते हैं, क्योंकि अगर हम जागरूक नहीं हुये, तो एक दिन हमारी पृथ्वी खतरे में आ जाएगी और पर्यावरण प्रदूषित होने के कारण व्यक्ति नकारात्मकता से ग्रसित हो जाएगा। पर्यावरण संरक्षण के द्वारा भारतीय दृष्टिकोण के अंतर्गत प्राकृतिक संसाधनों का समुचित प्रबंध किया गया है। पर्यावरणीय विकास के लिए शिक्षा को जागरूकता को बढ़ावा दिया गया है। प्राकृतिक संसाधनों को सिर्फ उत्पादकता के लिए नहीं बल्कि उनकी देखभाल और उनका संरक्षण उनकी महत्वता पर जोर दिया जाने लगा है। पर्यावरण संरक्षण के लिए जल, जंगल, जमीन इन तीनों ही चीजों पर बहुत ही ध्यान दिया जाने लगा है। हर साल राज्यों के द्वारा 'पेड़ लगाओ और उनकी देखभाल करो' जैसी चीज भी आने लगी हैं। अंकुरण के माध्यम से पेड़ों को लगाना और इसकी मॉनिटरिंग करना एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य माना जाने लगा है। जैसे कि बिजली बचाना क्योंकि बिजली जो होती है वह पानी या फिर खदानों के प्रयोग से बनती है, जिससे कि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन होता है। इसको बचाना हमारा नैतिक कर्तव्य है। प्लास्टिक को यूज न करना, इससे बचना यह भी

हमारा एक नैतिक कर्तव्य माना गया है, पर्यावरण संरक्षण के लिए। जैसा कि आप जानते हैं कि स्वच्छता अभियान के अंतर्गत राज्यों में जो कोशिश की जा रही है यह भी पर्यावरण संरक्षण का ही भाग है जैसे कि हर समाज में राज्य में अगर हम अपने स्तर पर पर्यावरण को सुरक्षित और स्वच्छ रखते हैं तो पर्यावरण भी हमारा धीरे-धीरे संरक्षित होने लगता है।

पर्यावरण संरक्षण को लेकर हमारा भारतीय दृष्टिकोण बहुत ही सकारात्मक के साथ कार्य कर रहा है। वह घर-घर जाकर व्यक्तियों को जागरुक कर रहा है, कि किस प्रकार उन्हें पर्यावरण के प्रति चिंतित होना चाहिए। क्योंकि यह वही पर्यावरण है जहां पर आप रहते हैं और श्वांवस लेते हैं। अगर आप अच्छे वातावरण में सांस नहीं लेंगे तो कैसे जिएंगे। पर्यावरण को लेकर पर्यावरण दिवस के दिन कई कार्यक्रम निबंध प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक जैसे आयोजन राज्य के द्वारा करवाए जाते हैं। जिससे कि व्यक्तियों के अंदर जागरूकता उत्पन्न हो सके। इसी प्रक्रिया के अंतर्गत राज्य के द्वारा अंकुर प्रोजेक्ट चलाया गया जिसके अंदर हर व्यक्ति को कुछ पेड़ लगाकर उसकी फोटो को अपलोड करना होता है और इसकी मॉनीटरिंग के लिए उसे हर 2 महीने में फोटो डालकर दिखाना होता है कि वह पौधा कितना बड़ा हो गया है। भारत के पुनरुत्थान के लिए जरूरी है कि हम पर्यावरण संरक्षण को भी महत्व दें। क्योंकि भारत का विकास वहां पर रहने वाली जनता पर निर्भर करता है और यह विकास भी उन्हीं के लिए किया जा रहा है। अगर वह स्वस्थ रहेगें और पर्यावरण भी स्वस्थ रहेगा तो भारत का पुनरुत्थान निश्चित है।

पर्यावरण संरक्षण की आवश्यरकता क्यों है?

5 जून 1973 को पहला विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। आज के युग में पर्यावरण प्रदूषण बहुत तेजी से बढ़ रहा है। बढ़ती जनसंख्या एवं इमारतों के कारण पर्यावरण की प्रकृति नष्ट हो रही है, हर जगह घने वृक्ष काटे जा रहे हैं और बिल्डिंगों का निर्माण किया जा रहा है और यह सब पर्यावरण के साथ छेड़छाड़ है।

आज विश्व भर में पर्यावरण सेवा संसाधनों के विनाश की समस्याएं बढ़ रही हैं। जिसकी स्वाभाविक अभिव्यक्ति पारिस्थितिकी संकटों के रूप में आ रही है। प्राकृतिक अवस्था में परिस्थितिकीय संतुलन अपने आप बना रहता है। लेकिन पिछले कई दशकों में मानव के हस्तक्षेप के कारण कई चीजे होना शुरू हुई है। जिनमें भूकंप आना, बाढ़ आना, मरुस्थलीकरण, जैव विविधताओं को संकट, जीव के विनाश आदि समस्याएं उत्पन्न होने लगी है। परिणाम स्वरुप संतुलन के समय गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं और प्राणी तंत्र और मनुष्य के साथ होने वाले पर्यावरण के इस व्यवहार को हम इस प्रकार छोड़ नहीं सकते। इसी प्रयास में मार्च 2022 में भारत के केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने भारत की पर्यावरण स्थिति रिपोर्ट 2022 जारी की। यह रिपोर्ट जलवायु परिवर्तन, प्रवासन, स्वास्थ्य एवं खाद्य प्रणालियों पर केंद्रित थी। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट और डाउन टू अर्थ पत्रिका का एक वार्षिक प्रकाशन है। जिसमें जैव विविधता, वन, वन्य जीव, ऊर्जा उद्योग, आवास प्रदूषण अपशिष्ट, कृषि एवं ग्रामीण विकास भी शामिल है। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट नई दिल्ली स्थित एक गैर लाभकारी सार्वजनिक हित संस्था है। जिसकी स्थापना 1980 में की गई थी। यह संगठन भारत में पर्यावरण खराब नियोजन जलवायु परिवर्तन और पहले से मौजूद नीतियों के बेहतर क्रियान्वन आदि से संबंधित मुद्दों को उठाता है।

वहीं अगर बात करते हैं कि पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता क्यों पड़ी तो इसके बहुत सारे कारण थे। जैसा कि हम जानते हैं कि ग्लेशियर पिघल के समुद्र के पानी के स्तर को बढ़ा रही है, जो कि बाद में बाढ़ का भी काम कर रहा है। और ज्वार भाटा जो कि पहले से काफी ज्यादा बढ़ गया है, यह भी पर्यावरण संरक्षण न होने का एक बहुत बड़ा कारण है।

पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, ग्रीनहाउस के प्रभाव, ग्लोबल वार्मिंग, ब्लैक हॉल इफेक्ट आदि को कम या कंट्रोल करने के लिए पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता है। वन क्षेत्र का कम होना एक बहुत बड़ा कारण है कि पेड़ लगातार काटे जा रहे हैं। जिससे कि पर्यावरण संरक्षण में दिक्कतें पैदा हो रही है और पर्यावरण में बहुत सारी प्रजातियां लुप्त हो रही है।

नदियों का जल लगातार प्रदूषित हो रहा है जिसका पर्यावरण संरक्षण करना बहुत ही आवश्यक है। पर नदियों में ज्यादातर गंदी नालियों का पानी मिलाया जा रहा है और पानी दूषित और विषैला होने लगा है।

ग्लोबल वार्मिंग लगातार बढ़ रहा है इसलिए पर्यावरण संरक्षण बहुत ही आवश्यक है। कितने पेड़ हम लगाएंगे जिससे की ठंडक पैदा होगी दिन पर दिन पृथ्वी का टेंपरेचर हर 5-10 सालों में दो डिग्री बढ़ता जा रहा है जो कि ग्लोबल वार्मिंग जैसी खतरनाक चीजों को जन्म दे रहा है।

मेथेन गैसों के साथ-साथ क्लोरोफ्लोरोकार्बन की भारी उपस्थिति ने ओजोन परत को बड़े पैमाने पर नष्ट कर दिया है। घर पर कई क्षेत्रों में अम्ल वर्षा, त्वचा कैंसर हुआ है इसलिए पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

पर्यावरण संरक्षण के तरीके - आज के युग में अगर बात की जाए तो सरकार के प्रयास सराहनीय है। पर सरकार के प्रयास तभी पूरे हो पाएंगे जब व्यक्ति पर्यावरण के लिए अपनी उपस्थिति को प्रासंगिक बनाएगा। अगर आदमी अपनी तरफ से कोई प्रयास न करें तब पर्यावरण का संरक्षण करना सरकार के लिए भी असंभव हो जाएगा। जरूरत है कि हर आम आदमी अपनी जिम्मेदारियां को समझे, वह समझे कि पर्यावरण को सुरक्षित करने के लिए वह कौन से छोटे-छोटे उपाय कर सकता है। हर पुरुष, स्त्री, बच्चों को अपनी-अपनी तरफ से पर्यावरण संरक्षण में भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए और एक दूसरे को पर्यावरण संरक्षण का महत्व समझ कर जन आंदोलन के रूप में जन भागीदारी को बताना चाहिए। आज का युग वैज्ञानिक युग है। नई-नई खोज और अविष्कार लगातार किये जा रहे हैं। पर्यावरण संरक्षण का उपयोग करने के लिए उसे टीवी, रेडियो, समाचार पत्रों, यूट्यूब चौनल जहां भी उसे लगे पर्यावरण के प्रति लोगों में जागरूकता को बढ़ाना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण के तरीको की अगर बात की जाए, तो व्यक्ति को अपने स्तर पर प्रयास करना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण के तरीके और मुख्य विधियों को समझते हैं। जिनसे की पर्यावरण संरक्षण को सरल बनाया जा सकता है। जैसे की प्रथम प्रयास हमें फॉरेस्ट कन्वर्सेशन का करना चाहिए, क्योंकि पेड़-पौधे, हवा, भोजन के साथ-साथ हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले दैनिक उत्पाद शामिल है, जो की वन से हमें प्राप्त होते हैं या फिर वन्य जीवों से हमें प्राप्त होते हैं। ऐसे में हमें चाहिए कि पेड़ों की कटाई को रोका जाए और अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाएं, जिससे कि पारिस्थितिक संतुलन भी बनाया जा सके और व्यक्ति को इन्हीं सब चीजों की पूर्ति की जा सके। दूसरा तरीका बहुत ही अच्छा है जिसके अंतर्गत हम पानी के उपयोग को संभाल कर कर सकते हैं। क्योंकि हमने देखा है कि व्यक्ति ज्यादातर पानी का उपयोग गलत तरीके से करते है। अगर तीसरे तरीके की बात की जाए तो वेस्ट मैनेजमेंट और रीसाइकलिंग प्रोसेस को हमें अपनाना चाहिए, जिससे कि प्रदूषण कम

फैले और चीजों का उपयोग दोबारा किया जा सके इसी प्रयास में सूती बैग का प्रयोग अगर हम करते हैं और प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाते हैं तो प्लास्टिक के द्वारा हो रहे वायु प्रदूषण, स्थल प्रदूषण को रोका जा सकता है। और जानवरों को भी सुरक्षित रखा जा सकता है। चौथे स्तर पर अगर बात की जाए तो सॉइल कन्वर्सेशन यानी मृदा संरक्षण यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसके द्वारा हम मिट्टी के कटाव को रोक सकते हैं और पृथ्वी पर हो रहे मृदा के दोहन को रोका जा सकता है। पांचवें स्तर पर बात की जाए तो हम वाटर कन्वर्सेशन यानी जल संरक्षण की बात कर रहे हैं। जल संरक्षण हमारे लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि आज दुनिया में कई देश ऐसे हैं, जहां पर जल पूर्ण रूप से खत्म हो चुका है। और भारत भी अवस्था में आने में कुछ ही दूरी पर है, क्योंकि यहां पर बहुत सारी प्राकृतिक नदियां हैं और बरसाती नदियां हैं। उसके बाद भी पानी का कन्वर्सेशन या संरक्षण पूर्ण रूप से नहीं हो पा रहा है।

अगले पर्यावरण संरक्षण की बात करें तो वाइल्डलाइफ प्रोटक्शन यह बहुत ही जरूरी है। इसके द्वारा हम उन प्रजातियों को विलुप्त होने से रोक सकते हैं, जो कि आज खतरे के निशान पर है। इसके लिए पेड़ों की कटाई को रोकना, वहां पर पानी की पूर्ति होना, वहां पर हाईवे का न निकलना, यह सब चीज वाइल्डलाइफ रिजर्व को सुरक्षित रखती हैं।

डाइवर्सिटी संरक्षण यानी जैव विविधता संरक्षण, पर्यावरण के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण एवं जरूरी प्रक्रिया है। इसके द्वारा हमारी जैव विविधता को बचाया जा सकता है।

पर्यावरण संरक्षण में समस्याऐं – पर्यावरण संरक्षण में बहुत सारी समस्याओं को जन्म दिया है। इन समस्याओं में वायु प्रदूषण, जलप्रदूषण, भूमि प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता, प्राकृतिक आपदाएं, संसाधनों की कमी, कचरे का प्रबंध, भूजल स्तर गिरना और मिट्टी का क्षरण शामिल है। इसके अलावा जंगलों की कटाई और वनों का उपयोग काफी मात्रा में किया जा रहा है। जिससे मनुष्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। जल संकट जैसी समस्याएं बढ़ती ही जा रही है। जिससे कि मनुष्य को कई राज्य में पानी उपलब्ध नहीं है, जिसमें राजस्थान इसमें पहले नंबर पर आता है। वहीं पर अगर गुजरात और दिल्ली की बात की जाए तो वहां पर वायु प्रदूषण, कंपनियां होने के कारण चरम सीमा पर है। सही बात तो यह है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए मानव स्तर पर कार्य बहुत ही निम्न किया जा रहे हैं। जिससे कि पर्यावरण संरक्षण एक सही दिशा में कार्य नहीं कर पा रहा है। अगर हमें पर्यावरण संरक्षण को करना है, तो मनुष्य को एक सही दिशा में कार्य करना होगा और उसे आगे आकर और भी लोगों को प्रेरित करना होगा। समस्याओं का जन्म मनुष्यों के द्वारा ही होता है और आज जो समस्या, पर्यावरण संरक्षण को लेकर आ रही हैं, उसमें भी कहीं ना कहीं मनुष्य ही जिम्मेदार है। हमें चाहिए कि मनुष्य शिक्षा के साथ-साथ जागरूक भी बने। शिक्षा के महत्व को समझें और अपने दैनिक दिनचर्या में पर्यावरण के प्रति अपनी कर्तव्यों को पूर्ण करें। आज का प्राणी बहुत ही व्यस्त प्राणी है। वह हर उस चीज का उपयोग कर रहा है, जो कि उसके जीवन को सही दिशा की वजह गलत दिशा की ओर ले जा रही है। आज भी कुछ गांव कुछ राज्य ऐसे हैं, जहां पर मनुष्य, जागरूकता को खुद ही बढ़ावा दे रहे हैं। लेकिन वही कुछ राज्य और गांव ऐसे भी हैं, जहां पर प्रदूषण और पर्यावरण का अत्यधिक दोहन हुआ है। हमें चाहिए कि हम अपनी आने वाली पीढ़ी को सुरक्षित रखने के लिए आज से ही पर्यावरण के प्रति जागरूक हो जाए और अपने आने वाले बच्चों को भी पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाएं। पर्यावरण संरक्षण में अगर सबसे बड़ी समस्या है, तो वह जनसंख्या समस्या है। प्राचीन काल में जनसंख्या कम होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति के पास भूखंड अत्यधिक हुआ करते थे। जिसके कारण वह कुएं, तालाब, पेड़-पौधे काफी मात्रा में लगाता था और उसका उपयोग भी करता था। अब जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती जा रही है, प्राकृतिक संसाधन की कमी होती जा रही है और उनका दोहन अत्यधिक हो रहा है। जिसकी वजह से अब पहले जैसे तालाब कुएं का निर्माण नहीं किया जा रहा है। जिससे कि वाटर कन्वर्सेशन में भी कमी आने लगी है और मृदा का संरक्षण भी नहीं हो पा रहा है। हमारी वायु प्रदूषण होने लगी है, हमारा जल भी प्रदूषित होने लगा है और पर्यावरण संरक्षण के नाम पर सिर्फ बातें की जा रही है। लेकिन उसे सकारात्मक रूप नहीं दिया जा रहा है।

निष्कर्ष – जब भी हम पर्यावरण संरक्षण की बात करते हैं तो सकारात्मकता के साथ नकारात्मकता भी आती है, क्योंकि पर्यावरण संरक्षण दोनों को एक साथ लेके चलता है। अगर हम सकारात्मकता की बात करें, तो हर व्यक्ति जो कि पर्यावरण में अपना समय दे रहा है और पर्यावरण में सुधार कर रहा है, साथ में लोगों को जागरूक बना रहा है। ये एक सकारात्मकता है जो कि भारतीय दृष्टिकोण में पाई जाती है। वहीं इसका दूसरा पहलू जो कि नकारात्मक है व्यक्ति पानी को गन्दा कर रहा है, वायु प्रदूषण फैला रहा है, ध्वनि प्रदूषण फैला रहा है, जंगलों को काट रहा है, जिससे पर्यावरण संरक्षण जैसी गंभीर समस्याएं पैदा हो रही है। यह एक नकारात्मकता का उदाहरण है। भारतीय दृष्टिकोण में पर्यावरण संरक्षण का महत्व सर्वाधिक है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान युग तक पर्यावरण संरक्षण के लिए कई सारे प्रयास किए गए। आज भी मनुष्य पर्यावरण से जुड़कर कई प्रकार के एनजीओ के साथ मनुष्यों को जाग्रत कर रहा है। हमारे भारत में पर्यावरण संरक्षण के लिए स्कूल के साथ-साथ कॉलेजों में भी शिक्षाओं का प्रारम्भ किया जा चुका है। भारतीय युवा अब जागृत हो चुका है और आगे बढ़कर पर्यावरण संरक्षण में भाग ले रहा है। पर्यावरण संरक्षण के लिए आज कानूनों का विकास किया जा चुका है। पर्यावरण संरक्षण में हर प्रकार के कानून बनाए जा चुके हैं, जिसके द्वारा हर प्रकार से पर्यावरण के लिए दोहन को रोका जा सके। चाहे भूमि की बात हो या फिर वायु, जल, ध्वनि और अन्य प्रकार के प्रदूषणों की। राज्य सरकार सभी को रोकने के लिए कड़े उपबंध बना रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी (परीक्षा मंथन : अनिल अग्रवाल)
2. पर्यावरणीय विधि (चुनौतियाँ, विश्लेषण और भविष्य : अनूप कुमार और प्रो. बी.सी. निर्मल)
3. पर्यावरण एवं पर्यावरण संरक्षण विधि की रूपरेखा (डॉ. अनिरूद्ध प्रसाद)
4. पर्यावरण अध्यपयन (मोतीलाल बनारसीदास)
5. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी (माजिद हुसैन)
6. इंटरनेट
7. न्यूनजपेपर लेख जनसत्ता (पर्यावरण की खातिर)
8. पर्यावरण : भारत सरकार (पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय नई दिल्ली : लेखक आर. के. गुप्ता, ऋचा शर्मा)
9. ENN : Environment News Network
10. पर्यावरण पत्रिका : पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की हिन्दी पत्रिका

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

न्याय की देवी : भंगाराम माई (बस्तर के विशेष संदर्भ में)

डॉ. (श्रीमती) बसंत नाग* प्रो. एन. आर. साव**

* सहायक प्राधयापक (समाजशास्त्र) भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कांकेर, जिला–उत्तर बस्तर, कांकेर (छ.ग.) भारत
** सहायक प्राधयापक (हिंदी) भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कांकेर, जिला–उत्तर बस्तर, कांकेर (छ.ग.) भारत

प्रस्तावना – प्रत्येक क्षेत्र के जनजातियों की अलग–अलग सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक मान्यतायें होती हैं, जो उनके विशिष्टि पहचान को परिलक्षित करती है। जनजाति समुदाय में मृतकों की पूजा देवतुल्य मानकर की जाती है, आत्माओं का विशिष्ट स्थान होता है। धर्म और जादू–टोना कर मान्यता उनके समाज की आस्थाओं की पूर्ति नहीं करता बल्कि प्रकृति से भी जोड़कर रखता है। धर्म और जादू–टोना शारीरिक और मानसिक आस्थाओं की पूर्ति के साथ–साथ उपयोगी साधन के रूप में समाज में स्थापित प्रचलित मान्यताओं को पूर्नजीवित करती है। धार्मिक शक्तिओं को जब तक नहीं माना जाता, तब तक व्यक्ति और समाज के लिये हितकारी नहीं होता। धर्म लाभदायक और विनाशकारी सिद्ध हो सकता है। जनजाति समाज में जादू–टोना स्थानीय बीमारियों एवं उनके उपचार के स्वरूप का निर्धारण भी करता है। जीववाद एक जनजाति के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। स्थानीय समस्याओं को दूर करने के लिये सार्थक मार्ग प्रशस्त करतें हैं।

बस्तर जनजाति बाहूल्य क्षेत्र है, यह आदिम मनुष्य की सबसे अनोखी और दुर्लभ संस्कृति को संरक्षित करने के साथ–साथ एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक हस्तानांतरित भी करती है। जनजातियों के अपने नियम और कानून हैं।

छत्तीसगढ़ का बस्तर क्षेत्र हमेशा से ही लोगों के लिए आर्कषक का केन्द्र है। जनजाति बाहुल्य क्षेत्र में अनेक जनजाति निवास करते हैं जिसमें गोड़, मुरिया, दोरला, परजा, भरता, धुवा प्रमुख हैं। इनकी अनोखी परंपराएं रहस्यमयी संस्कृति धार्मिक मान्यताओं से जुड़ी अनेक देवी देवतायें हैं। ऐसी देवी देवताओं से संबंधित एक प्रमुख देवता है जिनकी अद्भूत अदालत है जो प्रत्येक वर्ष मानसून के दौरान आश्चर्यजनक रूप से देवी देवताओं का अदालत लगता है, यहाँपर जज से रूप में स्थापित देवी **'भंगाराम देवी'** है। देवी देवताओं पर मुकदमा चलाया जाता है और जो भी देवी–देवता अपने कार्यों के प्रति दोषी पायें जाने पर दण्ड भी दिया जाता है। यह अदालत भंगाराम देवी मंदिर में तीन दिनों तक चलती है। इस अद्भूद और अनोखे उत्सव में 240 गाँवों के लोग दिव्य अदालत की प्रक्रिया को जानने के लिए एकत्र होते हैं। जिन देवी देवताओं के खिलाफ शिकायतें दर्ज मिलती है उनकी समस्याओं को सुनकर मुकदमा चलायी जाती है। शिकायतें किसी भी प्रकार की हो सकती है– फसल उत्पादन की कमी, स्वास्थ्य संबंधी समस्या, लंबी बीमारी, गवाही के रूप में मुर्गियों को प्रस्तुत किया जाता है। जिन लोगों को अपने प्रश्नों के उत्तर और समस्या का समाधान नहीं मिल पाता तो वह देवता दोषी माने जाते हैं। गवाही देने और आरोप सत्य पाये जाने पर दोषी देवी–देवता के लिए सजा का निर्धारण होता है। देवी–देवताओं के सजा का निर्धारण दो तरीके से होता है उन्हें मंदिर से बाहर निकाल दिया जाता है।कभी–कभी उन्हें जीवन भर के लिए अर्थात् आजीवन कारावास की सजा दी जाती है और दूसरा उन्हें सुधरने का मौका भी दिया जाता है। यहाँ पर परिवारिक देवी–देवताओं से संबंधित एवं ग्राम देवी देवताओं के लिए सजा का निर्धारण होता है। पहले इस मंदिर में महिलाओं का जाना वर्जित था लेकिन विगत दो तीन वर्षो से महिलाओं को भी प्रवेश करने का अधिकार दिया गया है।

भंगाराम देवी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की विवेचना करने से साफ होता है कि भंगाराम मंदिर की स्थापना 1700–1800 ईस्वी में राजा भाई राम देव के शासन काल में किया गया था। जनजातियों के विषय में विशेषकर बस्तर के संदर्भ में जानकारी रखने वाले प्रबुद्ध विद्धान **प्रो. एम. अली. एन सैय्यद** के अनुसार :– 'जनजातियों के देवी–देवताओं में विविध अंतर पाये जाते हैं सभी गांवों में एक ही तरह के देवी–देवताओं को अराध्य मानकर पूजा पाठ, अराधना करते हैं। सबसे दिलचस्प बात यह है कि अगर किसी देवता को सजा मिलती है तो उसका बहिष्कार किया जाता है। मंदिर के पिछले हिस्से में उन्हें छोड़ दिया जाता है।

स्थानीय ग्रामीणजनों, जनतातियों को इस बात का विश्वास होता है कि भंगाराम देवी द्धारा सुनाया गया फैसला अंतिम फैसला होता है। टॉइम्स ऑफ इंडिया में इस बात का उल्लेख मिलता है कि यहाँ पर डोली, कुल्हाड़ी, बॉक्स, ड्रम जैसे आकार के कुल देवता भी मिले। इन सभी देवताओं की मूर्ति पत्थर और लकड़ियों से बनी होती है। स्पष्ट है कि यहाँ पर मूर्तियों में प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं से निर्माण किया जाता है।

भंगाराम देवी को लेकर ऐसी मान्यता है कि वह कई शताब्दी पूर्व वारंगल (जो वर्तमान में तेलंगाना) से बस्तर आयी थी। भंगाराम देवी ने यहाँ के स्थानीय राजा से बसने के लिए जमीन भी मांगी थी तब उन्हें केशकाल के पास प्राकृतिक सौन्दर्य और पर्वतों से परिपूर्ण रमणीय स्थल पर जमीन प्रदान की गयी थी। यहाँ पर अवस्थित डॉक्टर खान के बारे में यह कहा है कि, वे आदिवासिओं को हैजा और छोटी माता जैसी महामारी के दौरान मद्द की थी। उन्हें स्थानीय लोग देवतुल्य मानकर देवता का दर्जा दिया था। खान डॉक्टर एक छड़ी के रूप में भंगाराम देवी के मेदिर में स्थापित है। ग्रामीण लोग उन पर नीबू और अण्डे अर्पित करते हैं। डॉक्टर खान नागपुर से बस्तर आये थे, बस्तर में यह वह स्थान है जहाँ पर भक्तगणों के संकट का निदान करने पर देवताओं का परीक्षण और निर्णय किया जाता है। बस्तर के केशकाल घाटी के शिखर पर भंगाराम देवी का दरबार लगता है।

केशकाल में देवी भंगाराम माई का मंदिर न्याय की देवी के रूप में सैकड़ों वर्षों से पूज्यनीय है। जहाँ वर्ष भर में किये गये कार्यों का लेखा जोखा होता है। आदिम व्यवस्थाओं ऐसी है जो हमारी कल्पना से परे है जिन देवी-देवताओं की पूजा पूरी आस्था और विश्वास की जाती है। उन्हीं देवी-देवताओं को भक्तों के शिकायतों के आधार पर दण्ड भी दिया जाता है। यह दण्ड सामान्य दण्ड नहीं होता बल्कि सामूहिक बहिष्कार, निष्काशन, आजीवन सजा, सुधरने का मौका जैसे सम्मिलित हैं। देवी की अदालत में ग्रामीण वकीलों की भूमिका का निर्वहन करते हैं और मुर्गियों को गवाह के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। हर सुनवाई के बाद मुर्गियों को छोड़ दिया जाता है तत्पश्चात सजा का ऐलान किया जाता है और इसे देवी की इच्छा मानकर स्वीकार किया जाता है। प्रोबेशन और पैरोल की तरह भंगाराम मंदिर में केवल सजा नहीं मिलती बल्कि यहाँ पर देवी सुधार का भी अवसर देती है और अगर सुधर जाते है तो उन्हें फिर से मंदिर में रख लिया जाता है।

इन आस्थामूलक परम्पराओं को बाह्य व्यक्तियों की नजर में मूल्यांकित करना गलत होगा। इस परम्परा को मंदिर के पांचवी और छठीं पीढ़ी के द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा है। विशेष बात यह है जिन देवी-देवताओं के आरोप सिद्ध हो जाते हैं उनकी मूर्तियों पर लगी सोने और चांदी के श्रृंगार को नहीं हटाया जाता। अब तक बाहर रखी मूर्तियों की चोरी होने की कोई रिपोर्ट नहीं मिली है क्योंकि जनजातियों की मान्यताएं हैं कि उनका ऐसा कृत्य दैविय न्याय की मांग करेगा। किसी भी अदालत की तरह मंदिर में एक बही-खाता भी रखा जाता है जिसमें सभी मामलों का विवरण सूचीबद्ध होता है। आरोपी देवताओं की संख्या, उनके कथित अपराधों की प्रकृति, गवाह और अंतिम निर्णय सब कुछ इनमें दर्ज होता है। हर चीज का दस्तावेजीकरण होता है कि कितने देवता उपस्थित हुए और कितने को दण्डित किया गया है।

प्रत्येक समाज की सामाजिक व्यवस्था भिन्न-भिन्न होती है। समाज में शांति और व्यवस्था बनाये रखने के लिए कुछ नीति-नियमों का निर्माण किया जाता है, जो नियमों का पालन करते हैं तो समाज में व्यवस्था बनती है और जो व्यक्ति नियमों का पालन नहीं करने उन्हें दण्डित भी किया जाता है। ठीक उसी प्रकार देवी-देवताओं से संबंधित भी नियम होते हैं उन्हे अपने कर्जव्यों का निर्वाह करना होता है।अपने कर्तव्यों का निर्वाह नहीं करने पर दण्डित होना पड़ता है। बस्तर जिले के केशकाल कस्बे में प्रतिवर्ष **भादों जात्रा उत्सव** उल्लास और धूमधाम के साथ मनाया जाता है। यहाँ की भंगाराम देवी इस क्षेत्र के **नौ परगना** के राजस्व ग्राम में स्थापित एक हजार से भी अधिक ग्राम देवी देवताओं की प्रमुख अराध्य देवी है। भादो महीने के अंतिम शनिवार को सभी भंगाराम देवी के दरबार में उपस्थित होते हैं। इससे पूर्व देवी भंगाराम की सेवा, अराधना, पूजा, लगातार छ: शनिवार तक होती है। उपस्थित देवी देवताओं का परम्परानुसार स्वागत कर उन्हें पद और प्रतिष्ठा के अनुसार स्वागत करके स्थान दिया जाता है। इनके साथ प्रतिनिधि के रूप में पुजारी, गायता, सिरहा, ग्राम प्रमुख, मांझी-मुखिया और पटेल भी सम्मिलित होते हैं। पूजा-सत्कार के पश्चात वर्ष भर प्रत्येक गांव के सुख-शांति, सबके स्वस्थ्य रहने, अच्छी उपज और किसी भी तरह से दैवीय आपदा से हर जीव की रक्षा के लिए मन्नत मांगी जाती है। देवी देवताओं को प्रसन्न और शांत रखने के लिए प्रथानुसार बलि और अन्य भेंट भी दी जाती है। बिना मान्यता के किसी भी नये देव की पूजा का प्रावधान यहाँ पर नहीं है। यहाँ सजा के प्रावधान होते हैं वह भी लोगों को अचंभित करने वाला होता है। न्यायाधीश के रूप में भंगाराम देवी सजा का निर्धारण करती है। देवी-देवताओं को यहाँ निलम्बन, बर्खास्तगी, मान्यता समाप्ति से लेकर आजीवन कारावास तक की सजा दी जाती है।इस पूजा में 20 कोस बस्तर, 7 पाली ओड़िसा, 10 परगना सिहावा के 500 से अधिक देवी-देवता सम्मिलित होते हैं। वर्ष भर में लगने वाले इस मेले में महिलाओं का प्रवेश वर्जित है। भंगाराम माई के अलावा डॉक्टर देव, किसौली देव, फॅण्डपार बाबा भी उपस्थित होते हैं। इस वर्ष 200 आंगा देव, डोली, छत्र, डाँग के अनेक देवी देवता शामिल हुए। यहाँ के लोगों की मान्यता है कि हर विपत्ति के लिए देवी-देवता ही जिम्मेदार होते हैं, विभिन्न गांवों से आये देवी-देवताओं में से शैतान देवी देवताओं की शिकायत की जाती है। तत्पश्चात आंगा, डाँग, डोली के साथ लाए गये मुर्गी, बकरी, डाँग को खाई नुमा गहरे गड्ढे के किनारे फेक दिया जाता है। उन्हें ग्रामीण कारागार (जेल) कहते हैं। वास्तव में धर्म एक ऐसी शक्ति है जो उस विश्वास और अधिमान्यताओं को दर्शाता है जो मानवीय सोंच से परे होते हैं। वर्तमान समय में आधुनिकीकरण और विज्ञान तथा प्रौद्योगीकरण के विकास होने के कारण इसका प्रभाव सभी समाजों में दिखाई पड़ रहा है। लेकिन परिवर्तन के इस दौर में उसपर अटूट विश्वास, धर्म और धार्मिक मान्यताओं को जीवंत रख कर अपने विशिष्टि पहचान से साक्षात्कार कराते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1 NBT नवभारत टाईम्स 08 सितम्बर 2024, https:/ naybharattimes.indiatimes.com
2. जनसत्ता 10 सितम्बर 2024 (पवन उप्रेती)
3. The Times Of India
4. NDTV India
5. बस्तर भूषण
6. Express MPCG NEWS
7. Research Journal of Humanities and Social Science.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

शासकीय कन्या महाविद्यालय सीहोर में पाए जाने वाले इथनोमेडिसनल पौधों का अध्ययन

डॉ. राजेश बकोरिया*

* सहायक प्राध्यापक (वनस्पति शास्त्र) शासकीय कन्या महाविद्यालय, सीहोर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – शासकीय कन्या महाविद्यालय सीहोर जिले का एक मात्र कन्या महाविद्यालय है। इस महाविद्यालय में लगभग 150 पौधों में से कुछ इथनो–मेडिसनल पौधें है जैसे नीम, तुलसी, शीशम, आक, धतूरा, आंवला, गोंदी, रातरानी, नींबू, गुड़हल आदि इन पौधों में से इस रिसर्च पेपर में हम पॉच इथनो–मेडिसनल पौधे अपामार्ग, जामुन, तुलसी, नींबू एवं सहजन के बारे में विस्तृत वर्णन कर रहे है।

क्र.	सामान्य नाम	वानस्पतिक नाम	कुल
1	नीम	एजेडेरेक्टा इंडिका	मेलीऐसी
2	तुलसी	ऑसीमम सेंक्टम	लेमीऐसी
3	रातरानी	सेक्ट्रम नॉक्टर्नम	सोलेनेसी
4	नींबू	सिट्रस ओरेंटीफोलिया	रूटेसी
5	शीषम	डेलवर्जिया सिस्सु	फेबेसी
6	आक	केलोट्रोप्रिस प्रेसेरा	एस्क्लेपियाडेसी
7	धतूरा	धतूरा स्ट्रेमोनियम	सोलेनेसी
8	आंवला	फाइलेंयस एम्बलिका	फाइलेंथेसी
9	बेलपत्र	एगल मार्मेलोस	रूटेसी
10	लेमनग्रास	सिम्पोगान फ्लेक्सुओसस	पोऐसी
11	गुड़हल	हिबिस्कस रोजा–साइनेंसिस	मालवेसी
12	अशोक	सराका इंडिका	फेबेसी
13	करंज	पोंगैनिया ग्लैब्रम	फेबेसी
14	कबीट	सिमोनिया एसीडिसनिया	रूटेसी
15	गिलोय	टीनोस्पोरा कार्डिफोलिया	मेनीर्स्पमिऐसी
16	जामुन	साइजीजियम क्यूमिनी	मिर्टेसी
17	पुंवार	केसिया टोरा	फेबेसी
18	भटकटेरी	सोलेनम जेन्थेकारपम	सोलेनेसी
19	मीठा नीम	मुराया कोएगिनी	रूटेसी
20	सहजन	मोरिंगा ओलीफेरा	मोरिंगेसी
21	अरंडी	रेसीनस कम्यूनिस	यूफोरबिऐसी
22	अपामार्ग	एकाइरेंथस एस्परा	एमेरेंथेसी
23	पीली कनेर	थेवेंसिया पुरवियाना	एपोसाइनेसी
24	अनार	प्यूनिका ग्रेनेटम	लिथेसी
25	आम	मेंगीफेरा इंडिका	एनाकार्डियेसी
26	इमली	टेमेरेंडिस इंडिका	फेबेसी
27	एलोय वेरा	ऐलो बार्बडेंसिस	लिलियेसी
28	पीपल	फाइकस रिजेजीओसा	मोरेसी
29	गुलर	फाइकस रेसीमोसा	मोरेसी
30	सत्यानाशी	आर्जीमोन मेक्सिकाना	पेपावरेसी

1. अपामार्ग (लटजीरा)

सामान्य नाम – अपामार्ग

वानस्पतिक नाम – एकाइरेंथस एस्परा

कुल – एमेरेंथेसी

यह पौधा भारत में जंगली अवस्था में गॉवों, शहरों में रोड के किनारों पर सर्वत्र पाया जाता है यह सामान्यत: बारिश के मौसम में पाया जाता है, शीत ऋतु में फलता फूलता है एवं गर्मी में सूख जाता है इसके बीज चावल जैसे होते है, अपामार्ग का पौधा 1–3 फुट ऊॅचा होता है शाखाऐ पतली होती है पर्वसंधि फूली एवं मोटी होती है, पुष्प स्पाइक क्रम में लगे होते है, कॉटे युक्त वृत्त होने के कारण फल कपड़ो में चिपक जाते है। यह कफ एवं पित्त शोधक होता है।

औषधीय महत्व :

1. अपामार्ग की जड़ खांसी, दमा नाशक होती है इसके 8–10 सूखे पत्तों को हुक्के में रखकर पीने से श्वास रोगों में फायदा होता है।
2. अपामार्ग की जड़ का चूर्ण 6 ग्राम व 7 ग्राम काली मिर्च का चूर्ण सुबह शाम ताजे जल के साथ लेने से लाभ होता है।
3. अपामार्ग के बीजों को पीसकर 3 ग्राम चूर्ण चावलों की धोवन से साथ लेने से बवासीर में फायदा होता है।
4. अपामार्ग के पंचाग का काढ़ा 50–60 ग्राम के लगभग खाने से पहले लेने पर पेट दर्द में आराम मिलता है।
5. अपामार्ग की ताजी जड़ 5 से 10 ग्राम पानी में घोलकर पीने से पथरी टुकड़े में टूटकर निकल जाती है।
6. प्रसव पीड़ा प्रारंभ होने से पहले अपामार्ग की जड़ को धागे में बॉधकर कमर में बांधने से प्रसव आसानी से होता है प्रसव के बाद इसे हटा देना चाहिए।
7. बिच्छु, ततैया एवं जहरीले कीड़ों के काटने पर पत्तियों का रस लगाने से जहर उतर जाता है।
8. अपामार्ग के 10–20 पत्तों को 5–10 काली मिर्च एवं 5–10 ग्राम लहसन को पीसकर 05 गोलियां बना ले एवं 1–1 गोली खाने से

सर्दी के कारण आने वाला बुखार ठीक हो जाता है।

9. अपामार्ग के पत्तों को पीसकर फोड़े-फुंसी एवं चर्म रोगों पर लगाने से ठीक हो जाते है।

2. जामुन

सामान्य नाम - जामुन

वानस्पतिक नाम - साइजीजियम क्यूमिनी

कुल - मिर्टेसी

जामुन का पौधा सदाबहार जंगली एवं सर्वत्र पाए जाते है, इसका वृक्ष बड़ा 100 फुट ऊँचा तथा 12 फुट तक मोटा होता है इसके पत्ते 3-6 इंच लंबे, 2-3 इंच चौड़े, भालाकार, चर्मवत चिकने चमकीले होते है। इसके फल) से 1) इंच लंबे, अंडाकार गहरे नीले काले रंग के होते है। इसमें उड़नशील तैल, गैलिक एसिड, वसा, राल आदि पाए जाते है। जामुन की गुठली में ग्लूकोसाइड होता है जो डायबिटिज रोधी होता है, छाल में टेनिन पाया जाता है इसमें गोंद भी पाया जाता है।

औषधीय महत्व :

1. जामुन के पत्तों की राख दॉतों एवं मसूड़ो पर मालिश करने से दॉत और मसूड़े मजबूत होते है।
2. जामुन के 5-6 नरम एवं ताजा पत्तों को पीसकर कुल्ला करने से मुँह के छाले ठीक हो जाते है।
3. जामुन की 100 ग्राम जड़ साफ करके 250 ग्राम पानी में पीसकर 20 ग्राम मिश्री डालकर सुबह-शाम भोजन से पहले पीने से डायबिटीज में लाभ होता है।
4. जामुन के फलों को धूप में सुखाकर चूर्ण बना लें 10-20 ग्राम चूर्ण दिन में तीन बार सेवन करने से डायबिटीज में लाभ होता है।
5. जामुन के कोमल पत्तों के 20 ग्राम रस में थोड़ी शक्कर मिलाकर दिन में तीन बार पीने से बवासीर में लाभ होता है और खून बहना बंद हो जाता है।
6. जामुन की छाल का 2-5 ग्राम चूर्ण 250 ग्राम दूध के साथ 2 चम्मच शहद के साथ पीने से दस्त में लाभ होता है।
7. आम तथा जामुन के कोमल पत्तों को (समभाग) 20 ग्राम लेकर 400 ग्राम पानी में पकावें एक चौथाई भाग बचने पर काढे को ठंडा करके पिलाने से उल्टी में लाभ होता है।
8. पके हुए जामुन खाने से पथरी गल कर निकल जाती है।
9. जामुन के 5-6 पत्तों का पुल्टिस बॉधने से घावों में से पीव निकल जाती है और घाव ठीक हो जाता है।
10. जूता काटने से यदि पांव में घाव हो जाए तो जामुन की गुठली को पानी में पीसकर लगाने से घाव ठीक हो जाता है।

3. नींबू

सामान्य नाम - नींबू

वानस्पतिक नाम - सिट्रस ओरेंटिफोलिया

कुल - रूटेसी

नींबू का पौधा छोटा, झाड़ीनुमा कंटीले वृक्ष होते है। पत्तियॉ छोटी होती है, पत्तियों को रगड़ने पर सुंगध आती है, फल गोल, चिकने होते है, जो अपरिपक्व अवस्था में हरे तथा पकने पर पीले रंग के हो जाते है। नींबू की विशेषता है कि इसके फल पकने पर भी खट्टे रहते है यह विटामिन सी का मुख्य स्रोत है। फलों के रस में सिट्रिक एसिड, फॉस्फोरिक एसिड, मेलिक एसिड आदि पाया जाता है।

औषधीय महत्व :

1. नींबू के रस को मस्तक पर लेप करने से मस्तिष्क रोगों में आराम मिलता है।
2. नींबू की दो फांको को गरम करके कनपटियों पर एक घंटे तक सेक करने से मस्तिष्क पीड़ा ठीक होती है।
3. नींबू के रस में आंवले के फलों को पीसकर बालों में लगाने से रूसी नष्ट हो जाती है।
4. नींबू का रस चेहरे पर लगाने से कील मुंहासे ठीक हो जाते है।
5. झुर्रियां ठीक करने के लिए नींबू के रस में शहद मिलाकर चेहरे पर लगाना चाहिए।
6. जीभ के छालों व मसूड़ो पर नींबू का छिलका रगड़ने से लाभ होता है।
7. भोजन करने के बाद होने वाली उल्टी को ठीक करने के लिए नींबू का रस 5-10 मि.ली. सेवन करना चाहिए।
8. नींबू के रस का सेवन करने से आंतों के अंदर टायफाइड दस्त, हेजा आदि के कृमि मर जाते है।
9. सुबह-सुबह खाली पेट 200 ग्राम गुनगुने पानी में 2 चम्मच नींबू का रस और 01 चम्मच शहद मिलाकर पीने से मोटापा कम होता है।
10. दाद, खाज, खुजली पर नींबू काटकर रगड़ने से फायदा होता है।

4. सहजन

सामान्य नाम - सहजन

वानस्पतिक नाम - मोरिंगा ओलीफेरा

कुल - मोरिंगेसी

सहजन का पौधा छोटा, मध्यम आकार के वृक्ष होते है इसकी छाल एवं काष्ठ मृदु होती है। जब पेड़ पर फलियां लगती है तो वजन के कारण डालियॉ टूट जाती है इसकी शाखाएँ कमजोर होती है। इसमें मौरिंगन नामक एल्केलाइड पाया जाता है, जड़ में टेरिगोस्पार्मिन होता है जो जीवाणु एवं कवकनाशी होता है इससे गोंद निकलता है जो लाल भूरा होता है।

औषधीय महत्व :

1. सहजन की छाल को जल में घिसकर 1-2 बूंद नाक में डालने से मस्तिष्क ज्वर में लाभ होता है।
2. सहजन के पत्तों को पानी के साथ पीसकर लेप लगाने से मस्तक पीड़ा ठीक होती है।
3. सहजन के गोंद को मुहॅ में रखकर चूसने से दॉतों का सड़न रूक जाता है।
4. इसकी जड़ के 10 ग्राम रस में 2 ग्राम सोंठ डालकर सुबह शाम पीने से पाचन शक्ति बढ़ती है।
5. सहजन की फलियों की सब्जी खाने से आंतों के कीड़े मर जाते है।
6. इसकी छाल को जल में घिसकर 10 ग्राम का सेवन करने से सभी प्रकार की सूजन उतर जाती है।
7. इसकी छाल का लेप करने से सूजन में आराम मिलता है।
8. इसकी जड़ की छाल जल में घिसकर लेप करने से दाद में लाभ होता है।
9. सहजन के पत्ते, लहसन, हल्दी, नमक एवं काली मिर्च सभी को समान मात्रा में लेकर एक साथ पीस लें और कुत्ते के काटे हुए स्थान पर लगाने से सूजन उतर जाती है और लाभ मिलता है।
10. इसके पत्तों को तेल के साथ पीसकर लेप करने और धूप में बैठने से

चोट व मोच में आराम मिलता है।

11. सहजन की गोंद को तिल्ली के तेल में गर्म करके 2-2 बूंद कान में डालने से कान दर्द में लाभ मिलता है।

5. तुलसी

सामान्य नाम - तुलसी

वानस्पतिक नाम - ओसीमम सेंक्टम

कुल - लेमीऐसी

तुलसी का पौधा 2-4 फीट ऊँचा होता है इसकी मंजरी बैंगनी रंग की होती है बीज, चिकना एवं भूरे तथा काले रंग का होता है। यह सर्वत्र सुलभ, सुगंधित, सुंदर होता है। यह सर्वरोग निवारक एवं शक्ति वर्धक होती है। तुलसी का पौधा धार्मिक महत्व का होता है इसकी पत्तियों में तेल पाया जाता है।

औषधीय महत्व :

1. तुलसी के पत्रों को नींबू के रस में पीसकर दाद, कुष्ठ आदि पर लेप करने से लाभ होता है।
2. तुलसी के 5 पत्ते प्रतिदिन पानी के साथ निगलनें से बुद्धि एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है।
3. तुलसी का तेल नाक में डालने से पुराना सिरदर्द ठीक हो जाता है।
4. काली मिर्च और तुलसी के पत्तों की गोली बनाकर दॉत के नीचे रखने से दॉतों का दर्द दूर हो जाता है।
5. तुलसी के पत्तों का रस छोटी इलाइची तथा अदरक का रस सेवन करने से उल्टी में आराम मिलता है।
6. खॉसी में तुलसी पत्ती का रस 5-10 मि.ग्रा. तथा काली मिर्च का चूर्ण डालकर पीने से खांसी में आराम मिलता है।
7. तुलसी पत्तों का ताजा रस गरम करके 2-2 बूंद कान में डालने से कान का दर्द तुरंत ठीक हो जाता है।
8. तुलसी का पौधा मलेरिया प्रतिरोधी होता है इस कारण इसके आसपास मलेरिया उत्पन्न करने वाले मच्छर नही रूकते वहॉ से भाग जाते है।
9. तुलसी की जड़ को पीसकर सौंठ के साथ मिलाकर पानी के साथ लेने से कुष्ठ में लाभ होता है।
10. घावों को जल्दी ठीक करने के लिए तुलसी के 10-10 ग्राम पत्तों को उबाल कर ठंडा करके उनका लेप लगाना चाहिए।

निष्कर्ष - इथनोमेडिसनल प्लांट भारतीय संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते है, इनका उपयोग पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में किया जाता रहा है, इस रिसर्च पेपर में हमने तुलसी, नींबू, सहजन, अपामार्ग एवं जामुन के औषधीय गुणों का विस्तार से वर्णन किया है ये प्राकृतिक औषधियां स्वास्थ्य के लिए हितकारी मानी जाती है। तुलसी में एंटीऑक्सीडेंट, एंटीबैक्टीरियल, एंटीफंगल एवं एंटीवायरल गुण पाए जाते है, जो हमें विभिन्न संक्रमणों से बचाते है, यह मानसिक तनाव को कम करती है। इसकी चाय सर्दी, जुकाम, खॉसी में उपयोग मानी जाती है। नींबू विटामिन श्ब्श् से भरपूर होता है इसमें भी एंटीबैक्टीरियल गुण पाए जाते है। इसका उपयोग वजन कम करने एवं शरीर से विषैले पदार्थो को बाहर निकालने में होता है। इसी प्रकार सहजन को सुपरफूड की संज्ञा दी गई है इसमें कई प्रकार के विटामिन, खनिज एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते है यह हड्डीयों को मजबूत करता है, पाचन सुधारता है एवं रक्त की कमी, उच्च रक्तचाप आदि के काम आता है, पत्तियों का उपयोग त्वचा एवं बालों के उपचार में किया जाता है। अपामार्ग में एंटीबैक्टीरियल, एंटीऑक्सीडेंट एवं एंटीइन्फलामेट्री गुण होते है यह खांसी, पेटदर्द संबंधी एवं गठिया रोगों के उपचार में काम आता है। जामुन का फल, बीज एवं छाल सभी औषधीय गुणों से भरपूर होती है यह रक्त में शर्करा के स्तर को नियंत्रित करती है। जामुन के बीजों का उपयोग खांसी एवं बुखार में भी किया जाता है।

इन सभी के द्वारा प्रतिरक्षा तंत्र मजबूत होता है। आधुनिक चिकित्सा के साथ साथ इनका प्रयोग सुरक्षित एवं प्रभावी हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. आयुर्वेद जड़ी बूटी रहस्य - आचार्य बालकृष्ण
2. Jain SK. Dictonary of Indian Folk medicine and ethnobotany. New Delhi: Deep Publications Paschimvihar; 1991
3. HEALTH AND MEDICINAL PROPERTIES OF LEMON (CITRUS LIMONUM) M.Mohanapriya*, Dr. Lalitha Ramaswamy** and Dr.R. Rajendran***
4. An industrial cultivation of Tulsi (Ocimum sanctum) for medicinal use and rural empowerment Subhash Chandra, Pradeep Dwivedi, KM Arti and LP Shinde
5. Prasad, P.V.V. & Subhaktha, P.K.J.P. Apamarga (Achyranthes aspera Linn) Medico-Historical review., 2001, 31(1), pp.12
6. Ethnomedicinal plants of Jodhpur District, Rajasthan used in herbal and folk remedies B.B.S.Kapoor and Swati Lakhera*

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Civil-Military Relations: A Comparative Study of India and Pakistan

Dr. Vinay Girotra* Dr. Ranjit Singh**

*Assistant Professor & Head (Political Science) Doaba College, Jalandhar (Punjab) INDIA
** Assistant Professor (Political Science) Doaba College, Jalandhar (Punjab) INDIA

Abstract : India and Pakistan were ideologically different states but shared same military heritage at the time of independence from British colonial rule in 1947. The military in British India served as its strong shield, but avoided an active involvement in politics and largely accepted the principle of supremacy of civilian elites. The Indian military retained this tradition but Pakistan reflected a major shift. This paper deals largely with the theories of various scholars like Huntington, Fitch, Larry Diamond, and Douglas. C. North for the purpose of generalizing the reasons behind this difference in approach adopted by two neighboring states in terms of various socio-political and religious factors. Further on, this research aims at providing the list of checks and balances required for preventing unwarranted military intervention in domestic politics.

Keywords: Civil-Military Relations, Democracy, Military Coups , Authoritarianism, Pakistan Army, Indian Army, Military Intervention, Political Legitimacy ,Civilian Control, Military Dictatorship, Garrison State, Military Governance, Democratic Transition, Military Economy, Nationalism, State-Building, Military's Role in Development Civilian Authority.

Introduction - Democratic theory does not admit the possibility that any group possesses greater legitimacy than the will of the people, determined through free and inclusive elections and tempered by the interplay of constitutionally established institutions.[1]The acceptance of a civilian supremacy over the military elites, whereby the latter willingly execute the policies of the former and only influence policy making in relevant areas through normative, group, or institutional, processes, is crucial to the idea of democracy. Military interventions appear to stem from problems in civilian-military relations which, as Amos Perlmutter notes,[2] is gravely exacerbated in many developing and underdeveloped areas by the absence of a consensus on what the proper civilian-military relationship is, unlike in the West, where a Sandhurst tradition of defending civilian authority prevails. Due to this absence of consensus, the dynamics of civil-military relations significantly vary in various developing states. Some of these have completely adopted the Western model of civilian supremacy. But, at the same time, in few of these societies, the military exercises independent political power, thus turning the "classical" civil-military arrangement "upside down."[3]

This difference is best represented in the study of military's role in the politics of India and Pakistan, two neighbouring, nuclear weapon capable states of South Asia. These states were part of one country before independence from British colonial rule in 1947. Pakistan was carved out of India when Mahatma Gandhi failed to convince Muhammad Ali Jinnah that both Hindus and Muslims could live together in an independent India. The armed forces of India and Pakistan shared common culture, ethos, and traditions, including the acceptance of the principle of civilian supremacy. However, the total subordination of the Indian military by the civilian entity is in direct contrast to the primacy that the Pakistani counterpart has appropriated. Indian Military is an outstanding example of an 'apolitical and professional force, almost a bureaucratic instrument of state policy'. India's democratic system is a model for other developing countries. On the contrary, the dynamics of civil-military relations in Pakistan have created an ongoing negotiation for power in which the military, civilian politicians and Islamist forces have individually and in alliance with one another vied for control of Pakistan's politics.[4]

Patterns of Government in Pakistan

Civilian Bureaucratic Rule	1947-58
Civilian Authoritarianism	1971-77
Direct Military Rule	1958-62, 1969-71, 1977-85, 1999-2002
Elected Civilian Governments Under Civilian Presidents	1988-99, 2008-
Elected Governments Under Military Presidents	1962-69, 1985-88, 2002-08

Frequent military interventions in politics of Pakistan and their absence in India has initiated a political debate which attempts to explain this difference of approach

towards civil-military relations in terms of various socio-political and religious factors.

In his book 'Political order in changing societies', Huntington has linked the likelihood of a military coup to levels of institutionalization and political participation. He suggested that in a "civil society," where there are high levels of institutionalization but low levels of political participation, civil-military relations were absorbed within a wider, stable political system. In contrast, he argued that in "praetorian societies" with low levels of institutionalization and high levels of participation, the coup becomes the primary way by which the military exerts its institutional influence.[5] Civil society is also considered to play a key role in the consolidation of democracy, in checking abuses of state power, preventing the resumption of power by authoritarian governments and encouraging wider citizen participation and public scrutiny of the state. Such actions enhance state legitimacy; 'a vibrant civil society is probably more essential for consolidating and maintaining democracy than for initiating it' [6]

In India there was undoubtedly the existence of a sizeable 'civil society' which was a product of its politically liberalized society and a general level of religious tolerance in a traditionally historic multi-racial society. It also emerged from a well educated middle class and an enlarging one fuelled by its high rate of economic growth. In the countries where such a middle class does exist, there will always be a call for more personal freedom and democracy. Education and economic progress automatically undermine any autocratic or elitist form of government.[7] Pakistan has not yet developed a large, educated and fairly well to do middle class-a class of people who have overcome traditional clan and tribal loyalties, and have become genuinely interested in personal liberty, independent information media and scope for participation in the political decision making process.

Political culture of two states has also been instrumental in determining the nature and kind of military's role in politics. Finer argues that national political cultures can be assessed and ranked in levels, according to following criteria.[8]

1. Does there exist a wide public approval of the procedure for transferring (political) power, and a corresponding belief that no exercise of power in breach of these procedures is legitimate?
2. Does there exist a wide public recognition as to who or what constitutes the sovereign authority, and a corresponding belief that no other person or centre of power is legitimate or duty worthy?
3. Is the public proportionally large and well mobilized into private associates? Do we find cohesive churches, industrial associations, and political parties (that are capable of acting independently of the state?

The higher a nation ranks on the first two criteria, the more likely it is that a military coup would be seen as illegitimate. The higher a nation ranks on the third criteria-that is presence of civil society-the more society can mobilize itself in defense of the legitimate holders of power.[9] In comparison to Pakistan, India was more fortunate in having sound political institutions that functioned in a democratic manner, a strong political party with a mass base, and a team of seasoned political leaders. Pandit Jawaharlal Nehru was India's first Prime Minister for 17 years, from 1947 to 1964 until his death. The respect he enjoyed from general public and his commitment to liberal democratic values laid the foundation of India's political culture which had no role for military in politics. Nehru encouraged parliamentary debate, maintained internal democracy within the Congress party, continued the British tradition of a politically neutral civil service, fostered judicial independence, encouraged press freedom, boosted secularism, and firmly entrenched civilian control of the military.[10] On the contrary, Pakistan lost its two premier leaders Mohammad Ali Jinnah and Liaquat Ali Khan within a few years after independence. This proved to be the decisive factor in determining the future of civil and military relationship in Pakistan, as after them, there was no one left on the political scene of Pakistan who could generate mass support for democratic values. Muslim league relied heavily on the towering personality of Jinnah and afterwards up to some extent on Liaquat Ali Khan. Soon after their death, it began to become disunited and lose direction. Other political parties, established mostly by those depicting from the Muslim league, suffered from similar discord, indiscipline and weak organization. They were neither able to bring forward a national alternative to the Muslim League or evolve a broad based consensus on the operational norms of the polity, and thus failed to produce a coherent government.[11]

Indian National Congress was able to provide stability and better administration to Indian people because of training that it specifically and the Hindus got during the independent struggle - right from the formation of Congress under Dadabhai Naroji. That training was ingrained in Congress psyche - however inept its brains may have been. This thinking of Indian civilian elites can be well understood in the words of present Prime Minister Manmohan Singh, when he says, "If there is an 'idea of India' by which India should be defined, it is the idea of an inclusive, open, multi cultural, multi-ethnic, multi-lingual society. … We have an obligation to history and mankind to show that pluralism works. … Liberal democracy is the natural order of political organization in today's world. All alternate systems, authoritarian and majoritarian in varying degrees, are an aberration.[12] On the other hand, Pakistan falls into the category of what Clifford Greetz calls 'old societies and new states.'[13] It didn't exist prior to independence in discrete form but rather was always part of larger systems. Therefore there was serious lack of elite and experienced civilian politicians, who could guarantee steady development of

civilian political institutions to safeguard democratic civil and military elite relations. Many of the able civilian elites were not that much influential as they belonged originally to the states that were left behind in India and they were not able to attract the popular support in independent Pakistan. Lack of administrative ability in civilian leaders and common man's disrespect towards them and faith in military led the military officers to revise their understanding of the military's proper role.

Pakistan did not have an indigenous bourgeoisie that was rooted to the Pakistani soil. The nascent bourgeoisie that emerged after partition comprised migrants from Bombay, Gujarat and Bengal. The leading members of the Muslim League and the founding fathers were also mostly Indian migrants. Similarly, the bureaucracy, industrial and commercial class were also mostly from the migrant community. In the 1950s, the migrants dominated the government policies. The ruling elites were led by the migrant elites. The army's officer cadre consisting of mostly Punjabis was the local elite. But Muhajirs (the Urdu-speaking migrants) and the Punjabis constituted the bureaucracy. Therefore, Pakistan was known as a Muhajir-Punjabi state, which was criticised by Bengalis, Sindhis and others. For years after independence, this state of affairs continued. The civil-military bureaucracy structurally emerged as 'overdeveloped' institution which in alliance with landed-feudal projected and institutionalised 'Hindu India' to pursue politico economic interests. The military being part of the praetorian oligarchy planned and fought war against India over Kashmir in 1947-48. This exercise helped the oligarchy to rule authoritatively in the 1950s. The civil bureaucracy led the praetorian oligarchy in this period. However from 1958 onward, the military has, from within the praetorian oligarchy, emerged as a powerful political actor due to its coercive power and became leader of the oligarchy. [14] India was also historically the nation of landlords but the power of landlords has been broken over there by the successive Indian governments. As a result, it is now recognized as the largest democracy in the world, while Pakistan, until recently, was defined as a rogue state.

For civilian institution building, it is necessary to have effective constitutive rules of politics. These rules have fundamental impact on how the philosophic vision embodied in political culture of a country is translated into the reality of politics. By establishing precedents and constitutional guarantees, these rules lend legitimacy to certain themes while denying it to others. They also affect, directly or indirectly, who can participate in the domestic political game as well as how.[15] India was able to provide a constitution as early as in 1950 which laid constitutive rules of politics clearly in favour of democratic government headed by civilian elites. This Constitution vests "the supreme command of defence forces of the Union" in the President but he is obliged to be "regulated by law" and actual control is vested in the council of ministers led by the Prime Minister. Conventions established over the years ensured that "aid and advice" given by the council is authoritative and no President has ever attempted to exercise independent command over armed forces. On the other hand, faced with the task of governing a new nation with considerable linguistic, sectarian, and regional diversity, the civilian leaders in Pakistan proved to be ill equipped for the task. They lacked the skills of negotiation, compromise, and debate that their counterparts in India under the leadership of Pundit Nehru had virtually institutionalized. As a consequence, Pakistan's Constituent Assembly quickly became bogged down, and could not produce a basic law till 1956.[16]

The constitutionally determined role for Indian Army is quite narrow and it provides a check on attempts to politicise the military. The Indian political system is an inspiration for rest of the world. Unlike Pakistan, the Opposition in India plays a vital role and commands respect. Everyone is expected to abide by the law, including the politicians. Military elites in India know that the final power of decision making is always going to remain in the hands of civilian elites. Indian civilian elites were able to provide a political culture where the respect for the civilian institutions like judiciary was unchallengeable but on the contrary, in Pakistan, military elites and even civilian ones, when in power misused institutions like judiciary and press for providing strength to their autocratic rules. Pakistan has so far seen three constitutions—created in1956, 1962, and 1973—and in 1985 military ruler Zia ul-Haq fundamentally altered the constitution with his introduction of the Eighth Amendment establishing a President-dominated executive so that military could enjoy control over government even when civilians were in power.

Military establishment that deals with many non military functions is likely to be more autonomous and freer from civilian control. Pakistan faced food crisis in many of its parts during 1952 and 1953. Hard pressed civilian government was forced to call for military's assistance in this situation. Army launched operation Jute (1952-53) to solve food problem in country and started many anti smuggling operations too. The anti-Ahmadi riots turned Lahore into a nightmarish inferno in March 1953 and crippled the administrative machinery of the state. This led to the imposition of martial law in Lahore and gave the military its first taste of power in state. There were many other instances where military was called upon for help. All this made impression in general people's mind that military was their only savior and civilian elites lacked the ability to govern. Military elites also started believing that they were more able to govern the state. Field Marshal Ayub Khan has stated in his biography Friends Not Masters, "Pakistan's survival was vitally linked to the establishment of a well-trained, well-equipped and well-led army." The army was entrusted with wide and varied duties in 1947. Initially, "it had to assist the depleted ranks of the civil administration in maintaining law and order"; secondly, "there were gigantic

problems of extrication, protection, movement and administration of millions of refugees from India"; thirdly, "it was entrusted with the task of protecting "the Hindus and Sikhs migrating to India"; lastly, it had to protect the new, ill-defined, lengthy and sensitive borders.[17]

After Pakistan formally became a republic in 1956 under President Mirza, it faced an array of serious threats to its stability. Its conflict with India over Kashmir remained unresolved, relations with Afghanistan were poor, and the country suffered continuing economic difficulties, frequent cabinet crises, and widespread political corruption. It was the period of grave crisis for Pakistan. The inability of civilian elites to provide a stable government at centre and their continuously increasing reliance on bureaucracy paved the way for first military regime of General Ayub in 1958. Since then, military has played the most important role in decision making process of Pakistan and has never allowed civilian institutions to flourish. On the other hand India has long been host to free and fair elections leading to peaceful changeovers of power; has a vibrant, spirited press and independent judiciary; has spawned political parties all over the ideological spectrum; and has been defended by a military establishment that has remained firmly under civilian control. Civil supremacy-of-rule in India came under its gravest threat when defeat in the 1962 Sino-Indian War for the first time called into question the competence of the civilian government. However military elites did not try to make use of these circumstances mainly because the Nehru administration took pains to address field officers' grievances with the country's top civil-military personnel, decision-making procedures and resource allocation. Apart from a 21-month interlude of authoritarian "emergency" rule from 1975 to 1977 under a civilian Prime Minister India has never formally suspended democratic procedures.

Religion has played perhaps the most important role in determining the nature of civilian control in two countries. Liberal values of Hinduism have been instrumental in the establishment of democracy with civilian dominance in India. Notwithstanding the caste system in Hinduism, Indian democracy has an inbuilt trend of acceptance for the principle of civilian supremacy.Whereas military is the great reality in the Muslim states and civilian government have existed either with the support of the military or may be if it is indifferent or neutral but never in opposition to it. [18] Huntington has asserted in the Clash of Civilizations that Muslim countries will have the most trouble establishing and consolidating democracy as opposed to Protestant countries. They historically belonged to the Ottoman or Tsarist empires and were only lightly touched by the shaping events in the rest of Europe; they are generally less advanced economically; they seem much less likely to develop stable democratic political systems.[19]

There is an extensive body of literature arguing that many key aspects of democracy are lacking in the Islamic tradition. The lack of separation between religion and the state is seen as stemming from the Prophet Mohammed's fusion of military and spiritual authority. The lack of space for democratic public opinion in making laws is seen as deriving from the *Koran*, in which God dictated to the Prophet Mohammed the content of fixed laws that a good Islamic polity must follow. The lack of inclusive citizenship is seen as originating in interpretations of the *Koran* that argue that the only true polity in Islam is the fused religious-political community of the *Ummah,* in which there is no legitimate space for other religions. Certainly, with the rise of Islamic fundamentalism these claims have been frequently asserted by some Islamic activists. Especially in the context of the Algerian crisis of 1991–92, this gave rise to scholarly assertions that Islam and democracy are incompatible.[20]

Religious cleavages in a state founded on religion have a limited role to play in the context of mass mobilisation but slogans like "threat to the religion" are often exploited by the elites to mobilise the masses. This is true in the case of Pakistan. At various points of time in its political history, religion has been exploited to gain cheap popularity and fight political opponents. In Pakistan, religion has not only provided a political foundation to the country but has provided legitimacy to the military rulers.[21] The decade-long rule of General Zia was a giant step backward for the development of secular norms and civilian institutions in Pakistan. Zia was a shrewd politician and a religious zealot who believed that Western democracy was inappropriate for Pakistan and who sought to make Islam the dominant national force.[22]

Education also plays important part in determining the nature of civil-military relations in a state. Lipset refers to education predicting that a better educated population entails better chances for democracy and democratic practices. The positive relationship may be because education may teach individuals towards having a higher value of staying politically involved.[23]

In a country with high level of education, one can expect a considerable interest of the population in participating in the process of political decision making. There is a definite desire to be free from political suppression and exploitation, here people want democratic civil-military relations and are prepared to fight for it. [24] In order to follow and perform the democratic norms to its true meaning, there is a need of population that can not only understand but also has the capacity to follow it. After independence when majority of educated non-Muslim migrated to India and influx of uneducated Muslims from India started, there was little hope that the masses of newly born Pakistan would be well equipped to understand and follow the democratic system that would be imposed on them. Muslims also refrained from acquiring Western education as it was considered to be a deviance from the religion. Hindus and Sikhs on the other hand were more integrated into the British system and were already well incorporated into it. So after partition,

there was not much deviance from their usual self and India was able to settle down more easily then its neighbour.

The adult literacy rate, female literacy rate, gross enrollment ratios at all levels, and education index of India have moved way ahead of Pakistan. Health access to the population and infant mortality rates are also better in India and thus the overall picture of social indicators, although not very impressive by international standards, emerges more favorable. The two most important determinants of Pakistan's dismal performance in social development are its inability to control population growth and the lack of willingness to educate girls in the rural areas.

Factors or developments beyond the borders of a nation state can also contribute either to military intervention or to the maintenance of civilian rule. Great powers….citing ideological, geographic and other vital interests….have intervened (directly or indirectly) in the affairs of smaller states to prop up unpopular regimes, help suppress popular revolutions, or bring down "undesirable government." Harold Lasswell suggested that high level of external threat creates a "Garrison state" where the willingness and ability of the military to intervene in politics, as well as the popular acceptability of such actions is very high.[25] From the very beginning Pakistan has faced several external threats. Some of these threats were assumed, some were real, but they all proved source of legitimacy for the ruling military. Over the past 61 years since independence, Pakistan has fought several wars with India, two of them major, primarily over Kashmir. After India and Pakistan effectively became nuclear weapons states in 1998, the localized war over Kashmir, fought at Kargil raised even the fear of nuclear war among world community. Military elites in Pakistan were able to convince general public that they were better than their civilian counterparts to deal with such crisis situations. On the contrary, Indian civilian elites were able to safeguard territorial integrity of nation and after the defeat from China in 1962, were able to emerge victorious against Pakistan on all the occasions. Indian military was ready to work only as a tool in the hand of civilian government for guarding the borders of nation.

Currently, the most dominant theory of coups d'état posits that militaries perform much like interest groups. When the interests of militaries are negatively affected, military officers have a potent rationale to intervene. The Pakistan military not only defines policy - it is entrenched in the corporate sector and controls the country's largest companies. So Pakistan's economic base, its companies and its main assets, are in the hands of a tiny minority of senior army officials. On the contrary, Indian military's corporate interests are limited to salaries and wages of the officers and soldiers. As Pakistan military remains heavily involved in economic activities, it is likely to remain more concerned about their safeguard and this has been sometimes the main reason behind their excessive involvement and even intervention in the politics of the state. On the contrary, fewer opportunities exist for the Indian military to engage in business undertakings, and thus fewer are the chances for Indian Military to intervene. While political power is prerequisite for the military's exploitation of national resources, the armed forces financial autonomy deepens its interest in retaining control of the state. However, Pakistan's military disagrees with this analysis. Ayesha Siddiqa[26] interviewed 40 senior Pakistani military officers for her study, some of whom had sewed, or were sewing in responsible civilian positions in the Musharraf regime and almost all denied that economic interests had caused the military to intervene, or had any link with its political power. But, no one can deny that the Pakistan Army is not just involved in defense but it also has quite a complex conglomerate. It has direct control over many corporate entities. Most of these small scale and large scale corporate enterprises range the gamete from private security firms and bakeries, farms, schools, to insurance companies, cement and cereal manufacturing plants. Pakistan's generals, Ayesha Siddiqa states, control empires that would put to shame those of many despots worldwide. On average, senior commanders of the Pakistan armed forces retire with legally acquired assets of between $2.5 and 6.9 million, depending on their rank.[27]

The rule of law, civil liberty or stable methods for peaceful succession in power, educated middle class, military professionalism, workable practices for electing officials and a government and governing process that are legitimate in the eyes of both key elites and the general public are the main indicators of civil-military reforms and signs of civilian control over decision making process in India. The integrated ministry of defense is a crucial locus of civilian control. On the other hand, inefficiency of civilian elites, frequent coups, suspensions and rewriting of the constitution has been the feature of 'praetorianism' in Pakistan. One of the major obstacles in democratization of civil and military elite relations in Pakistan has been the negative role of the ruling elites. Civil-military reforms cannot be affected if elites in power do not want it to happen for. Central European elites were more open to reforming their civil-military relations in democratic shape than were the elites in the former Soviet Union. Pakistan is also such a case where we do not generally see elites in power making strong attempt towards democratization of civil-military relations. The ruling elites in Pakistan enunciated and implemented a conservative domestic policy and an expedient foreign policy. They always supported the strength of 'controlled democracy', with severe limitations on popular participation.[28]

Pakistan has presented a semblance of democracy for the last few months under the pressure of the U.S, but the crucial question is whether the civilian politicians of Pakistan have wrested the political control of Pakistan's governance from the Pakistan Army?[29] If Pakistan does not transcend the dynamic created by an ideology defined

by an overly dominant military, it runs the risk of becoming a failed state with nuclear weapons. It is hoped now that the present democratic transition will lead to a period of peace, stability and sustained development in Pakistan. It is the responsibility of all social and political groups to sustain the present gifted democracy by ridding from the vested interests so as to correct the evils and misdoing of earlier political forces.

References:-

1. Fitch, J. S. (1998). *The armed forces and democracy in Latin America*. The Johns Hopkins University Press.
2. Perlmutter, A. (n.d.). Civil-military relations in socialist authoritarian and praetorian states: Prospects and retrospects. In R. Kolkowicz & A. Karbonski (Eds.), *Soldiers, peasants* (pp. 310–331).
3. Ibid, p.318
4. Nasr, V. (2004). Military rule, Islamism, and democracy in Pakistan. *Middle East Journal, 58*(2), 196.
5. Huntington, S. P. (1968). *Political order in changing societies*. Yale University Press.
6. Diamond, L. (1994). *Political culture and democracy in developing countries*. Lynne Rienner Publishers.
7. Holzhausen, W. (1986). *Vision creates hopes*. University Press Limited.
8. Finer, S. E. (n.d.). *The man on horseback: The role of the military in politics* (2nd ed.). Westview Press.
9. Fitch, J. S. (n.d.). [Pages 120–140].
10. Ganguly, S. (2002). India's multiple revolutions. *Journal of Democracy, 13*, 39.
11. Rijvi, H. A. (2004). *Civil-military relations in contemporary Pakistan*. In R. J. May & V. Selochan (Eds.), *The military and democracy in Asia and the Pacific*. ANU E-Press.
12. singh, M. (2005, February 25). *Speech at India Today Conclave*. Retrieved from http://www.pmindia.nic.in/speech/content.asp?id=78
13. Geertz, C. (n.d.). Old societies. Quoted in R. Jahan, *Pakistan: Failure in national integration* (p. 5). Columbia University Press.
14. Hussein, E. (2005). *Pakistan: Politics in a post-colonial state* (Master's thesis). Lund University, Centre for South and Southeast Asian Studies.
15. North, D. C. (1990). *Institutions, institutional change, and economic preference*. Cambridge University Press.
16. McGrath, A. (2008). The destruction of Pakistan's democracy. In S. Ganguly, *The burden of history*.*Journal of Democracy, 19*(4), 28.
17. Salamat, Z. (1992). *Pakistan: 1947–58*. National Institute of Historical and Cultural Research.
18. Kamal, K. L. (1982). *Pakistan: The garrison state*. Intellectual Publishing House.
19. Huntington, S. P. (1993). The clash of civilizations? *Foreign Affairs, 72*(3), 30–31.
20. Stepan, A. (2000). Religion, democracy, and the "twin tolerations". *Journal of Democracy, 11*(4), 48.
21. Pattanaik, S. S. (1998). Islam and the ideology of Pakistan. *Strategic Analysis, 22*(9). Retrieved fromhttp://www.ciaonet.org/olj/sa/sa_dec98.html
22. constable P. ,p.18
23. Lipset, S. M. (1959). Some social requisites of democracy: Economic development and political legitimacy. *American Political Science Review, 53*, 79.
24. Holzhausen, W. (n.d.). [Page 4].
25. Lasswell, H. D. (1941). The garrison state. *The American Journal of Sociology, 46*, 455–468.
26. Siddiqa, A. (2007). *Military Inc.: Inside Pakistan's military economy*. Pluto Press.
27. Ibid.
28. Bindra, S. S. (2005). Continuity and change in Indo-Pakistan relations. *World Affairs, 9*(3), 41.
29. Kapila, S. (2008, September 2). The Pakistan army still controls governance. *South Asia Analysis Group*, Paper No. 2828.

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

NEP 2020: Transforming Higher Education in India

Dr. Nayia Mahajan*

***Assistant Professor (Economics) Doaba College, Jalandhar (Punjab) INDIA**

Abstract : The National Education Policy (NEP) 2020, introduced by the Government of India, represents a significant overhaul of the country's educational system, with a vision to transform India into a global knowledge hub. This paper examines the key provisions of NEP 2020 and explores their potential impact on higher education in India. The policy aims to address challenges in the sector such as quality, accessibility, and inclusivity, while aligning with global educational trends. This paper outlines the policy's major reforms, discusses its challenges, and evaluates the potential outcomes for the Indian higher education system.
Keywords: NEP 2020, Higher Education, Indian Education System, Reforms, Inclusivity, Quality Education.

Introduction - Education is the basis for fully utilising human potential, creating an equitable society, and supporting the country's development. Providing quality education to all is essential for a country's progress and leadership on the world stage in terms of economic growth, quality and equality, scientific progress, national integration and cultural preservation. Promoting good education is the best way to develop and make the most of a country's talents and resources to benefit people, society, government and the world. In the next decade, India will have the world's largest youth population, and its ability to provide them with the best education will determine its future.

The global education development agenda is reflected in Goal 4 of the 2030 Agenda for Sustainable Development (SDG4), adopted by India in 2015. It aims to " ensure quality and equity in education and promote lifelong learning opportunities for all" by 2030. Overhauling the entire education system to support and promote learning for the achievement of key goals (SDGs) of the 2030 Agenda is required for Sustainable Development.

The world is changing rapidly in the field of information. With the rise of many science and technology giants such as big data, machine learning and artificial intelligence, many unskilled jobs around the world are being replaced by machines, resulting in an increased demand for skilled workers, especially in the fields of mathematics, computer science, and technology. With climate change, increased pollution, and depletion of natural resources, many changes are occurring in the way the requirements of energy, water, food, and sanitation are fulfilled, leading to the need for skilled workers. The increasing number of epidemics around the world still requires collaborative research (approach) in disease control and vaccine development, and the challenges that arise in society arise when there is much more to learn.

As India moves towards becoming one of the world's three largest economies, the demand for humanities and arts will also increase. In this changing working environment and the global ecosystem, it has become important not only to learn but how to learn. Thus, the education system should be creative, innovative, and adaptive and assimilate new things in a new and changing environment. In addition to science and mathematics, the curriculum should include arts, crafts, humanities, games, sports and physical activity, languages, literature, cultural rules and values, supporting all types and abilities of learners; making learning and supporting learning increasingly effective. Education should build character and prepare students to be moral, conscientious, compassionate, and loving while preparing them to be successful in their jobs.

Major reforms are required to close the gap between current educational outcomes and needs, including efficiency, equity and integrity, from childhood education to higher education. National Education Policy 2020 is the first education policy of the 21st century and aims to solve many development problems in our country. While addressing India's heritage, the Act refers to reforms in various aspects of the education system, including regulations and management, to create new systems that meet the educational goals of the 21st century, including Sustainable Development Goal 4. It is based on the principle that education should develop not only cognitive skills but also social, moral and emotional.

Vision of the NEP: This National Education Policy is a policy in India that will directly help transform India (i.e. Bharat) into a nation that empowers all knowledge

communities by providing quality education, thereby making India a world-class knowledge superpower. The policy envisages that curriculum and teaching should be evolved to ensure that students respect their basic duties and constitution, and be aware of their roles and responsibilities in a changing world. The vision of the policy is to encourage students to take a deep interest in being Indian not only intellectually but also in spirit, wisdom and conduct. A true global citizen emerges from a commitment to human rights, sustainable development, livelihoods and global well-being.

The Origin: India formulated its first education policy in 1968 by former Prime Minister Mrs. Indira Gandhi. The second education policy was introduced by the Rajiv Gandhi government in 1986 and some amendments were made to it by the Narasimha Rao government in 1992. Finally, after 34 years, the present government has taken steps and launched the National Education Policy 2020.

To formulate a new education policy, the central government prepared the draft in 2017 under the chairmanship of the Kasturirangam Committee. It was approved by the government of the country in July 2020. Shri Narendra Modi intimated about NEP 2020 through a tweet and also announced that the name of the Ministry of Human Resources Development had been changed to "Ministry of National Education" (Sahu and Bahera, 2022)

NEP and Higher Education: National Education Policy, 2020 (NEP) envisages a massive transformation in the Indian education system through– "an education system rooted in Indian ethos that contributes directly to transforming India, that is Bharat, sustainably into an equitable and vibrant knowledge society, by providing high-quality education to all, thereby making India a global knowledge superpower." It focuses on five core concepts, viz Affordability, Accessibility, Quality, Equity, and Accountability to ensure lifelong learning.

In school education, the 2020 National Education Policy outlines the core values and principles that education should not only develop skills and problem-solving but also social and emotional skills, including cultural awareness (also known as "soft skills") and talent, Harmony, patience and courage, teamwork, leadership, communication and more. The 2020 NEP in higher education provided great information and advice on many aspects of education, including the transition to multi-disciplinary teaching and learning, home management, promoting good research through the establishment of the National Research Foundation, professional development of teachers, integration of technology, restructuring of regulatory systems, mixed pedagogy, reliable and blended evaluation system and comprehensive content in Indian languages. The policy is expected to have a positive impact on education and make India a global intelligence hub in the next 25 years of "Amrit Kaal". Its implementation requires the cooperation of the Centre, states, UTs, HEIs, Regulatory Bodies and all other stakeholders. (Ministry of Education, 2020)

The New Education Policy 2020 (NEP 2020) aimed at increasing the Gross Enrolment Ratio in higher education including vocational education from 26.3% to 50% by 2035 (Shukla, 2020). It states that all universities must become multi-university by 2040, and all universities are again expected to have 3,000 or more students. By 2030, there will be at least one major disciplinary organization in or near every region. At the same time, individual universities will be cut and all universities will switch to a multidisciplinary approach. The system of 'affiliated colleges' will eventually be phased out in 15 years.

Existing complex names of universities such as "Deemed University", "Affiliated University", "Affiliated Technical University" and "Unitary University" should be replaced with "university". The university shall be described as a multidisciplinary institution providing undergraduate and graduate courses with excellent teaching, research and community engagement. (Shukla, 2020)

One of the significant changes will be the set-up of the Higher Education Commission of India (HECI) for all higher education institutions. HECI will act as a single regulator and various responsibilities such as accreditation, financing and training organization will be carried out by a single vertical body. This entity will gradually replace other governing bodies such as the University Grants Commission (UGC) and the All India Council for Technical Education (AICTE).

Key impact areas:

1. Quality Universities and colleges through large-scale consolidation.
2. A higher education system that is accessible and inclusive.
3. Equity and Inclusiveness in Higher Education.
4. A quality and well-incentivized faculty at the core of higher education transformation.
5. Promoting excellence through internationalization.
6. Accountability and transparency as levers for improved governance.

Implementation and Challenges in Implementation of NEP 2020: In early August 2021, Karnataka became the first state to issue an order concerning implementing NEP. Three years since the National Education Policy (NEP) launch, most states have either adopted the policy wholly or picked specific parts of it for application. In July 2023, National Digital University launched. While NEP 2020 presents a progressive approach to higher education, its implementation may face several challenges.

Infrastructure and Resources: Many Indian higher education institutions face challenges in terms of outdated infrastructure, lack of resources, and limited access to cutting-edge technologies. Addressing these disparities will require significant investment in infrastructure and human resources.

Teacher Training and Development: The success of NEP

2020 will depend heavily on the capacity of teachers to adapt to new teaching methodologies and interdisciplinary approaches. A comprehensive teacher training program is essential to equip educators with the necessary skills.

Equity and Inclusivity: While the policy emphasizes inclusive education, there is a need for focused efforts to ensure that students from underrepresented communities, such as those from rural areas or economically disadvantaged backgrounds, have equal access to quality higher education.

Resistance to Change: As with any major policy reform, there is potential resistance from institutions, faculty, and other stakeholders. Overcoming institutional inertia and ensuring broad-based acceptance of the new policy will be crucial for its success.

There are many hurdles to implementing the policy as it was proposed. Some are discussed below.

(i) Multiple Exits is not a good idea: While changing the higher education model with various exit strategies is an important step in reducing the number of people leaving, questions remain over the value of such certificates. The Indians are such that they want to join the business with a degree. Therefore, to adapt to the new system, we first need to eliminate the old idea that "it is necessary to have a degree to find a job." This is a dangerous paradigm that may destroy the talent of individuals.

(ii) Multi-disciplinary approach in education: There is a need for training for college and university teachers to implement this approach. It requires a revision of the curriculum designed to make the curriculum flexible and organic so that thinking and the impact of thinking and skills can be achieved at many levels of education. The policy is required to establish multi-disciplinary institutions for higher education substituting single-disciplinary ones.

(iii) Funding: Implementation of any significant measures requires several years of adequate financing. In this regard, NEP said that the country should increase public expenditure to 6% of GDP to achieve the goals of the new policy. Government officials are understandably divided over the economic hardship experienced by much of the population in the face of the Covid-19 pandemic, but there is no clear plan on how to raise capital. The policy wants private schools to provide more scholarships to increase access to low-income students, but the NEP did not discuss how to do that. The new policy requires more public funding; merely increasing education expenditure from 3 per cent to 6 per cent of GDP is not enough to meet demand.

(iv) Technology Use: The new education Policy talks about technology use, online and digital education. There is a widespread need for internet access in remote and rural areas as well. As the pandemic has shown, e-learning is the way forward. This will continue to be one of the biggest challenges of the next decade.

The challenges outlined in Mallik's 2023 study highlight the significant hurdles faced in the implementation of NEP 2020. The policy aims to reform India's education system and address long-standing issues, but the need for substantial investment in infrastructure, teacher training, and resource allocation is critical. These elements are essential for achieving the ambitious targets set by the NEP, which include universal access to education, improving quality, and integrating technology.

India's vast size and incredible diversity create significant challenges for implementing NEP 2020. The country has a mix of urban and rural areas, varying levels of economic development, and multiple languages and cultures, all of which require tailored strategies for effective implementation. This diversity means that a one-size-fits-all approach won't work, and the policy must be adapted to local contexts, needs, and capacities. Additionally, the educational infrastructure and quality of teaching vary widely across states, making uniform implementation even more difficult. Ensuring that resources are equitably distributed and that teacher training and support are available in all regions becomes crucial to avoid deepening existing disparities (Bhandwalker, 2023).

Moreover, the cooperation between the central and state governments is fundamental to the success of NEP 2020. While the policy was developed with input from various stakeholders, its execution will require seamless collaboration across multiple levels of governance. The tension between federal authority and state autonomy is a long-standing issue in India, and it can make policy implementation tricky, especially in a country as diverse as India, where states have different priorities and needs.

The resistance from some states to key NEP policies is a reflection of the complex political, social, and economic factors at play. Some states may fear that the central government is pushing policies that don't align with their local priorities, or they might feel that they lack the resources or capacity to implement the changes effectively.

For the policy to work, the Center needs to balance its vision with the realities on the ground in each state. This could involve tailoring certain aspects of the policy to suit local needs while ensuring that core objectives are still met. Open dialogue and ongoing consultation with states, as well as providing financial and technical support, will be crucial in overcoming opposition and ensuring smoother implementation. "Creating a shared responsibility and ownership amongst key stakeholders, including the private sector, at the state and district levels that have extraordinary diversity is going to be a major challenge for the education leadership" (Sahoo, 2021).

Potential Impact on Higher Education: The successful implementation of NEP 2020 is expected to bring several positive changes to the higher education landscape in India:

Improvement in Quality: The emphasis on multidisciplinary education, research, and innovation is likely to result in a significant improvement in the overall quality of education. Institutions will be incentivized to focus on

academic excellence, and students will benefit from a more holistic learning experience.

Enhanced Access: The policy's focus on digital learning and inclusive education has the potential to democratize access to higher education. Students from remote areas or disadvantaged backgrounds can benefit from online courses and other distance learning opportunities.

Global Competitiveness: By promoting international collaborations and research, NEP 2020 is likely to increase the global visibility and competitiveness of Indian institutions, attracting international students and faculty.

Skilled Workforce: The integration of skill development and vocational training into the curriculum will help bridge the gap between academic learning and industry requirements. This is expected to produce a workforce that is better equipped for the challenges of the global job market

Conclusion: The National Education Policy 2020 offers a comprehensive framework for transforming higher education in India. The reforms introduced by NEP 2020 have the potential to address long-standing issues such as quality, access, and inclusivity in higher education. However, the successful implementation of these reforms will depend on overcoming challenges such as infrastructure deficits, resistance to change, and ensuring equitable access for all students. With the right investments and a strategic approach, NEP 2020 could help position India as a leader in global higher education, contributing to both national development and global knowledge exchange.

References:-

1. Aithal, P.S., & Aithal, S. (2019). Analysis of higher education in Indian National education policy proposal 2019 and its implementation challenges. *International Journal of Applied Engineering and Management Letters (IJAEML), 3*(2), pp. 1-35.
2. Aithal, P.S., & Aithal, S. (2020). Analysis of the Indian National Education Policy 2020 towards achieving its objectives. *International Journal of Management, Technology, and*
3. *Social Sciences (IJMTS), 5*(2), pp. 19-41.
4. Bal, D., & Singh, K. (2023). National Education Policy-2020: A driving force for higher education of India. *International Journal of Research in Library Sciences*, 9(4), pp. 200-209.
5. Bhandwalker, S. (2023). Implementation of NEP 2020 at Higher Educational Institutions. *International Journal of Creative Research Thought*, 11(10), pp 125-129.
6. Chatwal, T. (2019). Digitalization of higher education in India: A boom or a bane. *Research Journal of Humanities and Social Sciences, 10*(4), pp. 1083-1088.
7. Deb, P. (2020). Vision for Foreign Universities in the National Education Policy 2020: Acritique. *Rajiv Gandhi Institute for Contemporary Studies*, pp. 1-29.
8. Gohain, M.P. (2020). NEP language policy broad guideline: Government. *The Times of India.* Retrieved on January 13, 2025 from https://timesofindia.indiatimes.com/education/news/nep-language-policy-broad-guideline-government/articleshow/77272709.cms.
9. Jaiswal, R. (2014). Vocational Education & Skill Development in India. *Tactful Management Research Journal,* ISSN: 2319-7943.
10. Jha, P., & Parvati, P. (2020). National Education Policy, 2020. *Governance at Banks, 55*(34), pp. 14.
11. Kumar, K., Prakash, A., & Singh, K. (2021). How National Education Policy 2020 can be a lodestar to transform future generations in India. *Journal of Public Affairs, 21*(3), e2500.
12. Mallik, C. (2023). Critical analysis of NEP 200 and Its Implementation. *International journal of novel Research and Development.* 8(6) pp. 877-880.
13. Ministry of Education (2020) available at https://www.education.gov.in/nep/about-nep
14. Ministry of Human Resource Development. (2018). All India survey on higher education.
15. Ministry of Education (2020) available at https://www.education.gov.in/nep/about-nep
16. National Education Policy 2020, Ministry of Human Resource Development, Govt. of India.
17. Nayak, S.R., Kant, N., & Anjali, K. (2020). Strategy of using ICT in ODL to disseminate higher education in tribal communities: A case of MP, India. *Asian Association of Open Universities Journal, 15*(2), pp. 189-206.
18. Rana, S., Verma, S., Haque, M.M., & Ahmed, G. (2022). Conceptualizing internat*ional positioning strate*gies for Indian higher education institutions. *Review of International Business and Strategy, 32*(4), pp. 503-519.
19. Sahu, N. and Bahera, H. (2022). National Education Policy 2020: A Historical Perspective. International Journal for Research in Applied Science and Engineering & Technology, 10(VI). Pp. 3767-3773
20. Sahoo, N. (2021). Five Challenges that would shape the outcome of NEP 2020. *Observer Research Foundation (ORF)*. Published on November 26, 2021.
21. *Shukla (2020) available at* https://www.hindustantimes.com/education/new-education-policy-2020-highlights-key-takeaways-of-nep-to-make-india-a-global-knowledge-superpower/story-eIXTkJrcNJHhXdshWDpu1I.html

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Legal Response to Mob Lynching: Effectiveness, Challenges, and Recommendations

Sarvesh Kumar* **Dr. Surya Sharma****

*Research Scholar, Jiwaji University Gwalior (M.P.) INDIA
** Assistant Professor, Govt. Law College, Datia (M.P.) INDIA

Abstract : Mob lynching, a collective violence form, has become a significant social and legal problem in India. This paper scrutinizes the legal responses to mob lynching, assessing their effectiveness and identifying the challenges faced during implementation. Additionally, it offers recommendations for enhancing legal and social interventions to better address and mitigate the issue.Mob lynching, and extrajudicial killings by groups intending to punish alleged offenders, is rising alarmingly in India, driven by communal tensions, rumors, and deep-seated prejudices. Despite existing legal frameworks, the effectiveness of laws and the justice system in curbing this violence is questionable. India's response includes sections of the Indian Penal Code addressing murder, rioting, and promoting enmity, along with Supreme Court guidelines for prevention and victim compensation. However, prosecution and conviction rates are low due to delays, lack of evidence, and witness tampering. Implementation of guidelines and state-specific laws varies significantly. Challenges include societal prejudices, lack of witness protection, judicial delays, and inadequate police training. Recommendations for improvement involve enacting a comprehensive anti-lynching law, uniform guideline implementation, strong witness protection, fast-track courts, public awareness campaigns, and specialized police training. Strengthening these areas is crucial to combating mob lynching and ensuring justice for victims in India.

Keywords: Mob lynching, Collective violence, Legal responses, Effectiveness, Implementation challenges, social interventions.

Introduction - Mob lynching, characterized by extrajudicial killings carried out by a group seeking to punish an alleged offender, has seen a disturbing rise in India. This violent phenomenon is often driven by communal tensions, misinformation, and entrenched prejudices. Despite existing legal frameworks aimed at protecting individuals, the persistent issue of mob lynching raises critical questions about the efficacy of these laws and the justice system's ability to address such violence effectively. Recent data underscores the severity of the problem: between 2017 and 2023, over 100 cases of mob lynching were reported across various states. Notably, incidents linked to cow vigilantism and social media-driven rumors have surged. In 2022 alone, there were 28 reported cases, marking a significant increase from previous years. These incidents not only result in loss of life but also cultivate an atmosphere of fear and distrust within communities. Legal provisions, such as Sections 302 and 304 of the Indian Penal Code, which address murder and culpable homicide, and the Supreme Court's 2018 guidelines, aim to mitigate such violence. However, low prosecution and conviction rates, combined with delayed investigations and witness intimidation, highlight the urgent need for more effective legal and social interventions.

Rising Incidence of Mob Lynching in India: The alarming rise in mob lynching incidents in India is a grave concern. Defined as extrajudicial killings by groups aiming to punish alleged offenders, mob lynching is fueled by communal tensions, rumors, and deep-seated prejudices. Recent data accentuates the growing severity of this issue. Between 2017 and 2023, India witnessed over 100 reported cases of mob lynching, reflecting a disturbing trend of violence. The year 2022 alone saw 28 reported incidents, a significant increase from previous years. This rise has been particularly notable in cases related to cow vigilantism and the spread of misinformation via social media. A 2023 report by the National Crime Records Bureau (NCRB) highlighted that states like Uttar Pradesh, Jharkhand, and Rajasthan are among those with the highest incidence of mob violence. These incidents often lead to the tragic loss of life and foster a climate of fear and mistrust in affected communities.

Legal Framework and Challenges: India's legal response to mob lynching includes several provisions under the Indian Penal Code (IPC), state-specific laws, and guidelines issued by the Supreme Court.

Indian Penal Code (IPC):

1. **Sections 302 and 304**: Address murder and culpable homicide not amounting to murder.
2. **Sections 147-151**: Cover offenses related to rioting

and unlawful assembly.

3. **Sections 153A and 153B**: Deal with promoting enmity between different groups on grounds of religion, race, place of birth, residence, or language.

Supreme Court Guidelines: In July 2018, the Supreme Court of India issued comprehensive guidelines aimed at preventing mob lynching. These include:

1. Appointing nodal officers in each district to oversee and manage cases.
2. Setting up fast-track courts to expedite trials.
3. Establishing compensation schemes for victims.
4. Implementing detailed plans for police training and community outreach.

Despite these measures, challenges persist. A 2023 review revealed that only a fraction of the recommended fast-track courts have been established, and implementation of the guidelines varies significantly across states. For instance, some states have proactively appointed nodal officers and implemented victim compensation schemes, while others have lagged. This inconsistency undermines the effectiveness of the legal framework in addressing mob lynching effectively.

Effectiveness of Legal Responses: The effectiveness of legal responses to mob lynching in India is mixed. Prosecution and conviction rates remain low due to delays in investigations, insufficient evidence, and widespread witness tampering. According to a 2023 National Crime Records Bureau (NCRB) report, only 15% of mob lynching cases resulted in convictions between 2017 and 2023. Although the Supreme Court's 2018 guidelines recommended the establishment of fast-track courts, their implementation has been inconsistent. By mid-2023, only a few states had set up these courts, resulting in prolonged legal processes. Additionally, while some states have enacted specific anti-lynching laws, their effectiveness in reducing violence or improving conviction rates is still largely unassessed. Overall, the current legal measures face significant hurdles in addressing the root causes of mob lynching and ensuring timely justice for victims.

Prosecution and Conviction Rates: Prosecution and conviction rates in mob lynching cases remain troublingly low. Delays in investigations, lack of concrete evidence, and extensive witness tampering are major obstacles to securing justice. The National Crime Records Bureau (NCRB) report for 2023 indicates that only 15% of mob lynching cases led to convictions between 2017 and 2023. Despite recommendations from the Supreme Court in 2018 to establish fast-track courts for expediting trials, implementation has been uneven. By mid-2023, only a small number of these courts had been established, leading to prolonged legal processes. This has discouraged victims and their families from pursuing justice and highlights the need for more effective legal interventions and procedural reforms to address these issues.

Implementation of Supreme Court Guidelines: The Supreme Court's guidelines for tackling mob lynching, issued in 2018, are comprehensive but face inconsistent implementation across states. The guidelines recommend appointing nodal officers, setting up fast-track courts, and establishing compensation schemes for victims. As of mid-2023, states like Maharashtra and Karnataka have made notable progress by implementing these recommendations. Maharashtra has established fast-track courts and appointed nodal officers, while Karnataka has initiated victim compensation schemes. However, other states, such as Uttar Pradesh and Jharkhand, have been slow to implement these measures. The National Crime Records Bureau (NCRB) report reveals that only 30% of the recommended fast-track courts have been set up, leading to delays in the judicial process. This inconsistency in implementing the Supreme Court's guidelines hampers the effectiveness of legal responses to mob lynching and underscores the need for uniform enforcement across all states.

State-Specific Laws: Certain states, including Manipur and West Bengal, have enacted specific laws targeting mob lynching, with provisions for enhanced punishment and victim compensation. Manipur introduced the Manipur (Prevention of Mob Violence) Act in 2021, which imposes stricter penalties on those involved in mob violence and includes comprehensive measures for victim support. Similarly, West Bengal passed the Anti-Lynching Act in early 2023, which provides severe penalties for perpetrators and establishes a compensation framework for victims. Despite these advancements, recent evaluations indicate that the effectiveness of these laws remains unassessed. As of mid-2024, there is limited data on how these laws have impacted the reduction of mob violence or improved conviction rates. Continued monitoring and evaluation are necessary to gauge their success and identify any gaps in their implementation. Enhanced enforcement and public awareness campaigns are crucial to ensure these laws meet their intended goals.

Challenges in Legal Responses: Several challenges continue to impede the effectiveness of legal responses to mob lynching in India:

Societal Attitudes and Prejudices: Deep-seated societal prejudices and communal tensions are significant drivers of mob violence. These entrenched biases often contribute to the escalation of violence despite the existence of legal frameworks. For example, in 2023, the surge in lynching incidents linked to communal tensions highlights the need for broader social reforms alongside legal measures.

Lack of Witness Protection: Witnesses in mob lynching cases frequently face severe threats and intimidation, leading to high rates of hostile witnesses and acquittals. Data from 2023 indicates that witness intimidation remains a critical issue, with many witnesses retracting their statements or remaining silent due to fear of retribution.

Delays in Justice Delivery: The Indian judicial system is plagued by delays, which significantly affects mob lynching

cases. The National Crime Records Bureau (NCRB) reports that the average trial duration for mob lynching cases extends beyond three years, contributing to prolonged suffering for victims and discouraging families from pursuing justice.

Inadequate Police Training: Law enforcement agencies often lack the specialized training necessary to handle mob violence effectively. A 2024 review reveals that many police forces still lack comprehensive training in crowd control and investigation of mob lynching cases. This inadequacy hampers effective response and investigation, further complicating efforts to address and prevent mob violence. Addressing these challenges requires a multifaceted approach, including social reforms, improved witness protection, expedited judicial processes, and enhanced police training to combat mob lynching effectively and ensure justice for victims.

Recommendations

To improve the effectiveness of legal responses to mob lynching, the following recommendations are proposed:

Strengthening Legal Framework: India should enact a comprehensive national anti-lynching law that includes stringent penalties for perpetrators and robust victim protection mechanisms. This law should address gaps identified in current state-specific laws and provide a uniform standard across the country. Additionally, ensuring the uniform implementation of the Supreme Court's 2018 guidelines is crucial. This includes appointing nodal officers, establishing fast-track courts, and providing victim compensation, which has been inconsistently applied.

Enhancing Witness Protection: Robust witness protection programs must be implemented to ensure the safety and anonymity of witnesses in mob lynching cases. Recent incidents in 2024 demonstrate that witness intimidation remains a significant barrier to securing convictions. Effective witness protection can mitigate these risks and encourage more witnesses to come forward.

Expediting Justice Delivery: Establishing fast-track courts specifically for mob lynching cases in all states is essential for ensuring swift justice. As of mid-2024, only a few states have set up these courts, contributing to delays in the judicial process. Increasing the number of judges and improving court infrastructure can help manage cases more efficiently.

Community Engagement and Awareness: Comprehensive awareness campaigns are needed to educate the public about the legal consequences of mob lynching and promote communal harmony. Engaging community leaders and civil society organizations can help address the root causes of mob violence and foster a more informed and cohesive society.

Training and Capacity Building: Providing specialized training to police personnel on crowd control, investigation of mob violence, and protection of human rights is crucial. Developing standard operating procedures (SOPs) for law enforcement agencies will ensure a consistent and effective response to mob lynching incidents.

Implementing these recommendations will help address current challenges, improve the legal response to mob lynching, and ensure justice for victims.

Conclusion: Mob lynching poses a severe threat to the rule of law and social harmony in India. Although existing legal frameworks provide a foundation for addressing this issue, substantial improvements are necessary in implementation and enforcement. To effectively combat mob lynching, India must strengthen its legal framework by enacting a comprehensive national anti-lynching law with stringent penalties and robust victim protection. Enhancing witness protection programs is crucial for safeguarding those who come forward; while establishing fast-track courts can expedite justice delivery. Promoting community engagement through awareness campaigns and involving civil society organizations can address the root causes of mob violence. By focusing on these areas, India can make significant progress in curbing mob lynching, ensuring timely justice for victims, and restoring public trust in the legal system.

References:-

1. National Crime Records Bureau (NCRB). *Crime in India 2023*. Government of India, Ministry of Home Affairs. Available at: https://ncrb.gov.in/en/crime-india.
2. Supreme Court of India. *Guidelines for Preventing Mob Lynching*. July 2018. Available at: https://main.sci.gov. in
3. Manipur (Prevention of Mob Violence) Act, 2021. Available at: https://legislative.gov.in/actsofparliament fromtheyear/manipur-prevention-mob-violence-act-2021.
4. West Bengal Anti-Lynching Act, 2023. Available at: https://wb.gov.in/.
5. National Crime Records Bureau (NCRB). *Crime in India 2023: Special Report on Mob Lynching*. Government of India, Ministry of Home Affairs. Available at: https:// ncrb.gov.in/en/crime-india.
6. National Crime Records Bureau (NCRB). *Prosecution and Conviction Rates for Mob Lynching Cases, 2023*. Government of India, Ministry of Home Affairs. Available at: https://ncrb.gov.in/en/crime-india.
7. Supreme Court of India. *Review of Implementation of Guidelines on Mob Lynching*. 2023. Available at: https:/ /main.sci.gov.in/.
8. National Crime Records Bureau (NCRB). *Establishment of Fast-Track Courts for Mob Lynching Cases, 2023*. Government of India, Ministry of Home Affairs. Available at: https://ncrb.gov.in/en/crime-india.
9. Review of Police Training Programs for Handling Mob Violence. 2024. Available at: https://www.mha.gov.in/.
10. National Crime Records Bureau (NCRB). *Witness Intimidation and Its Impact on Mob Lynching Cases, 2023*. Government of India, Ministry of Home Affairs. Available at: https://ncrb.gov.in/en/crime-india.
11. Indian Penal Code
12. Supreme Court Guidelines on Mob Lynching
13. State-Specific Laws on Mob Lynching

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Innovative Materials for Environmental Remediation: A Comprehensive Review

Dr. Rashmi Ahuja*

***Professor (Chemistry) Govt. Motilal Vigyan Mahavidyalaya, Bhopal (M.P.) INDIA**

Abstract : Advanced materials have emerged as transformative solutions for pollution control, offering innovative capabilities to mitigate environmental contaminants across air, water, and soil. Recent research in nanomaterials, metal-organic frameworks, mixed matrix membranes, and single-atom catalysts has demonstrated remarkable progress in enhancing pollutant adsorption, catalysis, and degradation. These materials exhibit high surface areas, tunable porosity, and unique reactivity, enabling more efficient capture and breakdown of stubborn pollutants. Their versatile applications span from photocatalytic air purification and water treatment to soil remediation and heavy metal immobilization. This review examines the synthesis, properties, and performance of these advanced materials, critically evaluating their potential benefits and addressing challenges related to scalability, cost, and environmental safety. The integration of sustainable synthesis methods, such as green chemistry approaches and biomass-derived precursors, is highlighted as a key strategy for reducing the environmental footprint of material production. In addition, the development of smart, stimulus-responsive materials offers promising avenues for adaptive and efficient pollution control solutions. By bridging the gap between laboratory studies and practical applications, advanced materials are set to transform the field of environmental remediation. Continuous efforts are needed to optimize their functionality, ensure long-term stability, and minimize potential risks. Overall, the evolving landscape of advanced material technologies provides both opportunities and challenges, making it imperative for interdisciplinary collaboration among chemists, engineers, and environmental scientists. This review synthesizes recent progress in the field, outlines key scientific and engineering hurdles, and proposes future research directions that may enable the transition from experimental innovations to widespread environmental applications.

Introduction - Environmental pollution represents one of the most significant challenges facing modern society. The accelerated pace of industrialization, urbanization, and population growth has led to unprecedented levels of contaminants in our air, water, and soil. These pollutants not only degrade ecosystem health but also pose serious threats to human well-being through various exposure pathways. Traditional pollution control technologies, while valuable, often struggle with limitations in efficiency, selectivity, and sustainability, particularly when addressing emerging contaminants and complex pollution scenarios.
Recent advances in materials science and nanotechnology have opened new frontiers in pollution control through the development of engineered materials with exceptional properties. These advanced materials overcome many limitations of conventional approaches by offering enhanced surface area, tunable porosity, specific binding sites, and improved catalytic activity. Their ability to interact with pollutants at the molecular or atomic level enables unprecedented control over contaminant capture, transformation, and degradation processes.

This review examines four major classes of advanced materials that show particular promise for environmental applications: nanomaterials, metal-organic frameworks (MOFs), mixed matrix membranes (MMMs), and single-atom catalysts (SACs). Each of these material categories brings unique advantages to pollution control challenges, enabling targeted interventions across different environmental media. We explore their synthesis methods, structural characteristics, mechanisms of action, and performance metrics in various pollution control scenarios. Furthermore, this review addresses critical considerations regarding scalability, cost-effectiveness, and potential environmental implications of these materials. By acknowledging both the opportunities and challenges associated with advanced materials, we aim to provide a balanced assessment of their potential contribution to sustainable environmental management strategies. The concluding sections outline promising research directions and practical recommendations for translating laboratory discoveries into real-world pollution control solutions.

Types of Advanced Materials for Pollution Control

Nanomaterials: Nanomaterials, with dimensions ranging from 1 to 100 nanometers, exhibit unique physical and chemical properties distinct from their bulk counterparts due to quantum confinement effects and dramatically increased surface-to-volume ratios. These properties make them particularly effective for pollution control applications. Carbon-based nanomaterials, including carbon nanotubes, graphene, and graphene oxide, possess exceptional adsorption capacities for organic pollutants due to their high specific surface area (often exceeding 2000 m^2/g) and pi-electron rich structures that facilitate strong interactions with aromatic contaminants.

Metal and metal oxide nanomaterials, such as nano-TiO, , nano-ZnO, and nanoscale zero-valent iron (nZVI), demonstrate remarkable catalytic and photocatalytic properties for pollutant degradation. Their enhanced reactivity stems from a high density of surface active sites and unique electronic configurations. For example, nZVI particles have proven highly effective for the reductive degradation of chlorinated organic compounds and immobilization of heavy metals in contaminated groundwater and soil systems.

The versatility of nanomaterials extends to their modification potential, where surface functionalization can enhance selectivity toward specific contaminants or improve stability in environmental matrices. These modifications enable tailored solutions for diverse pollution scenarios, from capturing volatile organic compounds in indoor air to removing pharmaceutical residues from wastewater.

Metal-Organic Frameworks (MOFs): Metal-Organic Frameworks represent a revolutionary class of crystalline porous materials composed of metal ions or clusters coordinated to organic ligands. Their exceptional characteristics include record-breaking porosity (surface areas up to 7000 m^2/g), uniform and tunable pore sizes, and modular design that allows precise control over structure and functionality.

The virtually limitless combinations of metal nodes and organic linkers enable MOF design with specific chemical affinities for target pollutants. This structural versatility allows researchers to develop MOFs with tailored properties for particular environmental applications, from selective adsorption of greenhouse gases to catalytic degradation of persistent organic pollutants.

Recent innovations in MOF development have addressed stability limitations in aqueous environments through strategies such as hydrophobic modification and incorporation of stable metal-ligand bonds. These advancements have expanded the practical utility of MOFs for water treatment applications, where they show remarkable selectivity and capacity for heavy metals, organic dyes, and emerging contaminants.

Mixed Matrix Membranes (MMMs): Mixed Matrix Membranes combine polymeric matrices with inorganic or MOF fillers to create composite materials that overcome the inherent limitations of conventional polymeric membranes. This hybrid approach addresses the traditional permeability-selectivity trade-off that has constrained membrane technology, offering improved separation performance without sacrificing process efficiency.

The incorporation of nanomaterials, zeolites, or MOFs into polymer matrices creates synergistic effects that enhance contaminant rejection, reduce membrane fouling, and improve mechanical stability. These improvements extend operational lifetimes and reduce energy requirements in filtration processes, offering more sustainable solutions for water purification and gas separation.

MMMs have demonstrated particular promise for removing emerging contaminants such as pharmaceuticals, personal care products, and microplastics from water sources. The ability to fine-tune membrane properties through careful selection of both polymer matrices and filler materials enables customized solutions for specific pollution challenges.

Single-Atom Catalysts (SACs): Single-Atom Catalysts represent the frontier of heterogeneous catalysis, featuring isolated metal atoms dispersed on appropriate support materials. This atomic-level dispersion maximizes metal utilization efficiency and creates unique catalytic environments that often demonstrate superior activity and selectivity compared to conventional nanoparticle catalysts. The precisely defined active sites in SACs enable unprecedented control over catalytic reactions, making them particularly valuable for selective pollutant degradation. Recent studies have shown that SACs can achieve complete mineralization of recalcitrant organic contaminants under mild conditions with minimal energy input, offering environmentally benign approaches to water purification.

Innovations in SAC design include nanoconfinement strategies that dramatically enhance catalytic performance by creating optimized microenvironments around active sites. These confined systems have demonstrated reaction rate enhancements exceeding 30-fold compared to conventional catalysts, representing a paradigm shift in catalytic pollution control technologies.

Applications in Air Pollution Control: Advanced materials have revolutionized air pollution control strategies across multiple applications, from indoor air quality management to industrial emission control. Their exceptional properties enable more efficient capture and degradation of both particulate and gaseous pollutants compared to conventional technologies.

Nanoengineered filtration materials demonstrate remarkable capabilities for particulate matter removal, including the challenging ultrafine particles (PM2.5 and smaller) that pose significant health risks. Electrospun nanofiber filters, with fiber diameters ranging from 50-500 nm, create highly porous structures that combine low air

resistance with excellent particle capture efficiency. These materials achieve filtration performance comparable to HEPA filters but with significantly reduced pressure drop, translating to energy savings in air handling systems.

For gaseous pollutant control, functionalized nanoporous adsorbents offer solutions that exceed the capabilities of traditional activated carbon. Hierarchically structured materials combining micro-, meso-, and macropores optimize both mass transfer kinetics and adsorption capacity, enabling efficient capture of volatile organic compounds (VOCs), formaldehyde, and other indoor air pollutants. Metal-organic frameworks with tailored pore geometries and chemical functionalities provide selective adsorption of specific target gases, offering potential for removing trace contaminants from complex air mixtures.

Photocatalytic air purification represents another frontier application of advanced materials. TiO, -based nanostructures and sensitized derivatives enable the solar-driven or artificial light-driven degradation of gaseous pollutants through the generation of reactive oxygen species. Recent developments in visible-light-responsive photocatalysts through strategies such as doping, heterojunction formation, and surface plasmon resonance effects have expanded the practical applications of these systems beyond UV-dependent processes.

Applications in Water Pollution Control: Water pollution control represents perhaps the most extensively developed application area for advanced materials, spanning from drinking water treatment to industrial wastewater remediation. Materials innovation has addressed persistent challenges in contaminant removal efficiency, energy requirements, and treatment of emerging pollutants.

Advanced adsorbents with engineered porosity and surface chemistry demonstrate exceptional performance for removing heavy metals, organic micropollutants, and emerging contaminants from water. Hierarchically porous carbon materials derived from sustainable biomass precursors have achieved record-breaking adsorption capacities for various water contaminants while offering cost advantages over conventional alternatives. Functionalized adsorbents with specific binding sites for priority pollutants enable selective removal even at trace concentrations or in complex water matrices.

Membrane technologies have benefited substantially from materials innovation. Two-dimensional nanomaterial-based membranes leveraging graphene oxide or MXenes enable precise molecular sieving with water permeability orders of magnitude higher than conventional reverse osmosis membranes. Mixed matrix membranes incorporating MOFs or other functional fillers demonstrate enhanced selectivity for specific contaminants while maintaining high water flux, addressing the traditional permeability-selectivity trade-off that has limited membrane performance.

Catalytic and photocatalytic systems for water purification have advanced through the development of materials that enable pollutant degradation under increasingly mild conditions. Single-atom catalysts for persulfate activation achieve complete degradation of recalcitrant pollutants at catalyst loadings orders of magnitude lower than conventional materials. Visible-light-responsive photocatalysts based on strategies such as Z-scheme heterojunctions, plasmonic enhancement, and quantum dot sensitization enable solar-driven water treatment without the need for additional chemical inputs.

Applications in Soil Remediation: Soil contamination presents unique challenges for remediation technologies due to the complex, heterogeneous nature of soil matrices and the limited mobility of treatment agents. Advanced materials have enabled innovative in situ approaches that minimize site disturbance while effectively addressing various contaminant classes.

Nanoremediation using engineered particles represents a transformative approach for treating subsurface contamination. Zero-valent iron nanoparticles (nZVI) have demonstrated exceptional effectiveness for in situ degradation of chlorinated solvents and immobilization of heavy metals through reduction reactions. Surface modifications and stabilization strategies enhance nZVI mobility in soil matrices, enabling treatment of larger contamination zones with fewer injection points. Bimetallic nanoparticles incorporating catalytic metals such as palladium or nickel achieve accelerated contaminant transformation rates and expand the range of treatable compounds.

For heavy metal contamination, engineered sorbents provide sustainable immobilization strategies that reduce bioavailability and leaching potential. Modified biochars combining high adsorption capacity with alkalinity effectively sequester metals through multiple mechanisms including surface complexation, precipitation, and redox reactions. These materials offer cost-effective alternatives to conventional amendments while providing additional soil quality benefits such as improved water retention and enhanced microbial activity.

Stimuli-responsive materials represent an emerging frontier in soil remediation, enabling triggered contaminant capture or degradation in response to specific environmental conditions. These intelligent systems can adapt their properties based on factors such as pH, temperature, or contaminant concentration, maximizing remediation efficiency while minimizing resource consumption and potential side effects.

Challenges and Limitations: Despite the promising performance of advanced materials for pollution control, several significant challenges must be addressed to realize their full potential in real-world applications. These limitations span technical, economic, and environmental dimensions, requiring interdisciplinary approaches for

effective resolution.

Scalability represents a primary barrier to widespread implementation, as many advanced materials involve sophisticated synthesis procedures that are challenging to translate to industrial production scales. Laboratory synthesis methods often employ expensive precursors, hazardous reagents, or energy-intensive processes that become prohibitively costly or impractical at larger scales. Bridging this scaling gap requires innovative manufacturing approaches that preserve critical material properties while enabling economical mass production.

Cost considerations extend beyond production to include implementation, operation, and end-of-life management of advanced materials. High material costs can be justified only when performance advantages significantly outweigh price premiums compared to conventional alternatives. Life cycle economic analysis must account for all aspects of material deployment, including potential savings from improved efficiency, reduced energy consumption, or extended operational lifetimes.

Environmental implications of the materials themselves require careful assessment to ensure that pollution control solutions do not create new environmental problems. Questions regarding the fate, transport, and potential ecological effects of nanomaterials or other advanced materials after use or accidental release remain incompletely answered. These knowledge gaps necessitate comprehensive risk assessment frameworks specific to novel material properties and applications.

Technical challenges in material stability and regeneration capacity affect long-term performance in real-world conditions. Many advanced materials demonstrate excellent initial performance but suffer from degradation or fouling during extended operation in complex environmental matrices. Developing more robust materials that maintain their functionality across varying conditions and multiple treatment cycles represents a critical research need.

Future Directions: Several promising research directions are emerging to address current limitations and expand the potential applications of advanced materials for pollution control. These approaches combine fundamental materials science with practical engineering considerations to develop more effective, sustainable, and implementable solutions. Sustainable synthesis approaches represent a critical area for advancement, focusing on green chemistry principles to reduce the environmental footprint of material production. Biomass-derived precursors offer renewable alternatives to petroleum-based starting materials, while solvent-free or water-based synthesis methods minimize waste generation and environmental impacts. Mechanochemical approaches and continuous flow synthesis enable more efficient production with reduced energy requirements, addressing both environmental and economic concerns.

Smart and responsive materials that adapt to changing environmental conditions show particular promise for next-generation pollution control. Stimuli-responsive systems that modify their properties in response to specific triggers enable more efficient resource utilization and improved performance across varying pollution scenarios. Self-healing materials that autonomously repair damage during operation offer potential for extended service lifetimes in challenging environmental applications.

Digital and computational approaches increasingly guide materials design and optimization, reducing reliance on traditional trial-and-error methods. Machine learning algorithms that identify structure-property relationships accelerate the discovery of high-performance materials for specific applications. Computational screening of thousands of potential material candidates enables researchers to focus experimental efforts on the most promising candidates, streamlining the development process.

Integration of multiple functional materials into hierarchical or multifunctional systems represents another frontier, enabling simultaneous detection, capture, and degradation of pollutants within unified platforms. These integrated approaches offer potential for more comprehensive pollution control strategies that address complex contamination scenarios with improved efficiency and reduced complexity.

Conclusion and Suggestions: Advanced materials have demonstrated exceptional potential for transforming pollution control across air, water, and soil media. Their unique properties enable more efficient, selective, and sustainable approaches to environmental remediation compared to conventional technologies. By harnessing the precise control offered by materials engineering at the nano and molecular scale, researchers have developed solutions that address persistent challenges in pollution management. Despite their promising performance characteristics, the transition from laboratory demonstration to practical implementation requires addressing significant challenges in scalability, cost-effectiveness, and environmental safety. Sustainable approaches to material design, production, and application are essential for ensuring that pollution control solutions do not create unintended environmental consequences.

For future development, we suggest several key priorities: (1) standardized testing protocols that simulate realistic environmental conditions to enable meaningful performance comparisons; (2) life cycle assessment methodologies specific to advanced materials that account for their unique properties and applications; (3) green synthesis approaches that align with circular economy principles and minimize resource consumption; and (4) collaborative research frameworks that bridge disciplinary boundaries between materials science, environmental engineering, and regulatory science.

The growing environmental challenges associated with industrial development, urbanization, and emerging contaminants necessitate innovative approaches that

transcend the capabilities of conventional pollution control technologies. Advanced materials, thoughtfully designed and responsibly implemented, offer promising pathways toward more effective environmental protection strategies. By addressing current limitations through interdisciplinary collaboration and sustainable design principles, these materials can contribute significantly to creating cleaner, healthier environments for current and future generations.

References:-

1. Saparov, K., Yakhshieva, Z., Kholdorova, G., Sangirova, M., Dadaeva, G., Rajabov, K., Asallaev, U., & Safarova, N. (2024). Advanced Materials for Pollution Control that Integrate Engineering Science with Environmental Conservation. Natural and Engineering Sciences, 9(3), 77-87.
2. Khin, M. M., Nair, A. S., Babu, V. J., Murugan, R., & Ramakrishna, S. (2012). A review on nanomaterials for environmental remediation. Energy & Environmental Science, 5(8), 8075-8109.
3. Qu, X., Alvarez, P. J., & Li, Q. (2013). Applications of nanotechnology in water and wastewater treatment. Water Research, 47(12), 3931-3946.
4. Wang, B., Lv, X. L., Feng, D., Xie, L. H., Zhang, J., Li, M., Xie, Y., Li, J. R., & Zhou, H. C. (2016). Highly stable Zr(IV)-based metal–organic frameworks for the detection and removal of antibiotics and organic explosives in water. Journal of the American Chemical Society, 138(19), 6204-6216.
5. Mauter, M. S., & Elimelech, M. (2008). Environmental applications of carbon-based nanomaterials. Environmental Science & Technology, 42(16), 5843-5859.
6. Wang, Q., & Yang, Z. (2023). Advances in heterogeneous catalysts for water pollution control. Nature Communications, 14, 1287-1302.
7. Zhang, S., Liu, D., & Meng, X. (2022). Confined single-atom catalysts: Design strategies and applications. Journal of the American Chemical Society, 144, 13087-13104.
8. Li, Y., Zhou, J., & Dai, Y. (2023). Nanoconfined catalysts for water pollution control. Nature Sustainability, 6, 416-426.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

India's Role as a Mediator in the US-China Hegemony Conflict: A Comprehensive Study

Kaustubh Nihal*

***Research Scholar (JRF) (Political Science) Jai Prakash University, Chapra (Bihar) INDIA**

Abstract : This paper will study the role of India as a mediator between the USA and China's conflict for hegemony. Through the in-depth study, the paper will explore the various dimensions of relations between the US and China. The paper will emphasize India's fitness for the role of a mediator between two major powers of the world including the sources, effectiveness, challenges and major takeaways for India.
Keywords: mediation, strategic, burgeoning, counter-balancing, hegemony, indispensable, geopolitics, disintegration, competency, hegemonic, shortcoming, navigability, constrained, tranquility, the US-China, comprehensive.

Introduction - India's role as a mediator in the global conflict is deeply rooted in its history.**Sayers, Matthew R.** (2012) said that the culture of mediation derives from its ancient religious philosophy of Hinduism and Buddhism which stands on the principle of peaceful resolution of conflict. The beauty of mediation is depicted in the epics of Ramayana and Mahabharata. One such incident is when lord Krishna mediated between the two warring parties in Mahabharata[1].

In the present world order, India positions itself as the fastest-growing economy in the world with a reliable and stable market for the world economy. India's strategic might burgeoning is not limited to the subcontinent but also to the global level (**Pillalamarri, A.**, 2023)[2]. India being the world's largest democracy holds soft power to a considerable extent.

Schiff, J. (2005) mentioned in his article thatIndia is endowed with a strategic position, stable growth rate and self-reliance, making it a natural ally and counter-balancing force between the USA and China hegemony conflict.[3]
In essence, India's role as a mediator is underpinned by its historical ethos, global presence, and the respect it commands on the world stage, making it an indispensable bridge between two of the world's superpowers.

The odyssey of the USA and China and the Status Quo: The US and China are the two most important countries in the world in terms of economy, politics, geography, defense, and power influence.

The US has been the greatest power since the First World War and has had great influence on the world since then, be it the global economy, geopolitics or soft power influence. Being the leader of the Western block and flag bearer of the democratic world order the US holds major influence in global politics. The US controls the major global institutions such as the United Nations, World Bank, IMF, WHO, and WTO. The USA has its preferences and reservations in the current world order (**Schere, E.**, 2021).[4] Whereas, China on the other hand is a rising power in global power politics. **Mansbach, R. W., & Ferguson, Y. H.** (2021) mention that, Since the disintegration of USSR in the 1991, its successor Russia has had limited resistance competency to the US hegemony[5]. China emerged as a counterforce against the US hegemonic world order. It has overcome the shortcomings of Russia which include a closed market policy, limited navigability, constrained economy, limited foreign exchange reserves, rigid foreign policy etc. (**Foot,**2020)[6]

After taking all of these factors into consideration and establishing a relationship between both of these countries in the present global dynamics, one inevitable question arises: Is the US and China in the Thucydides trap?

This is one of the most prominent questions of the 21st century among the various geopolitical analysts around the world. However, both sides have categorically rejected any such claims, at least publicly. Many geopolitical thinkers and political analysts have attempted to explain this situation in their understanding but the proximity of the situation can be traced in the theory of Thucydides trap.

Thucydides trap is a situation where an existing power is challenged by the emerging power for the hegemony, hence war is apparent, and it is described and popularized by Graham T. Allison, (2012). The origin of the concept is traced back to 431 BC when a military general and Athenian thinker Thucydides suggested the inevitable war between Athens and Sparta in the Peloponnesian War. Since Spartans feared the rising power of the Athenians which

paved the ground for the serious confrontation due to the challenge by the rising power Athens on the existing power Sparta.

Graham T. Allison (2012) in his article in The Financial Times, studied the 16 occurrences in the history of such power rivalry and found that there are 12 such instances when war happened.[7]

Taking the queue from these lines, the present relationship between the US and China is believed to be in the Thucydides trap by many strategic analysts. The changing dynamics between both countries are neither new nor disguised anymore after the recent Donald Trump's trade war with China has brought the economic tensions between the two parties into the limelight. The gigantic economic powers have eventually locked into the rivalry for hegemony (**Rushe, D.**, 2019, August 23). [8]

Sarhan, F. (2023, October 10) in his article in Forbes highlighted thatIt is a multidimensional conflict that is not only limited to military dominance but also extended to geopolitical, economic, trade, technology, diplomacy and human rights[9]. The tension between these two parties has a lot of stakes in the peace of the world since both are great economic and military powers.

In such a situation a third and neutral front is the need of an hour and that could be India. According to **Freedom House (2023),**India being the largest democracy is largely appreciated and trusted by the West including the USA. It is a strong member of Asia, [10]NAM (non-aligned movement) and historic relations with the USSR during the Cold War brought it closer to all non-Western countries **(Cohen, S. F., 2004).** [11]

India is truly a historic global leader and a Vishwa guru (global teacher). India deems fit and a perfect match for the mediator in the US-China conflict. Being a mediator between the US and China won't be a cakewalk for India[12]**(Kim and Singh, 2020)**. There will be challenges associated but also there will be blessing in disguise for India. Let us discuss various aspects of the US-China conflict and the role of India as a mediator.

India's relationship with the USA:

1. Economic: India-US bilateral trade in goods and services which continued to rise and has likely surpassed $200 billion in calendar year 2023 despite the challenging global trade environment. The bilateral goods and services trade between the US and India has almost doubled since 2014 (**United States Trade Representative, 2024**).[13]

2. Political: Both countries share the commitment to Human rights, freedom, the rule of law, democratic values and peaceful co-existence (**The White House, 2023)**. [14]

3. Strategic: India and the USA are members of many strategic forums such as Quad (USA, India, Japan, Australia), I2U2 (Israel, India, USA, UAE), G20 etc. (**Council on Foreign Relations, 2023)**.[15]

4. Security: Both countries share the same view on the peace and security in the Indian Ocean region and are ready to cooperate in the counter-balancing measure against any adversaries that intend to destabilize the strategic fabric in the region by the act of aggression or otherwise (**Miller & Harris, 2023)**[16].

5. Defence:

a. India and the USA have signed many pacts in the recent past which brought both countries closer to each other.
b. India has signed 4 foundational defence agreements with the USA i.e. GSOMIA (2002), LEMOA (2016), COMCASA (2018), and BECA (2020).
c. Joint production of GE F-414 jet engines in India will provide a boost to indigenous fighter aircraft production. **(Lalwani & Singh, 2023)**[17]**.**

India's relationship with China:

1. Historical: India was the first non-socialist country to establish a diplomatic relationship with China on April 1, 1950.

2. Cooperation: An agreement on peace and tranquillity along LAC (Line of Actual Control) was signed in 1993 and in 2005 India established a Strategic and Cooperative Partnership for Peace and Prosperity[18]**(Muni, 2020**).

3. Trade and Economic: China was India's largest trading partner between 2018 to 2021. Bilateral Trade between these two has soared to USD 136 billion (**PIB, 2022**).[19]

4. Recent Development: In 2014 Xi Jinping visited India. Nathu la route opened for Kailash Man Sarovar Yatra. E-Visa facility for Chinese tourists (**Bhatia, 2021**)[20].

Factors influencing India's role as a mediator:

1. India has had historical ties with China since ancient times, with many Chinese philosophers coming to India for their studies and research purposes[21] such as Sima Qian (he mentioned India as Yuandu and Tiandu), Faxian (a Buddhist scholar), and Huen Sang (who met King Harshvardhan) which establishes deep cultural and historical ties with China (**Embassy of India, 2013**).
2. Similarly, India has deep strategic ties with the USA presently, the USA has recognized India as a nuclear power nation and signed a nuclear agreement in 2005 which makes it the first nation to accept India's nuclear power[22](**Sultan & Adil, 2008**).
3. India has been accepted by both countries as a non-partial and non-aggressor (**Rao, 2019**)[2323]**Rao, S. (2019), *India's Role in Global Politics: A Comparative Analysis***.
4. India's economic dependence on China and the US makes India a remarkable candidate to mediate their conflict since the value of trade between India and the USAis $192 billion (**United States Trade Representative, 2023)**[24] and the trade value between India-China for the same period is $136 billion[25] (**Chinese customs, 2023)**. It is highly unlikely for both the economies to ignore India largely.
5. India stands tallest in terms of infantry which show-

cases its defence capabilities.[26] Indian technological advancement through self-made Brahmos nuclear missiles, nuclear triad, S-400 triumph, Anti- Sat strike capabilities ensures India's dominance and self-dependency (**Kanwal, 2012)**.

6. Indian democracy in principle appreciated by the USA (**The White House, 2021**)[27] and in practice appreciated by China (**Kohli, 2001).**[28]
7. Its rule of law, human rights values, refugee protection and the concept of "VasudhevKutumbkam" represent the true nature of Indian philosophy[29](**Warrier, 1953**).

Issues associated with India's mediation in the USA-China conflict:

1. Neither the USA nor China trust India's intentions. During the Cold War India formed NAM which was mainly treated as the *B-wing* of the USSR which many times infuriated the USA[30] (**Laskar, 2004**).
2. India's development of nuclear capabilities shocked China and made it more protectionist (**Ballawar, 2022)**.[31]
3. Historically, India has never been in the block of the West nor does it have any racial similarities with the West hence there is no natural alliance (**Chatterjee, 2019)**.[32]
4. India and China fought a full-fledged war in 1962 and continuous border conflict made India and China hostile to each other (**Britannica, 2024**).[33]
5. India's Intervention in east Pakistan and carving out the new country Bangladesh made the USA cautious (**Bose, 2011**). [34]
6. Integration and assimilation of Sikkim as a state of India made China anxious and more cautious (**Bajpai, 2018**).[35]
7. Both countries are poles apart, the USA is capitalist-democratic and China is a Socialist-Communist country[36] (**Smith, 2022**).
8. Except for trade, they do not lie on the same page. It is highly intricate for India to mediate between these two since they both have no cross-overs or any cultural influence (**Verma, 2023**).[37]

In conclusion, it can be said that India needs to lookat things as they are and not how they ought to be. It needs to align the alignments and shall not fall into the game of zero-sum game between the great power politics of Cold War 2.0 as modern political scholarsterm the relationship of the USA and China. There is no doubt that India is the perfect match for the mediator between the USA and China due to its historical ties, cultural values, deep strategic engagement and economic dependence. It is also true that great things come at a great cost and eventually mediation between these two has intrinsic and extrinsic challenges as well.

However, if we look purely from the perspective of India there is a *blessing in disguise for India* in the conflicting relations between USA and China. India will emerge as the great power of the world if the current situation prevails for a longer duration. India's exportsmay boost in the international market.Since both are the giants of the world trade and keep slapping sanctions on each other it might create a void in the exports of food, energy, medicines and IT services to the global market which India may bridge, provided India's domestic demand fulfilment. India may witness a high number of companies shifting their bases from China to India a recent trend observed in the post covid world. The coming years are of great importance for India and it needs to be ready for any eventuality.

References:-

1. Sayers, Matthew R. (2012),*Claiming Modes of Mediation in Ancient Hindu and Buddhist Ancestor Worshi*p, Journal of Ritual Studies, 26(1), 5.
2. Pillalamarri, A. (2023), *How India Arrived on the World Stage in 2023*, The Diplomat. (https://thediplomat.com/2023/12/how-india-arrived-on-the-world-stage-in-2023)
3. Schiff, J. (2005), *Opening Its Doors: India's Emergence on the Global Stage*, The Diplomat (https://www.elibrary.imf.org/downloadpdf/book/9781589065680/ch01.pdf)
4. Schere, E. (2021), *Soft Power - The Underestimated Strategy for Global Influence*, The Fletcher Forum of World Affairs, 45(2).(https://ssrn.com/abstract=3922807)
5. Mansbach, R. W., & Ferguson, Y. H. (2021), *The Return of Geopolitics and Declining U.S. Hegemony*, In Populism and Globalization (Chapter 3).
6. Foot, R. (2020)., *China's rise and US hegemony: Renegotiating hegemonic order in East Asia?* International Politics, 57, 150–165
7. Allison, G. T. (2015), *The Thucydides Trap: Are the U.S. and China Headed for War?* The Atlantic,(https://www.theatlantic.com/international/archive/2015/09/united-states-china-war-thucydides-trap/406756/)
8. Rushe, D. (2019, August 23), *Here are the reasons for Trump's economic war with China*, *The Guardian (*https://www.theguardian.com/us-news/2019/aug/23/trump-china-economic-war-why-reasons*)*
9. Sarhan, F. (2023, October 10), *US-China Trade Tensions To Impact The Environment And Geopolitics*. *Forbes(*https://www.forbes.com/sites/forbesbusinesscouncil/2023/10/10/us-china-trade-tensions-to-impact-the-environment-and-geopolitics/?sh=5afd453f301e*)*
10. Freedom House. (2023), *Freedom in the World 2023: Democracy Under Siege*.Retrieved from (https://freedomhouse.org/report/freedom-world/2023/democracy-under-siege)
11. Cohen, S. F. (2004), *India: Emerging Power*, Brookings Institution Press (https://www.brookings.edu/books/india-emerging-power/)
12. Kim and Singh (2020, September 16),*Prospects for Crisis Management on the China-India Border,*United States Institute of Peace (USIP) (https://www.usip.org/publications/2020/09/prospects-crisis-management-

china-india-border)
13. United States Trade Representative. (2024, January 12),*Joint Statement on the United States-India Trade Policy Forum*(https://ustr.gov/about-us/policy-offices/press-office/press-releases/2024/january/joint-statement-united-states-india-trade-policy-forum).
14. The White House. (2023),*Joint Statement from the United States and India*(https://www.whitehouse.gov/briefing-room/statements-releases/2023/06/22/joint-statement-from-the-united-states-and-india/)
15. Council on Foreign Relations. (2023),*Strategic Forums: India and the USA*(https://www.cfr.org/asia/india)
16. Miller, M. C., & Harris, C. (2023),*India's Efforts to Strengthen Indian Ocean Security,*Council on Foreign Relations(https://www.cfr.org/blog/indias-efforts-strengthen-indian-ocean-security)
17. Lalwani,S & Singh,V (2023), *A Big Step Forward in U.S.-India Defense Ties,*United State Institute of Peace (https://www.usip.org/publications/2023/06/big-step-forward-us-india-defense-ties)
18. Muni, S. D. (2020),*India and China Relations: A Historical Perspective*. International Journal of Humanities & Social Science Invention (IJHSSI), 9(7), 21-26.
19. Press Information bureau(2022, August 19), *Indian exports to China witness growth*, PIB(https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1795642).
20. Bhatia, R. (2021), *India-China Relations: Recent Trends and Future Prospects*, Diplomatist. (https://diplomatist.com/2021/03/22/the-future-of-india-china-relations/)
21. Embassy of India, Beijing(2013, August 21),*India-China Bilateral Relations – Historical Ties,*Archived at the Wayback Machine.
22. Sultan, M., & Adil, M. B. (2008),*The Henry J. Hyde Act and 123 Agreement: An Assessment.* South Asian Strategic Stability Institute.Archived from the original (PDF) on September 18, 2011. Retrieved August 21, 2011.
23. Rao, S. (2019),*India's Role in Global Politics: A Comparative Analysis*,International Relations Review, 36(2), 87-102.
24. United States Trade Representative. (2023),*India Trade & Investment Summary.*(https://ustr.gov/countries-regions/south-central-asia/india)
25. Chinese customs (2023, January 13),*Total India-China trade for calendar year (CY) 2022 stood at US$135.98 billion, 8.4 percent higher than the US$125 billion mark in 2021*(https://www.india-briefing.com/news/india-china-bilateral-trade-and-investment-prospects-26894.html/)
26. Kanwal, G. (2012, September 24),*India's Military Modernization: Plans and Strategic Underpinnings,*The National Bureau of Asian Research (NBR) Commentary for the U.S. Senate India Caucus(https://www.nbr.org/publication/indias-military-modernization-plans-and-strategic-underpinnings/)
27. The White House (2021, September 24), *The United States and India – Global Leadership in Action* (https://www.whitehouse.gov/briefing-room/statements-releases/2021/09/24/fact-sheet-the-united-states-and-india-global-leadership-in-action/)
28. Kohli, A. (2001),*The Success of India's Democracy, Cambridge University Press*(https://assets.cambridge.org/97805218/01447/sample/9780521801447ws.pdf)
29. Warrier, A. G. K. (1953),*Maha Upanishad. Theosophical Society,* MadrasOnline,Verse VI.71–73.
30. Laskar, R. K. (2004),*Respite from Disgraceful NDA Foreign Policy,* Congress Sandesh, 6(10), 8.
31. Ballawar, N. (2022, April 14),*Analysing China's Nuclear Capabilities and Implications for India, Orcasia.org*(https://orcasia.org/article/124/analysing-chinas-nuclear-capabilities-and-implications-for-india)
32. Chatterjee, P. (2019),*India's Foreign Policy: A Historical Perspective,*Oxford University Press (https://www.scribbr.com/citation/generator/apa/)
33. Britannica, T. Editors of Encyclopaedia (2024, January 3), *Sino-Indian War*, *Encyclopedia Britannica* (https://www.britannica.com/topic/Sino-Indian-War)
34. Bose, S. (2011).*Transforming India: Challenges to the World's Largest Democracy,*Harvard University Press(https://www.scribbr.com/apa-style/format/)
35. Bajpai, G. S. (2018, November 1),*China's Shadow over Sikkim: Sikkim, India, and Communist China,*Indian Defence Review(https://www.indiandefencereview.com/spotlights/chinas-shadow-over-sikkim-sikkim-india-and-communist-china/)
36. Smith, J. (2022), *Comparative Analysis of Political and Economic Systems: USA and China,*Journal of International Relations, 45(3), 189-205*(https://doi.org/10.1177/17504813221099191)*
37. Verma, R. (2023),*Challenges of Mediation: India's Role in US-China Relations,*International Journal of Diplomacy and Conflict Resolution, 12(2), 87-102.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Impact of Monetary policy on Inflation in India

Anil Chouhan*

***Assistant Professor, SAM Global University, Raisen (M.P.) INDIA**

Abstract : The objective of this paper is to analyze and discuss the impacts of monetary policy on India inflation, identify the major drawbacks of the policies in minimizing the inflation rate and suggest policy recommendations on some key issues of India inflation. To estimate the effects of the monetary policy in India, at first the impact of different monetary policy tools used by the "Reserve Bank of India" Next, the impact of the monetary policy of India's bank and government have been analyzed for which the data on money supply, growth of the GDP, changes in the price level, and changes in the unemployment rate have been quantitatively analyzed. We mainly used Consumer Price Index to determine the level on inflation in India. We have further analyzed whether there is any correlation between (a) inflation rates and money supply, and (b) inflation rates and growth of GDP. The conclusions drawn are grounded in the results of comprehensive qualitative and quantitative analyses. We have found the correlation, the impacts of monetary policy and inflation, their drawbacks and possible solutions such as independence of the monetary policy from the fiscal policy and enhancing the transparency, communication and signaling effect of policy moves, and control money supply through various open market operations. Due to limited access to comprehensive data, some of our analysis relies on hypotheses and models, resulting in variations depending on the model used. Recently, several attempts by the RBI to control inflation through restrictive monetary policies have led to a slowdown in economic growth, sparking ongoing debates among academics and policymakers regarding the effectiveness of monetary policy in India. In this context, the current study aims to assess the causal relationship between monetary policy and its primary objectives—economic growth and inflation control in India. The methodology employed is Granger Causality testing in the frequency domain, as developed by Lemmens et al. (2008), with the weighted average call money rate serving as a proxy for monetary policy. In view of the fact that output gap is one of the determinants of future inflation, an attempt has also been made to study the causal relationship between output gap and inflation. The results of empirical estimation show a bi-directional causality between policy rate and inflation and between policy rate and output, which implies that the monetary authorities in India. Policymakers are equally focused on both inflation and output growth when formulating policy. Moreover, efforts to control inflation often impact output to the same extent, or even more, than inflation itself, thereby hindering the growth process. Previous studies on India have also found a positive relationship between the output gap and inflation.. Furthermore, the output gap causes inflation only in the short-to medium-term

Keywords: Monetary Policy, Inflation, Output Gap, Granger Causality, Frequency Domain.

Introduction - Monetary policy in India is equally important as in developed countries. Monetary policy basically targets price stability. For any government, one of the most urgent economic issues is to stabilize the price and maintain a price level within the limits of purchasing power of the common people. The notion that monetary policy should affect inflation dynamics is an old one, dating at least to Friedman's dictum that inflation is always a monetary phenomenon (1970). In his famous "Critique," Lucas (1975) showed how changes in monetary policy could, in principle, affect inflation dynamics. However, Lucas considered only very stylized monetary policies. There are several ways in which monetary policy may have changed over time. Ball, Mankiw, and Romer (1988) have argued that changes in monetary policy may lead to changes in the frequency of price adjustment. The New Open Economy Macroeconomics (NOEM) literature, pioneered by Obstfeld and Rogoff (1995), suggests that monetary policy affects the real economy through the interest rate and exchange rate channels. Monetary policy is concerned with the measures taken to control the supply of money, the cost and availability of credit. Like many developing countries, the primary focus of monetary policies in India is to obtain high sustainable growth. However, to achieve and maintain a higher growth rate, policy makers need to understand the determinants of growth as well as how policies affect growth. In a developing country like ours the monetary policy has been effectively used as a tool for overcoming depression and inflation. Along with economic growth monetary policy also has to ensure price stability, as

excessive inflation has an adverse distribution effect and hinders economic development.

Literature Review:

There are several theories and empirical studies have been conducted on monetary policy globally over the past decades. The management and control of money supply through the monetary policy implemented by a country's central bank can play a crucial role in managing inflation and promoting economic stability &controlling of inflation in that country. The monetarist approach, that money supply growth causes inflation, can be tested by observing the correlation between the rate of inflation and the rate of monetary growth. Causality can be established through statistical methods and institutional proof. The direction of causality can be detected by examining the timing of the relationship between changes in monetary growth and changes in inflation. Monetarists Cagan (1956) and Friedman (1956,1975) explained money supply as one of the major causes of inflation. The economists began to believe that increasing the monetary supply at a low but constant rate is the best way of maintaining low inflation and growth of the economy. Sunkel (1960) said that from a structuralism viewpoint, budget deficits and consequent expansion in money supply are not autonomous while the necessity of the essential commodities in the domestic market goes up, import is a must. As a result, rising imports and devaluation generate domestic inflation, price level spirals and borrowing through central bank increases the money supply causing a further rise in the price level. However, a tight monetary policy in this context may lead to shortages of essential commodities in the domestic market. So, the some degree of control of monetary authorities is desirable. Friedman (1968) studied the role of monetary policy in the U.S economy and suggested that by setting a steady course, that course one of steady but moderate growth in the quantity of money, the monetary authority could make a major contribution to promoting economic stability with avoidance of either inflation or deflation of prices. It was found that in the developed nation's money supply changes precede price changes, which precede real production changes, lending support to the view that money supply changes are more likely to lead to inflation in this subsample (Cagan 1956; Deaver 1970; and Vogel 1974). He also mentioned that price changes are likely to be followed by money supply changes in less-developed economies. Another interesting finding was that generally the relationship between money supply changes and real production changes is positive for less advanced economies, but negative or negligible for the advanced. This subsequent finding suggests that mild inflation may stimulate real economic growth. The evidence on developing countries supports the argument that governments should not depend on expansionary monetary developments to induce growth. They will be retarding growth while at the same time reducing the welfare of the public by the deterioration of real balances by the induced inflation. Evidence on the inflationary impact of deficits through their impact on money supply growth includes those by, for example, Aghevli and Khan (1978) in the case of Columbia, Indonesia, Dominican Republic, Brazil and Thailand. Rwegasira (1974), in a study which linked deficits with rising prices, concluded that government expansionary finance which characterized the economy from 1963-72, had been one of the sources of rising prices. He pointed that other important sources, like inelasticity in agriculture and falling import capacity, joined deficit financing in causing upward pressure on the general price level. A combination of declining productivity, declining production and inefficiency accompanied by excessive money supply in the economy seems to be important in the process of inflation according to Malima (1980), implying that an increase in the rate of growth of output and a reduction in the rate of money supply growth could be a solution to inflation.

Objectives: The objective of this paper is to analyze and discuss the impacts of monetary policy on India inflation. Identify the major drawbacks of the policies in minimizing the inflation rate and suggest policy recommendations on some key issues of the India inflation identify major challenges and suggest policy recommendations

The Objectives of the study are listed below:

1. Discussion on the correlation between monetary policy and inflation
2. Fluctuation of inflation rates over time in India and its present condition due to monetary policies
3. Impacts of monetary policy on inflation and the consequences
4. To determine appropriate policies to control inflation rates in India

Finding Objectives:

Correlation between monetary policy and inflation: Traditionally, it is believed that inflation is ultimately a monetary phenomenon, i.e., sustained inflation is the outcome of excessive money supply. Although it is the general wisdom that monetary policy tools are of immediate influence in controlling inflation. However, recent evidence clearly demonstrates that monetary policy alone may not effectively address the issue with the inflationary impacts of external shocks

Global economic slowdown- The covid-19 pandemic and the ongoing Russia-Ukraine conflict have led to a slowdown in global economic growth, affecting India's exports and overall economic performance

Supply Chain Disruptions- Disruptions in global supply chains, particularly, in the semiconductor and electronics sectors, have impacted India's manufacturing and export sectors.

Inflationary Pressures- Rising global commodity prices, particularly crude oil, have led to higher inflation in India, affecting the country's economic growth and stability.

Geopolitical Tensions- Escalating tensions between major global powers, such as the US & China, have created

uncertainty and volatility in global markets, affecting India's economy.

Impacts of monetary policy on inflation and the consequences: Monetary policy has positive and negative impacts on inflation. Middle class people are turning into lower middle class ones and the latter in turn joining the ranks of the poor. The poor are turning poorer from living costs outpacing earnings and buying powers of non-affluent sections of people decreasing dramatically from the lower purchasing power of the currency as such or the lowered value of their savings. We can say that inflation also directly lowers living standard. Because of inflation people enjoy same amount of product at higher price an increase in the general price level leads to a reduction in the purchasing power of currency. In other words, when prices rise, each unit of money buys fewer goods and services. The impact of inflation is not uniform across the economy, resulting in hidden costs for some and benefits for others due to the decline in money's purchasing power.

To Determine Appropriate Policies To Control Inflation Rates in India: There are a number of methods that have been suggested to control inflation. Central banks can affect inflation to a significant extent through setting interest rates and through other operations. High interest rates and slow growth of the money supply are the tradition always through which central banks fight or prevent inflation, though they have different approaches. Monetarists emphasize keeping the growth rate of money steady, and using monetary policy to control inflation (increasing interest rates, slowing the rise in the money supply). Keynesians emphasize reducing aggregate demand during economic expansions
and increasing demand during recessions to keep inflation stable. Control of aggregate demand can be achieved using both monetary policy and fiscal policy (increased taxation or reduced government spending to reduce demand).

Conclusion: The purpose of this study has been to discuss the relative impact of monetary policies on economic activities in India. The growing importance of monetary policy and the diminishing role played by fiscal policy in economic stabilization efforts may reflect both political and economic realities of our country. Moreover, inflation acts as an important and key variable which influences other macro economic variables of a country. We have seen that, the central bank uses interest rates and the money supply and many other monetary tools to guide economic growth by controlling inflation and stabilizing currency. We have analyzed the consumer price index and several other indicators to understand the impact of monetary policy on inflation. We have found out that, the inflation rates are co-related with the growth rate of gross domestic product and money supply in India. There is positive co-relation between the rate of inflation and rate of change in GDP at constant prices in India. Furthermore, there is negative co-relation between rate of inflation and changes in money supply in India. India had favorable current account position for which it could keep its currency slightly stronger. However, it should adopt some contractionary policy because of rising current account deficit. We believe that, the monetary policy should be contractionary at times, even if it reduces economic growth of the country because in the long run, it may bring about stability to our economy. Moreover, we find a lag in the policy response of India Bank to higher inflationary expectations. They don't have sufficient and reliable policies to cope with inflation and even if they do, they are not actively well-used. In today's environment of global finance, fixed exchange rates is often not a viable option for fighting inflation. Thus, governments must make important decisions about monetary policy.

References:-

1. Aleem, A. (2010). Transmission mechanism of monetary policy in India. Journal of Asian Economics, Volume 22, Issue 2, pp.186-197.
2. Bhalla, S. (1981). India's closed economy and world inflation. In R. Williams (Ed.), World inflation, developing countries. Washington, DC: Brookings Institute.
3. Bhattacharya, R., Patnaik I. and Shah, A. (2011). Monetary policy transmission in an emerging market setting. IMF working paper, WP /11/5.
4. Brahmananda, P. and Nagaraju, G. (2002). Inflation and growth in the world: Some simple empirics. In M. Ahluwalia, Y. Reddy, and S. Tarapore (Eds.), Macroeconomics and monetary policy: Issues for a reforming economy, pp.43–66. New Delhi: Oxford University Press.
5. Kapur, M. and Behera, H. (2012). Monetary Transmission Mechanism in India: A Quarterly Model.RBI Working Paper Series, WPS (DEPR) 09/ 2012.
6. Mohanty, D. (2014). Why is recent food inflation in India so persistent? A speech at St. Xavier's college, Mumbai, 13th Jan
7. Aghevli and Khan. 1978, "Government Deficits and the Inflationary Process in Developing Countries", IMF, Staff Papers, Vol. 25, No. 3, pp. 146-162
8. Andreas and Reschreiter, 2011 The effects of the monetary policy regime shift to inflation targeting on the real interest rate in the United Kingdom, Economic modelling. -Amsterdam [u.a.] : Elsevier, ISSN 0264-9993, ZDB-ID 868243. - Vol. 28, 1/2, pp. 754-759
9. Antonio, 2012, Money Growth and Inflation in the Euro Area: A Time Frequency View. Oxford Bulletin of Economics and Statistics, Vol. 74, Issue 6, pp. 875-885, 2012
10. Ball and Mankiw et al, 1988. "The New Keynsesian Economics and the Output-Inflation Tradeoff," Brookings Papers on Economic Activity, Economic Studies Program, The Brookings Institution, vol. 19(1), pages 1-82.
11. Salunkhe bhavesh, Patnaik Anuradha The Impact Of Monetary Policy On Output And Inflation In India: A Frequency Domain Analysis.

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

कृषि क्षेत्र के विकास में भूमि सुधार का योगदान

श्रीमती सुमन भवर* डॉ. नीमा चुण्डावत**

* शोधार्थी, भूपाल नोबल्स युनिवार्सिटी, उदयपुर (राज.) भारत
** शोध निर्देशिका (अर्थशास्त्र) भूपाल नोबल्स युनिवार्सिटी, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – आजादी के पूर्व भारत में विभिन्न प्रकार की भूमि व्यवस्था पाई जाती थी जिसके कारण कृषि और किसानो की दयनीय स्थिति होने से भारत में विभिन्न प्रकार की व्यवस्था पाई जाती थी जैसे रैयतवाड़ी व्यवस्था,महालवाड़ी व्यवस्था, जमींदार प्रथा जिसके अंतर्गत जमीदारों द्वारा कृषकों से भूमि कर एकत्रित किया जाता था जमीदार कृषको और राज्यों के मध्य मध्यस्तों का काम करते थे सरकार का कुल आय में भाग जो जमीदार द्वारा एकत्रित किया जाता था उसका 10 से 11 प्रतिशत भाग सरकार के पास जाता शेष भाग जमीदारों को दिया जाता था जिससे उनका गुजारा कर सके।
शब्द कुंजी –किसानो को भूमि सम्बंधित अधिकारों की सुरक्षा,भूमि सुधार कार्यक्रम, रोजगार में वृद्धि।

प्रस्तावना – आजादी के पश्चात भारत में कृषि से संबंधित प्रत्येक क्षेत्र में सुधार हुआ भारत में तीव्र गति से कृषि को आगे बढ़ाना अत्यंत आवश्यक था महालवाड़ी व्यवस्था, जमीदार व्यवस्था और रेयतवाडी व्यवस्था में ऐसा अनुमान लगाया गया कि कृषि क्षेत्र का 52% भाग रेयतवाडी व्यवस्था में 40: भाग जमीदार व्यवस्था में शेष महालवाड़ी व्यवस्था का भाग था इस व्यवस्था में सबसे अधिक शोषण कृषकों का जमीदारों द्वारा किया जाता था क्योंकि जमीदार व्यवस्था को असीमित अधिकार दिए गए थे।

भूमि सुधार का अर्थ – भूमि सुधार के अंतर्गत वे सभी कार्य शामिल किये जाते है जिनके द्वारा भूमि का अधिकतम उपयोग करके उत्पादन बडाने में सहायता मिलती है।

प्रोफेसर गुन्नार मिर्डल के अनुसार 'भूमि सुधारों का अर्थ व्यक्ति और भूमि के सम्बन्ध तथा संस्थागत परिवर्तन से है'।

प्रो.सैम्युलयसन ने कहा है कि –'सफल भूमी सुधार के कार्यक्रमों ने अनेक देशों में मिट्टी को सोना में बदल दिया है'।

आजादी के पूर्व भारत में विभिन्न प्रकार की भूमि व्यवस्था पायी जाती थी, जैसे –रैयतवाड़ी व्यवस्था, महालवाड़ी व्यवस्था, जमीदार प्रथा आदि।

रैयतवाड़ी व्यवस्था – रैयतवाड़ी व्यवस्था दक्षिण तमिलनाडु,महाराष्ट्र, बरार,पूर्व पंजाब,असम में लागू की गई थी। इसमें काश्तकारी भूमि का स्वामी होता जब तक वह भूमि पर राज्य को नियमित रूप से कर देता रहता था,तब तक उसे बेदखल नहीं किया जाता। उसे भूमि में काम लेने,बेचने,हस्तांस्तरीत करने या किसी अन्य प्रकार से उपयोग में लाने का अधिकार था। रैयतवाड़ी प्रणाली में स्वामित्व के आधार पर अलग–अलग मालगुजारी तय की जाती थी। मध्य–प्रदेश मे 20 वर्ष, महाराष्ट्र में 30 वर्ष तथा तमिलनाडु में 40 वर्ष के लिए तय की जाती थी।

महालवाड़ी व्यवस्था – महालवाड़ी व्यवस्था विलियम बैंटिक द्वारा आगरा और अवध में लागू कर दिया गया। इस व्यवस्था मे मालगुजारी की दृष्टि से पूरा गाँव ही एक संपूर्ण इकाई माना जाता था। जो भूमि गाँव में खाली होती थी उस पर गांव के समाज का अधिकार होता था। गांव का कोटवार मालगुजारी एकत्रित करता था जिसके लिए उसको होता कमिशन मिलता था। सहभागी को अपनी इच्छानुसार भूमि को प्रयोग में लाने का अधिकार था। यदि सहभागी उस भूमि को छोड़ देता था तो उस पर गांव के समाज का अधिकार माना जाता था।

जमीदारी प्रथा – प्रथम ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन काल में प्रारम्भ हुआ था। ईस्ट इंडिया कम्पनी के गर्वनर कार्लवालिस ने आय बड़ाने के उद्देश्य से उसका ही स्थायी बंदोबस्त कर दिया था। इस प्रणाली में जमीदार को भूमी का स्वामि माना जाता था भूमि संबंधी सभी अधिकार उसी के हाथ में होते थे। सरकार से कृषक का सीधा संबंध नहीं होता था। लेकिन एक मध्यम वर्ग के माध्यम से होता था जिसे जमीदारी कहते थे।

स्वतंत्रता के बाद भूमि सुधार– स्वतंत्रता के बाद भूमि सुधार के कई कार्यक्रम लागू किए गये, उनका मुख्य उद्देश्य कृषि के विकास के साथ–साथ कृषकों एवं भूमिहीन श्रमिकों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाना है। इस उदेश्य की पूर्ति हेतु भारत सरकार ने भूमि सुधार से संबंधित महत्वपूर्ण कार्य प्रारंभ किये हैं जैसे मध्यस्थों की समाप्ति, काश्तकारी सुधार,कृषि का पुनर्गठन, जोतों की सीमा का निर्धारण।

मध्यस्थों की समाप्ति– स्वतंत्रता के पश्चात् सरकार ने जमीदारी, जागीरदार, इनामदार,आदि सभी मध्यस्थो की समाप्ति कर भूमि पर कृषकों को भू–स्वामी संबंधी अधिकार प्रदान कर दिये हैं। देश की 40 प्रतिशत भूमि पर मध्यस्थ फैले थे।

काश्तकारी सुधार– काश्तकारी सुधार में लगान का नियमन किया गया। काश्तकारों एवं बटाईदारों को उपज का आधे से अधिक भाग लगान के रूप में देना पड़ता था। कई राज्यो ने छोटी जोतों पर लगान को समाप्त किया गया।

कृषि का पुनर्गठन– सरकार ने कृषि पुनर्गठन हेतु अनेक संस्थागत परिवर्तन किये है, ताकि समाजवादी समाज की स्थापना हो कृषि क्षेत्र में सुधार,विकास के लिए नयी तकनीकी और तरीको को अपनाया गया जिससे कृषि का उत्पादन बड़े किसानों की आय मे बड़ोतरी हो यह प्रक्रिया कृषि के

क्षेत्र मे स्थिरता को बड़ावा देने के लिए की जाती है।

अध्ययन का उद्देश्य – प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रो के विकास में वृधि करना

शोध विधि – प्रस्तुत शोध में प्राथमिक एवं दितियक स्तोतो का अध्ययन किया गया शोध अध्ययन में पुस्तके,पत्र –पत्रिकाओ, आर्थिक सर्वेक्षण प्रकाशित और अप्रकाशित स्त्रोतों का उपयोग कर निष्कर्ष निकाले गए

तालिका क्रमांक 01: कृषि के लिए उपयोग की जाने वाली भूमि का अनुपात

भूमि का अनुपात	जिला		कुल
	बड़वानी	धार	
1 एकड़ तक	8 (10%)	12 (15%)	20 (12.5%)
1–2 एकड़	22 (27.5%)	25 (31.25%)	47 (29.37%)
2–4 एकड़	24 (30%)	19 (23.75%)	43 (26.87%)
4 एकड़ से अधिक	21 (26.25%)	20 (25%)	41 (25.63%)
किराए की जमीन	5 (6.25%)	4 (5%)	9 (5.63%)

सर्वेक्षण से प्राप्त स्त्रोत– तालिका क्रमांक 01 से यह स्पष्ट है कि लगभग 12.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास एक एकड़ तक भूमि है, लगभग 29.37 प्रतिशत के पास 1 से 1 एकड़ के बीच भूमि है, 26.87 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास 2 एकड़ से 4 एकड़ के बीच भूमि है, 25.63 प्रतिशत के पास 4 एकड़ से अधिक भूमि है। 160 उत्तरदाताओं में से 5.63 प्रतिशत किराए की जमीन पर काम करते है। आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं के पास स्वयं की लगभग 1 से 4 एकड़ कृषि भूमि है।

उपसंहार– भारत में पिछले 70 वर्षो में भूमि सुधार के कई कार्यक्रम प्रारंभ किये गए जिसके अंतर्गत जमीदार उन्नमूलन,अधिकतम जोत सीमा निर्धारण, चकबंदी, लगान एवं पट्टे की सुरक्षा की व्यवस्था की गयी इससे भूमि सुधार की और प्रशंसनीय प्रगति हुई।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. डॉ. जयप्रकाश मिश्र, 2003, कृषि अर्थशास्त्र साहित्य भवन पब्लिकेशन ,आगरा पेज न.171–176
2. डॉ .पी .डी . माहेश्वरी एवं डॉ . शिलचन्द्र गुप्ता ,भारतीय आर्थिक निती, 2006 , कैलाश पुस्तक सदन भोपाल, पेज न. 221–223
3. डॉ. अनुपम गोयल भारतीय अर्थव्यवस्था,एस.बी. पीडी.,(2019–20), पब्लिकेशन ,आगरा मथुरा पेज न .77
4. डॉ.रितु तिवारी, भारतीय अर्थव्यवस्था,(2021), मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, पेज न. 54–58

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

किशोरियों का साथियों के साथ समायोजन का अध्ययन

डॉ. ममता खपेडिया* रिंकी भाबर**

* सहा. प्राध्यापक (गृह विज्ञान) माता जीजाबाई शा.स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत
** सहा. प्राध्यापक (गृह विज्ञान) राजमाता सिंधिया शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, छिंदवाड़ा (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – किशोरावस्था किसी भी समाज की वास्तविक पूंजी है। इन्हे राष्ट्र, समाज के विकास के लिए सुरक्षित एवं सुरक्षित किया जाना चाहिए। किशोरावस्था बाल्यावस्था की अंतिम अवस्था है, संपूर्ण बाल विकास में इस अवस्था का बहुत अधिक महत्व होता है यह अवस्था शारीरिक और मानसिक उतथल पुथल भरी होती है। किशोरावस्था लोगों के जीवन में एक कठिन विकास अवधि का प्रतिनिधित्व करती है किशोरावस्था में किशोरी अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करते हैं वर्तमान समय में किशोरिया अपने साथियों के साथ समायोजन में एक विशेष प्रकार का व्यवहार देखने को मिलता है।

समायोजन की अवधारणा सबसे पहले डार्विन ने इसे भौतिक दुनिया में जीवित रहने के लिए एक अनुकूल के रूप में इस्तेमाल किया था मनुष्य अन्य व्यक्तियों पर आश्रित होने से उत्पन्न होने वाली शारीरिक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक मांगों को समायोजन करने में सक्षम है। समायोजन घर की जीवन स्थितियों में, स्कूल में, व्यस्क होने पर कार्य स्थल में, वृद्धावस्था में एक संगठन आत्मक व्यवहार में, समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जो हमें एक सुखी और सुख हाल जीवन की ओर ले जाती है स्वयं एवं अपने साथियों के साथ समायोजन व्यक्ति के जीवन और शिक्षा में विकास के लिए अति आवश्यक होता है।

समायोजन मुख्यत: तीन बातों पर निर्भर करती व्यक्ति की इच्छाओं, विचारों, प्रेरणाओं, और लक्ष्य, आदि के संबंध में जितना अधिक समन्वय होता है समायोजन उतना ही अधिक अच्छा होता है यदि इसमें आवश्यकता से कम समन्वय हो तो समायोजन दुर्बल होगा। व्यक्ति की इच्छा विचार आचार्य परिणाम और लक्षण आदि की पूर्ति की मात्रा कम और किस रूप में हुई है इस पर समाचार आधारित होता है उनकी पूर्ति कितनी अधिक होगी समायोजन उतना अधिक अच्छा होगा व्यक्ति की इच्छाओं परिणाम लक्षण सामाजिक मूल्यों से कहा तक मेल खाते हैं यह भी समय समायोजन को प्रभावित करता है।

आवश्यता एवं महत्व –किशोरावस्था एक समस्याओं से भारी अवस्था होती है इसे शारीरिक एवं मानसिक उत्ताल–पुथल भारी अवस्था कहते हैं। इस अवस्था में किशोरी को समायोजन में अनेको समस्याओं का सामना करना पड़ता है। किशोरिया राष्ट्र के विकास का एक अच्छा खासा भविष्य है, इसी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शोध अध्ययन हेतु 'किशोरियों का साथियों के साथ समायोजन का अध्ययन' विषय की आवश्यकता है।इस अध्ययन का बहुत अधिक राष्ट्र के विकास हेतु प्रभाव पड़ेगा राष्ट्र के विकास में किशोरावस्था का समायोजन का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है।

उद्देश्य:

1. किशोरियों का साथियों के साथ समायोजन का अध्ययन करना।
2. किशोरियों की शैक्षणिक योग्यता का अध्ययन करना।

प्रतिदर्श इकाई – प्रस्तुत अध्ययन में 50 किशोरियों का चयन किया गया है

अध्ययन के चर –प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वतंत्र चर मे किशोरियों। आश्रित चर किशोरियों का समायोजन एवं शैक्षणिक अध्ययन एवं परिवार का आकार आदि।

समंक संकलन के स्त्रोत – प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रारंभिक समंक हेतु स्वनिर्मित अनुसूची का प्रयोग किया गया। द्वितीय समंक के लिए लघु शोध, इंटरनेट, पुस्तक, एवं अन्य साधनका प्रयोग किया गया।

सारणीयन एवं वर्गीकरण–

तालिका नं. 01: किशोर –किशोरियों का साथियों के साथ समायोजनके स्तर संबंधित विवरण

क्र.	विवरण	समायोजन का स्तर प्रतिशत में
1	अत्यधिक उच्च स्तर	18
2	उच्च स्तर	15
3	साधारण स्तर	30
4	निम्न स्तर	20
5	अत्यधिक निम्न स्तर	17
		100N=50

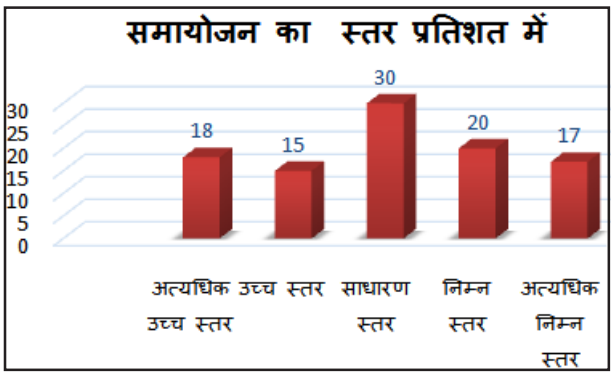

तालिका नं. 02: किशोरियों की शैक्षणिक योग्यता से संबंधित विवरण।

क्र.	विवरण	किशोरियों कीशैक्षणिक योग्यता
1	अनपढ़	08
2	प्राथमिक हाई स्कूल एवं हाई सेकेंडरी	37
3	उच्च शिक्षा	25
4	अन्य शिक्षा	20
5	तकनीकी शिक्षा	10
		100N=50

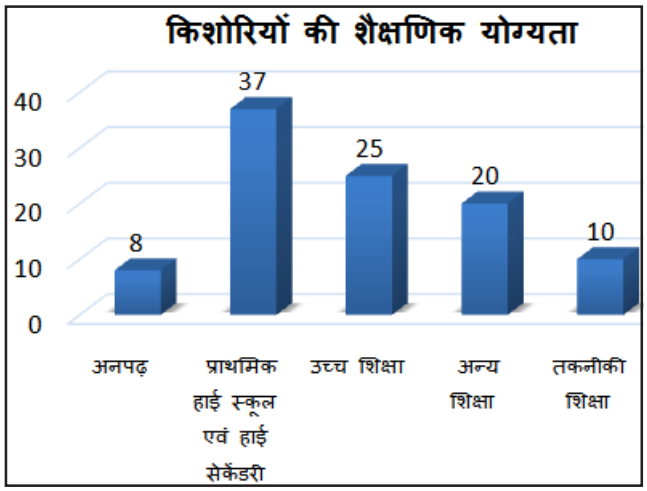

निष्कर्ष:

1. किशोरियों का अपने साथियों के साथ क्रमश: अत्यधिक उच्च स्तर,उच्च स्तर, साधारण स्तर, निम्न स्तर ,अत्यधिक निम्न स्तर 18%,15%,30%,20%,17%,प्रतिशत पाया गया।
2. किशोरियों का शैक्षणिक शौध अध्ययन से पाया गया कि किशोरियों का प्रतिशत क्रमशरू अनपढ़, प्राथमिक हाई स्कूल एवं हाई सेकेंडरी, उच्च शिक्षा, अन्य शिक्षा 08%, 37%, 25%, 20%,एवं 10%प्रतिशत पाया गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. आहूजा राम 2000 'सामाजिक समस्याएं' रावत पब्लिकेशन' दिल्ली।
2. तोमर रामविहार सिंह पारिवारिक 'समाजशास्त्र तथा आदर्श' अजमेर प्रकाशन https://www.ijrti.org/papers/IJRTI2212099.pdf
3. https://g.co/kgs/cxBcbhJ,https://g.co/kgs/jkyJnix,https:/ www.ijrti.org
4. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-news-analysis/feminization-of-agriculture
5. https://kurukhtimes.com/node/89

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

व्यवसायिक शिक्षा के क्षेत्र एवं रोजगार (नई शिक्षा नीति के सन्दर्भ में)

डॉ. पूजा तिवारी*

* सह प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (समाजशास्त्र) शासकीय महाविद्यालय, बिछुआ, जिला छिंदवाड़ा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – शिक्षा के साथ साथ व्यावसायिक शिक्षा का जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। यदि देश का आर्थिक विकास करना है और जनता के जीवन स्तर को उपर उठाना है तो शिक्षा के साथ व्यवसायिक शिक्षा भी जरूरी है ,सभी देशवासियों के सतत विकास के लिए कौशल प्रशिक्षण की नितांत आवश्यकता है।मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है क्योकि वह अपना जीवन सामाजिक मापदंडो के अनुसार ही जीता है ,शिक्षा सामाजिक नियंत्रण का एक सशक्त अभिकरण है ,जिसके कारण मनुष्य पशु से अलग है दोनों में मुख्य फर्क यही है की मनुष्य के पास शिक्षा है वह संस्कृति से ओतप्रोत है आज आवश्यकता इस बात की है की सभी विद्यार्थियों को सामान्य शिक्षा के साथ साथ व्यवसायिक शिक्षा भी दी जाये।इस शोध आलेख के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्रों को विस्तारपूर्वक समझाने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना – व्यावसायिक शिक्षा एक व्यक्ति को आपेक्षित कौशल के साथ लाभकारी रोजगार या स्वरोजगार के लिए तैयार करती है।व्यावसयिक शिक्षा को अन्य नामो से भी जाना जाता है जिसमे कैरियर और तकनिकी शिक्षा, तकनीकी और व्यवसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण आदि शामिल है। भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 ,1980 को लागु करने के सम्बन्ध में सन 1988 में शिक्षा के व्यावसायिकरण पर केंद्र द्वारा आर्थिक रूप से सरंक्षित योजना (CSS) पूरे देश में प्रारंभ की गयी।

व्यावहारिक कौशल इस शिक्षा का उद्देश्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत प्रत्येक क्षेत्र से व्यावसायिक विषय को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है ,जिसमे कला, विज्ञान, वाणिज्य, गृह विज्ञान आदि के विभिन्न विषय रखे गयें है जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके।

व्यावसायिक शिक्षा के कई क्षेत्र हैं जैसे सौन्दर्य और स्वास्थ्य कल्याण, हस्तशिल्प, जैविक खेती, बागवानी, वेब डिजायनिंग, वर्मी कम्पोस्ट ,फैशन डिजायनिंग, कुक्कुट प्रबन्धन पर्यटन, बिक्री कौशल, मेडिकल प्लांट, खुदरा प्रबन्धन आदि।

प्रस्तुत आलेख के माध्यम से इवेंट मेनेजमेंट में केरियर और फैशन डिजायनिंग में विद्यार्थी किस प्रकार से अपना कैरियर बना कर जीविका उपार्जन कर सकते है इसको विस्तारपूर्वक बताया गया है।

इवेंट मेनेजमेंट– इवेंट मेनेजमेंट का अर्थ है आयोजनों का प्रबंधन ,यह कार्य इवेंट मेनेजमेंट कम्पनियों द्वारा किया जाता है। इवेंट मेनेजर का कार्य होता है किसी भी आयोजन के आरम्भ से अंत तक होने वाले हर कार्यक्रम , हर पड़ाव का सुचारू संचालन। आज के युग का महत्वपूर्ण रोजगार इवेंट मेनेजमेंट को कहना अतिश्योक्ति नही होगा।इसका कार्यक्षेत्र महानगरों से लेकर छोटे शहरों तक फैल चुका हैं।

कार्य क्षेत्र– विवाह समारोह, राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मलेन, फिल्मो के प्रीमियर शो, स्टेज शो, सौन्दर्य प्रतियोगिताये, नये उत्पादों का प्रदर्शन, ऐड शो एवम अन्य बड़े कार्यक्रम या पार्टियाँ आदि।

योग्यताएं – इस कोर्स में एडमिशन हेतु किसी भी विषय के साथ बारहवीं पास होना एवम पी .जी .डिप्लोमा के लिए स्नातक होना जरूरी है।इस कोर्स के लिए विद्यार्थियों की अंग्रेजी में अच्छी पकड़ होना चाहिए।

इस प्रकार से जो यूवा अच्छी तर्कशक्ति, भाषा का ज्ञान, आकर्षक व्यक्तित्व् एवं प्रस्तुतीकरण में माहिर हों उनमे रचनात्मक प्रबन्धन प्रायोगात्मक सोच, व्यवहार कुशलता हो वो अपने इवेंट मेनेजमेंट कम्पनी खोल सकतें हैं, इस क्षेत्र में सबसे अधिक महत्व आपके संपर्क सूत्रों और क्षेत्रों का होता है जितने ज्यादा संपर्क होगा उतने ज्यादा कार्य करने के अवसर होंगें।

इवेंट मेनेजमेंट और जनसंचार से सम्बन्धित पाठ्यक्रम इन संसथानों में उपलब्ध हैं —देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर, नेशनल स्कूल ऑफ इवेंट इंदौर जामिया मिलिया इस्लामिया रिसर्च सेटर, दिल्ली, भारतीय जनसंचार संस्थान जे.एन.यू. दिल्ली यसेंट जेवियर्स कॉलेज ऑफ कमुनिकेशन मरीन लाइंस मुंबई, भारतीय विद्या भवन, दिल्ली, मुंबई, चेनई, हैदराबाद, बैंगलोर, कोलकाता, यूनिवर्सिटी ऑफ पुणे।

फैशन डिजाइनिंग में केरियर – फैशन और ड्रेस डिजाईन का जिक्र आते ही कला का एक उत्कृष्ट नमूना हमारी आँखों को चमकदार रंगों और डिजाइन के माध्यम से चमत्कृत कर देता हैं।तेजी से बढलते ट्रेंड के साथ फैशन के प्रति लोगों की बढती जागरूकता के कारण भारत में ड्रेस डिजाइनर की मांग बढ्ती जा रही हैं, यह भारतीय फैशन डिजाइनर का ही कमाल हैं की भारत की माडल्स दुनिया भर में धूम मचा रही है, आज मनीष मल्होत्रा, नीता लुल्ला, रितु कुमार, तरुण तहिलियानी, रितु बेरी, जे.जे. वलाया, सव्यसाची मुखर्जी, विक्रम फर्निस, मनीष अरोरा, दिवंगत रोहित बल, अनीता डोंगरे, मसाबा गुप्ता।

अनामिका खन्ना और नैंसी त्यागी आदि को सभी लोग पहचानते है इस क्षेत्र में मेहनत के साथ यश और कमाई भी है क्योकि दुनिया में हर सप्ताह फैशन बदल जाता है नित नये डिजाइन बनाना बहुत मेहनत का काम होता है।

शैक्षणिक योग्यता– इस पाठ्यक्रम में मात्र 12 जीपरीक्षा 50% अंको से पास होना जरूरी हैं एवैं स्नातकोतर हेतु स्नातक की परीक्षा 50% अंको के साथ पास होना जरूरी है।

फैशन एवैं ड्रेस डिजाइनिंग का कोर्स करने वाले प्रमुख संस्थान – 1. राष्ट्रीय फैशन तकनीक संस्थान, नई दिल्ली 2. मध्यप्रदेश के विभिन्न महिला पोलिटेकनिक संस्थान 3. एस.एन.डीटी वीमेन यूनिवर्सिटी, मुंबई 4. नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ फैशन डिजाइनिग, इंदौर 5. नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ फेशन टेकनोलोजी ,गांधीनगर, गुजरात।

रोजगार एवम आय की संभावनाएं:

1. फिल्म और टीवी सीरियलों एवम कार्यक्रमों में कास्टयूम डीजायनर के रूप में अवसर।
2 सरकारी एवम प्राइवेट डिपार्टमेंट में हैण्डलूम और कपडा बनाने के क्षेत्र में अवसर।
3 खेल से सम्बन्धित ड्रेस तैयार करने सम्बन्धी व्यापार।
4 फैशन शो ओर्ग नाइज करना।
5 बुटिक और कपड़ो का व्यापार करना।

आरम्भ में आय या वेतन कितना मिलेगा यह कहना मुश्किल है किन्तु अनुभव के साथ साथ अच्छी कमाई होना तय है आज हम देखते है की नैन्सी त्यागी ने फर्श से अर्श का सफर अपनी आत्मनिर्भरता एवम विश्वास से ही तय किया है एक आम लड़की जिसने सिर्फ एक पुरानी सिलाई मशीन से ,आम मार्किट के सस्ते कपडे और साड़ियो से अद्भुद डिजाइन के गाउन तैयार करके कांस तक में धूम मचा दी है कल तक जिस आम लड़की को कोई नही जानता था आज हर व्यक्ति उसके गुणगान कर रहा है।

व्यावसायिक शिक्षा का महत्व आज के समय में बहुत बढ़ गया है ये एक ऐसी शिक्षा है जो विद्यार्थियों को विशेष कौशल और प्रशिक्षण प्रदान करती है जिससे से वे किसी विशेष क्षेत्र में कार्य करने के लिए तैयार होते है।आज के प्रतिसधात्मक युग में सिर्फ पारम्परिक शिक्षा से ही अच्छे रोजगार के अवसर नही मिल पाते इसलिए व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।सरकार भी इस दिशा में कई कदम उठा रही है जैसे प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना जो युवाओं को तकनिकी और व्यावसायिक कौशल प्रदान करने के लिए है।

निष्कर्ष स्वरुप व्यवसायिक शिक्षा और रोजगार का एक गहरा सम्बन्ध है जब हम व्यवसायिक शिक्षा को महत्व देते हैं और उसे समाज में उचित स्थान प्रदान करतें हैं ,तब हम रोजगार के अवसरों को बढ़ा सकते है और युवाओं को आत्मनिर्भर बना सकते हैं ,इस दिशा में सरकार ,संस्थाए और समाज सभी को मिल कर प्रयास करना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. भंडारी, जयन्तिलाल, केरियर के सोपान, इंदौर।
2. स्वामी विवेकानंद करियर मार्गदर्शन योजना उच्च शिक्षा विभाग म.प्र.शासन ।
3. वोकेशनल एडुकेशन एंड ट्रेनिंग, दि रोल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन इन मोडर्न इकॉनमी ।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

वेद, उपनिषद एवं भारतीय साहित्य में महिलाओं की भूमिका : श्रीमद्भगवद्गीता के विशेष संदर्भ में

भावना तिवारी*

* शोधार्थी (समाज कार्य) देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारतीय दर्शन और साहित्य में नारी की भूमिका सदैव अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। वैदिक युग में महिलाओं को शिक्षा, दर्शन और आध्यात्मिक चिंतन में समान अधिकार प्राप्त थे, जिसके प्रमाण गार्गी, मैत्रेयी और लोपामुद्रा जैसी विदुषियों के विचार-विमर्श से मिलते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता, जो केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि एक दार्शनिक जीवन दृष्टि है, महिलाओं के आध्यात्मिक अधिकारों और मोक्ष प्राप्ति की संभावनाओं को समान रूप से स्वीकार करती है। गीता में वर्णित कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्ति योग के सिद्धांत न केवल पुरुषों के लिए, बल्कि स्त्रियों के लिए भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि आध्यात्मिक उन्नति में लिंग कोई बाधा नहीं है।

इस शोध पत्र में गीता के स्त्री-सशक्तिकरण संबंधी विचारों का विश्लेषण करते हुए भारतीय महिला दार्शनिकों के योगदान को भी समझने का प्रयास किया गया है। साथ ही, यह अध्ययन आधुनिक संदर्भ में गीता के संदेश को नारी सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता और सामाजिक विकास के लिए एक प्रेरणा स्रोत के रूप में प्रस्तुत करता है। आज जब महिलाएँ शिक्षा, विज्ञान, राजनीति और समाज सेवा में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, तब गीता में वर्णित सिद्धांत अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। यह शोध पत्र इस विचार को प्रमाणित करने का प्रयास करता है कि भारतीय दर्शन में नारी केवल श्रद्धा का नहीं, बल्कि शक्ति और ज्ञान का भी प्रतीक रही है, और गीता का संदेश आज भी महिलाओं के उत्थान और सशक्तिकरण के लिए उतना ही उपयोगी है जितना प्राचीन काल में था।

शब्द कुंजी – वेद, उपनिषद, गीता, नारी सशक्तिकरण, भारतीय दर्शन, महिला दार्शनिक, भक्ति आंदोलन।

प्रस्तावना – भारतीय दर्शन में स्त्रियों को सदा से ही सम्मानित और विशेष स्थान प्रदान किया गया है। वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक, महिलाओं ने न केवल धार्मिक और दार्शनिक विचारधारा के विकास में योगदान दिया है, बल्कि समाज के नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वैदिक काल में स्त्रियों को शिक्षा, धर्म, राजनीति और दर्शन के क्षेत्र में स्वतंत्रता प्राप्त थी। गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा जैसी विदुषियों ने न केवल ब्रह्मविद्या पर गहन चर्चा की, बल्कि ऋग्वेद और अन्य ग्रंथों की ऋचाओं की रचना भी की। यह दर्शाता है कि उस समय स्त्रियों को केवल गृहस्थ जीवन तक सीमित नहीं रखा गया, बल्कि उन्हें ज्ञान प्राप्ति और दार्शनिक संवाद में समान अवसर प्रदान किए गए।

महाभारत के भीष्म पर्व में श्रीमद्भगवद्गीता का उल्लेख आता है, जो केवल युद्ध और नीति का ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन दर्शन का भी सार प्रस्तुत करती है। श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया ज्ञान, कर्म, भक्ति और ज्ञानयोग के सिद्धांतों पर आधारित है, जो न केवल पुरुषों बल्कि महिलाओं के लिए भी समान रूप से लागू होते हैं। गीता में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि भक्ति और ज्ञान प्राप्ति के मार्ग में किसी जाति, वर्ग या लिंग का कोई बंधन नहीं है। श्रीकृष्ण स्वयं यह स्वीकार करते हैं कि स्त्रियाँ भी पुरुषों के समान मोक्ष प्राप्त करने और आत्मज्ञान के पथ पर अग्रसर होने के योग्य हैं।

भक्ति आंदोलन ने भी महिलाओं को आध्यात्मिक स्वतंत्रता प्रदान की, जहाँ मीराबाई, अक्का महादेवी, संत जनाबाई जैसी महान विभूतियों ने समाज की रूढ़ियों को तोड़कर अपने आध्यात्मिक पथ को चुना। आधुनिक काल में सावित्रीबाई फुले, इंदिरा गांधी, कल्पना चावला, मदर टेरेसा जैसी महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अद्वितीय पहचान बनाई, जिससे यह प्रमाणित होता है कि स्त्रियाँ केवल एक पारिवारिक संरचना तक सीमित नहीं हैं, बल्कि समाज में परिवर्तन लाने की भी क्षमता रखती हैं।

आज जब महिला सशक्तिकरण और समानता की बात हो रही है, तब श्रीमद्भगवद्गीता और अन्य शास्त्रों के विचार और भी प्रासंगिक हो जाते हैं। यह शोध पत्र महिलाओं की भूमिका का गहराई से अध्ययन करेगा और यह विश्लेषण करेगा कि किस प्रकार गीता और अन्य शास्त्र नारी सशक्तिकरण के सिद्धांतों को पुष्ट करते हैं। साथ ही यह भी समझने का प्रयास किया जाएगा कि कैसे इन दार्शनिक और धार्मिक सिद्धांतों को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की आत्मनिर्भरता और सामाजिक उत्थान के लिए लागू किया जा सकता है।

यह शोध पत्र महिलाओं की भूमिका का गहराई से अध्ययन करेगा और यह विश्लेषण करेगा कि किस प्रकार गीता और अन्य शास्त्र नारी सशक्तिकरण के सिद्धांतों को पुष्ट करते हैं।

वेदों और उपनिषदों में महिलाओं की भूमिका:

वेदों में महिलाओं का योगदान: वेदों में महिलाओं को न केवल सम्मानजनक स्थान प्राप्त था, बल्कि उन्हें शिक्षा, ज्ञान, और आध्यात्मिकता में भी समान अधिकार दिए गए थे। वैदिक काल में महिलाएँ न केवल गृहस्थ

जीवन का संचालन करती थीं, बल्कि समाज सुधार, धर्म, और दर्शन में भी अपनी भूमिका निभाती थीं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में कई ऐसी ऋषिकाओं का उल्लेख मिलता है जिन्होंने वेदों के मंत्रों की रचना की और धर्मशास्त्रों में योगदान दिया।

प्रमुख वैदिक विदुषियाँ

1. **गार्गी वाचक्नवी –** बृहदारण्यक उपनिषद में उनका उल्लेख मिलता है, जहाँ उन्होंने विद्वानों की सभा में महान ऋषि याज्ञवल्क्य से आत्मा और ब्रह्मज्ञान पर गहन शास्त्रार्थ किया। उनकी तर्क शक्ति और ज्ञान के कारण उन्हें तत्कालीन विद्वानों द्वारा ष्ब्रह्म वादिनीष् की उपाधि दी गई थी।

2. **मैत्रेयी –** ऋषि याज्ञवल्क्य की पत्नी, जिन्होंने भौतिक संपत्ति के बजाय ब्रह्मज्ञान को सर्वोच्च माना। बृहदारण्यक उपनिषद में उनके संवाद मिलते हैं, जहाँ वे आत्मा और मोक्ष पर गहन प्रश्न करती हैं। उनकी ज्ञान–पिपासा और दार्शनिक दृष्टिकोण ने उन्हें भारतीय दर्शन में महत्वपूर्ण स्थान दिलाया।

3. लोपामुद्रा द ऋषि अगस्त्य की पत्नी, जिन्होंने ऋग्वेद के कुछ महत्वपूर्ण मंत्रों की रचना की। उनके योगदान से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में महिलाएँ न केवल गृहस्थ जीवन तक सीमित थीं, बल्कि धर्म और ज्ञान के क्षेत्र में भी सक्रिय भूमिका निभाती थीं।

4. **विश्ववारा –** ऋग्वेद में इनका उल्लेख मिलता है, और उन्होंने कई वैदिक मंत्रों की रचना की। वे वेदों की गहरी ज्ञाता थीं और उनकी रचनाएँ ईश्वर और आत्मा के ज्ञान को विस्तार से समझाने में सहायक हैं।

5. **अपाला –** ऋग्वेद में उनका उल्लेख है, और उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा तथा आरोग्य विज्ञान पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उनकी रचनाएँ आयुर्वेद और स्वास्थ्य विज्ञान की नींव रखने में सहायक मानी जाती हैं।

6. **रोमशा, शाश्वती, घोषा और श्रद्धा कामायनी –** ये सभी वैदिक विदुषियाँ थीं, जिन्होंने धर्म, समाज और शिक्षा के क्षेत्र में योगदान दिया और आध्यात्मिक ज्ञान को आगे बढ़ाया।

उपनिषदों में महिलाओं की भूमिका– उपनिषदों में महिलाओं को आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे। वे आत्मा, ब्रह्म, और मोक्ष जैसे विषयों पर गहन चर्चा कर सकती थीं। उपनिषदों की शिक्षाओं में यह स्पष्ट किया गया है कि ज्ञान किसी लिंग विशेष का विषय नहीं है, बल्कि वह सभी के लिए खुला है।

1. **गार्गी वाचक्नवी –**उपनिषदों में गार्गी को एक महान दार्शनिक के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने ब्रह्म, आत्मा, और जगत के संबंध में गहन प्रश्न किए। उनका संवाद याज्ञवल्क्य के साथ हुआ था, जिसमें उन्होंने ब्रह्म को 'अव्यक्त तत्व' के रूप में परिभाषित किया। यह चर्चा भारतीय दर्शन के सबसे महत्वपूर्ण संवादों में से एक मानी जाती है।

2. **मैत्रेयी –** उपनिषदों में मैत्रेयी के संवाद विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उन्होंने यह तर्क प्रस्तुत किया कि 'धन और भौतिक सुख से शाश्वत आनंद प्राप्त नहीं किया जा सकता,' बल्कि केवल ब्रह्मज्ञान से ही वास्तविक मोक्ष संभव है। यह विचार आगे चलकर अद्वैत वेदांत के प्रमुख सिद्धांतों में से एक बना।

श्रीमद्भगवद्गीता में नारी दृष्टिकोण– श्रीमद्भगवद्गीता केवल पुरुषों के लिए नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए एक मार्गदर्शक ग्रंथ है। इसमेंस्त्रियों के आध्यात्मिक उत्थान, कर्म, भक्ति और ज्ञानकी समानता को स्पष्ट रूप से बताया गया है। गीता में श्रीकृष्ण ने स्त्रियों को भी मोक्ष प्राप्ति और आत्मज्ञान के योग्य माना है।

स्त्रियों के आध्यात्मिक अधिकार – श्रीमद्भगवद्गीता में नारी के आध्यात्मिक और सामाजिक अधिकारों की जो व्याख्या की गई है, वह स्पष्ट रूप से यह दर्शाती है कि महिलाओं को पुरुषों के समान आत्मज्ञान, भक्ति और कर्मयोग का अधिकार प्राप्त है। वैदिक काल से ही भारतीय परंपरा में महिलाओं को केवल परिवार और समाज तक सीमित नहीं किया गया, बल्कि उन्हें ज्ञानार्जन, धर्म और नीति में भी समान स्थान दिया गया। श्रीकृष्ण स्वयं गीता में यह स्पष्ट करते हैं कि मोक्ष प्राप्ति के मार्ग में लिंग कोई बाधा नहीं है।

स्त्रियों के मोक्ष प्राप्ति का अधिकारकृगीता के नवम्अध्याय में श्रीकृष्ण अर्जुन को समझाते हैं कि जो भी व्यक्ति उनकी शरण में आता है, चाहे वह किसी भी जाति, लिंग या वर्ग का हो, वह परमगति को प्राप्त कर सकता है–

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्येऽपिस्युः पापयोनयः।
स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेऽपियान्तिपरांगतिम्।। (9.32)

इस श्लोक में श्रीकृष्ण यह स्पष्ट करते हैं कि स्त्रियाँ भी पुरुषों की तरह मोक्ष प्राप्त कर सकती हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि आध्यात्मिक उन्नति के लिए किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है और स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार दिए गए हैं। यह विचार आधुनिक समय में महिलाओं के आत्मनिर्भर बनने और आध्यात्मिक स्वतंत्रता प्राप्त करने की प्रेरणा देता है।

गीता में नारी को केवल मोक्ष प्राप्ति तक सीमित नहीं रखा गया, बल्कि उनके भीतर स्थित दिव्य शक्तियों का भी उल्लेख किया गया है। श्रीकृष्ण कहते हैं–

मृत्युःसर्वहरश्चाहमुद्भवश्चभविष्यताम्।
कीर्तिःश्रीर्वाक्चिनारीणांस्मृतिर्मेधा धृति क्षमा।। (10.34)

इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण स्वयं स्वीकार करते हैं कि स्त्रियों में विद्यमान कीर्ति, श्री (लक्ष्मी), वाणी (सरस्वती), स्मृति, मेधा (बुद्धि), धृति (धैर्य) और क्षमा जैसी विशेषताएँ ईश्वरीय गुणों के समान हैं। यह सिद्ध करता है कि स्त्रियाँ केवल करुणा और सहिष्णुता का प्रतीक ही नहीं हैं, बल्कि उनमें तेज, बुद्धि और शक्ति भी समाहित है। यह विचार स्त्री सशक्तिकरण की उस अवधारणा को बल देता है, जो यह मानता है कि महिलाएँ केवल एक सहयोगी शक्ति नहीं, बल्कि स्वतंत्र और निर्णय लेने वाली इकाई हैं।

गीता का कर्मयोग सिद्धांत भी महिलाओं के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। श्रीकृष्ण कर्म के महत्व को समझाते हुए कहते हैं–

कर्मण्येवाधिकारस्ते माफलेषुकदाचन।
माकर्मफलहेतुर्भूर्मातेसङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।(2.47)

इस श्लोक में वे बताते हैं कि मनुष्य को केवल अपने कर्म पर ध्यान देना चाहिए, न कि उसके फल पर। यह शिक्षा न केवल पुरुषों, बल्कि महिलाओं के लिए भी समान रूप से लागू होती है। जब महिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रही हैंकृराजनीति, विज्ञान, समाज सेवा, व्यापारकृतब गीता का यह संदेश उन्हें यह प्रेरणा देता है कि वे बिना किसी फल की चिंता किए अपने कर्तव्यों को निभाएँ और आत्मनिर्भर बनें।

भक्ति मार्ग में भी स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हैं। श्रीकृष्ण कहते हैं–

पत्रंपुष्पंफलंतोयंयोमेभक्त्याप्रयच्छति।
तदहंभक्त्युपहृतमश्नामिप्रयतात्मनः।।(9.26)

यह श्लोक यह दर्शाता है कि भगवान किसी भी व्यक्ति की भक्ति को

स्वीकार करते हैं, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष। मीराबाई जैसी भक्त कवयित्री इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, जिन्होंने सामाजिक बंधनों को तोड़ते हुए भक्ति मार्ग को अपनाया और आध्यात्मिक स्वतंत्रता प्राप्त की। गीता यह सिद्ध करती है कि भक्ति, ज्ञान और आत्मानुभूति के मार्ग में कोई भेदभाव नहीं है, और स्त्रियाँ भी पुरुषों के समान रूप से ईश्वर की कृपा प्राप्त कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त, गीता यह भी स्पष्ट करती है कि आत्मा का कोई लिंग नहीं होता–

वासांसिजीर्णानि यथा विहाय
नवानिगृह्णातिनरोऽपराणि।
तथा शरीराणिविहायजीर्णा–
न्यन्यानिसंयातिनवानिदेही।।(2.22)

इस श्लोक में श्रीकृष्ण आत्मा को शरीर से अलग बताते हैं और यह समझाते हैं कि जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नए वस्त्र धारण करता है, वैसे ही आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में प्रवेश करती है। यह विचार स्त्री–पुरुष समानता की गहरी अवधारणा को प्रस्तुत करता है। यदि आत्मा न तो पुरुष है और न स्त्री, तो आध्यात्मिक और सामाजिक स्तर पर किसी भी प्रकार का भेदभाव उचित नहीं है। यह विचार आधुनिक समाज में लैंगिक समानता के लिए एक सशक्त दर्शन प्रदान करता है।

गीता का यह दार्शनिक दृष्टिकोण आज के युग में महिलाओं के अधिकारों, शिक्षा और आत्मनिर्भरता के लिए एक प्रेरणा स्रोत बन सकता है। यह केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि एक जीवन दर्शन है, जो यह स्पष्ट करता है कि स्त्रियाँ भी आत्मज्ञान, कर्मयोग और भक्ति योग के माध्यम से मोक्ष प्राप्त कर सकती हैं और समाज के उत्थान में समान रूप से योगदान दे सकती हैं। इस प्रकार, गीता का संदेश न केवल प्राचीन भारत की महिलाओं के लिए, बल्कि आधुनिक युग में भी उनके सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

भारतीय महिला दार्शनिकों का योगदान:

भक्ति आंदोलन और महिला संत:

1. **मीराबाई –** कृष्ण भक्ति की प्रतीक, जिन्होंने समाज के विरोध के बावजूद अपने भक्ति मार्ग को चुना।
2. **अक्का महादेवी –** कर्नाटक की वीरशैव संत, जिन्होंने शिव भक्ति को आत्मसमर्पण का माध्यम बनाया।
3. **संत जनाबाई –** महाराष्ट्र की संत, जिन्होंने जाति और लिंग भेदभाव को तोड़ते हुए भक्ति का प्रचार किया।
4. **अंडाल (गोदा देवी) –** तमिलनाडु की भक्ति संत, जिन्होंने विष्णु भक्ति को अपने जीवन का आधार बनाया।
5. **कर्मवती देवी –** मध्यकालीन संत, जिन्होंने भक्ति आंदोलन में योगदान दिया और स्त्री स्वतंत्रता पर जोर दिया।

आधुनिक भारतीय महिला दार्शनिक:

1. **सावित्रीबाई फुले –** भारत की पहली महिला शिक्षिका, जिन्होंने महिलाओं की शिक्षा के लिए सामाजिक क्रांति की शुरुआत की।
2. **महादेवी वर्मा –** आधुनिक भारतीय साहित्य और नारी वादी विचारधारा की प्रख्यात लेखिका।
3. **सरोजिनी नायडू –** स्वतंत्रता सेनानी और कवयित्री, जिन्हें श्नाइटिंगेल ऑफ इंडियाश कहा जाता है।
4. **मदर टेरेसा –** करुणा और सेवा के प्रतीक, जिन्होंने गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा की।
5. **माता अमृतानंदमयी (अम्मा) –** आध्यात्मिक गुरु, जो प्रेम और सेवा के माध्यम से समाज कल्याण कर रही हैं।
6. **दया बाई –**समाज सेवा और आदिवासी उत्थान में योगदान देने वाली आध्यात्मिक महिला।

आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता– श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित नारी सशक्तिकरण के सिद्धांत केवल प्राचीन काल तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। वर्तमान समय में, जब महिलाएँ शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, व्यापार और समाज सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं, तब गीता का संदेश उनके आत्मनिर्भरता और आत्म–साक्षात्कार के मार्ग को और अधिक स्पष्ट करता है।

गीता यह स्पष्ट करती है कि आत्मा का कोई लिंग नहीं होता और आध्यात्मिक उन्नति का अधिकार सभी को समान रूप से प्राप्त है। आज महिलाएँ न केवल अपने पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों को निभा रही हैं, बल्कि नेतृत्वकारी भूमिकाओं में भी सफल हो रही हैं। गीता के कर्मयोग और भक्ति योग के सिद्धांत उन्हें यह प्रेरणा देते हैं कि वे बिना किसी बंधन या सामाजिक बाध्यता के, अपने कर्म और आत्म–विकास पर ध्यान केंद्रित करें।

इतिहास में, भक्ति आंदोलन के दौरान मीराबाई, अक्का महादेवी, और अन्य महिला संतों ने समाज के बंधनों को तोड़कर यह सिद्ध किया कि भक्ति और ज्ञान का मार्ग सभी के लिए खुला है। गीता में वर्णित विचार, कि ष्मुझे जो कोई भी प्रेम पूर्वक भक्ति अर्पित करता है, मैं उसे स्वीकार करता हूँ,ष इस बात की पुष्टि करता है कि आध्यात्मिकता में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं है।

आज जब महिलाओं को समान अवसरों के लिए संघर्ष करना पड़ता है, तब गीता का कर्मयोग सिद्धांत यह प्रेरणा देता है कि वे अपने अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए प्रयासरत रहें, बिना परिणाम की चिंता किए। शिक्षा, तकनीक, सामाजिक कार्यों और व्यवसाय में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी यह प्रमाणित करती है कि वेदों और गीता में जो अधिकार उन्हें दिए गए थे, वे केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक रूप से भी सार्थक हैं।

इस प्रकार, गीता का संदेश केवल आध्यात्मिक जागरूकता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह महिलाओं के आत्मनिर्भरता, सशक्तिकरण और उनके समाज में योगदान की आवश्यकता को भी बल देता है। यह न केवल धार्मिक ग्रंथ, बल्कि जीवन दर्शन है, जो नारी उत्थान के लिए एक स्थायी प्रेरणा बना रहेगा।

निष्कर्ष – भारतीय दर्शन में महिलाओं को सदैव उच्च स्थान दिया गया है। वेदों, उपनिषदों और श्रीमद्भगवद्गीता में महिलाओं की भूमिका को समान रूप से स्वीकार किया गया है। भक्ति आंदोलन से लेकर आधुनिक समाज तक, महिलाओं ने शिक्षा, सामाजिक सुधार और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया है।

आज के युग में, जब नारी सशक्तिकरण की बात होती है, तो गीता का संदेश हमें यह बताता है कि आत्मा न तो पुरुष होती है, न स्त्री। अत: हर व्यक्ति को ज्ञान और मोक्ष का समान अधिकार प्राप्त है। इस दृष्टिकोण को अपनाकर हम एक अधिक समावेशी और प्रगतिशील समाज की ओर बढ़ सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. रामसुखदासस्वामी (1976) गीता प्रबोधिनी, गीता प्रेस, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश।
2. देसाई, ए. एस. (1987). समाज कार्य शिक्षा का विकास. एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल वर्क इन इंडिया, मंत्रालय, समाज कल्याण, भारत सरकार, दिल्ली।
3. ब्रह्मचारी, नवीनकृष्ण 'विद्यालंकार' (1997, 24 फरवरी). श्रीमद्भगवद गीता, श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरा। प्रथम संस्करण – ॐ विष्णुपादश्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज जी की आविर्भाव। पृष्ठ 81, 101, 120, 233।
4. शर्मा, डॉ. अर्चना (2016). भारतीय परंपरा में धर्म की अवधारणा एवं मानवतावाद, (प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व) काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश। पृष्ठ 213–217।
5. गोवेन्द्र, गायत्री एवं गोवेन्द्र, अमृत (2017). श्रीमद्भगवद गीता में तनाव प्रबंधन, देव संस्कृति इंटरडिसीप्लिनरी इंटरनेशनल जर्नल, खंड 10।
6. कृष्ण, डॉ. दत्तू मुरली (2019). भगवद गीता और विज्ञान: एक समीक्षा, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हालिया वैज्ञानिक अनुसंधान, खंड 10।
7. बर्मोला, कैलाश चंद्र (2020, अगस्त), भगवद गीता: संघर्ष समाधान की एक तकनीक. एमिटीबिजनेसजर्नल, एमिटीइंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियर एंड एलाइडसाइंसेज, एमिटी यूनिवर्सिटी राजस्थान, जयपुर।
8. सिंह, डॉ. सुषमा (2021). पारंपरिक भारतीय चिकित्सा और बौद्धिक संपदा अधिकाररू एक भारतीय परिप्रेक्ष्य, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लॉ, मैनेजमेंट एंड ह्यूमैनिटी, खंड 4।
9. त्यागी, आयुषी (2022), गीता प्रथम अध्याय पाठ का महत्व और लाभ।
10. भारती, शैलेंद्र (2020). सारेगामा भक्ति।
11. https://www.jagran.com/spiritual/religion-geeta-jayanti-2021-5-shloka-of-geeta-which-give-right-direction-to-life-22290208.html
12. https://youtu.be/ypxjmZ_OFw?si=iZ6Gj_eckhWSQxTJ
13. https://youtu.be/-9oBsKtGd38?si=UzO8tSAvA5GJSGS8
14. https://youtu.be/l2MU7wveU9c?si=ZjVNshSthVhX398D
15. https://youtu.be/s2bbePyJ2_g?si=whjY2h7CCqDGXYaq
16. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Bhagavad_Gita
17. https://www.facebook.com/swami.ramdev/videos/881160363675810/?mibextid=rS40aB7S9Ucbxw6v
18. https://dkvaas.org/blogs-1/f/the-importance-of-social-work-in-the-bhagavad-gita

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारत में पर्यावरण सम्बन्धी कानून एवं नीतियों का अध्ययन

डॉ. नीतू*

* असिस्टैंट प्रोफेसर (अर्थशास्त्र) श्री गुरूनानक देव स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नानकमत्ता, ऊधम सिंह नगर (उत्तराखंड) भारत

प्रस्तावना – पर्यावरण शब्द परि+आवरण शब्द से मिलकर बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है ऐसा आवरण जिसके चारों ओर से हम घिरे हुये होते है। अर्थात् हम अपने चारों ओर जिन जीव जन्तुओं, पेड़-पौधो व अन्य अनेक सजीव एवं निर्जीव वस्तुओं को देखते या महसूस करते है, उनसे बने वातावरण को ही पर्यावरण कहते है। इसमें वातावरण या पर्यावरण के अतिरिक्त जलमण्डल, थलमण्डल तथा वायुमण्डल भी सम्मिलित रहते हैं। किसी भी स्थान के भौतिक, जैविक, अजैविक घटको से बने संसार को उस स्थान का पर्यावरण कहते है।

भारतीय संविधान जो 1950 में लागू किया गया था, परन्तु इसे पर्यावरण संरक्षण के प्रावधानों से नहीं जोड़ा गया था। सन् 1972 के स्टॉकहोम सम्मेलन में भारत सरकार ने 1976 में संविधान में संशोधन कर, दो महत्वपूर्ण अनुच्छेद 48ए तथा 51ए (जी) जोड़ दिये। अनुच्छेउ 48ए राज्य सरकार को निर्देश देता है कि वह पर्यावरण की सुरक्षा, वनो की रक्षा, वन्य जीवों की रक्षा एवं उसमें सुधार सुनिश्चित करे। अनुच्छेद 51ए (जी) नागरिको को कर्त्तव्य प्रदान करता है कि वह प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करे, सभी जीवधारियों के प्रति दयालु बने एवं उसका संवर्धन करे।

पर्यावरण संरक्षण में कानून व नियम का महत्वपूर्ण योगदान निम्न हैं-

1. जल अधिनियम, 1974-1977 :- जल प्रदूषण में उद्योगों की वृद्धि तथा शहरीकरण की बढ़ती प्रवृति के फलस्वरूप हाल ही के वर्षो में नदी तथा दरियाओं के प्रदूषण की समस्या काफी महत्वपूर्ण बन गई है। अत: इसे घरेलू तथा औद्योगिक बहिस्त्राव उस जल में नहीं मिलने दिया जाऐं, जो पीने के पानी के स्त्रोत, कृषि उपयोग तथा मत्स्य जीवन के पोषण के योग्य हो, नदी व दरियाओं का प्रदूषण भी देश की अर्थव्यवस्था को निरंतर हानि पहुँचाने का कारण बनता है।

यह अधिनियम 26 मार्च, 1974 से पूरे देश में लागू किया गया। यह अधिनियम भारतीय पर्यावरण विधि के क्षेत्र में प्रथम व्यापक प्रयास है, जिसमें प्रदूषण की विस्तृत व्याख्या की गई है। इस अधिनियम ने एक संस्थागत संरचना की स्थापना की ताकि वह जल प्रदूषण को रोके तथा स्वच्छ जल की आपूर्ति सुनिश्चित करे। इस कानून ने एक केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड तथा राज्यों के प्रदूषण नियंत्रण बोर्डो की स्थापना की। इस कानून के अनुसार, कोई भी व्यक्ति जानबूझकर प्रदूषण फैलाने वाले तत्वों को पानी में मिला देता है, तो उसे कानून में निर्धारित दंड दिया जायेगा।

जल प्रदूषण को रोकने में जल अधिनियम, 1977 भी एक महत्वपूर्ण कानून है जिसे राष्ट्रपति ने दिसम्बर, 1977 को मंजूरी प्रदान की। जहाँ एक ओर यह जल प्रदूषण को रोकने के लिए केन्द्र तथा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को व्यापक अधिकार देता है, वहीं जल प्रदूषित करने पर दंड का प्रावधान भी करता है।

यह अधिनियम केन्द्रीय तथा राज्य प्रदूषण बोर्डो को निम्न शक्तियाँ प्रदान करता है:-

1. किसी भी औद्योगिक परिसर में प्रवेश का अधिकार।
2. किसी भी जल में छोड़े जाने वाले तरल कचरे के नमूने लेने का अधिकार।
3. औद्योगिक ईकाइयाँ तरल कचरा तथा सीवेज के तरीकों के लिए बोड से सहमति ले।

2. वायु (प्रदूषण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1981 :- प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में वायु की गुणवत्ताा और वायु प्रदूषण का नियंत्रण सम्मिलित है। यह अधिनियम 29 मार्च, 1981 को पारित हुआ तथा 16 मार्च, 1981 से लागू किया गया। इस अधिनियम में मुख्यत: मोटर-गाड़ियों और अन्य कारखानों से निकलने वाले धुएँ और गंदगी को नियंत्रित करने का प्रावधान है। 1987 में इस अधिनियम में शोर प्रदूषण को भी शामिल किया गया है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को ही वायु प्रदूषण अधिनियम लागू करने का अधिकार दिया गया है। अनुच्छेद 19 के तहत केन्द्रीय बोर्ड को मुख्यत: राज्य बोर्ड के काम में तालमेल बैठाने का अधिकार दिए गये है।

इस अधिनियम के अनुसार राज्य सरकार व केन्द्र सरकार दोनों को ही निम्न शक्तियाँ प्रदान की गई है-

1. वायु प्रदूषकों के सैंपल इकट्ठा करना।
2. प्रदूषण नियंत्रित क्षेत्रों में औद्योगिक क्रियाओं को रोकना।
3. अधिनियम में दिए गए प्रावधानों के अनुपालन की जाँच के लिए किसी भी औद्योगिक इकाई में प्रवेश का अधिकार।
4. अधिनियम के प्रावधानों को उलंघन करने वालो के विरूद्ध मुकदमा चलाने का अधिकार।
5. प्रदूषित इकाइयों को बंद करने का अधिकार।

3. वन्यजीवन संरक्षण अधिनियम, 1972 :- वन्यजीवन संरक्षण अधिनियम इसमें सर्वप्रथम सन् 1952 में भारतीय वन्यजीवन बोर्ड का गठन किया गया। इस बोर्ड के अन्तर्गत वन्य-जीवन पार्क और अभायारण बनाए गए। 1972 में भारतीय वन्यजीवन संरक्षण अधिनियम पारित किया गया। इस अधिनियम के अन्तर्गत कृषि, उद्योगों और शहरीकरण से वनों के कटाव को रोका जा सके। वनों के अधिक कटाव से अनेक वन्य जन्तुओं की कई

प्रजातियाँ लुप्त हो गई है या लुप्त होने के कगार पर है। इसी को ध्यान में रखकर सरकार ने यह अधिनियम प्रारम्भ किया है।

इस अधिनियम के मुख्य प्रावधान इस प्रकार है:

1. चिड़ियाघरों व अभयारण्यों में वंश वृद्धि करना।
2. राष्ट्रीय चिड़ियाघरों तथा अभयारणयों में मूलभूत सुविधाओं को बनाए रखना।
3. संकटग्रस्त पौधो को संरक्षण प्रदान करना।
4. संकटग्रस्त वन्यप्राणियों की सूची बनाना तथा उनके शिकार पर प्रतिबंध लगाना।
5. वन्यजीवन के लाभों की जानकारी का शिक्षा के माध्यम से प्रचार करना।

4. वन संरक्षण अधिनियम, 1980 :- भारत सरकार न वनों के संरक्षण तथा वनों के विकास के लिए वन संरक्षण अधिनियम 1980 पारित किया। इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य वनों के विनाश कदादे रोकना है देश की स्वतंत्रता के पश्चात राष्ट्रीय वन नीति 1952 घोषित की गई लेकिन वनों के विकास पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया। 1970 के दौरान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण के प्रति जागरूक होने से वन संरक्षण को भी बल मिला। सन् 1951 से 1980 के बीच वन भूमियों का अपरदन 1.5 लाख हैक्टेयर प्रति वर्ष था अब इस अधिनियम के लागू होने के पश्चात् भूमि का अपरदन 55 हजार हैक्टेयर हो गया है।

इस अधिनियम में निम्न बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दिया गया है-

1. वन सम्बंधी योजनाएँ इस प्रकार हो ताकि वन संरक्षण को बढ़ावा मिले।
2. वनों की कटाई जहाँ तक सम्भव हो रोका जाना चाहिए।
3. पशुओं के लिए चारागाहों को ध्यान रखना चाहिए व चारे उत्पादन हेतु विशेष प्रावधान किया जाने चाहिए।
4. कुछ समय के लिए वनों की कटाई पर पूर्ण प्रतिबंध लगा देना चाहिए ताकि कुछ समय में पुन: पेड़-पौधे उग सके।
5. पहाड़ों, जल क्षेत्रों, ढ़लान वाली भूमियों पर वनों को पूरी तरह से सुरक्षित किया जाना चाहिए।

5. ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण कानून :- भारत में ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण के लिए अलग अधिनियम का प्रावधान नहीं है। ध्वनि प्रदूषण को वायु प्रदूषण में ही शामिल किया गया है। वायु प्रदूषण अधिनियम 1981 में संशोधन करते हुए इसमें ध्वनि प्रदूषकों को भी वायु प्रदूषकों की परिभाषा के अन्तर्गत शामिल किया गया है।

पर्यावरण अधिनियम, 1986 की धारा 6 के अधीन भी ध्वनि प्रदूषकों सहित वायु तथा जल प्रदूषकों की अधिकता को रोकने के लिए कानून बनाने का प्रावधान है। ध्वनि प्रदूषण अधिनियम, 2000 पारित किया गया है। ध्वनि प्रदूषकों को अपराधिक श्रेणी में मानते हुए इसके नियंत्रण के लिए भारतीय दण्ड संहिता की धारा 268 तथा 290 का प्रयोग किया जा सकता है।

6. पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 :- सर्वप्रथम 5 जून, 1972 में स्टॉकहोम में सम्पन्न हुआ। इसी सम्मेलन को देखते हुए, भारत में पर्यावरण संरक्षण के लिए पर्यावरण अधिनियम 1986 पास किया, यह एक बहुत बड़ा अधिनियम है। जो पर्यावरण के समस्त विषयों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य है, वातावरण में घातक रसायनों की अधिकता को नियंत्रित करना। इस अधिनियम में 26 धाराएं है। जिन्हे 4 अध्यायों में बाँटा गया है। यह कानून पूरे देश में 19 नवम्बर, 1986 से लागू किया गया है।

इस अधिनियम के अन्तर्गत निम्न बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दिया गया है-

1. मानव, प्राणियों, जीवों, पादपों को संकट से बचाना।
2. पर्यावरण संरक्षण हेतु सामान्य एंव व्यापक विधि निर्मित करना।
3. पर्यावरण का संरक्षण एवं सुधार करना।
4. विद्यमान कानूनों के अन्तर्गत पर्यावरण संरक्षण प्राधिकरणों का गठन करना।
5. मानव पर्यावरण के स्टॉकहोम सम्मेलन के नियमों को कार्यान्वित करना।

7. जैव-विविधता संरक्षण, अधिनियम 2002 :- सरकार ने जैव-विविधता संरक्षण अधिनियम वर्ष 2002 में पारित किया। इस कानून का उद्देश्य है जैविक विविधता की रक्षा की व्यवस्था की जाए। भारत विश्व में जैव-विविधता के स्तर पर 12वें स्थान पर है। भारत में लगभग 45000 पेड़-पौधों व 81000 जानवरों की प्रजातियाँ पाई जाती है। जो विश्व की लगभग 7.1 प्रतिशत वनस्पतियों तथा 6.5 प्रतिशत जानवरों की प्रजातियों में से है।

जैव विविधता कानून, केन्द्रीय सरकार को निम्न दायित्व भी सौपता है-

1. उन परियोजनाओं का पर्यावरणीय प्रभाव जांचना जिनसे जैव विविधता को हानि पहुँचने की आशंका हो।
2. स्थानीय लोगों की जैव विविधता संरक्षण की परम्परागत विधियों की रक्षा करना।
3. जैव विविधता अधिनियम, जैव विविधता संरक्षण सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

8. राष्ट्रीय जलनीति, 2002 :- राष्ट्रीय जल संसाधन परिषद ने 1 अप्रैल, 2002 को राष्ट्रीय जल नीति पारित की। जल मानव जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

इसके मुख्य बिन्दु निम्न प्रकार है-

1. जल के बेहतर उपयोग व बचत के लिए जनता में जागरूक बढ़ाने की बात कही गई है।
2. जल बंटवारे की प्रक्रिया में प्रथम प्राथमिकता पेयजल को दी गई है।
3. इसमें पहली बार जल संसाधनो के विकास की बात कही गई है।

9. राष्ट्रीय पर्यावरण नीति 2004 :- राष्ट्रीय पर्यावरण नीति वर्तमान नीतियों का एकीकरण करती है। न्यायालय द्वारा पर्यावरण से हुई नुकसानी के लिए राहत और दुर्घटना से प्रभावी रूप से शीघ्र निपटने के लिए राष्ट्रीय पर्यावरण नीति चलाई गई।

इस अधिनियम में निम्न उद्देश्य इस प्रकार है-

1. प्रत्येक मानव को एक स्वस्थ्य पर्यावरण का अधिकार है।
2. सत्त विकास का केन्द्र बिन्दु मानव है।
3. विकास के अधिकार की प्राप्ति पर्यावरणीय जरूरतों को ध्यान में रखकर की जानी चाहिए।
4. स्थानीय संस्थाओं को पर्यावरण संरक्षण के लिए शक्तिशाली बनाना।

10. वन अधिकार अधिनियम, 2006 :- वन अधिकार अधिनियम 18

दिसम्बर, 2006 को पारित किया गया है। यह कानून जंगलो में रह रहे लोगों के भूमि तथा प्राकृतिक संसाधनों पर अधिकार से जुड़ा हुआ है। भारत में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में न्यायपालिका द्वारा महत्वपूर्ण पहल की गई।

इस अधिनियम के मुख्य प्रावधान निम्न है–

1. विस्थापन की स्थिति में उनके पुर्नस्थान का प्रावधान करता है।
2. जंगल प्रबंधन में स्थानीय भागिदारी सुनिश्चित करता है।
3. जंगलों में रहने वाले लोगो तथा जनजातियों को उनके द्वारा उपयोग की जा रही भूमि पर उनको अधिकार प्रदान करता है।
4. पशु चराने तथा जल संसाधनों के प्रयोग का अधिकार देता है।

सुझाव :–

1. देश में व्याप्त ध्वनि प्रदूषण को रोकने के लिए उससे सम्बन्धित कानूनों को कड़ाई से लागू करे।
2. स्कूल, कॉलेजो, विश्वविद्यालयों में प्रदूषण एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए। ताकि छात्रों को इसकी जानकारी हो सके और वे इसे अपना ले।
3. रेडियो और दूरदर्शन से प्रत्येक दिन 5 से 7 मिनट का प्रोग्राम प्रसारित किया जाना चाहिए तथा सप्ताह में एक बार इस पर एक लंबा प्रोग्राम दिखाया जाना चाहिए।
4. भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कार्य होना चाहिए कि वह प्राकृतिक पर्यावरण की जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव है, उन सबकी रक्षा करें और उनका संवर्धन करे तथा प्राणी मात्र के प्रति दया भाव रखे।
5. वन संरक्षण अधिनियम में कानून को कड़ाई करना चाहिए ताकि वनों के कटाव पर रोक लगा सके। आज भी चौड़ी सड़को के लिये पेड़ काटे जा रहे है। जिसके कारण लोगों का जीवन संकट में पड़ गया है। प्रदूषण के कारण ही बहरापन, विकलांगता, अंधापन, कैंसर, अस्थमा आदि बीमारियों से लोग ग्रसित हो रहे है।

निष्कर्ष – हमारी नीतियाँ पर्यावरण संरक्षण में भारत की पहल दर्शाती है। पर्यावरणीय सम्बन्धी अधिनियम तो है पर इसका सुचारू रूप से कार्य नहीं किया जा रहा है। भारत में पर्यावरणीय की स्थिति काफी गंभीर बनी हुई है। नाले, नदियाँ तथा झीलें, औद्योगिक कचरे से भरी है। दिल्ली में यमुना नदी एक नाला बनकर रह गई है। वन क्षेत्र में कटाव लगातार बढ़ता रहा है। जिसके परिणाम में हमें हाल ही में बिहार में आई भीषण बाढ़ के रूप में स्पष्ट देखने को मिला है। भारत में जिस प्रकार से पर्यावरण कानूनों को लागू किया गया है, उसे देखते हुए लगता है कि इन कानूनों के महत्व को समझा ही नहीं गया है। पर्यावरण नीति को गंभीरता से लागू करने की आवश्यकता है। पर्यावरण को सुरक्षित करने के प्रयासों में आम जनता की भागीदारी भी सुनिश्चित करने की जरूरत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. शशि शुक्ला एवं एन0के0तिवारी:– पर्यावरण एक परिचय, राम प्रसाद एण्ड संस, आगरा।
2. हमारा पर्यावरण, भारतीय पर्यावरण समिति दिल्ली, पृष्ठ–45
3. तपन बिसवाला, मानवाधिकार, जेनूर एवं पर्यावरण, वीबा, 2008

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

जीव विज्ञान की उपलब्धि में इण्टरनेट की उपयोगिता का अध्ययन

डॉ. नाजिया कौशर* रेनुका शर्मा **

* सहायक प्रध्यापक (शिक्षा) डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** सहायक प्रध्यापक (शिक्षा) पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – किसी भी अनुसंधान का सबसे आवश्यक एवं मूल्यवान कार्य होता शोध का अध्ययन करना। कोई भी शोधकर्ता अपने पूर्व में जो अध्ययन हुए उनका लाभ लेना पसंद करता है। क्योंकि कोई भी अध्ययन पूर्णत: अलग नहीं होता है। किसी भी राष्ट्र का विकास वहाँ की शिक्षा प्रणाली पर निर्भर करती है। विकसित शिक्षण प्रणाली, सरलता, संसाधनों की उपलब्धता मानव संसाधन, आधुनिक तकनीक इत्यादि राष्ट्र के शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करती है। इस अध्ययन से अभिप्राय है कि जिस विषय पर अनुसंधानकर्ता शोध करने जा रहा है उसके बारे में जो भी सुन्दर व सुखद भविष्य के लिए व्यक्ति सदा से ही अनुसंधान की ओर प्रवृत्ति रहा है।

प्रस्तावना – जीवन में अनेको परिवर्तन हुए है, इन परिवर्तनों में एक हैं इन्टरनेट। इण्टरनेट के माध्यम से हम अनेको जानकारियाँ एक ही समय पर एक ही स्थान पर प्राप्त कर पाते है। इण्टरनेट एक एक ऐसा संचार माध्यम है, जो सूचनाओं का आदान–प्रदान करने में सहायक होता है। इन्टरनेट ने कल्पनाओं को आज यथार्थ में बदल दिया है। जो हमने अपनी बाल्यावस्था में कहानियों में सुना था, वह व्यवहार से लाया जा चुका है। इन्टरनेट ने दुनिया को समेट दिया है। मनुष्य का मन कल्पनाशील है और भी जो नित नये की तलाश में रहता है। उसकी विवेकशीलता, कल्पना, मौलिकता और दक्षता से ही उसे सबसे भिन्न और सर्वोकृष्टता प्रदान की है। मनुष्य ने अपने युगों से प्राप्त अनुभवों एवं उपलब्धियों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांरित किया जाता है। इस हस्तांतरण को हम शिक्षा कहते हैं। शिक्षा एक निर्देशन प्रक्रिया है जैसा कि एक बालक कुछ सम्भावना के साथ उत्पन्न होता है। जो अविकसित दशाओ में होता है, इसका विकास करना होता है तथा एक दिशा प्रदान की जाती है। यह शिक्षा के द्वारा ही प्रदान की जाती है। वास्तव शैक्षिक प्रक्रिया बालकों को अच्छे जीवन की ओर निर्देशन देने प्रक्रिया है। इन सभी तथ्यों का अध्ययन मनोवैज्ञानिक दृष्टिकाण से किया जाना चाहिए, क्योंकि शिक्षा में इनका अत्याधिक महत्व है। यह शिक्षा अध्यापकों, अधिकारियों एवं विद्यार्थियों के मध्य अनुकूल वातावरण निर्मित करने में सहायक सिद्ध होगी।

जीव विज्ञान अध्ययन में इण्टरनेट की उपयोगिता – युवाओं के आचरण एवं मानसिकता का ज्ञान आदि कि अध्ययन की आवश्यकता को देखते हुए शोधकर्ता ने इस शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया है कि जीव विज्ञान की उपलब्धि में इण्टरनेट की उपयोगिता के प्रति जागरूकता साकारात्मक सोच, व्यक्तिगत तथा वाह्य जगत से उनके संबंध आदि का बोध कराता है इनके विषय में जानकारी प्राप्त करना।

जीव विज्ञान के अध्ययन और उपलबिध में आई सी टी का संभावित उपयोग बहुत बड़ा है, यह एक बहुत बड़ा उपक्रम है और नए लोगों के लिए काफी चुनौतीपूर्ण है। कंप्यूटर सीखने के प्रोग्राम समूह और वेब सीखने के लिए कई तरह के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं, जिसमें गैर–इंटरैक्टिव सामग्री प्रावधान से लेकर अत्यधिक इंटरैक्टिव छात्र–केंद्रित सीखने के अनुभव शामिल हैं। न्यू साउथ वेल्स स्कूलों में उपयोग की जाने वाली शिक्षण सामग्री में सूचना वेब साइट्स, ट्यूटोरियल या संशोधन सामग्री के रूप में कंप्यूटर लर्निंग पैकेज, छात्रों द्वारा बनाए गए कंप्यूटर लर्निंग पैकेज, वर्चुअल फील्ड ट्रिप, सिमुलेशन और वर्चुअल प्रयोगशालाएँ शामिल हैं। इसके अलावा, छात्र और शिक्षक ई–मेल, समाचार समूहों और चर्चा सूचियों, स्थानीय और वैश्विक संचार दोनों के लिए वीडियोकांफ्रेंसिंग और टेलीकोलैबोरेटिव परियोजनाओं के माध्यम से आपस में संवाद करने के लिए वेब का उपयोग कर रहे हैं। यह लेख छात्र सीखने में उपयोग की जाने वाली सामग्रियों और स्कूल प्रणाली के भीतर उपयोग में आने वाले इलेक्ट्रॉनिक संचार के रूपों पर ध्यान केंद्रित करेगा। संसाधनों की एक सूची प्रदान की गई है।

जीव विज्ञान और आईटी क्रांति जीव विज्ञान शिक्षण पारंपरिक रूप से तीन अलग–अलग वातावरणों में से एक या अधिक में होता है; व्याख्यान कक्ष या कक्षा, प्रयोगशाला और मैदान ('बाहर')। हालाँकि, मल्टीमीडिया प्रौद्योगिकी के आगमन के साथ इन तीनों शिक्षण वातावरणों की विशेषताओं को जीव विज्ञान के छात्र के कंप्यूटर डेस्क टॉप पर अनुवाद करने का प्रयास किया जा रहा है। एक शिक्षक और उसके कुछ छात्रों द्वारा इसका परीक्षण करने पर आधारित है, जो जीव विज्ञान शिक्षा में आईटी की भूमिका उपलब्धि परिप्रेक्ष्य देता है, स्कूलों में वीएफटी के उपयोग का एक बहुत ही सकारात्मक विवरण प्रस्तुत करता है।

जीव विज्ञान शिक्षा में अध्ययन में इण्टरनेट की उपयोगिता के एकीकरण से कई महत्वपूर्ण लाभ मिलते हैं जो शिक्षण और सीखने दोनों को बढ़ाते हैं। जो इस प्रकार हैं –

लगाव और प्रेरणा : पारंपरिक शिक्षण विधियाँ कभी–कभी छात्रों का ध्यान आकर्षित करने में विफल हो सकती हैं, खासकर जब जटिल वैज्ञानिक अवधारणाओं से निपटना हो। इंटरैक्टिव सिमुलेशन, शैक्षिक खेल और मल्टीमीडिया प्रस्तुतियाँ जैसे आईसीटी उपकरण छात्रों को अधिक प्रभावी ढंग से जोड़ सकते हैं, जिससे सीखना मज़ेदार हो सकता है और जिज्ञासा को बढ़ावा मिल सकता है।

संसाधानों तक पहुँच : आईसीटी के साथ, छात्र ऑनलाइन संसाधनों के भंडार तक पहुँच सकते हैं जो अन्यथा उपलब्ध नहीं होंगे। डिजिटल पाठ्यपुस्तकें, ऑनलाइन पत्रिकाएँ, शैक्षिक वीडियो और वर्चुअल लैब छात्रों को उनकी भौतिक कक्षा की सीमाओं से परे अन्वेषण करने में सक्षम बनाती हैं।

सहयोग और संचार : आईसीटी उपकरण छात्रों और शिक्षकों के बीच सहयोग की सुविधा प्रदान करते हैं, चाहे वे एक ही कमरे में हों या दुनिया के विपरीत छोर पर। गूगल क्लास रूम, जूम और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स जैसे प्लेटफ़ॉर्म छात्रों को विचारों को साझा करने, समूह परियोजनाओं पर काम करने और सहजता से संवाद करने में सक्षम बनाते हैं।

सिमुलेशन के माध्यम से व्यावहारिक शिक्षा : विज्ञान एक ऐसा विषय है जो व्यावहारिक, व्यावहारिक अनुभव से बहुत लाभ उठाता है। हालाँकि, कुछ प्रयोग महंगे, समय लेने वाले या खतरनाक भी हो सकते हैं। आईसीटी आभासी सिमुलेशन के उपयोग को सक्षम बनाता है, जहाँ छात्र नियंत्रित वातावरण में प्रयोग कर सकते हैं और वैज्ञानिक घटनाओं का निरीक्षण कर सकते हैं।

वास्तविक समय डेटा विश्लेषण : विज्ञान अवलोकन, माप और विश्लेषण के बारे में है। आईसीटी उपकरण छात्रों के लिए वास्तविक समय में डेटा एकत्र करना और उसका विश्लेषण करना आसान बनाते हैं। चाहे वह मौसम के पैटर्न को ट्रैक करना हो, वर्चुअल लैब में प्रयोग करना हो या बड़े डेटासेट का विश्लेषण करना हो, आईसीटी विज्ञान को अधिक सुलभ और मूर्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

निष्कर्ष – इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों से यह बात स्पष्ट होती है कि विज्ञान शिक्षा में आईसीटी की भूमिका परिवर्तनकारी है। वर्चुअल लैब और सिमुलेशन से लेकर ऑनलाइन सहयोग टूल तक, प्रौद्योगिकी का एकीकरण विज्ञान सीखने के अनुभव को बढ़ाने के लिए रोमांचक संभावनाएँ प्रदान करता है। हालाँकि, आईसीटी के वास्तव में प्रभावी होने के लिए, शिक्षकों को पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित होने की आवश्यकता है, और छात्रों को आवश्यक संसाधनों तक पहुँच होनी चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. डॉ. भटनागर ए. बी. एवं डॉ. श्रीमति मीनाक्षी भटनागर (2007) 'मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूलयाकंन' आर. लाल बुक डिपा मेरठ।
2. https://teachers.institute/pedagogy-of-science/role-of-ict-in-science-education/
3. ce//efaidnbmnnnibpcajpcglclefindmkaj/https://www.ccmb.res.in/hindi/jigyasa-2017-18
4. Bharthi, G. (1984), "A study of self concept and achievement Motivation of early adolescents." Ph.d. psy.Vol, P.541.
5. Gupta p. (1984) "Self concept, dependency and adjustment pattern of adanoloned Institutimalized preadopsents". Vol,1 P.369-70.
6. Kirkland, K., and Hollandsworth, J.G., Jr. (1979). Test anxiety, study skills, and academic performance. J. Coll. Stud. Person. *20,*431 -435. (accessed November 15, 2003).
7. Klymkowsky, M.W., Garvin-Doxas, K., and Zeilik, M. (2003). Bioliteracy and teaching efficacy: what biologists can learn from physicists. Cell Biol. Educ. *2,* 155-161. (accessed November 15, 2003).
8. King, G.A. : Shult I.Z. Sted, K. Gilpin, M & Cathers T. (1993)- "Self Evaluation and self concept of adolescents with physical disabilities", American Journal of occupational therapy 47.2.132-140.
9. Kabal D., Musek J. (2001) "Self and academic achievement Slovenia and France. Personality and individual difference" 30(5): 887-899.
10. ifescied.org/doi/10.1187/cbe.03-11-0022

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय इतिहास में भक्तिकालीन संत पीपाजी का जीवन एवं कृतित्व एक अध्ययन

डॉ. ओमप्रकाश गेहलोत*

* सहायक प्राध्यापक (इतिहास) शासकीय महाविद्यालय, शामगढ़, जिला मंदसौर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – राव पीपा, जो बप्पा के नाम से भी उच्चारित किये जाते थे। ये बड़े ही प्रसिद्ध शासक रहे है और उनकी प्रसिद्धी का कारण उनका शासक होना नही है, इसका कारण उनके द्वारा राज्य का त्याग कर संत प्रवृत्ति को अपनाना रहा था। राव पीपा सन् 1360 ई. में गद्दी पर बैठे। इनका आरंभिक नाम प्रतापराव खींची था। संत बनने के पश्चात् संत पीपा के नाम से प्रसिद्ध हुए, ये कढ़वाराव के पुत्र थे। कड़वाराव के अन्य पुत्रों में भजनसिंह, चाचदेव व मलयसिंह का नाम आता है। इनमें से मलयसिंह ने मालवा में राघोगढ़ का राज्य स्थापित किया, मलयसिंह ने राघोगढ़ से शेरगढ़ लेकर अपने राज्य राघोगढ़ की स्थापना की एवं राघोगढ़ का स्वतंत्र राज्य अस्तित्व में आया। पीपाजी ने अनेक वर्षो तक गागरोनगढ़ के राज्य पर शासन किया। उस समय के गुजरात, राजपूताना और मध्यभारत के राज्यों की राजकुमारियों से इन्होने विवाह संबंध स्थापित किये। पीपाराव के समय में दिल्ली के सुल्तान ने उनके राज्य पर आक्रमण किया। आक्रमण का कारण गागरोनगढ़ के द्वारा दिल्ली सल्तनत को कर नही देना था। जिसके कारण आक्रमण हुआ। अत: सुल्तान ने अपने सेनापति जिसका नाम जर्दफिरोज था, के सेनापतित्व में लगभग 12000 सैनिको के साथ भयानक आक्रमण किया, परंतु राव पीपा ने अपने अदम्य साहस एवं अप्रतिम शौर्य का परिचय दिया। इस आक्रमण में दिल्ली सल्तनत को मुंह की खानी पड़ी व गागरोनगढ़ पर अधिकार करने का सुनहरा अवसर खो दिया। इस युद्ध में राव पीपा के रण कौशल का प्रदर्शन सबने देखा, हांलाकि इस युद्ध में स्वयं सुल्तान भी सम्मिलित था फिर भी वह इस युद्ध के परिणाम को अपने पक्ष में करने में विफल रहा व उसको दिल्ली खाली हाथ ही लौटना पड़ा।[1]

प्रतापराव ने अपनी प्रजा में भेदभाव नही किया। वे सभी धर्म के लोगो के साथ में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करते थे। प्रतापराव के समय में भक्तिकाल का आगमन हो चुका था। उस समय में संत रामानंद और उनके शिष्य जिनमें कबीर, नानक, दादू, सेना, रविदास जनमानस में ईश्वर के सगुण और निर्गुण दोनो रूपों का गुणगान किया करते थे। उस समय की भक्ति भावना से प्रतापराव भी अपने आप को नही बचा सके। प्रतापराव का मन भी प्रारंभ से ही युग की भावना के अनुरूप था। इन्होने इसी भावना से प्रभावित होकर के प्रकाण्ड विद्वान स्वामी रामानंद से दीक्षा ली और उनके शिष्य बन गए। रामानंद के प्रसिद्ध शिष्यों में कबीर और रैदास उनके बड़े प्रशंसक थे।

तत्कालीन समय में समाज में विशमता व्याप्त थी। धार्मिक, समाजिक, वर्ण,जाति के आधार पर समाज मे घोर निराशा का वातावरण व्याप्त था। इसी आधार पर संतपीपा ने जाति पांति, बाह्य आडम्बर और धर्म के आधार पर किए जाने वाले भेदभाव की आलोचना की। उनकी दृष्टि में मानवमात्र समान है, किसी भी आधार पर उनमें भिन्नता नही करना चाहिए। उन्होने अपने शब्दों के माध्यम से समाज में अलख जगाने का प्रयास किया।

प्रतापराव की रानियों में सीतादेवी का स्थान प्रमुख माना गया है। इन्होने अपने पति के संत बनने के पश्चात् उनका अनुकरण किया व आजीवन उनके साथ रही। सीतादेवी का वास्तविक नाम पद्मावती था। ये राजपुताना के सोलंकी टोड़ाराय की राजकुमारी थी। यही एकमात्र रानी थी, जिसने अपने पति के वैराग्य में उनका साथ दिया व दिव्य स्थान प्राप्त किया। इसी कारण उनको सम्मान के साथ सीता सहचरी कहा जाता है। इनके सम्मान में अनंतदास ने लिखा है–

संपत विपत न जानही, करे कंत की सेव।
सो पतपाता नार है,रहै सबद का भेष।[2]

संत पीपाजी की चार रचनाओ की जानकारी प्राप्त होती है। इन रचनाओं में है पद, साखियाँ, ककहरा और चितावणी।

संत पीपाजी के संबंध में किंवदंती से जानकारी प्राप्त होती है कि इनको भगवान कृष्ण ने दर्शन दिए थे। भरत राजमंडल के अनुसार जब अपनी रानी सीताबाई के साथ में श्रीकृष्ण से भेट करने के लिए द्वारिका पहुंचे। जब उनकी भेंट श्री कृष्ण से नही हुई, तो वे अपनी रानी के साथ में समुद्र में कूद पड़े। फिर समुद्र के अंदर उनकी भेंट श्रीकृष्ण से हुई और ये वहाँ पर अपनी पत्नी के साथ 8 दिन भगवान श्रीकृष्ण के साथ में उनके स्वर्ण भवन में रहे। जब वे बाहर आए तो शंख, चक्र, गदा और पद्म के छापें के निशान के साथ में आए। उनकी पत्नी सीताबाई को रूकमणीजी ने अपनी अंगूठी प्रदान की। इसी के बाद में द्वारिका में छापे देने का क्रम आरंभ हुआ, जो आज तक अनवरत् चल रहा है। ये वही छापा दिया जा रहा जो संत पीपाजी अपने साथ में लाए थे। संवत् 1415 ई. से अगले 25 वर्ष तक संत पीपाजी के शासन करने की जानकारी खिलचीपुर की हस्तलिखित ख्यात् में मिलती है। पीपाराव के कोई संतान नही थी अत: उन्होने कल्याणराव को गोद लिया था।[3]

पीपाजी स्वामी रामानंदजी के शिष्य थे उनको अपने गुरू पर अटूट विश्वास था इसी विश्वास के अनुरूप उन्होने लिखा है–

पीपा गुरू परताप तें,जरगियों रगत विकार।
तन मन सब चाणन हुओ, लागी सबद कटार।।[4]

भक्तिकालीन अन्य संतो के समान संत पीपाजी ने भी गुरू को मुक्तिदाता के रूप में प्रस्तुत किया है और उनके प्रति अगाध प्रेम प्रदर्शित किया है।

संत पीपाजी संत कबीर और संत रैदास के समकालीन थे और वे उनके गुरू भाई थे। संत रैदास ने उनके बारे में लिखा है–

ना कबीर के लच्छमी,ना कोई मेरे ठाठ।
धन पीपा जिण तज्यो,सगरो राज अरू पाट।।[5]

संत पीपा मानवतावादी संत थे दुसरों के दःख से प्रभावित होकर आपने अपनी वाणी के माध्यम से कहा है–

पीपा पर उपकार में,अपने मन को मार।
पीर पराई समझ ले,अपना दुःख निसार।[6]

प्रस्तुत पद के माध्यम से संत पीपाजी का मानवमात्र के प्रति कल्याणकारी भावना प्रतीत होती है। वे आजीवन इसी भावना का प्रचार-प्रसार करते रहे।

संत पीपा ने क्षत्रिय वर्ग द्वारा की जाने वाली हिंसा का विरोध किया है उन्होने हिंसा का स्थान छोड़कर सिलाई का कार्य प्रारंभ करवाने का श्रेय दिया जाता है अतः उनके अनुयाई पीपा दर्जी कहलाते है–
इतिहासकार अम्बादास माथुर ने उनके बारे में लिखा है–

पीपा खींची भक्त थो,छोड़ रजपूती काम।
कपड़ों सीतो हाथ सूं,मन में जपतो राम।।
तबसे चली परंपरा,पीपा दर्जी काम।
सूचिकारी काम से,हुए जगत विख्यात्।।[7]

वर्तमान में राजस्थान राज्य में आहू और कालीसिंध नदि के संगम पर गागरोनदुर्ग स्थित है इसी गागरोनदुर्ग की पर्वतमालाओं के मध्य संत पीपाजी का भव्य मंदिर स्थित है इस मंदिर में संत पीपाजी एवं उनकी पत्नी सीता सहचारी की मुर्तियाँ स्थापित है इनको देखने दूर-दूर से हजारों पर्यटक आते है।

मध्यकालीन संतो में पीपाजी एकमात्र ऐसे क्षत्रिय संत थे जिन्होने क्षत्रिय वर्ण में जन्म लिया और राज्य वैभव का त्याग कर जनमानस की भवना के अनुकूल समाज में व्याप्त कुरूतियों पर प्रहार किया और अपनी वाणी से भक्तिकाल को समृद्धि प्रदान करने का कार्य किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1 राजर्षि संत पीपाजी लेखक-ललित शर्मा प्रथम संस्करण:2012 प्रकाशक-राजस्थानी ग्रंथागार सोजती गेट,जोधपुर पृष्ठ संख्या 12
2. राजर्षि संत पीपाजी लेखक-ललित शर्मा प्रथम संस्करण:2012 प्रकाशक-राजस्थानी ग्रंथागार सोजती गेट,जोधपुर पृष्ठ संख्या 65
3. चौहान कुल कल्पद्रुम (चौहान राजपूत की शाखाओं का इतिहास एवं वंशवृक्ष) भाग-प्रथम लेखक-देसाई लल्लुभाई भीमभाई द्वितीय संस्करण 2005 प्रकाशक-राजस्थानी ग्रंथागार सोजती गेट,जोधपुर पृष्ठ संख्या 103
4. राजर्षि संत पीपाजी लेखक-ललित शर्मा प्रथम संस्करण:2012 प्रकाशक-राजस्थानी ग्रंथागार सोजती गेट,जोधपुर पृष्ठ संख्या 23
5. राजर्षि संत पीपाजी लेखक-ललित शर्मा प्रथम संस्करण:2012 प्रकाशक-राजस्थानी ग्रंथागार सोजती गेट,जोधपुर पृष्ठ संख्या 41
6. राजर्षि संत पीपाजी लेखक-ललित शर्मा प्रथम संस्करण:2012 प्रकाशक-राजस्थानी ग्रंथागार सोजती गेट,जोधपुर पृष्ठ संख्या 77
7. राजर्षि संत पीपाजी लेखक-ललित शर्मा प्रथम संस्करण:2012 प्रकाशक-राजस्थानी ग्रंथागार सोजती गेट,जोधपुर पृष्ठ संख्या 45

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिलाषाओं का विश्लेषण

राकेश कुमार जीनगर* डॉ. राखी शर्मा **

* शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र) विक्रम यूनिवर्सिटी, उज्जैन (म.प्र.) भारत
** सह-प्राध्यापक (शिक्षाशास्त्र) विक्रम यूनिवर्सिटी, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – विद्यालय में अध्ययनरत सभी विद्यार्थी बाह्य रूप से एक समान प्रतीत होते हैं, किंतु गहराई से देखने पर प्रत्येक विद्यार्थी अपनी प्रवृत्तियों और अनुभूतियों के आधार पर हर व्यक्ति में भिन्नता पाई जाती है। प्रत्येक व्यक्ति में 'आकांक्षा' नामक एक विशिष्ट गुण विद्यमान होता है, जो उसे अपने भविष्य के प्रति योजनाएँ बनाने और यह लक्ष्य तय करने में मदद करता है। जब कोई व्यक्ति अपनी शिक्षा प्राप्त कर रहा होता है, तब यही आकांक्षा उसे अपने शैक्षिक लक्ष्यों को तय करने और उनकी पूर्ति के लिए प्रेरित करती है। प्रारंभ में ये लक्ष्य केवल कल्पनाओं के रूप में होते हैं, किंतु समय के साथ वे धीरे-धीरे वास्तविक स्वरूप धारण करने लगते हैं।

शब्द कुंजी –शैक्षिक आकांक्षा, यथार्थवाद, आदर्शवाद, शैक्षिक उपलब्धि।

प्रस्तावना – शिक्षा मानव जीवन के विकास का प्रमुख आधार है। इसके माध्यम से व्यक्ति की जन्मजात क्षमताओं का विस्तार होता है, उसकी समझ और दक्षता में सुधार होता है और उसके आचरण में सकारात्मक बदलाव आता है। विद्या के माध्यम से मानव को सभ्य, संस्कारित और एक योग्य नागरिक के रूप में तैयार किया जाता है। आज के समय में हमारे देश में आर्थिक असमानता का स्तर तेजी से बढ़ रहा है, जिसकी वजह से छात्रों को अपनी शिक्षा संबंधी गतिविधियों में भाग लेने के लिए वित्तीय और अन्य प्रकार की मुश्किलों का सामना करना पड़ता है जब समाज उनकी शैक्षिक आकांक्षाओं को अव्यावहारिक मानते हुए आलोचना करता है, तो वे विद्यार्थी स्वयं को असहज अनुभव करने लगते हैं, जिससे उनमें मानसिक तनाव उत्पन्न होने की संभावना बढ़ जाती है। मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुसार, शैक्षिक आकांक्षाओं से जुड़े महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को प्राप्त करने के अंतर्गत किशोर छात्रों को विशेष कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

जब विज्ञान वर्ग का विद्यार्थी अपने लिए भविष्य के शैक्षिक लक्ष्य निर्धारित करता है, तो वह उन उद्देश्यों को हासिल करने के लिए गंभीर प्रयास आरंभ करता है। किंतु कई बार अपेक्षित उम्मीद के मुताबिक परिणाम न मिलने पर वह उदासी का अनुभव करने लगता है। विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों को अन्य वर्गों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक संवेदनशील माना जाता है। यही संवेदनशीलता कभी-कभी उनके के लिए परेशानी का सबक बन जाती है। ऐसी ही समस्याओं में से एक है अपने शैक्षणिक उद्देश्यों में असफल होने के पश्चात हतोत्साह होकर नकारात्मक प्रवृत्तियों की ओर बढ़ना।

शैक्षिक मार्गदर्शन और परामर्श के अभाव में किशोर विद्यार्थी सोशल मीडिया, सामाजिक प्रभाव और बाहरी आकर्षण के प्रभाव में अपनी वास्तविक क्षमताओं से परे जाकर उच्च शैक्षिक लक्ष्य निर्धारित कर लेते हैं। जब ये लक्ष्य पूरे नहीं होते, तो वे दिवास्वप्नों के चक्रव्यूह में उलझकर अपनी ऊर्जा का अपव्यय करने लगते हैं।

समस्या कथन – उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर का विश्लेषण।

समस्यात्मक विवरण में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषा

(क) उच्च माध्यमिक स्तर

सामान्य अर्थ– उच्च माध्यमिक स्तर का तात्पर्य उन कक्षाओं से है, जो विद्यालयी शिक्षा के कक्षा 11 एवं 12 के स्तर पर संचालित होती हैं।

विशेष अर्थ –प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर से आशय जिला चित्तौड़गढ में स्थित, राजस्थान बोर्ड से संबद्ध प्राप्त स्कूलों में कक्षा 11 एवं 12 में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों से है।

(ख) विज्ञान वर्ग

इस अध्ययन में विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का अर्थ उन छात्रों से है, जो कक्षा 11 एवं 12 में राजस्थान बोर्ड द्वारा निर्धारित विज्ञान विषयों – जैसे रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान एवं गणित आदि विषयों को पढ़ते हैं।

(ग) शैक्षिक आकांक्षा

सामान्य अर्थ– शैक्षिक आकांक्षा का आशय विद्यार्थी द्वारा अपनी वर्तमान शैक्षिक उपलब्धियों के आधार पर भविष्य के लिए निर्धारित शैक्षिक लक्ष्यों और उनकी प्राप्ति की अपेक्षाओं से है।

विशेष अर्थ – प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक आकांक्षा से आशय जिला चित्तौड़गढ़ के के राजस्थान बोर्ड से संबद्ध प्राप्त स्कूलों में कक्षा 11 एवं 12 में पढ़ने वाले विज्ञान समुह के विद्यार्थियों द्वारा वी.पी. शर्मा एवं अनुराधा गुप्ता द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा मापदंड (EAS&SG & Form P) पर प्राप्त किए गए अंकों से है।

शोध के उद्देश्य – उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययन कर रहे विज्ञान संकाय के छात्रों की शैक्षणिक अभिलाषा का स्तर का विश्लेषण करना।

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान वर्ग की छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अवलोकन करना।

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ – उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के छात्रों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर निम्न है।

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान वर्ग की छात्राओं का शैक्षिक आकांक्षा स्तर निम्न है।

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं है।

शोध की परिसीमाएँ – प्रस्तुत अध्ययन केवल राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले तक सीमित है।

यह अध्ययन राजस्थान बोर्ड से मान्यता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित है।

अध्ययन में केवल कक्षा 11 एवं कक्षा 12 में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

इस अध्ययन का आधार 120 विद्यार्थियों का नमूना आकार और उनका शैक्षिक आकांक्षा स्तर तक सीमित है।

संबंधित साहित्य सर्वेक्षण

शर्मा, एस. निधि (2002), छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर में 'उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं पर माता–पिता के भावनात्मक संबंधों का प्रभाव' विषय पर अनुसंधान किया। अपनी शोध प्रक्रिया में उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि उच्च और निम्न निष्पत्ति वाले विद्यार्थियों के माता–पिता के व्यवहार में भिन्नता पाई जाती है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि जिन विद्यार्थियों के माता–पिता का अपनी संतान के प्रति उच्च सकारात्मक भावनात्मक संबंध होता है, उन विद्यार्थियों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर अपेक्षाकृत अधिक होता है। इसके विपरीत, जिन विद्यार्थियों के माता–पिता का अपनी संतानों के प्रति भावनात्मक संबंध निम्न स्तर का होता है, उनके शैक्षिक आकांक्षा स्तर में भी गिरावट देखी गई।

गौतम, अमित एवं चंदेल, एन.पी.एस. (2016), दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) में 'विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन' विषय पर अनुसंधान किया। अपनी शोध प्रक्रिया में उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता में महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है, जबकि उनके शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर परिलक्षित नहीं हुआ। इसके अतिरिक्त, उन्होंने अपने अध्ययन में यह भी पाया कि छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य एक हल्का नकारात्मक सह–संबंध (Negative Correlation) होता है।

यादव, सुनील कुमार (2018), महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी में 'विज्ञान वर्ग के छात्रों की शैक्षणिक आकांक्षाओं पर पारिवारिक परिवेश का प्रभाव विषय पर शोध किया। अपने अध्ययन में उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि जिन विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण अध्ययन के अनुकूल होता है, उनके शैक्षिक आकांक्षा स्तर में वृद्धि देखी जाती है। विशेष रूप से विज्ञान समुह के छात्रों में यह प्रवृत्ति ज्यादा स्पष्ट रूप से पाई गई।

सिंह, प्रिया (2021), दिल्ली विश्वविद्यालय में 'उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा पर विद्यालयी वातावरण का प्रभाव' विषय पर अनुसंधान किया। अपनी शोध प्रक्रिया में उन्होंने यह निष्कर्ष निकला कि जिन विद्यार्थियों को प्रयोगशाला सुविधाएं, अनुभवी शिक्षक तथा परामर्शदाताओं का सहयोग मिला, उनकी शैक्षिक आकांक्षाएं अपेक्षाकृत उच्च स्तर की थीं। इसके विपरीत, संसाधनों की कमी वाले विद्यालयों के छात्रों में शैक्षणिक अभिलाषाओं का स्तर कम दर्ज किया गया।

शेखावत, संजय कुमार (2019), महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर में 'राजस्थान के उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान वर्ग के छात्रों की शैक्षणिक अभिलाषाओं पर सामाजिक एवं आर्थिक कारकों का प्रभाव' विषय पर शोध किया। अध्ययन में उन्होंने पाया कि ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर अधिक था। साथ ही, जिन विद्यार्थियों के परिवारों की आर्थिक स्थिति मजबूत थी, उनके शैक्षिक आकांक्षा स्तर में वृद्धि देखी गई।

शोध विधि – इस अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Survey Method) का उपयोग किया गया। इस विधि के अंतर्गत क्रॉस–सेक्शनल सर्वे डिजाइन (Cross Sectional Survey Design) को अपनाते हुए समूह तुलना तकनीक (Group Comparison Technique) का प्रयोग किया गया।

अध्ययन चर (Variables)

1. लिंग– छात्र एवं छात्राएं
2. शैक्षिक आकांक्षा स्तर
3. शैक्षिक स्तर– उच्च माध्यमिक स्तर

जनसंख्या एवं नमूना (Population & Sample) – इस अध्ययन में जनसंख्या के रूप में चित्तौड़गढ (राजस्थान) जिले में स्थित उन सभी उच्च माध्यमिक विद्यालयों को शामिल किया गया है, जो राजस्थान बोर्ड अजमेर से मान्यता प्राप्त हैं और जिनमें कक्षा 11 एवं 12 के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी अध्ययनरत हैं।

नमूने के रूप में कक्षा 11 एवं 12 में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया। विद्यार्थियों के चयन हेतु बहुस्तरीय यादृच्छिक नमूना चयन विधि (Multi Stage Random Sampling Method) का प्रयोग किया गया।

क्र.	विद्यालय का नाम	लिंग		कुल विद्यार्थी
		छात्र	छात्राए	
1	शहीद मेजर नटवर सिंह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय ,चित्तौड़गढ़	10	10	20
2	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, निंबाहेड़ा,चित्तौड़गढ़	10	10	20
3	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, राश्मी, चित्तौड़गढ़	10	10	20
4	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बेगु, चित्तौड़गढ़	10	10	20
5	राजकीय महाराणा सीनियर सैकंडरी स्कूल ,कपासन, चित्तौड़गढ़	10	10	20
6	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भुपालसागर, चित्तौड़गढ़	10	10	20

अध्ययन उपकरण: इस अध्ययन में उपकरण के रूप में डॉ. वी.पी. शर्मा एवं डॉ. अनुराधा गुप्ता द्वारा विकसित शैक्षिक आकांक्षा मापनी (Educational Aspiration Scale & Inventory & EAS&SG) का

उपयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विधियां: इस अध्ययन में वर्णनात्मक (Descriptive) तथा प्राचल सांख्यिकी (Parametric Statistics) तकनीकों का प्रयोग किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के जांच हेतु निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

माध्यमान (Mean),मानक विचलन (Standard Deviation & SD),क्रांतिक अनुपात (Critical Ratio & CR),सार्थकता स्तर (Significance Level & SL)

प्रदत्त विश्लेषण एवं परिकल्पना परीक्षण:- प्राप्त आंकड़ों को संकलित करने एवं सारणीयन के पश्चात कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य विविध प्रकार की सांख्यिकीय गणनाओं द्वारा निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए।

अध्ययन परिणाम एवं व्याख्या:

माध्यमान के आधार पर-गणना के अनुसार, छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का मध्यमान 36.5 है, जबकि छात्राओं का शैक्षिक आकांक्षा स्तर का मध्यमान 39.3 है। इस गणना से स्पष्ट होता है कि छात्राओं की शैक्षणिक अभिलाषा का स्तर छात्रों की अपेक्षा 2.8 अंक अधिक है। यह अंतर दर्शाता है कि छात्राओं का शैक्षिक आकांक्षा स्तर अपेक्षाकृत उच्च है।

प्रमाणित विचलन के आधार पर -गणना के अनुसार, छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का मानक विचलन 15.2 है, जबकि छात्राओं का मानक विचलन 14.1 है। इस अंतर के आधार पर निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि छात्रों का मानक विचलन छात्राओं की तुलना में 1.10 अधिक है। इसका अर्थ यह है कि छात्रों के शैक्षिक अभिलाषा स्तर में विविधता का स्तर अधिक है, भले ही उनका औसत आकांक्षा स्तर छात्राओं की तुलना में कम हो।

क्रांतिक अनुपात के आधार पर- गणना में प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 0.63 है, जो कि 0.05 स्तर (1.98) एवं 0.01 स्तर (2.62) पर निर्धारित मानक मूल्यों से काफी कम होता है। इससे स्पष्ट होता है कि प्राप्त मान दोनों ही स्तरों पर असार्थक है। फलस्वरूप, यह परिकल्पना स्वीकार होती है कि विज्ञान वर्ग के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक अभिलाषा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अत: निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि विज्ञान वर्ग के छात्र-छात्राओं का शैक्षिक आकांक्षा स्तर समान है, एवं इस पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

अध्ययन निष्कर्ष:

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर पर पढ़ रहे विज्ञान समुह की छात्राओं का शैक्षिक अभिलाषा स्तर छात्रों की तुलना में आंशिक रूप से अधिक है।
2. विज्ञान वर्ग के छात्रों के शैक्षणिक आकांक्षा स्तर में छात्राओं की अपेक्षा विविधता का स्तर अधिक है।
3. विज्ञान वर्ग के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है, अर्थात शैक्षिक अभिलाषा स्तर का संबंध व्यक्ति के लिंग से नहीं होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. शर्मा, आर.ए. (2009), शैक्षिक अनुसंधान, लाल बुक डिपो मेरठ।
2. गुप्ता, ए..पी. (2009), सांख्यिकीय विधियां, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
3. जायसवाल, सीताराम (2008), भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएं, विद्या प्रकाशक लखनऊ।
4. पाण्डेय, के.पी. (2012), शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
5. गौतम, अमित, चन्देल, एन.पी.एस. (2016), उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन,दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट आगरा।
6. अग्रवाल, जे.सी. (2010), शैक्षिक मनोविज्ञान, विकास पब्लिशिंग हाउस दिल्ली।
7. मिश्रा, आर.सी. (2011), शैक्षिक अनुसंधान के सिद्धांत, विनय पब्लिकेशन मेरठ।
8. सक्सेना, एन.आर. (2013), शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन, आर.लाल बुक डिपो मेरठ।
9. पाठक, रमेश (2015), शैक्षिक आकांक्षाएं एवं उपलब्धि, ज्ञानदीप प्रकाशन इलाहाबाद।
10. त्रिपाठी, एस.के. (2018), शिक्षा एवं समाजशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
11. मिश्र, आर.के. (2017). शैक्षिक आकांक्षाएं और मानसिक विकास, ज्ञानदीप प्रकाशन ,वाराणसी।
12. कुमार, संजय (2015). शैक्षिक मनोविज्ञान,एनसीईआरटी ,नई दिल्ली।

प्रयोजय प्रकति	प्रयोजय संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	स्वतत्रता स्तर	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र	60	36.5	15.2	3.10	118	0.63	0.05 असार्थक	स्वीकृति
छात्रा	60	39.3	14.1				0.01 असार्थक	

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

छठी शताब्दी ईसापूर्व में पर्यावरण चेतना का विकास

डॉ. नीलम सोनी*

* असि. प्रोफेसर, रामसहाय राजकीय महाविद्यालय, शिवराजपुर, कानपुर (उ.प्र.) भारत

प्रस्तावना – सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानव एवं पर्यावरण का गहरा संबंध रहा है। पर्यावरण के प्रति सभी धर्मों का दृष्टिकोण सकारात्मक रहा है, भारतीय संस्कृति ने पर्यावरण को हमेशा से ही पूजनीय माना है। सिन्धु घाटी सभ्यता से हमें अंसख्य ऐसे उदाहरण प्राप्त होते हैं जिसमें मानव के द्वारा, नीम, तुलसी, पीपल, बरगद, आदि अनेक वृक्षों को पूजने की परंपरा विद्यमान थी जो आज तक चली आ रही है प्रवृति के प्रति यह आस्था हमें पर्यावरण के प्रति सुरक्षा की भावना को जन्म देती है अगर हम पूर्व समय में मुड़कर देखेगें तो हम यह पायेंगे कि प्रकृति ने सिर्फ हमें साफ–स्वच्छ वातावरण दिया है जिसमे मानव ने अपना शारीरिक मानसिक एवं बौद्धिक विकास कर अपने व्यक्तित्व का विकास कर जीवन को सफल बनाया है। अगर हम प्राचीन काल की बात करे तो उस समय का मानव पर्यावरण संरक्षण के प्रति अधिक जागरूक था। सिन्धु घाटी की सभ्यता में अनेक वृक्षों की पूजा की जाती थी कहीं न कहीं मानव की यह आस्था मानव एवं पर्यावरण के प्रति प्रेम के दर्शाती है। इसी तरह का प्रकृति प्रेम हमें वैदिक संस्कृति में देखने को मिलता है हमारे महाकाव्यों रामायण एवं महाभारत में भी मनोरम प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन हमे अनेक साहित्यक ग्रंथों में प्राप्त होता है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण मे श्री राम के द्वारा 14 वर्ष के वनवास का समय जो उन्होंने वनों में बिताया था अनेक साहित्यक ग्रंथो में उनका सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है। महाभारत मे भी हमे अनेक मनोरम दृश्यों का उल्लेख साहित्यक ग्रंथों से प्राप्त होता है।

जैन एव बौद्ध धर्मों में भी पर्यावरण संरक्षण पर अत्यधिक महत्व दिया गया है दोनो ही धर्मों का मुख्य उद्देश्य था कि हम कार्यों को इस तरह से करे ताकि पर्यावरण को किसी तरह की हानि न पहुंचे क्योंकि मानव की हर गतिविधि पर्यावरण के अंतर्गत ही होती है हर इक सांस पर्यावरण पर ही निर्भर है हमारा यह दायित्व है कि हम पर्यावरण को असंतुलित होने से बचायें क्योंकि जब तक हमारा पर्यावरण सुरक्षित है तभी तक हमारा जीवन भी सुरक्षित है अगर पर्यावरण में असंतुलन उत्पन्न हो जायेगा तो मानव जीवन की गतिविधियाँ प्रभावित होगी। जिससे वह अपने जीवन को की प्रभावित करेगा।

पर्यावरण को सुरक्षित रखना हमारा दायित्व है ताकि हम अपनी आगे आने वाली पीढ़ी को एक सुन्दर स्वच्छ पर्यावरण उपहार स्वरूप दें। हमारे ऋषि, मुनियों ने भौतिक एवं आध्यात्मिक प्रगति पर्यावरण की गोद में ही प्राप्त की हमारे मनीषियों ने चिन्तन एवं मनन स्वच्छ वातावरण में किया। उनके द्वारा किया गया प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप में उनका चिंतन समग्र भारतीय वाङ्मय में परिलक्षित होता है

प्राचीन भारतीय वाङ्मय के प्रथम सोपान ऋग्वेद के प्रथम उद्गाता ऋषि ने अग्नि में स्थित उर्जा और जीवन की पहचान कर सर्वप्रथम उसे स्तुत्य माना

अग्निमीडे पुरोहितम् यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ।।

अर्थात सर्वप्रथम आधान किये जाने वाले यज्ञ को प्रकाशित करने वाले ऋतुओं के अनुसार यज्ञ संपादित करने वाले (देवताओं) का आह्वान करने वाले तथा धन प्रदान करने वालों में सर्वश्रेष्ठ अग्नि देवता की मैं स्तुति करता हूँ। ऋग्वेद संहिता में इन्द्र, वरुण, पर्जन्य, सूर्य आदि सभी प्राकृतिक तत्वों में देवत्व का आधान किया गया है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति से प्रेम करने की विशेष परंपरा रही है आज से लगभग 2600 वर्ष पूर्व पर्यावरण के प्रति बुद्ध का लगाव देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि वे मनुष्य के कृत जानने में सक्षम थे इसलिये उन्होंने न सिर्फ खुद प्रकृति से प्रेम किया वरन् संघ के भिक्षुओं को विशेष निर्देश दिये कि उनके किसी भी कार्य से पर्यावरण को नुकसान न पहुँचे क्यों कि ऐसा माना जाता है कि जिस व्यक्ति का जन्म जैसे वातावरण में होता है वह जीवन पर उसी वातावरण को पसन्द करता है। चाहे गौतम बुद्ध का जन्म हो या सिद्धार्थ से बुद्ध बनने की प्रक्रिया और उसके बाद का उपदेशक जीवन या महापरिनिर्वाण की प्राप्ति सभी प्रकृति के सौम्य घटा में घटित हुई। यही कारण है कि बौद्धधर्म के विकास में कृषि, वन, वृक्ष, और पर्यावरण का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। बुद्ध के उपदेशों मे भी कृषि, वन और वृक्ष इत्यादि उदाहरण मिलते है। बौद्ध शिक्षण में पेड़–पौधों, मानव, पशु–पक्षियों और प्रकृति से एकदम निकट का रिश्ता स्थापित किया गया है जिसमें सदस्य या अदृश्य सभी प्रकार के जीव जंतुओं के कल्याण के लिये सिद्धांत प्रतिपादित किये गये हैं। बौद्ध साहित्य में त्रिपिटक में भी पर्यावरण से संबंधित उपदेश दिये गये हैं। विनय पिटक जिसे बौद्ध धर्म की आचार संहिता कहा जाता है पर्यावरण को संतुलित बने रहने के उद्देश्य से पेड़ काटने से विरत् का उपदेश दिया गया है अगर कोई भिक्षु किसी तरह का पेड़ काटता है तो उसे पाराजिक नामक अपराध में रखा जाता है। इतना ही नहीं बौद्ध परंपरा में बारिश के मौसम में तीन महीने वर्षावास का विधान है जिसमें किसी भी भिक्षु को बाहर निकलने से मना किया गया है ता कि नये पौधों, हरे तृणों का मर्दन न हो तथा एक इंद्रिय वाले जीव वनस्पति को पीड़ा न पहुँचे। बौद्धधर्म का मत है कि सभी जीव–जंतुओं, वनस्पतियों व मनुष्यों का जीवन एक दूसरे से संबंधित है। इसलिए व्यक्ति को सभी जीवों का सम्मान

करना चाहिये। बौद्ध परम्परा अपने समस्त ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों सहित प्राकृतिक विश्व के साथ अपने अंतर को जोड़ने के लिये प्रोत्साहित करती है क्यो कि बौद्ध दृष्टिकोण से किसी भी वस्तु का भिन्न अस्तित्व नहीं है। पर्यावरण की अशुद्धता मन को प्रभावित करती है और मन की अशुद्धता पर्यावरण को दूषित करती हैं। पर्यावरण को शुद्ध करने के लिये हमे अपने मन को शुद्ध करना होगा। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता को बहुत महत्व दिया उन्होंने जल संरक्षण के उपाय किये और भिक्षुओं को जल संसाधनों को दूषित करने से रोका भगवान बुद्ध के उपदेशों में प्रकृति वन वृक्ष और समस्त जीवों का कल्याण महान भूमिका निभाते है। भगवान बुद्ध ने बोधि वृक्ष के नीचे बैठकर ज्ञान के प्रकाश से आलोकित हुए, बुद्ध की विचारधारा में उनके उपदेशों में तथा संदेशों में वृक्षों के प्रति प्रेम तथा अन्य प्राणियों के प्रति असीम अनुराग परिलक्षित होता है इसी, अनुराग में बौद्ध दर्शन का पर्यावरणीय में नैतिकता के तत्व अन्तनिहित है। महात्मा बुद्ध ने आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व पथ प्रशस्त कर दिया था, नियम बना दिये थे इन नियमों का सिर्फ उन्होंने स्वयं अनुपालन किया बल्कि भिक्षुओं नागरिकों और श्रेष्ठ जनों को भी इसे अपनाने के लिये प्रेरित किया। गौतम बुद्ध ने स्वयं अपने को प्रकृति मय कर लिया, प्रकृति की गोद लुंबिनी वन में जन्म लिया बोधगया में निरंजना नदी के किनारे पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त किया।

मृगो से पूर्ण हरे-भरे वन ऋषिपत्तनम, मृगदाय, सारनाथ में धर्मोपदेश देना प्रारम्भ किया और प्रकृति की गोद में साल वृक्षों के नीचे कुशीनगर में शरीर त्याग दिया। गौतम बुद्ध जीवन भर के स्वयं भिक्षुओं के साथ आम्रवन, वेणुवन, सिसिपावन, न्यग्रोधवन, जम्बुवन लटिठ्कावन आदि में रहे। उन्होंने सम्पूर्ण उपदेशो के लगभग दो तिहाई उपदेश श्रावस्ती के जेतवनराम और पूर्वराम बिहार में ही दिये। पालि त्रिपिटक में कहा गया है कि प्रकृति में पाई जाने बाली सभी चीजें एक दूसरे से जुड़ी हैं। अगुत्तर निकाय के अनुसार बुद्ध का कहना था कि प्रत्येक वन क्षेत्र वन्य जीवों का घर है जब कोई भिक्षु वन क्षेत्र में निवास करे तो उसे उन जीव-जन्तुओं की सुरक्षा करना चाहिये बौद्ध धर्म का प्रथम नीतिगत वचन अहिंसा है बुद्ध का मानना था कि जो व्यक्ति जीव हिंसा कर जीवन यापन करता है उन्हें अपने कर्मो का फल भोगना पड़ता है। बौद्ध ग्रन्थ संयुक्त निकाय में फलदार वृक्ष लगवाने, पुल बंधवाने कुएँ खुदवाने, प्याऊ चलवाने आदि को महान पुण्य कार्य बताया गया है। जिसके बल पर मनुष्य स्वर्ग लोक की प्राप्ति करता है। बौद्ध साहित्य त्रिपिटक में भी पर्यावरण से संबंधित बहुत से उपदेश प्राप्त होते हैं। विनयपिटक जिसे बौद्ध धर्म की 'आचार संहिता' कहा जाता है में बौद्ध संघ और भिक्षु भिक्षुणियों के आचार नियम के साथ ऐसी विभिन्न बातों का वर्णन है जिसमें पर्यावरण एवं पारिस्थितकीय सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त होता है। विनयपिटक में वातावरण को संतुलित बने रहने के उद्देश्य से पेड़ न काटने का उपदेश दिया गया गया है, इसके साथ ही भिक्खु पतिमोक्ख में प्राकृतिक तत्वों की सुरक्षा की भावना के कुछ नियम बताये गये है।

महावीर स्वामी ने भी पर्यावरण सुरक्षा से सम्बंधित अनेक उपदेश दिये हैं। उनका मानना था कि किसी भी जीवित प्राणी को मारना या चोट पहुंचाना स्वयं को मारने या चोट पहुंचाने के समान है दूसरों की करुणा स्वयं के प्रति करुणा है, इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि लगभग सभी धर्मो के साथ-साथ हैं कि साथ प्राचीन ग्रंथों में पर्यावरण संबधी निहितार्थो की एक अंतर्निहित प्रकृति है, जो प्रकृति और उसकी रचनाओं के प्रति आचरण का पालन करना था। जैन धर्म मूल रूप से पाँच सिद्धान्तों पर आधारित है, अंहिसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह तथा ब्रम्हचर्य इन्ही मार्गो पर चलकर भौतिक तथा आध्यात्मिक रूप से प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा की जा सकती है। जैन धर्म से सम्बंधित साहित्य में न केवल जीव जन्तु वरन् पेड़ पौधों पर दया करने का उपदेश दिया गया है उनका मानना था कि उपभोग से प्राकृतिक संसाधन नष्ट होते है जो आगे चलकर जलवायु और प्रकृति के प्रदूषित होने का कारण बनते है जैन धर्म अपने जीवन जीने के निर्धारित तरीकों के माध्यम से पर्यावरण की बहुत रक्षा करता है जैन धर्म के सिद्धांतों में अहिंसा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। पौधों, सब्जियों, फलों और अनाजों की तुलना में कीड़े और जानवर अधिक विकसित माने जाते है इसलिए इस धर्म में अन्य सभी जीवित प्राणियों के लिये खाद्य श्रंखला को बरकरार रखते हुए शाकाहारी भोजन को प्रोत्साहित करता है। जैन धर्म का प्रमुख सिद्धान्त बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय तक ही सीमति न होकर उससे कही अधिक बढ़कर सर्वजीय हिताय और सर्वजीत सुखाय तक है सम्पूर्ण जैन साहित्य में पर्यावरण के विषय में सूक्ष्म चिन्तन वर्णित है। जैन धर्म का चिन्तन मौलिक सिद्धांतों से अनुप्राणित है। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव को पर्यावरण के प्रथम सवांहक पुरुष माने जाते है भगवान ऋषभदेव ने असि, मसि, कृषि वाणिज्य और कला का सिद्धांत दिया उन्होंने पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और वनस्पति में जीव की अवधारणा का सिद्धांत प्रतिपादित किया साथ ही पर्यावरण का दायरा असीमित कर दिया। जैन धर्म समस्त जीवों के अस्तित्व एवं विकास में आस्था रखता है। जैन ग्रन्थों में पर्यावरण सरंक्षण के लिये मानव चेतना को जाग्रत करना आवश्यक बताया गया है। अगर मानव में पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना जाग्रत है तो वह कभी भी पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने की नही सोचेगा बल्कि सर्वाधिक विकास के बारे में सोचेगा। जैन साहित्य के अनुसार, जनजागरण के द्वारा जो भी जैन सिद्धांतों को जीवन में अपनाते हुये सभी जीवों को समान माना गया है एवं उनके प्रति मैत्री भाव का विचार रखा गया है अगर हम उनके प्रति हिंसा की नीति को अपनायेंगे तो पर्यावरण प्रदूषण उत्पन्न होगा। महावीर स्वामी ने जिओ और जीने दो का सिद्धांत दिया था। जैन साहित्य ग्रन्थ आचारांग सूत्र में षटकाय जीव निकाय के संरक्षण की बात प्रमुखता से की गयी है। जैन धर्म में श्रमणाचार एवं श्रावकाचार की वैज्ञानिकता को पर्यावरण के सन्दर्भ में प्रतिष्ठित किया गया है। जैन धर्म में पंच महाव्रत अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अस्तेय हैं। जिनमें अंहिसा को पर्यावरण संरक्षण में सर्वाधिक महत्व दिया गया है। जैन धर्म एवं दर्शन पर्यावरण चेतना व पर्यावरण संरक्षण के चिंतन को संपूर्ण अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पर्यावरण के प्रति लगाव एवं संरक्षण की बात सभी धर्मों में की गई है। पर्यावरण पर धर्म का प्रभाव हमेशा ही रहा था कहीं न कहीं धर्म से जैन एवं बौद्ध धर्म दोनों ही धर्मों का प्रमुख उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण था। वर्तमान समय में पर्यावरण के प्रति मानवों के लापरवाही के परिणाम स्वरूप में असंतुलन की स्थिति बढ़ती जा रही है। अगर हम अभी नहीं चेते तो इसका परिणाम घातक जायेगा हमारा ये दायित्व होना चाहिये कि हम पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान दे तथा दूसरों को भी जागरूक करें तभी हम आगे आने वाली पीढ़ियों को भी साफ और सुन्दर पर्यावरण उपलब्ध हो सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. निरंजना श्वेतकेतु बोरा-बौद्ध और जैन दर्शन के विविध आयाम प्रकाशक, निरंजना वोरा 2010, कृष्णा ग्राफिक्स, नारणपुरा जूना

गाँव अहमदाबाद
2. प्रेम सुमन जैन–जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण, प्रकाशक साहित्य निकेतन जयपुर, मुद्रण, 2022
3. डॉ. शिवप्रसाद–जैन धर्म और पर्यावरण संरक्षण, पार्श्वनाथ विद्यापीठ वाराणसी, 2003
4. Bhage Handra Jain Bhaskar-जैन धर्म और पर्यावरण प्रकाशक New Bhartiya Book corporation Edition-2019
5. हरिवंश पुराण सर्ग 18/55
6. Ignited.in
7. Encyclopedia of Jainism
8. https://www.pmindia.gov.in7 संघ
9. गीतांजली कुमारी–धम्मपद में पर्यावरणीय संरक्षण का विश्लेषण, 2019 Jetir March 2019, Volume 6, Issue 3
10. डॉ0 ध्रुव कुमार–बौद्ध धर्म और पर्यावरण (Mediamorcha.com)
प्रभात प्रकाशन
11. Law Bhoomi
12. भारत आर्य–पर्यावरण संरक्षण में बौद्ध दर्शन का योगदान (Introduction Journal of Multidisciplinary Research and Development Vol 4: ISsue 6 : June 2017
13. डॉ0 शबीना बेगम–बौद्ध धर्म में पारिस्थिकी चेतना–प्रवीन मिश्रा
14. पर्यावरण संरक्षण का सिद्धांत जैन दर्शन में daylife.page (प्रो0 डॉ0 सोहन राज तातेड़)
15. Jainavenue-https://jainavenue.org>Jainism and…..
16. डॉ0 रेनू जैन–जैन धर्म में पर्यावरण संरक्षण (शोध मंथन) तश्रि. दखत चजखख 2023
17. Igneted minds journals (https://ignetted.in>)
18. नीतू कुमारी–जैन आगम साहित्य के पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण (शोधपत्र) Vol-7 Issues-4 December 2019.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

पृथ्वी पर जलीय चक्र एवं जल चक्र की क्रिया-विधि का अध्ययन

नेहा शर्मा * डॉ. राजू शर्मा **

* शोधार्थी (भूगोल) श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पिलीबंगा, हनुमानगढ़ (राज.) भारत
** शोध निर्देशक (भूगोल) श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पिलीबंगा, हनुमानगढ़ (राज.) भारत

शोध सारांश – जल पृथ्वी पर एक आधारभूत संसाधन है, जो सभी प्राकृतिक संसाधनों में प्रमुख महत्ता रखता है। जल प्रकृति की रचना में सहभागी होकर सम्पूर्ण जीवमण्डल को आधार प्रदान करता है। इसका वितरण पृथ्वी पर विभिन्न स्थानों पर कई रूपों में पाया जाता है। इसका स्वरूप स्थिति एवं जलवायु के अनुसार परिवर्तित होता रहता है।

पृथ्वी पर जलीय चक्र – गैसीय अवस्था में वायुमण्डल में जलवाष्प के रूप में ठोस अवस्था में, सूक्ष्म हिम कणों के रूप में तथा द्रव अवस्था में, जलबून्दों के रूप में पाया जाता है। ये सभी दशायें तापमान में परिवर्तन के कारण बदलती रहती हैं तथा मौसमी प्रतिरूप को प्रभावित करती हैं। पृथ्वी पर जैविक समुदाय को जल की नियमति आपूर्ति की आवश्यकता होती है। यह जल संतुलित गुणवत्ताायुक्त होना चाहिए मुख्यत: नदियों, झीलों तथा भूमिगत जलभृर्ती से प्राप्त होता है। सागरीय जल लवणीय होने के कारण मानवीय उपयोग के लिए नहीं है। स्वच्छ जल का अधिकांश भाग हिम के रूप में जमा है, जो मानवीय पहुँच से काफी दूर है तथा उसका यथासम्भव उपयोग भी सम्भव नहीं है।

जल चक्र प्रक्रिया

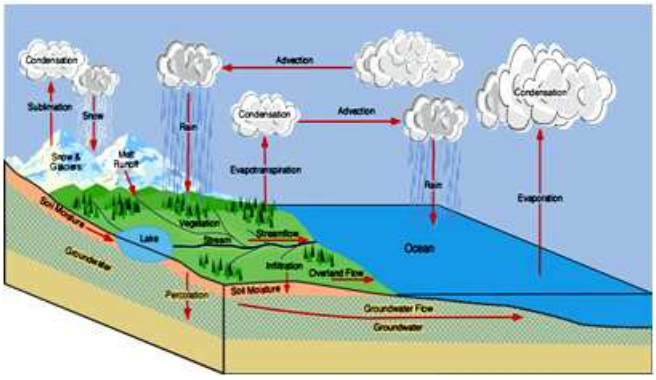

जिलीय चक्र में जुल की जलमण्डल, वायुमण्डल तथा स्थलमण्डल पर नियमित चक्रीय व्यवस्था को सम्मिलित किया जाता है। जल सागर, झील, नदियों, स्थल भाग (मृदा नमी) पौधे आदि से वाष्पीकरण एवं वाष्पोत्सर्जन द्धारा वायुमण्डल में पहुँचता है तथा वहां बदलती मौसमी दिशाओं के अन्तर्गत संघनन द्धारा बादल बनकर यह राशि पुन: वर्षा के रूप में जलमण्डल तथा स्थल मण्डल पर पहुँचती है। जल की विभिन्न रूपों में सम्पन्न होने वाली यह चक्रीय व्यवस्था 'जलीय चक्र' कहलाती है।

जल चक्र में जल का परिसंचरण विभिन्न परिमण्डलों में भी स्वतन्त्र रूप में होता है। इसके अन्तर्गत वायुमण्डल में वायु का उर्ध्वाधर तथा क्षैतिज परिसंचरण एक से दूसरे स्थान पर नमी का स्थानान्तरण जल मण्डल में सागरीय धाराओं द्धारा जल संचलन तथा स्थलमण्डल से नदियों एवं हिमनद द्धारा जल सागरों की ओर जाता है। इसी प्रकार मृदा के वाष्पीकृत एवं पौधों द्धारा वाष्पोत्सर्जित जल स्थल से अन्त:स्पन्दन द्धारा भूमि में पहुँचता है।

जल चक्र की क्रिया-विधि : पृथ्वी पर संचालित होने वाले जल चक्र के मध्य अनेक ऐसे अभिकरण होते हैं जो इसकी गतिशीलता को प्रभावित करते हैं। नमी की अवस्था तथा अवस्थिति में निरन्तर सम्बन्धित परिवर्तन होते रहते हैं तथा जो नमी वायुमण्डल को प्राप्त होती है वह जल, औंस हिम, पाले आदि किसी भी रूप में धरातल या समुद्रों को पुन: प्राप्त हो सकती है। अत: अवस्था एवं अवस्थिति में होने वाले इन परिवर्तनों के फलस्वरूप जलीय चक्र की प्रक्रिया में बाधाएँ आती हैं।

सूर्य से प्राप्त ऊर्जा (तापमान) के कारण महासागरों का जल जलवाष्प का रूप धारण कर वायुमण्डल में प्रवेश करता है। महासागरों में स्थल की ओर चलने वाली पवन इस जलवाष्प को गति देती हैं तथा एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित करती हैं। इसके उपरान्त जलवाष्प का जब संघनन होता है, तो भूसतह पर वर्षा होती है तथा वर्षा से धरातल को प्राप्त होने वाला यह जल नदी नालों के रूप में पृष्ठ पर बहता है और अन्त में महासागरों में प्रवेश कर जाता है। सौर ऊर्जा से यह जलचक्र गति करता है।

इस प्रकार वर्षा से प्राप्त इस जल का कुछ भाग वनस्पतियों द्धारा वाष्पोत्सर्जन होने से विनाश हो जाता है तथा कुछ जल नदियों, तालाबों, झीलों आदि से वाष्पीकरण द्धारा पुन: वायुमण्डल में पहुंच जाता है। धरातल पर होने वाली जलवर्षा के कुछ भाग का भूसतह से नीचे अन्त:स्पन्दन हो जाता है। मृदा में इस जल भण्डार को 'मृदा जल भण्डार' कहते हैं। जिसका पौधों से वाष्पोत्सर्जन द्धारा विनाश होता रहता है। कुछ जल स्रोतों के जल पुन: धरातल पर आ जाता है तथा मृदा जल भण्डार से कुछ भाग नीचे की ओर संचरित हो जाता है। धरातल के नीचे संग्रहीत इस जलीय भाग को 'भूमिगत जल' कहते हैं। इस प्रकार विश्व स्तरीय जल चक्र में निम्न क्रिया विधियाँ महत्त्वपूर्ण हैं –

वाष्पीकरण : वाष्पीकरण के परिणामस्वरूप दृष्टिगत जल अदृश्य वाष्प में बदल जाता है। सौर विकिरण द्धारा पृथ्वी पर स्थित जल के जलवाष्प में

परिणत होने की प्रक्रिया को 'वाष्पीकरण' कहते हैं। इसी प्रक्रिया द्वारा महासागरीय जल वायुमण्डल में पहुँचता है। महासागरों से जल का वाष्पीकरण महाद्वीपों से अधिक होता है। इसका प्रमुख कारण जल की पर्याप्त उपलब्धता होना है। वाष्पीकरण की प्रक्रिया के बारे में लोगों को लगभग 12500 वर्ष पूर्व मालूम था यूनानी विद्वानों ने वाष्पीकरण द्वारा जल स्रोत से जल के ह्रास के बारे में विवरण दिये हैं, लेकिन वाष्पीकरण की क्रिया विधि के बारे में व्यवस्थित जानकारी विगत दशकों से मिलने लगी है।

वाष्पीकरण की प्रक्रिया : वर्तमान में यह स्पष्ट हो चुका है कि वाष्पीकरण द्वारा किसी जलीय सतह का रूपान्तरण गैसीय आवरण में हो जाता है। वाष्पीकरण की गुप्त ऊष्मा ही तरल को वाष्प में बदलती है जो 100°cपर प्रतिग्राम लगभग 539 कैलोरी होती है। गुप्त ऊष्मा की तापीय ऊर्जा तीव्र गति करते हुए कणों से गतिक ऊर्जा के रूप में परिवर्तित हो जाती है। जब किसी तरल अवस्था का वाष्पीकरण होता है तो वाष्प के उपरान्त तरल की ताप ऊर्जा कम हो जाती है। इसका उदाहरण, बौछारों के रूप में गिरने वाला जल है तथा स्नान के दौरान जल का वाष्पीकरण होने से शरीर के तापमान पर पड़ने वाला ऋणात्मक प्रभाव है।

वाष्पोत्सर्जन : वाष्पोत्सर्जन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा पेड़-पौधे अपनी जड़ों से नमी को अवशोषित करके पत्तियों द्वारा पुन: जल को वायुमण्डल में निर्मुक्त कर देते हैं। यह क्रिया पत्तियों में स्थित रन्ध्रों द्वारा सम्पादित होती है। इस प्रक्रिया में भूजल की काफी मात्रा में हानि होती है। इस माध्यम से जल की हानि मुख्य रूप से दिन में होती है। विभिन्न पौधों में वाष्पोत्सर्जन की क्षमता भिन्न-भिन्न होती है। जल चक्र की क्रियाविधि में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। मरुस्थलीय क्षेत्रों में वनस्पति की मात्रा कम पाये जाने के कारण वाष्पोत्सर्जन कम होता है, जबकि सघन वनस्पति आवरण वाले क्षेत्रों में वाष्पोत्सर्जन तीव्र होने पर जलीय चक्र की क्रिया विधि भी तीव्र रहती है। जलीय चक्र की इस क्रिया विधि का भूजल की मात्रा पर प्रत्यक्ष प्रभाव परिलक्षित होता है। वाष्पोत्सर्जन की मात्रा को मृदा का गठन एवं संरचना भी प्रभावित करते हैं, क्योंकि पौधों की जड़ों को प्राप्त होने वाला जल अन्त:स्पन्दन द्वारा भूमि के अन्दर पहुँचता है। यह जल मृदा गठन की प्रकृति आधार पर ही स्पन्दित होता है।

वर्षा : किसी स्थान विशेष की वर्षा की दर को 'वर्षा की तीव्रता' कहते हैं अर्थात किसी स्थान विशेष में वर्षा प्रतिदिन एवं प्रति घण्टे की दर से हो रही है। जिन स्थानों पर वर्षा की हवाएं सर्वप्रथम प्रवेश करती हैं वहाँ वर्षा अधिक तीव्र होने की संभावना रहती है। अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में वर्षा की तीव्रता अधिक होती है, जबकि कभी-कभी कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी बहुत तीव्र वर्षा होती है। तीव्र वर्षा से लाभ कम तथा हानि अधिक होती है। तीव्र वर्षा से प्राप्त जल का उसी गति से अन्त:स्पन्दन नहीं हो पाता है जिससे भूमिगत जलीय चक्र प्रभावित होता है। वर्षा की कुल मात्रा के आधार पर ही उस क्षेत्र में वनस्पति तथा फसलों का विकास होता है।

वर्षा की मात्रा के साथ-साथ वर्षा के दिनों की संख्या भी महत्त्वपूर्ण होती है। यदि किसी स्थान पर प्राप्त होने वाली कुल वर्षा वर्ष के अधिकांश दिनों में वितरित है तो जलीय चक्र के संतुलित होने के लिए आवश्यक है। कम वर्षा के कारण सूखा पड़ता है अधिक वर्षा के कारण बाढ़े आती हैं। इस प्रकार वर्षा के स्वभाव जलीय चक्र को क्रिया विधि को प्रभावित करता है। वर्षा के साथ हो हिमदृष्टि, ओस, तोषार, आदि भी जल को नियन्त्रित करते हैं। वर्षा की मात्रा के साथ धरातलीय उच्चावच का भी सामंजस्य होता है। वर्षा का स्वभाव तीव्र हो या ढीला, भूसतह का ढाल उसके प्रवाह, अन्त: स्पन्दन तथा वाष्पीकरण को प्रभावित करते हैं।

अन्त: स्पन्दन : वर्षा का पानी जैसे भूसतह पर पहुँचता है, उसके एक भाग को भूमि द्वारा सोख लिया जाता है। पानी के अन्त: स्पन्दन की दर मृदा के संगठन तथा सुरचना से प्रभावित होती है। भूमि के जल को सोखने की क्रिया को 'अन्त: स्पन्दन'कहते हैं। वर्षा से प्राप्त जल का कुछ भाग ढाल के अनुसार प्रवाहित होता है। उसे 'सतही प्रवाह' कहते हैं। मृदा की प्रकृति अन्त: स्पन्दन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। चिकनी मृदा में अन्त: स्पन्दन की दर न्यून होती है, जबकि बलुई मृदा में तीव्र होती है। वर्षा जल अन्त: स्पन्दन द्वारा भूमि रन्ध्रों में पहुँचकर भूमिगत जल के रूप में विद्यमान रहता है। मृदा रन्ध्रों में सामान्य रूप से वायु विद्यमान रहती है। जैसे-जैसे धरातलीय जल भूमि के अन्दर प्रवेश करता है तो इस वायु का स्थान ले लेता है। इस प्रकार वायु की मात्रा कम होने व पानी की मात्रा बढ़ने की स्थिति को 'जलाकान्त स्थिति' कहते हैं। यह भूमि की संतृप्त अवस्था होती है अर्थात् इस सीमा के बाद भूमिगत जल को धारण नहीं करती है।

प्रकृति में जलीय-चक्र की महत्ता: पृथ्वी पर जलीय चक्र विभिन्न जैविक क्रियाओं के लिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि जलीय संचार के बिना जल संतुलन बिगड़ जायेगा और किसी भी तरह का जीवन असम्भव हो जायेगा। जल का वाष्प में परिवर्तित होकर वायुमण्डल में जमा होना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है जिस पर मौसम परिवर्तन निर्भर करता है। पृथ्वी पर वर्षा की क्रियाशीलता जल चक्र द्वारा ही पूर्ण होती है। पृथ्वी पर विभिन्न जैव रसायन चक्रों द्वारा ही पूर्ण होती है। पृथ्वी पर विभिन्न जैव भूरसायन चक्रों के अन्तर्गत अवसादों एवं रासायनिक तत्तवों के संचरण में वनस्पति प्रभावी माध्यम होती है। इस प्रकार जीवमण्डल में ये जैव भूरासायनिक चक्र जल के संचरण द्वारा ही सम्भव होते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Compiled from Tahal Report on Water Resource Planning for the State of Rajasthan : Shekhawati River Basin, 1998, Government of Rajasthan and CGWB, Western Circle, Jaipur, 2005
2. Dynamic Ground water Resource Assessment of India
3. Ground Water Year book Rajasthan (2020-21)
4. Ground Water Year book Rajasthan (2020-21)
5. Report on ground water level Scenario of Rajasthan Year 2020.
6. Source - Peter H. Gleick (editor), 1993, Water in Crisis: A Guide to the World's Fresh Water Resources (Oxford University Press, New York).

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

लिंगीय असमानता और चुनौतियां

डॉ. पिंकी सोमकुवर*

* सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र) शासकीय आदर्श महाविद्यालय, उमरिया (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – लैंगिक असमानता एक सामाजिक धारणा है। स्त्री और पुरुष एक जैविक तथ्य है यदि इस तथ्य के साथ किसी प्रकार की असमानता जुड़ जाती है तो यह एक लैंगिक असमानता का रूप ले लेती है। जेंडर एक सामाजिक सांस्कृतिक तथ्य हैं। प्रकृति मे किसी भी प्रकार का भेदभाव लिंग आधारित नहीं होता है। परंतु फिर भी समाज में महिलाओं के साथ प्रत्येक क्षेत्र में भेदभाव होता है–जैसे सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, खेल, मनोरंजन, शिक्षा तथा रोजगार आदि। लिंग असमानता की वजह से महिलाओं को कन्या भ्रूण हत्या, दहेज, घरेलू हिंसा, आर्थिक शोषण, अवसरों की असमानता आदि का सामना करना पड़ता है। और जब यह महिलाएं निम्न जाति से आती है तो उनका शोषण और बढ़ जाता है। अधिकांश धार्मिक कृत्य महिलाओं के हिस्से में आते हैं परंतु जहां संस्कारों की बात हो तो उच्च जातियों में पुरुषों का तो उपनयन संस्कार होता है परंतु महिलाओं का नहीं। आज भी किसी मृत व्यक्ति को अग्नि देने का काम अधिकांशत: पुरुष ही करते हैं बहुत कम मामलों में महिलाओं को इस प्रकार के संस्कार करते हुए देखा जाता है। महिलाओं का समाजिकरण इस प्रकार होता है कि सारे व्रत की जिम्मेदारी उन्हीं पर होती है चाहे वह पति के लिए हो या पुत्र के लिए। देवदासी, नगरवधू इस प्रकार की प्रथाएं भी महिलाओं को धर्म के माध्यम से समाज द्वारा ही दी जाती थी। लैगिक असमानता हमें मॉडर्न कल्चर लिव इन रिलेशनशिप में भी देखने के लिए मिलती है। श्रद्धा वाल्कर, निकी यादव यह हमारा ध्यान आकर्षित करती है। पुरुष का चुनाव आप अपनी मर्जी से करें या परिवार की मर्जी से हो आपको हिंसा का सामना इसमें भी करना पड़ सकता है।

शब्द कुंजी – लिंग असमानता, समानता, अवसर, शिक्षा, शोषण, सामाजिकरण।

प्रस्तावना – लैंगिक असमानता का तात्पर्य लिंग के आधार पर भेदभाव से है परंपरागत रूप से समाज में महिलाओं को एक कमजोर वर्ग के रूप में प्रस्तुत किया गया। महिलाएं घर समाज तथा कार्यस्थल पर शोषण अपमान और सबसे महत्वपूर्ण कदम कदम पर भेदभाव से ग्रसित होती है। महिलाओं की यह समस्या केवल भारत में ही नहीं अपितु विकसित देशों में भी है। स्त्री और पुरुष एक जैविक तथ्य है यदि इस तथ्य के साथ किसी प्रकार की असमानता जुड़ जाती है तो यह एक सामाजिक तथ्य बनकर लैगिक असमानता बन जाती है। जेंडर एक सामाजिक सांस्कृतिक तथ्य है यह किसी प्राकृतिक प्रक्रिया का परिणाम ना होकर सामाजिक संरचना द्वारा निर्मित है इसे बनाने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका सामाजिकरण की होती है। क्योंकि हमारा समाज पुरुष प्रधान है इसलिए महिलाएं क्या करेगी और क्या नहीं करेगी इसका नियंत्रण भी काफी हद तक पुरुषों के हाथों में था। समाज में पुरुष और स्त्री के लिए अलग–अलग व्यवहार की व्यवस्था थी परंतु वर्तमान समय में स्त्रियों की स्थिति में काफी परिवर्तन आया है लेकिन समानता अभी भी दूर है।

सिमोन दी बुआ के अनुसार महिलाओं की बराबरी की बात करते समय हमें उनके जैविक अंतर की वास्तविकता को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। 'औरत पैदा नहीं होती है बल्कि समाज औरत को गढ़ता है।' वह बार–बार इस बात पर जोर देती है कि हमारा धर्म हमारी संस्कृति हमारा समाज लड़कियों को मजबूर करता है स्त्री बनने के लिए। सिमोन के अनुसार इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमारे धर्म में महिलाओं की पूजा भी होती है। धर्म तो वास्तव में पुरुषों के द्वारा बनाया हुआ एक तरीका है औरतों पर शासन करने का।

नीरा देसाई का मानना है कि हमारा सरोकार केवल सामाजिक घटनाओं से अध्ययन से नहीं है। बल्कि हम कानून की संरचना और महिला मुक्ति के रास्ते में आने वाली हर चीज को बदलना चाहते हैं। ऐसा करने में हम अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ हिंसक संघर्ष में आ जाते हैं जो मूल्य तथा परंपरा की वकालत करते हैं।

बीना मजूमदार के अनुसार जब वह 1975 में प्रकाशित समानता रिपोर्ट की मसौदा समिति का हिस्सा थी तब वह और उनके सहयोगी भारत में महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए एक सामूहिक चेतना बनाने की आवश्यकता पर निर्भर थे। अपनी मध्यमवर्गीय स्थिति और बेहतर शैक्षिक अवसरों के संपर्क के कारण, उन्होंने यह महसूस किया कि, भारत में गरीब वंचित महिलाओं के जीवन के अनुभव के बारे में जागरूकता के लिए कोई चेतना नहीं थी। उन्हें और उनके सहयोगियों को एहसास हुआ की प्रतिबद्धता के लिए काम करने के माध्यम से उन्होंने जो सामूहिक चेतना पैदा की है उसे बनाए रखने की आवश्यकता है।

शोध पत्र के उद्देश्य :

1. ऐतिहासिक परिदृश्य में लिंग असमानता को समझना।
2. डॉ. बी आर अंबेडकर के महिलाओं संबंधी विचार को समझना।
3. हमारी धार्मिक मान्यताएं किस प्रकार लिंग असमानता में भूमिका निभाती है इसका अध्ययन करना।
4. शिक्षा के माध्यम से किस प्रकार लिंग असमानता को दूर किया जा सकता है का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीय आंकड़ों का प्रयोग किया गया

है। अवलोकन पद्धति का भी प्रयोग किया गया है।

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन – फ्रेंच इतिहासकार व विचारक मिशेल फूको (1980) में अपनी पुस्तक द हिस्ट्री ऑफ सेक्सुअलिटी में ज्ञान और सत्ता के चरित्र की बात करते हैं और बताते हैं कि किस तरह ज्ञान और सत्ता स्त्री को अनुकूलित करते हैं। उनके अनुसार शरीर एक ऑब्जेक्ट है जिसे समाज राजनीति व सत्ता अपने अनुसार बनाती व प्रशिक्षित करती है जैसे पुरुष हमेशा से समाज में अपने लिए अधिक स्पेस चाहता है। वही महिलाएं थोड़े से में ही खुद को संतुष्ट पाती है क्योंकि उसे ऐसी सामाजिक निर्मिती दी जाती है कि वह बड़ा न सोच सके। प्रभा खेतान(2010) के अनुसार भारतीय समाज में स्त्री अस्मिता का प्रश्न उठाती है जहां पहचान कि समस्या पुरुष के समक्ष नहीं आती उसकी पहचान स्थाई होती है स्त्री की तो पहचान ही उसकी अपनी नहीं पहले पिता, फिर पति। अगर दोनों ही ना हो यह विचारणीय प्रश्न है जेंडर के संदर्भ में समझा जाए तो स्त्री को सदा ही समाज में कमजोर व आश्रित माना गया जिसके लिए पहले पिता फिर पति के संरक्षण की व्यवस्था की गई।

डॉ. बी आर अंबेडकर (1976) के अनुसार लिंग असमानता का प्रयोग कहीं ना कहीं जाति प्रथा को बनाए रखने के लिए भी किया गया है। एक आदर्श स्थिति के रूप में स्त्री रू पुरुष अनुपात बनाए रखना था इसके लिए 1. स्त्री को उसके मृत पति के साथ सती कर दिया जाए 2. स्त्री को आजीवन विधवा रखा जाए जो जलाने से कुछ कम पीड़ादायक है। 3. विधुरो को ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने को बाध्य किया जाए।4. विधुर का ऐसी लड़की से विवाह कर दिया जाए जिसकी आयु अभी विवाह योग्य ना हो अर्थात लड़कियों का बाल विवाह।

ऊपरी तौर पर देखने वाले व्यक्तियों को हिंदू समाज की सामान्य क्रियाविधि जटिल लगेगी किंतु वह स्त्रियों से संबंधित 3 असाधारण रीतियां प्रस्तुत करता है यह है:

1. शक्तियां विधवा को उसके मृत पति के साथ जलाना।
2. थोपा गया आजीवन वैधव्य, जिसके अंतर्गत एक विधवा को पुन: विवाह करने की आज्ञा नहीं है।
3. बालिका विवाह।

यदि भारतीय समाज में लिंग असमानता की ऐसी कुरीतियों का पालन हो रहा था तो इनको करने के पीछे कोई वैज्ञानिक व्याख्या हमारे सामने नहीं है।

कुछ लोगों ने इसकी व्याख्या करने की कोशिश की परंतु जिसमें वैज्ञानिकता कम लिंग असमानता ज्यादा दिखाई देती है। जैसे ए के कुमार स्वामी(1913) के अनुसार सती सम्माननीय है क्योंकि यह पति पत्नी के बीच शरीर और आत्मा की संपूर्ण एकात्मता और श्मशान से परे तक समर्पण को दर्शाती है क्योंकि इसमें पत्नीत्व को साकार रूप दिया गया है, जैसा कि उमा ने अच्छी तरह उस समय स्पष्ट किया है जब उन्होंने कहा था हे महेश्वर अपने पतिदेव के लिए नारी का समर्पण ही उसका सम्मान है यही उसका शाश्वत स्वर्ग है भावुकता में वह आगे कहती है मेरी धारणा है कि यदि आप मुझसे संतुष्ट नहीं है तो मेरे लिए स्वर्ग की कामना करना बेकार है।

यहां पर दो बातें सामने आती है पहेली पत्नीत्व की धारणा है तो फिर इसी प्रकार पतित्व धारणा भी होनी चाहिए थी पुरुष को भी अपनी मृत पत्नी के साथ सती होना चाहिए था। दूसरा की पत्नी का सामाजिकरण किस प्रकार से हुआ कि उसे सती होना अनिवार्य या योग्य लगने लगा।

इसी प्रकार डॉ केतकर (1907) के अनुसार वह बालिका विवाह की प्रशंसा में कहते हैं एक सच्चे आस्थावान स्त्री या पुरुष को विवाह सूत्र में बंधने के बाद अन्य पुरुष या स्त्री से लगाव या संबंध नहीं रखना चाहिए। इस प्रकार की पवित्रता न केवल विवाह के उपरांत बल्कि विवाह के पूर्व भी आवश्यक है क्योंकि एक अच्छे चरित्र के लिए यही सही आदर्श है। किसी अपरिणिता को पवित्र नहीं माना जा सकता। यदि वह ऐसा करती है तो यह पाप है इसलिए एक लड़की के लिए यह अच्छा होगा कि किसी प्रकार की शारीरिक आवश्यकताएं जागृत होने से पूर्व ही उसे यह पता होना चाहिए कि उसे किससे प्रेम करना है और तभी उसका विवाह हो जाना चाहिए।

मालविका कारलेकर (1998) के अनुसार सत्ता और अधिकार के कारण सदियों से आमतौर पर महिलाएं घरेलू हिंसा की शिकार रही है घरेलू शोषण को इन्होंने 5 कैटेगरी में विभाजित किया है – शारीरिक , यौन, भावनात्मक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक। पत्नी को उसके ससुराल वालों और पति द्वारा कई कारणों से शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जाता है यह प्रताड़ना दहेज के लिए, घरेलू कामों के लिए या कभी-कभी केवल संतुष्टि के लिए ही हो सकती है। दुनिया भर में वर्ग, धर्म, समुदाय और भारत की जाति पृष्ठभूमि के मामलों के बावजूद पत्नी को पीटना दुर्व्यवहार का सबसे आम रूप है।

जगन कराडे के अनुसार भारत में पारंपरिक पितृसत्तात्मक मानदंडों ने महिलाओं को घर और कार्यस्थल के भीतर दोयम दर्जे पर पहुंचा दिया है। पुरुषों द्वारा महिलाओं के प्रति भेदभाव पूर्ण व्यवहार पीढ़ियों से उत्साहित है और दोनों लिंगों के जीवन को प्रभावित करते हैं। हालांकि भारत के संविधान ने पुरुषों और महिलाओं को समान अधिकार दिए हैं लेकिन लिंग असमानता अभी भी बनी हुई है। भारत में भेदभाव का सबसे पहला और प्रमुख कारण मानसिक बनावट है। हम एक पुरुष प्रधान समाज में रह रहे हैं जहां पुरुष सभी निर्णय लेते हैं और महिलाओं को बस सब कुछ स्वीकार करना पड़ता है। रोटी कमाने से लेकर घर चलाने तक का फैसला सिर्फ एक आदमी ही करता है। 21वीं सदी में भी कई महिलाओं के पास अभी भी खुद से जुड़े फैसल फैसले लेने का भी कोई अधिकार नहीं है। शादी से लेकर परिवार शुरू करने तक पुरुष ही हुक्म चलाता है और महिलाएं उसका पालन करती है। शिक्षा का अभाव सभी बुराइयों का मूल कारण है इसलिए ज्योतिबा फुले, नाना जगन्नाथ शंकर सेठ, महर्षी धोंडो केशव कर्वे जैसे कई समाज सुधारक कहते हैं कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का बुनियादी साधन है। और ज्योतिबा फुले ने वर्ष 1848 में पुणे में पहला गर्ल्स स्कूल शुरू किया जिसके परिणाम स्वरूप महर्षी करवे ने महिलाओं के लिए एक विश्वविद्यालय शुरू किया। और डॉक्टर अंबेडकर ने महिलाओं के अधिकार के लिए हिंदू कोड बिल के रूप में एक बिल बनाया। भारतीय महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की एक लंबी परंपरा रही है उनमें से कुछ जिन्होंने बेच मार्ग बनाया है स्वर्गीय डॉ. आनंदीबाई जोशी पहली भारतीय महिला डॉक्टर थी, डॉक्टर कमला सुहानी विज्ञान संकाय में पीएचडी करने वाली पहली महिला थी, राजेश्वरी चटर्जी कर्नाटक की पहली महिला इंजीनियर थी। डॉ चित्रा जयंत नाईक प्रसिद्ध शिक्षाविद एवं समाज सेविका थी। महात्मा फुले ने महिलाओं को पुरुषों के बराबर ही नहीं बल्कि बेहतर माना है। अपने सार्वजनिक जीवन में वे लिखते हैं कि पुरुष और महिला दोनों मानवाधिकारों का आनंद लेने के लिए समान रूप से योग्य है। कृष्णाराज मैत्री के अनुसार लिंग समीकरण के दो पक्ष है– महिला और पुरुष। हमारा समाज पितृसत्तात्मक होने के कारण निसंदेह पुरुषों

को विशेषाधिकार प्राप्त है।

लैंगिक असमानता के मुख्य कारण – निम्नलिखित है

1. पितृसत्तात्मक समाज
2. सामाजिकरण
3. घर परिवार एवं समाज का दबाव
4. मानसिकता
5. धर्म
6. वैधानिक स्तर
7. अशिक्षा
8. अंधविश्वास
9. आत्मविश्वास की कमी

विभिन्न क्षेत्रों में लैंगिक असमानता

सामाजिक जीवन में – परंपरागत रूप से घरेलू कार्य का तात्पर्य महिला से ही लगाया जाता है। घर में महिलाओं का मुख्य कार्य भोजन की व्यवस्था करना बच्चों के पालन पोषण तथा अतिथि सत्कार रहा है। वर्तमान समय में पुरुष और महिला दोनों ही कार्यशील होते हैं। फिर भी घर की पूरी जिम्मेदारी महिला की ही होती है। यदि पुरुष ऑफिस से आता है तो वह थका होता है परंतु यदि महिला ऑफिस से आती है तो उसकी थकान पर कोई चर्चा नहीं होती है। यदि महिला कोई भी कार्य करती है तो वह अपने पारिवारिक कार्य के अतिरिक्त कार्य होता है।

निर्णय निर्माण क्षेत्र में – गृहिणी होने के बावजूद घर के महत्वपूर्ण निर्णय में महिलाओं की भागीदारी सीमित होती है। घर में खाना क्या बनाया जाएगा यह निर्णय तो महिला ले सकती है परंतु किसी भी प्रकार का आर्थिक निर्णय या बड़े महत्वपूर्ण निर्णय महिला अकेले नहीं ले सकती या उसकी भागीदारी अनिवार्य नहीं होती है। जितनी महिलाओं की आबादी है उस हिसाब से निर्णय निर्माण में उनकी भागीदारी कम है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि किसी भी महिला की निर्णय निर्माण क्षेत्र में कोई भूमिका नहीं है।

आर्थिक क्षेत्र में – अभी भी अवसरों की असमानता कि वजह से आर्थिक क्षेत्र में महिला और पुरुष में असमानता दिखाई देती है।

कार्यस्थल में – सरकारी नौकरियों में समान काम समान वेतन की पॉलिसी लागू होती है परंतु ऐसे बहुत से कार्य है जहां पर यह नियम लागू नहीं होता है आज भी महिला मजदूर को पुरुष मजदूर से कम मजदूरी मिलती है। खेतों में भी अधिक परिश्रम वाले कार्य महिला मजदूर ही करती है जैसे धान की रोपाई। महिला मजदूर को किसी भी तरह की कोई छुट्टी नहीं मिलती है चाहे वह मासिक चक्र, गर्भावस्था हो, स्तनपान कराने वाली मां हो।

धार्मिक क्षेत्र में – हम चाहे सतत विकास के लक्ष्य में लिंग समानता को शामिल करें, महिला वर्ष मना ले, महिला दिवस मना ले, महिला दिवस पर वेबीनार, सेमिनार, कॉन्फ्रेंस कर ले परंतु वास्तविकता यही है कि आज भी विभिन्न प्रकार के मंदिरों में महिलाओं को जाने के लिए कानून का सहारा लेना पड़ता है जैसे सबरी माला मंदिर, शनि शिंगणापुर मंदिर। आज भी मॉडर्न सोसाइटी में मंदिरों में पुजारी पुरुष ही है आज भी महिलाओं का साक्षरता दर बढ़ने के बाद भी महिला शंकराचार्य के पद पर नहीं पहुंच पाई है।

राजनीतिक क्षेत्र में – विभिन्न राजनीतिक दल संविधान के दायरे में आते हैं संविधान से हमें समानता का अधिकार प्राप्त होता है परंतु इन्हीं राजनीतिक दलों में भी समानता दिखाई नहीं देती है आजादी के इतने वर्षों के बाद भी सिर्फ एक महिला रक्षा मंत्री बनना कहीं ना कहीं यह दर्शाता है कि देश के महत्वपूर्ण मंत्रालय पुरुषों के पास ही रहते हैं। अधिकांश समय महिला को महिला एवं बाल विकास विभाग दिया जाता है। मैं यह नहीं कहना चाह रही कि यह महत्वपूर्ण विभाग नहीं है। परंतु महिला यदि घर को अच्छे से चला सकती है तो देश को भी अच्छे से चला सकती है। यदि लिंग आधारित असमानता को दरकिनार कर महिलाओं को सभी मंत्रालयों में कार्य करने के मौके मिले तो बेहतर होता। इसके साथ ही राजनीतिक दलों के प्रमुख पदों पर नियुक्ति के समय भी महिलाओं को मौका नहीं दिया जाता। यहां पर ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि भारत में वर्तमान समय तक एक महिला प्रधानमंत्री दो महिला राष्ट्रपति रह चुकी है परंतु अमेरिका जैसे विकसित देश में आज तक कोई महिला राष्ट्रपति नहीं बन पाई है।

विज्ञान के क्षेत्र में – विज्ञान का क्षेत्र सामने आते ही कहीं ना कहीं पर प्रगतिशील विचारधारा सामने आती है परंतु इस क्षेत्र में भी लैंगिक असमानता विद्यमान है वैज्ञानिक समुदाय में नहीं लाओ की संख्या कम है और इसके साथ ही उन्हें कम महत्व के प्रोजेक्ट पर भी लगा दिया जाता है। मुझे लगता है कि स्वर्गीय एपीजे अब्दुल कलाम किसी परिचय के मोहताज नहीं है हम उन्हें एक मिसाइल मैन के नाम से जानते हैं परंतु वहीं दूसरी और मिसाइल विमेन ऑफ इंडिया टेसी थॉमस को पता नहीं कितने लोग जानते हैं। एन ई पी में महिला सशक्तिकरण के अंतर्गत इनको पढ़ाया जाना मैं समझती हूं महिला समानता की ओर यह एक कदम है। निश्चित ही यहां मोहना सिंह, भावना कंठ तथा अवनी चतुर्वेदी महिला फाइटर पायलट की उपलब्धि भी महत्वपूर्ण है।

मनोरंजन के क्षेत्र में – मनोरंजन के क्षेत्र में भी लैंगिक असमानता दिखाई देती है। आप देखते हैं कि मनोरंजन के क्षेत्र में एक्टर लंबे समय तक हीरो की ही भूमिका में रहता है परंतु एक्ट्रेस कुछ समय तक हीरोइन की भूमिका में रहती है फिर समय के साथ वह बहन, भाभी, बहू, सास, दादी आदि के रोल में आ जाती है। इसके अतिरिक्त महिला और पुरुष के पारिश्रमिक में भी अंतर होता है इसके अतिरिक्त अधिकांश फिल्में पुरुष प्रधान चरित्र पर आधारित होती है। हम देखते हैं कि पर्टिकुलर किसी एक एक्टर के नाम से ही फिल्म के हिट होने की गारंटी हो जाती है परंतु एक्ट्रेस के मामले में ऐसा दिखाई नहीं देता है। मनोरंजन के क्षेत्र में महिला को उसके रंग रूप से अधिक आंका जाता है और उन्हें इसी रूप में प्रस्तुत भी किया जाता है। मनोरंजन के क्षेत्र में ही अधिकांश टीवी शो में खलनायक के रोल में महिला को दिखाया जाता है। विज्ञापनों के माध्यम से भी महिलाओं के शारीरिक गुणों का बखान किया जाता है।

खेल के क्षेत्र में – खेल की बात करें तो सर्वाधिक लोकप्रिय खेल क्रिकेट है और हम पुरुष क्रिकेटर्स की कितनी पीढ़ियों से बहुत अच्छी तरीके से परिचित है। वही महिला क्रिकेटर की बात करें तो मुझे लगता है कि अपने सन्यास के बाद भी मिताली राज को जानने वालों की संख्या कम ही होगी। अन्य खेलों में भी महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा कम अहमियत दी जाती है। महिला खिलाड़ियों को पुरुष खिलाड़ियों की अपेक्षा पारिश्रमिक भी कम मिलता है। यदि कभी किसी पुरुष खिलाड़ी का परफॉर्मेंस अच्छा नहीं होता है और उसकी महिला मित्र वहां पर होती है तो भी उसके परफॉर्मेंस के लिए महिला को जिम्मेदार मान लिया जाता है।

आंदोलनों में – स्वतंत्रता आंदोलन में भी महिलाओं का जिक्र कम ही होता है। चिपको आंदोलन देश ही नहीं बल्कि दुनिया में भी इसकी चर्चा हुई परंतु इसमें भाग लेने वाली महिलाओं से अधिक चर्चाओं में पुरुष ही रहे।

संगठनों में – आज भी ऐसे संगठन हमारे समाज में है जिसमें महिलाओं को कोई उच्च पद प्राप्त नहीं हुए हैं।

लिंग असमानता को दूर करने के उपाय:

1. हमारी ऐसी धार्मिक मान्यताएं जो तर्कपूर्ण नहीं है उनका त्याग करके।
2. महिलाओं को शिक्षित करके।
3. अवसरों की समानता प्रदान करके।
4. जो कानून महिलाओं के लिए बनाए गए हैं उनको सही तरीके से लागू करके।
5. धार्मिक कट्टरता का त्याग करके।
6. समाज में कोई भी व्यक्ति जो किसी भी धर्म, संप्रदाय, जाति, क्षेत्र, भाषा तथा वर्ग का हो यदि वह किसी भी रूप से कन्याूण हत्या, दहेज, घरेलू हिंसा, बलात्कार तथा किसी भी प्रकार के शोषण आदि जैसे कृत्यो में शामिल हो तो उसका सामाजिक बहिष्कार किया जाए।
7. पाठ्यक्रमों में लिंग आधारित असमानता संबंधित शिक्षा न दी जाए।
8. महिलाएं भी यह सुनिश्चित करें कि उनके लिए बनाए गए कानून का दुरुपयोग ना करें।

निष्कर्ष – समानता एक सुंदर और सुरक्षित समाज की वह नीव है जिस पर विकास रूपी इमारत बनाई जा सकती है। सितंबर 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की उच्च स्तरीय बैठक में एजेंडा 2030 के अंतर्गत सतत विकास लक्ष्यों को रखा गया, जिसे भारत सहित 193 देशों ने स्वीकार किया। इन लक्ष्यों में सतत विकास लक्ष्य पांच के अंतर्गत लैंगिक समानता के विषय को भी शामिल किया गया है।(achieve gender equality and empower all women and girl)। वर्ल्ड इकोनामिक फोरम द्वारा 2022 के ग्लोबल जेंडर गैप इंडेक्स में भारत 146 देशों की सूची में 135 में नंबर पर है। इस सूची को बनाते समय 4 बैच मार्क होते हैं– 1 आर्थिक भागीदारी और अवसर 2. शिक्षा प्राप्ति 3. स्वास्थ्य और जीवन रक्षा 4. राजनीतिक अधिकारिता।

महिला और पुरुष समाज के स्तंभ है समाज में लैंगिक असमानता जानबूझकर बनाई गई थी जिससे समानता के स्तर को प्राप्त करने का सफर बहुत मुश्किल हो गया था परंतु अब समय और समाज दोनों ही बदल रहे हैं। सभी चुनौतियों का सामना करते हुए लिंग समानता को बनाना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. Ambedkar B R (1979) Cast in India : their mechanism genesis and development , writing and speeches, Education department Government of Maharashtra volume I
2. खेतान प्रभा (2010) अन्या से अनन्या, राजकमल प्रकाशन संस्करण, नई दिल्ली।
3. Beauvoir, Simone de (1971) The second sex, Oxford University press, New York.
4. Karade Jagan and Asha Suratkal (2017) "Analysis of Gender Inequality in Indian society to Pune city" scholarly research journal for humanity science and english language. Vol 4/22, page 5265.www.srjis.com
5. Karlekar Malavikar(1998) "Domestic Violence" economic and political weekly,Vol 33,no.27,page1741
6. Rege Sharmila (1995) "Feminist pedagogy and sociology for emancipation in India" sociological bulletin, vol 44 issue 2 Sage journal

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

आधुनिक कृषि यंत्रीकरण में नवीन तकनिकी ज्ञान का अध्ययन मध्यप्रदेश के बड़वानी एवं धार जिले के सन्दर्भ में

श्रीमती सुमन भवर* डॉ. नीमा चुण्डावत**

* शोधार्थी, भूपाल नोबल्स युनिवार्सिटी, उदयपुर (राज.) भारत
** शोध निर्देशिका (अर्थशास्त्र) भूपाल नोबल्स युनिवार्सिटी, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – आधुनिक कृषि यंत्रीकरण में नवीन तकनिकी ज्ञान को उर्जावान बनाने के लिये परम्परागत तकनीको एवं उपकरणों से कृषि करने के स्थान पर मशीनों का प्रयोग करने से होता है। कृषि कार्यो में नयी किस्म के उन्नत बीज रासायनिक उर्वरको एवं विभिन्न किटनाशक दवाइयों का प्रयोग किया गया जिससे कृषि क्षेत्र में नवीन परिवर्तन हुवा कृषि उत्पादन में वृद्धि होने से रोजगार के अवसरों में वृद्धि हो रही। कृषि यंत्रीकरण का अर्थ दकृषि कार्य में पशु शक्ति एवं मानव शक्ति के स्थान पर बिजली, डीजल एवं पेट्रोल से चलने वाली यांत्रिक शक्ति का प्रयोग किया जाता है कृषि यंत्रीकरण कहलाता है। जैसे जुताई एवं बुवाई में ट्रेक्टर, सिचाई के लिये पम्प सेट आदि सभी कार्य यंत्रो व मशीनों से जिए जाते है ।

शब्द कुंजी –नई तकनीक, मशीनीकरण, उन्नत बीज और रासायनिक बीज।

प्रस्तावना – भारत देश कृषि प्रधान है। इसमें अन्य देशों के साथ भारत भी विकासशील देश में शामिल है। वर्तमान मे देश की 139 करोड़ से भी अधिक जनसंख्या निवास करती है। देश की 69 प्रतिशत जनसंख्या गांव में निवास करती हैं। जिनका जीविकोपार्जन का मुख्य संसाधन कृषि है। कृषि प्रधान देश मे लगभग 60 प्रतिशत लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार उपलब्ध कराती है। देश मे घरेलू उत्पाद के रूप मे सबसे बड़ा योगदान कृषि क्षेत्र का ही है जो लगभग उत्पादन की दृष्टि से 18–20 प्रतिशत है। आधुनिक तकनीक और यंत्र उपलब्ध होने के बाद भी छोटे किसान उनका लाभ नहीं उठा पा रहे है। खेती से होने वाले नुकसान के कारण किसान ऐसे दलदल मे फसे हुए है कि वे नई तकनीकी कौशल से अभी भी परिचित नहीं हो पा रहे है। कृषि से संबंधित ऐसे व्यवसाय को ही सामुहिक रूप से अधिक लाभकारी बनाने के लिए सरकार को ऐसे कौशल विकास तकनीकि के माध्यम से जागरूक करने की आवश्यकता है। जिससे किसान सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का उपयोग कर लाभ प्राप्त कर सकते है। इसके लिए किसानों को वर्तमान मे तकनीकि जानकारी उपलब्ध कराना जरूरी है।

मध्यप्रदेश की सामान्य जानकारी – 1 नवम्बर 1956 को मध्यप्रदेश की स्थापना की गई। मध्यप्रदेश का पुराना नाम सेन्ट्रल प्रोविन्स एण्ड बरार था। मध्यप्रदेश के कुछ भागों मे जनजातीय के लोग बहुसंख्यक है इसलिए इस प्रदेश को जनजाती प्रदेश के नाम से भी जाना जाता है। राज्य के कुल 10 संभाग है तथा कुल 55 जिले है और 313 तहसीलें है। इसी प्रकार 313 कुल विकासखण्ड है।

मध्यप्रदेश में कृषि – मध्यप्रदेश भारत का एक महत्वपूर्ण राज्य है मध्यप्रदेश भारत के मध्य में स्थित है इसलिये मध्यप्रदेश को भारत का हृदय भी कहा जाता है जो अपनी समृद्ध संस्कृति,एतिहासिक स्थलो और प्राक्रतिक सौंदर्य के लिए जाना जाता है। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल है। मध्यप्रदेश की जनसंख्या (20210) के अनुसार 7 करोड़ 26 लाख 26 हजार 809 होने के साथ ही यह भारत की कुल जनसंख्या का 5.99 प्रतिशत है मध्यप्रदेश को सोया प्रदेश के नाम से भी जाना जाता है यहाँ राष्ट्रीय उत्पादन का करीब 60 प्रतिशत सोयाबीन होता है। मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है यहाँ की मुख्य फसलें गेहु ,चावल,मक्का और कपास है,दलहन और तिलहन के उत्पादन में मध्यप्रदेश का देश मे पहला स्थान है। खाद्यान उत्पादन मे मध्यप्रदेश का देश में दूसरा स्थान है। यहाँ कई महत्वपूर्ण उद्योग भी स्थित है इनमे सीमेंट ईस्पात और कपड़ा उद्योग शामिल है।

कृषि एवं सम्बद् क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था की दृष्टि से 72.37 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। जहां खेती ही उनकी आजीविका का प्रमुख साधन है। मध्यप्रदेश में कुल कृषकों की संख्या 1.10 करोड़ है जिनमें कुल खेतीहर मजदूर 74 लाख है। मध्यप्रदेश का कुल क्षेत्रफल 3.08 करोड़ वर्ग हेक्टेयर है।

मध्यप्रदेश में कृषि क्षेत्र मे विकास के लिए सरकार ने कई प्रादेशिक और राष्ट्रीय स्तर की योजनाएं जारी की है। जैसे – प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना,फसल ऋण माफी योजना,कृषि शक्ति योजना। इन तीन योजनाओं को क्रमश: 2016,2018 और 2019 वर्ष में अधिक बल दिया गया है। जिससे किसान सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का उपयोग कर लाभ प्राप्त कर सके। ये सही जानकारी उन्हें समय से उपलब्ध कराई जाए। कृषि उत्पादकता में वृद्धि करने के लिए सरकार द्वारा अनेक प्रयास किए जा रहे है। जैसे– उन्नत बीज की उपलब्धता, भूमी सुधार,रासायनिक उर्वरकों का उपयोग,कीटनाशक दवाइयो की सहज उपलब्धता साथ ही सबसे महत्त्वपूर्ण बात सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता आदि ऐसे अनेक तत्व है जिनकी सहायता से ही कृषि विकास की दशा को उन्नत किया जा सकता है और कृषि विकास को बड़ावा मिल सके। विभिन्न प्रकार से किसानों को खासतौर पर ग्रामीण लोगों को डायरेक्ट बेनीफिट ट्रासंफर जैसी योजनाओं

के माध्यम से लाभ पहुंचाने के प्रयास किए जा रहे है। किसानों को प्रति इकाई क्षेत्रफल से अधिक लाभकारी उपज प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक तकनीकी से जोड़ा जा रहा है।

अध्ययन के उद्देश्य – प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य आधुनिक कृषि यंत्रीकरण में तकनीकी ज्ञान के प्रभाव को ज्ञात करनौ।

शोध परिकल्पना – मध्यप्रदेश के बड़वानी एवं धार जिले में कृषि विकास एवं तकनीकी परिवर्तनों का अंत संबंध एवं प्रभावों का विशलेषण करने के लिये निम्न शोध परिकल्पनाएँ बनाई गई है।

1. अध्ययन क्षेत्र में कृषि उत्पादन कार्यो के लिये नई पद्धति का ज्ञान हैं।

शोधविधि – प्रस्तुत शोध संबंधी आकड़ो का संग्रहण हेतु प्राथमिकता एवं दितियक स्त्रोतों का प्रयोग किया गया है और इन्ही स्त्रोतों के आधार पर निष्कर्ष निकाले गए शोध मुख्यत: विभिन्न पुस्तके पत्र-पत्रिकाओ शोध पत्रों समाचार पत्रों एवं भू अभिलेख, संखिकी अधिकारी, कृषि अधिकारी ,आर्थिक सर्वेक्षण आदि द्वारा प्रकाशित अप्रकाशित आकड़ो का उपयोग किया गया।

तालिका संख्या 01: सिंचाई के लिए उपयोग की जाने वाली तकनीक

सिंचाई तकनीक	जिला		कुल
	बड़वानी	धार	
ड्रिप सिंचाई	78 (97.5%)	47 (58.75%)	125 (78.12%)
पानी मोटर	80 (100%)	76 (95%)	156 (97.5%)
पंपिंग सेट	2 (2.5%)	10 (12.5%)	12 (7.5%)
नाली से, क्यारी बनाकर	3 (3.75%)	1 (1.25%)	4 (2.5%)

सर्वेक्षण से प्राप्त स्त्रोत

तालिका संख्या 1 में कृषि सिंचाई के लिए उत्तरदाताओं द्वारा उपयोग की जाने वाली तकनीक को दर्शाया गया है। तालिका देखने से ज्ञात होता है कि बड़वानी और धार जिले में कृषि सिंचाई तकनीक के रूप में सर्वाधिक पानी की मोटर का उपयोग किया जाता है यह तकनीक लगभग 97.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा उपयोग में ली जाती है। ड्रिप सिंचाई तकनीक भी दोनों जिलों में लगभग 78.12 प्रतिशत उत्तरदातो द्वारा उपयोग में ली जाती है। अत: दोनों जिलों में ड्रिप सिंचाई भी काफी लोकप्रिय सिंचाई तकनीक है। उसी प्रकार 7.5 प्रतिशत उत्तरदाता पर्मि्पग सेट तथा 2.5 प्रतिशत उत्तरदाता नालीध्क्यारी बनाकर सिंचाई करते है

तालिका संख्या 02 : कृषि के लिए उपयोग में लिए जाने वाले उपकरण

सिंचाई उपकरण	जिला		कुल
	बड़वानी	धार	
ट्रैक्टर	80 (100%)	80 (100%)	160 (100%)
हार्वेस्टर	42 (52.5%)	35 (43.75%)	77 (48.13%)
वीड कटर	40 (50%)	39 (48.75%)	79 (49.37%)
ट्रांसप्लांटर	41 (51.25%)	38 (47.5%)	79 (49.37%)
थ्रेशर	45 (56.25%)	35 (43.75%)	80 (50%)
स्प्रेयर	34 (42.5%)	46 (57.5%)	80 (50%)

सर्वेक्षण से प्राप्त स्त्रोत

तालिका संख्या 02,बड़वानी और धार जिलों के उत्तरदाताओं द्वारा कृषि के लिए उपयोग में लिए जाने वाले विभिन्न उपकरणों के प्रतिशत को दर्शाया गया है। परिणाम तालिका के अनुसार, दोनों जिलों के सभी उत्तरदाताओं द्वारा अर्थात 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा कृषि के लिए ट्रेक्टर का उपयोग किया जाता है। 50 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा थ्रेशर एवं स्प्रेयर, 49.37 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा वीडकटर एवं ट्रांसप्लांटर तथा 48.13 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा हार्वेस्टर का उपयोग किया जाता है। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि लगभग आधे उत्तरदाताओं द्वारा कृषि के लिए इन सभी उपकरणों का उपयोग किया जाता है।

निष्कर्ष – उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है की बड़वानी और धार जिले में कृषि कार्य हेतु नवीन तकनीको का प्रभाव पड़ा जिससे लगभग आधे से अधिक उतरदाताओ द्वारा कृषि के लिए इन सभी उपकरणों का उपयोग किया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. रीतु तिवारी (2021) , भारतीय अर्थव्यवस्था , मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी , भोपाल पेज न. 106
2. अनुपम गोयल (2019-20) भारतीय अर्थव्यवस्था ,एस.बी.डी. पब्लिकेशन आगरा-मथुरा पेज न. 146
3. अर्चना यादव ,(2010), कृषि विकाश में तकनिकी परिवर्तन का प्रभाव पीएचडी थीसिस पेज न . 45

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मुंशी प्रेमचन्द के लघु उपन्यास, निर्मला, प्रतिज्ञा का अनुशीलन

डॉ. अर्चना बापना*

* सहा. प्राध्यापक, एडवास महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – लघु उपन्यास साहित्य की ऐसी विद्या है जो स्वरूप की दृष्टि से उपन्यास से छोटी होती है, परन्तु कथावस्तु की दृष्टि से अपने आप में पूर्ण होती है। जिसका प्रभाव वृहत् उपन्यासों के समान ही होता है। हिन्दी साहित्य जगत में भी लघु उपन्यासों से पृथक अस्तित्व के स्वीकार कर लिया गया है। लघु उपन्यास और वृहत उपन्यास में आकार गत अन्तर प्रमुख है। साहित्य में भी इसके पृथक अस्तित्व को स्वीकार किया गया है।

डॉ. घनष्याम मधुप के अनुसार–'लघु उपन्यास में व्यक्ति या समाज के किसी एक कोण का गहन एवं सूक्ष्म चित्रण किया जाता है। प्राय: लघु उपन्यास लेखक के जीवन अनुभवों के संवदेन जन्य चित्र होते हैं। दो तीन पात्रों को लघुकथा फलक के आधार पर अभिव्यक्ति की संयतता से चित्रण करना ही लघु उपन्यास को उपन्यास से पृथकत्व प्रदान करता हैं।'

उपन्यास के समान ही लघु उपन्यास में कथानक, पात्र, चरित्र–चित्रण, देशकाल, वातावरण, भाषा–शैली, उद्देश्य आदि होते है। जिस प्रकार उपन्यास में लेखक अपनी अभिव्यक्ति सशक्त रूप से करते हुए अपनी मान्यताओं और उद्देश्यों को पूर्ण करता है। वह अपनी कृति द्धारा बड़ी प्रखरता, स्पष्टता और साहसिकता से अपनी बात स्पष्ट करता है, उसी प्रकार जीवन मूल्यों की स्थापना और मान्यताओं को अभिव्यक्त करने में लघु उपन्यास भी श्रेष्ठ है, वे भी अपनी बात ज्यादा स्पष्टता और प्रखरता से करते हैं।

आज का मानव जीवन तनावपूर्ण हो गया है व विषम अन्तर्द्वन्द्वों से भरा हुआ है, उलझनपूर्ण तथा अवसाद से भरा हुआ है ऐसे में लेखक के लिए मानव जीवन के हर पहलू को पूर्ण समग्रता से प्रस्तुत करना अत्यन्त दुष्कर कार्य हो गया है। इसी दिशा में लघुउपन्यासकार ने जीवन के खण्ड चित्र को खण्डकाव्य की तरह अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करना आरम्भ किया हैं। आकारगत सीमितता होने के कारण लघु–उपन्यास आज श्रेष्ठ स्थान का अधिकारी हो गया है। इसका महत्व साहित्य के क्षेत्र में निर्विवाद है।

प्रेमचन्द ने गबन, गोदान जैसे उपन्यासों की सृष्टि कर साहित्य जगत में तहलका मचा दिया था। उनके दोनो उपन्यास ने ग्रामीण परिवेश को पूरी तरह स्पष्ट किया। उस समय की परिस्थिति, देषकाल, वातावरण को बड़े ही प्रभावोत्पादक रूप में प्रस्तुत किया जिससे इस कृति ने साहित्य जगत में अपना सर्वश्रेष्ठ स्थान बनाया परन्तु वहीं पर उन्होंने निर्मला जैसे लघु उपन्यास की भी सृष्टि की, जिसका स्थान भी साहित्य जगत में गबन, गोदान की दृष्टि से कहीं कम नहीं है। लेखक ने गबन और गोदान में जीवन की पूर्णता को स्पष्ट किया वहीं 'निर्मला' प्रतिज्ञा जैसे लघु उपन्यासों में उन्होंने जीवन के एक खण्ड चित्र को प्रस्तुत किया जिससे यह उपन्यास लघु होते हुए भी प्रभाविता में कोई कमतर नहीं है।

प्रेमचन्द्र कृत निर्मला – प्रेमचन्द्र का सर्वप्रथम लघु उपन्यास सन् 1928 में प्रकाशित हुआ। यह केवल उपन्यास का प्रारम्भ ही नहीं है, अपितु प्रेमचंद के उपन्यासों में बदलाव को भी उपस्थित करता है। इसमें लघु उपन्यास का पूर्ण स्वरूप नहीं परन्तु उसका संकेत अवश्य है।

उपन्यास क्षेत्र में प्रेमचन्द्र का आगमन हुआ तो क्रांति हो गई। विषय और शिल्प सभी में परिवर्तन नजर आने लगे। युग की समस्याएँ का प्रस्फुटन उनकी औपनयासिक कृतियों में दिखाई देने लगा। 'निर्मला' का कथानक सामाजिक समस्या पर आधारित है। इसमें 'निर्मला' का नाम की एक किशोर कन्या और उसके वृद्ध पति के फलस्वरूप उत्पन्न हुई जटिलताओं और विडम्बनाओं का चित्रण है। दहेज की व्यवस्था न हो पाने की वजह से निर्मला के पिता निर्मला का ब्याह अपने प्रथम निश्चयानुसार डॉ. सिन्हा से न कर सके जिससे उन्हें विधुर वृद्ध वकील तोताराम की शरण लेनी पड़ी जो तीन पुत्रों के पिता और शरीर से नितान्त असमर्थ हो चुके थे। वकील तोता राम के तीन पुत्र मंसाराम, जियाराम, सियाराम है। तोताराम का शंकालु हृदय निर्मला के सतीत्व पर भी सन्देह करने लगा। अपनी कामुकता के प्रवाह में वे जो मानसिक पाप करने लग जाते हैं। उसका परिणाम यह हुआ कि निर्मला का सम्पूर्ण जीवन ही विशाक्त हो गया। पुत्र मंसाराम जिस पर पिता को यह सन्देह हो गया था कि उसका अपनी माता निर्मला के साथ अनुचित शारीरिक सम्बन्ध है वे उसको घर से बाहर निकाल देते है। मंसाराम की कारूणिक मृत्यु हो जाती है। निर्मला का मातृ – स्नेह उमड़ पड़ता है परन्तु वह लाचार है। निर्मला और मंसाराम एक दूसरों को प्राणों से भी अधिक प्यारे थे पर दोनों का पारस्परिक प्रेम मांसल नहीं बल्कि सात्विक था। अभागिनी निर्मला ने अपने मातृत्व प्रेम को मंसाराम में केन्द्रित कर लिया तथा मंसाराम ने भी माँ के वात्सल्य को निर्मला में मूर्तिमान पाता था। शंकालु प्रवृत्ति की वजह से अन्त में दोनों लड़के भी हाथ से निकल जाते हैं। एक विषपान कर लेता है, दूसरा साधु के साथ निकल जाता है। फिर दोनों लड़कों की खोज में तोताराम भी घर से निकल जाते है और एक छोटी सी बच्ची को छोड़कर निर्मला की भी मृत्यु हो जाती है। निर्मला की लाश उठाने के समय लौटे, डॉ. सिन्हा जो निर्मला के होने वाले पहले पति थे, का निर्मला के निकट आने के कारण पत्नी की फटकार को सह न सकने के कारण वही पर वे आत्मघात कर लेते है।

प्रस्तुत उपन्यास में अनेक सामाजिक घटनाएँ हैं जिनके मूल में अनमेल विवाह तथा देहज आदि जैसी कुप्रथाएँ ही है जिनके कारण न जाने कितने

भारतीय, उसके बच्चे घुल–धुलकर मृत्यु के मुँह में समाहित हो जाते हैं।

'निर्मला' भारतीय समाज की एक दर्दनाक कारूणिक कहानी है, जिसमें अर्थ से अधिक महत्व सामाजिक कुसंस्कारों को दिया गया है। कथानक संक्षिप्त है। बहुत संगठित है और अन्य उपन्यासों की अपेक्षा तीव्रता से घटित होता है। निर्मला उपन्यास में पात्रों की संख्या कम है। इसमें निर्मला तोताराम, मंसाराम, उदयभानु कल्याणी, कृष्णा आदि ही इस उपन्यास के प्रमुख और गौण पात्र है। निर्मला इसकी नायिका है इसी को लेकर कथानक का निर्माण हुआ है। बाकि अन्य पात्र उसके चरित्र को उभारते है।

निर्मला समाज में नारियों के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है जो दहेज की कुप्रथा, अनमेल विवाह और असंगतियों के कारण जीवन भर असंतोष, मानसिक अन्तर्द्वन्द और विषम परिस्थितियों से जुझता रहता है और उसी में उसकी मृत्यु हो जाती है। उसकी मृत्यु क्रांति का संदेश देती है। **उपन्यास में परिस्थितियों पर व्यंग्य है। प्रेमचन्द ने अन्त में निर्मला के मुख से कहलाया**

'इसका विवाह सुपात्र के हाथ से करना' इस प्रकार अन्त समस्या का कोई समाधान प्रस्तुत नहीं करता। अत: पूरे उपन्यास में कथानक का विन्यास चरित्रों के घात–प्रतिघात से हुआ है। मनोविज्ञान की प्रवृत्तियों का सहारा अधिकतर लघुउपन्यासों में लिया गया है। निर्मला भी इसका अपवाद नहीं है। प्रेमचन्द का हर पात्र एक जीवंतता का बोध करवाते हैं। पात्र काल्पनिक नहीं बल्कि ऐसा प्रतीत होता है कि पात्र अपने आसपास के है। अनमेल विवाह की शिकार निर्मला के अतृप्त मन का चित्रण प्रेमचंद ने किया है – वह लेटे–लेटे देखती है– जियाराम उसके आभूषण चुराकर भाग रहा है। वह चाहती तो शोर मचा सकती थी, पर नहीं मचाती क्योंकि वह विमाता थी। वह कहती है 'मुझमें सारी बुराईयां ही बुराईयां है, तुम्हारा कोई कसूर नही। विमाता का नाम ही बुरा होता है। अपनी माँ विष भी खिलाये तो अमृत है, मैं अमृत भी पिलाऊँ तो विष हो जाएगा। तुम लोगों के कारण मैं मिट्टी में मिल गई।'

निर्मला के रूप में भारतीय नारी मर्यादा का जो चित्र प्रेमचन्द्र जी ने प्रस्तुत किया है उसकी मसोस एवं मूक वेदना से सहृदय पाठक करूणाद्र हुए बिना नहीं रह सकता।

इस तरह कथानक का गठन, घटनाओं का शीघ्रता से घटित होना, कम पात्र होना, संवादों की संक्षिप्तता, वातावरण का कम चित्रण और उद्देश्य का कथानक में घुला होना ऐसे तत्व हैं जो इसे लघु उपन्यास कहलाने में सहायक हैं।

डॉ. गणेशन के अनुसार – 'यद्यपि सेवासदन तथा प्रेमाश्रम की तुलना में इसका विषय बहुत सीमित है, तो भी समस्या के गहरे अध्ययन और मनोभावों के सूक्ष्मविश्लेषण की दृष्टि से यह प्रेमचन्द्र का सबसे सुन्दर उपन्यास है। कई सांयोगिक घटनाओं के तथा अन्य असंगतियों के होने पर भी निर्मला के पात्रों का क्रमिक विकास विशेषकर उनके मनोभावों का विकास अत्यन्त स्वाभाविक बना है। अनावश्यक तथा विशाल वातावरण के अभाव के कारण श्निर्मलाश् के गठन में जो दृढ़ता आयी है। वह प्रेमचन्द के किसी अन्य उपन्यास में नहीं है।'

इस उपन्यास को हिन्दी का सर्वप्रथम मनोवैज्ञानिक उपन्यास होने का गौरव भी प्राप्त है।

प्रेमचन्द कृत प्रतिज्ञा – 'प्रतिज्ञा' उपन्यास प्रेमचन्द का दूसरा लघु उपन्यास है। यह उपन्यास भी सामाजिक समस्या को आधार बनाकर लिखा गया है। कथावस्तु की दृष्टि से इस उपन्यास में कोई विशेष नवीनता नहीं है। कथा वस्तु का मूलकेन्द्र बिन्दु है विवाह–इसमें प्रेमचन्द ने यदि एक ओर पूर्णा के माध्यम से नारी वैधव्य की तरफ संकेत किया है और विवशता पूर्ण जीवन को उभारा है तो दूसरी और सुमित्रा के माध्यम से नारी के विद्रोही रूप को भी प्रस्तुत किया है जो पुरुष अत्याचारों का निरन्तर विरोध करती रहती है।

अमृतलाल उपन्यास के प्रारम्भ से ही यह प्रतिज्ञा करते दिखाई देते हैं कि वह विधुर हाने के कारण किसी विधवा से विवाह करना चाहते हैं। यही सूत्र इस उपन्यास के मूल में है। अमृतलाल वनिता आश्रम की स्थापना करते है और यह कहते हैं कि 'मैं विवाह करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर चुका हूँ परन्तु विवाह मैंने किसी विधवा के साथ नहीं किया बल्कि आश्रम के साथ ही किया है।'

अमृतराय के अलावा कमलाप्रसाद, दाननाथ, सुमित्रा, पूर्णा और प्रेमा आदि पात्रों द्वारा कथा को बुना गया है। कमलाप्रसाद और सुमित्रा के वैवाहिक जीवन से सम्बन्धित इस उपन्यास की कथा का दूसरा तत्व विकसित होता है। कमलाप्रसाद से ही पूर्णा की कथा भी जुड़ी हुई है। घटना की स्थिति इस हद तक पहुँच जाती है कि पूर्णा आत्महत्या करने को विवश हो जाती है। अन्तत: समझा बुझाकर अमृतराय पूर्णा को वनिता आश्रम में भेज देता है। वहीं रहकर वह कृष्ण भक्ति में अपना जीवन लगा देती है। स्वयं तो बच जाती है और एक पति पत्नी के जीवन को नष्ट होने से बचा लेती है। इधर – प्रेमा के पिता प्रेमा का विवाह दाननाथ से कर देते हैं। दाननाथ पहले अमृतराय के मित्र रहते हैं। परन्तु बाद में धार्मिक मतभेद के कारण उनमें वैमनस्य हो जाता है। कमलाप्रसाद की नीचता के कारण दाननाथ को समाज में लज्जित होना पड़ता है। इसलिए अपने रास्ते को बदलकर वे अमृतराय से पुन: मित्रता बढ़ा लेते हैं। इन्हीं घटनाओं के साथ आधुनिक सामाजिक व्यवस्था में स्त्री के अधिकार और उसके स्थान की चर्चा भी वे करते है। 'प्रतिज्ञा' उपन्यास की कथावस्तु में ज्यादा विस्तार नहीं है। पात्र संख्या भी ज्यादा नहीं है। पर जितने भी पात्र है वे मध्यमवर्गीय समाज के विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसमें मुख्यत: दाम्पत्य जीवन, विधवा विवाह, स्वच्छन्द प्रेम, स्त्री शिक्षा आदि विषयों पर लेखक ने विचार किया है। इसके हर पात्र का सम्बन्ध किसी न किसी समस्या से है। पूर्णा वैधव्य को झेलती है। लेकिन। कमलाप्रसाद की प्रवृत्ति उसे चचंल बना देती है। सुमित्रा विद्रोही नारी है। अमृतराय दाननाथ अन्य पात्र हैं जो उपन्यास की मूल समस्या के आदर्श और यथार्थ पक्ष को उभारते हैं। पात्र संख्या कम है, कथावस्तु में भी ज्यादा विस्तार नहीं है, उद्देश्य जरूर इकहरा नहीं है अत: यह उपन्यास की अपेक्षा लघु उपन्यास की परम्परा के विकास को सूचित करता है।

1970 से 1980 के बीच के उपन्यासों में निम्नवर्गीय व मध्यवर्गीय लोगो की अर्थिक स्थिति परम्परागत रूढिवादिता पारिवारिक स्थिति का चित्रण है।

अत: शिल्प की दृष्टि से जितने प्रयोग उपन्यास साहित्य में हुए उससे अधिक ओर ज्यादातर प्रयोंग लघु उपन्यास विधा में हुए।

वर्तमान युग तक आते–आते उपन्यास साहित्य ने शिल्प कला के कई सौपान तय किए है और आज हमें शिल्प की दृष्टि से अत्यन्त उत्कृष्ट रचनाएँ हिन्दी उपन्यास साहित्य में देखने को मिलती है, यदि यह कहा जाय कि शिल्पगत कलात्मक स्वरूप का विकास उपन्यास की अपेक्षा लघु उपन्यास में अधिक हुआ है तो अनुचित न होगा।

वर्तमान समय में उपन्यास बर्हिजगत की वस्तु ही नहीं अन्तर्जगत की वस्तु है। उपन्यास का मुख्य केन्द्र उसकी कथावस्तु है, जिससे उपन्यास का

ताना–बाना बुना जाता है, परन्तु कथावस्तु के साथ–साथ अन्य तत्वों को भी अपने में समाहित किया जाता है और अलग–अलग तत्व के अस्तित्व की अनुभूति भी पूरी तरह से होती है। वृहत उपन्यासों की तरह निर्मला, प्रतिज्ञा जैसे लघुउपन्यासों में भी हमें अन्य तत्वों की अलग–अलग अनुभूति बराबर होती है।

अत: निर्मला, प्रतिज्ञा जैसे लघु उपन्यास की सृष्टि मुंशी प्रेमचन्द ने की जिसका महत्व उनके वृहत उपन्यासों से कुछ कम नहीं। शिल्प व कथानक सभी दृष्टियों से उनके लघु उपन्यास साहित्य की महत्वपूर्ण विधा बन गयें।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. डॉ. घनश्याम मधुप, हिन्दी के लघु उपन्यास पृ.60
2. 'निर्मला' प्रेमचन्द का लघु उपन्यास है शिल्प दृष्टि से इसमें उन उपन्यासों की अपेक्षा संगठनात्मकता मिलती हैं। डॉ. प्रताप नारायण टण्डन हिन्दी उपन्यास उद्‌भव और विकास पृ. 116
3. प्रेमचन्द – निर्मला पृ. 175
4. डॉ. गणेशन – हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन पू. 67
5. प्रेमचन्द – प्रतिज्ञा पृ. 149

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Study of Effect of Temperature, Light intensity and Irradiation time during Decolouration Process of Methyl Green Dye

Dr. David Swami*

***Department of Chemistry PM College of Excellence SBN Govt. P.G. College, Barwani (M.P.) INDIA**

Abstract : Methyl green is the oldest known synthetic groups. Most basic dyes of this series are beautiful crystalline Compounds with a reflex the colour of which is often complementary to the colour in solution. Methyl green a triarylmethane dye providing toxic effluents can be highly degraded using TiO_2 catalyst. Photo catalytic degradation of methyl green dye have been studied with the help of variety of parameters which are effect of temperature, light intensity and irradiation time. The influence of temperature has been studied in the range from $30^{O}C$ to $55^{O}C$. The rate constant increased with the increase in the light intensity.
Keywords – Methyl green, Toxic, Catalyst, Temperature, Light Intensity.

Introduction - It is well Known that dyes and their degradation by Products originated through oxidation, hydrolysis reactions are highly carcinogenic (1) These substances are highly toxic, Stable to natural decomposition. Decomposition of dye effluents has therefore required increasing attention (2) Earlier studies have shown that a wide range of organic substrates can be completely photo mineralized in the presence of TiO_2 (3) Aqueous degradation of the commonly used textile dye methyl green has already been studied using heterogeneous catalysts such as TiO_2 with artificial visible light source. The aim of this paper is to study the effect of temperature, light intensity and irradiation time during Decolouration process of Methyl green dye.

Experimental: Methyl green was obtained from Loba Chemie. Photo catalyst TiO_2 was obtained from the S.D. Fine Company. All Solutions were prepared in doubly distilled water. Photo catalytic experiments were carried out with 50 ml of dye solution (3.8x10-5 mol dm-3) using 300mg of TiO_2 photo catalytic under exposure to visible irradiation in specially designed double-walled slurry type batch reactor vessel made up of Pyrex glass (7.5 cm height, 6 cm diameter) surrounded by thermostatic water circulation arrangement to keep the temperature in the range of 30±0.3.c. Irradiation was carried out using 500 w halogen lamp surrounded by aluminum reflector to avoid irradiation loss. During photo catalytic experiments after stirring for 10 min slurry composed of dye solution and catalyst was placed in dark for ½ h in order to establish equilibrium between adsorption and desorption phenomenon of dye molecule on photo catalyst surface. Then slurry containing aqueous dye solution and TiO_2 was stirred magnetically to ensure complete suspension of catalyst particle while exposing to visible light. At specific time intervals aliquot (3ml) was withdrawn and centrifuges for 2 min at 3500 rpm to remove TiO_2 particle from aliquot to assess extent of decolourisation photo metrically. Changes in absorption spectra were recorded at 480 nm on double beam UV-Vis, spectrophotometer (Systronic Model No. 166) Intensity of visible radiation was measured by a digital luxmeter (Lutron LX 101). pH of solution was measured using a digital pH meter.

Results and Discussion:

Effect of temperature: One of the advantages of photoreaction is that it is not affected or slightly affected by temperature change (4, 5). The influence of temperature has been studied in the range from $30^{0}C$ to $55^{0}C$. The results are shown in Table 1 and Fig. 1. Increase in temperature led to decrease the rate of degradation. This gradual decrease in the reaction rate values could be attributed to the following reasons: the adsorption rate decreased with increasing temperature because the adsorption is a heat releasing process, increase in reaction temperature tend to increase electron-hole recombination and with increase in temperature the solubility of oxygen in water decreased (6).

Table 1: Effect of temperature: [MG] = 2.5×10^{-5} mol dm^{-3}, pH = 10.0
TiO_2 = 100 mg/ 10 mL, Light intensity = 20×10^{3} lux, Temperature = 30 ± 0.3 ºC.

Temperature (^{0}C)	k × 10^{-4} s^{-1}	$t_{1/2}$ × 10^3 s
30	2.45	2.82
35	2.35	2.94
40	2.12	3.26
45	2.00	3.46
50	1.80	3.85
55	1.75	3.96

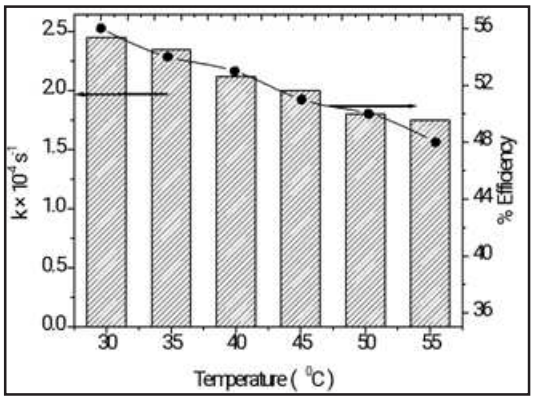

Fig. 1: Effect of temperature

Effect of light intensity and irradiation time:

Photocatalytic reaction rate depends largely on the radiation absorption of the photocatalyst. Research studies revealed increase in the degradation rate, with increase in light intensity during photocatalytic degradation. The influence of light intensity on the rate of degradation has been examined at constant dye concentration (2.5 × 10^{-5} mol dm^{-3}) and catalyst loading (100 mg/ 100 mL). Rate constant increased from 1.80 × 10^{-4} s^{-1} to 5.83 × 10^{-4} s^{-1} on increase light intensity from 10 × 10^3 lux to 35 × 10^3 lux.

Table 2: Effect of light intensity: [MG] = 2.5 × 10^{-5} mol dm^{-3}, pH = 10.0

TiO_2 = 100 mg/ 100 mL, Light intensity = 20 × 10^3 lux, Temperature = 30 ± 0.3 ^{o}C.

Light intensity×10^3 lux	k × $10^{-4}$$s^{-1}$	$t_{1/2}$× 10^3 s
10 × 10^3	1.80	3.85
15 × 10^3	2.03	3.41
20 × 10^3	3.37	2.05
25 × 10^3	4.41	1.57
30 × 10^3	4.49	1.54
35 × 10^3	5.83	1.18

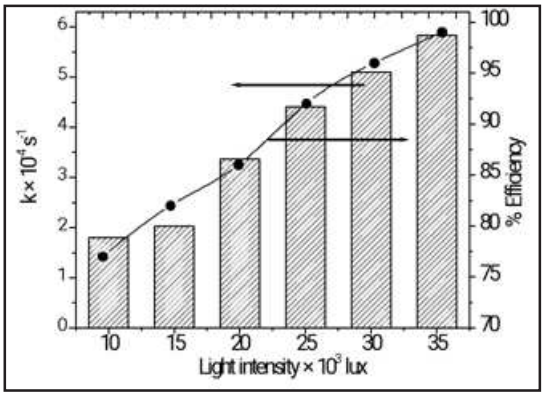

Fig. 2: Effect of light intensity

Conclusion : The influence of temperature has been studied in the range from 30^{O}C to 55^{O}C. The rate constant was decreased with increase in temperature photo catalytic reaction rate depends largely on the radiation absorption of the photo catalyst. Rate constant increased with increase in light intensity.

Acknowledgment: Author acknowledgement the support and laboratory facilities provided by Chemistry Department PMCOE S.B.N. Govt. P.G. College, Barwani (M.P.) My sincere thanks to the technical staff of UGC-DAE, CSR, Indore for their kind co-operation and help offered during the work period.

References:-

1. Nam S., Tratnyek P.G. 2000 Reduction of azo dyes with zero valent iron. Water Res. 1837 -1845.
2. Brown M.A., Vito SC. Crit Rev. Environ. Sci. Technol 1993 – 249 – 32.
3. Blake DM Bibliography of work on the photo catalytic removal of hazardous compounds from Water and air USA : National Renewal Energy Laboratory 2001, – 253.
4. Herrara F., Kiwi J., Lopez A., and Nadtochenko V., Environ. Sci. Technol., 1999, 3145.
5. Amiri A. S., Bolton J. R. and Caster S. R., J. Adv. Oxid. Technol., 1996, 18.
6. Jiang Y., Sun Y., Liu H., Zhu F. and Yin H., Dyes and Pigments, 2008, 77.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Role of Judiciary in the Elimination of Juvenile Delinquency in the Present Social Justice System

Vikram Singh Chandel*

***Research Scholar, SOS Jiwaji University, Gwalior (M.P.) INDIA**

Abstract : "A child may be a person who will carry on what you have got started," Abraham Lincoln said over a century ago. He will sit where you are and, after you are gone, he will decide what he thinks is important. You can make any plans you want, but he will determine how they are carried out. He will take control of your churches, schools, colleges, and businesses. He holds the futures of humanity in his hands.Children's crimes are illegal actions that go against social standards. Child misconduct refers to criminal acts committed by children, with behavioral issues being a major cause of youth crimes in India. Child crime is a global issue, and many laws have been made to address it. These children may also engage in other criminal acts, including domestic abuse and disrespect towards women. The juvenile justice court ensures children have their rights, but may punish them in serious cases. The rate of crime among youths under 16 has increased in recent years, possibly due to factors like their upbringing, financial issues, a lack of education, or poor parental care. A concerning trend is the use of very young children, especially those under five to seven years old, as tools for committing crimes, as they are easily manipulated.
Keywords: Juvenile Delinquency, Crimes, Juvenile Justice, Judiciary, IJJO, BNS, BNSS.

Introduction - The Juvenile Justice Act, 2015 was passed to address the increasing crime rate among children under 18. It mandates the establishment of a Juvenile Justice Board and Child Welfare Committee in each locality, focusing on adolescent recovery and care through various adjustment homes. The Act defines a child as someone under 18 years old and classifies them as either in conflict with the law or in need of care and protection. It also includes a provision to treat juveniles between 16 and 18 as adults in cases of serious offenses. The Act also addresses the issue of 39% of Child Care Teachers not enrolling in 2020, highlighting the need for revisions. Key amendments include incorporating genuine offenses with a sentence of more than 7 years without minimum and changing sentences with a sentence of 3 to 7 years from being cognizable to non-cognizable. The Act also amends some provisions related to selection and Child Welfare Committees.

Juvenile courts provide a unique and effective method to address adolescent wrongdoers, providing fundamental security to children who cannot legally protect themselves. The Adolescent Equity Board is a Juvenile Court established under sec- 4 of the Juvenile Justice Act (2015), which mandates the establishment of at least one Juvenile Justice Board in each district, consisting of a Principal Magistrate and two social workers, at least one of whom should be a woman. However, the order passed by the Board was deemed void ab initio in State of Himachal Pradesh v. Happy (2019).

The Board is responsible for handling cases involving children in conflict with the law, which can be appealed to the High Court or Session Court. It can inquire into heinous offenses and conduct preliminary assessments within three months. The Board must inform parents and ensure child rights are protected during the inquiry and rehabilitation process. They can provide a translator if needed, transfer children to committees, and file First Information Reports. The Board also conducts inspections of residential facilities and recommends improvements in service quality.

Juvenile delinquency, involving illegal activities, is on the rise in India due to an increase in crime rates. The Nirbhaya Case of 2012 highlights the heinous offense of rape committed by a 17-year-old girl in a bus, which led to authorities changing the law to punish juvenile offenders, despite their right to think about their actions.

Juvenile delinquency in India is attributed to harsh disciplinary measures by parents and teachers, bad peer company, Attention Deficit Hyperactivity Disorder (ADHD), and other mental disorders. Teenagers often fall prey to harmful new behaviors, leading to illegal acts. Social factors like broken homes, poverty, and beggary also contribute to delinquency in children in India.

The Indian legal system has evolved over time to address juvenile delinquency, with the first legislation being the Apprentices Act of 1850. The Reformatory Schools Act

of 1897 aimed to send children to reformatory schools, while the first Juvenile Justice Act of 1987 aimed to protect, rehabilitation, and reform juvenile delinquents. The Juvenile Justice Act of 2000 and the Juvenile Justice Act of 2015 further emphasized the importance of juvenile justice. The Indian judiciary plays a crucial role in addressing child delinquency, with the Juvenile Justice Board and courts making decisions that affect children. Governments have established Juvenile Courts, Boards, and Child Welfare Committees to regulate minor delinquents. However, the number of crimes committed by children aged 15-16 has increased, largely due to factors such as early-life experiences, dominant masculinity, upbringing, economic chaos, and lack of education.

Difference between child and juvenile: A minor is a person under the age of eighteen who does not have full legal responsibility. A kid accused of a crime goes to a Child Care Centre, while a juvenile is between sixteen and eighteen. Both terms relate to young people, but have different legal meanings.

Juvenile justice and constitution of India: The Indian Constitution is known as the country's fundamental law, outlining the rights and responsibilities of citizens. It also includes rules for the effective functioning of the government. Part III describes the Fundamental Rights of citizens, while Part IV details the Directive Principles of State Policies (DPSP), offering guidelines for creating government policies. Key rights for children's welfare include: the right to free education for children aged 6 to 14 (Article 21A), protection from hazardous work for those under fourteen (Article 24), shielding from abuse by adults (Article 39(e)), safeguarding against human trafficking (Article 39), and ensuring proper nutrition and living standards (Article 47). Additionally, Article 15(3) gives the state special powers to create laws for the upliftment of children and women.

International concerns for juveniles: The Convention on the Rights of the Child, adopted by the UNGA in 1989, prioritizes children's best interests. It emphasizes several rights:

1. Right of survival, ensuring children have a proper standard of living, including healthy nutrition.
2. Right to protection from inhumane practices, trafficking, and armed conflicts.
3. Right to participation, allowing freedom of speech, expression, religion, and opinion.
4. Right to development, covering educational, physical, mental, cultural, and recreational growth.

Article 34 safeguards children from sexual exploitation, while Article 37 states that imprisonment should be a last resort and for the shortest time, promoting children's liberty and focus on their reformation.

The law in the U. K. states that children should not be prosecuted in criminal courts. Delinquency can end with proper reform in remand homes, and only Juvenile Courts should handle these cases. The Children and Young Offenders Act of 1933 and the Criminal Justice Act of 1948 support this. The 1908 Children Act allows for a separate Judicial Board in Juvenile Courts.

The system in the U. S. is simpler. First, the Police Officer will either keep the child in custody or release him. Then, he must inform and hand him over to the Juvenile Court. After the trial, children go to correction homes and are tried as adults only if they are closer to adulthood or commit crimes repeatedly that pose a danger to society.

The International Juvenile Justice Observatory (IJJO): It is an international organization that promotes policies and laws for the development and protection of juveniles worldwide. It also provides information about juveniles in conflict with the law.

Doctrine of "Doli Incapax": The concept of 'Doli Incapax' is a key principle in Criminal Law regarding a child's ability to commit a crime. In Indian law, this means that no child under seven can be tried for a crime. 'Doli Incapax' signifies a person's inability to commit a crime due to their age. As outlined in the UN Convention on the Rights of the Child, countries must set a minimum age for children's exemption from criminal responsibility due to their lack of understanding of their actions. For children aged 8 to 14, prosecutors must prove the crime. The aims of this doctrine include protecting children from harsh punishments and using reformative approaches, acknowledging that children under seven lack the mental capacity to grasp the consequences of their actions.

Penal provisions and related judgments: Sections 82 and 83 of the Indian Penal Code, 1860 (now u/s 20 and 21of BNS, 2023), discuss how juveniles are protected from prosecution. In Kakoo v. State of Himachal Pradesh, the Supreme Court reduced the sentence of a 13-year-old boy for raping a 2-year-old, emphasizing reformative measures for juveniles. However, in Heeralal v. State of Bihar, a boy was judged mature enough for his actions after threatening and stabbing someone. The Supreme Court denied the appeal.

The policy plays a vital role: In the Juvenile Justice System, police officers act as gatekeepers, making initial decisions on how cases are handled. They have significant discretion, leading to only a few cases being pursued out of many incidents. When police receive information, juveniles must be placed in Special Homes instead of jails, with a Child Welfare Officer handling the situation and reporting to the Juvenile Justice Board. Police may grant bail based on initial facts. Interactions between police and youths often involve fear and distrust, while abrasive police behavior can worsen the situation.

Analysis of the issue: Analysis shows that poverty, broken homes, family tensions, emotional abuse, rural-urban migration, declining social values, parental abuse, a poor education system, and media influence are key factors contributing to child neglect and delinquency. Neglect by parents and society harms children's physical, mental, and

overall development.

In India, many of these factors are prevalent, and addressing them can help society. Children's well-being is essential for the country's future, supported by international agreements focused on juvenile justice and children's rights. This article discusses the growth of India's juvenile justice system, its constitutional framework, the Juvenile Justice Act of 2015, and the current state of delinquency, which has shown a concerning increase.

Role of the judiciary: The judiciary in India is crucial for protecting child rights and has made significant rulings. In Sheela Barse v Union of India, the Supreme Court directed the state to set up observation homes for minors accused of crimes during legal processes. The court also emphasized the need for juvenile courts and officials to ensure children's safety in these homes. In Vishal Jeet v Union of India, it ordered state governments to fight child prostitution and support juvenile victims. In M. C. Mehta v State of Tamil Nadu, the court ruled on child labor abolition and provided guidelines for education and health. Lastly, in Sakshi v Union of India, it instructed the government to research ways to prevent child abuse.

Jurisdiction of the juvenile court: The High Court ruled in Om Prakash vs. State that a juvenile court can handle a juvenile case even if it cannot confirm the accused's age. The High Court verified the person's age, determining he is not a child and sentencing him as an adult.

Section 20 of the Juvenile Justice Act outlines rules for children's cases in juvenile courts. The Minor Act addresses pending cases for minors in violation of the law, stating that "any court" means all criminal courts and that juvenile cases are not heard in criminal courts.

Bail of the child: Under the Juvenile Court's reasonable points, children are entitled to bail as defined by the Juvenile Justice Act. The Juvenile Board can deny bail for specific reasons. The NDPS Act addresses certain crimes that are considered a threat to society, and special laws have been created to manage these situations and the bail process.

In the case of Gopi Ram vs. State of Haryana, the court ruled that if it believes the accused may be innocent, it has the authority to grant bail. The court also stated that if the accused shows remorse and believes he will not commit a similar crime again, he should be released. According to both Section 437 of the Cr. P. C. (now u/s 480 of BNSS, 2023) and Section 37 of the NDPS Act, the burden of proof lies with the prosecution to prove guilt, while the accused must show grounds for proving innocence. The NDPS Act has strict bail conditions due to the serious nature of the offences it covers.

Section 439 of the Cr. P. C. (now u/s 483 of BNSS, 2023) also deals with discretionary powers regarding bail and is affected by Section 37 of the NDPS Act, which generally makes bail denial the norm. There are no provisions for anticipatory bail under the NDPS Act, but some special courts can hear applications for anticipatory bail under Section 438 of the Cr. P. C. (now u/s 482 of BNSS, 2023) Anticipatory bail, also known as pre-arrest bail, relates to Section 20 of the TADA Act and Section 37 of the NDPS Act. If a court is liberal in its approach, it should consider granting bail if it believes the accused is not guilty. Certain conditions must be met before granting bail to someone accused under the NDPS Act: the court must have reasonable grounds to believe the accused is not guilty and is only being held due to the actions of others, and it must consider the likelihood of the accused committing a crime while released on bail. The historic case Jitendra Singh vs. State of U. P states that reasonable grounds are required for bail acceptance, and bail may be denied if these grounds are lacking.

The Juvenile Justice (Care and Protection of Children) Act, 2000, aligns with the United Nations Convention on the Rights of the Child, raising the minimum age for boys and girls to 18 years. It categorizes children into "children in need of care and protection" and "children in confrontation with the law." Each group receives different treatment regarding care, legal proceedings, and case outcomes. The Child Welfare Committee manages children needing care, while the Juvenile Justice Board handles those in conflict with the law. The Act establishes Observation Homes, Special Homes, and Comprehensive Children's Homes for different categories of children, and promotes community service, counseling, and rehabilitation options like adoption and sponsorship.

Under the Act, police have specialized roles, with every station having a Special Juvenile Police Unit (SJPU), and a Child Welfare Officer supports this unit. The Act also introduces social audits and ensures that voluntary organizations help bring children before the Child Welfare Committee. A juvenile cannot be detained in police custody or jail, and efforts must be made for release on bail or probation. Inquiries must be completed within four months unless extended and state governments are responsible for the Act's implementation.

Juvenile Justice (Care and Protection of Children) Act in 2015: The Juvenile Justice (Care and Protection of Children) Act enacted in 2015 brings a new approach to handling child offenders in the country. Its main goal is to focus on rehabilitating and reintegrating child offenders into society. The Act acknowledges the unique needs and vulnerabilities of young individuals involved in crimes and categorize them based on age, distinguishing between "children in conflict with the law" and "children in need of care and protection." It encourages engaging delinquent children in alternative programs for rehabilitation rather than traditional punishments, promoting their welfare and successful social reintegration. The Act also emphasizes restorative methods over punitive ones to ensure the well-being of young offenders.

Problems in administration of justice: There are several problems in managing justice for child delinquency. First,

many states, following the Juvenile Justice Act of 2015, have not set up juvenile courts in all districts. This leads to non-experts making decisions about children. While this may be legal, it may not align with the law's intention. Juvenile courts should include social workers, and judges must understand child psychology and welfare. Secondly, the system tends to focus on punishment instead of reform, which is not in the best interest of the child.

Preventing child delinquency: Early intervention is seen as the best way to prevent juvenile crime. It requires individual, social, and organizational actions to stop teens from breaking the law. Some methods focus on punishment to deter offenders. Economic programs and community involvement can also help prevent youth delinquency.

Recommendations: The Juvenile Justice Act of 2015 made important improvements in the treatment of juveniles in the justice system. It established a clear division between two categories of juveniles, set up a Juvenile Justice Board, and allowed for the trial of juveniles aged 16 to 18 for serious crimes. However, there are concerns.The age from 16 to 18 is a time of vulnerability due to hormonal and mental changes. Trying these juveniles as adults can have lasting negative effects on their minds. Critics argue this approach conflicts with Article 14 of the Indian Constitution, which promotes equality before the law, and the UN Convention on Child Rights.

To prevent issues in the future, the government should provide children with a basic living standard and focus on their education and recreation. There should be training programs focused on child psychology, and social workers should be involved during investigations. Police should handle juveniles carefully, and staff at shelter homes must be well-trained. Public awareness is also crucial for understanding and supporting these children.

Conclusion: Children are the future of the world, and it is important to have laws that prevent juvenile delinquency for a better society. Early intervention is crucial, especially for children from difficult backgrounds, and NGOs should help improve the lives of these children.

Youth crime rates in India are rising, which is a serious issue. The government has made laws to lower juvenile crime, but these laws do not effectively deter such behavior, leading to poor results. Juvenile justice focuses on reform rather than punishment, and the 2015 Act is a key guideline. The juvenile justice system aims to address misbehavior and promote reform as an alternative to punishment. If children receive the right support and education, they can become responsible citizens.

It is essential to reduce societal issues by teaching children ethical and spiritual values, as well as understanding child development. Parents should pay attention to their children's mental health to guide them properly. While the judiciary provides some guidance on child care, support should happen in local communities. Despite laws against delinquency, the issue remains, so focusing on children's needs is vital for their growth. The juvenile justice system should be backed by a thorough action plan to aid all neglected children, requiring cooperation from individuals and the community.

References:-

Books:-

1. Batra, V. (2016). Juvenile Justice: A Comprehensive Study. LexisNexis.
2. Mathur, N. N. (2020). Law Relating to Juvenile Justice in India. Universal Law Publishing.
3. Singh, K. (2017). Juvenile Justice System in India. Central Law Agency.
4. Das, B. (2019). Juvenile Delinquency and Justice: A Socio-Legal Study. Eastern Book Company.
5. Singh, M. K. (2018). Juvenile Justice: Law and Practice. LexisNexis

Research Articles:-

1. https://ijcrt.org/papers/IJCRT2402082.pdf
2. Sarma, A., & Deb, S. (2017). "Role of Juvenile Justice Boards in India: An Analysis." Indian Journal of Law and Public Policy, 3(2), 23-39.
3. Patil, P., & Choudhary, M. (2020). "Rehabilitation of Juvenile Offenders in India: A Critical Appraisal." The Indian Journal of Criminology and Criminalistics, 41(2), 265-281.
4. Mukherjee, A. (2019). "Juvenile Justice in India: Challenges & Prospects." Indian Journal of Criminology and Criminalistics, 40(1), 78-94.

Websites:-

1. https://indiankanoon.org/
2. https://www.nolo.com/legal-encyclopedia/juvenile-court-overview-32222.html
3. https://www.latestlaws.com/articles/overview-of-juvenile-justice-law-in-india-by-chhaya-khosla/
4. https://knowlaw.in/index.php/2021/03/17/juvenile-delinquency-a-rising-concern/
5. https://prsindia.org/billtrack/the-juvenile-justice-care-and-protection-of-children-amendment-bill-2021

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

डिजिटल मार्केटिंग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का उपयोग

डॉ. अनिल तौहेल *

* सहा. प्रध्यापक (वाणिज्य) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शास. तिलक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कटनी (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – डिजिटल मार्केटिंग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का प्रभावी उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। AI तकनीकों का उपयोग उपभोक्ता व्यवहार की भविष्यवाणी करने, डेटा विश्लेषण, विज्ञापन अनुकूलन, चौटबॉट्स, और व्यक्तिगत विपणन अभियानों में किया जाता है। यह शोधपत्र AI के विभिन्न अनुप्रयोगों, उनकी प्रभावशीलता, लाभों और चुनौतियों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है। साथ ही, यह विश्लेषण करता है कि AIडिजिटल मार्केटिंग में कैसे नवाचार ला रहा है और भविष्य में इसके विकास की संभावनाएँ क्या हैं। यह निष्कर्ष निकलता है कि AI-समर्थित विपणन अभियानों की प्रभावशीलता पारंपरिक अभियानों की तुलना में अधिक है।

प्रस्तावना – डिजिटल मार्केटिंग आधुनिक विपणन का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुका है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) डिजिटल मार्केटिंग में व्यक्तिगत विज्ञापन और ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने के लिए अत्यधिक प्रभावी सिद्ध हो रहा है। AI की सहायता से डेटा-संचालित निर्णय लिए जाते हैं, जिससे विपणन रणनीतियों की सटीकता बढ़ती है। इसके अलावा, AI उपभोक्ताओं की प्राथमिकताओं का विश्लेषण कर उनके अनुरूप सामग्री प्रस्तुत करता है, जिससे विपणन अधिक प्रभावशाली होता है। AI-समर्थित टूल्स जैसे मशीन लर्निंग, नैचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग और डेटा एनालिटिक्स डिजिटल मार्केटिंग को अधिक उन्नत बना रहे हैं।

साहित्य समीक्षा

डिजिटल मार्केटिंग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के बढ़ते उपयोग पर कई शोध किए गए हैं। Smith et al. (2020) के अध्ययन के अनुसार, AI-आधारित मार्केटिंग अभियानों से ग्राहक संतुष्टि में 30% तक वृद्धि हुई। इसी तरह, Brown and Johnson (2019) ने अपने शोध में पाया कि मशीन लर्निंग और बिग डेटा एनालिटिक्स का उपयोग उपभोक्ता व्यवहार के विश्लेषण में अधिक सटीकता लाने में सहायक होता है।

भारतीय संदर्भ में, Gupta & Sharma (2021) ने डिजिटल मार्केटिंग में AI के प्रभावों पर शोध किया और निष्कर्ष निकाला कि AI-समर्थित चौटबॉट्स और विज्ञापन रणनीतियाँ उपभोक्ताओं को अधिक प्रभावी रूप से लक्षित कर सकती हैं। Mishra & Patel (2022) ने बताया कि भारत में छोटे एवं मध्यम व्यवसाय (SMEs) AI-आधारित मार्केटिंग टूल्स का उपयोग कर अपने विज्ञापन अभियानों की लागत को कम करने और उपभोक्ता जुड़ाव बढ़ाने में सक्षम हो रहे हैं।

AI-आधारित सिफारिश प्रणाली का प्रभाव – अन्य शोधों में, Lee et al. (2022) ने AI-आधारित सिफारिश प्रणाली की प्रभावशीलता का विश्लेषण किया, जिससे पता चला कि ग्राहकों की पसंद को समझने और उन्हें उपयुक्त उत्पाद सुझाने में AI महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। Kumar & Verma (2023) ने भारतीय ई-कॉमर्स उद्योग में AI-आधारित सिफारिश प्रणालियों के प्रभाव का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि AI-आधारित एल्गोरिदम के माध्यम से उत्पाद अनुशंसाएँ उपभोक्ताओं की खरीदारी की संभावना को 25% तक बढ़ा सकती हैं।Reddy & Nair (2023) के शोध ने दर्शाया कि Flipkart और Amazon जैसी ई-कॉमर्स कंपनियाँ AI-आधारित सिफारिश प्रणालियों के माध्यम से ग्राहकों की प्राथमिकताओं का विश्लेषण कर अपनी बिक्री में 40% तक की वृद्धि कर रही हैं।

AI-समर्थित SEO और डिजिटल विज्ञापन रणनीतियाँ

Singh et al. (2023) के शोध के अनुसार, AI-चालित SEO रणनीतियाँ वेबसाइट ट्रैफिक और ब्रांड दृश्यता में वृद्धि कर सकती हैं। AI का उपयोग कीवर्ड विश्लेषण, ट्रेंड पहचान, और सामग्री अनुकूलन में किया जा रहा है, जिससे वेबसाइट की खोज इंजन रैंकिंग बेहतर हो रही है। Choudhary & Reddy (2023) ने सोशल मीडिया मार्केटिंग में AI के प्रभावों पर अध्ययन करते हुए पाया कि AI-समर्थित सामग्री निर्माण और उपभोक्ता सगाई रणनीतियाँ व्यवसायों की रूपांतरण दर (Conversation rate) में सुधार कर सकती हैं।

भारतीय उपभोक्ताओं पर AI-आधारित मार्केटिंग का प्रभाव

Sharma & Das (2024) ने भारतीय उपभोक्ताओं पर AI-आधारित मार्केटिंग अभियानों के प्रभाव का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि AI-संचालित व्यक्तिगत विज्ञापन (Personalized Ads) उपभोक्ता अनुभव को बेहतर बनाने में सहायक होते हैं। उनके शोध में पाया गया कि 72% भारतीय उपभोक्ता उन ब्रांडों को अधिक प्राथमिकता देते हैं जो व्यक्तिगत विज्ञापन और सिफारिशें प्रदान करते हैं।

Mehta et al. (2024) के अनुसार, भारतीय खुदरा कंपनियाँ (RetailsCompanies) AI-आधारित ग्राहक डेटा विश्लेषण का उपयोग कर ग्राहकों की खरीदारी की प्रवृत्तियों को समझने और उन्हें अधिक प्रासंगिक ऑफर प्रदान करने में सक्षम हो रही हैं।

अनुसंधान पद्धति– यह शोध गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों पद्धतियों

पर आधारित है। प्राथमिक डेटा के रूप में एक ऑनलाइन सर्वेक्षण किया गया, जिसमें 500 उपभोक्ताओं और 100 डिजिटल मार्केटिंग विशेषज्ञों से प्रतिक्रियाएँ एकत्र की गईं। द्वितीयक डेटा विभिन्न शोध पत्रों, पुस्तकालय संसाधनों, और ऑनलाइन डेटाबेस से प्राप्त किया गया। डेटा संग्रह तकनीकों में ऑनलाइन प्रश्नावली, केस स्टडी, और उद्योग रिपोर्ट शामिल थीं। डेटा का विश्लेषण सांख्यिकीय उपकरणों और AI-आधारित डेटा प्रोसेसिंग टूल्स जैसे SPSS और Python लाइब्रेरी की सहायता से किया गया।

उद्देश्य- इस अध्ययन का उद्देश्य डिजिटल मार्केटिंग में AI के विभिन्न अनुप्रयोगों का गहन विश्लेषण करना है। इसके तहत यह समझने का प्रयास किया गया कि AI किस प्रकार उपभोक्ता व्यवहार को प्रभावित करता है और मार्केटिंग अभियानों की सफलता को बढ़ाता है। साथ ही, इस शोध में AI द्वारा उत्पन्न लाभों और संभावित चुनौतियों को उजागर करना तथा भविष्य में AIआधारित डिजिटल विपणन की भूमिका का अनुमान लगाना शामिल है।

डेटा विश्लेषण- सर्वेक्षण से प्राप्त प्राथमिक डेटा के अनुसार, 72% उपभोक्ता मानते हैं कि AI-आधारित विज्ञापन अधिक प्रासंगिक और व्यक्तिगत होते हैं। वहीं, 65% विपणक मानते हैं कि AI-समर्थित विपणन अभियानों से ROI (Return of investment) में 30% तक वृद्धि हुई है। उपभोक्ता जुड़ाव (Enguagement rates) AI-आधारित अभियानों में 40% अधिक पाया गया, जबकि क्लिक-थ्रू दर (CTR) 35% अधिक रही। पारंपरिक विपणन अभियानों की तुलना में AI-समर्थित अभियानों की प्रभावशीलता अधिक पाई गई। AI-आधारित सिफारिश प्रणालियों का उपयोग करने वाले ई-कॉमर्स व्यवसायों में बिक्री में 50% की वृद्धि देखी गई। डेटा से यह स्पष्ट होता है कि AI डिजिटल मार्केटिंग को अधिक प्रभावी बना रहा है और इसके उपयोग से उपभोक्ता जुड़ाव एवं ब्रांड वफादारी में सुधार हो रहा है।

डिजिटल मार्केटिंग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का उपयोग आधुनिक विपणन रणनीतियों को अधिक प्रभावशाली और डेटा-संचालित बना रहा है। इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि AI-समर्थित विपणन अभियानों की प्रभावशीलता पारंपरिक अभियानों की तुलना में अधिक है। AI तकनीकों जैसे मशीन लर्निंग, नैचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP), और बिग डेटा एनालिटिक्स के उपयोग से कंपनियाँ उपभोक्ता व्यवहार को अधिक सटीकता से समझ पा रही हैं और उनके अनुरूप सामग्री एवं विज्ञापन प्रस्तुत कर पा रही हैं।

शोध के परिणाम

1. **व्यक्तिगत विपणन –** AI-आधारित सिफारिश प्रणालियाँ और चौटबॉट्स उपभोक्ता अनुभव को अधिक व्यक्तिगत और आकर्षक बना रहे हैं। भारतीय संदर्भ में, 72% उपभोक्ता व्यक्तिगत विज्ञापन को अधिक पसंद करते हैं।
2. **विज्ञापन अनुकूलन –** AI तकनीकों के उपयोग से डिजिटल विज्ञापन अभियानों में क्लिक-थ्रू दर (CTR) 35% अधिक पाई गई, जिससे विपणन की प्रभावशीलता में वृद्धि हुई।
3. **ई-कॉमर्स में AI का प्रभाव –** AI-आधारित अनुशंसा एल्गोरिदम से ऑनलाइन खरीदारी की संभावना 25% तक बढ़ी है, और Flipkart और Amazon जैसी कंपनियों ने अपनी बिक्री में 40% तक वृद्धि दर्ज की है।
4. **SEO और डिजिटल रणनीतियाँ –** AI-समर्थित SEO अभियानों से वेबसाइट ट्रैफिक और ब्रांड दृश्यता में महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गई।
5. **छोटे एवं मध्यम व्यवसायों (SMEs) पर प्रभाव –** AI-आधारित मार्केटिंग टूल्स का उपयोग SMEs को कम लागत में प्रभावी विज्ञापन अभियानों को संचालित करने में मदद कर रहा है।

चर्चा – AI की बढ़ती भूमिका डिजिटल मार्केटिंग को और अधिक स्वचालित, प्रभावी और डेटा-संचालित बना रही है। यह देखा गया कि उपभोक्ता व्यवहार को गहराई से समझने के लिए AI तकनीकों का उपयोग ब्रांडों को अधिक प्रासंगिक और लक्षित विज्ञापन बनाने में सहायता करता है। हालाँकि, कुछ चुनौतियाँ भी देखी गईं:

1. **डेटा गोपनीयता और नैतिकता –** उपभोक्ताओं के डेटा का व्यापक उपयोग उनके निजता अधिकारों पर प्रश्न उठाता है।
2. **तकनीकी जटिलता –** AI-आधारित टूल्स की स्थापना और प्रबंधन छोटे व्यवसायों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
3. **व्यक्तिगत विज्ञापनों की सीमाएँ –** AI द्वारा अत्यधिक लक्षित विज्ञापन कभी-कभी उपभोक्ताओं को अनावश्यक रूप से ट्रैक किए जाने का अनुभव दे सकते हैं।

परिकल्पना परीक्षण:

इस शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया:

1. H_0 (शून्य परिकल्पना): AI-समर्थित विपणन अभियानों और पारंपरिक विपणन अभियानों के बीच कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।
2. H_1 (वैकल्पिक परिकल्पना): AI-समर्थित विपणन अभियानों की प्रभावशीलता पारंपरिक विपणन अभियानों की तुलना में अधिक है। इस शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया:

परीक्षण विधि के रूप में टि-टेस्ट और अनोवा का उपयोग किया गया। प्राप्त डेटा के अनुसार, AI-समर्थित अभियानों में औसत उपभोक्ता जुड़ाव 68% था, जबकि पारंपरिक अभियानों में यह केवल 45% था। पी-मूल्य 0.03 प्राप्त हुआ, जो 0.05 के महत्व स्तर से कम था, जिससे H_0 को अस्वीकार कर H_1 को स्वीकार किया गया। यह निष्कर्ष निकलता है कि AI -समर्थित विपणन अभियानों की प्रभावशीलता पारंपरिक अभियानों की तुलना में अधिक है।

निष्कर्ष एवं चर्चा – डिजिटल मार्केटिंग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का प्रभावी उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। AI तकनीकों का उपयोग उपभोक्ता व्यवहार की भविष्यवाणी करने, डेटा विश्लेषण, विज्ञापन अनुकूलन, चौटबॉट्स, और व्यक्तिगत विपणन अभियानों में किया जाता है। यह शोधपत्र AI के विभिन्न अनुप्रयोगों, उनकी प्रभावशीलता, लाभों और चुनौतियों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है। साथ ही, यह विश्लेषण करता है कि AI डिजिटल मार्केटिंग में कैसे नवाचार ला रहा है और भविष्य में इसके विकास की संभावनाएँ क्या हैं। यह निष्कर्ष निकलता है कि AI-समर्थित विपणन अभियानों की प्रभावशीलता पारंपरिक अभियानों की तुलना में अधिक है।

भविष्य की संभावनाएँ : भविष्य में, AI डिजिटल मार्केटिंग में और अधिक नवाचार लाने की क्षमता रखता है। निम्नलिखित क्षेत्रों में AI का विकास संभावित है:

1. **स्वचालित सामग्री निर्माण –** AI-समर्थित टूल्स से व्यक्तिगत और उच्च-गुणवत्ता वाली सामग्री का स्वचालित रूप से उत्पादन किया जा सकता है।
2. **वॉयस एवं इमेज रिकग्निशन –** आवाज और छवि पहचान तकनीकों के उपयोग से उपभोक्ताओं को अधिक इंटरेक्टिव अनुभव प्रदान किया

जा सकता है।

3. **उन्नत ग्राहक सेवा –** AI-समर्थित वर्चुअल असिस्टेंट और चौटबॉट्स ग्राहक सेवा में नए मानक स्थापित कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. **Brown, T., & Johnson, R. (2019).** Machine learning and big data analytics in consumer behavior analysis. *Journal of Digital Marketing Research, 15*(2), 112-130.
2. **Choudhary, A., & Reddy, P. (2023).** The role of AI in social media marketing: Content creation and customer engagement strategies. *International Journal of Marketing Innovations, 28*(1), 45-60.
3. **Gupta, R., & Sharma, M. (2021).** Impact of AI-supported chatbots and advertising strategies in digital marketing: An Indian perspective. *Indian Journal of Business and Management, 10*(3), 89-104.
4. **Kumar, S., & Verma, D. (2023).** AI-based recommendation systems and their impact on consumer purchase behavior in India. *E-Commerce Trends Journal, 7*(2), 56-73.
5. **Lee, K., Wang, H., & Chen, Y. (2022).** Effectiveness of AI-based recommendation systems in online retail. *Journal of Artificial Intelligence and Business, 18*(4), 150-167.
6. **Mehta, P., Sharma, L., & Desai, K. (2024).** AI-powered customer data analytics and its influence on Indian retail companies. *Retail Business & Analytics Journal, 12*(3), 78-95.
7. **Mishra, A., & Patel, V. (2022).** AI-driven marketing tools and their impact on Indian SMEs. *Indian Journal of Marketing Strategies, 14*(1), 33-50.
8. **Reddy, S., & Nair, P. (2023).** AI in e-commerce: A case study of Flipkart and Amazon's recommendation algorithms. *E-Commerce and AI Journal, 6*(2), 99-115.
9. **Sharma, K., & Das, P. (2024).** AI-powered personalized advertising and its impact on Indian consumers. *Journal of Consumer Insights, 11*(1), 22-38.
10. **Singh, R., Gupta, A., & Verma, S. (2023).** AI-driven SEO strategies and their impact on website traffic. *Journal of Digital Marketing and Technology, 9*(4), 61-80.
11. **Smith, J., Brown, L., & Taylor, R. (2020).** Artificial intelligence in digital marketing: Enhancing customer satisfaction. *Marketing Science Journal, 25*(3), 200-218.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

नई शिक्षण क्षमताएँ: आधुनिक शिक्षा में नवाचार और तकनीकी एकीकरण

डॉ. अनिल तौहेल *

* सहा. प्रध्यापक (वाणिज्य) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शास. तिलक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कटनी (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – शिक्षा का क्षेत्र निरंतर परिवर्तनशील है और नई तकनीकों के आने से इसमें और भी व्यापक बदलाव हो रहे हैं। पारंपरिक शिक्षण विधियाँ, जो मुख्य रूप से किताबों और ब्लैकबोर्ड तक सीमित थीं, अब डिजिटल प्लेटफॉर्म, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, वर्चुअल रियलिटी, और ऑनलाइन लर्निंग की सहायता से अधिक प्रभावी हो रही हैं। इस शोध पत्र में आधुनिक शिक्षण क्षमताओं का विश्लेषण किया गया है और यह बताया गया है कि किस प्रकार नई तकनीकों के माध्यम से शिक्षा को अधिक रोचक, प्रभावी और समावेशी बनाया जा सकता है। इसके साथ ही, यह भी समझने का प्रयास किया गया है कि इन तकनीकों को अपनाने में आने वाली चुनौतियाँ क्या हैं और उनका समाधान कैसे किया जा सकता है।

शब्द कुंजी –आधुनिक शिक्षा, तकनीकी एकीकरण, AI-आधारित चौटबॉट्स।

प्रस्तावना – शिक्षा किसी भी समाज की आधारशिला होती है और इसकी गुणवत्ता का प्रभाव सीधा राष्ट्र की प्रगति पर पड़ता है। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में मुख्य रूप से शिक्षक और छात्र के बीच सीधा संवाद होता था, लेकिन आधुनिक युग में यह प्रणाली बदल रही है। आज शिक्षण में डिजिटल उपकरणों, स्मार्ट क्लासरूम, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी तकनीकों का उपयोग बढ़ रहा है, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार आया है। नई शिक्षण क्षमताओं का उद्देश्य न केवल जानकारी प्रदान करना है, बल्कि छात्रों की सोचने, समझने और समस्याओं को हल करने की क्षमता को भी विकसित करना है। इस शोध पत्र में आधुनिक शिक्षण तकनीकों के उपयोग, उनकी प्रभावशीलता और उनके समक्ष आने वाली चुनौतियों का गहन अध्ययन किया गया है। प्राचीन काल में शिक्षा गुरुकुल प्रणाली पर आधारित थी, जिसमें छात्र शिक्षक के साथ रहकर ज्ञान प्राप्त करते थे। यह प्रणाली व्यक्तिगत शिक्षण पर आधारित थी, लेकिन इसमें तकनीकी सहायता उपलब्ध नहीं थी। औपनिवेशिक काल के दौरान स्कूलों और विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई, जिससे शिक्षा की संरचना अधिक संगठित हो गई।

20वीं शताब्दी में शिक्षा प्रणाली में व्यापक बदलाव देखने को मिला, जहाँ प्रिंट मीडिया, रेडियो, और टेलीविजन का प्रयोग शिक्षण में किया जाने लगा। 21वीं शताब्दी में इंटरनेट के आगमन ने शिक्षा के स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया। ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म, डिजिटल लाइब्रेरी, और मोबाइल एप्लिकेशन ने शिक्षा को अधिक सुलभ और प्रभावी बनाया। आज, शिक्षा केवल कक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक वैश्विक प्रक्रिया बन गई है जहाँ छात्र और शिक्षक डिजिटल माध्यमों से किसी भी समय, कहीं भी जुड़ सकते हैं।

साहित्य समीक्षा – शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन को समझने के लिए पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है। **Dewey** (1938) के अनुसार, पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक केंद्रित दृष्टिकोण अपनाया जाता था, जहाँ छात्र केवल निष्क्रिय रूप से ज्ञान ग्रहण करते थे। दूसरी ओर,**Piaget** (1952) ने सक्रिय अधिगम (Active Learning) के सिद्धांत पर जोर दिया, जहाँ छात्र स्वयं प्रयोग करके सीखते हैं। वर्तमान समय में, शिक्षण विधियों में तकनीक का प्रयोग बढ़ने से शिक्षा अधिक संवादात्मक और छात्र-केंद्रित हो गई है। **Prensky** (2001) के अनुसार, डिजिटल शिक्षा प्रणाली पारंपरिक प्रणाली की तुलना में अधिक प्रभावी होती है, क्योंकि यह छात्रों को उनके अनुसार सीखने की स्वतंत्रता देती है। **Anderson & Dron** (2011) ने अपने शोध में यह पाया कि ऑनलाइन शिक्षण छात्रों को समय और स्थान की बाधाओं से मुक्त करता है और उनकी सीखने की क्षमता को बढ़ाता है। **Means et al.** (2013) द्वारा किए गए एक अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि ई-लर्निंग प्लेटफार्म पारंपरिक कक्षा शिक्षण से अधिक प्रभावी हो सकते हैं, यदि उन्हें सही तरीके से लागू किया जाए। भारत में ऑनलाइन शिक्षण के बढ़ते प्रभाव पर **Agarwal & Mittal** (2019) ने अपने शोध में कहा कि सरकारी और निजी स्तर पर कई प्लेटफार्म, जैसे कि **SWAYAM, NPTEL**और **DIKSHA**, ने डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालांकि, उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि डिजिटल विभाजन (Digital Divide) के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में इसका व्यापक रूप से उपयोग संभव नहीं हो पाया है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के शिक्षा में उपयोग को लेकर कई शोध हुए हैं। **Luckin et al.**(2016) ने अपने अध्ययन में पाया कि AI आधारित शिक्षण प्रणाली छात्रों को व्यक्तिगत लर्निंग अनुभव प्रदान करने में सहायक होती है। **Baker & Siemens** (2014) के अनुसार, मशीन लर्निंग एल्गोरिदम छात्रों की प्रगति का विश्लेषण कर उनके लिए अनुकूल शिक्षण सामग्री प्रदान कर सकते हैं। भारतीय परिप्रेक्ष्य में, **Sharma & Gupta** (2020) ने अपने शोध में यह उल्लेख किया कि AI-

आधारित चौटबॉट्स और स्मार्ट असिस्टेंट छात्रों को उनकी पढ़ाई में सहायक हो सकते हैं, लेकिन शिक्षक और छात्र के बीच मानवीय संपर्क की कमी एक बड़ी चुनौती हो सकती है।

वर्चुअल रियलिटी (VR) और ऑगमेंटेड रियलिटी (AI) आधारित शिक्षण तकनीकों पर किए गए कई शोध यह दर्शाते हैं कि यह जटिल अवधारणाओं को समझाने में प्रभावी साबित होती हैं। **Dalgarno & Lee** (2010) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि VR आधारित शिक्षा छात्रों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने में सक्षम होती है, जिससे उनकी अवधारणात्मक समझ बेहतर होती है। भारत में, **Kumar et al.**(2021) ने अपने अध्ययन में यह बताया कि मेडिकल और इंजीनियरिंग क्षेत्रों में VR आधारित शिक्षण तेजी से बढ़ रहा है, लेकिन इसके लिए आवश्यक संसाधनों की कमी एक महत्वपूर्ण बाधा बनी हुई है। ब्लेंडेड लर्निंग, जिसमें ऑनलाइन और पारंपरिक शिक्षण का मिश्रण होता है, शिक्षा प्रणाली में तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। **Graham**(2006) ने इसे शिक्षण का भविष्य बताया, क्योंकि यह दोनों पद्धतियों के लाभों को समाहित करता है। **Horn & Staker** (2015) के अनुसार, ब्लेंडेड लर्निंग छात्रों को अधिक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाता है। गमिफिकेशन (Gamification) आधारित शिक्षण के प्रभावों पर **Deterding et al.**(2011) ने अपने शोध में कहा कि खेल-आधारित शिक्षण छात्रों की प्रेरणा को बढ़ाता है और उन्हें अधिक आकर्षक तरीके से सीखने में मदद करता है। भारतीय संदर्भ में,**Singh & Patel** (2022) ने यह निष्कर्ष निकाला कि गमिफिकेशन का प्रभाव स्कूल स्तर की शिक्षा में अधिक सकारात्मक है, लेकिन उच्च शिक्षा में इसे प्रभावी बनाने के लिए अधिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

शोध पद्धति – इस अध्ययन में शिक्षा प्रणाली में नई शिक्षण क्षमताओं के प्रभाव, चुनौतियों और संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन एक मिश्रित विधि पर आधारित है, जिसमें गुणात्मक और सांख्यिकीय दोनों प्रकार के शोध विधियों का समावेश किया गया है। यह शोध विधि अध्ययन के उद्देश्यों की व्यापकता को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त है, क्योंकि यह दोनों प्रकार के डेटा एकत्र करने और उनका विश्लेषण करने सर्वेक्षण : शिक्षकों और छात्रों के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन प्रश्नावली का उपयोग किया गया। इसमें छात्रों की सीखने की प्रक्रिया, डिजिटल उपकरणों के उपयोग, और तकनीकी चुनौतियों पर प्रश्न पूछे गए। साक्षात्कार: शिक्षकों और शिक्षा क्षेत्र के विशेषज्ञों के साथ गहन साक्षात्कार किए गए, ताकि तकनीकों की प्रभावशीलता और चुनौतियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सके। साहित्य समीक्षा : विभिन्न शोध पत्रों, रिपोर्ट्स, और सरकारी दस्तावेजों की समीक्षा की गई ताकि पिछले अध्ययनों और नीतियों का विश्लेषण किया जा सके। सर्वेक्षण और नमूना आकार सर्वेक्षण का आकार: इस अध्ययन में 500 छात्रों और 200 शिक्षकों को शामिल किया गया, जिनका चयन विभिन्न शैक्षिक संस्थानों (स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय) से किया गया था। नमूना चयन: छात्रों और शिक्षकों का चयन सुविधाजनक नमूना विधि द्वारा किया गया, जो अध्ययन के लिए उपलब्ध संस्थानों और शिक्षकों को ध्यान में रखते हुए किया गया। सांख्यिकीय डेटा विश्लेषण: डेटा का सांख्यिकीय विश्लेषण SPSS सॉफ्टवेयर का उपयोग करके किया गया। आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए वर्णनात्मक आँकड़े जैसे औसत, प्रतिशत, और मानक विचलन का उपयोग किया गया। सांख्यिकीय परीक्षण जैसे T-test और ANOVA का उपयोग किया गया ताकि विभिन्न शैक्षिक संस्थानों और शहरी-ग्रामीण क्षेत्रों के बीच अंतर का पता लगाया जा सके।

सीमाएँ – यह अध्ययन समय और संसाधनों की सीमाओं के कारण केवल कुछ संस्थानों और क्षेत्रों तक सीमित था। डिजिटल विभाजन की समस्या और सभी छात्रों को समान रूप से डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता नहीं थी, जिससे परिणामों पर प्रभाव पड़ा।

उद्देश्य :

1. नई शिक्षण तकनीकों (AI, VR, गमिफिकेशन) का छात्रों की सीखने की क्षमता पर प्रभाव का मूल्यांकन करना।
2. शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों के बीच डिजिटल शिक्षा के प्रभाव में अंतर का विश्लेषण करना।
3. शैक्षिक संस्थानों के बीच डिजिटल शिक्षा की प्रभावशीलता में अंतर का अध्ययन करना।
4. शिक्षकों और छात्रों के बीच डिजिटल शिक्षा पर राय में अंतर का मूल्यांकन करना।
5. डिजिटल उपकरणों का उपयोग छात्रों के परीक्षा परिणामों पर सकारात्मक प्रभाव डालता है या नहीं।
6. प्रशिक्षण और तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता के आधार पर डिजिटल शिक्षा की प्रभावशीलता को समझना।

डेटा विश्लेषण – शोध में विभिन्न प्रकार के आँकड़ों और रिपोर्टों का उपयोग किया गया है ताकि नई शिक्षण क्षमताओं के प्रभाव को मापा जा सके। इस शोध में नई शिक्षण क्षमताओं के प्रभाव, चुनौतियों और संभावनाओं का विश्लेषण करने के लिए विभिन्न सांख्यिकीय उपकरणों का उपयोग किया गया है। डेटा संग्रहण के बाद, इन उपकरणों का प्रयोग डेटा को संक्षेप में प्रस्तुत करने, विभिन्न समूहों के बीच अंतर का मूल्यांकन करने और परिणामों को सांख्यिकीय दृष्टि से विश्लेषित करने के लिए किया गया।

1. वर्णनात्मक आँकड़े – डेटा का प्रारंभिक विश्लेषण करने के लिए वर्णनात्मक आँकड़े का उपयोग किया गया। इसमें माध्य , मानक विचलन , प्रतिशत और अन्य सारांशात्मक आँकड़ों का उपयोग किया गया ताकि छात्रों और शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं का सामान्य विवरण प्राप्त किया जा सके। 75% छात्रों ने AI और VR को प्रभावी बताया, जबकि 60% ने गमिफिकेशन को आकर्षक और प्रभावी माना। माध्य परीक्षा परिणामों में 15% सुधार दर्शाता है, और मानक विचलन में 20% सुधार देखने को मिला, जिससे यह संकेत मिलता है कि छात्रों की ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में सुधार हुआ है।

सारांश आँकड़े	प्रतिक्रिया (%)
AI/VR प्रभावी पाया	75%
गमिफिकेशन प्रभावी पाया	60%
परीक्षा परिणामों में सुधार	15%
ध्यान केंद्रित करने में सुधार	20%

2. **T-test -** T-test का उपयोग शहरी और ग्रामीण छात्रों के बीच परीक्षा परिणामों में अंतर का परीक्षण करने के लिए किया गया। इस परीक्षण में पाया गया कि शहरी छात्रों के परिणामों में ग्रामीण छात्रों के मुकाबले अधिक सुधार हुआ था, जो डिजिटल शिक्षा संसाधनों की उपलब्धता और कनेक्टिविटी में अंतर को दर्शाता है।

T-value: 2.56 ($P< 0.05$)

यह दर्शाता है कि शहरी और ग्रामीण छात्रों के बीच परीक्षा परिणामों में

महत्वपूर्ण अंतर है।

समूह	माध्य परीक्षा परिणाम	T-value	P-value
शहरी छात्र	85%	2.56	<0.05
ग्रामीण छात्र	70%		

3. ANOVA- ANOVA का उपयोग विभिन्न शैक्षिक संस्थानों (स्कूल, कॉलेज, और विश्वविद्यालय) के बीच परीक्षा परिणामों में अंतर का परीक्षण करने के लिए किया गया। इस परीक्षण से यह साबित हुआ कि विभिन्न संस्थानों के बीच परिणामों में महत्वपूर्ण अंतर था, जो डिजिटल शिक्षा के संसाधनों और शिक्षण विधियों के प्रभाव को दर्शाता है।

F-value: 5.32 (P<0.01)

यह दर्शाता है कि शैक्षिक संस्थानों के बीच डिजिटल शिक्षा की प्रभावशीलता में महत्वपूर्ण अंतर है।

संस्थान	माध्य परीक्षा परिणाम	F-value	P-value
स्कूल	75%	5.32	< 0.01
कॉलेज	80%		
विश्वविद्यालय	90%		

4. Chi Square Test - Chi Square परीक्षण का उपयोग छात्रों और शिक्षकों के बीच डिजिटल शिक्षा पर राय के अंतर का परीक्षण करने के लिए किया गया। यह परीक्षण दर्शाता है कि छात्रों और शिक्षकों के विचारों में एक महत्वपूर्ण अंतर था, खासकर शिक्षकों के प्रशिक्षण और डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता के संदर्भ में। Chi Square value: 12.3 (P<0.05)

यह दर्शाता है कि छात्रों और शिक्षकों के बीच राय में महत्वपूर्ण अंतर था।

समूह	सहमत (%)	असहमत (%)	Chi Square value	P-value
छात्र	80%	20%	12.3	<0.05
शिक्षक	60%	40%		

5. कोरिलेशन – Pearson Correlation का उपयोग छात्रों के परीक्षा परिणामों और उनके डिजिटल उपकरणों के उपयोग के बीच संबंध का मूल्यांकन करने के लिए किया गया। यह विश्लेषण यह दर्शाता है कि डिजिटल उपकरणों के उपयोग और परीक्षा परिणामों के बीच सकारात्मक संबंध है।**Pearson Correlation:** 0.75 (P<0.01)

यह दर्शाता है कि छात्रों के परीक्षा परिणामों और उनके डिजिटल उपकरणों के उपयोग के बीच मजबूत सकारात्मक संबंध है।

वेरिएबल	कोरिलेशन मान	P-value
परीक्षा परिणाम और डिजिटल उपकरणों का उपयोग	0.75	<0.01

6. Regression Analysis- Linear Regression का उपयोग छात्रों की परीक्षा परिणामों को उनके डिजिटल उपकरणों के उपयोग के आधार पर भविष्यवाणी करने के लिए किया गया। यह विश्लेषण दर्शाता है कि डिजिटल उपकरणों का उपयोग बढ़ने से छात्रों के परिणामों में सकारात्मक सुधार हो सकता है। **Regression Coefficient**: 0.8

यह दर्शाता है कि डिजिटल उपकरणों के उपयोग में 1% वृद्धि से परीक्षा परिणामों में औसतन 0.8% सुधार हुआ है।

वेरिएबल	Regression Coefficient	P-value
डिजिटल उपकरणों का उपयोग	0.8	< 0.01

7. Factor Analysis

Exploratory Factor Analysis (EFA) - का उपयोग छात्रों और शिक्षकों के विचारों और अनुभवों के बीच सामान्य कारकों की पहचान करने के लिए किया गया। यह विश्लेषण दर्शाता है कि प्रमुख कारक जैसे तकनीकी ज्ञान, संसाधन उपलब्धता और प्रशिक्षण की आवश्यकता, डिजिटल शिक्षा के प्रभाव को प्रभावित करते हैं। **Factor Loadings**: 0.85 प्रशिक्षण की आवश्यकता: 0.78

यह दर्शाता है कि तकनीकी ज्ञान और प्रशिक्षण की आवश्यकता डिजिटल शिक्षा के प्रभाव को प्रमुख रूप से प्रभावित करती हैं।

फैक्टर	Factor Loadings	Eigen Value
तकनीकी ज्ञान	0.85	3.2
प्रशिक्षण की आवश्यकता	0.78	2.9

डेटा विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकला कि नई शिक्षण तकनीकों जैसे AI,VR और गमिफिकेशन ने शिक्षा प्रणाली में सकारात्मक प्रभाव डाला है। छात्रों और शिक्षकों दोनों ने इन तकनीकों को स्वीकार किया, लेकिन कुछ चुनौतियाँ, जैसे प्रशिक्षण की कमी और डिजिटल विभाजन, भी सामने आईं। इसके अलावा, सांख्यिकीय परीक्षणों ने यह साबित किया कि डिजिटल शिक्षा का प्रभाव छात्रों के परिणामों और उनकी सीखने की प्रक्रिया में सुधार ला सकता है, यदि उचित प्रशिक्षण और संसाधन उपलब्ध हों।

निष्कर्ष :

1. सभी हाइपोथीसिस परीक्षणों में **P-value** 0.05 या उससे कम था, जिससे हम शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करते हैं।
2. यह अध्ययन साबित करता है कि नई शिक्षण तकनीकें छात्रों की सीखने की क्षमता, परीक्षा परिणामों, और उनकी भागीदारी पर सकारात्मक प्रभाव डालती हैं, साथ ही शहरी और ग्रामीण छात्रों के बीच डिजिटल शिक्षा के प्रभाव में अंतर है।
3. शैक्षिक संस्थानों के बीच भी डिजिटल शिक्षा की प्रभावशीलता में अंतर है, और शिक्षकों तथा छात्रों के बीच डिजिटल शिक्षा पर राय में भी अंतर है।

भविष्य के लिए सुझाव:

1. सरकार और निजी क्षेत्र को डिजिटल शिक्षा के विस्तार और शिक्षकों के प्रशिक्षण पर अधिक ध्यान देना चाहिए।
2. कम लागत वाले डिजिटल उपकरणों और इंटरनेट सुविधाओं को बढ़ावा देना चाहिए, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में।
3. AI,VR और गमिफिकेशन जैसी तकनीकों को स्कूली शिक्षा में भी व्यापक रूप से अपनाने के लिए नीतियाँ बनानी चाहिए।

निष्कर्ष और सिफारिशें – इस शोध पत्र में यह स्पष्ट हुआ कि नई शिक्षण क्षमताएँ पारंपरिक शिक्षण की तुलना में अधिक प्रभावी, लचीली और समावेशी हो रही हैं। हालांकि, तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता और शिक्षकों के उचित प्रशिक्षण की आवश्यकता बनी हुई है। सरकार और शैक्षणिक संस्थानों को चाहिए कि वे डिजिटल साक्षरता बढ़ाने, नई तकनीकों को अपनाने, और शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए पहल करें। इसके अलावा, ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की उपलब्धता बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए।इस साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि नई शिक्षण क्षमताएँ शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी और समावेशी बना रही हैं। विभिन्न शोधों के अनुसार, ई-लर्निंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, वर्चुअल रियलिटी,

और ब्लेंडेड लर्निंग जैसी तकनीकों का उचित उपयोग छात्रों की समझ और प्रदर्शन को बढ़ाने में सहायक हो सकता है। हालांकि, भारत में डिजिटल शिक्षा को सफल बनाने के लिए कुछ बुनियादी सुधारों की आवश्यकता है, जैसे कि डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता, शिक्षकों का तकनीकी प्रशिक्षण, और गमिफिकेशन जैसी नई शिक्षण विधियों को अपनाना।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. **Agarwal, P., & Mittal, R. (2019). Digital education in India: Opportunities and challenges.** *Journal of Indian Education, 45(2), 65-78.*
2. **Anderson, T., & Dron, J. (2011). Three generations of distance education pedagogy.** *The International Review of Research in Open and Distributed Learning, 12(3), 80-97.*
3. **Baker, R. S., & Siemens, G. (2014). Educational data mining and learning analytics.** *Cambridge Handbook of the Learning Sciences, 2nd edition, 253-272.*
4. **Dalgarno, B., & Lee, M. J. (2010). What are the learning affordances of 3-D virtual environments?** *British Journal of Educational Technology, 41(1), 10-32.*
5. **Deterding, S., Dixon, D., Khaled, R., & Nacke, L. (2011). From game design elements to gamefulness: Defining "gamification".** *Proceedings of the 15th International Academic MindTrek Conference, 9-15.*
6. **Dewey, J. (1938).** *Experience and Education.* Macmillan.
7. **Graham, C. R. (2006). Blended learning systems: Definition, current trends, and future directions.** *Handbook of Blended Learning: Global Perspectives, 3-21.*
8. **Horn, M. B., & Staker, H. (2015). Blended: Using Disruptive Innovation to Improve Schools.** *Jossey-Bass.*
9. **Kumar, V., Singh, A., & Patel, S. (2021). Virtual reality applications in Indian medical education: A review.** *Indian Journal of Medical Research, 153(4), 345-359.*
10. **Luckin, R., Holmes, W., Griffiths, M., & Forcier, L. B. (2016). Intelligence unleashed: An argument for AI in education.** *Pearson Education.*
11. **Means, B., Toyama, Y., Murphy, R., Bakia, M., & Jones, K. (2013). The effectiveness of online and blended learning: A meta-analysis of the empirical literature.** *Teachers College Record, 115(3), 1-47.*
12. **Mishra, P., & Sharma, D. (2023). Digital learning in India: Challenges and solutions.** ***Indian Journal of Educational Research, 10(2), 78-92.***
13. **Piaget, J. (1952).** *The Origins of Intelligence in Children.* Norton.
14. **Prensky, M. (2001). Digital Natives, Digital Immigrants.** *On the Horizon, 9(5), 1-6.*
15. **Selwyn, N. (2011). Education and Technology: Key Issues and Debates.** *Bloomsbury Publishing.*
16. **Sharma, A., & Gupta, R. (2020). Artificial intelligence in Indian education: Possibilities and challenges.** *Indian Journal of Educational Technology, 6(1), 22-38.*
17. **Singh, R., & Patel, A. (2022). Gamification in Indian schools: An empirical study on student engagement.** *Journal of Interactive Learning Research, 33(2), 150-170.*

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

डाकघर की सुकन्या योजना का आलोचनात्मक मूल्यांकन इन्दौर जिले के सन्दर्भ में

डॉ. जे.के. जैन* डॉ. पी.के. सन्से विभा सोहरा*****

* प्राध्यापक (वाणिज्य) भेरूलाल पाटीदार शासकीय महाविद्यालय,महू जिला इन्दौर (म.प्र.)) भारत
** प्राध्यापक (वाणिज्य) भेरूलाल पाटीदार शासकीय महाविद्यालय,महू जिला इन्दौर (म.प्र.) भारत
*** शोधार्थी (वाणिज्य) देवी आहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – सुकन्या समृद्धि योजना (SSY)भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण बचत योजना है, जिसका उद्देश्य बालिकाओं के भविष्य को सुरक्षित करना है। यह योजना विशेष रूप से डाकघरों के माध्यम से ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में लागू की जाती है। इस शोध पत्र में इंदौर जिले के विभिन्न आय-वर्गों एवं सामाजिक समूहों में इस योजना की प्रभावशीलता, जागरूकता, लाभप्राप्ति, और इसके समक्ष चुनौतियों का मूल्यांकन किया गया है।
शब्द कुंजी – डाकघर, सुकन्या समृद्धि योजना, सामाजिक जागरूकता।

प्रस्तावना – सरकारी योजनाएँ सरकार द्वारा नागरिकों के सामाजिक और आर्थिक कल्याण को ध्यान में रखते हुए शुरू की जाती हैं। ये योजनाएँ देश के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पहलुओं में सुधार लाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भारत में बेटियों की शिक्षा और उनके भविष्य को आर्थिक रूप से सुरक्षित बनाने के लिए केंद्र सरकार द्वारा कई योजनाएँ चलाई गई हैं। इनमें से डाकघर की एक प्रमुख योजना है सुकन्या समृद्धि योजना, जिसे 22 जनवरी 2015 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के अंतर्गत लॉन्च किया गया। यह योजना विशेष रूप से लड़कियों के आर्थिक सशक्तिकरण और उनके भविष्य की वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से लागू की गई है।

यह शो पत्र इन्दौर जिले में सुकन्या समृद्धि योजना के कार्यान्वयन, लाभ और चुनौतियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है ताकि योजना की प्रभावशीलता और उसमें सुधार की संभावनाओं का विश्लेषण किया जा सके।

अनुसंधान के उद्देश्य :

1. इंदौर जिले में सुकन्या समृद्धि योजना के प्रति जागरूकता की स्थिति का अध्ययन करना।
2. योजना के अंतर्गत पंजीकरण एवं लाभान्वित परिवारों की संख्या का मूल्यांकन करना।
3. योजना के कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों को समझना।
4. योजना के दीर्घकालीन प्रभाव का आकलन करना।

अनुसंधान पद्धति –प्रस्तुत शोध अध्ययन में द्वितीयक आकड़ों का उपयोग किया गया है।

सुकन्या समृद्धि योजना का संक्षिप्त परिचय–सुकन्या समृद्धि योजना के तहत किसी बालिका के जन्म से लेकर 10 वर्ष की आयु तक उसके माता-पिता या अभिभावक उसके नाम से खाता खोल सकते हैं। यह खाता डाकघर या अधिकृत बैंक शाखा में खोला जा सकता है। इस योजना के अंतर्गत निम्नलिखित विशेषताएँ हैं –

1. न्यूनतम जमा राशि 250 रुपये प्रति वर्ष।
2. अधिकतम जमा राशि 1,50,000 रुपये प्रति वर्ष।
3. खाते की परिपक्वता 21 वर्ष के बाद या बालिका की शादी के समय (18 वर्ष की आयु के बाद) तक लेकिन शादी की तारिक से 1 महिने से पहले या 3 महीने के बाद समापन की अनुमति नहीं है।
4. ब्याज दर सरकार द्वारा समय-समय पर निर्धारित, वर्तमान में ब्याज दर 8.2 प्रतिशत वार्षिक (01-01-2024 से)गणना वार्षिक आधार पर, चक्रवृद्धि वार्षिक।
5. कर लाभ इस योजना के अंतर्गत जमा राशि और अर्जित ब्याज पर कर में छूट मिलती है।

तालिका- 1: सुकन्या समृद्धि योजना जमा राशि

क्र.	वर्ष	जमा राशि (करोड़ में)	आधार वर्ष की तुलना में प्रतिशत कमी/वृद्धि	पिछले वर्ष की तुलना में कमी /वृद्धि
1	2011-12	-	-	-
2	2012-13	-	-	-
3	2013-14	-	-	-
4	2014-15	13.53	-	-
5	2015-16	19.27	42.42	42.42
6	2016-17	44.26	227.12	129.68
7	2017-18	71.83	430.89	62.29
8	2018-19	92.58	584.26	28.89
9	2019-20	124.97	823.65	34.99
10	2020-21	140.53	938.65	12.45

स्त्रोत : इंदौर सिटी डिवीजन
वार्षिक औसत वृद्धि दर 29.700 %

सुकन्या समृद्धि योजना में इंदौर जिले के लिए 2014-15 से 2020-21 तक जमा राशि में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। 2014-15 में जमा राशि 13.53 करोड़ रुपये थी, जो 2020-21 में बढ़कर 140.53 करोड़ रुपये हो गई। पिछले वर्ष की तुलना में 2019-20 में 34.99% और 2020-21 में 12.45% की वृद्धि दर्ज की गई है। इस अवधि में वार्षिक औसत वृद्धि दर 29.70% रही, जिससे स्पष्ट होता है कि योजना ने लोगों का विश्वास जीता है और बालिकाओं के भविष्य सुरक्षित करने के प्रति जागरूकता में भी वृद्धि हुई है।

तालिका- 2: सुकन्या समृद्धि योजना

क्र.	वर्ष	खातों की संख्या (हजारों में)	आधार वर्ष की तुलना में प्रतिशत कमी/वृद्धि	पिछले वर्ष की तुलना में कमी /वृद्धि
1	2011-12	-	-	-
2	2012-13	-	-	-
3	2013-14	-	-	-
4	2014-15	6.50	-	-
5	2015-16	61.24	842.15	842.15
6	2016-17	68.75	957.69	12.26
7	2017-18	73.13	1025.08	6.37
8	2018-19	125.72	1834.15	71.91
9	2019-20	140.36	2059.38	11.64
10	2020-21	140.95	2068.46	.42

स्रोत : इंदौर सिटी डिवीजन

वार्षिक औसत वृद्धि दर 40.754 %

इंदौर जिले में सुकन्या समृद्धि योजना के खातों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। 2014-15 के बाद से खातों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है, जहाँ 2015-16 में 61.24 हजार खाते दर्ज हुए और 2020-21 तक यह बढ़कर 140.95 हजार हो गए। आधार वर्ष की तुलना में वृद्धि 2068.46% तक पहुंच गई, जबकि वार्षिक औसत वृद्धि दर लगभग 40.75% रही। यह डेटा दर्शाता है कि योजना में निवेश और जनसंख्या की जागरूकता में निरंतर सुधार हुआ है।

योजना के उद्देश्य:

1. लड़कियों की शिक्षा के लिए बचत को प्रोत्साहित करना।
2. लड़कियों के विवाह के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करना।
3. समाज में बेटियों के प्रति सकारात्मक सोच किसित करना।

सुकन्या योजना के लाभ/गुण:

1. आर्थिक सुरक्षा- बेटियों की शिक्षा और विवाह के लिए वित्तीय सुरक्षा मिलती है।
2. उच्च ब्याज दर - अन्य बचत योजनाओं की तुलना में बेहतर ब्याज दर मिलती है।
3. कर में छूट - जमा राशि और ब्याज पर कर लाभ मिलता है।
4. बेटियों के प्रति सकारात्मक सोच - समाज में बेटियों के भविष्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है।

इन्दौर जिले में सुकन्या समृद्धि योजना का कार्यान्वयन-इन्दौर जिले में सुकन्या समृद्धि योजना का प्रचार-प्रसार डाकघरों और बैंकों द्वारा किया जाता है। यह क्षेत्र मध्यप्रदेश का आर्थिक और औद्योगिक केंद्र है, जहाँ शिक्षा का स्तर और जागरूकता अन्य जिलों की तुलना में अधिक है। इसके बावजूद, कुछ ग्रामीण और शहरी गरीब वर्गों में योजना के प्रति जागरूकता और पहुँच सीमित है।

1. जागरूकता कार्यक्रम-इन्दौर जिले में सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएँ सुकन्या समृद्धि योजना के प्रचार में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। स्कूलों, आँगनवाड़ियों और ग्राम पंचायतों के माध्यम से बालिकाओं के माता-पिता को योजना के लाभों के बारे में जानकारी दी जाती है।
2. खाता खोलने की प्रक्रिया-इन्दौर में डाकघरों और बैंकों में सुकन्या समृद्धि खाता खोलने की प्रक्रिया सरल है, लेकिन कभी-कभी दस्तावेज़ीकरण की समस्याएँ और तकनीकी अव्यवस्थाएँ सामने आती हैं।

लाभार्थियों की स्थिति -इंदौर जिले में सुकन्या समृद्धि योजना के अंतर्गत हजारों खाते खोले गए हैं। शहरी क्षेत्रों में जागरूकता अधिक होने के कारण लोग इस योजना का लाभ उठा रहे हैं। हालांकि, ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता की कमी के कारण अपेक्षाकृत कम खाते खोले गए हैं।

योजना के प्रति लोगों की जागरूकता:

1. इंदौर शहर में अधिकांश मध्यमवर्गीय परिवार सुकन्या समृद्धि योजना के बारे में जानते हैं।
2. शहरी क्षेत्र - बैंकिंग सेवाओं की सुलभता और मीडिया के प्रचार-प्रसार के कारण जागरूकता अधिक है।
3. ग्रामीण क्षेत्र - पोस्ट ऑफिस तक पहुँच की कमी और जागरूकता अभियानों के अभाव के कारण योजना का क्रियान्वयन कमजोर है।

सुकन्या योजना का आलोचनात्मक मूल्यांकन

सकारात्मक पहलू:

1. उच्च ब्याज दर - सुकन्या समृद्धि योजना में मिलने वाली ब्याज दर अन्य बचत योजनाओं की तुलना में अधिक है।
2. कर लाभ - इस योजना के अंतर्गत जमा की गई राशि पर आयकर अधिनियम की धारा 80उ के तहत कर में छूट मिलती है।
3. भविष्य की वित्तीय सुरक्षा - लड़कियों की शिक्षा और विवाह जैसे महत्वपूर्ण खर्चों के लिए एक निश्चित बचत का प्रावधान।
4. सरकारी गारंटी- यह योजना सरकार द्वारा समर्थित है, इसलिए इसमें जोखिम कम है।

नकारात्मक पहलू:

1. जागरूकता की कमी - ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी इस योजना के बारे में पर्याप्त जागरूकता नहीं है।
2. नकद जमा की आवश्यकता - डिजिटल लेन-देन की सुविधा सीमित होने के कारण कई लोगों को पोस्ट ऑफिस जाकर नकद जमा करना पड़ता है।
3. लंबी अवधि का लॉक-इन - खाता 21 वर्ष के लिए लॉक होता है, जो कई परिवारों के लिए असुविधाजनक है।
4. महंगाई का प्रभाव - भविष्य में महंगाई बढ़ने पर जमा की गई राशि की क्रय शक्ति कम हो सकती है।

इन्दौर जिले में योजना से संबंधित चुनौतियाँ-हालाँकि सुकन्या समृद्धि योजना के कई लाभ हैं, लेकिन इन्दौर जिले में इसके कार्यान्वयन में कुछ चुनौतियाँ भी देखी गई हैं-

1. जागरूकता की कमी - ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों में योजना के प्रति जानकारी का अभाव है।

2. तकनीकी समस्याएँ – डाकघरों और बैंकों में ऑनलाइन सेवाओं की कमी के कारण खाता खोलने में देरी होती है।
3. लिंग असमानता – कुछ समुदायों में अभी भी बेटों की तुलना में बेटियों को कम प्राथमिकता दी जाती है।
4. दस्तावेज़ीकरण की समस्याएँ – गरीब परिवारों में आवश्यक दस्तावेज जैसे कि जन्म प्रमाण पत्र, जन्म की सही तारिक आदि का न होना एक बड़ी बाधा है।
5. डिजिटल सारक्षता की कमी – ऑनलाइन बैंकिंग की सुविधा का अभाव और डिजिटल साक्षरता की कमी से योजना का प्रचार-प्रसार सीमित हो रहा है।

समाधान और सुझाव:

1. जागरूकता अभियान -शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों, आँगनवाड़ियों और पंचायतों के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाए जाएँ।
2. तकनीकी सुधार – डाकघरों और बैंकों में तकनीकी सुविधाओं में सुधार कर बढ़ावा दिया जाए।
3. महिलाओं की भागीदारी – महिला स्वयं सहायता समूहों को योजना के प्रचार-प्रसार में शामिल किया जाए।
4. सरलीकृत प्रक्रिया – दस्तावेज़ीकरण की प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाया जाए।

निष्कर्ष – सुकन्या समृद्धि योजना एक महत्वपूर्ण और दूरगामी सोच वाली योजना है, जिसका उद्देश्य बेटियों के भविष्य को सुरक्षित करना है। यह योजना इन्दौर जिले में बालिकाओं के उज्ज्वल भविष्य के लिए एक प्रभावी पहल है। हालाँकि, इस योजना के सफल क्रियान्वयन के लिए जागरूकता में वृद्धि, तकनीकी सुधार, और सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव की आवश्यकता है। यदि इन चुनौतियों को सुलझा लिया जाए तो यह योजना बेटियों के भविष्य को सुरक्षित बनाने में एक मील का पत्थर साबित हो सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. कुमार, एस. (2023),'सुकन्या समृद्धि योजना : एक वित्तीय समावेशन पहल का विश्लेषण', इंडियन जर्नल ऑफ फाइनेंस एंड इकोनॉमिक्स,12(1),45-60।
2. शर्मा, आर. (2022),'भारत में बालिका सशक्तिकरण: नीतियाँ और प्रभाव', नई दिल्ली: शिक्षा प्रकाशन।
3. यादव, पी. (2021),'ग्रामीण भारत में वित्तीय समावेशन और बचत योजनाएँ', मुंबई: सामाजिक अध्ययन संस्थान।
4. मिश्रा, के. (2020),'सामाजिक कल्याण योजनाओं का मूल्यांकन: एक नीति विश्लेषण', वाराणसी: गंगा पब्लिकेशन्स।
5. सिंह, वी. (2018),'महिला कल्याण योजनाएँ और उनका सामाजिक प्रभाव', पटना: राष्ट्रीय नीति अनुसंधान केंद्र।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

स्वामी दयानंद सरस्वती के वैचारिक आंदोलन का भारतीय शिक्षा नीति पर प्रभाव

हीरा लाल अहीर* डॉ. राखी शर्मा **

* शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र) विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत
** सह-प्राध्यापक (शिक्षाशास्त्र) विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – स्वामी दयानंद सरस्वती वह महान संत थे जिन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, रूढ़िवादिता और तमाम प्रकार के आडंबरों का डटकर विरोध किया। उन्होंने हमेशा ऐसे अमानवीय आचरण के विरुद्ध आवाज उठाई जो समाज के विकास में बाधक थे। स्वामी जी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने और हिन्दू धर्म के गौरव को पुन: स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके इन महान कार्यों के लिए भारतीय समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा।

स्वामी दयानंद सरस्वती के शिक्षा संबंधी विचार और उनके द्वारा किए गए सामाजिक सुधार के प्रयासों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। उनके विचारों और कार्यों को समझने के लिए विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को समग्र रूप से शामिल करते हुए इस विषय पर गहराई से अध्ययन किया गया है।

शब्द कुंजी – स्वामी दयानंद सरस्वती, अज्ञानता, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता।

प्रस्तावना – स्वामी दयानंद सरस्वती भारतीय समाज सुधार आंदोलन के प्रमुख पुरोधा थे, जिन्होंने समाज में व्याप्त अज्ञानता, अंधविश्वास और रूढ़िवादिता के विरुद्ध अपने जीवन को समर्पित किया। उनका जन्म सन् 1824 में गुजरात के टंकरा नामक स्थान पर हुआ था। बचपन में उनका नाम मूलशंकर था। स्वामी दयानंद का प्रारंभिक जीवन धार्मिक संस्कारों से परिपूर्ण था, और उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा संस्कृत भाषा में प्राप्त की।

स्वामी दयानंद ने स्वामी विरजानंद के सान्निध्य में वेदों और उपनिषदों का गहन अध्ययन किया। शिक्षा पूर्ण करने के उपरांत, अपने गुरु के आदेशानुसार उन्होंने समाज में व्याप्त अज्ञानता को दूर करने के लिए देशभर में भ्रमण किया। इसी यात्रा के दौरान उन्होंने अनुभव किया कि समाज रूढ़िवादिता और अंधविश्वास के कारण पतन की ओर बढ़ रहा है। इस स्थिति को सुधारने के लिए उन्होंने सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना की, जिसका उद्देश्य समाज में सत्य, धर्म और ज्ञान का प्रसार करना था। स्वामी दयानंद ने अपने विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रंथ की रचना की, जिसमें उन्होंने समाज को अज्ञानता से मुक्ति दिलाने के लिए सत्य, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्क पर आधारित जीवन जीने का संदेश दिया। उनका योगदान भारतीय समाज में एक नई चेतना का संचार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. स्वामी दयानंद सरस्वती के पुनर्जागरण में योगदान का गहनता से अध्ययन करना।
2. सामाजिक कार्यों के माध्यम से मानव कल्याण के लिए किए गए प्रयासों का अध्ययन करना।
3. स्वामी दयानंद के जनकल्याणकारी कार्यों का समाज पर क्या असर पड़ा, इसका अध्ययन करना।
4. स्वामी दयानंद के विचारों का भारतीय समाज में जागरूकता और बदलाव के संदर्भ में अध्ययन करना।

शोध-प्रविधि – प्रस्तुत शोध पत्र ऐतिहासिक विश्लेषण एवं वर्णनात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है। इसमें शोध सामग्री का संकलन प्रमुख ग्रंथों, पुस्तकों एवं विश्वसनीय स्रोतों से किया गया है। वस्तुत: यह शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है, जिसमें विभिन्न स्रोतों का अध्ययन कर निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने भारतीय समाज में शिक्षा के महत्व को गहराई से समझा और अपने विचारों के माध्यम से शिक्षा को एक नई दिशा प्रदान की। उनके शिक्षा संबंधी विचारों का विस्तार से उल्लेख उनके प्रसिद्ध ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय और तृतीय समुल्लास में मिलता है। स्वामी जी का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान देना नहीं, बल्कि व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आत्मिक विकास को सुनिश्चित करना है। उन्होंने शिक्षा को समाज सुधार का एक प्रभावी माध्यम बताया और इसे राष्ट्र निर्माण की महत्वपूर्ण कड़ी माना।

स्वामी दयानंद का मानना था कि व्यक्ति समाज की सबसे छोटी इकाई है। यदि व्यक्ति का समग्र विकास हो जाए, तो समाज का विकास स्वत: ही संभव है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। इसलिए शिक्षा को हर व्यक्ति तक पहुँचाना आवश्यक है। उनके अनुसार, माता-पिता, शिक्षक और समाज का यह दायित्व है कि वे बच्चों को ज्ञान, अच्छे संस्कार और सद्गुण प्रदान करें ताकि वे समाज के लिए उपयोगी बन सकें।

स्वामी दयानंद ने शिक्षा को समाज और राज्य का महत्वपूर्ण दायित्व बताया। उन्होंने यह सुझाव दिया कि राज्य को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हर बालक को उचित शिक्षा मिले। उन्होंने अपने ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में

उल्लेख किया कि माता-पिता को अपने बच्चों को पांच से आठ वर्ष की आयु के बीच विद्यालय अवश्य भेजना चाहिए। स्वामी जी ने इस बात पर बल दिया कि जो माता-पिता अपने बच्चों को विद्यालय नहीं भेजते, उन्हें दंडित किया जाना चाहिए ताकि शिक्षा का महत्व हर व्यक्ति समझे और समाज में निरक्षरता समाप्त हो सके।

स्वामी दयानंद ने शिक्षा को केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित न रखते हुए इसे समाज सुधार का महत्वपूर्ण साधन माना। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से समाज में व्याप्त अज्ञानता, अंधविश्वास और रूढ़िवादिता को समाप्त करने का प्रयास किया। उन्होंने शिक्षा को व्यक्ति के चरित्र निर्माण और नैतिक उत्थान का आधार माना। उनका विश्वास था कि शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर, संस्कारवान और समाज के प्रति उत्तारदायी बनाती है।

स्वामी दयानंद ने बालक-बालिकाओं दोनों के लिए समान शिक्षा पर विशेष जोर दिया। उस समय समाज में स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, जिसे उन्होंने समाज के पतन का प्रमुख कारण बताया। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि शिक्षा का अधिकार हर व्यक्ति को समान रूप से मिलना चाहिए, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री। स्वामी जी के अनुसार, जो लोग स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखते हैं, वे समाज के विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं।

स्वामी दयानंद ने वैदिक काल के उदाहरण देते हुए बताया कि उस समय स्त्रियां शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी थीं। उन्होंने गार्गी, मैत्रेयी, सुलभा और कात्यायनी जैसी विदुषियों का उल्लेख किया, जिन्होंने ज्ञान के क्षेत्र में महान उपलब्धियां हासिल की थीं। स्वामी दयानंद का मानना था कि यदि स्त्री शिक्षित होगी, तो परिवार और समाज का विकास तेजी से होगा। उनके इन विचारों से प्रेरित होकर महात्मा मुंशीराम और लाला देवराज जैसे आर्य समाज के नेताओं ने कन्या पाठशालाओं की स्थापना की, जिससे स्त्री शिक्षा को बढ़ावा मिला।

स्वामी दयानंद ने शिक्षा के महत्व को समझते हुए आर्य समाज के 28 नियमों में आर्य विद्यालयों की स्थापना को विशेष स्थान दिया। उन्होंने इन विद्यालयों में वेदों और प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन को अनिवार्य बनाया ताकि विद्यार्थियों को सत्य, धर्म और नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जा सके। इसके अतिरिक्त, स्वामी जी ने परोपकारिणी सभा के उद्देश्यों में अनाथ और निर्धन बच्चों की शिक्षा पर भी विशेष ध्यान देने का निर्देश दिया।

स्वामी दयानंद सरस्वती का शिक्षा दर्शन आज भी समाज के लिए प्रेरणादायक है। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्ति को रोजगार दिलाना नहीं, बल्कि उसे ऐसा नागरिक बनाना है जो अपने कर्तव्यों को समझे और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का पालन करे। उनके विचार शिक्षा को व्यक्ति के समग्र विकास का आधार मानते हैं, जो आज के युग में भी अत्यंत प्रासंगिक है।

स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा प्रतिपादित शिक्षा संबंधी विचारों ने भारतीय समाज में जागरूकता और सुधार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके प्रयासों से न केवल शिक्षा का प्रसार हुआ, बल्कि समाज में व्याप्त अज्ञानता, कुप्रथाओं और अन्याय के खिलाफ एक नई चेतना का संचार हुआ। उनकी शिक्षा नीति का उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना था, जो ज्ञान, नैतिकता और मानवता के मूल्यों पर आधारित हो।

निष्कर्ष – महर्षि दयानंद सरस्वती ने समाज को जागरूक करने के लिए शिक्षा को सबसे प्रभावी साधन माना। उन्होंने मंदिर निर्माण, विवाह, मृत्यु आदि अवसरों पर अनावश्यक खर्च को हतोत्साहित करते हुए उस धन को शिक्षा के प्रसार में लगाने का परामर्श दिया। उनका विश्वास था कि समाज में व्याप्त अज्ञानता, अंधविश्वास और रूढ़ियों का समाधान केवल शिक्षा के माध्यम से ही संभव है।

स्वामी दयानंद का मानना था कि शिक्षा व्यक्ति को सही-गलत का निर्णय करने की समझ प्रदान करती है। शिक्षा ही मनुष्य को अंधकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर, और मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाती है। ज्ञान ही वह साधन है जो मनुष्य को जीवन में सफल बनाकर उसे समाज के कल्याण के लिए प्रेरित करता है। स्वामी दयानंद के अनुसार, शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जो समाज में सकारात्मक बदलाव लाए और मानवीय मूल्यों को बढ़ावा दे। उन्होंने अपनी रचना 'सत्यार्थ प्रकाश' में शिक्षा पद्धति का विस्तार से वर्णन करते हुए इस बात पर बल दिया कि शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्या का अर्जन न होकर समाज में नैतिकता, सद्भावना और सेवा के संस्कार उत्पन्न करना भी होना चाहिए।

महर्षि दयानंद सरस्वती के शिक्षा संबंधी विचार आज भी समाज को प्रगति के मार्ग पर ले जाने के लिए प्रेरणादायक हैं। उनका शिक्षादर्शन व्यक्ति के समग्र विकास, समाज के सुधार और राष्ट्र निर्माण के लिए एक महत्वपूर्ण आधारशिला के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. संपादक, पं. भगवद्दत्ता, सत्यार्थ प्रकाश, प्रथम संस्करण, सरस्वती भवन प्रकाशन, दिल्ली ,2012.
2. पराशर, संदीप, स्वामी दयानंद सरस्वती, प्रथम संस्करण, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली ,2005 .
3. भाटिया, सुदर्शन, स्वामी दयानंद सरस्वती, प्रथम संस्करण, ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली, 2004.
4. मित्तल, डॉ. सतीश चंद्र, भारत का सामाजिक आर्थिक इतिहास, प्रथम संस्करण ,प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली,2005.
5. दास, एम.एन., पुरी, बी.एन., चोपड़ा, पी.एन., भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास (खंड 3), प्रथम संस्करण, सागर पब्लिकेशन, नई दिल्ली 1975.
6. शर्मा, रामकिशोर, दयानंद और भारतीय समाज सुधार आंदोलन, प्रथम संस्करण, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2010
7. अग्रवाल, महेश चंद्र, भारत में आर्य समाज का प्रभाव, प्रथम संस्करण, जयपुर, राजस्थान प्रकाशन मंडल, जयपुर, 2013
8. त्रिपाठी, हरिनारायण, महर्षि दयानंद के समाज सुधार कार्य, द्वितीय संस्करण, लखनऊ, साहित्य भवन प्रकाशन, 2011

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

नवीकरणीय ऊर्जा : भविष्य की आवश्यकता

प्रो. रेणुका पाटीदार*

* सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) भेरुलाल पाटीदार शा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू, जिला इंदौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – पृथ्वी पर सभी जीवन रूपों को अपने विकास के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। हम इसे विभिन्न स्रोतों से प्राप्त करते हैं। इस प्रकार, आप देखते हैं कि कपड़े से लेकर भोजन तक जो कुछ भी आप उपयोग करते हैं, वह सब हम पृथ्वी पर मौजूद संसाधनों से प्राप्त करते हैं। दैनिक मानवीय गतिविधियों के लिए ऊर्जा का मुख्य स्रोत प्राकृतिक संसाधन हैं। हालाँकि, इन संसाधनों का उपयोग करने से हमारे आस-पास का वातावरण भी प्रभावित होता है। इस प्रकार, आप देखते हैं कि हमारे पास नवीकरणीय ऊर्जा और गैर-नवीकरणीय ऊर्जा है। ऊर्जा देश के आर्थिक विकास के लिए प्रमुख संसाधन हैं। प्राकृतिक वातावरण से प्राप्त होने वाला कोई भी स्थाई ऊर्जा स्त्रोत एक अक्षय ऊर्जा स्त्रोत हैं। नवीकरणीय ऊर्जा वह ऊर्जा हैं जो प्राकृतिक प्रक्रियाओं से उत्पन्न होती हैं और लगातार पुन: भरती रहती हैं। ये स्त्रोत लगातार नवीकृत होते रहते हैं और खत्म नहीं होते। चूँकि विश्व स्तर पर धारणीय सतत विकास की अवधारणा पर जोर दिया जा रहा हैं। अत: यह नवीकरणीय ऊर्जा संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा दिए गए सतत विकास के 17 लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण संसाधन की भूमिका निभाती हैं। इस शोध पत्र में हम नवीकरणीय ऊर्जा के प्रकार , उसके साधन एवं महत्व के बारे में विस्तारपूर्वक जानेगे।

शब्द कुंजी – सतत विकास , आर्थिक विकास , प्रदूषण , संयुक्त राष्ट्र संघ।

प्रस्तावना – किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए ऊर्जा एक आवश्यक संसाधन हैं। बिना ऊर्जा के कोई भी देश आर्थिक विकास की ओर नहीं बढ़ सकता हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या और अर्थव्यवस्था के विकास की होड में पारंपरिक ऊर्जा संसाधनों का तेजी से दोहन हुआ हैं। नतीजतन इन संसाधनों की कमी होती चली गई और मनुष्य को ऐसे संसाधनों की जरूरत महसूस हुई जो प्रकृति की रक्षा करते हुए एवं आने वाली पीढ़ियों के लिए संसाधनों की बचत करते हुए विकास में भागीदार बने। चूँकि चिंता पूरे विश्व की थी अत: साल 1992 में ब्राजील के रियो डी जनेरियो में पर्यावरण सम्मेलन हुआ। जिसमे धारणीय विकास की अवधारणा पर बल दिया गया। इस सम्मेलन का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य था भावी पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करना एवं विश्व के सामने आने वाली तत्काल पर्यावरणीय , राजनीतिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना करना। 14 अक्टुबर 2016 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में वैश्विक धारणीय विकास लक्ष्य के 17 ऐसे पक्षों को अपनाने के लिए प्रतिबद्धता दिखाई। वास्तव में धारणीय विकास सम्पूर्ण विश्व में मानवीय गरिमा, समृद्धि , जैव मण्डल के संरक्षण तथा शांति एवं सुरक्षा को बढ़ावा देने से जुड़ा हुआ हैं। भारत के लिए इन चुनौतियों को स्वीकार करना बहुत कठिन हैं। चूँकि संयुक्त राष्ट्र संघ के 17 धारणीय विकास लक्ष्यों में भारत की मुख्य समस्याओं जैसे स्वास्थ्य, खाद्यान, शहरों का बुनियादी विकास, ऊर्जा स्त्रोतों का संतुलित प्रयोग, गरीबी उन्मूलन, असमानता, स्वच्छता, जलवायु परिवर्तन एवं पारिस्थितिकी तंत्र शामिल हैं , इसलिए यह भारत के लिए सामाजिक विकास का सुनहरा अवसर भी हैं।संयुक्त राष्ट्र संघ के 17 लक्ष्यों में से सातवा लक्ष्य सभी के लिए किफायती, विश्वसनीय, टिकाऊ और आधुनिक ऊर्जा तकपहुँचसुनिश्चित करना हैं। सन 1990 से 2010 के बीच बिजली तक पहुँचरखने वाले लोगों की संख्या में 17 बिलियन की वृद्धि हुई हैं और जैसे – जैसे वैश्विक जनसंख्या बढ़ती जा रही हैं वैसे-वैसे सस्ती ऊर्जा की मॉग भी बढ़ती जा रही हैं। जीवाश्म ईंधन पर निर्भर वैश्विक अर्थव्यवस्था और ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन में वृद्धि हमारे जलवायु तंत्र में भारी बदलाव ला रही हैं। इसका हर महाद्वीप पर स्पष्ट प्रभाव पड़ रहा हैं। इसलिए वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोतों को प्रोत्साहित करने के लिए एक नया अभियान चलाया गया हैं, जो अक्षय ऊर्जा के नाम से जाना जाता हैं। सन 2011 में अक्षय ऊर्जा से वैश्विक बिजली उत्पादन में 20 प्रतिशत से अधिक की हिस्सेदारी थी जिसमे लगातार वृद्धि हुई हैं।

नवीकरणीय ऊर्जा के प्रमुख प्रकार – नवीकरणीय संसाधन वे हैं जिनमें समय के साथ फिर से भरने की शक्ति होती है। ये मूलत: पाँच हैं। वे सौर, पवन, बायोमास, भूतापीय और जलविद्युत हैं। वे असीमित हैं और हम उनसे बाहर नहीं निकल सकते।

सौर ऊर्जा – हम जानते हैं कि सूर्य ऊर्जा का एक बड़ा स्रोत है। हम इस ऊर्जा को इकट्ठा करके उसे गर्मी और बिजली में बदल सकते हैं। हमारे लाभ के लिए इसका उपयोग करने के अन्य उपयोगी तरीके भी हैं। हालाँकि, सूर्य हमेशा दिखाई नहीं देता है, फिर भी, हम दिन के समय सौर पैनलों के माध्यम से इसका उपयोग कर सकते हैं।

इससे बिजली की बहुत बचत होगी। सौर ऊर्जा भविष्य है जिसे सभी को अपनाना चाहिए। यह बहुत किफायती भी है। इसके अलावा, यह छोटे समुदायों को बिजली देने के लिए भी पर्याप्त है।

नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एम .एन.आर.ई .) के अनुसार, भारत के भूमि क्षेत्र में प्रतिवर्ष 5000 ट्रिलियन-घंटे ऊर्जा प्राप्त होती है और अधिकांश भाग प्रतिदिन 4-7 किलोवाट-घंटे प्रति वर्ग मीटर ऊर्जा प्राप्त करते हैं। इसे फोटोवोल्टिक सेल के माध्यम से विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित

किया जाता है। पूरे देश की बिजली की आवश्यकता की पूर्ति के लिये कुल प्राप्त सौर ऊर्जा का एक छोटा सा हिस्सा ही पर्याप्त है। राष्ट्रीय सौर ऊर्जा संस्थान के अनुमान के अनुसार, 3 प्रतिशत बंजर भूमि क्षेत्र को सौर फोटोवोल्टिक मॉड्यूल से कवर किये जाने से लगभग 748 गीगावाट बिजली उत्पन्न हो सकती है। जो भारत सरकार द्वारा लक्षित 100 गीगावट से कहीं अधिक है।

'सौर ऊर्जा न केवल वर्तमान में बल्कि 21वीं सदी में ऊर्जा जरूरतों का एक प्रमुख स्रोत बनने जा रही है क्योंकि सौर ऊर्जा निश्चित, शुद्ध और सुरक्षित है।'– प्रधानमंत्री श्रीनरेंद्र मोदी

जल ऊर्जा – जल ऊर्जा से तात्पर्य उस शक्ति से है जिसे हम बहते पानी की गतिज ऊर्जा के माध्यम से उत्पन्न करते हैं। पानी का द्रव्यमान बहुत अधिक होता है इसलिए बहते पानी का वेग बहुत अधिक होता है। इस प्रकार, इस वेग का उपयोग करके ऊर्जा बनाई जा सकती है।

हालाँकि, सूर्य के प्रकाश की तरह ही, किसी क्षेत्र में बहता पानी अप्रत्याशित होता है। फिर भी, हम इस ऊर्जा का उपयोग विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, बाँध और कृत्रिम झीलें जरूरत के समय हमारी कई बार मदद करती हैं।

केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण (सी.ई.ए.) द्वारा किये गए आकलन के अनुसार, भारत में 1,48,700एम.डब्ल्यू. की आर्थिक रूप से दोहन योग्य पनबिजली क्षमता है। यदि 94,000एम.डब्ल्यू. के पंप स्टोरेज की संभावित क्षमता में छोटी, लघु और सूक्ष्म जल विद्युत परियोजनाओं से लगभग 6700एम.डब्ल्यू. की संभावित क्षमता को शामिल किया जाए तो भारत की जलविद्युत क्षमता लगभग 2,50,000एम.डब्ल्यू. होगी। ऐसे में देखा जाए तो लंबे समय तक टिके रहने, कम लागत और उच्च दक्षता के साथ–साथ कई अन्य लाभों के बावजूद वर्तमान में इसके 30 प्रतिशत से भी कम का दोहन किया गया है। ऐसे में इसका समुचित दोहन कर 5 गीगावाट से कहीं अधिक नवीकरणीय ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है।

पवन ऊर्जा – पवन ऊर्जा एक बेहतरीन नवीकरणीय संसाधन है। इसका मतलब है हवा को दिशा में घुमाना जो ऊर्जा बनाने में मदद करता है। हम पवन ऊर्जा का उपयोग बिजली बनाने के लिए भी कर सकते हैं। यह बहुत किफायती भी है।

हालाँकि, सौर ऊर्जा की तरह ही, हवा के पैटर्न का भी अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। इसलिए, यह कभी–कभी ठीक से काम नहीं करता है, लेकिन, यह अभी भी एक बढ़िया विकल्प है।

राष्ट्रीय पवन ऊर्जा संस्थान (एन.आई.डब्ल्यू.ई.) द्वारा किये गए अध्ययन से ज्ञात होता है कि सात राज्यों– गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में पवन से बिजली उत्पादन की महत्त्वपूर्ण क्षमता है। भूमि सतह से 100 मीटर ऊपर (ए.जी.एल.) इन सात राज्यों की पवन ऊर्जा क्षमता 293 गीगावाट है और 120 मीटर ए.जी.एल. पर क्षमता 652 गीगावाट है। जो भारत सरकार द्वारा लक्षित 60 गीगावाट से कहीं अधिक है। ऐसे में सरकार त्वरित मूल्यह्रास लाभ के माध्यम से निवेश को प्रोत्साहित करके पवन ऊर्जा परियोजनाओं को बढ़ावा दे रही है।

अगर देखा जाए तो 7500 किमी. लंबी तटरेखा का प्राकृतिक लाभ होने के कारण भारत में अपतटीय पवन ऊर्जा का दोहन करने की अपार क्षमता है। इस अपार संभावना का लाभ उठाने हेतु भारत सरकार ने वर्ष 2015 में राष्ट्रीय अपतटीय पवन ऊर्जा नीति को अधिसूचित किया, जिसका प्राथमिक उद्देश्य देश के विशेष आर्थिक क्षेत्र (एस.ई.जेट.) में अपतटीय पवन ऊर्जा अवसंरचना में निवेश को प्रोत्साहित करना है।

जैव ईंधन – जैव ईंधन को बायोमास भी कहा जाता है। वे नवीकरणीय ऊर्जा के एक विविध और तेजी से बढ़ते रूप को दर्शाते हैं। हम जीवित चीजों से कई सामग्रियों को ऊर्जा में बदल सकते हैं।

उदाहरण के लिए, हम सड़ते हुए पौधों, कचरे, खाद और यहाँ तक कि सीवेज का भी उपयोग कर सकते हैं। ये ईंधन कार्बन फुटप्रिंट को कम करने में मदद करेंगे। इसके अलावा, यह कचरे के उचित निपटान में भी मदद करेगा। वर्तमान समय में इथेनॉल और बायोडीजल उपयोग में आने वाले सबसे प्रमुख जैव ईंधन में से हैं। इस दिशा में भारत सरकार जैव–ईंधन पर राष्ट्रीय नीति–2018 के माध्यम से सकारात्मक प्रयास भी कर रही है, जिसका उद्देश्य वर्ष 2030 तक पेट्रोल में 20 प्रतिशत और डीजल में 5 प्रतिशत मिश्रण के लक्ष्य के साथ जैव ईंधन के प्रसार में गति लाना है। ऐसे में जैव–ईंधन तेल आयात पर निर्भरता और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के साथ ही किसानों को अतिरिक्त आय प्रदान करने तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में सहायक हो सकता है।

महासागर और भूतापीय ऊर्जा – हम इस ऊर्जा को ऊष्मा ऊर्जा से प्राप्त करते हैं। यह ऊष्मा ऊर्जा पृथ्वी के भीतर से निकलती है। यह बहुत ही विश्वसनीय है और हम इसे स्थानीय स्तर पर आसानी से उत्पन्न कर सकते हैं। इसलिए, हम इसे बहुत ही लागत प्रभावी विकल्प के रूप में देखते हैं।

दूसरे शब्दों में, ऊष्मा पृथ्वी के केंद्र से पृथ्वी के मेंटल तक जाती है। इसके परिणामस्वरूप गर्म भूमिगत झरने बनते हैं। इसी तरह, हम इस ऊष्मा का उपयोग कई उद्देश्यों के लिए भी कर सकते हैं। इस प्रकार, भूतापीय ऊर्जा एक नवीकरणीय संसाधन के लिए एक बहुत ही उचित विकल्प है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि महासागर धरातल का 70 प्रतिशत भाग घेरे हुए हैं और ज्वार ऊर्जा, तरंग ऊर्जा, थर्मल ऊर्जा आदि रूप ऊर्जा की एक विशाल राशि का प्रतिनिधित्व करते हैं। हमारे समुद्र और महासागरों की ऊर्जा क्षमता हमारी वर्तमान ऊर्जा आवश्यकताओं से कहीं अधिक है। आँकड़ों के अनुसार, ज्वारीय और तरंग ऊर्जा के लिये अनुमानित ऊर्जा क्षमता क्रमश: 12,455एम.डब्ल्यू. और 41,300एम.डब्ल्यू.है। ऐसे में इन ऊर्जा स्रोतों के इष्टतम दोहन हेतु विभिन्न तकनीकों का विकास किया जा रहा है।

जबकि भूतापीय ऊर्जा पृथ्वी के भू–पृष्ठ में संग्रहित ऊष्मा के स्रोत के रूप में होती है, जो सतह पर गर्म स्रोतों के रूप में निकलती है। भारतीय भू–वैज्ञानिक सर्वेक्षण (जी.एस.आई.) ने अनुमान लगाया है कि भू–तापीय ऊर्जा से संभावित 10 गीगावाट बिजली क्षमता का दोहन किया जा सकता है।

हरित हाइड्रोजन– यह एक स्वच्छ ऊर्जा स्रोत है जो पवन, सौर और जलविद्युत जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करके जल के विद्युत–अपघटन (इलेक्ट्रोलिसिस) के माध्यम से उत्पादित किया जाता है। इस दिशा में ऊर्जा की अपार संभावनाओं को देखते हुए वर्तमान प्रधानमंत्री द्वारा वर्ष 2021 में भारत के 75वें स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्रीय हाइड्रोजन मिशन का शुभारंभ किया गया। इसका उद्देश्य भारत को एक 'हरित हाइड्रोजन हब' बनाना है जो वर्ष 2030 तक 5 मिलियन टन हरित हाइड्रोजन के उत्पादन और संबंधित नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता के विकास के लक्ष्य को पूरा करने में मदद करेगा।

भारत सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयास– भारत सरकार ने वर्ष 2070 तक नेट–जीरो कार्बन उत्सर्जन तथा वर्ष 2030 तक भारत की अक्षय ऊर्जा स्थापित क्षमता 500 जी.डब्ल्यू. तक विस्तारित करने का लक्ष्य रखा है। जिसे प्राप्त करने तथा नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने हेतु सरकार द्वारा कई प्रयास किये जा रहे हैं, जैसे– राष्ट्रीय बायोगैस और खाद्य प्रबंधन कार्यक्रम, सूर्यमित्र कार्यक्रम, सौर ऋण कार्यक्रम, पी.एम. –कुसुम योजना, उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना, सौर पार्क योजना, केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम (सी.पी.एस.यू.) योजना, हाइड्रोजन मिशन, अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन तथा बजट 2022–23 में भी वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने ऊर्जा दक्षता, विद्युत गतिशीलता, भवन निर्माण दक्षता, ग्रिड से जुड़े ऊर्जा भंडारण और हरित बॉण्ड के लिये कई घोषणाएँ कीं जो नवीकरणीय ऊर्जा को प्रोत्साहन देने में अहम भूमिका निभाएंगी।

ऐसे में अक्षय ऊर्जा में आत्मनिर्भरता भारत की आर्थिक और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये भी अहम है। आज आवश्यकता है कि भारत दूसरे देशों के लिये अक्षय ऊर्जा उपकरणों की आपूर्ति का एक स्रोत बने। उपर्युक्त विवरणों के आधार पर यह कहना अतिशयक्ति नहीं होगा कि यह क्षमता भारत में सुनिश्चित की जा सकती है और इसका व्यापक लाभ हम कई आयामों के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।

नवीकरणीय ऊर्जा का महत्व :

1. नवीकरणीय ऊर्जा से कार्बन और ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कम होता है वस्तुत: पृथ्वी इनका प्राकृतिक रूप से पुनर्भरण करती रहती है। ये पृथ्वी पर असीमित मात्र में उपलब्ध हैं तथा प्रदूषण रहित होने के कारण पर्यावरण हितैषी हैं।
2. नवीकरणीय ऊर्जा से जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम होती हैजलवायु परिवर्तन को कम करती हैं।
3. नवीकरणीय ऊर्जा आर्थिक विकास को बढ़ाती है।
4. नवीकरणीय ऊर्जा सेआयात पर निर्भरता कम होती है।
5. नवीकरणीय ऊर्जाअर्थव्यवस्था में विविधता लाती है।
6. नवीकरणीय ऊर्जा से जीवाश्म ईंधनों की अप्रत्याशित मूल्य उतार–चढ़ाव से सुरक्षा मिलती है।
7. नवीकरणीय ऊर्जा की लागत गैर–नवीकरणीय ऊर्जा की तुलना में कम होती है।
8. नवीकरणीय ऊर्जा गरीबी उन्मूलन में मदद करती हैनवीकरणीय ऊर्जा से समावेशी आर्थिक विकास होता है.।
9. नवीकरणीय ऊर्जा से जुड़े क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बनते हैंजिससे रोजगार के अवसर पैदा होते हैं ।
10. नवीकरणीय ऊर्जा संसाधन पारंपरिक ऊर्जा संसाधनों की अपेक्षा सस्ते एवं अधिक वहनीय हैं।
11. नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत ही भविष्य के ऊर्जा संसाधन है जो किसी भी राष्ट्र के धारणीय विकास को सुनिश्चित करेंगे।
12. यह धारणीय विकास लक्ष्य (एस डी जी) –7 'स्वच्छ एवं वहनीय ऊर्जा' के अनुकूल है।
13. चूँकि भारत कर्क रेखा पर अवस्थित है अत: भारत के अधिकांश भागों में वर्षभर सौर प्रकाश उपलब्ध रहता है, जिससे अत्यधिक मात्रा में सौर ऊर्जा का उत्पादन किया जा सकता है।

नवीकरणीय ऊर्जा के लाभ:

1. नवीकरणीय ऊर्जा पर्यावरण के अनुकूल होती है तथा इसमें न्यूनतम या लगभग शून्य कार्बन व ग्रीनहाउस उत्सर्जन होता है। जबकि इसके विपरीत जीवाश्म ईंधन ग्रीनहाउस गैस और कार्बन डाइऑक्साइड का काफी अधिक उत्सर्जन करते हैं।
2. नवीकरणीय संसाधनों से प्राप्त होने वाली ऊर्जा असीमित होती है। इसलिये इसे ऊर्जा का स्थायी स्रोत भी माना जाता है, जबकि जीवाश्म स्रोतों से प्राप्त होने वाली ऊर्जा के स्रोत सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं।
3. नवीकरणीय ऊर्जा रोजगार सृजन में भी सहायक है। काउंसिल ऑन एनर्जी, एन्वायरनमेंट एंड वॉटर (सी.ई.ई.डब्ल्यू.) की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत के 100000एम.डब्ल्यू. सौर ऊर्जा और 60000 एम.डब्ल्यू. पवन ऊर्जा क्षमता विकसित करने के लक्ष्य से लगभग 13 लाख (1–3 मिलियन) प्रत्यक्ष रोजगार सृजित होंगे।
4. नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग ऊर्जा के स्रोत के रूप में जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को भी कम करेगा। इससे वैश्विक स्तर पर ऊर्जा की कीमतों में काफी स्थिरता भी आएगी।
5. डब्ल्यू एच.ओ. की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में खाना पकाने में जीवाश्म ईंधन के इस्तेमाल की वजह से हर साल 5 लाख मौतें हो रही हैं। ऐसे में अक्षय ऊर्जा के प्रयोग को बढ़ावा देकर मानव स्वास्थ्य को बेहतर बनाया जा सकता है।
6. डब्ल्यू एच.ओ. एस.डी.जी.की रिपोर्ट के अनुसार, अक्षय ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देने से महिला सशक्तीकरण व लैंगिक समानता (एस.डी.जी.–5) में भी वृद्धि देखने को मिली है।
7. अक्षय ऊर्जा स्रोत ही भविष्य के ऊर्जा संसाधन हैं जो किसी भी राष्ट्र के धारणीय विकास (एस.डी.जी.–7– स्वच्छ एवं वहनीय ऊर्जा) को सुनिश्चित करेंगे। ऐसे में नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियाँ निरंतर बढ़ती जा रही हैं। अगर देखा जाए तो भारत पवन ऊर्जा क्षमता व सौर ऊर्जा क्षमता में चौथे स्थान पर है। देश में नवंबर 2022 तक गैर–जीवाश्म ईंधन स्रोतों से कुल 42 प्रतिशत ऊर्जा उत्पादन की क्षमता हासिल की जा चुकी है और इस दिशा में सरकार निरंतर आवश्यक कदम भी उठा रही है। बावजूद इसके इस क्षेत्र में कुछ चुनौतियाँ भी हैं, जो अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति में बाधक बन रही हैं।

नवीकरणीय ऊर्जा की चुनौतियाँ:

1. नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में भारत में अभी भी नए अनुसंधान, आधुनिक विकास सुविधाओं तथा बुनियादीढाँचे की कमी है।
2. भारत, नवीकरणीय ऊर्जा के उपकरण अनिवार्य रूप से चीन, जर्मनी आदि देशों से आयात करता है। ऐसे में प्रणाली लागतमें वृद्धि की समस्या इस दिशा में एक गंभीर चुनौती है।
3. शुरुआत में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की स्थापना हेतु निवेश की आवश्यकता होती है। ऐसे में अत्यधिक निवेश की आवश्यकता संस्थाओं तथा आम जनमानस दोनों को हतोत्साहित करती है।
4. हमारे देश में अधिकांशत: अच्छी योजनाएँ राजनीतिक व प्रशासनिक इच्छाशक्ति के अभाव में दम तोड़ देती हैं। ऐसे में इस दिशा में भी भूमि अधिग्रहण की समस्या, सरकारी अनुमोदन मिलने में देरी,सामग्री आपूर्ति सीमा आदि प्रमुख चुनौतियाँ हैं।
5. अक्षय ऊर्जा हेतु आज भी हमारे देश के बैंकों में सुविधाजनक ऋण सुविधा का अभाव है, जिसके कारण इसका लाभ आम जनमानस

आसानी से नहीं प्राप्त कर पा रहा है।

6. इस संदर्भ में आज भी आम जनमानस के बीच जागरूकता की कमी है, जिसके कारण अक्षय ऊर्जा को अपनाने की गति धीमी है।

ऐसे में उपर्युक्त चुनौतियों को दूर करने के साथ ही ग्रीन फाइनेंसिंग एक्सप्रेस, हाइड्रोजन ईंधन सेल आधारित वाहन और इलेक्ट्रिक वाहन तथा राज्यों के बीच आपसी सहयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिये। जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणामों को कम करने और अक्षय ऊर्जा स्रोतों को अपनाने हेतु लोगों, परिवारों, समुदायों, संगठनों, सरकार और अन्य हितधारकों को प्रासंगिक स्तरों पर शामिल किया जाना चाहिये ताकि इस दिशा में व्यापक परिवर्तन लाया जा सके।

इस प्रकार दुनिया की लगातार बढ़ती ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिये अक्षय ऊर्जा संसाधनों का उपयोग समय की मांग है और यह अनिवार्य भी है कि अधिकांश नई ऊर्जा की मांग को नवीकरणीय स्रोतों से पूरा किया जाए।

सारांश – संपूर्ण मानव समाज की बुनियादी जरूरतों की पूर्ति करने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में ऊर्जा एक इंजन का कार्य करती है। हम जानते हैं कि जनसंख्या बढ़ने के साथ-साथ ऊर्जा की मांग भी बढ़ती जा रही है। एक अनुमान के अनुसार, वर्ष 2040 तक देश में बिजली की खपत 1280 टेरावाट प्रति घंटा हो जाएगी। ऐसे में सीमित जीवाश्म-ईंधन आधारित ऊर्जा स्रोत हमारी भविष्य की इस मांग को पूरा करने में सक्षम नहीं हैं। देश की बढ़ती जरूरतों की पूर्ति हेतु ऊर्जा के नवीकरणीय संसाधनों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

इसलिए प्रकृति प्रदत्त नवीकरणीय उर्जा संसाधनों का अधिक से अधिक प्रयोग करने की जरुरत हैं और इन संसाधनों के विकास के लिए उन्नत तकनीक को विकसित करने की बड़ी चुनौती दूसरी अन्य चुनौतियों के साथ अभी भी मुँह बाहे खड़ी है। हालाँकि मानव ने हमेशा हर चुनौती का सफलतापूर्वक सामना किया हैं और उस पर विजय पाने में हमेशा सफल भी रहा है।

'अब समय आ गया है कि हम अपने ग्रह को जलाना बंद करें और अपने चारों ओर प्रचुर नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश करना शुरू करें।' (एंटोनियो गुटेरेस, यू.एन. महासचिव)

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. नवीकरणीय ऊर्जा चुनौतियाँ और समाधान (2024) पीटर यांग द्वारा।
2. नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत और जलवायु परिवर्तन शमन (2011) आईपीसीसी द्वारा।
3. अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी द्वारा सौर ऊर्जा परिप्रेक्ष्य (2011)।
4. वैकल्पिक उर्जा : राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक - क्रिस्टोफर ए. साइमन द्वारा ।
5. http://www.drishtiias.com
6. http://www.eia.gov
7. http://www.un.org
8. http://www.india.gov.in
9. http://www.akshayurja.gov.in

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Digital Farming: New Perspective in Agricultural Development

Dr. Kumud Dubey* Dr. Avinash Dube**

*MLC Govt. Girls P. G. College, Khandwa (M.P.) INDIA
** S. N. Govt. P. G. College, Khandwa (M.P.) INDIA

Abstract : Digital farming combines farmers knowledge with new age technologies. It is the use of technology to improve crop quality and yields. It provides necessary resources, knowledge and skills for farmers to grow crops with proper management of natural resources. Technology has a major role in farming and agriculture practices and with the advent of digital technology, the scope has widened. The more digital farming is adapted the more precise farming can be, which helps to more efficient use of raw material.

Introduction - Agriculture is one of the major sectors in India that provide livelihood to a people. The majority of Indian population depends on agriculture as it is the major source of income. It is the oldest practice in the history of mankind. There has been tremendous growth and evolution in the field of agriculture.

Agriculture is important for more than just food production. It supplies raw materials to business including textiles, medicines and biofuels. Agriculture in India is largely dependent on nature, but climate and global warming issuemake farming unpredictable. The need of the hoursis to educate farmers in the use of modern technology and innovative approaches to increase productivity and raise profitability. Technology has a major role in farming and agriculture practices and with the advent of digital technology, the scope has widened. The use of modern technology has helped farmers to increase the production of crops and livestock.

The use of new technologies has also reduced the cost of production. The adaption of new technology has also led to the development of new methods of marketing and also created new jobs in agriculture sector. The present study deals with new technologies applied in farming sector. Availability of smart and digital apparatus make the farmer more aware with their job so that they can achieve their best in terms of production and also with environment conservation.

Digital Farming can help farmers by:

1. Improve crop yield and quality- By making more information about planting new varieties, fertigation, pest control.
2. Save time and money- By using resources more efficiently.
3. Conserve Inputs: By applying resources precisely.
4. Reduce waste: Precise application of resources.
5. Improve compliance: By ensuring compliance with food standards and nutrition tracking.

Principles of Digital farming: Principles of digital farming includes:

1. Precision farming: Providing crops and soil with the exact amount of water, nutrients and pesticides they need.
2. Robotics: Using autonomous tracks and drones to improve logistics and data collection.
3. Data- analysis: Using big data analysis and remote sensing to improve farm management.
4. Artificial Intelligent: To predict genetic outcomes and plant breeding innovations.
5. Internet of things: To connect farmers directly to consumers.

Emerging Techniques for Digital and Smart Farming:

Digital farming apps: These apps can help farmers make informed decisions in real time by providing a range of features. These include-

1. Agrimarket: It provides the market price of crops in markets within 50 km of the users lacation. It uses the users mobile GPS to automatically capture their location.
2. Agribegri: It is a farming market place app that advice farmers.
3. Pusa Krishi: This app provide information about technologies developed by the IARI (Indian Agriculture Research Institute).
4. Agrivi: This help agranians manage their enterprises by tracking field activities, controlling product quality and checking compliance with standards.
5. IFFCO Kissan App: It provides customized information to Indian farmers make more informed decisions.

6. De- Haat Farmer App: It is a one step platform that provides multiple services as frequent crop reminders, voice calls in regional languages, crop advisories, weather report, local mandi rates.
7. MP KISAN App: For farmers of MP, provides information on crop insurance claim calculation and future insurance premiums.
8. Agri setu: Knowledge and experience sharing platform for farmers, experts, suppliers and Buyers.
9. AgriCentral: A technology based app helps to make better decisions and increase profitability.

Apart from these Many more apps like Cropin Grow ,PM Kisan GOI,ICT 4 farmers , Ag Assist, My Cattle Manager , KISAN,Meghdoot, Mobi Agri, Boomitra Farmer ,Crop Survey,CIC Digital AgriHub, Digitalani Farmer ,Agriappare there which can serve for the betterment for Agriculture.

Soil Sensors: Nature of soil plays crucial role for farmers. By knowing the nature of soil farmer can enhance production and quality of products. Now a days various types of Soil Sensors are available by which one can know about Soil pH, Soil Temperature and humidity, Soil moisture etc.

Remote Sensing tools: Remote sensing tools are another add to help farmers. A small amount of wavelength from electromagnetic spectrum are used in remote sensors having application for agriculture purpose. The energy coming to plants in form of electromagnetic wave can be reflected, absorbed or transmitted by the plant. The reflection, absorption and transmission depends on the nature of plant and wavelength of energy. Remote sensing tools helps farmers in monitoring crop, monitoring water conditions, predicting weather condition, observing soil and air quality.

In addition to above tools devices like food sensors, Guidence and Tracing system, Variable rate input technology, Automatic section control, Automatic machinery and agriculture Robots, Drones can serve crucial role in farming digitalization.

By making use of new farming techniques farmer can achieve optimal crop development.

Digital Farming in Indian Context (Our Region): Digital agriculture has to be customized to be applicable to a typical Indian small farm if we want digital agriculture to be suitable and be available to a majority of Indian farms.Precise financial estimates of the cost of the technology per unit of land, per individual farmer and corresponding savings and return on investments are not available yet in Indian context. Thus, for digital agriculture to succeed in urban areas of India, the innovations must focus on low cast technology, easily portable hardware, policy renovations towards facilitating digital agriculture, renting and sharing platforms for agriculture equipment and machinery.In order to ensure its widespread adoption, the entire value chain will need to work together and come to an agreement on how to address these issues.

To promote digitization in agriculture, Digital agriculture Mission was launched in September 2024 by Govt. of India. In our area digital farming is steadily progressing with government actively promoting the use of technologies like GIS, remote sensing, digital platforms for market assessment and crop advisory services.

Some areas where progress is being made are pilot projects are implemented in certain districts to introduce precision farming practices, crop insurance registration is linked with land records and trainings to educate farmers on using digital tools and platforms. During interaction with farmers of Nimar and Malwa region it is found that the use of digital tools are not so common although they are using apps like *Damini*and social media platform.

Simultaneously some challenges, as not all farmers are comfortable using digital tools, and uneven internet connecting in rural areas, accurate data collection for local area are existing which require continued efforts and ensure equitable access to digital technologies for all farmers.

Conclusion: Digital agriculture is ICT and data ecosystem to support the development delivery of timely targeted information and services to make farming profitable, sustainable, delivery safe, nutrients and affordable food for all.Since farmlands varies in different areas a “one size fits all” management approach won’t work for every farmer. The digital transformation of agriculture has the potential to benefit all farmers independent of size. Not all digital tools benefit all farmers equally but they open the door for a more diverse offering of tailored solutions to bring the most possible benefit to each farmer and each field. As the agriculture is the foundation of civilization and stable economy. We can say that to get more precise farming it is needed to adopt more digital farming.

References: -

1. Beriya Abhishek (2020), Digital Agriculture: Challenges and possibilities in India, CSD working paper series.
2. Mahindru T. (2019), Role of Digital and AI technologies in Indian agriculture: Potential and way forword, NitiAyog, Govt. of India.
3. Narendra V. N. etal. (2019), Digital Agriculture, Bulletin of Environment, pharmecology and life- Science, vol. 8(6), May, pp 164-170.
4. Roy P. &Saha P. (2022), Digital agriculture, the future of Indian farming., food and scientific report, pp 10-14.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Digital Data Protection and Artificial Intelligence: A New Era in the World

Deepika Joshi *

*Research Scholar (Computer Science and I.T.) Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth University, Udaipur (Raj.) INDIA

Abstract : The modern world is encountering new challenges, and the nature and forms of crime have transformed. Where earlier physical conflicts dominated criminal activities, today, online and digital platforms have taken their place. Most work is now conducted digitally. All government schemes are being provided online, which requires individuals to share their personal information. At the same time, the use of social media compels people to disclose much of their private information voluntarily. However, uploading personal data on social media always carries a risk of misuse. In the present times, digital data is considered the new gold, and the importance of data security is increasing globally. European countries have already implemented strict data protection laws. India is also advancing towards this direction. The introduction of artificial intelligence has brought a modern revolution that has significantly impacted various fields. Every sector is striving to make use of artificial intelligence, highlighting its importance in development. The primary objective of artificial intelligence is to make human life easier and to facilitate operations efficiently. This research paper will discuss the significance and need for digital data protection and how artificial intelligence plays a role in regulating it. It will also examine the current data protection laws and how artificial intelligence contributes to legal frameworks for data security.

Introduction - Human rights are not only necessary but also extremely important for an individual's independent and dignified way of life. Without them, one cannot even imagine living as a human being. If these rights include personal identity and biometric data, they become even more significant. The Universal Declaration of Human Rights (1948) under Articles 8, 12, 17, 18, 19, and 28 is associated with these rights. At the national level, Articles 19 and 21 of the Indian Constitution also pertain to such rights. The Supreme Court has elaborated on these rights through various judgments. In the Aadhaar card case, *Puttaswami (R) vs. Union of India* (2017) 10 SCC, privacy was declared a fundamental right. Human rights are ethical principles that establish certain standards of human behavior. These rights are recognized separately from national and international laws. They are considered "inalienable" rights, meaning they are inherent to humans from birth and remain with them even after death. They are not influenced by a person's age, place of residence, language, or other factors. In this era of modern technology, any individual's information can reach any corner of the world in an instant. A person's personal information may be misused, leading to violations of human and fundamental rights. The issue of data protection was raised in the Indian Parliament in September 2023.

Institution Made Stricter: The institution was made stricter, following the recommendations of the Krishna Committee. However, this issue becomes significant only when discussions about data collection are held for a limited period. However, human rights organizations do not consider it a violation, as the European Union has already established a special law for data collection. Hence, it is seen as a necessary process, but its implementation remains incomplete. India is one of the 27 countries worldwide where individuals are considered guilty of data theft and misuse. The collection of personal data in India is included in the list of potentially harmful activities.

Since the year 2000, information technology has been made stricter, which has led to increased cyber security measures over the last few years. However, business activities related to data protection have not been fully regulated. The Indian government passed the **Personal Data Protection Bill 2023**, which includes regulations on listening to personal data. However, the law is still unclear on some aspects and does not entirely prohibit violations of human rights.

European Union's Data Protection Regulation Law 2016:

1. This law will create new international standards, particularly for the protection of online information on platforms such as Facebook, and will address data

breaches.
2. Due to this new law, the European Union will once again establish control over its data.
3. The European Union has imposed penalties of up to 20 million euro's (24 million dollars) or 4% of the company's annual global revenue for data misuse by companies.
4. This law legally ensures that individuals must be clearly informed about how their data will be used and must give their consent for its usage.

Statistics: The **Constitution of Human Rights** in Article 3 recognizes the importance of digital data protection, aligning with the **Universal Declaration of Human Rights in 1948**.

1. When rights are linked to personal digital data, they become as crucial as the right to property in a traditional sense.
2. With the advent of modern technologies, digital data has become extremely valuable today.
3. Compared to European countries, India lacks stringent digital data laws, leading to increased violations of privacy rights.
4. According to NCRB data (December 2023), 65,893 cybercrimes were registered in India in 2022, marking a 24.4% increase compared to 2021.
5. According to IBM cyber security reports, on average, a cybercrime occurs every 39 seconds, affecting around 2,200 people globally.
6. The Cyber Security Annual Report 2023 highlights an increase in the number of phishing incidents in the Netherlands.
7. Data security issues were not addressed in educational policies.
8. In 2021, the Indian government failed to implement a national cyber security framework.
9. In 2021, there were 7,867 data breaches in India.
10. India lacks a well-established policy on data collection and its use.

Significant Decline in Data Protection: Major data breaches in the world:

1. The largest attack in Paris
2. Inadequate data protection laws - European Union, Iceland
3. Lack of data protection laws - Malaysia, Nauru

Other Countries' Laws:

1. GDPR (General Data Protection Regulation) is the data and privacy protection law of the European Union.
2. It holds a rightful place in human rights concerning data privacy issues.
3. It regulates the collection and use of personal data.
4. It mandates the security of stored data.
5. It allows individuals to control their personal data.
6. It gives people the right to amend and update their information.
7. It provides legal provisions for the excessive collection and misuse of data.
8. In 2020, Article 30 of the GDPR gave rise to the "Right to be forgotten".

USA

1. The USA does not have a uniform federal data privacy law, but it does cover health data, financial data, etc.

Switzerland

1. The data law guarantees the right to privacy.
2. Data processing without an individual's consent is restricted.

Britain

1. The Cyber Crime Act is the strictest in the world.
2. Storing any person's computer information illegally can result in 6 months in jail and a £70 fine.
3. Unauthorized data usage is a criminal offense.

Canada

1. Data must be stored in an encrypted form.
2. It is necessary to report if data is lost or leaked.

Importance of Data Ethics

Aspect	Description
Consent	Information Confidentiality
Security	Data Processing
Citizen Rights	Commercialization
Web User Assistance	Sending Commercial Messages

Key Points of the Personal Data Protection Act, 2003

1. This law applies to the storage of personal digital data.
2. The user must be informed about how their data will be used. If the data is transferred to goods or services outside India, consent is required.
3. Special permission is needed for processing sensitive data, and it should not be used for unauthorized purposes.
4. Organizations must keep personal data accurate, secure, and up-to-date, and delete data once the purpose is fulfilled.
5. Individuals have the right to access, modify, and delete their personal data.
6. If data privacy is violated, legal action can be taken.

Artificial Intelligence (AI): Artificial intelligence is a branch of computer science focused on developing systems that can simulate human cognitive abilities. AI is currently being used in various fields such as education, healthcare, telecommunications, and automation. Many other industries are also adopting AI-based solutions.

AI is classified into the following types:

1. **Specialized Artificial Intelligence**
2. **General Artificial Intelligence**
3. **Human-like Artificial Intelligence**

AI emerged as an academic discipline in the 1950s. Between 1970 and 1975, research in AI led to many significant developments. In the 21st century, AI has become an integral part of digital technology. In 1956, the AI sector was formally established.

The Prime Minister has emphasized India's participation in AI-driven solutions, highlighting its role in

economic growth. The first global summit on AI was held in India on October 29. With the rise of AI, discussions on ethical considerations have also emerged. Ethical AI usage is necessary to prevent harm. Governments worldwide are setting policies to regulate AI applications. AI should be implemented responsibly to avoid misuse.

In 2020, the Indian Data Security Council was established. In the report presented by this council, several government initiatives have been mentioned to ensure a secure, reliable, scalable, and safe cyber space in India. These initiatives in the direction of "Cyber Security by Data Security" include:

1. Cyber Security India Initiative
2. Cyber Hygiene Center
3. National Cyber Crime Reporting Portal
4. Indian Cyber Abuse Reporting Center
5. Information Technology Act 2000
6. Digital Data Act 2023

Conclusion: The government can issue such guidelines for individuals and private organizations that ensure the protection of information infrastructure and keep the process of data protection in place. It should implement such standards that align cyber users' roles with moral integrity and legal framework, preventing potential legal violations and ensuring ethical leadership in society.

References:-

1. Competitive Review / January 2024, 103
2. Civic Cyber Links / June 2022, 27
3. Indian Cyber Security Council - Manuscript
4. Secure Cyber Infrastructure - Policy Framework
5. Information Technology Act 2000 (Government of India)
6. Personal Digital Data Act - Gazette (Government of India)

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

The Future of Fintech and its Role in Streamlining the Commerce Experience

Dr. Preeti Anand Udaipure*

***Assistant Professor, Govt. Narmada College, Narmadapuram (M.P.) INDIA**

Abstract : By utilizing modern era like large information analytics, blockchain, and artificial intelligence to improve financial offerings, fintech is poised to revolutionize commerce within the future. Digital bills, cell banking, and on-line financing are examples of improvements which might be simplifying procedures, slicing fees, and improving person experiences. Blockchain ensures secure, transparent transactions, and AI gives predictive analytics and individualized monetary advice. Real-time client behaviour research is made feasible via huge data analytics, which enables with focused advertising and consumer engagement. FinTech integration with e-trade platforms streamlines payments with functions like buy now, pay later selections and one-click transactions. This industry will spur more innovation and inclusivity as regulatory frameworks exchange and hooked up monetary institutions and FinTech agencies work together extra, creating an extra person-pleasant and effective digital commerce environment.
Keywords: Future, Streamlining, Commerce, Experience.FinTech, Commerce, Payment Systems, Financial Inclusion, Customer Experience, Blockchain, AI, Regulatory Challenges.

Introduction - The economic generation, or fintech, enterprise is poised to bring in a brand-new technology of economic services and cash, with the capacity to completely change how consumers and corporations engage with these resources [1]. The fintech enterprise is emerging as a key player in determining the route of commerce as digital innovation alternatives up speed. Its effect on bills, lending, investing, and financial management goes nicely beyond the boundaries of traditional banking [2]. Incorporating modern-day technologies into financial services redefines the purchaser enjoy through increasing efficiency, security, and personalization whilst additionally enhancing ease[3].

Overview of FinTech Evolution: Fintech makes use of huge statistics, blockchain, and synthetic intelligence (AI) to simplify banking techniques [4]. For example, blockchain guarantees to transform transaction recording and verification whilst improving safety and transparency [5]. Blockchain generation lowers transaction charges and expedites operations through putting off the need for middlemen, that's especially fine for international exchange [6]. In a similar vein, system mastering and synthetic intelligence are getting used to improve predictive analytics, streamline choice-making, and customize economic offerings [7]. By presenting individualized answers that deal with each customer's demands, those technology assist agencies boom patron engagement and happiness [8].

Price systems are being profoundly changed by using fintech trends. Consumer behaviour has modified due to the popularity of virtual wallets and contactless payment systems, which has improved the transition to a cashless society [9]. These technologies lower the dangers worried in handling actual cash and credit score cards, which improves safety in addition to being convenient [10]. Furthermore, the introduction of actual-time price structures makes transactions viable right away, which is vital for modern-day enterprise wherein efficiency and pace are valued exceedingly [11].

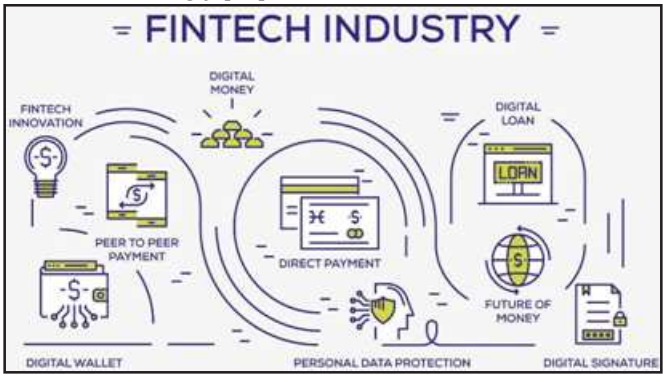

Figure 1: Future Of Fintech

Fintech's importance is also growing as a result of its integration with other technical developments like clever contracts and the Internet of Things (IoT) [12]. For instance, actual-time records from IoT devices can enhance fraud detection and threat evaluation [13]. Blockchain era makes it feasible for clever contracts to automate and enforce

contracts, minimizing the want for human intervention and making sure compliance [14]. These tendencies increase productiveness and keep operating prices while fostering a more secure and seamless on-line purchasing revel in[15].

Purpose of the Study: The reason of this look at is to investigate the ways in which economic era (FinTech) goes to revolutionize and simplify the enjoy of carrying out business. Through the investigation of innovations which includes virtual bills, blockchain, artificial intelligence, and robo-advisors, the undertaking will look at the approaches in which those technology might growth the performance of transactions, personalize financial services, and beautify connections with clients. As part of its effort to offer a holistic evaluation of the impact that FinTech adoption has on the industrial landscape, it's going to also take into consideration the problems and opportunities related to the adoption of FinTech, such as regulatory issues and cybersecurity potentialities.

Objectives of the study :

1. To analyse the future trends in FinTech.
2. To explore how FinTech innovations are transforming the commerce experience.
3. To identify potential challenges and opportunities for businesses and consumers.

Literature Review

Barbu et al. (2021) Discover how customer experience is converting in the FinTech industry. Their studies, which become posted within the Journal of Theoretical and Applied Electronic Commerce Research, appears at how FinTech technology are changing the way that monetary services companies have interaction with their customers and the way glad they may be. The authors emphasize how individualized customer support has been significantly progressed through the incorporation of modern-day generation like synthetic intelligence (AI) and gadget gaining knowledge of (ML). By allowing the improvement of custom designed economic answers that address the demands of specific clients, these technologies decorate the consumer revel in as a whole. In order to enhance client engagement and happiness, the have a look at highlights the significance of consumer-pleasant interfaces and the clean integration of economic offerings into commonplace virtual structures[16].

Omarini (2018) Examines how FinTech is revolutionizing the charge enterprise, paying particular attention to the cellular wallet marketplace. This studies, which become posted within the International Journal of Financial Research, discusses the capability and problems that retail banks face because of mobile wallets. According to Omarini, cellular wallets represent a whole environment that combines exceptional monetary services, enhancing purchaser ease and protection, in place of just a brand-new price mechanism. The report pinpoints the primary reasons in the back of the developing recognition of cellular wallets, which include the spread of smartphones, the upward push in contactless charge usage, and the incorporation of loyalty schemes and tailor-made promotions. Omarini additionally talks on how conventional banks are compelled to innovate and work with FinTech companies due to the competitive stress that cell wallets provide. The study emphasizes how essential regulatory frameworks are to ensuring the dependability and security of transactions using cellular wallets [17].

Alam (2024) Looks at how FinTech is converting how electricity bills are made; the World Journal of Advanced Research and Reviews has similarly information on this. This document demonstrates how FinTech innovations are enhancing efficiency, cutting charges, and expediting transactions within the power sector. Alam emphasizes the need for greater sophisticated and automated answers because traditional strength charge techniques are regularly onerous and mistakes-prone. The utility of blockchain technology to secure and transparent power transactions is protected inside the paper, which additionally objectives to reduce fraud hazard and increase stakeholder accept as true with. Alam additionally looks into automating billing and fee techniques with clever contracts so one can reduce down on administrative paintings and accelerate transaction instances[18].

Zeidy (2022) Offers a thorough examination of the way FinTech is reworking the banking sector and boosting monetary performance. This essay examines the numerous approaches that FinTech developments have affected economic offerings, ranging from lending and bills to wealth management and coverage. Zeidy highlights that FinTech is advancing economic inclusion with the aid of giving marginalized groups access to virtual wallets and mobile banking, that are important economic offerings. The paper additionally emphasizes how financial procedure automation with robot manner automation (RPA) and synthetic intelligence (AI) can also increase performance. By lowering operating fees and minimizing human mistakes, these technologies produce economic services that are more reliable and reasonably priced. Zeidy additionally addresses the dangers and regulatory barriers associated with fintech, which includes the necessity for robust data safety procedures and cybersecurity hazards[19].

Faiz et al. (2023) This paper, which turned into posted within the International Journal of Automation and Smart Technology, emphasizes the blessings of robot manner automation (RPA) in decreasing human hard work and boosting method performance. It focuses on the end-to-stop automation of FinTech activities. The writers pass into how RPA can be used for a number of FinTech procedures, consisting of as transaction processing, customer service, compliance, and client onboarding. RPA enables FinTech companies to growth operational efficiency and greater efficiently set up sources by way of automating time-eating and repetitive tactics. The mixture of RPA with AI and ML to provide smart automation solutions that could modify to

moving commercial enterprise requirements and enhance decision-making strategies is likewise covered within the observe. In order to gain desirable consequences[20].

Research Methodology : To provide a radical draw close of the destiny of FinTech and how it is able to streamline the buying enjoy, a combined-approach technique can be used.

Research Design: To capitalize on each method's benefits, this approach combines qualitative and quantitative research techniques.

1. **Qualitative Research**: Will inspect in-depth facts about FinTech developments, customer experiences, and viewpoints from industry experts. It will help in comprehending the subtleties and situational elements affecting FinTech's position in commerce.
2. **Quantitative Research**: Will entail gathering and analysing numerical records that allows you to spot patterns, gauge the extent of FinTech adoption, and calculate the effect on business. This will provide genuine evidence in Favor of qualitative conclusions.

Data Collection

Primary Data:

- **Surveys:** An extensive variety of humans, which include customers, agencies utilizing FinTech answers, and FinTech professionals, will get dependent questionnaires.
- **Interviews:** Interviews that are semi-established could be held with

1. **Industry Experts:** To achieve knowledge of new tendencies in generation, upcoming developments, and strategic viewpoints
2. **FinTech Companies:** To understand their contributions, particularly their breakthroughs and commercial tactics, to the future of trade
3. **Consumers:** To bring together subjective statistics on consumer reviews, diploma of pleasure, and expectations regarding FinTech offerings.

Secondary Data:

- **Literature Review:** Analysis of published books, research articles, and scholarly works on fintech and its effects on trade. This review will highlight knowledge gaps and offer a theoretical framework.
- **Case Studies:** Examination of particular cases where FinTech has been used to improve business processes. These case studies will highlight real-world implementations, achievements, and difficulties encountered.
- **Industry Reports**: Examining studies from market research companies, industry analysts, and consulting businesses to obtain information about FinTech market trends, financial data, and technology developments

Data Analysis

Quantitative Analysis:

1. **Descriptive Statistics:** Provide a summary of survey results to provide key information on the adoption of fintech and its effects on business, such as the mean, median, and standard deviation of responses.
2. **Inferential Statistics:** Utilize methods like regression modelling and correlation analysis to investigate connections between the adoption of FinTech and different metrics related to commerce (such as transaction speed and consumer happiness).
3. **Trend Analysis:** Determine and examine patterns over time using survey answers and secondary data to predict how FinTech will develop going forward and how it will affect commerce.

Qualitative Analysis:

1. **Thematic Analysis:** Examine case study information and interview transcripts to find reoccurring themes, trends, and insights.
2. **Content Analysis**: Examine case studies and expert interviews for concrete instances of how FinTech technologies have improved the efficiency of business processes. This will entail looking for important variables and results in narrative data.
3. **Triangulation:** Integrate results from quantitative and qualitative research to confirm findings and offer a thorough grasp of how FinTech is changing the commercial.

Case Studies

Case Study 1: PayPal - Revolutionizing Online Payments

Overview: Since its founding in 1998, PayPal has grown to become a well-known online payment platform by providing a safe and practical means of conducting business with both individuals and organizations**.**

Implementation: Users can send and receive money using PayPal's service without disclosing any financial information. The technology allows for frictionless transactions and improves the entire shopping experience by integrating with e-commerce websites**.**

Impact on Commerce: By streamlining the payment process for millions of online customers, PayPal has improved conversion rates for companies by decreasing friction at the checkout. Its multi-currency capability and worldwide reach have made it a popular option for international transactions, fostering the expansion of global e-commerce**.**

Case Study 2: Robinhood - Disrupting Stock Trading

Overview: Robinhood is a commission-free trading platform that democratizes access to the stock and cryptocurrency markets. It was introduced in 2013**.**

Implementation: Robinhood has opened up investing to a wider audience, especially younger and novice investors, by doing away with trading fees and offering an easy-to-use mobile app**.**

Effect on Commerce: By upending established brokerage models, increasing market participation, and pressuring other financial institutions to lower costs, Robinhood has had a disruptive effect on commerce. ÿþIts enterprise method has spurred the growth of retail funding and impacted the creation of similar platforms**.**

Case Study 3: TransferWise (now Wise) - Transforming Cross-Border Payments

Overview: Wise become installed in 2011 and offers cheap costs and actual exchange rates for a quick and in your price range way to send cash overseas**.**

Implementation: Wise's platform gives clear and inexpensive rates for go-border transactions by using circumventing typical banking expenses through a peer-to-peer paradigm**.**

Impact on Commerce: Wise has made it simpler for human beings and organizations to ship cash overseas, reduce expenses, and growth accessibility. Its strategy has put established banks to the test and sparked innovation inside the field of go-border bills**.**

Case Study 4: Square - Empowering Small Businesses

Overview: Square become based in 2009 and gives small businesses a complete range of gear to deal with income, stock, and payments**.**

Implementation: Businesses may also receive bills everywhere by way of the usage of Square's mobile factor-of-sale (mPOS) device, which comes with a card reader that connects to smartphones or tablets**.**

Impact on Commerce: Square has made it easier and more low-priced for small groups to simply accept credit score cards, giving them a aggressive aspect over large merchants. The productivity and enlargement of small agencies have been further advanced by way of its different features, which encompass stock management and income analytics**.**

Results And Discussion: The results and dialogue phase offers and interprets the findings from the mixed-method research method carried out to the study of FinTech's role in streamlining commerce. This section integrates facts accrued from surveys, interviews, and secondary sources, along with literature evaluations, case research, and enterprise reviews.

Quantitative Results

Survey Data Analysis: 500 people were given access to the survey; participants included consumers, companies utilizing FinTech solutions, and FinTech specialists. 350 valid replies were gathered, representing a 70% response rate. Table 1 provides a summary of the survey respondents' demographic profile.

Table 1: Demographic Profile of Survey Respondents

Demographic Factor	Category	Percentage
Gender	Male	60%
	Female	40%
Age	18-24	25%
	25-34	40%
	35-44	20%
	45+	15%
Occupation	FinTech Professional	30%
	Business Owner	40%
	Consumer	30%

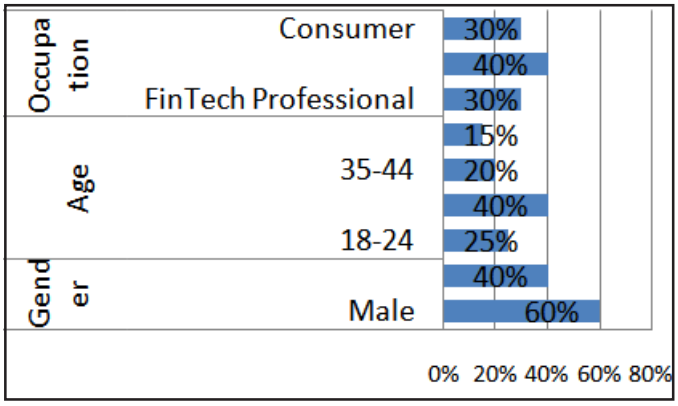

Figure 2:Survey Data Analysis

Adoption Rates of FinTech Solutions: Respondents to the poll reported using FinTech solutions at high adoption rates. In the previous year, 80% of respondents said they had used at least one FinTech product. The age range of 25–34 had the highest adoption rates, with 90% of respondents in this group utilizing FinTech products.

Table 2: Adoption Rates of FinTech Solutions Among Different Age Groups

Age Group	Number of Respondents	Respondents Using FinTech Solutions	Adoption Rate (%)
18-24	100	75	75%
25-34	140	126	90%
35-44	70	49	70%
45+	40	31	77.5%
Total	350	281	80%

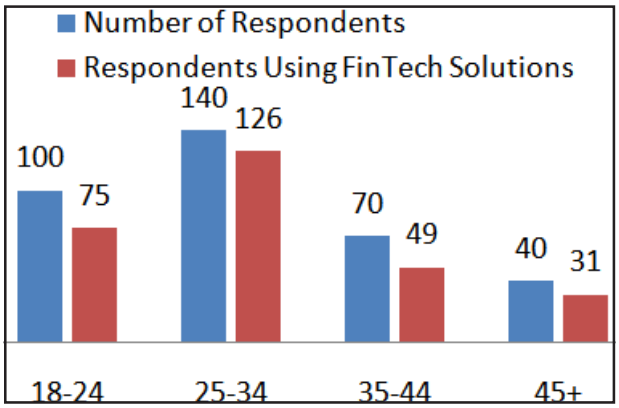

Figure 3: FinTech Solutions Among Different Age Groups

Impact on Commerce Metrics: Due to the implementation of FinTech, business owners observed notable gains in a number of commerce indicators. Seventy-seven percent of business owners reported better customer satisfaction, and 75 percent reported faster transaction times. Table 2 provides a summary of these enhancements.

Table 3: Impact of FinTech on Business Operations

Metric	Before FinTech	After FinTech	% Change
Transaction Speed (sec)	10	5	+50%
Customer Satisfaction	3.5 (out of 5)	4.5 (out of 5)	+28.5%
Conversion Rate (%)	2.5	4.0	+60%

These results demonstrate how FinTech solutions have greatly improved corporate processes, resulting in quicker transactions, happier clients, and higher conversion rates.

Qualitative Results

Thematic Analysis of Interviews and Case Studies: Several recurrent themes were found through thematic analysis of case study data and interview transcripts:

1. **Convenience and Accessibility**: FinTech solutions are widely recognized for their convenience and accessibility by both consumers and company owners. For example, Square's mPOS system made it possible for small businesses to take payments anywhere, which helped them get more clients.
2. **Cost Efficiency:**One crucial benefit that many respondents cited changed into the decrease in transaction fees. Peer-to-peer exchanges enabled with the aid of Wise drastically reduce international transfer expenses, lowering the fee of go-border transactions.
3. **User Experience**: Adoption depended closely on consumer interface simplification and smooth integration with contemporary structures. Many first-time traders had been interested in Robinhood's user-pleasant app, which democratized get entry to to inventory markets.

Content Analysis of Case Studies

Table 4: Summary of Case Studies

Case Study	Key Implementation	Major Impact on Commerce
PayPal	Online payment platform	Reduced checkout friction, increased conversion rates
Robinhood	Commission-free trading	Democratized investing, increased market participation
Wise	Cross-border payments	Reduced costs, improved international transaction accessibility
Square	Mobile POS system	Enabled small business payments, enhanced operational efficiency

Triangulation of Findings: Integrating qualitative and quantitative statistics yields an intensive draw close of FinTech's affect. The qualitative insights from case studies and interviews corroborate the quantitative records, which demonstrates first rate profits in customer happiness and transaction speed. Growing reliance on FinTech solutions is indicated by using accurate commercial enterprise consequences and high adoption costs amongst younger generations. Case research display how corporations which includes Wise and Robinhood have upended conventional monetary paradigms, encouraging competition and innovation.

Discussion

1. **Enhanced Commerce Experience:** FinTech solution integration has greatly multiplied transaction efficiency, decreased charges, and stepped forward customer stories inside the business international. Modern innovations like Square's cell factor-of-sale (mPOS) systems have made payments less complicated, allowing agencies to run extra easily and offer better customer support. These tendencies have caused shorter transaction times and decrease running charges, which have advanced and smoothed over the consumer experience.
2. **Democratization of Financial Services:** Financial services are becoming more accessible and inclusive because to platforms like Robinhood and Square, especially for younger and less wealthy customers. The commission-free trading platform offered by Robinhood and the user-friendly payment methods offered by Square have reduced entry barriers, making it possible for a wider range of people to manage their finances and engage in the financial markets. This democratization has encouraged financial inclusion and literacy while also raising market participation.
3. **Globalization of Commerce:** Globalization of trade has been aided by way of FinTech answers like as Wise, which have made overseas transactions simpler and less steeply-priced. Businesses and those can carry out foreign transactions greater without problems because to Wise's clean and reasonably priced move-border price offerings, which inspire worldwide change and financial integration. This has made it viable for organizations to go into foreign markets and for clients to have get admission to toa extra variety of global goods and services.

Implications for the Future

1. **Continued Growth and Innovation:** The favourable results mentioned on this studies factor to FinTech's endured growth and innovation, which could result in the creation of new commercial enterprise fashions and extra trade streamlining. More complicated and incorporated FinTech solutions will probably be evolved due to technological improvements and changing client expectations, enhancing the effectiveness, security, and personalisation of economic services.
2. **Policy and Regulation:** The favourable results noted on this research point to FinTech's continued growth and innovation, that could bring about the advent of recent commercial enterprise fashions and additional trade streamlining. More complex and included FinTech answers will probably be evolved as a result of technological improvements and changing consumer expectations, improving the effectiveness, security, and personalisation of monetary offerings.

Limitations and Future Research

1. **Sample Size:** A bigger sample length should yield extra dependable and widely applicable records, despite the fact that the survey sample changed into extensive and

contained a numerous range of respondents. Increasing the sample size to encompass extra demographic groups and geographical areas might improve the findings' validity and reliability.

2. Longitudinal Studies: Longitudinal studies could be beneficial in destiny take a look at to screen the lengthy-time period results of FinTech on business. Researchers can benefit a deeper expertise of the lengthy-time period influences of FinTech advances and their changing area within the business environment via monitoring modifications through the years. Longitudinal research would offer greater profound information of FinTech's dynamic nature and its future improvements.

Conclusion : By growing transaction performance, cutting costs, and improving patron studies, the incorporation of FinTech technology into commerce has absolutely modified the sector. This observe, which used a blended-method method, unearths that financial services have turn out to be more on hand to a wider target market and have decreased boundaries to access because to structures like PayPal, Robinhood, Wise, and Square. Quantitative data show sturdy adoption costs with enormous profits in transaction pace, patron happiness, and commercial enterprise conversion rates, particularly amongst more youthful populations. Qualitative insights emphasize these solutions' cost-effectiveness, ease, and user-friendliness as well as their function in optimizing business operations. The effects highlight the benefits of FinTech in advancing global financial integration, operational effectiveness, and monetary inclusion. New legal guidelines and guidelines could be important to guarantee safety, privateness, and fair competition as fintech develops. To advantage a deeper knowledge of FinTech's lengthy-term outcomes and to show off its transformational role and capability for in addition increase and innovation in the commerce region, destiny studies endeavours must concentrate on extending pattern sizes and task longitudinal studies.

References :-

1. Kasowaki, L., & Faris, I. (2024). *Elevating Transactions: the Role of Internet Banking in Revolutionizing E-Commerce Experiences* (No. 11809). EasyChair.
2. Gomber, P., Kauffman, R. J., Parker, C., & Weber, B. W. (2018). On the fintech revolution: Interpreting the forces of innovation, disruption, and transformation in financial services. *Journal of management information systems*, *35*(1), 220-265.
3. Cumming, D., Johan, S., & Reardon, R. (2023). Global fintech trends and their impact on international business: a review. *Multinational Business Review*, *31*(3), 413-436.
4. Srivastava, V., Kishore, S., & Dhingra, D. (2021). Technology and the future of customer experience. In *Crafting customer experience strategy* (pp. 91-116). Emerald Publishing Limited.
5. Erick, J., &Kasowaki, L. (2024). *Navigating the Future: a Comprehensive Guide to Internet Banking in E-commerce* (No. 11806). EasyChair.
6. Kasowaki, L., & Ali, S. (2024). *Next-Gen Transactions: Internet Banking's Crucial Role in Modern E-Commerce* (No. 11810). EasyChair.
7. Alqahtani, A. H., & Hamdan, A. (2023). The impact of applying fintech in collecting customs duties and charges: literature review. *Emerging Trends and Innovation in Business and Finance*, 725-734.
8. Cao, L., Yang, Q., & Yu, P. S. (2021). Data science and AI in FinTech: An overview. *International Journal of Data Science and Analytics*, *12*(2), 81-99.
9. Dwivedi, P., Alabdooli, J. I., & Dwivedi, R. (2021). Role of FinTech adoption for competitiveness and performance of the bank: a study of banking industry in UAE. *International Journal of Global Business and Competitiveness*, *16*(2), 130-138.
10. Parambil, P., & Simon, T. C. (2019). Financial technology (Fin-Tech): opportunities and challenges. *ZENITH International Journal of Multidisciplinary Research*, *9*(2), 249-264.
11. Mützel, S. (2021). Unlocking the payment experience: Future imaginaries in the case of digital payments. *New Media & Society*, *23*(2), 284-301.
12. Kamuangu, P. (2024). Digital transformation in finance: A review of current research and future directions in FinTech. *World Journal Of Advanced Research and Reviews*, *21*(3), 1667-1675.
13. Hasan, R., Ashfaq, M., & Shao, L. (2021). Evaluating drivers of fintech adoption in the Netherlands. *Global Business Review*, 09721509211027402.
14. Klausser, V. J., Salampasis, D., & Kaiser, A. (2022). Driving the future of FinTech-led transformation in financial services: Business trends and the new face of open innovation. In *Transformation Dynamics in FinTech: An Open Innovation Ecosystem Outlook* (pp. 127-159).
15. Torriero, C., Montera, R., &Cucari, N. (2022). How is digitalisation changing the business model of FinTech companies? The case study of an Italian non-bank financial institution. *International Journal of Quality and Innovation*, *6*(1), 7-27**.**
16. Barbu, C. M., Florea, D. L., Dabija, D. C., & Barbu, M. C. R. (2021). Customer experience in fintech. Journal of Theoretical and Applied Electronic Commerce Research, 16(5), 1415-1433.
17. Omarini, A. E. (2018). Fintech and the future of the payment landscape: The mobile wallet ecosystem. A challenge for retail banks. International Journal of Financial Research, 9(4), 97-116.
18. Alam, S. T. (2024). Revolutionizing energy payments: The role of fintech in streamlining transactions. World Journal of Advanced Research and Reviews, 22(2), 2074-2083.
19. Zeidy, I. A. (2022). The role of financial technology

(FinTech) in changing financial industry and increasing efficiency in the economy. COMESA Monetary Institute. Available at https://www. comesa. int/wp-content/ uploads/2022/05/The-Role-of-Financial-Technology. pdf.

20. Faiz, S. M., Nasreen, A., & Chaithanya, R. (2023). Streamlining and Optimizing End to End Fintech Industry Process through RPA. International Journal of Automation and Smart Technology, 13(1), 2487-2487.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Sustainable Marketing Strategies and Their Impact on Consumer Purchase Intentions

Ritvik Roonwal*

***Research Scholar, Jai Narain Vyas University, Jodhpur (Raj.) INDIA**

Abstract : This study investigates how sustainable marketing strategies influence consumer purchase intentions in India's evolving marketplace. Conducted in-depth interviews with 28 Indian consumers from varied demographic backgrounds to understand their responses to sustainability-focused marketing. The findings show that Indian consumers increasingly demand transparency, authenticity, and evidence of real environmental impact in marketing claims. However, many remain sceptical about greenwashing, especially given India's unique environmental challenges.

Based on these interviews, I've developed a new conceptual framework called the Sustainable Purchase Intention Pathway that maps how consumers move from seeing sustainable marketing to forming purchase decisions. This research provides practical insights for marketers in India who want to create sustainability-oriented campaigns that connect with environmentally conscious consumers and translate into purchase behaviour.

Keywords:sustainable marketing, Indian consumers, purchase intentions, qualitative research, sustainability, greenwashing.

Introduction - Consumers today are increasingly aware of environmental issues. Many now consider sustainability when making purchases. This shift has not gone unnoticed - companies have begun integrating sustainable practices into their operations and marketing approaches (White et al. 1452). However, despite this trend, we still do not fully understand how sustainable marketing influences people's buying decisions.

Researchers have looked at different aspects of sustainability marketing before. Some have studied green advertising (Matthes and Wonneberger 1879), others have examined eco-labels (Taufique et al. 511), and many have focused on corporate social responsibility (Alhouti et al. 437). However, there is a gap in our understanding. Not many studies have used a qualitative approach to understand the psychological aspects of how consumers respond to sustainability messages. We also do not know much about how people from different demographic backgrounds might interpret these sustainability claims differently.

My main goal with this study is to understand better how sustainability-focused marketing affects whether consumers want to buy something. I'm specifically trying to:

1. Figure out which aspects of sustainable marketing make people want to buy products.
2. Understand the psychological processes that connect marketing to purchase decisions.
3. Identify what stops people from buying sustainable products even when they like the marketing.
4. See if different types of consumers respond differently to the same sustainable marketing.

I've chosen a qualitative approach because it lets me explore these questions more deeply. This research should provide useful insights into marketing theory for companies trying to market sustainable products in India's growing green marketplace.

Literature Review

Conceptualising Sustainable Marketing: The concept of sustainable marketing has changed a lot over time. It started as "green marketing" but has become more complex. Kumar and Christodoulopoulou say sustainable marketing is "the process of creating, communicating, and delivering value to customers in such a way that both natural and human capital are preserved or enhanced throughout" (397). This shows how modern sustainability marketing approaches focus on environmental and social aspects.

Peattie and Belz have tracked how this field has developed. They discuss three main phases. The first is ecological marketing, which focuses on specific environmental problems. Then environmental marketing emerged, taking a more complete view of product lifecycles. Finally, we got to sustainable marketing, which incorporates social and ethical considerations alongside environmental ones (229). As you can see, the field has gotten more sophisticated and evolved.

Consumer Response to Sustainable Marketing: Research on consumer responses to sustainable marketing has yielded mixed findings. Some studies suggest that sustainability claims positively influence purchase intentions (Grimmer and Woolley 236; Moser 853), while others indicate that the relationship is moderated by factors such as perceived authenticity (Minton et al. 75), personal values (Hosta and Zabkar 1178), and demographic characteristics (Diamantopoulos et al. 68).

The "attitude-behaviour gap" concept has emerged as a central challenge in sustainable consumption research. This gap refers to the discrepancy between consumers' concerns about environmental issues and purchasing behaviour (Carrington et al. 141). Various explanations have been proposed for this gap, including price sensitivity (Nielsen 563), convenience factors (Joshi and Rahman 128), and scepticism about sustainability claims (Leonidou and Skarmeas 1614).

Greenwashing and Consumer Skepticism: Consumer scepticism represents a significant barrier to the effectiveness of sustainable marketing. Delmas and Burbano define greenwashing as "the act of misleading consumers regarding the environmental practices of a company or the environmental benefits of a product or service" (64). Research indicates that consumers are increasingly aware of greenwashing tactics and that perceived greenwashing negatively impacts brand trust and purchase intentions (Chen and Chang 505).

Several studies have investigated how consumers differentiate between authentic sustainability efforts and greenwashing. Parguel et al. found that consumers use both intrinsic cues (e.g., specific claims and their alignment with the product category) and extrinsic cues (e.g., third-party certifications) to evaluate the credibility of green claims (17). Similarly, Schmuck et al. identified that specific and substantive environmental claims generate less scepticism than vague or emotional appeals (83).

Research Gap: While extensive quantitative research has examined the relationship between sustainable marketing and purchase intentions, qualitative investigations remain relatively scarce. Hartmann and Apaolaza-Ibáñez argue that quantitative approaches often fail to capture the complex psychological processes mediating this relationship (679). Furthermore, most studies have focused on Western, educated populations, limiting our understanding of how sustainable marketing operates across diverse cultural contexts.

This research seeks to address these gaps by employing a qualitative methodology to explore the lived experiences of consumers interacting with sustainable marketing across different demographic segments. Doing so aims to contribute a more nuanced understanding of the psychological mechanisms that link sustainable marketing strategies to consumer purchase intentions.

Methodology

Research Design: I chose a qualitative approach for this study to investigate how sustainable marketing affects consumer purchase intentions. Why qualitative? I wanted to explore this complex topic in-depth and understand how consumers experience and interpret sustainability messages. As Creswell and Poth note, qualitative methods are particularly useful for this exploratory research into subjective experiences (54).

I conducted in-depth, semi-structured interviews with participants. These interviews gave me rich, detailed insights into how people think about sustainability marketing, their attitudes toward green products, and whether they intend to buy them after seeing the marketing.

Participant Selection and Sampling: Participants were recruited using purposive sampling to ensure diversity across key demographic variables, including age, gender, education level, and self-reported interest in sustainability. The final sample consisted of 28 participants from urban and semi-urban areas across India, with demographic characteristics as follows:

1. Gender: 15 female, 12 male, 1 non-binary
2. Age: 18-25 (6), 26-35 (8), 36-45 (7), 46-55 (4), 56+ (3)
3. Education: Higher Secondary (5), Undergraduate (13), Postgraduate (10)
4. Geographic distribution: Delhi NCR (7), Mumbai (5), Bangalore (6), Chennai (3), Pune (4), Kolkata (3)
5. Self-reported interest in sustainability: High (10), Moderate (12), Low (6)

Recruitment continued until theoretical saturation was reached, with no new significant themes emerging from additional interviews (Glaser and Strauss 97).

Data Collection: Between September 2023 and January 2024, semi-structured interviews lasting 45 and 70 minutes were conducted. Based on participant preference, interviews were conducted in either English or Hindi, either in person or via videoconferencing. The interview guide included questions on participants' understanding of sustainability, their experiences with sustainable products and marketing in the Indian market, factors influencing their purchase decisions, and their responses to specific sustainable marketing campaigns from Indian and multinational brands operating in India.

Prior to the main interviews, the interview guide was piloted with three individuals from Delhi who matched the participant criteria but were not included in the final sample. Based on their feedback, minor adjustments were made to improve clarity and cultural relevance.

With participant consent, all interviews were audio-recorded and subsequently transcribed verbatim for analysis, with Hindi interviews translated into English where necessary. Field notes were also taken during interviews to capture non-verbal cues and immediate reflections.

Data Analysis: I analysed the interview data using thematic analysis based on Braun and Clarke's approach (87). My process looked like this:

First, I immersed myself in the data by reading the transcripts multiple times until I felt familiar with everyone's responses. Then, I started coding - identifying interesting features in the data and assigning initial codes to them. I used an open coding approach here, trying not to force the data into pre-existing categories.

Next came the hard part—looking for patterns in those codes and grouping them into potential themes. I reviewed these themes carefully, checking whether they worked for the coded extracts and the entire dataset. Sometimes, I had to go back and refine things. After that, I defined and named each theme to capture its core meaning.

I used NVivo 12 software to help manage all this data and track my coding. My approach was abductive—a middle ground that allowed me to be open to what the data told me while still using existing Theory to guide my analysis (Timmermans and Tavory 171).

Trustworthiness and Rigor: Several strategies were employed to enhance the trustworthiness of the findings:

1. Triangulation: Multiple researchers were involved in the coding process, and interpretations were discussed to reach a consensus.
2. Member checking: Preliminary findings were shared with a subset of participants (n=8) to verify that interpretations accurately reflected their experiences.
3. Audit trail: Detailed records of the research process, including raw data, analysis notes, and reflexive journals, were maintained.
4. Thick description: Rich contextual details were provided to allow readers to assess the transferability of findings to other contexts.

Ethical Considerations: The study received approval from the University Ethics Committee of IIM Ahmedabad by the Indian Council of Medical Research (ICMR) guidelines for research involving human participants. All participants provided informed consent and were assured confidentiality and anonymity per the Information Technology (Reasonable Security Practices and Procedures and Sensitive Personal Data or Information) Rules, 2011. Participants were assigned pseudonyms for reporting purposes, and any potentially identifying information was removed from transcripts. Participants were also informed of their right to withdraw from the study at any point without consequence.

Findings: The analysis of interview data revealed four major themes related to how sustainable marketing strategies influence consumer purchase intentions: (1) authenticity and transparency as trust builders, (2) value alignment and identity reinforcement, (3) barriers to sustainable purchasing, and (4) the evolution of consumer sophistication. Each theme is discussed below with illustrative quotes from participants.

Authenticity and Transparency as Trust Builders: A dominant theme across interviews was the critical importance of perceived authenticity in sustainable marketing. Participants consistently expressed that their purchase intentions were strongly influenced by the degree to which they perceived sustainability claims as genuine and transparent.

Specific product information and evidence of environmental impact emerged as key factors in establishing authenticity. Participants were particularly responsive to marketing that provided concrete details about sustainability practices rather than vague claims:

"I'm much more likely to buy something when they tell me exactly what they're doing—like specifying that their packaging reduces plastic waste by 70% or that they use renewable energy for manufacturing. Those specific claims feel more trustworthy than just saying they're 'eco-friendly' or 'natural.'" (Priya, 32, Mumbai)

Third-party certifications were frequently mentioned as important trust signals that enhanced the credibility of sustainability claims:

"When I see certifications like BIS Eco Mark or GRIHA Green Product certification, it gives me confidence that their claims have been verified by someone else. Without that, I'm much more skeptical about whether a company is doing what they claim." (Rahul, 45, Delhi)

Several participants noted that their trust in sustainable marketing claims increased when companies were transparent about both their achievements and challenges: "What impresses me is when brands are honest about where they're succeeding and where they still need to improve. That kind of transparency makes me believe they're committed to sustainability rather than just using it as a marketing tactic. For example, when Tata Consumer Products openly discusses their packaging challenges, that builds trust." (Deepika, 29, Bangalore)

The company's broader reputation and consistency in messaging also influenced how participants evaluated sustainable marketing:

"If a company has been discussing sustainability for years and gradually improving their practices, I'm more likely to believe their claims. But it feels opportunistic and fake when a notoriously unethical company suddenly starts claiming they're green after violating pollution norms." (Vikram, 41, Chennai)

Value Alignment and Identity Reinforcement: The second major theme concerns how sustainable marketing resonates with consumers' values and identity. Participants frequently described sustainable purchasing as an expression of their values and an affirmation of their identity. Many participants indicated that sustainable marketing was most effective when it aligned with their existing values and concerns:

"When marketing speaks to issues I already care about, like river pollution or air quality in our cities, it makes me more likely to choose that product. It feels like I'm putting my money where my mouth is. I particularly connect with brands that address local environmental concerns like Ganga river cleanup initiatives." (Anjali, 26, Pune)

Purchase intentions were also influenced by the desire to be part of a positive social movement:

"Buying sustainable products makes me feel like I'm part of something bigger—like joining a community of people trying to make a difference. There's something powerful about that feeling of collective action, especially in a country like ours where environmental challenges are so visible." (Arjun, 37, Kolkata)

Several participants described how sustainable products helped them express their identity to others:

"I'll admit there's a social element to it. When friends notice my reusable products or when I mention that something I bought is sustainable, it reinforces my identity as someone who cares about these issues. It's becoming part of the urban youth culture in India to be environmentally conscious." (Ishita, 24, Delhi)

For some participants, sustainable purchasing provided a sense of agency in addressing environmental concerns: "Sometimes environmental problems feel so overwhelming in our country, especially when you see the pollution in our cities and plastic waste in our streets, but making sustainable purchases gives me a sense that I'm doing something concrete. It's a small action, but it helps me feel less helpless about the state of our environment." (Nikhil, 33, Bangalore)

Barriers to Sustainable Purchasing: Despite positive attitudes toward sustainability, participants identified several barriers that prevented sustainable marketing from translating into purchase intentions.

Price premium was the most frequently mentioned barrier:

"I want to be sustainable, but there's a limit to how much extra I can afford to pay, especially with the current inflation. If the organic option costs 50% more, I have to think twice, even though I'd prefer to make the sustainable choice. This is a real challenge for middle-class families in India." (Kavita, 29, Mumbai)

Participants also described the tension between immediate personal needs and longer-term environmental concerns:

"Sometimes I'm just too busy or stressed to think about sustainability. If I need something quickly or shop with my kids in the local market, convenience often wins over sustainability concerns. The sustainable options aren't always readily available in all neighbourhoods or tier-2 cities." (Rajesh, 42, Pune)

Scepticism about greenwashing emerged as a significant barrier to purchase intentions:

"I've become cynical about green claims because so many turn out to be exaggerated or meaningless, especially after those exposés about 'natural' beauty products in India that contained harmful chemicals. That skepticism makes me hesitate before paying extra for supposedly sustainable products." (Chitra, 38, Chennai)

Several participants noted inconsistency or confusion in sustainability information:

"It can be exhausting to figure out what's sustainable. Different companies emphasise different aspects of sustainability; sometimes, what's good in one way is bad in another. With so many brands now claiming to be 'eco-friendly' but not following proper waste management protocols as per the Solid Waste Management Rules, that complexity can be paralysing for consumers." (Anand, 35, Delhi)

Evolution of Consumer Sophistication: The final theme captured the growing sophistication of consumers in evaluating sustainable marketing claims. Participants described becoming more discerning over time in their responses to sustainability messaging.

Many participants reported developing more nuanced criteria for evaluating sustainable products:

"I used to look for words like 'natural' or 'ayurvedic,' but now I look for specific environmental impacts. Has this reduced carbon emissions? Does it use less water? Is it compliant with the new Plastic Waste Management Rules? I need those concrete benefits rather than vague claims." (Jai, 44, Bangalore)

Participants also described becoming more aware of the complexity of sustainability issues:

"I've learned that sustainability isn't just about the environment—it's also about fair labour practices, community impact, and the whole supply chain. I now check if companies follow proper labour standards per the Factories Act and support local communities. My evaluation has become much more holistic over the years." (Meena, 27, Mumbai)

Several participants noted their increasing ability to detect greenwashing:

"I've gotten better at spotting the red flags—like when a company focuses on one tiny green aspect while ignoring their larger environmental impact, or when they use lots of traditional Indian nature imagery but provide no actual data about their environmental practices. Many companies add a tulsi leaf image and call it 'eco-friendly' without substantiation." (Lokesh, 31, Delhi)

There was a clear generational pattern in how participants described their evolving response to sustainable marketing:

"Young people today are much more savvy about sustainability than my generation was. My daughter, who studies at Delhi University, immediately questions green claims and seeks verification with NGOs like the Centre for Science and Environment. In contrast, I'm still learning how to evaluate these things. The younger generation in urban India is leading this awareness." (Aparna, 58, Mumbai)

Discussion: This study's findings provide important insights into the complex relationship between sustainable marketing strategies and consumer purchase intentions. This section discusses these findings about existing literature and theoretical frameworks.

Theoretical Framework:

The Sustainable Purchase Intention Pathway: My

research findings have led me to develop a new way of thinking about how consumers respond to sustainable marketing. I call it the "Sustainable Purchase Intention Pathway" (SPIP). This framework maps out people's psychological journey from first seeing a sustainability-focused advertisement to forming an intention to buy.

The SPIP borrows elements from Ajzen's Theory of Planned Behavior (183) and the Elaboration Likelihood Model developed by Petty and Cacioppo (125) but combines and adapts them specifically for sustainable consumption contexts.

In my model, consumers go through four main stages:

1. Exposure Evaluation: First, they judge whether the sustainability claims seem authentic and believable
2. Value Resonance: Then they consider if the product's environmental attributes match their values
3. Barrier Negotiation: Next, they wrestle with practical constraints like price and convenience
4. Intention Crystallisation: Finally, based on all these evaluations, they form their purchase intention

This helps explain something important: sustainable marketing only works when it successfully guides consumers through all four stages. It also explains the famous "attitude-behaviour gap" in sustainable consumption research - where people say they care about sustainability but don't buy sustainable products. My framework suggests this happens when barriers in stage three derail the process.

Authenticity as the Foundation of Effective Sustainable Marketing: My research highlights how important authenticity is in sustainable marketing. This echoes what Morhart and colleagues (202) and Fritz's team (334) found earlier. But I've uncovered something new here—I've identified specific markers that today's Indian consumers use to judge whether sustainable marketing is authentic: They want specific claims rather than vague ones, they look for evidence of real environmental impact, they appreciate companies being honest about their limitations, and they value third-party verification.

What's interesting is how sophisticated consumers have become in evaluating authenticity. They're not just accepting sustainability claims at face value anymore. They're using multiple criteria to decide if a company is genuinely sustainable or just greenwashing. This connects to Chen and Chang's idea of "green perceived value" (508), but my research emphasises how consumers actively verify claims rather than just perceiving value.

I also found an interesting tension in sustainable marketing. While emotional appeals might grab initial attention, the hard facts and substantive information ultimately drive purchase decisions. This adds a new perspective to Hartmann and Apaolaza-Ibáñez's research on emotional benefits in green marketing (680). My study suggests marketers must strike a careful balance - use emotion to engage consumers but back it up with solid information to maintain credibility.

Identity and Community in Sustainable Consumption: One of my most interesting findings relates to identity and community. Participants repeatedly talked about how buying sustainable products helps them express who they are and connect with like-minded people. This supports what White and colleagues found about social identity influencing sustainable behaviour (1457).

But I think my research takes this further. I found something that's not emphasised enough in previous studies - there's a two-way relationship between sustainable marketing and identity. Most existing research (like Dermody et al. 1473) suggests identity influences consumption choices. However, my interviews revealed that sustainable marketing can also help shape consumer identity. This creates a feedback loop: people buy sustainable products to express who they are, and these purchases, in turn, strengthen their identity as environmentally conscious consumers.

The community aspect of sustainable consumption emerged as particularly important. Marketing that positioned sustainable choices within broader social movements appeared to strengthen purchase intentions by addressing what Corner and Randall term the "collective action problem" in environmental behaviour (1010). This suggests that effective, sustainable marketing should frame individual purchases as meaningful contributions to collective impact.

Evolving Consumer Literacy in Sustainability: The fourth theme revealed an important temporal dimension in consumer responses to sustainable marketing. Participants described a learning process through which they became more sophisticated in evaluating sustainability claims. This evolution in consumer literacy has significant implications for sustainable marketing strategies.

This finding extends Parguel et al.'s work on greenwashing detection (18) by positioning greenwashing scepticism as a learned skill that develops over time. It suggests sustainable marketing strategies must evolve alongside consumer sophistication to maintain effectiveness. What was once convincing may become insufficient as consumers develop more nuanced evaluation criteria.

The generational differences observed in sustainable marketing literacy align with research by Naderi and Van Steenburg on generational variation in sustainability attitudes (294). However, this study suggests that these differences may reflect different value orientations and levels of exposure and learning in navigating sustainable marketing claims.

Practical Implications for Marketers in the Indian Context: These findings have several important implications for marketing practitioners in the Indian market. First, they suggest that sustainable marketing strategies should prioritise authenticity and transparency, with specific emphasis on:

1. Providing concrete, quantifiable information about

environmental impacts by India's Environmental Protection Act, 1986.
2. Securing credible third-party certifications such as BIS Ecomark, GRIHA Green Product Certification, or India-specific sustainable standards.
3. Acknowledging limitations and challenges in sustainability efforts, particularly those relevant to the Indian context, such as water conservation and plastic waste management.
4. Maintaining consistency between sustainability claims and broader corporate actions as per the recent CSR guidelines under the Companies Act.

Second, the findings indicate that effective, sustainable marketing in India should connect products with consumers' identities and values by:

1. Framing sustainable purchases as expressions of personal values while acknowledging traditional Indian concepts of conservation and harmony with nature.
2. Highlighting the collective impact of individual purchase decisions on pressing local environmental issues like air pollution in urban centres and water conservation.
3. Creating a community around sustainable consumption through initiatives like community cleanups and local environmental awareness programs.
4. Emphasising how products help consumers align actions with aspirations for a cleaner, healthier India.

Third, marketers should address common barriers to sustainable purchasing in the price-sensitive Indian market by:

1. Communicating the value proposition that justifies any price premium, particularly focusing on long-term cost savings and health benefits relevant to Indian consumers.
2. Designing sustainable options that minimise convenience trade-offs and are accessible across different retail channels, including local Kirana stores.
3. Providing education about sustainability benefits in accessible formats in both English and Hindi.
4. Offering graduated options at different price points that allow Indian consumers across socio economic segments to make incremental changes.

Finally, marketers must adapt to the evolving sophistication of consumers by:

1. Moving beyond simplistic "green" messaging to more nuanced sustainability narratives.
2. Providing increasingly detailed information for those who seek it.
3. Anticipating and addressing potential scepticism proactively.
4. Developing more comprehensive approaches to sustainability that address multiple dimensions.

Conclusion

Summary of Key Findings: This study explored the relationship between sustainable marketing strategies and consumer purchase intentions through qualitative interviews with 28 Indian participants across major metropolitan cities. The findings revealed four key themes: (1) authenticity and transparency as trust builders in the Indian market, (2) value alignment and identity reinforcement within the Indian cultural context, (3) barriers to sustainable purchasing specific to Indian consumers, and (4) the evolution of consumer sophistication in evaluating sustainability claims in India.

Based on these themes, the study proposed the Sustainable Purchase Intention Pathway as a conceptual framework that maps the psychological journey from sustainable marketing exposure to purchase intention formation. This framework highlights the sequential nature of consumer evaluation and the potential points where the pathway may be disrupted.

The findings emphasise that effective, sustainable marketing requires more than simply making green claims; it demands authentic communication, alignment with consumer values, practical accessibility, and adaptation to evolving consumer literacy in sustainability issues.

Theoretical Contributions: My research contributes to our understanding of sustainable marketing in several important ways.

First, most previous studies have used quantitative methods with surveys and experiments. My qualitative approach offers something different - a deep dive into the psychological processes that connect sustainability marketing with purchase decisions. The rich interview data reveals nuances that quantitative approaches might miss. Second, I've developed a new framework - the Sustainable Purchase Intention Pathway - that builds on existing theories but is specifically tailored to sustainable consumption. This framework helps us understand consumers' unique psychological journey when evaluating green products.

Third, I've documented something that hasn't gotten enough attention - how consumers' responses to sustainable marketing change over time. My research shows that people develop more sophisticated ways of evaluating sustainability claims as they gain experience. This temporal dimension adds an important new perspective to the field.

Limitations and Future Research Directions: My study has some limitations that are worth acknowledging. Since I used a qualitative approach, I can't quantify how important each factor is or prove causal relationships between marketing strategies and purchase intentions. Also, while I tried to include diverse participants, my sample of 28 people was mainly from major Indian cities like Delhi, Mumbai, and Bangalore. This means I didn't capture people's perspectives from smaller cities or rural areas, where views on sustainability might differ.

Where should research go next? I think a mixed-methods approach would be valuable - perhaps starting with my qualitative findings and testing them with a larger, more diverse sample across India. I'm particularly interested

in longitudinal research that could track how Indian consumers' responses to sustainable marketing change, especially as our environmental regulations evolve and public awareness grows. I also think we need studies comparing urban and rural Indian consumers. The sustainability challenges and awareness levels in a village in Bihar versus South Delhi are likely quite different, and marketing strategies should reflect these differences.

Additional research directions include exploring how digital and social media are changing the dynamics of sustainable marketing in India's rapidly evolving digital landscape, investigating the role of peer influence and traditional family decision-making structures in sustainable purchasing decisions in Indian households, and examining how the COVID-19 pandemic has affected Indian consumer priorities regarding sustainability about the government's Atmanirbhar Bharat (Self-Reliant India) initiative and greater emphasis on local production.

Concluding Remarks: My research sheds light on a complex question: How does sustainable marketing influence purchase intentions in the Indian market? This is particularly relevant now, as environmental concerns become more prominent in Indian society. Government initiatives like Swachh Bharat have raised awareness, and we're seeing more public discussion about pollution and climate change in media and everyday conversations.

I've found that Indian consumers are becoming more sophisticated in evaluating sustainability claims. Marketing strategies must keep up with this evolution and address India's unique environmental challenges.

India's most effective sustainable marketing doesn't just make vague claims about being "green" or "eco-friendly." It combines three key elements: authentic communication backed by evidence, alignment with Indian cultural values and contexts, and practical accessibility for consumers across different income levels. This approach is crucial in India, where companies must balance environmental goals with the economic realities of a developing nation.

As India continues its economic growth while facing serious environmental challenges, this research can help create marketing approaches that benefit businesses and the environment while supporting our country's sustainability goals.

References:-

1. Ajzen, Icek. "The Theory of Planned Behavior." Organisational Behavior and Human Decision Processes, vol. 50, no. 2, 1991, pp. 179–211.
2. Alhouti, Sarah, et al. "The Impact of Corporate Social Responsibility Authenticity on Brand Equity." Services Marketing Quarterly, vol. 37, no. 2, 2016, pp. 436–451.
3. Braun, Virginia, and Victoria Clarke. "Using Thematic Analysis in Psychology." Qualitative Research in Psychology, vol. 3, no. 2, 2006, pp. 77–101.
4. Carrington, Michal J., et al. "Why Ethical Consumers Don't Walk Their Talk: Towards a Framework for Understanding the Gap Between the Ethical Purchase Intentions and Actual Buying Behaviour of Ethically Minded Consumers." Journal of Business Ethics, vol. 97, no. 1, 2010, pp. 139–158.
5. Chen, Yu-Shan, and Ching-Hsun Chang. "Enhance Green Purchase Intentions: The Roles of Green Perceived Value, Green Perceived Risk, and Green Trust." Management Decision, vol. 50, no. 3, 2012, pp. 502-520.
6. Corner, Adam, and Alex Randall. "Selling Climate Change? The Limitations of Social Marketing as a Strategy for Climate Change Public Engagement." Global Environmental Change, vol. 21, no. 3, 2011, pp. 1005–1014.
7. Creswell, John W., and Cheryl N. Poth. Qualitative Inquiry and Research Design: Choosing Among Five Approaches. Sage Publications, 2018.
8. Delmas, Magali A., and Vanessa Cuerel Burbano. "The Drivers of Greenwashing." California Management Review, vol. 54, no. 1, 2011, pp. 64-87.
9. Dermody, Janine, et al. "Apparel Consumption and Identity: A UK-Based Sustainable Consumption Study." Journal of Marketing Management, vol. 34, no. 5–6, 2018, pp. 1472–1505.
10. Diamantopoulos, Adamantios, et al. "Can Socio-Demographics Still Play a Role in Profiling Green Consumers? A Review of the Evidence and an Empirical Investigation." Journal of Business Research, vol. 56, no. 6, 2003, pp. 465-480.
11. Fritz, Heiner, et al. "Authenticity in Supramolecular Packaging: A Multidimensional Consumer-Based Approach." Journal of Consumer Marketing, vol. 34, no. 4, 2017, pp. 328–338.
12. Glaser, Barney G., and Anselm L. Strauss. The Discovery of Grounded Theory: Strategies for Qualitative Research. Aldine Transaction, 1967.
13. Grimmer, Martin, and Timothy Woolley. "Green Marketing Messages and Consumers' Purchase Intentions: Promoting Personal Versus Environmental Benefits." Journal of Marketing Communications, vol. 20, no. 4, 2014, pp. 231–250.
14. Hartmann, Patrick, and Vanessa Apaolaza-Ibáñez. "Consumer Attitude and Purchase Intention Toward Green Energy Brands: The Roles of Psychological Benefits and Environmental Concern." Journal of Business Research, vol. 65, no. 9, 2012, pp. 1254-1263.
15. Hosta, Maja, and Vesna Zabkar. "Antecedents of Environmentally and Socially Responsible Sustainable Consumer Behavior." Journal of Business Ethics, vol. 160, no. 4, 2019, pp. 1165-1184.
16. Joshi, Yatish, and Zillur Rahman. "Factors Affecting

Green Purchase Behaviour and Future Research Directions." International Strategic Management Review, vol. 3, no. 1–2, 2015, pp. 128–143.
17. Kumar, V., and Anita Christodoulopoulou. "Sustainability and Branding: An Integrated Perspective." Industrial Marketing Management, vol. 43, no. 1, 2014, pp. 396-405.
18. Leonidou, Constantinos N., and Dionysis Skarmeas. "Gray Shades of Green: Causes and Consequences of Green Skepticism." Journal of Business Ethics, vol. 144, no. 2, 2017, pp. 401-415.
19. Matthes, Jörg, and Anke Wonneberger. "The Skeptical Green Consumer Revisited: Testing the Relationship Between Green Consumerism and Skepticism Toward Advertising." Journal of Advertising, vol. 43, no. 2, 2014, pp. 115-127.
20. Minton, Elizabeth, et al. "Sustainable Marketing and Social Media: A Cross-Country Analysis of Motives for Sustainable Behaviors." Journal of Advertising, vol. 41, no. 4, 2012, pp. 69–84.
21. Morhart, Felicitas, et al. "Brand Authenticity: An Integrative Framework and Measurement Scale." Journal of Consumer Psychology, vol. 25, no. 2, 2015, pp. 200–218.
22. Moser, Andrea K. "Thinking Green, Buying Green? Drivers of Pro-Environmental Purchasing Behavior." Journal of Consumer Marketing, vol. 32, no. 3, 2015, pp. 167–175.
23. Naderi, Iman, and Eric Van Steenburg. "Me First, Then the Environment: Young Millennials as Green Consumers." Young Consumers, vol. 19, no. 3, 2018, pp. 280-295.
24. Nielsen, Richard P. "Changing Unethical Organisational Behavior." *Academy of Management Executive*, vol. 3, no. 2, 1989, pp. 123–130.
25. Parguel, Béatrice, et al. "How Sustainability Ratings Might Deter 'Greenwashing': A Closer Look at Ethical Corporate Communication." *Journal of Business Ethics*, vol. 102, no. 1, 2011, pp. 15–28.
26. Peattie, Ken, and Frank-Martin Belz. "Sustainability Marketing: An Innovative Conception of Marketing." *Marketing Review St. Gallen*, vol. 27, no. 5, 2010, pp. 8-15.
27. Petty, Richard E., and John T. Cacioppo. *Communication and Persuasion: Central and Peripheral Routes to Attitude Change.* Springer-Verlag, 1986.
28. Schmuck, Desirée, et al. "The Effects of Environmental Brand Attributes and Nature Imagery in Green Advertising." *Environmental Communication*, vol. 12, no. 3, 2018, pp. 414–429.
29. Taufique, Khan M. R., et al. "The Influence of Eco-Label Knowledge and Trust on Pro-Environmental Consumer Behaviour in an Emerging Market." *Journal of Strategic Marketing*, vol. 24, no. 7, 2016, pp. 511–535.
30. Timmermans, Stefan, and Iddo Tavory. "Theory Construction in Qualitative Research: From Grounded Theory to Abductive Analysis." *Sociological Theory*, vol. 30, no. 3, 2012, pp. 167–186.
31. White, Katherine, et al. "Could You Turn Off the Lights? Approaches to Encouraging Sustainable Consumption in a Social Dilemma Context." *Journal of Consumer Psychology*, vol. 29, no. 3, 2019, pp. 1451–1465.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

फैशन ब्रांडों की बिक्री बढ़ाने में सोशल कॉमर्स की भूमिका

डॉ. रुक्मणि यादव* प्रो. प्रमोद यादव**

* सहायक प्राध्यापक, पीएमसीओई श्री नीलकंठेश्वर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खंडवा (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक, कॉलेज ऑफ कॉमर्स, आईपीएस अकादमी, इंदौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – सोशल कॉमर्स ई-कॉमर्स और सोशल मीडिया के समामेलन का प्रतिनिधित्व करता है, जो खरीदारी और उत्पाद प्रचार के तरीकों में क्रांतिकारी बदलाव लाता है। Facebook,youtube और Instagram जैसे प्लेटफॉर्म ने इस प्रवृत्ति को तेज कर दिया है, जिससे उपभोक्ता अपने पसंदीदा एप्लिकेशन से बाहर निकले बिना चीजों को खोज, देख और खरीद सकते हैं। यह सहज एकीकरण ग्राहकों के लिए खरीदारी के अनुभव को बेहतर बनाता है, इसे और अधिक सुविधाजनक और आनंददायक बनाता है। सोशल कॉमर्स व्यवसायों को लक्षित मार्केटिंग और व्यक्तिगत खरीदारी अनुभवों के माध्यम से उपभोक्ताओं से जुड़ने के लिए अभिनव तरीके प्रदान करता है। फैशन फर्म सोशल कॉमर्स को अपनाकर इस तकनीक-संचालित वातावरण में समृद्ध हो सकती हैं, जिससे सुविधा प्रदान करते हुए उपभोक्ताओं के साथ गहरे संबंध बन सकते हैं। सोशल कॉमर्स के लाभ में बढ़ी हुई उपभोक्ता वफादारी, कम विज्ञापन खर्च, बढ़ी हुई दृश्यता और डेटा-सूचित अंतर्दृष्टि शामिल हैं।

फैशन उद्योग में उत्पादों को प्रतिस्पर्धियों से अलग करने और संभावित उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए बाजार विभाजन आवश्यक है। यह संगठनों को विभिन्न उपभोक्ता इच्छाओं और वरीयताओं को समझने में सक्षम बनाता है, जिससे उत्पाद, मूल्य निर्धारण, विज्ञापन और वितरण में प्रभावी संशोधन की सुविधा मिलती है। सोशल मीडिया और ई-कॉमर्स मार्केटिंग रणनीतियाँ दुनिया भर में बाजार तक पहुँच को व्यापक बनाकर, जुड़ाव को बढ़ाकर और उपभोक्ता इक्विटी को बढ़ाकर राजस्व बढ़ा सकती हैं। सोशल कॉमर्स, जो ऑनलाइन शॉपिंग के साथ सोशल नेटवर्किंग को एकीकृत करता है, अनुकूलित उत्पाद सुझाव और अत्यधिक लक्षित विज्ञापन जैसे लाभ प्रदान करता है। फिर भी, यह एल्गोरिदमिक परिवर्तन, प्रतिष्ठा संबंधी खतरे, सीमित उत्पाद प्रतिनिधित्व, साइबर सुरक्षा मुद्दे और बाजार की अधिकता जैसी कमियाँ भी प्रस्तुत करता है। उतार-चढ़ाव वाले बाजार में लाभप्रदता और प्रतिस्पर्धात्मकता बनाए रखने के लिए फैशन कंपनियों के लिए बाजार विभाजन महत्वपूर्ण है।

शब्द कुंजी –सोशल कॉमर्स, फैशन, उपभोक्ता, ऑनलाइन शॉपिंग, ई-कॉमर्स।

प्रस्तावना – जब आप सोशल मीडिया साइट्स पर सीधे चीजें खरीदते और बेचते हैं, तो आप 'सोशल कॉमर्स' कर रहे होते हैं। पहले यह सिर्फ उत्पादों की समीक्षा और सुझाव हुआ करता था, लेकिन अब पोस्ट पर क्लिक करके उन्हें खरीदा जा सकता है और खरीदारी भी पहले से ही हो जाती है। जब सोशल मीडिया और इंटरनेट शॉपिंग एक साथ इतने अच्छे से काम करते हैं, तो ग्राहकों को ज्यादा दिलचस्प और इंटरैक्टिव शॉपिंग अनुभव मिल सकता है। हमारे खरीदारी करने का तरीका बदल रहा है क्योंकि सोशल कॉमर्स पूरे शॉपिंग अनुभव को सोशल मीडिया साइट्स पर डाल रहा है। Facebook,youtube और Instagram जैसे विशाल प्लेटफॉर्म, जिन पर अरबों सक्रिय लोग हैं, ने इस चलन को तेज कर दिया है। लोग अपने पसंदीदा सोशल मीडिया ऐप को छोड़े बिना सोशल कॉमर्स के जरिए सामान ढूँढ़ सकते हैं, उन्हें देख सकते हैं और खरीद सकते हैं। उदाहरण के लिए, आप Instagram पर देखते समय कोई उत्पाद देख सकते हैं, उसे अपनी कार्ट में जोड़ सकते हैं और फिर ऐप को छोड़े बिना उसे खरीद सकते हैं। उपयोगकर्ता इस सहज विलय में रुचि रखते हैं, जिससे खरीदारी भी आसान हो जाती है। ज्यादा से ज्यादा लोग इंटरनेट से जुड़ने के लिए अपने फोन का इस्तेमाल कर रहे हैं, जिससे सोशल बिजनेस को बढ़ने में भी मदद मिल रही है। दुनिया भर में 92% इंटरनेट उपयोगकर्ता अपने फोन पर वेब का उपयोग कर रहे हैं, इसलिए सोशल मीडिया साइट्स खरीदारी का एक स्वाभाविक हिस्सा बन गई हैं।

सोशल कॉमर्स कंपनियों को लक्षित मार्केटिंग और कस्टमाइज्ड शॉपिंग अनुभवों के माध्यम से ग्राहकों से जुड़ने के नए तरीके भी देता है। डेटा और AI का उपयोग करके, स्टोर व्यक्तिगत सौदे और सुझाव दे सकते हैं, जिससे खरीदारी का अनुभव हर तरफ बेहतर हो जाता है।

संक्षेप में, सोशल कॉमर्स खरीदारी को आसान, अधिक मजेदार और प्रत्येक ग्राहक के लिए अधिक अनुकूल बनाकर स्टोर के काम करने के तरीके को बदल रहा है। जैसा कि व्यवसाय और ग्राहक यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि इस बदलते चलन का पालन कैसे किया जाए, यह एक रोमांचक समय है।

अध्ययन का उद्देश्य:

1. फैशन ब्रांड्स की मार्केटिंग और बिक्री रणनीतियों पर सोशल कॉमर्स के प्रभाव की जांच करना।
2. प्रभावी मार्केटिंग और बिक्री के लिए सोशल कॉमर्स के पक्ष और विपक्ष की पहचान करना।
3. फैशन की सफलता में बाजार विभाजन का महत्व।

फैशन ब्रांड्स की मार्केटिंग और बिक्री रणनीतियों पर सोशल कॉमर्स के प्रभाव – ई-कॉमर्स को सोशल मीडिया के साथ जोड़कर, 'सोशल कॉमर्स' ने फैशन फर्मों द्वारा अपने उत्पादों को बढ़ावा देने और बेचने के तरीके में

क्रांति ला दी है। इस विलय के परिणामस्वरूप व्यापार करने का एक अधिक सहभागी और ग्राहक-केंद्रित तरीका सामने आया है।

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, उपयोगकर्ता द्वारा निर्मित सामग्री विज्ञापनों के एक आवश्यक घटक के रूप में उभरी है। जब ग्राहक अपने अनुभव, स्टाइल संबंधी सिफारिशें और उत्पाद मूल्यांकन सोशल मीडिया पर प्रसारित करते हैं, तो प्रामाणिक ब्रांड समर्थन स्थापित होता है। यह विश्वास बनाने में मदद करता है और ब्रांड को अधिक भरोसेमंद बनाता है। इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग इसे और बढ़ाती है, क्योंकि इन्फ्लुएंसर प्रभावी रूप से ब्रांड और उनके लक्षित दर्शकों के बीच की खाई को पाटते हैं, जिससे दृश्यता और विश्वसनीयता बढ़ती है।

दूसरा, इंस्टाग्राम शॉप्स और फेसबुक मार्केटप्लेस जैसे सोशल कॉमर्स प्लेटफॉर्म द्वारा प्रत्यक्ष खरीदारी के अनुभव संभव हो गए हैं। ग्राहक ऐप को छोड़े बिना सहजता से उत्पादों को ब्राउज, खोज और खरीद सकते हैं। उपयोग में यह आसानी खरीदारी प्रक्रिया को छोटा करती है, जिससे राजस्व बढ़ता है।

लाइव स्ट्रीमिंग, पोल और प्रश्नोत्तर सत्र जैसे रीयल-टाइम जुड़ाव उपकरण ब्रांडों को अपने दर्शकों के साथ सीधे बातचीत करने, ग्राहक जुड़ाव बढ़ाने और समुदाय की भावना पैदा करने की अनुमति देते हैं। ये इंटरैक्शन उपभोक्ता की पसंद और व्यवहार के बारे में भी जानकारी देते हैं।

इसके अलावा, सोशल कॉमर्स प्लेटफॉर्म से डेटा और एनालिटिक्स ग्राहक की जनसांख्यिकी, खरीदारी के व्यवहार और ट्रेंडिंग प्राथमिकताओं के बारे में उपयोगी जानकारी देते हैं। ब्रांड इस डेटा का लाभ उठाकर व्यक्तिगत अभियान तैयार कर सकते हैं और अपनी इन्वेंट्री को ऑप्टिमाइज कर सकते हैं।

अब रचनात्मक सामग्री के माध्यम से कहानी कहने पर जोर दिया जाने लगा है। फैशन ब्रांड अक्सर उपभोक्ताओं को लुभाने और ब्रांड के सिद्धांतों को बताने के लिए आकर्षक छवियों वाले पोस्ट और वीडियो बनाते हैं।

फैशन ब्रांड सोशल कॉमर्स को अपनाकर आज की तकनीक-संचालित दुनिया में आगे बढ़ सकते हैं। यह उन्हें अपने उपभोक्ताओं के साथ गहरे स्तर पर जुड़ने की अनुमति देता है और साथ ही उन्हें वह सुविधा भी प्रदान करता है जिसकी उन्हें जरूरत है।

प्रभावी मार्केटिंग और बिक्री के लिए सोशल कॉमर्स के पक्ष और विपक्ष की पहचान करना।

जब विज्ञापन और बिक्री रणनीति की बात आती है, तो सोशल कॉमर्स कई तरह के फायदे और नुकसान पेश करता है।

फायदे:

बेहतर जुड़ाव के जरिए ग्राहक वफादारी में सुधार: सोशल कॉमर्स पोल, डायरेक्ट मैसेजिंग और लाइव स्ट्रीम के जरिए ग्राहकों के साथ रीयल-टाइम इंटरैक्शन की अनुमति देता है, जिससे व्यक्तिगत संबंध बनते हैं।

Instagram शॉप और इसी तरह के प्लेटफॉर्म ऐप से बाहर निकले बिना खरीदारी करना संभव बनाते हैं, जो खरीदारी की प्रक्रिया को बहुत सरल बनाता है और ग्राहकों के लिए इसे ज्यादा सुविधाजनक बनाता है।

विज्ञापनों पर पैसे बचाएँ: प्रभावशाली मार्केटिंग और उपयोगकर्ता-जनित सामग्री का लाभ उठाकर, आप विश्वसनीयता या प्रामाणिकता का त्याग किए बिना महंगे पारंपरिक विज्ञापनों पर कटौती कर सकते हैं।

बढ़ा हुआ एक्सपोजर: सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के बड़े उपयोगकर्ता आधार की बदौलत, मार्केटर्स अपने व्यक्तिगत विज्ञापनों और AI-संचालित सुझावों के साथ दुनिया भर के लोगों तक पहुँच सकते हैं।

डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि: सोशल कॉमर्स प्लेटफॉर्म मेट्रिक्स उपभोक्ता की आदतों और स्वाद के बारे में आकर्षक विवरण प्रकट करते हैं, जिससे ब्रांड अपने दृष्टिकोण को बेहतर बना सकते हैं।

विपक्ष:जब ब्रांड किसी खास प्लेटफॉर्म पर काफी हद तक निर्भर होते हैं, तो वे एल्गोरिदम समायोजन और नीति संशोधनों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।

प्रतिष्ठा के लिए खतरा: असंतुष्ट ग्राहकों की समीक्षा या टिप्पणियाँ जंगल की आग की तरह फैल सकती हैं, जिससे कंपनी की छवि खराब हो सकती है।

प्लेटफॉर्म द्वारा उन पर लगाए गए नियमों के कारण ब्रांड खुद को अभिव्यक्त करने और अपने उत्पादों को निजीकृत करने की अपनी क्षमता में सीमित हैं।

ग्राहक साइबर सुरक्षा चिंताओं, जैसे डेटा उल्लंघन और ऑनलाइन धोखाधड़ी के कारण सोशल कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर भरोसा करने में झिझक सकते हैं।

ओवरसैचुरेशन: सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर प्रतिस्पर्धा के उच्च स्तर के कारण, छोटे ब्रांडों को खुद को अलग पहचान दिलाना अधिक चुनौतीपूर्ण लग सकता है।

ब्रांड इन कठिनाइयों से सक्रिय रूप से निपटकर इसके खतरों को कम करते हुए सोशल कॉमर्स का अधिकतम लाभ उठा सकते हैं।

फैशन की सफलता में बाजार विभाजन का महत्व: तीव्र प्रतिस्पर्धा फैशन उद्योग की पहचान है, क्योंकि कई ब्रांड और कंपनियां उपभोक्ताओं का ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रतिस्पर्धा करती हैं। फैशन उत्पादों को उनके प्रतिस्पर्धियों से अलग करने और संभावित उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए, एक प्रभावी विपणन रणनीति को लागू करना आवश्यक है। फैशन कंपनियों को सबसे हालिया रुझानों के लिए प्रासंगिक बने रहना चाहिए और उपभोक्ता आवश्यकताओं और इच्छाओं को पूरा करना चाहिए, क्योंकि उद्योग में उपभोक्ता प्राथमिकताएं और रुझान तेजी से बदलते रहते हैं। एक गतिशील बाजार में, लाभप्रदता और प्रतिस्पर्धात्मकता सुनिश्चित करने के लिए उत्पाद पेशकशों और विपणन रणनीतियों को अनुकूलित करने में उत्तारदायी होना महत्वपूर्ण है।

मार्केट सेगमेंटेशन मार्केटिंग रणनीतियों के विकास में अपरिहार्य है, क्योंकि यह संगठनों को ऐसी रणनीतियाँ विकसित करने में सक्षम बनाता है जो उपभोक्ताओं की बदलती आवश्यकताओं के लिए अधिक प्रासंगिक और अनुकूलनीय हों। यह उन्हें अपने प्रतिस्पर्धियों से खुद को अलग करने, संभावित उपभोक्ताओं का ध्यान आकर्षित करने और अत्यधिक प्रतिस्पर्धी बाजार में अपनी लाभप्रदता और प्रतिस्पर्धात्मकता को बनाए रखने में सक्षम बनाता है। बाजार विभाजन संगठनों को उपभोक्ताओं की विविध आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं की पहचान करने में सक्षम बनाता है, जिससे प्रत्येक खंड के लिए उत्पाद, मूल्य, प्रचार और वितरण में अधिक कुशल समायोजन संभव हो पाता है।

कंपनियाँ सोशल मीडिया और ई-कॉमर्स के माध्यम से व्यापक और अधिक खंडित बाजार तक पहुँचकर उपभोक्ताओं की जरूरतों और इच्छाओं की अधिक व्यापक समझ हासिल करने के लिए उनसे सीधे बातचीत कर

सकती हैं। फैशन कंपनियाँ उचित बाजार विभाजन के कार्यान्वयन के माध्यम से विभिन्न उपभोक्ताओं की प्राथमिकताओं और आवश्यकताओं के अनुसार अपने उत्पादों को समायोजित करके अपनी लाभप्रदता बढ़ा सकती हैं। इसके अलावा, फैशन कंपनियाँ उपयुक्त बाजार विभाजन को नियोजित करके इन्वेंट्री प्रबंधन को अनुकूलित कर सकती हैं, जो ओवरस्टॉकिंग या अंडरस्टॉकिंग की संभावना को कम करता है, जो संभावित रूप से लाभप्रदता को प्रभावित कर सकता है।

कई तरीकों से सोशल मीडिया और ई-कॉमर्स मार्केटिंग रणनीतियों के कार्यान्वयन के माध्यम से फैशन उत्पादों को अधिक लाभदायक बनाया जा सकता है। प्रारंभ में, वैश्विक बाजार पहुंच का विस्तार, बढ़ी हुई सहभागिता का विकास और ग्राहक इक्विटी में वृद्धि सोशल मीडिया मार्केटिंग गतिविधियों के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। दूसरे, ई-कॉमर्स फैशन कंपनियों को एक व्यापक और अधिक विशिष्ट बाजार खंड को लक्षित करने में सक्षम बनाता है। उदाहरण के लिए, अपने बाजार का विस्तार करने, बिक्री प्रक्रिया को अनुकूलित करने, बिक्री क्षमता बढ़ाने, उपभोक्ताओं के साथ मजबूत संबंध बनाने, ब्रांड जागरूकता बढ़ाने और नकली उत्पादों के जोखिम को कम करने के लिए, व्यापारियों को अपने उत्पादों को ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर बेचना चाहिए और सोशल मीडिया पर सामग्री तैयार करनी चाहिए।

इसके अलावा, इंटरनेट और ऑनलाइन चौनलों का उपयोग अंतर्राष्ट्रीयकरण प्रक्रिया में एक शक्तिशाली साधन माना जाता है, क्योंकि इसमें नकली उत्पादों के जोखिम को कम करने की क्षमता है, विशेष रूप से उच्च-स्तरीय फैशन क्षेत्र में। नतीजतन, ई-कॉमर्स और सोशल मीडिया का लाभ उठाने वाली मार्केटिंग रणनीतियों को लागू करके फैशन उत्पादों की लाभप्रदता को बढ़ाया जा सकता है, जो वैश्विक बाजार का विस्तार करने और अधिक उपभोक्ता जुड़ाव को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है। व्यापारी ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर अपने फैशन उत्पादों का विपणन करके अपनी लाभप्रदता बढ़ा सकते हैं, जिससे उन्हें विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में उपभोक्ताओं तक पहुँचने में मदद मिलेगी और भौतिक खुदरा प्रतिष्ठानों की सीमाओं को दरकिनार किया जा सकेगा। व्यापारी अपने ब्रांड की पहुँच को व्यापक बनाकर और ई-कॉमर्स के माध्यम से संभावित उपभोक्ताओं का ध्यान आकर्षित करके ब्रांड पहचान बढ़ा सकते हैं और खरीदारी के निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं।

निष्कर्ष –सोशल मीडिया और ऑनलाइन शॉपिंग का एक साथ उपयोग, जिसे 'सोशल कॉमर्स' के रूप में जाना जाता है, उपभोक्ताओं की खरीदारी के तरीके को बदल रहा है। लोगों को अब Facebook,youtube और Instagram जैसे प्लेटफॉर्म पर उत्पादों को खोजने, ब्राउज करने और खरीदने के लिए अपने पसंदीदा एप्लिकेशन को छोड़ने की जरूरत नहीं है। यह प्राकृतिक मिलन खरीदारी को अधिक आनंददायक और कम बोझिल बनाता है। सोशल कॉमर्स फर्मों को अनुकूलित उत्पाद अनुशंसाओं और अत्यधिक लक्षित विज्ञापन के माध्यम से ग्राहकों से जुड़ने में सक्षम बनाता है। समकालीन प्रौद्योगिकी-उन्मुख परिदृश्य में, फैशन फर्म सोशल कॉमर्स के उपयोग के माध्यम से फल-फूल सकती हैं। यह उपभोक्ताओं के साथ अधिक घनिष्ठ संबंध बनाने में मदद करेगा और उनकी सहजता की मांग को पूरा करेगा।

मार्केटिंग और बिक्री सोशल कॉमर्स से बहुत सारे लाभ प्राप्त कर सकते हैं, जैसे अधिक एक्सपोजर, कम विज्ञापन लागत, अधिक वफादार ग्राहक और डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि। लेकिन इसके कुछ नुकसान भी हैं, जिनमें एल्गोरिदम में बदलाव, प्रतिष्ठा संबंधी जोखिम, प्रतिबंधित उत्पाद अभिव्यक्ति, साइबर सुरक्षा संबंधी चिंताएँ और अतिसंतृप्ति शामिल हैं। फैशन उद्योग में ग्राहकों की इच्छाओं और जरूरतों को निर्धारित करने और वितरण, मूल्य निर्धारण, प्रचार और उत्पादों में प्रभावी बदलाव करने के लिए बाजार को विभाजित करना आवश्यक है। ई-कॉमर्स और सोशल मीडिया मार्केटिंग के इस्तेमाल से वैश्विक स्तर पर ब्रांड जागरूकता, उपभोक्ता भागीदारी और राजस्व में वृद्धि हो सकती है। ऑनलाइन चौनल व्यापारियों को नकली सामान कम करने,ब्रांड पहचान बढ़ाने और भौगोलिक सीमाओं से बचने की अनुमति देते हैं, ये सभी चीजें अधिक मुनाफे और कड़ी प्रतिस्पर्धा वाले फैशन उद्योग में अधिक प्रतिस्पर्धा में योगदान करती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Nurpauzi, C., Alghazli, M., Khoirusifa, S., Hafidz, G., & Reviansyah, S. (2024). Influence of Market Segmentation on Fashion Products on Profitability Levels with Marketing Strategies Through Social Media and E-Commerce. *JUSTINFO | Jurnal Sistem Informasi dan Teknologi Informasi*. https://doi.org/10.33197/justinfo.vol1.iss2.2023.1746.
2. IIFT Bangalore Blog(https://www.iiftbangalore.com/blog/the-fashion-revolution-how-social-commerce-is-redefining-the-industry/)
3. hhttps://www.wahool.com/resources/social-commerce-why-its-the-future-of-fashion/
4. Pandey, S., and Chawla, D. (2019). Engaging m-commerce adopters in India. *J. Enterp. Inf. Manag.*, 32,191-210. https://doi.org/10.1108/JEIM-06-2018-0109.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

ई.एम.आई. चार्वाक दर्शन और मानव जीवन (सुभाषनगर, सागर के संदर्भ में)

प्रिया ठाकुर* डॉ. सुनील साहू**

* छात्र, बीए तृतीय वर्ष, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – ई.एम.आई. का उपयोग आजकल एक आम सी बात हो गई है फिर चाहे वह एक मोबाइल फोन के लिए किए गए ई.एम.आई. के उपयोग से नाता रखता हो या चाहे बड़े-बड़े वाहनों और मशीनों के लिए ई.एम.आई. के उपयोग की बात हो एक व्यक्ति किसी ऋण और साथ ही किसी वस्तु के लिए ई.एम.आई. का उपयोग करता है ई.एम.आई. के उपयोग में पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं की भी प्रबल भागीदारी देखने में सामने आई है। ई.एम.आई.के द्वारा व्यक्ति अपनी कम आय में भी अपनी सभीआवश्यकताओं को पूरा कर सकता है। चार्वाक दर्शन तीन नास्तिक दर्शनों में से प्रमुख नास्तिक दर्शन है। जो वर्तमान जीवन में सुख को महत्व देता है। इसका मानना है कि भविष्य की अनिश्चितओं के बजाय वर्तमान में सुख का अनुभव करना चाहिए। इस शोध पत्र में ई.एम.आई. सुविधा का उपयोग कर रहे व्यक्तियों के सामाजिक और आर्थिक जीवन पर होने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया है। मासिक आय के आधार पर 10000 – 20000 तक वेतन पाने वाले लोगों में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ई.एम.आई. के उपयोग की प्रवृत्ति अधिक देखी गई लगभग 73.3 प्रतिशत लोगों द्वारा वाहन के लिए ई.एम.आई. का उपयोग किया जा रहा है जबकि 16.7प्रतिशत लोगों द्वारा किसी ऋण के लिए ई.एम.आई. की किस्त भरी जाती है। शोध पत्र में ई.एम.आई. सुविधा का उपयोग करने वाले व्यक्तियों की समस्याएं व सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

शब्द कुंजी –ई.एम.आई., चार्वाक दर्शन, मानव जीवन, ऋण।

प्रस्तावना – ई.एम.आई. क्या है ?

ई.एम.आई. का शाब्दिक अर्थ है सामान मासिक किस्त जिसे अंग्रेजी में Equated Monthly Installment भी कहा जा सकता है जब हम किसी कंपनी या बैंक से बड़ी राशि का ऋण लेते हैं तो उसके लाभ के साथ मूल राशि पर ब्याज भी जुड़ जाता है इस बढ़ती राशि को हम मासिक रूप से किश्त भरकर समाप्त कर सकते हैं इस मासिक किश्त का भुगतान ही ई.एम.आई. कहलाता है।

ई.एम.आई. वर्तमान मानव के लिए एक सुविधा का विषय है। ई.एम.आई. आजकल प्रत्येक वस्तु के लिए एवं अपनी आवश्यकताओं तथा अपनी शौक को पूरा करने का सबसे सरल रास्ता हैं। जिन व्यक्तियों का यह अनुमान होता है कि भविष्य में उनकी आय के स्रोत स्थिर बने रहेंगे या बढ़ाने की संभावना है वह अपनी वर्तमान आय कम होने के बावजूद अपनी अव्यवस्थाओं एवं जरूरतो को पूरा करने के लिए वस्तुओं का क्रय इस आधार पर कर लेता है कि वह उन वस्तुओं का भुगतान ई.एम.आई. पर कर सकता है।

ई.एम.आई. के द्वारा व्यक्ति अपनी कम आय में भी अपनी सभी जरूरतो को पूरा कर सकता है इस शोध पत्र में किसी व्यक्ति के जीवन के किसी विभिन्न पहलुओं अथवा सामाजिक जीवन और आर्थिक जीवन पर ई.एम.आई. के उपयोग से क्या प्रभाव पड़ता है, इसका अध्ययन किया है। आजकल चार्वाक दर्शन के अनुसार यदि सुख प्राप्त करने के लिए उधार लेना पड़े, तो इसमें कोई बुराई नहीं है। यह दर्शन इस विचार को प्रकट करता है कि जब तक जीवन है, सुख से जीना चाहिए और यदि इसके लिए उधार लेना पड़े तो लेना चाहिए। इस दर्शन के अनुसार मृत्यु के बाद कोई अस्तित्व नहीं है, इसलिए उधार चुकाने की चिंता नहीं करना चाहिए। इसमें कहा गया है कि 'ऋणकृत्वा घृतम पिबेत्' अर्थात् 'ऋण लेकर भी घी पियो।'

शोध प्रविधि – प्रस्तुत शोध पत्र में जानकारी प्राप्त करने के लिए कुछ प्रमुख शोध प्रविधियां का प्रयोग किया गया है जिसमें सर्वप्रथम प्रति चयन रीति का प्रयोग किया गया है। इस विधि के द्वारा कार्य क्षेत्र में से 30 इकाइयों का चयन किया गया है एवं उनका सर्वे किया गया सर्वे करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची तैयार की गई जिसमें करीब 30 प्रश्नों के माध्यम से डेटा संग्रहण रीति के अंतर्गत जानकारी एकत्र की गई।

एकत्रित किए गए आंकड़ों को उनके समान गुणो के आधार पर वर्गीकृत करके तत्पश्चात उनको सारणी के माध्यम से व्यवस्थित किया गया। यंत्र एवं तकनीक के तौर पर प्राविधिक साक्षात्कार एवं अंतिम साक्षात्कार अनुसूची, सामान्य गणितीय रीति प्रतिशत रीति एवं ग्राफ चित्रों का प्रयोग किया गया है।

साहित्य समीक्षा

1. कोयंबटूर शहर में वाणिज्यिक बैंकों के समान मासिक किस्त ई.एम.आई विकल्पों के प्रति उधारकर्ता की संतुष्टि – बैंकिंग उद्योग सहित प्रत्येक उद्योग में ग्राहक संतुष्टि आवश्यक है। बैंकिंग संस्थान ई.एम.आई. सुविधा अपनी प्रभावी सेवाओं के माध्यम से ग्राहकों की आवश्यकताओं को पूरा कर रहे हैं। अन्वेषक ने ग्राहक संतुष्टि का विश्लेषण

करने और कोयंबटूर में वाणिज्यिक बैंकों में ई.एम.आई. ऋण सेवा के प्रभावों की जाँच करने का एक प्रयास किया है। उत्तरदाताओं की मासिक आय अधिक है और उन्होंने कोयंबटूर शहर में विलासिता की वस्तुओं और वाहनों को खरीदने के लिए ऋण लिया है।

2. भारत में ई.एम.आई. निर्भरता का विकास : ऐतिहासिक और समकालीन दृष्टिकोण – समान मासिक किश्तें (ई.एम.आई.) उपभोक्ता वित्तपोषण की प्रमुख विशेषता बन गई हैं। जिससे परिवारों को बिना किसी अग्रिम भुगतानों के सामान और सेवाएँ खरीदने की अनुमति मिलती है। 2010 के बाद की अवधि में ई.एम.आई. संचालित ऋण में विस्फोट देखा गया।जिसमें आवास ऋण सबसे आगे रहे। वित्तीय वर्ष 2023 तक गृह ऋण कुल खुदरा ऋण पोर्टफोलियों का 47.7 प्रतिशत हिस्सा था, जबकि 2005 में यह केवल 25 प्रतिशत था। (सीआरआईएफ हाई मार्क-2024)।

'अभी खरीदें बाद में भुगतान करें' (बीएनपीएल) योजनाओं जैसे अभिनव वित्तीय उत्पादों की शुरूआत ई.एम.आई. के उपयोग को और बढ़ावा दिया है।

3. समान मासिक किश्त ई.एम.आई. योजनाएँ और अभी खरीदें, बाद में भुगतान करें (बीएनपीएल) सेवाऐं कैसे आवेगपूर्ण खरीदारी को बढ़ावा देती है। – ई.एम.आई. योजनाऐं और बीएनपीएल सेवाएँ काफी लचीलापन और सुविधा प्रदान करती है। लेकिन उनके साथ कुछ संभावित जोखिम भी जुड़े है, जिनका ग्राहकों को सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करना चाहिए। शोध के अनुसार, यदि ऋण का उचित उपयोग नहीं किया जाता है तो अस्थगित भुगतान और आसान ऋण उपलब्धता की अपील के परिणामस्वरूप आवेगपूर्ण व्यय और अधिक वित्तीय कठिनाइयाँ हो सकती है।

4. मुम्बई की आय का 50 प्रतिशत से ज्यादा रकम ई.एम.आई. पर खर्च।

जानकारी संग्रह – शोध पत्र के लिए तैयार किए गए प्रश्नों की प्रश्नावली के द्वारा कार्य क्षेत्र के लोगों का सर्वे कर आकड़े एकत्रित किए गए। सर्वे के माधयम से लोगों से निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर आंकड़े एकत्रित किए गए –

उनसे प्राप्त आंकड़े निम्न अनुसार है–

आयु के आधार पर वर्गीकरण –इस शोध पत्र के सर्वे के लिए 30 लोगों को चुना गया। जिसमें विभिन्न आयु वर्ग के लोगों को सम्मिलित किया गया । 30 – 40 आयु वर्ग के लोगों मे ई.एम.आई. के अधिक उपयोग की प्रवृत्ति देखी गई अर्थात् 30-40 का आयु वर्ग एक ऐसी अवस्था है जहां लोगों द्वारा नई वस्तुओं एवं नई इच्छाओं की पूर्ति के लिए अत्यधिक मात्रा में धन का निवेश किया जाता है।

सारणी – 01: आयु के आधार पर वर्गीकरण

आयु वर्ग	संख्या	प्रतिशत
20-30	1	3.5%
30-40	15	50%
40-50	5	16.6%
50-60	7	23.3%
60-70	2	6.6%
कुल	30	100%

स्त्रोत- स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

लिंग के आधार पर वर्गीकरण – सारणी एवं पाई चार्ट के आधार पर ई.एम.आई. के उपयोग का विवरण दर्शाया गया है। जिसमें 30 प्रतिशत महिला उत्तरदाता एवं 70 प्रतिशत पुरूष उत्तरदाता है। इस विवरण में असमानता के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक कारक हो सकते है। जिसमें पुरूषों की अधिक आय होने की संभावना है। जिससे उनकी क्रेडिट तक बेहतर पहुँच और ई.एम.आई. भुगतान करने की क्षमता बढ़ जाती है। साथ ही कुछ पारंपरिक लैंगिक कारक भी इस असमान विवरण के लिए जिम्मेदार हो सकते है।

सारणी – 02: लिंग के आधार पर वर्गीकरण

लिंग वर्ग	संख्या	प्रतिशत
महिला	9	30%
पुरूष	21	70%
कुल	30	100

स्त्रोत- स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

पेशे के आधार पर वर्गीकरण – पेशे के आधार पर स्वरोजगार करने वाले लोगों का प्रतिशत ई.एम.आई के उपयोग में सर्वाधिक 36.7 प्रतिशत प्राप्त हुआ जबकि सबसे कम प्रतिशत 13.4 प्रतिशत निजी संस्थानों में कार्य करने वाले लोगों का प्राप्त हुआ है। स्वरोजगार करने वाले व्यक्तियों में ई.एम.आई. के उच्च प्रतिशत विभिन्न कारणें से हो सकते है जैसे व्यवसायिक सम्पत्तियों (जैसे - उपकरण) में निवेश, ऋणों के माध्यम से व्यक्तिगत खर्च आदि। निजी क्षेत्र में ई.एम.आई. की हिस्सेदारी कम होने का कारण व्यक्तिगत खर्चों पर ऋणों की कम निर्भरता हो सकता है।

सारणी – 03: पेशे के प्रकार के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
स्वरोजगार	11	36.7%
व्यापारी	07	23.3%
निजी संस्था में कार्यरत	04	13.4%
सरकारी कर्मचारी	08	26.6%
बेरोजगार	-	-
कुल	30	100%

स्त्रोत- स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

मासिक आय के आधार पर वर्गीकरण – मासिक आय के आधार पर वर्गीकृत किये जाने पर रूपये 10000 - रूपये 20000 कमाने वाले लोगों का प्रतिशत सर्वाधिक 33.4% है। इससे स्पष्ट होता है कि कम आय प्राप्त करने वाले लोग अपनी इच्छाओं एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ई.एम.आई. के उपयोग पर जोर देते हैं ।

मध्यम आय वर्ग वाले लोगों में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नकद लेन-देन से करने का सामर्थ्य नहीं होता इसलिए वे ई.एम.आई. के माध्यम से अपनी आवश्यकताऐं पूरी करते है।

सारणी – 04: मासिक आय के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
<10,000	-	-
10,000 – 20,000	10	33.4%
20,000 – 30,000	8	26.6%
30,000– 40,000	7	23.3%
40,000 – अधिक	5	16.7%
कुल	30	100%

स्त्रोत– स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

ई.एम.आई. के उपयोग के आधार पर वर्गीकरण – ई.एम.आई. के राय के आधार पर 50 प्रतिशत लोगों का यह कहना था कि प्रारंभ में तो कोई कठिनाई नहीं होती परंतु बाद में भुगतान करने में असुविधा होती है। इसका कारण यह हो सकता है कि प्रारंभ में व्यक्ति यह सोचकर ई.एम.आई. के लिए राजी हो जाता है कि इसका भुगतान बाद में भी किस्तों के रूप में भी कर सकता है किंतु प्रत्येक किस्त के समय उसे किसी न किसी करणों से ई.एम.आई. भरने में आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ जाता है।

सारणी – 05: ऋण ई.एम.आई. की दस्तावेजी प्रक्रिया के अनुभव के आधार पर

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
सुविधाजनक	15	50%
बाद में कठिनाई	15	50%
नुकसान दायक	–	–
कुल	30	100%

स्त्रोत– स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

ई.एम.आई.सुविधा लेने के कारण के आधार पर वर्गीकरण – इस आधार पर किए गए वर्गीकरण से पता चला कि 73.3% लोगों ने ई.एम.आई. सुविधा लेने का कारण वाहनों के क्रय करने की है जबकि केवल 16.7% लोगों ने ही ऋण के लिए ई.एम.आई. का भुगतान करते पाए गए हैं। वाहनों के लिए ई.एम.आई. भुगतान का उच्च प्रतिशत इस बात का संकेत हो सकता है कि जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा वाहन खरीदने के लिए ई.एम.आई. जैसे वित्तपोषित साधनों का सहारा लेता हैं यह वाहनों की ऊँची कीमत एवं उपयोगी होने के कारण हो सकता है। वहीं दूसरी ओर ई.एम.आई. के लिए दूसरा सबसे आम कारण ऋण होता है जो व्यक्तिगत ऋण, गृह ऋण या शिक्षा ऋण हो सकता है।

सारणी – 6: ई.एम.आई. भरने के कारण के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
ऋण	05	16.7
वाहन	22	73.3
वस्तु	03	10
कुल	30	100%

स्त्रोत– स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

ऋण की राशि के आधार पर वर्गीकरण – ई.एम.आई. भरने का कारण पूछे जाने पर 30 में से पांच लोग अर्थात 16.7% लोगों का कारण ऋण पाया गया। इसी आधार पर एक और प्रश्न पूछा गया जो था कि आपका ऋण की राशि क्या है इसी आधार पर किए गए ऋण की राशि के वर्गीकरण में पाया गया की 60% लोगों अर्थात तीन लोगों ने 5 लाख से 50 लाख तक का लोन लिया है।

ऋण राशियों का वितरण इस बात का संकेत देता है कि जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा आवास, शिक्षा और व्यवसायिक उद्यमों जेसे प्रमुख कारकों के लिए ऋण लेता है।

सारणी – 7: ई.एम.आई. भरने के कारण के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
50,000 – 1,00,000	–	–
1,00,000 – 5,00,000	1	20%
5,00,000 – 50.00,000	3	60%
50,00,000 – 1,00,00,00,0	1	20%
कुल	5	100

स्त्रोत– स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

बचत के प्रकार के आधार पर वर्गीकरण – लोगों से पूछा जाने पर कि वे बचत करते हैं या नहीं सभी का जवाब हां मिला फिर बचत का प्रकार पूछे जाने पर 40% लोगों का कहना था कि वे गहने खरीद कर बचत करते हैं जबकि 13.4% लोगों का कहना था कि वह अपने पैसों को बैंक में रखकर बचत करते हैं।

गहनों में बचत करने की उच्च प्राथमिकता यहाँ की सोच को परिलक्षित करती है। निवेश और सुरक्षा के रूप में सोने और अन्य कीमती धातुओं को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। बैंक खाते, डाकघर खाते और संपत्ति निवेश भी पैसे बचाने के प्रमुख साधन है।

सारणी – 8: बचत के प्रकार के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
गहने खरीदकर	12	40%
बैंक खाते में पैसे रखकर	4	13.4%
पोस्ट ऑफिस के खाते द्वारा	7	23.3%
प्रॉपर्टी खरीदकर	7	23.3%
कुल	30	100%

स्त्रोत– स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

ई.एम.आई. के उपयोग से बचत प्रवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर वर्गीकरण – लोगों पर ई.एम.आई. के उपयोग से उनकी बचत प्रवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर 83.4% लोगों का कहना है कि उनकी बचत की प्रवृत्ति में कमी आयी है जबकि 6.6% लोगों का कहना है की ई.एम.आई. के प्रयोग से उनके बचत में सहायता हुई।

अधिकांश उत्तरदाताओं (83.4 प्रतिशत) का मानना है कि ई.एम.आई. का भुगतान करने से उनकी बचव प्रवृत्ति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह ई.एम.आई. से जुड़े मासिक व्यय के कारण हो सकता है। एक छोटे हिस्से का मानना है कि ई.एम.आई. ने उन्हें बचत करने में मदद की है। संभवत: यह अनुशासित खर्च औंर नियोजित वित्तीय खर्च के कारण हो सकता है।

सारणी – 9: ई.एम.आई. के उपयोग से बचत प्रवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
बचत में सहायता	2	6.8%
बचत में कमी	25	83.4%
बचत का मौका नहीं	3	10%
कुल	30	100%

स्त्रोत– स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

ई.एम.आई. की किस्त भरने में देरी के आधार पर वर्गीकरण – ई.एम.आई. की किस्त भरने में देरी का प्रश्न पूछे जाने पर 60% लोगों का जवाब नहीं था जबकि 40% लोगों की किस्त भरने में देरी हुई है। उत्तरदाताओं के एक महत्वपूर्ण हिस्से ने (40 प्रतिशत) ई.एम.आई. भुगतान में देरी की सूचना दी जो उन पर होने वाले आर्थिक दबाव की ओर संकेत करती है। इससे देर से भुगतान शुल्क, क्रेडिट स्कोर को नुकसान और शायद ऋण चूक तक की समस्याएँ पैदा हो सकती है।

सारणी – 10: ई.एम.आई. की किस्त भरने में देरी के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
हां	12	40%
नहीं	18	60%
कुल	30	100%

स्त्रोत– स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

ई.एम.आई. के उपयोग से लाभ के आधार पर वर्गीकरण –ई.एम.आई. के उपयोग से लाभ के आधार पर वर्गीकरण में पाया गया की 70% लोगों को ई.एम.आई. के उपयोग से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि का लाभ हुआ जबकि 23.3% लोगों का कहना है की ई.एम.आई. के उपयोग से उनके व्यापार में वृद्धि हुई। अधिकांश उत्तरदाताओं (70प्रतिशत) का मानना है कि ई.एम.आई. के उपयोग से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई है। यह उपभोक्ता वस्तुओं के स्वामित्व और किश्तों के भुगतान कर पाने की क्षमता के कारण हुआ है।

सारणी – 11: ई.एम.आई. के उपयोग से लाभ के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
स्वयं का घर	2	6.7%
सामाजिक प्रतिष्ठा	21	70%
व्यापार में वृद्धि	7	23.3%
कुल	30	100%

स्त्रोत– स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

ई.एम.आई. व्यवस्था से संतुष्टि के आधार पर वर्गीकरण – जब लोगों से यह पूछा गया कि वह ई.एम.आई. व्यवस्था से वे कितने संतुष्ट हैं तो 66.6% लोगों का जवाब अधिक प्रसन्न था जबकि 20% लोगों ने कहा कि वह ई.एम.आई. व्यवस्था से बहुत अधिक प्रसन्न है। अधिकांश उत्तरदाता या तो सन्तुष्ट है या बहुत सन्तुष्ट है जो ई.एम.आई. की सकारात्मक धारणा को प्रस्तुत करता है हालांकि एक छोटा हिस्सा (13.1 प्रतिशत) कुद असन्तुष्टि व्यक्त कर रहे है जो ब्याज की उच्च दरों ई.एम.आई. का प्रबंधन न कर पाने जैसी समस्याओं के कारण हो सकता है।

सारणी – 12: ई.एम.आई. व्यवस्था से संतुष्टि के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
बहुत अधिक	6	20%
अधिक	20	66.6%
थोड़ा कम	4	13.4%
कुल	30	100%

स्त्रोत– स्वयं के सर्वेक्षण पर आधारित।

इस शोध पत्र से यह परिणाम निकाला जा सकता है कि ई.एम.आई. का उपयोग आजकल एक आम सी बात हो गई है फिर चाहे वह एक मोबाइल फोन के लिए किए गए ई.एम.आई. के उपयोग से नाता रखता हो या चाहे बड़े–बड़े वाहनों और मशीनों के लिए ई.एम.आई. के उपयोग की बात हो एक व्यक्ति किसी ऋण और साथ ही किसी वस्तु के लिए ई.एम.आई. का उपयोग करता है।

निष्कर्ष :

1. ई.एम.आई. के उपयोग में पुरुषों के साथ–साथ महिलाओं की भी प्रबल भागीदारी देखने में सामने आयी है।
2. लोग एक ही समय पर एक से अधिक वस्तुओं नो के लिए ई.एम.आई. का भुगतान करते हैं।
   पैसे के आधार पर स्वरोजगार करने वाले लोगों द्वारा ई.एम.आई. का उपयोग सर्वाधिक 36.7% किया जा रहा है। सरकारी कर्मचारी, व्यापारियों एवं निजी संस्थानों में कार्यरत व्यक्तियों द्वारा क्रमश: 26.6%, 23.3%, 13.4% की संख्या में ई.एम.आई. का उपयोग किया जा रहा है।
3. मासिक आय के आधार पर 10000 – 20000 तक वेतन पाने वाले लोगों में ई.एम.आई. के उपयोग की प्रवृत्ति अधिक देखी गई।
4. लगभग 80% विवाहित लोगों द्वारा ई.एम.आई. का सर्वाधिक उपयोग किया जा रहा है शैक्षणिक योग्यता की दृष्टि से स्नातक उत्तीर्ण लोगों द्वारा ई.एम.आई. के उपयोग में संकीर्णता देखी गई जो की UG और PG के बारे में क्रमश: 33.4% और 40% है। लगभग 73.3% लोगों द्वारा वाहन के लिए ई.एम.आई. का भुगतान किया जा रहा है जबकि 16.7% लोगों द्वारा किसी ऋण के लिए ई.एम.आई. की किस्त भरी जाती है।

अनुशंसाएँ :

1. लोगों को किसी भी प्रकार के लोन एवं वस्तु को खरीदते समय अधिक डाउन पेमेंट करनी चाहिए ताकि ई.एम.आई. में कमी हो सके और बाद में इसकी अदायगी में लोगों को किसी प्रकार की कठिनाई न हो।
2. यदि आप आर्थिक तनाव का सामना कर रहे हैं तो आपको लोन की अवधि को बढ़ाकर इएमआईको कम करने का प्रयास करना चाहिए।
3. लोगों को एक ही समय पर एक से अधिक वस्तुओं वाहनों या लोन के लिए ई.एम.आई. का उपयोग नहीं करना चाहिए इससे उन पर आर्थिक तनाव बढ़ेगा।
4. फिक्स्ड दर की स्थान पर इएमआईके लिए फ्लोटिंग ब्याज दर को चुनना चाहिए।
5. ई.एम.आई. की दरें कम होनी चाहिए इसके लिए सरकार एवं बैंकों को योजनाएं बननी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. https://sist.sathyabama.ac.in/sistnaac/document/1.7.4/1922-6.com-B©.con-batchro-26pdf
2. https://ifcat.org/papers/1JCRT2304348.pdf
3. https://economictimes.indiatimes.com/topic/have-loan-eni
4. https://timerofindia.com/owadensklag! transfarmingoraragementmarket-one-/apple-winning-the-time-47642/
5. https://www.ijsdrang/papers/TTSDR1303030pdf
6. http://www.deshbandhu.coin/ectitanial/litetcomplex-challenges-of-fareigos-trade-768-05-2
7. https://search.app/RShRvRAGV6HAu7bp9
8. https://search.app/ydwdG5sBRCRXn82c8
9. https://search.app/DtquDQrSTTZwfXz97
10. https:/egyankosh.ac.in

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

To Study the Dietary Pattern in the Second Trimester of Pregnancy

Dr. Mamta Khapediya* Roshni Singh**

*Assistant Professor (Home Science) Mata Jijabai Govt. Girls P.G College, MotiTabela, Indore (M.P.) INDIA
** Research Scholar, Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore (M.P.) INDIA

Introduction - The second trimester of pregnancy is a crucial period for both fetal development and maternal health, as it marks significant physiological changes that require adequate nutrition and care. This phase, spanning from the 14th to the 27th week of gestation, is characterized by rapid fetal growth, organ development, and increased maternal physiological adaptations. Proper nutrition plays a vital role in ensuring that both the mother and the growing fetus receive the necessary nutrients for optimal health and well-being.

During the second trimester, the fetus undergoes substantial growth, including organogenesis, skeletal formation, and neurological development. The fetal brain starts developing more complex structures, the bones begin to ossify, and the baby's overall size increases significantly. As a result, there is a greater demand for essential nutrients such as calcium, iron, folic acid, and protein. Calcium is necessary for strong bones and teeth, iron supports red blood cell production, and folic acid is crucial for preventing neural tube defects. The mother's diet should be rich in these essential nutrients to support the baby's proper growth and development.

Simultaneously, the mother's body undergoes various physiological changes to accommodate the growing fetus. One of the most significant changes is an increase in blood volume to ensure that adequate oxygen and nutrients reach the developing baby. This increase in blood volume also raises the mother's need for iron to prevent anemia. Additionally, the metabolic rate rises, leading to higher energy requirements. The mother may also experience changes in digestion and metabolism, making it necessary to consume a well-balanced diet that provides sustained energy throughout the day.

A well-balanced diet during the second trimester is crucial for maintaining both maternal and fetal health. It should include an adequate intake of macronutrients such as carbohydrates, proteins, and healthy fats. Carbohydrates are the primary source of energy and should come from whole grains, fruits, and vegetables rather than processed or sugary foods. Proteins are essential for fetal tissue growth and maternal muscle maintenance, and they can be obtained from lean meats, poultry, fish, eggs, legumes, and dairy products. Healthy fats, found in sources like nuts, seeds, avocados, and olive oil, are important for the baby's brain and nervous system development.

In addition to macronutrients, micronutrients play a significant role in ensuring a healthy pregnancy. Key vitamins and minerals include vitamin D, calcium, iron, folic acid, and omega-3 fatty acids. Vitamin D and calcium work together to promote strong bone development in the fetus while also supporting the mother's bone health. Omega-3 fatty acids, particularly DHA (docosahexaenoic acid), are essential for brain and eye development and can be found in fatty fish such as salmon and in fortified foods. Pregnant women should also ensure an adequate intake of fiber, as digestive issues such as constipation are common during pregnancy.

Hydration is another important aspect of maternal health during the second trimester. As blood volume increases, the body requires more fluids to maintain circulation and prevent dehydration. Pregnant women should aim to drink plenty of water throughout the day and limit the intake of caffeinated and sugary beverages. Herbal teas and fresh fruit juices can also be healthy alternatives, provided they are consumed in moderation.

In addition to maintaining a nutritious diet, pregnant women should engage in moderate physical activity, as recommended by their healthcare provider. Gentle exercises such as walking, prenatal yoga, and stretching can help improve circulation, reduce stress, and alleviate common pregnancy discomforts like back pain and swelling. However, it is essential to listen to the body and avoid overexertion.

Overall, the second trimester is a critical time for both the mother and baby, making proper nutrition and self-care essential. By consuming a balanced diet rich in essential nutrients, staying hydrated, and engaging in appropriate physical activity, expectant mothers can support their health and promote optimal fetal development. Consulting a healthcare provider or a nutritionist can further ensure that

individual dietary needs are met, contributing to a healthy and successful pregnancy journey.

Importance :

1. Provides essential nutrients: A well-balanced diet is crucial during pregnancy as it provides the essential nutrients required for both the mother's well-being and the baby's healthy development. Proper nutrition ensures an adequate intake of vital vitamins, minerals, and macronutrients, which play a key role in fetal growth, organ formation, and overall development. These nutrients support crucial bodily functions, such as cell production, brain development, and immune system strengthening. By maintaining a well-rounded diet rich in fresh fruits, vegetables, whole grains, lean proteins, and healthy fats, expectant mothers can ensure both their health and the baby's well-being throughout pregnancy.
2. Supports healthy weight gain: Adequate nutrition helps the mother gain the appropriate amount of weight during pregnancy, reducing the risk of complications such as gestational diabetes and preeclampsia.
3. Reduces the risk of birth defects: Getting enough folic acid, calcium and other vital nutrients can help prevent neural tube defects and other birth abnormalities.
4. Promotes healthy fetal development: Proper nutrition supports the baby's brain development, bone growth and overall health in the womb.
5. Reduces the risk of pregnancy complications: A healthy diet can lower the risk of gestational diabetes, preeclampsia, preterm birth and other pregnancy related complications.
6. Sets the stage for long term health: Good nutrition during pregnancy can have lasting positive effects on the child health, reducing the risk of chronic diseases later in life.

Objectives:

1. To examine the dietary habits and nutritional intake of pregnant women during their second trimester.
2. To assess the level of knowledge and awareness regarding proper dietary patterns among expectant mothers.
3. To evaluate the impact of dietary choices on maternal health and fetal development.
4. To identify gaps in nutritional knowledge and provide recommendations for improving dietary practices during pregnancy.

Sample size: In this paper, 50 pregnant women (second trimester) has been selected by random sampling method.

Variables

1. Independent variable is pregnant women.
2. Dependent variables are dietary pattern, knowledge and awareness.

Sources of data collection: In this paper, primary source is structured questionnaire and secondary source is books, magazines, newspaper and internet.

Tabulation and classification: Table for knowing the dietary pattern among pregnant women during second trimester:

S.	Category	No. of samples	Perce-ntage
1.	Have very good dietary pattern	9	18%
2.	Have good dietary pattern	12	24%
3.	Have satisfactory dietary pattern	18	36%
4.	Have poor dietary pattern	11	22%

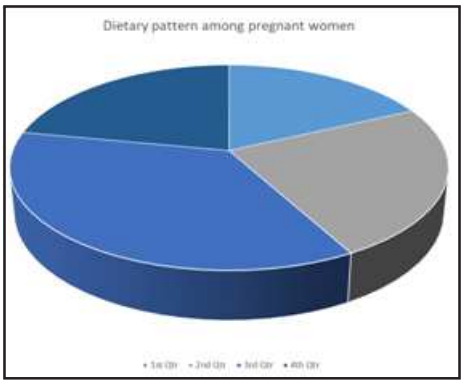

Table for assessing the knowledge and awareness about diet during pregnancy:

S.	Category	No. of samples	Perce-ntage
1.	Have excellent knowledge	7	14%
2.	Have good knowledge	31	62%
3.	Have poor knowledge	12	24%

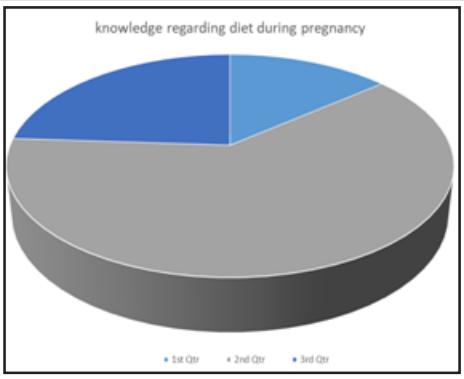

Result and conclusions: In this paper, we are able to know that 8% have very good, 24% have good, 36% have fair and 22% have poor dietary pattern during second trimester of pregnancy.Dietary pattern can be corrected by knowledge and awareness. So, 14% have excellent, 62% have good and 24% have poor knowledge and awareness regarding dietary pattern during pregnancy.

Suggestion : Diet plays a very important role in pregnancy because growth and development of fetus and health of mother is totally dependent on diet. So, we should educate mother regarding dietary pattern during pregnancy and bring awareness in the society.

References:-

1. https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov
2. https://www.betterhealth.vic.gov.au
3. https://www.sciencedirect.com
4. https://onlinelibrary.wiley.com
5. https://www.researchgate.net

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मध्य प्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था का वित्तीय मूल्यांकन (छतरपुर जिले की चयनित पंचायतों के विशेष संदर्भ में)

डॉ. संगीता कुम्भारे*

*सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – मध्यप्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था देश की विकेन्द्रीकृत नीति के अंतर्गत स्थापित हुई है। पंचायती राज के रूप में यह विषय मध्यप्रदेश को पंचायती राज व्यवस्था और उसके वित्तीय प्रबंधन के विश्लेषण पर केंद्रित है। छतरपुर जिले के कुल चयनित पंचायतों को उद्देश्य बना कर इसमें इन पंचयतो के आर्थिक प्रबंधन, बजटरी व्यवस्था और वित्तीय स्रोतों का अध्ययन किया जाना प्रस्तावित है। पंचायती राज का उद्देश्य ग्राम पंचायतों को स्वतंत्रता देना है। ताकि वे अपने आर्थिक और सामाजिक जिम्मेदारियों को स्वतंत्रता पूर्वक कर सके। पंचायती राज व्यवस्था भारत की स्थानीय स्वशासन की व्यवस्था है। जो ग्राम पंचायतों को अधिकार एवं जिम्मेदारियाँ प्रदान करती है। इस विश्वास के तहत ग्राम पंचायतों को अपने क्षेत्र में विकास और प्रबंधन सम्बन्धी निर्णय लेने का अधिकार दिया जाता है। मध्य प्रदेश में इस व्यवस्था की शुरुआत भारत सरकार के 73 वें संविधान संशोधन के अनुसार हुई थी जिसमें ग्राम पंचायतों को अधिकार और जिम्मेदारियों का वितरण था।

पंचायती राज व्यवस्था भारत में ग्रामीण विकास और स्थानीय स्वशासन का महत्वपूर्ण अंग है। 73वें संविधान संशोधान के बाद, यह व्यवस्था और सशक्त हुई है। मध्य प्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था को प्रभावी बनाने के लिए कई कदम उठाए गए हैं। पंचायती राज का उद्देश्य जिलों अंचलों और गांवों में स्थानीय स्वशासन का विकास करना है। भारत में पंचायती व्यवस्था केवल स्वतंत्रता के बाद की घटना नहीं है। वास्तव में, ग्रामीण भारत में प्रमुख राजनीतिक संस्था सदियों से ग्राम पंचायत रही है। प्राचीन भारत में, पंचायतें आमतौर पर कार्यकारी और न्यायिक शक्तियों वाली निर्वाचित परिषदें होती थीं। विदेशी प्रभुत्व, विशेष रूप से मुगल काल और ब्रिटिश काल के समय में प्राकृतिक, सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों ने ग्राम पंचायतों के महत्व को कम कर दिया था। हालाँकि, स्वतंत्रता-पूर्व काल में, पंचायतें गाँव के बाकी हिस्सों पर उच्च जातियों के प्रभुत्व के साधान थी, जिसने सामाजिक-आर्थिक स्थिति या जाति पदानुक्रम के आधार पर विभाजन को और बढ़ा दिया।

हालाँकि, संविधान के प्रारूपण के बाद स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पंचायती राज प्रणाली के विकास को गति मिली। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 40 में कहा गया है: 'राज्य ग्राम पंचायतों को संगठित करने के लिए कदम उठाएगा और उन्हें ऐसी शक्तियाँ और अधिकार प्रदान करेगा जो उन्हें स्वशासन की इकाइयों के रूप में कार्य करने में सक्षम बनाने के लिए आवश्यक हों।'

कुँजी शब्द – ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत, जिला पंचायत, वित्तीय मूल्याकंन, बजट आय-व्यय लेखा परीक्षण निधियों का प्रबंधन, विकेन्द्रीकरण, प्रशासनिक संस्चना।

प्रस्तावना – मध्यप्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था देश की विकेन्द्रीयकृत नीति के अन्तर्गत स्थापित हुईहै। पंचायती राज के रूप में ये विषय मध्यप्रदेश के पंचायती राज व्यवस्था और उसके वित्तीय प्रबंधन के विश्लेषण पर केन्द्रीत है। छतरपुर जिले के कुछ चयनित पचायतों को उद्देश्य बना कर इसमें इन पंचायतो को आर्थिक प्रबंधन बजंहरी व्यवस्था और वित्तीय स्रोतों का अध्ययन किया गया है। पंचायती राज का उदेश्य ग्राम पंचायतों को स्वतंत्रता देना है। ताकि वे अपने आर्थिक और सामाजिक जिम्मेदारियों को स्वतंत्रता से पूरा कर सके।

पंचायती राज व्यवस्था भारत की स्थानीय स्वशासन की व्यवस्था है जो ग्राम पंचायतो को अधिकार एवं जिम्मेदारिया प्रदान करती है। इस विश्वास के तहत ग्राम पंचायतों को अपने क्षेत्र में विकास और प्रबंधन संबंधी निर्णय लेने का अधिकार दिया जाता है। मध्यप्रदेश में इस व्यवस्था की शुरुवात भारत सरकार के 73 वे संविधान संशोधन के अनुसार हुई थी जिसमें ग्राम पंचायतों को अधिकार और जिम्मेदारियों का वितरण किया गया था।

मध्य प्रदेश में पंचायती राज – मध्य प्रदेश में पंचायती राज का तात्पर्य गांव के स्तर पर ग्रामीण स्थानीय स्वशासन की व्यवस्था से है। मध्य प्रदेश में पंचायती राज की स्थापना मध्य प्रदेश पंचायती राज अधिनियम 1962 और 1993 द्वारा की गई थी। मध्य प्रदेश राज्य विधानमंडल द्वारा जमीनी स्तर पर लोकतंत्र का निर्माण करने के लिए अधिनियम पारित किए गए हैं। मध्य प्रदेश में पंचायती राज को ग्रामीण विकास और नागरिक केंद्रित शासन का दायित्व सौंपा गया है।

मध्य प्रदेश में पंचायती राज का विकास:

1. जनवरी 1957 में भारत सरकार ने बलवंत राय मेहता समिति की नियुक्ति की। इसका गठन सामुदायिक विकास कार्यक्रम 1952 और राष्ट्रीय विस्तार सेवा कार्यक्रम 1953 के कामकाज की जांच के लिए किया गया था।
2. मेहता समिति ने नवंबर 1957 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की और त्रिस्तरीय पंचायती राज प्रणाली की स्थापना करते हुए लोकतांत्रिक

विकेन्द्रीकरण की सिफारिशें की। बाद में, मध्य प्रदेश सरकार ने मध्य प्रदेश पर मेहता समिति की सिफारिशों की प्रयोज्यता की जांच के लिए 15 सदस्यीय पाण्डे समिति का गठन किया। पाण्डे समिति ने मेहता समिति की सिफारिशों से सहमति व्यक्त की। पाण्डे समिति की सिफारिशों के आधार पर मध्य प्रदेश विधानसभा ने मध्य प्रदेश पंचायत राज अधिनियम 1962 पारित किया।

3. भारत में पंचायती राज व्यवस्था में सुधार के लिए भारतीय संसद द्वारा 73वां संविधान संशोधन अधिनियम 1993 पारित किया गया था। इसके बाद मध्य प्रदेश पंचायती राज अधिनियम 1993 मध्य प्रदेश विधानसभा द्वारा पारित किया गया।

4. मध्य प्रदेश 73वें संविधान संशोधन अधिनियम को लागू करने वाला देश का पहला राज्य बन गया। 26 जनवरी 2000 को मध्य प्रदेश श्ग्राम स्वराजश स्थापित करने वाला पहला राज्य भी बना।

जैसा कि शोध का शीर्षक यमध्य प्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था का वित्तीय मूल्यांकन (छतरपुर जिले की चयनित पंचायतों के विशेष संदर्भ में) है। किसी संगठन की वित्तीय सुदृढ़ता के साथ-साथ क्षेत्र के विकास का मूल्यांकन करने के उद्देश्य से वित्तीय साधनों के सभी पहलुओं का मुख्य रूप से अधययन किया जाता है इसीलिए मध्य प्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था की वित्तीय स्थिति को समझने की आवश्यकता है।

इस शोध में छतरपुर जिले की चयनित पंचायतों के विशेष संदर्भ में वित्तीय मूल्यांकन का अध्ययन किया जायेगा जिसके माध्यम से क्षेत्र के विकास को निर्धारित किया जा सके और इस विकास में पंचायतों के महत्व को निर्धारित किया जा सके। जिसके द्वारा नई योजनाऐं और नीतियों के विकास के लिए प्रारूप तैयार किया जा सके।

शोध अंतराल – साहित्य समीक्षा में मध्यप्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था का वित्तीय विश्लेषण के पहलुओं पर कोई प्रकाश नहीं डाला गया। और इसीलिए यहां छतरपुर जिले की चयनित पंचायतों के विशेष संदर्भ में वित्तीय सुदृढ़ता और विकास का एक साथ विश्लेषण किया जायेगा। शोध का मुख्य फोकस वित्तीय प्रदर्शन पर रहेगा और चयनित पंचायतों की वित्तीय गतिविधियां, क्षेत्र के विकास में कैसे योगदान करती है? इत्यादि विभिन्न पहलुओं को शामिल किया जायेगा। हालांकि छतरपुर जिले की पंचायतों का वित्तीय मूल्यांकन दर्शाता है कि पंचायती राज व्यवस्था को सशक्त बनाने के लिए कई नीतियों और योजनाएँ लागू की गई हैं, लेकिन इनका वास्तविक प्रभाव अभी भी सीमित है। इसके लिए वित्तीय प्रबंधन को और अधिक पारदर्शी और उत्तारदायी बनाने की आवश्यकता है।

वित्तीय विकेंद्रीकरण: वित्तीय विकेंद्रीकरण का अर्थ है स्थानीय निकायों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना। इस प्रक्रिया में पंचायतों को योजनाओं एवं परियोजनाओं के लिए धनराशि आवंटित की जाती है। छतरपुर जिले में पंचायतों को राज्य और केंद्र सरकार से वित्तीय सहायता मिलती है, लेकिन इसे प्रभावी रूप से लागू करने में कई चुनौतियाँ हैं, जैसे कि भ्रष्टाचार होना, क्षमता की कमी और स्थानीय राजनीति।

वित्तीय चुनौतियाँ और अवसर: पंचायती राज संस्थाओं को अक्सर वित्तीय संकट का सामना करना पड़ता है। छतरपुर जिले की पंचायतों में भी संसाधनों की कमी है। समय पर फंड का आवंटन न होना और भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ देखी गई हैं। इसके बावजूद कुछ पंचायतें अपने स्थानीय संसाधनों का उचित उपयोग करके विकास कार्यों को सफलतापूर्वक संचालित कर रही है।

सिफारिशें

1. पंचायतों को वित्तीय योजनाओं के बारे में जागरूकता और प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।
2. स्थानीय संसाधनों का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित किया जाए।
3. वित्तीय पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को बढ़ावा देने के लिए निगरानी तंत्र को सशक्त बनाया जाए।
4. यह साहित्य समीक्षा छतरपुर जिले की पंचायतों के वित्तीय प्रबंधन और विकास कार्यों में सुधार के लिए महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत करती है जो कि मध्य प्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था की सफलता के लिए आवश्यक हैं।

शोध के उद्देश्य – उद्देश्य वह है जिसे हम पाना चाहते है, जब भी कोई कार्य प्रारम्भ किया जाता है तो सर्वप्रथम लक्ष्य या उद्देश्य पहले से ही निर्धारित कर लिये जाते हैं ताकि कार्य में गम्भीरता आ सके और शोध कार्य अपनी निश्चित दिशा की ओर आगे बढ़े एवं जो अनुसंधान को दिशा प्रदान करें।

1. छतरपुर जिले की पंचायतों में वित्तीय संसाधनों का प्रबंधन और उपयोग की जांच करना।
2. छतरपुर जिले की पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत वित्तीय विकेंद्रीकरण का आकलन करना।
3. छतरपुर जिले की पंचायतों में उपलब्ध वित्तीय संसाधनों की मात्रा और उनकी आबंटन प्रक्रिया का विश्लेषण करना।
4. छतरपुर जिले की पंचायतों द्वारा विकास कार्यों पर वित्तीय निवेश के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
5. पंचायतों में वित्तीय पारदर्शिता और जवाबदेही की स्थिति का मूल्यांकन करना।
6. पंचायती राज व्यवस्थाओं के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार को बढ़ाने के प्रयासों का मूल्यांकन करना।
7. पंचायती राज व्यवस्थाओं के अंतर्गत ग्रामीण विकास कार्यों का मूल्यांकन करना।
8. मध्यप्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था छतरपुर जिले के अंतर्गत वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्रों की आधारभूत संरचना के विकास और उस पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन एवं मूल्यांकन करना है।

मध्य प्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था का उद्देश्य स्थानीय स्तर पर स्वायत्ताता और विकास को बढ़ावा देना है। 73वें संविधान संशोधन के माधयम से पंचायतों को राजनीतिक और प्रशासनिक अधिकार प्रदान किए गए जिससे वे स्थानीय मुद्दों और विकास कार्यों में सक्रिय भागीदार बन सकें। इसके साथ ही पंचायती राज संस्थाओं को वित्तीय स्वायत्ताता और संसाधनों का नियंत्रण भी सौंपा गया है।

इस शोध का मुख्य उद्देश्य छतरपुर जिले की पंचायतों के वित्तीय प्रबंधन और संसाधनों के उपयोग की गहराई से जांच करना है। यह अध्ययन इस बात की स्पष्टता प्रदान करेगा कि किस प्रकार से वित्तीय संसाधनों का आवंटन और प्रबंधन पंचायतों में किया जाता है और इसके परिणामस्वरूप विकास कार्यों पर क्या प्रभाव पड़ता है।

शोध की परिकल्पनाएँ – शोध हेतु किसी भी विषय का चयन तब किया जाता है जब किसी उद्देश्य की प्राप्ति करना हो। इस हेतु उद्देश्य को सार्थक सिद्ध करने के लिए एक सुव्यवस्थित वाक्य रूप परिकल्पना मानी जाती है। परिकल्पना एक विचार दशा या सिद्धांत होती है जो संभवत: बिना किसी विश्वास के साथ स्वीकार कर ली जाती है। जिससे कि उसके तार्किक परिणाम

निकाले जा सके और निर्धारित किये जाने वाले तथ्यों की सहायता से इस विचार की सत्यता की जाँच की जा सके। परिकल्पना शोध कार्य को निश्चितता प्रदान करती है।

शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित होगी:

1. छतरपुर जिले की पंचायतों में वित्तीय संसाधनों का प्रबंधन प्रभावी नहीं है, जिसके परिणामस्वरूप विकास कार्यों में कमी आई है।
2. पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत वित्तीय पारदर्शिता और जवाबदेही में कमी के कारण संसाधनों का दुरुपयोग होता है।
3. वित्तीय विकेंद्रीकरण के बावजूद, छतरपुर जिले की पंचायतों में वित्तीय समस्याओं और प्रशासनिक चुनौतियों में सुधार नहीं हुआ है।

शोध प्रविधि – शोध प्रारूप एक वैचारिक संरचना है जिसके साथ शोध किया जाता है। यह समंक के संग्रह, माप और विश्लेषण का एक ब्लू प्रिंट है। वर्तमान शोध मध्यप्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था का वित्तीय मूल्यांकन (छतरपुर जिले की चयनित पंचायतों के विशेष संदर्भ में) पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन है। शोध अध्ययन शोध विषय की रीतियों का चुनाव करना आवश्यक है। विषय के अध्ययन व अनुसंधान मे सांख्यिकीय रामंक एकत्र करना जरुरी रहता है। सांख्यिकीय समंक एकत्रित करना एक महत्वपूर्ण कार्य है। यही एक शोध की महत्वपूर्ण आधारशिला होती है। जिस पर अनुसंधान रुपी भवन निर्मित होता है। यदि यह दोष पूर्ण रहता है तो परिणाम भी दोष पूर्ण रहेगें इसलिए समंको को एकत्र करने से पहले कई बातों को ध्यान में रखना और उसके अनुसार कार्य करना महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है। सांख्यिकीय अनुसंधान का पूर्व आयोजन ही इसकी सफलता एवं श्रेष्ठता के लिए आवश्यक है।

कुछ इकाइयों के आंकड़ों के आधार पर संपूर्ण समस्या का अध्ययन किया जा सकता है संग्रहण के विचार से समंक दो प्रकार के होते हैं। प्राथमिक समंक एवं द्वितीयक समंक।

1. प्राथमिक समंक– प्राथमिक समंक वे समंक है जिन्हें अनुसंधान करने वाला अपने प्रयोग में लाने के लिए पहली बार इकट्ठा करता है। हो सकता है कि उस विषय के संबंध में आंकड़े पहले भी इकट्ठा किए गए हो तो अनुसंधान कर्ता अपने प्रयोग में लाने के लिए आरंभ से अंत तक समंक नए सिरे से एकत्रित करता है। चूंकि अनुसंधान कर्ता द्वारा प्रथम बार संकलित किए जाते हैं इसलिए इन्हें प्राथमिक समंक कहा जाता है। प्राथमिक समंक संकलन से पूर्व शोध विषय से संबंधित विषय विशेषज्ञों से विचार विमर्श कर उनके सुझावों को आधार मानकर प्रश्नावली, प्रत्यक्ष साक्षात्कार आदि से अनुसूची तैयार करके इनके अलावा सैंपलिंग, अवलोकन एवं सर्वेक्षण इत्यादि जिनका उपयोग करके अपने शोध प्रबंध के लिए शोध सामग्री एकत्रित की जायेगी शोध से संबंधित अध्ययन क्षेत्रों का परीक्षात्मक विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया जाएगा।

2. द्वितीयक समंक– शोध अध्ययन हेतु द्वितीयक समंक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। द्वितीयक समंक वे समंक होते हैं जो पहले से किसी व्यक्ति या संस्था द्वारा संकलित किया जा चुका होता है। एक अनुसंधानकर्ता उनको अपने प्रयोग में लाता है। यहां वह संग्रह नहीं करता है वरन् किसी अन्य उद्देश्य के लिए संकलित सामग्री को प्रयोग में लाता है तो इस प्रकार के समंक को द्वितीयक समंक कहा जाता है। द्वितीयक समंक सामग्री वह है जिसे मौलिक स्रोतों से प्राप्त करने के बाद एकत्रित किया जाता है। प्रस्तुत शोध कार्य हेतु द्वितीयक समंक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। द्वितीयक समंकों के द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्य प्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था का वित्तीय मूल्यांकन (छतरपुर जिले की चयनित पंचायतों के विशेष संदर्भ में) की वार्षिक रिपोर्ट शैड्यूल अध्ययन से संबंधित पत्र–पत्रिकाएं, शोध पत्र, समाचार पत्र, वेबसाइट, जनरल एवं अन्य प्रकाशित समंक शोध के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए 5 वर्षों के लगातार कार्यकाल से संबंधित आंकड़ों का विश्लेषण किया जाएगा।

शोध उपकरण और तकनीक – वर्तमान शोध के लिए वित्तीय आंकड़ों के विश्लेषण के लिए विभिन्न उपकरणों या तकनीकों का उपयोग किया जायेगा। इन्हें निम्नानुसार वर्गीकृत किया है:

1. वित्तीय उपकरण/तकनीक
2. सांख्यिकीय उपकरण / तकनीक

1. वित्तीय उपकरण/तकनीक: वित्तीय प्रदर्शन के अध्ययन और विश्लेषण के लिए उपयोग किए जाने वाले लेखांकन उपकरण

i. बैलेंस शीट और आय विवरण का तुलनात्मक विवरण
ii. बैलेंस शीट और आय विवरण का सामान्य विवरण
iii. प्रचलन विश्लेषण
iv. अनुपात विश्लेषण

2. सांख्यिकीय उपकरण/तकनीक: शोध की प्रकृति और मांग के अनुसार कुछ सांख्यिकीय उपकरणों / तकनीकों का उपयोग किया जाएगा।

सांख्यिकीय उपकरण :–

i. **माध्य**
ii. **राह – संबंध**

ये सभी बुनियादी सांख्यिकीय उपकरण हैं जिनका उपयोग सांख्यिकीय उपकरण के रूप में किया जायेगा और परिकल्पना का परीक्षण 5% स्तर के महत्व पर किया जायेगा। एमएस–एक्रोल और एसपीएसएस सॉफ्टवेयर का उपयोग अध्ययन को आसान करने के लिए किया जायेगा और प्रस्तुति की आवश्यकता के अनुसार ग्राफ और चार्ट के मात्रात्मक सर्मक के उपयोग की गणना भी की जायेगी।

निष्कर्ष – एक वित्तीय प्रदर्शन, बैलेंस शीट एवं लाभ और हानि खाते का विश्लेषण है। जिसके अंतर्गत पंचायतों की वित्तीय स्थिति और सुदृढ़ता के साथ–साथ शोधन क्षमता, तरलता, वित्तीय जोखिम, पूंजी मिश्रण और कार्यशील पूंजी का वित्तीय प्रदर्शन की एक इकाई के अंतर्गत विश्लेषण किया जायेगा। यह पूंजी के बेहतर स्रोतों और अनुप्रयोगों को भी इंगित करेगा। वित्तीय प्रदर्शन, किसी संगठन की समग्र दक्षता, वित्तीय जोखिम और शोधन क्षमता की स्थिति निर्धारित करने के लिए महत्वपूर्ण कुंजी है।

उपरोक्त सभी पहलू किसी भी संगठन के वित्तीय विवरण के प्रमुख योगदानकर्ता हैं। इन सभी पहलुओं का उचित उपयोग, बेहतर प्रबंधन का गार्ग प्रशस्त कर सकता है जो अंतत: संगठन की निर्णय लेने की प्रक्रिया में बहुत मदद्गार हो सकता है। शोध पंचायती क्षेत्र के लिए भी उपयोगी होगा, क्योंकि यह शोध पंचायती विकास को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा। शोध अध्ययन के निष्कर्ष योजनाकारों, नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं और अन्य हित धारकों के लिए सहायक होंगे जो पंचायती क्षेत्र के विकास से संबंधित हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Ajit Kumar Jain, Local Government of Finance in India, Proceedings of the National Conference on Emerging

Trends in Indian Local Government Finance held at National Institute of Rural Development, October, 20-25, Hyderabad, 1996.
2. Anil, K. Singh, State Panchayati Acts: A Critical Review, Voluntary Action Network India, New Delhi, 1995.
3. Arjun Y. Darshankar, Leadership in Panchayati Raj: A Study of Beed District of Maharastra, Panchsheel Prakashan, Jaipur, 1979.
4. Aronson, J. Richard and Hilley L-John, Finance State and Local Governments, The Brooking Institution, Washington, 1986.
5. Barnabas, A.P. and O.P. Bhora, Finances of Panchayati Raj Institutions Case Studies, MO [F], Mimeo, May, New Delhi, 1995.
6. Battacharya, S-N, Community Development - An Analysis of the Programme in India, Academic Publications, Calcutta, 1970.
7. Bhargava, B-S, Politico-Administrative Dynamics in Panchayati Raj System, Ashish Publishing House, New Delhi, 1978.
8. Chief Planning Office, Handbook of Statistics 2008-2009.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लैंगिक असमानता : कारण, प्रभाव और समाधान

प्रो. आरती बारोठिया*

*सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – 'जब हम महिलाओं और बालिकाओं में निवेश करते हैं, तो वास्तविकता में हम उन लोगों में निवेश कर रहे होते हैं, जो बाकी सभी क्षेत्रों में निवेश करते हैं' मेलिंडा गेट्स का यह कथन प्रत्येक क्षेत्र में न केवल महिलाओं के महत्त्व को रेखांकित करता है, बल्कि उनकी उनकी प्रासंगिकता का भी निर्धारण करता है। वस्तुत: हम भारत के लोग 21वीं सदी के भारतीय होने पर गर्व करते हैं, बेटा पैदा होने पर खुशी का जश्न मनाते हैं और अगर बेटी का जन्म हो जाए तो शांत हो जाते हैं। वैश्विक महामारी COVID–19 के बाद महिलाओं की स्थिति में गिरावट की आशंका व्यक्त की जा रही है। इसलिये इस समस्या से निपटने में असाधारण सुधारात्मक नीतियों के तत्काल हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

विश्व आर्थिक मंच (World Economic Forum) के द्वारा जारी वैश्विक लैंगिक अंतराल रिपोर्ट (Global Gender Gap Report), 2020 के अनुसार, भारत 91/100 लिंगानुपात के साथ 112वें स्थान पर रहा। उल्लेखनीय है कि वार्षिक रूप से जारी होने वाली इस रिपोर्ट में भारत पिछले दो वर्षों से 108वें स्थान पर बना हुआ था। महिला और पुरुष समाज के मूल आधार हैं। समाज में लैंगिक असमानता सोच–समझकर बनाई गई एक खाई है, जिससे समानता के स्तर को प्राप्त करने का सफर बहुत मुश्किल हो जाता है।

लैंगिक असमानता के विभिन्न क्षेत्रों की बात करें तो इसमें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र के साथ वैज्ञानिक क्षेत्र, मनोरंजन क्षेत्र, चिकित्सा क्षेत्र और खेल क्षेत्र प्रमुख हैं। लैंगिक असमानता की इस खाई को दूर करने में हमें अभी मीलों चलना होगा।

लैंगिक असमानता से तात्पर्य:

1. लैंगिक असमानता का तात्पर्य लैंगिक आधार पर महिलाओं के साथ भेदभाव से है। परंपरागत रूप से समाज में महिलाओं को कमजोर वर्ग के रूप में देखा जाता रहा है।
2. वे घर और समाज दोनों जगहों पर शोषण, अपमान और भेदभाव से पीड़ित होती हैं। महिलाओं के खिलाफ भेदभाव दुनिया में हर जगह प्रचलित है।
3. वैश्विक लैंगिक अंतराल रिपोर्ट, 2020 के अनुसार भारत 153 देशों में 112वें स्थान पर रहा। इससे साफ तौर पर अंदाजा लगाया जा सकता है कि हमारे देश में लैंगिक भेदभाव की जड़ें कितनी मजबूत और गहरी हैं।

चिंताजनक हैं आँकड़े:

- वैश्विक लैंगिक अंतराल रिपोर्ट, 2020 के अनुसार, महिला स्वास्थ्य एवं उत्तरजीविता तथा आर्थिक भागीदारी के मामले में भारत सूची में निम्न स्थान प्राप्त करने वाले पाँच देशों में शामिल है।
- स्वास्थ्य एवं उत्तरजीविता के क्षेत्र में भारत (150वाँ स्थान) का प्रदर्शन बहुत खराब रहा है।
- जबकि भारत के मुकाबले हमारे पड़ोसी देशों का प्रदर्शन बेहतर रहा– बांग्लादेश (50वाँ), नेपाल (101),श्रीलंका (102वाँ), इंडोनेशिया (85वाँ) और चीन (106वाँ)।
- जबकि यमन (153वाँ), इराक (152वाँ) और पाकिस्तान (151वाँ) का प्रदर्शन सबसे खराब रहा।
- राजनीतिक सशक्तीकरण और भागीदारी में अन्य बिंदुओं की अपेक्षा भारत का प्रदर्शन (18वाँ स्थान) बेहतर रहा है।
- लेकिन भारतीय राजनीति में आज भी महिलाओं की सक्रिय भागीदारी बहुत ही कम है, आकड़ों के अनुसार, केवल 14 प्रतिशत महिलाएँ ही संसद तक पहुँच पाती हैं (विश्व में 122वाँ स्थान)।
- रिपोर्ट के अनुसार, भारत के इस बेहतर प्रदर्शन का कारण यह है कि भारतीय राजनीति में पिछले 50 में से 20 वर्षों में अनेक महिलाएँ राजनीतिक शीर्षस्थ पदों पर रही है। (इंदिरा गांधी, मायावती, ममता बनर्जी, जयललिता आदि)
- महिलाओं के लिये शैक्षिक अवसरों की उपलब्धता के मामले में भारत का स्थान विश्व में 112वाँ है।
- जबकि इस मानक पर वर्ष 2018 में भारत का स्थान 114वाँ और वर्ष 2017 में 112वें स्थान पर रहा।
- रिपोर्ट के अनुसार, 2006 में पहली बार प्रकाशित आकड़ों की तुलना में आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं के लिये सक्रिय भागीदारी के अवसरों में कमी आई है।
- 153 देशों में किये गए सर्वे में भारत एकमात्र ऐसा देश है जहाँ आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी का प्रतिशत राजनीतिक क्षेत्र से कम है।
- WEF के आँकड़ों के अनुसार, अवसरों के मामले में विभिन्न देशों में आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति इस प्रकार है– भारत (35.4%), पाकिस्तान (32.7%), यमन (27.3%), सीरिया (24.9%) और इराक (22.7%)।

लैंगिक असमानता का अर्थशास्त्र:

1. महिलाएँ दुनिया की कुल आबादी का करीब-करीब आधा हिस्सा हैं, और इसी कारण से लैंगिक विभेद के व्यापक और दूरगामी असर होते हैं, जिनका समाज के हर स्तंभ पर असर दिखता है।
2. इस का आर्थिक मोर्चे पर भी बहुत गहरा असर होता है। विश्व बैंक समूह की वर्ष 2018 की एक रिपोर्ट के मुताबिक, पुरुषों और महिलाओं के वेतन में असमानता की वजह से विश्व अर्थव्यवस्था को करीब 160 खरब डॉलर की क्षति उठानी पड़ी थी।
3. यह एक बड़ी हानि है, जिसकी व्यापकता का अंदाजा लगाना भी मुश्किल है। खास तौर से तब, जब हमें यह पता चलता है कि अगर पुरुष और महिला कामगारों का वेतन एकसमान कर दिया जाए, तो इससे विश्व की संपत्ति में हर व्यक्ति की जिंदगी में करीब 23 हजार 620 डॉलर की वृद्धि हो जाएगी।

लैंगिक असमानता के विभिन्न क्षेत्र:

1. सामाजिक क्षेत्र में- भारतीय समाज में प्राय: महिलाओं को घरेलू कार्य के ही अनुकूल माना गया है। घर में महिलाओं का मुख्य कार्य भोजन की व्यवस्था करना और बच्चों के लालन-पालन तक ही सीमित है। अक्सर ऐसा देखा गया है कि घर में लिये जाने वाले निर्णयों में भी महिलाओं की कोई भूमिका नहीं रहती है। महिलाओं के मुद्दों से संबंधित विभिन्न सामाजिक संगठनों में भी महिलाओं की न्यूनतम संख्या लैंगिक असमानता के विकराल रूप को व्यक्त करती है।

2. आर्थिक क्षेत्र में- आर्थिक क्षेत्र में कार्यरत महिला और पुरुष के पारिश्रमिक में अंतर है। औद्योगिक क्षेत्र में प्राय: महिलाओं को पुरुषों के सापेक्ष कम वेतन दिया जाता है। इतना ही नहीं रोजगार के अवसरों में भी पुरुषों को ही प्राथमिकता दी जाती है।

3. राजनीतिक क्षेत्र में- सभी राजनीतिक दल लोकतांत्रिक होते हुए समानता का दावा करते हैं परंतु वे न तो चुनाव में महिलाओं को प्रत्याशी के रूप में टिकट देते हैं और न ही दल के प्रमुख पदों पर उनकी नियुक्ति करते हैं।

4. विज्ञान के क्षेत्र में- जब हम वैज्ञानिक समुदाय पर ध्यान देते हैं तो यह पाते हैं कि प्रगतिशीलता की विचारधारा पर आधारित इस समुदाय में भी स्पष्ट रूप से लैंगिक असमानता विद्यमान है। वैज्ञानिक समुदाय में या तो महिलाओं का प्रवेश ही मुश्किल से होता है या उन्हें कम महत्तव के प्रोजेक्ट में लगा दिया जाता है। यह विडंबना ही है कि हम मिसाइल मैन के नाम से प्रसिद्ध स्वर्गीय ए. पी.जे अब्दुल कलाम से तो परिचित हैं लेकिन मिसाइल वुमेन ऑफ इंडिया टेसी थॉमस के नाम से परिचित नहीं हैं।

5. मनोरंजन क्षेत्र में- मनोरंजन के क्षेत्र में अभिनेत्रियों को भी इस भेदभाव का शिकार होना पड़ता है। अक्सर फिल्मों में अभिनेत्रियों को मुख्य किरदार नहीं समझा जाता और उन्हें पारिश्रमिक भी अभिनेताओं की तुलना में कम मिलता है।

6. खेल क्षेत्र में- खेलों में मिलने वाली पुरस्कार राशि पुरुष खिलाड़ियों की बजाय महिला खिलाड़ियों को कम मिलती हैं। चाहे कुश्ती हो या क्रिकेट हर खेल में भेदभाव हो रहा है। इसके साथ ही, पुरुषों के खेलों का प्रसारण भी महिलाओं के खेलों से ज्यादा है।

लैंगिक असमानता के कारक:

1. सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रगति के बावजूद वर्तमान भारतीय समाज में पितृसत्तात्मक मानसिकता जटिल रूप में व्याप्त है। इसके कारण महिलाओं को आज भी एक जिम्मेदारी समझा जाता है। महिलाओं को सामाजिक और पारिवारिक रुढ़ियों के कारण विकास के कम अवसर मिलते हैं, जिससे उनके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं हो पाता है। सबरीमाला और तीन तलाक जैसे मुद्दों पर सामाजिक मतभेद पितृसत्तात्मक मानसिकता को प्रतिबिंबित करता है।
2. भारत में आज भी व्यावहारिक स्तर (वैधानिक स्तर पर सर्वोच्च न्यायालय के आदेशानुसार संपत्ति पर महिलाओं का समान अधिकार है) पर पारिवारिक संपत्ति पर महिलाओं का अधिकार प्रचलन में नहीं है इसलिये उनके साथ विभेदकारी व्यवहार किया जाता है।
3. राजनीतिक स्तर पर पंचायती राज व्यवस्था को छोड़कर उच्च वैधानिक संस्थाओं में महिलाओं के लिये किसी प्रकार के आरक्षण की व्यवस्था नहीं है।
4. वर्ष 2017-18 के नवीनतम आधिकारिक आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (Periodic Labour Force Survey) के अनुसार, भारतीय अर्थव्यवस्था में महिला श्रम शक्ति(Labour Force) और कार्य सहभागिता (Work Participation) दर कम है। ऐसी परिस्थितियों में आर्थिक मापदंड पर महिलाओं की आत्मनिर्भरता पुरुषों पर बनी हुई है। देश के लगभग सभी राज्यों में वर्ष 2011-12 की तुलना में वर्ष 2017-18 में महिलाओं की कार्य सहभागिता दर में गिरावट देखी गई है। इस गिरावट के विपरीत केवल कुछ राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों जैसे मध्य प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, चंडीगढ़ और दमन-दीव में महिलाओं की कार्य सहभागिता दर में सुधार हुआ है।
5. महिलाओं के रोजगार की अंडर-रिपोर्टिंग (Under - Reporting) की जाती है अर्थात् महिलाओं द्वारा परिवार के खेतों और उद्यमों पर कार्य करने को तथा घरों के भीतर किये गए अवैतनिक कार्यों को सकल घरेलू उत्पाद में नहीं जोड़ा जाता है।
6. शैक्षिक कारक जैसे मानकों पर महिलाओं की स्थिति पुरुषों की अपेक्षा कमजोर है। हालाँकि लड़कियों के शैक्षिक नामांकन में पिछले दो दशकों में वृद्धि हुई है तथा माध्यमिक शिक्षा तक लैंगिक समानता की स्थिति प्राप्त हो रही है लेकिन अभी भी उच्च शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं का नामांकन पुरुषों की तुलना में काफी कम है।

असमानता को समाप्त करने के प्रयास:

1. समाज की मानसिकता में धीरे-धीरे परिवर्तन आ रहा है जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं से संबंधित मुद्दों पर गंभीरता से विमर्श किया जा रहा है। तीन तलाक, हाजी अली दरगाह में प्रवेश जैसे मुद्दों पर सरकार तथा न्यायालय की सक्रियता के कारण महिलाओं को उनका अधिकार प्रदान किया जा रहा है।
2. राजनीतिक प्रतिभाग के क्षेत्र में भारत लगातार अच्छा प्रयास कर रहा है इसी के परिणामस्वरुप वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक- 2020 के राजनीतिक सशक्तीकरण और भागीदारी मानक पर अन्य बिंदुओं की अपेक्षा भारत को 18वाँ स्थान प्राप्त हुआ। मंत्रिमंडल में महिलाओं की भागीदारी पहले से बढ़कर 23% हो गई है तथा इसमें भारत, विश्व में 69वें स्थान पर है।
3. भारत ने मैक्सिको कार्ययोजना (1975), नैरोबी अग्रदर्शी (Provident) रणनीतियाँ(1985) और लैंगिक समानता तथा विकास एवं शांति पर संयुक्त राष्ट्र महासभा सत्र द्वारा 21वीं शताब्दी के लिये अंगीकृत 'बीजिंग डिक्लरेशन एंड प्लेटफार्म फॉर एक्शन' को

कार्यान्वित करने के लिये और कार्रवाइयाँ एवं पहलें जैसी लैंगिक समानता की वैश्विक पहलों की अभिपुष्टि की है।

4. 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ', 'वन स्टॉप सेंटर योजना', 'महिला हेल्पलाइन योजना' और 'महिला शक्ति केंद्र' जैसी योजनाओं के माध्यम से महिला सशक्तीकरण का प्रयास किया जा रहा है। इन योजनाओं के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप लिंगानुपात और लड़कियों के शैक्षिक नामांकन में प्रगति देखी जा रही है।
5. आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हेतु मुद्रा और अन्य महिला केंद्रित योजनाएँ चलाई जा रही हैं।
6. लैंगिक असमानता को दूर करने के लिये कानूनी प्रावधानों के अलावा किसी देश के बजट में महिला सशक्तीकरण तथा शिशु कल्याण के लिये किये जाने वाले धन आवंटन के उल्लेख को जेंडर बजटिंग कहा जाता है। दरअसल जेंडर बजटिंग शब्द विगत दो-तीन दशकों में वैश्विक पटल पर उभरा है। इसके जरिये सरकारी योजनाओं का लाभ महिलाओं तक पहुँचाया जाता है।
7. आगे की राह लैंगिक समानता के उद्देश्य को हासिल करना जागरूकता कार्यक्रमों के आयोजन और कार्यालयों में कुछ पोस्टर चिपकाने तक ही सीमित नहीं है। यह मूल रूप से किसी भी समाज के दो सबसे मजबूत संस्थानों - परिवार और धर्म की मान्यताओं को बदलने से संबंधित है।
8. लैंगिक समानता का सूत्र श्रम सुधारों और सामाजिक सुरक्षा कानूनों से भी जुड़ा है, फिर चाहे कामकाजी महिलाओं के लिये समान वेतन सुनिश्चित करना हो या सुरक्षित नौकरी की गारंटी देना। मातृत्व अवकाश के जो कानून सरकारी क्षेत्र में लागू हैं, उन्हें निजी और असंगठित क्षेत्र में भी सख्ती से लागू करना होगा। जेंडर बजटिंग और समाजिक सुधारों के एकीकृत प्रयास से ही भारत को लैंगिक असमानता के बंधनों से मुक्त किया जा सकता है।

'जेंडर बजटिंग' क्या है?

1. लैंगिक समानता के लिये कानूनी प्रावधानों के अलावा किसी देश के बजट में महिला सशक्तीकरण तथा शिशु कल्याण के लिये किये जाने वाले धन आवंटन के उल्लेख को जेंडर बजटिंग कहा जाता है।
2. महिलाओं के खिलाफ होने वाले भेदभाव को समाप्त करने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिये 2005 से भारत ने औपचारिक रूप से वित्तीय बजट में जेंडर उत्तरदायी बजटिंग (Gender Responsive Budgeting-GRB)को अंगीकार किया था। जीआरबी का उद्देश्य है- राजकोषीय नीतियों के माध्यम से लिंग संबंधी चिंताओं का समाधान करना।
3. लैंगिक समानता के उद्देश्य को हासिल करना जागरूकता कार्यक्रमों के आयोजन और कार्यालयों में कुछ पोस्टर चिपकाने तक ही सीमित नहीं है। यह मूल रूप से किसी भी समाज के दो सबसे मजबूत संस्थानों - परिवार और धर्म की मान्यताओं को बदलने से संबंधित है।
4. जेंडर बजटिंग के माध्यम से महिलाओं को प्रत्यक्ष लाभार्थी बनाने की बजाय उन्हें विकास यात्रा की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी बनाना होगा। हालाँकि, जेंडर बजटिंग लैंगिक असमानता को खत्म करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है लेकिन इसके लिये जीआरबी के माध्यम से नीतियों को और अधिक प्रभावी और व्यापक दृष्टिकोण से युक्त बनाना होगा, उचित और व्यावहारिक आवंटन सुनिश्चित करना होगा। वास्तविक सुधारों के लिये जेंडर बजटिंग को महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता से जोड़ना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. लिंग और समाज - डॉ. गोपाल कृष्ण अग्रवाल।
2. लिंग और लैंगिकता - डॉ. रविन्द्रनाथ मुखर्जी।
3. दृष्टि : आई.ए.एस.।
4. भारतीय महिलाएँ : सशक्तिकरण एवं महिला सहकारिता - डॉ. रानी प्रभा सोलंकी।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Water Quality Index of Mansarovar Pond at Dhar (M.P.)

Dr. Dara Singh Waskel* Dr. Bhagwan Singh Patel**

*Assistant Professor (Zoology) PMCOE Maharaja Bhoj Govt. P.G. College, Dhar (M.P.) INDIA
** Assistant Professor (Zoology) PMCOE Maharaja Bhoj Govt. P.G. College, Dhar (M.P.) INDIA

Abstract:Water quality index (WQI): Study of water Quality index and bacteriological assessment of Manasarovar Pond at Dhar (MP) to certain the quality of water for public consumption. The water quality index and bacteriological parameters of this pond were observed seasonally during 2023–2024. The results obtained from the study revealed that the WQI of the pond was well within thepermissible limits (WHO) and (BIS) and water is safe for drinking purposes.
Keywords: Water quality index, bacteriological parameters, WHO, BIS.

Introduction - Our earth is unique and provides one environment for the evolution of our life and natural resources for its maintenance. But due to man-made activities these resources are consumed and regularly deteriorated. Water is one of the most precious natural resources and is essential for everything on our planate to grow and prosper (Buragohain et al. 2007).

WQI is one of the most effective ways to communicate information on water quality trends with indicates. WQI is commonly used for the detection and evaluation of water pollution and may be defined as a rating reflecting the composite influence of the overall quality of a number of water quality parameters. Water quality index refers to physical, chemical, and biological characteristics of water. In response to the need for a uniform understandable yardstick of water quality, scientists worked out to compile all the water quality parameters into some convenient approach to represent an index, a procedure generally described as a “Water Quality Index (WQI)” (Horton, 1965; Brown, 1972; Otta, 1978).

Materials and Methods: In the present study, WQI has been calculated on the basis of Physico-chemical parameters. The main objective of the study was to know the water pollution of potable water from Manasarovar Pond, district Dhar. We know that water is essential for the life of organisms, including human beings who depend on good quality of water.

The Water Quality Index (WQI) was calculated using a weighted arithmetic index method and the quality rating/ sub-index (Qi) corresponding to the Ist parameter PI, is a number reflecting the relative value of this parameter. The QI was calculated by using the following expression:

$$WQI = \sum_{i=1}^{n} [\{M_1 (-) I_1 / (s_1 - I_1)\}] \times 100$$

Where:
M_1 = Estimated values of the parameter in the laboratory.
I_1= Ideal value of the Ist parameter.
S_1 = Standard value of the Ist parameter.
(-) = The sign indicates the numerical difference of the two values, ignoring the algebraic sign.
The overall WQI was calculated by aggregating the quality rating (QI) with unit weight (WJ) linearly.

$$WQI = [(\sum_{i=1}^{n} Q_1 W_1) / (\sum_{i=1}^{n} W_1)$$

Manasarovar pond from 6 selected stations is studied carefully, and the calculations are made. Below 100, it means the water is permissible for drinking purposes.

Results and Discussion: Overall water quality index of Mansarovar Pond during 2023–24 observed 68%. Sampling stations were found of very good quality, and 32% Sampling stations were found of “good” quality of water. Water quality rating was very good at two stations, and four stations are quality rating of “very good” status. Disinfection of community surface water, proper supply system, periodical quality monitoring of drinking water sources, simple and economical water treatments like filtration, boiling, reverse osmosis would promote beneficial to water body.

Obtained results indicate that bacteriological contamination of water is seen. Something suggests that the need of source protection and regular treatment of water at local filter plants and any lacuna may result in serious health problems.

During the study, pond minimum WQI of Mansarovar Pond water was 33.780 at Station III during 2024, while maximum WQI of the same was 56.270 at Station V during 2023.

Over all QWI of all the sampling station during 2023 was 45.876 while the overall WQI during was 44.323 which

indicate "good to very good" station of pond water quality. The present study was also revealed that out of six sampling station, four station were WQI below 50 indicating that water quality is "very good" remaining two sampling station higher WQI ranged between 50 to 60 indicating that the WQI is interior to other station. Still that station of water quality is good and fit for human consumption. The result obtained from Mansarovar Pond was Cleary indicate usability of but the agriculture land around the pond and uses of pesticides, improper disposal wastes, creating man-made pollution inside the water body and it can be harmful for public health. An action plan for drinking water safety should be applied, the plan should be based on the principal of multi barrier approach where by protection barrier were used to ensure the cleantives, safety and reliability of drinking water.

Table 1: Rating scale for WQI

S.	WQI values	Water quality rank
1	0-25	Excellent
2	26-50	Very good
3	51-75	Good
4	76-100	Poor
5	100<	Unfit for drinking

Table 2: Station wise WQI of Mansarovar pond during 2023-24

S.	sta-tion	2023			2024		
		QiWi	WQI	Status	QiWi	WQI	Status
1	I	51.18	41.50	Very good	51.22	42.68	Very good
2	II	45.05	37.45	Very good	46.03	38.20	Very good
3	III	46.44	37.77	Very good	41.58	33.78	Very good
4	IV	56.67	46.06	Very good	56.06	45.70	Very good
5	V	68.22	56.78	good	67.22	56.21	good
6	VI	66.25	53.20	good	63.58	53.47	good

Table 3: Season wise WQI of Mansarovar pond during 2023-24

S.	Sea son	2023			2024		
		QiWi	WQI	Status	QiWi	WQI	Status
1	Rainy	52.58	42.77	Very good	53.55	48.35	Very good
2	Winter	56.66	45.38	Very good	55.48	42.90	Very good
3	Sum mer	51.28	41.69	Very good	52.92	43.22	Very good

Acknowledgment: the authors are to grateful dr. S. S. Baghel, Principal PMCOE Govt. P. G. College, Dhar and Prof. R. C. Ghawari HOD (Zoology) and dr. Sadhana Chauhan (Senior professor) PMCOE Govt. P. G. College Dhar for providing facilities. We are also thankful to PHE Office Dhar for help During study of the Mansarovar pond. Special thank are due to all acknowledgeable for the important information giving regarding the study area.

References:-

1. Brow, R. M. Mc cleiland, N. J. Deiminger, R. A. and 'O' Conner (1972): A water Quality index erasing the phycological barrier. Water poll. Res. Jou. 6:787-797.
2. Horton, R. K. (1965): An index number system for rating water quality, j. water poll. Cont. fed. 3:300-305.
3. Otta, W. R. (1978): Environmental indices: theory and practice Ama arbar science publishing, Miching (USA).
4. Waskel D. S. (2013): water quality index of sitapat pond at Dhar town (M.P.), Biotech Books, new Delhi 259-262.
5. APHA (2005): Standard method for Examination of water and waste water Ameriean public health association. 21thedt. Washington D.C.
6. BIS (1991): Specification for drinking water quality Indian standard institution New Delhi, India.
7. W.H.O. (1995): Guidelines for drinking water standard, world health Organisation.
8. Gaur. N., sarkar, A., Datta, D. et al. (2005): Evolution of water quality index and geochemical characteristics of surface water from Twang India. Sci. Rep, 12,11698.
9. Kant, N., Singh, P. K., Kumar, B. (2018): Hydrogeochemical characterization and ground water quality of Jamshedpur urban agglomeration in Precambrian terrain, Eastern India. J. Geol. Soc. India 92(1),67-75.
10. Sharma, G. et al (2021): Application of multivariate statistical analysis and water quality characterization of Parbati river, Northwestern Himalaya, India, discover, water 1 (1),5.
11. Waskel D. S. and Alawa K. S. (20017): A case study of krishnpura lake Indore M. P. Jour. Of Divya Shodh Samiksha Vol. (1): 20-22.

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Unemployment in India: A Qualitative Exploration of Challenges and Possibilities

Dr. Vibha Nigam*

***Professor (Economics) PMCoE Mahakaushal Arts and Commerce College, Jabalpur (M.P.) INDIA**

Abstract : Unemployment remains a persistent issue in India, affecting millions of individuals across urban and rural areas. This paper explores the socio-economic and psychological impacts of unemployment, highlighting its consequences on financial stability, mental health, social inequality, and crime rates. The study examines how joblessness leads to economic insecurity, forcing individuals into exploitative labor conditions and pushing families into debt cycles. It also delves into the emotional and psychological toll on unemployed individuals, who often experience depression, anxiety, and social isolation due to societal expectations and pressures. Furthermore, unemployment worsens existing social inequalities, disproportionately affecting marginalized communities and increasing crime rates as individuals resort to unlawful activities out of desperation. While government policies and economic reforms aim to address unemployment, structural inefficiencies and skill mismatches continue to hinder progress. This paper underscores the need for a holistic approach, including better employment policies, mental health support, and inclusive economic opportunities, to mitigate the challenges posed by rising unemployment in India.
Keywords- unemployment, financial stress, economic insecurity, structural inefficiencies.

Introduction

Context & Importance: Unemployment in India is not just an economic issue; it is deeply intertwined with social structures, aspirations, and the quality of life of millions. A job is more than a source of income—it represents dignity, stability, and participation in economic progress. However, a significant portion of India's working-age population struggles to secure meaningful employment, often navigating a complex landscape of job shortages, skill mismatches, and structural barriers. The problem is not merely about numbers but about the quality of jobs available, the unpredictability of job markets, and the frustration of educated youth unable to find roles that match their aspirations.

The reality of unemployment is experienced differently across rural and urban regions, among men and women, and within different economic classes, making it a multidimensional issue. A lack of job security, underemployment, and informal labor further complicate the scenario. Beyond economic loss, prolonged unemployment breeds psychological distress, lowers self-esteem, and leads to social alienation, particularly among young people. By examining unemployment qualitatively, we can understand its deeper impact beyond mere statistics, revealing the narratives of those affected and the structural forces that shape their realities. Addressing unemployment requires a shift from a purely economic lens to a holistic approach integrating policy, education, and societal change.

Objective of the Study: Unemployment is a persistent concern in India, influencing not only the economic well-beingof individuals but also shaping social mobility, mental health, and generational aspirations. While many studies focus on statistical trends, this research aims to explore unemployment from a qualitative perspective—examining how joblessness is experienced, the frustrations of job seekers, and the structural challenges that hinder employment opportunities. Rather than just measuring unemployment rates, this paper delves into the narratives of those affected: young graduates struggling to find work, rural workers forced to migrate to cities, and women facing gendered barriers to employment.

By moving beyond numbers, this study seeks to understand how unemployment impacts identity, relationships, and long-term career trajectories. It also questions whether current policies and initiatives truly address the root causes of joblessness or merely serve as temporary fixes. Furthermore, the research aims to highlight the perspectives of various stakeholders—job seekers, employers, educators, and policymakers—to create a comprehensive understanding of the employment landscape. Ultimately, this study advocates for a more inclusive and holistic approach to tackling unemployment, one that aligns education, skill development, and economic

policies with the realities of job seekers across different socio-economic backgrounds.

Scope of the Paper: Unemployment in India is a vast topic with multiple dimensions, and this paper seeks to focus on key qualitative aspects rather than statistical analysis. The research will explore the lived experiences of unemployed individuals, highlighting the psychological, social, and financial struggles they endure. The study also covers the structural causes of unemployment, such as the disconnect between education and industry requirements, automation, and gender disparities in the workforce.

Another important focus will be the rural-urban employment divide. Rural unemployment is often disguised, with people engaged in low-paying, informal jobs that provide little security. In contrast, urban unemployment presents a different challenge, with an oversupply of graduates competing for a limited number of white-collar jobs. This study will also assess government policies, exploring whether initiatives like skill development programs and employment guarantee schemes genuinely improve employability or if they fall short in addressing systemic issues.

Additionally, the paper will discuss the impact of unemployment on different demographics, such as women, youth, and marginalized communities, to provide a holistic view. By emphasizing personal narratives and policy critiques, this study aims to move beyond numbers and offer a deeper understanding of India's unemployment crisis.

Understanding Unemployment in India

Defining Unemployment: Unemployment, at its core, refers to the condition in which individuals who are willing and able to work cannot find suitable jobs. However, in the Indian context, defining unemployment is more complex due to the presence of a vast informal economy, seasonal employment, and underemployment. Unlike developed economies where employment is primarily formal and structured, India has a significant number of workers engaged in informal and unregulated jobs, making traditional unemployment metrics less reflective of reality.

In many cases, individuals are technically employed but earn far less than a living wage or work in conditions that offer no job security or career growth. The phenomenon of disguised unemployment is also prevalent, particularly in agriculture, where more people work than are actually required for productivity. Moreover, social and cultural factors influence employment patterns, with women often dropping out of the workforce due to familial responsibilities or safety concerns. Therefore, a rigid definition of unemployment fails to capture the depth of joblessness in India, making it essential to analyze the different ways unemployment manifests beyond simple economic measures.

Types of Unemployment: Unemployment in India takes various forms, each with its own causes and consequences:

1. **Structural Unemployment:** This occurs when there is a mismatch between the skills job seekers possess and the skills demanded by employers. Many graduates struggle to find jobs because the education system emphasizes theoretical knowledge over practical skills, makingthemunemployable in modern industries.
2. **Frictional Unemployment:** This is a temporary phase where individuals are between jobs or searching for better opportunities. While natural in any economy, frictional unemployment in India is prolonged due to bureaucratic hiring processes and a lack of careerguidance.
3. **Disguised Unemployment:** Common in agriculture, this happens when more people are engaged in work than necessary, leading to inefficiency. Many rural workers remain "employed" but contribute little to productivity.
4. **Underemployment:** A significant portion of India's workforce is underemployed, meaning they work jobs that do not fully utilize their skills or pay below their qualifications. Many highly educated individuals take up low-paying jobs due to a lack of better opportunities.

Each of these forms of unemployment has distinct effects on individuals and the economy, making it crucial to address them through targeted policies and skill development initiatives.

Experiences of Unemployed Individuals: Unemployment is not just an economic statistic; it is a deeply personal and emotional experience. Many job seekers, especially young graduates, feel disillusioned when their education does not translate into employment. They invest years in acquiring degrees, only to realize that the job market is highly competitive and often favors those with practical skills over academic qualifications. This leads to frustration, self-doubt, and, in many cases, a loss of confidence in the system.

For rural workers, unemployment means migrating to cities in search of work, often ending up in exploitative labor conditions. Many are forced to take low-paying jobs in construction, domestic work, or street vending, with little to no legal protection. Women, in particular, face additional challenges as employers often hesitate to hire them due to societal biases and concerns over workplace safety. Even those who manage to secure employment often experience job insecurity, where they can be dismissed without warning. The psychological impact of unemployment is severe, leading to stress, anxiety, and in some cases, depression. Many unemployed individuals also struggle with societal pressure, as Indian culture often equates professional success with self-worth. Families expect young adults to secure stable jobs quickly, and when they fail to do so, it can lead to feelings of shame and isolation. Understanding these personal experiences is crucial in framing better employment policies that go beyond economic indicators and focus on human well-being.

Causes of Unemployment in India

Education and Skill Mismatch: One of the major causes of unemployment in India is the disconnect between the

education system and industry requirements. The traditional curriculum in most Indian universities focuses heavily on theoretical knowledge rather than practical skills. As a result, graduates often find themselves unprepared for the demands of the job market. Employers seek candidates with hands-on experience, critical thinking abilities, and technical expertise—qualities that are rarely emphasized in mainstream education.

Despite the increasing number of degree holders, employability remains low because many institutions fail to update their courses in line with evolving industry needs. Fields like artificial intelligence, data science, and digital marketing are booming, yet most universities still follow outdated syllabi that do not equip students with relevant skills. Even vocational training programs, though promising, have limited reach and struggle with quality control.

Moreover, there is a strong cultural bias toward white-collar jobs, leading students to prioritize degrees over skill-based learning. Many graduates expect high-paying positions immediately after completing their education, only to face rejection due to a lack of real-world expertise. This education-employment gap contributes significantly to both unemployment and underemployment, forcing many to accept jobs below their qualifications or remain jobless for extended periods.

Structural and Technological Changes: The Indian job market is undergoing rapid transformation due to automation, artificial intelligence, and globalization. While technological advancements create new opportunities, they also displace a large portion of the workforce, particularly those in low-skilled jobs. Traditional manufacturing and clerical roles are being replaced by automated systems, reducing the demand for human labor. Many workers, particularly those in sectors like textiles, banking, and customer service, find themselves redundant due to digitalization.

Furthermore, the rise of the gig economy—where short-term contracts replace permanent jobs—has altered employment structures. While platforms like Uber, Swiggy, and freelance marketplaces provide temporary work, they do not offer long-term stability or benefits like health insurance and pensions. As a result, many workers remain in a precarious state, uncertain about their financial future.

Gender and Social Barriers: Unemployment in India is not just about the availability of jobs; it is also about who gets access to them. Women, marginalized communities, and differently-abled individuals face systemic barriers that limit their employment opportunities. Gender biases in hiring, workplace safety concerns, and societal expectations force many women out of the workforce, despite their qualifications. Even in urban areas, many employers hesitate to hire women due to maternity leave policies, family responsibilities, or cultural norms that discourage women from working late hours.

In rural areas, the situation is even worse. Many women are engaged in unpaid household labor, and their contributions to agriculture or family businesses are often unrecognized. Those who wish to work outside their homes face limited job options and social resistance. Additionally, the gender pay gap remains a persistent issue, where women earn significantly less than men for the same work, further discouraging female workforce participation.

Caste and class also play a crucial role in employment opportunities. Individuals from marginalized communities often lack access to quality education, professional networks, and resources needed to secure stable jobs. Discrimination in hiring, though illegal, still exists in subtle forms, making social mobility difficult for many. Without structural reforms that promote equal opportunities, unemployment will continue to disproportionately affect these vulnerable groups.

Government Policies and Their Effectiveness

Employment Generation Programs: The Indian government has launched several employment generation programs to tackle unemployment, but their effectiveness remains mixed. One of the most well-known initiatives is the Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act (MGNREGA), which guarantees 100 days of wage employment to rural households. While MGNREGA has provided income support to millions, it is often criticized for offering only short-term relief rather than sustainable job creation. Many workers remain stuck in low-productivity jobs, unable to transition into more stable employment.

In urban areas, initiatives like Startup India and Skill India aim to boost entrepreneurship and workforce skills. However, these programs face challenges such as bureaucratic inefficiencies, lack of awareness, and mismatched training that does not align with industry demands. The reality is that most government schemes focus on quantity over quality—creating temporary jobs rather than fostering long-term career growth.

Effectiveness of Skill Development Programs: Skill development is a crucial solution to unemployment, but India's training programs often fall short. The Skill India Mission, launched to equip youth with vocational skills, has trained millions, yet many still struggle to find employment. One key issue is the quality of training—many institutions provide theoretical instruction with little hands-on experience. Employers often find that graduates of these programs lack practical skills, leading to a gap between training and actual job readiness.

Moreover, many skill development initiatives do not align with industry needs. For example, while sectors like IT, renewable energy, and data analytics are booming, most training programs still focus on traditional trades like plumbing and tailoring. There is a disconnect between what is being taught and what the job market demands, leading to a situation where people are skilled but not employable. Another issue is accessibility—many of these programs are concentrated in urban areas, leaving rural populations

behind. Women and individuals from marginalized communities face additional challenges in accessing training, as social norms and financial constraints often limit their participation. Without addressing these structural flaws, skill development programs will continue to fall short of their potential.

Private Sector and Entrepreneurship Support: The government has been actively promoting entrepreneurship as a solution to unemployment through schemes like Mudra Yojana and Stand-Up India, which provide financial support to small businesses. However, starting and sustaining a business in India is not easy. Many aspiring entrepreneurs struggle with bureaucratic hurdles, high taxation, and limited access to investment.

Additionally, risk-averse lending practices by banks make it difficult for new businesses to secure loans. While government schemes offer funding, many applicants face delays or rejections due to complex documentation requirements. For those who do manage to start a business, competition from large corporations and international brands makes survival challenging.

The Role of Technology and the Future of Employment

Automation and Job Displacement: Technology is rapidly changing the employment landscape in India. Automation, artificial intelligence (AI), and robotics are replacing human labor in various industries, particularly in sectors like manufacturing, customer service, and even banking. While automation increases efficiency and reduces costs for companies, it also leads to widespread job displacement, especially for low-skilled workers.

In industries like automobile manufacturing, machines are now performing tasks that once required human hands, reducing the need for factory workers. Similarly, AI-powered chatbots and self-service kiosks are replacing customer service executives, making many traditional roles obsolete. The banking sector has also undergone digital transformation, reducing the need for clerical staff as online banking and mobile applications become more advanced. The biggest concern with automation is that it disproportionately affects workers who lack specialized skills. While new technology creates jobs in fields like cybersecurity, AI development, and digital marketing, these opportunities are primarily available to highly educated individuals. This creates a widening gap between the skilled and unskilled workforce, where only those who can adapt to technology-driven industries will thrive, while others risk being left behind.

Emerging Sectors and Job Creation: Despite concerns about job losses, technology has also opened doors to new employment opportunities. The IT sector, e-commerce, and renewable energy industries have created thousands of jobs in recent years. Companies like TCS, Infosys, and Wipro continue to hire professionals skilled in coding, data analytics, and cloud computing. With digital transformation accelerating, demand for software developers, blockchain specialists, and AI engineers is growing.

The rise of the startup ecosystem in India has also fueled job creation. Cities like Bengaluru, Hyderabad, and Pune have become hubs for tech-driven startups, offering employment in areas like fintech, healthcare tech, and online education. Government-backed initiatives such as Make in India and Digital India aim to promote domestic manufacturing and IT infrastructure, leading to further job growth.

Additionally, sustainable energy and environmental technology sectors are expanding, with companies investing in solar and wind energy projects. As India pushes for cleaner energy alternatives, jobs in green technology, environmental consulting, and waste management are on the rise. These industries present an opportunity for employment growth, but only for those who receive adequate training in these emerging fields.

Conclusion: Unemployment in India is not just an economic issue; it is a deeply embedded social crisis with far-reaching consequences. The financial burden on families, coupled with mental health struggles, creates a vicious cycle of despair and economic instability. The disparities in job access further marginalize vulnerable communities, increasing frustration and, in some cases, leading to higher crime rates. Addressing unemployment requires a multi-faceted approach, involving educational reforms, skill development programs, and policy changes that promote job creation. Additionally, improving mental health accessibility and fostering inclusive workplaces can help mitigate the adverse effects of joblessness. While economic fluctuations are inevitable, a proactive and strategic intervention can reduce the severity of unemployment's impact, ensuring a more stable and equitable society. In conclusion, tackling unemployment effectively will require collective efforts from the government, private sector, and civil society to create sustainable and inclusive employment opportunities for all.

References:-

1. Basu, D., & Das, D. (2022). *Unemployment and economic growth in India: A structural analysis*. Economic & Political Weekly, 57(4), 32-41.
2. Bhattacharya, P. C. (2019). *Youth unemployment in India: Causes and policy implications*. Journal of Asian Economics, 65, 101-117.
3. Chakraborty, A. (2020). *The role of education in reducing unemployment in India*. Indian Journal of Labour Economics, 63(2), 265-280.
4. Deshpande, A. (2021). *Caste and unemployment in India: The persistent inequality*. World Development, 146, 105-114.
5. Dhingra, S. (2020). *Women and unemployment: The missing workforce in India*. Economic & Political Weekly, 55(33), 27-35.
6. Ghosh, J. (2021). *Structural unemployment in India: A policy perspective*. Cambridge Journal of Economics,

45(3), 567-586.
7. Government of India. (2023). *Periodic Labour Force Survey 2022-23*. Ministry of Statistics and Programme Implementation.
8. ILO. (2022). *India Employment Report 2022: Trends and Challenges*. International Labour Organization.
9. Jha, R. (2019). *Rural unemployment and migration patterns in India*. Journal of Development Studies, 55(5), 789-805.
10. Kapoor, R. (2021). *Job creation in India: The challenge of skill mismatch*. IIMB Management Review, 33(1), 12-27.
11. Khera, R. (2020). *The impact of COVID-19 on unemployment in India*. The Indian Economic Journal, 68(3), 456-472.
12. Mehrotra, S. (2021). *The informal sector and unemployment crisis in India*. Economic & Political Weekly, 56(18), 10-18.
13. Ministry of Labour and Employment. (2022). *National Employment Policy: A roadmap for job creation*. Government of India.
14. Mitra, A. (2023). *Digital economy and employment trends in India*. Journal of South Asian Development, 18(1), 87-104.
15. NITI Aayog. (2022). *Skill development and employment generation in India: A policy review*. Government of India.
16. NSSO. (2021). *Unemployment trends in India: Findings from the 78th Round*. National Sample Survey Office, Ministry of Statistics and Programme Implementation.
17. Ray, S., & Sinha, A. (2020). *Unemployment and mental health: The psychological impact of job loss in India*. Indian Journal of Psychology, 77(2), 125-139.
18. Sen, A. (2019). *Poverty, unemployment, and social justice in India*. Journal of Human Development, 20(4), 312-328.
19. Shah, M. (2021). *Gig economy and the future of employment in India*. Indian Journal of Labour Studies, 58(3), 221-239.
20. Subramanian, S. (2022). *Youth unemployment and higher education in India: A paradox?* South Asian Journal of Social Sciences, 9(1), 55-73.

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Financial Literacy and Portfolio Diversification: Evidence from India's Middle-Class Investors

Dr. Preeti Anand Udaipure*

***Assistant Professor, Govt. Narmada College, Narmadapuram (M.P.) INDIA**

Abstract : This study examines the relationship between middle-class Indian investors' financial literacy and portfolio diversification.Assessing these investors' degree of financial literacy, determining the degree of diversification in their portfolios, and figuring out how financial literacy and investment choices are related are the goals. One hundred middle-class investors from various Indian cities participated in the poll, which was conducted using quantitative research. The results show that financial literacy is moderate, with an average score of 63.45 and a moderate level of portfolio diversification of 3.42. A moderately favourable association between the two variables is indicated by the estimated correlation between financial literacy and portfolio diversification (r = 0.45), indicating that investors with high levels of financial literacy diversify their holdings effectively. Evidently, the results produced as a result of the regression analysis show that financial literacy explains 20% of the variance with regard to portfolio diversification proving once more its role in investment planning. Concerning the findings, the present paper depicts a need for more focus on improving Finance literacy with an aim of increasing portfolio diversification and thereby the overall financial quality of the middle-class investors in India.

Keywords: Financial Literacy, Portfolio Diversification, Evidence, India's, Middle-Class Investors.

Introduction - The financial literacy can be defined as the capacity of a person to make adequate and rational decisions as for personal investments, savings and, in general, financial planning. For instance, in India, where there is a rapidly growing economy and a tremendously large and diverse populace, everyone needs to be armed with knowledge on matters to do with financial management if they are to participate in the financial markets. Formerly, it was a relatively significant class in the investment category among different segments of the Indian society. Due to higher and growing incomes and financial freedom, the middle-class people are also actively participating in investments. However, this is a fact that, a large number of the investors lacks the financial literacy which is essential to make sound investment decisions, which in turn would enable them to optimize their investment portfolios. Consequently, poor, bad investment choices are taken, poor risk management, and the lack of diversification of the portfolio.

Portfolio diversification on the other hand, is a fundamental idea of investing in different classes of assets in an effort to reduce risks and increase possible gains. This is because through diversification of the investment portfolios, the fluctuations of the market do not greatly affect the investment. However, it becomes possible only when one knows the different opportunities in the investments and how they are correlated in terms of risk & return. Financial literacy is one of the key factors that help determine the ability of an unfamiliar person in diversification of their investment portfolio. New generation Indian middle-class investors are more active in investing, but they fail to invest in other diversified instruments or manage different types of risks and returns on investment products.

The intention of this study is to determine the connection between financial literacy and portfolio diversification among Indian middle-class investors. Since this paper aims at establishing the financial illiteracy that can hinder investors from making the right decision in terms of diversification strategies to be employed, the paper undertakes an analysis of how the level of financial literacy negatively influences the methods used in diversification by these investors. Understanding of this relationship will also reveal not only the level of financial literariness of the middle class in India at the present state but also the means to improve financial enlightenment and investment productivity. With the increase in the number of the middle-class population of Indians involved in investment economy, financial literacy and a sound investment strategy would be vital to ensure the longevity of the demographics' financial health too.

Research Objectives: The primary objectives of the study are:

1. To gauge the degree of financial literacy of middle-class investors in India.
2. To assess the level of portfolio diversification among these investors.
3. To examine the relationship between financial literacy and portfolio diversification.
4. To determine the factors affecting the investment decisions and diversification plans of middle-class investors.

Review Of Literature

Assefa and Rao (2018)conducted a survey on investment decision and level of financial literacy among the salaried employee in WolaitaSodo Town of Ethiopia, and also confirmed that high level of financial literacy had significant difference in the investment decision of the respondents. They found out that there was higher probability of making right and more diverse investments for those who had higher level of financial literacy. They also pointed out the importance of financial education in raising the investment rate of return of the salaried employees particularly those in the developing country since they are financially illiterate.

Bawre and Kar (2019)synthesised the information on financial literacy and its dimensions and also analysed the socio-demographic factors in the context of urban Indian consumers. Their survey proved that primary socio-demographic factors such as age income, education and occupational status influenced the financial literacy levels of the individuals in urban areas. The authors pointed out that financial literacy is not evenly distributed among the population; it is higher among younger people and those with higher education level. This study pointed out that there is a need to ensure that there is personalization of the efforts toward financial literacy so that specific groups in the urban India can be economically empowered.

Bayar, Sezgin, Öztürk, and ªaºmaz (2020)further investigated the between financial literacy and individual investor's financial risk tolerance using multinomial logistic regression analysis. The findings showed that financial knowledge was positively associated with risk taking since the literate persons had the ability to assess and manage risks. It was established from the research that well informed client was in a better position to be riskier and readier to diversify his or her portfolio, meaning that financial knowledge pressures an investors risk sector and his or her willingness to diversify their investment portfolio. which was also expanded by this research that enhancing financial literacy reduces the rate of reckless and ill decisions taken by individuals while investing their funds.

Campbell, Ramadorai, and Ranish (2019)analyzed whether individuals who are rich get even richer through speculation in the stock exchange as it analyzed the same using India markets. They realized that the higher the status of people, coupled with better policies in resources and finances they would amass even better stock in the market. The study found out that knowledge concerning financial factors and information availability regarding stocks were critical in enabling people to benefit from stock markets particularly in new economy such as the India which has experienced tremendous growth in its financial markets.

Chawla, Bhatia, and Singh (2022) concerned with the influence of the parent in matters regarding guidance, money management and saving among the youths. To their findings, they noted that parents play a vital role in influencing the youth in terms of investment through financial knowledge. This is due the fact that people who were trained on how to talk about finance at home and learned finance from their parent's better investment disposition and high investment tendency towards long term investment plans. This paper focused on that importance of young age financial literacy and its impact on subsequent financial literacy.

Dam and Hotwani (2018)offered a conceptual definition of financial literacy and developed an assessment of it. Their work was designed in order to contribute to the development of the understanding of all those facets of financial literacy and how they might be assessed in various contexts. The measure they developed was an effective way to assess the levels of understanding regarding financial issues among people and could be applied in the process of decision making for policy purposes as well as used to design and implement special programs for particular subjects. The writers argued that, thus, there is need to improve the financial literacy by employing standard sources and structure.

Research Methodology: In the ever-evolving marketplace of India, one of the most significant factors with reference to the financial investment among the investors is financial literacy. In the course of investment, various methods have been adopted in an attempt to manage risks and achieve high returns on investment, and diversification of the portfolio has turn out to be among the most effective strategies. The financial literacy of middle-class Indian investors is often limited in terms of number, which might have serious implications for their investment decisions, for example, in relation to diversification of the portfolios. This endeavor aims to establish how peoples' financial literacy can predict diversification of the portfolio or investment portfolios of the middle class in India.

As this research targets the middle-class investors, the study is in a position to provide information regarding the effects of financial literacy on the chosen investment decision made by investors and also the diversification ratio of their investment strategies. The method that will be applied in this study is the quantitative technique of collecting and analyzing data from 100 investors from the middle-income class from selected cities in India. Determining if financial literacy and diversification among Indian investors are positively correlated is the aim of this article.

Research Design: In order to determine the connection between financial literacy and portfolio diversification among

middle-class Indian investors, the current study used a quantitative methodology. The research questionnaire was administered on the respondents with an aim of collecting the primary data. In order to determine how these two factors are related, statistical tests were conducted on the data collected.

Sampling: The target population for this research comprised the middle-class investors investing in India and who are currently active in their investment business, irrespective to their age factor, educational standard and geographical location in the country. To ensure that the sample was bias free and definitely representative of its population, a simple random sample with an aim of getting 100 participants was used which means that luckily everybody within the stipulated population was equal to make the list. One hundred was deemed sufficient to establish the correlations between the level of portfolio diversification and financial understanding as planned in the power analysis and in regard to the time and resources available for the operations.

Data Collection Methods: Questionnaires containing closed questions and 5-liked scale questions were administered to elicit data for the study. The questionnaire was divided into three parts, which include; personal information (age, educational level, income and occupation of the respondent),; financial knowledge (this section focused on the respondent's knowledge in the area of finance, investment, risk management and portfolio diversification; and investment knowledge and diversification (this section focused on the respondent's investment profile, investment types and the distribution of the portfolio). To ensure the returned results are relevant, reliable and valid, the researcher administrated the questionnaire to 10 respondents first to establish feasibility before implementing it on the rest total sample size.

Data Analysis: In order to analyze the collected data concerning the relationships of financial literacy and portfolio diversification the different statistical techniques were applied. Through the use of mean, standard deviations, and frequency distribution tables, the sample descriptive and the level of financial literacy were described. The direction and intensity of the link between portfolio diversity and financial literacy were ascertained using Pearson's correlation coefficient. Moreover, a multiple regression test was run in order to determine if financial literacy actually predicted the level of diversification of the portfolio among investors. All analyses were carried out using statistical packages like SPSS or R.

Research Hypotheses: The study will test the following hypotheses:

H_1: Higher financial literacy is positively correlated with greater portfolio diversification among middle-class investors in India.

H_2: Financially literate investors are more likely to utilize various asset classes (stocks, bonds, real estate, etc.) in their portfolios.

H_3: Middle-class investors with low financial literacy exhibit a more concentrated portfolio, leading to higher risk exposure.

Validity and Reliability: In order to maintain the validity of the data collection instruments, the study used pre-existing, established questions regarding financial literacy and portfolio diversification. The pilot test also tested and perfected the questionnaire so that it would accurately measure the constructs that it was designed to measure. Cronbach's Alpha, a statistical measure of internal consistency, was used to gauge reliability. The reliability of the study's instrument was ensured by a Cronbach's Alpha of 0.7 and higher, which indicated that the questionnaire items were consistently measuring the same underlying constructs.

Ethical Considerations: The research followed ethical standards in data collection and management. All participants provided informed consent, making them fully aware of the aim of the study prior to their involvement. Credibility of collected Data The participants' information was not revealed, and assignment of names given by them respondents' answers during analysis was removed to maintain confidentiality. It was an open study which was done in consultation with the subjects where no penalties were tendered against anybody who declined to participate or who dropped out in the middle of the study. This made it possible they into the groups to decide if they would want to or not to join into the proposed group.

Limitations of the Study:

1. **Sample Bias**: Since the study is based on the middle-class investors of India only the results cannot be generalized over other classes or countries.
2. **Self-Reported Data**: The survey data is self-reported hence might be influenced by social desirability bias or perhaps those involved in the survey cannot accurately recall events regarding their investments.
3. **Cross-Sectional Nature**: The study will be conducted at one time hence limiting possibilities of inferring cause related outcomes.

Result And Discussion: The analysis considers how financial literacy drives diversification behavior among middle-class investors in India. The research is based on quantitative data obtained from the survey of 100 respondents. Regression analysis is used to ascertain the predictability of portfolio diversification as a result of financial literacy, correlation analysis is used to assess relationships among variables, and descriptive statistics are used to describe the data. All tests of statistics will be carried out using SPSS software, and the output tables will be given accordingly.

Descriptive Statistics: Descriptive statistics give a summary of the data, including important characteristics like mean, standard deviation, and frequency distribution of variables concerned with financial literacy and portfolio

diversification.

Financial Literacy Levels: The descriptive statistics of the 100 participants' financial literacy scores are displayed in Table 1 below. The financial literacy score is derived from answers to a series of questions measuring participants' knowledge about basic financial principles, risk management, and portfolio diversification.

Table 1: Descriptive Statistics for Financial Literacy Scores

Statistic	Value
Mean	63.45
Standard Deviation	15.23
Minimum	35
Maximum	90
Skewness	-0.20
Kurtosis	0.10

A moderate level of financial literacy is implied by the respondents' average score of 63.45, which has a standard deviation of 15.23. The values of skewness and kurtosis imply that the distribution of the financial literacy scores is fairly normal.

Portfolio Diversification: The portfolio diversification measure captures the number of types of assets (stocks, bonds, real estate, etc.) represented in the portfolios of the participants, with higher values being associated with more diversification.

Table 2: Descriptive Statistics for Portfolio Diversification

Statistic	Value
Mean	3.42
Standard Deviation	1.24
Minimum	1
Maximum	7
Skewness	0.35
Kurtosis	-0.32

The standard deviation is 1.24 and the average score for portfolio diversification is 3.42. This suggests that investors typically own portfolios that are modestly diversified. The distribution is weakly positively skewed, suggesting that there are some investors with more diversified portfolios than others.

Correlation Analysis: The degree and direction of the relationship between financial literacy and portfolio diversity are investigated using correlation analysis. The linear link between the two variables is measured by Pearson's correlation coefficient.

Financial Literacy and Portfolio Diversification: Table 3 illustrates the connection between an individual's financial literacy and investment diversification by examining the relationship between portfolio diversification and financial literacy. With a focus on the impact of financial understanding on portfolio mix, it illustrates how financial literacy influences investing decisions.

Table 3: Correlation Between Financial Literacy and Portfolio Diversification

	Financial Literacy	Portfolio Diversification
Financial Literacy	1	0.45
Portfolio Diversification	0.45	1

The Pearson correlation coefficient between financial literacy and diversification of portfolios is 0.45, which reflects a moderate positive relationship. The result reflects that greater financial literacy translates into more diversified investment portfolios for middle-class Indian investors. The finding is statistically significant at the 0.01 level as reflected through the p-value of 0.0001.

Regression Analysis: Regression is conducted to examine the predictive ability of financial literacy in portfolio diversification. A multiple linear regression model is employed in estimating the extent to which financial literacy drives portfolio diversification. Tables 4, 5, and 6 show the principal statistical analyses comparing financial literacy with portfolio diversification. The model summary gives an evaluation of the explanatory power of the regression model, while the ANOVA table tests the overall significance of the model. The coefficient table also includes estimates of the financial literacy's predictors of portfolio diversification in terms of size and statistical significance.

Table 4: Model Summary

Statistic	Value
R	0.45
R^2	0.20
Adjusted R^2	0.18
Standard Error of the Estimate	1.12

According to the research, financial literacy has a 0.20 influence on portfolio diversification, as indicated by the R-squared value of 0.20. The adjusted R-squared value of 0.18 takes account of the number of variables in the model and shows the financial literacy is a moderate influence on portfolio diversification.

Table 5: ANOVA for Regression Model

Source	Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
Regression	52.31	1	52.31	16.92	0.0001
Residual	211.48	98	2.16		
Total	**263.79**	**99**			

Significance of the regression model in ANOVA can also be noted from the F-value = 16.92 and p-value = 0.0001. This suggests that financial literacy has some positive role to play as a predictor of the variation in diversification of the portfolio.

Table 6: Coefficients for Financial Literacy on Portfolio Diversification

Variable	Unstandardized Coefficients	Standardized Coefficients	t	Sig.
Constant	1.56		2.63	0.010
Financial Literacy	0.03	0.45	4.11	0.0001

The coefficient of regression for financial literacy is 0.03; this means that for every one unit increased in financial

literacy, there is a 0.03 unit increase in portfolio diversification. The analysis of the result shows that the t-statistic is 4.11 while the p-value is 0.0001 which means that the financial literacy is a significant factor in determining the level of portfolio diversification.

In other words, the analysis of the data confirms that financial literacy plays a significant role in diversification of the portfolio for the middle-class investors in India. The direct and positive correlation between financial literacy and diversification provides the foundation for the reasoning that the more educated investor tends to diversify their portfolio more effectively. The regression equation also supports this assertion claiming that financial literacy explains 20% of the variations in portfolio diversification behaviour.

The rest of the diversification variation could be attributed to other possible factors such as risk-taking capacity, the level of income and investment, which could be captured in other studies.

Conclusion: This study examines how middle-class Indian investors' portfolio diversity is impacted by their level of financial literacy. It has been demonstrated that more portfolio diversity results from increased financial literacy, indicating that greater knowledge produces the best and lower-risk investing options. With a coefficient of determination of 0.20, the regression analysis also shows that the degree of financial literacy explains the degree of portfolio diversity. The degree of diversification also depends on several other factors; these are risk tolerance, income level, and investment experience among others. Specifically, the paper underlines the capability of enhancing such programs aiming at enabling investment decisions as well as diversification among middle-class investors in India to enhance their financial security and risk management strategies.

References:-

1. Ansari, Y., Albarrak, M. S., Sherfudeen, N., & Aman, A. (2022). A study of financial literacy of investors—A bibliometric analysis. International Journal of Financial Studies, 10(2), 36.
2. Arora, J., & Chakraborty, M. (2022). Role of financial literacy in investment choices of financial consumers: an insight from India. International Journal of Social Economics, 50(3), 377-397.
3. Assefa, M., & Rao, D. (2018). Financial literacy and investment behavior of salaried individuals: a case study of WolaitaSodo Town. Int. J. Bus. Manage. Invent, 7(10), 43-50.
4. Bawre, S., & Kar, S. (2019). An investigation of the demographic factors affecting financial literacy and its components among urban Indians. International Journal of Education Economics and Development, 10(4), 398-426.
5. Bayar, Y., Sezgin, H. F., Öztürk, Ö. F., & amaz, M. Ü. (2020). Financial literacy and financial risk tolerance of individual investors: Multinomial logistic regression approach. Sage Open, 10(3), 2158244020945717.
6. Campbell, J. Y., Ramadorai, T., &Ranish, B. (2019). Do the rich get richer in the stock market? Evidence from India. American Economic Review: Insights, 1(2), 225-240.
7. Chawla, D., Bhatia, S., & Singh, S. (2022). Parental influence, financial literacy and investment behaviour of young adults. Journal of Indian Business Research, 14(4), 520-539.
8. Dam, L. B., &Hotwani, M. (2018). Financial literacy: Conceptual framework and scale development. SAMVAD, 15, 61-69.
9. Deepak, C. A., Singh, P., & Kumar, A. (2015). Financial literacy among investors: theory and critical review of literature. International Journal of Research in Commerce, Economics & Management, Volume, (5).
10. Gangwar, R., & Singh, R. (2018). Analyzing factors affecting financial literacy and its impact on investment behavior among adults in India.
11. Grohmann, A., Hübler, O., Kouwenberg, R., &Menkhoff, L. (2021). Financial literacy: Thai middle-class women do not lag behind. Journal of Behavioral and Experimental Finance, 31, 100537.
12. Khan, M. T. I., Tan, S. H., & Gan, G. G. G. (2019). Advanced financial literacy of Malaysian Gen Y investors and its consequences. Margin: The Journal of Applied Economic Research, 13(1), 83-108.
13. Lahiri, S., & Biswas, S. (2022). Does financial literacy improve financial behavior in emerging economies? Evidence from India. Managerial Finance, 48(9/10), 1430-1452.
14. Letamendia, L. N., &Poher, B. (2020). The effect of financial literacy on trust: do financially literate individuals have more trust in the financial system. IE University, (April).
15. Nguyen, D. T. (2017). Factors affecting financial literacy of Vietnamese adults: a case study for Hanoi and nghe an. Vnu Journal of Economics and Business, 33(2).
16. Prasad, S., Kiran, R., & Sharma, R. K. (2021). Influence of financial literacy on retail investors' decisions in relation to return, risk and market analysis. International Journal of Finance & Economics, 26(2), 2548-2559.
17. Raut, R. K. (2020). Past behaviour, financial literacy and investment decision-making process of individual investors. International Journal of Emerging Markets, 15(6), 1243-1263.
18. Sarkar, A. K., &Sahu, T. N. (2018). Investment behaviour: Towards an individual-centred financial policy in developing economies. Emerald Publishing Limited.
19. Singh, K. N., & Malik, S. (2022). An empirical analysis on household financial vulnerability in India: exploring the role of financial knowledge, impulsivity and money management skills. Managerial Finance, 48(9/10), 1391-1412.
20. Sivaramakrishnan, S., Srivastava, M., & Rastogi, A. (2017). Attitudinal factors, financial literacy, and stock market participation. International journal of bank marketing, 35(5), 818-841.

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Study of Ambient Air Quality in Rewa City (M.P.) in Reference of Respirable Suspended Particulate Matter (Rspm), Sulphur Di Oxide and Nitrogen Oxide.

Shrishti Singh* Dr. Atul Tiwari**

*Research Scholar (Environmental Biology) APS University, Rewa (M.P.) INDIA
** HOD (Environmental Biology) APS University, Rewa (M.P.) INDIA

Abstract : Air Pollution occurs due to the presence of undesirable solid or gaseous particles in the air in quantities that are harmful to human health and environment. Ambient air quality is known to be influenced by emission from the source, Meteorological condition and topography of the area. The concentration of particulate matter was found above the permissible limit in most of the sites while the concentration of gaseous pollutants was found within the permissible limit as per the standards given by Central Pollution Control Board (CPCB, 2009). Air pollution has been a steadily growing problem since the industrial revolution which started by the invention of technology that could use new source of energy. The sources were coal, oil and gases. This study was undertaken to asses the quality status ambient air pollutants SPM, RSPM, SO2 and NOx. The analysed values of SPM, RSPM, SO_2 and NOx at the sampling sites clearly illustrates that the ambient air of Rewa city is primarily deteriorated by particulate matters (SPM, RSPM) and least by gaseous pollutants (SO_2 and NOx). Concentrations of all the pollutants were found to be highest during winter season followed by summer and least during post monsoon season respectively.
Keywords- Ambient air quality, RSPM, SPM, SO2 and Nox.

Introduction - Air pollution is one of the severe problem world is facing today. Rapid urbanization, unregulated industrialization, growing transportation on poor road condition, metal plating and agricultural activities, construction debris, garbage burning, and population growth deteriorates the ambient air quality. (Mangalekar *et.al*.,2013, Tsang *et.al*.,2008, Chaurasia *et.al*.,2013, Sharma & Sharma 2016). Particulate matter and gaseous emissions of pollutant emission from industries and auto exhaust are responsible for rising discomfort, increasing airway diseases and deterioration of artistic and cultural patrimony in urban centers. Major components of air pollutants are dust and gases. The suspended dust in air is known as suspended particulate matter (SPM) and consists of solid and liquid particles emitted from numerous natural and manmade sources. About six thousands premature deaths annually were recorded alone in India due to polluted air (Kanwade *et.al*., 2020). As India is a developing country, the population density is higher, which contributes to higher intake fractions of PM (Apte *et.al*., 2012). In India, the dust pollutants contribute around 40% of total air pollution problems (Chauhan and Sanjeev 2008). Some workers have observed higher concentration of SO2 in the ambient air as compared to present investigation (Mukhopadhyay and Mukherjee 2013, Nandanwar *et.al*. 2014). Various researches have been carried out by Rani *et.al*., 2011; Chakrabarti and Mitra, 2014; Richhariya, 2015; Simbi *et.al*, 2017; Dwivedi and Tripathi, 2018 to evaluate the ambient air pollutants (SO2, NOx and SPM). Hasan *et.al*., (2018) observed that Nitrogen oxides has an important role in the formation of ozone in the atmosphere and sulphur dioxide is a highly reactive gas which affects the environment. Roadside dust by vehicular exhausts and various other anthropogenic activities contain considerable concentrations of particulates and gaseous pollutants. Present research work was undertaken to monitor the ambient air quality of Rewa city (M.P.).

Materials And Methods

Study Area: The present research work was undertaken in Rewa city, which is situated on the north-eastern part of Madhya Pradeshstate, central part of India.It lies between 24°18' and 25°12' north lattitute and 81°2' and 62°18' east longitudes. Rewa has a humid subtropical climate, with cold, misty winter, a hot summer and a humid monsoon season. The average temperature being around 30°C (86°F).The geographical area of Rewa district is 6,314 kilometers. Rewa district is bounded on east and south-east by Sidhi , on the south- east by Sidhi, on the south by Shahdol and on the west by Satna district, Rewa city is lies about 450 KM north-east of state capital Bhopal and 130 KM south of

Prayagraj city. Nearby Rewa city there mega cement plants and some small scale industries present, including a few stone crushers.

Sampling and Monitoring: Sampling and Monitoring of ambient air quality was carried out at three locations in Rewa city. These stations are residential, commercial and industrial area respectively. According to CPCB (Central Pollution Control Board) the method prescribed for the pollutant gases and the particulate pollutants are very sensitive ones yet percentage of errors are very less. Sampling was carried out at three different locations using Respirable Dust Sampler (Envirotech model APM 460 BL-411) for 8 hours in a day at an average flow rate of 1.5 LPM as per the standards of Central Pollution Control Board (India). Monitoring is carried out covering a period of six months from February 2024 to July 2024. Suspended particulate matters (SPM) and respirable suspended particulate matters (RSPM) were collected on the dust cup and glass fabric filter paper respectively. Samples for determination of gaseous pollutants (SO2 and NOx) were collected by bubbling air samples in Sodium tetra chloromercurate and Sodium hydroxide- Sodium arsenate absorbent solutions respectively in impingers at flow rate of 1.5 LPM. These samples were analyzed foe SO2 and NOx spectrophotometrically.

Result And Discussion

The detailed result of air quality monitoring are presented in Table 1 and 2.

The concentration of Respirable Suspended Particulate Matter (RSPM) in residential area (Niralanagar) was in the range of 68.18 to 98.32 µg/m^3. The concentratin of RSPM in commercial area (Shilpi Plaza) and industrial area (Naubasta) were observed in the range of 61.71 to 113.59 µg/m^3 and 78.89 to 115.83 µg/m^3 respectively. All the values were under the prescribed by National Ambient Air Quality Standards (NAAQS) of 100 µg/m^3 for residential/ commercial and industrial area respectively. (Fig.1).Similar study of seasonal variation in ambient particulate of Durg city was studied by Sharma and Parvej (2003) in six sampling sites. As well as Kushwaha *et.al*.,(2008), Salve *et.al*., (2006), Muneeswaran *et.al.,* (2003). The concentration of SO_2 in residential area (Niralanagar) was in the range of 21.02 – 23.55 µg/m^3. The concentration of SO_2 in commercial area (Shilpi Plaza) and Industrial Area (Naubasta) were found in the range of 22.32 to 24.92 µg/m^3 and 25.31 to 26.31 µg/m^3 respectively. All the values of SO_2 are within the prescribed limit of the NAAQS of 80 µg/ m^3 for residential, commercial and industrial area (Fig.1). Maurya (2005), Mondal *et.al*., (2007). The concentration of of NOx in residential area (Niralanagar) was found in the range of 34.19 to 35.13 µg/m^3. The concentrations of NOx in commercial area (Shilpi Plaza) and industrial area (Naubasta) were found in the range of 35.03 to 37.76 µg/ m^3 and 37.01 to 39.81 µg/m^3 respectively. All the values of NOX were within the prescribed standard by NAAQS of 80 µg/m^3 for residential, commercial and industrial area. Kushwaha (2008), Chaurasia and Kumar (2014).

The average concentration of RSPM, SO_2 and NOx in residential area (Niralanagar) was found in the range of 81.38, 21.76 & 35.12 µg/m^3 respectively. The average concentration of RSPM, SO_2 and NOx in commercial area (Shilpi Plaza) was observed in the range of 89.54, 22.79 & 36.11 µg/m^3 respectively. The average concentration of RSPM, SO_2 and NOx in industrial area (Naubasta) was found in the range of 92.77, 25.43 and 37.71 µg/m^3 respectively.

Table 1:- Concentration (µg/m^3) of RSPM, SO2 and NOx in different areas of Rewa city during the month of February – July, 2024).

Location	Month	RSPM	SO_2	NOx
	February	98.32	23.55	34.19
	March	89.39	22.5	35.49
Niralanagar (Residential Area)	April	86.62	21.28	35.32
	May	73.49	21.15	35.38
	June	72.29	21.09	35.22
	July	68.18	21.02	35.13
Average Concentration		81.38	21.76	35.12
Shilpi Plaza (Commercial Area)	February	113.59	24.92	37.76
	March	99.56	22.8	36.42
	April	93.45	22.33	36.12
	May	86.64	22.19	36.23
	June	82.31	22.23	35.11
	July	61.7	22.32	35.03
Average Concentration		89.54	22.79	36.11
Naubasta (Industrial Area)	February	115.83	26.31	39.81
	March	97.79	25.62	38.89
	April	94.18	25.22	36.32
	May	85.32	25.11	37.1
	June	84.63	25.04	37.09
	July	78.89	25.31	37.01
Average Concentration		92.77	25.43	37.70
NAAQS		100.00	80.00	80.00

Table 2 :- Average Concentration (µg/m^3) of RSPM, SO2 and NOx in different areas of Rewa city during month of February – July, 2024 and compared with prescribed National Ambient Air Quality Standards (NAAQS).

Location	Locations	RSPM	SO2	NOx
Residential	Niralanagar	81.38	21.76	35.12
Commercial	Shilpi Plaza	89.54	22.79	36.11
Industrial	Naubasta	92.77	25.43	37.7
	NAAQS	100.00	80.00	80.00

Fig 1:- Average Concentration (µg/m^3) of RSPM, SO2 and NOx in different areas of Rewa city during month of February – July, 2024 and compared with prescribed National Ambient Air Quality Standards (NAAQS).

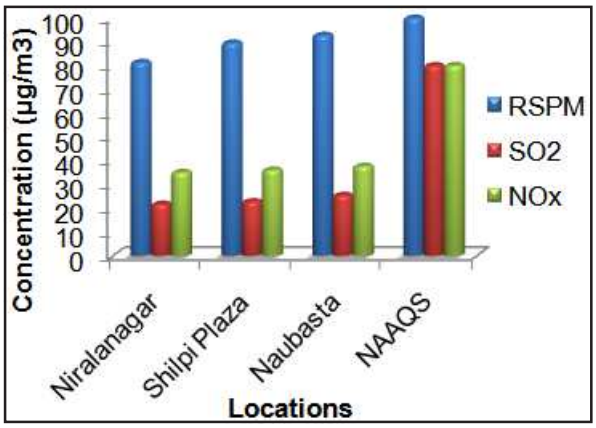

Result of the study of the Rewa city is similar with research for other cities of India as the concentration of particulate matter is also high in other cities. High particulate concentration is due to heavy transport activity in study area, apart from industrial emission, dust from paved roads, garbage burning in open, population density, congestion, weather, type of fuel and vehicle used, topography of a region and other domestic purposes. The study revealed that concentration of the pollutants in residential, commercial and industrial area showed little variations indicates that pollutants are well dispersed within the urban area. The major concern is the particulate matter which affects the human health. The effect of pollutant especially the particulate matter in urban area depends on several factors like number of concentration, size composition, time of exposure, and lastly the receptor (in case of humans these factors depend on age , health conditions etc.) thus is necessary to monitor the air quality as well as the health effects on regular interval strategic locations. All pollutants were observed to be high in concentration during winters as compared to summer and monsoon, due to slow dispersion and dilution of pollutants.

Conclusions: Monitoring of air pollutants such as RSPM, SO2 and NOx at 3 locations during six month of 2024 revealed that the concentrationof RSPM, SO2 and NOx at all the monitoring locations of residential, commercial and industrial were within the prescribed NAAQS at all the locations. It can be summarized that air pollution at the study site is primarily because of vehicular emissions by heavy traffic.

References:-

1. Apte, J. S., Bombrun, E., Marshall, J. D., & Nazaroff, W. W. (2012). Global intraurban intake fractions for primary air pollutants from vehicles and other distributed sources. *Environmental science & technology.;* 46(6):3415-3423.
2. Chauhan, A., and Sanjeev. (2008). Impact of dust pollution on photosynthetic pigments of some selected trees grown at nearby of stone crushers. *Environment Conservation* Journal, 9(3), 11-13.
3. Chaurasia, S., Dwivedi, P., Singh, R. and Gupta, A.D. 2013. Ambient Air Quality Status and air quality Index of Bhopal City (Madhya Pradesh). India.International Journal of Current Science 9: 96-101.
4. Chakrabarti N, Mitra AK, (2014) possible pollution threat to the green buffer zone around tajmahal IOSR J Environ SciToxicol and Food Tech 8: pp. 68-72.
5. Chaurasia, S. and Kumar, S., Assessment of air pollution emission from wonder cement Ltd., Nimbahera, Indian J. Environ. Prot., 34, (2014): 89-93
6. Dwivedi A. P., and Tripathi I. P.,, (2018) study on air quality data at various locations in three different areas of central india. International Journal of Academic and Applied Research (IJAAR).V (2):12-24
7. Hasan MM , Rabbi MA , Maitra B , Faruk O3, Sarwar M4 and Roy PK5, (2018) assessment of nitrogen oxides and sulphur dioxide content in the ambient air near the garments industries of bangladesh. Journal of Environmental and social sciences.V(5):1-4.
8. Kushwaha, S.K., Singh, R., Kushwaha, B.P., Pathak, V., Rai, O.P. and Dwivedi, R., A study of air quality and human health of certain villages of industrial area, Raigarh, Indian J. Environ. Prot., 28, (2008): 709-713
9. Maurya, A., Status of ambient air quality at Jabalpur city- A case study, Indian J. Environ. Prot., 25, (2005): 702-705
10. Mondal, G.C., Singh, A.K., Tewary, B.K., and Kamal, K.P., Assessment of air pollution in and around of Dhanbad Indian J. Environ. Prot., 27, (2007): 13-22
11. Muneeswaran, S., Jebamani, M.I.S, Rajesewaran, S., and Chandrasekharan,S., Assessment of ambient air quality status during May-December 2011 in Commercialized and urbanized zones of Coimbatore, Indian J. Environ. Prot., 33, (2013): 89-99
12. Mangalekar, S.B., Jadhav A.S. andRaut, P.D. 2014.Studies on Ambient Air Quality Status of Kolhapur City, Maharashtra, India Vol. 12, No. 3: pp. 15–22.
13. Mukhopadhyay, S. and Mukherjee, R. (2013).Assessment of ambient air quality of Purulia town, Purulia District, West Bengal, India Biolife, 1(4) : 189-94
14. Nandanwar, N.P., Dixit, A.K., Dixit, K.R., Wazalwar, S.S., (2014) comparative study of ambient air quality around chandrapur international journal of scientific engineering and technology 3(3): 267-275.
15. Rani B, Singh U, Maheshwari R (2011) Menace of Air Pollution Worldwide. AdvBiores 2: 1-22
16. RichhariyaNeelam, (2015) study of chemical turbulence in ambient air quality in Satna (MP) india international journal of pharmacy & life sciences, 6(2),4268-4271.
17. Salve, P.R., Maurya, A., Ramteke, D.S., and Wate, S.R., A study of air pollutants in Chandrapur, Indian J. Environ. Prot., 26, (2006): 742-747
18. Sharma, R., and Parvej, S., Study of seasonal variation in ambient particulate of Durg city. Indian J.Environ.

Prot., 23, (2003): 893-896.
19. Sharma, S .K. and Sharma, K., 2016. Ambient Air Quality Status of Jaipur City, Rajasthan, India. International Research Journal of Environment Sciences Vol. 5(1): 43- 48.
20. Simbi J, Opeolu BO, Olatunji OS, (2017) selected gaseous pollutants level in ambient air around the vicinity of chemical industry in kwekwe, zimbabweasian J Chem. 29: 1639-1645.
21. Tsang H., Kwok R., and Miguel, A.H. 2008. Pedestrian Exposure to Ultrafine Particles in Hong Kong under Heavy Traffic Conditions. Aerosol Air Quality Research 8: pp 19– 27.
22. Kanawade, V. P., Srivastava, A. K., Ram, K., Asmi, E., Vakkari, V., Soni, V. K., Varaprasad, C., & Sarangi, C. (2020). What caused severe air pollution episode of November 2016 in New Delhi?. *Atmospheric Environment.;* 222: 117125.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

सिंदूर पौधे का महत्व एवं उपयोगिता

डॉ. मनीषा दंडवते*

* सहायक प्राध्यापक (वनस्पति शास्त्र)भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – सिंदूर का पौधा उससे प्राप्त होने वाले प्राकृतिक रंग के लिये जाना जाता है। सिंदूर पौधे के बीज से प्राप्त रंग का उपयोग माँग में भरने वाले 'सिंदूर' में किया जाता है। साथ ही इसका उपयोग लिपिस्टिक एवं शरीर को रंगने वाले 'बॉडी-पेंट' या 'डाई' में किया जाता है। सिंदूर से प्राप्त प्राकृतिक रंग का उपयोग भोज्य पदार्थों में प्राकृतिक रंग लाने के लिये किया जाता है। भोज्य पदार्थों में प्रयुक्त रंग भोज्य पदार्थ के गुण एवं स्वाद में अंतर नहीं आने देता है। इसका उपयोग कुछ औषधियों में भी किया जाता है। सिंदूर का उपयोग प्रागैतिहासिक काल से मांग भरने के लिये किया जाता है। यह सुहागिनों के सोलह श्रृंगार में से एक है। स्त्रियाँ माँग में सिंदूर अपने पति के दीर्घायु होने एवं उसे बुरी नज़र से दूर रखने के लिये करती है। माँग में सिंदूर भरना हमारी वैदिक विवाह पद्धति की प्रमुख रस्म है।

इसके बीजों का पारंपरिक व्यंजनों में मसाले के रुप में भी उपयोग किया जाता है। विशेषकर दक्षिण अमेरिका, मैक्सिको और कैरेबियन में। बिक्सिन नामक वर्णक उत्पन्न करने वाला यह एकमात्र पौधा है।

शब्द कुंजी – प्राकृतिक रंग, बॉडी पेन्ट, सोलह श्रृंगार, दीर्घायु, सिंदूर, वैदिक विवाह पद्धति, मसाले।

प्रस्तावना – सिंदूर का पौधा एक औषधीय पौधा है, जिसका वानस्पतिक नाम Bixa orellana है एवं यह बिक्सेसी फैमिली का सदस्य है। यह पौधा सिंदूरी, कपीला, कमीला ट्री लैटिन में 'मालोटस फिलिपिनेसिस' नाम से प्रसिद्ध है। कई लोग इसे 'लिपिस्टक ट्री' भी कहते हैं क्योंकि इस पौधे के फल को लिपस्टिक का रंग बनाने में इस्तेमाल किया जाता है। इसका इंग्लिष नाम 'एन्नाटो' है। बिक्सा ओरेलाना जिसे 'एचिओट' के नाम से भी जाना जाता है। यह मध्य अमेरिका का एक झाड़ी या छोटा पेड़ है।

यह पौधा एनाट्टो के स्त्रोत के रूप में जाना जाता है, जो एक प्राकृतिक नारंगी-लाल मसाला (जिसे एचियोट या बिजोल भी कहा जाता है) जो इसके बीजों को ढँकने वाले नोमी एरिल से प्राप्त होता है। पिसे हुए बीजों का व्यापक रुप से मध्य और दक्षिण अमेरिका, मेक्सिको और कैरेबियन में पांरपारिक व्यंजनों में उपयोग किया जाता है।

एनाट्टो और इसके अर्क का उपयोग 'औद्योगिक खाद्य रंग' के रुप में कई उत्पादों जैसे मक्खन, पनीर, मार्जरीन, आइस्क्रीम, मीट और मसालों में पीले रंग के रुप में किया जाता है। उत्तर मध्य और दक्षिण अमेरिका के कुछ स्वदेशी लोगों ने मूलरुप से बीजों का उपयोग लाल बॉडी पेंट और लिपस्टिक बनाने के लिये किया था साथ ही मसालों के रुप में।

व्युत्पत्ति और सामान्य नाम – बिक्सा ओरेलाना ये नाम लिनियस द्वारा दिया गया।

बिक्सा जीनस का नाम आदिवासी 'ताइनो' शब्द से निकला है जबकि 'ओरेलाना' अमेजन खोजकर्ता फ्रांसिस्को डी ओरेलाना के सम्मान में रखा गया जो अमेजन नदी के शुरूआती खोजकर्ता थे। अचियोट झाड़ी के लिये नाहुआटल से निकला है। इसे एक्लोपस या इसके मूल 'टू पी' नाम उरुक या उरुकम (लाल रंग) के रुप में संदर्भित किया जा सकता है। इसे उपनाम 'लिपस्टिक ट्री' कॉस्मेटिक के रुप में डाई के उपयोग से लिया गया है।

उद्देश्य – इसका उद्देश्य सिंदूर के पौधे का प्रागैतिहासिक महत्व एवं इसकी उपयोगिता समझाने के साथ ही साथ आज आधुनिक युग में जहाँ सौंदर्य प्रसाधनों में हानिकारक रसायनों जैसे कि बाजार के सिंदूर में लाल रंग के लिये PbO_3 या लैड ऑक्साइड एवं सिनाबार का उपयोग किया जाता है। लिपिस्टिक में गंध एवं रंग के लिये प्रयुक्त किये जाने वाले रसायन हेयर डाई में प्रयुक्त विभिन्न हानिकारक सिंथेटिक रसायनों के स्थान पर प्राकृतिक सिंदूर पौधे के बीजों से प्राप्त रंग अधिक लाभप्रद है। खाद्य पदार्थों को रंगीन बनाने के लिये प्रयुक्त रासायनिक रंग इसे चटक रंग तो देते हैं परंतु ये वस्तु का स्वाद बदल देते हैं साथ ही त्वचा, जीभ इत्यादि के लिये भी नुकसानदायक होते हैं। अत: यदि हमारे प्राचीन ज्ञान का उपयोग हम करेंगे हमारे देश के पूर्वज (विशेषकर आदिवासी जनसमुदाय इस पौधे का उपयोग करते थे) जिन पेड़-पौधों का उपयोग करते थे वह स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के लिये उपयोगी थे उनका पुर्नउपयोग एवं उनकी उपयोगिता को फिर से पुर्नस्थापित करने की आवश्यकता है एवं यही इस शोध पत्र का उद्देश्य है।

विवरण – बिक्सा ओरेलाना एक झाड़ी के रुप में बारहमासी सदाबहार पेड़ है जो 6-10 मी. उँचा होता है इसमें 5 सेमी. (2 इंच) के चमकीले सफेद या गुलाबी फूलों के समूह होते हैं जो एक जंगली गुलाब के समान होते हैं जो शाखाओं के सिरे पर दिखाई देते हैं। 'बिक्सा ओरेलाना' के फल गोलाकार, अंडाकार कैप्सूल होते हैं जो गुच्छों में व्यवस्थित होते हैं, जो नरम काँटों से ढँके लाल-भूरे रंग के बीज की फली के समान होते हैं, प्रत्येक कैप्सूल या फली में 30-45 शंकु के आकार के बीज होते हैं जो पतले मोमी रक्त-लाल-अरील से ढँके होते हैं। पूरी तरह परिपक्व होने पर फली सूख जाती है तब सख्त हो जाती है। यह पौधा लाल-नारंगी एनट्टो वर्णक के स्त्रोत के रुप में सबसे अधिक जाना जाता है। यह वर्णक Bixa orellana के फल के Pericarp (बीजों को ढँकने वाली मोटी एरिल परत) से प्राप्त होता है। लाल-

नारंगी एनाट्टो रंग Caretenoid वर्णकों में समृद्ध होता है जिसमें 80% बिक्सिन (लाल वर्णक) और Norbixin या Oralin (पीला वर्णक) से बना होता है। एनाट्टो तेल में टोकोट्रिऑनॉल, बीटा कैरोटीन, आवश्यक तेल, संतृप्त और असंतृप्त फैटी एसिड फ्लेवेनॉइड और विटामिन सी होते हैं।

वितरण एवं उपयोग – बिक्सा ओरेलाना की सटीक उत्पत्ति अज्ञात है। यह उत्तरी दक्षिण अमेरिका और मध्य अमेरिका उष्णकटिबंधीय क्षेत्र का मूल निवासी है। यह मैक्सिको से लेकर इक्वाडोर, ब्राजील और बोलिविया तक जंगली क्षेत्र में पाया जाता है। यह एक आक्रामक प्रजाति है पर इसे दुनिया के कई क्षेत्रों में एशिया के उष्णकटीबंधीय क्षेत्रों जैसे भारत, श्रीलंका और जावा में मुख्य रुप से बीजों से प्राप्त होने वाली डाई के लिये उगाया जाता है, इसे बीज या कटिंग से लगाया जा सकता है।

सिंथेटिक रंगों ने उद्योग में क्रांति लाने से पहले बिक्सा ओरेलाना (बिक्सिन वर्णक उत्पन्न करने वाला एकमात्र पौधा है) को व्यवसायिक रुप से पहली बार लगाया गया। एनाट्टो पिगमेंट का वैश्विक आर्थिक महत्व है क्योंकि यह भोजन, सौंदर्य, प्रसाधन और दवा उत्पादों को रंगने के लिये व्यापक रुप से उपयोग होता है। खाद्य-पदार्थों में इसका रंग स्वाद को प्रभावित नहीं करता है और विशाक्त नहीं होता। इसका उपयोग मुख्य रुप से आइस्क्रिम, मीट, डेयरी उत्पाद (पनीर, मक्खन, मार्जरीन) और मसालों को रंगने के लिये एवं कॉस्मेटिक उत्पादों में हेयर कलरिंग (लाल रंग किसी विशिष्ट चरित्र को नाटक में, नृत्य में दिखाने में) नेल पॉलिश, साबुन और पेंट में।

पाक कला में – बिक्सा ओरेलाना के बीजों को तेल में गर्म करके उनका रंग निकाला जाता है। फिर उसका उपयोग पनीर, मक्खन, सूप, ग्रेवी, सॉस, मीट अन्य वस्तुओं व्यंजनों में एवं प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों में किया जाता है जो भोजन में एक सूक्ष्म स्वाद, सुगंध एवं पीला-लाल रंग प्रदान करते हैं। सैजोन नामक मसाला पैकेट में जीरा, धनिया, लहसुन के साथ बिक्सा ओरेलिना के बीज डाले जाते हैं जो कि स्पैनिश, लैटिन अमेरिकी, कैरेबियन व्यंजनों में उपयोग में आता है। एनाट्टो पिंगमेंट का उपयोग पीले चावल बनाने में, ब्लाफ मछली बनाने में या पोर्क स्टू में प्रयोग किया जाता है। निकारागुआ में एचिओट का आम उपयोग मसाला पेस्ट के रुप में होता है।

पारंपरिक उपयोग – बिक्सा ओरेलिना पौधे का सबसे पारंपरिक उपयोग विभिन्न जनजातियों और प्राचीन सभ्यताओं के बीच शरीर, चेहरे और बालों को रंगने के लिए या तो सजावटी उद्देश्यों के लिए या बुरी आत्माओं और बीमारियों को दूर भगाने के लिए शगुन के रुप में किया जाता था। इसका उपयोग ब्राजील की जनजातियों द्वारा किया जाता है। एज्टेक ने 16 वीं शताब्दी में 'पांडुलिपि' पेंटिंग के लिये लाल स्याही के रुप में एनाट्टो वर्णक का उपयोग किया था। सिंदूर को पारंपरिक रूप से चेहरे की सजावट के लिए उपयोग में लाया जाता है। सिंदूर एक लाल नारंगी रंग का सौंदर्य प्रसाधन होता है जिसे भारतीय उपमहाद्वीप में महिलाएँ प्रयोग करती है।

'बिक्सा ओरेलिना' का उपयोग पांरपरिक चिकित्सा में किया जाता है। इस पेड़ का उपयोग 'आयुर्वेद' में किया जाता है जो कि भारत की लोक चिकित्सा पद्धति है। जहाँ पौधे के विभिन्न भागों को चिकित्सा के रुप में उपयोगी माना जाता है।

सिंदूर का चलन प्राचीनकाल से जुड़ा है। हिंदू धर्म में सिंदूर को 'सौभाग्य' का प्रतीक माना जाता है। हिंदू धर्म में सिंदूर लगाने की परंपरा शादी के दिन से शुरु होती है। सिंदूर सोलह श्रृंगार का हिस्सा है। सिंदूर का इतिहास लगभग 5000 साल पुराना है इसका जिक्र पौराणिक कथाओं में भी किया है – देवी माता 'पार्वती' और मां 'सीता' भी सिंदूर से मांग भरती थी। मान्यता है कि माता 'पार्वती' अपने पति भोलेनाथजी को बुरी शक्तियों से बचाने के लिये सिंदूर लगाती थी। वहीं माता 'सीता' अपने पति प्रभु श्रीराम की लंबी उम्र की कामना के लिये मांग में सिंदूर लगाती थी एवं 'भगवान श्रीराम' को प्रसन्न करने के लिये 'हनुमानजी' ने अपने पूरे शरीर पर सिंदूर का लेप लगाया था इसलिये हनुमानजी की पूजा पर सिंदूर का लेप लगाया जाता है। इसलिये हनुमानजी की पूजा के दौरान सिंदूर का प्रयोग निश्चित रुप से होता है। इसके अलावा 'महाभारत' में द्रौपदी नफरत और निराशा में अपने माथे का सिंदूर पोंछ देती हैं। सिंदूर लगाने को लेकर एक ऐसी मान्यता है कि माँ लक्ष्मी का पृथ्वी पर पांच स्थानों पर वास है इनमें से एक स्थान सिर भी है ऐसे में महिलाएँ सुख-समृद्धि और लक्ष्मी की कृपा पाने के लिये मांग में सिंदूर लगाती हैं।

इस पौधे को रस्सी की चटाई बनाने के लिये तथा तने की रेषे एवं चिपकने वाले गोंद के लिये महत्व दिया जा रहा है।

रासायनिक सिंदूर एवं प्राकृतिक सिंदूर में अंतर यह है कि रासायनिक सिंदूर या वर्नीलियन का फॉर्मूला Pb_3O_4 यह लाल रंग का होता है और इसमें Lead को पीसकर मिलाया जाता है यह चटक लाल रंग देता है। सिनाबार भी कभी-कभी सिंदूर के रुप में लगाया जाता है जिसमें मरकरी पाया जाता है जो कि जहरीला होता है। सिंदूर को लाल करने के लिये सिनाबार का उपयोग भी किया जाता है किन्तु प्राकृतिक सिंदूर हानिरहित होता है।

नेपाल में भगवान की पूजा में सिंदूर का विशेष महत्व है। नेपाली हिंदुओं में विवाह के समय मांग में भरे जाने वाले सिंदूर की प्रथा है जिसे 'सिउन्दो' या 'सिन्दूर हाल्ने' कहते हैं जिसका अर्थ है कि लड़की ने 'जो मांग भरता है' उसे अपना 'जीवन साथी' मान लिया है। नेपाली संस्कृति में सिंदूर भरने की प्रथा बहुत पुरानी है, महिलाऐं अपने पति की दीर्घायु एवं सुरक्षा के लिये प्रतिदिन सिंदूर लगाती है। सिंदूर पौधे को पवित्र माना जाता है और विवाह के लिये वैदिक तिथियों को पालन करने वाले लोग सिंदूर पौधे से निकलने वाले प्राकृतिक रंग को इकट्ठा करने के लिये विवाह तिथि से एकत्रित होते हैं एवं पारंपरिक रूप से सिंदूर बनाते हैं। नेपाल में सीड पल्प का उपयोग तेल को रंग देने में, बटर को रंग देने एवं कपड़ों को रंगने के लिए किया जाता है एवं सौंदर्य प्रसाधन में हाथों को रंगने के लिये किया जाता है।

सिंदूर के फल भूरे रंग के होने से पहले इकट्ठा करके, इनके Spilt होने पर बीज इकट्ठा करते हैं उन्हें सुखाकर साफकर सिंदूर बनाया जाता है। नेपाली विवाह में नववधू को सिंदूर बॉक्स (सिंदूर को बट्टा) दिया जाता है।

भारतीय औषधीय शास्त्र विशेषकर आयुर्वेद के अनुसार Bixa Orellena की कड़वी, ठंडी, भूरी छाल का उपयोग रक्त संबंधी बीमारियों में, सरदर्द, बुखार में किया जाता है पत्तियों का उपयोग रक्त शोधन में इसके बीजों से बना पेस्ट मच्छरों को दूर रखता है। यह एक बहुउपयोगी पौधा है जिसकी पत्ती, बीज, छाल, जड़ सभी औषधीय, खाने योग्य एवं फूड कलर के रुप में उपयोगी है। एन्नाटों बीज से रंग निकालने के पश्चात् इसका उपयोग पशुओं के चारे के रुप में किया जाता है जो कि कार्बोहाइड्रेट्स एवं प्रोटीन से भरपूर होता है।

निष्कर्ष – सिंदूर का पौधा जिसका वानस्पतिक नाम 'बिक्सा ओरेलाना' है। इस पौधे के बीज से न केवल प्राकृतिक रंग निकाला जाता है जिसका उपयोग माँग में भरने वाले 'सिंदूर' में किया जाता है बल्कि इस प्राकृतिक

रंग का उपयोग डाई, लिपिस्टिक तथा भोज्य पदार्थों में किया जाता है। बिक्सा ओरेलाना से प्राप्त लाल-नारंगी एन्नाटो रंग Caretenoids से समृद्ध होता है जिसमें बिक्सिन (लाल वर्णक) एवं नॉरबिस्किन या Oralin (पीला वर्णक) से बना होता है। एनाट्टो तेल में टोकोट्रिऑनॉल, बीटा कैरोटिन, आवश्यक तेल, संतृप्त एवं असंतृप्त फैटी एसिड फ्लेवेनॉइड एवं विटामिन सी पाया जाता हैं इस प्रकार से पौधे से प्राप्त प्राकृतिक रंग का औद्योगिक उत्पादन किया जा सकता है जिससे प्राकृतिक रंगों का उपयोग बढेगा जो हमारी प्रकृति एवं पर्यावरण को बचाएगा। इस पेड़ का उपयोग हमारी भारतीय परंपराओं में प्रागैतिहासिक काल से किया जाता रहा है इसके चिकित्सकीय उपयोग भी ज्ञात हैं। इस पौधे की छाल, बीज, पत्ती सभी औषधीय गुण रखते हैं अत: इस पौधे को ज्यादा से ज्यादा लगाना एवं संरक्षित करना आवश्यक है।

हमारी प्राचीन संस्कृति मान्यताओं एवं रीति-रिवाजों को संरक्षित करना, उन्हें अगली पीढ़ी तक पहुँचाना हमारे रीति-रिवाजों में जो मूल भावनाएँ छिपी हैं उन्हें समाज में पुर्नस्थापित करने के उद्देश्य से सिंदूर के पौधे का महत्व एवं उपयोगिता समझना आवश्यक है।

सुझाव – संधारणीय विकास लक्ष्य SDG Goals (2015) जो कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा बनाए गए और इन्हें वैश्विक लक्ष्यों के रुप में प्रचारित किया गया जिसके अंतर्गत भूमि के संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करना, पानी बचाना आदि आते हैं। हमारे प्रागैतिहासिक वृक्षों जैसे सिंदूर के पौधे से प्राप्त डाइ का उपयोग न केवल हमारे बाल स्वास्थ्य के लिये अच्छा है। यह बाल धोने के लिये प्रयुक्त पानी (बाल रंगने के लिये रासायनिक रंगों के प्रयोग से बाल धोने के लिये पानी की आवश्यकता ज्यादा होती है) को कम करेगा बल्कि रासायनिक रंगों में प्रयुक्त रसायन हमारे पानी के स्त्रोतों में पहुँचकर उन्हें भी प्रदूषित करते हैं जिससे हमारा जलीय जीवन भी प्रभावित होता है अत: इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति के लिये 'बिक्सा ओरेलाना' से प्राप्त प्राकृतिक रंग उपयोगी हैं इसका ज्यादा से ज्यादा प्रचार होना चाहिये।

फूड कलर्स या भोज्य पदार्थों में प्रयुक्त रंग जिसमें रसायनों का उपयोग होता है वे न केवल हमार पाचन तंत्र पर प्रभाव डालते हैं बल्कि कई बार वे हानिकारक प्रभाव उत्पन्न कर भोजन को विशाक्त कर देते हैं।

अत: प्राकृतिक रंगों का उपयोग खाद्य सुरक्षा के लिये भी आवश्यक है। इस पौधे के बीज एवम् पत्ती से प्राप्त चारे में प्रोटीन कार्बोहाइड्रेट प्रचुर मात्रा में पाए जाने के कारण ये प्राकृतिक स्त्रोत के रूप में उपयोगी एवं हमारे पर्यावरण के लिये सुरक्षित है इसलिये इनका अधिक से अधिक उपयोग अनिवार्य है। सौंदर्य प्रसाधनों का उपयोग भी आधुनिक युग की आवश्यकता है परंतु इनमें यदि प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाए तो ये स्वास्थ्य एवं पर्यावरण दोनों के लिये सुरक्षित होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. व्हीलर, एल, बीच, ई (2019) 'बिक्सा ओरेलिना IUCN रेड लिस्ट ऑफ थ्रेटर्ड स्पीसीज 2019'
2. लेवी, लुईस डब्लू, रेवाडेनेरा, डायना एम (2000) एनाट्टो - लॉरो, ग्रेब्रियल जे, फ्रांसिस एफ जैन - प्राकृतिक खाद्य रंग, विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी IFT बेसिक सिम्पोजियम सीरिज न्यूयॉर्क मार्सेल डेकर पेज नं. 115 ISBN 978-0-8247-0421-6
3. बिक्सा ओरेलाना (लिपस्टिक ट्री) के लिये पौधे की प्रोफाइल (पौधों का डाटाबेस, अमेरिकी कृषि विभाग) 2019
4. बोवियर, फ्लोरेंस, डोगबो, ओडेट, कैमारा, बिलाल (2003) 'खाद्य और कॉस्मेटिक प्लांट पिगमेंट बिक्सिन का (एनाट्टो) जैव संश्लेषण'
5. ओचिओट : वह मसाला जो भोजन को पीला रंग देता है द स्प्रूसईटस (2019)
6. खरे, सी.पी. (2007) भारतीय औषधीय पौधे न्यूयॉर्क : स्प्रिंगर साइंस + बिजनैस मीडिया एलएलसी : ISBN 978-0-387-70638-2

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Status, Cause and Resurrection of Rare, Endangered and Threatened Forest Tree species of Madhya Pradesh

Dr. Dinesh Kumar Dahare*

***Assistant Professor (Botany) PMCoE, BKSN Govt. P.G. College, Shajapur (M.P.) INDIA**

Abstract : Present work deals with the current status of RET forest tree species of Madhya Pradesh in relation to their conservation strategies.Out of 260 tree species present in forest40 speciesfrom 24families reported as various categories of IUCN criteria of RET tree species. Due to their unsustainable utilization these species are now limited in forest area and remainvery few in number. Forest department took initiative to conserve these species and raise saplings of 30 RET tree species in 11research and extension circlenurseries throughout the Madhya Pradesh. Forest department alsoplanted 10% of RET species in each plantation programme as mandate so that these tree species cover will be increase and restore naturally.
Keywords: Conservation, criteria, saplings, strategies,unsustainable.

Introduction - Madhya Pradesh has the largest forest cover in the countrywith more than 260 tree speciesreported in forest,villages and urban settlements areas.The forest types of Madhya Pradesh are mainly montane subtropical, tropical moist deciduous, tropical dry deciduous and dry deciduous scrub forest (Champion, H. G. & S.K. Seth, 1968).The region has different types of landscapes valley, plains, plateau and hilly terrains which provide the diversity for tree species.The climate of the area is typical monsoonic with cool dry winter and warm moist summer. The Soil of the area is sandy loam to black cotton soil. In terms of forest canopy according to density classes, Madhya Pradesh has 6676.02 square km under very dense forest (2.17% of the geographical area), 34,341.40 square km under moderately dense forest (11.14% of geographical area) and 36,465.07 square km (11.83% of geographical area of the state) under open forest, as per Forest Survey of India (FSI) report 2011.

In recent past overall forest cover increase marginally due to inclusion of area under tree outside forest, but the dense forest cover reduces in Madhya Pradesh.However, due to unsustainable and species-specific utilization of plant resourcesfor various purposes like timber, food, forage, medicinal use and poor regeneration, some majortree species wererecognisedunder IUCN categories (2001), such as critically endangered, endangered, vulnerable and near threatenedin forest area of Madhya Pradesh.For their restoration and conservation Forest Department raise saplings of these RET tree species in different research and extension nurseries of Madhya Pradesh and planted as ex-situ and in situ conservation practice in different forest area, parks and other placesfor their resurrection.

Current status of RET tree species: At present 40tree species belonging to 24 families are reported under various categories of IUCN (K.K.Khanna et.al,2021). Such as 2 species critically endangeredSalyakarni(*Dilleniapentagyna*) and Maida(*Litseaglutinosa*), 6 species as endangered Dahiman (*Cordia macleodii*), Sonpatha (*Oroxylum indicum*),Agnimanth (*Premnamollissima*), Garudphal (*Radermacheraxylocarpa*), Lodhra (*Symplocosrecemosa*) and Charaigoda (*Vitex penducularis*).

11 species as VulnerableKumbhi (*Careya arborea*), Gabdi (*Cochlospermumreligiosum*), Varuna (*Crateva religiosa*), Kala Sheesham (*Dalbergia latifolia*), Kekad (*Garuga pinnata*),Bijasal (*Pterocarpus marsupium*), Rohina (*Soymidafebrifuga*),Kullu (*Sterculia urens*), Padar (*Stereospermum suaveolens*), Nirmali (*Strychnou-spotatorum*), Dudhi (*Wrightia tinctoria*)and 21 species as near threatenedHaldu (*Adina cardifolia),*Khair (*Acacia catechu*), Dhawa (*Anogeissus latifolia*), Salai (*Boswellia serrata*), Achar (*Buchananialanzan*), Kharhar (*Ceriscoide-sturgida*), Tamoli(*Dolichandronefalcata*), Gadhapalash (*Erythrina suberosa*), Kuwarin (*Firmianacolorata),* Dhamin (*Grewia tiliifolia*), Anjan (*Hardwickiabinata*), Bhurkut (*Hymenodictiyonorixense*), Tinsa (*Ougeiniadelbergioides*), Peelu (*Salvadora oleoides*), Kusum (*Scheichera oleosa*), Mokha (*Schreberaswietenioides*), Bhilma (*Semecarpus anacardium*), Khatamb(*Spondias pinnata*), Bherar (*Tamilnadiauliginiosa*), Harra (*Terminalia chebula*) and Tilwan (*Wendlendiaheynei*).Critically endangered and endangered tree species are remained in few patches in forest areaalso vulnerable and near threatened species has very poor status in forestarea of Madhya Pradesh. Some

species like *Dalbergia latifolia, Buchananialanzan, Adina cardifolia*are produced and planted in good number and their status is now improving but other tree species in not fairly grown as much as required for their restoration. Out of 40 reported RET tree species 10 tree species still not grown in any nursery and is of much concern that how it will be conserved or restored.

Causes of the current status of RET tree species: The main reason for current status of Rare, Endangered and Threatenedtree species is unsustainable utilization of plant resources by local peoples.The depletion in forest coveris due to population reduction of trees and overexploitation of tree for various purpose of plant part or whole plant. Habitat loss or habitat fragmentation byencroachmentof forest areafor agriculture purpose and other activity also threatens locally available tree species, overgrazingin forest area affect the regeneration of some sensitive species because new saplings are grazed by animals or destruct by their movement in forest.Also, poor regeneration, false seeding, less germination, survival of saplings and natural barriers of germination affect the status of these RET tree species.

Destruction of forest,clearing and cutting of large number of trees for various development projects such as Roads,Dams, Power plants, Industry setup etc largely affect the specific species of any area, Over utilization of some local available plants for firewood, daily use and earning without knowing their status of regeneration, whole plant felling for any plant part, leaf or fruit collection by local people, overutilization of medicinal important RET species alsoincrease in pollution and failure of pollination due to unavailability of those plants which required for pollinators attractions. Natural calamities such as flood, drought, land slide and fire also affect these tree species.The status of RET tree species will further become critical if appropriate conservation plans are not applied.

Resurrectionstrategies for RET tree species: All these RET tree species have unique quality of utilization purpose such asBijasal, used to cure diabetes in ayurveda,having very good timberquality like teak, alsoused for fodder,Tinsa, used to improve womenfertility in local tradition,Salai, producing medicinally important resin and gum; Dahiman, utilized to cure high blood pressure in etnomedicine. Critically endangered Dahiman tree reporting some cancer-curing properties.Kala sheesham tree is used as fodder, medicines, best quality furniture and musical instruments. Lodhra, Padar and Sonpatha also utilize as medicines.

In order to revive the RET tree species, the forest department is producing saplings of these species in 11 research and extension circle nurseries of state with the special treatment they needfor their survival and priority with locally available species. Providing special facilities for better germination and success ratio for overcome the barriers. Polyhouse, mist chamber, green shade net house, sprinklers, moisture controller, automation of temperature, humidity and other facilities arranged forcontrolled condition for germination, proper growth and survival of these RET tree species. Also, some tree species are produced with the help of plant tissue culture technique in SFRI and plantlets then provides to ResearchandExtensionnurseries for further distribution in different region of Madhya Pradesh. At present forest department raised47.93 lakh saplings of 30 RET tree species in various nursery of 11 research and extension circles of Madhya Pradesh forest department (Table.1). Saplings of RET tree species, which are used as lifesaving and medicine, are also the source of income of villagers and forest dwellers. Forest department mandatory plant 10 % of RET tree species in every plantation programme also RET special plantation planned to resurrect the tree species in forest area. Plants of RET species can be purchased by locals from the nurseries of the forest department at very nominal rates so that these species will be planted outside the forest for ex-situ conservation.But still 10 RET tree speciesAgnimanth (*Premnamollissima*) ,Lodhra (*Symplocosrecemosa*),Charaigoda (*Vitex penducularis*),Varuna (*Crateva religiosa*),Kharhar (*Ceriscoidesturgida*), Kuwarin (*Firmianacolorata*), Peelu (*Salvadora oleoides*),Khatamb (*Spondias pinnata*), Bherar (*Tamilnadiauliginiosa*), Tilwan (*Wendlendiaheynei)*saplings are not available and forest department need to produce those species saplings so that the status of these RET tree species could be improve.

Table (see in next page)

References:-

1. Champion, H.G. & S.K. Seth. 1968. A revised survey of the forest type of India. Govt. of India Publications, New Delhi.
2. https://mpforest.gov.in/publicdomain/NMIS/RptCirWise.aspx
3. http://www.indiaenvironmentportal.org.in/content/347677/india-state-of-forest-report-2011/
4. IUCN (2001). IUCN red list categories and criteria (version 3.1) https://iucn-csg.org/red-list-categories.
5. K.K. Khanna, P. Dubey, A.P. Tiwari, R.L.S. Sikarwar (2021). Studies on threat status of tree species of Madhya Pradesh. Indian forester, 147(2) 137-140. 2021, ISSN-0019-4816.

Table 1: Availability of RET tree species Saplings at various R&E Circles of Madhya Pradesh

S.	Species Name	Research and Extension Circle Name and Quantityof available plants (March 2025)										
		Indore	Khandwa	Gwalior	Jabalpur	Jhabua	Betul	Bhopal	Ratlam	Rewa	Sagar	Seoni
1	*Acacia catechu*	18752	16862	631510	11500	54563	485	14844	46822	29486	16561	1765
2	*Adina cordifolia*	0	1570	0	9398	33534	0	79298	0	4578	29152	3850
3	*Anogeissus latifolia*	0	0	0	280	0	0	4785	0	8431	800	0
4	*Boswellia serrata*	12194	1421	222695	5000	12000	15	0	10000	17214	2000	0
5	*Buchnanialanzan*	7533	3496	0	7549	4475	1535	18393	200	167197	10302	8975
6	*Careya arborea*	0	0	0	1437	0	2639	61145	0	1914	6736	0
7	*Cochlospermum -religiosum*	0	0	0	3620	0	0	17414	0	0	700	0
8	*Cordia macleodii*	6619	0	0	3101	0	0	0	0	11708	416	0
9	*Dalbergia latifolia*	9358	7142	15367	198251	74970	14127	180138	30307	59380	470930	114222
10	*Dilleniapentagyna*	0	0	0	0	0	0	0	0	860	0	0
11	*Dolichondre falcata*	0	0	0	0	100	0	0	0	0	0	0
12	*Erythrina suberosa*	216	1200	1546	822	7810	0	1000	2100	1200	0	0
13	*Garuga pinnata*	0	0	0	1000	0	0	311	0	0	6070	0
14	*Grewia tiliifolia*	0	0	0	0	0	0	0	0	0	19026	0
15	*Hardwickiabinnata*	11256	9298	3900	7150	17970	25	26322	6335	0	20370	500
16	*Hymenodictiyon -orixence*	0	0	0	0	0	0	0	0	5416	0	0
17	*Litseaglutinosa*	0	0	0	460	0	0	0	0	6800	1165	0
18	*Oroxylum indicum*	0	440	0	16747	0	5	6105	0	9345	8388	190
19	*Ougeiniaoojeinense*	5514	2538	1200	71310	24280	1298	159202	0	3800	144964	18209
20	*Pterocarpus marsupium*	6460	2255	2842	18738	14009	194	54384	1200	4980	34298	16478
21	*Radermachera xylocarpa*	110	1183	0	33049	0	5	5739	0	5434	1934	0
22	*Schereberasw -eitenioides*	0	0	0	1000	0	0	0	0	0	0	0
23	*Scleichera oleosa*	26511	2981	19599	2822	20870	3345	174430	14331	25888	36800	34131
24	*Semecarpus anacardium*	1083	660	3100	18565	1000	90	7857	0	526	48650	119781
25	*Soymidafabrifuga*	0	0	0	1020	2900	0	0	0	1900	5600	0
26	*Sterculia urens*	1651	6701	1521	4091	30802	50	14444	500	3559	4863	345
27	*Stereospermum -chelonoides*	0	346	0	3701	0	0	200	0	10750	15523	549
28	*Strychnous potatorum*	0	0	0	66	0	0	0	0	3000	5000	0
29	*Terminalia chebula*	9320	2354	18460	138559	9935	12611	97198	2450	36301	49648	55156
30	*Wrightia tinctoria*	0	1850	0	1880	300	0	13084	0	1200	150	0
	Total	**4793274**										

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Effect of Yoga as a Relaxation Technique on Sleep quality among School Students Appearing Board Exam

Ms. Sushruta Sahu* Dr. Varsha Sharma**

*Research Scholar (Psychology) UCSSH, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur (Raj.) INDIA
** Assistant Professor (Psychology) UCSSH, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur (Raj.) INDIA

Abstract : Yoga works as a relaxation technique to reduce stress, anxiety and enhances sleep quality and wellbeing.Yoga regulates sleep cycle which helps to manage emotional and cognitive functioning.Most of the students suffer from mental health issues specially who are appearing board exams due stress and pressure of exams, marks, future career and expectations for higher marks in board exams from others. Surya namaskar has been found in reducing stress, anxiety and insomnia. The major aim of the study was to understand the effect of yoga as a relaxation technique on sleep quality of students appearing board exam. 42 students who were appearing board exam and scored high in poor sleep quality selected for the study. Results found significant effect of yoga as a relaxation technique on poor sleep quality among school students appearing board exam both male and female. Surya namaskar is helpful for increasing poor sleep quality.
Keywords: Sleep quality, yoga, relaxation technique, school students.

Introduction - Yoga helps to balance between mind and body which recognized in ancient time. Today people are not giving much importance to yoga practices while yoga gives healthy life. Individuals who practice yoga could reach the higher psychological wellbeing and increase sleep quality. Yoga affects sleep quality of individuals for satisfactory and restful sleep.

Yoga works as a relaxation technique to reduce stress, anxiety and enhances sleep quality and wellbeing. Yoga works on both physical and mental health. It is holistic approach of mind and body to get overall fitness. Yoga regulates sleep cycle which helps to manage emotional and cognitive functioning.

Here are some major impacts of yoga:

1. Increases wellbeing and decreases mental stress
2. Helps in decision making
3. Physical health and strength
4. Helps in attention and concentration
5. Decreases mood disturbances
6. Reduces poor sleep quality

Sleep quality is different from sleep quantity. Sleep quantity is about the duration of sleep, how much time a person sleeps but sleep quality is about how well or satisfactory a person sleeps in during the duration. Good sleep quality is a level of satisfaction individuals feel next morning and poor sleep quality is a level of dissatisfaction individuals report next morning.

School students who are appearing board exams are adolescents. Adolescents is the period of physical, emotional, psychological and social changes occurs. These changes affects an individuals' overall wellbeing which leads to lower sleep quality. They depend on substance abuse for releasing stress and restful sleep.

Most of the students suffer from mental health issues specially who are appearing board exams due stress and pressure of exams, marks, future career and expectations for higher marks in board exams from others. These issues are not focused and treated by students and family and teachers also. Academic stress impacts students' mental health which can lead to impact academic performance. These can increase the difficulties to concentrate, learning and sleep. Yoga is a relaxation technique specially Surya namasakar which includes 12 asanas that impacts full body and mind. Surya namaskar works on mind and body which gives satisfaction and relaxation. When mind and body is relaxed and stress free person gets more satisfactory sleep. Yoga regulates sleep pattern and manage stressful life.

Surya namaskar has been found in reducing stress, anxiety and insomnia. Yoga with breathing exercises treats headache, body pain, digestion issue and mental issues such as depression, stress, aggression and sleep disorder. Yoga can release exam stress, reduce poor sleep quality and increase attention & concentration in study.

Review of literature

Yoga exercises in daily life help to reduce poor sleep quality and there is a significant effect of long term yoga practices on sleep quality (Banker, M. et al. 2013).

Yoga techniques and regular practices can reduce anxiety

and enhance sleep quality with encouragement to do yoga on regular basis (Lucas, 2024).

Research Objective: This study aim to understand the effect of yoga as a relaxation technique on sleep quality of students appearing board exam.

Research Hypothesis:There will be significant effect of yoga as a relaxation technique on sleep quality of students appearing board exam.

Methodology: Pre and posttest used to find the impact of yoga as a relaxation technique on sleep quality of students who were appearing in board exam.

Participants:A purposive sampling method used to select 42 students who were appearing board exam and who were scored high in poor sleep quality.18 female and 24 male students were involved in the study.

Procedure:A government school's students selected from 10th class and consent was taken from all the participants. Students were given sleep quality scale to measure the level of sleep quality. 42 students were selected who had poor sleep quality and were given Surya namaskar as a relaxation technique. In posttest sleep quality scale were given again to measure post relaxation technique sleep quality scores.

Result & Discussion:

Hypothesis: There will be significant effect of yoga as a relaxation technique on sleep quality of students appearing board exam.

Table 1: Descriptive statistics of pre and posttest scores for both male and female

Descriptive Statistics

	SQ Score pre relaxation technique		SQ score post relaxation technique	
	Girls	Boys	Girls	Boys
N	18	24	18	24
Missing	0	0	0	0
Mean	58.278	57.958	23.556	20.792
Std. Deviation	7.660	6.805	5.575	5.649
Coefficient of variation	0.131	0.117	0.237	0.272
Minimum	44.000	44.000	11.000	11.000
Maximum	70.000	67.000	31.000	30.000

Figure 1: Graphical representation of pre and post test scores for both male and female

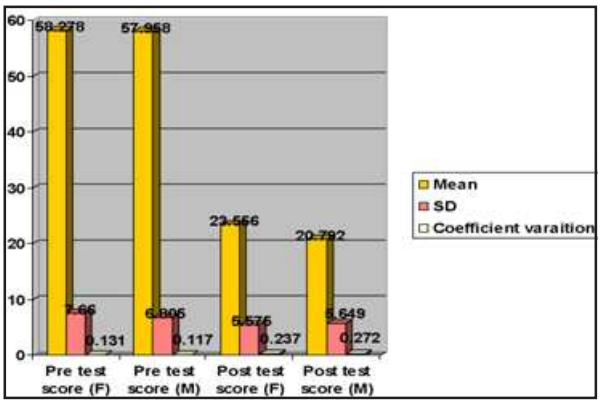

Descriptive statistics showing the mean score of girls (58.278) was higher compared to mean score of boys (57.958) in pre-test. In post sleep quality score, mean (23.556) was higher for girls (20.792) compared to boys students. Standard deviation for pre-test is 7.660 for girls and 6.805 for boys showing higher variability in sleep quality scores of girls. Standard deviation for posttest is 5.575 for girls and 5.649 for busy which is showing similar variability. Coefficient of variation is 0.131 for girls and 0.117 for boys in pre-test while 0.237 girls and 0.272 for boys in post test scores suggesting higher relative variance in boys compared to girls in pre-test and higher relative variance in girls compared to boys in posttest.

Results are indicating higher mean score for girls in both pre and post test sleep quality scores which is showing higher poor sleep quality scores of girls' students in both pre and post test. Standard deviation and coefficient of variation is suggesting higher variability in higher for girls in pre-test and higher for boys in post test and the results are not likely to random chance.

Table 2: t test for poor sleep quality of pre and post test

Paired Samples T-Test

Pre test	Post-test	t	df	p
SQ Score pre relaxation technique	SQ score post relaxation technique	31.837	41	< .001

Note. Student's t-test.

Results are showing significant effect of yoga relaxation technique on sleep quality among students appearing board exam. P value is <0.001 which is less than the threshold of 0.05 which is showing significant effect. Findings indicating that Surya namaskar can reduce poor sleep quality and enhances wellbeing of students.

Conclusion: Mental wellbeing is very important for students and lack of sleep can affect the wellbeing. Better sleep is a major thing to increase wellbeing in students. Results found significant effect of yoga as a relaxation technique on poor sleep quality among school students appearing board exam both male and female. Surya namaskar is helpful for increasing poor sleep quality. Students who are appearing board exam suffer from too much stress and anxiety for exams which affect sleep quality and overall mental health. Sleep quality need to be focused and treated specially in students.

Recommendation:

1. Gender dynamics can be measure in further studies for measure gender difference of yoga relaxation technique.
2. Yoga as a relaxation technique could use in schools for enhancing the wellbeing and decreasing poor sleep quality.

References:-

1. Bankar, M. A., Chaudhari, S. K., &Chaudhari, K. D. (2013). Impact of long term Yoga practice on sleep

quality and quality of life in the elderly. Journal of Ayurveda and integrative medicine, 4(1), 28–32. https://doi.org/10.4103/0975-9476.109548

2. Importance of Yoga for Students in Their Development - The Blue Bells School. (n.d.). Retrieved June 19, 2024, from https://thebluebells.org/blogs/importance-of-yoga-for-students-in-their-development/
3. Lucas Mullins, Larisa, "The Effects of Yoga on Anxiety and Sleep Quality Levels Among College Students" (2024). DNP Projects. 470. https://uknowledge.uky.edu/dnp_etds/470
4. MEA | Search Result. (n.d.). Retrieved June 19, 2024, from https://www.mea.gov.in/search-result.htm?25096/Yoga:_su_origen,_historia_y_desarrollo
5. Mental health of adolescents. (n.d.). Retrieved June 19, 2024, from https://www.who.int/news-room/fact-sheets/detail/adolescent-mental-health
6. Progressive Muscle Relaxation (PMR) Technique for Stress & Insomnia. (n.d.). Retrieved June 19, 2024, from https://www.webmd.com/sleep-disorders/muscle-relaxation-for-stress-insomnia
7. Relaxation techniques: Try these steps to lower stress - Mayo Clinic. (n.d.). Retrieved June 19, 2024, from https://www.mayoclinic.org/healthy-lifestyle/stress-management/in-depth/relaxation-technique/art-20045368
8. Why Mental Health is Important for Students — McMillen Health. (n.d.). Retrieved June 19, 2024, from https://www.mcmillenhealth.org/tamtalks/student-mental-health

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

प्राचीन भारतीय प्रतिरक्षा एवं सैन्य संगठन व युद्ध में नैतिक नियमों की उपयोगिता वर्तमान संदर्भ में

डॉ. जे.के.संत*

* सहायक प्राध्यापक (राजनीतिशास्त्र) शासकीय तुलसी महाविद्यालय, अनूपपुर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – रणक्षेत्र में युद्ध किस प्रकार करना चाहिए इस विषय में मनु ने व्यवस्था दी है –राजा को रणस्थल में चाहिए कि वह सेना को टोलियों अथवा जत्थों में आवश्यकता अनुसार विभाजित कर दें। इन जत्थों के अलग–अलग नायकों को नियुक्त उन्हें विभिन्न दिशाओं में स्थापित कर देना चाहिए। इन टोलियों के अलग–अलग नाम रख देना चाहिए जिससे कि उन्हें सुविध पूर्वक संबोधित किया जा सके और युद्ध के लिए आदेश दिया जा सके। यदि सेना अल्प हो तो सेहत युद्ध करना चाहिए और यदि विशाल हो तो उन्हें फैल –फुटकर युद्ध करने का आदेश देना चाहिए। मनु ने व्यूह रचना करके युद्ध करना श्रेयस्कर माना है।(महाभारत में पांडव कौरव के बीच व्यूह रचना करके ही युद्ध में अभिमन्यु को मारा गया था) इसीलिए उनके निर्देश है कि समय और परिस्थिति के अनुसार सूची या वज्र व्यूह बनाकर रणस्थल में युद्ध करना चाहिए। कुशलता पूर्वक युद्ध के लिए इन व्यहों की रचना का समर्थन महाभारत कार, कौटिल्य, कामन्दक आदि के ग्रंथों में भी किया गया है।[1]

युद्ध संचालन के विषय में मनु का आगे कथन है की समभूमि में रथारोहियों तथा अश्वारोहियों से पानी युक्त स्थानों पर नागारोहियों अथवा नौकारोहियों से और वृक्षों,झाड़ियों एवं कंटक वाले स्थलों में धनुर्धारियों एवं खंगचर्मधारण करने वाले सैनिकों को युद्ध में लगाना चाहिए। [2]

मानव धर्मशास्त्रकार ने अपने समय में कुछ ऐसे भू–भागों के नाम भी दिए हैं जहां के सैनिक विशेष कर वीर पुरुष माने जाते हैं। यह भूभाग कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पांचाल और शुरसेन है। मनु यह आदेश देते हैं कि इस भूभाग में उत्पन्न योद्धाओं को सेना के अग्रभाग में रखना चाहिए। इन योद्धाओं को उत्साहित करते रहना चाहिए। इनकी हर समय जांच करते रहना चाहिए और इनकी चेष्ठाओं से परिस्थिति का बोध करते रहना चाहिए। इस प्रकार युद्ध संचालन के विषय में धर्मशास्त्र कारों के विचार महत्वपूर्ण है और जिनके व्यावहारिक रूप से आज भी इनकार नहीं किया जा सकता है।

शत्रु को निर्बल बनाने की नीति–शत्रु को निर्बल बनाने के लिए कर्षण एवं उत्पीड़न की नीति का आश्रय लेना चाहिए। इस विषय में मनु का कथन है कि शत्रु के राष्ट्र को घेर कर, उसका उत्पीड़न करना चाहिए। शत्रु के घास, अन्न, जल और ईंधन आदि को भी नष्ट कर देना चाहिए। राष्ट्र के जलाशयों, नगर के दीवारों एवं परिखाओं को भी नष्ट कर देना चाहिए। रात्रि के समय में शत्रु राष्ट्र को विशेष रूप से त्रस्त करना चाहिए।[3] अन्य आचार्यों के मत का प्रतिपादन करते हुए कर्षण के प्रति कामन्दक का यह मत है कि राजा को कोष और दंड से रहित कर देना चाहिए और प्रधानमंत्री का वध करवा देना चाहिए।

युद्ध के नैतिक नियम – शास्त्रों में धर्म युद्ध के कतिपय नियमों का उल्लेख किया गया है। मनु युद्ध को वीरता प्रदर्शन संबंधी कृत्य मानते हैं। मनु ने छल कपट द्वारा योद्धा के वध की भर्त्सना की है। उन्होंने कुछ ऐसी परिस्थितियों का उल्लेख किया है जिसमें मानव का युद्ध स्थल में वध नहीं करना चाहिए। यदि हम गंभीरता पूर्वक इन परिस्थितियों की विवेचना करें तो कुछ सिद्धांत हमारे सम्मुख उपस्थित होते हैं जो इस प्रकार हैं –

(1) आयुध अथवा वहान विहीन शत्रु को मारना धर्म विरुद्ध है–आयुध अथवा वहां के अभाव के कारण जो व्यक्ति युद्ध करने में किसी प्रकार असमर्थ है, ऐसे व्यक्ति की असमर्थता का लाभ उठाकर उसका वध कर देना धर्मयुद्ध के विरुद्ध है। इस सिद्धांत की स्थापना में मनु ने कुछ उदाहरण दिए हैं , जो देखने योग्य हैं– भूमि पर स्थित (वाहन विहीन) व्यक्ति का वध नहीं करना चाहिए।आयुध रहित अथवा टूटे हुए आयुध वाले भीत अथवा व्रणयुक्त पुरुष का रणभूमि में वध नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार वह पुरुष जो कवच रहित या नग्न है, उसका भी वध नहीं होना चाहिए।

(2) अपने विपक्षी अथवा शत्रु को सचेत करके युद्ध करना चाहिए–जो व्यक्ति असावधान अथवा युद्ध क्षेत्र में अचेत है, उनसे युद्ध नहीं करना चाहिए। जो व्यक्ति रणक्षेत्र में अचेत हो एवं दूसरे से युद्ध में संलग्न होने के कारण असावधान हो उसका वध किया जाना धर्मयुद्ध के नियमों का उल्लंघन माना जाएगा। इस सिद्धांत के समर्थन में धर्मशास्त्रकारों का आदेश है कि सोते हुए, दूसरे से युद्ध में संलग्न अथवा भूमि पर बैठे हुए पुरुष का वध नहीं करना चाहिए।

(3) युद्ध न करने वाले का वध नहीं करना चाहिए– इस सिद्धांत में मनु का आदेश है कि जो व्यक्ति युद्ध नहीं कर रहा है केवल दर्शक है उसका वध नहीं करना चाहिए। [4]

(4) पराजय स्वीकार करने वाला व्यक्ति भी अवध्य होता है– इस सिद्धांत का उल्लेख करते हुये मानव धर्मशास्त्र कारों ने कहा है कि जिस व्यक्ति ने रणस्थल में अपनी पराजय स्वीकार कर ली है और विजेता योद्धा की शरण ग्रहण कर ली है तो ऐसा व्यक्ति अवध्य है अर्थात रणस्थल में हाथ जोड़े हुए,सिर के बाल खोले हुए, मैं तुम्हारा हूं ऐसा कहने वाले का वध नहीं करना चाहिए।

(5)पुरुषत्व विहीन व्यक्ति से युद्ध नहीं करना चाहिए– इस सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए रण–स्थल में नपुंसक के वध किए जाने का निषेध

किया गया है (इसी लिए महाभारत में श्रीखंडी का वध नहीं किया गया था)।

(6) भयाक्रान्त व्यक्ति का वध नहीं होना चाहिए– जो व्यक्ति युद्ध नहीं करना चाहता युद्ध से डर कर अथवा घबराकर भागना चाहता है ऐसे व्यक्ति का वध नहीं किया जाना चाहिए।

(7) निर्मम एवं क्रूर अस्त्रों का प्रयोग नहीं करना चाहिए– धर्म युद्ध के अंतिम सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए मनु का कथन है कि शत्रु का वध ऐसे आयुधों से नहीं करना चाहिए,जिसके प्रयोग से मनुष्य को विशेष पीड़ा पहुंचती है और जिनका प्रयोग क्रूरताऔरनृशंसता प्रदर्शन हेतु किया जाता है। इसी सिद्धांत के दृष्टि को ध्यान में रखकर उन्होंने क्रूर आयुधों, कर्णी (जो वाण विधकर कठिनाई से निकाले जा सकें) विष आदि से बुझाए गए तथा प्रज्वलित अग्नि युक्त अस्त्र–शस्त्रों के प्रयोग का सर्वथा निषेध किया है । क्योंकि ऐसे शास्त्रों के प्रयोग से वीरता का विशेष प्रदर्शन नहीं हो पता है बल्कि क्रूरता एवं नृशंसता का ही प्रदर्शन होता है। इस प्रकार शास्त्रकारों ने युद्ध में छल कपट ढूंढता का आश्रय लेकर शत्रु का क्रूरता एवं नृशंसता पूर्वक वध करना उचित नहीं माना है। वीरता प्रदर्शन करते हुए नियमानुसार शत्रु का पराजय करना तथा मनु के मतानुसार धर्म युक्त है इस प्रकार धर्म युद्ध नियमों की चर्चा आवस्तबधर्मसूत्र याज्ञवल्क्य स्मृति रामायण महाभारत शुक्र नीति आदि गन्थों में भी पाई जाती है। [5] गौतम ऋषि का कहना है कि जिन्होंने अश्व सारथी आयुध खो दिये हो, जिन्होंने हाथ जोड़ लिये हो, जिनके केश भागते–भागते बिखर गए हो जिन्होंने पीठ दिखा दी हो जो भूमि पर बैठ गए हो जो भाग कर वृक्ष पर चढ़ गए हो, जो दूत हो जो गाय या ब्राह्मण हो इनको छोड़कर किसी अन्य को समरांगण में मारना या घायल करना पाप नहीं है। [6] बौधायन धर्म सूत्र ने विषाक्त बाणों कर्णियों से मारना निसिद्ध माना है।[7] यही बात शांतिपर्व में भी कही गई है।

वर्तमान संदर्भ में अनुकरणीय – प्राचीन भारतीय राज्यशास्त्रीय चिंतन का नवमूल्यांकन करते समय हम देखते हैं कि प्राचीन भारतीय संस्थायें तथा उनका संगठन अत्यधिक प्रभावशाली था। प्रतिरक्षा व्यवस्था एवं सेना का संगठित स्वरूप आज के संगठित संदर्भ में भी उतना ही उपयोगी है जितना पहले था। सेना के प्रकार उनके अलग–अलग चिन्ह, सेना के अधिकारियों की दक्षता, युद्ध का उचित समय, व्यूह बनाकर सेना का आगे बढ़ाना इत्यादि बातें आदि भी बहुत कुछ बातें सिखाती हैं। युद्ध के नैतिक तरीकों को ही उचित माना है। विजयी राजा का पराजित राजा के प्रति सम्मानित कर्तव्य की भावना अनुकरणीय तथ्य है। इसी आधार पर भी राम ने सुग्रीव तथा विभीषण को जीता हुआ राज्य लौटा दिया था। अपनी अधीनता में नहीं रखा था। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री के समय ताशकंद समझौता के अंतर्गत भी ऐसा ही किया गया था। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि इस समय भी विश्व प्राचीन भारतीय राज्य शास्त्रियों का ऋणी है। एक बात अधिक ध्यान देने योग्य है कि युद्ध के समय राजा स्वयं युद्ध क्षेत्र में आगे रहता था। आज भी सेनापतियों तथा शासको को गंभीरता से इस पर विचार करना चाहिए।

निष्कर्ष – उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भारतीय वांगमय में इस बात पर जोर दिया गया है कि पराजित राजा के राज्य का अपहरण नहीं किया जाना चाहिए, वरन उसकी शक्ति को सीमित कर उसको अपना मित्र बना लेना ही श्रेयस्कर होता है। और इसी में विजयी और विजित दोनों राज्यों का कल्याण निहित है। इस पर विशेष प्रकाश डालते हुए आचार्य कौटिल्य ने विजयी राजा को विशेष सावधानी बरतने का सुझाव दिया है। कौटिल्य के अनुसार विजेता राजा को अपने धर्म, प्रजा पर अनुग्रह करो कि मुक्ति, दान और प्रजा के कल्याण हेतु कार्यों द्वारा विजित प्रजा को प्रसन्न करना चाहिए।[8] जिस व्यक्ति ने अपने राजा के निमित्ता विशेष परिश्रम किया है, उसको विशेष अधिकार एवं धन देना चाहिए। विजेता राजा को अपने नवीन राज्य की प्रजा के अनुकूल ही वेशभूषा, भाषा एवं आचरण करना चाहिए। वहां के देवता, समाज, उत्सव, विहार आदि के प्रति भक्ति प्रदर्शित करनी चाहिए।[9] ईसवी चौथी से दसवीं शताब्दी तक इस सिद्धांत का बहुत अधिक पालन किया जाता था। गुप्त राजवंश के महान सम्राट समुद्रगुप्त का प्रयाग में जो स्तंभाभिलेख है उसमें भी यही सूचित होता है, कि उस समय इस सिद्धांत का पूरा अनुसरण किया गया था। कालिदास ने भी इस प्रथा का उल्लेख किया है, इलियट और डाउसन ने भी इसका उल्लेख किया है। प्रतिरक्षा व्यवस्था एवं सेना का संगठित स्वरूप आज के संगठित संदर्भ में भी उतना ही उपयोगी है, जितना पहले था। हम यह कह सकते हैं कि इस समय भी विश्व प्राचीन भारतीय राज्य शास्त्रियों का ऋणी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. अर्थ0 10/6, द्रोर्णापर्व 75/27, 87/22–24, कर्णपर्व 11/14 व 29, कामन्दकीय, 19/40–55, अग्निपु0, 242/7–8
2. मनु 07/192
3. रेचंन कोशदण्डाभ्यां महामात्य वधस्त्था।
   एतत्कर्षण मित्या छुराचार्या: पीड़नम।। कामन्दकीय 08/58
4. नायुद्धमानं पश्यतं।। मनु0, 7/92 उत्तरार्ध, प्रथम–द्वितीय शब्द
5. आपस्तम्ब0 2/5/10/12 महाभारत, भीष्मपर्व 1/27–32 यज्ञ 01/326
6. गौतम0, 10/17–18
7. बौधायन धर्मसूत्र, 1/10/10, अर्थ0 13/4 में भी इन नियमों का उल्लेख पाया जाता है।
8. स्वर्ध कर्मानुग्रह परिरदामान कर्मभिश्च प्रकृति प्रिय हितान्यनवर्तेत 13/5
9. तस्मात्समान शील वेषभाषा चारतामुपगच्छेत
   देशदैवतसमाजोत्सव विहारेषु च भक्तिमनुवर्तेत।। अर्थ0 13/5

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

21वीं सदी का भारत और गांधीवाद

डॉ. नीरज कुमार *

* सहायक प्राध्यापक (राजनीतिशास्त्र) शासकीय महाविद्यालय, बिछुआ, जिला छिंदवाड़ा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – महात्मा गांधी ने आजादी से पहले जिन समस्याओं पर विचार किया था और जो समाधान सुझाया था उनकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है और आगे भी बने रहने की पूरी संभावना है क्योंकि वे विशेषकर भारत के संबंध में गहरी समझ और नैतिकता पर आधारित रहे हैं। चाहे भारत के आर्थिक विकास और बढ़ती अमीरी के बीच संपत्ति के असंतुलित वितरण का सवाल हो या मशीनीकरण और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बढ़ते प्रयोग से विशाल जनसंख्या के रोजगार का सवाल, अति उपभोक्तावाद की ओर बढ़ते कदम और पर्यावरण की समस्या, हिंसा का बढ़ता स्तर, विरोध के शांतिपूर्ण संसाधनों की आवश्यकता और विश्व गुरु बनने तथा वसुधैव कुटुंबकम को चरितार्थ करने के लिए उनके विचार नये भारत में भी प्रासंगिक रहेंगे। महात्मा गांधी के शिष्यों ने संविधान और सरकारी योजनाओं में उनके विचारों को अपेक्षा से बहुत कम स्थान दिया। वर्तमान केन्द्र सरकार जो महात्मा गांधी के विचारों का समर्थक नहीं रही है वह अपनी कई स्कीमों और योजनाओं में महात्मा गांधी के विचारों का समर्थन करते दिखाई देती है।
शब्द कुंजी – उपभोक्तावाद, जनसंख्या, रोजगार, अहिंसा, असमानता।

प्रस्तावना – सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारतवर्ष अंग्रेजी शासन के अधीन आकर पंगु हो गया था। इस देश के संसाधनों को ब्रिटेन के लिए लुटा खसोटा गया। जहां तक संभव हुआ भारत और उसके लोगों को चुसा गया, इसके धन–संपत्ति को सोख लिया गया। जब भारत आजाद हुआ उस समय यहां औद्योगिक विकास लगभग नग्न्य था। 1947 में भारत की साक्षरता 18 प्रतिशत थी। गरीबी का साम्राज्य था। तकनीक, आधारभूत ढ़ांचा और अर्थव्यवस्था का नये सिरे से निर्माण करना था। 15 अगस्त 1947 को संविधानसभा में दिए प्रसिद्ध भाषण ट्रिस्ट विद डेस्टिनी में भारत के अंतरिम प्रधानमंत्री पं.जवाहरलाल ने कहा था, 'मध्यरात्रि की इस बेला में जब पूरी दुनिया नींद के आगोष में सो रही है, हिन्दुस्तान एक नई जिंदगी और आजादी के वातारण में अपनी आंख खोल रहा है।'[1]

उदारवादी प्रतिनिधि लोकतंत्र की खर्चीली शासन प्रणाली को सफलतापूर्वक अपनाकर और भारतीय लोकतंत्र की समाप्ति एवं तानाशाही शासन की स्थापना की समस्त नकारात्मक भविष्यवाणियों को धता बताकर दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र बना हुआ है जिसपर हर भारतीय को गर्व है इसलिए भी कि भारत में दुनिया के प्राचीनतम लोकतंत्र विद्यमान रहे थे। आजादी के बाद पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से प्राथमिकताओं के अनुसार भारत प्रगति करता रहा भले गति अपेक्षाकृत धीमी रही। भारत आर्थिक सुधार और उदारीकरण 1991 में किया। इसके साथ ही अपनी अर्थव्यवस्था को दुनियाभर के निवेशकों, वस्तुओं और सेवाओं के लिए खोला तो कुछ धीमी चाल के बाद रफ्तार पकड़ ली है। कोरोना काल में अर्थव्यवस्था में संकुचन के बाद भरपाई करते हुए भारत की अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 13.5 प्रतिशत की छलांग लगाई थी। सामान्य परिस्थितियों में अधिकतम विकास दर 2010 में 8.5 प्रतिशत दर्ज की गई थी।[2] साल 2014 से 2023 के बीच भारत के जीडीपी में कुल 83 फीसद की बढ़त दर्ज की गई है। नौ सालों की वृद्धि दर के मामले में भारत चीन से सिर्फ एक फीसदी नीचे रहा है क्योंकि चीन की जीडीपी में 84 फीसद की बढ़त दर्ज की गई है।[3] इसी दौरान भारत ब्रिटेन, फांस, कनाडा, इटली और ब्राजील की अर्थव्यवस्था को पीछे छोड़ते हुए भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। लाइव मिंट के मुताबित, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भी पिछले साल अक्टूबर में अनुमान लगाया है कि भारत साल 2027–28 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकता है। आईएमएफ के साथ ही वैश्विक वित्तीय फर्म मॉर्गन स्टैनली ने भी पिछले साल अनुमान लगाया है कि 2027 तक भारत अमेरिका और चीन के बाद दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।[4] अगर भारतीय जीडीपी मौजूदा औसत छह–सात फीसद की दर से भी आगे बढ़ती रहती है तो भी वह साल 2027 तक जर्मनी और जापान को पीछे छोड़कर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगी, क्योंकि इन देशों के लिए छह–सात प्रतिशत बढ़ोतरी तकरीबन असंभव ही है, क्योंकि जर्मनी और जापान की विकास दर क्रमश: ढाई और डेढ़ प्रतिशत ही है।[5]

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विजुअल कैपिटलिस्ट के अक्टूबर 2022 के जीडीपी के आंकड़ों के हिसाब से दुनिया के दस अमीर देशों की सूची इस तरह बनेगी :–

10. इटली, 1.99 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर
9. रूस, 2.113 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर
8. कनाडा, 2.2 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर
7. फ्रांस, 2.778 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर
6. ब्रिटेन, 3.199 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर
5. भारत, 3.469 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर
4. जर्मनी, 4.031 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर
3. जापान, 4.301 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर
2. चीन, 18.321 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर

1. अमेरिका, 25.035 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर[6]

1990 में चीनी अर्थव्यवस्था भारत की तुलना में थोड़ी ही बड़ी थी, लेकिन आज चीन की जीडीपी भारत से 5.46 गुणा बड़ी है।[7] चीन ने 1978 में और भारत ने 1991 में अपने यहां आर्थिक सुधार शुरू किए। प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी ने 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने का महत्वकांक्षी लक्ष्य रखा है।[8] आज भारत दुनिया के कुल जीडीपी के चार फीसद का हिस्सेदार है। 2047 तक भारत की अर्थव्यवस्था 20 लाख करोड़ डॉलर की हो जाएगी।[9] अमेरिकी विनिवेश बैंक गोल्डमैन सैक्स ने अपनी ताजा रिपोर्ट में कहा है कि भारत 2075 तक न केवल जापान और जर्मनी बल्कि अमेरिका को भी पीछे छोड़ते हुए दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। वर्तमान में, भारत जर्मनी, जापान, चीन और अमेरिका के बाद दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। निवेश बैंक ने लिखा है कि नवाचार, प्रौद्योगिकी, उच्च पूंजी निवेश और बढ़ती श्रमिक उत्पादकता आने वाले वर्षों में भारत की अर्थव्यवस्था की मदद करेगी।[10] अर्थशास्त्र में 2001 के नोबल पुरस्कार विजेता माइकल स्पेंस का मानना है कि भारत का वक्त आ चुका है। प्रोफेसर माइकल स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी में डीन हैं, उन्होंने बीबीसी से कहा, 'भारत जल्द ही चीन की बराबरी कर लेगा। चीनी अर्थव्यवस्था की रफ्तार धीमी पड़ेगी लेकिन भारत की नहीं।'[11]

भारत या किसी भी देश को किसी भी क्षेत्र में प्रगति करने के लिए अपने संसाधनों का समुचित प्रयोग करते हुए आर्थिक प्रगति आवश्यक है। सौभाग्य से नये भारत में आर्थिक विकास तेजी से हो रहा है। भारत उभर रहा है। आज भारत न केवल अर्थिक क्षेत्र में प्रगति कर रहा है बल्कि सामरिक क्षेत्र में भी आत्मनिर्भरता और प्रगति की ओर अग्रसर है। ग्लोबल फायरपावर की वेबसाइट के अनुसार अमेरिका, रूस और चीन के बाद भारत चौथी सबसे बड़ी सैन्य ताकत है। चन्द्रयान, मंगलयान, शुक्रयान की इसरो की परियोजनाओं के माध्यम से भारत अंतरिक्ष विज्ञान और व्यावसाय में स्थान बना रहा है। जेनरिक दवाओं का सबसे बड़ा उत्पादक है। कोविड 19 संकट में भारत ने वैक्सीन उपलब्ध कराकर दुनिया में संकट के समय अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ग्लोबल साउथ के देशों में भारत की छवी अच्छी बनी है। भारत के तकनीकी, शैक्षणिक और आर्थिक विकास से ये देश प्रेरणा ले रहे हैं। भारत इन देशों का नेता बनकर उभरा है। भारत को पश्चिमी देशों में भी महत्व दिया जा रहा है।

भारत में मध्यम वर्ग की बड़ी आबादी को उपभोक्ता के रूप में देखा जा रहा है। जिसपर दुनिया भर के बहुराष्ट्रीय कंपनियों और औद्योगिक देशों की नजर है। बड़ी संख्या में कामगार वर्ग की उपलब्धता, अंग्रेजी जानने वाले तकनीशियनों आदि के कारण भारत दुनिया का बैक ऑफिस बना हुआ है और मैनुफैक्चरिंग के क्षेत्र में प्रगति की ओर अग्रसर है। इंटरनेट के क्षेत्र में भी भारत आगे की ओर है। भारत का साक्टवेयर के क्षेत्र में अग्रणी स्थान है।

इस प्रगतिशील नये भारत में राष्ट्रपिता, महान विचारक, नेता और कर्मयोगी महात्मा गांधी की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है। महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान महान भारत के सपने देखे थे। भारत की कई चुनौतियों और समस्याओं पर विचार किया था। उन समस्याओं से नया भारत भी जुझ रहा है। एक सशक्त, उन्नत, खुशहाल और महान राष्ट्र बनना है तो भारत को उन चुनौतियों से पार पाना होगा।

प्रख्यात अमेरिकी अर्थशास्त्री स्टीव हैंके जॉन्स हॉपकिन्स विश्वविद्यालय में एप्लाइड इकोनॉमिक्स के प्रोफेसर हैं, जिन्होंने अमेरिका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन की आर्थिक सलाहकार परिषद में भी काम किया है। बीबीसी हिंदी से बात करते हुए वो कहते हैं,'भारत समस्याओं से दबा हुआ है। इंग्लैंड में भारतीय मूल के राणा मित्तर ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में आधुनिक चीन के इतिहास और राजनीति के प्रोफेसर हैं और चीन पर उन्होंने कई किताबें लिखी हैं। उन्होंने बीबीसी हिंदी को एक ईमेल इंटरव्यू में बताया कि भारत को अपने युवाओं को अधिक कुशल बनाने और शिक्षा पर अधिक खर्च करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा,'भारत की जनसंख्या युवा है, लेकिन चीन अभी भी शोध और विकास पर अधिक खर्च करता है, इसलिए भारत को अपनी जनसंख्यिकी से पूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिए शिक्षा पर अधिक निवेश करना होगा।'[12]

आर्थिक असमानता का व्यापक दायरा है। जिससे देश की एक बड़ी आबादी बहुत की कम आय पर विपरीत परिस्थितियों में जीवन यापन कर रही है। भारत तीसरी अर्थव्यवस्था भी बन जाएगी तो भी इसमें ज्यादा सुधार होने की संभावना नहीं है। आलोक पुराणिक मानते हैं, 'जहां एक ओर भारत दुनिया की तीसरी शीर्ष अर्थव्यवस्था बनने की ओर कदम बढ़ा रहा है। वहीं, इससे आर्थिक गतिविधियों में बढोतरी होगी जिसका लोगों को फायदा मिलेगा। लेकिन इससे आम लोगों की जिंदगी और उनकी आर्थिक समृद्धि में नाटकीय बदलाव होने की संभावना कम है।'[13] 2023 में ऑक्सफैम ने वर्ल्ड इकॉनोमिक फोरम की वार्षिक बैठक के दौरान अपनी वार्षिक असमानता रिपोर्ट 'सर्वाइवल ऑफ द रिचेस्ट : द इंडिया स्टोरी' में बताया है कि भारत के सबसे अमीर 1 प्रतिशत लोगों के पास देश की कुल संपत्ति का 40 प्रतिशत से ज्यादा हिस्सा है। देश की आधी यानी 50 प्रतिशत आबादी के पास इंडिया की कुल संपत्ति का सिर्फ 3 प्रतिशत है। इसके अनुसार भारत में अरबपतियों की कुल संख्या 2020 के 102 से बढ़कर 2022 में 166 हो गई है। भारत के 100 सबसे अमीर लोगों की संयुक्त संपत्ति 660 अरब डॉलर (54.12 लाख करोड़ रुपए) तक पहुंच गई है। यह एक ऐसी राषि है जो 18 महिने से ज्यादा के पूरे केन्द्रीय बजट को फंड दे सकती है।[14]

जब यह देश 1950 में लोकतांत्रिक घोषित हुआ तो देश में प्रजातांत्रिक समाजवाद स्थापित करने की घोषणा की गई थी। क्या कारण है कि यह लक्ष्य आज भी ध्रुवतारे की तरह कहीं दूर ठिठका हुआ लगता है। अरबपति खरबपति हो गए हैं और निर्धन और निर्धन हो हाने की राह पर चल दिए।[15]

प्रति व्यक्ति की दृष्टि से देखा जाए तो भारत की स्थिति अभी भी बहुत खराब है। भारत में प्रति व्यक्ति वार्षिक आय 2.6 हजार अमेरिकी डॉलर है तो अमेरिका में ये आंकड़ा 80 हजार डॉलर से ज्यादा है।16 भारत में प्रतिव्यक्ति वार्षिक आय 2.6 हजार डॉलर है लेकिन इसमें अरबपतियों की आय भी सम्मिलित है। यहां एक ओर दुनिया के सबसे सुविधाभोगी लोग हैं तो दूसरी ओर घोर अभाव में कठिनतम स्थिति में किसी तरह जीवन यापन करते लोग भी हैं।

महात्मा गांधी उद्योगवाद को विशेषकर भारत के लिए पसंद नहीं करते थे जिसकी ओर भारत बढ़ रहा है तथा इसमें अभी बहुत प्रयास करके उंचाईयां छूने के लिए दृढ़ संकल्पित है। नये भारत में महात्मा गांधी के इस बात को स्वीकार करते हुए उद्योगवाद से दूर जा पाना मुश्किल है यही आज की वास्तविकता है। औद्योगिक उत्पादन के लिए बड़े पैमाने पर मशीनों का प्रयोग होता है। महात्मा गांधी हर तरह के मशीन के खिलाफ नहीं थे। उन्होंने कहा था कि व्यक्ति के परिश्रम की बचत मशीन का लक्ष्य होना चाहिए और प्रामाणिक मानव-कल्याण का विचार, न कि लोभ, उसका हेतु होना चाहिए।

लोभ के स्थान पर प्रेम को बिठा दीजिए, फिर सब ठीक हो जायगा। व्यक्ति के परिश्रम की बचत मशीन का लक्ष्य होना चाहिए और प्रामाणिक मानव-कल्याण का विचार, न कि लोभ, उसका हेतु होना चाहिए। लोभ के स्थान पर प्रेम को बिठा दीजिए, फिर सब ठीक हो जायगा। 17 वे सिंगर की सिलाई की मशीन का स्वागत करते हैं। वे कहते हैं कि मेरा विरोध यंत्रों के लिए नहीं है, बल्कि यंत्रों के पीछे जो पागलपन चल रहा है, उसके लिए है। 18 वे आगे कहते है कि उनसे मेहनत जरूर बचती है, लेकिन लाखों लोग बेकार होकर भूखों मरते हुए रास्तों पर भटकते हैं। समय और श्रम की बचत तो मैं भी चाहता हूं, परंतु वह किसी खास वर्ग की नहीं, बल्कि सारी मानव-जाति की होनी चाहिए। कुछ गिने-गिनाये लोगों के पास संपत्ति जमा हो ऐसा नहीं, बल्कि सबके पास जमा हो ऐसा मैं चाहता हूं। आज तो करोड़ों की गरदन पर कुछ लोगों के सवार हो जाने में यंत्र मद्दगार हो रहे हैं।[19] उनका कहना था कि सबसे पहले वैज्ञानिक सत्यों और आविष्कारों को निरे लोभ के साधन नहीं रहना चाहिये।[20]

महात्मा गांधी भले ग्रामीण और श्रम प्रधान अर्थव्यवस्था के पक्षधर रहे हैं लेकिन नया भारत उद्योगवादी, शहरी और बाजार अर्थव्यवस्था की ओर ही बढ़ रहा है। महात्मा गांधी के विचार इसके माध्यम से फैल रही आर्थिक असमानता को कम करने और सर्व कल्याण के लिए प्रेरणा प्रदान करते हैं। औद्योगिकरण के परिणामस्वरूप जो असमानता और शोषण की परिस्थितियां उत्पन्न होती है उससे निपटने के लिए साम्यवादी क्रांति के विकल्प के रूप में गरीबों-वंचितों के लिए और एक बेहतर समाज के निर्माण के लिए महात्मा गांधी के विचार महत्व रखते हैं। पूंजीपतियों में जो स्वार्थपरता है उससे उन्हें उपर उठाना चाहते हैं और उनको सबके कल्याण के लिए कार्य करने वाले योग्य साधन के रूप में बदल देना चाहते हैं। उद्योगपतियों को संपत्ति का न्यासी बना देना चाहते हैं।

वे मानते थे कि यदि वे उपकार की भावना रखकर अपनी बुद्धि का उपयोग करें तो राज्य का ही काम करेंगे। ऐसे लोग संरक्षक बनकर रहते है, और किसी भी रूप में नहीं। मैं बुद्धिशाली आदमी को अधिक कमाने दूंगा, उसकी बुद्धि को कुंठित नहीं करूंगा। परंतु उसकी अधिकांश कमाई राज्य की भलाई के लिए वैसे ही काम आनी चाहिए, जैसे कि बाप कि सारे कमाऊ बेटों की आमदनी परिवार के कोष में जमा होती है। वे अपनी कमाई के संरक्षक बनकर ही रहेंगे।[21] महात्मा गांधी कहते हैं, यदि समाज का हरएक सदस्य अपनी शक्तियों का उपयोग व्यक्तिगत स्वार्थ साधने के लिए नहीं बल्कि सबके कल्याण के लिए करे, तो क्या इससे समाज की सुख-समृद्धि में वृद्धि नहीं होगी? हम ऐसी जड़ समानता का निर्माण नहीं करना चाहते, जिसमें कोई आदमी अपनी योग्यताओं का पूरा-पूरा उपयोग कर ही न सके। ऐसा समाज अन्त में नष्ट हुए बिना नहीं कर सकता। इसलिए मेरी यह सलाह बिलकुल सही है कि धनवान लोग चाहे करोड़ों रुपये कमायें (बेशक ईमानदारी से ही), लेकिन उनका उद्देश्य सारा पैसा सबके कल्याण में समर्पित कर देने का होना चाहिए।[22]

यही निहितार्थ लिए हुए जॉन रॉल्स अपने प्रक्रियात्मक न्याय सिद्धांत में बताते है कि समाज के योग्य और संपत्तिशाली लोगों की कमाई में समाज के सबसे कमजोर को अवसर की समानता को बढ़ाने के लिए लाभ मिलना चाहिए। वे समाज को एक जंजीर की तरह देखते हैं और कहते है कि यह समाज उतना ही मजबूत माना जाएगा जितना की उस जंजीर की सबसे कमजोर कड़ी। इसलिए समाज को मजबूत बनाने के लिए ऐसी कमजोर कड़ी को खोजकर सबसे पहले मजबूत किया जाना चाहिए।

ऐसे ही विचार 2023 में ऑक्सफैम ने वर्ल्ड इकॉनोमिक फोरम की वार्षिक बैठक के दौरान अपनी वार्षिक असमनता रिपोर्ट 'सर्वाइवल ऑफ द रिचेस्ट : द इंडिया स्टोरी' में व्यक्त किये गये हैं कि भारत के 10 सबसे अमीरों पर 5 प्रतिशत टैक्स लगाने से 1.37 लाख करोड़ रुपए जुटाए जा सकते हैं। यह 2020-2023 के लिए हेल्थ एंड फैमिली वेलफेयर मिनिस्ट्री (86,200 करोड़ रुपए) और आयुष मंत्रालय (3050 करोड़ रुपए) के अनुमानित फंड्स से 1.5 गुना ज्यादा है। इतने पैसों से देश के सभी बच्चों को स्कूल भेजने के लिए पूरा पैसा मिल सकता है। ऑक्सफैम ने कहा, 'अगर भारत के बिलियनेयर्स पर उनकी टोटल वेल्थ पर 2 प्रतिशत की दर से एक बार टैक्स लगाया जाए, तो इससे देश में अगले तीन साल तक कुपोषित लोगों के पोषण के लिए 40,423 करोड़ रुपए की जरूरत को पूरा किया जा सकता है।'[23]

संपत्ति का व्यापक असमान वितरण न केवल सामाजिक भेदभाव उत्पन्न करता है बल्कि सत्ता पर संपत्तिशाली का अनुचित प्रभाव भी स्थापित कर देता है। इस बुराई से भी महात्मा गांधी वाकिफ थे। आज भारत में ऐसा होता हुआ दिखाई देता है। सत्ता पर भारत के उद्योगपतियों के प्रभाव के आरोप विपक्ष द्धारा लगाए जाते रहे हैं। लोकतंत्र का चौथा स्तंभ मीडिया को माना जाता है। भारत की अधिकांश मीडिया संस्थान पूंजीपतियों के स्वामित्व में हैं। महात्मा गांधी का विचार था कि जब तक मुठीभर धनवानों और करोड़ों भूखे रहने वालों के बीच भारी अन्तर बना रहेगा, तब तक अहिंसा की बुनियाद पर चलने वाली राज-व्यवस्था कायम नहीं हो सकती।[24] उन्होंने यहां तक कहा था कि अगर धनवान लोग अपने धन को और उसके कारण मिलने वाली सत्ता को खुद राजी-खुशी से छोड़कर और सबके कल्याण के लिए सबके साथ मिलकर बरतने को तैयार न होंगे, तो यह तय समझिये कि हमारे देश में हिंसक और खूंख्वार क्रांति हुए बिना न रहेगी।[25]

महात्मा गांधी ने स्वतंत्र भारत के लिए सपना देखा था कि आजाद हिन्दुस्तान में देश के बड़े से बड़े धनवानों के हाथ में हुकूमत का जितना हिस्सा रहेगा, उतना ही गरीबों के हाथ में भी होगा; और तब नई दिल्ली के महलों और उनकी बगल में बसी हुई गरीब मजदूर बस्तियों के टूटे-फूटे झोंपड़ों के बीच जो दर्दनाक फर्क आज नजर आता है, वह एक दिन को भी नहीं टिकेगा।[26]

क्या नये भारत में भी गरीबों पिछड़ों की हितों की रक्षा के लिए महात्मा गांधी के उपर्यूक्त विचार की प्रासंगिकता नहीं रहेगी? अवश्य रहेगी। भारतीय संविधान के भाग 4 में राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व में अनुच्छेद 39 के खंड (ख) और (ग) में राज्य द्धारा अनुकरणीय नीति तत्व में कहा गया है कि (ख) समुदाय के भौतिक संसाधनों का स्वामित्व और नियंत्रण इस प्रकार बंटा हो जिससे सामूहिक हित का सर्वोत्तम रूप से साधन हो; और (ग) आर्थिक व्यवस्था इस प्रकार चले जिससे धन और उत्पादन साधनों का सर्वसाधारण के लिए अहितकारी संकेंद्रण न हो।[27] इस लक्ष्य को प्राप्त करना सरकारों का दायित्त्व है। जिसे प्राप्त करने में महात्मा गांधी के विचार सहायता करते हैं।

महात्मा गांधी कहते हैं, 'भारत में लाखों लोग ऐसे हैं जिन्हें दिन में केवल एक ही बार खाकर संतोष कर लेना पड़ता है; और उनके उस भोजन में भी सूखी रोटी और चुटकीभर नमक के सिवा और कुछ नहीं होता। हमारे पास जो कुछ भी है उस पर हमारा और आपका तब तक कोई अधिकार नहीं है जब

तक इन लोगों के पास पहनने के लिए पूरा कपड़ा और खाने के लिए पूरा अन्न नहीं हो जाता।'[28] नये भारत में स्थिति ऐसी नहीं है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली और खाद्य सुरक्षा के माध्यम से इससे पार पाया जा सका है। समृद्धि का विस्तार हो रहा है। लेकिन महात्मा गांधी ने आर्थिक समानता के लिए कार्य करने का अर्थ बताया था कि एक ओर से जिन मुटठीभर पैसे वाले लोगों के हाथ में राष्ट्र की संपत्ति का बड़ा भाग इकटठा हो गया है, उनकी संपत्ति को कम करना; और दूसरी ओर से जो करोड़ों लोग अधपेट खाते और नंगे रहते हैं, उनकी संपत्ति में वृद्धि करना।[29] आज के संदर्भ में महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

भारत 2023 में चीन को पीछे छोड़कर दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाला देश बन गया है। भारत के पास विश्व भूमि का 2.4 फीसदी है लेकिन यहां विश्व की 18 फीसदी आबादी बसती है। भारत के लिए इतनी आबादी को सुविधाएं उपलब्ध कराना एक चुनौती है तो अवसर भी है। भारत के पास युवा आबादी की बड़ी संख्या है। ऐसा किसी अन्य देश के पास नहीं है। इन्हें कुशल बनाकर अवसर के रूप में बदला जा सकता है।

ब्लूमबर्ग ने संयुक्त राष्ट्र के विश्व जनसंख्या डैशबोर्ड के हवाले से बताया कि भारत की जनसंख्या 1.428 142.86 करोड़ से अधिक है। जबकि, चीन की आबादी 1.425 अरब 142.57 करोड़ है।[30] यूएनएफपीए की रिपोर्ट के अनुसार भारत की 68 प्रतिशत 15 से 64 वर्ष आयु वर्ग में हैं। इसके अलावा 7 प्रतिशत 65 से ऊपर के आयु वर्ग में हैं। विभिन्न एजेंसियों के अनुमान से पता चला है कि भारत की जनसंख्या लगभग तीन दशकों तक बढ़ती रहने वाली है।[31] भारत चाहता है कि युवा शक्ति का लाभ उठाकर अर्थव्यवस्था को उंचाई पर ले जाया जाये। माना जाता रहा है कि उदारीकरण और वैश्वीकरण अवसरों को बढ़ाते हैं और रोजगार में वृद्धि करते हैं लेकिन भारतीय रिजर्व बैंक के एक अध्ययन पर आधारित यह विश्लेषण काबिल-ए-गौर है कि 1999-2000 में अगर जीडीपी 1 प्रतिशत बढ़ती थी तो रोजगार में 0.39 प्रतिशत का इजाफा होता था। 2014-15 तक आते-आते स्थिति यह हो गयी कि 1 प्रतिशत जीडीपी बढ़ने से सिर्फ 0.15 प्रतिशत रोजगार बढ़ता है। मतलब जीडीपी बढ़ने, पूंजीपतियों का मुनाफा बढ़ने से अब लोगों को रोजगार नहीं मिलता। इसलिए जब कॉरपोरेट मीडिया अर्थव्यवस्था में तेजी-खुशहाली बताए तो भी उससे आम लोगों को खुश होने की कोई वजह नहीं बनती।32 आज चांद पर जाने की जितनी चिंता है, धरती पर रोजगार को लेकर नहीं। गांधी विज्ञान के विरोधी न थे, लेकिन उन्हें 'इकोनॉमी' को लेकर ज्यादा चिंता थी। वे देश के बेरोजगारों को लेकर चिंतित थे, जो 21वीं सदी में बड़े पैमाने पर बढ़ रहे हैं। वस्तुत: आज सिर्फ आर्थिक वृद्धि देखी जाती है, रोजगार घट रहे हैं कि बढ़ रहे हैं, इससे मतलब नहीं होता।[33]

हालांकि वर्तमान में फिर से दुनियाभर में अर्थव्यवस्था के खूलेपन के स्थान पर संरक्षतावाद दिखाई देने लगा है। आत्मनिर्भरता की बात भी की जाने लगी है। भारत के प्रधानमंत्री भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए आत्मनिर्भरता की नीति पर चल रहे हैं। यह महात्मा गांधी के स्वदेशी की भावना को ही अभिव्यक्त करता है। महात्मा गांधी के अनुसार, 'स्वदेशी की भावना का अर्थ है हमारी वह भावना, जो हमें दूर को छोड़कर अपने समीपवर्ती प्रदेश का ही उपयोग और सेवा करना सिखाती है।' अर्थ के क्षेत्र में मुझे अपने पड़ोसियों द्वारा बनायी गयी वस्तुओं का ही उपयोग करना चाहिए और उन उद्योगों की कमियाँ दूर करके, उन्हें ज्यादा सम्पूर्ण और सक्षम बनाकर उनकी सेवा करना चाहिए।'[34] महात्मा गांधी का मानना था कि आर्थिक और औद्योगिक जीवन में हमने स्वदेशी के नियम को भंग किया है। इसीलिए जनता की अधिकांश गरीबी का कारण विदेशों पर निर्भरता है।[35]

महात्मा गांधी की सबसे बड़ी चिंता भारत की विशाल आबादी को काम उपलब्ध कराने की थी मशीनीकरण और उद्योगवाद का विरोध संपत्ति के संकेन्द्रण के साथ-साथ बेरोजगारी बढ़ने की चिन्ता भी थी। नया भारत में मशीनीकरण और औद्योगिकरण जोर शोर से हो रहा है। बेरोगारी दर बढ़ रही है। ऐसे में पकौड़े तलने जैसे रोजगार भी सुझाए जा रहे हैं। बेरोजगारों को रोजगार देने के लिए स्व-रोजगार, कुटीर उद्योग को सरकार द्वारा मुद्रा योजना और कई योजनाओं के माध्यम से महात्मा गांधी के विचारों पर चलने का प्रयास हो रहा है। महात्मा गांधी का कहना था कि देश के हर नागरिक को पूरा काम देने वाली अर्थव्यवस्था खड़ी करने के लिए हमें उद्योगवाद का, केन्द्रित उद्योग-धंधों का और अनावश्यक यंत्रों का त्याग करना होगा।[36] भारत सरकार ने स्किल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और इसके साथ लघु और कुटीर उद्योगों के विकास पर भी पूरा ध्यान देना शुरू कर दिया है। कोशिश यह है कि भारत अब आयात आधारित अर्थव्यवस्था से निर्यात आधारित अर्थव्यवस्था बने।[37] महात्मा गांधी को डर था कि भारत जैसे बड़ी आबादी वाले देश के लिए बेरोजगारी की समस्या को मशीन से बढ़ावा मिल सकता है। उन्हें यह भी डर था कि ऐसे यंत्र नहीं होने चाहिए जो काम न करने के कारण आदमी के अंगों को जड़ और बेकार बना दें।[38] उन्होंने कहा है कि यंत्रों से काम लेना उसी अवस्था में अच्छा होता है, जब कि किसी निर्धारित काम को पूरा करने के लिए आदमी बहुत ही कम हों या नपे-तुले हों। पर यह बात हिन्दुस्तान में तो है नहीं। यहां काम के लिए जितने आदमी चाहिए, उनसे कहीं अधिक बेकार पड़े हुए हैं।[39]

निर्यात आधारित अर्थव्यवस्था बनाने के साथ ही साथ घरेलू उपभोक्ताओं के मांग में भी वृद्धि के प्रयास किये जा रहे हैं ताकि भारतीय अर्थव्यवस्था का तेजी से विकास हो और लोगों का जीवन स्तर ऊंचा उठे। वर्तमान समय में उच्च जीवन स्तर मापने का तरीका उच्च उपभोग का स्तर है। ऐसे अर्थशास्त्र से उपभोक्तावाद को बढ़ावा मिलता है। उपभोक्तावाद जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण का कारण है। ऐसे में अनियंत्रित उपभोग को बढ़ावा देने के स्थान पर नियंत्रित रूप में अभावों में जीवन यापन कर रहे लोगों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने की जरूरत है। यदि जीवन स्तर के मामले में लोगों का आदर्श अमेरिका की जीवन शैली होगी तो पर्यावरण का विनाश और बढ़ जाएगा। एक आकलन के अनुसार अमेरिका की जनसंख्या तो विश्व की कुल जनसंख्या की मात्र 4.42 प्रतिशत है लेकिन वह विश्व के संसाधनो का करीब 28.97 प्रतिशत का उपभोग करती है।[40] वैश्विक आबादी को भौतिक संसाधन मुहैया कराने और सम्पन्नता के इस सार्वभौम जीवन-स्तर तक उठाने के लिए एक नहीं बल्कि अनेक ग्रहों की जरूरत पड़ेगी।[41]

महात्मा गांधी के जीवन काल में पर्यावरण प्रदूषण बड़ा मसला नहीं था फिर भी उनके विचार भविष्य की समस्याओं के लिए भी प्रासंगिक रहे हैं। जैसा कि उनका एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उद्धरण कि 'पृथ्वी पर सभी की जरूरतों के लिए काफी संसाधन उपलब्ध हैं लेकिन सभी के लालच के लिए जगह नहीं है,'[42] उनके विचार उपभोग को संतुलित बनाने में हमारी सहायता करती है। महात्मा गांधी ने भारत के लोगों की जीवन शैली के मान्य सिद्धांत सादा जीवन उच्च विचार को अपनाने पर जोर दिया है। उन्होंने कहा था कि

यदि सादा जीवन जीने योग्य है तो यह प्रयत्न भी करने योग्य है, चाहे वह प्रयत्न किसी एक ही व्यक्ति या किसी एक ही समुदाय द्धारा क्यों न किया जाये।[43] इस तरह आज मानव जीवन पर सबसे बड़े संकट के रूप में प्रकट पर्यावरण संकट की समस्या के प्रति महात्मा गांधी के विचार संवेदनशील बनाता है जिसकी नये भारत में इसकी ज्यादा जरूरत पड़ती रहेगी।

नये भारत में हिंसा पर नियंत्रण भी पाना होगा। मणिपुर में कुकी और मैतेई विवाद से उत्पन्न हिंसा हो या नूह (मेवात) की हिंसा या नक्सली हिंसा, जम्मू और कश्मीर तथा देश के अन्य स्थानों पर नागरिकों द्धारा की गई हिंसा देश को परेशानी में डालता है और जान-माल का नुकसान करता है। जबकि शांतिपूर्ण साधनों से विरोध दर्ज किया जा सकता है या अपनी मांगे मनवाई जा सकती है। नये भारत में ऐसे हिंसा का कोई स्थान नहीं रहना चाहिए। अहिंसा के पूजारी के रूप में प्रसिद्ध महात्मा गांधी यहां महत्वपूर्ण प्रेरणा प्रदान कर सकते हैं। जहां अहिंसक साधनों का प्रयोग किया भी जाता है तो भी उसमें बहुत सी खामियां होती है वहां भी महात्मा गांधी के विचार सहायता कर सकते है। उनका सत्याग्रह का अस्त्र हमें सहायता प्रदान कर सकता है। महात्मा गांधी साध्य और साधन की एकता में विश्वास करते थे। अहिंसा को सत्य तक पहुंचने का साधन मानते हैं। उनका विचार था कि गलत साधन से सही साध्य तक नहीं पहुंचा जा सकता। इसलिए विरोध जताने के एक समुचित अहिंसात्मक साधन के रूप में सत्याग्रह का आविष्कार किया। वे सत्याग्रह के संबंध में बताते थे कि सत्याग्रही का अन्यायी को परेशान करने का इरादा कभी नहीं होता। वह उसे डराना भी नहीं चाहता; हमेशा उसके हृदय से अपील करता है। यही होना भी चाहिये। सत्याग्रही का उद्देश्य अन्याय करने वाले को दबाना नहीं, बल्कि उसका हृदय-परिवर्तन करना होता है।[44] महात्मा गांधी कहते थे कि अगर हम खुद को अपने शत्रु की स्थिति में रखकर उसके दृष्टिकोण को समझें, तो संसार के तीन-चौथाई दु:ख-दर्द और गलतफहमियां मिट जायें । तब या तो हम अपने शत्रु के साथ जल्दी सहमत हो जायेंगे या उसके बारे में उदारतापूर्वक विचार करेंगे।[45] वे मानते हैं कि सत्याग्रह में जबरदस्ती का लवलेश भी नहीं होना चाहिये। हमें अधीर नहीं बनना चाहिये; और हम जिन साधनों को अपना रहे हैं, उनमें हमारी अटल श्रद्धा होनी चाहिये।[46]

भारत अतीत का अपना समुचित स्थान पाना चाहता है। भारत की भूमि अध्यात्म की भूमि रही है। भारत ने दुनिया को योग दिया है, अहिंसा, सहिष्णुता, शांतिपूर्ण सह अस्तित्व और वसुधैव कुटुंबकम के विचार दिये हैं। महात्मा गांधी इन सबमें विश्वास रखते थे। सर्वधर्म समभाव के संबंध में उनका कहना था कि सब धर्म एक ही स्थान पर पहुंचने के अलग-अलग रास्ते हैं। अगर हम एक ही लक्ष्य पर पहुंच जाते हैं, तो अलग-अलग रास्ते अपनाने में क्या हर्ज है? वास्तव में जितने मनुष्य हैं उतने धर्म हैं।[47] धर्मो की आत्मा एक है, परंतु वह अनेक रूपों में प्रकट हुई है।[48] महात्मा गांधी मानते हैं कि कम या अधिक संसार के सभी बड़े बड़े धर्म सच्चे हैं।[49] सभी धर्म समान और आदरणीय हैं। अहिंसा हमें सिखाती है कि हम दूसरों के धर्मों का वैसा ही आदर करें जैसा हम अपने धर्म का करते हैं।[50]

महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रिका से भारत आने के बाद अपने राजनीतिक गुरू गोपाल कृष्ण गोखले के सलाह के अनुसार पूरे भारत का भ्रमण किया और भारत की खूबियों और खामियों को जाना समझा। उनके विचारों में वह गहराई दिखती है। गरीबी, असमानता, विशाल आबादी, कृषक समाज की आवश्यकता, उद्योगवाद, बेरोजगारी आदि समस्याओं पर भारत के संबंध में व्यावहारिक विचार रखें जिनका आज भी महत्व बरकरार है। उनको भारतीय धर्म, संस्कृति, मूल्यों और मान्यताओं की गहरी समझ थी। इन्हीं में उन्होंने अपना जीवन निर्देशक सिद्धांत सत्य और अहिंसा को अपना कर उसी के अनुसार भारत को गढ़ने का सपना देखा था। उनके विचार कोरे आदर्शवादी नहीं हैं। व्यवहारिकता पर आधारित हैं इसलिए दुनिया भर में इन विचारों से सीखा जा रहा है। नये भारत में भी उनके विचारों से प्रेरणा प्राप्त किया जा रहा है। महात्मा गांधी के विचारो को अपनाकर ही भारत दुनिया में वसुधैव कुटुबंकम, सर्वधर्म समभाव और शांति के उदान्त आदर्शों का विस्तार किया जा सकता है और भारत इसी से विश्व गुरू की भूमिका को चरितार्थ कर पाएगा। अत: आज के भारत में महात्मा गांधी के विचारो की भूमिका अभूतपूर्व है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. रामचन्द्र, गुहा, 2012, *भारत नेहरू के बाद*, पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया, गुड़गांव, पृष्ठ 7
2. अनंत प्रकाश, मोदी सरकार में भारत बनेगा तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, कितनी बदलेगी आम लोगों की जिंदगी, 28 जुलाई 2023, http://www.bbc.com/hindi देखा गया 7 अगस्त, 2023
3. वही
4. वही
5. वही
6. दुनिया के 10 सबसे अमीर देश कौन हैं और भारत किस पायदान पर है, 17 जनवरी 2023, http://www.bbc.com/hindi देखा गया 7 अगस्त, 2023
7. जुबैर अहमद, भारत क्या चीन को अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर पीछे छोड़ देगा? विशेषज्ञों का जवाब, 15 अक्टूबर 2022, http://www.bbc.com/hindi देखा गया 10 अगस्त, 2023
8. वही
9. सुरेश सेठ, आर्थिक छलांग की असली सूरत, देश तीसरी आर्थिक षक्ति बनेगा लेकिन क्या होगा आम आदमी पर असर, 7 अगस्त, 2023, http://www.jansatta.com देखा गया 7 अगस्त, 2023
10. कुमार विवेक, गोल्डमैन सैक्स : 2075 तक अर्थव्यवस्था में अमेरिका को भी पीछे छोड़ देगा भारत, जाने कौन होंगे टॉप-3 देश, 11 जुलाई 2023, http://www.amarujala.com देखा गया 7 अगस्त 2023
11. अनंत प्रकाश, पूर्वोक्त
12. जुबैर अहमद, पूर्वोक्त
13. अनंत प्रकाश, पूर्वोक्त
14. ऑक्सफैम की रिपोर्ट : 1 प्रतिशत अमीरों के पास देश की 40 प्रतिशत से ज्यादा संपत्ति, 50 प्रतिशत आबादी के पास सिर्फ 3 प्रतिशत संपत्ति, 17 जनवरी 2023, http://www.bhaskar.com देखा गया 10 अगस्त 2023
15. सुरेश सेठ, पूर्वोक्त
16. अनंत प्रकाश, पूर्वोक्त
17. गांधीजी, 1955, *सर्वोदय*, भारतन् कुमारप्पा (संपादित), नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृष्ठ 49
18. गांधीजी, 1949, *हिन्द स्वराज्य*, अमृतलाल ठाकोरदास नाणावटी (हिन्दी अनुवाद), नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृष्ठ ळीं

19. वही
20. गांधीजी, *सर्वोदय*, पूर्वोक्त, पृष्ठ 48
21. गांधीजी, 1959, *मेरा समाजवाद*, आर.के.प्रभु (संग्राहक), नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृष्ठ 27
22. वही, पृष्ठ 25
23. ऑक्सफैम की रिपोर्ट, पूर्वोक्त
24. गांधीजी, 1951, *रचनात्मक कार्यक्रम : उसका रहस्य और स्थान,* तृतीय परिवर्धित आवृत्ति, काशिनाथ त्रिवेदी (हिन्दी अनुवाद), नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, पृष्ठ 40
25. वही
26. गांधीजी, *मेरा समाजवाद*, पूर्वोक्त, पृष्ठ 28
27. *भारत का संविधान,* 2021, विधि और न्याय मंत्रालय, विधायी विभाग, भारत सरकार, पृष्ठ 21
28. गांधीजी, *मेरा समाजवाद*, पूर्वोक्त, पृष्ठ 24
29. वही, पृष्ठ 27
30. रिजवान नूर खान, भारत दुनिया का सबसे ज्यादा आबादी वाला देश बना-चीन को पीछे छोड़ा, यूएस तीसरे नंबर पर, 19 अप्रैल 2023, http://www.hindieconomictimes.com देखा गया 10 अगस्त 2023
31. वही
32. आलोक टंडन, जनवरी-जून 2016, *नेहरू और अम्बेडकर : भारतीय आधुनिकता के दो चेहरे,* अभय कुमार दुबे (संपादित), *प्रतिमान : समय समाज संस्कृति*, वर्ष 4, अंक 7, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 18-19
33. शंभुनाथ, अक्टूबर 2019, *गांधी के प्रयोग : सत्य और उत्तर-सत्य,* शंभुनाथ (संपादित), *वागर्थ,* भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका, वर्ष 25, अंक 291, पृष्ठ 7
34. गांधीजी, 1960, *मेरे सपनों का भारत*, आर.के.प्रभु (संग्राहक), नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृष्ठ 127
35. वही, पृष्ठ 130
36. गांधीजी, 1963, *ग्राम स्वराज्य,* हरिप्रसाद व्यास (संग्राहक), नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृष्ठ
37. सुरेश सेठ, पूर्वोक्त
38. गांधीजी, *हिन्द स्वराज्य*, पूर्वोक्त, पृष्ठ 15
39. गांधीजी, *मेरे सपनों का भारत*, पूर्वोक्त, पृष्ठ 108
40. विपुल सिंह, 2015, *पर्यावरण पर मानव पदचिन्ह : पर्यावरण परिवर्तन के ऐतिहासिक संदर्भ,* ट्रिनिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृष्ठ 146
41. कमल नयन काबरा, जनवरी-जून 2016, *विकास का नया विमर्ष बनाम उपभोक्तावाद,* अभय कुमार दुबे (संपादित), *प्रतिमान : समय समाज संस्कृति*, वर्ष 4, अंक 7, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 153
42. विपूल सिंह, पूर्वोक्त, पृष्ठ 77
43. गांधीजी, *ग्राम स्वराज्य,* पूर्वोक्त, पृष्ठ 15
44. गांधीजी, *सर्वोदय*, पूर्वोक्त, पृष्ठ 94
45. वही, पृष्ठ 95
46. वही
47. गांधीजी, 1957, *सत्य ही ईश्वर है*, आर.के.प्रभु (संपादित), नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृष्ठ 58
48. वही, पृष्ठ 57
49. वही
50. गांधीजी, *सर्वोदय*, पूर्वोक्त, पृष्ठ 28

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

English for a Specific Purpose: Essay Writing for Undergraduate Students in North India

Dr. Omprakash Upadhyay*

***Assistant Professor (English) Kamla PG College, Dholpur (Raj.) INDIA**

Abstract : English for a Specific Purpose (ESP) focuses on tailoring language instruction to meet the academic or professional needs of learners. In North India, undergraduate students often face challenges in essay writing due to linguistic and structural differences between English and their native languages. This research paper explores the importance of ESP in enhancing essay writing skills among North Indian students, analyzing the challenges they face and providing pedagogical strategies to improve their proficiency.

Introduction - English has become an essential tool for academic and professional success worldwide. In North India, where English is widely used in higher education, undergraduate students often struggle with essay writing due to linguistic interference, limited exposure to English, and inadequate training in academic writing conventions. English for a Specific Purpose (ESP) offers a focused approach to address these challenges by customizing language instruction to meet students' academic needs.

This paper aims to analyze the essay writing difficulties faced by North Indian undergraduate students and propose effective strategies within the ESP framework to enhance their writing proficiency.

Challenges Faced by North Indian Undergraduate Students in Essay Writing

Linguistic Interference: The influence of native languages such as Hindi, Punjabi, and Bengali often leads to grammatical errors and awkward sentence structures in English essays.

Limited Vocabulary and Expression: Many students struggle with academic vocabulary and fail to express complex ideas clearly.

Lack of Understanding of Essay Structure: Students often struggle with thesis statements, coherence, cohesion, and logical argumentation.

Grammar and Syntax Issues: Common errors include subject-verb agreement, incorrect tense usage, and misplaced modifiers.

Inadequate Exposure to Academic Writing: The lack of academic writing training in schools and universities leaves students unprepared for university-level essays.

ESP-Based Strategies to Improve Essay Writing Skills

Needs Analysis: Identifying specific linguistic and academic needs of students can help tailor the instruction accordingly.

Explicit Teaching of Essay Structure: Introducing students to thesis statements, topic sentences, supporting details, and conclusion strategies.

Lexical Development: Incorporating vocabulary-building exercises to enhance students' academic language proficiency.

Grammar-Focused Activities: Implementing targeted grammar instruction to address common errors.

Process-Based Writing Approach: Encouraging brainstorming, outlining, drafting, peer review, and revision to improve writing quality.

Use of Technology: Digital tools such as Grammarly, Turnitin, and online writing labs can provide feedback and help students refine their writing skills.

Interactive Learning Methods: Group discussions, peer evaluations, and workshops can make the learning process more engaging and effective.

Case Study: Implementation of ESP Strategies in a North Indian University

A study was conducted in a North Indian university where ESP-based essay writing instruction was introduced to undergraduate students. The intervention included structured lessons on essay writing, vocabulary enhancement, and grammar exercises. Pre- and post-intervention assessments showed significant improvement in students' writing clarity, coherence, and grammatical accuracy.

Conclusion: ESP-based instruction plays a crucial role in enhancing essay writing skills among North Indian undergraduate students. By addressing linguistic challenges and incorporating structured writing strategies, students can

develop their academic writing proficiency. Future research can explore the long-term impact of ESP interventions and the role of digital tools in further improving essay writing skills.

References:-

1. Basturkmen, H. (2010). Developing Courses in English for Specific Purposes. Palgrave Macmillan.
2. Dudley-Evans, T., & St John, M. J. (1998). Developments in English for Specific Purposes: A Multi-Disciplinary Approach. Cambridge University Press.
3. Hyland, K. (2006). English for Academic Purposes: An Advanced Resource Book. Routledge.
4. Jordan, R. R. (1997). English for Academic Purposes: A Guide and Resource Book for Teachers. Cambridge University Press.
5. Swales, J. M., & Feak, C. B. (2012). Academic Writing for Graduate Students: Essential Tasks and Skills. University of Michigan Press.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

सोनभद्र जिले में मनरेगा का क्रियान्वयन : एक सामाजिक अंकेक्षण

डॉ. गुंजन श्रीवास्तव*

* सहायक प्रवक्ता (समाज शास्त्र) दि महाराजा सैय्याजी राव विश्वविद्यालय, वड़ौदरा (गुजरात) भारत

प्रस्तावना – सरकार द्वारा चलायी जाने वाली विभिन्न प्रकार की योजनाओं में वर्तमान में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योजना मनरेगा है। राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कानून (नरेगा) 7 सितम्बर 2005 को अधिसूचित किया गया था। प्रथम चरण में यह सुविधा 200 जिलों में उपलब्ध करायी गई थी। अगले 3 वर्षो में क्रमिक रूप से 600 जिलों में इसे लागू करना था। वर्ष 2007–08 में इस कानून का विस्तार 330 अतिरिक्त जिलों में किया गया, जबकि बाकी जिलों को इसमें शामिल करने की अधिसूचना 01 अप्रैल 2008 को जारी की गई।

भारत सरकार द्वारा नरेगा उत्तर प्रदेश राज्य में 2 फरवरी 2006 में प्रत्येक वित्तीय वर्ष में एक ग्रामीण परिवार को 100 दिन का अकुशल श्रमिक के रूप में रोजगार प्रदान करने की गारंटी के रूप में प्रारम्भ किया गया। वर्तमान में मनरेगा श्रमिको की औसत मजदूरी 289/– रुपये प्रतिदिन हो गई है। तदुपरान्त शीघ्र ही यह योजना राज्य के 22 जिलों में 5 वर्ष के लिए शुरु की गई, ये जिले आजमगढ़, बांदा, बाराबंकी, चंदौली, चित्रकूट, फतेहपुर, गोरखपुर, हमीरपुर, हरदोई, जालौन, जौनपुर, कौशाम्बी, खेरी, कुशी नगर, ललितपुर, महोबा, मिर्जापर, प्रतापगढ़, रायबरेली, उन्नाव, सीतापुर, सोनभद्र हैं।

सोनभद्र जिले का भौगोलिक, प्रशासनिक, सामाजिक व आर्थिक विवरण : भारत देश के प्रमुख राज्य उत्तर प्रदेश की जनसंख्या लगभग 16.61 करोड़ तथा क्षेत्रफल 241 हजार वर्ग किलोमीटर है। राज्य के कुल 70 जिलों में सोनभद्र मात्र एक ऐसा जनपद है, जहाँ सबसे ज्यादा प्राकृतिक खनिज, जल ऊर्जा, वन सम्पदा एवं प्राकृतिक सुन्दरता मौजूद है। सोनभद्र का क्षेत्रफल 6.788 वर्ग किलोमीटर है, जो कि प्रारम्भ से ही जनजातिय संस्कृति का केन्द्र रहा है। सोनभद्र जनपद का सृजन 4 मार्च 1989 को किया गया था। यह 23.52 और 25.32 उत्तरी अंक्षाश तथा 82.33 पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसकी सीमा बिहार, झारखण्ड, मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ से मिलती है। यहाँ औसत वर्षा 1134 मिलीमीटर आंकी गई है। अधिकांशत: पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण जल संचय का कोई उचित प्रबन्ध न होने के कारण हर वर्ष जनपद को सुखे का सामना करना पड़ता है।

प्राकृतिक बनावट की दृष्टि से जनपद को 4 भागों में विभाजित किया जा सकता है– उत्तर की गंगा, सोन, कर्मनाशा और बेलन का मैदानी भाग, दक्षिण का सोन, रेण, बिजुल, कनहर से प्रभावित कैमूर रेंज का पठारी भाग, पूरब का बेलन, कर्मनाशा का मैदानी भाग तथा पश्चिम का बेलन का मैदानी भाग। दुद्धी, नगवा, घोरावल, अगोरी आदि का अधिकतम भाग वनों से आच्छादित है। जनपद के 75 प्रतिशत भागों में वन है जिनसे इमारती लकड़िया, आँवला, हर्रा, बहेड़ा, मछुआ, बीड़ी, पत्ता, आम आदि वस्तुएँ प्राप्त की जाती है। जनपद का 25 प्रतिशत भाग मैदानी है, जहाँ खेती–बारी होती है।

सारिणी संख्या–1: सोनभद्र जिले की जनांकिकी, सामाजिक व आर्थिक स्थिति

		पुरुष	महिला	योग
1.	जनसंख्या (हजार में)	971.34	891.21	1862.60
2.	साक्षरता दर	74.92%	52.14%	64%
3.	गरीबी रेखा के नीचे परिवारों की संख्या (1997–98)	163893 (ग्रामीण)	6898 (नगरीय)	170791
4.	अनुसूचित जाति (हजार में)	–	–	421.66
5.	अनुसूचित जनजाति (हजार में)	–	–	385.02

स्रोत : सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद–सोनभद्र, कार्यालय–अर्थ एवं सांख्याधिकारी अर्थ एवं संख्या प्रभाग, वर्ष 2005

नोट : उपर्युक्त आँकड़े जनपद के वर्ष 2011 के जनगणना के आँकड़ो पर आधारित है तथा निर्धनता रेखा के नीचे के परिवारों की संख्या का आधार 1997–98 वर्ष है।

शोध प्रारुप : सोनभद्र में कुल 8 विकास खण्ड है; दुद्धी, घोरावल, राबर्ट्सगंज, चतरा, नगवा, चोपन, श्योरपुर, वभनी। पूरे ब्लॉको में से एक ब्लॉक नगवा का चुनाव साधारण दैवनिदर्शन पद्धति द्वारा (Simple Random Sampling Method) किया गया। इस ब्लॉक के सम्पूर्ण गाँवों में से केवल दो गाँव का चयन उद्देशीय विधि द्वारा किया गया था, जो कि नक्सलवादी क्षेत्र के रूप में पहचाना जाता है। इस सर्वेक्षण हेतु जुलाई, 2008 में अध्ययन क्षेत्र में जाया गया। तत्पश्चात् साक्षात्कार पूर्व निरीक्षित किये हुए प्रश्नावली का प्रयोग करके परिवार के मुखिया से मनरेगा से सम्बन्धित क्रियाकलापों के बारे में जानकारी प्राप्त की गई, जिसको प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषण द्वारा मनरेगा से सम्बन्धित योजनाओं के उपयोग एवं प्राप्त होने वाले सुविधाओं के बारे में प्रदर्शित किया है, जिसके अन्तर्गत दो गाँवों रामपुर तथा करौंदिया के 284 परिवारों का अध्ययन शामिल है। व्यैक्तिक सूचना पुन: सर्वेक्षण क्षेत्र में अक्टुबर 2009 में एकत्रित किया गया था, जिसके अन्तर्गत दोनों गाँवों के 100 व्यक्तियों का अध्ययन शामिल है जो कि मनरेगा के अन्तर्गत लाभान्वित हो रहे थे और इन सूचनाओं को श्रेणीबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र मनरेगा के अन्तर्गत कार्योजित मजदूरों के सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक स्थिति में होने वाले व्यापक परिवर्तन पर आधारित है।

मनरेगा के अन्तर्गत प्रदत्ता आय-व्यय का विवरण : सोनभद्र में मनरेगा का प्रारम्भ 2 फरवरी 2006 को प्रथम चरण के साथ ही हुआ था। अप्रैल 2010 तक नगवा ब्लॉक के रामपुर व करौंदिया गाँवों के लिए अवमुक्त राशि क्रमश: 3.28 तथा 6.31 लाख रुपये हैं, जबकि सम्पूर्ण सोनभद्र क्षेत्र के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मनरेगा के लिए आवंटित राशि 10262.85 लाख रुपये हैं जिनमें चालू वित्तीय वर्ष (2009-10) के द्वारा हुआ खर्च मात्र 3258.91 लाख रुपये ही है। सारणी-2 से प्राप्त सरकारी आँकड़े इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं कि वर्ष 2006-07, वर्ष 2007-08 व वर्ष 2008-09 के दौरान मनरेगा के अन्तर्गत सरकार द्वारा

सारिणी संख्या-2: विभिन्न वित्तीय वर्षो के अनुसार मनरेगा के अन्तर्गत लाभान्वित परिवारों पर किये गये खर्च का विवरण

	खर्च का विवरण(लाख रुपये में)	2006-07	2007-08	2008-09
1.	प्रारम्भिक अवशेष धनराशि	0	0.657	2.94
2.	वर्ष में प्राप्त धनराशि	3.08	13.95	21.72
3.	अन्य प्राप्तियाँ (ब्याज सहित)	0.00	0.00	0.02
4.	कुल उपलब्ध धनराशि	3.08	14.63	24.60
5.	कुल व्यय धनराशि	2.44	10.57	24.12
6.	कुल व्यय धनराशि के सापेक्ष श्रम एवं सामग्री पर व्यय धनराशि का अनुपात	62: 37	62:38	49 : 51

स्रोत : www.sonbhadra.nic.in

सारिणी संख्या-3: मनरेगा के अनतर्गत लाभान्वित परिवारों की संख्या व जानकारियों का वर्षवार विवरण

		2006-07	2007-08	2008-09
1.	कुल जॉबकार्ड धारक परिवारों की संख्या	198	410	410
2.	वर्ष के दौरान रोजगार की मांग करने वाले परिवारों की संख्या	48	75	115
3.	वर्ष के दौरान रोजगार प्राप्त करने वाले परिवारों की संख्या	48	75	115
4.	वर्ष के दौरान प्रति परिवार औसत कार्य दिवसों की संख्या	35	55	40
5.	बैंक/पोस्ट ऑफिस में बचत खाता खोलने वाले परिवारों की संख्या	0	0	200
6.	वर्ष के दौरान 100 दिनों का रोजगार पाने वाले परिवारों की संख्या	0	5	12

सारिणी संख्या-4: मनरेगा से लाभान्वित होने वाले परिवारों का वर्गीकरण

लाभान्वित	संख्या	प्रतिशत
हाँ	102	35.90
नहीं	182	64.10
योग	284	100.00

सारिणी संख्या-5: रोजगार योजना में रोजगार प्राप्त सदस्यों की संख्या के अनुसार वर्गीकरण

सदस्य संख्या	संख्या	प्रतिशत
1	64	62.70
2	29	28.40
3	7	6.90
4	2	2.00
योग	**102**	**100.00**

उपलब्ध करायी गई धनराशि पूर्ण रूप से व्यय नहीं की जा सकी और प्रत्येक वर्ष आवंटित धनराशि का कुछ अंश अवशेष रह गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि या तो सरकारी आँकड़ो को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया या फिर उस क्षेत्र में कार्य को आशानुरुप सम्पन्न नहीं कराया गया। एक अन्य तथ्य यह उजागर होता है कि इसकी नींव में भ्रष्टाचार फलित हो रही है। वर्ष 2006-07 व वर्ष 2007-08 के दौरान जहाँ श्रम पर व्यय सामग्री पर व्यय के अनुपात में अधिक है, किन्तु वहीं वर्ष 2008-09 में यह अन्तर काफी कम है जो कि श्रम व सामग्री पर व्यय के सन्दर्भ में भ्रष्टाचार को प्रदर्शित करता है (द्रेज, ज्यां, खेड़ा, रीतिका व सिद्धार्थ, 2008)।

सारिणी-3 से स्पष्ट है कि मनरेगा के माध्यम से औसत 100 दिन के रोजगार का लक्ष्य हासिल नहीं हो पाया है। ग्राम पंचायत रामपुर में 2008-09 के दौरान पंजीकृत 410 परिवार है। वर्ष 2006-07 में 35 प्रतिशत, वर्ष 2007-08 में 55 प्रतिशत तथा वर्ष 2008-09 में 40 प्रतिशत कार्यदिवस प्रत्येक परिवार द्वारा निर्मित किये गये, जिनमें पूरे 100 दिन का रोजगार वर्ष 2006-07 में 0 प्रतिशत, वर्ष 2007-08 में 1.2 प्रतिशत तथा वर्ष 2008-09 में 2.92 प्रतिशत परिवारों को ही प्राप्त हुआ। आँकड़ो से स्पष्ट है कि ऐसे परिवार की संख्या बहुत कम है जिन्होंने वर्ष में 100 दिन का रोजगार प्राप्त किया (कौशिक, जगबीर, 2010)।

सारिणी-4 व सारिणी-5 द्वारा जुलाई 2008 में मनरेगा से लाभान्वित परिवारों का वर्गीकरण स्पष्ट होता है, जिसमें 35.9 प्रतिशत परिवार ही मनरेगा से लाभान्वित हुए थे जिसमें 62.7 प्रतिशत लोग परिवार के एक मात्र सदस्य थे जो कि रोजगार प्राप्त कर सके थे, जिससे मनरेगा के अन्तर्गत प्राप्त मजदूरी में अनियमितता परिलक्षित होती है।

मनरेगा द्वारा लाभान्वित एवं प्रभावित व्यक्तियों के सामाजिक, आर्थिक एवं व्यैक्तिक विवरण का अध्ययन :

सारिणी संख्या-6: पारिवारिक मासिक आय तथा व्यय के अनुसार उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

मासिक आय			मासिक व्यय		
आय (रु0)	संख्या	प्रतिशत	व्यय (रु0)	संख्या	प्रतिशत
200-900	127	44.7	300-900	82	28.9
900-1800	110	38.70	900-1800	135	47.5
1800-2700	32	11.30	1800-2700	37	13.00
2700-4500	15	5.30	2700-6000	30	10.60
योग	284	100.00		284	100.00

सारिणी संख्या-7: मनरेगा द्वारा लाभान्वित परिवारों पर पड़ने वाले विभिन्न प्रकार के प्रभावों का वर्गीकरण

क्र.	विभिन्न प्रभाव	हाँ (%)	नहीं (%)	पता नहीं (%)
1	आर्थिक स्थिति में सुधार	25	65	10
2	भरण-पोषण में सहायक	10	80	10
3	ऋण भुगता में सहायक	45	50	5
4	चिकित्सा में सहायक	40	45	15
5	पारिवारिक कलह में वृद्धि	70	20	10
6	दहेज में वृद्धि	75	15	10
7	सामाजिक समरसत्ता में वृद्धि	65	18	17

नोट : उपर्युक्त आँकड़े अक्टुबर 2009 में किये गये पुन: सर्वेक्षण के दौरान व्यैक्तिक अध्ययन द्वारा लिये गये हैं, जिसमें 100 व्यक्तियों का अध्ययन सम्मिलित है।

जुलाई 2008 में किये गये सर्वेक्षण के दौरान 284 उत्तरदाताओं में 193 पुरुष व 91 महिलायें सम्मिलित की गई। प्रस्तुत सर्वेक्षण क्षेत्र में जनजातिय समुदाय की बाहुल्यता है, जहाँ पिछड़ा वर्ग 14.1 प्रतिशत तथा अनुसूचित जाति 15.1 प्रतिशत है, वहाँ जनजातियों का प्रतिशत 70.8 प्रतिशत के लगभग है। सारिणी संख्या-6 मासिक पारिवारिक आय-व्यय को स्पष्ट करता है, जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आय की तुलना में व्यय अधिक है क्योंकि जहाँ न्यूनतम मासिक पारिवारिक आय 200/- रुपये है वहीं न्यूनतम मासिक पारिवारिक व्यय 300/- रुपये हैं। दूसरी तरफ अधिकतम मासिक पारिवारिक आय 4500 रुपये व मासिक पारिवारिक व्यय 6000/- रुपये है अर्थात लगभग सभी परिवार जीविकोपार्जन हेतु कर्ज लेने के लिए विवश है।

सारिणी संख्या-7 से स्पष्ट है कि मनरेगा के अन्तर्गत लाभान्वित परिवारों में से 45 प्रतिशत ग्रामीण निर्धन ऋण भुगतान कर पाने में सक्षम सिद्ध हो रहे हैं; वहीं इसका दूसरा पक्ष यह दर्शाता है कि मनरेगा के द्वारा ग्रामीण ऋण ग्रस्तता को प्रोत्साहन प्राप्त हो रहा है। भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों में वर्तमान में भी साहूकार प्रथा व्याप्त है, जिनके द्वारा मनमाने ब्याज दर पर ग्रामीण निर्धनों को कर्ज उपलब्ध कराया जा रहा है (अधिकारी, अनन्दिता और भाटिया, कार्तिका : 2010)। सामान्य मजदूर यह सोचता है कि भविष्य में काम मिलने पर वह इसे चुका सकने में सक्षम सिद्ध होगा। किन्तु जब भविष्य में उसे काम प्राप्त नहीं हो पाता तो उसकी स्थिति पहले से ज्यादा बदतर हो जाती है। इसका अप्रत्यक्ष प्रभाव आने वाली पीढ़ी पर पड़ेगा, जब विरासत में उसे धन, सम्पत्ति, जमीन प्राप्त न होकर कर्जा प्राप्त होगा और निर्धनता का दुष्चक्र पूर्व रूप में कायम रहेगा और पीढ़ी दर पीढ़ी निरन्तर चलता रहेगा। रामपुर ग्राम पंचायत की दौलतिया (35 वर्ष) अब काफी खुश है। उसका कहना है कि 'फाकाकशी के दिन लद गये तो छोटका बेटा कलुआ स्कूल जाने लगा है और हम दो साल से सोचते-सोचते रेड़ियो भी खरीद लिये।' इससे स्पष्ट है कि मनरेगा के द्वारा एक तरफ तो ग्रामीणों को अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहन प्राप्त हो रहा है वहीं दूसरी ओर अधिक से अधिक मजदूरी प्राप्त करने की लालसा में ये बाल श्रम को भी प्रोत्साहित कर रहा है। 40 वर्षीय विधवा सतवंशी अपने बच्चों को काम पर भेजने के लिए मजबूर है।

मनरेगा ने ग्रामीणों को खरीद क्षमता तथा आमदनी को भी प्रभावित किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में मजदूरी की दर और कार्यदिवसों की संख्या में वृद्धि से ग्रामीण परिवारों की आमदनी बढ़ गई है। आमदनी बढ़ने के फलस्वरुप ग्रामीण परिवारो की अनाज, अन्य आवश्यक वस्तुएँ खरीदने और शिक्षा एवं स्वास्थ्य की देखभाल करने की क्षमता में वृद्धि हुई है। (देखे सारिणी-5, सारिणी-6, सारिणी-7) मनरेगा के माध्यम से प्राप्त मजदूरी के द्वारा ग्रामीण अपने कृषि के लिए आवश्यक निवेश (खाद, बीज व कीटनाशक आदि) का खर्च वहन कर पा रहे हैं, इसके साथ ही उनके पास जो भी भूमि उपलब्ध है, उसमें सब्जियों या कम मौसमी चक्र वाले फसल लगाकर अपने परिवार के जीविकोपार्जन के लायक थोड़ा बहुत अन्न या सब्जियाँ अवश्य उपजा ले रहे हैं, जबकि इससे पूर्व गाँव में इनकी भूमि अभिसिंचित व बंजर अवस्था में पड़ी रहती थी।

मनरेगा से प्राप्त मजदूरी वर्ष में अल्प समय के लिए ही सही पोषण युक्त भोजन उपलब्ध कराती है और जो लोग अक्सर फाके की स्थिति में अपना जीवन व्यतीत करते हैं उन्हें भोजन उपलब्ध कराती है। करौंदिया पंचायत के बनारसी का कहना है कि 'भला हो सरकार व पंचायत का, जिन्होंने यहाँ काम चालू करवाकर मुझ जैसे भूमिहीन व्यक्ति को मजदूरी पर लगाया, जिससे मेरे घर-परिवार के लिए रोजी कमाने का आसरा मिला।'

सारिणी संख्या-7 से स्पष्ट है कि मनरेगा सामाजिक समरसत्ता का द्योतक भी सिद्ध हो रहा है क्योंकि मनरेगा के अन्तर्गत जातीय असमानता को प्राथमिकता न देकर निर्धनता को प्राथमिकता दी जा रही है। यहाँ क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र, ब्राह्मण सभी एक समान है, जिससे ग्रामीण भारत में व्याप्त जातीय गुट की अवधारणा स्वत: ही कमजोर सिद्ध हो रही है। मनरेगा के अन्तर्गत समान कार्य के लिए समान वेतन उपलब्ध कराया जा रहा है।

मनरेगा का सबसे बड़ा योगदान गाँवों के विकास में वहीं के ग्रामवासियों की सहभागिता तथा साथ में उन्हें रोजगार की प्राप्ति भी हुई है। मनरेगा के माध्यम से मजदूर अपना व अपने परिवार का खर्च वहन करने में सक्षम हो गया है, किन्तु मनरेगा का अन्य दुष्प्रभाव यह है कि यह ग्रामीणों के समक्ष सीमित काम को प्रस्तुत कर देगा। सरकार द्वारा 100 दिन का रोजगार उपलब्ध कराकर ग्रामीण निर्धनों से तालाब बनवाया जा रहा है। स्कूल, भवन व सड़क आदि बनवाये जा रहे हैं किन्तु इसके अन्तर्गत किसी भी प्रकार की प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं है जो कि ग्रामीणों के जीवन में उत्तरोत्तार वृद्धि तय करें। प्रत्येक गाँव की कुछ पारम्परिक विशिष्टता होती है, सरकार द्वारा उस विशिष्टता को प्रशिक्षण द्वारा प्रोत्साहित न करके उन्हें ऐसे कार्यो में नियोजित किया जा रहा है, जिसकी एक सीमा है, जिससे उस क्षेत्र के पारम्परिक उद्योगों पर दुष्प्रभाव पड़ेगा। अत: इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि योजना के अन्तर्गत कृत्रिम रोजगार की वृद्धि में मुख्य रोजगार की हानि होगी, इससे हानिकारक दुष्चक्र स्थापित हो सकता है। रोजगार गारंटी कार्यक्रम का उद्देश्य बेरोजगारों को रोजगार उपलब्ध कराना था परन्तु इससे कार्यरत रोजगारों का ही क्षय होने लगा।

मनरेगा व महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति पर प्रभाव : सारिणी संख्या-8

सामाजिक समावेशन	2006-07	2007-08	2008-09
वर्ष में सृजित मानव दिवस	1613	4130	4599
(अ) कुल			
(ब) कुल में अनु0 जाति	45	43	155
(स) कुल में अनु0 जनजाति	1485	4032	8878
(स) कुल में महिलायें	785	1655	2105

स्रोत : www.sonbhadra.nic.in

रामपुर गाँव की कुल जनसंख्या 1428 में 704 पुरुष व 724 महिलायें हैं। अत: जनसंख्याओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व पुरुषो की अपेक्षा अधिक है। साथ ही सारिणी संख्या-9 से स्पष्ट है कि मनरेगा के अन्तर्गत कुल सृजित मानव दिवसों में महिलाओं की भागीदारी लगभग 50 प्रतिशत है। जनजातिय क्षेत्रों में महिलाओं को अन्य समाज की अपेक्षा ज्यादा अधिकार प्राप्त होते हैं। लिये गये उत्तरदाताओं में 91 महिलायें व 193 पुरुष वर्ग है। मनरेगा के अन्तर्गत महिलाओं को प्राप्त सबसे प्रमुख लाभ आर्थिक आत्मनिर्भरता है, जिसके फलस्वरुप वह कई महत्वपूर्ण विषय पर स्वयं निर्णय लेने में सक्षम हो गई है। मनरेगा के माध्यम से महिलाओं के हाथों में पहुंचे धन तथा अनाज से '**मानव विकास सूचकांक**' में आशाजनक वृद्धि हुई है (कटारिया सुरेन्द्र : 2010)। सर्वेक्षण से यह तथ्य सामने आया है कि मनरेगा में मजदूरी कर रही महिलाओं ने अपनी आजीविका को पशु खरीदने, उनका उपचार कराने, बच्चों की पढ़ाई, रोगोपचार, पेयजल, पौष्टिक भोजन, बर्तनों तथा वर्षो से बची रही किसी मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति में लगाया। जबकि दूसरी तरफ पुरुष अपनी मजदूरी शराब सेवन करने पर व्यय करता है, जैसा कि सारणी संख्या-7 से स्पष्ट है कि इससे सामाजिक नैतिकता का पतन हुआ है और पारिवारिक कलह में वृद्धि हुई है। साथ ही मनरेगा के माध्यम से महिलायें आवश्यक घरेलू सामान जैसे सिलाई मशीन, बर्तन, कपड़े, गहने खरीद रही है किन्तु इससे दहेज को प्रोत्साहन मिल रहा है। सारिणी संख्या-7 के अनुसार 75 प्रतिशत ग्रामीणों का ऐसा मानना है।

मनरेगा का अन्य अप्रत्यक्ष प्रभाव यह है कि पुरुष वर्ग धीरे-धीरे महिला वर्ग पर आश्रित होता जा रहा है तथा पुरुषो का बच्चों की शिक्षा, माता-पिता व परिवार की जिम्मेदारी से अलगाव होता जा रहा है। ग्रामीण महिलाओं पर काम का बोझ अत्यन्त बढ़ गया है क्योंकि उन पर घरेलू व बाहरी काम दोनों का दबाव बढ़ गया है और उन पर दोहरा उत्तरदायित्व भी बढ़ गया है, जिससे उनका शारीरिक एवं मानसिक दोहन हो रहा है, जो कि उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहा है, क्योंकि परिवार का सर्वांगीण विकास तभी सम्भव है, जबकि पति-पत्नी में परस्पर सहयोग हो किन्तु नकारात्मक सम्बन्ध बच्चों के पालन-पोषण पर दुष्प्रभाव डालती है।

रामपुर ग्राम पंचायत की महिला प्रधान मनभावती का कहना है कि 'इससे गाँव में खुशियाँ ही खुशियाँ आ गई। महिलाओं की स्थिति में पहले की अपेक्षा काफी सुधार हुआ है, कम से कम छोटी-मोटी जरूरतों के लिए वह अब किसी की मोहताज नहीं है।' यद्यपि सर्वेक्षण के दौरान यह स्पष्ट हुआ कि कार्यस्थल पर महिलाओं को प्रदान की जाने वाली सुविधाओं के सम्बन्ध में कोई उचित प्रबन्ध नहीं कियागया क्योंकि न तो वहाँ शिशुओं की देख-रेख हेतु क्रेंच की व्यवस्था है और न ही कोई चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध है। महिलाओं को सामान्यत: पुरुषों की सहायक के रूप में पैसा दिया जाता है जो कि सामान्य मजदूरी से काफी कम होता है। यद्यपि ग्रामीण क्षेत्र में कृषि क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं के योगदान के बावजूद उन्हें कृषक का दर्जा प्रदान नहीं किया जाता। वहीं मनरेगा के अन्तर्गत महिलाओं को प्राथमिकता प्रदान की गई है और उन्हें समान कार्य के लिए समान वेतन प्रदान किया जा रहा है (खैरा, रीतिका व नायक, नन्दिनी : 2009)।

मनरेगा और प्राकृतिक संसाधनों पर प्रभाव : रामपुर गाँव की अधिकांश ग्रामीण जनसंख्या जनजातिय हैं, अत: उनकी प्रकृति पर निर्भरता स्वत: ही सम्भव है। मनरेगा का उद्देश्य सामाजिक वानिकी में वृद्धि करना है चाहे वह जलसंरक्षण के अन्तर्गत तालाब अथवा बंधी के निर्माण द्वारा अथवा वनारोपण द्वारा। वन वर्षा एवं भूमिगत जल स्तर के लिए उत्तरदायी होते हैं। वृक्षारोपण तथा वन संरक्षण सूखा रोकने के लिए अवश्य सम्भावी है। रामपुर व करौंदिया की सूची पड़ी पहाड़ियों को हरा-भर कर पर्यावरण सुधार का कार्य किया गया।

सारिणी संख्या-9: निर्मित स्रोत

कार्य का नाम	2006-07	2007-08	2008-09
बंधी 1 (अपूर्ण)	1 (अपूर्ण)	1 (अपूर्ण)	
तालाब	1	0	0
पौधारोपण	-	-	पूर्ण
निजी भूमि पर तालाब	0	1	3

स्रोत : www.sonbhadra.nic.in

इसी गाँव के कृषक जो अपनी जमीन बंजर जैसी होने के कारण मजदूरी कर अपना जीवन यापन करते थे, इस योजना के अन्तर्गत बंधी व तालाब के निर्माण हो जाने के बाद जमीन को सिंचित बना सके। फसल की पैदावर एक चक्रक से बढ़कर तीन चक्र हो गई है।

रामपुर व करौंदिया गाँव में एक तरफ सार्वजनिक स्रोतों का निर्माण कियागया किन्तु जिन सार्वजनिक स्रोतों की अधिक आवश्यकता थी उनके स्थान पर महत्वहीन स्रोतों का निर्माण किया गया जिसमें पानी भी उपलब्ध नहीं है। रामपुर एक पहाड़ी गाँव है जिसमें खेत ढलान पर स्थित है। अत: वर्षा ऋतु में पानी का बहाव तीव्र गति से आता है और खेतों को विनष्ट कर देता है, ऐसे में गाँव में चेकडेम की अधिक आवश्यकता है, जबकि गाँव में 5 तालाबों का निर्माण कर दियागया है और बाँध के नाम पर मात्र 2 वह भी अपूर्ण बाँध है।

मनरेगा तथा नक्सलवाद :

सारिणी संख्या- 10: विकास योजनाओं से पूर्ण लाभ प्राप्त न होने में विभिन्न प्रकार की कठिनाईयों का वर्गीकरण

क्र.	कठिनाईयाँ	संख्या (284)	प्रतिशत
1.	यातायात की असुविधा	240	84.5
2.	प्रधानों द्वारा अवहेलना/रिश्वतखोरी	200	70.4
3.	प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा अवहेलना/रिश्वतखोरी	221	77.8
4.	गरीबी	150	52.8
5.	योजनाओं की जानकार का न होना	162	57.0
6.	शिक्षण संस्थाओं का न होना या दूर होना	68	28.9
7.	स्वास्थ्य/बिजली/पानी की सुविधा	118	41.5
8.	नक्सलियों/दलालों का भय	100	35.2

नक्सलवाद के प्रादुर्भाव का प्रत्येक राज्य में पृथक कारण है किन्तु मूलभूत कारण निर्धनता है और निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रमों द्वारा निश्चित रूप से इस समस्या का समाधान अवश्य सम्भव है। मनरेगा की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि इसकी पहुँच देश के प्रमुख नक्सलवादी क्षेत्रों तक है। रामपुर-करौंदिया जाने वाली सड़क को कागजों पर कई बार बनाया गया। अब राष्ट्रीय समविकास योजना के अन्तर्गत 1.6 करोड़ की लागतसे बनने वाली सड़क आज भी अधूरी ही है किन्तु इस क्षेत्र में नक्सलियों द्वारा मनरेगा के अन्तर्गत किये जाने वाले कार्यो में कोई बाधा नहीं पहुँचायी जाती। सारिणी

संख्या–10 से स्पष्ट है कि मनरेगा जैसी विकास योजना के पूर्ण लाभ प्राप्त न होने में विभिन्न प्रकार की कठिनाईयों में 77.8 प्रतिशत लोगों का मानना है कि प्रशासनिक अधिकारी व रिश्वतखोर जिम्मेदार हैं। उसके पश्चात् 70.4 प्रतिशत प्रधानों को जिम्मेदार मानते हैं जबकि नक्सलियों के भय को मात्र 35.2 प्रतिशत लोग ही जिम्मेदार मानते हैं। अत: इससे स्पष्ट है कि नक्सलवाद को प्रोत्साहित करने में कहीं न कहीं प्रशासनिक अधिकारियों का बहुत बड़ा योगदान है। पूर्व राष्ट्रगति वी0वी0 गिरि का मानना था कि 'बेरोजगारी सब समस्याओं की जड़ है। इसी के कारण देश में नक्सलवाद को बढ़ावा मिला है।' (कटारिया, सुरेन्द्र : 2010) बेरोजगारी व निर्धनता के परिणामस्वरुप जो युवा वर्ग नक्सलवादी गतिविधियों में संलग्न रहते थे, उनकी संख्या में भी काफी कमी आयी है, जो इस तथ्य को उजागर करता है कि यदि प्रकरणों का विकास होगा तो गाँव का विकास होगा जो भविष्य में नक्सलवाद को स्वत: समाप्ति की ओर अग्रसर होगा।

मनरेगा के माध्यम से पिछड़े गाँव विकास की मुख्य धारा में सम्मिलित हो रहे हैं, जिससे गाँव में दूरसंचार माध्यमों का आवागमन हो रहा है। सरकारी कर्मचारियों के सम्पर्क में आने से उन्हें अन्य कार्यक्रमों से सम्बन्धित जानकारी भी प्राप्त हो रही है। मनरेगा के अन्तर्गत प्राप्त मजदूरी से पुरुष मजदूरों द्वारा रेड़ियो, मोबाइल जैसे संचार के साधनों का प्रयोग भी बढ़ रहा है, जिससे उन्हें गाँव से बाहर देश के अन्य भागों में होने वाली गतिविधियों की जानकारी होती है जिससे उनमें जागरुकता में वृद्धि होती है और अज्ञानता में कमी आती है, क्योंकि नक्सलवादियों द्वारा सामान्यत: उनकी अशिक्षा व अज्ञानता का ही लाभ उठाया जाता है।

निष्कर्ष व सुझाव : उपर्युक्त सर्वेक्षण के माध्यम से कुछ प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास किया गया है, स्थानीय दबंग एवं प्रभावी व्यक्तियों एवं अन्य निहित स्वार्थो पर कितना प्रभावी अंकुश लगा है? योजना के लक्षित लाभान्वित दुर्बल–गरीब वर्ग के लोग योजना का कितना लाभ उठा पा रहे हैं? अपने अधिकारों एवं हकों की पहचान करने की कितनी जागरुकता उनमें आयी है? क्रियान्वयन से जुड़ी प्रक्रियाओं में कितनी सहभागिता दुर्बल–लाभान्वित वर्ग को मिल पा रा है? मनरेगा के सन्दर्भ में कुछ सुझाव निम्न है:

1. मनरेगा ग्रामीणों को सीमित कार्य उपलब्ध कराता है, जिसके फलस्वरुप उनके परम्परागत व्यवसायों को क्षति पहुँच रही है। अत: मनरेगा के अन्तर्गत ऐसे प्रावधानों को सम्मिलित करना आवश्यक हैं जिससे स्थानीय संसाधनों का दोहन भलीभांति हो सके और वे स्वयं के आय सृजन में सक्षम हो सकें व जिससे उनके जीवन को एक गति व निरन्तरता प्राप्त हो सके।
2. मनरेगा का उद्देश्य अधिकारों से वंचित समूह को समान अधिकार उपलब्ध कराना है ताकि वे जीवन–यापन के न्यूनतम जीवन–स्तर को प्राप्त कर सकें। इसके अन्तर्गत मजदूरी में वृद्धि करना व बेरोजगारी भत्ता उपलब्ध कराना सम्मिलित किया जाये ताकि इससे जुड़ने वाले व्यक्ति को किसी तरह का आर्थिक नुकसान न हो और सामाजिक शोषण से भी उनकी रक्षा की जा सके।
3. ग्राम सभा का उपयोग मनरेगा के सामाजिक अंकेक्षण में अधिक सार्थक रूप से किया जा सकता है। यदि ग्राम सभा में भाग लेने वाले प्रतिभागियों की जानकारी एवं जागरुकता के स्तर को इस उद्देश्य के साथ बढ़ाया जाये कि वे मनरेगा का काम लेते हुए उसकी कमियों को इंगित कर सके।
4. ग्रामीण जनता में शिक्षा जानकारी एवं जागरुकता बढ़ाकर उन्हें 'शासित' वाली मानसिकता से उबारना है तथा अपने हक व अधिकारों को पहचान कर सामाजिक अंकेक्षण में प्रभावी जनसहभागिता करने में सक्षम बनाना है तो दूसरी ओर क्रियान्वयन तंत्र को पारदर्शी, जवाबदेह एवं संवेदनशील बनाने तथा उसमें सामाजिक अंकेक्षण की स्वीकार्यता बढ़ाकर उसे शासक वाली मनोवृत्ति से निकालकर लोक–सेवक मनोवृत्ति में ढालने की तरफ उन्मुख करना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. अधिकारी, अनिन्दता और भाटिया, कार्तिका, 2010,'नरेगा वेज पेमेन्ट्स : केन वी बैक ऑन द बैंक्स', इकोनॉमिक एण्ड पॉलिटिकल वीक्ली, xiv(1), 2 जनवरी : 30–37।
2. द्रेज, ज्यां; खेड़ा, रीतिका; सिद्धार्थ, 2008,'नरेगा में भ्रष्टाचार : मिथक और वास्तविकता', योजना वर्ष : 53(8), अगस्त : 15–16।
3. खेरा, रीतिका और नायक, नन्दिनी 2009 :'वूमेन वर्कर्स एण्ड पर्सेप्शन्स ऑफ द नेशनल रूरल इम्प्लायमेन्ट गारंटी एक्ट', इकोनॉमिक एण्ड पॉलिटिकल वीक्ली,xiv(43) 24 अक्टुबर : 49–57।
4. केसरी, अर्जुनदास, 1994,'यह सोनभद्र है', लोकरुचि प्रकाशन, सोनभद्र।
5. सिंह, रघुवंश प्रसाद, 2008, 'राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के दो साल', योजना वर्ष : 53(8), अगस्त : 7–10।
6. सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद सोनभद्र, कार्यालय अर्थ वं सांख्याधिकारी अर्थ व संख्या प्रभाग, वर्ष 2005।
7. www.sonbhadra.nic.in
8. कौशिक, जगबीर, 2009,'नरेगा गरीबो का सुरक्षा कवच', कुरुक्षेत्र, वर्ष : 56(2), दिसबर : 3–8।
9. कटारिया, सुरेन्द्र, 2009,'आर्थिक मंदी से जूझने में नरेगा का योगदान', कुरुक्षेत्र, वर्ष: 56(2), दिसबर : 9–12।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Impact of Ayushman Bharat Scheme on Beneficiaries in Rewa, Madhya Pradesh

Eshika Agrawal* Dr. Kumud Shrivastava**

*Research Scholar (Economics) Govt. TRS College, Rewa (M.P.) INDIA
** Professor (Economics) Govt. TRS College, Rewa (M.P.) INDIA

Abstract : The Ayushman Bharat Pradhan Mantri Jan arogya Yojana (AB-PMJAY) is India's flagship health insurance scheme aimed at providing financial protection to economically vulnerable populations. This study examines the impact of the scheme on beneficiaries in Rewa, Madhya Pradesh, focusing on access to healthcare, financial relief and health outcomes. Through a mixed methods approach combining surveys and interviews, this paper highlights both the benefits and challenges faced by beneficiaries. Findings indicate improved healthcare access but also reveal gaps in awareness and hospital participation. Policy recommendations are proposed to enhance the scheme's effectiveness.

Introduction - Healthcare affordability remains a significant challenge in India, particularly for low-income populations. The Ayushman Bharat Pradhan Mantri Jan Arogya Yojana (AB-PMJAY) was introduced in 2018 to provide cashless secondary and tertiary healthcare to over 500 million beneficiaries. This paper investigates how the scheme has affected the beneficiaries in Rewa, Madhya Pradesh, focusing on financial relief, hospital accessibility and service utilization.

Research Objectives:

1. The research will assess the demographics, accessibility and impact of Ayushman Bharat Yojana on population of Rewa.
2. To assess the impact of Ayushman Bharat scheme on healthcare outcomes and financial burden reduction in the region.
3. To evaluate the accessibility and utilization of healthcare services under the scheme.
4. To identify barriers faced by beneficiaries in availing scheme's benefits.

Research Highlights: The research for assessing the situation of Ayushman cardholders in Rewa had gone through several stages which includes use of stratified sampling method to conduct survey of around 100 beneficiaries and interviews from around 20-25 persons, health personnel's, and government officials.

Field Survey Report

(Collected data of about 100 Ayushman card holders through survey and interviews.)

Total Ayushman cardholders surveyed	100
Percentage of cardholders using the scheme for hospitalizations	65% (65 beneficiaries)
Average no. of hospital visits per year (per beneficiary)	2.5
Average distance travelled to nearest empanelled hospital	15km
Average claim amount reimbursed (per hospitalizations)	20,000
Percentage reduction in healthcare costs after using the scheme	60%
Percentage of claims rejected	8%
Beneficiaries reporting satisfaction with services	75%

Further Analysis

1. Demographics of respondents

i. Male – 55%
ii. Female – 45%

2. Age groups:

i. 18-30 years – 20%
ii. 31-50 years – 45%
iii. 51-70 years – 25%
iv. Above 70 years – 10%

3. Financial Impact:

i. Average healthcare expense saved using Ayushman card: Rs 25,000/year per household.
ii. Percentage of respondents reporting no out of pocket expenses: 60%

4. Satisfaction levels:

i. Very satisfied- 50%
ii. Somewhat satisfied- 30%
iii. Neutral- 10%
iv. Dissatisfied- 10%

Analysis of survey reports:

i. Around 65% of surveyed cardholders actively use the

scheme, showing significant adoption but leaving a sizeable portion unutilized.

ii. Beneficiaries report an average 60% reduction in out of pocket expenses, indicating improved affordability.

iii. An average distance of 15km to hospitals suggests moderate accessibility but may be a barrier for rural populations.

iv. A satisfaction rate of 75% shows positive perception but leaves room for addressing grievances related to claim rejections.

Conclusion: The questions arose at the starting of the research or the hypothesis proclaimed have been turned out to be true and explained briefly throughout the report.

The healthcare services provided are quite affordable and easily accessible to people seeking healthcare aid, thus benefitting them in the best way possible for all those who cannot afford quality treatment for several diseases.

Thus, it ensures welfare of people since:

i. The scheme is well- utilized, with a significant majority relying on public hospitals.

ii. Financial relief is notable, reducing financial pressure on patients.

iii. Awareness campaigns enhancing scheme's reach and effectiveness.

iv. Helping people with different socio-demographic background.

Challenges associated to the

PM-JAY-AB scheme: Though, this scheme of government comes with several benefits, it also includes several leakages or loopholes:

i. Firstly, India is not a corruption free nation, starting from the making of Ayushman cards to availing services and free treatment involves various malpractices.

ii. Hospitals sometimes charge unnecessarily from patients in order to increase the bill to avail the full insurance amount by the government.

iii. Not every hospital in a district is empanelled to provide its benefits, somewhere in rural areas only a few hospitals are authorized to provide treatments under AB PM-JAY scheme.

Recommendations:

i. Firstly, regular verification of beneficiaries should be done to check proper functioning of the scheme.

ii. Secondly, hospitals empanelled under the scheme should also remain under continuous check to create a corruption free environment from people.

iii. Policymakers should be more focused on increasing hospital network coverage and improving claim processing systems.

iv. Proper grievances redressed mechanism should be enforced.

v. The hospital network should be increased to provide healthcare access in private hospitals along with government ones.

Reference:-

1. Personal Research.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय चित्रकला के वर्तमान आयाम व प्रो0 भगवती प्रकाश काम्बोज

कुलदीप कुमार* डॉ. निशा गुप्ता**

* शोधार्थी (चित्रकला) जे0 के0 पी0 पीजी कॉलेज, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) भारत
** एसोसिएट प्रोफसर (चित्रकला) जे0 के0 पी0 पीजी कॉलेज, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) भारत

शोध सारांश – चित्रकला का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना मानव सभ्यता का विकास। जैसे जैसे मानव का विकास हुआ वैसे –वैसे उसकी कला भी विकसित होती गयी। कला का उदय मानव की सौन्दर्य भावना का परिचायक है। आधुनिक कला विभिन्न आयामों के साथ पल्लवित एवं पुष्पित हो रही है। भारतीय चित्रकला के आधुनिक युग का प्रारम्भ 20वीं सदी से माना जाता है। अवनीन्द्रनाथ ठाकुर भारतीय चित्रकला के पुनरूद्धारक रूप में प्रतिष्ठित हुए। इन्होंने देशी–विदेशी शैलियों का अध्ययन किया। नन्दलाल बसु अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रिय शिष्यों में से एक रहे हैं, जिन्होंने जलरंग व टेम्परा में ही प्राय: अपने चित्रों को बनाया है। कला और पहाड़ों के प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति प्रो. काम्बोज का लगाव जन्मजात है। प्रो. भगवती प्रकाश काम्बोज का जन्म 15 अगस्त 1928 ई. में देहरादून में हुआ था। इनके पिता का नाम गौरीशंकर था। बचपन से ही इनमें चित्रकला व प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति विशेष रूचि रही।

प्रस्तावना – चित्रकला का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना मानव सभ्यता का विकास। मनुष्य ने जिस समय प्रकृति की गोद में आँखें खोली उसी समय से ही उसने अपनी मूक भावनाओं को तूलिका के माध्यम से गुफाओं व चट्टानों की भित्तियों पर अभिव्यक्त किया। उसके जीवन की कोमल भावनाएँ तथा संघर्षमय जीवन की सजीव झांकियाँ उस समय की कलाकृतियों में आज भी सुरक्षित है। जैसे जैसे मानव का विकास हुआ वैसे –वैसे उसकी कला भी विकसित होती गयी। कला का उदय मानव की सौन्दर्य भावना का परिचायक है। रवीन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में– 'कला में मनुष्य अपनी अपने विचारों की अभिव्यक्ति करता है।'

भारतीय चित्रकला का विकास मानव सभ्यता के विकास के साथ–साथ ही आरम्भ होता है। आरम्भ से ही मनुष्य अपनी मन:स्थिति को तूलिका के माध्यम से चट्टानों व गुफाओं की भित्तियों पर अभिव्यक्त कर सहज आनन्द की अनुभूति करता आया है।

किसी समय विशेष में मनुष्य जिस माहौल में रहा है अर्थात् उसके बीते असभ्य व सभ्य जीवन, शासक के आचार विचार, धार्मिक प्रभाव आदि ने चित्रकार की अभिव्यक्ति को गहराई से प्रभावित किया है। इसी कारण चित्रकार ने कभी स्वतंत्र होकर चित्रण किया तो कभी अपने संरक्षक को खुश करने के लिए। धार्मिक भावना ने मानव हदय को कठोर , हिंसक व आदिम प्रवृति से सहज कोमल मनोंभावों की ओर रूपान्तरित किया। बौद्ध धर्म का इसमें प्रमुख स्थान रहा है। गोतम बुद्ध से प्रभावित होकर अनेक बौद्ध भिक्षुओं ने अजन्ता की जातक कथाओं पर आधारित भित्ति चित्रों का निर्माण किया। ऐसा लगता है मानो असंख्य बौद्ध भिक्षु अपनी छैनी तथा तूलिका के माध्यम से सृजन करते हुए भगवान बुद्ध की साधना में लीन हो गये। इन भित्ति चित्रों पर किसी चित्रकार का नाम नहीं मिलता, लगता है कि गुरू–शिष्य के मधुर सम्बन्ध और समर्पण की भावना इन चित्रों में उतर आई हो। सम्भवत: शिष्य ने इसलिए अपना नाम नहीं लिखा क्योंकि उसमें उसके गुरू का भी कार्य था और गुरू ने इसलिए नहीं लिखा कि उसमें शिष्य का भी चित्रण कार्य था।

पोथी चित्रण में बौद्ध धर्म से प्रेरित पाल चित्रशैली तथा जैन धर्म से प्रेरित अपभ्रंश चित्रशैली ने ताडपत्र चित्रण मे प्रसिद्धि पाई।राजस्थानी शैली की मेवाड, मारवाड, हाडौती, ढूँढाडी शैलियाँ लघु चित्रों के रूप में फली फूली। किशनगढ चित्रशैली में निहालचन्द द्वारा बनाये गये बनी–ठनी के सौन्दर्यपूर्ण चित्र को भारतीय मोनालिसा की संज्ञा दी जाती है। भारतीय और ईरानी शैलियों के योग से बनी मुगल चित्रशैली ने अकबर, जहॉगीर, शाहजहाँ के समय में विशेष प्रसिद्धि पाई व शासक ने अपने शासक की रूचि के अनुरूप चित्रण किया। पहाडी चित्रशैली में भगवान कृष्ण की लीलाओं का बडा सुन्दर चित्रण किया गया।

अंग्रेजी शासन में पनपी कम्पनी शैली में चित्रकारों ने अंग्रेज अधिकारियों के अनुरूप चित्रण किया। पाश्चात्य प्रभाव भारतीय कला पर स्पष्ट आने लगा। राजा रविवर्मा ने यूरोपीय तकनीक से प्रभावित होकार तैल माध्यम में पौराणिक चित्र बनाये। अवनीन्द्रनाथ टैगोर के प्रयासों से चित्रकला के विकास की यह धारा बंगाल शैली से होते हुए आधुनिक कला संगठनों की ओर बढती चली गयी। आज कलाकार अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति के लिए स्वतन्त्र चित्रण कर रहा है।

मुख्य भाग – आधुनिक कला विभिन्न आयामों के साथ पल्लवित एवं पुष्पित हो रही है। भारतीय चित्रकला के आधुनिक युग का प्रारम्भ 20वीं सदी से माना जाता है। राजा रवि वर्मा केरल के प्रसिद्ध कलाकार थे जिन्होंने यूरोपियन शैली का अनुकरण करके भारतीय देवी–देवताओं तथा पौराणिक व्यक्तियों के चित्रों को तैल माध्यम में चित्रित किया है। वे भारत में तैल–चित्रण तकनीक को प्रारम्भ करने वाले अग्रणी कलाकार के रूप में जाने जाते हैं। श्रीकृष्ण और बलराम, रावण, सीता और जटायु, शकुन्तला, इन्द्रजीत की विजय, हरिश्चन्द्र आदि उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

अवनीन्द्रनाथ ठाकुर भारतीय चित्रकला के पुनरूद्धारक रूप में प्रतिष्ठित हुए। इन्होंने देशी–विदेशी शैलियों का अध्ययन किया। बाद में ई0वी0 हैवेल की प्रेरणा के फलस्वरूप ही भारतीय कला के स्रोत अजन्ता, एलोरा तथा राजपूत शैलियों का भी अध्ययन किया। भारतीय कला को विदेशी दासता से मुक्त कराने में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। इन्होंने जापानी चित्रकारों के प्रभाव

से एक नई विधि 'वाश टैकनीक' को जन्म दिया।

नन्दलाल बसु अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रिय शिष्यों में से एक रहे हैं, जिन्होंने जलरंग व टेम्परा में ही प्राय: अपने चित्रों को बनाया है। साथ ही आपने वाश टैकनीक में भी अनेक प्रसिद्ध चित्रों की रचना की है। हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन की चित्र सज्जा में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

'भारतीय कला-परम्परा में विनोद बिहारी मुखर्जी का योगदान भी बहुत महत्वपूर्ण है। आपकी कला में विविधता है। भित्ति चित्र, कोलाज, वुडकट तथा केलीग्राफी आदि सभी प्रकार का कार्य आपने किया है। मुखर्जी की कला भारत की आधुनिक चित्रकला के विकास की वह कड़ी है जिसने उसे ऐसी स्वायत्तता प्रदान की जिसका आज वह सुख भोग रही है। आपने अतीत को अनदेखा नहीं किया बल्कि उसके आवश्यक पक्षों को नये युग के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया। पुल, जंगल, मन्दिर का घण्टा तथा मध्यकालीन हिन्दी सन्त आपकी कुछ प्रसिद्ध कृतियाँ है।'[1]

अमृता शेरगिल एक प्रतिभापूर्ण नारी-कलाकार थी। आज जब हम भारतीय चितेरों की बात करते हैं, तो अमृता का नाम आते ही एक ऐसा व्यक्तित्व सामने आ खड़ा होता है, जिसकी कला पूर्व और पश्चिम की कला शैलियों के संगम के रूप में ही नहीं बल्कि भारत में आधुनिक कला के जन्मदाता के रूप में प्रतिष्ठित की जा सकती है। अमृता शेरगिल पहली भारतीय महिला थी जिन्होंने बीस वर्ष की अल्पायु में ही विदेशों में अपना सिक्का जमा लिया था। वधु का शृंगार, केले बेचते हुए, हाट जाते हुए, गणेश-पूजा, हल्दी पीसती औरतें, चारपाई पर विश्राम करती स्त्री, आदि आपके प्रसिद्ध चित्रों में से हैं।

'दाढ़ी व जुल्फों के श्वेत बालों से आवृत नारंग हँसमुख चेहरा, सफेद खादी का कुर्ता-पायजामा पहने, नंगे पैर, लम्बे कद का, लम्बे डग भरता व्यक्तित्व था एम0एफ0हुसैन का, उस हुसैन का जो स्वयं एक जिन्दा तस्वीर थे। ख्याति तो यूँ अनेक भारतीय चित्रकारों को मिली, पर प्राय: कॉफी हाउस में तथा युवावर्ग के बीच जब कला की चर्चा होती है तो हुसैन का नाम अवश्य अपने आप आ जायेगा। जो सम्मान व लोक प्रियता पिकासो को मिली है वही भारत में हुसैन को दिलखोलकर मिली है, सभी ओर से मिली है। सन् 1973 ई0 में गणतन्त्र दिवस पर भारत सरकार ने पद्म भूषण की उपाधि से हुसैन को सम्मानित किया था।'[2]

हुसैन बुनियादी तौर पर एक प्रतीकवादी चित्रकार थे जिन्होंने असंख्य चित्रों की रचना की हैं। चित्रों में घोड़े की आकृति हुसैन का प्रतीक बन चुके थे। वहीं दूसरी ओर 'रजा की रंगों के प्रति संवेदनशीलता निरन्तर बढ़ती गयी है।'

कला और पहाड़ों के प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति प्रो. काम्बोज का लगाव जन्मजात है। नई सृजनात्मक प्रकृति की पहचान उनके काम में स्पष्ट दिखलाई पड़ती है। प्रो. भगवती प्रकाश काम्बोज का जन्म 15 अगस्त 1928 ई. में देहरादून में हुआ था। इनके पिता का नाम गौरीशंकर था। बचपन से ही इनमें चित्रकला व प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति विशेष रूचि रही।

'प्रो0 काम्बोज का विवाह 31, जनवरी सन् 1959 में पारिवारिक रीति-रिवाज के अनुसार श्रीमती इन्दिरा से हुआ। इनकी पत्नी की शिक्षा बी0ए0 थी। उस समय ग्रेजुएट होना बहुत बडी बात मानी जाती थी। श्रीमती इन्दिरा तीन भाईयों में अकेली बहन थी। प्रो0 काम्बोज की दो पुत्रियाँ और एक पुत्र है। सबसे बडी पुत्री श्रीमती श्रुति काम्बोज ने एम0एस0सी0 रसायन विज्ञान से की तथा एम0 फिल0 की डिग्री प्राप्त की। डॉ0 ऋचा काम्बोज ने नेशनल म्यूजियम से एम0ए0 हिस्ट्री ऑफ आर्ट से किया और गाल्ड मेडलिस्ट रही तथा डॉक्टरेट की डिग्री भी प्राप्त की। ये एम0 के0 पी0 पीजी कॉलेज, देहरादून में विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं। इस प्रकार इनका पूरा परिवार शिक्षा के क्षेत्र से जुडा रहा। प्रो0 काम्बोज का जीवन बहुत ही आनन्द से व्यतीत हो रहा था अचानक ही फरवरी 2016 में इनकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया।'[3]

इन्होंने चित्रकला में परास्नातक की डिग्री डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज देहरादून से प्राप्त की। ये मृत्युपर्यन्त कला सृजन में सलंग्न रहे तथा विभिन्न एकल तथा सामूहिक कला प्रदर्शनियों में प्रतिभागिता करते रहे। इन्होंने देहरादून में कला के क्षेत्र को विस्तार देने के लिए अथक प्रयास किये। प्रो. बी.पी. काम्बोज अपनी कलाकृतियों के माध्यम से जनमानस के हृदय में सौन्दर्य रूपी दीपक को प्रकाशित करना चाहते थे। वे समाज को अध्यात्मिकता, आपसी प्रेम, सौहार्द की भावना, समाज सेवा तथा देश-भक्ति का संदेश देना चाहते थे। उनके चित्रों में प्रकृति के प्रति प्रेम और लगाव स्पष्ट झलकता है। उन्होंने अपने चित्रों में लकड़ी के प्राकृतिक पोत का प्रभाव सौन्दर्यपूर्ण ढंग से दर्शाया है। बुश से छिटकने के बाद उनके भावों को रंगों ने प्रेरणा के नये आयाम दिये है। निरंतर नई सृजनात्मक प्रवृति की पहचान बन चुके इस महान शख्सियत की कृतियों ने सरहद की सीमाओं को लांघा है। प्रो. काम्बोज जी की कला के प्रति रूचि, लगन व निष्ठा के मूल मन्त्र को साबित करने का सशक्त उदाहरण है। उन्होंने ड्राइंग एण्ड पेंन्टिग में एम.ए. किया और एक चित्रकार के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की।

राष्ट्रीय आधुनिक कला वीथिका, नई दिल्ली तथा ललित कला अकादमी में आपका कार्य प्रदर्शित होता रहा। उन्होंने उत्तरांचल में कला की गतिविधियों को गति प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किये। कलाधरोहर के सरंक्षण तथा प्रतिभावों को संगठित करने के उद्देश्य से उन्होंने वहाँ उत्तरांचल कला परिषद का गठन किया। इस परिषद् का अध्यक्ष इन्हें ही नियुक्त किया गया। इन्होंने सरकार को कला की चेतना जगाने के लिए सुझाव दिये, जिससे इन्हें सरकार की ओर से सहयोग भी मिला। देहरादून में पहली प्रदेश स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे नवोदित कलाकारों को आगे बढ़ने का अवसर मिला। वे आगरा कॉलेज आगरा में कला विभाग में फैकल्टी ऑफ डीन रहे। वे कला शिक्षा में आदर्श शिक्षक की भूमिका को हमेशा प्रभावपूर्ण मानते थे। उनका मानना था कि हमारी शिक्षण पद्धति में मोटिवेशन नहीं है, इसी कमजोरी ने कला से जुड़े लोगों को ऐसी छूट प्रदान की है, जो नवोदित कलाकार सीखने की उम्र में अवार्ड के सपने देखने लगते है। मूल लक्ष्य से भटककर श्रेष्ठता को छूना असम्भव ही है। युवाओं का समय से पहले अधिक महत्वकांक्षी होना कला के क्षेत्र के लिए लाभप्रद नहीं है। वे कहते थे कि आधुनिक कला शैली से कलाकार प्रभावित है और कुछ नया करने की ललक में निरंतर परिवर्तन आम हो गया है।

कला और कलाकार के प्रचार-प्रसार के लिये अब छोटे-बड़े शहरों में कला वीथिकाएँ खुल गई है, जिनके द्वारा कलाकारों को प्रसिद्धि भी प्राप्त हो रही है। कला को जन-साधारण तक पहुँचाने तथा नये कलाकारों को आगे आने के अवसर प्रदान कर रही वीथिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. समकालीन कला, अंक 19, जून 2001, पृष्ठ संख्या 03
2. आधुनिक भारतीय चित्रकला डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल पृष्ठ संख्या 52
3. चिन्मय मेहता, उत्तराँचल की कला प्रकृति पर्यावरण एवं समाज से प्रतिबद्ध चित्रकार काम्बोज क कला सम्पदा एव वैचारिकी, अंक 10-मई-जून 2004

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

सरकारी कामकाज में हिंदी : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. आराधना सिंह*

* एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी) मंगलायतन विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारत में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है, लेकिन सरकारी कामकाज में इसके व्यापक उपयोग को लेकर अब भी कई चुनौतियॉ बनी हुई है। यह शोध आलेख सरकारी कामकाज में हिन्दी की वर्तमान स्थिति, उसके संवैधानिक प्रावधानों, प्रशासनिक बाधाओं, तकनीकी चुनौतियों और संभावित समाधान उपायों का विश्लेषण करता है। हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए नीति सुधार, तकनीकी विकास, प्रशासनिक प्रशिक्षण और कानूनी अनुवाद की आवश्यकता पर चर्चा की गई है। अत: सरकारी कार्यों में हिन्दी का प्रभावी उपयोग प्रशासनिक दक्षता पारदर्शिता और जनता की सहभागिता को बढ़ाने में यह आलेख सहायक हो सकता है।

शब्द कुंजी – सरकारी कामकाज, राजभाषा हिंदी, प्रशासनिक भाषा, भाषा नीति हिंदी और संविधान, सरकारी कार्यालयों में हिंदी, तकनीकी विकास और हिंदी, भाषा संबंधी चुनौतियॉ।

प्रस्तावना – हिन्दी हमारी मातृभाषा है, जिसके उत्थान की कामना सदैव भारतीय जनमानस में रही है। कभी भारतेन्दु ने निजभाषा उन्नति में ही समस्त उन्नति की बात कही थी यह उनकी चिन्ता भी थी और चिन्तन भी कि भाषा यदि उन्नत हो तो राष्ट्र भी उन्नति के पथ पर अग्रसर होगा।

भारत एक बहुभाषी देश है जहां विभिन्न भाषाएं और बोलियां बोली जाती है स्वतंत्रता के बाद, हिन्दी को राजभाषा के रुप में स्वीकार किया गया, ताकि प्रशासनिक कार्यों में एकता और सुगमता लाई जा सके। हालांकि सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को लेकर अभी भी कई चुनौतियां बनी हुई हैं।

संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत हिन्दी को भारत के राजभाषा के रुप में स्वीकृत किया गया था। यह निर्णय इसलिए लिया गया क्योंकि हिन्दी देश की एक व्यापक रुप से बोली जाने वाली भाषा है और इसे अधिकांश लोग समझते थे। हिन्दी को सरकारी कामकाज की भाषा बनाने का उद्देश्य प्रशासनिक कार्यों को सुगम बनाना और जनता तक सरकार की नीतियों व योजनाओं को सहज रुप से पहुंचाना था।

राजभाषा अधिनियम 1963 के अनुसार हिन्दी और अंग्रेजी दोनो ही केन्द्र सरकार के कार्यालयों में उपयोग की जाती हैं, साथ ही राज्यों को उनकी क्षेत्रीय भाषाओं में कार्य करने की अनुमति दी गई हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा विभिन्न योजनाएं चलाई जाती है, जैसे कि हिन्दी कार्यशालाएं, राजभाषा पुरुस्कार और कम्प्यूटर पर हिन्दी टाईपिंग को बढ़ावा देना।

यद्यपि आधुनिक जीवन के विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग होने लगा है। इसीलिए प्रयोजनमूलक स्तर पर हिन्दी ने विभिन्न विषयों तथा कार्य क्षेत्रों में अपने-अपने विषय के अनुसार अपना विशिष्ट रूप धारण कर लिया है। सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होने वाली भाषा को कार्यालयी हिन्दी कहा जाता है। कार्यालयी संदर्भ में भी हिन्दी एक विशेष प्रयुक्ति के रूप में उभरी है। वास्तव में कार्यालय की सबसे बड़ी इकाई प्रशासन है जिसके अंतर्गत सरकार को देश के आर्थिक, राजनैतिक, सुरक्षात्मक, शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक आदि अनेक दृष्टियों से प्रशासन का भार संभालना पड़ता है। अत: इन सभी कार्यों में प्रयुक्त भाषा कार्यालयी भाषा होती है। कार्यालयी हिन्दी का स्वरूप सामान्य बोलचाल की हिन्दी से भिन्न होती है। इसकी प्रकृति प्राय: तकनीकी और औपचारिक होती है और वह काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी आदि से अलग होती है। इसमें जो कुछ कहा जाता है वह बंधे बंधाये वाक्यों या परिभाषिक शब्दावली के भीतर कहा जाता है।

मसौदा-टिप्पणी लेखन, पत्राचार, संसदीय कार्य और प्रतिवेदन लेखन से लेकर सरकारी नीति संबंधी विवरण तक के साहित्य की भाषा अपने-अपने रूप को लिए होती है।

प्रशासनिक कार्यालयों में हिन्दी प्रयोग को वरीयता मिल रही है, बैंक, जीवन बीमा निगम, डाकतार, रेल, आयकर, दूरसंचार, भारत पेट्रोलियम गैस विविध एजेन्सी इस तरह के अन्य कई कार्यालयों में हिन्दी प्रयोग को वरीयता मिल रही है।

विगत वर्षों में हिन्दी का कृष्ण पक्ष ही था कि अधिकारिक स्तर पर वह अपने ही देश के प्रशासन की जुबान नहीं बन पाई। अत: हिन्दी प्रयोजनमूलक हिन्दी के रूप में नये अंदाज में आई किन्तु इसमें भी कुछ खामियाँ निकली। विद्वानों का विचार है कि ये कमियाँ मुख्य रूप से अनुवाद, पारिभाषिक शब्दावली और भाषिक संरचना तथा प्रयुक्ति के स्तर की है। ये कमियाँ और दुर्बलताएँ ही कार्यालयीन हिन्दी की समस्याएँ है। दरअसल प्रशासन के क्षेत्र में संवैधानिक अनिवार्यता के तहत देश के विभिन्न कार्यालयों में जब हिन्दी प्रयोग की बात उठी तब धीरे-धीरे कुछ समस्याएँ भी उठी। इनमें पहली समस्या अनुवाद की थी। अनुवाद के द्वारा अंग्रेजी की जगह आई नई हिन्दी अंग्रेजी से भी कठिन लगने लगी। अवधेश प्रताप सिंह के अनुसार, 'अनुदित हिन्दी में अंग्रेजी के शब्दों के लिए नए-नए गढ़े हुए हिन्दी शब्दों का प्रयोग किया जाने लगा, जिसमें अर्थ पर कम, शब्दों पर अधिक बल दिया जाता है,

परिणामत: वह हिन्दी लोगों के गले नहीं उतर रही है।'[1]

हिन्दी के माधयम से सरकारी कामकाज करने हतु अंग्रेजी में स्थित सारी कार्यालयीन साम्रगी की सुलभ हिन्दी में लाना समय की मांग बन गई। वैसे ही देश में कार्यालयीन अनुवाद की आवश्यकता बढ़ती गई। कार्यालयीन सामग्री के अनुवाद में होने वाली समस्याएँ यह है कि उसकी भाषा मूलत: अमिधामूलक तथा अनालंकृत होती है। कार्यालयीन अनुवाद में एक तरफ प्रत्येक शब्द के साथ बाध्य रहना पड़ता है तो दूसरी तरफ ऐसे अनुवाद को कृत्रिमता एवं अटपटेपन से भी बचना पड़ता है डॉ. राजमणि तिवारी का कथन सही है कि 'कार्यालयी अनुवाद करते समय अनुवादक को छूट लेने की स्वतंत्रता नहीं है। उसे प्रत्येक शब्द का अनुवाद करने की बाध्यता सी प्रतीत होती है। इसका परिणाम यह होता है कि अनुवाद की भाषा कृत्रिम और अटपटी बन जाती है।'[2]

चूंकि देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी है। सरकारी कामकाज हिन्दी में करने को बढ़ावा देने पर जोर दिया जा रहा है, मगर सरकारी विभागों का कामकाज हिन्दी में करने की नसीहत देने वाली केंद्र सरकार के सर्वोच्च मंत्रालय से हिन्दी गायब हो गई। इम्फाल और नार्थ ईस्ट के राज्यों से सूचनाओं के जबाव हिन्दी में आते है लेकिन दिल्ली स्थित मंत्रालयों को हिन्दी नहीं आता। प्रधानमंत्री (पीएमओ) में कामकाज जरूर हिन्दी में होता होगा लेकिन पत्राचार अंग्रेजी में हो रहा है। सूचना के अधिकार के तहत यहाँ से कोई जानकारी हिन्दी में मांगिये। आपको जबाव अंग्रेजी में मिलेगा। हाल ही में संगम नगरी के पार्षद के सवाल का जबाव अंग्रेजी में (पीएमओ ने) भेजा। केन्द्र सरकार के मंत्रालय और विभाग अपना जबाव अंग्रेजी में देते है।'देश की सर्वोच्च जांच एजेंसी सीबीआई के दतर ने हिन्दी मे जबाव दिया।'[3]

किसी भी राष्ट्र में एक या एक से अधिक भाषायें होती है जो सरकारी या प्रशासनिक कार्य के लिए उपयोग की जाती है। जैसे भारत में हिन्दी और अंग्रेजी प्रशासनिक कार्य के लिए उपयोग की जाती है और कुछ राज्य सरकारें हिन्दी के स्थान पर अपने राज्य की भाषा का प्रयोग करती है ऐसी स्थिति में आम बोलचाल की भाषा और प्रशासनिक कार्यालयों की भाषा में बहुत अंतर होता है।

सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग की आवश्यकता का सर्वप्रमुख कारण प्रशासन को सशक्त बनाने के लिए प्रशासन की भाषा जनता की भाषा होनी चाहिए ताकि आम नागरिक आसानी से सरकारी नीतियों, योजनाओं और नियमों को समझ सकें। हिन्दी में सरकारी कामकाज करने से यह लक्ष्य पूरा किया जा सकता हैं।

हिन्दी भाषा का प्रशासनिक रूप अंग्रेजी के ढांचे पर विकसित हुआ। इसलिए 'प्रशासनिक या कार्यालयी हिन्दी और आम हिन्दी भाषा में स्वरूप, सरंचना, वाक्य गठन, शब्द भंडार आदि के स्तर पर बहुत अंतर पाया जाता है। प्रशासनिक कार्य मूल रूप में अंग्रेजी में होता है, उसके बाद हिन्दी में उसका अनुवाद किया जाता है। दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि अंग्रेजी रूप को ही प्रमाणिक माना जाता है।'[4]

कानूनी एवं संवैधानिक बाध्यता होने से हिन्दी को संविधान में राजभाषा का जो दर्जा दिया गया है जिससे यह अनिवार्य हो जाता है कि सरकारी कामकाज में इसका प्रयोग होना चाहिए।

पिछले कुछ वर्षो से यह अनिवार्य कर दिया गया है कि 'प्रशासनिक रिपोर्ट, सरकारी पत्रिकायें, संसद को दी जाने वाली रिपोर्ट सरकारी पत्र, आदेश आदि जहाँ तक हो अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी में भी प्रकाशित की जाये। भारत सरकार के आदेश के अनुसार सरकारी संकल्पों और विधायी अधिनियमों में धीरे-धीरे अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी का प्रयोग करने और जनता की सहायता करने के विचार से जहाँ तक संभव हो सके उन्हें अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी में भी निकाला जाये।'[5]

हिन्दी की उन्नति में अनुवाद कार्य का अभूतपूर्व योगदान है। अनेक हिन्दीतर क्षेत्रों की हिन्दीतर श्रेष्ठ रचनायें अनुवाद के कारण हिन्दी में आ गई है, जिनके कारण हिन्दी निश्चय ही समृद्ध होती जा रही है।

हिन्दी के विकास में सरकार द्वारा उठाये गये कदम – शासकीय स्तर पर विविध योजनाओं का क्रियान्वयन शुरू हुआ तो, हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु रहा है। त्रिभाषा सूत्र का निर्माण एवं क्रियान्वयन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। केन्द्रीय सरकार द्वारा शुरू की गई कई योजनाओंके प्रलोभन हिन्दी अध्ययन, अध्यापन, अनुसंधान एवं विकास में सहायक सिद्ध हुए है। कई सेवाभावी संस्थाएँ जैसे -भारतीय हिन्दी परिषद् दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (मद्रास), राष्ट्रभाषा प्रचार समिति (वर्धा) महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार सभा (पुणे) नागरी प्रचारिणी सभा (काशी), दक्षिण के राज्यों में कार्यरत अनेक संस्थाएँ और महाराष्ट्र हिन्दी परिषद जब से संविधान में हिन्दी को राजभाषा का पद प्राप्त हुआ है तब से प्रशासनिक स्तर पर अनेक योजनाएँ एवं कार्यक्रम कार्यालयों में हो रहे है। हिन्दी लेखन प्रोत्साहन एवं प्रतियोगिता में कर्मचारीगण व्यापक संख्या में भाग ले रहे है। यद्यपि कार्यालयी हिन्दी में हिन्दी के मानकरूप का प्रयोग किये जाने का प्रयास हो रहा है। इस मानक हिन्दी की वर्णमाला, इसे लिखने का ढंग, वाक्य संरचना, व्याकरण आदि निश्चित किया गया है, ताकि सभी वर्गों के अधिकारी कर्मचारी उसी के अनुरूप कार्य कर सके। केन्द्रीय हिन्दी निर्देशालय तथा वैज्ञानिक शब्दावली आयोग इस मानक हिन्दी या राजभाषा के विकास, रूप-स्थिरीकरण एवं इसकी समृद्धि की दिशा में निरंतर प्रयास कर रहे है। विभिन्न कार्यालयों के लिए उपयोगी शब्दावली का भी निर्माण किया गया है। बहुभाषिक कोश भी तैयार किये गये है।

हिन्दी में सरकारी कार्यो में चलन से सम्पूर्ण देश में आत्मनिर्भरता की भावना विकसित होती है और प्रशासनिक कार्यों में स्वदेशी भाषाओं को बढ़ावा मिलेगा।

हिन्दी का प्रयोग करने से सरकारी अधिकारी और आम जनता के बीच संवाद अधिक प्रभावी और पारदर्शी होगा।

सरकारी कामकाज में हिन्दी प्रयोग की चुनौतियॉं – जहॉ सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग की आवश्यकता पर बल दिया जाता है किन्तु किन्तु व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखे तो हिन्दी प्रयोग में आने वाली चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं।

सर्वप्रथम अंग्रेजी का बढ़ता प्रभाव आधुनिक समय में सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है, जिससे हिन्दी को प्रशासनिक कार्यों में वह स्थान नहीं मिल पा रहा है जो उसे मिलना चाहिए।

सरकारी दस्तावेजों वेबसाईटो और कम्प्यूटर प्रणालियों में हिन्दी का पूर्ण रुप भी से उपयोग करने के लिए पर्याप्त तकनीकी संसाधनो की भी कमी हैं।

भारत के अधिकांश कानून और सरकारी नियम अंग्रेजी में बनाए गए है, जिससे हिन्दी में इनका अनुवाद और प्रयोग करना जाटिल हो जाता हैं। सरकारी कार्यो में हिन्दी प्रयोग की एक और समस्या वह है, भारत का बहुभाषी होना। भारत में विभिन्न भाषाएँ और बोलियां बोली जाती है कई राज्यों में

हिन्दी को अपनाने में संकोच किया जाता है क्योंकि वहाँ की क्षेत्रीय भाषाओं का अधिक प्रभाव हैं।

सरकारी दफ्तरों में हिन्दी प्रयोग को बढ़ावा न मिलने का एक कारण यह भी हैं कई सरकारी अधिकारी और कर्मचारी अंग्रेजी को ही प्राथमिकता देते है जिससे हिन्दी का प्रयोग सीमित हो जाता हैं।

सरकारी कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देने के उपाय :-

1. **नीतिगत सुधार –** केंद्र और राज्य सरकारों को ऐसी नीतियां बनानी चाहिए, जो हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करें और इसे प्रशासनिक कार्यों का अभिन्न अंग बनाएं।
2. **तकनीकी विकास –** सरकारी वेबसाईटों, सॉफ्टवेयर और दस्तावेजों में हिन्दी को प्रमुखता देने के लिए तकनीकी सुधार किए जाने चाहिए।
3. **हिन्दी में प्रशासनिक प्रशिक्षण–** सरकारी कर्मचारियों के लिए हिंदी में कार्य करने का प्रशिक्षण अनिवार्य किया जाना चाहिए ताकि वे इसे सुगमता से प्रयोग कर सकें।
4. **हिंदी में कानूनों का अनुवाद –** सभी महत्वपूर्ण सरकारी दस्तावेजों, कानूनो और नीतियों का हिन्दी में अनुवाद किया जाना चाहिए, ताकि नागरिकों को समझने में सुविधा हों।
5. **प्रेरणादायक योजनाएँ–**हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए सरकारी कर्मचारियों को प्रोत्साहन देने की योजनाएँ चलाई जानी चाहिए जैसे हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वालो को पुरुस्कार देना।

सारांश– इस प्रकार हम यही कह सकते हैं कि हिन्दी का भविष्य स्वर्णिम है क्योंकि हिन्दी एक जीवंत भाषा है, इसकी सर्वांगीण उन्नति होगी, वह अपनी देश भाषाओं की प्रवृत्तियों, शब्दावली आदि को आत्मसात कर उत्तारोत्तार देश व्यापक बनेगी इसमें तनिक भी संदेह नहीं। आज तूफान के बादल भले ही छाये हो, वातावरण में गड़गड़ाहट भले ही सुन पड़ती हो पर वह समय दूर नहीं है जब बादल छटेंगे, आकाश निर्मल होगा और स्वच्छ वातावरण की शरदकालीन निर्मल सूर्य रश्मियों में राष्ट्रभाषा हिन्दी का मुख उत्फुल्लित दिख पड़ेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. अर्जुन चव्हाण, मीडिया कालीन हिन्दी स्वरूप एवं संभावनाएँ, राजकमल प्रकाशन।
2. डॉ. अर्जुन चव्हाण, मीडिया कालीन हिन्दी स्वरूप एवं संभावनाएँ, राजकमल प्रकाशन।
3. अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, कृतिका, प्रकाशन वर्ष –12–13
4. डॉ. हरिमोहन, प्रशासनिक हिन्दी, तक्षशिला प्रकाशन, पृ. 52
5. डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी, प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयी हिन्दी, वाणी प्रकाशन,पृ. 12
6. डॉ. संजीव कुमार जैन,अनुवाद विज्ञान, कैलाश पुस्तक सदन।
7. कैलाश नाथ पाण्डेय, प्रयोजन मूलक हिन्दी की नई भूमिका।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के प्ररीक्षणार्थियो की उपलब्धि अभिप्रेरणा का सृजनात्मकता के संदर्भ में अध्ययन

राधा रानी गौतम* डॉ. खेल शंकर व्यास**

* शोधार्थी (शिक्षा) पेसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन, उदयपुर (राज.) भारत
** डीन (शिक्षा) पेसिफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – शिक्षा जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति का एक सशक्त माध्यम है।यह व्यक्ति की नैसर्गिक प्रवृत्तियो का शोधन व मार्गी–करण कर उसे समाज का सक्रिय सदस्य बनाती है। ताकि वह अपने उत्तरदायित्वो का कुशलता पूर्वक निर्वहन कर सके। वर्तमान समय में शिक्षा के उद्देश्य बदल चुके हैं। आज शिक्षा का उद्देश्य न केवल पाठ्यक्रम संबंधी ज्ञान प्रदान करना है बल्कि सह–पाठ्यक्रम व सहगामी क्रियाओ संबंधी जानकारी प्रदान करना भी है, जो कि अनुभव आधारित होता है और इसके लिए विद्यार्थियों का सृजनशील होना आवश्यक है अत: आज शिक्षा का उद्देश्य बालकों को सृजनात्मक बनाने पर बल देता है इसलिए पाठ्यक्रम की रचना इस प्रकार करनी चाहिए ताकि विद्यार्थी अधिक सर्जनशील बन सके, क्योंकि एक सर्जनशील बालक ही अपने अनुभवों, कलाओं, ज्ञान व कौशलों के आधार पर स्वयं को जीवन की विपरीत परिस्थितियों में समायोजित करने की सामर्थ्य रखता है।

अत: आवश्यकता है कि हम बालक के अंदर सृजनात्मक संबंधित विभिन्न गुण जैसे – भावना प्रबंधन, संबंधित घटनाओं के मध्य संबंध बनाना, नवीन विचार उत्पन्न करना संसार में दिए हुए पैटर्न ढूंढना आदि गुणों का विकास कर सके यदि छात्र का बुद्धि स्तर बढ़ेगा तो स्वत: ही उसका प्रभाव उपलब्धि अभिप्रेरणा पर पड़ेगा।

शब्द कुंजी – शिक्षक, शिक्षण परिक्षण संस्थान, उपलब्धि अभिप्रेरणा, सृजनात्मकता।

समस्या कथन – शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत प्ररीक्षणार्थियो की उपलब्धि अभिप्रेरणा का सृजनात्मकता की संदर्भ में अध्ययन।

उद्देश्य :

1. B.Ed संस्थान के प्ररीक्षणार्थियो की उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन।
2. STC संस्थान के प्ररीक्षणार्थियो की उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन।
3. B.Ed संस्थान के प्ररीक्षणार्थियो की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।
4. STC संस्थान के प्ररीक्षणार्थियो की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।
5. B.Ed एवं STC के प्ररीक्षणार्थियो की उपलब्धि अभिप्रेरणा सृजनात्मकता के मध्य सह सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं :

1. B.Ed एवं STC संस्थान के प्ररीक्षणार्थियो की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. B.Ed एवं STC संस्थान के प्ररीक्षणार्थियो की सृजनात्मकता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. B.Ed एवं STC संस्थान के प्ररीक्षणार्थियो की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता के मध्य कोई सहसम्बन्ध नहीं है।

शोध विधि

अनुसंधान प्रारूप : प्रकरण की प्रकृति व उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इस अनुसंधान में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का उपयोग किया गया है।

तकनीक

स्तरीय न्यादर्श तकनीक – प्रस्तुत अध्ययन में स्तरीय न्यादर्श तकनीक का प्रयोग किया गया है इसमें अनुसंधानकर्ता विशिष्ट लक्षणों के आधार पर छोटे–छोटे समजात समूह बनाता है तथा जनसंख्या के स्तरों को निश्चित करता है।

जनसंख्या व न्यादर्श

1. **जनसंख्या**– कोटा शहर के शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान के प्ररीक्षणार्थी।
2. **न्यादर्श**–B.Ed एवं STC शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान के 100 प्ररीक्षणार्थियो को लिया गया है जिसमें 50 छात्र एवं 50 छात्रों को सम्मिलित किया गया है।

आंकड़े संकलन की योजना

प्रयुक्त उपकरण: प्रस्तावित शोध अध्ययन में निम्न उपकरणों का उपयोग किया गया है।

1. **उपलब्धि अभिप्रेरणा**– वी. पी. भार्गव का अभिप्रेरणा मापनी
2. **सृजनात्मकता**– इसके लिए Divergent Production Ability Test Bettery (K.N. Sharma) का उपयोग किया गया इस बैटरी में 6 उप – जांच है यह मुख्य चार सृजन क्षमताओं के साथ–साथ कुल सृजनात्मकता को भी नापती है।

3. आंकड़े का विश्लेषण

1. मध्य
2. मानक विचलन
3. टी–परीक्षण

आंकड़े का विश्लेषण

1. **माध्य–** इसको ज्ञात करने के लिए दो या दो से अधिक स्कोर को जोड़कर उसे स्कोर की संख्या से विभाजित कर देते हैं।
2. **मानक विचलन –** निराश्रित चर को आश्रित चर से तुलना करके विचलन निकाल सकते है।
3. **टी – परीक्षण –** जब दो जनसंख्या के औसत का अंतर निकालना होता है, तब टी–परीक्षण का उपयोग करते है द्य या जब दो माध्यो की तुलना की जाती है।
4. **सहसम्बन्ध –** परस्पर आश्रित चरो के मध्य किसी भी प्रकार के प्रमाण को ज्ञात करने हेतु सहसम्बन्ध का प्रयोग किया जाता है।

आंकड़े का विश्लेषण

परिकल्पना– 1

B.Ed एवं STC के प्ररीक्षणार्थियो की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नही है।

उपलब्धित अभिप्रेरणा

सारणी (गणना)

	N	Mean	S.D	S.E	T.Value	निष्कर्ष
B.Ed	50	60.79	7.31	0.333	0.333	सार्थक अंतर
STC	50	60.55	7.21	0.727		नही है।

सारणी से पता चलता है कि B.Ed के कुल प्ररीक्षणार्थियो के प्राप्तांको का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमश: 60.79 तथा 7.31 और STC के कुल प्ररीक्षणार्थियो के प्राप्तांकों का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन 60.55 तथा 7.21 प्राप्त हुआ दोनों वर्गों के प्राप्तांकों से प्राप्त प्रमाणिक त्रुटि का मन 0.726 प्राप्त हुआ तथा 'टी' का मन 0.333 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 98 पर उपरोक्त 'टी' का मन 0.05 स्तर पर दिए गए स्थानीय मान से कम है। अत: परिकल्पना 0.05 स्तर पर स्वीकृत सिद्ध होती है।

निष्कर्ष अत: यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों वर्गों का उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना– 2

B.Ed एवं STC के प्ररीक्षणार्थियो की सर्जनात्मकता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी (गणना)

hy=2	N	Mean	S.D	S.E	T. Value	निष्कर्ष
B.Ed	50	129.86	18.659	1.9028	0.515	सार्थक अंतर
STC	50	128.88	19.387			नही है।

उपरोक्त सारणी का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि B.Ed के प्राप्तांको का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमश: 129.86 तथा 18.659 और STC के प्ररीक्षणार्थियो के प्राप्तांक को का प्राप्तांको का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन क्रमश: 128.88 तथा 19.389 प्राप्त हुआ। टी प्रशिक्षण सांख्यिकीय विधि के अंतर्गत दोनों वर्गों के प्राप्तांकों से ज्ञात प्रमाणिक त्रुटि का मन 1.9028 प्राप्त हुआ तथा टी–मान 0.515 प्राप्त हुआ स्वतंत्रता के अंश 98 पर उपरोक्त टी का मान 0.05 स्तर पर दिए गए सरणी मान से कम है। अत: परिकल्पना 0.05 स्तर पर स्वीकृत सिद्ध होती है।

निष्कर्ष – अत: यह निष्कर्ष निकलता है कि B.Ed एवं STC के प्ररीक्षणार्थियो की सर्जनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना– 3

B.Ed एवं STC के प्ररीक्षणार्थियो की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

सारणी (गणना)

Hy=2	N	Mean	S.D.	(dx)(dy)		निष्कर्ष
उपलब्धि अभिप्रेरणा	100	60.67	725	29697.71	0.540	सामन्य धनात्मक प्रभाव पड़ता है।
सृजनात्मकता	100	129.37	19.01			

उपरोक्त सारणी का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है की न्यादर्श में चयनित समस्त प्ररीक्षणार्थियो की उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमश: 60.67 तथा 7.25 और सृजनात्मकता का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमश: 109.37 तथा 19.01 प्राप्त हुआ। जबकि इसके प्राप्तांको के विचलनों की गुणनफल का योग 2967.71 प्राप्त हुआ तथा सहसंबंध सांख्यिकी विधि द्वारा इनके मध्य सहसंबंध का मन 0.540 है। जो की धानात्मक सहसम्बन्ध है अर्थात सृजनात्मकता में वृद्धि होने पर उपलब्धि अभिप्रेरणा में सामान्य वृद्धि होती है।

निष्कर्ष – अत: या निष्कर्ष निकलता है की उपलब्धि अभिप्रेरणा व प्ररीक्षणार्थियो की सृजनात्मकता का सामान्य प्रभाव पड़ता है।

परिणाम – प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से निष्कर्ष निकलता है की सृजनात्मकता का बालकों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर सामान्य धनात्मक प्रभाव पड़ता है। अत: जिसमें शब्द निर्माण योग्यता, कहानी लेखन समस्या समाधान योग्यता विभिन्नता एवं समानता को परखने की योग्यता, वाक्य व शीर्षक निर्माण की योग्यता आदि पाई जाती है वह बालक सृजनशील होते हैं। और इन गुणों से उन्हें परीक्षा में उच्च अंक प्राप्त करने को करने में सहायता मिलती है।

सभी विद्यार्थियों में अलग–अलग गुण होते हैं सामान्यत: देखा गया है कि जिन विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर एवं अध्ययन रुचि अधिक होती है, उनकी अकादमिक उपलब्धि भी उच्च होती है। परंतु यह पूर्णतया अनिवार्य नहीं है कि जिन प्ररीक्षणार्थियो में सृजनात्मकता स्तर उच्च थे उनकी अध्ययन रुचि का स्तर व स्मरण शक्ति उच्च हो तथा यह भी स्पष्ट रूप से देखा जाता है जिन प्ररीक्षणार्थियो में उपलब्धि अभिप्रेरणा उच्च हो उनके सृजनात्मकता स्तर में भी भिन्नता होती है।

अत: निष्कर्ष रूप में समस्त प्ररीक्षणार्थियो की उपलब्धि अभिप्रेरणा व सृजनात्मकता में सामान्य सहसम्बन्ध है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. Ai Xiao Xia(08 June 2010)"Creativity And Academic Achievement: An Investigation Of Gender Differences".
2. Abdullah N., Aizan H.T., Sherir J., Kumar Vijay, Malaysia (2009),"Relationship Between Creativity And Academic Achievement: A Study Of Gender Differences".
3. Anwar M.N., Anees M., Asma Khizar, Md. Gulam M.N. Pakistan, 2012,"Relationship Of Creativity Thinking With The Academic Achievement Of Senior Secondary Students".
4. Boloandifar S. Nooreen Noordin, 2013, Malaysia, "Investigation the Relationship Between Creativity And

Academic Achievement", Vol 65.
5. Eladi S., Batdi V., 2015, Turkey,"The Effect Of Different Application On Creativity Regarding Academy Achievement A Meta Analysis".
6. Gajda, 2016 "Effect Of Creativity and Academic Achievement (A Meta Analysis)".
7. Kotreshwaraswami A., 2014, Malaysia, "A Study Of Relationship Between Creativity And Academic Achievement Of Secondary School Puplis.
8. Meera K.P., Remya P. 2015, "Effect of Extensive Reading and Creativity On Academic Achievement In English Language".
9. Naderi H. Abdullah R. Aizan H.T., V. Kumar, Malaysia, 2009, "The Relationship Between Creativity And Academic Achievement".
10. Taylor & Francis, Joseph C. Bentley, Feb. 1966,"The Journal Of Education Research Creativity And Academic Achievement".

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मध्य प्रदेश में कृषि विकास की आधारभूत संरचना (फसल में नियोजन का अध्ययन)

डॉ. भावना भटनागर*

* सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) पी.एम.सी.ओ.ई., शासकीय स्नानतकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, दतिया (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – मध्य प्रदेश भारत का एक प्रमुख कृषि राज्य है और यहाँ की अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। कृषि न केवल राज्य के लोगों को भोजन उपलब्ध कराती है, बल्कि यह रोजगार का एक प्रमुख स्रोत भी है। इस कारण से कृषि को राज्य की अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहा जाता है। कृषि विकास के विभिन्न प्रयासों के माध्यम से ही विश्व के विकसित राष्ट्र आज आर्थिक विकास के शिखर पर पहुँच चुके हैं। इंग्लैंड, जर्मनी, रूस और जापान जैसे देशों के विकास में कृषि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और तीव्र औद्योगिकीकरण के लिए आवश्यक आधार प्रदान किया।

मध्य प्रदेश में कृषि का इतिहास कोई नया इतिहास नहीं है बल्कि यह एक प्राचीन व्यवसाय है। भारतीय समाज में कृषि को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। कृषि विकास के महत्व को स्पष्ट करते हुए डॉ. बी.सी. सिंह ने कहा कि 'सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के विकास के लिए कृषि विकास पहले होना चाहिए और यदि किसी क्षेत्र के विकसित होने से दूसरे क्षेत्र के आर्थिक विकास में बाधा आती है तो वह विकसित क्षेत्र कृषि ही होगा जो अन्य क्षेत्रों के विकास को बाधित करेगा।' इस अध्ययन से यह स्पष्ट है कि कृषि का प्रत्येक राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान होता है क्योंकि कोई भी राष्ट्र खाद्य पदार्थों में आत्मनिर्भरता प्राप्त किए बिना आर्थिक विकास की कल्पना भी नहीं कर सकता।

मध्य प्रदेश की अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह राज्य की बढ़ती हुई जनसंख्या को पर्याप्त मात्रा में खाद्य सामग्री उपलब्ध कराती है। औद्योगिक क्षेत्र में बड़े-बड़े उद्योगों को कृषि से ही कच्चा माल उपलब्ध कराया जाता है जैसे कि सूती वस्त्र, चीनी, चाय, कॉफी, जूट, लकड़ी, वनस्पति घी, तेल आदि उद्योग कच्चे माल के लिए मुख्यत: कृषि पर ही निर्भर होते हैं। साथ ही अन्य लघु उद्योगों को भी कृषि द्धारा ही कच्चा माल उपलब्ध कराया जाता है।

कृषि विकास के माध्यम से राज्य की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया जा सकता है। कृषि विकास का उद्देश्य है कि कृषि आधारित वस्तुओं का अधिक उत्पादन, अधिक आय, अधिक रोजगार और किसानों के लिए बेहतर जीवन स्तर। इस अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि कृषि विकास ही आर्थिक विकास की कुंजी है और यदि राष्ट्र इस लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल रहता है तो स्वाभाविक है कि उस देश का आर्थिक विकास प्रभावित होगा और उसकी समस्त विकास प्रक्रिया अवरुद्ध हो जाएगी।

शब्द कुंजी – कृषि, मध्य प्रदेश, अर्थव्यवस्था, रोजगार, विकास।

फसल नियोजन– म.प्र. एक बड़ा राज्य है। जहाँ किसान ऋणग्रस्त एवं दरिद्र है जिनके पास बहुत छोटे-छोटे कृषि भू-खण्ड है। अत: आर्थिक प्रेरणाओं के फलस्वरूप इनके फसली ढाँचे को परिवर्तित किया जाता है लेकिन अध्ययन के पश्चात् यह बात स्पष्ट होती है कि अभी भी सीमांत कृषक व्यवस्थित रूप से कृषि कार्य करने में असमर्थ है क्योंकि इसके पीछे मूल कारण प्रथम तो भू-खण्ड का आकार छोटा होना है द्धितीय किसान के पास पूँजी के अभाव में निवेश की क्षमता नहीं है तृतीय इनके पास तकनीकि ज्ञान का पर्याप्त अभाव है। इसकी वजह से कृषक व्यवस्थित रूप में कृषि कार्य संपन्न नहीं कर पाते।

वर्तमान युग में फसल नियोजन आधुनिक कृषि का एक महत्वपूर्ण अंग है।तथा स्वस्थ एवं कुशल कृषि व्यवस्था की दृष्टि से यह आवश्यक भी है क्योंकि नियोजन के अभाव में देश के आर्थिक संसाधनों का न तो कुशलतम् उपयोग हो पाता है और न ही उत्पादकता में वृद्धि होती है। अत: फसल नियोजन राज्य की कुशल कृषि व्यवस्था के लिए आवश्यक है। सामान्यता फसल नियोजन के अन्तर्गत कृषि क्षेत्र में कुछ आवश्यक कदम उठाए जाते है। जिनसे प्रथम तो भूमि का सही उपयोग होता है और दूसरे कृषि उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि होती है जिससे कृषकों को आय में वृद्धि होती है। सामान्यता इसके विभिन्न रूप है जो निम्न प्रकार है

(1) फसलों के परिवर्तन का स्वरूप:– फसल नियोजन के अन्तर्गत सबसे प्रथम यह कार्य किया जाता है कि प्रतिवर्ष भूमि के टुकड़े पर फसलों का परिवर्तन किया जाए जिससे मिट्टी की उर्वरता दीर्घकाल तक बनी रहती है और भूमि को पड़ती रूप में छोड़ने की संभावनाएँ कम हो जाती है, साथ ही फसलों के परिवर्तन से नवीन फसल के पौधों में रोग और महामारियों पर नियंत्रण रखने में सहायता मिलती है।

अत: फसल नियोजन की दृष्टि से प्रतिवर्ष नहीं तो कम से कम तीन वर्ष में फसलों में परिवर्तन करना आवश्यक है।

(2) मिश्रित फसल पद्धति का अपनाना:– फसल नियोजन के अन्तर्गत दूसरा कदम यह उठाया जाता है कि कृषि भूमि पर एक ही वक्त में एक ही खेत

में एक से अधिक फसलें बोई जाती हैं यह पद्धति तब अधिक उपयोगी होती है जबकि एक फसल तो अधिक गहरी जड़ों वाली हो और उसके पौधे एक दूसरे से काफी दूरी पर लगाए जाएं तथा दूसरी फसल छोटे पौधों वाली हो जिन्हे कि पहली फसल के दो पौधों के बीच लगाया जाए। इस प्रकार एक ही खेत में एक ही समय में दो फसलों का एक साथ बोना मिश्रित फसल पद्धति कहलाती है। इसका लाभ यह होता है कि प्रथम तो यह दोनों फसले अच्छा उत्पादन देगी और यदि किसी कारणवश एक फसल नष्ट होती है तो दूसरी फसल कम से कम किसान की लागत निकालने में मदद करेगी।

(3) फसलों का वितरण:- फसल नियोजन के अन्तर्गत तीसरा कदम यह उठाया जाता है कि किसान के पास उपलब्ध भूमि में प्रथम तो कौन सी फसलें कौन से क्षेत्र में उगाई जाएँ तथा कितने क्षेत्र में वास्तव में फसल बोई जाए। यही स्थिति जब प्रदेश स्तर पर लगा की जाती है। तो इस बात का अध्ययन किया जाता है कि किस क्षेत्र में कौन सी फसल का उत्पादन किया जाए तथा उस क्षेत्र में कितनी कृषि भूमि पर यह फसल बोई जाए। इसका एक लाभ यह होता है कि उस क्षेत्र में फसल से संबंधित मिट्टी परीक्षण कर फसल को बोया जाता है। जिससे उत्पादन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है और कृषक को विशिष्टीकरण के साथ-साथ पर्याप्त मात्रा में आय प्राप्त होती है।

फसल नियोजन की आवश्यकता:- म.प्र. एक कृषि प्रधान राज्य है तथा कृषि म.प्र. के निवासियों के जीवन का मूल आधार भी है, इसलिए यह आवश्यक है कि प्रदेश में फसल नियोजन को प्राथमिकता के आधार पर अपनाया जाए। फसल नियोजन के अपनाने से प्रदेश की कृषि एवं अर्थव्यवस्था दोनों को ही पर्याप्त लाभ प्राप्त होगें। म.प्र. में फसल नियोजन के लिए व्यापक संभावनाऐं है। लेकिन पिछड़ेपन के कारण इसको अपनाने के अवसर बहुत कम दृष्टिगोचर होते है। जबकि फसल नियोजन आर्थिक समृद्धि को दृष्टि से आवश्यक है। अत: म.प्र. में इसको अपनाने की अत्यन्त आवश्यकता है और इसको अपनाने के लिए जो महत्वपूर्ण कार्य किए जा सकते है वे निम्न प्रकार हैं।

(1) गहन एवं सूक्ष्म अनुसंधान:- फसल नियोजन एक गतिशील प्रक्रिया है अत: इसको अपनाने के लिए बहुत गठन अनुसंधान करना आवश्यक है और इसके लिए वैज्ञानिकों को विशेष कार्य करने होगें। जिसमें सर्वप्रथम इस बात को प्राथमिकता के आधार पर देखना होगा कि राज्य के किन क्षेत्रों के लिए कौन सी फसल उपयुक्त है। इस दृष्टि से कृषि वैज्ञानिकों को अनुसंधान के माध्यमों से फसलों के क्रम में परिवर्तन करना होगा। द्वितीय फसल नियोजन के लिए यह भी आवश्यक है। कि कृषि वैज्ञानिकों को विभिन्न फसलों की ऐसी किस्मों का विकास करना होगा जो कि जलवायु की विषमताओं को सहन कर ले और अधिक उत्पादन भी दे सके। तृतीय कृषि वैज्ञानिकों को प्रदेश स्तर पर ऐसी फसलों का विकास करना होगा जो कि प्रदेश में उपलब्ध विभिन्न मिट्यिों के अनुकूल हो क्योंकि प्रदेश में आज भी ऐसी फसलें बोई जाती है जो मिट्टी के अनुकूल नहीं होती हे। परिणामस्वरूप न तो भूमि का सही उपयोग होता है और नही उचित मात्रा में उत्पादन प्राप्त होता है। जिससे प्रदेश की कृषि व्यवस्था आज भी पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाई है। साथ प्रदेश में अभी भी फसलों की पोषण आवश्यकताओं की सही जानकारी प्राप्त नहीं हो पाती है। जिसके कारण फसलें विभिन्न बीमारियों का शिकार होती है। अत: यह आवश्यक है कि फसलों की पोषण आवश्यकताओं का ठीक-ठीक पता लगाया जाए और विभिन्न फसलों के रोगों, महामारियों का पता लगाया जाए तथा मिट्टी द्वारा छोड़े गये नाइट्रोजन तत्वों का फसलों पर क्या विपरीत प्रभाव पड़ा है इसकी भी जानकारी प्राप्त की जाए। यह कृषि वैज्ञानिकों के अध्ययन का विषय है जो फसल नियोजन के लिए आवश्यक है। और यह सब जानकारियाँ गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन द्वारा ही संभव है।

(2) फसलीय ढाँचे का अध्ययन:- म.प्र. में फसल नियोजन जैसी कोई नीति अभी तक प्राथमिकता क्रम पर लागू नहीं हैं जिसके कारण खादय एवं व्यापारिक फसलों के बीच कोई व्यवस्थित प्रक्रिया नहीं अपनाई जाती है। अत: सरकार को कृषि वैज्ञानिकों के माध्यमों से यह अनुसंधान कराना होगा कि प्रदेश में व्यापारिक एवं खाद्य फसलों के मध्य वितरण की व्यवस्था क्या है तथा कृषकों की कीमतों तथा लगान प्रेरणाओं के प्रति क्या प्रतिक्रिया है, और यह फसल नियोजन के लिए आवश्यक भी है।

(3) कृषकों को प्रेरित एवं प्रशिक्षित करना:- म.प्र. में कृषि एवं कृषकों के पिछड़ेपन का मूल कारण कृषि के प्रति अप्रशिक्षित होना है। इस दृष्टि से वे फसल नियोजन के प्रति अनभिज्ञ है। अत: यह आवश्यक है कि राज्य सरकार ऐसी व्यवस्था करे जिससे कृषकों को कृषि अनुसंधान के परिणामों की सूचना प्रभावशाली ढंग से दी जा सके तथा उन्हें नई कृषि तकनीकि अपनाने के लिए प्रेरित किया जा सके। इससे किसानों में एक नवीन जागरूकता उभर कर आयेगी और वे फसल नियोजन के प्रति पूर्ण रूप से प्रेरित होंगे।

(4) वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना:- फसल नियोजन की आवश्यकता को देखते हुए यह आवश्यक है कि कृषक नवीन कृषि तकनीकि को अपनाए। ऐसी स्थिति में कृषकों को नवीन तकनीकि अपनाने पर कृषि क्षेत्र में अतिरिक्त निवेश का बोझ उठाना पड़ेगा। अत: उन्हें इस बोझ को उठाने के लिए राज्य सरकार को वित्तीय सहायता भी उपलब्ध करानी होगी, इसके लिए सरकार प्रयोग की दृष्टि से फार्म प्रदर्शन करने होंगे साथ ही कृषि क्षेत्र में प्रचलित नवीन तकनीकों के प्रभाव का क्रियात्मक प्रदर्शन करना भी आवश्यक है जिससे कृषकों को उचित एवं प्रभावी मार्गदर्शन दिया जा सके। परिणामस्वरूप किसान वित्तीय सहायता व नवीन तकनीकि को अपनाने के लिए प्रेरित होंगे।

(5) प्रेरणास्पद योजनाएँ लागू करना:- फसल नियोजन के यह आवश्यक है कि विभिन्न फसलों के बीच उचित संतुलन स्थापित किया जाये और इसके लिए आवश्यक है कि सरकार को प्रेरणादायक योजनाएँ लागू करना होगी। ऐसी दशा में सरकार इन योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए उचित किस्म के बीजों एवं रासायनिक खादों को सस्ती दर पर कृषकों को उपलब्ध कराए तथा जो किसान इन योजनाओं के अनुरूप उत्पादन करके अधिक फसल देते है। उन्हें राज्य स्तर पर सरकार पुरस्कृत करें।

ऐसी दशा में कृषकों को प्रोत्साहन प्राप्त होगा और वे सरकारी योजनाओं के प्रति विशेष रूप से जागरूक होंगे। जिससे फसल नियोजन को अपनाने में सफलता प्राप्त होगी।

उक्त अध्ययन के आधार पर स्पष्ट है कि म.प्र. में फसल नियोजन की मूलभूत आवश्यकता है, और यह तभी संभव है जब सरकार और किसान मिलकर इस दिशा में प्रयास करें कृषक इस कार्यक्रम में जागरूक हों और नवीन तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित हो तथा सरकार किसानों को फसल नियोजन के प्रति प्रेरित करने के लिए बीज, खाद, पानी आदि रियायती दरों पर उपलब्ध कराए तथा फसलों के उत्पादन में करों की छूट तथा वित्तीय

सहायता उपलब्ध कराए तभी उत्पादन वृद्धि संभव है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. म.प्र. एक भौगौलिक अध्ययन डॉ. प्रमिला कुमार, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
2. कृषि अर्थशास्त्र डॉ. जय प्रकाश मिश्र, साहित्य भव पब्लिकेशन, आगरा
3. भारतीय कृषि का अर्थ तंत्र डॉ. एन.एल. अग्रवाल, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
4. कृषि विकास की समस्याएं श्री कृष्ण कुमार उमाहिया, मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली
5. भारतीय अर्थशास्त्र डॉ. चतुर्भुज मामोरिया, डॉ. एस.सी. जैन साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा
6. भारतीय अर्थ व्यवस्था श्री मिश्र पुरी हिमालया पब्लिशिंग हाउस, मुंबई
7. कृषि अभियंत्रण प्रो. श्री रंधावा चौहान, रामा पब्लिशिंग हाउस, मेरठ
8. कृषि अर्थशास्त्र के सिद्धांत प्रो. श्री के.एन. सहाय, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
9. कृषि अर्थशास्त्र श्री एस.सी. मित्ताल, ऑरिएन्टल पब्लिशिंग हाउस, आगरा
10. संख्यिकी के मूल तत्व डॉ. श्री के.एन. नागर, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ
11. सांख्यिकी डॉ. श्री बी.एन. गुप्ता, साहित्य भवन, आगरा
12. अर्थशास्त्र डॉ. श्री वी.सी. सिन्हा, साहित्य भवन पब्लिशर्स, आगरा
13. कृषक जगत डॉ. साधन गंगराडे, कृषक जगत भवन, इन्दिरा प्रेस कॉम्प्लैक्स, एम.पी. नगर, भोपाल
14. रिसर्च मैथ्डोलॉजी डॉ. आर.एन. त्रिवेदी, डॉ. डी.पी. शुक्ला, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
15. रिसर्च मैथ्डोलॉजी डा. बी.एम. जैन, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर
16. अनुसंधान प्रतिधियाँ श्री सी.एम. चौधरी, सबलाइम पब्लिकेशन्स, जयपुर
17. समाजिक अनुसंधान राम गोपाल सिंह भारती, मध्य प्रदेश ग्रंथ अकादमी, भोपाल 179
18. अनुसंधान परिचय पारसनाथ राय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा
19. प्रारंभिक कृषि अभियांत्रिकी डॉ. हरेन्द्र सिंह चौहान, प्रकाशन निदेशालय, गोविन्द बल्लभ पन्त, प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर, नैनीताल
20. जिला साख्यिकी पुस्तिका जिला दतिया
21. जिला योजना एवं सांख्यिकी कार्यालय, जिला दतिया-2002
22. वही 2006
23. वही 2007
24. वही 2009
25. रिसर्च लिंक डॉ. रमेश सोनी, डॉ. सत्यम सोनी, वर्धमान अपार्टमेन्ट ओल्ड पलासिया, इन्दौर
26. कुरूक्षेत्र (मासिक पत्रिका) ललिता खुराना ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली 2002-2010
27. योजना (मासिक पत्रिका) 538 योजना भवन संसद मार्ग, नई दिल्ली
28. मध्य प्रदेश कृषि सांख्यिकी कृषि सांख्यिकी संचालनालय, भोपाल 2002 - 2010
29. मध्य प्रदेश का आर्थिक सर्वेक्षण आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय, भोपाल
30. म.प्र. की आधारभूत कृषि सांख्यिकी 2002 - 2010
31. समाचार पत्र
1. दैनिक भास्कर, ग्वालियर
2. दैनिक नई दुनिया, ग्वालियर
3. दैनिक जागरण, ग्वालियर
4. दैनिक हिन्दुस्तान टाइम्स
5. दैनिक अमर उजाला
32. उन्नत कृषि यंत्रों पर दी जानेवाली सुविधाएं कृषि अभियांत्रिकी, संचालनालय, म.प्र. भोपाल
33. कृषि यंत्रों का रखरखाव श्री भीमसिंह, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली
34. Agricultural Economics Pranav K. Desai, Boitech Books, Delhi 180

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

'संचार के आधुनिक साधन मोबाईल' का युवाओं के सामाजीकरण पर प्रभाव का अध्ययन कसरावद शहर के महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. उषा यादव*

* सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र) शासकीय महाविद्यालय, कसरावद, जिला- खरगोन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – वर्तमान समय में मोबाईल फोन दुनिया में पहले की संचार तकनीकों जैसे- टेलीविजन, रेडियो, समाचार पत्रो आदि की तुलना में तेजी से फैल रहे है। युवा वर्ग के बीच इस डिवाइस का उपयोग और भी ज्यादा लोकप्रिय हो गया है। और इसके इस्तेमाल पहुँच, सुक्ष्म समन्वय, सुरक्षा और मुक्ति के साधन के रूप में किया जाता है। मोबाईल फोन युवाओं और उनके साथियों के समूहो, माता-पिता और बच्चो के बीच एक सीधा संचार चैनल प्रदान करते है। इसलिए यह डिवाईस साथियों और परिवार के साथ-साथ सामाजिक सम्पर्क व बंधन को भी बडाता है। मोबाईल नये-नये फंक्शन के साथ युवाओं को सीखने के लिए प्रेरित कर समाजीकरण की प्रक्रिया को प्रभावी बनाता है। युवाओं के समाजीकरण पर मोबाईल फोन के प्रभाव अध्ययन करने के लिए शासकीय महाविद्यालय कसरावद के अध्ययनरत स्नातक स्तर के विद्यार्थीयों का द्वैव निदर्शन पद्धति से चुनाव कर शोध सम्बधी आकडे एकत्रित कर उनके विश्लेषण के परिणाम युवाओं के समाजीकरण पर मोबाईल फोन पर प्रभाव को उजागर करते है।

शब्द कुंजी –सामाजीकरण,युवा, संचार के आधुनिक साधन मोबाईल फोन इत्यादि ।

प्रस्तावना – मानव शिशु जन्म के समय किसी भी मानव समाज में भाग लेने योग्य नही होता है। वह केवल एक प्राणीशास्त्रीय इकाई के रूप में इस संसार मे आता है जो केवल रक्त, मांस एवं हडिडयों से बना एक जीवित पुतला मात्र होता है। उसमे किसी प्रकार के न तो गुण होते और नही अवगुण होते है। वह न तो सामाजिक होता है,न असामाजिक और न समाज विरोधी ही । समाज के रीति – रिवाजों, प्रथाओ,मुल्यों एवं संस्कृति से वह अनभिज्ञ होता है । वह नही जानता कि किसके प्रति कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए और समाज उससे क्या अपेक्षाए रखता है, किन्तु वह कुछ विशिष्ट शारिरिक क्षमताओं के साथ पैदा होता है, इन क्षमताओं के कारण ही वह बहुत कुछ सीख लेता है, समाज का क्रियाशील सदस्य बन जाता है और संस्कृति को ग्रहण करता है, लेकिन सीखने की क्षमता सामाजिक सम्पर्क से ही विकसित होती है उदाहरणार्थ, मानव में भाषा का प्रयोग करने की क्षमता और अपने विचारो को अभिव्यक्त करने की क्षमता होती है जो समाज के सम्पर्क से ही व्यावहारिक रूप धारण करती है । सामाजिक सम्पर्क के कारण ही व्यक्ति समाज के रीति – रिवाजों, प्रथाओ, मूल्यों, विश्वासों, संस्कृतिएवं सामाजिक गुणों को सीखता है और एक सामाजिक प्राणी का दर्जा प्राप्त करता है । सामाजिक सीख की इस प्रकिया को समाजीकरण कहते है ।

इस प्रकार समाजीकरण की प्रक्रिया प्राणीस्त्रीय प्राणी को सामाजिक प्राणी में बदल देती है , मानव को पशु स्तर से ऊचा उठाकर मानव समाज में सम्मिलित करती है । अत:यह मानव को मानव की संज्ञा प्रदान करने वाली प्रक्रिया है ।

वर्तमान युग सूचना क्रांति का युग माना जा रहा है । जिसमें सूचनाओं कों बडे ही प्रभाव पूर्ण रूप से एक स्थान से दुसरे स्थान तक पहुचाया जा रहा है । इस सूचना क्रांति ने मानव के पूराने सूचना स्त्रोतो को समाप्त ही कर दिया जो किसी समय में सूचना पहुचाने के मुख्य कारगर साधन के रूप में उपयोग में लाए जाते थे उनकी जगह अब आधुनिक साधनो जैसे इन्टरनेट, टीवी ,समाचार पत्र- पत्रिकाएँ, और इन सभी से अत्यधिक प्रभावशील एवं उपयोग में सर्वाधिक आसान मोबाईल फोन ने ले ली है । जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी सूचनाएँ, विचार, भावनाए, कार्यो को अपने दोस्तो, परिवार के सदस्यों, कार्य क्षेत्र पर कार्यरत व्यक्तियों आदि को बहुत ही आसानी से कही से भी सूचनाए पहुचाते है। जिस कारण मोबाईल फोन आज सर्वाधिक उपयोग और उपभोग किया जाने वाला आधुनिक साधन बन गया है।जो मानव जीवन को प्रभावित कर मानव की दिनचर्या का एक अहम हिस्सा बन गया है। विशेष रूप से युवाओं के समाजीकरण के बारे में यह एक सक्रिय और सामूहिक प्रक्रिया है। जहॉ माता- पिता, साथी, शैक्षणिक संस्थान और मीडिया इस प्रक्रिया में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। एक युवा, वयस्क दुनिया में सम्मिलित होने के लिए किसी समाज के मूल्यों मानदण्डो और विश्वासों को कैसे आत्मसात करते है। किशोरो की मुक्ति पारिवारिक दायरे से स्वतंत्र होने और अपने स्वयं के विश्वासों और मूल्यो के साथ स्वतंत्र सामाजिक अभिनेताओ के रूप में अपनी पहचान स्थापित करने की प्रक्रिया है।

हॉलाकि पिछले कुछ दशकों मे मोबाईल फोन पर अध्ययन तेजी के लोकप्रिय हुए है परन्तु युवाओ के समाजीकरण पर मोबाईल के प्रभावों का अध्ययन अनुसंधान का एक अपेक्षाक्रत नया क्षेत्र हैं।

समाजीकरण– समाजीकरण को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जिसके माध्यम से हम किसी समाज या सामाजिक

समूह के तौर –तरीको को सीखते है। ताकि हम उस समाज के क्रियाशील सदस्य बनकर कार्य कर सकें।

युवा–युवास्था या किशोर अवस्था का अंग्रेजी शब्द Adolescence से लिया गया है जो मूल रूप से लैटिन भाषा का शब्द है। जिसको अर्थ है 'बडा होना' या 'परिपक्व होना' या 'वयस्कता में बढना' इस अवस्था को मानव विकास में एक संक्रमण कालीन चरण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जहॉ जैविक, संज्ञानात्मक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और समाजिक विशेषताए आमतोर पर बच्चो जैसी मानी जाने वाली विशेषताओं से बदलकर वयस्क जैसी मान जाने वाली विशेषताओं मे बदल जाती है।

मानव का सामाजीरण उसके आसपास व्याप्त पारिवारिक पर्यावरण, सामाजिक पर्यावरण, भौतिक पर्यावरण और मानव द्धारा उपयोग की जाने वाली वह प्रत्येक वस्तु जिससे उसका जीवनयापन सम्भव हो, पर निर्भर करता है।

मोबाईल फोन एक ऐसा ही आधुनिक साधन है जिससे मानव का न केवल दिन बल्की हर पल प्रभावित होता है। और मानव प्रजाति में सर्वाधिक युवा पीढी इस संचार क्रांति के आधुनिक साधन मोबाईल से प्रभावित हो रही है। जिनका एक पल भी बिना मोबाईल फोन के नही गुजरता और ना ही कोई कार्य कर पाते है। जिस पर केवल उनका वर्तमान बल्कि भविष्य भी निर्भर करता है। इतिहास साक्षी है जब भी किसी साधन या वस्तु चाहे वह प्राकृतिक हो या मानव निर्मित ने अत्यधिक प्रभावित किया जाता है तो वह उसके सामाजीकरण या समाज का एक अभिन्न अंग बन जाता है। यही तथ्य वर्तमान समय में मोबाईल पर चरितार्थ होता दिखाई दे रहा है अगर उसका अत्यधिक उपयोग किया जाता है और उसने मानव को बहुत अत्यधिक प्रभावित किया है।

संचार के आधुनिक साधन – अपने विचारों, बातों, इच्छाओं, भावनाओं को समाज में, समूहो में परिवार में, या व्यक्तियों को प्रभावी व नवीन तरीको से पहुचाने के साधनो को हम संचार के आधुनिक साधन कहते है।

मोबाईल–मोबाईल को 'हिन्दी में दूरसंचार यंत्र कहते है।' अर्थात दो संदेश वाहको या संदेश वाहक और संदेश लेने वाले के मध्य दुरी कितनी भी हो, एक दुसरे को संदेश बहुत ही सरल–सहज रूप से पहुच जाता है।

अध्ययनरत विद्यार्थी–अध्ययनरत विद्यार्थी युवाओं का वह वर्ग है जो अपने जीवन को दिशा देने के लिये अपने सामाजीकरण की प्रक्रिया में शिक्षा की भूमिका को मजबूत करने के लिए किसी भी शासकीय या अशासकीय शिक्षण संस्थान से ज्ञानार्जन कर रहे है।

3. अध्ययन पद्धति :– प्रस्तुत शोध–पत्र में शोध अध्ययन पद्धति निम्नानुसार निर्धारित की गई है।

1. अध्ययन पद्धति :–स्वउद्देश्य पूर्ण निदर्शन पद्धति शोध–पत्र की अध्ययन पद्धति है।

2. अध्ययन का समग्र :–अध्ययन का समग्र शासकीय महाविद्यालय कसरावद में अध्ययनरत विद्यार्थियों को समग्र निर्धारित किया गया है।

3. अध्ययन की इकाई :– शासकीय महाविद्यालय कसरावद में अध्ययनरत विद्यार्थी अध्ययन की इकाई है।

4. तथ्यो का संकलन :– तथ्यो का संकलन प्राथमिक व द्धितीयक पद्धतियों के माध्यम से किया गया है।

अ. प्राथमिक स्त्रोत :–साक्षात्कार अनुसूचि के माध्यम से प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया गया है।

ब. द्धितीयक स्त्रोत :–पूस्तके पत्र–पत्रिकॉए व इन्टरनेट के माध्यम से द्धितीय तथ्यों को एकत्रित किया गया है।

5. शोध प्रक्रिया :– शोध–पत्र को पूर्ण करने के लिए सर्वप्रथम तथ्यों के संकलन के लिए द्धितीयक स्त्रोतों का उपयोग किया गया , इसके पश्चात एक साक्षात्कार अनुसूचि का निर्माण कर 50 अध्ययनरत विद्यार्थीयों से साक्षात्कार अनुसूचि के विकल्पयुक्त प्रश्नों के उत्तरों को प्राप्त किया गया है। जिसके बाद प्राप्त तथ्यो को मास्टर–चार्ट के माध्यम से सांख्यिकीय रूप प्रदान कर कुछ मुख्य प्रश्नों का चित्रमयी प्रदर्शन किया गया है।

निस्कर्ष :–प्रस्तुत शोध –पत्र में विकल्पयुक्त प्रश्नो के निस्कर्ष निम्नलिखित है

1. प्रस्तुत शोध विषय के अनुसार प्रश्न पूछा गया कि आप मोबाईल का प्रयोग किस आयु से कर रहे हे पर सर्वाधिक 95.6% उत्तरदाताओं ने कहॉ कि वे 13 वर्ष की उम्र से मोबाईल का प्रयोग कर रहे है।

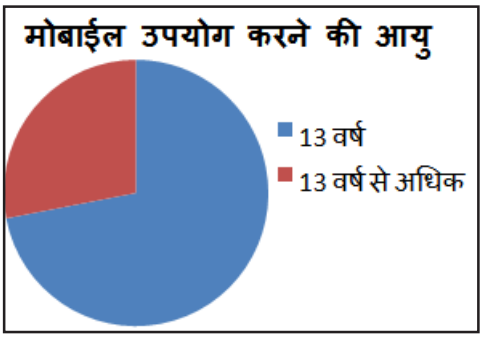

2. प्रस्तुत शोध विषय के प्रश्न मोबाईल उपयोग का कारण पूछने पर सर्वाधिक 66.6% ने कहॉ कि वे अपनी व्यक्तिगत रूचि के कारण मोबाईल रखते है , 13.4% कहॉ कि उनके दोस्तो के पास मोबाईल है इसलिए उन्होने भी मोबाईल लिया है। 3.7% ने कहॉ कि उन्होने अपने अभिभावकों की इच्छा से मोबाईल लिया है। और 16.3% ने उत्तर दिया कि वे मोबाईल का प्रयोग केवल संचार उपकरण के रूप में करते है।

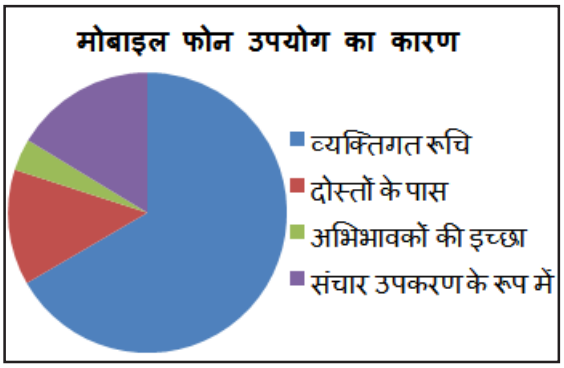

3. प्रस्तुत शोध विषय के अनुसार प्रश्न पूछा गया कि क्या युवाओं पर मोबाईल फोन का प्रभाव हैपर सर्वाधिक 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार कहॉ गया कि युवाओं पर मोबाईल फोन का प्रभाव अत्यधिक रूप से है,क्योकि वर्तमान समय में युवावर्ग के पास यदि मोबाईल फोन न हो तो वह अपने आप को अधुरा व असहाय महसूस करते है। साथ ही वे अपना सर्वाधिक समय मोबाईल पर विभिन्न प्रकार के कार्यो को कर आपना समय व्यतीत करते है। जबकि 13 प्रतिशत का कहना है कि मोबाईल फोन का युवाओं पर आंशिक रूप से प्रभाव है। क्योकि आज का युवा अपने भविष्य की चिन्ता में इस प्रकार लगा रहता है कि वह नये आधुनिक साधनो को भी भूल जाता है।

और अपने ही कार्यो में व्यस्त रहता है। 17 प्रतिशत उत्तरदाताओं मानना है कि युवा वर्ग पर वर्तमान समय में मोबाईल फोन का प्रभाव बिलकुल नहीं हुआ है क्योंकि उनके अनुसार युवा वर्ग के पास मोबाईल फोन से भी ज्यादा आधुनिक साधन उप्लब्ध है जिसके माध्यम से वे मोबाईल का भी कार्य कर लेते है, या उन्हे आवश्यकता ही नही पडती। सबसे कम 10 उत्तरदाताओं ने प्रस्तुत प्रश्न पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई।

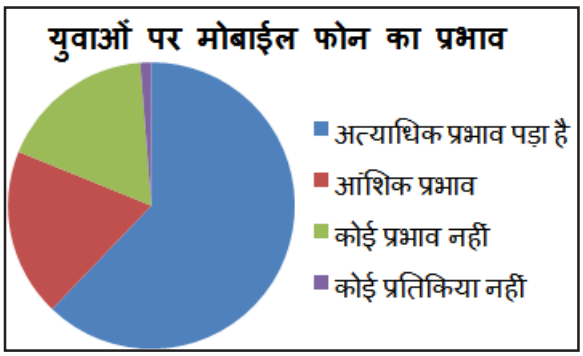

4. प्रश्न पूछा गया कि क्या मोबाईल फोन के द्वारा सामाजीकरण कि प्रक्रिया पर प्रभाव पडता है। पर सर्वाधिक 44 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमती जताई है, उत्तरदाताओं का कहना है,कि वर्तमान में युवाओं का सामाजीकरण मोबाईल फोन के माध्यम से निर्धारित हो रहा है। आज मोबाईल फोन केवल सूचनाओं के आादान प्रदान का ही साधन मात्र नहीं रह गए है, बल्कि मोबाईल के माध्यम से आज व्यक्ति मनोरंजन के साथ ज्ञान अर्जन भी कर रहे है। जिससे उनके कार्य आसान होते जा रहे है। 38 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने आंशिक रूप से सहमति जताई है क्योकि उत्तरदाताओं के अनुसार वर्तमान परिस्थितियों में मोबाईल का युवाओं के जीवन में महत्व बढा है पर उनके सामाजिक पहलु विषय पर व्यापक रूप से प्रभाव नहीं पडता। शेष 18 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना है कि मोबाईल फोन से किसी भी प्रकार का कोई भी प्रभाव समाजीकरण पर नही पडता क्योकि उत्तरदाता मानते है कि मोबाईल फोन केवल संचार के साधन से अधिक कुछ नही है, जिसका उपयोग केवल आवश्यकता पडने पर ही किया जाता है।

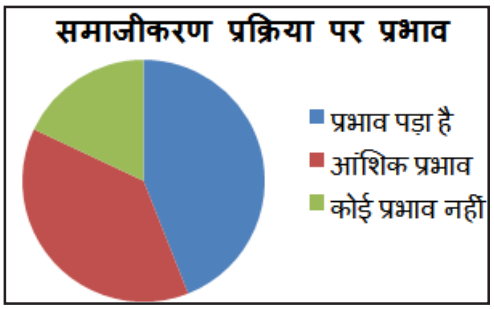

5. मोबाईल फोन के माध्यम से मानव विकास में किस प्रकार के परिवर्तन आए है, पर सर्वाधिक 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार मोबाईल फोन के आने से मानव की दिनचर्या में आधुनिकता का प्रभाव बढा है साथ हि बाहरी दुनिया से लगातार जुडा रहता है, जिससे उसे प्रत्येक घटना की जानकारी बडी तेजी से व सटीक प्राप्त हो जाती है। जबकि 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि मोबाईल फोन के द्वारा व्यक्ति में तकनिकी ज्ञान व उसकी समझ का विकास हुआ है जिससे वह आज अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग बडी आसानी से कर सकता है, जो उसके बौद्धिक विकास के लिए अति महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है। 26 प्रतिशत का कहना है,कि मोबाईल के माध्यम से मानव समाज में दुरिया कम हुई है जिससे वे अपने परिजनो के हरदम नजदीक रहते है, और हर समय उनकी खबर भी प्राप्त हो जाती है। 24 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार व्यक्ति के विकास को मोबाईल फोन ने किसी भी तरीके से प्रभावित नही किया है।

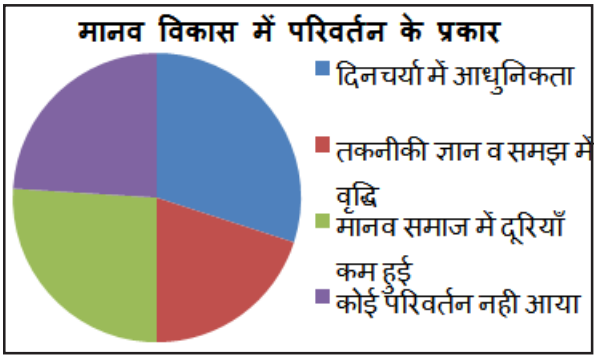

सुझाव : वर्तमान सर्वेक्षण और अध्ययन के परिणामों को ध्यान में रखते हुए कुछ सुझाव इस प्रकार है :

1. मोबाईल का प्रयोग इस प्रकार होना चाहिए कि वह उपयोगकर्ता के बीच सराहनीय और उचित साबित हो।
2. जब युवा मोबाईल फोन से जुडते है या उनका उपयोग करते है तो उन्हें यह ध्यान रखना चाहिए कि वह केवल सुरक्षित सोशल नेटवर्किंग साइट का ही उपयोग करें।
3. मोबाईल का प्रयोग रचनात्मक उद्देश्यों के लिए किया जाना चाहिए।
4. मोबाईल के अधिक प्रयोग के नकारात्मक परिणामों को कम करने के लिए शिक्षण संस्थानों को कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाने चाहिए।
5. अभिभावको और शिक्षकों को युवाओं पर नजर रखनी चाहिए कि वह मोबाईल का उपयोग किस प्रकार की गतिविधि के कर रहे है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी - रविन्द्र नाथ मुखर्जी।
2. सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी - डी.एन. श्रीवास्तव।
3. समाजशास्त्र के मूल तत्व - गुप्ता एण्ड शर्मा।
4. सामाजिक विचारक - रविन्द्र नाथ मुखर्जी।
5. सामाजिक विचारक का इतिहास - रामनाथ शर्मा।
6. Arnett, J.(1995) Adolescent's uses of Media For Sely-socialzation,journl of Youth and Adulescence,
7. Chen,Y.F. (2009 may) The Mobile Phone and Socialization: Family vs Friends.
8. Kalogeraki Stefania,Papadaki Morina. The Impact of Mobile Phones on Teengers Socialization and Emancipaton .University of Crete Greece.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

The Role of Incubation Centers in Nurturing Startups: Fostering Innovation, Growth, and Sustainability

Anchal Ramtake*

***Asst. Professor (Zoology) Rajabhoj Govt. Degree College, Mandideep, Distt. Raisen (M.P.) INDIA**

Abstract : This paper examines the pivotal role of incubation centers in nurturing startups, innovation, growth, and sustainability. Incubation centers provide early-stage startups with crucial resources such as office space, mentorship, funding access, and networking opportunities, which help reduce the risks and challenges associated with entrepreneurship.

The paper traces the evolution of incubation centers, from their early days supporting small-scale manufacturing businesses and ideas to their modern role across diverse industries like technology with a focus on India's growing startup ecosystem,

The paper explores various types of incubators, such as private, public, university-based, sector-specific, and virtual, highlighting the range of services they offer, including mentorship, technical infrastructure, business development support, and market entry strategies.

The paper concludes that while India's startup ecosystem is rapidly growing, further expansion of incubation support and infrastructure is necessary to sustain this momentum and drive long-term success.

Keywords: Incubation Centers, Startups, Innovation, Growth, Sustainability, Mentorship, Funding, India.

Introduction

1. Definition and Overview -an organization or facility that provides support to early-stage startups and entrepreneurs to help them develop and grow their businesses. It offers a range of services, including office space, mentor ship, access to funding, networking opportunities, and business development resources. The goal of an incubation center is to nurture startups by reducing the risks and challenges they face during their initial stages, thereby increasing their chances of success and long-term sustainability.

inculcation centers have evolved over the years from supporting small-scale, manufacturing businesses to providing a wider range of services across diverse industries, including technology, healthcare, social enterprises, and more. They vary in structure, with some being privately funded by venture capitalists or corporations, while others are public or university-based, often focusing on economic development or academic research.

2. History and Evolution of Incubation Centers- The concept of business incubation dates back to the early 1950s when the first incubators were created to assist small manufacturing businesses in overcoming financial and operational difficulties. However, it was in the 1980s and 1990s that incubators gained significant momentum, particularly in technology-based industries, as the global economy shifted towards innovation and entrepreneurship. Incubation centers today have expanded beyond their original manufacturing-focused roles to support a diverse range of industries, from information technology to social enterprises. This evolution reflects a growing recognition that innovation is vital for economic development and that nurturing entrepreneurial talent is essential to driving this innovation.

Objective- To Study The Role of Incubation Centers in Nurturing Startups Fostering Innovation, Growth, and Sustainability.

Aims- It aims to highlight how these incubation centers act as catalysts for innovation, growth, and sustainability by providing:

1. **Resources**: Offering shared office spaces, infrastructure, and access to advanced technology at reduced costs.
2. **Mentorship**: Guiding startups with expertise in business strategy, market research, and operational challenges.
3. **Networking Opportunities**: Connecting entrepreneurs with investors, industry leaders, and peer networks.
4. **Funding Access**: Helping startups secure seed funding, grants, or venture capital through partnerships.
5. **Skill Development**: Providing workshops, training programs, and seminars to enhance entrepreneurial skills.

6. **Market Entry Strategies**: Assisting in refining product ideas and scaling them to meet market demands.
7. **Sustainability Goals**: Encouraging green practices and innovation that align with long-term environmental and social sustainability.

Study Material- For this paper Magazine, newspaper, Govt of India report on STARTUP are used as a secondary data source .

Data Source- This topic underscores the importance of incubation centers as hubs of support, fostering a conducive environment for startups to thrive and contribute to economic growth and technological advancement.

Startup India In Numbers (Jan 2016-Dec 2020)

1. 41,317 startups recognized by DPIIT
2. 4.7 Lac jobs reported by 39,000+ startups
3. Rs 4,509 Crore of investments made in 384 startups through the Fund of Funds scheme
4. 590+ districts with at least one recognized startup
5. 44% of the recognized startups have at least one woman director
6. 30 States and UTs have a dedicated startup policy

(Data Published by the DPIIT Govt of India "Evolution of Start UP in India" Capturing the 5-Year story)

Types of Incubators: Incubators vary in their structures, services, and target markets. Understanding the different types of incubators is crucial for identifying how each caters to specific needs within the startup ecosystem:

1. **Private Incubators**: These are typically profit-driven entities supported by venture capitalists, angel investors, or private firms. Their primary focus is on high-growth, scale startups, often in technology or innovative sectors. They provide resources such as seed funding, business mentoring, and market access in exchange for equity or a stake in the startup.
2. **Public Incubators**: Sponsored by government agencies or non-profit organizations, public incubators are often part of national or regional economic development programs. They tend to focus on job creation, local economic growth, and supporting social enterprises. Public incubators may offer more affordable or subsidized services compared to private incubators and are typically less equity-driven.
3. **University-Based Incubators**: These incubators are run by universities or academic institutions and are focused on fostering innovation emerging from academic research or student ventures. They are often aligned with the institution's research and development goals, helping startups leverage intellectual property, research collaborations, and academic networks.
4. **Sector-Specific Incubators**: Some incubators cater to startups within a specific industry or sector, such as biotechnology, clean energy, or fintech. These incubators provide specialized resources and mentorship that are specific to the industry, allowing startups to connect with key players and experts in their fields.
5. **Virtual Incubators**: With the rise of digital technologies, virtual incubators have emerged as a flexible alternative to traditional incubators. They offer online resources, mentorship, and networking opportunities to startups located anywhere in the world, providing a more accessible option for entrepreneurs who may not be able to attend a physical incubator.

Key Services and Offerings: Incubators provide a variety of services and resources that help early-stage startups address critical challenges. These offerings can be broadly categorized into tangible resources and intangible support:

Tangible Resources

1. **Office Space**: Many incubators provide affordable office space, which is often equipped with essential office furniture, internet access, and conference rooms. This allows startups to minimize overhead costs and focus on their core business activities.
2. **Technical Infrastructure**: Startups may have access to specialized equipment, technology platforms, or software that would otherwise be too expensive for them to purchase on their own.
3. **Legal and Administrative Support**: Incubators often assist with legal matters, such as business registration, intellectual property protection, and contract negotiations. They may also offer administrative support in areas like accounting and human resources.
4. **Intangible Support**
5. **Mentorship and Guidance**: One of the most significant benefits of incubation centers is access to experienced mentors. These mentors can offer valuable advice on business strategy, product development, marketing, and scaling operations.
6. **Networking Opportunities**: Incubators facilitate connections between startups, investors, potential clients, and other entrepreneurs. These networks are crucial for gaining access to funding, partnerships, and market opportunities.
7. **Training and Workshops**: Incubators often provide educational programs that help entrepreneurs develop essential skills in areas such as business management, sales, and financial planning.
8. **Access to Funding**: Many incubation centers assist startups in securing early-stage funding by connecting them with investors, including venture capitalists, angel investors, and grant opportunities. Some incubators also offer direct funding or seed investment in exchange for equity.

Incubation centers provide a range of services to help startups grow and succeed. Key services typically offered include:

1. **Mentorship and Guidance**: Experienced mentors and industry experts provide advice on business strategy, operations, marketing, fundraising, and scaling.
2. **Business Development Support**: Assistance with business planning, product development, market research, and customer acquisition strategies.

3. Networking Opportunities: Access to a network of investors, entrepreneurs, industry professionals, and potential customers to facilitate partnerships, funding, and collaboration.

4. Office Space and Infrastructure: Provision of affordable office space, high-speed internet, meeting rooms, and other resources to support day-to-day operations.

5. Access to Funding: Introduction to investors, venture capitalists,
and angel investors, as well as opportunities to pitch for funding

6. Workshops and Training: Regular workshops, seminars, and training sessions on key business topics such as finance, marketing, legal issues, and technology.

7. Legal and Administrative Support: Help with company registration, intellectual property protection, tax planning, and compliance with local regulations.

8. Technical Support: Access to tech resources, including software, hardware, or technical expertise for product development and prototyping.

9. Marketing and Branding Assistance: Support in creating a brand identity, developing marketing strategies, and improving digital presence.

10. Product and Market Validation: Guidance on testing products and services in the market, gathering feedback, and iterating based on real customer input.

These services help startups reduce risk, increase their chances of success, and accelerate growth.

Data & Journey : India's startup ecosystem has experienced significant growth, supported by a network of incubation centers that provide essential resources and mentorship to emerging businesses. Here's an overview of the current landscape:

1. Number of Startups and Incubators:

a) Startups: As of 2018, India had approximately 50,000 startups, with around 8,900 to 9,300 being technology-driven. In 2019 alone, about 1,300 new tech startups were established, indicating the formation of 2-3 tech startups daily.

b) Incubators: The number of incubators in India has seen a substantial increase, growing fifteen-fold over the past two decades, largely due to proactive incubation policy initiatives between 2008 and 2020. Data from Traxcn indicates that there are approximately 718 accelerators and incubators in the country.

2. Incubation Support and Challenges: Despite the growing number of startups, only 8.2% undergo incubation. Notably, 10% of incubators support 98% of these incubated startups, highlighting a concentration of resources within a limited number of incubators. (Economic Times)

India has about 0.8 incubators per million people, which is significantly lower compared to countries like the USA, UK, and China, each having 8-10 incubators per million. This disparity underscores the need for expanding incubation infrastructure to support the burgeoning startup ecosystem. (Economic Times)

3. Regional Distribution: South India leads in the number of startup incubators, with institutions like IIT Madras and IIM Bangalore playing pivotal roles in fostering innovation and entrepreneurship. (The New Indian Express)

4. Economic Impact: The average value of assets for every 100 incubated startups by the ninth year from incorporation is estimated at ₹ 10,627 crore, reflecting the significant economic contributions of incubated startups over time. (The New Indian Express)

Government Initiatives: The Indian government has approved a 10-billion-rupee ($119 million) fund to support the growing space sector, aiming to bolster its share in the global commercial space market by 2033. This fund will benefit 40 startups, with support varying between 100 million and 600 million rupees depending on their maturity level.

Conclusion: In summary, while India's startup ecosystem is expanding rapidly with increasing numbers of startups and incubators, there remains a need to enhance incubation support and infrastructure to sustain and accelerate this growth.

References:-

1. Daily NEWS PAPER
2. Report Published By Govt of India on "Evolution of Start UP in India" Capturing the 5-Year story)
3. Analysis of DPIIT (Dept of Promotion of Industry and Internal Trades
4. Atal Innovation Mission of NITI Ayog Govt of India

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Between the Space and the Earth : A Study of 'Orbital' as Creative Non-Fiction

Dr. Kiran Sitole*

***Asst. Prof. (English) Govt. Holkar Science College, Indore (M.P.) INDIA**

Abstract : Creative non-fiction is a genre of literature that blends factual accuracy with narrative storytelling for an immersive and informative experience. "Orbital," by Samantha Harvey a beautiful scientific novel fits within this category which takes readers on a journey of space exploration. Samantha Harvey weaved scientific reality by literary techniques to convey real scientific principles with human experience and human emotion in her novel. This paper examines the structure, themes, characters and all over impact of "Orbital" as a creative non-fiction novel. My paper highlights how it bridges the gap between empirical knowledge and artistic expression of author.

Introduction - Difference between fiction and non-fiction have often been blurred in literature, particularly in the genre of creative non-fiction. "Orbital" is an example of informative and engaging storytelling. This novel allows readers to experience the mysterious marvels of space while maintaining a connection with human experience. The Booker Prize-winning novel by Samantha Harvey, offers a contemplative exploration of human existence with experience of six astronauts aboard the International Space Station Set over a single day.Author writes experience of these individuals as they complete sixteen orbits around Earth, each chapter corresponding to one orbit. This structure of writing allows readers to drown in joy into the astronauts' reflections on life, death, identity, and the interconnection of humanity. *Writing style is not one to be rushed either.* Harvey wrote clearly and articulately, with poetry and lyricism about science and beauty, geopolitics and personal stories. The whole package of Space Voyage is wrapped up in the grandeur of history and the humbleness of human insignificance within the immensity of the universe. This is a small novel but it has a BIG message.

"How are we writing the future of humanity? We're not writing anything, it's writing us. We're windblown leaves. We think we're the wind, but we're just the leaf…….
…..Some metal separates us from the void; death is so close. Life is everywhere, everywhere."

Space, by comparison, or at least the nearest region of space – "Earth's back garden" – seems more knowable and less lonely. With this extreme slender and stretchy her fifth novel, Harvey makes an ecstatic travel with an imagined crew on the International Space Station, and looks back to Earth with a lover's eye. Orbital goes into flight for a single day, though a day is a different kind of thing up here, where "the whipcrack of morning arrives every ninety minutes" and the sun is "up-down-up-down like a mechanical toy". It's a nicely giddying structural ploy to align each and every chapter with an orbit of the Earth: 16 orbits all together. The mobile narrative sends out probes into past and future, but all is held in the looping motion of elliptical travel.

Samantha used amazing vocabulary in Orbitalto illustrate things that might be missing at home like anticipated things, O nigiri, Skiing etc. It begins with stunning display of literary brilliance, its first half alive with breathtaking imagery and profound ideas of life and space. But as it progresses, its demand high reading skills. However, Orbital Offers a Fascinating thought provoking journey of space, not just once but sixteen times. Samantha Harvey never been visited to space but how beautifully she painted the practical aspects of life in space station in her words. She represented the eating, sleeping, work out and toileting habits in widely praised language. For its beautiful presentation Guardian Describes Orbital as an uplifting book in its blurb.

The story is set over the course of one 24-hour period on board the International Space Station. There are four astronauts and two cosmonauts who are following the journey of the first manned space craft to land on the moon since 1972 as well as a terrifying typhoon developing over the Pacific Ocean. During this day on board the ISS, they will orbit the earth sixteen times,

"*they'll see sixteen sunrises and sixteen sunsets, sixteen days and sixteen Nights*"

To assist the reader, Harvey has provided a map of their orbits across the globe so when they talk about what they can see from the window, we can track it for ourselves. It is the artistic beauty of characterisation that connect us with characters Characterization in orbital is subtle and focused on the astronauts' inner lives and perspectives, rather than elaborate backstories or dramatic conflicts, with each character representing a different facet of humanity's

relationship with space and Earth. The characters are not necessarily developed as individuals with complex personal dramas, but rather as representations of different aspects of humanity, such as faith, grief, and the search for meaning. **Anton (Russian):** Described as sentimental and reflective. **Chie (Japanese)** is portrayed as methodical and wise. **Shaun (American)**Leans on his faith and sees the universe as a testament to design. **Pietro (Italian)** Considered the mind of the spacecraft. **Nell (British)**works for commitments. **Roman (Russian)**The commander, described as dextrous and capable.

The profound weirdness of experience makes Harvey's imaginative act all the more impressive. The account certainly doesn't lack verisimilitude. But the parts of the novel that stuck with me most were not the disorientating lack of gravity but the moments of reflection about what could be seen of the Earth spinning below. "Orbital" employs an unique narrative structure that intertwines factual exposition with character-driven storytelling. By using a first-person perspective, the novel places readers in the body of astronauts, scientists, and engineers, offering an intimate glimpse into the psychological and physical realities of space travel. The book's stylistic choices, including detailed descriptions and introspective monologues, enhance the reader's immersion in the subject matter.

"We matter greatly and not at all. To reach some pinnacle of human achievement only to discover that your achievements are next to nothing and that to understand this is the greatest achievement of any life, which itself is nothing, and also much more than everything. Some metal separates us from the void; death is so close. Life is everywhere, everywhere.sm"

One of the key strengths of "Orbital" is its ability to present scientifically accurate information within a compelling narrative. Isolation in space, the fragility of human existence, bonds they form with each other and emotions for Earth. Real scientific phenomena, such as microgravity effects on the human body and the physics of orbital mechanics, are seamlessly integrated into the storytelling, making complex concepts accessible to a general audience. It beautifully presents the earth from space.It is so beautiful, that globe.

"Because who can look at man's neurotic assault on the planet and find it beautiful? Man's hubris. A hubris so almighty it's matched only by his stupidity."

Over the sixteen orbits tracked by the novel, dazzling descriptions of the planet rhythmically recur. There is Africa, "chiming with light" that is almost audible. Gran Conaria's gorges pile the island up "like a sandcastle hastily built". There is the "soft brushed nickel" of the Mediterranean; Uzbekistan, an "expanse of ochre and brown"; the "clean and brilliant Indian Ocean of blues untold", Man-made border of light is visible on Earth: a long trail of lights between Pakistan and India – and even that disappears in the daytime. The light which strikes and stabs, sparkles and shimmers is able to make boundaries otherwise there is "no wall or barrier: no tribes, no war or corruption or particular cause for fear"; instead "a rolling indivisible globe which knows no possibility of separation".

"The earth, from here, is like heaven. It flows with colour. A burst of hopeful colour. When we're on that planet we look up and think heaven is elsewhere, but here is what the astronauts and cosmonauts sometimes think: maybe all of us born to it have already died and are in an afterlife. If we must go to an improbable, hard-to-believe-in place when we die, that glassy, distant orb with its beautiful lonely light shows could well be it."

This is the Earth as experienced in the universe. The Earth majesty coexisting with, and increasingly shaped by, its temporarily dominant species. Individually as a human we are powerless in the face of nature. Collectively as a team we've utterly transformed every part of it in a plethora of deeply unknowable ways.

Creative non-fiction novel"Orbital" plays an essential role in bridging the gap between scientific understanding and public engagement. By employing a narrative approach, the book makes space exploration more relatable and emotionally resonant. Its reception among readers and critics highlights the growing appreciation for works that combine factual rigor with compelling storytelling, fostering greater interest in space sciences.

It exemplifies the power of creative non-fiction in transforming educational content into an engaging literary experience. By maintaining scientific authenticity while exploring human emotions and challenges, the novel serves as a model for how literature can contribute to scientific literacy and appreciation. As the genre "Orbital" will remain inspiring curiosity and understanding about the universe we inhabit.

However, some readers may find the novel's lack of a conventional plot challenging. "Orbital" prioritizes introspection and philosophical inquiry over traditional narrative structure, which may not appeal to those seeking a plot-driven story. Nonetheless, for readers open to a meditative and poetic exploration of existence, the novel offers a rewarding experience.

References:-

1. Orbital,Samantha Harvey, Jonathan Cape (UK)2 November 2023 Grove Atlantic,(US)5 December 2023
2. Orbital by Samantha Harvey, - Review, The *Guardian 2025*
3. Orbital by Samantha Harvey- Review, Goodreads *2025*
4. Samantha Harvey's 'Orbital' and the art of looking back at Earth, Joshua Ferris,*The New York Times,* Dec. 5, 2023 *2025*
5. Samantha Harvey's 'Orbital' explores humanity through the eyes of astronauts,review, *The Washington Post,2025*
6. Samantha Harvey's 'Orbital' and the future of space fiction, *Science Fiction Studies,2025*
7. Orbital by Samantha Harvey, Daisy Butter, 10 February 2025
8. Language of waves and light, Review, Kate McLoughlin, TLS, Current Issue

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

राष्ट्र निर्माण एवं शैक्षिणिक समस्याएँ एक अध्ययन

श्रीमती चित्रमाला भिमटे*

* सहा. प्राध्यापक (समाजशास्त्र) शास. महाविद्यालय, लामता, जिला बालाघाट (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – शिक्षा विहीन समाज के विकसित राष्ट्र की कल्पना करना किसी भी देश के लिए संभव नहीं है शिक्षित समाज ही राष्ट्र विकास की अवधारणा को साकार कर सकने में समर्थ है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो पाना संभव है। यह शिक्षा ही है, जो एक आम व्यक्ति को समाज से अलग एक विशिष्ट स्थान दिलवाने का सामर्थ्य रखती है।

'साविद्या या विमुक्तये' अर्थात शिक्षा वहीं जो मुक्त करती है, मुक्ति का अर्थ तमाम बंधनों, अधविश्वायें। एवं कुरीतियों से मुक्ति पाना और नयी समझ के माथ नई दृष्टि का निर्माण करने से है। यदि सीधे तौर पर देखा जाय तो शिक्षा से सीधा लाभ ज्ञान और तथ्यों की समझ जागृत करना है न कि कुछ रटे तथ्यों की लम्बी सूची तैयार करना। अच्छी शिक्षा का मकसद मानव में सोचने तथा विचार करने की क्षमता पैदा करता है अपने आने वाले कुल के लिए ऐसी क्षमता पैदा कर सकना, जिसके माध्यम से ऐसे विषयों को अलग करने लायक हो जाए जिन पर ओर विचार करने की आवश्यक्ता है। यह छामता हग अच्छे अध्ययन से ही प्राप्त कर सकते हैं। यही अत्यंत महत्वपूर्ण कारण है जो हमें स्कूली तथा अन्य आगे की शिक्षाओं को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। बेहतर शिक्षा ही हमें वस्तु की परख करने की क्षमता प्रदान करती है।

शिक्षा ही वह माध्यम हे जो हमारे भीतर सही दृष्टिकोण, सही विचार तथा सही निर्णय लेने की क्षमता पैदा करती है। जिससे हम अपने आपकों जीवन की विषम परिस्थितियों के अनुरुप आसानी से ढाल लेते हैं। शिक्षा जीवन में हमें मही फैमला लेने में मदढगार सिद्ध होती है आप प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में कभी न कभी समस्यायों, तनाव तथा दुख से गुजरना पड़ता है। इनमें हग बच नहीं सकते किन्तु ऐसी परिस्थितियों का एक शिक्षित व्यक्ति बेहतर तरीके से सामना कर सकता है। बल्कि ऐसी समस्याओं के भविष्य में आने पर स्वयं को पहले ही तैयार कर लेता है।

शिक्षा एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है जिसका न ही कोई आदि है और न ही अंत। मानव जन्म से लेकर अपने अस्तित्व के धूमिल होने तक शिक्षारत रहता है बस यदि कुछ बदलता है तो वह है– शिक्षा का स्वरुप, माध्यमिक शिक्षा, उच्च तथा व्यावसायिक एवं तकनीकि शिक्षा इत्यादि। विकास और आधुनिकता की दौड़ में आगे बने रहने के लिए एक नई शिक्षा व्यवस्था है– प्रोफेशनल एजुकेशन यह पारम्परिक एकेडमिक एजुकेशन से सर्वदा भिन्न है यह समस्त शिक्षाएँ हमें अपने क्षेत्र का विशेषज्ञ बनाती है यही विशेषता राष्ट्र विकास के घटकों के रूप में प्रयुक्त होकर विकास व उन्नति को सुदृढ़ करती है।

शब्द कुंजी – राष्ट्र निर्माण, शिक्षा, विकास।

उद्देश्य:

1. राष्ट्र निर्माण में शिक्षा के बढ़ते कदम का अध्ययन करना
2. शैक्षणिक समस्याओं का अध्ययन करना।
3. शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक समस्या के समाधान का अध्ययन करना।

अध्ययन की शोध प्रविधि – प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक संमको पर आधारित है, जिसमें मुख्य रुप से आकड़ों से संग्रहण हेतु शासकीय, पत्र–पत्रिकाओं, सख्यिकीय पुस्तिका, इन्टरनेट आदि का सहारा लिया गया है।

अध्ययन की प्रासंगिकता – प्रत्येक शोध कार्य का एक निश्चित उद्देश्य एवं प्रत्येक उद्देश्यपूर्ण कार्य का अपना महत्व होता है उपलब्ध साहित्य की समीक्षा से स्पष्ट होता है कि आज शिक्षा का महत्व राष्ट्र निर्माण व विकास में महत्वपूर्ण है शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी, शिक्षार्थी, शिक्षाविदों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है इस शोध पत्र के माध्यम से शिक्षा सम्बंधी समस्याओं का समाधान प्राप्त होगा तथा इसमें उभरने का मार्ग प्रशस्त होगा।

राष्ट्र निर्माण में शिक्षा के बढ़ते कदम – शिक्षा विकास का आधारमूलक सत्य है इसी शिक्षा रुपी साध्य से हम विकास रूपी साधन को प्राप्त कर सकते है। विश्व के लगभग सभी समाजों और कालों में शिक्षा का महत्व एक समान बना रहता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय अन्य क्षेत्रों की तरह शिक्षा के मामले में भी हमारी स्थिति अत्यंत चिन्तनीय थी, लेकित 1947 के बाद भारत में प्रारम्भिक शिक्षा के उन्नयन हेतु प्रभावशाली प्रयास हुए।

किसी भी राष्ट्र के मानव विकास सूचकांक ने संयोजित होने वाले कारको में शिक्षा एक महत्वपूर्ण एवं आधारभूत कारक है सुदृढ़ समाज के निर्माण में प्रारंभिक शिक्षा मजबूट नीव की भूमिका निभाती है अगर नींव ही कच्ची हो तो समाज के सृजनात्मक विकास की परिकल्पना करना संभव नही होता है।

सर्वप्रथम शिक्षा के महत्व को समझने एवं निवारण हेतु 1935 में केन्द्रीय परामर्श बोर्ड का गठन किया गया था। इसके पश्चात से प्रारम्भिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लगातार प्रयास होते रहे। 1986 में जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम और 1992 में उसमें किये गये संशोधन तथा इसकी कार्ययोजना के अनुरुप सबको प्रारंभिक शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए पहल की गयी। 1994 यह कार्यक्रम देश के 7 राज्यों के 42 जिलों में लागू किया गया। ये 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में माध्यमिक स्तर पर व्यवसायिक शिक्षा को प्राथमिकता दी गयी। 1985–1986 में प्रत्येक जिले में औसतन एक नवोदय विद्यालय स्थापित करने का कार्यक्रम शुरु किया

गया था। सन 2020 में नई शिक्षा नीति लागु की गई जिसमे आत्मनिर्भरता कौशल विकास उद्यमशीलता के द्वार सबके लिए खोल दिए गए।

भारत में शिक्षा क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए सरकार भारी माजा में अनुदान देती है भारत में शिक्षित व्यक्ति का औसत जहाँ स्वतंत्रता पश्चात 1951 में मात्र 18.33 प्रतिशत था। वही सरकार द्वारा शिक्षा के प्रति लगातार सजगता व प्रयास के कारण 1961 में 28.0 प्रतिशत तथा बर्ष 2011 की जनगणना आंकड़ों के अनुसार यह बढ़कर 74.04 प्रतिशत हो गया किन्तु बारीकी से अवलोकन किया जाय तो यह स्पष्ट होगा कि यह अभी अन्य तमाम विकासशील देशों के औसत से काफी कम है।

भारत के साक्षरता की स्थिति

वर्ष	पुरुष	महिला	कुल साक्षरता
1961	40.36	15.33	28.33
1971	45.95	21.97	34.45
1981	56.38	29.76	43.57
1991	64.13	39.23	52.21
2001	75.86	54.16	65.38
2011	82.14	65.46	74.04

शैक्षणिक समस्याएँ:

1. अवैतनिक ओर कम योग्यता वाले शिक्षक– अवैतनिक व कम योग्यता वाले शिक्षक कई बार शासन वेतन समय पर उपलब्ध नहीं करवा पाती तथा उनकी आजीविका का एकमात्र साधन वही होता हे अत: वह शिक्षक का पद त्याग देते है। विशेष पाठ्यक्रम को पढने के लिए अलग से शिक्षकों की भती नहीं हो पाती।
2. आपूर्ति और वर्दी की लागत– आपूर्ति चोर नदी की लागत भूमि व विद्यार्थी को शक्षण के दौरान कि तीने व यूनिफॉम की नि:शुल्क व्यवस्था नहीं हो पाती, जिससे प्रवेश कम होते है।
3. लड़किया होना (लैंगिक भेदभाव)
4. प्रकोप और महामारी
5. मातृभाषा और साक्षरता का प्रभाव
6. शिक्षा में बुनियादी ढाँचे की कमी
7. वित्तीय संसाधन और शिक्षा तक पहुँच में असमानता
8. आनलाइन शिक्षा प्रणाली में असमानता
9. आर्थिक स्थिति कमजोर
10. विद्यालयों, महाविद्यालयो पर स्थानीय जवाबदेही की कमी
11. शिक्षा का व्यवसायीकरण एवं विसंस्कृतीकरण
12. संकीर्ण शिक्षा प्रणाली एवं भौतिकतावादी दृष्टिकोण
13. नैतिक शिक्षा, मूल्य, आदर्श अप्रासंगिक हो चुके है।
14. शिक्षको की कमी – विद्यार्थियों की संख्या के अनुरूप शिक्षकों की पूर्ति नहीं की जाती है जिससे सभी विद्यार्थिकी समस्या को हल कर पाना संभव नहीं हो पता है।

समाधान :

1. शैक्षणिक संस्थानों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि।
2. पाठ्यक्रमों को व्यवसायिक दृष्टिकोण पर तैयार करना।
3. शैक्षणिक अनुसंधानों पर विशेष जोर देना।
4. स्वायत्ता विद्यालयों तथा शिक्षण विभागों का विकास करना।
5. गैर सरकारी विद्यालयों को अनुदान प्रदान करना।
6. विद्यालय में कई पालियों में शिक्षण कार्य सम्पन्न करना।
7. छात्राओं के लिए विशेष सुविधाओ से युक्त होस्टल की व्यवस्था।
8. नेशनल ओपन स्कूल की तर्ज पर अधिक शिक्षण संस्थानों को खोलने के लिए प्रोत्साहित करना।
9. शिक्षण गुणवता को बनाये रखने के लिए औचक निरीक्षण की व्यवस्था।
10. शैक्षणिक व्यवस्था को पूर्णरुपेण पारदर्शी बनाना।
11. सिखने के विविध विकल्प प्रदान करना – विविध शिक्षण अवसर प्रदान करके शिक्षार्थी की जरूरतों और रुचियों को बेहतर ढंग से पूर्ण करने के लिए प्रयास करे।

निष्कर्ष – शिक्षा एक अनमोल रत्न है इसकी प्राप्ति जितनी ही हो, वह कम ही प्रतीत होगी जिस प्रकार रत्न शरुआत में पत्थर के आकार का होता है उसे बाद में जरूरत के अनुसार तराशकर अनमोल बना लिया जाता है। ठीक उसी तर्ज पर शिक्षा व्यवस्था को आवश्यक्ता और समय के साथ परिवर्तित कर अनमोल बनाया जा सकता है।

आज जरुरत इस बात की है कि स्कूली शिक्षा समाप्त कर जो युवा बाहर निकलते है, उनके अध्ययन के विषयों की बुनियादी जानकारी का व्यवहारिक पक्ष मजबूत हो। लोकतंत्र में राष्ट्र की जिम्मेदारी, नागरिको के कंधो पर होती है। यह वह तय करते हैं. कि उनक समाज का विकास किस दिशा में आगे बढ़े। इस जिम्मेदारी को वहन करने के लिए सुनिश्चत की गई शिक्षण व्यवस्था को क्या पुर्वमूल्यांकन की आवश्यक्ता है। यदि हाँ तो पुर्वमूल्यांकन का क्या आधार होगा क्या यह उद्देश्य के आधार पर सर्वसम्मत होगी या आवश्यक्ता के आधार पर ऐसे तमाम प्रश्न आज युवायों के जहन में है, जो कि कल के राष्ट्र निर्माता भी होगें।

शिक्षा का आधार चाहे जैसा भी हो किन्तु 21 वीं सदी की शिक्षण व्यवस्था में इस बात को ध्यान देना अनिवार्य है कि शिक्षा को आने वाले वाले समय में उद्योग तथा समाज से सीधे जोड़ा जाये। इसके लिए आवश्यक्ता होगी उत्तम शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाओं की जिसके लिए एकेडमिक, औद्योगिक, और सरकारी तीनो क्षेत्रो को अपनी–अपनी भागीदारी ईमानदारी के साथ निभानी होगी। इन तीनों क्षेत्रो के संयुक्त प्रयास से, भारत की महाशक्ति बनकर विश्व पटल पर चमकेगा। जिसके लिए शिक्षा राष्ट्र विकास की कुजी के रूप में कार्य करेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. बहादुर सिंह करुण, 'शिक्षा राष्ट्र विकास की कुंजी',कुरुक्षेत्र, पेज नम्बर (30–32) सितम्बर 2006
2. महेन्द्र सिंह यादव महेन्द्र,'मध्यप्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रो में प्रारम्भिक शिक्षा का बदलता परिदृश्य', कुरुक्षेत्र, सितम्बर 2006, पेज नम्बर 34
3. कुंड प्रतिभा, 'शिक्षा क्षेत्र के लिए प्रावधान', योजना, मार्च 2016 पेज नम्बर (59–62)
4. डॉ. चन्द्रपाल,'महिला शिक्षा के अनसुलझे पहलू', कुरुक्षेत्र मार्च 2005, पेज नम्बर (25–27)
5. जे. पी. सिंह,'शैक्षणिक पद्धति समाजशास्त्र : अवधारणाएँ एवं सिद्धांत', सन 2017 फिल लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली।
6. कुमार पार्थिव:'शिक्षा हो आया ग्रामीण भारत में सामाजिक बदलाव', कुरुक्षेत्र दिसम्बर 2015, पेज नम्बर–18
7. यादव प्रसाद बद्री के, भारतीय शिक्षा का स्वरुप समस्या और समाधान, बौद्ध अध्ययन विभाग दिल्ली, भारत 2021

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

राष्ट्रीय सेवा योजना का राष्ट्र निर्माण में योगदान का अध्ययन

डॉ. प्रदीप कुमार भिमटे*

* सहा. प्राध्याापक एवं राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी, शास. महाविद्यालय, लालबर्रा, जिला बालाघाट (म. प्र.) भारत

प्रस्तावना – किसी भी राष्ट्र की प्रगति एवं खुशहाली में शिक्षा व्यवस्था का बहुत महत्व पूर्ण योगदान रहा है। आजादी के बाद भारत में शिक्षा व्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव देखने को मिले है। तथा राष्ट्रीय शिक्षा नितियों में समय-समय में बदलाव लाए गए जिससे की राष्ट्रीय प्रगति में नए आयाम प्राप्त हो सके। इसी व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लाई गई जो 21 वी सदी की पहली शिक्षा नीति है। जिसका लिये हमारे देश के विकास के अनिवार्य आवश्यकताओ को पूरा करना है। यह नीति भारत की परम्पदरा और सांस्कृतिक मुल्यो के आधार पूरा कर सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर बल देती है। यह नीति इस सिद्धांतो पर आधारित है कि शिक्षा से न केवल साक्षरता सख्या ज्ञान जैसी बुनयादी क्षमताओ के साथ साथ उच्चतर स्तर की तार्किक और समस्या समाधान सम्बंधी क्षमताओ का विकास हो सके।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में राष्ट्रीय सेवा योजना को एक विषय के रुप में विद्यार्थियो को पसंद के रुप में चुनने तथा उसके राजगार प्राप्ती कर सके ओपन इलेक्टिव विषय के रुप चुनने का अवसर होता है। राष्ट्रीय सेवा योजना वर्तमान समय में शिक्षा के साथ साथ विद्यार्थियो के व्यक्तित्व में बदलाव लाने तथा राष्ट्र की सेवा का सबसे अच्छा माध्यम है प्रारीभ से ही छात्रो को राष्ट्रीय सेवा के प्रति जागरुक करने का प्रयत्न होता रहा है सन 1950 में प्रथम शिक्षा आयोग ने विद्यार्थियो को राष्ट्रीय सेवा के लिए भावना के आधार पर प्रवेश के लिए संस्तुति की। इसके साथ ही तत्कालीन प्रधानमंत्री प. जवाहर लाल नहरु के सुझाव पर डॉ. सी डी देशमुख की अध्यक्षता में आयोग बनाया गया जिसका उद्देश्य छात्रो को स्नातक कक्षाओ में प्रवेश के पूर्व राष्ट्रीय सेवा अनिवार्य रुप सें करने की प्रोफेसर के जी सैउद्दीन जो विभिन्न देशो में युवाओ की राष्ट्रीय सेवाओ का अध्ययन कर चुके थे उनका कहना था की राष्ट्रीय सेवा स्वंय सेवका के आधार पर प्रारंभ कि जानी चाहिए प्रारंभ से ही राष्ट्रीय सेवा योजना की पृष्ठ भूमि में चिंतन की धारा रही है। एक विद्यार्थी को उच्च शिक्षा संबधी सुविधाए उपलब्ध कराने के लिए समाज को बहुत कुछ व्यय करना पड़ता है। अत: यह त्रण उतारने के लिए उसे कम से कम अपने आस पास के समुदाय में कुछ समाज सेवा के कार्य अवश्य करना चाहिए। जिस समाज में हम रहते है उसके प्रति भी हमे अपना दायित्व निभाना होता है। स्वतंत्र देश में केवल राजनैतिक स्वतंत्रता ही पर्याप्त नही है अपितु आर्थिक एवं समाजिक स्तर पर बेहतर कार्य करके इन बुराईयो कम कर सके इसमे उच्च शिक्षित युवाओ कि अहम भूमिका है यदि इन युवा वर्ग को समय पर पर्याप्त मार्ग दर्शन तथा अवसर मिले तो असमानता कि खाई को पाटने में कारगार साबित होंगे। भविष्य में देश की बागडोर सभालने वाली पीढी को समाज के विभिन्न वर्गो को तथा दलितो एवं शोषित लोगो की समस्याओं का प्रत्यक्ष एवं व्यवहारिक बोध हो ताकि वह उनकी एवं स्वयं की समस्याओ को हल कि दिशा में प्रवृत हो सके। 18 से 25 वर्ष की आयु में आदर्शवाद, देशप्रेम और कुछ कर गुजरने की चाहत से भरी हुई तरुणाई को ऐसे संस्कार एवं मार्गदर्शन दिए जाने चाहिऐ जो कि उन्हे श्रम की निष्ठा तथा प्रजातार्न्रिक विचारधारा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अनुशासन रख सके। राष्ट्रीय सेवा योजना के क्रियावयन में प्रशासनिक तथा समाजिक सरोकारो कि महत्वपूर्ण भूमिका है। मध्यप्रदेश की राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियाँ देश में अग्रणी रही है यह सब स्वयं सेवको की निष्ठा एवं सकारात्मक सोच से ही सभंव हो सका है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी 24 सिंतबर 1969 से ही राष्ट्रीय सेवा योजना आरंभ की गई है। इस इकाई से अनेक विद्यार्थी जुडकर राष्ट्र की निरंतर कर रहे है।

शब्द कुंजी – राष्ट्रीय सेवा योजना, युवा, व्यक्तित्व विकास।

अध्ययन की शोध प्रविधि – प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक संमको पर आधारित है, जिसमें मुख्य रुप से आकड़ों से संग्रहण हेतु शासकीय, पत्र-पत्रिकाओं, सख्यिकीय पुस्तिका, इन्टरनेट आदि का सहारा लिया गया है। अध्ययन की प्रासंगिकता - प्रत्येक शोध कार्य का एक निश्चित उद्देश्य एवं प्रत्येक उद्देश्यपूर्ण कार्य का अपना महत्व होता है उपलब्ध साहित्य की समीक्षा से स्पष्ट होता है राष्ट्रीय सेवा योजना के महत्व को रेखांकित किया गया है जिससे युवा जुड़कर राष्ट्र की निस्वार्थ भाव से सेवा करके स्वयं का राष्ट्र के लिए योगदान सुनिश्चित कर सकते है। इस कार्यो से राष्ट्रीय प्रेम एवं देश सेवा का युवाओं में जोश जज्बा तथा उत्साह उत्पन्न होगा तथा सामाजिक सेवा सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित करने में सहायता प्रदान होगी।

राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्य- समाज सेवा के माध्यम से विद्यार्थीयो के व्यक्तित्व का विकास करना है देश की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिणक, सांस्कृातिक एवं ऐतिहासिक मुल्यो से अवगत कराना है।

राष्ट्रीय सेवा योजना की थीम- स्वास्थ्य जन स्वतच्छता एवं व्यकक्तिगत स्वास्थ रही है सत्र 2024-25 के लिए लक्ष्य थीम - 'मेरा युवा भारत माय भारत के लिए युवा डिजिटल साक्षरता के लिए युवा।'

राष्ट्रीय सेवा योजना का लायल – शिक्षा द्वारा समाजसेवा एवं समाज सेवा द्वारा शिक्षा है इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थीयो से अपेक्षा कि जाती कि वे जो जिस समाज में कार्य करते है उसे समझने का प्रयास करे समुदाय कि तुलना में स्वयं को समझना समुदाय की जरूरत और समस्याओं की पहचान करना तथा उन्हें समस्या के समाधान की प्रक्रिया में भागीदारी

बनाना स्वयं में सामाजिक एवं नागरिक जिम्मेदारी का बोध विकसित करना समूह में रहने और जिम्मेदारियां को बांटने के लिए जरूरी क्षमता विकसित करना, नेतृत्व गुण एवं लोकतांत्रिक प्रवृत्ति विकसित करना, राष्ट्रीय अखंडता और सामाजिक सदभाव बनाए रखना।

योजना के क्रियान्वयन में प्रशासनिक एवं सामाजिक सरोकारों की अहम् भूमिका – प्रदेश की राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियों में देश में अग्रणी रही है। यह सब युवा पीढ़ी की सकारात्मक सोच से ही संभव हुआ है। भारत में युवा प्रवर्तक राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी 24 सितंबर 1969 से राष्ट्रीय सेवा योजना आरंभ की गई थी। राष्ट्रीय सेवा योजना का उद्देश्य समाज सेवा के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास करना है। इसका लक्ष्य शिक्षा द्वारा समाज सेवा तथा समाज सेवा के माध्यम से जीवन मूल्यों की शिक्षा प्राप्त करना जिससे कि विद्यार्थी जिस समाज में वह कार्य करे उससे वह बेहतर तरीके से समझने का प्रयास करें एवं समाज की मूलभूत आवश्यकताओं का अनुभव करें, उनकी कठिनाइयों को समझने तथा यथासंभव समस्या के समाधान के लिए सक्रिय रहे। स्वयं में सामाजिक एवं नागरिक भावना के दायित्व का बोध हो सके। सामाजिक सहभागिता के लिए निपुणता प्राप्त करें।

राष्ट्रीय सेवा योजना का प्रतीक चिन्ह उड़ीसा के कोणार्क स्थित सूर्य मंदिर के रथ के चक्र पर आधारित है। सूर्य मंदिर का यह विशाल चक्र सृजनात्मक शक्ति, गतिशीलता एवं अपार ऊर्जा का प्रतीक है जो काल एवं स्थान से परे जीवन में गति का महत्व बताता है। इस प्रतीक चिन्ह में मुख्य रूप से दो रंग आ रहे हैं। इसकी पृष्ठभूमि में नीला रंग ब्रम्हाण्ड का प्रतीक है तथा लाल रंग उत्साह एवं स्फूर्ति का इस प्रकार से यह प्रत्येक चिन्ह यह प्रदर्शित करता है कि स्वयंसेवकों को ऊर्जावान होकर वैश्विक स्तर पर परिवर्तन लाने एवं उसे उन्नत करने के लिए ऑठो पहर गतिमान रहना चाहिए। राष्ट्रीय सेवा योजना का सिद्धांत वाक्य Not me but you अर्थात मैं नहीं आप है। जो प्रजातांत्रिक ढंग से रहने के लिए तैयार करना है एवं नि:स्वार्थ सेवा भाव की भावना विकसित करना है। यह सिद्धांत हमें दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण की सराहना करने वाले बनने के लिए प्रेरित करता है। साथ एक दूसरे के प्रति सम्मान के भाव जागृत करता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना में नियमित गतिविधि – राष्ट्रीय सेवा योजना में नियमित गतिविधियों के अंतर्गत एक वर्ष में कम से कम 120 घंटे का कार्य करना होता है। अनिवार्य गतिविधियों पात्रता में अभिमुखीकरण में राष्ट्रीय सेवा योजना का दर्शन, प्रेरणा गीत, नागरिकता बोध, यातायात नियमो, का पालन, पी टी योग, खेल एवं पर्यावरण जागरुकता की गतिविधियों को सम्मिलित किया गया है। सत्र 2024-25 में राष्ट्रीय सेवा योजना के विद्यार्थियों ने मेंरी माटी मेंरा देश, एक पेड़ माँ के नाम, विद्यावान, साइबर सुरक्षा, डिजिटल साक्षरता, आपदा प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण, मतदाता जागरुकता, इको क्लब, एड्स के प्रति जागरूकता।

जैसे अति महत्वपूर्ण कार्यक्रम सहभागिता करके स्वयं सेवक राष्ट्रीय दायित्व का भलीभांति निर्वहन करते हैं, अनुशासन में रहकर कार्यों को ईमानदारी के साथ पूर्ण करते है एवं मिलजुलकर कार्यों को करते हैं। इससे विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता विकसित होती है तथा सामाजिक, राजनीति, एवं आर्थिक पहलुओ को जानने का अवसर प्राप्त होता है विद्यार्थियों में गीत संगीत के माध्यम से बहुमुखी प्रतिभा का विकास होता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना से व्यक्तित्व का विकास होता है सात दिवसीय विशेष शिविर में स्वयं सेवकों के साथ ग्रामीण जनो के मध्य जाकर, उनके सुझावों एवं सहयोग से स्वच्छता, पर्यावरण जागरूकता, नालियों की साफ सफाई एवं नारों के माध्यम से जन मानस में जन जागृति का संदेश दिया जाता है।

आज के वर्तमान समय में व्यक्तित्व विकास की महती आवश्यकता महसूस की जा रही है उनके लिखित एवं मौलिक संप्रेक्षण तथा संवाद, क्षमता होनी चाहिए साथ ही नेतृत्व देने एवं टीम के साथ काम करने की योग्यता, समस्या का समाधान करने की क्षमता किसी कार्यकम को आयोजित करने एवं संचालन करने की क्षमता विकसित करने में राष्ट्रीय सेवा योजना की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

विशेष शिविर– राष्ट्रीय सेवा योजना में नियमित गतिविधियों के तहत विद्यार्थियों को अपने रिक्त समय का सदुपयोग संरचनात्मक कार्य में करने का अवसर मिलता है। वर्ष एक बार गोद ग्राम या अन्य ग्राम में आयोजित शिविर में उन्हें जीवन का अमूल्य अनुभव प्राप्त करते हैं। सात दिवसीय विशेष शिविर इकाई के 50% विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य होता है। शिविर के माध्यम से विद्यार्थी ग्राम में प्रभात फेरी के माध्यम से जन जागरण करते हैं तथा राष्ट्रीय सेवा योजना की जानकारी दी जाती है। एक साथ मिलकर कार्य करना, परियोजना कार्य में समन्वय, के साथ हाथ बटाना या मिलकर कार्य करना आदि की सिख मिलती है। तथा शिविर के दौरान प्रत्येक स्वयं सेवक अनुशासन में रहकर राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रति समर्पित भाव से कार्य करते है।

जागरूकता कार्यक्रम के आयोजनों में राष्ट्रीय सेवा योजना का सहयोग – 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' की शुरुआत भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने 22 जनवरी 2015 को पानीपत हरियाणा से की थी। इस योजना से पुरे जीवन काल में शिशु लिंगानुपात में कमी को रोकने में मदद मिली है। मतदाता जागरुकता, पोषण आहार, आद्र भूमि दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस, युवा दिवस, सयुक्त राष्ट्रक संघ स्थापना दिवस, अग्नि शमन दिवस, गांधी जयंती एवं भारत के महापुरुषों के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने में राष्ट्रीय सेवा योजना की हमेशा महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस प्रकार के कार्यो से स्वयं सेवकों में समाज के प्रति संवेदनशीलता, जागरूकता एवं सेवा भाव की भावना पनपती है तथा समाज को जागरूक करने में अग्रणी भूमिका में रहते है जल है तो कल है, पर्यावरण के दुश्मन तीन पाउच पन्नीस पॉलिथीन, मानव मानव एक समान जात पात का मिटे निशान, सारे काम छोड़ दो सबसे पहले वोट दो जैसे अनेक प्रेरणादायी नारो से गांव-गांव में जाकर, शिविर तथा नियमीत गतिविधियो के माध्यम से समाज में जन जागरूकता का अभियान चलाया जाता है इससे जन मानस में कार्य करने तथा युवाओं को सहयोग देने की भावना पनपती है तथा प्रजातांत्रिक विचारधारा, वैज्ञानिक सोच एवं स्वप्रेरणा तथा अनुशासन की भावना प्रबल होती है।

सुझाव :

1. राष्ट्रीय सेवा योजना में प्रवेश के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए सत्र के प्रारंभ में जानकारी दी जानी चाहिए।
2. नियमित गतिविधियों में विशेष शिविर के लिए अनुदान राशि में वृद्धि की जानी चाहिए।
3. NCC की तरह NSS के स्वयंसेवकों के लिए ड्रेस कोड की राशि प्रदान की जानी चाहिए।

4. विद्यार्थियों के सतत व्यापक मूल्यांकन में NSS के विद्यार्थियों को अतिरिक्त अंक प्रदान करने की नीति बननी चाहिए।

निष्कर्ष – राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से विद्यार्थियों में राष्ट्र के प्रति समर्पित भाव से कार्य करने की भावना विकसित होती है एवं युवाओं को उच्च शिक्षा के साथ–साथ पाठ्येतर गतिविधियों के भाग लेने से स्वयं सेवको के व्यक्तित्व में निखार आता है समुदाय से जुड़ाव होता है एवं समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों को दूर करने में सहायता करते है तथा इस प्रकार के कार्यो से समाज के कमजोर वर्ग के प्रति सवेदंशीलता, सहानुभूति एवं मिलजुलकर कार्य करने की भावना उत्पन्न होती है एवं समय–समय पर आयोजित स्वास्थ्य शिविरो एवं पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रमों सहभागिता से नागरिक दायित्व का विकास होता है उन्हें राष्ट्र के प्रति प्रेम देश की एकता अखंडता एवं बंधुत्व बढ़ाने के लिए युवा वर्ग आगे रहकर कार्य करते हैं, जिसे नेतृत्व क्षमता बढ़ाने के साथ–साथ परिस्थितियों को समझने की शक्ति उत्पन्न होती है, अंत: राष्ट्रीय सेवा योजना अत्यंत महत्वपूर्ण इकाई है, जिससे जुड़कर युवा अपना बेहतर भविष्य बना सकता है। एवं राष्ट्र की निस्वार्थ भाव से सेवा में सदैव तत्पर रहते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. राष्ट्रीय सेवा योजना के मैनुअल 2006 भारत सरकार युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय, नई दिल्ली।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली।
3. उच्च शिक्षा विभाग विभागीय प्रशासकीय प्रतिवेदन वर्ष 2023–24।
4. राष्ट्रीय सेवा योजना भारतीय इंटरप्राइजेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मध्यप्रदेश के धार जिले में ग्रामीण महिला साक्षरता का वितरण प्रतिरूप : एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. किरण मण्डलोई*

* सहायक प्राध्यापक (भूगोल) शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़नगर, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – किसी भी देश के समग्र विकास के निर्धारक घटकों में प्रमुख घटक साक्षरता है। देश के बहुआयामी विकास हेतु प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं, परन्तु अभी भी देश के समग्र विकास हेतु आवश्यक कुशल एवं प्रशिक्षित जनशक्ति का अभाव है। किसी भी देश का समान व वर्ग का आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक विकास करना है तो समाज की आधी आबादी अर्थात् महिलाएं जो कि विकास की मुख्य धारा में नहीं हैं उन्हें शिक्षित करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

भारत जैसे विकासशील देशों में आज भी ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों की महिलाओं में साक्षरता का स्तर अपेक्षाकृत न्यून है। प्रस्तुत अध्ययन आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में प्राचीन समय से ही महिला शिक्षा का अभाव रहा है। सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बावजूद विभिन्न जातियों एवं वर्गों में विभक्त समाज में साक्षरता उसकी अपनी विशेषताओं द्वारा निर्धारित होती है। जिन समाजों में महिलाओं को परिसंचरण की स्वतंत्रता है या नहीं है, किन्तु उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है उन समाजों में महिला साक्षरता के प्रति प्रतिकूल प्रभाव हैं।

शब्द कुंजी –साक्षरता, बहुआयामी, संसाधन, आदिवासी, आर्थिक स्थिति।

प्रस्तावना – किसी भी देश-प्रदेश के विकास को परखने का सर्वोत्तम उपाय वहां की महिलाओं की शिक्षा से आंकलन लगाया जा सकता है। महिलाएं परिवार रूपी गाड़ी की धुरी हैं। महिलाओं का शिक्षित होना अति आवश्यक है क्योंकि वे ही परिवार को शिक्षित करती हैं। इसलिए गाँधीजी ने कहा था कि 'एक लड़की कि शिक्षा एक लड़के से अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि लड़के को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित होता है परंतु एक लड़की की शिक्षा से पूरा परिवार शिक्षित होता है।' शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है, पथ-प्रदर्शक, है निर्माण है एवं विकास है।

भारत के विकास में महिला साक्षरता का बहुत बड़ा योगदान है। इस बात को नकारा नहीं जा सकता है कि पिछले कुछ दशकों से ज्यों-ज्यों महिला साक्षरता में वृद्धि होती गई है, वैसे-वैसे भारत विकास के प्रत्येक पथ पर अग्रसर हुआ है। जो व्यक्ति समझकर पढ़ना-लिखना एवं हस्ताक्षर करना जानते हैं, साक्षर कहे जाते हैं। असाक्षरता, व्यक्ति एवं समाज दोनों के विकास में बाधक हैं। स्वामी विवेकानंद के अनुसार- 'केवल पुस्तकीय ज्ञान से काम नहीं चलेगा। हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिससे कि व्यक्ति अपने स्वयं के पैरों पर खड़ा हो सकता है।'

साहित्य समीक्षा :

1. **त्यागी गुरसरनदास एवं विजय कुमार (2009) : 'उदीयमान भारत में शिक्षा'–** किसी भी व्यक्ति समाज तथा देश के समग्र विकास में आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक विकास के निर्धारक घटकों में प्रमुख घटक साक्षरता है। 'साक्षरता वास्तव में न तो पढ़ाई-लिखाई है और न ही कोई विशेष योग्यता। साक्षरता पढ़ने-लिखने की मनोदशा का एक यंत्र है।'

2. **डॉ. दीपारानी (2019) : 'उत्तराखण्ड के जनपद टिहरी में जनसंख्या का प्रतिरूप : एक भौगोलिक अध्ययन'–** साक्षरता मानव प्रकृति की सर्वोत्तम रचना है। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान प्रदान करती है और ज्ञान अनंतिम शक्ति है। साक्षरता और शिक्षा को सामान्यत: सामाजिक विकास के संकेतकों के तौर पर देखा जाता है।

3. **गजराज नेगी एवं विजय बहुगुणा (2019) : 'साक्षरता का स्थानिक वितरण प्रतिरूप – उत्तराखण्ड राज्य के गैरसैण विकासखण्ड (जनपद चमोली) के संदर्भ में : एक भौगोलिक अध्ययन'–** शोध क्षेत्र में भौगोलिक जटिलताओं के अध्ययन के कारण शिक्षा के स्तर में पर्याप्त लैंगिक साक्षरता अंतराल दृष्टिगोचर होता है।

4. **डॉ. जियालाल राठौड (2024) : 'जनजाति क्षेत्र का साक्षरता परिदृश्य एवं सामाजिक परिवर्तन शहडोल संभाग के विशेष संदर्भ में'–** शोध पत्र में महिला एवं पुरुष साक्षरता का अध्ययन किया है। वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा भी रोटी, कपड़ा और मकान आदि की तरह मूलभूत आवश्यकता बनती जा रही है।

श्रीमती हंसा मेहता समिति (1962), कोठारी कमीशन (1964-66), नारी शिक्षा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1980) शिक्षा की चुनौतियां : नीतिगत परिप्रेक्ष्य, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार (1986), राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1987-88), राममूर्ति समिति रिपोर्ट (1990), जनार्दन रेड्डी समिति (1992) एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) आदि विभिन्न नीतियों/समितियों के माध्यम से महिलाओं में शिक्षा के सही विकास और राष्ट्रीयजीवन में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला है।

अध्ययन क्षेत्र :

अध्ययन क्षेत्र पश्चिमी मध्यप्रदेश का आदिवासी बाहुल्य जिला है। इस जिले का धरातल भौगोलिक संरचना की दृष्टि से बहुत ही असमान है। जिले के उत्तर में मालवा का पठार, मध्य भाग पर्वतीय (विंध्याचल पर्वत श्रेणी) तथा दक्षिण में नर्मदा घाटी व निमाड़ का मैदान है। अध्ययन क्षेत्र की भौगालिक स्थिति मध्यप्रदेश के पश्चिमी भाग में 22°43' से 23°10' उत्तरी अक्षांश एवं 74°28' से 75°42' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए वहां के भौतिक एवं आर्थिक संसाधन बहुत अधिक प्रभावित करते हैं। शिक्षा भी इन्हीं ससाधनों के अभाव के कारण पिछड़ जाती है।

अध्ययन का उद्देश्य : प्रस्तुत अध्ययन में विन्ध्य पर्वत एवं नर्मदा नदी के मध्य वनाच्छादित भू-आकृतिक रूप से विषम एवं पिछड़े भागों में स्थित आदिवासी बाहुल्य जिला धार (म.प्र.) की महिलाओं की शिक्षा के प्रति जागरूकता को जानने का प्रयास किया गया है।

शोध विधि : प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। द्वितीयक शोध आंकड़ों का संकलन विभिन्न प्रकाशित जिला सांख्यिकीय पुस्तिका, जनगणना पुस्तिका गजेटियर (2011) तथा अन्य पुस्तकों एवं पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से किया गया है। अध्ययन को रुचिकर एवं वैज्ञानिक बनाने के लिए विभिन्न तालिकाओं, आरेखों एवं मानचित्र का प्रयोग किया गया है।

महिला साक्षरता का वितरण : भारत में भी विश्व के अन्य देशों की साक्षरता का प्रादेशिक वितरण असमान है। इसी प्रकार धार जिले में भी महिला साक्षरता का वितरण असमान पाया गया है। आर्थिक दृष्टि से उन्नत क्षेत्रों में साक्षरता सामान्य से अधिक एवं पिछड़े क्षेत्रों में कम पाई जाती है। किसी भी देश में साक्षरता का मापदण्ड प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद का उच्च होना ही नहीं है अपितु शिक्षा के लिए प्रति व्यक्ति आय उच्च होने के साथ-साथ वहां का सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं प्राकृतिक वातावरण भी उच्च होना चाहिए।

धार जिले में जनसंख्या का असमान वितरण है। जिले की कुल जनसंख्या वर्ष 2011 के अनुसार 2185793 व्यक्ति है, जिसमें पुरुष 1112725 एवं महिला 1073068 है। जिले की कुल जनसंख्या में से ग्रामीण जनसंख्या 1772572 व्यक्ति है। कुल ग्रामीण जनसंख्या में से पुरुष 895113 एवं महिलाएं 877459 हैं।

धार जिले की कुल साक्षरता 2011 के अनुसार 59 प्रतिशत है जिसमें पुरुष साक्षरता 68.95 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता 48.77 प्रतिशत है। जिले में कुल 08 तहसीलें (बदनावर, कुक्षी, मनावर, सरदारपुर, गंधवानी, धरमपुरी एवं डही) तथा 13 विकासखण्ड हैं। इन विकासखण्डों में 1477 आबाद ग्राम हैं जिनका अध्ययन इस प्रकार है।

तालिका क्रमांक 01 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

तालिका क्रमांक 01 से स्पष्ट है कि धार जिले की विकासखण्डों में से धार विकासखण्ड में सबसे अधिक महिलाएं साक्षर (45.40 प्रतिशत) हैं। इसका कारण इस विकासखण्ड के धार मुख्यालय के समीप होने के कारण यातायात एवं शिक्षा की व्यापक सुविधाएं उपलब्ध हैं। धार विकासखण्ड मालवा पठार पर कृषि एवं उद्योग के कारण स्त्रियों को अधिक स्वतंत्रता तथा प्रतिष्ठा मिली हुई है। इसी प्रकार सबसे कम साक्षर महिलाएं 24.80 प्रतिशत एवं सबसे अधिक असाक्षर महिलाएं 75.20 प्रतिशत बाग विकासखण्ड में है। इसका मुख्य कारण है, इन दुर्गम पर्वतीय व वनीय क्षेत्रों में सामाजिक, आर्थिक पिछड़ेपन की जनसंख्या का एक बड़ा भाग भूमिहीन, पिछड़ी तथा अनुसूचित जाति, जनजातियों में रूढ़िवादी समाजों में स्त्री साक्षरता पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में अधिकांश ग्रामीण अधिवास ऐसे हैं जहां यातायात, विद्यालयों तथा पर्याप्त शिक्षकों की सुविधाओं का न होना एवं महिला शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी है।

तालिका क्रमांक 02 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

तालिका क्रमांक 02 से स्पष्ट है कि धार जिले की कुल 08 तहसील के 13 विकासखण्ड में कुल 1535 ग्राम निर्धारित हैं। उनमें से निवासरहित ग्राम 58 तथा निवासित ग्राम 1477 हैं। शोध अध्ययन में 1477 ग्रामों को शामिल किया गया है।

धार जिले में ग्रामवार महिला साक्षरता के वितरण को पांच भागों में बांटा गया है। (1) जिले में अति उच्च साक्षरता (80 से अधिक) 8 ग्रामों में अर्थात सबसे कम 0.54 प्रतिशत पाई गई है। (2) उच्च साक्षरता (60-80 प्रतिशत) 88 ग्रामों में अर्थात 5.96 प्रतिशत। (3) मध्यम साक्षरता (40-60 प्रतिशत) 636 ग्रामों अर्थात 43.06 प्रतिशत (4) निम्न साक्षरता (20-40 प्रतिशत) 624 ग्रामों में अर्थात 42.25 प्रतिशत (5) जिले में अति निम्न साक्षरता (0-20 प्रतिशत) 121 ग्रामों में अर्थात 8.19 प्रतिशत ग्रामों में ही पाई गई है।

महिला साक्षरता के वितरण को प्रभावित करने वाले कारक

1) भौगालिक कारक 2) आर्थिक कारक 3) सामाजिक करक
4) सांस्कृतिक कारक 5) राजनीतिक कारक

महिला साक्षरता में वृद्धि – मध्यप्रदेश सरकार ने समाज के सभी वर्गों की महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा एवं कल्याण की दृष्टि से विभिन्न योजनाएं लागू की गई, जैसे लाड़ली लक्ष्मी योजना, सर्वशिक्षा अभियान, बालिका शिक्षा, कन्या साक्षरता प्रोत्साहन, मुख्यमंत्री साइकिल योजना, गांव की बेटी एवं आधुनिक यंत्र लेपटॉप एवं स्कूटी आदि योजनाओं के माध्यम से जिले में महिला साक्षरता में वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष – जिला धार आदिवासी जनजातीय क्षेत्र में अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, गरीबी, अज्ञानता एवं निजी उदासीनता के कारण उनकी मानसिकता भी कुछ वैसी ही बनी हुई है कि वे शिक्षा के महत्व को कम समझते हैं। ऐसे लोगों को समझाना ही होगा कि उच्च शिक्षा ही नहीं बल्कि साक्षरता भी उनके निजी एवं व्यावसायिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकते हैं। संक्षेप में कह सकते हैं कि साक्षरता की सार्थकता महिलाओं की शिक्षा एवं स्वरोजगार में रुचि से मानव प्रतिष्ठा में वृद्धि करके राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ा जा सकता है। वर्तमान में जिले की महिलाओं में राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन देखने को मिलता है। खासकर बालिकाओं/महिलाओं की शिक्षा/साक्षरता उन्हें छोटे परिवार के प्रति जागरूक बनाती है। वे विवाह भी जल्दी नहीं करती हैं तथा परिवार को शिक्षित एवं नियोजित हेतु सचेत रहती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. पण्डा बी.पी. (2004) : 'जनसंख्या भूगोल', मध्यप्रदेशस हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
2. त्यागी गुरसरनदास एवं विजय कुमार (2009) : 'उदीयमान भारत में शिक्षा', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
3. कुमार प्रमिला एवं शर्मा श्रीकमल (2015) : 'मध्यप्रदेश : एक भौगोलिक अध्ययन', मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
4. डॉ. दीपारानी (2019) : 'उत्तराखण्ड के जनपद टिहरी में जनसंख्या

का प्रतिरूप : एक भौगोलिक अध्ययन' ISSN: 2249-894x, UGC APPROVED JOURNAL No. 48514, Vol.-8, May - 2019.
5. ब्रजेश कुमार पाण्डेय (2019) : 'जनसंख्या की साक्षरता एवं व्यावसायिक संरचना की विशेषताएं' ISSN: 2347-2944, 2582-2454, Vol.-11, Dec - 2019.
6. डॉ. जियालाल राठौर (2024) : 'जनजाति क्षेत्र का साक्षरता परिदृश्य एवं सामाजिक परिवर्तन : शहडोल संभाग के विशेष सन्दर्भ में' ISSN: 2249-894x, Vol.-14, Dec - 2024.

तालिका क्रमांक 01: जिला धार : विकासखण्डवार महिला साक्षरता 2011 (प्रतिशत में)

महिला साक्षरता	विकासखण्ड												
	बदनावर	सरदारपुर	तिरला	धार	नालछा	गंधवानी	बाग	कुक्षी	डही	निसरपुर	मनावर	बाकानेर	धरमपुरी
साक्षर	43	31.40	33.60	45.40	37.90	29.50	24.80	34	30.40	42	38.90	40.90	41.70
निरक्षर	57	68.60	66.40	54.60	62.10	70.50	75.20	66	69.60	58	61.10	59.10	58.30

स्त्रोत : सर्वे ऑफ इंडिया (2011)

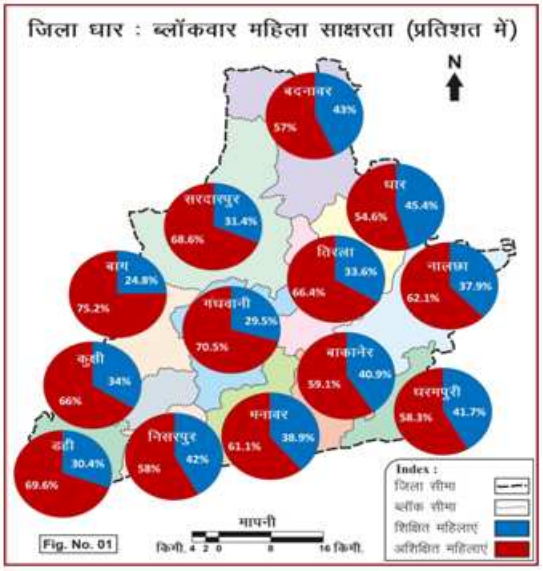

तालिका क्रमांक 02: जिला धार : विकासखण्डवार ग्रामीण महिला साक्षरता का वितरण प्रतिरूप (प्रतिशत)

क्र.	विकासखण्ड का नाम	साक्षरता वितरण एवं ग्रामों की संख्या					ग्रामों की संख्या
		0-20	20-40	40-60	60-80	80 से अधिक	
1	बदनावर	03	48	87	25	02	165
2	सरदारपुर	32	102	53	04	00	191
3	तिरला	13	79	43	10	00	145
4	धार	01	11	73	11	01	97
5	नालछा	20	73	74	11	02	180
6	गंधवानी	21	90	31	03	00	145
7	बाग	18	56	45	01	00	90
8	कुक्षी	05	20	21	01	00	47
9	डही	03	44	14	00	00	61
10	निसरपुर	03	12	38	03	01	57
11	मनावर	01	26	65	02	01	95
12	बाकानेर	01	25	70	07	00	103
13	धरमपुरी	02	36	51	11	01	101
	योग	**121**	**624**	**636**	**88**	**08**	**1477**

स्त्रोत : सर्वे ऑफ इंडिया (2011) एवं शोधार्थी एवं परिकलित।

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

आचार्य विशुद्धसागर के साहित्य में अध्यात्म और दर्शन : एक समीक्षात्मक दृष्टिकोंण

डॉ. रचना तैलंग* दिलीप कुमार जैन**

* प्राध्यापक (हिन्दी) शास. हमीदिया कला एवं वाणिज्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय भोपाल (म.प्र.) भारत
** शोधार्थी (हिन्दी) शास. हमीदिया कला एवं वाणिज्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – ***'अध्यात्म और चिंतन मानव जीवन के महनीय तत्व हैं जो जीवन को सार्थकता प्रदान करते हैं। अध्यात्म के द्वारा हम अपनी आत्मा के स्वरूप को पहचानने का उपक्रम करते हैं। चिंतन हमें वस्तु के मूल स्वरूप को जानने की प्रेरणा प्रदान करता है। जब हमारा चिंतन सकारात्मक होता है तो व्यक्ति को वस्तु का मूल स्वरूप समझ में आता हैं इस मूल स्वरूप को जानने के पश्चात् व्यक्ति अध्यात्म की जिस दिशा में अग्रसर होता है वही उसके आत्मकल्याण का प्रबल आधार बनता है। भव-भव से बंधन मुक्त होने का एक ही उपाय है कि व्यक्ति आत्मा के स्वरूप को पहचाने और मोक्षमार्ग पर अग्रसर होकर मुक्ति को प्राप्त करे।'***

श्रमण संस्कृति वीतराग मार्ग की परिचायक है, इसे दूसरे शब्दों में दिगम्बर संस्कृति भी कहा जाता है। यह संस्कृति अहिंसा, अपरिग्रह, तप, त्याग व संयम की शिखर ऊँचाईयों की द्योतक है। भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर व 24 तीर्थंकरों ने दिगम्बरत्व को धारण कर तपश्चर्या के जिस मार्ग पर अपने जीवन को लगाया था उससे दिगम्बरत्व की अवधारणा भारतीय सांस्कृतिक चेतना की अक्षय निधि बन गई थी।

दिगम्बर संस्कृति का जीवन और जगत से गहरा संबंध रहा है इसमें अध्यात्म और दर्शन का अत्यंत गंभीरता से अध्ययन देखने को मिलता है। ऐसी मान्यता है कि जब तक मानव चिंतन करता रहेगा तब तक उसके जीवन में दर्शन का महत्व बना रहेगा। अर्थात जीवन और जगत के विश्लेषण से ही दर्शन का जन्म होता है। मानव ने सर्वपथम 'स्व' पर चितंन किया। तत्पश्चात् अपनी निकटतम वाह्य वस्तुओं पर चिंतन किया। इस प्रकार 'स्व' और 'पर' चिंतन 'स्व' और 'पर' का चिंतन नहीं दर्शन के उद्भव का प्रथम सोपान है। 'कुछ दार्शनिकों का चितंन यदि तर्क पर आधारित है तो किसी का आश्चर्य पर।'[1] किसी ने संदेह को अपने चिंतन का माध्यम बनाया तो किसी ने आत्मतत्त्व, बुद्धि, प्रेम, बाह्य जगत, आदि को प्रधानता दी है। इस तरह दर्शन की उत्पत्ति जिज्ञासा, संदेह या मानसिक अशांति से होती है। मन के अन्दर अन्वेषण और शोध की प्रवृत्ति का जाग्रत होना दर्शन का विषय है।

1. भारतीय दर्शन का मूल स्रोत – भारतीय दर्शन के मूल स्रोत के रूप में 'दु:ख निवृति के उपाय की जिज्ञासा।' अत: जीवन के प्रति उदासीनता, बैचेनी, और असंतोष की भावना से दर्शन का प्रारंभ होता है। 'इसीलिए गौतम बुद्ध ने शांति की खोज में वनों एवं पर्वतों की कंदराओं में जाकर जीवन के लक्ष्यों पर विचार किया और यही से उनका दर्शन प्रारंभ हुआ।'[2]

भारतीय दार्शनिकों ने तत्व के साक्षात्कार या उपलब्धि को दर्शन कहा है। सबसे प्रमुख तत्त्व आत्मा है। कहा भी है– 'आत्मानि विज्ञायते सर्वभिदम विज्ञातम भवति' अर्थात जो आत्मा को जान लेता है। 'मुक्तिपूर्वक तत्त्वज्ञान प्राप्त करने के प्रयास को ही दर्शन कहा है।'[3] अत: 'दर्शन शब्द का व्युत्पत्तिजन्य अर्थ है – देखना, विचारना, श्रद्धा करना।'[4]

यहाँ पर एक सीधा सा प्रश्न खड़ा होता है कि जीवन में दर्शन की आवश्यकता क्यों हुई। इसके पीछे मुख्य कारण यह समझ में आता है कि मनुष्य दर्शन जगत से जुड़कर विभिन्न प्रकार का ज्ञान जीवन में प्राप्त करना चाहता है। दर्शन अर्थात दार्शनिक चिंतन की 'बुनियाद'। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि दर्शन उस तत्त्व की खोज करता है जिससे जगत के दु:खों का निवारण हो और किसी उपाय के द्वारा सर्वोच्च सुख की प्राप्ति की जाए। अत: सांसारिक दु:खों के बंधान की निवृत्ति ही जिसे मोक्ष कहा गया है, भारतीय दर्शन का मुख्य लक्ष्य रहा है।

2. आचार्य विशुद्धसागर का दर्शन और अधयात्म – आचार्य विशुद्धसागर का सृजन मुख्य रूप से दर्शन और अध्यात्म को ही केन्द्र बिन्दु मानकर लिखा गया है। आचार्य श्री का मानना है कि सांसारिक प्राणी भौतिक चकाचौंध में अपने जीवन के मुख्य लक्ष्य को भूलकर इस संसार में ऐसा उलझ जाता है कि उसे इस उलझन के परिणामों को भवों-भवों तक भोगना पड़ता है। यही वजह है कि आचार्य श्री व्यक्ति को वाह्य वस्तुओं के प्रति अनासक्त होकर आत्मतत्त्व से जोड़ने की प्रेरणा देते हैं, क्योंकि अध्यात्म साधारण को असाधारण बना देता है। साधारण मनुष्य इच्छाओं के वशीभूत अतृप्ति में जीता है और असाधारण मनुष्य इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर आत्मसुख की अनुभूति करता है। साधारण व्यक्ति को सांसारिक सुख की तलाश होती है जबकि असाधारण व्यक्ति करुणा के भाव को अपनी आत्मा में जागृत कर उसे सम्यक्दर्शन का अंग बनालेता है। साधारण व्यक्ति मोह में जीता है और असाधारण व्यक्ति मोह छोड़कर पुरुषार्थ के द्वारा मोक्ष की ओर अग्रसर होता है। आचार्य श्री का मानना है कि यदि व्यक्ति आत्मसुख की प्राप्ति करना चाहता है तो उसे ममत्व भाव को छोड़ना पड़ेगा, क्योंकि विषय कषाय में जीने वाला व्यक्ति उस शीतल सरोबर का आनंद प्राप्त नहीं कर सकता जो वो चाहता है। इसके लिए उसे विषय कषायों के दल-दल से निकलकर आत्मविशुद्धि में रमण करना होगा। आचार्य श्री लिखते हैं–

'विषयों की ज्वाला में
जलने वालों को

समाधि जल से पूर्ण
चैतन्य शीतल सरोवर का
सुख प्राप्त नहीं होता।
वह विषय कषायों के दलदल में फँसकर
आत्मविशुद्धि से हीन
होकर रो रहा है।'[5]

इस भौतिक संसार के क्रियाकलापों में व्यक्ति यह भूल जाता है कि उसे जो कुछ इस संसार में दिख रहा है वही सत्य है। जबकि ऐसा नहीं है। जो सत्य है वो नजर इसलिए नहीं आता क्योंकि व्यक्ति की दृष्टि जब तक बाह्य जगत की ओर रहेगी तब तक वह आंतरिक सुख की अनुभूति नहीं कर सकता है। पुण्य के प्रभाव से यदि मान-सम्मान और यश की प्राप्ति होती है तो यह सब सामयिक है। इसका कोई स्थायी अस्तित्व नहीं है। इन अस्थिर चीजों के प्रति लगाव व्यक्ति को अपने लक्ष्य से भटकने के लिए विवश कर देता है। इस सत्य को जानने के लिए आचार्य श्री कहते हैं-

मत भूल जाना
जो दिख रहा है
लोक यश
मान-सम्मान
वह पुण्य का
विपाक है।
पाप-विपाक के
आने पर दर-दर
भटकना पड़ता है।
अत: विपाक के
मर्म को जान।'[6]

आत्मसुख को प्राप्त करने के लिए हमें चिंतन-मनन करते हुए अध्यात्म की ओर प्रवृत्ता होना होगा। अध्यात्म की अनुभूति वही कर सकता है जिसने संकल्पित भाव से संयम को धारण किया हो। संयम के द्वारा व्यक्ति असद् वृत्तियों का परित्याग कर सद्वृत्तियों की ओर प्रवृत्त होता है। ये सद्वृत्तियाँ व्यक्ति के जीवन में शुचिता का संचार करते हुए निर्मल भावों का प्रादुर्भाव कर आत्मप्रेरणा देकर सुख को प्राप्त करने की ओर इंगित करती हैं जो कि हमारे जीवन का मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। संयम के महात्म्य को प्रतिपादित करते हुए आचार्य श्री लिखते हैं।-

'सुख का साधन है
संयम भाव
दुर्गत से रक्षक है
संयम भाव
सुगति का साधन है
संयम भाव
प्राणी मात्र की
प्रवृत्ति की निवृत्ति है
संयम भाव
संयम पर जो जीता है,
वह पूज्यता को पाता है।'[7]

इस प्रकार आचार्य विशुद्धसागर द्वारा अध्यात्म, दर्शन के स्वरूप को अपने सृजन के माध्यम से जिन उदात्त भावों के साथ अभिव्यक्ति प्रदान की है वह नि:संदेह जगत के प्राणियों के लिए मोक्षमार्ग पर अग्रसर होने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। वास्तव में देखा जाये तो उनका समग्र सृजन अध्यात्म और दर्शन से ओतप्रोत है। मानव के अंदर व्याप्त उसकी शक्ति और ऊर्जा को जागृत करने के लिए आचार्य श्री ने जो अध्यात्म की संजीवनी प्रदान की है तथा उससे आम श्रावकों में जो जागृति आयी है वह निश्चित रूप से उनके आत्मकल्याण की भावना को पुष्ट करेगी और उनका जीवन अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ हो सकेगा।

निष्कर्ष - आचार्य विशुद्धसागर अध्यात्म और दर्शन के पुरोध हैं। अध्यात्म हमें आत्मदर्शन की प्रेरणा देता है और चिंतन के द्वारा हम इस भौतिक जगत के सत्यासत्य को जानने का प्रयास करते हैं। भौतिकता की चकाचौंध में फंसा हुआ व्यक्ति अध्यात्म के महत्व को नहीं समझ पाता और चिंतन की भावना उसमें जाग्रत नहीं होती। इसीलिए वह जीवन के उन मूल्यवान क्षणों को भी यूँ ही व्यतीत कर देता है, जो कि उसके लिए काफी महत्वपूर्ण होते हैं। विवेक और बोध की जाग्रति प्रत्येक मनुष्य में अपरिहार्य मानी गयी है, जब तक हम आत्मचिंतन के द्वारा उस जीवन के मूल उद्देश्य को समझने का प्रयास नहीं करेंगे तब तक जीवन को अर्थवान बना पाना कदापि संभव नहीं है। इसलिए व्यक्ति को चाहिए कि वह जीवन के मूल उद्देश्य को समझने का प्रयास करे, आत्मकल्याण की ओर प्रवृत्त हो, मोह के बंधनों से छुटकारा पाने का प्रयत्न करे, विकारों से दूरी बनाते हुए यह प्रयास करे कि उसे आत्मविशुद्धि के माधयम से कल्याण की दिशा में प्रवृत्त होकर जीवन को सार्थक बनाना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Phylosphy being in wonder (दर्शन का उद्भव और आश्चर्य), प्लेटो का कथन।
2. जैन काव्यों का दार्शनिक मूल्यांकन, - डॉ. जिनेन्द्र जैन, पृष्ठ-129
3. भारतीय दर्शन चटर्जी एवं दत्त, पुस्तक भंडार पटना, पृष्ठ-01,
4. सर्वदर्शन संग्रह (माधवाचार्य), भाष्यकार - प्रो. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पूर्व पीठिका -पृष्ठ-26।
5. ज्ञायक भाव, (घातक), आचार्य विशुद्धसागर, पृष्ठ-389
6. वही, (कर्म विपाक), पृष्ठ-425
7. वही, (संयम धार्म), पृष्ठ - 259

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

किशोरावस्था के विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव पर योग का प्रभाव

अनीता स्वामी* डॉ. उषा राठौर**

* शोधार्थी (शिक्षा) एचबीयूटीटी कॉलेज, एमडीएस विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.) भारत
** शोध मार्गदर्शक (शिक्षा) एचबीयूटीटी कॉलेज, एमडीएस विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.) भारत

शोध सारांश – प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य किशोरावस्था के विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव पर योग के प्रभाव का अध्ययन करना है जिससे कि वर्तमान में विद्यार्थियों पर बढ़ते शैक्षणिक दबाव को कम किया जा सके इस हेतु शोधकर्त्री ने शोध की प्रयोगात्मक विधि अपनाते हुए 100 विद्यार्थियों पर अध्ययन किया जो कि जयपुर शहर के विद्यालय से चुने गये थे। प्रयोग के लिए दो समूह प्रयोगात्मक व स्वतंत्र समूह बनाये गये उनमें 50-50 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इसके पश्चात् विद्यार्थियों पर पूर्व व पश्चात् आंकड़ों के एकत्रीकरण हेतु (अकेडमिक स्ट्रेस स्केल – श्रीनिवास एवं कुमार रेड्डी) उपकरण प्रशासित किया गया तथा प्रयोगात्मक समूह को योगाभ्यास कराया गया प्रमुख सम्प्राप्तियों में पाया गया कि विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है प्रदत्तों के विश्लेषण में मध्यमान, मानक विचलन व टी टेस्ट सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है अध्ययन में पाया गया कि योगाभ्यास का प्रभाव विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव को कम करने में पड़ता है।

शब्द कुंजी –किशोरावस्था, विद्यार्थी शैक्षणिक दबाव, योग।

प्रस्तावना – मानव जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है जन्म से लेकर मृत्यु तक अनवरत गति से शिक्षा मानव के विकास में अपना योगदान देती है शिक्षा के माध्यम से ही आज प्रत्येक देश ने अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक अस्मिता को अभिव्यक्ति दी है। जन्म से बालक का आचरण पशुवत होता है पर शिक्षा उसके व्यवहार में परिवर्तन लाकर उसके जीवन को सुन्दरता, प्रसन्नता व उत्कृष्ठता से भर देती है। प्राचीनकाल से शिक्षण व्यवस्था के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान की जा रही है।

विद्यालयीकाल में ही बालक बाल्यावस्था से किशोरावस्था में प्रवेश करता है अपने विद्यालयी अध्ययनकाल में जैसे-जैसे वह आगे बढ़ने लगता है वैसे-वैसे बढ़ने लगती है जिम्मेदारियाँ, आशाएँ व अपेक्षाएँ और ये ही उसके जीवन को प्रभावित करने लगती है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों को भयाक्रान्त करने में अपनी भूमिका निभा रही है परीक्षा का भय, सहपाठियों से आगे बढ़ने की चाह, माता-पिता की अपने बच्चों से अपेक्षाएँ और बस्तों का बढ़ता बोझ विद्यार्थियों पर शैक्षणिक दबाव बढ़ता जा रहा है शैक्षणिक दबाव से उत्पन्न भय, तनाव व आशंकाएँ विद्यार्थी के लिए अनेक कठिनाईयाँ उत्पन्न कर देती है।

दबाव व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है और व्यक्ति इससे बचना चाहता है। किशोर विद्यार्थियों में यह स्थिति उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव डालती है और उनमें अध्ययन के प्रति उपेक्षा की स्थिति उत्पन्न करती है NCERT 2022-23.

दबाव में व्यक्ति की मानसिक क्रियाएँ प्रभावित होती है भावनात्मक रूप से वह कमजोर पड़ जाता है अपरिमित ऊर्जा के बावजूद किशोर अपने जीवन को सारहीन समझने लगता है तथा धिरे-धिरे वह अंधेरे में खो जाता है वह अपने आपको हारा, थका, असफल चिन्ताओं से घिरा निराशा मय जीवन जीना प्रारम्भ कर देता है और इसके भयावह अन्त भी देखने को मिलते है बालक आत्माहत्या तक पहुंच जाते है।

दबाव की स्थिति में व्यक्ति नकारात्मक संवेगों से सम्बन्धित अनुक्रियाएँ करता है यदि दबाव की स्थिति व्यक्ति के समक्ष बनी रहती है और वह उसे दूर नहीं कर पाता है तो अन्ततः उसमें उदासीनता विकसित हो जाती है।

शैक्षणिक दबाव विद्यार्थियों के जीवन की सर्वाधिक मानसिक समस्याओं में से एक है तथा वे अपने खेलने एवं मनोरंजन हेतु समय नहीं निकाल पाते है इस स्थिति में वे समायोजित जीवन नहीं जी पाते। आज का युग परिणाम का युग है फल का युग है सामंजस्य स्थापित नहीं करपाता वह तनाव ग्रसित होकर घर में बन्द हो जाता है या आत्महत्या जैसे कदम उठा लेता है। वर्तमान में शैक्षिणक तनाव के गंभीर परिणाम देखने को मिल रहे हैं।

किशोरों में शैक्षणिक दबाव को दूर करने की आवश्यकता –शैक्षणिक दबाव के कारण भारत में आज आत्माहत्या की संख्याएँ बढ़ती जा रही है आज समय की मांग के आधार पर किशोरों के इस बढ़ते शैक्षणिक दबाव को कम करना आवश्यक है जिससे कि विद्यार्थी बिना किसी दबाव के निरन्तर अध्ययन कर सके। शैक्षणिक दबाव से विद्यार्थी को निजात देकर उसके जीवन को सुन्दर बनाया जा सकता है छोटी सी उम्र में आत्मदाह करने से उसे बचाया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य है कि किशोर विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव का अध्ययन करके उसे दूर करने के प्रयास किया जा सके।

योगाभ्यास विद्यार्थियों को शैक्षणिक दबाव का सामना करने में सहायक हो सकते हैं प्रस्तुत शोधकार्य में योग के माध्यम से योग के प्रभाव का प्रयोगात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। योग भारत की एक प्राचीन प्रथा है जो 5000 से अधिक वर्षो से चली आ रही है योग सूक्ष्म विज्ञान से सम्बन्धित है, ये शरीर मन व आत्मा के मध्य संतुलन स्थापित करता है श्रीमद् भगवत् गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने योग के महत्व पर बल दिया है अध्याय दो के श्लोक 50 में कहा है –

'योग: कर्मेसुकोशलम्'

अर्थात् 'कर्म की कुशलता ही योग है।'

मनोविज्ञानिक समस्याओं का समाधान योग है योग के माध्यम से व्यक्ति अपने चित्त को नियन्त्रित करते हुए अन्तर्जगत के दर्शन करने में समर्थ हो जाता है।

'योग बच्चों में आंतरिक शांति प्रदान करता है जिससे उनकी रचनात्मकता में वृद्धि होती है, बच्चे प्रकृति तथा आसपास के वातावरण में शांति के महत्व को समझते हैं यह मानसिक स्पष्टता को बढ़ाता है तथा सम्पूर्ण जीवन क्रम को यथार्थ रूप में लाता है।'– योग संदेश

अत: शिक्षा जगत में योग सहायक हो सकता है यही देखने का प्रयास इस शोध में किया गया है।

समस्या कथन – किशोरावस्था के विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव पर योग का प्रभाव।

शोध के उद्देश्य – किशोरावस्था के विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव पर योग के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ – योगाभ्यास का किशोरावस्था के विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

चयन का क्षेत्र एवं न्यादर्श – समष्टि में शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श में राजस्थान राज्य में शोध कार्य के लिए जयपुर शहर के सरकारी एवं गैरसरकारी में से किसी भी विद्यालय के विद्यार्थियों को शामिल करना था जो किशोरावस्था से सम्बन्धित थे अत: शोधकर्त्री ने जयपुर शहर का माध्यमिक स्तर का विद्यालय चयन किया तथा वहां के अध्ययनरत् लगभग 100 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में यादृच्छिम विधि से चयन किया गया।

शोध की विधि एवं प्रक्रियाएँ – प्रस्तुत शोध की प्रकृति के आधार पर शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में आंकड़ों के एकत्रीकरण हेतु प्रयोगात्मक अनुसंधान आकल्प को अपनाया गया है इसके तहत प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण अकेडमिक स्ट्रेस स्केल –श्रीनिवास एवं कुमार रेड्डी का प्रयोग विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव के मापन हेतु किया गया है।

शाधेकर्त्री ने अपने अध्ययन कार्य हेतु समंको के संकलन हेतु जयपुर शहर के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के संस्था प्रधानों से व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क किया गया, उन्हें अपने शोध कार्य से अवगत कराया गया तथा योगाभ्यास व उपकरणों के प्रशासन की अनुमति प्राप्त की गई।

वर्द्यमान इन्टरनेशनल स्कूल में शैक्षणिक दबाव के मापन हेतु प्रयोगात्मक विधि के तहत विद्यार्थियों को दो समूहों में विभजित किया गया प्रथम समूह उपचारित समूह, द्वितीय समूह स्वतंत्र समूह कुल 100 विद्यार्थियों को 50–50 के समूह में बांटा गया व दोनों समूहों के विद्यार्थियों पर उपचार से पूर्व एवं पश्चात् उपकरण का प्रशासन किया गया तथा अध्ययन हेतु दत्त संकलन किया गया।

उपचारित समूह को योगाभ्यास कराया गया जिससे यह जाना जा सके कि क्या विद्यार्थियों के योगाभ्यास के माध्यम से शैक्षणिक दबाव को कम किया जा सकता है।

इस प्रकार प्रदत्तों एवं सूचनाओं को एकत्रित किया गया इन आंकड़ों का विश्लेषण कर व्याख्या की गई। परीक्षणों के मूल प्राप्तांकों का विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी टेस्ट सांख्यिकीय पद्धत्तियों का उपयोग किया गया।

विश्लेषण, व्याख्या एवं परिणाम – योगाभ्यास का किशोरावस्था के विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव पर प्रभाव का अध्ययन करने हेतु शून्य परिकल्पना (H01)का निर्माण किया गया।

H01 :योगाभ्यास का किशोरावस्था के विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

H1 :योगाभ्यास का किशोरावस्था के विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव पर सार्थक प्रभाव पाया जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य किशोरावस्था के विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव पर योग के प्रभाव का अध्ययन करने हेतु सर्वप्रथम प्रयोग से पूर्व तुलनात्मक स्थिति ज्ञात की गई।

तालिका 1

(अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

इस तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि प्रयोग से पूर्व किशोरावस्था के नियंत्रित एवं प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों में लगभग समान शैक्षणिक दबाव पाया गया।

तालिका 2

(अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

इस तालिका 2 से स्पष्ट होता है कि प्रयोग से पूर्व एवं पश्चात् किशोरावस्था के नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों में लगभग समान शैक्षणिक दबाव देखा गया तथा प्रयोग से पूर्व की तुलना में प्रयोग के पश्चात् प्रयोगात्मक समूह के प्राप्तांकों में अधिक कमी आई।

तालिका 3

(अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

इस तालिका 3 से स्पष्ट होता है कि प्रयोग के पश्चात् किशोरावस्था के नियंत्रित एवं प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव के विभिन्न आयामों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

किन्तु प्रयोग से पूर्व एवं प्रयोग के पश्चात् दोनों समूहों की तुलना करने पर ज्ञात हुआ कि प्रयोगात्मक समूह के प्रयोग से पूर्व एवं प्रयोग के पश्चात् विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव में सार्थक कमी आई।

अत: कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव पर योग का प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष – शोध से सम्बन्धित परिकल्पनाओं के सांख्यिकीय परीक्षण के आधार पर निम्नांकित निष्कर्ष प्राप्त हुए।

योगाभ्यास का किशोरावस्था के विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव पर सार्थक प्रभाव पाया गया शैक्षणिक दबाव के सभी आयामों पर योगाभ्यास के पश्चात् सार्थक कमी पाई गई।

शैक्षणिक महत्व – इस अध्ययन के परिणामों के आधार पर किशोरावस्था के विद्यार्थियों के शैक्षणिक दबाव को कम करने हेतु सलाह दी जा सकती है क्योंकि शैक्षणिक दबाव के चलते विद्यार्थी उच्चतम शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पायेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Abirami, P. (2017). A Behavioral Study on Academic Stress of School Students in Chennai City. *International Journal of Marketing and Human Resource Management, 8*(1), 18-23. Retrieved March 09, 2023, fromhttps://iaeme.com/MasterAdmin/Journal_uploads/IJMHRM/VOLUME_8_ISSUE_1/IJMHRM_

08_01_ 003.pdf
2. Ackerman, C. E. (2018, May 23). *What is Self-Esteem? A Psychologist Explains*. Retrieved March 08, 2023, from Positive Psychology: https://positivepsychology.com/self-esteem/
3. going Students. *The International Journal of Indian Psychology , 8*(2), 715-178. Retrieved March 30, 2023, from https://ijip.in/wp-content/uploads/2020/06/18.01.085.20200802.pdf
4. Bos, C., Gaiswinkler, L., Fuchshuber, J.,Schwerdtfeger, A., & Unterrainer, H.-F. (2023). Effect of Yoga involvement on mental health in times of crisis: A cross-sectional study. *Frontiers in Psychology, 14*, 12. doi:10.3389/fpsyg.2023.1096848
5. Canadian Paediatric Society. (2017). Screen time and young children: Promoting health and development in a digital world. *Paediatrics Child Health, 22*(8), 461-468. doi:10.1093/pch/pxx123
6. Casey, B., Jones, R. M., Levita, L., Libby, V., Pattwell, S., Ruberry, E., . . . Somerville, L. H. (2010). The Storm and Stress of Adolescence: Insights from Human Imaging and Mouse Genetics. *Developmental Psychobiology, 52*(3), 225-235. doi:10.1002/dev.20447
7. Dol, K. S. (2019). Effects of a yoga nidra on the life stress and self-esteem in university students. *Complementary Therapies in Clinical Practice, 35*, 232-236. doi:10.1016/j.ctcp.2019.03.004
8. D'souza, O. L., Jose, A. E., Suresh, S., & Baliga, M. S. (2021). Effectiveness of Yoga Nidra in reducing stress in school going adolescents: An experimental study. *Complementary Therapies in Clinical Practice, 45*, 101462. doi:10.1016/j.ctcp.2021.101462
9. Gawali, S., & Dhule, S. (2013). Effect of Yoga on Anxiety Levels in Working Women. *Semantic Scholar, 2013*. Retrieved April 02, 2023, from https://www.semanticscholar.org/paper/Effect-of-Yoga-on-Anxiety-Levels-in-Working-Women-Gawali-Dhule/a60c52bddd7720f7cf73484ef52e82465af83987
10. Harvard Medical School. (2016, January 29). *More than just a game: Yoga for school-age children*. Retrieved March 08, 2023, from Child and Teen Health: https://www.health.harvard.edu/blog/more-than-just-a-game-yoga-for-school-age-children-201601299055
11. Kalavalli, M., Chinnathambi, K., Mahendra, J., & Jayakumar, M. (2022). Effect Of Yoga On Perceived Academic Stress Among Undergraduate Nursing Students In The Selected Colleges. *Journal of Pharmaceutical Negative Results, 13*(2), 132-135. doi:10.47750/pnr.2022.13.S02.20
12. Lakshmi, R. K., Oinam, E., & Devi, K. G. (2023). Yogic Spirituality and Positive Psychology vis-à-vis the Mental Health of Adolescents During COVID-19. *Pastoral Psychology, 2023*, 10. doi:10.1007/s11089-023-01061-3
13. Metivier, A. (2023, January 24). *Yoga for Concentration and Memory: Everything You Need to Know*. Retrieved March 08, 2023, from Magnetic Memory Method: https://www.magneticmemorymethod.com/yoga-for-concentration-and-memory/
14. Novotney, A. (2013). Facing up to debt. *gradPSYCH Magazine, 01*, p. 32. Retrieved March 09, 2023, from American Psychological Association: https://www.apa.org/gradpsych/2013/01/debt
15. Patil, Y. (2021). Regular Practices of Yoga and Academic Stress od Higher Education Students. *International Journal of Innovative Research in Electrical, Electronics, Instrumentation and Control Engineering, 9*(5), 394-395. Retrieved March 26, 2023, from https://ijireeice.com/wp-content/uploads/2021/06/IJIREEICE.2021.9571.pdf
16. Rani, S., & Singh, B. B. (2012). *Academic Stress Inventory for School Students.* Agra: National Psychological Corporation.
17. Sandhiya, M., Selvam, P. S., Sundaram, M. S., & Banu, B. F. (2020). Effect of Yoga and Pilates on Academic Stress among College Students. *International Journal of Physiotherapy and Research, 8*(5), 3563-3567. doi:10.16965/ijpr.2020.150
18. Thangarajathi, S., & Tamilselvi, B. (2013). A Study of Effects of Yoga on Adjustment Problems of School Teachers. *i-manager's Journal on Educational Psychology, 7*(1), 43-45. Retrieved April 02, 2023, from https://www.proquest.com/docview/1476284329
19. Velvizhi, S. (2022). The Effect of Yogic Practice Enhances Emotional Intelligence among College Women. *International Journal of Multidesciplinary Educational Research, 11*(5), 10-12. Retrieved April 02, 2023, from http://s3-ap-southeast-1.amazonaws.com/ijmer/pdf/volume11/volume11-issue5(3)/2.pdf
20. Wei, M. (2016, March 07). *New survey reveals the rapid rise of yoga — and why some people still haven't tried it*. (Harvard Health Publishing) Retrieved March 15, 2023, from Harvard MEdical School: https://www.health.harvard.edu/blog/new-survey-reveals-the-rapid-rise-of-yoga-and-why-some-people-still-havent-tried-it-201603079179

प्रयोग से पूर्व समूहों की तुलनात्मक स्थिति, प्रयोग से पूर्व किशोरावस्था के नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों में शैक्षणिक दबाव तालिका 1

शैक्षणिक दबाव के आयाम	न्यादर्श (N)		मध्यमान (Mean)		मानक विचलन (SD)		टी-मान (T-Value)	सम्भावता मान (P-Value)	स्वीकृत/अस्वीकृत
	नियंत्रित समूह	प्रयोगात्मक समूह	नियंत्रित समूह	प्रयोगात्मक समूह	नियंत्रित समूह	प्रयोगात्मक समूह			
व्यक्तिगत अयोग्यता	50	50	8.24	8.74	1.90	1.91	1.31	0.19	स्वीकृत (P>0.05)
विफलता का भय	50	50	11.36	11.76	1.85	1.27	1.26	0.21	स्वीकृत (P>0.05)
शिक्षकों के साथ पारस्परिक कठिनाइयाँ	50	50	8.66	8.26	1.94	1.91	1.04	0.30	स्वीकृत (P>0.05)
शिक्षक-छात्र संबंध/शिक्षण विधियाँ	50	50	8.10	8.58	1.62	1.74	1.43	0.16	स्वीकृत (P>0.05)
अपर्याप्त अध्ययन सुविधाएँ	50	50	8.14	7.62	1.95	1.83	1.38	0.17	स्वीकृत (P>0.05)

α=0.05 स्वातंत्र्य अंश (Df) = 98 प्राथमिक डाटा स्त्रोत

प्रयोग से पूर्व एवं पश्चात् चरों की तुलनात्मक स्थिति, प्रयोग से पूर्व एवं पश्चात् किशोरावस्था के नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों में शैक्षणिक दबाव तालिका 2

शैक्षणिक दबाव के आयाम	न्यादर्श (N)	मध्यमान (MeanMean)		मानक विचलन (SD)		टी-मान (T-Value)	सम्भावता मान (P-Value)	स्वीकृत / अस्वीकृत
		पूर्व परीक्षण	पश्च परीक्षण	पूर्व परीक्षण	पश्च परीक्षण			
पूर्व परीक्षण								
व्यक्तिगत अयोग्यता	50	8.24	7.02	1.90	4.98	1.66	0.10	स्वीकृत (P>0.05)
विफलता का भय	50	11.36	11.94	1.85	1.85	1.46	0.15	स्वीकृत (P>0.05)
शिक्षकों के साथ पारस्परिक कठिनाइयाँ	50	8.66	9.52	1.94	2.24	1.89	0.06	स्वीकृत (P>0.05)
शिक्षक-छात्र संबंध/शिक्षण विधियाँ	50	8.10	8.34	1.62	1.48	0.98	1.33	स्वीकृत (P>0.05)
अपर्याप्त अध्ययन सुविधाएँ	50	8.14	8.62	1.95	1.81	1.34	0.19	स्वीकृत (P>0.05)
पश्च परीक्षण								
व्यक्तिगत अयोग्यता	50	8.74	4.02	1.91	1.55	13.58	0.00	अस्वीकृत (P<0.05)
विफलता का भय	50	11.76	5.86	1.24	4.29	9.42	0.00	अस्वीकृत (P<0.05)
शिक्षकों के साथ पारस्परिक कठिनाइयाँ	50	8.26	4.40	1.91	1.53	10.78	0.00	अस्वीकृत (P<0.05)
शिक्षक-छात्र संबंध/शिक्षण विधियाँ	50	8.58	4.14	1.74	1.69	13.03	0.00	अस्वीकृत (P<0.05)
अपर्याप्त अध्ययन सुविधाएँ	50	7.62	3.84	1.83	1.39	10.76	0.00	अस्वीकृत (P<0.05)

α=0.05 स्वातंत्र्य अंश (Df) = 49 प्राथमिक डाटा स्त्रोत

प्रयोग के पश्चात् समूहों की तुलनात्मक स्थिति, प्रयोग के पश्चात् किशोरावस्था के नियंत्रित एवं प्रयोगिक समूह के विद्यार्थियों में शैक्षणिक दबाव तालिका 3

शैक्षणिक दबाव के आयाम	न्यादर्श (N)		मध्यमान (Mean)		मानक विचलन (SD)		टी-मान (T-Value)	सम्भावता मान (P-Value)	स्वीकृत/अस्वीकृत
	नियंत्रित समूह	प्रयोगात्मक समूह	नियंत्रित समूह	प्रयोगात्मक समूह	नियंत्रित समूह	प्रयोगात्मक समूह			
व्यक्तिगत अयोग्यता	50	50	7.02	4.02	4.98	1.55	3.96	0.00	अस्वीकृत (P<0.05)
विफलता का भय	50	50	11.94	5.86	1.85	4.29	8.55	0.00	अस्वीकृत (P<0.05)
शिक्षकों के साथ पारस्परिक कठिनाइयाँ	50	50	9.52	4.40	2.24	1.53	12.83	0.00	अस्वीकृत (P<0.05)
शिक्षक-छात्र संबंध/शिक्षण विधियाँ	50	50	8.34	4.14	1.48	1.69	13.15	0.00	अस्वीकृत (P<0.05)
अपर्याप्त अध्ययन सुविधाएँ	50	50	8.62	7.62	1.39	1.39	14.50	0.00	अस्वीकृत (P<0.05)

α=0.05 स्वातंत्र्य अंश (Df) = 98 प्राथमिक डाटा स्त्रोत

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षा के विकास में शिक्षक की भूमिका

श्रीमति नीलम खासकलम*

* वरिष्ठ व्याख्याता, मॉर्डन ऑफिस मैनेजमेंट, इं.गां.शा.पॉलीटेक्निक महाविद्यालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – किसी ही राष्ट्र की समग्र प्रगति व आर्थिक प्रगति, मूल्यपरक शिक्षा की गुणवत्ता से दृढ़ता से जुड़ी है। शिक्षा ही है जो समग्र प्रगति के साथ-साथ किसी विशेष क्षेत्र, राज्य या देश के मानक को भी निर्धारित करती है। शिक्षा आज एक महत्वपूर्ण उपकरण बन गई है जो किसी व्यक्ति की सफलता निर्धारित करती है शिक्षा मानवीय विकास का अनिवार्य हिस्सा बन गई है। शिक्षा का सबसे बड़ा पहलू तकनीकी शिक्षा है। तकनीकी शिक्षा मनुष्य को गहराई तक उतरने में सक्षम बनाती है, जीवन की वास्वविकताएं और उसके सामने जीवन की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है। शिक्षा में शिक्षक के महत्व को देखते हुए आवश्यक है कि एक योग्य और कुशल व्यक्ति को ही शिक्षक बनाया जाये ताकि तकनीकी शिक्षा में गुणवत्ता बनी रहे। तकनीकी शिक्षा में इस गुणवत्ता को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षकों की गुणवत्ता पर ध्यान देना आवश्यक है। गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षा के विकास में शिक्षक को नवीनतम तकनीकों से परिचित होना चाहिए। छात्रों को प्रेरित कर उन्हें सकारात्मक सीखने का वातावरण तैयार करना चाहिए।

शब्द कुंजी – गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, शिक्षक की भूमिका।

प्रस्तावना – शिक्षा एक सतत् और अनवरत गतिमान प्रक्रिया है जिस प्रकार जल प्रवाह उच्च तल से निम्न तल की ओर प्रवाहमान होता है। उसी प्रकार शिक्षा का प्रवाह भी उच्च तल से निम्न तल की ओर प्रवाहमान होता है। शिक्षा के सर्वोच्च स्तर पर विश्वविद्यालयों महाविद्यालय, इंजीनियरिंग कॉलेजों और मेडीकल कॉलेजों के शिक्षक आते हैं जो अपने अन्त:करण में संग्रहित ज्ञान को हस्तांतरित करते हैं। शिक्षक शिक्षा प्रवाह की महत्वपूर्ण कड़ी है जो प्राप्त ज्ञान का परिमार्जन और संशोधन करके निष्पक्ष भाव से छात्रों तक पहुंचाते है। देश काल परिस्थितियों के अनुकूल इस ज्ञान में परिवर्तन होते रहते है किसी विशिष्ट कालावधि में जो ज्ञान देश, समाज और मानव जाति के हित में होता है। उसे उस कालावधि की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कहते है इस प्रकार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एक परिवर्तनशील घटक है जो परिस्थितियों के अनुरूप बदलता रहता है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा:-गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के संबंध में आधुनिक शिक्षा शास्त्री **आर. एस. पीटर्स** के अनुसार,'विभिन्न विषयों जैसे इतिहास, भूगोल, समाजषास्त्र आदि में तथ्यों का जो ज्ञान कराया जाता है और विभिन्न व्यवसायों इंजीनियरिंग एवं मेडीकल आदि में जो प्रशिक्षण दिया जाता है उसे शिक्षा नहीं कहा जा सकता है। केवल ज्ञान प्राप्त करना शिक्षा नहीं है जो ज्ञान प्राप्त है उसका प्रयोग करना ही शिक्षा है।'

इस प्रकार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ऐसी शिक्षा है जो मानव के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक विकास के साथ विषय ज्ञान, तकनीकी ज्ञान, प्रयोगात्मक ज्ञान प्रदान करती है और उस ज्ञान का व्यावहारिक जीवन में उपयोग करना सिखाती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था है जो देश की भावी आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षण, शिक्षक, वैज्ञानिक, आवश्यक इंजीनियर एवं कर्मचारियों का सृजन कर सके। जो व्यक्ति को स्वालम्बी बना कर स्वयं जीविकोपार्जन कर अन्य व्यक्तियों को भी रोजगार देने की सर्मथता रखे।

तकनीकी शिक्षा:- तकनीकी शिक्षा समग्र शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण योगदान के साथ राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक विकास में महती भूमिका अदा करती है। तकनीकी शिक्षा में इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन, वास्तुकला, नगर योजना फार्मेसी, अनुप्रयुक्त कला एवं शिल्प होटल प्रबंधन और केटरिंग प्रौद्योगिकी शामिल है। तकनीकी शिक्षा औद्योगिक उत्पादकता बढ़ाने, जीवन की गुणवता में और सुधार करने के लिए कुशल जनशक्ति तैयार कर देश को विकास पथ पर अग्रसर करती है।

तकनीकी शिक्षा का किसी देश की आर्थिक स्थिरता से गहरा संबंध है। अच्छे तकनीकी कौशल नए तकनीकी नवाचारों को प्रभावित करते हैं जो राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय स्तर की नौकरियों की प्राप्ति में सहायक हैं इसलिए तकनीकी शिक्षा के लिए तकनीकी कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम और विषय सामग्री की समय-समय पर समीक्षा कर यह सुनिश्चित किया जाये कि वे अद्यतन हैं और अन्तराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप देश की तकनीकी आवष्यकताओं को प्रभावी ढंग़ से पूर्ण करती हैं।

शिक्षक की भूमिका:- ज्ञान समाज में सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन का ऐजेण्ट शिक्षक है। एक शिक्षक को नई परिस्थितियों से निपटने के लिए कई शैक्षणिक और उपदेशात्मक कौशल का आवश्यकता होती है। शिक्षक को पाठ्यक्रम का नेता होना चाहिए जो यह सुनिश्चित करे कि छात्रों का समग्र विकास हो। शिक्षण पाठ्यक्रम तकनीकी शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी से जुड़े क्षेत्रों में छात्रों को शैक्षणिक और व्यावसायिक तैयारी कराती है। मानव संसाधन विकास से आर्थिक विकास तक का पुल योग्य प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा बनाया जा सकता है।

शिक्षा में तकनीकी का उपयोग आधुनिक समय में अत्यधिक महत्वपूर्ण बन गया है। तकनीकी विज्ञान इतना समृद्ध और शक्तिशाली हो गया है कि इसके अध्ययन के बिना शिक्षण संबंधी ज्ञान और कौशल अधूरा है। तकनीकी, शिक्षा के क्षेत्र में पुरानी अवधारणाओं में आधुनिक संदर्भ के

साथ परिवर्तन कर उन्हें एक नवीन स्वरूप प्रदान कर रहा है। इससे शिक्षा के क्षेत्र में सुधार हो रहा है और छात्रों को महत्वपूर्ण और व्यापक जानकारी प्राप्त हो रही है।

संयुक्त राष्ट्र के सतत् विकास 2030 एजेंडे में मूलभूत घटकों में शिक्षा एक महत्वपूर्ण घटक है। जिसका उद्देश्य सभी के समावेशी और समान गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना है। जिसकी प्राप्ति के लिए डिजिटल तकनीक एक आवश्यक उपकरण के रूप में उदित हुई है। इन तकनीकों ने शिक्षा प्रणाली पर एक शक्तिशाली प्रभाव दिखाया है। कोविड-19 महामारी ने शिक्षा में डिजिटल तकनीकों के अनुप्रयोगों को अधिक संस्थागत बना दिया। इन डिजिटल तकनीकों ने पूरी शिक्षा प्रणाली के साथ शिक्षकों में भी आर्दष बदलाव किया है। इन डिजिटल तकनीकों के उपयोग द्वारा शिक्षक न केवल ज्ञान प्रदाता है बल्कि एक संरक्षक और मूल्यांकनकर्ता की भूमिका भी अदा कर रहा है। शिक्षक द्वारा शिक्षण में तकनीकी सुधारों ने छात्रों के हाथों में कलम ओर कागज के उपयोग के बजाय विभिन्न प्रस्तुतियों और प्रोजेक्ट बनाने में विभिन्न सॉफ्टवेयर और टूल का उपयोग किया जा रहा है। आज सूचना प्रौद्योगिकी एवं सम्प्रेषण तकनीकी निर्भर समाज के लिये शिक्षक को इन विधाओं का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। भारत में प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर की समस्याओं में संख्यात्मक रूप से द्रुत गति से विकास हुआ है। इसके चलते गुणवत्तापरक तकनीकी शिक्षा एवं शिक्षक उपलब्ध कराने के प्रति एक नया आयाम उभरा है। आज विश्व के सभी राष्ट्र उस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है। इसलिये शिक्षा के औपचारिक एवं अनौपचारिक माध्यमों को विस्तारित किया गया है।

इन सभी प्रयासों में गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षण का मुद्दा भी विशेष रूप से महत्वपूर्ण बन गया है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षकों की आज बहुत आवश्यकता है।

निष्कर्ष:- गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षा के विकास के लिए आवष्यक है कि ऐसे शिक्षक तैयार किये जाये जो गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षा देने में पूर्णत: सक्षम हो। इसके लिए शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में आधुनिक, व्यावहारिक और प्रयोगात्मकता का समावेश किया जाना चाहिए। शिक्षकों को आधुनिक तकनीकी के उपकरणों जैसे कम्प्यूटर, लैपटॉप द्वारा विभिन्न नवीन सॉफ्टवेयरों से भली भांति परिचित होना चाहिए। क्योंकि एक स्वस्थ समाज एवं योग्य नागरिकों के निर्माण में आध्यापकों से एक विशेष स्तर के उत्तरदायित्व के निर्वाह की अपेक्षा की जाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. शर्मा आर.ए. एवं चतुर्वेदी, शिक्षा अध्यापक प्रशिक्षण तकनीकी, संस्करण-2005, आर.लाल बुक डिपो मेरठ।
2. अध्यापक शिक्षा के कतिपय विशिष्ट मुद्दे एवं संदर्भ/राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली, 2004
3. राव वी.के. और रेडडी और एस 1992 शिक्षक एवं शिक्षण तकनीकी नई दिल्ली कॉमनवेल्थ पब्लिसर्स।
4. गुणात्मक अध्यापक शिक्षा का पाठ्यचर्चा प्रारूप/राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली, 1999

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Daisy's Quest for Self-Actualization: A Maslowian Analysis of Female Agency in R.K. Narayan's *The Painter of Signs*

Manoj Bajaj* **Dr. O. P. Tiwari****

*Research Scholar (English) Maharaja Ganga Singh University, Bikaner (Raj.) INDIA
** Prof. & Head (English) Dr. B. R. Ambedkar Govt. College, Sri Ganganagar (Raj.) INDIA

Abstract : This paper examines Daisy's character in R.K. Narayan's *The Painter of Signs* through the lens of Maslow's hierarchy of needs, exploring her pursuit of self-actualization within the constraints of post-colonial Indian society. Daisy's journey, marked by her dedication to family planning and rejection of traditional gender roles, demonstrates a complex negotiation between individual agency and societal expectations. The analysis considers Daisy's complex relationships, her idealism, and the societal constraints she faces, highlighting the interplay between individual agency and cultural norms. While Daisy embodies many aspects of self-actualization, her journey is also marked by internal conflicts and the challenges of navigating a patriarchal society. Daisy's idealism and her pursuit of meaningful work, while aligning with self-actualization principles, embody the evolving role of modern Indian women, revealing both the potential for self-realization and the persistent challenges posed by patriarchal norms in a rapidly changing world. By examining Daisy's struggles and triumphs, the paper offers insights into the evolving role of women in modern India and the universal human desire for self-actualization. Through a Maslowian framework, this research contributes to a deeper understanding of Narayan's portrayal of modern Indian womanhood and the universal quest for self-actualization.
Keywords:self-actualization, Hierarchy of Needs, societal expectations, societal constraints, individual agency, growth.

Introduction - Personal agency, the capacity to influence one's own life and actions, is the driving force behind self-actualization. It encompasses the ability to set goals, make choices, and take ownership of one's development. A strong sense of agency empowers individuals to pursue their aspirations, overcome obstacles, and shape their environment to align with their values and goals. An individual's quest for self-actualization, the pinnacle of human potential according to Abraham Maslow (Maslow's Hierarchy of Needs), is a deeply personal journey intertwined with both their inherent agency and the constraints imposed by society. This interplay creates a dynamic tension, shaping the trajectory of self-discovery and the realisation of one's full capabilities. Societal constraints, whether in the form of cultural norms, economic limitations, or systemic inequalities, can significantly impact an individual's journey. These constraints can create barriers to accessing resources, opportunities, and even the very belief in one's potential. The interaction between agency and societal constraints is dynamic and multifaceted. Sometimes, constraints can fuel agency, sparking a desire to challenge limitations and create change. Other times, constraints can lead to feelings of powerlessness and hinder the pursuit of self-actualization. The quest for self-actualization is a continuous process of navigating the interplay between personal agency and societal constraints. It requires individuals to develop resilience, adaptability, and a critical awareness of the forces shaping their lives. Understanding this dynamic interplay is essential for fostering environments that empower individuals to reach their full potential and contribute meaningfully to society.

The intersection of literature and psychology, particularly character development and human motivation analysis, has been a fertile area of academic inquiry. R.K. Narayan's *The Painter of Signs* has garnered significant critical attention for its portrayal of social change and individual aspirations in post-colonial India. Similarly, Abraham Maslow's theory of self-actualisation has been widely applied across disciplines to understand the drive for personal growth and fulfilment.

Narayan's literary oeuvre is known for its richly textured narratives that delve into the nuances of the human condition, often with a keen eye for the subtleties of gender dynamics. In this study, we will explore the multifaceted nature of Daisy's character and how she navigates the expectations and limitations imposed upon her as a woman in a patriarchal society while striving to fulfil her desires and actualize her true potential. This paper seeks to analyse

Daisy's character through the lens of Maslow's theory, exploring how her actions, choices, and interactions reflect her journey toward self-actualization. By situating Daisy within the socio-cultural milieu of Narayan's fictional Malgudi, the study also interrogates the constraints and opportunities that shape her pursuit of autonomy and self-fulfilment. Through this analysis, the paper aims to contribute to a deeper understanding of Narayan's portrayal of modern Indian womanhood and the universal human struggle for self-actualization, as articulated in Maslow's framework.

At the core of this analysis lies Abraham Maslow's seminal theory of the hierarchy of needs, which provides a comprehensive framework for understanding human motivation and personal growth. Maslow's hierarchy of needs, introduced in his seminal work *Motivation and Personality* (1954), has been a foundational framework in psychology for understanding human motivation. Self-actualization, the highest level of the hierarchy, refers to the realization of one's potential and the pursuit of personal growth. In literary studies, Maslow's theory has been applied to analyse characters' psychological development and their quest for meaning. Maslow's hierarchy of needs posits that human beings are driven by a series of hierarchical needs, ranging from the most fundamental physiological requirements to the highest level of self-actualization. According to Maslow, individuals are motivated to fulfil these needs sequentially, with the lower-level needs (such as physiological and safety needs) taking precedence over the higher-level needs (such as belongingness, esteem, and self-actualization). At the base of the hierarchy are the physiological needs, such as food, water, and shelter, followed by the need for safety and security. Once these basic needs are met, individuals then strive to fulfil their need for love, belonging, and social connection. The next level in the hierarchy is the need for esteem, which encompasses both self-esteem and the esteem of others. At the apex of this hierarchy lies the need for self-actualization, which Maslow defines as the "desire to become more and more what one is, to become everything that one is capable of becoming," where individuals seek to realise their fullest potential and achieve a sense of purpose and meaning in their lives.

Central to Maslow's theory is the notion that self-actualization represents the highest level of human development, where individuals transcend the limitations of their circumstances and strive to become the best version of themselves. As Maslow eloquently articulates, "What a man can be, he must be." This drive towards self-actualization is a fundamental aspect of the human experience, and it is this universal human desire that forms the backdrop for Narayan's exploration of Daisy's character. This paper adopts a qualitative, textual analysis approach, drawing on close readings of R.K. Narayan's *The Painter of Signs* and applying Abraham Maslow's theory of self-actualization as a framework for understanding Daisy's character development. The primary analysis examines how Daisy's journey in the novel aligns with Maslow's hierarchy of needs, exploring the fulfilment or frustration of her physiological, safety, love and belonging, and esteem needs, ultimately leading to her pursuit of self-actualization. Specific textual evidence from the novel is incorporated to support the analysis, drawing connections between Daisy's actions, beliefs, and psychological development. The study concludes by discussing the significance of this Maslowian reading of Daisy, highlighting its contributions to the understanding of female agency and individual growth in post-colonial Indian literature.

While Daisy's character has been analysed from feminist and socio-cultural perspectives, there is limited research that explicitly connects her journey to psychological theories of self-actualization. Similarly, although Maslow's theory has been applied to literary characters, its relevance to post-colonial Indian literature, particularly in understanding female agency, remains underexplored. This paper seeks to address these gaps by offering a Maslowian analysis of Daisy's character, thereby enriching the existing scholarship on Narayan's work and contributing to the broader discourse on literature and psychology.

R.K. Narayan's novel *The Painter of Signs* is a nuanced exploration of human aspirations, societal norms, and individual agency in the context of post-colonial India. It stands as a poignant exploration of the interplay between individual agency and societal expectations, particularly as it pertains to the journey of self-actualization for the female protagonist, Daisy. Daisy is a compelling figure whose pursuit of independence, professional fulfilment, and personal identity resonates with Abraham Maslow's concept of self-actualisation. Maslow's hierarchy of needs, a cornerstone of humanistic psychology, posits that self-actualization represents the pinnacle of human development, where individuals strive to realise their fullest potential and achieve a sense of purpose. Daisy's character, with her unwavering commitment to social work, her defiance of traditional gender roles, and her complex relationship with the protagonist, Raman, offers fertile ground for examining how female agency intersects with the quest for self-actualization in a patriarchal society. Through the lens of Maslow's hierarchy of needs, this paper seeks to analyse Daisy's quest for self-actualization and how she navigates the constraints and possibilities of her gendered existence.

Maslow's Hierarchy of Needs and Daisy's Journey : Daisy's pursuit of self-actualization in R.K. Narayan's *The Painter of Signs* is a complex negotiation of individual agency and societal constraints. Her foundational needs appear met through her education and financial independence as a social worker, yet her independence challenges traditional gender roles. This tension

complicates her pursuit of love and belonging, as her dedication to her ideals and vision of self-actualization sometimes conflicts with societal expectations of marriage and domesticity. Her idealism, exemplified by her commitment to social work, aligns with Maslow's concept of self-actualization, but also isolates her from others, raising questions about the cost of personal growth for women who challenge societal norms. While Daisy embodies many aspects of self-actualization, her journey is limited by the patriarchal norms of Malgudi, evident in her interactions with Raman and the resistance she faces in her professional life. Ultimately, Daisy's character symbolises the evolving Indian woman, navigating the complexities of identity and agency in a rapidly changing society, highlighting the interplay between individual aspirations and societal expectations in post-colonial India. Her story serves as a commentary on the possibilities and limitations of female agency, reflecting the broader cultural and societal influences that shape identity and the universal human struggle for self-realization.

The Hierarchy of Human Needs theory is divided into five clusters of needs. From the lowest physiological needs, safety needs, love and belongingness needs, esteem needs, and the highest self-actualization needs. Maslow's hierarchy posits that individuals must satisfy basic physiological and safety needs before pursuing higher levels of growth. As a financially independent and educated woman, Daisy's character appears to have met these foundational needs. She is a bold, modern woman who confidently works in her office. Her mission is the sole purpose for which she feels secure about. In a world where the material world attracts every young girl, Daisy emerges out as an exception. Clad in a simple cotton sari, Daisy is emphatic about the woes of others. For her, love, charity, and compassion for the needy seem to take priority, and her missionary zeal makes her neglect her consciousness for temporary physical beauty. Her career as a social worker and her dedication to family planning initiatives demonstrate her economic self-sufficiency and her commitment to societal welfare.

If both the physiological and the safety needs are fairly well gratified, there emerge the love and affection and belonging needs, and the whole cycle already described will repeat itself with this new centre. These needs can be expressed in a variety of ways. It can be expressed through a close relationship with a friend, lover, or mate, or through a social relationship. Daisy, as reflected from her childhood, does not feel the necessity of a male in her life, whether it is a husband or a lover. She is neither fascinated by the sacredness of marriage nor the passion of love. Though she is not bereft of emotions, and as she travels and works with Raman, she too gets the feeling of attraction towards Raman. However, her independence is not without challenges. As Meenakshi Mukherjee notes, Daisy's professional life is marked by her struggle to assert her authority in a male-dominated field, reflecting the societal barriers that women face even when their basic needs are met (Mukherjee 85). This tension underscores the complexity of self-actualisation in a context where gender norms continue to exert significant influence.

Maslow's theory emphasises the importance of love and belonging as a prerequisite for self-actualization. Daisy treats Raman warmly, to his great relief. He goes to her house and confesses his romantic feelings for her. She initially tries to deny her feelings for him but cannot do so. They decide to enter into a relationship. Daisy later reveals to Raman that she did run away from her family after she realised they were going to marry her off to any man they wanted to. Raman and Daisy decide to get married in the simplest fashion. Daisy's interactions with Raman, the protagonist, reveal her ambivalence toward romantic relationships.

After all the above-mentioned needs have already been fulfilled, an individual has a strong desire for a stable, firmly based, usually high evaluation of himself, for self-respect, or self-esteem, and for the esteem of others. It includes both the desire to feel confident, capable, and independent (the need for self-respect) and the desire to be respected and held in high esteem by others (the need for social approval or prestige). When people are not able to satisfy these needs, they feel inferior, weak, anxious, and worthless. Daisy's dilemma arises from this complex balancing act between her ideals, her relationships, and the societal expectations placed upon her as a woman. She has achieved a level of professional success and independence that affords her a sense of self-worth and confidence. She derives a strong sense of purpose and meaning from her work advocating for family planning and women's empowerment. However, she remains conflicted about the role of romantic relationships and marriage in her life. While she values Raman's companionship, she resists his attempts to confine her within the traditional roles of marriage and domesticity. Problems between them begin to crop up immediately, as Daisy repeatedly states that she does not want their relationship to get in the way of her work. Things deteriorate further when Daisy is supposed to move in with Raman. On the day she is scheduled to do so, she tells him she is having second thoughts about their union. She says married life is ultimately not for her, and despite how much she loves Raman, she doesn't want her work to become secondary. She decides to leave on a three-year campaign for family planning. This resistance aligns with Rosy's broader commitment to her ideals and her vision of self-actualization. As Nandini Sahu observes, Daisy's detachment from conventional relationships reflects her prioritization of personal growth over societal expectations (Sahu 112). However, her inability to fully reconcile her ideals with her emotional needs highlights the challenges of achieving self-actualization in a society that often equates female fulfilment with marital and familial roles. Daisy's

actions and decisions throughout the narrative demonstrate a clear commitment to self-actualization, as she navigates the tension between her professional aspirations, her personal relationships, and the societal expectations placed upon her as a woman. Daisy's choice to embark on a three-year campaign for family planning, despite her love for Raman, underscores her unwavering dedication to her cause and her refusal to compromise her personal and professional goals.

Daisy's Idealism and the Pursuit of Self-Actualisation: When someone is satisfied with four levels of needs, the final level of development, which Maslow termed self-actualization, can be reached. After fulfilling four previous requirements—psychological needs, safety needs, love and belonging needs, and esteem needs—as human beings, Raman and Daisy require the fulfilment of higher needs, the self-actualization needs. It happens when Raman manages to accept Daisy's refusal of marriage, telling her that his house on Ellaman Street will be open for her whenever she decides to return. In Daisy's case, it happens when she changes her mind about Raman, feeling that her sense of purpose and her independent existence may be affected by married life. She decides to leave Malgudi for a three-year family planning initiative in villages all over India. Daisy, intact for quite some time, was in a dilemma and crossroads between her intellect and instinct—one pulling her towards her firm convictions against marriage and the population explosion and the other towards her satisfaction of her own natural instinct towards marriage and sex. After a struggle with her instinct, Daisy recovers her normal self with confidence and firmness. She is very different from Narayan's other heroines, Rosie and Bharati, whose self-discovery is gradual. Daisy realises the need of establishing her identity in a faster way. William Welsh rightly observes: Daisy is a peculiarly modern young woman for whom the cult of independent individuality is the Supreme value in life. Daisy's dedication to social work and her vision of a better society exemplify Maslow's concept of self-actualization, which involves the realisation of one's potential and the pursuit of meaningful goals. Her character embodies the qualities of self-actualised individuals, such as creativity, problem-solving, and a strong sense of purpose. However, her idealism also isolates her from others, as seen in her strained relationship with Raman and her detachment from her family. This isolation raises questions about the cost of self-actualization, particularly for women who challenge societal norms. As Uma Parameswaran argues, Daisy's character represents both the triumphs and the sacrifices of women who seek to redefine their identities in a conservative society (Parameswaran 74). R.K. Narayan, being very Indian at heart, brings out this modern woman to the readers, proving that the emancipation of women in India is not a myth or a utopia. She is the product of our own Indian Culture, who though is influence by the changing values of the society but does not shed off her values. She is a bold struggler for her identity, trying to assert equality not only for herself but also for her sex. It must be noted that with this boldness she also becomes instrumental in a certain extent to empower her male counterpart. It must have been very surprising for a tradition-bound Indian society to accept such a sudden metamorphosis in women, but Narayan's character, like Daisy, has ushered a wind of positivity and boldness. Daisy's self-actualization is intertwined with her mission and ambition. Mission becomes her means of self-discovery, allowing her to explore her emotions, her desires, and her identity.

Daisy's self-actualization is a multifaceted process, involving her personal growth and her defiance of societal norms. Through her character, Narayan explores themes of self-discovery, empowerment, and the clash between individual aspirations and societal expectations. She is an activist for the cause of family planning and birth control. She is very passionate about the cause and travels across India trying to educate people. She feels strongly that overpopulation is causing irreparable damage to India's future. Daisy feels passionately about sex education because she thinks that women are often conscripted into the roles of mother and housewife without their consent. Their time and bodily autonomy are suddenly eaten up by the demands of having a family and maintaining a home. Daisy argues that this is harmful to many women, as they work constantly, repeatedly suffer the ordeal of birth, and are forced into a life dominated by household obligations. Her comments on this subject indicate how widespread this sexism is in the world of the novel and how far-reaching its impact is on the daily lives of women across her country. While Raman seems a little wary of her intense views, the reader quickly comes to see the dramatic stakes of this issue. Daisy's self-actualization culminates in her decision to leave Raman and embark on an independent path, fulfilling his mission. This act of defiance is a significant turning point in her journey, as it signifies her complete break from societal expectations and her commitment to her individuality. While Daisy's pursuit of self-actualization is at the heart of the novel, the narrative also highlights the complexities and limitations of this journey. The patriarchal structures of Malgudi society constrain Daisy's ability to fully realise her potential, as her independence and professional ambition are often met with resistance and scepticism. Narayan's portrayal of Daisy underscores the tension between individual aspirations and societal expectations, a theme that resonates deeply in the context of post-colonial India.

As the eminent psychologist Sudhir Kakar insightfully observes, the psychological dimensions of characters like Daisy reflect the broader cultural and societal influences that shape their identities and lived experiences. Daisy's pursuit of self-actualization is a profoundly personal and introspective journey, one that is indelibly marked by her

unwavering determination to discover her true self, to empower herself, and to liberate her spirit from the shackles of societal constraints.

Daisy's self-actualization is a complex journey marked by ambition, independence, and rebellion against societal constraints. Daisy seeks personal growth through artistic expression, defying traditional gender roles. Her transformation is central to the novel's exploration of self-discovery and the pursuit of individual aspirations.

While Daisy's character exemplifies many aspects of self-actualization, her journey also highlights the limitations imposed by societal structures. The patriarchal norms of Malgudi, as depicted by Narayan, constrain Daisy's ability to fully realize her potential. Her interactions with Raman, who oscillates between admiration and frustration with her independence, reflect the broader societal ambivalence toward women who defy traditional roles. This ambivalence is further evident in the resistance Daisy faces in her professional life, where her authority is often questioned because of her gender. As William Walsh observes, Narayan's portrayal of Daisy underscores the tension between individual aspirations and societal expectations, a theme that resonates deeply in the context of post-colonial India (Walsh 93). Daisy undergoes a significant transformation in her pursuit of self-actualization. Her journey is characterised by her ambition, her yearning for independence, and her rebellion against the societal constraints imposed on women in traditional Indian society. As the text suggests, Daisy's detachment from traditional feminine roles is not without its challenges: "Daisy's professional life is marked by her struggle to assert her authority in a male-dominated field, reflecting the societal barriers that women face even when their basic needs are met." (Chowdhury 2014).

Daisy's journey toward self-actualization is inextricably linked to her negotiation of the societal and cultural constraints imposed upon her as a woman. While Daisy possesses a strong sense of agency and a burning desire for independence, she is also acutely aware of the limitations placed on her by her gender and the expectations of the traditional community in which she lives. Daisy's pursuit of self-actualization begins with the fulfillment of her more basic needs. As a young, educated woman, she has already achieved a certain level of physiological and safety needs, as well as a degree of esteem through her work as a family planning activist. However, her quest for love and belonging is complicated by her rejection of traditional gender roles and her unwillingness to conform to the expectations of her community. Despite these obstacles, Daisy's determination to realise her full potential remains steadfast as she navigates the complex interplay between her own aspirations and the societal norms that would seek to confine her.

Daisy's journey reflects the broader societal changes taking place in post-colonial India. She represents a generation of women grappling with new opportunities and challenges, seeking to define their identities within a rapidly evolving cultural landscape. Her struggles and triumphs resonate with the experiences of many women navigating the complexities of tradition and modernity. Daisy's transformation is a testament to the human spirit's remarkable capacity to overcome adversity, challenge deeply entrenched societal norms, and ultimately achieve a profound sense of personal fulfilment. Her story serves as a powerful source of inspiration, reminding us all that we, too, possess the potential to break free from the limitations imposed by our social circumstances and embrace our authentic selves.

Daisy is not a simplistic or idealised figure. She grapples with internal conflicts, doubts, and uncertainties. Her relationship with Raman is fraught with tension, reflecting her struggle to balance her personal desires with her commitment to her ideals. This complexity adds depth to her character, making her a more relatable and nuanced representation of the modern Indian woman.

Daisy stands as a complex and compelling symbol of the modern Indian woman navigating a society in transition. Her character embodies the evolving aspirations and challenges faced by women in post-colonial India, grappling with tradition, modernity, and the pursuit of self-discovery. Daisy's character can be seen as a powerful symbol of the evolving Indian woman, navigating the complex and multifaceted realities of identity, agency, and self-actualisation in a rapidly changing society. Her unwavering commitment to social work and her resolute refusal to conform to traditional gender roles align her with the highest ideals of self-actualization, as envisioned by Maslow's hierarchy of needs. Yet, her transformative journey also reveals the formidable challenges and obstacles that women often face in achieving personal growth and fulfilment within the confines of a patriarchal social context. By exploring these facets of Daisy's character, Narayan offers a compelling portrayal of the modern Indian woman. Daisy's journey is not simply a personal one; it reflects the larger societal shifts and the ongoing negotiation between individual aspirations and cultural norms in a nation undergoing profound transformation. Daisy's narrative thus stands as a poignant and thought-provoking commentary on the ever-evolving possibilities and the lingering limitations of female agency within the rich tapestry of Indian literature. Her journey challenges us to confront the complexities of identity, empowerment, and self-actualization, inviting us to reflect deeply on the ongoing struggles and triumphs of women in their quest for personal and societal transformation.

Narayan presents female characters who defy societal expectations and seek autonomy and self-expression. Through their narratives, he exposes the limitations placed upon women and invites readers to question and challenge gender inequality. His exploration of gender roles and the

suppression of female ambitions contributes to broader conversations on feminism and the empowerment of women. Themes of the emancipation of women gained momentum in the early 20th century, and Daisy is R.K. Narayan's one such attempt to represent the new woman.

Conclusion: The Maslowian analysis of Daisy's character in *The Painter of Signs* offers valuable insights into the interplay between individual agency, societal constraints, and the pursuit of self-actualization. By analysing Daisy's journey through the lens of Maslow's hierarchy, we gain a deeper understanding of her motivations, her struggles, and her triumphs. Her story highlights the complexities of self-actualization, particularly for women navigating the evolving landscape of postcolonial India. Daisy's journey, viewed through the lens of Maslow's hierarchy of needs, offers a nuanced exploration of self-actualization within the context of post-colonial India. The analysis of Daisy's character in R.K. Narayan's *The Painter of Signs* through the lens of Maslow's theory of self-actualization reveals a profound interplay between individual agency, societal constraints, and the pursuit of personal fulfilment. Her pursuit of personal and professional fulfilment, while navigating societal expectations and traditional gender roles, highlights the complexities faced by modern Indian women. Daisy emerges as a complex figure whose journey reflects both the possibilities and limitations of self-actualization in a patriarchal and tradition-bound society. Daisy's unwavering commitment to her ideals, despite the challenges and sacrifices she encounters, underscores the enduring human drive for self-discovery and the ongoing negotiation between individual agency and cultural norms. Her story ultimately serves as a poignant reflection on the universal quest for self-realization and the evolving landscape of identity in a rapidly changing world. Daisy's journey reflects both the potential for personal growth and the challenges of achieving fulfilment in a patriarchal society. Ultimately, Daisy's quest for self-actualization serves as a poignant reminder of the enduring relevance of both Narayan's literary vision and Maslow's psychological insights in illuminating the complexities of individual growth and agency. By situating her character within the framework of Maslow's theory, this study contributes to a deeper understanding of Narayan's portrayal of modern Indian womanhood and the universal human struggle for self-actualization.

References:-

1. "A Narratological Study of Kamala Markandaya's *Two Virgins*: Interpreting Narratives through Saroja's Focalized View." *International Journal of Linguistics, Literature, and Culture*, vol. 3, no. 4, 2017.
2. Chowdhury, Rukhsana Rahim. "The 'Mother Complex' of Martha Quest." *Journal of Literature,* vol. 4, no. 10, 2014.
3. Maslow, Abraham H. "A Theory of Human Motivation." *Psychological Review*, vol. 50, no. 4, 1943.
4. Maslow, Abraham H. *Motivation and Personality.* Nueva York: Harper & Row, Publishers (1954).
5. "Mythical Women and Journey towards Destined Roles: A Comparison between the Contemporary Characters in the Novels *The Thousand Faces of Night* and *The Vine of Desire*." *International Journal of English Literature and Social Sciences*, vol. 6, no. 2, 2021.
6. Narayan, R. K. *The Painter of Signs*. Indian Thought Publications, 2001.
7. "Relevance of Chitra Banerjee Divakaruni's *Palace of Illusions*." *International Journal of English Literature and Social Sciences*, vol. 6, no. 3, 2021.
8. "Representation of Postcolonial Indian Women: Bimla and Nanda Kaul in Anita Desai's *Clear Light of Day* and *Fire on the Mountain*." *Journal of South Asian Literature*, vol. 54, no. 1, 2019.
9. "Search for Identity: A Study of Female Characters in Anita Desai's *Fire on the Mountain*." *International Journal of English Language, Literature, and Humanities*, vol. 7, no. 12, 2019.
10. "The Metamorphosis of a Female Subject into a Gendered Subject: A Study of Easterine Iralu's *A Terrible Matriarchy*." *Rupkatha Journal on Interdisciplinary Studies in Humanities*, vol. 13, no. 3, 2021.
11. "The Process of Self-Actualization in Altair from the Anime *Re: Creators* by Ei Aoki." *E3S Web of Conferences*, vol. 317, 2021.
12. Walsh, William. "Narayan's Maturity." *R.K. Narayan: An Anthology of Recent Criticism*, edited by C. N. Srinath, Pencraft International, 2000.
13. —. *R.K. Narayan: A Critical Appreciation*. Allied Publishers, 1982.
14. "Women's Quest for Self in Anita Desai's *Where Shall We Go This Summer*." *International Journal of English Literature and Social Sciences*, vol. 5, no. 4, 2020.

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

The Role of International Organisations in Mediating Global Conflicts

Divya Chaudhary*

***B.A.(Hons.) Pol.Science- University of Delhi, M.A. (Pol. Science) B.ed, Chaudhary Charan Singh University, Meerut (U.P.) INDIA**

Abstract : International organizations now serve a variety of functions in promoting peace and security, including mediating and resolving international crises. This essay explores how important international organizations—like the European Union, African Union, and United Nations—have changed in their roles in resolving international disputes. This study aims to comprehend the breadth and limitations of these groups in peace building by examining their frameworks, methods, and strategies as well as the impact of geopolitical issues. The study demonstrates through a number of case studies and theoretical insights that although international organizations can be useful venues for mediation, political dynamics, resource constraints, and state sovereignty frequently restrict their influence. Suggestions are made to improve the efficiency of international organizations in mediating disputes, emphasizing the value of flexibility, teamwork, and structural changes for enduring peace.

Introduction - Conflicts are rarely limited to the boundaries of the states directly involved in an increasingly linked world. Political, social, and economic unrest in one area can have an immediate effect on nearby nations, reverberate across global markets, and affect worldwide security. International organizations devoted to preserving world peace and security have been established and developed as a result of this fact, which emphasizes the vital need for efficient, well-organized conflict mediation processes that cut across state borders.

A new age of multilateralism began in 1945 with the establishment of the United Nations (UN), where countries worked together to prevent conflict and advance stability. Other institutions, such the North Atlantic Treaty Organization (NATO), the European Union (EU), and the African Union (AU), have also played a significant role in settling disputes and helping to shape the current international peacekeeping structure. These organizations have created policies and procedures that enable them to use a range of strategies to resolve disputes, such as direct action in some situations, diplomacy, negotiation, and penalties.

However, a number of issues affect these organizations' ability to effectively settle disputes. First, international organizations' ability to enforce decisions is limited since they frequently depend on the cooperation of sovereign governments. Second, because national interests may take precedence over group objectives, the geopolitical interests of strong member states can make mediation attempts more difficult or impossible. Last but not least, many peacekeeping missions are constrained in scope and duration by a lackof financial and human resources, especially for organizations with lesser budgets like the African Union.

This essay will investigate the function of international organizations in conflict resolution by looking at their development over time, their mediation procedures, and the theoretical underpinnings of their methods. The study will use case studies to illustrate effective interventions and difficulties encountered by these organizations, offering a comprehensive grasp of their advantages and disadvantages. The last parts will provide suggestions for enhancing these organizations' effectiveness in mediating international conflicts, such as the necessity of changes and improved international collaboration.

Historical Background of International Organisations in Conflict Resolution: Examining the historical development of international organizations is crucial to comprehending their function in mediating international disputes. The events of the early 20th century, especially the two World Wars, which highlighted the necessity of cooperative structures to maintain peace and avert future hostilities, greatly influenced international organizations as we know them today.

The idea of collective security and the League of Nations: The first significant international organization dedicated to preserving peace was the League of Nations, which was established in 1920 as a result of the Treaty of Versailles. The idea of collective security, upon which the League was founded, was that an attack on one member

would be interpreted as an attack on all. Early methods of resolving disputes through diplomacy, disarmament, and penalties were greatly influenced by the League. However, the lack of a military force and the absence of important nations like the United States hampered its capacity to enforce judgments. The League was eventually dissolved following World War II as a result of its inability to stop aggression in the 1930s, including the invasions of Ethiopia and Manchuria, which demonstrated the limitations of a purely diplomatic approach lacking enforcement power.

The UN: A Novel Approach to Peacekeeping and Resolving Conflicts: The United Nations (UN) was founded in 1945 with a stronger framework for preserving world peace and security in the wake of the terrible effects of World War II. The Security Council, which was part of the UN's framework and had considerable control over peacekeeping and enforcement operations, was different from the League of Nations. The UN was given the authority to deal with acts of aggression, threats to peace, and violations of the peace under the UN Charter. Although its structure has frequently resulted in difficulties in decision-making when member interests conflict, the Security Council—which consists of five permanent members (the United States, Russia, China, France, and the United Kingdom) with veto power—plays a crucial role in authorizing peacekeeping missions and sanctions.

Negotiations, humanitarian assistance, and peacekeeping operations have been the UN's main ways of resolving conflicts. One of the longest-running UN missions, for instance, is the peacekeeping effort in Cyprus, which was started in 1964 and aims to stop violence between the island's Greek and Turkish communities. In a similar vein, the UN has supported a number of diplomatic efforts, including the 1978 Camp David Accords, which resulted in a peace deal between Egypt and Israel. Although these missions demonstrated limitations in terms of resources and decision-making speed, especially in the face of genocide,the UN has also responded to intrastate crises, such as those in Rwanda and the former Yugoslavia.

The African Union (AU) and Regional Conflict Resolution Efforts: The body of African Unity (OAU) was replaced in 2002 by the African Union (AU), a regional body that has made great progress in resolving African disputes. With a mandate that encompasses conflict avoidance, management, and resolution, the AU functions within a framework that prioritizes African-led solutions to African issues. Implementing peacekeeping missions and settling disputes are the responsibilities of the African Union's Peace and Security Council (PSC), frequently in collaboration with the UN.

The Central African Republic, Sudan, and Somalia are just a few of the conflicts in which the AU has stepped in. The African Union Mission in Somalia (AMISOM), a peacekeeping force founded in 2007 to fight extremist organizations and stabilize the nation, is one of the AU's noteworthy efforts. However, the AU's efforts are frequently hindered by its low financial resources and dependence on outside funding, especially from the US and the EU, which can affect its capacity to react to crises quickly and independently.

The European Union (EU) and Conflict Mediation: The European Union (EU) evolved from economic cooperation in the aftermath of World War II into a political and economic union with a commitment to peace and stability. The EU has developed a comprehensive framework for conflict mediation and crisis management, particularly within Europe and its neighboring regions. The EU's role in conflict resolution is built around principles of diplomacy, development aid, and economic integration.

One of the EU's most significant interventions was in the Balkans in the 1990s, where it worked alongside NATO to address ethnic conflicts following the breakup of Yugoslavia. More recently, the EU has been involved in mediating tensions between Russia and Ukraine, imposing economic sanctions on Russia following its annexation of Crimea in 2014 and supporting Ukraine through financial and diplomatic channels. The EU's ability to impose economic sanctions and coordinate aid has proven effective in influencing conflict dynamics, though its role in direct military intervention is limited.

NATO: Military Alliance and Conflict Response: Founded in 1949, the North Atlantic Treaty Organization (NATO) is essentially a collective defense agreement and military alliance. NATO has contributed to peacekeeping and stability despite not being a typical mediator, especially in conflicts in which its member states have strategic interests. Examples of NATO's operations that went beyond defense and attempted to bring stability to warring areas are the alliance's involvement in Kosovo and Afghanistan. The use of military force in NATO's missions makes them frequently contentious and can damage the organization's reputation as a peacebuilding organization. However, NATO's participation frequently enhances the work of institutions such as the UN by offering the military capacity to uphold peace accords.

Theoretical and Structural Shifts in Conflict Mediation: These organizations' historical development demonstrates a move away from exclusively diplomatic strategies and toward more comprehensive, multifaceted initiatives. When it comes to conflict mediation, the UN, AU, EU, and NATO each have their own advantages and disadvantages. Although cooperation between these groups is still crucial in resolving complicated, prolonged disputes, their disparate missions and resources contribute to a wide ecology of conflict resolution techniques. The methods these organizations employ in conflict mediation will be examined in the sections that follow, along with case studies that illustrate both the difficulties and achievements in particular situations.

Theoretical Framework of Conflict Mediation:

International organizations that want to effectively mediate conflicts rely on a variety of theoretical frameworks that influence dispute management and resolution tactics. To better comprehend how these theories support the operations of international organizations, this section looks at important theoretical stances such as peacekeeping, negotiation, and conflict resolution. The design of interventions suited to particular conflict situations is informed by these frameworks, which offer insights into the intricacies of conflict dynamics.

Conflict Resolution Theory: A range of theoretical frameworks that impact dispute management and resolution strategies are used by international organizations seeking to resolve disputes successfully. This section examines key theoretical positions such peacekeeping, negotiation, and conflict resolution to help understand how these theories assist the work of international organizations. These frameworks provide insights into the complexities of conflict dynamics and inform the creation of solutions appropriate for specific conflict situations.

The idea of interest-based negotiation, which encourages parties to abandon fixed positions and concentrate on underlying interests, is one of the fundamental tenets of this philosophy. Interest-based negotiating strategies are frequently used by international organizations to mediate disputes by assisting parties in comprehending one another's requirements and worries. For instance, in order to establish possible peace deals in the Israeli- Palestinian conflict, UN negotiators have placed a strong emphasis on comprehending the security concerns and territorial interests of both parties. International organizations can help disputing parties communicate by promoting empathy and compromise.

Theory of Peacekeeping: The tactics employed to preserve stability and peace in areas undergoing or recovering from violence are covered by peacekeeping theory. A ceasefire or peace agreement is frequently followed by the start of peacekeeping operations, which entail the deployment of personnel to oversee and assist the peace process. With peacekeepers acting as unbiased agents who assist in reducing violence, ensuring security, and making sure both sides follow the terms of the peace accord, peacekeeping is based on the principles of neutrality and non-intervention.

The most well-known type of peacekeeping is the UN's model, which is often known as "blue helmet" missions. It has been applied in a variety of settings, including the Democratic Republic of the Congo and Lebanon. The approach recognizes that peacekeeping operations are constrained in their ability to address the more profound underlying causes of conflict, even as they seek to stabilize areas through unbiased action. While peacekeepers can offer immediate assistance and serve as a deterrent to violence, long- term stability frequently necessitates a more all-encompassing strategy that includes community reconstruction, governance change, and development.

Conflict Transformation Theory: The goal of conflict transformation is to alter the fundamental social, political, and economic factors that lead to conflict in the first place rather than just managing or ending it. Conflict transformation theorists contend that resolving systemic injustices, advancing justice, and encouraging peacemaking between opposing groups are the only ways to bring about enduring peace. This idea emphasizes how crucial it is to establish circumstances that permit real transformation of antagonistic relationships.

Particularly in post-war contexts, international organizations like the African Union (AU) and the European Union (EU) frequently use a conflict transformation approach. For instance, the EU has worked to encourageeconomic development, foster social cohesion, and reconstruct governance systems in Bosnia and Herzegovina after the war. By changing the structural causes of conflict, these programs seek to not only avert future hostilities but also to establish the framework for enduring peace.

Human Needs Theory: According to the human needs hypothesis, unfulfilled basic wants like identity, security, and resource access lead to conflict. Advocates contend that if these basic requirements are not met, traditional conflict resolution techniques may not be successful because people are hesitant to make concessions on what they believe to be necessary for their dignity and well- being. This notion states that addressing the material and psychological needs of all parties concerned must be the top priority of peacebuilding initiatives.

Human needs theory is frequently incorporated into the tactics of organizations such as the African Union's Peace and Security Council (PSC) and the United Nations Development Programme (UNDP), which prioritize community development, poverty alleviation, and the defense of human rights in areas prone to violence.

Recognizing that economic instability and a lack of resources fuel local conflicts, the AU, for example, has concentrated on development projects in Sudan that try to reduce poverty and offer educational opportunities. Organizations can contribute to the development of a more resilient peace by attending to these fundamental requirements.

Liberal Peace Theory: The foundation of liberal peace theory is the conviction that the rule of law, economic liberalization, and democratic government are necessary for a sustainable peace. This hypothesis, sometimes known as the "democratic peace theory," contends that democracies are less prone to wage war against one another. As a result, liberal peacebuilding initiatives concentrate on strengthening democratic institutions, encouraging economic collaboration, and advancing human rights in cultures that have experienced violence.

Liberal peace ideas are widely used by the UN and EU

in their peacebuilding efforts. For instance, the UN worked to build democratic institutions, encourage civil society participation, and bolster the rule of law in East Timor when it gained independence from Indonesia in 2002. This strategy makes the assumption that future wars are less likely to occur when democratic norms and economic freedom are ingrained in a post- conflict country. Liberal peacebuilding has been criticized, meanwhile, for being unduly idealistic and occasionally enforcing Western-centric governing structures that might not be culturally appropriate for local customs.

Realism and Power Dynamics in Conflict Mediation:A different viewpoint on conflict mediation is provided by realism, which emphasizes the importance of national interest and power. Realist theorists contend that because powerful member nations' interests frequently limit international organizations' operations, they are unable to properly mediate disputes. For instance, the veto power of the UN Security Council's five permanent members, whose national interests may influence their decisions on peacekeeping deployments, usually limits the council's capacity to respond to emergencies.

Conflicting interests among Security Council members have resulted in impasse in situations such as the Syrian Civil War, when Russia and China back the Syrian government while the United States and its allies oppose it. This exemplifies a fundamental principle of realism: that powerful states' conflicting interests frequently affect international institutions, which function within a context of power politics.

Application of Theoretical Frameworks in International Mediation: Together, these theoretical frameworks influence the conflict resolution tactics employed by international organizations. Realism draws attention to the practical constraints of international organizations in a world where state interests frequently prevail, even as conflict resolution, peacekeeping, and liberal peacebuilding offer avenues to intervene.

International organizations can more effectively plan interventions that tackle the underlying causes of conflicts, advance lasting peace, and negotiate the intricacies of world politics by having a greater understanding of these theoretical stances.

The application of these theories by institutions like the UN, AU, EU, and NATO will be examined in the parts that follow. We will examine the effectiveness of these organizations' mediation efforts through particular case studies, offering a thorough summary of their advantages, disadvantages, and contributions to world peace.

Key International Organizations in Conflict Mediation: Conflict management and mediation are important functions of a number of organizations in modern international relations. These consist of the North Atlantic Treaty Organization (NATO), the European Union (EU), the African Union (AU), and the United Nations (UN).

Every organization uses its own resources, political frameworks, and mandate to approach conflict resolution in a different way. This section highlights each organization's advantages and disadvantages in advancing peace by looking at its methods, tactics, and case studies.

United Nations (UN): With a purpose that includes upholding global peace and security, advancing human rights, and promoting social and economic development, the UN is undoubtedly the most well- known international institution for resolving conflicts. Sanctions, diplomatic talks, and peacekeeping missions are the main UN conflict mediation tools.

Mechanisms and Strategies:

1. **Peacekeeping Missions**: Often referred to as "blue helmets," the UN sends peacekeepers to war areas to serve as impartial parties, keep an eye on ceasefires, safeguard civilians, and aid in disarmament efforts. The Security Council authorizes UN peacekeeping missions, which normally need the host nation's approval.
2. **Diplomatic negotiation and mediation:** The UN frequently acts as an unbiased mediator, promoting communication between sides to a conflict. It uses mediators and Special Envoys in places of conflict, like Yemen, where the UN Special Envoy attempts to mediate a settlement between the parties involved.
3. **Sanctions and Economic Measures:** The Security Council has the authority to impose economic embargoes, asset freezes, and travel restrictions on nations or organizations that violate international peace. The purpose of sanctions is to put pressure on parties to negotiate or adhere to international standards.

Case Study: South Sudan's UN: In order to aid in nation-building and avert internal violence, the United Nations Mission in South Sudan (UNMISS) was founded in 2011 when the country gained its independence. Following the 2013 civil war, the UN peacekeeping force played a crucial role in defending people, keeping an eye out for violations of human rights, and delivering humanitarian relief. However, the expedition encountered obstacles like scarce resources and logistical problems when trying to reach far-flung combat zones. Even while UNMISS has played a significant role in stabilizing certain areas of the nation, political factors and the continuous bloodshed between opposition and government troops have limited its influence.

African Union (AU): The 55-member African Union places a high priority on African-led approaches to resolving disputes on the continent.The Peace and Security Council (PSC), which is in charge of mediation, preventive diplomacy, andpeacekeeping, is responsible for implementing the AU's conflict resolution procedures.

Mechanisms and Strategies:

1. **Preventive Diplomacy and Early Warning Systems:** Early warning systems are used by the AU to detect and resolve disputes before they worsen. It uses data analysis and community input to keep an eye on possible flashpoints.

2. African Standby Force (ASF) and Peacekeeping Missions: The ASF is a force that may be mobilized for peacekeeping missions and ismade up of regional brigades. This force has been deployed by the AU in countries such as the Central African Republic and Mali.

3. Facilitation of Mediation and Dialogue: To negotiate ceasefires and promote peace negotiations, the AU often employs mediation teams. Experts in conflict resolution, military people, and diplomats frequently make up these teams.

Case Study: AU in Somalia: In order to stabilize Somalia in the face of militant action by organizations like Al-Shabaab, the African Union Mission in Somalia (AMISOM) was founded in 2007. AMISOM has fought to repair essential infrastructure, assist local security forces, and safeguard government institutions.

AMISOM has encountered difficulties in spite of these initiatives, such as inadequate money, scarce resources, and peacekeeper casualties. The mission emphasizes the challenge of preserving peace in a hazardous setting with few resources, notwithstanding its little success in reducing extremist activities.

European Union (EU): Particularly inside Europe and its surrounding territories, the European Union plays a special role in conflict mediation because of its emphasis on economic cooperation, development aid, and democratic government. The EU uses financial assistance, economic sanctions, and diplomatic involvement as tools to advance peace and stability.

Mechanisms and Strategies:

1. Economic Sanctions and Trade Agreements: The EU uses sanctions, such as asset freezes and trade restrictions, to compel disputing parties to engage in talks. Additionally, it promotes economic stability and interdependence through trade agreements.

2. Humanitarian and Development Aid: To address the underlying socioeconomic issues that fuel instability, the EU offers substantial development aid to nations embroiled in war.

3. Civilian and Military Missions: To assist local administration and enhance security, the EU sends out civilian and military missions, such as the European Union Rule of Law Mission in Kosovo.

Case Study: EU in the Balkans: The EU was instrumental in negotiating peace and rebuilding the Balkans after Yugoslavia's violent dissolution in the 1990s. The Stabilization and Association Process was created by the EU to promote regional stability, democratic reform, and economic integration. The EU also sent peacekeeping forces and facilitated peace agreements with NATO. In order to promote political and economic stability in the region, the EU nevertheless supports the integration of Balkan nations into the European bloc.

North Atlantic Treaty Organization (NATO): NATO is primarily a military alliance, but in recent decades, it has also become increasingly involved in stabilization and peacekeeping. Although collective defense is NATO's fundamental objective, when member interests coincide with preserving peace and stability, the alliance has mediated conflicts and intervened.

Mechanisms and Strategies: 1. Military Interventions: The goals of NATO's military operations are to safeguard civilians and bring peace to areas of conflict. According to the alliance's collective defense tenets, an attack on one member is deemed an attack on all.

2. Partnerships and Capacity Building: In order to strengthen local forces' capabilities and promote long-term security, NATO offers assistance and training to those forces in conflict areas.

3. Crisis Management and Peace Support Operations: Working alongside the UN or EU in areas where a military presence is necessary to maintain peace is a common component of NATO's crisis management initiatives.

Case Study: NATO in Kosovo: In order to prevent ethnic cleansing and atrocities against ethnic Albanians by Yugoslav and Serbian forces, NATO intervened in Kosovo in 1999. One of the earliest instances of NATO getting involved in a crisis involving a non-member state, the intervention involved airstrikes. In order to preserve regional stability after the intervention, NATO formed the Kosovo Force (KFOR) as a peacekeeping force. Despite stabilizing Kosovo, the operation raised questions about NATO's role and the legitimacy of taking unilateral military action without UN Security Council consent.

When it comes to conflict mediation, every organization has its own resources, tactics, and constraints. NATO provides a military capability that can deter aggression and stabilize post-conflict zones, while the EUprioritizes economic measures and governance support, while the UN and AU place a greater emphasis on peacekeeping and diplomacy.

We will look at case studies in the next section that illustrate these organizations' difficulties, achievements, and changing roles in certain conflicts, giving us a better grasp of their influence and constraints.

Case Studies of International Conflict Mediation: A more complex understanding of how international organizations implement their conflict mediation tactics can be gained by looking at particular case studies. The difficulties, achievements, and constraints these groups faced in their pursuit of peace and stability are highlighted in each case study.

United Nations in Syria: One of the most difficult crises for the UN to handle is the Syrian Civil War, which started in 2011. The involvement of strong external actors with competing interests has made it difficult for the UN to mediate theSyrian conflict, despite its duty to advance peace.

Challenges:

- **Security Council Deadlock :**The Security Council's

failure to reach a consensus on a single strategy has hampered UN operations. The UN's ability to act decisively has been limited by the recurrent vetoes and impasse caused by the opposing positions of permanent members, such as theUnited States and its allies backing rebel forces while Russia and China back the Syrian government.

- **Complexity of Actors:** Mediation efforts in Syria are complicated by the conflict's many factions, which include the Assad administration, rebel groups, Kurdish forces, and extremist organizations like ISIS.

Actions and Outcomes:

- **Diplomatic Efforts:** To mediate peace negotiations, the UN designated a number of Special Envoys, notably Staffan de Mistura and Lakhdar Brahimi. Despite several rounds, the Geneva peace talks have mostly stalled because of intransigence and outside forces, despite their intended goal of bringing warring parties together.
- **Humanitarian Aid:** The United Nations has given millions of war-affected Syrians vital humanitarian aid, such as food, shelter, and medical care. However, the Syrian government or opposition groups have frequently blocked supplies, making it difficult to reach besieged communities. Despite having a little presence in Syria, the UN has played a crucial humanitarian role in reducing suffering. The protracted crisis serves as a reminder of the difficulties the UN encounters when powerful nations have strong ties to opposing parties

African Union in Sudan: Particularly during the Darfur crisis and more recently in mediating the political transition after President Omar al-Bashir was overthrown in 2019, the African Union has been instrumental in Sudan.

Challenges:

- **Resource Constraints:** The AU frequently depends on outside funding, especially from the European Union, which can restrict its independence and speed of resource deployment
- **Complexity of Conflict:** The AU has had to deal with political instability in Khartoum and ethnic violence in Darfur in Sudan, necessitating a multifaceted strategy.

Actions and Outcomes:

- **Hybrid AU-UN Mission in Darfur (UNAMID):** To protect civilians, oversee ceasefires, and facilitate humanitarian relief, the AU and UN collaborated to deploy a hybrid operation in Darfur. Although UNAMID has helped to reduce bloodshed, intermittent violence and a lack of resources have made it difficult to completely stabilize the area.
- **Mediation of Political Transition:** The AU was successful in mediating a power-sharing arrangement between the military and civilian leaders in Sudan after the 2019 revolution. A transitional government and a schedule for democratic elections were established as a result of this agreement.

Although funding constraints continue to be a problem, the AU's position in Sudan serves as an example of how well regional institutions may handle intricate local dynamics.

European Union in Ukraine: Since Russia's 2014 annexation of Crimea and the ensuing conflict in Eastern Ukraine, the EU has assumed the lead in resolving the Ukrainian situation.

Challenges

- **Limited Military Capacity:** The EU has less direct control over the security situation than NATO because itlacks a strong military.
- **Dependence on Economic Measures:** Instead of using force, the EU's strategy mainly consists of diplomatic initiatives and economic sanctions.

Actions and Outcomes: • Sanctions on Russia: Russia was subject to economic sanctions from the EU that targeted industries like defense, energy, and finance. The purpose of these sanctions is to put pressure on Russia to respect Ukrainian sovereignty and adhere to international standards.

- **Diplomatic Mediation and Support for Ukraine:** In an effort to find a political settlement and a truce in Eastern Ukraine, the EU has backed the Minsk Agreements. It also gives Ukraine financial assistance to help with reform and economic stability.

Although the EU's economic policies have had a major influence on Russia's economy, they haven't had much of an impact on defusing the situation. Nonetheless, the EU's diplomatic initiatives have kept lines of communication open and given Ukraine vital financial support.

NATO in Afghanistan: NATO's transition from collective defense to more extensive peace support missions is exemplified by its involvement in Afghanistan, especially through the International Security Assistance Force (ISAF) and later the Resolute Support Mission.

Challenges:

- **Difficult Terrain and Insurgency:** Strong local rebel groups and

Afghanistan's rugged geography made it challenging for NATO to impose control and maintain security.

- **Dependency on External Political Will:** The ongoing political and financial backing of member nations, particularly the United States, was crucial to NATO's activities. **Actions and Outcomes:**
- **Military Intervention and Stabilization:** NATO sent ISAF to Afghanistan after the September 11 attacks in order to confront Taliban insurgents, train Afghan forces, and stabilize the country. After ISAF, the Resolute Support Mission was tasked with supporting and advising Afghan security forces.
- **Nation-Building Efforts:** Along with other international partners, NATO backed the development of infrastructure, governance reforms, and democratic institutions.

NATO's position in Afghanistan encountered several difficulties despite large investments, especially with the Taliban's comeback. The Taliban quickly retook power when

NATO withdrew its forces in 2021, casting doubt on the viability of military-driven peacebuilding in sharply divided nations.

These case studies each highlight unique advantages and difficulties that transnational organizations face:

- **The United Nations in Syria:** Draws attention to the constraints of diplomatic mediation when dealing with the power dynamics in the Security Council.
- **AU in Sudan:** Despite funding limitations, this organization exemplifies how well regional organizations can navigate local circumstances.

EU in Ukraine: Shows how diplomatic efforts and economic sanctions can be used to mediate disputes within a geopolitical context.

- **NATO in Afghanistan:** Illustrates the intricate results of military actions and the difficulties in establishing lasting peace through outside intervention.

Using the knowledge gained from these case studies, the next section will examine the general advantages, disadvantages, and suggestions for international organizations involved in conflict mediation.

Strengths, Weaknesses, and Recommendations: This section summarizes the advantages and disadvantages of international organizations in conflict mediation and makes suggestions to improve their efficacy in light of the case studies that were provided. We can find common issues and suggest solutions to enhance future conflict resolution initiatives by contrasting the methods of institutions like the UN, AU, EU, and NATO.

Strengths of International Organizations in Conflict Mediation: Using their respective missions, resources, and regional or global influence, the UN, AU, EU, and NATO are just a few of the international organizations that contribute special strengths to conflict mediation. It is possible to identify the following strengths:

1. Legitimacy and Global Reach (UN): Since practically all recognized states are members of the UN, it enjoys broad legitimacy. The UN can send humanitarian aid and peacekeeping troops to practically any part of the world because to its extensive reach. When there is a lack of trust between disputing parties, its function as an unbiased mediator is crucial. The UN plays a crucial role in resolving international conflicts because of its capacity to gather military, diplomatic, and financial resources.

2. Regional Knowledge and Appropriateness (AU): The African Union's strength is its awareness of local dynamics and regional focus. Because of their similar political, historical, and cultural backgrounds, AU mediation efforts are frequently more successful in African crises. The AU's legitimacy and efficacy in promoting peace negotiations and peacekeeping missionsare increased by its capacity to leverage regional actors, such as the Economic Community of West African States (ECOWAS).

3. Economic Influence and Diplomacy (EU): The European Union engages in diplomatic relations and offers financial incentives to parties involved in conflicts. The EU can apply pressure and provide incentives for peace through trade agreements, sanctions, and development assistance. The EU has been successful in fostering democratic changes and regional stability through its integration of former conflict areas, such as the Balkans. It is also a powerful player in post-conflict reconstruction because of its emphasis on governance and human rights.

4. Military Deterrence and Stabilization (NATO): The collective defense concept underpins NATO's military prowess, which serves as a potent deterrence to attack. The capacity of NATO to deploy

forces quickly, frequently in cooperation with other international organizations, enabling it to impose ceasefire agreements and manage unstable areas. NATO's presence has been crucial in reducing violence and ensuring security following significant conflicts, such as those in Kosovo and Afghanistan.

Weaknesses and Limitations of International Organizations: International organizations have a number of advantages, but they also have serious drawbacks and restrictions that make it difficult for them to mediate disputes effectively:

1. Political Gridlock and Diverging Interests (UN): The conflicting interests of the permanent members of the UN Security Council, particularly the veto power of the US, Russia, China, France, and the UK, frequently paralyze the body. Because the interests of these strong powers frequently conflict, this has resulted in paralysis or poor responses in situations like Syria.

Reaching an agreement on interventions is challenging due to the Security Council's decision- making procedure, which is influenced by geopolitical factors.

2. Resource Constraints and Dependence on External Funding (AU): The AU's capacity to efficiently conduct peacekeeping operations may be hampered by its frequent financial and logistical constraints. For instance, the AU's operations in Somalia and Darfur have encountered major difficulties because of a lack of funds, a lack of personnel, and a dependence on outside donors, all of which have limited the organization's operational efficacy and autonomy. The AU's capacity to act quickly in times of crisis is further weakened byits reliance on regional contributions and lack of a standing armed force.

3. Lack of Military Capacity and Enforcement Power (EU): The EU does not have a strong military that can intervene in areas of active conflict or enforce peace.Despite the importance of the EU's diplomatic and economic initiatives, they frequently fall short in the absence of military interventions or peacekeeping troops. Interventions may be delayed by the EU's reliance on the UN or NATO for military assistance, particularly in times of emergency when quick action is needed.

4. Overemphasis on Military Solutions (NATO): The

intricate political, social, and economic elements that influence war are frequently ignored by NATO's emphasis on military action. For instance, NATO's military presence in Afghanistan was successful in quelling insurgency, but it did not address problems like economic development, governance, and corruption. NATO's strategy has come under fire for failing to sufficiently address the underlying causes of conflict and for giving military fixes precedence over long- term peacebuilding initiatives.

Recommendations for Improving Conflict Mediation: There are various suggestions for enhancing the function of international organizations in conflict mediation in light of the highlighted advantages and disadvantages:

1. ImprovingtheEfficiencyoftheUNSecurityCouncil: The UN Security Council should think about changes to lessen the power of permanent members in order to solve the problem of political impasse. The implementation of a more flexible decision-making procedure, such as permitting majority vote in some situations, particularly when reaching a consensus is impossible because of conflicting national interests, is one possible remedy. Increasing the involvement of regional powers and non- permanent members may also assist prevent paralysis and bring new viewpoints to thetable.

2. Strengthening AU's Financial and Logistical Capabilities: To become more independent and less dependent on outside donors, the African Union should endeavor to build up its own financial and logistical resources. The AU may be able to expand its response capabilities by boosting member state contributions and setting up a special fund for peace operations. Furthermore, the creation of a permanent African Standby Force would improve the AU's capacity to send out peacekeepers more quickly and efficiently during emergencies.

3. Expanding EU's Military and Security Capabilities: Either by fortifying its own defense systems or by improving collaboration with NATO, the EU ought to think about expanding its military capabilities. In orderto respond to crises more quickly, the EU may need to establish a stronger rapid-response force.

Furthermore, the EU should spend more money on conflict prevention measures that target the underlying causes of disputes before they turn violent, particularly in its surrounding areas.

4. Comprehensive Peacebuilding Approaches for NATO: NATO should take a more thorough strategy to mediating disputes by integrating political, social, and economic remedies with military deterrence.

NATO must collaborate with local governments and development organizations in post-conflict settings like Afghanistan in order to address governance concerns, encourage economic recovery, and foster societal reconciliation. In addition to NATO's military involvement, initiatives should be made to support local institutions and promote stability over the long run.

5. Strengthening Collaboration Among Organizations: Finally, to develop a more integrated approach to conflict mediation, cooperation between international organizations should be improved. More cooperation between the UN, AU, EU, and NATO can help to guarantee that military, political, and economic endeavors are complementary rather than dispersed. Cooperation and consistent communication can reduce effort duplication and increase the effectiveness of interventions.

Conclusion: International organizations are crucial in settling international disputes, but how well they handle the complexity of contemporary politics and warfare determines how effective they are. Although the UN, AU, EU, and NATO all have important advantages, they also have drawbacks that need to be addressed if they are to be more successful in advancing peace. These organizations can better handle the difficulties of conflict mediation and support the long-term stability of the international order by improving resources, encouraging more collaboration, and revising decision-making procedures.

International organizations will continue to play a vital role in conflict resolution as long as the globe is plagued by intricate, multidimensional conflicts. To ensure that their initiatives are not merely reactive but also proactive in averting conflict and fostering lasting peace, these organizations must, nevertheless, change and adapt to changing conditions.

References:-

1. Bercovitch, J., & Jackson, R. (2009). Conflict resolution in the twenty-first century: Principles, methods, and approaches. University of Michigan Press.
2. United Nations. (2020). Peacekeeping operations: A guide to UN operations. United Nations Department of Peacekeeping Operations. Retrieved from https://peacekeeping.un.org
3. African Union. (2013). The role of the African Union in conflict resolution. African Union Commission. Retrieved from https://au.int
4. European Union External Action. (2021). EU's role in conflict prevention and peace building. European Union. Retrieved from https://eeas.europa.eu
5. NATO. (2020). NATO's role in conflict resolution and peacekeeping operations. NATO Communications and Information Agency. Retrieved from https://www.nato.int
6. Paris, R. (2004). At war's end: Building peace after civil conflict. Cambridge University Press.
7. Bellamy, A. J., & Williams, P. (2015). The international politics of peacekeeping: The United Nations and post-Cold War conflicts. Oxford University Press.
8. Evans, G., & Sahnoun, M. (2001). The responsibility to protect. International Commission on Intervention and State Sovereignty.
9. Herbst, J. (2000). States and power in Africa: Comparative lessons in authority and control. Princeton

University Press.
10. Kaldor, M. (2013). New and old wars: Organized violence in a global era. Stanford University Press.
11. Kuehn, D., & Debar, A. (2016). The African Union's evolving role in conflict mediation: A critical assessment. African Security Review, 25(3), 1–18. https://doi.org/10.1080/10246029.2016.1211464
12. Nye, J. S. (2008). The powers to lead. Oxford University Press.
13. Ramesh, S. (2017). EU and conflict mediation: A review of strategies and their effectiveness. Journal of European Integration, 39(2), 213–227.https://doi.org/10.1080/07036337.2016.1260593
14. Zartman, I. W. (2007). Peacemaking in international conflict: Methods and techniques. United States Institute of Peace Press.
15. Helly, D., & Iuliano, D. (2011). Mediation in the European Union: Lessons from the Balkans. Journal of International Relations, 19(4), 357–379. https://doi.org/10.1080/07036337.2011.604893

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Chemical Composition and Nutrient Release Mechanisms of Organic Fertilizers in Indian Soil Conditions

Dr. Salil Kumar Udaipure*

***Professor & Head (Chemistry) Govt. Narmada College, Narmadapuram (M.P.) INDIA**

Abstract : Organic fertilizers are important for increasing soil fertility and maintaining agricultural productivity. The present study examines the chemical composition and nutrient release pattern of three widely applied organic fertilizers—vermicompost, farmyard manure (FYM), and neem cake—under Indian soil conditions. A 60-day incubation experiment was carried out with alluvial and black soils to evaluate nutrient release dynamics. Conventional analytical methods were utilized to analyze macronutrient and micronutrient levels, while statistical analysis (ANOVA, regression analysis) was utilized to assess fertilizer effectiveness. Results reveal that neem cake contained the highest nitrogen and phosphorus content and was therefore the most effective organic fertilizer for quick nutrient supply. Vermicompost showed constant nutrient release, ensuring long-term soil fertility, while FYM was a slow-release soil conditioner. Availability of nutrients was found to be greater in alluvial soil than in black soil, stressing the role of soil type in influencing patterns of nutrient release. Statistical analysis revealed strong differences between the fertilizers, pointing to their different roles in soil fertility management. These results are important in optimizing organic fertilizer use to promote crop productivity and soil health in Indian agriculture.

Keywords: Organic fertilizers, nutrient release, neem cake, vermicompost, Indian soil conditions**.**

Introduction - Soil fertility is a critical aspect to achieve sustainable agricultural productivity, especially in a nation such as India, where agriculture is still the support of the economy. Organic fertilizers have been known for many years to be an integral part of sustainable agriculture practices, not just supplying primary nutrients for plant growth but also enhancing the health of soil and microbial processes. In contrast to synthetic fertilizers that provide nutrients in easily accessible forms, organic fertilizers release the nutrients slowly and help build soil fertility over long periods with a reduced risk of environmental contamination. The chemical make-up and process of nutrient release of organic fertilizers are determinants of the effectiveness of organic fertilizers on various soils and climatic regimes. It is important to learn about these details to maximize the application of the fertilizers, enhance crop yield, and sustain environmentally friendly farming in India.

Chemical Composition of Organic Fertilizers: The organic fertilizers composition differs extensively depending on their source material, including plant residues, animal manure, compost, and bio-based farm by-products. Each of these organic sources has different levels of macronutrients like N, P, and K, as well as vital micronutrients like calcium, magnesium, and zinc. The breakdown of such organic matter by soil microorganisms results in the slow and continuous release of nutrients for the plants to utilize over a period of time. Decomposition rate and nutrient availability depend on temperature, moisture level, microbial action, and the carbon-to-nitrogen (C:N) ratio of the organic matter. Thus, understanding the chemical properties and degradation kinetics of organic fertilizers in Indian soil conditions is important for devising strategies to improve nutrient use efficiency.

Nutrient Release Mechanisms and Soil Interactions: India's varied agro-climatic regions add an extra layer of complexity to organic fertilizer use. Soil types here vary from black and alluvial soils to red and lateritic soils, each with characteristic physicochemical properties that determine nutrient retention and release. High clay content, for example, in black soils can affect the mobility of nutrients, while lateritic soils' acidic properties can influence phosphorus availability. The relationship between organic fertilizers and soil characteristics governs the extent to which nutrients are utilized by plants, making region-specific research and advice inevitable. Second, organic amendments play a role in enhancing soil structure, water retention capacity, and associations of beneficial microorganisms, which, in turn, improve nutrient cycling and soil resistance to degradation.

Sustainability and Agricultural Implications: A very important feature of organic fertilizers is their function in sustainable farming and environmental preservation. As

worries about soil loss, groundwater pollution, and overdependence on chemical fertilizers are on the rise, organic options provide a very good solution for ecological equilibrium maintenance. The gradual release of nutrients in organic fertilizers minimizes the chances of leaching and nutrient loss and thus reduces the risk of environmental pollution. In addition, the use of organic fertilizers in traditional farming can supplement chemical fertilizers by enhancing soil organic matter and microbial diversity. A thorough understanding of the relationships between organic fertilizers, soil characteristics, and environmental conditions will assist in developing policies that promote sustainable agriculture in India.

This research seeks to examine the chemical makeup of some of the most widely used organic fertilizers in Indian agriculture and explore their mechanisms of nutrient release under diverse soil conditions. Through an evaluation of their efficacy in improving soil fertility and crop yields, this research will offer useful information to farmers, policymakers, and agricultural researchers. The results will help in the formulation of sustainable fertilization practices specific to India's specific agro-ecological conditions, promoting long-term food security and environmental sustainability.

Review Of Litreature

Bhatt, Labanya, and Joshi (2019) studied the long-term impact of chemical fertilizers and organic manures on soil fertility. Their review noted that although chemical fertilizers greatly increased crop yield in the short term, long-term use resulted in soil degradation and nutrient imbalance. Organic manures, on the other hand, enhanced soil structure, microbial activity, and sustainable fertility management. The study stressed the need to incorporate organic amendments with chemical inputs to ensure long-term soil health.

Das and Ghosh (2023) investigated the synthesis of slow-release NPK fertilizers from biochar and their effect on soil fertility and crop yield. They established that biochar acted as a highly effective carrier for controlled nutrient delivery, minimizing leaching of nutrients and increasing the capacity of soils to retain them. The study proved that the slow-release feature was responsible for enhanced microbial activity in soils, increased nutrient accessibility, and better crop yields, making it an effective substitute for traditional fertilizers.

Jariwala et al. (2022) presented a thorough review of controlled-release fertilizers (CRFs) in the context of climate-smart agriculture. They discussed different release mechanisms, CRF formulation materials, and preparation processes. Their research indicated that CRFs not only increased nutrient efficiency but also reduced environmental pollution through the reduction of nutrient runoff and volatilization. Further, the research highlighted how CRFs played a role in reducing the impacts of climate change on agricultural yield by providing consistent nutrient supply to crops.

Dhaliwal et al. (2023) investigated the effects of organic manure application on basmati rice yield, nutrient quality, and soil fertility in north-western India. Their findings revealed that organic manure amendments highly improved soil organic matter, increased nutrient uptake, and boosted rice productivity. They noted that organic manure-treated soils had improved fertility status with time compared to those that depended on chemical fertilizers.

Gautam et al. (2022) examined the impacts of manure and inorganic fertilizers on soil nutrients, stability of aggregates, and distribution of organic carbon and nitrogen among different aggregate fractions. According to their findings, soil aggregate stability increased, and organic carbon and nitrogen were increased significantly by the application of manure, especially in bigger aggregate fractions. However, continuous inorganic fertilization caused degradation of the soil and lowered the structural stability of the soil over time.

Methodology: This research compared the nutrient content and release of vermicompost, FYM, and neem cake in alluvial and black soils. Nutrient availability was determined using a 60-day incubation experiment, and statistical analysis (ANOVA, regression) compared fertilizer efficiency. The methodology is described in the following sections.

Research Design: This research used a quantitative method to examine the chemical content and nutrient release patterns of organic fertilizers under Indian soil conditions. Laboratory experiments and incubation studies were carried out to determine the nutrient availability and release rates under different time frames. The study aimed to examine how various organic fertilizers affect soil fertility under different soil conditions.

Sample Choice: A limited set of three of the most popular organic fertilizers, vermicompost, farmyard manure (FYM), and neem cake, was used for analysis. These fertilizers were selected considering their regular usage in Indian farming and their suitability to enhance soil fertility. All three fertilizers were analyzed separately to find their chemical composition and nutrient release capacity. The choice of a small set of fertilizers provided detailed analysis within the context of this study.

Soil Sampling: Soil samples were taken from two different agro-climatic zones to portray variable soil conditions. Alluvial soil (fertile, northern India) and black soil (high in clay content, central India) were chosen soil types. A total of 10 composite soil samples (n = 10) were sampled from both areas, taking adequate variability for study of fertilizer-soil interaction. Soil samples were air-dried, sieved, and preserved under controlled conditions prior to experimental analysis.

Chemical Composition Analysis: The chemical makeup of every organic fertilizer was established using regular analytical methods. Macronutrient levels (nitrogen, phosphorus, and potassium) were quantified by using the Kjeldahl method for nitrogen, spectrophotometry for

phosphorus, and flame photometry for potassium. The micronutrients (zinc, iron, manganese, and copper) were examined by using atomic absorption spectroscopy (AAS). Organic carbon content was determined by the Walkley-Black method, and soil pH and electrical conductivity were analyzed with a digital pH meter and EC meter. These analyses gave a comprehensive profile of the nutrient composition in every fertilizer.

Nutrient Release Study: A 60-day incubation experiment was carried out in controlled conditions to analyze the nutrient release patterns of the selected organic fertilizers. Soil-fertilizer mixtures were prepared at an application rate of 5% and incubated at 25°C ± 2°C with 60% field cap acity water content. Samples were taken at 0-, 15-, 30-, and 60-days intervals to observe the release of nutrients over time. Nitrogen mineralization (ammonium and nitrate forms) was measured with colorimetric analysis, phosphorus availability was ascertained with Olsen's extraction method, and potassium release was ascertained with 1N ammonium acetate extraction. Incubation study gave insight into how various organic fertilizers released nutrients into the soil under controlled conditions.

Data Analysis: The data obtained were statistically examined to determine nutrient release patterns and differences among the fertilizers. Descriptive statistics of mean and standard deviation were employed to report the findings. ANOVA (Analysis of Variance) was carried out to analyze the effectiveness of various fertilizers in nutrient release by soil types. Regression analysis was also conducted to assess the association between fertilizer composition and availability of nutrients with time. The statistical method guaranteed objective assessment and interpretation of the experimental results.

Data Analysis And Interpretations: The nutrient composition and release of vermicompost, FYM, and neem cake were studied in the research. Neem cake contained the greatest amount of nitrogen and phosphorus, whereas vermicompost ensured consistent release of nutrients. FYM performed as a slow-release soil fertilizer. Nutrient availability was higher in alluvial soil and statistical analysis asserted significant differences in fertilizers. The following figures and tables include the detailed findings.

Chemical Composition of Organic Fertilizers: The chosen organic manures—vermicompost, farmyard manure (FYM), and neem cake—were quantified for their macronutrient, micronutrient, and organic carbon. Table 1 gives their nutrient content, pH, and electrical conductivity (EC). The table 1 illustrates the macronutrient (N, P, K) content, organic carbon percentage, pH, and electrical conductivity of vermicompost, FYM, and neem cake, revealing what they might bring to the fertility of soil.

Table 1 (see in last page)

Figure 1: Graphical Representation on Chemical Composition of Selected Organic Fertilizers

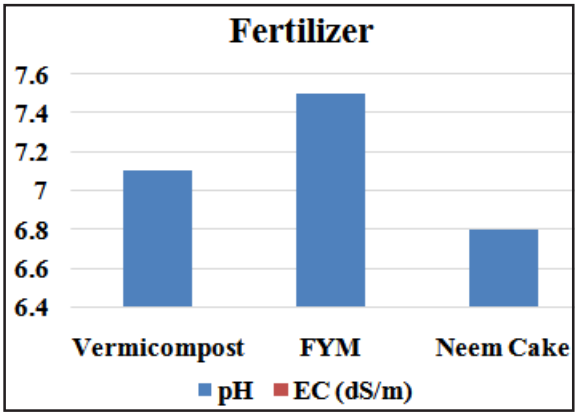

The findings showed that neem cake contained the maximum nitrogen and phosphorus content, and thus is a nutrient-high organic manure. Vermicompost contained an intermediate macronutrient balance and high organic carbon content, which improves the structure of soil and microbial populations. FYM, though less in immediate nutrient content, is commonly applied for long-term enhancement of soil fertility because of its continued organic matter supply. The pH levels were near neutral, indicating that these fertilizers do not have a significant effect on soil pH, and hence they can be used for a variety of crops.

Nutrient Release Pattern Over Time: The incubation experiment measured the release of nutrients from organic manures into the soil during a 60-day period. Table 2 shows the release patterns of nitrogen (N), phosphorus (P), and potassium (K) in alluvial and black soils at various time intervals. This table 2 follows the release of nitrogen, phosphorus, and potassium from vermicompost, FYM, and neem cake during 60 days, showing the variation in nutrient availability in different soils.

Table 2 (see in last page)

The findings showed that neem cake had the maximum and fastest nutrient release, especially for nitrogen and phosphorus, which are nutrients required for plant growth. Vermicompost had a consistent nutrient release, hence suitable for maintaining soil fertility in the long term. FYM released nutrients at the slowest rate, signifying its application as a long-term soil amendment and not an instant nutrient source. The availability of nutrients was greater in alluvial soil than in black soil, which might be because of variations in texture and decomposition rate of organic matter.

Statistical Analysis of Nutrient Release: To establish if variations in nutrient release were statistically significant, ANOVA was conducted. Table 3 shows the F-values and p-values for nitrogen, phosphorus, and potassium release. This table 3 shows the statistical significance of variations in nutrient release among various organic fertilizers, indicating differences in their efficiency.

Table 3: ANOVA Results for Nutrient Release

Nutrient	F-value	p-value	Interpretation
Nitrogen	5.12	0.012	Significant difference among fertilizers
Phosphorus	4.85	0.018	Significant difference among fertilizers
Potassium	3.92	0.035	Moderate significance across fertilizers

Figure 2: Graphical Representation on ANOVA Results for Nutrient Release

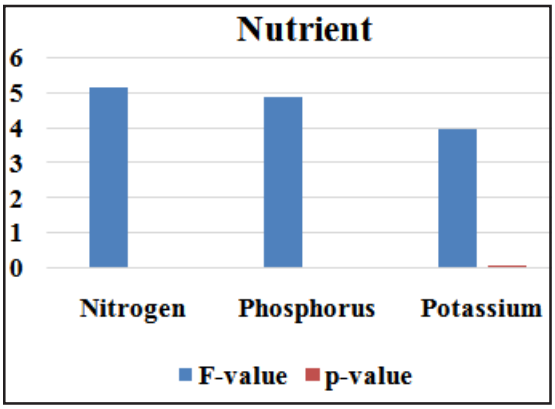

ANOVA results showed that nitrogen and phosphorus release differed significantly among the fertilizers, with neem cake having the highest levels of release. Potassium release was more consistent, indicating the three fertilizers released potassium in relative parity. Statistical significance ($p < 0.05$) confirmed that these differences in the pattern of release of the nutrients were not an artifact of random variation, further supporting the incubation study findings.

Discussion: This section compares the chemical composition, nutrient release behavior, and soil interaction of vermicompost, FYM, and neem cake. Neem cake released the most nitrogen and phosphorus, whereas vermicompost provided consistent nutrient supply. Nutrient release was quicker in alluvial soil than in black soil. Statistical analysis verified significant differences between fertilizers, highlighting their different functions in soil fertility management. The results help in understanding the choice of organic fertilizers according to soil and crop needs.

Chemical Composition and Fertilizer Efficiency: Chemical analysis showed that neem cake contained the highest concentration of nitrogen and phosphorus, hence it is an organic amendment with high nutrient content. Vermicompost gave a balanced macronutrient contribution with high organic carbon content, which enhances microbial activity. FYM, although having a lower concentration of nutrients, was very important for soil fertility in the long term. These findings underscore the contrasting contributions of organic fertilizers to soil fertility management.

Nutrient Release Patterns: Incubation study indicated neem cake released nutrients sooner, especially nitrogen and phosphorus, which are key for plant development. Vermicompost provided gradual release, thereby being suited for long-term soil fertility. FYM released the least of the nutrients at the slowest rate, strengthening its position as a long-term soil conditioner in lieu of a fast-release nutrient supply. All this highlights the necessity of making a selection among fertilizers as a function of the nutrient demand by the crop and the state of the soil.

Soil Type Effect on Nutrient Availability: Nutrient availability was generally greater in alluvial soil than in black soil. The more rapid decomposition and mineralization in alluvial soil may have been the cause. Black soil, with a high clay content, immobilized nutrients but reduced their release, possibly inhibiting plant uptake. This indicates that soil type is an important factor in regulating fertilizer efficiency and must be taken into account when using organic amendments.

Statistical Significance of Results: ANOVA analysis established statistically significant variation in nitrogen and phosphorus release between fertilizers, with neem cake retaining the maximum release rates. Release of potassium was more consistent, reflecting that all three fertilizers contributed equally to potassium availability. Statistical confirmation of these variations underscores the significance of organic fertilizer selection based on nutrient release efficiency for efficient soil management.

Practical Implications and Future Research: The study points out that neem cake is beneficial for rapid nutrient supply, whereas vermicompost aids in maintaining soil fertility. FYM remains valuable for long-term soil enrichment. Future research could investigate the effects of various application rates and environmental factors on nutrient release dynamics. Further field trials may also be conducted to corroborate the laboratory results under actual agricultural conditions.

Conclusion: This research compared the chemical structure and nutrient release pattern of vermicompost, FYM, and neem cake in Indian soil conditions. The findings showed that neem cake contained the highest level of nitrogen and phosphorus, hence the best organic fertilizer for quick nutrient provision. Vermicompost provided consistent release of nutrients, sustaining soil fertility, whereas FYM ensured long-term soil enrichment. The incubation experiment showed that the availability of nutrients was greater in alluvial soil than in black soil, highlighting the role of soil type in fertilizer effectiveness. Statistical testing validated the occurrence of notable differences in patterns of nutrient release, further substantiating the necessity of choosing organic fertilizers in relation to crop requirements and soil types. These results are significant in guiding optimal applications of organic fertilizers in Indian agriculture. Further studies must be conducted on field experiments and environmental effect to maximize organic fertilizer management for sustainable soil fertility.

References :-

1. Bhatt, M. K., Labanya, R., & Joshi, H. C. (2019). Influence of long-term chemical fertilizers and organic

manures on soil fertility-A review. *Universal Journal of Agricultural Research*, *7*(5), 177-188.
2. Das, S. K., & Ghosh, G. K. (2023). Developing biochar-based slow-release NPK fertilizer for controlled nutrient release and its impact on soil health and yield. *Biomass Conversion and Biorefinery*, *13*(14), 13051-13063.
3. Jariwala, H., Santos, R. M., Lauzon, J. D., Dutta, A., & Wai Chiang, Y. (2022). Controlled release fertilizers (CRFs) for climate-smart agriculture practices: a comprehensive review on release mechanism, materials, methods of preparation, and effect on environmental parameters. *Environmental Science and Pollution Research*, *29*(36), 53967-53995.
4. Dhaliwal, S. S., Sharma, V., Shukla, A. K., Verma, V., Kaur, M., Singh, P., ... & Hossain, A. (2023). Effect of addition of organic manures on basmati yield, nutrient content and soil fertility status in north-western India. *Heliyon*, *9*(3).
5. Gautam, A., Guzman, J., Kovacs, P., & Kumar, S. (2022). Manure and inorganic fertilization impacts on soil nutrients, aggregate stability, and organic carbon and nitrogen in different aggregate fractions. *Archives of Agronomy and Soil Science*, *68*(9), 1261-1273.
6. Thomas, C. L., Acquah, G. E., Whitmore, A. P., McGrath, S. P., & Haefele, S. M. (2019). The effect of different organic fertilizers on yield and soil and crop nutrient concentrations. *Agronomy*, *9*(12), 776.
7. Kumar, R., Kumar, R., & Prakash, O. (2019). Chapter-5 the impact of chemical fertilizers on our environment and ecosystem. *Chief Ed*, *35*(69), 1173-1189.
8. Bashir, O., Ali, T., Baba, Z. A., Rather, G. H., Bangroo, S. A., Mukhtar, S. D., ... & Bhat, R. A. (2021). Soil organic matter and its impact on soil properties and nutrient status. *Microbiota and biofertilizers, Vol 2: Ecofriendly tools for reclamation of degraded soil environs*, 129-159.
9. Pahalvi, H. N., Rafiya, L., Rashid, S., Nisar, B., & Kamili, A. N. (2021). Chemical fertilizers and their impact on soil health. *Microbiota and Biofertilizers, Vol 2: Ecofriendly tools for reclamation of degraded soil environs*, 1-20.
10. Singh, V. K., Dwivedi, B. S., Mishra, R. P., Shukla, A. K., Timsina, J., Upadhyay, P. K., ... & Panwar, A. S. (2018). Yields, soil health and farm profits under a rice-wheat system: Long-term effect of fertilizers and organic manures applied alone and in combination. *Agronomy*, *9*(1), 1.
11. Bhunia, S., Bhowmik, A., Mallick, R., & Mukherjee, J. (2021). Agronomic efficiency of animal-derived organic fertilizers and their effects on biology and fertility of soil: A review. *Agronomy*, *11*(5), 823.
12. Mupambwa, H. A., &Mnkeni, P. N. S. (2018). Optimizing the vermicomposting of organic wastes amended with inorganic materials for production of nutrient-rich organic fertilizers: a review. *Environmental Science and Pollution Research*, *25*, 10577-10595.
13. Lazcano, C., Zhu-Barker, X., &Decock, C. (2021). Effects of organic fertilizers on the soil microorganisms responsible for N2O emissions: A review. *Microorganisms*, *9*(5), 983.
14. Sharma, S., Rana, V. S., Rana, N., Sharma, U., Gudeta, K., Alharbi, K., ... & Bhat, S. A. (2022). Effect of organic manures on growth, yield, leaf nutrient uptake and soil properties of Kiwifruit (Actinidia deliciosa Chev.) cv. Allison. *Plants*, *11*(23), 3354.
15. Firmanda, A., Fahma, F., Syamsu, K., Suryanegara, L., & Wood, K. (2022). Controlled/slow release fertilizer based on cellulose composite and its impact on sustainable agriculture. *Biofuels, Bioproducts and Biorefining*, *16*(6), 1909-1930.

Table 1: Chemical Composition of Selected Organic Fertilizers

Fertilizer	Nitrogen (%)	Phosphorus (%)	Potassium (%)	Organic Carbon (%)	pH	EC (dS/m)
Vermicompost	1.8 ± 0.2	0.8 ± 0.1	1.5 ± 0.1	19.5 ± 1.2	7.1	2.5 ± 0.3
FYM	1.2 ± 0.1	0.5 ± 0.1	1.1 ± 0.1	14.3 ± 1.0	7.5	1.8 ± 0.2
Neem Cake	2.5 ± 0.2	1.2 ± 0.1	1.8 ± 0.2	22.1 ± 1.5	6.8	2.1 ± 0.2

Table 2: Nutrient Release (mg/kg) Over 60 Days in Alluvial and Black Soils

Fertilizer	Soil Type	Day 0 (N, P, K)	Day 15 (N, P, K)	Day 30 (N, P, K)	Day 60 (N, P, K)
Vermicompost	Alluvial	20, 10, 15	35, 18, 28	50, 25, 40	65, 32, 55
Vermicompost	Black	18, 9, 12	30, 15, 25	45, 22, 35	60, 30, 50
FYM	Alluvial	15, 7, 12	28, 14, 22	42, 20, 33	55, 28, 47
FYM	Black	13, 6, 10	25, 12, 20	38, 18, 30	50, 25, 42
Neem Cake	Alluvial	25, 12, 18	40, 22, 35	55, 30, 50	70, 38, 60
Neem Cake	Black	22, 10, 15	35, 20, 30	50, 28, 45	65, 35, 55

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

अथर्ववेद में गोधन चिन्तन

डॉ. नारायण सिंह राव* अंकिता शर्मा **

*सहायक आचार्य (संस्कृत) ज.रा.ना. राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय,उदयपुर (राज.) भारत
** शोधार्थी (संस्कृत) ज.रा.ना. राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय,उदयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना

एकैकयैषा सृष्टया संबभूव यत्र गा असृ जन्त भूतकृतो विश्वरूपा:।

प्रभु सृष्टि के आरंभ का ज्ञान देते है। यह वेदवाणी सब पदार्थों का निरुपण करती हुई हमारा शुभ्र करती है। विश्व के सबसे प्राचीनतम ग्रंथों में वेदों का स्थान सर्वोपरि है। वेद भारतीय संस्कृति और परंपरा के आधार रहे हैं। यह जीवन जीने की एक ग्रंथावली के रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानांतरित होते रहे हैं। वेदों में विभिन्न प्रकार की विषयवस्तु का समावेश रहा है। भारतीय चिंतन केवल मानव जीवन तक ही सीमित नहीं रहा है अपितु यह पशु पक्षियों में भी आत्मसाक्षात्कार करता रहा है। इसी आत्म साक्षात्कार के कारण गाय को माता के रूप में भारतीय संस्कृति ने स्वीकार कर लिया। इसे स्वीकार करने का एक प्रमुख कारण जिस प्रकार माता अपने वात्सल्य से बच्चे का पालन पोषण करती है, उसी प्रकार गाय भी अपने दूध से मानव को नवजीवन प्रदान करती है।

'माता रुद्राणां दुहिता वसूनां
स्वसादित्यानाममृतस्य नाभि:।'[1]

इससे स्पष्ट होता है कि गाय को इतना सम्मान देकर माता क्यों माना जाता है ? वेदों के अनुसंधान के समय ज्ञात होता है कि वैदिक काल से गायों को सर्वोपरि स्थान प्रदान किया जाता रहा है।

गाय का स्वरूप – समुद्र मंथन में जब रत्नों की प्राप्ति हुई तो उसमें से एक रत्न कामधेनु भी थी। उसी कामधेनु का वर्णन हमें विभिन्न प्रकार के वैदिक साहित्यों में देखने को मिलता हैं। अथर्ववेद के चौथे अनुवाक के सातवें सूक्त का अध्न करने पर हमें धेनु के स्वरूप को विस्तारपूर्वक जानने का मौका मिलता है। इसके अनुसार गाय के प्रत्येक अंग में किसी न किसी देवता का वास माना गया है। जो कुछ निम्न प्रकार है।

गाय के दो सींगों को प्रजापति और परमेष्ठी तथा इंद्रा सिर्फ अगली ललाट और या गले की घेटी मानी है।

'प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट।
प्रजापतिश्च परमेष्ठी च शृंगे इन्द्र: शिरो अग्निर्ललाटं यम:
कृकाटम्।।'[2]

आगे के मंत्रों में गाय की जीभ को विद्युत मरुद्गण को दांत , रेवती को गर्दन, कृतिका को कंधे और सूरज को ककुद के समीपस्थ का भाग बताया गया है।[3] आगे के मंत्रों में गोद अंतरिक्ष को, बृहस्पति को ककुद का भाग माना हैं। **श्येन: क्रोडोन्तरिक्षं पाजस्यं बृहस्पति: ककुद् बृहती: कीकसा:।**[4] इसके साथ ही देवशक्तियों को पीठ का भाग बतलाया गया है। **देवानां पत्नी: पृष्टय उपसद: पार्श्व: ।**[5] मित्र और वरुण गाय के दोनों कंधे त्वष्टा और अर्यमा बाहरी भाग और महादेव को इसकी भुजाएँ माना है। **मित्रश्च वरुणश्चांसौ त्वटा चार्यमा च दोषणी महादेवो बाहू।**[6] इंद्राणी को कमर का भाग, वायु को पुंछ और पवमान को बाल का स्वरूप दिखाया गया है। **इन्द्राणी भसद् वायु: पुच्छं पवमानो बाला।**[7] धाता को उरु और सविता को जानू, इसी प्रकार के गंधर्व को जंघाए और अप्सराओं को खुरभाग तथा अदिति को खुर माना चेतना को गाय का हृदय क्षेत्र माना है। है। **धाता च सविता चाष्ठीवन्तौ जंघा गन्धर्वा अप्सरस: कुष्ठिका अदिति: शफा:।**[8] मेघों को स्तन और गर्जन करने वाले मेघों को दूध से भरे हुए थन का रूप बताया है।

नदी सूत्री वर्षस्यपतयस्तनास्तनंयित्नुरुध:।[9] नक्षत्रों को गाय का विभिन्न रूप बताया है। **नक्षत्राणि रूपम्।**[10]

अथर्ववेद के पंचम अनुवाक के 10 वें सूक्त के 34 वें मंत्र में गाय की महिमा बताते हुए बताया है कि सूर्य का प्रकाश जहाँ तक पहुँचता है, वह सब गौ ही है। मनुष्य जिस गौ पर जीवित रहते हैं , उसी पर देवता जीवन यापन करते हैं।

वशां देवा उप जीवन्ति वशां मनुष्या उत।
वशेदं सर्वमभवद् यावत् सूर्यो विपश्यति।।[11]

अथर्ववेद के 10 वें सूक्त में ही गाय को अवध्य मानते हुए उसके स्वरूप को प्रणाम करते हुए कुछ इस प्रकार वर्णित किया गया है।

नमस्ते जायमानायै जाताया उत ते नम:।
बालेभ्य: शफेभ्यो रूपायाध्न्ये ते नम:।।[12]

सृष्टि में वेदों के साथ उत्पन्न इस कामधेनु को हम आदरपूर्वक धारण करते हैं तथा इसके विभिन्न अंगों को नमस्कार करते है। उपरोक्त मंत्रों के आधार पर हम सभी इस बात से आश्वस्त होते हैं कि कामधेनु के अंग प्रत्यंग में देवताओं के स्वरूप का वास होता है।

अथर्ववेद के पंचम अनुवाक में धेनु को इंद्र का रूप ही बताते हुए लिखा है–

इमा या गाव: स जनास स इन्द्र।

आगे हम अथर्ववेद में वर्णित गोधन के महत्त्व के बारे में अध्न करेंगे।

गोधन का महत्त्व – कालांतर में हो सकता है कि पशु और मनुष्य एक दूसरे के शत्रु के रूप में रहे हो, किंतु एक दूसरे की आवश्यकता को महसूस करते हुए वे एक दूसरे के पूरक होकर रहने लगे। आवश्यकता चाहे सुरक्षा की रही हो अथवा भोजन एवं आवास की। जो एक दूसरे के बिना पूर्ण नहीं हो सकती थी। किसी पूर्णता को प्राप्त करने के लिए वे एक दूसरे के सहयोगी बनते चले

गए और एक समय ऐसा आया कि वे एक दूसरे के पूरक होकर रह गए। यही बात अथर्ववेद में कुछ इस प्रकार लिखी हुई मिलती है।

सं स्रवन्तु पशव: समस्वा समु: पूरुषा:।
संधान्यस्य या स्फाति: संस्राव्येन हविषा जुहोमि।।[13]

वर्तमान समय में हम कितनी भी आधुनिकता की ओर दौड़ जाए, किंतु इसके पश्चात भी पशुओं का महत्त्व कभी समाप्त नहीं हो सकता है। ऐसे ही पशुओं में एक पशु जिस पशु कहना अनुचित होगा क्योंकि उसको करूणामय स्वरूप मानकर उसकी पूजा आराधना की जाती है तथा वह माँ के समान मानी जाती है। इतना ही नहीं उसे विराट ब्रह्म का स्वरूप भी माना जाता है। उसमें सभी देवताओं का निवास बताया गया है। वह है– गो।

गोधन का अपने आप में विशिष्ट महत्त्व होने के कारण वेदों में इसका उन्मुक्त कंठ से वर्णन किया गया है। अथर्ववेद के चतुर्थ कांड के प्रथम अनुवाक के 39 वें सूक्त के द्वित्तीय मंत्र में पृथ्वी को गाय के समान बताया है। **पृथिवी धेनुस्तस्या.....।**[14] गाय का सर्वाधिक महत्त्व दूध के लिए है। प्राचीन काल में गायों का पालन दुग्ध आदि की पूर्ति के साधन के रूप में रहा है। तभी तो वेदों में गाय रखने की बात को इंगित करने वाला मंत्र हमें कुछ इस रूप में देखने को मिलता है।

अर्थात् बल प्रदान करने वाली गोधन –दुग्ध को हम सींचते हैं। हमारी संतानें घी दूध के सेवन से बलदायक रस प्राप्त करती हुई बलिष्ठ हो। हम गो पतियों के पास गो सदा स्थिर रहे।

सं सिंचामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्।
संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ।[15]

वेदों में गोधन रक्षा हेतु भी निर्देश स्पष्ट रूप से प्राप्त होते हैं। अथर्ववेद के भाष्यकार पंडित हरिशरण सिद्धान्तालंकार ने एक मंत्र का भाष्य करते हुए लिखा है कि,ग्वालो को समझदारी से पशुओं का अच्छी प्रकार संरक्षण करना चाहिए तथा लौटते हुए पशुओं का गृहपत्नी स्वागत करती हुई उन्हें ठीक स्थान पर बांधे। इतना ही नहीं उनके लिए उचित चारे पानी की व्यवस्था भी करे। यही उनका परम कर्तव्य बताया है।

इमं गोष्ठं पशव: सं स्रवन्तु बृहस्पतिरा नयतु प्रजानन्। सिनीवाली नयत्वाघ्रमेषामाजग्मुषो अनुमते नि यच्छ।।

राजा अपनी प्रजा को संबोधित करते हुए कहता है कि कोई भी राज्य को छोड़कर नहीं जाएं। पति घर में अन्न की कमी नहीं होने दे। गायों को अवश्य रखें तथा घर के सभी सदस्यों के पालन पोषण पर ध्यान दें। आगे वह देवता से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि जगत के देवता प्रजा की कामना पूर्ति के निर्मित्त आप सभी एक साथ संयुक्त हो।

इहेदसाथ न परौ गमाथेर्यो गोपा: पुष्टपतिर्व आजत्।
अयंऽग्निर्दीदायद् दीर्घमेजा सजातैरिद्धोऽप्रतिबूवद्भि:।।[16]

अथर्ववेद के चौथे कांड के 21 वें सूक्त में इंद्र देवता से प्रार्थना करते हुए कहा गया है कि आप हमें गोधन प्रदान करें। इसी मंत्र में गायों से भी प्रार्थना की गई है कि वे हमे दुग्ध आदि पदार्थ प्रदान कर आनंदित करें।

आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्तवस्मे।
प्रजावती: पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहाना:।।[17]

इसी के आगे के मंत्रों में इन्द्र द्धारा प्रदत्त गाय कभी नष्ट नहीं होती। चोर लुटेरे का भय भी उन्हें नहीं होता है तथा शस्त्रों से भी उनकी क्षति नहीं हो सकती। गायों को चराने वाले पालक जिन गायों से देवता की पूजा करते हैं, उन्हीं गायों के संग ग्वालों की आयु भी लंबी एवं सुख पूर्वक होती है।

न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरादधर्षति।
देवांश्चर्याभिर्यजते ददाति च ज्योगित् ताभि: सचतेगोपति: सह।।[18]

अर्थात् इंद्र देवता हमारे घरों में गाऊं का निवास बनाए अर्थात् गोधन हमारे घर में निवास करें। वे सब भी हमें दूध देती हुई आनंदित करने वाली हो। यह अनेक रंग रूप वाली गाए बछड़ों सहित संध्याकाल में इंद्र को अपने दूध का पान कराये। इसी प्रकार अथर्वऋषि प्रजापति से अपनी गायों को निरोगी रखने की प्रार्थना करते है।

क: पृश्नि धेनुं वरुणेन दत्तामथर्वण सुदुघां नित्यवत्साम्।
बृहस्पतिना सख्यं जुषाणो यथावशं तन्व: कल्पयाति।।[19]

इसी प्रकार की प्रार्थना अथर्ववेद के चौथे अनुवाक के 16 वें सूक्त में ऋषि अथर्व भगदेवता से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि हमें गाय, घोड़े एवं पुत्र–पौत्रादि प्रदान करें।

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्न:।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वै भग प्र नृभिर्नृवन्त:।।[20]

अथर्ववेद में गाय के दूध का महत्त्व बताते हुए लिखा गया है कि प्राण साधना करने वाले साधकों को गो दूध का उपयोग करना चाहिए। इसके उपयोग से स्फूर्ति बनी रहती है।

पयो धेनूनां रसमोषधीनां जवमर्वतां कवयो य इन्वथ।
शग्मा भवन्तु मरुतो न: स्योनास्ते नो मुञ्चन्त्वं हस:।।[21]

हे मरुत देवता । हम प्राण साधना करते हुए गोदुग्ध और औषधियों का सेवन करें। जिससे हमारी इन्द्रिया ऊर्जावान हो। यह हमें प्राणशक्ति व सुख प्रदान करें। प्राण साधना का हमें क्या लाभ है ? इसका उत्तर भी हमें इसी वेद के सातवें कांड में कुछ इस तरह लिखा हुआ प्राप्त होता है।

समिद्धो अग्निर्वृषणा रथी दिवस्तप्तो घर्मो दुह्यते वामिषे मधु।
वयं हि वो पुरुदमासो अश्विनो हवामहे सधमादेषु कारव:।।[22]

अर्थात् प्राण साधना से हृदय में प्रभु का प्रकाश होता है। ज्ञान रूपी सूर्य का उदय होता है। शरीर में वीर्य की उर्ध्व गति होती है और शरीर रूपी ग्रहों का सुंदरता से पालन होता है। इसी के आगे मंत्रों में हमें यह परामर्श दिया जाता है की प्राण साधक को चाहिए कि वह गो दूध का सेवन करें।[23]

हे सविता देवता, हम गायों को दूहना चाहते हैं इसीलिए आप इस निर्मित्ता दुग्ध को प्रेरित करें।

उपह्वये सुदुघां धेनुमेतां सुहस्तो गोधुगुत दोहदेनाम्।
श्रेष्ठं सवं सविता साविषन्नोऽभीद्धो घर्मस्तदु षु प्रवोचत्।।[24]

हे सविता देवता ! हम स्वच्छ हाथों से गायों के दुग्ध को दुहने के निमित्ता उस का आह्वान करते हैं। सर्व प्रेरक सविता देवता हम सबके निर्मित इस दुग्ध को प्रेरित करें।

वेदों में गोधन की केवल आराधना ही नहीं की गई अपितु उनके साथ साथ उनका संवर्धन एवं संरक्षण करने के पुट दिखाई देते हैं।

गोधन का संवर्धन एवं संरक्षण – वेदों में हमें गोधन के संवर्धन एवं संरक्षण की परिचर्चा भी दिखाई देती है। कुछ मंत्रों में पशु संवर्धन की इतनी सुन्दर व्यवस्था लिखी हुई है जिसको हमारे पूर्वजों ने अपनाया, केवल इसे अपनाया ही नहीं अपितु उसके साथ –साथ अगली पीढ़ी में स्थानांतरित भी किया। तभी तो हम देखते हैं। सभी जगह एक ही समान गोधन को संरक्षण एवं संवर्धन प्राप्त है। अथर्ववेद में यामिनी देवता से निवेदन करते हुए कहते हैं कि वह गायों और अन्य पशुओं का पोषण करती हुई उन्हें पुष्टि और संरक्षण प्रदान करें। **पशून् यमिनि पोषय।**[25] आगे के मंत्रों में यामिनी देवता से प्रार्थना

करते हुए ऋषि ब्रह्मा कहते हैं कि आप गायों, घोड़ों , मनुष्य और धरती पर विचरण करने वाले समस्त पशु पक्षियों के लिए कल्याणकारी और सुख प्रदान करने वाली हो।

शिवा भव पुरुषेभ्यो गोम्यो अश्वेभ्य: शिवा।
शिवास्मै सर्वस्मै क्षेत्राय शिवा न इहैधि।।[26]

अथर्ववेद के सातवें अनुवाक् में ग्वालों को निर्देश दिया गया है कि गायों के लिए उत्तम घास, स्वच्छ जल की व्यवस्था हो, जिससे वे हष्ट पुष्ट हो सके।

सूयवसाद् भगवती हि भूया अधा वयं भगवन्त: स्याम।
अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वादानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती।।[27]

इसी अथर्ववेद के अष्टक कांड में राजाओं को निर्देशित किया गया है कि वे ऐसे नियम बनाए जिससे कोई भी मनुष्य पशुओं पर अत्याचार न कर सके।

य: पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते यो अश्वयेन पशुना यातुधान:।
यो अध्याया भरति क्षीरमघ्ने तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च।।[28]

हे राजन ! कोई भी मनुष्य किसी अन्य मनुष्य पर अत्याचार नहीं करें। कोई भी मानव घोड़ों एवं अन्य पशुओं के साथ अमानवीय व्यवहार नहीं करें और न ही उसकी हत्या करें। ग्वाला भी यदि बछड़े को उचित मात्रा में दूध न देकर सारे दूध को स्वयं रख लें अथवा उसे दूध दुहने के बजाए पीड़ित करे तो राजा को उसे दंड देकर इस अपराध को रोकने का प्रयास करना चाहिए। इसके पश्चात भी यदि कोई ऐसा करता है तो यह गोदुग्ध राक्षसों के लिए विष के समान हो जाए।[29] कहने का अभिप्राय यह है कि जब गोधन को पीड़ित किया जाता है तब उनके दूध आदि में विष की उत्पत्ति हो जाती है। इसी के आगे के मंत्रों में आदेशित किया गया है कि जो भी गाय को पीड़ा दे कर दूध का हरण करने वाला है, उसे वर्ष भर दूध न मिलने का दंड दिया जाए। **संवत्सरीणं पय उस्त्रियायास्तस्य मशीद् यातुधानो नृचक्ष:।**[30]

वेदों में विज्ञान के लेखक डॉ. कपिलदेव द्विवेदी ने अपनी पुस्तक में यजुर्वेद के मंत्रों का उल्लेख करते हुए लिखा है गाय घी, दूध आदि प्रदान करने का साधन है। उसे नहीं मारना चाहिए।[31] गोहत्या करने वालों को समाज से बहिष्कृत करने का विधान सभी वेदों में वर्णित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. ऋग्वेद 1.101.15 आचार्य वेदान्त तीर्थ, मनोज पब्लिकेशन, चॉदनी चौक, नई दिल्ली, पृ.सं.
2. अथर्ववेद मंत्र 4.7.1, आचार्य वेदान्त तीर्थ, मनोज पब्लिकेशन, चॉदनी चौक, नई दिल्ली, पृ.सं. 517
3. 'विद्युज्जिह्वा मरुतो दन्ता रेवतीर्ग्रीवा:, कृत्तिका स्कन्धा धर्मो वह:।' अथर्ववेद मंत्र 4.7.3, आचार्य वेदान्त तीर्थ, मनोज पब्लिकेशन, चॉदनी चौक, नई दिल्ली, पृ.सं. 517
4. वही..... मंत्र 4.7.5, पृ.सं. 517
5. वही.....मंत्र 4.7.6, पृ.सं. 517
6. वही..... मंत्र 4.7.7, पृ.सं. 517
7. वही.....मंत्र 4.7.8, पृ.सं. 517
8. वही..... मंत्र 4.7.10, पृ.सं. 518
9. वही.....मंत्र 4.7.14, पृ.सं. 518
10. वही.....मंत्र 4.7.15, पृ.सं. 518
11. वही.....मंत्र 5.10.34, पृ.सं. 592
12. वही..... मंत्र 5.10.1, पृ.सं. 588
13. वही..... मंत्र 2.4.26.3, पृ.सं. 91
14. वही.....मंत्र 4.1.39, पृ.सं. 207
15. वही.....मंत्र 2.4.26.4, पृ.सं. 91
16. अथर्ववेदभाष्यम् (प्रथम भाग) मंत्र 3.8.4, पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार, कृतिनोवा संजीव नेवर, पृ.सं. 200
17. अथर्ववेदभाष्यम् (द्वितीय भाग) मंत्र 5.21.1, पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार, कृतिनोवा संजीव नेवर, पृ.सं. 73
18. अथर्ववेद मंत्र 5.21.3, आचार्य वेदान्त तीर्थ, मनोज पब्लिकेशन, चॉदनी चौक, नई दिल्ली, पृ.सं. 180
19. अथर्ववेदभाष्यम् (तृतीय भाग) मंत्र 7.104.1, पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार, कृतिनोवा संजीव नेवर, पृ.सं. 114-115
20. अथर्ववेदभाष्यम् (प्रथम भाग) मंत्र 3.16.3, पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार, कृतिनोवा संजीव नेवर, पृ.सं. 226
21. वही..... मंत्र 4.27.3, पृ.सं. 92-93
22. अथर्ववेद मंत्र 7.73.1, आचार्य वेदान्त तीर्थ, मनोज पब्लिकेशन, चॉदनी चौक, नई दिल्ली, पृ.सं. 405
23. पयोऽयं स .....पिबतं रोचते दिव:। अथर्ववेदभाष्यम् (तृतीय भाग) मंत्र 7.73.3, पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार, कृतिनोवा संजीव नेवर, पृ.सं. 76-77
24. वही..... मंत्र 7.73.7 पृ.सं. 77
25. अथर्ववेद मंत्र 5.28.4, आचार्य वेदान्त तीर्थ, मनोज पब्लिकेशन, चॉदनी चौक, नई दिल्ली, पृ.सं. 142
26. वही.....मंत्र 8.28.3 पृ.सं. 142
27. वही..... मंत्र 7.73.11 पृ.सं. 406
28. अथर्ववेदभाष्यम् (तृतीय भाग) मंत्र 8.3.15,पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार, कृतिनोवा संजीव नेवर,पृ.सं. 158
29. 'विषं गवां यातुधाना' वही.....मंत्र 8.3.16 पृ.सं. 159
30. वही.....मंत्र 8.3.17 पृ.सं. 159
31. वेदों में विज्ञान, लेखक- डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, प्रकाशन- विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, ज्ञानपुर (भदोही) पृ.सं. 159

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मेरठ परिक्षेत्र की वीरांगनाओं का आजादी के समर में योगदान

डॉ. सचिन कुमार*

* एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास) डी0ए0वी0 कॉलेज, मुजफ्फरनगर, मॉ शाकुम्भरी विश्वविद्यालय, सहारनपुर (उ.प्र.) भारत

शोध सारांश – **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।**
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वस्त्रफला क्रिया:'।।

नारी सदैव समाज में शक्ति व आस्था का स्वरूप मानी जाती रही है। वैदिक काल में हमें घोषा, लोपामुद्रा, विश्ववारा, अपाला, गार्गी व अदिति जैसी विदुषी महिलाओं का वर्णन मिलता है। महाजनपदकाल में बौद्ध धर्म से सम्बन्धित प्रजापिता गौतमी, आम्रपाली आदि भिक्षुणी का वर्णन भी मिलता है। मध्यकालीन भारतीय समाज में रजिया सुल्तान, जोधाबाई, गुलबदन बेगम आदि एवं आधुनिक भारतीय समाज में रानी लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई, बेगम हजरतमहल, दुर्गा भाभी, एनी बेसेन्ट, मैडम भीकाजी कामा, कल्पना दत्ता, प्रीतिलता वादेकर आदि वीरांगनाओं के बारे में इतिहास के स्वर्णिम पन्नों में पढने और जानने को मिलता है।

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में महिलाओं का योगदान हमेशा अविस्मरणीय रहेगा। उन्होंने भारतीय समाज के हर वर्ग में राष्ट्रीयता व देशप्रेम की भावनाओं को जागृत करने में महती भूमिका निभाई थी। उन्होंने 1857 ई0 की क्रान्ति से लेकर 1947 ई0 की आजादी की बेला तक हुए अनेकों आन्दोलनों में प्रतिभाग किया था। उदाहरणार्थ, असहयोग आन्दोलन, बारडोली सत्याग्रह, नमक आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन आदि।

शब्द कुंजी – नमक आन्दोलन, मायादास, विधावती, उर्मिला शास्त्री, शास्त्री देवी, विलायती कपडे, पिकेटिंग, व्यापारी वर्ग।

शोध का औचित्य : प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से प्रयास किया गया है कि जितना अमूल्य योगदान महिलाओं ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में दिया है उनको भी इतिहास में वही स्थान व सम्मान प्राप्त हो जिसकी वह हकदार है। हमारी आने वाली पीढियां व समाज के सम्मानित नागरिक एवं शोध के क्षेत्र से जुडे शिक्षक व शोधार्थी भी उनके कार्यो से प्रेरित होने के साथ साथ उनके बताये मार्गो पर चल सके।

शोध विधि : प्रस्तुत शोधपत्र विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक विधि पर आधारित है इस शोध पत्र में प्राथमिक व द्वितीय स्रोतों का प्रयोग किया गया है।जैसे सरकारी रिपोर्ट, पुस्तक, शोधपत्र, पत्रिका, इन स्रोतों का सन्दर्भ ग्रहण करते हुए वर्णात्मक व्याख्या एवं सार्थक निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है।

व्याख्या: भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन के राजनीतिक पटल पर महिलाओं की उपस्थिति गांधी जी के भारत आगमन के पश्चात लगातार बढती ही गयी। चूंकि गांधी जी ने अपने विचारों से आन्दोलन के यज्ञ में आहुति डालने के लिए सबको प्रेरित करने का प्रयास किया था। गांधी जी का मानना था कि पुरूष एवं महिला सभी समान है उनमे रंग, क्षेत्र, भाषा, धर्म आदि के आधार पर भेद नही करना चाहिए।

जब भी आजादी के बारे में संवाद होता है तो उत्तर प्रदेश का नाम सबसे पहले आता है आजदी के पूर्व इस प्रान्त को संयुक्त प्रान्त बोला जाता था इसी प्रान्त से जुडी कुछ वीरांगनाओं के योगदान की चर्चा जब हम करते है तो उनसे सम्बन्धित साक्ष्यों का अभाव सा देखने को मिलता है। हमें कुछ प्रमाणिक जानकारियों के लिए उनकी आत्मकथाओ व संस्मरणों पर ही निर्भर रहना पडता है। महिला सेनानियों से सम्बन्धित दस्तावेजों को या तो ब्रिटिश शासन द्वारा नष्ट कर दिया गया होगा या फिर उनसे सम्बन्धित साहित्य सजृन नही किया गया होगा। आजादी के पश्चात इतिहास लेखन में भी महिलाओं को वह उचित स्थान नही दिया गया जिसकी वह पूर्ण हकदार थी। स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुडी महिलाओं की अप्रत्यक्ष गतिविधियों में अधिक सक्रियता रहती थी बजाय प्रत्यक्ष गतिविधियों के। क्योंकि प्रारम्भ में ब्रिटिश शासक वर्ग उन पर सन्देह नही करता था वह एक तरह से जासूसी का कार्य करती थी। वह गोपीनीय जानकारियों और उनसे सम्बन्धित दस्तावेजों को एक स्थान से दूसरे स्थानों पर बहुत आसानी से पहुँचा देती थी।

इसके अतिरिक्त कुछ महिला सेनानियो ने अहिंसा के मार्ग पर चलकर प्रभात फेरियो, जूलूसों व धरनों आदि के माध्यम से विदेशी शक्ति का मुकाबला किया। उन्होने अपने आन्दोलन को अविरल गति से चलाने हेतु कुछ आन्दोलनकारी संगठनों को भी निर्मित किया था।

1. महिला संघ
2. महिला सत्याग्रह समिति
3. चरखा संघ

महिला आन्दोलनकारियों ने अपनी सुझ-बूझ का परिचय देते हुए अपनी गतिविधियों को अंजाम तक पहुँचाने का प्रयास किया साथ ही उन्होंने गुप्त रूप से आम लोगों में आजादी की लौ जलाने का भी प्रयास किया था। गांधी जी के नेतृत्व में हुए आन्दोलनों जैसे असहयोग आन्दोलन, बारदोली

सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, भारत छोडो आन्दोलन आदि में महिलाओं की उत्कृष्ट रूप से भागीदारी देखने को मिलती है। गांधी जी द्वारा चलाये गये सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समय मेरठ की वीर महिलाओं ने भी ने बढ़-चढ़कर हिस्सेदारी ली थी तथा अपने आस पास के परिवेश में जनजागरण फैलाने का अदम्य साहस दिखाया था। इस आन्दोलन में अहिंसा पर पूर्ण बल दिया गया था। आन्दोलनकारी महिलाओं में मुख्य रूप से विधावती, उर्मिला शास्त्री, प्रकाशवती सूद एवं कुसुमलता गर्ग आदि थी। इनमें से अधिकांश संभ्रान्त घरों से थी, जो घर की चाहर दीवारी को लाघकर पर्दा त्यागकर बाहर निकल आयी थी[1]। सभी महिलाऐ मिलकर मोहल्लों में नुक्कड सभाओं का आयोजन करती व उसमें अपने ओजस्वी भाषणों द्वारा आम जनमानस में आजादी के प्रति जोश भरती थी। प्रभात फेरियो व पिकेटिंग के माध्यम से विदेशी कपडो की दुकानों और शराबबन्दी व नमक कानून उल्लघंन के बारे लोगों को जागरूक करती थी।[2]

12 मार्च 1930ई0 को महिला संगठनों द्वारा मेरठ में एक सभा का आयोजन किया गया था जिसमे सैकडो की संख्या में महिला सदस्यों ने पुरे जोश के साथ अपनी सहभागिता की थी। इस सभा की अध्यक्षता का दायित्व तत्कालीन समय की महान स्वतन्त्रता सेनानी उर्मिला शास्त्री जी को दिया गया था।[3] इस सभा में विदेशी शाक्ति के विरूद्ध अनेकों प्रस्ताव पारित किये गये थे जैसे स्वदेशी वस्तुओ को बढावा, नशाखोरी पर रोक, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार आदि। इस प्रकार कि बैठकों में महिला हिस्सेदारी के कारण ही सामान्य नारी शाक्ति में भी विश्वास का पैमाना बढने लगा था और उनके होसलों में भी वृद्धि का भाव झलकने लगा था। इस घटना के पश्चात 17 जुलाई 1930 ई0 को ब्रिटिश पुलिस द्वारा उर्मिला शास्त्री जी को गिरफ्तार करके उन्हे न्यायालय के सामने प्रस्तुत किया गया और उन पर आरोप लगाया कि उन्होने दुकानों के सामने पिकेंटिग व छात्रों को आन्दोलन के लिए उकसाया है। न्यायाधीश ने उनके समक्ष एक प्रस्ताव रखा कि अगर वह क्षमा माग ले तो उन्हें छोड दिया जायेगा[4] लेकिन शास्त्री जी ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया इसके बाद जज साहब ने छ: माह के कारावास की सजा सुनाई।

इसी क्रम में 11 अप्रैल 1930 ई0 को एक सभा हापुड परिक्षेत्र की नारीशक्ति द्वारा भी की गई और उसमें चर्चा व परिचर्चा के पश्चात कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। जिसमें विदेशी वस्त्रों व शराब की दुकानों का पुरजोर विरोध करना था और स्वदेशी को बढावा देने के साथ साथ सूत कातने के लिए भी महिलाओं को प्रेरित किया गया[5]। महिलाओं द्वारा शराब व विदेशी कपडों की दुकानों पर पिकेटिंग करना इतना अधिक प्रभावशाली रहा कि विलायती वस्त्रों के विक्रेताओं ने स्वयं मिलकर ही यह तय किया कि वह एक वर्ष तक विलायती कपडा अपनी दूकानों पर नहीं बेचेगें[6]। महिलाओं के इन साहसिक कार्यो से आम जनमानस के हौसलों में लगातार वृद्धि हो रही थी और वह भी अब महिला शाक्ति के साथ आकर खडा हो गया था।

आगे चलकर कुछ विदेशी कपडों के अन्य व्यापारियों को भी अपने ऊपर ग्लानि महसूस होने लगी थी और उन्होने भी विदेशी वस्त्रों को बेचना ही बन्द कर दिया था[7]। इसमें हिन्दू और मुस्लिम व्यापारी एक साथ थे। इससे हिन्दू मुस्लिम एकता भी समाज में दिखाई दे रही थी। महिलाओं के इस आन्दोलन को तत्कालीन छात्रों का भी सहयोग प्राप्त हुआ उन्होंने आन्दोलन के प्रचार प्रसार हेतु प्रत्येक स्थानो पर छोटे छोटे पम्पलेट बॉटे। छात्रों ने अपनी परीक्षा तक त्याग दी तथा कुछ सगंठनों का भी निर्माण किया। जैसे-

1. हिन्दुस्तानी सेवा दल
2. यंग कामरेड लीग
3. स्टूडेन्ट खादी लीग

जिससे समाज में प्रचार प्रसार हो सके और आम जनमानस आन्दोलन से जुड सके[8]।

ब्रिटिश सरकार की गुप्तचर शाखा ने एक रिर्पोट में बताया कि मेरठ परिक्षेत्र के 75 प्रतिशत स्टूडेन्ट आन्दोलन में भाग ले रहे है[9]।

इसके अतिरिक्त स्वदेश निर्मित खादी को प्रोत्साहित करने व पहने हेतु महिलाओं ने घर घर जाकर जनसामान्य को प्रेरित किया जिससे घरेलू उत्पाद बाजार में विदेशी उत्पाद से मुकाबला कर सके। जिससे हमारा कृषक समाज समृद्ध हो सके और कृषि पलायन न हो।

आन्दोलनकारी महिलाओं में मुख्य रूप से विधावती,उर्मिला शास्त्री, प्रकाशवती सूद एवं कुसुमलता गर्ग का योगदान अतुलनीय था।इनके जनसामन्य द्वारा कुछ उपनाम भी रखे हुए थे जैसे- तूफान मेल,पंजाब मेल,कालका मेल[10]। सभी महिलाओं के अथक प्रयासों द्वारा विदेशी कपडो और शराब की दुकानों के बहिष्कार व नमक कानून उल्लघंन के बारे लोगों में जनजागरण फैलाया करती थी[11]।

इस तरह की गतिविधियों से ब्रिटिश सरकार की कानून व्यवस्था धवस्त सी हो गयी थी ।ब्रिटिश सरकार ने मेरठ नमक आन्दोलन को दबाने हेतू लगभग 6000 लोगों को कारागार में डाल दिया। मेरठ जिले की महिलाओं का इस तरह से राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेना एक महत्वपूर्ण बात थी इससे पूर्व वह इतनी सक्रिय कभी भी नही हुई थी[12]।

इसी समय सी0 आई0 डी0 विभाग की एक रिर्पोट सामने आयी जिसमें बताया गया की मेरठ परिक्षेत्र की महिलाओं कि हिस्सेदारी राजनैतिक गतिविधियों में भी लगातार बढती जा रही है। शासक वर्ग ने चिन्तित होकर महिलाओं पर भी मुकदमें चलाने प्रारम्भ कर दिय गये।कुछ महिलाओं को कठोर कारावास तक की सजा सुनाई तथा कुछ को चेतावनी देकर छोड़ दिया गया[13]।

निष्कर्ष : उपरोक्त शोधपत्र के सभी साक्ष्य स्पष्ट रूप से यह इंगित कर रहे है कि नमक आन्दोलन विदेशी वस्त्र व शराब बन्दी में मेरठ की महिला शक्ति ने सक्रिय भूमिका निभाई महिलाओं की भागीदारी से ही यह आन्दोलन कभी धीमा नही पड़ा। उन्होंने जेलों की यातनाओं से कभी भय नही खाया और वह निरन्तर आन्दोलन के पथ पर अग्रसर रही। इस शोध पत्र के माध्यम से सुझाव है कि महिला सेनानियों पर साहित्य सृजन अविरल गति से होना चाहिए ताकि शोध के क्षेत्र से जुडे लोगों को बिना किसी परेशानी साहित्य उपलब्ध हो सके बिना किसी कठिनाई के वह शोध के क्षेत्र में अपना योगदान दे सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. साक्षात्कार ,राधामोहन गर्ग
2. हिन्दुस्तान टाइम्स: 24 अप्रैल,1930
3. यू0पी0पुलिस सीक्रेट ऐब्सट्रेक्ट,1930,पैरा 333डब्लू।
4. उर्मिला शास्त्री, माई डेज इन प्रिजन/कारागार,हार्पर कालिन्स पब्लिशर्स, नोयडा,2012,पृ0 2
5. हिन्दुस्तान टाइम्स 24 अप्रैल 1930

6. एस0 ए0 लखनऊ,यू0पी0 पुलिस डिपार्टमेंट प्रोसीडिग्स 1930, फाइल नं0151; यू0पी0पुलिस सीक्रेट ऐब्सट्रेक्ट : 10 मई, 1930 पैरा 398;(एच)
7 लीडर, 12 जून, 1930
8 हिन्दुस्तान टाईम्स, 14 अप्रैल 1930
9 यू0पी0पुलिस सीक्रेट ऐब्सट्रेक्ट : 10 मई, 1930,पैरा 407 (बी)
10 साक्षात्कार ,राधामोहन गर्ग
11 यू0पी0पुलिस सीक्रेट ऐब्सट्रेक्ट, 1930 पैरा 420 (एच)।
12 यू0पी0पुलिस सीक्रेट ऐब्सट्रेक्ट, 1930 पैरा 836 (वाई)
13 यू0 पी0 पुलिस सीक्रेट ऐब्सट्रेक्ट 17 मई 1930 पैरा 441(जी)

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

जीएसटी का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. आलोक कुमार यादव*

* मॉडर्न ऑफिस मैनेजमेंट, इंदिरा गाँधी शासकीय पॉलिटेक्निक महाविद्यालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – 'एक देश, एक कर और एक' बाज़ार की अवधारणा के साथ सम्पूर्ण भारत में 1 जुलाई 2017 से गंतव्य और उपभोग आधारित अप्रत्यक्ष कर के रूप में जीएसटी व्यवस्था लागू की गई। जब इसे लागू किया गया है तब से सरकार ने इसे देश की अर्थव्यवस्था को नई दिशा देने वाला कहा है वही ने विपक्ष ने इसे जल्दबाजी में उठाया गया कदम बताया। यह कर व्यवस्था अपनी प्रारम्भिक रूकावटो के बाद अब परिपक्वता की ओर बढ़ रही है। लगभग 40 प्रकार के कर और उपकर(सेस) के स्थान एक टैक्स जीएसटी होने से व्यवसायियों और टैक्स प्रेक्टिसनर के कार्यों में सरलता आई है। जीएसटी लागू करते समय सरकार का दावा था कि इससे कीमतों की कमी आएगी जो आम उपभोक्ताओं की उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा।

टैक्स इनवॉइस, रजिस्ट्रेशन और रिटर्न फाइल करते समय पोर्टल के बार-बार अवरोधों के कारण आवश्यक औपचारिकताएँ समय पर पूर्ण नहीं हो सकी। जीएसटी लागू होने के शुरुवाती समय में विकास दर में गिरावट देखी गयी इसी प्रकार कर संग्रह भी अपेक्षाओं के अनुरूप संग्रहित नहीं हो सका। लेकिन विगत तीन वित्तीय वर्षो में कर संग्रह में आशातीत वृद्धि हुई है। सापेक्ष दृष्टिकोण से जीएसटी का मिश्रित प्रभाव देखा गया है। प्रस्तुत अध्ययन में इसकी विवेचना की गई है। यह शोधपत्र द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। शोधपत्र मौजूदा साहित्य पर आधारित है और इसमें इंटरनेट स्रोतों का उपयोग किया गया है। विभिन्न लेखों, शोधों, सरकारी रिपोर्टों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, विभिन्न वेबसाइटों और इंटरनेट पर उपलब्ध सूचनाओं का अध्ययन किया गया है।

शब्द कुंजी – जीएसटी, जीएसटीएन, इनपुट टैक्स क्रेडिट, रजिस्टर्ड डीलर, कम्पोजीशन स्कीम, वेट औरआबकारी शुल्क।

प्रस्तावना – विश्व में सर्वप्रथम जीएसटी सिस्टम को वर्ष 1954 में फ्रांस ने लागू किया था। 1 जुलाई 2017 को जीएसटी कर व्यवस्था अपनाने वाला भारत 161 वां देश था। भारत में संघीय ढांचे के कारण दोहरी जीएसटी प्रणाली अपनाई गई अर्थात केन्द्रीय जीएसटी और राज्य जीएसटी। जिसका भार वस्तु या सेवा के अंतिम उपभोक्ता पर पड़ता है। जीएसटी लागू होने के बाद उत्पन्न हुई विभिन्न स्थितियाँ एवं प्रतिक्रियाएँ परिलक्षित हुई जो इसके मूल्यांकन में महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में दृष्टिगोचर हो रही है जो इस प्रकार है:-

1. **सरकारी राजस्व में वृद्धि –** जीएसटी लागू होने के बाद सरकारी राजस्व में लगभग दोगुनी से ज्यादा वृद्धि हुई। प्रारम्भ में जीएसटी से कर संग्रह उम्मीद से कम रहा, लेकिन धीरे-धीरे इसमें वृद्धि हो रही है। जिसे निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक 1: वर्षवार सकल जीएसटी संग्रह और रजिस्टर्ड करदाताओं की संख्या

वर्ष	सकल जीएसटी संग्रह (करोड़ रु. में)	रजिस्टर्ड करदाताओं की संख्या (लाख में)
जुलाई 2017 से मार्च 2018 तक	7,40,648	105.09
2018-19	11,77,369	120.82
2019-20	12,22,116	122.34
2020-21	11,36,801	129.97
2021-22	14,88,227	136.32
2022-23	18,07,680	139.55
2023-24	20,18,249	145.43
2024-25 नवम्बर 2024 तक	14,56,709	148.16

स्रोत : *https://cbic-gst.gov.in*

प्रारम्भ में अर्थव्यवस्था में सुस्ती, करदाताओं में असमंजस, बिना बिल के माल की पूर्ति के कारण कर संग्रह अपेक्षित रूप से नहीं हुआ, लेकिन अप्रैल 2018 से ई-वे बिल व्यवस्था लागू होने से कर चोरी पर अंकुश लगने से वर्ष 2023-24 में वस्तु और सेवा कर के रूप में 20-18 लाख करोड़ रूपये का कर संग्रह हुआ है। वित्तीय वर्ष की प्रथम दो तिमाही में 2024-25 नवम्बर 2024 तक 14-57 लाख करोड़ का राजस्व प्राप्त हो चुका है।

2. **रजिस्टर्ड व्यवसायियों की संख्या में वृद्धि:** जीएसटी से पहले देश में करीब 66 लाख उद्यमी इनडायरेक्ट टैक्स के लिए रजिस्टर थे। जीएसटी में नवम्बर 2024 तक 1.48 करोड़ रजिस्टर्ड करदाता हो गए थे अर्थात टैक्स बेस दोगुना हो गया है। पंजीकृत व्यापारियों की संख्या में दुगुनी वृद्धि से जहाँ एक ओर जीएसटी संग्रह की राशि में वृद्धि हुई है, वहीं इसका अनुकूल प्रभाव आयकर संग्रह पर भी पड़ा है। आयकरदाताओं की संख्या भी डेढ़ गुना हो गयी है।

3. **विकास दर में गिरावट–** जीएसटी लागू होने के बाद कोविड के कारण

लागू लॉक डाउन के कारण बाजार मंदी की गिरफ्त में आ गया एवं विकास दर घट गयी। लेकिन अब अर्थव्यवस्था पुन: पटरी पर आ गयी है, आर्थिक गतिविधियाँ तेज हो गयी है। परिणामस्वरूप 2023-24 में जीडीपी 7% वृद्धि हुई है। इस प्रकार भारत विश्व में विकास दर के मामले में सर्वाधिक तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था बन गया है।

4. महँगाई में वृद्धि- जीएसटी लागू करते समय कहा गया था कि एक देश एक कर होने एवं कर पर कर लगने के दुष्प्रभाव के दूर होने से लोगों को वस्तुएँ सस्ती मिलेगी, लेकिन व्यवहार में आम उपभोग की वस्तुओं के मूल्य जीएसटी लागू होने के बाद घटने के बजाय बढ़े हैं, क्योंकि कई करमुक्त वस्तुएँ जीएसटी के दायरे में आ गई हैं एवं कई वस्तुएँ ऊँचे कर खण्ड में रखी गयी हैं। सेवाओं पर कर की दर बढ़ने से सेवाएँ भी महँगी हो गयी हैं। व्यापारी भी जीएसटी की आड़ लेकर बढ़े हुए भावों पर माल बेच रहे हैं और इनपुट टैक्स क्रेडिट का लाभ उपभोक्ताओं को नहीं दे रहे हैं।

5. छोटे कारोबारियों के लिए समस्याएँ - जीएसटी लागू से सबसे अधिक कठिनाइयों का सामना छोटे व्यापारियों को करना पड़ रहा है। श्रम शक्ति के अभाव और कम्प्यूटर का ज्ञान नहीं होने से हिसाब-किताब रखना मुश्किल हो रहा है। सर्वर प्राय: सही कार्य नहीं करता है, जिससे लंबी कतारें देखी जा सकती हैं। खुदरा व्यापार या कुटीर उद्योग समाप्त प्राय: है। जीएसटी ने खासकर छोटे कारोबारियों के लिए कई समस्याएँ खड़ी कर दी हैं। जैसे कानून का पालन करना, परिचालन लागत में वृद्धि, सिस्टम का ऑनलाइन होना, नई तकनीक का इस्तेगाल, कर बोझ बढ़ना आदि।

6. छोटी इकाइयों पर प्रतिकूल प्रभाव - लघु एवं मंझले उद्योगों (एसएमई) के द्वारा जीएसटी की बारीकियाँ नहीं समझने के परिणामस्वरूप उनके कारोबार पर असर पड़ा है और उनका उत्पादन घटा है। विशेषकर टैक्सटाइल एवं गारमेण्ट क्षेत्र में काम करने वाले कई स्थायी एवं अस्थायी कारीगर मजदूर छंटनी का शिकार हुए हैं।

7. कर की दरों के ज्यादा खण्ड- जीएसटी के समीक्षक जीएसटी में कर की दरों के सात खण्ड रखने की आलोचना में इसे 'नई बोतल में पुरानी शराब' जैसा कहते है, क्योंकि उत्पादन शुल्क और वेट में भी लगभग इतने ही कर खण्ड थे। जीएसटी में विभिन्न वस्तुओं के लिए अनिवार्य, आरामदायक एवं विलासिता की दृष्टि से अलग-अलग कर खण्ड समझ में आते हैं, लेकिन एक ही प्रकृति की वस्तुओं पर कर की दरों की विविधता इसे जटिल बनाती है जैसे एक हजार रु. मूल्य तक वाले रेडीमेड गारमेण्ट पर 5% जीएसटी, एक हजार रुपये से ज्यादा वाले गारमेण्ट्स पर 12% जीएसटी लगता है। समान माल पर दरों की विविधता के कारण बिलिंग में कठिनाइयाँ आ रही हैं।

जीएसटी को सरल, सहज एवं सफल बनाने के लिए सुझाव- जीएसटी लागू करते समय जो व्यवसायियों और आम जनता को सपने दिखाये गए थे वे धूमिल हुये हैं एवं आशंकाएँ हकीकत में बदलती हुई दिख रही हैं। देश की आर्थिक स्थिति और जीएसटी के क्रियान्वयन के दोषों, कमियों एवं कठिनाइयों को देखते हुये निम्न प्रयास किये जाने चाहिए-

1. जीएसटी अधिनियम को सरल बनाना - इसके क्रियान्वयन में छोटे व्यापारियों के हितों की अनदेखी की गई है। समय रहते सरकार को यथाशीघ्र इनकी समस्याओं को तुरंत दूर करने की आवश्यकता है। खुदरा, खाद्य, कपड़ा, मार्बल, बीड़ी उद्योग, कंज्यूमर गुड्स और ड्यूरेबल कंपनियाँ के लगभग 70% व्यवसायी अपने बहीखातों का कम्प्यूटरीकरण नहीं कर पा रहे हैं। थोक और खुदरा व्यापारियों के बीच इसी कारण संघर्ष भी बढ़ रहा है। कानून को सरल और पारदर्शी बनाकर पुन: परिभाषित करने की आवश्यकता है।

2. कर की दरों का युक्तिकरण- एक जैसी समान प्रकृति की वस्तु पर दोहरी या तिहरी दरें समाप्त करके एक दर लागू की जाना चाहिए। जैसे विभिन्न इलेक्ट्रिक सामानों पर 5%, 12%, 18% एवं 28% की दरें हैं। इससे भ्रम की स्थिति निर्मित होती है। इन अलग-अलग दरों की बजाय एक या दो समन्वित दरें लागू करने से सरलता बढ़ेगी। करयोग्य माल को 28% की दर से 18% एवं 12% के कर खण्ड में लाने के प्रभावी प्रयास करने चाहिए।

3. उपभोक्ताओं तक लाभ पहुँचाना - जीएसटी में कई वस्तुओं की दरें पूर्ववर्ती उत्पाद शुल्क वेट अन्य कर की तुलना में कम रखी गयी हैं। इस दृष्टि से वस्तुएँ सस्ती होनी चाहिए, लेकिन व्यवहार में उत्पादकों एवं व्यापारियों ने वस्तुओं के मूल्य नहीं घटाए हैं। सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि दरों में कमी का फायदा उपभोक्ताओं तक पहुँचे। इसके लिए वस्तुओं के मूल्यों की समीक्षा के साथ मुनाफाखोरी पर कड़ी कार्यवाही करना चाहिए।

4. रिटर्न्स की संख्या में कमी करना- एक वित्तीय वर्ष में 37 रिटर्न्स का भय समाप्त किया जाना चाहिए। सभी करदाताओं के लिए तिमाही रिटर्न की व्यवस्था लागू की जानी चाहिए, इससे करदाताओं को कागजी कार्यवाही से काफी राहत मिलेगी, यद्यपि अभी अक्टूबर माह में सरकार ने जीएसटी कौंसिल की अनुशंसा पर 5 करोड़ रुपये तक के कारोबारियों के लिए तिमाही रिटर्न भरने की राहत दी है, लेकिन व्यावहारिक रूप से यह व्यवस्था सभी करदाताओं के लिए होना चाहिए।

5. सरल एवं सुलभ सॉफ्टवेयर जरूरी- आधारभूत तैयारी किये बिना जीएसटी लागू करने के कारण जीएसटीएन एक उन्नत और प्रभावकारी सॉफ्टवेयर विकसित नहीं कर पाया। जीएसटी के लिए बनाया गया सहयोगी बुनियादी ढाँचा इतना मजबूत नहीं है कि निजी क्षेत्र इसको सहज स्वीकार कर सके। आम शिकायत है कि बहुत-सी चीजों की जानकारी छोटे व्यापारियों के पास अब तक नहीं पहुँच पाई है।

6. व्यावसयिक सहजता एवं निर्भयता का वातावरण तैयार करना - मुक्त और निर्बाध बाजार सहजता व निर्भयता के वातावरण से पल्लवित होता है जबकि जीएसटी जिस रूप में आया है, उससे धारणा विपरीत ही निर्मित हुई है। अत: इस धारणा को तोड़ने के लिए सरकार को अविलंब पुरजोर अभियान चलाना चाहिए।

7. निर्बाध एवं सुचारु ऑनलाइन व्यवस्था - आधी अधूरी तैयारियों के साथ जीएसटी लागू करने छोटे कारोबारियों को जीएसटी अपनाने में विभिन्न परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। कारोबारियों के लिए जीएसटी नेटवर्क से जुड़ने, दस्तावेज अपलोड न कर पाने, सभी को पासवर्ड न मिलने, पर्याप्त नेटवर्क का अभाव आदि परेशानी का कारण बने हुए हैं। ऐसे में छोटे कारोबारियों को पर्याप्त समय, प्रशिक्षण, तकनीकी सहयोग की आवश्यकता है। सरकार को इस ओर पर्याप्त ध्यान देना चाहिए, ताकि छोटे कारोबारियों को राहत मिले।

8. माल परिवहन के अव्यावहारिक प्रावधान में सुधार - जीएसटी लागू होने के बाद ट्रांसपोर्टेशन सम्बन्धी इसके कड़े एवं अव्यावहारिक प्रावधान के कारण ट्रांसपोर्टर जीएसटी का भय बताकर मनमाना किराया वसूल करने के साथ अनावश्यक प्रपत्रों की माँग करते हैं। सरकार को परिवहन सम्बन्धी प्रक्रिया सरल बनानी चाहिए, ताकि माल का सरलता एवं सहजता से परिवहन किया जा सके।

9. जॉबवर्क की दरों को माल की दरों के अनुरूप बनाना – जॉबवर्क को जीएसटी में सेवा क्षेत्र मानकर इस पर 18 की दर से जीएसटी लगता है, जबकि कई जॉब वर्क वाले ऐसे माल हैं, जिन पर कर की दर 5% या 12% है, ऐसी स्थिति में इनपुट टैक्स क्रेडिट निर्मित माल पर देय टैक्स से ज्यादा हो जाती है, इससे इसके समायोजन एवं वापसी में कठिनाई आती है।

10. पेट्रोल-डीजल को जीएसटी के दायरे में लाना – पेट्रोलियम पदार्थों की दरें देश भर में एक जैसी रहे, इसके लिए डीजल, पेट्रोल आदि पेट्रोलियम पदार्थों को भी शीघ्र ही जीएसटी के अंतर्गत लाया जाना चाहिए, इससे वेट की दरों की विसंगति दूर होगी और राज्यों की मनमानी बढ़ोतरी या प्रतिस्पर्धा से मुक्ति मिलेगी।

निष्कर्ष – अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जीएसटी का विभिन्न क्षेत्रों और उद्योगों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। जीवन में परिवर्तन होना अति आवश्यक है, लेकिन परिवर्तन एक सीमा तक अच्छा होता है। जीएसटी से जहां सरकार को बहुत अधिक राजस्व की प्राप्ति हुई है; वहीं करदाता को पूंजी का नुकसान हुआ है। कई ऐसे प्रावधान है जिसके कारण छोटे व्यवसाय और उद्यमी को पूंजी के लिए गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। कर ढांचे में सरलता, सुशासन और नवप्रवर्तन के द्वारा व्यवसाय में तेजी लाई जा सकती है जिससे व्यवसाय की प्रतिस्पर्धी दुनियां में जीएसटी संबंधित शंकाओ के प्रति कॉर्पोरेट और जनता का विश्वास बनाने में मदद मिल सके। जीएसटी के कार्यान्वयन को निर्बाध बनाने के लिए एक मजबूत देशव्यापी आईटी नेटवर्क और बुनियादी ढांचे में सुधार होना अत्यावश्यक है। जीएसटी संबंधी सभी समस्याओं के निराकरण होने पर ही जीएसटी 'एक राष्ट्र, एक कर और एक बाजार' के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगा। जीएसटी अब भारतीय राजस्व व्यवस्था का एक अनिवार्य अंग बन गया है। तमाम कठिनाइयों और उलझनों के बावजूद अब पीछे कदम लेना सम्भव नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Taxmann's GST Law & Practice,CA (Dr.) Arpit Haldia, CA Mohd. Salim)
2. वस्तु एवं सेवा कर, डॉ.सुभाष गुप्ता,नीलम नाहर, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी,भोपाल, 2021
3. माल और सेवा कर डॉ.एच.सी मेहरोत्रा, प्रो. वी.पी. अग्रवाल, साहित्य भवन पब्लिकेशन, 2020
4. Goods And Services Tax And Custom Duty GST by CA Anoop Modi, CA Mahesh Gupta and CA Nikhil Gupta, SBPD Publications, 2021
5. https://cbic-gst.gov.in/pdf/faq-gst-hindi.pdf
6. https://www.icai.org/post/study-material-nset
7. http://www.gstclub.in/news/1913/Year-wise-and-State-wise-GST-collection-2017-2024
8. https://taxguru.in/goods-and-service-tax/review-gst-act.html
9. https://hindi.business-standard.com/opinion/editorial-there-should-be-a-comprehensive-review-of-gst-rates-id-390623

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Sanskrti as A Treasure of Knowledge and Inspiration for the Youth

Dr. Seema Sharma*

***Professor (English) Govt. Sanskrit College, Ujjain (M.P.) INDIA**

Introduction - Today we are living in a global world, where the distance between two persons belonging to different countries, different cultures and different age makes no difference. We are united through the net system and social media with the whole world. "As we say in Sanskrit:"

'अयं निज: परोवेति गणना लघुचेतसाम्
इदार चरितानां तु वसुधैव कुकम्बकम्'[1]

The meaning of this verse in Mahahpanished is that the world is a family.

This tells us that the suktis in Sanskrit written thousands of years ago have a great message for the young generation. The young generation needs motivation and inspiration to achieve their goals. Therefore it is said by Bhartiihari a saint and a feet who wrote Shatakatrayam means three Shataks. Neetishetkam, Shrinagar Shatakam and Vaigya Shatakam in Sanskrit.

'प्रारम्यते न खलु विघ्नभयेन नीचै:
प्रारम्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्या:
विघ्नै: पुन: पुनरपि प्रतिहन्यमाना:
प्रारम्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति'[2]

The Shloka means that flar of obstacles, the low class people being nothing at all. The middle class people begin but stop when disturbed by the obstacles, while the first class people do not fly away because of obstacles, they complete their work once the have begun.

Anuthor great learned author of Sanskrit Literature is Chanakya who was a philosopher, jurist and royal advisor. His original name was Vishnu Gupta yet he is recognized for his pen name Kautilya He wrote Chanakya Neeti which also guidas the young generation. "Chanakya Niti Shastra" is a collection of poverbs and practical wisdom that generally focuses on the moral, ethical and practical aspects of life. The world Niti means policy or ethics.

Chanakya writes"

'परोक्षे कार्सहन्तारं प्रत्यक्षेप्रियवदिनम्
वर्जयेत्तादृश मित्रं विषकुम्भं प्योमुखम्।'[3]

This means that the person who is sweet before you and destroys your projects behind you is like a "Vishkumbh" or a container of milk with poison on its lid, We should leave such friends.

Chanakya says in Chanakya NeetiDarpan.

'अतिरूपेण वै सीता अतिगर्वेण रावण:।
अतिदानाद् बलिविद्धौ अतिसर्वत्र वर्जयेत।।'[4]

This means that excess of anything is useless because Sita was cheated because of her beauty, Ravan was killed because of excess of pride and Bali was captured because of excess of donation.

These type of teachings are necessary for the youth. As whatever they learn from their surroundings affects their future. If Sanskrit literature is given proper importance in everybody's education, the life they are going to live will be bright.

'अधमा धनमिच्छन्ति धनंमानं च मध्यमा:।
उत्तमा मानमिच्छन्ति मानोहिमहतां धनम्।।'[5]

The lowest type of people love money, the middle type of people love money and respect, but the best people need only respect.

In Neetisatkam, Bhartrihari teaches many good messages through the verses in Sanskrit.

'निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वास्तुवन्तु
लक्ष्मी: समविशतु गच्छतु वायशेष्टम्
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्यायात् पथ: प्रविचलन्ति पदं न धीरा:।'[6]Shlokana85

Our Puranas also give a new way to live life. Today the pollution problem is the biggest problem throughout the world. The importance of trees is described in : Bhavishya Puran.

'अश्वत्थमेकं पि चुन्दमेकं न्याग्रोद्यमेकंदश: चिंचिणीकान।
कापेत्थाज्ञविल्वामलकी त्रयं च पंचम्ररोपी नरकं न पश्मेत्।।'[7]

IOne Peepul, One Neem, One Vat, Ten Chichd,, Three Bel, Three Amla, Five mango tree, the plantation of these

trees help the person to reach salvation.

References:-

1. महोपनिषद अध्याय 6 मंत्र 71 Mahopanished Chapter 6 Mantra 71.
2. Bhartihari, Nitisatkam Allahabad Ram Narainlal publisher Author, P.P Sharma p.no.4
3. "Chankya NeetiDarpan" Chapter -2, Bhargav to Pustak Bhawan Gayaghat Varanasi to 2017. P.No-9
4. IBID, p.no.16
5. IBID, p.no.41
6. Bhartihari Nitisatkam Choukhamba publications Varanasi 2009, p.no.100
7. Sankhipta Bhavishya puran gan, 1992, Geetapress Gorakhpur

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Perceived Social Support and Optimism among Caregivers of Breast Cancer Patients

Reena Salvi* **Dr. Rashmi Singh****

*Research Scholar (Psychology) Mohanlal Sukhadia University, Udaipur (Raj.) INDIA
** Assistant Professor (Psychology) Mohanlal Sukhadia University, Udaipur (Raj.) INDIA

Abstract: Cancer is a life-affecting illness that not only affects the patients but also the caregivers who suffers emotionally, psychologically and economically. Social Support and Optimism are the psychological aspects that help caregivers to cope up with the various issues during caregiving phase. Social support prevents the caregivers from isolation and the burden of responsibilities and equips them with the resources. Optimism enables caregivers to seek hope amid chaotic times. **Objective:** the objective of the research is to measure the relationship between social support and optimism of caregivers of breast cancer patients. **Methodology:** Ninety caregivers of individuals with breast cancer were recruited for the study. Multidimensional Scale of Perceived Social Support (MSPSS) and Revised Life Orientation Test (LOT-R)were used to gather information of perceived social support and optimism. Sociodemographic data sheet was used to obtain various information related to caregivers and patients. The Pearson correlation coefficient was performed for data analysis. **Results:** The correlation coefficient (r) value between social support and optimism is 0.87 which indicates a strongpositive relationship between both variables. The P value is <0.01 which indicates a significant statistical relationship. **Conclusion:** It can be stated that level of perceived social support is associated with the level of optimism.
Keywords: Social Support, Optimism, Caregivers, Breast cancer.

Introduction - When a person faces problems in life, they need someone from whom they can seek support during that crucial time. Especially, in the time of physical illness individuals needs thedependency on the other person. Usually that person is among their family member or someone very close to them. This person is termed as caregiver. When a patient is suffering from chronic disease caregivers have to take accountability of a patient, that not only creates a burden on them,but it is a big toll on caregiver's mental and physical well-being too. Cancer is one of the chronic diseases. According to WHO "cancer is a large group of diseases characterized by uncontrolled growth of abnormal cells that can invade adjoining parts of the body and spread to other organs". There are many types of cancer that are common among people across the globe but breast, cervical, oral, lung and colorectal cancer are most found among them. In the present study breast cancer patient's caregivers are studied.

Breast Cancer: There are 2 major form of breast cancer- "invasive ductal carcinoma" and "invasive lobular carcinoma". First one in found in 70-80% cases and second one is detected in 10-15% cases. Breast cancer can be stratified in 5 stages. In stage 0, cells remain duct and not spread to surrounding tissue. "In stage 1, size of tumor is <2cm;" "in stage 1, size is 2-5 cm;" "in stage 2, size is 2-5 cm;" "in stage 3, tumor size is >5 cm;" "in stage 4, tumor spread out in distant body organs". The symptoms of breast cancer include swelling in the breast, bleeding or sudden release from nipple, itching and rash around the nipple and swelling on breast. The Cause of cancer includes aging (above 40), genetics, late menopause, menstruating before 12 years are and late menopause (above 55) etc.

Caregivers : Caregivers are persons who offers support and assistance to people who have physical or mental health conditions, disabilities or other needs that make it difficult for them to care for themselves. This can be rewarding and challenging but on all over this, it is an emotional distress, fatigue and burnout responsibility. This include helping with daily tasks, managing medical treatments, offering emotional support and more. The responsibility can be a burden to the caregivers who are already juggling with hectic schedule and responsibility.

Perceived Social Support: Perceived social support denotes to an entity's subjective faith that they have a reliable network of supportive relationships, feeling cared for, respected and having their social needs met, rather than the actual support received. Social support and social network play a vital role during caregiving period. It is a crucial factor that influences the wellbeing of both the caregivers and patients. When caregivers are provided

support by the family, friends, and healthcare professionals, they can easily manage their stress and provide effective care. The cancer patients who are provided with the strong social support they exhibit a greater emotional resilience, enhanced quality of life and improved treatment adherence.

Optimism: Optimism is a mindset characterized by a simple hope of positive occurrences and a belief in the possibility of a good future, often linked with increased levels of well-being and resilience. Optimism affects the living standards of life, psychological well-being and many aspects of life. It works as a buffer against stress and promoting positive coping mechanisms. A study revealed that quality of life is adversely related with caregiving burden and positively linked with optimism. Also, optimism predicts well-being and quality of life among caregivers (Ruisoto et al., 2019).

There is a need to understand the inter-relations between caregiving, perceived social support, and optimism because it is essential for developing the interventions that helps in enhancing the wellbeing of both caregivers and cancer patients.

Review of Literature

A study revealed that dense tumors, younger caretakers and support in patient's everyday activities are significantly linked with high caregiver burden (Ge & Mordiffi, 2017). Caregiver sometimes experience declined quality of life and face psychological problems. Wadhwa et al. (2013) stated that caregivers of advanced cancer patients have exhibit decreased quality of life and mental health associated with care-recipient's inferior physical and emotional well-being along with simultaneously assisting others and working outside the home. These studies show the value and importance of caregiver's research.

Goldstein et al. (2004) stated that greater level of burden is associated with limited social networks, more restricted daily activities and young age. Eom et al. (2013) revealed that decreased level of perceived social support is linked with increased level of depression and lower level of quality of life. Ong et al. (2018) stated that perceived social support mediates the association between caregiving burden and resilience. It is vital for medical experts, mainly professionals who communicate and provide facilities to support caregivers, to encourage and recognize helpful relative and friends' circle that can assist to interpret caregiving load.

Pinquart & Duberstein (2005) found a negative correlation between optimism and depressive symptoms. Psychological techniques also increase positive outlook towards future. Barakat & Ibrahim (2020) in a study explained that giving psycho-educational intervention promotes optimism among caregivers. Sometimes, journaling in positive ways also helps in remaining optimistic. Mackenzie et al. (2008) stated that expressive positive and future-focused writing improves caregiver's optimism and his outlook towards his present situation.

Objectives :

1. To assess the perceived social support and optimism among caregivers.
2. To study the relationship between perceived social support and optimism.

Hypothesis (H_1)

1. There is a relationship between perceived social support and optimism.

Methodology

Sample : The total of 90 participants using non-probability sampling were recruited. The inclusion criteria were 21-45 age, caregivers of breast cancer, at least literate, stage 2,3, and 4 of cancer. Exclusion criteria consisting mental illness and occurrence of stressful event within 6 months expect caregiving burden.

Measures:

1. The Multidimensional Scale of Perceived Social Support: The instrument evaluate the perception of individuals towards their social circle and network with three sub-measures including "family, friends and significant others". It was constructed by Zimet, Dahlem, Zimet and Farley in 1988. Each sub-scales consists four items and rated on 7-point Likert scale.
2. Life Orientation Test-Revised (LOT-R): It is an instrument constructed by Michael Scheier, Charles Carver, and Michaela Bridges in the year of 1994 to measure "dispositional optimism—the general expectation that good things will happen in the future". The LOT-R contains of ten items**: "**3 positive items", "3 negative items", "4 filler items" rated on 5-point Likert Scale.

Statistical Interpretation: Data was interpreted through SPSS software. The Descriptive analysis and correlations analysis was applied to find results.

Results: According to table no.1 caregiver's mean age is 36, majority of the caregivers are male (65.6%), 37.8 % caregivers are literate, married (78.9%), 41.1% caregivers are children of patients. Caregivers giving care from 3 month or less are 43.3% and stages 2,3 and 4 each consists 33% of caregivers. Table no. 2 shows the score of social support 52.92±19.95 which is moderate level and score of optimism 16.32±5.14 which show moderate level of optimism among caregivers of breast cancer. Table no. 3 shows significant positive strong correlation between social support and optimism (r-0.87, P<0.01).

Sociodemographic and Patients related Characteristics (Table no. 1)

		Mean	N %	Range	Standard Deviation	Number
Age		36	100.0%	57	14	
Gender	Male		65.6%			59
	Female		34.4%			31
Education	Literate		37.8%			34
	Matriculation		20.0%			18

	Post-Mat riculation		17.8%			16
	Graduate		24.4%			22
Marital Status	M		78.9%			71
	UM		21.1%			19
Relation with Patients	Spouse		28.9%			26
	Parents		0.0%			0
	Children		41.1%			37
	Sibling		6.7%			6
	Others		23.3%			21
Phase Of Treat ment	<3 months		43.3%			39
	<=6 months		28.9%			26
	<=1 year		13.3%			12
	>1 year		14.4%			13
Stage	2		33.3%			30
	3		33.3%			30
	4		33.3%			30

Mean Score and Standard Deviation of Perceived Social Support and Optimism among Caregivers (Table no.2)

	N	Range	Mini.	Maxi.	Mean	Std. Deviation
Optimism	90	16	6	22	16.32	5.136
Perceived Social Support	90	72	12	84	52.92	19.953

Correlation between Perceived Social Support and Optimism (Table no.3)

		Social Support	Optimism
Perceived Social Support	Pearson Correlation	1	.872**
	Sig. (2-tailed)		.000
	N	90	90
Optimism	Pearson Correlation	.872**	1
	Sig. (2-tailed)	.000	
	N	90	90

**. Correlation is significant at the 0.01 level (2-tailed).

Discussion: The current research sought to investigate the correlation between perceived social support and optimism in caregivers of the breast cancer patients. The result indicated a strong positive correlation (r=0.872) between the two variables. These findings suggest that the caregivers who feels they receive more levels of social support generally showsmore optimism. This research is consistent with the findings of Tras et al. (2021) which indicated a positive relationship between perceived social support and optimism. Perceived social support and optimism are predictors of life satisfaction and resilience and less emotional distress (Yalcin, 2011; Sabouripour and Roslan, 2015; Trunzo and Pinto, 2003). The strong correlation value suggests that perceived social support significantly influences the caregiver's optimism. This could be due to caregivers obtaining emotional, informational, and practical support from family, friends, and healthcare providers, which enhances their sense of hope and resilience. When caregivers receivesupport, they are more inclined to keep a positive outlook, adjust to the challenges and, deliver improve care to the patient.Insufficient support can resultin heightened stress, emotional exhaustion and a decline in overall health. Optimism affects the stress level and coping directly or indirectly by affecting available social support (Daugall et al., 2001).

Social support and optimism are important factors to lessen the caregiving burden (Hou & Chen, 2024). Higher perceived social support is correlated with increased quality of life and lesser caregiving burden (Nightingale et al., 2016). Shiba et al. (2016) found that informal social support from the family members and relatives is related with lesser caregiving burden. Diaz et al. (2020) stated that optimism is a key factor that affects perceived subjective burden and perceived social support. Optimism is positively correlated with Quality of life and negatively linked with caregiving burden (Rusioto et al.,2019).

Sociodemographic characteristics plays vital role in level of perceived social support and optimism. There are majority of caregivers were males in the study. A study among caregiver found that male caregivers had lesser perceived social support than the female caregivers (Hernandez-Padilla et al., 2021). 41.1% of caregiver were children of patients and their average age was 36. Heinze et al. (2015) stated that younger age cohorts seek support from family member and relative as their main source of support. Whereas older groups consider their friends and communities as a major source of support. 78.9% caregiver were married. A study conducted on the age group of 20-30 years old adults revealed that single individual has lower support from their own significant other and but has higher support from families compared to person who are in relationships (Adamczyk & Segrin, 2015).

There are also many studies explains the relationship between optimism and sociodemographic levels. A study conducted on two age groups (25-30year old and 45–50-year-old) and among male-females. It was found that 25–30-year age cohort had greater optimism level and females had higher level of optimism (Mishra, 2013). Ben-Zur et al. (2012) stated that married people are more optimistic than single individuals including divorced and widowed. However, studies related to sociodemographic characteristics varies according to cultures.

Conclusion: It can be established that level of perceived social support and optimism among caregivers of breast cancer is on moderated level. The association between perceived social support and optimism is significant. The hypothesis is also accepted. The sociodemographic characteristics were also explained to evaluate the results better.

Implications: As the study shows the positive strong correlation between perceived social support and optimism:

1. There should be the enhancement of the social support networks which can improve caregiver's emotional resilience.
2. The integration of mental health interventions like

counselling and support group with the cancer care programs can be done to address the caregiver stress and promote positive coping mechanisms.
3. There can be an online and community-based support networks which helps in providing accessible emotional and informational assistance particularly for the caregivers who are struggling with the isolation.
4. Medical professionals should also be trained to help and guide the caregivers.
5. Healthcare providers should be trained to play a proactive role in fostering the optimism by offering reassurances, clear communication and resources to caregivers.

Limitations:

1. In the conducted research, the age group was limited to 21–40-year-old. In future studies older age group can be considered.
2. The research focused particularly on caregivers of breast cancer. Other specific forms of cancer patients' caregivers should be studied specifically.
3. This study was conducted on a sample of 90 caregivers which are limiting the generalizability of findings to larger or more diverse caregiver populations.
4. The study focuses on perceived social support and optimism, without considering other psychological variables like stress, anxiety and other coping strategies.
5. The data collection method relied on self-reported perceptions, which are influenced by the social desirability bias or the emotional state at the tome of the survey. The studies could have qualitative interviews or observational methods to complement the self-reported data.

Suggestion:

1. The further studies can implement and evaluate the support-based interventions like caregiver training programs or psychological counselling, which will help to assess the structure support which improves optimism.
2. There can be a comparative study between caregivers of different patient groups which will provide a broader understanding of caregiving challenges.
3. There can be longitudinal research in which there can be a tracking of the caregivers over an extended period which will provide an insight how perceived social support and optimism differ throughout the different stages of the caregiving experiences.

References:-

1. Adamczyk, K., & Segrin, C. (2015). Direct and indirect effects of young adults' relationship status on life satisfaction through loneliness and perceived social support. *Psychologica Belgica*, *55*(4), 196.
2. Ben-Zur, H. (2012). Loneliness, optimism, and well-being among married, divorced, and widowed individuals. *The Journal of Psychology*, *146*(1-2), 23-36.
3. Díaz, A., Ponsoda, J. M., & Beleña, A. (2020). Optimism as a key to improving mental health in family caregivers of people living with Alzheimer's disease. *Aging & mental health*, *24*(10), 1662-1670.
4. Dougall, A. L., Hyman, K. B., Hayward, M. C., McFeeley, S., & Baum, A. (2001). Optimism and traumatic stress: The importance of social support and coping 1. *Journal of Applied Social Psychology*, *31*(2), 223-245.
5. Eom, C. S., Shin, D. W., Kim, S. Y., Yang, H. K., Jo, H. S., Kweon, S. S., ... & Park, J. H. (2013). Impact of perceived social support on the mental health and health related quality of life in cancer patients: results from a nationwide, multicenter survey in South Korea. *Psycho Oncology*, *22*(6), 1283-1290.
6. Ge, L., & Mordiffi, S. Z. (2017). Factors associated with higher caregiver burden among family caregivers of elderly cancer patients: a systematic review. *Cancer nursing*, *40*(6), 471-478.
7. Goldstein, N. E., Concato, J., Fried, T. R., Kasl, S. V., Johnson-Hurzeler, R., & Bradley, E. H. (2004). Factors associated with caregiver burden among caregivers of terminally ill patients with cancer. *Journal of palliative care*, *20*(1), 38-43.
8. Hafez Afefe Barakat, A., & Mohammed Ibrahim, Z. (2020). Psycho-educational Intervention: Its effect on the psychological distress and optimism among family caregivers of patients with bipolar disorder. *Egyptian Journal of Health Care*, *11*(4), 1106-1118.
9. Heinze, J. E., Kruger, D. J., Reischl, T. M., Cupal, S., & Zimmerman, M. A. (2015). Relationships among disease, social support, and perceived health: a lifespan approach. *American journal of community psychology*, *56*, 268-279.
10. Hernández Padilla, J. M., Ruiz Fernández, M. D., Granero Molina, J., Ortíz Amo, R., López Rodríguez, M. M., & Fernández Sola, C. (2021). Perceived health, caregiver overload and perceived social support in family caregivers of patients with Alzheimer's: Gender differences. *Health & social care in the community*, *29*(4), 1001-1009.
11. Hou, C. H., & Chen, P. L. (2024). Optimism, Social Support, and Caregiving Burden among the Long-Term Caregivers: The Mediating Effect of Psychological Resilience. *International Journal of Mental Health Promotion*, *26*(9).
12. Mackenzie, C. S., Wiprzycka, U. J., Hasher, L., & Goldstein, D. (2008). Seeing the glass half full: Optimistic expressive writing improves mental health among chronically stressed caregivers. *British journal of health psychology*, *13*(1), 73-76.
13. Mishra, K. K. (2013). Gender and age related differences in optimism and good life. *Indian Journal*

of Social Science Researches, *10*(1), 9-17.

14. Nightingale, C. L., Curbow, B. A., Wingard, J. R., Pereira, D. B., & Carnaby, G. D. (2016). Burden, quality of life, and social support in caregivers of patients undergoing radiotherapy for head and neck cancer: A pilot study. *Chronic illness*, *12*(3), 236-245.
15. Ong, H. L., Vaingankar, J. A., Abdin, E., Sambasivam, R., Fauziana, R., Tan, M. E., ... & Subramaniam, M. (2018). Resilience and burden in caregivers of older adults: moderating and mediating effects of perceived social support. *BMC psychiatry*, *18*, 1-9.
16. Pinquart, M., & Duberstein, P. R. (2005). Optimism, pessimism, and depressive symptoms in spouses of lung cancer patients. *Psychology & Health*, *20*(5), 565-578.
17. Ruisoto, P., Contador, I., Fernández-Calvo, B., Palenzuela, D., & Ramos, F. (2019). Exploring the association between optimism and quality of life among informal caregivers of persons with dementia. *International psychogeriatrics*, *31*(3), 309-315.
18. Ruisoto, P., Contador, I., Fernández-Calvo, B., Palenzuela, D., & Ramos, F. (2019). Exploring the association between optimism and quality of life among informal caregivers of persons with dementia. *International psychogeriatrics*, *31*(3), 309-315.
19. Sabouripour, F., & Roslan, S. B. (2015). Resilience, optimism and social support among international students. *Asian Social Science*, *11*(15), 159.
20. Shiba, K., Kondo, N., & Kondo, K. (2016). Informal and formal social support and caregiver burden: The AGES caregiver survey. *Journal of epidemiology*, *26*(12), 622-628.
21. Tras, Z., SUNBUL, M. G., & Baltaci, U. B. (2021). Investigation of the relationships between optimism, perceived social support, and hope. *ie: inquiry in education*, *13*(1), 11.
22. Trunzo, J. J., & Pinto, B. M. (2003). Social support as a mediator of optimism and distress in breast cancer survivors. *Journal of consulting and clinical psychology*, *71*(4), 805.
23. Wadhwa, D., Burman, D., Swami, N., Rodin, G., Lo, C., & Zimmermann, C. (2013). Quality of life and mental health in caregivers of outpatients with advanced cancer. *Psycho oncology*, *22*(2), 403-410.
24. Yalçýn, Ý. (2011). Social support and optimism as predictors of life satisfaction of college students. *International Journal for the Advancement of Counselling*, *33*, 79-87.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

इतिहास के आइने में भारतीय ज्ञान प्रणाली

डॉ. खुमेश सिंह ठाकुर* डॉ. जी. एल. मालवीय**

* सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) सुभद्रा शर्मा शासकीय कन्या महाविद्यालय, गंजबासौदा, जिला- विदिशा (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) सुभद्रा शर्मा शासकीय कन्या महाविद्यालय, गंजबासौदा, जिला- विदिशा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनरूद्धार और अनुकूलन राष्ट्र की समद्ध बौद्धिक विरासत को संरक्षित करने के साथ-साथ इसे आधुनिक समाज की मांगों के साथ सरेखित करने के लिए महत्वपूर्ण है। ऐतिहासिक रूप से भारत दार्शनिक विचारधाराओं का अग्रणी रहा है जिसकी समद्ध परम्पराओं की व्यापता प्राचीन से लेकर समकालीन समय तक है। इसमें वेद, उपनिषद, सांख्य, योग, मीमांसा और साथ ही जैन धर्म और बौद्ध धर्म शामिल है जिसकी परिणिति भक्ति दार्शनिक पराम्परा और आधुनिक काल में स्वामी विवेकानन्द जैसे आधुनिक विचारकों के योगदान में हुई है। इन शिक्षाओं के केन्द्र में मानव आत्म-सुधार आत्म-खोज यात्रा के विभिन्न मार्ग और एक दैवीय संबंध की खोज का चिंतन निहित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने एक व्यापक रूपरेखा प्रदान की है जो शैक्षिक पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शामिल करने को प्रोत्साहित करती है, जो सीखने के लिए एक समग्र और समावेशी दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में इसके महत्व पर प्रकाश डालती है। वर्तमान परिपेक्ष्य में यह सर्वोपरि है कि भारतीय अपने अस्तित्व की प्राप्ति के लिए खुद को मन के उपनिवेशवाद से मुक्त करे। इस उद्देश्य पूर्ति के लिए भारतीय ज्ञान पराम्परा का पालन करना महत्वपूर्ण है जिसमें आत्म-ज्ञान के लिए सभी आवश्यक तत्व शामिल है और यह मानव जीवन और अनुभव के हर पहलू का समाधान प्रदान करती है।

प्रस्तावना – प्राचीन सिंधु घाटी की सभ्यता से लेकर आज तक भारत की बौद्धिक परंपराओं में जिज्ञासा परीक्षण और अन्वेषण की भावना आ रही है सदियों से भारतीय विद्वान वैज्ञानिक और दार्शनिक नवाचार के मामले में सबसे आगे रहे हैं और मानव ज्ञान तथा समझ की सीमाओं को आगे बढाते रहे हैं **'भारतीय ज्ञान'** काफी हद तक परंपरा पर आधारित है। मानव सभ्यता की उदय से ही परंपराएं पीढ़ी दर पीढ़ी निरंतर रूप से आगे बढ़ती रही, जो भारतीय सभ्यता को दुनिया की सबसे पुरानी जीवित सभ्यता बनती हैं। साथ ही परंपराओं में सुधार भी होते रहे हैं और **'भारतीय ज्ञान'** विकसित होता रहा है। भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनरुद्धार और अनुकूलन राष्ट्र की समृद्ध बौद्धिक विरासत को संरक्षित करने के साथ-साथ ऐसे आधुनिक समाज की मांगों के साथ संरक्षित करने के लिए महत्वपूर्ण है जो सीखने के लिए एक समग्र और समावेशी दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में इसके महत्व पर प्रकाश डालती हैं।

भारत 'ज्ञान भूमि' शब्द का साक्षात उदाहरण है। यह पहचान न केवल उल्लेखनीय कलाओं, वस्तुकला, खगोल विज्ञान, विज्ञान, चिकित्सा (आयुर्वेद), भाषण, साहित्य, दर्शन और इंजीनियरिंग के उद्भव और प्रसार से स्थापित होती हैं बल्कि वैदिक साहित्य, वेद, उपनिषद और उपवेद जैसे विशिष्ट प्रणालियों और ज्ञान ग्रन्थों की विद्यमानता से भी होती है जिन्होंने प्राचीन काल से लेकर आज तक भारत का मार्गदर्शन किया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान के व्यवस्थित संचरण को दर्शाती है। इस बात को रेखांकित करना जरूरी है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली महज एक परंपरा के बजे एक व्यवस्थित संरचना है और ज्ञान हस्तांतरण की प्रक्रिया है।

भारतीय ज्ञान शुद्ध के साथ कुछ अनोखा है जो जो प्राचीन काल से भारतीय उपमहाद्वीप में ज्ञान के निरंतर प्रवाह को दर्शाता है। अनूठी विशेषता यह है कि 'भारतीय ज्ञान' का उद्देश्य व्यक्ति के समग्र विकास के लिए उसे भौतिकवादी और आध्यात्मिक जीवन के लिए योग्य बनाना है विष्णु पुराण कहता है 'सा विद्या या विमुक्ताये' इस प्रकार ज्ञान का उद्देश्य मुक्ति (दुख और बंधन से) के रूप में परिभाषित किया गया है। ईषावास्योपनिषद में आध्यात्मिक ज्ञान को विद्या और भौतिक ज्ञान को अविद्या कहा गया है। मण्डक उपनिषद में विद्या 'पराविद्या' और अविद्या को 'अपरा विद्या' कहा गया है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली ने अध्ययन शैलियों की एक विस्तृत श्रृंखला के माध्यम से जीवन, समाज और ब्रह्मांड को समझने के लिए व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किए हैं। आयुर्वेद और योग से लेकर वेदांत और न्याय की दार्शनिक अंतर्दृष्टि तक भारतीय ज्ञान प्रणाली स्थायित्व और सद्भाव में निहित बहुलवधि परंपरा का उदाहरण है भारतीय ज्ञान प्रणाली का अध्ययन करने का उद्देश्य जिज्ञासा और प्रश्न पूछने के वैकल्पिक तरीकों के प्रति व्यक्तियों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाना है इसका उद्देश्य ज्ञान के बारे में दृष्टिकोण को बदलना और वैज्ञानिक विचारधारा की संरचना को नया रूप देना है। मूलभूत रूप से इसका उद्देश्य ज्ञान परंपराओं के बारे में चिंतन की लिए एक वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करना है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि – प्राचीन काल से ही भारत के कई सत्ताओं का सामना किया है जिन्होंने इसकी समृद्ध अर्थव्यवस्था का दोहन करने और इसके समृद्ध सांस्कृतिक मूल्यों, दार्शनिक परंपराओं और मान्यताओं को खंडित करने की कोशिश की है। प्राचीन काल से लेकर मध्यकालीन और आधुनिक काल तक के युगों में भारत ने अपनी ज्ञान व्यवस्थाओं, सांस्कृतिक विरासत और मूल्य प्रणालियों को सफलतापूर्वक संरक्षित किया है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली में प्रलेखित ज्ञान के क्षेत्र में वेद ज्ञान के सबसे पुराने ग्रंथ हैं। संस्कृत में वेद का अर्थ है 'ज्ञान'। इस प्रकार आदर्श रूप से

कोई भी ज्ञान वेद का ही एक हिस्सा है। हालांकि, विद्वानों की दृष्टि से वेद के ज्ञान को चार वेदों– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अर्थववेद के रूप में प्रलेखित किया गया है। चार उपवेद भी है– आयुर्वेद (चिकित्सा का अध्ययन) गंधर्ववेद (प्रदर्शन कलाओं का अध्ययन) धनुर्वेद (धनुर्विद्या और युद्ध का अध्ययन) और शिल्पवेद (वास्तुकला का अध्ययन)। वेदों में दार्शनिक और व्यवहारिक ज्ञान दोनों शामिल है। उपनिषद् दार्षनिक शिक्षाओं का ध्यान केंद्रित करते है। वेदों की अवधारणा को सरल भाषा में समझाने के लिए पुराण लिखे गए हैं। इनकी पांच विशेषताएं हैं, जैसे ब्राह्मण की रचना, उनका विनाश और जीर्णोद्धार, देवताओं और कुलपिताओं की वंशावली मनु के शासनकाल जिन्हें मन्वंतर कहा जाता है, और राजाओं की जाति का इतिहास। वैदिक परंपरा से 18 पुराण और 18 उपपुराण और जैन परंपरा के तीन पुराण है।

भारतीय दर्शन के अभिन्न अंग उपनिषद् मानसिक और शारीरिक अवस्थाओं से भिन्न आत्म के सार की खोज करते हैं। वे दो मार्ग प्रस्तुत करते हैंरू निवृत्ति (अनासक्त आत्मज्ञान) और प्रवृति (सहज क्रिया) अद्वैत वेदांत जो अपने अद्वैतवाद के लिए जाना जाता है, जो मानता है कि आत्मा और ब्रह्म एक समान है और अनुभवजन्य दुनिया माया (भ्रम) के रूप में है। इसी तरह भट्ट मीमांसा 'आत्मा' की परिवर्तनकारी लेकिन शाश्वत प्रकृति की खोज करती है जैन धर्म में जीव और अजीव का द्वैतवाद और बौद्ध धर्म में कर्म और पुनर्जन्म के नैतिक उत्तारदायित्व को मानते हुए स्थायी 'स्व' को अस्वीकार किया जाता है।

मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन ने भक्ति में निहित एक दार्षनिक परिवर्तन को विशिष्ट रूप दिया और समानता पर जोर दिया। दक्षिण भारत (7वीं–12वीं शताब्दी) और उत्तरी क्षेत्रों (12वीं–17वीं शताब्दी) तक इसका प्रसार था। श्री चेतन्य महाप्रभु, श्री तुलसीदास, श्री कबीर, और श्री नानक जैसे संतों ने शगुण और निर्गुण परंपराओं के माध्यम से ईश्वर के प्रति एक निष्ट भक्ति और प्रेम को बढ़ावा दिया और भक्ति–आस्था के माध्यम से मुक्ति की राह दिखाई। इस आंदोलन ने स्थानीय भाषाओं और सार्वभौमिक भाईचारे के महत्व को रेखांकित किया।

आधुनिक काल में स्वामी विवेकानंद, श्री अरविंदो और सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे समकालीन दार्शनिकों ने भारतीय ज्ञान परंपरा के सार को महत्वपूर्ण रूप से रेखांकित किया। विवेकानंद ने तर्कसंगतता, शिक्षा और सार्वभौम धर्म के सिद्धांतों पर बोल दिया जिसे वे 'मानवतावाद' के रूप में परिभाषित करते हैं। इसके अलावा वे सत्य और सेवा के मूल्यों को जीवन के मूल सिद्धांतों के रूप में देखते हैं। विवेकानंद की दार्षनिक संरचना इस विचार पर आधारित है कि प्रत्येक आत्मा में अंतर्निहित देवत्व होता है जिसे आत्म प्रयास, अनुशासित प्रशिक्षण और उचित शैक्षिक मार्गदर्शन के माध्यम से अनुभव किया जाता है। सर्वपल्ली राधाकृष्णन का दर्शन अद्वैत वेदांत में निहित है जो भारतीय दर्शन की एक और गैर–द्वेतवादी परंपरा है। इसी तरह सर अरविंदो के दार्शनिक विचार आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रकृतिवाद और व्यावहारिकता के संश्लेषण को प्रस्तावित करता है उनका तर्क है कि आध्यात्मिकता, रचनात्मकता और बौद्धिकता एक स्वस्थ व्यक्ति के विकास के लिए आवश्यक घटक है।

इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली एक गतिशील और विकासशील सांस्कृतिक संरचना और परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है जिसने अपने मूल विचारों और सिद्धांतों को बनाए रखते हुए सतत रूप से विभिन्न ऐतिहासिक कालों के लिए स्वयं को ढाला है। इसके घटक चित्त, शरीर और आत्मा के बीच आवश्यक संबंधों को रेखांकित करते हैं। यह प्रणाली सांस्कृतिक पहचान को मान्यता देती है और संरक्षित करती है, अंतर– सांस्कृतिक संचार को बढ़ावा देती है और विभिन्न क्षेत्रों में वैश्विक दृष्टिकोणों को समृद्ध करती है जो भौतिक और आध्यात्मिक कल्याण की खोज को शामिल करता है और सभी तत्वों की परस्पर निर्भरता को स्वीकारता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली वर्तमान परिपेक्ष्य में – औपनिवेशिक शासन के प्रारंभ से ही भारतीय ज्ञान परंपराओं को जानबूझकर हाशिए पर डाल दिया गया। मैकाले के 'मिनट ऑन एजुकेशन' 1835 में वर्णित औपनिवेशिक शिक्षा नीतियों ने स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को न्यूरोसेंट्रिक (पश्चिमीकरण) प्रतिमानों से बदलने का प्रयास किया जिससे भारतीयों की कई पीढ़ियां अपनी बौद्धिक विरासत से दूर हो गई। आधुनिक काल में उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया वैश्विक स्तर पर विभिन्न उपनिवेशवादियों और औपनिवेशित आबादी के बीच भिन्नताओं को दशति हुए कई सार्वभौमिक चरणों और मौलिक सिद्धांतों को शामिल करने के रूप में व्यापक रूप से जाने जाती है। इन सिद्धांतों में भूमि और संसाधन का विनियोग, औपनिवेशिक उद्यमों के लिए खेती और स्वदेशी सांस्कृतियों और परंपराओं का योजनाबद्ध रूप से विघटन शामिल है। जब औपनिवेशिक ताकतों ने भारतीय क्षेत्रों को अधीन किया तो उन्होंने न केवल भारत की अर्थव्यवस्था को तबाह कर दिया बल्कि शिक्षा प्रणाली परंपराओं, प्रशासन, वास्तुकला और सांस्कृतिक परिपाटियों में हस्तक्षेप सहित विभिन्न तरीकों से भारतीय आबादी पर औपनिवेशिक मानसिकता भी थोपी। जिसका सबसे गंभीर प्रभाव चेतना के दायरे में हुआ।

उपनिवेशीकरण से मुक्त होने से में स्वदेशी ज्ञान के महत्व को बहाल करना शामिल है। चेतना को समझने और सत्य को जानने के साधन के रूप में भारतीय दर्शन मन (मानस) को बहुत महत्व देता है स्वयं (आत्मा) को समझना व्यक्तित्व कल्याण (सुख) और परम मुक्ति (मोक्ष) को बढ़ावा देता है। सांख्य, न्याय और वेदांत जैसी भारतीय परंपराएं नैतिकता और अस्तित्व समझने के लिए और रूपरेखा प्रदान करती है जो मन, शरीर और आत्मा के बीच परस्पर क्रिया पर जोर देती है। भारतीय दर्शन की खोज जीवन के संतापों का निवारण और दुख (संसार) से मुक्ति पाने से उत्पन्न हुई है। चार्वक भौतिकवादियों को छोड़कर अधिकांश विचारधाराओं ने सच्चे आत्म के बारे में अज्ञानता को दूर कर मुक्ति (मोक्ष या निर्माण) प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित किया है।

वर्तमान समय में जब भारत अपनी प्राचीन विरासत के अनुरूप वैश्विक मंच पर अपनी मौजूदगी पुन: स्थापित करने प्रयास कर रहा है तो भारतीय जनता के लिए यह जरूरी है कि वह औपनिवेशिक मानसिक अधीनता के अवशेषों से खुद को मुक्त करें और अपनी सांस्कृतिक जड़ों से फिर से जुड़े। ऐतिहासिक रूप से भारत दार्शनिक विचारधाराओं का अग्रणी रहा है जिसकी समृद्ध परंपराओं की व्याप्तता प्राचीन से लेकर समकालीन समय तक है, इसमें वेद, उपनिषद, साख्य, योग, मीमांसा और साथ ही जैन धर्म और बौद्ध धर्म शामिल है जिसकी परिणिति भक्ति दार्शनिक परंपरा और आधुनिक काल में स्वामी विवेकानंद, श्री अरविंदो, सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे आधुनिक विचारकों के योगदान से हुई है। इन शिक्षाओं के केंद्र में मानव आत्म–सुधार, आत्मा–खोज, यात्रा के विभिन्न मार्ग और देवीय संबंध की खोज का चिंतन निहित है।

दार्शनिक परम्पराएं दु:ख से मुक्ति और अस्तित्व के सच्चे अर्थ की

अवधारणाओं से जुड़ी हुई है। इन दार्शनिक आयामें के साथ-साथ भारतीय ज्ञान परम्परा ने सभी के लिए संधारणीयता और समानता पर सतत रूप से जोर दिया है। इसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं पर चिंतन भी शामिल है, जिसमें पर्यावरण संरक्षण भी शामिल है प्रत्येक गांव के जंगलों और पेड़ों के प्रबंधन में औषधीय पौधों, ईंधन की लकड़ी और निर्माण सामग्री की स्थायी तौर पर कटाई के लिए एक कुशल कार्य प्रणाली शामिल थी जो उनके प्राकृतिक रूप से नवीनीकरण की गति के अनुरूप थी भारत की स्वदेशी शिक्षा प्रणाली और कौशल विकास पद्धतियों से कई स्वदेशी भारतीय उद्योग धंधे फले-फूल और भारत में निर्मित सामान को दुनिया भर में सराहनीय महत्व दिया गया। इन भारतीय ज्ञान प्रणालियों के ऐतिहासिक महत्व का मूल्यांकन उनके आर्थिक मूल्य के संबंध में उस समय करना आवश्यक है जब उनके महत्व की तुलना आज के उच्च तकनीक उद्योग से की जा सकती है। 5वीं शताब्दी में फले-फूले महान गणितज्ञ और खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने गणित और खगोल विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। शून्य एवं दशमलव प्रणाली पर उनके अग्रणी कार्यो ने इन विषयों में महत्वपूर्ण प्रगति की नींव रखी। आर्यभट्ट ने यह क्रांतिकारी विचार भी प्रस्तुत किया कि पृथ्वी अपनी दूरी पर घूमती है, जो उनके समय से बहुत आगे की अवधारणा है। प्रसिद्ध संस्कृत व्याकरणविद पाणिनि ने अष्टाध्यायी विकसित की, जो भाषा विज्ञान पर एक व्यापक ग्रंथ है और अपनी गहराई तथा परिष्कार में अद्वितीय है। पतंजलि के योग सूत्र जो दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के हैं, शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण की खोज में दुनिया भर के लाखों लोगों को प्रेरित करते हैं और उनका मार्गदर्शन करते रहे हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में, आयुर्वेद की प्राचीन भारतीय प्रणाली को स्वास्थ्य और कल्याण के लिए इसके समग्र दृष्टिकोण के वास्ते विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा मान्यता दी गई है। आयुर्वेद पर दो मौलिक ग्रंथ चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में मानव शरीर रचना विज्ञान, शरीर विज्ञान और औषध विज्ञान के बारे में बहुमूल्य ग्रंथ है। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, नवाचार और उत्कृष्टता के उदाहरणों से भरी पड़ी है। प्राचीन भारतीय के जटिल धातु विज्ञान से लेकर जंतर-मंतर वैधशालाओं के परिष्कृत खगोल विज्ञान तक, विज्ञान प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित की दुनिया में भारत के योगदान को नकारा नहीं जा सकता।

भारतीय ज्ञान प्रणाली- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 - भारत सरकार ने भारत की ज्ञान प्रणालियों को बढ़ावा देने और संरक्षित करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं, जिससे गर्व और सांस्कृतिक प्रशंसा की भावना फिर से जागृत हुई है। पुरावशेषों के प्रत्यावर्तन ने इस पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसमें अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और ब्रिटेन जैसे देशों से उल्लेखनीय वापसी हुई है। इन प्रयासों ने न केवल भारत की खोई हुई विरासत को पुन: प्राप्त करने में मदद की है, बल्कि देश की प्राचीन संस्कृति पर नए सिरे से गर्व भी जताया हैं। इसके अलावा, कई आईआईटी में भारतीय ज्ञान प्रणालियों के लिए उत्कृष्टता केन्द्रों की स्थापना एक दूरगामी पहल है जिसका उद्देश्य आयुर्वेद, योग पारंपरिक भारतीय गणित जैसे क्षेत्रों में अंत: विषय अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना है। ये पहल हमारी समृद्ध बौद्धिक विरासत के साथ गहरा संबंध बढ़ा रही है और सांस्कृतिक गौरव तथा नवाचार के एक नए युग को प्रेरित कर रही है।

आयुर्वेदिक, योग और अन्य पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों को बढ़ावा देने की सरकार की पहलों ने भी प्रभावशाली परिणाम दिए हैं। अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान की स्थापना ने इन प्राचीन चिकित्सा प्रणालियों को मानकीकृत वह लोकप्रिय बनाने में मदद की है। इसके अतिरिक्त 9 नवंबर 2014 को आयुष मंत्रालय की स्थापना ने पारंपरिक भारतीय चिकित्सा प्रणाली को काफी बढ़ावा दिया है। मंत्रालय ने आयुर्वेद, योग प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध तथा होम्योपैथी चिकित्सा पद्धतियों को मानकीकृत और लोकप्रिय बनाया है, जिससे मुख्य धारा की स्वास्थ्य सेवा में उनकी अधिक स्वीकृति हुई है और उन्हें उसमें शामिल किया गया है। इसके अलावा, योग को वैश्विक मंच पर ले जाने के सरकार के प्रयासों के भी लाभकारी परिणाम सामने आए हैं, संयुक्त राष्ट्र ने 2014 में 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित किया, जो कल्याण और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में भारत की स्थायी विरासत का प्रमाण है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनरुद्धार और अनुकूलन राष्ट्र समृद्ध बौद्धिक विरासत को संरक्षित करने और इसे आधुनिक समाज की मांगों के साथ सरेखित करने के लिए महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने एक व्यापक रूपरेखा प्रदान की है जो शैक्षिक पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शामिल करने को प्रोत्साहित करती है, सीखने के लिए एक समग्र और समावेशी दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में इसके महत्व पर प्रकाश डालती हैं। यह नीति पारम्परिक ज्ञान को समकालीन वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के साथ एकीकृत करने का अनूठा अवसर प्रदान करती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता सुनिश्चित करने के लिए, यह आवश्यक है कि शैक्षणिक संस्थान प्राचीन ज्ञान प्रणालियों को वर्तमान चुनौतियों का सामना करने के तरीकों से अनुकूलित करने के लिए विद्वानों और चिकित्सकों के साथ सहयोग करें। पुनरुद्धार की प्रक्रिया सैद्धांतिक चर्चाओं से आगे बढ़नी चाहिए और इसमें ज्ञान के विशाल भंडार को प्रलेखित (दस्तावेजित) करने और संरक्षित करने के लिए व्यावहारिक प्रयास शामिल होने चाहिए जो विभिन्न रूपों, जैसे कि ग्रंथ, मौखिक परम्पराएं, अनुष्ठान और स्थानीय प्रथाएं है। इस ज्ञान को सूचीबद्ध करने और इसे भावी पीढ़ियों के लिए सुलभ बनाने के लिए महत्वपूर्ण शोध किए जाने चाहिए। इसके अलावा, यह पता लगाने के लिए की अंतर विषयी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिससे भारतीय ज्ञान प्रणाली सम्पोषणीय विकास, स्वास्थ्य सेवा, कृषि और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्र में कैसे योगदान दे सकता है।

भारतीय ज्ञान मीमांसा संरचना में आत्म-अस्तित्व की धारणा ने अपना सर्वोच्च महत्व बनाएं रखा है। आज के वैश्विक युग में यह समझना आवश्यक है कि पूरी दुनिया में सूचनाओं की बाढ़ आई हुई है लेकिन ज्ञान की कमी है। दुनिया एक भ्रम का रूप ले रही है परिणामवश हम पर्यावरणीय मुद्दों, जलवायु परिवर्तन, भूख और महामारी जैसी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं और हम जो कुछ भी हासिल करते हैं वह अक्सर मानव जीवन की कीमत पर होता है। भारत की दार्शनिक विचारधारा में पर्यावरण को जड़ ना मानकर क्रियाशील एवं जुड़ी हुई व्यवस्था माना जाता है, जहां मानव अन्य प्रणालियों के साथ मिलकर रहते हैं। प्रकृति के अस्तित्व को पवित्र तथा पूजनीय समझा जाता है। भारतीय ज्ञान संस्कृति में, गुरु-शिष्य परम्परा एक प्राचीन परंपरा है जिसमें गुरु शिष्य को ज्ञान प्रदान करता है और इसकी जड़े वैदिक काल से हैं ऋग्वेद में गुरु को 'आत्मज्ञान का स्रोत और प्रेरक व्यक्तिगत विकास की आधारशिला' के रूप में वर्णित किया गया है। गुरु और उसके शिष्य के बीच का रिश्ता एक मां और उसके अजन्मे बच्चों के बीच के रिश्ते जैसा होता है। वैदिक काल के अंत में एक विशिष्ट प्रकार का साहित्य विकसित हुआ जिसे

सूत्र कहा जाता है। यह साहित्य वेदों से विशेष रूप से वेदांगो से गहराई से जुड़ा हुआ है। छह वेदांग है: शिक्षा, व्याकरण, छंद, निरुक्त, कल्प और ज्योतिष। इस परिपेक्ष्य में अपनी जड़ों को स्वीकार करना और विश्व का मार्गदर्शन करना महत्वपूर्ण है जैसा कि भारत ने प्राचीन काल से परम्परागत रूप से किया है। इसलिए इन बदलते समय में यह सर्वोपरि है कि भारतीय अपने अस्तित्व की प्राप्ति के लिए खुद को मन से उपनिवेशवाद से मुक्त करें।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान प्रणाली को उपनिवेशीकरण से मुक्त करने की प्रक्रिया में– भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनरुद्धार और अनुकूलन राष्ट्र समद्ध बौद्धिक विरासत को संरक्षित करने के साथ-साथ इसे आधुनिक समाज की मांगों के साथ संरेखित करने के लिए महत्वपूर्ण है। भारतीय ज्ञान प्रणाली महज एक परंपरा के बजाय एक व्यवस्थित संरचना है और ज्ञान हस्तांतरण की प्रक्रिया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली ने अध्ययन शैलियों की एक विस्तृत श्रृंखला के माध्यम से जीवन, समाज और ब्रह्मण को समझने के लिए व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किए हैं। भारत 'ज्ञान-भूमि' शुद्ध का साक्षात उदाहरण है। यह पहचान न केवल उल्लेखनीय कलाओं, वास्तुकला, खगोल विज्ञान, चिकित्सा (आयुर्वेद) भाषाओं, साहित्य दर्शन और इंजीनियरिंग के प्रसार और उद्भव से स्थापित होती है, बल्कि वैदिक साहित्य वेद उपनिषद और उपवेद जैसे ज्ञानग्रन्थों और विशिष्ट प्रणालियों को विद्यमानता से भी होती है। जिन्होंने प्राचीन काल से लेकर आज तक भारत का मार्गदर्शन किया है। भारत बौद्धिक परम्पराओं में जिज्ञासा, परीक्षण और अन्वेषण की भावना रही है, सदियों से भारतीय विद्वान वैज्ञानिक और दार्शनिक नवाचार के मामले में सबसे आगे रहे हैं और मानव ज्ञान तथा समझ की सीमाओं को आगे बढ़ाते रहे है, जो भारत की ज्ञान प्रणालियों के महत्व और देश की वृद्धि एवं विकास में योगदान करने की क्षमता पर प्रकाश डालता है। जैसे-जैसे हम अपनी समृद्ध बौद्धिक विरासत के खजाने को खोलते हैं, हम नवाचार, खोज और प्रगति के एक नए युग को प्रज्वलित करते हैं जो चराचर जगत की उज्जवल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली, भारतीय दर्शन (दो खंड), राजकमल प्रकाशन, 2014
2. कौशाम्बी, डी. डी., प्राचीन भारत : एक परिचय, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, 2012
3. थापर, रोमिला भारत का इतिहास, पेंगुइन बुक्स इंडिया, 2015
4. हबीब, इरफान, भारतीय इतिहास में निबंध: एक मार्क्सवादी दृष्टिकोण की ओर, ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2018
5. दासगुप्ता, सुरेन्द्रनाथ, भारतीय दर्शन का इतिहास (पांच खंड), मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, 2004
6. दत्त, बिभूतिभूषण और सिंह, अवधेश नारायण, हिन्दू गणित का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, 2004
7. जिमर, हेनरिक, भारतीय कला और सभ्यता के दर्शन, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 2015
8. मैकडोनेल, ए. ए., वैदिक माइथोलॉजी, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, 2002
9. गोण्डा, जान, वैदिक साहित्य, ओटो हैरासोवित्ज वेरलाग, 1975
10. सांकृत्यायन, राहुल, बौद्ध दर्शन, किताब महल, 2009

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मध्य प्रदेश में उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा आर्थिक विकास में योगदान एक समग्र विश्लेषण मालवा और निमाड़ क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. सुनिता तोतला* सपना सोनी**

* सह प्राध्यापक, श्री क्लॉथ मार्केट कन्या वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत
** शोधार्थी, स्कूल ऑफ कॉमर्स, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – मध्य प्रदेश के मालवा और निमाड़ क्षेत्र अपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक संसाधनों के लिए प्रसिद्ध हैं। इन क्षेत्रों में उच्च शिक्षण संस्थानों का विकास न केवल शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति कर रहा है, बल्कि यह क्षेत्रीय और राज्य-स्तरीय आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आज, जब वैश्वीकरण और डिजिटल युग के प्रभाव के कारण अर्थव्यवस्थाएं तेजी से बदल रही हैं, उच्च शिक्षण संस्थानों की भूमिका केवल शिक्षण तक सीमित नहीं रही, बल्कि वे आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन के उत्प्रेरक के रूप में भी उभर रहे हैं। यह अध्ययन मालवा और निमाड़ क्षेत्र में उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा आर्थिक विकास में किए गए योगदान का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है और उनके प्रभाव को गहराई से समझने का प्रयास करता है।

शब्द कुंजी – उच्च शिक्षा, आर्थिक विकास, शिक्षा की गुणवत्ता, विद्यार्थी, शिक्षण संस्थाए।

प्रस्तावना – भारत दक्षिण एशिया में स्थित भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे बड़ा देश है। भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं। लेकिन शिक्षा की स्थिति अत्यंत चिंताजनक एवं बदहाल है एक और जहाँ प्राथमिक शिक्षा से उच्च शिक्षा तक घोर व्यापारीकरण बड़ा हैं फलस्वरूप बड़े पैमाने पद प्रतिभाएं योग्य शिक्षा पाने से वंचित रह जाती हैं(Milton Walter.1976)

मध्यप्रदेश – म.प्र. भारत का एक राज्य हैं जिसकी राजधानी भोपाल हैं। म.प्र. 1 नवंबर 2000 तक क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य था, इस दिन मध्य प्रदेश राज्य से 14 जिले अलग कर छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना हुई। 2011 की जनगणना के अनुसार म.प्र. की साक्षरता 70.60% थी जसमें पुरुष साक्षरता 80.5% व महिला साक्षरता 60.0% थी।(http://www.census2011.co.in/)वर्ष 2017 के आकड़ों के मुताबिक राज्य में 114,418 प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय और 3851 उच्च विद्यालय व 4765 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय है।

मालवा – मालवा महाकवि कालिदास की धरती हैं यहां की धरती हरी - भरी धन धान्य से भरपूर रही हैं। मालवा ज्वालामुखी के उदगार से बना पश्चिमी भारत का एक अंचल हैं । पश्चिमी भाग तथा राजस्थान के दक्षिण पूर्वी भाग से गठित यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही एक स्वतंत्र राजनैतिक इकाई रहा हैं। मालवा के अधिकांश भाग का गठन जिस पठार के द्वारा हुआ हैं उसका नाम भी इसी अंचल के नाम से मालवा का पठार हैं यह वर्तमान में लगभग 47760 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फेला हुआ हैं तथा इसके अंतर्गत धार, झाबुआ, रतलाम, देवास, इंदौर, उज्जैन, आगर, मंदसौर, सिहौर, रायसेन, राजगढ़ तथा विदिशा आदि जिले आते हैं(https://hi.wikipedia.org/wiki)।

निमाड़ – निमाड़ मध्य प्रदेश के पश्चिमी ओर स्थित है। इसकी भौगोलिक सीमाओं में निमाड़ के एक तरफ विन्ध्य पर्वत और दूसरी तरफ सतपुड़ा हैं, जबकि मध्य में नर्मदा नदी है। पौराणिक काल में निमाड़ अनूप जनपद कहलाता था। बाद में इसे निमाड़ की संज्ञा दी गयी। फिर इसे पूर्वी और पश्चिमी निमाड़ के रूप में जाना जाने लगा। निमाड़ का जिले के रूप में गठन ब्रिटिशराज में नेरबुव डिवीजन में हुआ था जिस का प्रशासनिक मुख्यालय खण्डवा में था। निमाड़ अंचल में निम्न जिले आते है-बड़वानी, बुरहानपुर, खंडवा, खरगोन,। निमाड़ क्षेत्र में निम्न शहर आते है -बड़वाह, बड़वानी, बुरहानपुर, हरसूद,खंडवा,खरगोन, जूलवानिय, बमनाला, भीकनगावं, मूँदी, सनावद (https://hi.wikipedia.org/wiki)।

किसी देश के विकास के लिए मानवीय संसाधनों का विकास करना आवश्यक होता हैं। मानवीय संसाधनों के विकास की दृष्टि से उच्च शिक्षा का महत्वपुर्ण स्थान हैं। उच्च शिक्षा सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तन का 1 शक्तिशाली माध्यम हैं। उच्च शिक्षा देश के आर्थिक विकास के जरिये जनसाधारण के जीवन की गुणवत्ता में योगदान देती हैं। एक सशक्त समाज तथा एक समर्थ व जीवंत अर्थव्यवस्था के निर्माण करने की दृष्टि से शिक्षा के व्यापक उद्देश्य और भूमिका को दरकिनार कर सरकार ने शिक्षा व्यवस्था को बाजार शक्तियों के भरोसे छोड़ दिया हैं। इन नीतियों के फलस्वरुप देश में उपाधि प्राप्त बेरोजगारी की फौज खड़ी हो गई है, जो चिंताजनक हैं। किसी भी समाज अथवा राज्य की शिक्षा उसकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती हैं। शिक्षा के द्वारा सामाजिक, आर्थिक विकास होता हैं। शिक्षा सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक वातावरण तैयार करती है जिससे राष्ट्रीय विकास होता हैं (http://hindimedia.in)।

साहित्य का पुनरावलोकन

द कंट्रीब्यूशन ऑफ एजुकेशन टू इकोनोमिक ग्रोथ: इम्प्रिडेंस फ्रॉम नेपाल, यह शोध पत्र नेपाल के आर्थिक विकास में शिक्षा के योगदान की भूमिका

का अध्ययन करता है। इस शोध पत्र में यह प्रर्दशित किया गया है कि नेपाल के सकल घरेलू उत्पादन में तथा नेपाल के आर्थिक व सामजिक विकास में शिक्षा का काफी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस शोध पत्र का विश्लेषण आर्थिक विकास में शिक्षा के योगदान का समर्थन करता है। यह शोध पत्र का न्यूनतम वर्ग विधि के द्धारा प्राप्त विश्लेषण के आधार पर प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट होता है, कि प्राथमिक, द्धितीयक, तृतीयक और उच्चतर स्तर पर शिक्षा और आर्थिक विकास में दीर्घकालीन सहसंबंध पाया जाता है। जोहांसन कंटीग्रेशन परीक्षण से प्राप्त परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा तथा आर्थिक विकास में गहरा संबंध है। इसका अर्थ होता है कि प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा नेपाल व एशिया की प्रति व्यक्ति वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में योगदान करती है। **(दहल व अन्य, 2016)।**

यह शोधपत्र उच्चतर शिक्षा संस्थानों के आर्थिक विकास पर एक तुलनात्मक अध्ययन के संबंध में प्रस्तुत किया गया है। इस अध्ययन के माध्यम से, विभिन्न उच्चतर शिक्षा संस्थानों के आर्थिक प्रदर्शन को तुलनात्मक रूप से विश्लेषण किया गया है और उनके बीच विभिन्न प्राथमिकताओं का मुकाबला किया गया है। इस अध्ययन के परिणामस्वरूप, भारत में उच्चतर शिक्षा संस्थानों के आर्थिक विकास में संस्थानों के प्रकार, स्थान, उपलब्ध संसाधनों, शिक्षा गुणवत्ता, अनुसंधान एवं नवाचार, और विपणन योजनाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस अध्ययन के माध्यम से, भारतीय उच्चतर शिक्षा संस्थानों के आर्थिक विकास में सुधार करने के लिए नीतियों और योजनाओं को सुझाव दिए जाते हैं **(पाटिल, और जोशी, 2016)।**

यह एक समीक्षा शोध है जो शिक्षा के आर्थिक विकास के प्रभाव पर आधारित है। साहित्यिक समीक्षा के आधार पर स्पष्ट है कि शिक्षा का आर्थिक विकास में योगदान सकारात्मक, नकारात्मक या कुछ नहीं हो सकता है। शिक्षा के आर्थिक विकास में योगदान का निर्धारण करने के तीन अलग-अलग तरीके हैं, (अं) लाभ मुआवजा विश्लेषण शिक्षा एक निवेश है जो उत्पादकता में सुधार करता है और मौद्रिक और गैर-मौद्रिक रिटर्न प्रदान करता है (ब) मानव संसाधन प्रवृत्ति शिक्षा के माध्यम से भविष्य की आवश्यकता वाले कर्मचारियों की पूर्ति हो सकती है जो आर्थिक विकास को प्राप्त करने के लिए उपयुक्त हों और (स) शिक्षा और आर्थिक विकास विश्लेषण शिक्षा का आर्थिक विश्लेषण में महत्वपूर्ण गुणक होता है। देश के आर्थिक विकास पर शिक्षा के प्रभाव/योगदान पर अनुसंधान की कमी है। जो भी थोड़ी सी शिक्षा के प्रोजेक्ट इंडिया में उपलब्ध हैं, वे हमारे नीति निर्धारित करने वालों को शिक्षा क्षेत्र में निवेश करने के लिए प्रबुद्ध नहीं कर पा रहे हैं। इसलिए, भारत के आर्थिक विकास में शिक्षा के योगदान पर अनुसंधान की आवश्यकता है और हमारे नीति निर्माताओं को शिक्षा – प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा और शिक्षा अनुसंधान पर जनसाधारण व्यय को बढ़ाने के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता है **(Mitra. and Rout, 2018)।**

प्रस्तुत शोध लेख भारत के आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका से सम्बंधित है इसमें यह गया कि शिक्षा एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो शिक्षार्थी को नवोन्मेषक, शोधार्थी, प्रशिक्षक, कुशल व्यापारी, कुशल उत्पादक, कुशल श्रमिक तथा विवकेशील उपभोक्ता बनाती है। गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा कुशल उत्पादक, कुशल उपभोक्ता आदि का निर्माण करती है तथा यह प्रभावी आर्थिक विकास को बढ़ावा प्रदान करती है **(रीना, 2018)।**

शोध की परिकल्पना

H(1): मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा का प्रभाव मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास में सकारात्मक है।

शोध के उद्देश्य:

1) उच्च शिक्षण संस्थाए मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास में किस प्रकार योगदान दे रही हैं ? आदि के विषय में महत्वपूर्ण तथ्यों से अवगत होना।

'शोध कार्य के अंतर्गत शोध हेतु, शोध क्षेत्र के रूप में 'मालवा एवं निमाड़' के निम्न जिलों व उनकी शासकीय शिक्षण संस्थाओं को लिया गया जिनका वर्णन निम्नानुसार है'

शोध कार्य हेतु **इंदौर जिले** जिले के निम्न शासकीय महाविद्यालयों को शोध क्षेत्र के रूप में लिया गया :-

तालिका क्रमांक 1: शोध कार्य हेतु चुने गए इंदौर जिले के शासकीय महाविद्यालय

क्र.	महाविद्यालय का नाम	स्थान	जिला
1	शासकीय होलकर (आदर्श, स्वशासी) विज्ञान महाविद्यालय, इन्दौर	इंदौर	इंदौर
2	महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय स्नात्कोत्तर कन्या महाविद्यालय किला भवन	इंदौर	इंदौर
3	श्री अटल बिहरी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय	इंदौर	इंदौर

(http://highereducation.mp.gov.in)

शोध कार्य हेतु **खंडवा जिले** के निम्न शासकीय महाविद्यालयों को शोध क्षेत्र के रूप में लिया गया –

तालिका क्रमांक 2: शोध कार्य हेतु चुने गए खंडवा जिले के शासकीय महाविद्यालयों

क्र.	महाविद्यालय का नाम	स्थान	जिला
1	शासकीय महाविद्यालय	हरसूद	खंडवा
2	श्री नीलकंठेश्वर स्नातकोत्तर शासकीय महाविद्यालय खंडवा	खंडवा	खंडवा
3	शासकीय कन्या महाविद्यालय	खंडवा	खंडवा

(http://highereducation.mp.gov.in)

शोध परिकल्पना का विश्लेषण एवं मूल्यांकन

शोध परिकल्पना का मूल्यांकन

प्रश्नावली की विश्वसनीयता तालिका

क्रमांक 3: Reliability Statistics

Cronbach's Alpha	N of Items
0.893	40

मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास में उच्च शिक्षण संस्थानों की महती भूमिका का मूल्यांकन करने के लिए प्रश्नावली का निर्माण किया गया जिसके अन्तर्गत जनसांख्यिकी डाटा के अलावा 40 प्रश्नों को स्केल पर आधारित करके प्रश्नावली की विश्वसनीयता का आँकलन किया गया। प्रश्नावली की विश्वसनीयता का मान 0.893 अभिप्राय है 89.3 प्रतिशत प्रश्नावली विश्वसनीय है,जिसका सत्यापन क्रानवेक अल्फा द्धारा किया गया है, अत: परिणामस्वरूप प्रश्नावली के विश्लेषण को आगे बढ़ाया जा सकता है।

H(1): मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा का प्रभाव मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास में सकारात्मक है।

तालिका क्रमांक 4 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

दोनों कारकों मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा का प्रभाव एवं आर्थिक विकास के मध्य पियर्सन सहसंबंध परीक्षण करने पर 0.747 मान प्राप्त हुआ है, तथा सार्थकता मूल्य (p-value) का मान 0.000 जो स्तरीय मान 0.05 से कम है। अत: यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों कारकों के मध्य पियर्सन मान व सार्थकता मूल्य (p-value) स्तर मान 0.05 से कम होने पर कारकों के मध्य मजबूत व सार्थक संबंध है। साथ ही मॉडल समरी में प्रतिगमन विश्लेषण का प्रयोग दोनों कारकों के मध्य सकारात्मक संबंध को ज्ञात करने हेतु किया गया है। मॉडल समरी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि, लिनियर सहसंबंध गुणांक ठका मान 0.747 है, व आर. स्क्वेयर (0.557) है। अत: यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों कारकों के मध्य संबंध है। आर.स्क्वेयर (गुणांक का निर्धारण) का मान 0.557 प्राप्त हुआ है, जो यह दर्शाता है कि मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास में मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा का प्रभावके मापदण्ड पर 55.7% है। मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा का प्रभाव एवं आर्थिक विकास के बीच संबंध को जानने के लिए 'अनोवा परीक्षण' का प्रयोग किया गया है। तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि ऋका मान 627.26 है, जो सारणीमान 2.47 से अधिक है व सार्थकता मूल्य .000[a] है, जो स्तरीय मान 0.05 से कम है। अत: यह निष्कर्ष निकलता है कि परिकल्पना **H(1): मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा का प्रभाव मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास में सकारात्मक है सत्य सिद्ध होती है।**

तालिका क्रमांक 5: Coefficients[a]मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा का प्रभाव एवं आर्थिक विकास

Model	Unstandardized Coefficients		Standardized Coefficients	T	Sig.
	B	Std. Error	Beta		
1(Constant)	3.74	.586		6.38	.000
मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा	.495	.020	.747	25.04	.000

a. Dependent Variable: **आर्थिक विकास**

तालिका के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दोनों चरों के मध्य Coefficients[a]ज्ञात किया गया है। मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास को निर्भर चर तथा मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा को स्वतंत्र चर माना गया है। इस अध्ययन हेतु सबसे पहले बीटा स्तर का प्रयोग किया गया है। तत्पश्चात् टी टेस्ट (t) का उपयोग किया है। तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि t टेस्ट का मान 6.38 है, जो अधिक है। लिनियर समीकरण Y = 3.74 + .495X है, जो कि सकारात्मक रेखीय संबंध को इंगित करता है।

शोध निष्कर्ष – शोध अध्ययन के परिणामों के आधार पर, यह स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षा लोगों को एक अवसर प्रदान करती है जिससे वे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मसलों पर सोच-विचार कर सकते हैं। इससे उन्हें समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लिए योजना बनाने और कार्रवाई करने की क्षमता मिलती है, जो आर्थिक सुधार और सामाजिक समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण है। उच्च शिक्षा और प्रौद्योगिकी क्षमता का ध्यान रखने से लोग अपने क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त करते हैं, जिससे उन्हें विभिन्न रोजगार के विकल्पों में नौकरी प्राप्त करने का मौका मिलता है। शिक्षा से समृद्धि प्राप्त करने वाले व्यक्ति अधिक उच्च और अधिकतर वाणिज्यिक या औद्योगिक क्षेत्रों में सक्रिय हो सकते हैं, जिससे समृद्धि और विकास का सृजन हो सकता है। इस रूप में, शिक्षा को एक नौकरी की प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण साधन माना जा सकता है जो समाज के अधिकांश को समृद्धि और सामाजिक सुरक्षा की दिशा में आगे बढ़ने में मदद कर सकता है (www.allresearchjournal.com)

मालवा और निमाड़ क्षेत्र में स्थापित उच्च शिक्षण संस्थानों ने न केवल युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराई है, बल्कि रोजगार सृजन, शोध एवं विकास, और औद्योगिक विकास के माध्यम से क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को भी गति दी है। इन संस्थानों के माध्यम से स्थानीय उद्यमिता को बढ़ावा मिलता है, जिससे क्षेत्रीय संसाधनों का अधिकतम उपयोग और उनके प्रभावी प्रबंधन की संभावना बनती है। यह अध्ययन मालवा और निमाड़ क्षेत्र में उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा आर्थिक विकास में किए गए योगदान का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है और उनके प्रभाव को गहराई से समझने का प्रयास करता है (http://www.socialresearchfoundation.com)

शिक्षा की चुनौतियाँ एवं समाधान – प्रश्न उठता है कि वे कौन सी चुनौतियां हैं जिनका सामना करने की कवायद शिक्षक-शिक्षा को करनी है। इसका उत्तर देने के लिए शिक्षा के समक्ष जिन क्षेत्रों से चुनौतियां सामने आ रही हैं अथवा भविष्य में और तीव्र होकर सामने आने की आशंका है उन्हें तीन प्रमुख भागों में बांटा जा सकता है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग के अन्तर्गत आर्थिक क्षेत्र से उत्पन्न होने वाली चुनौतियां हैं। आर्थिक क्षेत्र से उत्पन्न होने वाली चुनौती के पश्चात सामाजिक क्षेत्र से उत्पन्न होने वाली चुनौती पर चर्चा की जाए तो स्पष्ट होता है कि शिक्षक की वास्तविक कसौटी समाज है। यह कहने में कदापि संकोच नहीं होना चाहिए कि शिक्षक की सामाजिक प्रतिष्ठा को काफी आघात पहुंचा है जिसका जिम्मेदार वह स्वयं है। अपनी खोई प्रतिष्ठा को प्राप्त करना तभी संभव है जबकि शिक्षक द्वारा इसके लिए ईमानदारी से प्रयास किया जाय। किन प्रयासों, कार्यों, मूल्यों, मान्यताओं को छोड़ा जाय और किनसे जुड़ा जाये यह तय करने के लिए देश, काल और परिस्थिति के अनुसार बुद्धि, विवेक और ज्ञान का सहारा लेकर विमर्श करना आवश्यक है। अंतिम चुनौती भरा क्षेत्र राजनीतिक है। यद्यपि अपने देश में लोकतांत्रिक शासन-प्रणाली प्रचलित है तथापि नीतिगत अस्पष्टता अथवा व्याख्या भिन्नता के कारण कभी-कभी कुछ व्यवधान आ जाते हैं। आंतरिक एवं बाह्य दबाव समूह भी निर्णयों को प्रभावित करते हैं। आंतरिक स्तर पर राजनैतिक दल तथा बाह्य स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं दबाव समूह का कार्य करती हैं जिससे नीतियों के निर्माण तथा उनके क्रियान्वयन पर प्रभाव पड़ता है (https://educationforallinindia.com)

उपसंहार – उच्च शिक्षण संस्थान केवल शिक्षा प्रदान करने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि आर्थिक विकास के केंद्र बिंदु भी बन सकते हैं। शिक्षा किसी भी समाज के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास की आधारशिला है। उच्च शिक्षण संस्थान, विशेषकर विश्वविद्यालय और तकनीकी संस्थान, न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करते हैं, बल्कि नवाचार, उद्यमिता, और सामाजिक सुधार के लिए मंच भी तैयार करते हैं। मध्य प्रदेश के मालवा और निमाड़ क्षेत्र, जो अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संपदा के साथ-साथ कृषि और औद्योगिक गतिविधियों के लिए जाने जाते हैं, इन क्षेत्रों में उच्च शिक्षण संस्थानों का प्रभाव दूरगामी है।

मालवा और निमाड़ क्षेत्र में स्थापित उच्च शिक्षण संस्थानों ने न केवल युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराई है, बल्कि रोजगार सृजन, शोध एवं विकास, और औद्योगिक विकास के माध्यम से क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था

को भी गति दी है। यह अध्ययन मालवा और निमाड़ क्षेत्र में उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा आर्थिक विकास में किए गए योगदान का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है और उनके प्रभाव को गहराई से समझने का प्रयास करता है।

शिक्षा में तकनीकी साधनों का सही उपयोग समृद्धि और विकास में वृद्धि का माध्यम बनता है। प्रौद्योगिकी के उपयोग से शिक्षा क्षेत्र में नवीनतम तकनीकों का प्रयोग होता है, जिससे छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों में जानकारी प्राप्त होती है। यह छात्रों को आधुनिक समय की मांगों के अनुसार तैयार करता है और उन्हें उच्चतम गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करता है। इससे वे अपने क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल कर सकते हैं, जो उन्हें नौकरी और अन्य अवसरों में सफलता की दिशा में आगे बढ़ने में मदद करती है। साथ ही, शैक्षिक संसाधनों का उपयोग करके छात्रों को बुनियादी ढांचों और मूल सिद्धांतों की समझ प्राप्त होती है। यह उन्हें अच्छी अधिकारता और विचारशीलता प्रदान करता है, जिससे उनकी नौकरी और व्यापार में सफलता मिलती है। इस प्रकार, शैक्षिक संसाधनों का सही उपयोग करना आर्थिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कारक होता है जो समृद्धि और सामाजिक विकास में मदद करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. https://www.allresearchjournal.com/archives/2020/vol6issue2/PartE/6-11-146-542.pdf
2. http://www.census2011.co.in/census/state/madhya+pradesh.html
3. दहल गंगाधर व अन्य (2016), द कंट्रीब्यूशन ऑफ एजुकेशन टू इकोनोमोनिक ग्रोथ इभिडेंस फ्रॉम नेपाल, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अप्लाईड रिसर्च, वाल्यूम 4(1), पृष्ठ संख्या: 326-327)
4. hhttp://www.educationportal.mp.gov.in/Public/Schools/ssrs/State_School_Block.aspx?MP=1
5. hhttps://educationforallinindia.com/issues-challenges-indian-education-system-is-facing/
6. https://hi.wikipedia.org/wiki/मध्य_प्रदेश/शिक्षा
7. https://hi.wikipedia.org/wiki/मालवा/प्रमुख_स्थान_एवं_नगर
8. https://hi.wikipedia.org/wiki/निमाड़
9. https://highereducation.mp.gov.in/
10. hhttp://hindimedia.in/depending-on-the-quality-of-higher-education/?print=print
11. Mitra A. and Rout, H.S (2018) Education and Economic Development: A Review of Literature PRAGATI: Journal of Indian Economy. Volume 5, Issue 1, pp. 81-110)
12. Meyer, Milton Walter.(1976)." *A Short History of the Subcontinent". South Asia*. pages no. 1, ISBN 0-8226-0034-X)
13. पाटिल, अभय और जोशी, नीति. (2016). भारत में उच्चतर शिक्षा संस्थानों का आर्थिक विकास एक तुलनात्मक अध्ययन. अर्थविज्ञान और योजना, 19 (2), 65-82)
14. रीना (2018) ने शोध लेख भारत के आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडभांस एकेडेमिक स्टडीज, वाल्यूम-1 स्पेशल इश्यू, पेज संख्या: 305-398)
15. http://www.socialresearchfoundation.com/upoadreserchpapers/6/161/1708190841091st%20ravindra%20modi.pdf

तालिका क्रमांक 4:Model Summary[b] मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा का प्रभाव एवं आर्थिक विकास

Model	R	R Square	Adjusted R Square	Std. Error of the Estimate	Change Statistics					Durbin-Watson
					R Square Change	F Change	df1	df2	Sig. F Change	
1	.747a	.557	.557	3.39	.557	627.26	1	478	.000	2.12

a. Predictors: (Constant), **मूल्यपरक रोजगारोन्मुखी शिक्षा का प्रभाव**

b. Dependent Variable: **आर्थिक विकास**

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

चित्रा मुद्गल की कहानियों में स्त्री – जीवन के विभिन्न आयाम

प्रकाश वारकले*

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, क्रांतिकारी शहीद छितुसिंह किराड़ शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीराजपुर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – छात्र जीवन से ही चित्राजी ने लेखन की शुरूआत की है। अपने पिता के सुख–समृद्ध जीवन को त्यागकर उन्होंने अपने पति अवधनाराण मुद्गल के साथ बंबई जैसे महानगर में झोपट्टी में जीवनयापन की कल्पना में ही उन्हें अधिक प्रिय और श्रेयस्कर प्रतीत हुआ। अत्याधुनिक संसाधनों से परिपूर्ण जीवन को अस्वीकार करके महानगरीय जीवन के परिवेश को स्वीकार कर लिया है। परिवेश के बदलाव के साथ रिश्तों में आ रहे परिवर्तनों को सहज रूप से स्वीकार कर लिया है।

रिश्तों में आ रहे अजनबीपन युवा पीढी का मोहभंग और मानवीय रिश्तों को लेकर मानसिक उलझनों तथा जीवन–संघर्ष से जूझते महानगरी व्यवस्था में आम बात है।

चित्राजी का समस्त साहित्य समकालीन यथार्थ समस्याओं के रूप में केन्द्रित रहा है। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से महानगरीय जीवन के अजीबोगरीब उतार–चढाओं को देखा है। मात्र पैसा प्रेम का स्थान नहीं ले सकता। 'गेंद' कहानी में वृद्धाश्रम में रहने वाले सचदेवा का बेटा विनय लंदन में नौकरी करता है। विनय की पत्नी डॉक्टर है। पत्नी की मृत्यु के पश्चात् भरा पूरा परिवार होने के बावजूद अकेले जिंदगी जीने के लिए मजबूर है। वहीं छोटे से बिल्लू को रिश्तों की परख नहीं है इसलिए अपने दादा को भी अंकल कह कर ही संबोधित करता है। शहर नाम के सीमेंट के इस जंगल में मनुष्य की मनुष्यता खो रही है जहाँ बच्चे ही अपने माँ–बाप से विमुख हो रहे हैं।

स्वाधीनता के बाद भारतीय समाज औद्योगीकरण के फलस्वरूप विशाल महानगरों का निर्माण हुआ, जिसने गाँवों की सभ्यता और संस्कृति को अभाव, घुटन, अकेलापन, अपराधीकरण जैसे समस्याओं को जन्म दिया। महानगरीय आदमी दूसरों का ऊपर उठाने और अधिक कुछ पाने की कोशिश में भागते फिर रहा है जिसकी संवेदनशीलता और ईमानदारी रफू हो गई।

लेखिका ने महसूस किया कि पाश्चात्य सभ्यता का आकर्षण एवं संक्रमण अन्धानुकरण तथा फैशनपरस्ती में डूब गया परिणामस्वरूप पीढियों में बढता अन्तर, दिखाई देने लगा। महानगरीय चकाचौंध के पीछे अंधकार से बेखबर ग्रामीण व्यक्ति अपनी परंपरा तथा परिवेश से कटकर शहर की और भाग रहा है। इस स्थितियों के कारण महानगरीय जीवन में विसंगतियाँ और विद्रूपताएँ बढती रही।

साहित्य के क्षेत्र में कहानी का स्वरूप भी बदलता रहा है। भीतर ही भीतर उसने झूठ, फरेब, शोषण, भ्रष्टचार एवं अन्याय की ऐसी दीवारें खड़ी कर दी है कि जिसमें हमारे मूल्य और विश्वास का दर्द घुटने लगा है।

समकालीन हिन्दी कहानियों में महानगरीय चित्रण के रूप में नगरी जीवन की अनेक विसंगतियाँ उत्पन्न की है।

गाँव का आर्थिक ढाँचा कृषि पर निर्भर है जबकि नगर का ढाँचा पूरी तरह से नितांत भिन्न स्वरूप का है। नगरी जीवन में आर्थिक दृष्टि पर ही अनेक विसंगतियाँ दिखाई देती है। महानगरों में सामाजिक और राजनैतिक मूल्यों में तेजी से क्षरण होने लगा है। जिनमें राष्ट्रीय एकता, सामाजिक उत्थान, देश प्रेम आदि मूल्य घटते गये इसके स्थान पर स्वार्थ और अवसरवाद ने जगह ले ली है।

महानगरों में जीविका एवं आवास की समस्या से स्वंय व्यक्ति उलझ रहा है। लेखिका चित्रा मुद्गल ने समाज में व्याप्त सामाजिक यथार्थ को सिद्धांत से अनुभव किया है। मध्यवर्गीय समुदाय की रचनाओं को उन्होंने अपनी लेखनी से समृद्ध किया है। चित्राजी ने समाज सेविका के रूप में कारखानों से जुड़ी स्त्रियों के संगठन से जुड़कर उन्होंने स्त्री समस्याओं को हल करने का काम किया है। विशेष रूप से झोपड़ीपट्टी के श्रमिक लोगों में चेतना पैदा करने की दृष्टि से स्त्री संगठनों से गहरा लगाव रहा है। चित्राजी ने सामाजिक जीवन की प्रतिबद्धता के साथ तथा जीवंतता के साथ उजागर किया है।

महानगरीय जीवन के निम्न और मध्यवर्गीय नारी चरित्रों को लेकर उनके अन्तरद्वंद्वों के साथ विश्लेषित किया है। उन्होंने नारी जीवन के यथार्थ को बड़ी गहराई के साथ महसूस किया है। चित्राजी ने 'अपनी वापसी' कहानी में शकुन नामक प्रोढा की कथा में ढलती उम्र में शारीरिक शक्ति क्षीण होने पर परेशानिया सहकर बच्चों और पति के व्यवहारों को उपेक्षित करती है। 'दरमियान' में मध्यवर्गीय नौकरी पेशा नारी की परेशानियों का उल्लेख किया है। 'लिफाफा' कहानी में पुत्र–पुत्रियों के भेदभाव की चर्चा की है।

'इस हमाम में कहानी संकलन में भूख', फातिमाबाई कोठे पर नहीं रहती, 'चेहरे', 'अपने गिरेबान' जैसी रचनाओं में बंबई महानगर की निम्न समाज की नारी का त्रस्त जीवन कथा व्यक्त की गई है जिसमें झोपड़ीपट्टी में रहने वाली कामवाली बाई का यथार्थ चित्रण उल्लेखनीय है। 'फातिमा बाई कोठे पर नहीं रहती' रेड–लाईट एरिया में रहने वाली वेश्याओं का चित्रण किया गया है। 'अपने गिरेबान' में उच्च वर्ग की नारियाँ खेल–खेल में अपनी पत्नियों के साथ दैहिक संबंधों में अपना मनोरंजन ढूंढती है।

'जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं' संकलन में 9 कहानियाँ है। जिनमें मुआवजा', 'सौदा','अभी भी','ताशमहल', 'प्रमोशन','हस्तक्षेप' जैसे कहानियाँ उल्लेखनीय है।

'मामला आगे बढेगा' कहानी संग्रह में 12 कहानियाँ हैं। सभी कहानियाँ

महानगरी जीवन से संबंधित है।' 'जिनावर' कहानी 7 कहानियाँ है तथा 11 लघु कथाएँ हैं। जिनमें प्रमुख रूप से समाज और लोकोपवाद आदि कहानियाँ पठनीय है।

'लपटे' कहानी संग्रह में 7 कहानियाँ और 4 लघु कथाएँ हैं। चार लघुकथाओं में जातिवादी जड़ों का चित्रण है।

'बयान' कहानी में 29 लघुकथाएँ है जिनमें विभिन्न चरित्रों का उल्लेख हैं।

'आदि-अनादि' भाग 3 में 59 कहानियाँ है जो विभिन्न विषयों से संबंधित है।

कुल मिलाकर 184 कहानियाँ तथा 28 लघु कथाएँ हैं। जो अनेक विषयों से संबंधित है। इनमें 'अभी भी', 'लकड़बग्घा' 'लक्ष्मी', 'जिनावर', आदि कहानियाँ पठनीय है।

'केंचुल' कहानी में कमला अपने गुजारे के लिए शराब बनाकर बेचती है। वह लड़ना चाहती है पर स्त्री की त्रासदी को अच्छी तरह से जानती है। नारी अपने सम-सामयिक समाज में अपनी अस्मिता और सुरक्षा के लिए जी तोड़ प्रयत्न करती है।

'प्रेत योनि' में नायिका अपने परिवार के दोहरे आचरण से आश्चर्य चकित है। कुछ कहानियों में खून के रिश्ते भी मानवीय संबंधों में अपनी निरर्थकता प्रदर्शित करते है।

कुछ कहानियों में भावुक चरित्रों की संवेदनाओं का उल्लेख किया गया है।

मिनाक्षी मिश्रा ने भी 'चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में स्त्री जीवन की विविध छबियों का चित्रण किया है।

कुछ कहानियों में ग्रामीण विधवा स्त्री की व्यथा, निम्नवर्ग की पारिवारिक समस्याएँ तथा मधु नाम की दुर्घटनाग्रस्त अपाहिज नारी की दशा का चित्रण किया है। बयान' नामक कहानी में अनिता गुप्ता नाम की लड़की का बलात्कार की शिकार होने से बचने की कथा व्यक्त की है। 'बाघ' कहानी में अवसरवादी मध्यमवर्गीय समाज का चित्रण किया गया है। 'रिश्ता' लघुकथा में मार्था' नामक नर्स का चित्रण किया गया है। जिसमें हर मरीज की यमाँ बनकर उसकी सेवा करती है। मानदण्ड' में दलित स्त्री की 'छुआ छूत' से परेशान नारी का चित्रण किया गया है। प्राध्यापक कस्बे आमघाली किशनराव ने अपने प्रबंध में चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में व्यक्त नारी जीवन संघर्ष में चित्रा जी के कथा साहित्य में नारी संघर्ष की कथा दी है। सफेद सोनारा' कहानी में एक अध्यापिका को प्रेम में धोखा मिलता है। 'तकिया' कहानी में चित्रा जी ने एक नौकरीपेशा औरत का चित्रण किया है जिसका एक छोटा बच्चा है जिसके कारण उसे नौकरी में वक्त नहीं मिल पाता इसलिए वह आया के भरोसे बच्चे संभालने का काम करती है। 'हथियार' कहानी में नौकरी करने वाली युवती की कथा है, जिसके माता-पिता अलग रहते हैं। उसकी माँ अपने दूसरे पति से त्रस्त हो चुकी है। युवती को न तो अपनी माँ के पास रहना है, न पिता के साथ।

'जब तक विमलाएँ हैं' कहानी में विमला अपने औलाद की नाइंसाफी के विरुद्ध आवाज उठाती है। 'अभी भी' कहानी में शिल्पा ससुराल वालों के सामने विद्रोह करती है। 'प्रेतोयोनि' कहानी में लड़की घर में नजरबंद है। क्योंकि उसकी माँ नौकरी करने अन्यत्र जाती है और बच्चे को घर में नजरबंद कर नौकरी में चली जाती है।

नौकरीपेशा कहानी की ललिता को अपने पति की जिम्मेदारी वहन करना पड़ती है। ललिता अपने बॉस को भोजन के लिए आमंत्रित करती है तब ललिता का पति बॉस के प्रति संदेह करता है। ललिता का पति ललिता को संदेह की दृष्टि से ही देखता है।

'मोर्चे पर' कहानी में रिना नाम की विधवा भी अपने पति सुदीप के शहीद होने के बाद तनाव से घिर जाती है। 'स्टेपनी' में नौकरीपेशा नायिका आया की गृहस्थी संभालने के साथ नौकरी भी करती है इसलिए उसे नौकरी और गृहस्थी दोनों की जिम्मेदारी वहन करने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है पति के आंतक को उसे चुपचाप सहना पड़ता है। 'सौदा' कहानी में अनपढ मासूम ग्रामीण स्त्री गेंदा को नौकरी का लालच देकर दलाल उसे बाजार में बेच देता है।

'फातिका बाई कोठे पर नहीं रहती' कहानी रेड-लाईट ऐरिया की वेश्याओं की यातना भरी जिंदगी का चित्रण किया गया है।

'रूना घर आ रही है' कहानी में रूना एक श्रीमन्त आदमी से प्रेम करती है। उसे विवाह की मंजूरी अभी मिल गई है, किन्तु एक शर्त पर शादी को टाल दिया जाता है। शर्त यह है कि बुआ की शादी होने पर ही रूना की भी शादी होगी। इस शर्त पर रूना टूट जाती है।

'लाक्षागृह' की नायिका नौकरी करती है। नायिका सुन्दर नहीं है। उसकी अन्य बहनों की शादी हो जाती है किन्तु नायिका असुन्दर होने से अविवाहित रह जाती है। भूख' कहानी की नायिका लक्ष्मा अपने छोटे बच्चें को भी भिखारिन को देने में तैयार होती है।

इस प्रकार चित्रा मुद्गल की कहानियों में नारी के संघर्ष को व्यक्त किया गया है। अक्सर यह देखा गया है कि स्त्री के विवाह में कई बार किसी न किसी कारणों से वैवाहिक संबंधों में रूकावटें डालने का हथकंडा अपनाया जाता है। वस्तुत: आर्थिक स्थिति के कारण ही नारी को संबंधों में रूकावटें शुरू होती है।

चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में भावबोध - यथार्थ के प्रति वर्तमान दृष्टिकोण, स्त्री-पुरुष संबंधों में परिस्थितिजन्य बदलाव, काम संबंधों में दृष्टि, महानगरी जीवन की प्रवृत्तियाँ, भूलें और मानवी संबंधों में परिवर्तन, वर्तमान सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परिवेश के प्रति जागरूकता आदि संदर्भ में वैचारिक दृष्टिकोण भावबोध के अंतर्गत समाहित होते हैं। आधुनिकता के नाम पर साहित्य में दमित वासनाओं और यौन कुंठाओं की विकृतियाँ आज के युग में उभरने लगी है।

चित्रा मुद्गल की कहानियों में मध्यवर्गीय नारी की द्वंद्वात्मक स्थितियों का चित्रण किया गया है।

महानगरीय परिवेश जैसी परिस्थितियों में महानगरीय निवासियों की जीवन शैली, उनकी समस्याएँ, संस्कृति आदि महानगरीय निवासी बोध व्हलाता है। मानवीय सामाजिक व्यवस्था का वृहत् रूप महानगर तक जाता है।

महानगर की विभिन्न विशेषताओं और विषमताओं को लेकर महानगरी जीवन से जुड़े विविध पहलुओं का अध्ययन ही महानगरी बोध के दायरे में आता है।

कहानियाँ अपने समय के यथार्थ को कहीं न कहीं अभिव्यक्त की जाती हैं। कहानियों का स्वरूप, किरदार, वेशभूषा, खानपान,उपमा, प्रतिमान, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक सूचना आदि बिन्दु यथार्थ ज्ञान के दायरे में व्यक्त होती है।

रामायण, महाभारत काल में पूर्ण व्यवस्थित समाज के दर्शन होते हैं।

ऋग्वेद काल से लेकर सत्यनारायण की कथा तक पता चलता है कि हाँ बड़ी-बड़ी नावें बनाई जाती थी और परिवहन का प्रचुर मात्रा में व्यापार तथा आवागमन के लिए उपयोग होता था।

मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ उस युग का ऐसा यथार्थ चित्रण करती है कि पढने वालों के सामने घटना जीवन्त प्रतीत होती थी।

चित्रा मुद्गल की 'केंचुल' कहानी में बंबई हाशिये पर रहने वाले वर्ग से सम्बन्द्ध कहानी है। इस वर्ग के रहन-सहन, तंगहाल जिंदगी और नई पीढी के लड़के-लड़कियों में अपने भावी जीवन के संबंध में निर्णय लेने की क्षमता का अंकन किया है।

उनके लेखन में 'सफेद सिनारा' (1967), 'दशरथ का वनवास' (1973), 'जहर ठहरा हुआ'(1990), 'लाक्षागृह' (1982)।

'दशरथ का वनवास' में एक ऐसे पिता को अपने पुत्र के प्रति संवेदना व्यक्त हुई है। जो उनसे संबंध तोड़ चुका है। यहाँ तक कि उनके श्राद्ध तक में शामिल नहीं रहा। इसका कारण है, बचपन में पुत्र के प्रति पिता का कठोर व्यवहार, तो क्रूरता की हद की तरह असंवेदनशील था। पिता की मृत्यु के बाद पुत्र को एक पार्सल मिला, जिसमें वही साइकिल बंधी हुई है, जिसके एक दिन चुपके से सवारी करने में बड़ी बेरहमी से पीटा गया।

अग्निरेखा में एक बीमार लकवाग्रस्त स्त्री की कुंठा का चित्रण किया गया है। उसे लगता है कि वह छोटी बहन के प्रति ईर्ष्यालु हो गई है। वह परिचर्चा के बहाने उसके पति पर डोरे डाल रही है। यह कथा यद्यपि मनोवैज्ञानिक है लेकिन समकालीन जिंदगी में इसका कोई विशेष प्रभाव परिलक्षित नहीं दिखाई देता है।

इस दौरान चित्रा मुद्गल की 'पाली का आदमी', 'शिनाख्त' हो चुकी है' 'केंचुल', 'लाक्षागृह', 'बावजूद इसके', मामला आगे बढेगा', 'अभी', 'इस हमाम में जैसे उल्लेखनीय कहानियाँ आई।

'पाली का आदमी' में एक ऐसे व्यक्ति की परेशानी का चित्रण किया गया है, जो बचपन की शादी और उससे हुई कन्या को नकार कर नगर में यफैक्टरी में उच्च पद पर कार्यरत रहा। और उसने दूसरी शादी कर ली। उसने दूसरी पत्नी से यह तथ्य छिपा रखा है। पत्नी किसी स्कूल या कॉलेज में पढाती है। पति को फैक्टरी की दूसरी पाली में काम करना पड़ता है जिसका एकमात्र मकसद उत्पादन बढाना है। पत्नी से कम मुलाकात होने के बावजूद उसका जीवन एक ढर्रे पर चल रहा है। इस बीच उसकी पहली पत्नी से हुई बच्ची बड़ी हो चुकी है, जिसका विवाह होने वाला है। वह अपने पिता को एक मार्मिक पत्र लिखती है कि वह उसे आकर कम से कम आशीर्वाद तो दे जाए। उसकी बहन भी उसे पत्र लिखती है कि बेटी के विवाह में आर्थिक सहायता देकर अपना पूरा फर्ज करें। इस पत्र को पाकर वह पसोपेश में पड़ जाता है।

'शिनाख्त हो गई है' में किसी महानगर में एक बच्चे के समय पर स्कूल से न लौटने पर उसकी माँ की मानसिक चिन्ता बढ जाती है। 'केंचुल' कहानी में तंगहाली में जिंदगी अपने भावी जीवन के बारे में कुछ निर्णय लेने की क्षमता प्रदर्शित करता है।

'लाक्षागृह' की लड़की असुन्दर होने से विवाह न कर पाने में अक्षम है। इस कथा की सारी समस्या औरत होना है क्योंकि विवाह के लिए औरत का सुन्दर होना जरूरी है।

'एक लंबी कहानी' में एक पुरुषवादी मानसिकता के शिकार, मौज-मस्ती का जीवन जीने वाले और स्त्री को भोग सामग्री मानने वाले क्रूर पति के विरुद्ध उसी पढी लिखी, संवेदनशील पत्नी के विद्रोह और उसकी ज्यादतियो सह न पाने पर स्वतंत्र जीवन जीने का निर्णय लेती है।

'मामला आगे बढेगा अभी' में एक घरेलू नौकर तथा अभिजात वर्ग के दाम्पत्य जीवन के विरोधाभासों का अंकन किया गया है। अन्याय करने वाले मालिक के प्रति प्रतिशोध की भावना व्यक्त की गई है।

'इस हमाम में' कहानी में बतलाया गया है कि नारी किसीभभी वर्ग की हो उसे पति के अत्चार को सहना ही पड़ता है। निम्नवर्ग की औरतें तो बिना किसी झिझक के पति को तंग कर दूसरा विवाह कर लेती है। किन्तु उच्च वर्ग की औरतें ऐसा नहीं कर पाती। क्योंकि वे पति की आर्थिक स्थिति पर जींदा है। लेखिका का कहना है कि स्त्रिों का स्वतंत्र होने के लिए आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होना जरूरी है।

'जहर ठहरा हुआ', 'रूना आ रही है', 'अनुबंध' और त्रिशंकु में कहीं सास बहू के संबंधों का तनाव कहीं पुरुष की सोच है कि उसे पुत्री के रूप में संतान नहीं चाहिए। एक दिन उसे पता चलता है कि उसकी माँ और पत्नी साथ-साथ गर्भवती है। जिससे वह लज्जा का अनुभव करता है।

त्रिशंकु में झोपड़ीपट्टी में रहने को विवश जिंदगी जीने वाले समाज का चित्रण किया गया है जिसमें पति रिकशा चलाता है और पत्नी घर में सफाई का काम करती है।

'सौदा' कहानी में दलित वर्ग की एक स्त्री के अपने ही गुंडे पति के विरुद्ध खड़ी होने के संकल्प का चित्रण है।

चित्रा मुद्गल की कहानी 'भूख' बंबई की झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाली नितान्त गरीब लोगों की कहानी है, जो भूख की पीड़ा झेलने के लिए शिशुओं को भिखारिनों के वेश में,रेल्वे स्टेशनों पर जेब काटने वाली,सहायता देने वाली औरतों का चित्रण किया गया है।

'जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं' में निम्नवर्ग की एक ऐसी माँ की भावनाओं का चित्रण किया गया है, जिसके अपंग बेटे को बड़े तामझाम के साथ पहिया गाड़ी दी जाती है, पर दूसरे ही दिन बहाना बनाकर वापस ले ली जाती है। इस कहानी में एक निर्धन माँ की भावनाओं का मार्मिक अंकन किया गया है। इसके साथ ही नेताओं और व्यवस्था के छद्म भरे नाटक का भी पर्दाफाश किया गया है।

'जिनावर' में एक गरीब तांगे वाले की दयनीय पारिवारिक स्थिति और अपनी घोडी के प्रति गहरी संवेदनशीलता की अभिव्यक्ति की गई है। 'अपने गिरेबान में बंबई के अभिजात समाज की कथा है जहाँ क्लबों में 'वाइफ रूवैपी' में अपनी पत्नियों की अदला-बदली कर मजे लूटने का खेल खेला जा रहा है।

चित्रा मुद्गल की कहानी 'ऐंटिकपीस और नीले चौखाने वाला कम्बल' कहानियों में मध्यम वर्ग की बेचारगी का चित्रण किया गया है। 'ऐंटिक पीस' कहानी में माँ अपनी बहन की समृद्धि से इतनी प्रभावित है कि सदा उसके साथ उसके सामने बिछी रहती है। उसे खुश रखने के लिए वह अपने पति और बच्चों तक कीपरवाह नहीं करती। इसकी पढी-लिखी बेटी, जो बेकारी से मुक्ति पाने के लिए जूझ रही है, यह सब पसंद नहीं करती पर माँ की अपने को बड़ा दिखाने की कुंठा इतनी जबरदस्त है कि घर में पहले से पड़ी चीजों उन्हें उपहार देने के लिए बेचैन रहती है। 'नतीजा' कहानी में सेक्स का धंधा को करने वाली औरतों की बच्चियों के एक होम का चित्रण किया गया है, जिसकी संचालिका का अपना सर्वस्व समर्पित करने के बाद भी उसकी किसी स्कूल की भर्ती परीक्षाओं में असफलता को लेकर निराशा ही हाथ लगी।लेखिका ने संचालिका की हताशा का बहुत अच्छा अंकन किया है।

'बेईमानी' में प्लेटफार्म पर रूकी ट्रेनों में पत्रिकाएँ बेचने वाले हॉकरों की मजबूरियों का चित्रण किया गया है।

'जगदम्बा बागू गाँव आ रहे है' में संकलित कहानियों में 'सौदा', 'अभी भी', 'ताशमहल', 'प्रमोशन' आदि कहानियों में केवल पढी-लिखी कामकाजी महिलाओं की दशा की ही स्थिति नहीं दशीयी है अपितु अनपढ नारी भी अपनी अस्मिता के प्रति सचेत और जागरूक है तथा रूढ़ संस्कारों और अवमूल्यन को झटक कर सुस्पष्ट रूप से इस अवधि की कहानियों में भी हाशियों पर जीने वाले पात्रों का चित्रण किया है।

उनकी कहानियों में ईर्ष्या-द्वेष और स्वार्थपूर्ण पारिवारिक संबंधों का चित्रण बहुत उत्तम रीति से व्यक्त किया गया है। इस कहानी में भी 'बाघ' अपनी केन्द्रीयता में सांप्रदायिकता विरोधी कहानी व्यक्त की गई है।

इस प्रकार चित्रा मद्गल की कहानियों में हर जगह नारी की बेदर्दी, बेरहमी से सौंद कर चलने वाला, उसकी मजबूरियों का उठाने वाला, उनके प्रतिभा-कौशल को और कुंठित करने वाला, उसे देवी कहकर विभूषित करने और बाद में मार-पीट करने वाला पुरुष वर्ग का ही व्यक्ति होता है। इतना ही नहीं परिवार, बच्चों और घर की तमाम जिम्मेदारियों का निर्वहन करने वाली घरेलू और कामकाजी महिलाएँ घर की आर्थिक बैसाखी पकड़ने वाली नारी वर्तमान में ही अपने अस्तित्व की सार्थकता को प्रश्नचिन्ह के रूप में ही अंकित कर पा रही है।

नारी अस्तित्व की लड़ाई में वे कई कारण है कि सारे दुश्चक्र प्राय: नारी के साथ ही जुड़ते हैं और हर बार उसे ही दोषी ठहराया जाता है। कोई भी अन्य जीवधारी इतना पापी नहीं, जितनी नारी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. चित्रामुद्गल नतीजा-सेक्स का धंधा करने वाली
2. चित्रामुद्गल नासिरा शर्मा-पत्थर की गली
3. चित्रामुद्गल कृष्णा अग्निहोत्री- रमकलियां
4. चित्रामुद्गल लेन दलित परिवार का चित्रण पृ 137
5. चित्रामुद्गल भूख- बंबई की झुग्गी झोपडियो के जीवन चरित्र की कथा
6. चित्रामुद्गल अपने अपने गिरेबान- बंबई के अभिजात समाज की कथा पृ 159
7. चित्रामुद्गल फातिमा बाई कोठे पर नहीं रहती-वेश्या जीवन की कथा पृ 196
8. चित्रामुद्गल जगदम्मा बाबू गांव आ रहे है- 1982, पृ 380
9. चित्रामुद्गल एक काली एक सफेद-पति-पत्नी के संबंधों की कथा
10. चित्रामुद्गल ऐंटिक पीस- मध्यम वर्ग के परिवेश की कथा

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

A Conceptual Exploration of E-Marketing Strategies: Implications for Organizational Promotion and Consumer Response Analysis

Dr. Prashant Gurudev* Dr. Shaizal Batra**

***Assistant Professor (Management) Corporate Institute of Management, Hataikheda, Patel Nagar, Bhopal (M.P.) INDIA**

****Professor (Management)Technocrats Institute of Technology – MBA, Anand Nagar, Bhopal (M.P.) INDIA**

Abstract : The primary aim of this conceptual study is to examine four major instruments of e-marketing—namely mobile marketing, email marketing, web-based marketing, and marketing via social networking platforms—and evaluate their distinct impacts on consumer perception. This paper seeks to explore how these tools are strategically deployed for promotional activities and how they shape customer engagement and response. The study further delves into the structural and perceptual differences among these digital marketing approaches by synthesizing recent literature. Particular attention is given to emerging themes such as consumer trust, adaptation to mobile platforms, satisfaction levels, and permission-based email marketing. In addition, it identifies key success factors across different digital channels, offering insight into their effectiveness in shaping consumer behaviour in the contemporary digital landscape.
Keywords: E-marketing, digital promotion, mobile advertising, permission-based email marketing, web-based marketing, social media marketing.

Introduction - The advent of the internet has profoundly transformed the global business landscape, redefining the way organizations interact with customers, deliver services, and create value. As we progress further into the twenty-first century, the shift from a goods-based economy to a knowledge- and service-driven economy is evident, with digital technologies playing a central role in driving innovation, productivity, and consumer engagement (Laudon & Traver, 2023). The internet has evolved beyond its original function as a communication tool, becoming a dynamic marketplace that enables seamless global transactions, personalized marketing, and real-time customer interaction.

Rapid technological advancement—especially in areas such as mobile computing, social networking, and cloud-based platforms—has ushered in an era of unprecedented connectivity. Digital tools such as smartphones, email, and social media platforms like Facebook, LinkedIn, and X (formerly Twitter) have become integral to daily life, influencing not only individual behaviour but also organizational strategies (Statista, 2024). This growing dependency on digital interfaces highlights the importance of e-marketing as a critical component of contemporary business models, necessitating a deeper exploration of how these tools influence consumer perception and organizational performance.

E-marketing involves the promotion and distribution of goods, services, information, and even ideas through the Internet and other electronic platforms (El-Gohary, 2010). A recurring challenge in the academic literature is the inconsistent and often interchangeable use of terms such as e-marketing, e-commerce, e-business, and Internet marketing. Many researchers conflate these concepts, despite their distinct definitions and scopes.

E-marketing specifically refers to the application of digital technologies—including websites, email, mobile phones, intranet, and extranet—to achieve marketing objectives. In contrast, Internet marketing has a narrower focus, typically limited to online tools such as websites (World Wide Web) and email communications. Meanwhile, e-commerce encompasses all transactions conducted electronically, and e-business extends even further to include the integration of digital technology into all business functions, not just marketing (Chaffey & Ellis-Chadwick, 2022).

Strategically, e-marketing integrates digital utilities with communication technologies to foster stronger relationships between organizations and their customers within a virtual environment. The digital medium allows firms to reach a broader audience, reduce operational costs, and personalize offerings at scale. Notably, Sheth and Sharma (2005) draw a historical parallel between e-marketing and the agricultural era, where localized purchasing behaviours were dominant. In the digital age, despite geographical

boundaries, consumers similarly favour convenience, leading to a resurgence of customer-centric marketing models—albeit now enhanced by technology and at a reduced cost.

E-marketing aims to improve marketing efficiency and effectiveness by incorporating information technology into traditional practices. It not only enhances customer value but also facilitates a more dynamic understanding of market trends, consumer behaviour, and service quality. From an e-business perspective, digital marketing has redefined traditional business models, positioning electronic tools and platforms at the heart of customer engagement and value creation (Tehrani & Majid Nik, 2008).

Internet Marketing: The period from April 1995 to April 2000 is widely recognized as the "dot-com boom"—an era marked by rapid growth and experimentation in Internet-based business models. During this five-year span, a surge of companies adopted the Internet as their primary channel for engaging with consumers and sought public funding through initial public offerings (IPOs). However, while some firms thrived, many failed due to unsustainable business models or inadequate digital strategies. This turbulent phase has since garnered significant academic and industry attention, leading to a growing body of scholarly work on digital business evolution (Kalyanam & McIntyre, 2002).

The rise of Internet marketing, as a subset of e-marketing, introduced new digital touchpoints for firms, such as websites, online advertisements, and auction-based platforms like eBay. These innovations reshaped marketing practices and laid the foundation for customer-centric digital marketing. A key outcome of this era was the evolution of Customer Relationship Management (CRM) systems, which began leveraging personalization and data analytics to enhance consumer engagement more efficiently than ever before.

Despite its potential, Internet marketing does not follow a one-size-fits-all approach. Studies have shown both successes and failures in this domain, emphasizing the importance of strategic alignment, innovation, and risk tolerance. Managers are often challenged by the absence of a universally proven roadmap to ensure online success. Investing in digital infrastructure and reconfiguring distribution channels require substantial commitment and readiness to adapt (Kiang, Raghu, & Shang, 2000).

Product characteristics also play a pivotal role in determining the success of Internet marketing strategies. Not all products are equally suited for digital channels, and understanding how to position and promote offerings online is crucial. Although many organizations now use the Internet for promotional activities, relatively few have fully integrated digital technologies into their core business operations. This gap continues to present both a challenge and an opportunity in the evolving landscape of digital commerce. Internet marketing plays a vital role in contemporary business strategies and can broadly be understood through three major functional categories: it acts as a communication medium, a platform for conducting transactions, and a channel for distributing products and services. These functions provide firms with distinctive advantages by integrating transactional processes with digital logistics, thus enhancing operational efficiency and market outreach (Kiang, Raghu, & Shang, 2000).

The rise of Internet marketing has not only revolutionized how businesses operate but has also significantly transformed consumer behaviour. Digital technologies allow firms to better understand and respond to customer needs in real time, offering convenience and flexibility. The ability to engage consumers beyond the limitations of time and location, while simultaneously reducing operational costs by eliminating intermediaries, has redefined marketing practices (Sheth & Sharma, 2005). Internet-enabled marketing eliminates unnecessary transaction layers, resulting in leaner and more responsive business models.

In today's competitive environment, integrating internet capabilities with corporate strategies has become a critical success factor. This integration has shifted the emphasis away from traditional marketing channels toward more dynamic, digital-first models. Through internet platforms, companies can disseminate detailed product information, establish direct communication with customers, create brand awareness, and enable seamless online transactions. Moreover, businesses can now distribute both physical and digital products more efficiently and with greater global reach. The digitalization of product offerings adds another layer of value, especially in the service sector, where scalability and personalization are crucial.

Additionally, significant transformations have occurred in the areas of direct marketing, strategic partnerships, and advanced digital marketing techniques. These domains have been enhanced by the innovative potential of internet technologies, allowing for greater levels of customization, geographic expansion, and the implementation of data-driven decision-making models. The internet also fosters innovation by enabling businesses to test and deploy new ideas quickly, reaching broader markets and tailoring offerings to specific consumer segments.

As firms navigate an increasingly complex and digital market environment, the internet has proven to be a powerful platform for developing new business models and strategic approaches. According to Varadarajan and Yadav (2002), leveraging digital tools is no longer optional but essential for maintaining competitiveness. Businesses now use e-marketing not only for operational enhancement but also to create new value propositions and customer engagement strategies.

This evolving digital landscape is shaped by several key marketing tools, most notably mobile marketing, email marketing, web-based strategies, and marketing via social networking platforms. Each of these tools offers distinct

advantages and functions, which are explored in detail in the following sections, offering insight into how organizations can effectively deploy them for strategic growth.

Mobile Marketing: In today's digital age, mobile phones have evolved into essential tools that transcend age and generation, gaining widespread global acceptance in a remarkably short span of time. Mobile devices have become integral to daily life, especially among youth and teenagers, who heavily rely on them for communication and entertainment. This widespread adoption presents significant opportunities for marketers to enhance brand awareness and foster strong connections with consumers. The mobile phone, now a central utility in consumers' lives, offers firms a powerful platform to reach and engage with their target audience anytime and anywhere (Persaud & Azhar, 2012).

Mobile marketing has progressed beyond traditional one-way communication to become a dynamic, two-way or even multi-way communication channel. This transformation enables businesses to interact directly with customers, enhancing personalization and responsiveness. With the rapid rise in mobile application development and increasing smartphone penetration, companies now leverage mobile technology not just to boost profits but also to strengthen their competitive edge (Shankar & Balasubramanian, 2009).

Research by Barnes and Scornavacca (2004) highlighted that early mobile marketing strategies were primarily based on SMS or "push" marketing tactics. However, the advent of smartphones has expanded the scope for more sophisticated marketing techniques. Smart devices equipped with advanced features such as e-wallet integration and RFID capabilities enable innovative marketing approaches that were not possible with earlier mobile technologies. Applications like Amazon's price-check tools and similar platforms enhance the delivery of product information and significantly raise consumer awareness.

Furthermore, smartphones like iPhones and BlackBerrys offer a wide array of functionalities beyond basic calling and texting, including high-resolution screens, web browsing, app usage, gaming, and more. These features provide marketers with a rich toolkit to deliver interactive content and encourage consumers to engage more frequently with mobile platforms (Persaud & Azhar, 2012). By utilizing these technological advancements, businesses can develop more personalized, relevant, and timely marketing campaigns that resonate with consumers in an increasingly mobile-first world.

1. Value of Customers in the Mobile Context: In any business environment, understanding the value of customers is fundamental, and organizations continuously seek to identify and meet their customers' needs. Within the mobile marketing context, the value perceived by consumers is greatly influenced by the device's ability to remain constantly connected—often referred to as an "always-on" or "always-with-you" medium. This constant connectivity enhances consumers' perceptions of value by enabling real-time access and responsiveness (Varnali & Toker, 2010). While earlier research emphasized the convenience and utility aspects of mobile devices, more recent studies suggest that hedonic or enjoyment factors—such as entertainment and engagement—may have a stronger influence on consumer behaviour, especially among individuals with limited experience or lower trust in mobile technologies (Kim, Chan, & Gupta, 2007; Bauer et al., 2005).

2. Attitudes Toward Mobile Marketing: Customer attitudes toward mobile marketing are shaped by a combination of perceived benefits, personal involvement, and the entertainment value offered by mobile ads. Although consumers generally express interest in mobile advertisements when they are relevant or offer tangible benefits such as discounts, their overall attitude is also significantly influenced by the credibility of the information provided. For instance, Haghirian and Inoue (2007) found that in the Japanese market, credibility plays a decisive role in shaping attitudes toward mobile advertisements. Additionally, research by Okazaki (2004) identified a strong correlation between consumer attitudes and their behavioural intentions regarding mobile usage for commercial purposes. Chowdhury, Parvin, and colleagues (2006) observed that price-sensitive consumers, particularly those without fixed-line Internet access, displayed more positive attitudes toward mobile promotions, especially when they included discount coupons or banking-related functionalities.

3. Adoption and Acceptance of Mobile Marketing: The adoption and acceptance of mobile marketing are influenced by various psychological, demographic, and social factors. Literature in this domain frequently explores how individual predispositions, perceptions, and attitudes affect the likelihood of accepting mobile marketing messages (Varnali & Toker, 2010). Demographic attributes such as age, gender, and cultural orientation have also been found to significantly influence mobile marketing receptivity (Bigné, Ruiz, & Sanz, 2007; Hanley, Becker, & Martinsen, 2006; Suoranta & Mattila, 2004). Social influence and cultural dimensions also play pivotal roles in this context, with studies showing that collectivist cultures may respond differently to mobile advertising compared to individualistic cultures (Kim & Zhang, 2010; Gressgard & Stensaker, 2006; Sultan & Rohm, 2008). Harvey Tanakinjal et al. (2010) conceptualized mobile marketing as the "third screen"—following television and the Internet—highlighting its growing importance in enhancing consumer awareness and providing targeted messaging capabilities that surpass those of traditional mass media.

4. The Role of Trust in Mobile Marketing: Despite the numerous advantages of mobile marketing, trust remains a central barrier to user acceptance and loyalty. Many users

remain sceptical about mobile messages, especially unsolicited advertisements, and express discomfort with sharing personal information through mobile platforms (Varnali & Toker, 2010). Karjaluoto, Lehto, and colleagues (2008) identified trust as a key factor influencing users' attitudes toward mobile advertising, directly affecting their intention to engage with such content. Similarly, Zhang and Mao (2008) reported that psychological comfort and perceived ease of use significantly shape trust in mobile advertisements. Furthermore, trust has been shown to directly and indirectly influence users' behavioural intentions to accept SMS-based advertising, especially when it enhances the perceived usefulness of the message content.

5. Mobile Marketing and Customer Satisfaction: While the topics of mobile service adoption and acceptance have been extensively studied, customer satisfaction and loyalty in the mobile marketing context have received comparatively less attention. According to Varnali and Toker (2010), there is a growing relationship between perceived customer value and the use of multimedia services integrated within mobile platforms. Factors such as emotional engagement and perceived value from MMS (Multimedia Messaging Service) content can significantly enhance user satisfaction and foster long-term customer commitment. Additionally, the quality of mobile marketing content—including aspects such as connection reliability, relevance of context, interactivity, and clarity of message—has a considerable impact on user satisfaction (Chae et al., 2002).

Interestingly, while website aesthetics and design have been shown to strongly influence e-loyalty in e-commerce environments (Cyr, Head, & Ivanov, 2006), the role of visual and interface design in mobile marketing has received limited research focus. Yet, the attractiveness and clarity of mobile messages could have a similar effect in mobile contexts, and future studies may benefit from exploring this under-researched dimension. As mobile interfaces evolve, the importance of user-centric and visually appealing designs will likely become more central to driving engagement and satisfaction.

Email Marketing: Email remains the most utilized medium in the internet environment. While users access the internet for various purposes such as web surfing, information gathering, or social communication through chats and forums, it is email that stands out in terms of usage frequency and potential for business applications. Email marketing, as a powerful tool within the domain of digital marketing, is highly regarded for its cost-effectiveness and its ability to directly connect businesses with consumers.

Companies consistently aim to build and maintain databases of customer emails, recognizing the value of this channel for data collection and customer engagement. Email, as a source of both information dissemination and data generation, holds a unique place in marketing strategy. Robert Hicks, President of DM Groups in Aurora, emphasized the significance of email marketing by stating: *"The ability to track information and define mailings is phenomenal. The ability to define potential consumers is fantastic. You deliver an email message in a couple of hours instead of a couple of weeks, at a CPM of $75 per page, and get a 5 percent response in 72 hours. The cheapest carrier route is about $145, and the results aren't comparable."*

Academic studies support the strategic use of user groups in email marketing. These are self-selected segments of consumers sharing common interests—such as travel, automobiles, or fashion—which can be targeted with personalized email campaigns. Researchers note that targeting such interest-based communities enhances the relevance and appeal of marketing messages, thereby increasing their effectiveness (Jackson and DeCormier, 1999).

Recognized as one of the most cost-effective tools in internet marketing, email marketing consistently demonstrates a high return on investment. Studies show that, even as early as the year 2000, approximately 61% of U.S. companies were already employing email as a core marketing tactic, with usage growing steadily over time (Jackson and DeCormier, 1999; Rettie, 2002; eMarketer, 2000).

Email marketing can be defined as a form of direct marketing that uses electronic mail to communicate commercial messages to a target audience. It plays a significant role in enhancing service quality, improving brand awareness, and ultimately increasing profitability. It is not only one of the earliest tools in e-marketing history but also remains among the most impactful.

Further supporting this, Mostafa Raad and Norizan Mohd Yeassen (2010) highlight that email marketing is among the best advertising techniques for online businesses. As the number of email users continues to rise exponentially, this form of marketing becomes even more attractive. Their study emphasizes email marketing as a low-cost, high-impact method, accessible to most businesses and capable of delivering substantial returns when implemented effectively.

Perspectives on Email Marketing: Numerous scholars have discussed the concept and advantages of email marketing. Jackson and DeCormier (1999) describe it as a permitted relationship between marketers and consumers, enabling meaningful and effective communication. Similarly, Wreden (1999) refers to email marketing as the "Internet's killer application", emphasizing its adaptability, targeting potential, and traceability—features that allow marketers to tailor content specifically to individual consumers and monitor engagement effectively.

Peppers and Rogers (2000) highlight email marketing as an invaluable tool in internet marketing, noting its high response rate and low distribution cost. These two compelling attributes have quickly elevated email marketing

to one of the most preferred and widely used digital marketing strategies. Rettie (2002) further supports this view, suggesting that email marketing is highly effective in helping businesses gain and sustain competitive advantage. Within this context, the concept of "Permission Marketing" has emerged—a pivotal shift in direct marketing practices. This concept centres around obtaining explicit consent from consumers before sending them promotional messages. Milne and Gordon (1993) explain that permission marketing creates a mutually beneficial interaction, where customers willingly engage with marketing content, and firms, in turn, can gain deeper insights into individual consumer interests and preferences.

Sterne and Priore (2000) reinforce this perspective by identifying customer permission as the key to understanding consumer behaviour. Through permission marketing, companies can classify their audience based on interests and tailor communication to meet specific informational and emotional needs. This segmentation enhances customer satisfaction and improves marketing efficiency.

1. E-mail Marketing and Permission Issues: A critical aspect of e-mail marketing, as highlighted in the literature, revolves around the concept of permission-based communication, often referred to as "opt-in" marketing. This issue is frequently discussed in contrast to the problem of spam emails, which are unsolicited and often perceived negatively by consumers (Sterne and Priore, 2000; Raad, Yeassen et al., 2010).

Spam messages are defined as untargeted, irrelevant, and intrusive communications that ignore the preferences of the recipient (Mehta and Sivadas, 1995). Turban, King et al. (2004) further clarify that spam emails disregard the recipients' interests, making them inappropriate and unwelcome. In many cases, these messages invade individuals' privacy, thereby harming a firm's brand reputation and undermining the overall effectiveness of its marketing strategy (Wright and Bolfing, 2001; Rettie, 2002). In contrast, opt-in emails are those that are sent only after obtaining explicit permission from the recipient. According to Sullivan and De Leeuw (2003), sending emails without prior consent is considered unsocial and unethical, reducing the perceived legitimacy of the marketing message. Unlike spam, opt-in emails are more likely to be accepted and engaged with, since they align with the customer's expressed interests and consent (Raad, Yeassen et al., 2010).

Some studies also emphasize that spam emails can trigger penalties from Internet Service Providers (ISPs), which may lead to the blocking of the sender's domain or email account, thus severely damaging a firm's digital outreach efforts. However, by employing permission-based strategies, businesses not only secure the recipient's trust and acceptance but also ensure that their messages are delivered to a willing and relevant audience, enhancing the value and effectiveness of their email campaigns (Sullivan and De Leeuw, 2003).

2. Success Factors in E-mail Marketing: E-mail marketing has been recognized for its cost-effectiveness and high responsiveness, which makes it a preferred tool in internet marketing strategies. The short turnaround time—from the moment an email is sent to the moment a response is received—has been praised as one of its defining advantages (Rettie, 2002).

With the evolution of internet technologies such as web pages, HTML content, multimedia integration (audio and video), marketers have gained innovative tools to design compelling and interactive email campaigns. These features enhance engagement and elevate the overall user experience, contributing to the growing success of email as a marketing medium.

However, Rosenspan (2001) observed that the growing volume of email traffic might negatively impact customer responsiveness, making content quality and strategy even more crucial for success.

Ruth Rettie (2002), in a study conducted in the UK involving 30 email campaigns, tested and supported several hypotheses related to the factors that contribute to the success of email marketing. The findings from this research identify the following key factors:

i. Subject Line Relevance: A well-crafted and engaging subject line significantly increases the likelihood of customer response.

ii. Incentives: Emails offering clear and attractive incentives tend to receive higher engagement rates.

iii. Email Length: There is an inverse relationship between email length and response rate—shorter emails generally yield better results.

iv. Use of Images: Emails containing relevant and appealing images tend to receive higher levels of engagement.

These insights provide valuable guidelines for businesses aiming to design impactful and consumer-centric email marketing campaigns.

Web Marketing: The history of using the web for commercial purposes and the application of digital technology to enhance marketing capabilities dates back to 1994. Numerous studies and evidences suggest that organizations began adopting this emerging phenomenon to enhance their core competencies and maintain a competitive edge in the market (Adam, Bednall et al., 2011). Another study highlights that since the commercialization of the internet in 1997, marketers increasingly recognized its potential as a cost-effective and powerful medium compared to traditional marketing platforms. The internet offered a global reach and the ability to disseminate information and multimedia content quickly and efficiently. Moreover, beyond its communication capabilities, the internet provided digital marketers with managerial tools to handle customer data and implement electronic Customer Relationship Management (e-CRM) systems, making it an

invaluable tool for strategic marketing and research (Fagerstrøm and Ghinea, 2010).

Ivie and McKay (2011) emphasized the central role of information in the digital age, stating that in the contemporary era, information has become a crucial asset. To meet this growing demand, many websites have evolved into multi-faceted platforms, catering to the needs of individuals, businesses, and marketers alike by offering access to data, content, and communication tools (Ivie, McKay et al., 2011).

From the perspective of web developers and digital technologists, internet marketing begins with building a robust and scalable website. The goal is to attract and manage web traffic generated by visitors, customers, and potential clients of a business, brand, or organization (Frost and Strauss, 2001). Furthermore, in terms of advertising and promotional strategies, the internet serves as a platform for brand building and generating web traffic through targeted and well-crafted advertising messages (Breakenridge, 2001).

1. **Banner Ads:** A banner ad is a graphical form of online advertisement that appears on web pages. According to literature, banner ads have historically been one of the most popular and widely used formats in online advertising. However, their usage in the United States declined from 56% in 1998 to 19% in 2004. Most banners are hyperlinked, directing users to the advertiser's website (Hamborg, Bruns et al., 2011).

Scholars have categorized banners based on their size, placement, and dynamic characteristics—including animated, rotating, or static types. The effectiveness of banner ads has been analysed through various advertising models (Rossiter & Bellman, 1999; Vakratsas & Ambler, 1999). These models generally emphasize the following principles for banner advertisement impact:

i. Advertisers design and structure the content of the advertisement.
ii. Consumers process some or all of the ad content.
iii. The long-term communication effect includes the formation of brand awareness, facilitation of purchasing decisions, and shaping attitudes and intentions.

Despite these goals, literature often reports limited positive effects of banners. Observations indicate that even large and colourful banners are often ignored by users actively browsing websites. This phenomenon, known as "banner blindness," refers to users subconsciously disregarding banners, which reduces their motivational appeal and overall effectiveness.

Conversely, other studies highlight positive aspects of banner advertising. For instance, animated banners tend to generate higher recall and better user response compared to static banners. Likewise, larger banners demonstrate a higher click-through rate than smaller ones. Fast-moving banners, in particular, are more likely to attract user attention. Researchers have concluded that task-related selective attention plays a critical role in the effectiveness of banner advertisements (Rossiter & Bellman, 1999).

2. **Pop-up Ads:** Pop-up ads are another form of digital advertisement that appears in a separate window or box, often overlaid on the main webpage content. According to Bahr and Ford (2011), pop-ups are considered a standard procedure in Human-Computer Interaction (HCI), especially useful for guiding non-expert online users toward making decisions. They also noted that many industries have developed a wide variety of commercial pop-up tools, offering consumers the option to either block or permit pop-up communications. Their findings suggest that the size of a pop-up is not a significant factor in its effectiveness, and can be excluded from design considerations.

Kim et al. (2009) introduced the concept of the pop-up store, a temporary retail opportunity for brands and designers to showcase their products within a short timeframe, either online or offline. These pop-up formats have become an innovative marketing strategy, often used to generate demand for unsold products or launch new items. Pop-up stores can create urgency and exclusivity, drawing customer interest through their limited-time nature (Kim, Fiore et al., 2010).

Manchanda et al. (2006) examined pop-up promotions and found that they possess specific characteristics that can enhance customer responsiveness in online environments. These features include interactivity, immediacy, and the ability to capture the user's full attention.

In her 2006 thesis, Anna Bergqvist explored the use of pop-up retail and described its advantages. She emphasized the temporary and mobile nature of pop-up stores, noting that they often appear and disappear quickly, requiring marketers to effectively grab customer attention within a limited time window. According to Bergqvist and Leinoff (2011), pop-ups serve as a form of guerrilla marketing, ideal for introducing new products and generating buzz. These stores can be both event-driven and mobile, providing flexibility and novelty.

Moreover, Kim et al. (2009) argued that the temporary nature of pop-up environments appeals to customers seeking unique and engaging experiences. Pop-ups offer interactive spaces where consumers can engage directly with brand representatives, share feedback, and even participate in the branding process. This makes them valuable not only for data collection, but also for building strong brand-consumer relationships.

Social Network and Social Media Marketing: Social media marketing, according to Berthon et al. (2012), represents a significant opportunity for both customer-to-customer (C2C) and firm-to-customer (F2C) interactions. It comprises various formats including text, images, pictures, videos, and social networking platforms. Initially, text was the first form of social media, primarily appearing in blogs. Berthon et al. also identify key platforms such as

Twitter, which allows users to read and post short messages (tweets), and Flickr, which enables users to share photos and accompanying messages in image formats (Berthon, Pitt et al., 2012).

Kaplan and Haenlein (2010) define social media as "a group of internet-based applications that build on the ideological and technological foundations of Web 2.0, and that allow the creation and exchange of user-generated content." Hanna, Rohm, and Crittenden (2011) add that social media possesses the real power to connect individuals and entities such as firms, organizations, and communities, thereby simplifying communication and information dissemination. Due to their ease of access and widespread popularity, social media platforms have become essential tools for businesses seeking to interact with, reach, and establish relationships with large audiences (Brogan, 2010).

These platforms shift communication dynamics from "one-to-many" to "many-to-many" dialogues, transforming consumers from passive content recipients to active content producers. This transformation allows individuals to become part of a firm's communicative ecosystem, enhancing brand awareness, promoting offerings, and helping organizations better understand customer needs and preferences (Berthon, Pitt et al., 2012).

Weinberg (2009) describes social media marketing as the process of promoting websites, products, or services through specific social media services. He argues that compared to traditional marketing approaches, social media marketing has a greater potential for customer outreach. While some scholars limit social media marketing to activities on social networking sites (SNSs), Weinberg opposes this narrow definition. He contends that it includes the use of all public social software platforms as communication tools and defines it as:

"A marketing approach that utilizes public social software platforms as a communication channel with customers. The main objective is to foster bidirectional communication." (Weinberg, 2009)

Social media includes a broad array of online applications designed to facilitate user interaction, foster collaboration, and promote content sharing. These media take many forms, such as weblogs, wikis, podcasts, videos, and images. Given the rapid global expansion of social media, businesses are increasingly integrating these platforms into their operations. From a business perspective, social media is leveraged not just for user engagement but also as a strategic marketing and advertising tool aimed at enhancing brand performance in the consumer's mind.

As commercial messages via social media are generally more effective and cost-efficient than traditional advertising, it offers firms a highly valuable platform for business evaluation and growth (Kim and Ko, 2011). Furthermore, Kim et al. (2010) emphasize that social media has a substantial impact on brand reputation. According to their study, one-third of the surveyed individuals stated that blog posts about a product or brand significantly influence their perception. Moreover, 36% of respondents believed that brands with a blog are viewed more positively compared to those without one (Kim, Kim et al., 2010).

According to DEI Worldwide (2008), 70% of consumers use social media to gather information, and 49% of these users base their purchasing decisions on the information obtained through these platforms. Additionally, 60% expressed a preference for acquiring product knowledge via social media. The study also noted that 45% of people who accessed product details through social media engaged in word-of-mouth promotion. The findings conclude that companies not integrating social media into their online marketing strategies are missing critical opportunities to connect with consumers and understand their needs—insights that could be leveraged for strategic business growth (Kim and Ko, 2011).

Conclusion: The emergence of social networks and the rapid evolution of digital technologies have fundamentally transformed the landscape of marketing. Social media marketing, as explored in this study, has become a dynamic and indispensable tool in modern marketing strategies, offering unprecedented opportunities for businesses to connect, engage, and co-create value with their target audiences. Drawing upon multiple scholarly contributions, it is evident that social media does not merely serve as a promotional platform but rather acts as a comprehensive ecosystem that enhances customer interaction, builds brand image, and contributes significantly to business performance.

Berthon et al. (2012) emphasized that social media encompasses various forms of content such as text, images, and videos that facilitate both customer-to-customer and firm-to-customer engagement. This participatory culture fosters an environment where users are not just passive recipients of messages but active creators and distributors of content. Platforms like Twitter and Flickr illustrate how social networks facilitate the exchange of short-form and image-based content, offering brands an avenue for personalized, real-time interactions. In this context, the traditional marketing funnel is redefined—brands are no longer solely broadcasters but rather collaborators in a shared communication space.

Further, Kaplan and Haenlein's (2010) definition of social media as a product of Web 2.0 emphasizes its role in enabling user-generated content. This shift has profound implications for brand management, as consumer opinions, feedback, and shared experiences influence brand perception more significantly than corporate messaging. Hanna, Rohm et al. (2011) reinforce the idea that social media connects all stakeholders—individuals, firms, and communities—enhancing transparency, accessibility, and trust in brand-consumer relationships.

This paradigm shift from one-way communication to bidirectional or even multidirectional dialogues, as noted by Brogan (2010), transforms how businesses operate and interact. It enables a deeper understanding of consumer behaviour, preferences, and sentiments, which are crucial in a highly competitive and fragmented market environment. Through social media, companies can not only promote products and services but also gain insights into customer feedback and expectations, allowing for real-time service improvements and customer-centric innovation.

Weinberg (2009) offers a broader perspective on social media marketing, emphasizing its integration across various platforms beyond social networking sites. His definition of social media marketing as a means to foster two-way communication highlights its strategic role in relationship marketing. Unlike conventional marketing, which is often linear and impersonal, social media marketing enables brands to listen, respond, and engage with their audience in a continuous loop, thereby creating lasting customer loyalty.

Additionally, Kim and Ko (2011) highlighted the potential of social media in enhancing brand reputation and visibility. Their research, along with supporting statistics from DEI Worldwide (2008), underscores the tangible impact of social media on consumer decision-making. For instance, a significant portion of consumers rely on social media platforms to seek product information, evaluate options, and ultimately make purchase decisions. Moreover, consumers' tendency to share their experiences through social media contributes to organic word-of-mouth marketing, amplifying a brand's reach without additional costs.

The findings clearly reveal that social media has transitioned from being an optional marketing channel to a strategic necessity. Organizations that ignore the power of social media risk becoming irrelevant in the eyes of digitally savvy consumers. The empirical data provided by Kim et al. (2010) further supports this claim, showing that brands with an active blog or social presence are perceived more positively, which ultimately enhances brand equity and trust.

From a managerial perspective, this evolution compels business leaders to reconsider their digital marketing strategies. Social media is not merely a promotional tool but an integral part of organizational communication, customer service, market research, and product development. The cost-effectiveness and vast outreach potential of social media make it a preferred medium, especially for small and medium-sized enterprises striving for visibility and growth in competitive markets.

In conclusion, social media marketing, rooted in Web 2.0 technologies, represents a revolutionary shift in how businesses and consumers interact. It empowers firms to become part of the consumer's digital lifestyle, fostering trust, dialogue, and loyalty. As highlighted throughout this study, firms that effectively integrate social media into their marketing strategies can enhance brand awareness, influence purchase decisions, and build long-term consumer relationships. Those that fail to adapt may find themselves at a competitive disadvantage in an increasingly digital and interconnected global marketplace. Future research and practice should therefore focus on maximizing the strategic benefits of social media, investing in content creation, engagement strategies, and continuous performance analysis to sustain success in the digital era.

References:-

1. Adam, S. et al. (2011). The web in marketing: information cue usage in two commercial domains, Promaco Conventions.
2. Ainin, S., & Noor Ismawati, J. (2003). E-commerce Stimuli and Practices in Malaysia. PACIS 2003 Proceedings, 60. https://aisel.aisnet.org/pacis2003/60
3. Bahr, G. S., & Ford, R. A. (2011). How and why pop-ups don't work: Pop-up prompted eye movements, user affect and decision making. Computers in Human Behaviour 27(2): 776-783.http://dx.doi.org/10.1016/j.chb.2010.10.030
4. Barnes, S. J., & Scornavacca, E. (2004). Mobile marketing: the role of permission and acceptance. InternationalJournal of Mobile Communications, 2(2), 128-139. http://dx.doi.org/10.1504/IJMC.2004.004663
5. Bauer, H. H. et al. (2005). Driving consumer acceptance of mobile marketing: a theoretical framework andempirical study. Journal of electronic commerce research, 6(3), 181-192.
6. Bergqvist, A., & Leinoff, L. (2011). Once you pop your customer will shop–A study about pop-up stores.
7. Berthon, P. R. et al. (2012). Marketing meets Web 2.0, social media, and creative consumers: Implications forinternational marketing strategy. Business Horizons. http://dx.doi.org/10.1016/j.bushor.2012.01.007
8. Bigné, E. et al. (2007). Key drivers of mobile commerce adoption an exploratory study of Spanish mobile users. Journal of Theoretical and Applied Electronic Commerce Research, 2(2), 48-60.
9. Breakenridge, D. (2001). Cyberbranding: brand building in the digital economy. Upper Saddle River.
10. Brogan, C. (2010). Social media 101: Tactics and tips to develop your business online. Wiley. http://dx.doi.org/10.1002/9781118256138
11. Chae, M., Kim, J., Kim, H., & Ryu, H. (2002). Information quality for mobile Internet services: A theoretical model with empirical validation. Electronic Markets, 12(1), 38–46. https://doi.org/10.1080/101967802753433665
12. Chaffey, D., & Ellis-Chadwick, F. (2022). Digital marketing (8th ed.). Pearson Education Limited. ISBN: 9781292400969
13. Chowdhury, H. K. et al. (2006). Consumer attitude toward mobile advertising in an emerging market: An

empirical study. International Journal of Mobile Marketing, 1(2), 33-42.
14. Cyr, D., Head, M., & Ivanov, A. (2006). Design aesthetics leading to m-loyalty in mobile commerce. Information & Management, 43(8), 950–963. https://doi.org/10.1016/j.im.2006.08.009
15. El-Gohary, H. (2010). E-Marketing – A literature review from a small businesses perspective. International Journal of Business and Social Science, 1(1), 214–244.
16. Gressgård, L. J., & Stensaker, I. (2006). The mobile Internet: Diffusion patterns and socio-economic effects. Telematics and Informatics, 23(3), 251–265. https://doi.org/10.1016/j.tele.2005.10.002
17. Haghirian, P., & Inoue, A. (2007). Attitudes toward mobile advertising: A study of Japanese mobile phone users. International Journal of Mobile Marketing, 2(2), 48–66.
18. Hanley, M., Becker, M., & Martinsen, J. (2006). Factors influencing mobile advertising adoption: Will incentives motivate college students to accept mobile advertisements? International Journal of Mobile Marketing, 1(1), 50–58.
19. Kalyanam, K., & McIntyre, S. (2002). The E-marketing mix: A contribution of the e-tailing wars. Journal of the Academy of Marketing Science, 30(4), 487–499. https://doi.org/10.1177/009207002236924
20. Karjaluoto, H., Lehto, H., Lehtonen, T., & Munnukka, J. (2008). The role of digital channels in industrial marketing communications. Journal of Business & Industrial Marketing, 23(2), 108–117. https://doi.org/10.1108/08858620810850298
21. Kemp, S. (2024). Digital 2024: Global Overview Report. DataReportal. https://datareportal.com/reports/digital-2024-global-overview-report
22. Kiang, M. Y., Raghu, T. S., & Shang, K. H.-M. (2000). Marketing on the Internet — who can benefit from an online marketing approach? Decision Support Systems, 27(4), 383–393. https://doi.org/10.1016/S0167-9236(99)00062-7Kiang, M. Y., Raghu, T. S., & Shang, K. H.-M. (2000). Marketing on the Internet — Who can benefit from an online marketing approach? Decision Support Systems, 27(4), 383–393. https://doi.org/10.1016/S0167-9236(99)00062-7
23. Kim, H., Chan, H., & Gupta, S. (2007). Value-based adoption of mobile Internet: An empirical investigation. Decision Support Systems, 43(1), 111–126. https://doi.org/10.1016/j.dss.2005.05.009
24. Laudon, K. C., & Traver, C. G. (2023). E-commerce 2023: Business, technology, society (18th ed.). Pearson.
25. Okazaki, S. (2004). How do Japanese consumers perceive wireless ads? A multivariate analysis. International Journal of Advertising, 23(4), 429–454. https://doi.org/10.1080/02650487.2004.11072895
26. Raad, E., Chbeir, R., & Dipanda, A. (2010). User Profile Matching in Social Networks. In 2010 International Conference on Computer Systems and Applications (pp.11-18).IEEE.https://doi.org/10.1109/AICCSA.2010.5586965
27. Sheth, J. N., & Sharma, A. (2005). International e-marketing: Opportunities and issues. International Marketing Review, 22(6), 611–622. https://doi.org/10.1108/02651330510630249
28. Statista. (2024). Number of internet and social media users worldwide as of January 2024. Retrieved from https://www.statista.com/statistics/617136/digital-population-worldwide/
29. Sultan, F., & Rohm, A. J. (2008). How to market to generation Mobile. MIT Sloan Management Review, 49(4), 35–41.
30. Suoranta, M., & Mattila, M. (2004). Mobile banking and consumer behaviour: New insights into the diffusion pattern. Journal of Financial Services Marketing, 8(4), 354–366.https://doi.org/10.1057/palgrave.fsm.4770122
31. Tanakinjal, G. H., Deans, K. R., & Gray, B. J. (2010). Third screen communication and the adoption of mobile marketing: A Malaysia perspective. International Journal of Marketing Studies, 2(1), 36–47. https://doi.org/10.5539/ijms.v2n1p36
32. Tehrani, M. R., & Majid Nik, A. (2008). E-marketing: The new way of marketing. International Journal of Business Research, 8(4), 139–148.
33. Varadarajan, R., & Yadav, M. S. (2002). Marketing strategy and the Internet: An organizing framework. Journal of the Academy of Marketing Science, 30(4), 296–312. https://doi.org/10.1177/009207002236907
34. Varnali, K., & Toker, A. (2010). Mobile marketing research: The-state-of-the-art. International Journal of Information Management, 30(2), 144–151. https://doi.org/10.1016/j.ijinfomgt.2009.08.001
35. Zhang, J., & Mao, E. (2008). Understanding the acceptance of mobile SMS advertising among young Chinese consumers. Psychology & Marketing, 25(8), 787–805. https://doi.org/10.1002/mar.20239

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

The Critical Analysis of *the Forest of Enchantment* under the Ecological values of Indian Knowledge System

Dr. Sehba Jafri*

***Ph.D. (English) Vikram University, Ujjain (M.P.) INDIA**

Abstract : The Indian Knowledge System is not merely a system but it is a lifestyle chosen by Indian sages after a great research on life. These sages were the holy hermits who continuously worked on the temperament of human beings and selected a great life style which sooner converted into religion. It is great tradition of valuable knowledge which gives us moral lessons in every field life. It covers science, Arts, Literature, philosophy, conventional science. Chitra Banerjee Divakaruni in her *The Forest of Enchantments (2019)* has given a beautiful account of old Indian knowledge system which aims to carry forward the wisdom of Jnan, Vignan, and Jeevan Darshan to the next generation. The present paper is an attempt to criticize her descriptions of Indian Knowledge system through the Ecological perspective and highlight the practical utility of the noel in solving contemporary problems.
Keywords: Ram, Values, Sita, Forest, Perspective, Modern, Life, Ecological.

Introduction - Indian Knowledge System has ay rich texture of knowledge. Its fabrics are woven after a great observation of humanity which Indian civilization has designed with a great colour of values for a beautiful and astonishingly massive human body. Its intellectual stitching with a variety of skillful cutting of greatest manuscripts of the world has given him a body-shaping-look for every human body with a veil of well-documented heritage of texts. It is because of it universality, the Thinkers and Scholars of the whole world called this Land *Bharat Mata* where knowledge is not segmented by narrow walls but it flows throw small brooklets.

India has a long chain of Knowledge system like the holy river Ganges River. Since the the time of *Upanishads* to the time of *Aurobindo* India's knowledge is the outcome of life research. This knowledge system has a strong foundation in our culture, our philosophy, and the whole Indian spirituality. India has got it after the evolvement of thousands of years. It includes Yoga, Ayurveda,Vedanta, with Vedic sciences. It has such Knowledge universal appeal that it is still applicable in the modern world in several ways.

The specific thing about Indian System is its Sustainable living. It is based on the idea of *Vasudhaiva Kutumbakam*, means the whole world is one family. It emphasizes the interdependence of all beings to attain sustainable living practices including the idea of " live and let live" Considering environmental issues and the demand for natural resource conservation and preservation, these principles are getting more and more important.

The other remarkable thing about Indian Knowledge System is its base. It is based on the concept of Well-Being of humanity. The concept of *Yoga*, the concept of *Ashram* system the concept of *Brahammcharrya* and the concept of *Shalya Chikitsa* (Indian medical system known as Ayurveda) all are based on the well fare of humanity. It advocates for natural mending ways, personalized curatives, and a focus on forestallment and conservation of health.

India is a land in which knowledge was guided by Lord Krishna through the *Bhagwad Gita* and later it became the greatest means of liberation and self-purification. Chitra Divakaruni Banerjee has encompassed the beauty of Indian Knowledge system in her literature so skillfully that it has become an enlightened lamp that has continued unbroken. Chitralekha Banerjee is an Indian-born American female poet, author and thinker. By profession, she is a Professor of Writing at the Houston University. She is famous for her Creative Writing skills, her short story collections, her novels and her small documentaries. She has "American Book Award" in her account for her famous novel *Arrange Marriage. The Mistress of Spices* and *Sister of My Heart* are two other famous novels which expose her subtle sense of writing. Her famous novel *The Word Love* was so appreciated by the readers that it was adapted for cinematic genre.

The Forest of Enchainment by Diwakaruni is the retelling of "The Ramayana" from Sita's point of view. This time the book comes to the reader not as an epic but as world's greatest tragic love story in which the brilliant heroine Sita retells her vision about all the happening of Ramayan with a new outlook. The story of the novel follows the life of Sita and her sufferings with a new echo. Unlike the Sita who is merely a neglected character of Valmiki's masculine narrative, Sita of *The Forest of Enchantment* is the most significant female character of ancient Indian Literature who gives a voice to express her feminine experiences in a male-governed society. Bejerjee's *The Forest of Enchantment* also gives a justified attitude for some very individual female-characters of this Old Indian Myth who are often relegated and misunderstood by the world and hence, History kept them at the margin. They are surpanakha, kaikeyi, Mandodari and Manthara. The Writress gives them an awe inspiring aura by exploring the other face of their powerful commitment, their love, their dutifulness and their emotional attachments. The book, in this way, is all about women's struggle to retain autonomy in a world that privileges men but it is also a treasure house of Indian Ecological Values on the other hand. A close reading of the text unearths the varied facts regarding the ecological values of Indian Knowledge system taught by the author through the theme and the character of the novel.

Key Findings: The Book reveals Sitas connection with nature since starting. When the novel opens, we see her in jungle. Sita, in fact, is known for her time spent in the *Dandakaaranya* forest and later her captivity in Sri-Lanka where she was kept specifically in the Ashok Vatika with a helper Trijata, before being rescued by Rama. *The forest of enchantments* starts with the description of Sita's reading of the manuscript of "The Ramayana" which Valmiki shared in her ashram. Ashram surrounded by several trees, was her home during exile period and the trees were planted by her. Sita while going through the Ramayana was not satisfied by how Valmiki has collected and highlighted each detail, she felt upset and focused on the breeze comes from the mango, coconut and jackfruit trees which she had planted by herself to get rid of her mental agony. The forest here, becomes a sanctuary for Sita, a place where she can connect with her true self and find strength in nature's resilience.

When Sita was agitated on Valmiki and told that that he didn't capture what she went through when she was alone in the darkness under the sorrow tree. Valmiki suggested her to write her own story she felt. She started writing about her hope, her despair, her negotiations, her pain with a red colour ink. The ink, Banerjee describes in the novel, was red as menstrual blood also appeared to her as the color of the flowers near which she had sat while spending her painful time in the palace of the demon king Ravana. Here, we see, Banerjee portrays nature as a "healing green canopy," offering Sita solace and a sense of belonging after her exile.

The novel gives several examples of eco-friendly Indian Ladies through Sita's connection with Nature. Her voice un-mutes the voiceless green environment by her exuberant presence. At several palces, in the novel, we find Sita is the eco-centric. She use to tap the roots, cares the plants, and also use to walk barefoot on the grass in the garden as a normal feminist torchbearer of marginalized human and non-human figures at a time when hegemonic masculinity (anthropocentrism) governed Indian literature.

The novel divulges her ability to love to nature and overcome any challenge with resilience through her special bond with nature about whom plants use to say "She is truly a goddess who has appeared on earth to bless us." (Diwakaruni1) Valmiki's epic emphasizes on nature's prediction over the sorrows of Sita. Through nature's perception a reader can get the accounts of the feelings of Sita. While aligning the nature sita presents a socio- cultural set of beliefs, rules and regulations of that time, and leaves little space for modern female experiences.

The narrative also uncovers an innately harmonious relationship that exists between Sita and her green environment. Sita takes a walk in the garden before her marriage on daily basis. She talks to the flowers and also knows flower therapy. Her strange affinity with plants and nature gives her a distinct, earthly appeal with other-worldly qualities. While the paper primarily focuses on the environmental spectrum, it is also important to observe the above in the light of feminism since women are born with a 'stronger' biophilic inclination towards their natural surroundings.

During her exile period she goes for Yoga practice in a natural atmosphere of deep forest for her internal, physical, and spiritual well- being. The green and aerobic atmosphere to lower the stress not only enchants the readers but also fascinates them as if they are physically present in that forest of enchantment.

Sita chooses to live in the forest instead of living in the palace during Lanka days. Forest embraces all her hardships and she finds freedom and empowerment in the natural setting of forest. It promotes her internal health, and increases her general heartiness without luxuries food and levish life style. Sita, in this way, is portrayed as having a deep and innate connection with the natural world, drawn to the forest from a young age and finding healing and empowerment within its embrace. It is Sita's ecofeminis version who gets heal and becomes empower through the forest.

This paper primarily aims to investigate the innate spiritual relationship between women and nature through the approach of deep ecologism, an environmental philosophy. It advocates the necessity of replacing anthropocentrism with ecocentrism to avoid further ecological damage while allowing nature to heal naturally. A detailed character study of Sita reveals her transcendental

affinity with her natural environment, right from her mysterious birth to adulthood.

- **Re-imagining Sita:** The novel re-imagines Sita's story from her perspective, highlighting her strength, resilience, and connection to nature.
- **Challenging Traditional Narratives:** The novel challenges traditional narratives of the Ramayana by focusing on Sita's perspective and her relationship with nature.

Spiritual Growth: Spiritual Growth perceptivity into the nature of reality, mindfulness, and the tone are handed by Indian knowledge systems like Vedanta, a philosophical frame grounded on the ancient books known as the Vedas. similar training give advice on tone- enhancement, tone-mindfulness, and the pursuit of meaning and purpose, all of which are material in the ultramodern world where so numerous people are looking for lesser fulfillment.

Conclusion: Her nature is far removed from "shallow ecologism" because she views the world through an eco-centric lens and accepts that she is only a mere part of the larger natural environment. Thus, this paper is an integral study at present, as it brings to the surface the influence of the deep ecology movement in The Forest of Enchantments and of Sita's ineradicable relationship with nature. A Feminist Ecocentric Retelling Divakaruni captures the myriad struggles faced by Sita and the other displaced female characters in The Forest of Enchantments (2019).

Referances:-

1. Butler, Judith. Gender Trouble. Routledge,1990
2. Divakaruni, Chitra Banerjee. The Forest of Enchant-ment. HarperCollins Publishers, 2019.
3. Hopkins, Callison. " Cultural Feminism Overview and Examples", Study.com, August 5,2022.
4. https://study.com/learn/lesson/cultural
5. Lewis, John Johnson. "Cultural Feminism What is the essence of being a woman?". Thought co, Dotdash Meredith

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

वर्तमान परिदृश्य में टमाटर कृषि का भौगोलिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन (धार जिले के विशेष संदर्भ में)

डॉ. रानी वास्केल*

*सहायक प्राध्यापक (भूगोल) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारत में कृषि एक प्रमुख आर्थिक गतिविधि है, जो देश की खाद्य सुरक्षा और अर्थव्यवस्था की रीढ़ मानी जाती है। बागवानी कृषि के अंतर्गत सब्जियों की खेती में टमाटर का विशेष स्थान है क्योंकि यह देशभर में व्यापक रूप से उगाई जाने वाली और उपभोग की जाने वाली प्रमुख व्यावसायिक नकदी फसलों में से एक है। टमाटर का उपयोग ताजे रूप में भोजन के साथ-साथ विभिन्न उत्पादों, जैसे कि सॉस, कैचअप, प्यूरी, सूप, जूस और अचार आदि उत्पाद के निर्माण में किया जाता है। इसकी उच्च बाजार मांग के कारण यह किसानों के लिए एक लाभकारी व्यावसायिक फसल होती है।

मध्य प्रदेश देश के सर्वाधिक टमाटर उत्पादक राज्यों में से प्रमुख है, और अध्ययन क्षेत्र धार जिला इसमें महत्वपूर्ण योगदान देता है। धार जिले में टमाटर की खेती व्यापक रूप से की जाती है, क्योंकि अध्ययन क्षेत्र की जलवायु और मिट्टी टमाटर फसल के लिए अनुकूल मानी जाती है। जिले के कई कृषक पारंपरिक और आधुनिक कृषि तकनीकों का मिश्रण उपयोग कर टमाटर के उत्पादन को बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। हालाँकि, खेती से जुड़ी कई चुनौतियाँ, जैसे कि जलवायु परिवर्तन, कीट एवं रोग प्रबंधन, बाजार मूल्य अस्थिरता, सिंचाई सुविधाओं के अभाव, और भंडारण की समस्याएँ कृषको के लिए चिंतन का विषय बनी हुई हैं।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय : अध्ययन क्षेत्र धार जिला मध्यप्रदेश के दक्षिण पश्चिम भाग में स्थित है भौगोलिक दृष्टि से धार जिला $22^0 42'$ से $23^0 10'$ उत्तरी अक्षांश $75^0 00'$ से $75^0 26'$ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। धार जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 8153 वर्ग कि.मी है। धार जिला एक प्रमुख कृषि क्षेत्र है, जहाँ मुख्य रूप से सोयाबीन, गेहूँ, चना, मक्का और विभिन्न सब्जियों की खेती की जाती है। जिले में टमाटर की खेती का विशेष महत्व है क्योंकि यह किसानों को कम समय में अधिक आर्थिक लाभ प्रदाय करने वाली फसल है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

(क) अध्ययन की आवश्यकता: धार जिले में टमाटर की कृषि व्यापक रूप से की जाती है, लेकिन जलवायु परिवर्तन, बाजार की अस्थिरता, और सिंचाई समस्याओं के कारण किसानों को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों को समझने और उनके समाधान खोजने के लिए यह अध्ययन आवश्यक है।

जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में उतार-चढ़ाव और अनियमित वर्षा से फसल उत्पादन प्रभावित हो रहा है। सिंचाई के लिए उपलब्ध संसाधनों की स्थिति और जल संरक्षण तकनीकों का मूल्यांकन करना जरुरी है। टमाटर के मूल्य में उतार-चढ़ाव होता हैं, जिससे कृषकों हानि होती है। किसानों में ड्रिप सिंचाई, जैविक खेती, मल्चिंग और संरक्षित खेती जैसी आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने की जागरूकता का अभाव है। यह जानना भी आवश्यक है कि शासन द्वारा क्रियान्वित योजनाएँ किसानों तक पहुँच पा रही हैं या नहीं।

(ख) शोध का महत्व: इस अध्ययन से धार जिले के कृषकों आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने की प्रेरणा मिलेगी, जिससे कृषि उत्पादन क्षमता और गुणवत्ता में सरात्मक परिवर्तन व सुधार होगा। यह बाजार की प्रतिस्पर्धा को जानने - समझने और मूल्य स्थिरता बनाए रखने में सहायता करेगा। इसके अलावा यह अध्ययन रोजगार के नए अवसर प्रदाय करने में सहायक होगा, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सृदढ़ होगी। नीति निर्धारकों को भी इससे आवश्यक सूचनाएँ मिलेंगी, जिससे वे कृषकों की समस्याओं समाधान करने के लिए उपयुक्त नीतियाँ निर्मित कर सकेंगे।

साहित्य का पुनरावलोकन :

1. पाटीदार, आर. (2015), ने अपने अध्ययन में धार जिले में टमाटर उत्पादन की स्थिति का विश्लेषण किया है। अध्ययन में जलवायु, मृदा और सिंचाई व्यवस्था का टमाटर उत्पादन पर प्रभाव का आकलन किया गया है। उन्होंने बताया कि धार जिले की जलवायु टमाटर उत्पादन के लिए अनुकूल है, लेकिन विपणन व्यवस्था की समस्याएं किसानों की आय को प्रभावित करती हैं।
2. चौहान, एस. (2018) ने अपने अध्ययन में टमाटर उत्पादन को जलवायु, मृदा की उर्वरता और आधुनिक कृषि तकनीकों के संदर्भ में परखा है। धार जिले में टमाटर उत्पादन के लिए जलवायु और सिंचाई की भूमिका पर विशेष ध्यान दिया गया है। लेख में विपणन समस्याओं और फसल के उचित मूल्य न मिलने की समस्या को भी रेखांकित किया गया है।
3. शर्मा, डी. (2019) अध्ययन में लेखक ने धार जिले के टमाटर किसानों की आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन किया है। अध्ययन में बताया गया है कि

टमाटर उत्पादन से किसानों की आय में वृद्धि हुई है, लेकिन मूल्य अस्थिरता और खराब विपणन प्रणाली के कारण किसान अपेक्षित लाभ प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं।

4. पटेल, एम. (2020) अध्ययन में धार जिले में जलवायु परिवर्तन का टमाटर उत्पादन पर प्रभाव का अध्ययन किया है। अध्ययन में पाया गया कि तापमान वृद्धि और अनियमित वर्षा के कारण फसल उत्पादन प्रभावित हो रहा है। उन्होंने टमाटर उत्पादन में जैविक खाद और सिंचाई तकनीकों के महत्व को रेखांकित किया है।

5. वर्मा, के. (2021) अध्ययन में धार जिले में टमाटर की फसल में कृषि तकनीकों, बाजार व्यवस्था और किसानों की समस्याओं का गहन अध्ययन किया है। उन्होंने सुझाव दिया है कि किसानों को फसल बीमा, उचित विपणन प्रणाली और वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाने की आवश्यकता है।

6. जोशी, पी. (2022) अध्ययन में धार जिले में टमाटर की फसल का विपणन और बाजार मूल्य का विश्लेषण किया गया है। लेखक ने बताया कि टमाटर उत्पादकों को बिचौलियों के कारण उचित मूल्य नहीं मिल पाता, जिससे उनकी आय प्रभावित होती है।

7. सक्सेना, आर. (2023) अध्ययन में धार जिले में टमाटर उत्पादन को जलवायु कारकों के संदर्भ में परखा है। अध्ययन में वर्षा, तापमान और मिट्टी की गुणवत्ता का उत्पादन पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। उन्होंने सिंचाई और उर्वरकों की भूमिका को भी महत्वपूर्ण बताया है।

8. चौधरी, एम. (2024) अध्ययन में धार जिले में टमाटर उत्पादन की आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया है। उन्होंने बताया कि टमाटर उत्पादन किसानों के लिए लाभदायक है, लेकिन विपणन व्यवस्था कमजोर होने के कारण किसान को नुकसान उठाना पड़ता है।

9. यादव, के. (2024) अध्ययन में धार जिले में जलवायु परिवर्तन का टमाटर उत्पादन पर प्रभाव का अध्ययन किया है। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि जलवायु परिवर्तन के कारण फसल की गुणवत्ता और उत्पादकता प्रभावित हो रही है।

10. मिश्रा, एन. (2024) इस अध्ययन में धार जिले में टमाटर उत्पादन की भविष्य संभावनाओं का मूल्यांकन किया गया है। लेखक ने सुझाव दिया है कि जैविक खेती और ड्रिप सिंचाई तकनीक अपनाकर उत्पादन क्षमता बढ़ाई जा सकती है।

शोध प्रविधि – अध्ययन मुख्यत: प्राथमिक द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक आँकड़ों का संग्रहण समुह चर्चा एवं अवलोकन के माध्यम से किया गया है। अध्ययन हेतु द्वितीयक आँकड़ों का भी उपयोग किया गया है, जो कि संबंधित पुस्तकों एवं रिपार्ट से प्राप्त किए गए हैं।

टमाटर कृषि का भौगोलिक परिप्रेक्ष्य : टमाटर न केवल एक महत्वपूर्ण सब्जी फसल है, बल्कि यह पोषण का एक समृद्ध स्रोत भी है। इसमें विटामिन ए, विटामिन सी, प्रोटीन, पोटैशियम और एंटीऑक्सिडेंट्स पाए जाते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी होते हैं। टमाटर में मौजूद लाइकोपीन नामक तत्व शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में मदद करता है और इसे हृदय रोगों से बचाव के लिए भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

कृषि अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, टमाटर की कृषि कृषकों के लिए एक प्रमुख आय स्रोत प्रदान करती है। इसकी खेती से जुड़े विभिन्न चरणों (बीज उत्पादन, रोपण, सिंचाई, उर्वरक प्रबंधन, कटाई, पैकिंग और विपणन) में अधिक श्रमिकों को रोजगार मिलता है। इसके अलावा, टमाटर प्रसंस्करण उद्योग भी बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार प्रदान करता है, जिससे यह फसल ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक विकास में भी योगदान देती है।

(क) जलवायु एवं मृदा आवश्यकताएँ – जलवायु प्रभाव - टमाटर की खेती के लिए 21-27^0 का तापमान आदर्श होता है। यदि तापमान 35^0 से अधिक होता है, तो फूल और फल गिरने लगते हैं, जिससे उत्पादन कम हो जाता है। ठंडे तापमान में भी टमाटर की वृद्धि प्रभावित होती है और पाला पड़ने पर पौधे नष्ट हो सकते हैं। मानसून की अनिश्चितता और असमय वर्षा फसल को नुकसान पहुँचाती है।

मृदा विशेषताएँ – टमाटर की खेती के लिए अच्छी जल निकासी वाली दोमट या बुलई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है। धार जिले में मुख्य रूप से काली मिट्टी पाई जाती है, जो नमी धारण करने की क्षमता रखती है। यह मिट्टी सिंचाई के अभाव में भी फसल को जीवित रख सकती है, लेकिन अत्यधिक जलभराव होने पर यह जड़ों के सड़ने का कारण निर्मित करती है।

(ख) सिंचाई एवं जल स्रोत – धार जिले में टमाटर की खेती के लिए नहर, ट्यूबवेल, कुएँ और तालाबों से सिंचाई की जाती है। वर्तमान के वर्षों में ड्रिप सिंचाई प्रणाली लोकप्रिय हो रही है, जिससे पानी की बचत होती है और पौधों को आवश्यकतानुसार नमी मिलती है। हालाँकि, जिले में जल संकट एक बड़ी समस्या है, विशेष रूप से ग्रीष्म ऋतु में जब जल स्रोत सूख जाते हैं। जल संरक्षण तकनीकों, जैसे कि वर्षा जल संचयन और बाँध निर्माण, को अपनाने की आवश्यकता है ताकि सिंचाई की समस्या को कम किया जा सके।

(ग) उत्पादन एवं क्षेत्र वितरण – धार जिले में टमाटर उत्पादन मुख्य रूप से धार, मनावर, बदनावर, सरदारपुर, कुक्षी, धरमपुरी और गंधवानी क्षेत्रों में किया जाता है। ये क्षेत्र जलवायु और मिट्टी की स्थिति के कारण टमाटर की खेती के लिए उपयुक्त माने जाते हैं। किसान टमाटर के साथ अन्य फसलें, जैसे कि मिर्च, बैंगन और फूलगोभी, उगाते हैं ताकि जोखिम को कम किया जा सके।

टमाटर कृषि का प्रभाव – अध्ययन क्षेत्र में टमाटर कृषि उत्पादन के फल स्वरुप कई विभिन्न आर्थिक व सामाजिक प्रभाव दृष्टिगत हुए है।

आर्थिक प्रभाव – जिले में टमाटर की खेती का किसानों, कृषि श्रमिकों, व्यापारियों और संपूर्ण ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर व्यापक आर्थिक प्रभाव पड़ता है। टमाटर एक नकदी फसल होने के कारण कृषकों की आय में वृद्धि करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह न केवल प्रत्यक्ष रूप से किसानों की आय बढ़ाता है, बल्कि कृषि से जुड़े अन्य क्षेत्रों, जैसे कि श्रम, विपणन, परिवहन और प्रसंस्करण उद्योगों पर भी सकारात्मक प्रभाव डालता है।

1. किसानों की आय में वृद्धि – टमाटर एक उच्च मूल्य वाली सब्जी है, जिसका बाजार मूल्य अन्य परंपरागत फसलों (जैसे गेहूँ और मक्का) की तुलना में अधिक होता है। टमाटर की खेती करने वाले कृषक अपेक्षाकृत कम समय (60-90 दिन) में अच्छी आय अर्जित कर सकते हैं।

2. उत्पादन लागत और लाभ – टमाटर की खेती में बीज, उर्वरक, कीटनाशक दवाईया, श्रम और सिंचाई जैसी लागतें समिलित होती हैं।

यदि लगभग प्रति हेक्टेयर 200-250 क्विंटल उत्पादन होता है और बाजार में टमाटर का मूल्य रू10-रू 50 प्रति किलोग्राम के मध्य रहता है, तो किसान एक सीजन में लाखों रुपये की आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। उचित विपणन और भंडारण की सुविधा होने पर किसान अधिक मुनाफा प्राप्त सकते हैं।

3. आय का असमान वितरण – छोटे और मध्यम किसानों की तुलना में बड़े किसान अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं, क्योंकि उनके पास बेहतर संसाधन (जैसे ड्रिप सिंचाई, आधुनिक कृषि उपकरण, कोल्ड स्टोरेज की सुविधा) उपलब्ध होते हैं।

छोटे किसान अधिक उत्पादन होने की स्थिति में बाजार मूल्य गिरने से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं, जिससे उनकी आय में भारी गिरावट आ सकती है।

4. कृषि श्रमिकों को रोजगार के अवसर – टमाटर की खेती में श्रम-प्रधान गतिविधियाँ शामिल होती हैं, जैसे कि खेत की तैयारी, रोपाई, सिंचाई, कटाई, छंटाई, पैकिंग और परिवहन। इन सभी गतिविधियों के कारण सर्वाधिक कृषि श्रमिकों को रोजगार का अवसर प्राप्त होता है।

रोजगार – टमाटर की खेती में लगभग 30-40 श्रमिक प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है, जो ग्रामीण बेरोजगारों को रोजगार का अवसर प्रदान करती है।

महिलाओं की भागीदारी – कटाई और छंटाई के कार्यों में महिलाओं की अधिक भागीदारी होती है, जिससे उनके परिवार की आय में वृद्धि होती है। मौसमी रोजगार - टमाटर उत्पादन की अवधि के दौरान दैनिक वेतनभोगी श्रमिकों को भी रोजगार के अवसर मिलते हैं, जिससे उनके जीवन स्तर में वृद्धि एवं सुधार होता है।

5. विपणन और व्यापार से जुड़े प्रभाव – टमाटर का व्यापार स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर होता है, जिससे कई व्यापारी, थोक विक्रेता और खुदरा विक्रेता आर्थिक रूप से लाभान्वित होते हैं।

स्थानीय मंडियाँ – धार जिले के टमाटर मुख्य रूप से इंदौर, उज्जैन, रतलाम जिलो, गुजरात और महाराष्ट्र राज्य की मंडियों में विक्रय किये जाते हैं।

मध्यस्थों की भूमिका – अधिकांश किसानों को प्रत्यक्ष ग्राहकों से जोड़ने की बजाय, कई बिचौलियों द्वारा टमाटर खरीदा और बेचा जाता है। इससे किसानों को उचित मूल्य नहीं मिल पाता और उनका लाभ कम हो जाता है।

ई-नाम (e-NAM) और ऑनलाइन व्यापार – राष्ट्रीय कृषि बाजार (e-NAM) जैसी डिजिटल पहल से किसानों को प्रत्यक्ष रुप से बाजार से जोड़ने में सहायत मिल रही है, जिससे पारदर्शिता बढ़ रही है और किसानों को अधिक लाभ मिल रहा है।

6. प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन उद्योगों पर प्रभाव – टमाटर प्रसंस्करण उद्योग किसानों की आय बढ़ाने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रसंस्करण उद्योग – धार जिले में बड़े पैमाने पर टमाटर प्रसंस्करण की सुविधा सीमित है, लेकिन यदि टमाटर से सॉस, कैचअप, प्यूरी, जूस और अन्य उत्पाद बनाए जाएँ, तो किसानों को अधिक लाभ मिल सकता है।

नवाचार और स्टार्टअप्स – यदि स्थानीय स्तर पर टमाटर प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित की जाती हैं, तो यह नए व्यवसायों और स्टार्टअप्स को बढ़ावा दे सकता है, जिससे अधिक रोजगार उत्पन्न होंगे।

सामाजिक प्रभाव – टमाटर की खेती केवल आर्थिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण समाज में अनेक सामाजिक बदलावों का कारण भी बन रही है। धार जिले में टमाटर की बढ़ती खेती ने रोजगार, जीवन स्तर, शिक्षा, महिलाओं की भागीदारी, प्रवासन, और ग्रामीण संरचना में कई बदलाव लाए हैं। इन सामाजिक प्रभावों को निम्नलिखित बिंदुओं में विस्तृत रूप से समझा जा सकता है :

1. ग्रामीण रोजगार एवं सामाजिक जीवन स्तर में परिवर्तन व सुधार- टमाटर की खेती ने धार जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर प्रदान किए हैं। पारंपरिक रूप से यहाँ के लोग मुख्य रूप से गेहूँ, सोयाबीन और मक्का जैसी फसलों की खेती पर निर्भर थे, लेकिन टमाटर की व्यावसायिक खेती ने श्रमिकों के लिए भी अधिक कार्य उपलब्ध कराया है जिससे व्यतियों के जीवन स्तर में सकारात्मक परिवर्तन दृष्टिगत हुआ है।

2. विभिन्न स्तरों पर रोजगार सृजन – टमाटर की खेती में कई चरण होते हैं, जिससे रोजगार के अवसर मिलते है जो इस प्रकार है।

बुवाई एवं रोपाई – खेतों की तैयारी, पौधों की रोपाई एवं उनकी देखभाल के लिए श्रमिकों की आवश्यकता होती है।

सिंचाई एवं खाद प्रबंधन – नियमित रूप से सिंचाई एवं उर्वरक कीटनाशक छिड़काव के लिए श्रमिक कार्यरत होते हैं।

कटाई एवं संग्रहण – टमाटर की फसल को सावधानीपूर्वक तोड़ने और इकट्ठा करने के लिए बड़ी संख्या में श्रमिकों की आवश्यकता होती है।

पैकेजिंग एवं परिवहन – टमाटर को स्थानीय और बाहरी बाजारों में पहुँचाने के लिए पैकिंग और लोडिंग के कार्य में कई लोगों को रोजगार मिलता है।

इस प्रकार, टमाटर की खेती से केवल किसान ही नहीं, बल्कि कृषि श्रमिक, व्यापारी, ट्रांसपोर्टर और अन्य व्यवसायों से जुड़े व्यक्ति भी लाभान्वित हो रहे हैं। इससे ग्रामीण समुदायों की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन हुआ है, और उनके सामाजिक जीवन स्तर में सकारात्मक बदलाव आए हैं।

3. महिलाओं की भागीदारी एवं सशक्तिकरण – पारंपरिक रूप से कृषि कार्यों में महिलाओं की भूमिका सीमित थी, लेकिन टमाटर की खेती में महिलाओं की भागीदारी तेजी से वृद्धि हुई है।

(क) महिलाओं की सहभागिता में वृद्धि - खेतों में श्रम योगदान महिलाएँ टमाटर की रोपाई, कटाई, सफाई और पैकेजिंग में सक्रिय रूप से सहभागिता करती हैं।

घरेलू आधारित प्रसंस्करण – कई महिलाएँ टमाटर से अचार, सॉस, कैचअप और अन्य घरेलू उत्पाद बनाकर अतिरिक्त आय अर्जित कर रही हैं।

महिला स्वयं सहायता समूह – कुछ स्थानों पर महिला स्वयं सहायता समूह बनाए गए हैं, जो मिलकर टमाटर के व्यापार और विपणन में कार्य कर रहे हैं।

(ख) महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता – महिलाओं की आय में वृद्धि होने से वे परिवार के वित्तीय आय सम्बधी निर्णयों में अधिक योगदान देने लगी हैं। इससे वे शिक्षा, स्वास्थ्य और घरेलू आवश्यकताओं पर स्वतंत्र रूप से खर्च कर सकती हैं। टमाटर की खेती ने ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने का अवसर दिया है, जिससे उनका सामाजिक सशक्तिकरण हुआ है। जो की सकारात्मक परिवर्तन परिलक्षित होता है।

4. प्रवासन में कमी एवं ग्रामीण विकास – पहले, धार जिले के कई ग्रामीण व्यक्ति रोजगार की तलाश में शहरों की ओर प्रवास करते थे, लेकिन टमाटर की खेती ने गाँवों में ही रोजगार के अवसर पैदा कर दिए हैं।

(क) प्रवासन में कमी – स्थानीय स्तर पर रोजगार- अब ग्रामीण श्रमिकों को रोजगार के लिए शहर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, क्योंकि उन्हें अपने गाँव में ही काम मिल रहा है।

स्थिर आजीविका के अवसर – टमाटर की खेती ने कई किसानों को आत्मनिर्भर बनाया है, जिससे वे अपने गाँव में ही रहकर अच्छी आमदनी प्राप्त कर रहे हैं।

परिवारों का पुन: संगठित होना – कई परिवार, जो पहले शहरों में काम करने के लिए बँट गए थे, अब एक साथ गाँव में रहकर खेती कर रहे हैं।

(ख) ग्रामीण संरचना में सुधार

गाँवों में बुनियादी सुविधाओं का विकास – टमाटर की खेती से आय बढ़ने के कारण लोग अपने घरों को सुधार रहे हैं, जिससे गाँवों की संरचना विकसित हो रही है।

बाजार एवं परिवहन सुविधाओं में सुधार – टमाटर की खेती के बढ़ने से स्थानीय बाजारों का विस्तार हुआ है और सड़कें व परिवहन सुविधाएँ बेहतर हुई हैं।

5. खान-पान एवं पोषण स्तर में सुधार – टमाटर पोषण युक्त से भरपूर होता है और यह ग्रामीण/षहरी व्यक्तियों के आहार का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। टमाटर की उपलब्धता बढ़ने से गाँवों में पोषण स्तर में परिवर्तन व सुधार देखा गया है।

(क) स्वास्थ्य पर प्रभाव

विटामिन और खनिजों की आपूर्ति – टमाटर विटामिन, प्रोटिन और एंटीऑक्सिडेंट से भरपूर होता है, जो लोगों के स्वास्थ्य में सुधार करता है।

प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि – नियमित रूप से टमाटर का सेवन करने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, जिससे लोग बीमारियों से सुरक्षित रहते हैं।

स्वास्थ्य जागरूकता में वृद्धि – टमाटर से बने उत्पादों की खपत बढ़ने से लोगों में स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता में वृद्धि हुई है।

6. सांस्कृतिक और सामाजिक बदलाव – टमाटर की खेती के बढ़ने से ग्रामीण समाज में सकारात्मक सामाजिक बदलाव आए हैं।

(क) कृषि उत्सवों और मेलों का आयोजन

कृषि मेलों का आयोजन – सरकार और विभिन्न संगठनों द्वारा कृषि मेले आयोजित किए जाते हैं, जहाँ किसान नई तकनीकों के बारे में शिक्षण व जानकारी प्राप्त करते हैं।

सामाजिक सहयोग व मेलजोल में वृद्धि – किसान एक-दूसरे के साथ सहयोग और समन्वय करके सामूहिक खेती और व्यापार की दिशा में प्रग्रति कर रहे हैं।

(ख) पारंपरिक कृषि से आधुनिक कृषि तकनीक की ओर अग्रसर – अब किसान परंपरागत कृषि तरीकों के स्थान पर आधुनिक तकनीकों को उपयोग कर रहे हैं। ड्रिप सिंचाई, जैविक खेती, मल्चिंग, और संरक्षित खेती जैसी विधियों के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। इससे न केवल टमाटर कृषि उत्पादन बढ़ रहा है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिल रहा है।

चुनौतियाँ एवं समाधान – अध्ययन क्षेत्र में अनिश्चित वर्षा, ओलावृष्टि, गर्मी और ठंड के कारण कृषि उत्पादन प्रभावित होता है। कीट एवं रोग कारण झुलसा रोग, तना गलन रोग और सफेद मक्खी जैसी समस्याएँ फसल को हानि पहुँचाती हैं।

अधिक उत्पादन होने पर टमाटर के मूल्य कम हो जाते हैं, जिससे किसानों को नुकसान होता है। कोल्ड स्टोरेज की कमी के कारण टमाटर जल्दी खराब हो जाते हैं और किसानों को मजबूरी में न्यून मूल्य पर फसल बेचनी पड़ती है।

संभावित समाधान –

कृषि तकनीकी सुधार एवं परिवर्तन – ग्रीनहाउस और पॉलीहाउस तकनीक अपनाकर जलवायु प्रभाव को कम किया जा सकता है। सरकारी योजनाएँ – राष्ट्रीय बागवानी मिशन (NHM) और प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY) के माध्यम से किसानों को सब्सिडी दी जा रही है। संगठित विपणन प्रणाली – कृषक उत्पादक संगठन (FPO) और e-NAM प्लेटफॉर्म के माध्यम से किसान अपनी फसल का उचित मूल्य प्राप्त कर सकते हैं।

निष्कर्ष – धार जिले में टमाटर की खेती का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि यह किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सहायक है। जिले की जलवायु और मिट्टी टमाटर उत्पादन के लिए अनुकूल है, लेकिन वर्तमान के वर्षों में जलवायु परिवर्तन, असमय वर्षा, सूखा, और कीट-रोगों की बढ़ती समस्या ने टमाटर की उत्पादकता को प्रभावित किया है।

इसके अतिरिक्त, विपणन प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है। किसानों को बिचौलियों पर निर्भर होना पड़ता है, जिससे वे अपनी फसल का उचित मूल्य प्राप्त नहीं कर पाते। अत्यधिक उत्पादन की स्थिति में टमाटर की मूल्य बहुत कम हो जाती हैं, जिससे किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है। भंडारण और प्रसंस्करण सुविधाओं के अभाव के कारण किसान जल्दबाजी में अपनी उपज कम मूल्य पर विक्रय करने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

हालाँकि, तकनीकी कृषि नवाचारों जैसे कि ड्रिप सिंचाई, जैविक खेती, पॉलीहाउस खेती, और जल संरक्षण तकनीकों को उपयोग करने से इन चुनौतियों को कम किया जा सकता है। सरकारी योजनाओं का प्रभावी कार्यान्वयन और किसानों में जागरूकता वृद्धि कर अध्ययन क्षेत्र को आर्थिक विकास की ओर अग्रसर करने में सहायता मिलेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. शर्मा बी.एल.(2006) 'कृषि भूगोल', रस्तोगी पब्लिकेशन जयपुर।
2. अग्रवाल पी.के (2002) 'कृषि विपणन के क्षेत्र में सुधार की भारी दिशाए', कुरुक्षेत्र।
3. Census Hand book Dhar (M.P) 2011
4. Choudhary, R., Sharma, P., & Singh, A. (2018). *Irrigation techniques for sustainable agriculture*. Agricultural Research Journal, 45(3), 145-158.
5. Joshi, S., & Sharma, R. (2020). *Market fluctuations in horticulture crops: A case study of tomatoes*. Economic Review, 55(2), 92-107.
6. Patel, K., & Mehta, S. (2022). *Soil and climate conditions for tomato farming in India*. Indian Journal of Agriculture, 49(1), 20-35.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

The Seismic Growth of Atheism and Blasphemy in Nineteenth Century Literature

Parth Pachar*

***Research Scholar, Dr. Bhimrao Ambedkar Government College, Sri Ganganagar (Raj.) INDIA**

Abstract : This paper explores the intertwined evolution of atheism and blasphemy in nineteenth-century British literature, situating it within the broader sociopolitical and religious transformations of the era. It examines how growing secular movements challenged the hegemony of Christianity, particularly through influential figures like Thomas Paine, Richard Carlile, and Charles Bradlaugh. The paper analyses the philosophical roots of atheism—including the English mechanick tradition, nonconformist dissent, and the impact of the French Revolution—and how these traditions found literary expression in a growing body of freethought literature. It also investigates the role of personal disillusionment with religion, particularly through the lens of figures like Percy Shelley. Furthermore, the study addresses the legal and cultural consequences of these ideological shifts, highlighting the prosecutions for blasphemy as both a mechanism of suppression and a catalyst for reform. Drawing on a wide array of primary and secondary sources, the paper argues that literature not only mirrored the secularising tendencies of the century but also served as a powerful tool in challenging religious orthodoxy and reshaping public discourse.Ultimately, it reveals how literature became both a battleground and a beacon for the secular imagination.

Keywords: Atheism, Blasphemy, Nineteenth-Century Literature, Secularism, Victorian Britain, Freethought, Charles Bradlaugh, Thomas Paine, Religious Dissent, Legal History, Radicalism, Percy Shelley, Church-State Relations, Literary Criticism, Freedom of Expression.

Introduction - Literature and religion have always been closely intertwined across various cultures and regions. Both have been mutually dependent on one another as some of the earliest classic literary works also happen to be revered religious scriptures and stories. One of the similarities across all these cultures had been the suppression of ideas that disparaged said literary works. It was no different in the United Kingdom, and indeed most of Europe, where religious bodies enjoyed total dominance with severe repercussions for those that dared challenge its authority.

However, things did start to change as the ever growing scientific discoveries challenged the religious status quo. The nineteenth century in Europe was marked by higher levels of religious tolerance than in all the previous centuries. It was heralded by atheistic and blasphemousmovements, characterised by numerous campaigns against the Churches and religion. Within its existing laws, Britain established legislation to respect belief and personal principles. The Tolerance Act of 1688 was expanded in 1813 to allow Unitarians into the Parliament, Romans Catholics in 1832, and the Jews in 1858 (Conrad 1).

Atheism, which has been an anomaly until the last few decades, is in its simplest form, a lack of belief in the existence of deities. Despite not being widespread in antiquity, the idea of atheism has been around for several centuries. The origin of the word itself has pejorative connotations as it was used in a derogatory sense in ancient Greece. Primary and secondary literature have attempted to offer metanarrative description of the philosophical and theological origins and growth of the century's atheism. One of the earliest primary atheistic literature was Thomas Paine's Age of Reason which established the basis of nineteenth century atheism. The publication formed an inspiration to people who seek to challenge the church's authority and religion at large. By the 1820s, Richard Carlile rekindled banned atheist books such as Wooler's Black Dwarf and works of William Hone (Nash 80-83). In the 1860s, Charles Bradlaugh became the most successful Victorian atheist (Ilardo 29). He was elected to the parliament in 1880 and became Britain's first openly atheist Member of Parliament. Edward Rolye is perhaps the most notable nineteenth century historian of freethought and atheism. His two publications Victorian Infidels: The Origins of the British Secularist Movement 1791-1866 and Radicals, Secularists and Republicans: Popular Freethought in Britain, 1866-1915 gives an introduction to atheism and the actors in the movement. He also gives a narrative of

obstacles such as blasphemy-related prosecutions.

Despite the growing religious tolerance, most Western countries, including the UK, had long-established laws that indicated anyone who spoke or wrote against Christianity was punishable by the common law of blasphemy. In the early nineteenth century, the authorities used blasphemy laws as part of their arsenal against atheists, especially working and low-class citizens (De Lubac 53). Another important publication is The London Heretics by Warren Sylvester Smith which gives an account of the events in the nineteenth century and players that characterised atheism. David Berman details the growth of atheism and blasphemy in his book A History of Atheism in Britain: From Hobbes and Russell focusing on the reasons for disbelief against atheism. These publications are just a few examples of the wide array of British literature that describes the growth of atheism and blasphemy in the nineteenth century.

The Origin of Atheism : As early as the seventh century, most Western countries were religious states, with religion being the first pillar of custom (Mary 50). For example, in Britain, the culture was monotheism, a faith system claiming to possess the absolute truth and denies all other creeds (Robson 219). They, therefore, incorporated suppression strategies to other faiths in their doctrine. In this case, Christianity was the core doctrine of the British culture, thus creating a country that used the law to enforce religion. In other words, Western countries had formalised rules against different creeds, with freethinkers being punished for heresy and blasphemy (Robilliard 45). Empirical research has comprehensively described the origins of atheism and how it spread to different contexts.

David Nash, in his article The (Long) Nineteenth-Century, suggested that the lineage of atheism in Western countries originated from four different sources: English mechanick tradition; growth of nonconformity; inheritance from English intellectual doubt; and the influence of French revolution and its effects (212, 213). He further claims the four sources reflect all the ideas, movements, and atheist actions of nineteenth-century atheism. The first and the oldest ideology is the English mechanick tradition that had begun in the seventeenth century due to drastic religious and political disruptions. The upheavals were a consequence of the authorisation of the vernacular Bible, which enabled broad and private study and interpretations (Hill 14a). The tradition rejected sectarian beliefs and instead insisted on individual interpretations of the Bible and other radical religious and political sources (Hill, 87b). While some researchers have argued quasi-pantheists and neon-humanists existed as early as the sixteenth century, Hill (25a, 175a) confirms the mechanick tradition was a significant product of the seventeenth century. The consequences of the individualistic position became a fierce source of independence of thought and a motive to question religious dogmas and Christianity (Nash 213). Indeed, the strands of thinking became instrumental in the development and growth of atheism.

The second ideology for the origin of atheism was the consistent growth of nonconformity. The like-minded believers had started clustering together, forming congregations that seek not to cooperate with orthodoxy and authority. Nash indicates the communities often shared occult theological ideas and shared disbelief in religion and God (213). Amphlett described how the local secular groups actively participated in nonconformist groupings, sharing many elements and outlooks (225). Besides, many early British atheists and freethinkers had inherited the English intellectual doubt. It was a norm to describe the debt atheist owed to Epicurean philosophers, both from ancient Greece and modern European history. Notable Epicureans and influencers of the nineteenth atheism include Charles Blount, Peter Annet, and Jacob Ilive, whose publications had been condemned and burned in 1753 per the common hangman laws (Nash 213). These descents of freethinkers formed the gravitas, intellectual capability, and cosmopolitanism to develop atheism in the nineteenth century.

The final source of atheism, according to Nash, was the French Revolution and its effects. In France, the revolution had produced less anti-religious ideal socialism (Royle 170,171). However, in Britain, the reactions to French Revolution were characterised by stringent definitions of loyalism and radicalism. Loyalism sought to defend the Crown and the Church of England, while radicalism drew from the ideologies of French philosophies mixed with the new idea of natural lights. Thomas Paine (1737-1809) was the earliest Britain atheist to champion radicalism and crystallised the opposition towards the role and privileges of the Church of England (Nash 214). Therefore, the French Revolution had a critical role in the emergence and spread of atheism in Britain. While Nash has explicitly described the sources of atheism in Britain, his argument fails to construct a clear structure of the succession of leaders and the spread of atheism ideologies across European countries, especially in the early nineteenth century. Nash only mentions the later-century atheism movement, which used lectures, portfolios in newspapers, and cheap editions of atheism to pass the freethinking ideology to the next generation (213). Therefore, there is a need for more research on the early century atheism leaders and the spread of individualistic religious and political thinking in the early nineteenth century, which contributed to the growth of atheism ideologies throughout the century.

In his book History of Atheism in Britain: From Hobbes to Russell, Berman David explains the role of negative personal experiences with Christianity in the development of atheism (178). Berman gives an account of Shelley, a vastly studied and well-known atheist of the early nineteenth century. By the time Shelley entered Oxford in 1810, he was a deist — a person who believes in the existence of God but does not believe in the absolute power of the

Church (Dulles 26). However, from an early age, he had developed a personal principle that "belief is an involuntary passion" (Berman 179). Unlike other early atheists who had individual interpretations of the religion, Shelley's philosophy was particularly due to his early encounters with Christian radical values (Griffiths 25). In particular, the rejection by Harriet Grove — a woman he wanted to marry because he was a deist and not a Christian, deeply angered him. He uses the term 'moral criminal' to describe Harriet and her family (Jager 238). In December 1810, he began to declare his atheism in a letter to his friend Hogg, "Oh! I burn with impatience for the moment of Christianity's dissolution, it has injured me; I swear on the altar of perjured love to revenge myself on the hated cause" (Berman 181). His ultimate questioning of God's existence can be seen in a letter he wrote on 3 January 1811 where he declares, "Oh! Christianity when I pardon this last this severest of thy persecutions may God (if there be a God) blast me!" (Berman 181). In this case, Shelley's negative encounters with Christianity led him to hate the dominant religion of Britain and his declaration there is no God — a core element of atheism. He would later be expelled from Oxford University for a treatise written by him about his atheism.

Blasphemous Ideologies in the Growth of Atheism : The literature recognises several ideologies and atheists that influenced to the growth of atheism in the nineteenth century. On top of the epistemology is atheists' belief that morality was a cultural production and based on external and unverifiable force (Conrad 21). They particularly questioned the morality of the Bible if it approved of immorality such as prostitution and slavery. Atheism leaders such as Charles Bradlaugh and G.J. Holyoake insisted and spread the idea that morality emerged from an individual's desire for goodness. Historian F.B. Smith in his article The Atheist Mission, 1840-1900 emphasises on the atheists' claims that humans could not be moral by the religious commandment, but rather a person would be righteous if they sought goodness for their own sake (207). As a result, atheism placed humanity as the number one priority, so humans replaced God and religion at the centre of human values and morality (Quinault 325). Therefore, the concept of morality required individuals to be a practical atheists without the guidance of religious doctrines.

Moreover, the atheists spread the concept that Christians were immoral. Smith noted that the nineteenth British atheists had a strong belief that "Religion was immoral: it was destructive of personal happiness, intellectually false, anachronistic and in general socially pernicious" (Smith 207). Notable atheists such as Charles Bradlaugh campaigned against the realities of the American, French, and British societies, characterised by the suffering poor people and the rich who accumulated all the wealth and lived in comfort. For atheism, the inequalities in the culture served as evidence against God's element of Providence and involvement in people's lives. For instance, in 1865, Bradlaugh wrote a booklet which stated that "….Thelabourer may pray, but, if work be scant and wages low, he pines to death while praying…. Prayer to the Unknown for aid gives no strength to the prayer" (Bradlaugh 1-8). Annie Besant stated similar thoughts in her 1885 essay Is Christianity a Success. For instance, Annie notes the "heavens can be won by a prayer, when the earth is lost" (Besant 280). Beviremphasises Annie refers to a 'lost earth' due to the injustices in the world, such as inequality, as mentioned by Bradlaugh (72). The atheists, therefore, spread their ideologies to eliminate the belief in God as an obstacle to societal morality and progress.

The Growth of Atheists and Rise in Blasphemy : The description of the origin and growth of atheism in the nineteenth century is incomplete without analysing the succession of leaders who began and developed the concepts. Literature has often recognised atheists such as Thomas Paine, Richard Carlile, Robert Owen, Holyoake, and Charles Bradlaugh. These atheists played significant roles in the spread of atheism across Britain and represented different strands of atheism (Rectenwald 84). Arguably the most important pioneer of atheism was Thomas Paine, whose remarkable works and publications such as Common Sense, The American Crisis, Rights of Man, and The Age of Reason became incredibly influential to atheists and secular circles. In his analysis of Thomas Paine's life in the Rediscovering Thomas Paine, Richard Bernstein noted that his followers from the United States, France, and Britain had celebrated him as a courageous pioneer of human liberty (875). He was a great freethinker who sought to liberate humans from tyranny and any forms of ignorance and superstition (875). David Nash recognises the Age of Reason as the most important writings of Paine in the English atheist circles. This is notably because the publication contained emotive, musical, and concise condemnations of religious doctrines and its adverse effects on humanity. However, despite the Age of Reason and other Paine's being essential to the growth of atheism, the literature has a gap in analysing individual publications and elements in the works that contributed to the development and spread of atheism.

While the atheists played a critical role in the growth of atheism, they also led to the rise in blasphemy-related prosecutions. The law against blasphemy and blasphemous individuals in the West, especially England, Wales, and France, was a common-law offence for over three centuries (Hunter 68). However, the nineteenth century was at the height of the prosecutions. For instance, in the article Thomas Paine "The Age of Reason" Revisited, Prochaskanoted that Thomas Paine wrote the Age of Reason while in prison for his public condemnations of religious establishments (568). As early as 1814, brothers Daniel Eaton Houston and George Houston were put on trial under the blasphemy laws for publishing the rewritten version of Baron D'Holbach's Story of Jesus Christ. Titled

Ecce Homo, the book portrayed Jesus as a mere historical figure (Walter 36). In his work World Crimes, Joss Marsh gives an account of Richard Carlile's life, including blasphemy-related prosecution for reprinting Thomas Paine's works (214). In 1818, the Society for the Suppression of Vice prosecuted Carlile for reading Paine's Age of Reason during his trial. He was convicted for blasphemy and spent six years in prison.

Historian JM Robertson analysed the case of Susannah Wright, a worker who helped run Richard Carlile's shop when he was in prison. She spent eighteen months in prison for publishing writings against the Christian religion (Robertson 37). However, the early prosecutions of atheists for blasphemy only caused more libel and public outrage. By the year 1825, the authorities in most Western countries gave up prosecuting atheists and released blasphemy prisoners. However, the reprieve proved temporary. In 1857, Thomas Pooley was prosecuted for blasphemy by clergyman Paul Bush (Toohey 320). In the 1860s, Charles Bradlaugh went into trial to defend his publication National Reformer (de Villiers 84). While the next decade offered a reprieve for the atheists, the prosecutions for blasphemy resumed in 1877, involving several court cases. Atheists such as Henry Cook, Charles Bradlaugh, WA Hunter, Annie Besant, and Edward Truelove were prosecuted and imprisoned for blasphemous publications and messages (Kaslem 79).

Conclusion: The literature suggests English mechanick tradition, the rise of nonconformity, Epicureans, and the French Revolution were the origins of atheism in most English countries and led to the development of different strands of atheism. The succession of atheism leaders from Thomas Paine to Charles Bradlaugh spread blasphemous messages such as immorality of Christianity, lack of rationality of the Bible, and non-existence of God. The blasphemous ideologies led to rising in trials and prosecutions of the atheists and their followers. In essence, the literature about the growth of atheism and blasphemy in the nineteenth century is comprehensive, with scholars giving reasonable attention to the subject.

References:-

1. Amphlett Micklewright. "The Local History of Victorian Secularism." Local Historian. (1969) 7:221-227
2. Berman, David. A History of Atheism in Britain: From Hobbes to Russell. Routledge, 2013.
3. Bernstein, Richard B. "Rediscovering Thomas Paine." NYL Sch. L. Rev. 39 (1994): 873.
4. Besant, Annie. An Autobiography. Penguin Books, 2005.
5. Bevir, Mark. "Annie Besant's Quest for Truth: Christianity, Secularism and New Age Thought." The Journal of Ecclesiastical History 50.1 (1999): 62-93.
6. Bradlaugh, Charles. "Labour's Prayer," in Charles Bradlaugh, A Selection of the Political Pamphlets of Charles Bradlaugh (New York: Augustus M. Kelley, 1970), 1-8.
7. Conrad, Nickolas G. Marginalization of Atheism in Victorian Britain: The Trials of Annie Besant and Charles Bradlaugh. Diss. Washington State University, 2009.
8. De Lubac, Henri. The Drama of Atheist Humanism. Ignatius Press, 1995.
9. De Villiers, Roland. "Circumstances of Publication: Progressive Politics and the Obscene Science of Annie Besant, Charles Bradlaugh, and."Obscenity and the Publication of Sexual Science in Britain, 1810-1914 (1914): 84.
10. Dulles, Avery Cardinal. "The DeistMinimum." First Things: A Monthly Journal of Religion and Public Life 149 (2005): 25-31.
11. Griffiths, Robert. "Shelley and the Old and New Atheism." PN Review 38.2 (2011): 25.
12. Hill, Christopher. "The English Bible and the Seventeenth Century Revolution. 1993." David Katz, The Bible in English History (Forthcoming from OUP) (1994).
13. Hill, Christopher. The World Turned Upside Down: Radical Ideas During the English Revolution. Penguin UK, 2020.
14. Hunter, Ian. "Religious Offences and Liberal Politics: From the Religious Settlements to Multi-cultural Society." (2005).
15. Ilardo, Joseph A. "Charles Bradlaugh: Victorian Atheist Reformer." Communication Quarterly 17.4 (1969): 25-34.
16. Jager, Colin. "Shelley After Atheism." Unquiet Things. University of Pennsylvania Press, 2014. 224-243.
17. Jones, Peter. "Blasphemy, offensiveness and law." British Journal of Political Science 10.2 (1980): 129-148.
18. Kalsem, Kristin. In Contempt: Nineteenth-Century Women, Law, and Literature. The Ohio State University Press, 2012.
19. Marsh, Joss. Word crimes: Blasphemy, Culture, and Literature in Nineteenth-Century England. University of Chicago Press, 1998.
20. Mary Poovey, Making a Social Body: British Cultural Formation. Chicago: The Universityof Chicago Press, 1995.
21. Nash, David. "The (Long) Nineteenth Century." The Oxford Handbook of Atheism. Oxford University Press, 2013. 212-228.
22. Pasquale, Frank L. "A Portrait of Secular Group Afûliates." Atheism and Secularity [2 volumes] (2009): 43.
23. Prochaska, Franklyn K. "Thomas Paine's The Age of Reason Revisited." Journal of the History of Ideas 33.4 (1972): 561-576.
24. Quinault, Roland E. "The Fourth Party and the Conservative Opposition to Bradlaugh 1880-1888." The

English Historical Review 91.359 (1976): 315-340.
25. Rectenwald, Michael. Nineteenth-Century British secularism: science, religion and literature. Springer, 2016.
26. Robertson, John Mackinnon. History of Free Thought in the Nineteenth Century. Vol. I. GP Putnam's Sons, New York, 1930.
27. Robilliard, St John, and John A. Robilliard. Religion and the law: Religious liberty in Modern English law. Manchester: Manchester University Press 1984.
28. Robson, Robert, ed. Ideas and Institutions of Victorian Britain: Essays in honour of George Kitson Clark. New York: Barnes & Noble, Inc., 1967.
29. Royle, Edward. Victorian infidels: The Origins of the British Secularist Movement, 1791-1866. Manchester University Press, 1974.
30. Smith, Francis B. "The Atheist Mission, 1840-1900." Ideas and Institutions of Victorian Britain (1967): 205-235
31. Toohey, Timothy J. "Blasphemy in Nineteenth-century England: the Pooley Case and Its Background." VictorianStudies 30.3 (1987): 315-333.
32. Walter, Nicolas. Blasphemy: Ancient & Modern. London: Allen Lane, 1973.
33. Wright, Terence R. "The Religion of Humanity: The Impact of ComteanPositivism on Victorian Britain." (1986).
34. Yates, Bryan M., A Prosecution Fraught with Danger: The Trial of Charles Bradlaugh and Annie Besant. MA Thesis, Arizona State University Press: 1996.
35. Zuckerman, Phil, ed. Atheism and Secularity [2 volumes]. ABC-CLIO, 2009.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति एवं सामाजिक समस्याएँ : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

रुची गौतम*

*अतिथि शिक्षक (विधि) अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – विश्व में मानव अधिकारों के प्रति जागरूकता के विकास के साथ महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के प्रति चिंता बड़ी है। भारत में गुलामी की अवधि में सामाजिक स्थितियाँ क्रमश: बिगड़ती गयी और परतंत्रता की मानसिकता ने राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त की पंक्तियों को इस प्रकार चरितार्थ किया– 'हम कौन थे क्या हो गए और क्या होंगे अभी आओ विचारे आज मिलकर ये समस्याएं सभी' आजादी के बाद 73 वर्षों की विकास यात्रा में देश में महिलाओं, उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति और सामाजिक मान्यताओं के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन की सुगबुगाहट अवश्य लक्षित है। लेकिन इस विशाल और अनगिनत विविधता वाले देश में इस परिवर्तन का अंश नगण्य ही है। संविधान में महिलाओं को पुरूषों के समान ही अधिकार दिए है, अत्याचारों से दबी उनकी दयनीय जीवन स्थितियों को रूपांतरित करने और सामाजिक, आर्थिक तथा विधिक पहचान बनाने के लिए कई कल्याणकारी मान्यताएं दी है। लेकिन उनकी विकास की स्थिति और दशा आज भी चिंतनीय है।

शब्द कुंजी – महिला, अधिकार, समानता, परिस्थिति, सामाजिक, समस्या, परिवार भूमिका।

प्रस्तावना – किसी भी सभ्य समाज की स्थिति उस समाज में स्त्रियों की दशा देखकर ज्ञात की जा सकती है। महिलाओं की स्थिति में समय–समय पर देश काल के अनुसार परिवर्तन होता रहा है। समय के साथ भारतीय समाज में अनेक परिवर्तन हुये जिससे महिलाओं की स्थिति में दिन–प्रतिदिन गिरावट आती गई तथा गरीब महिलाओं पर इसका अधिक प्रभाव पड़ा, क्योंकि सैकड़ों वर्षों की परतन्त्रता के कारण भारतवर्ष विश्व के सबसे गरीब देशों में से एक है। समाज के निर्माण में महिलाओं की भूमिका उतनी ही प्रमुख है जितनी कि शरीर को जीवित रखने के लिये जल, वायु और भोजन है। स्त्रियां ही संतति की परम्परा में मुख्य भूमिका निभाती है फिर भी प्राचीन समाज से लेकर आधुनिक कहे जाने वाले समाज तक स्त्रियां उपेक्षित ही रही है। उन्हें कम से कम सुविधाओं, अधिकारों और उन्नति के अवसरों में रखा जाता रहा है, इसी कारण महिलाओं की परिस्थिति अत्यन्त निचले स्तर पर है। भारतीय समाज की परम्परागत व्यवस्था में महिलायें आजीवन पिता, पति और पुत्र के संरक्षण में जीवन–यापन करती रही है। भारतीय संविधान में पुरूषों एवं महिलाओं को समान दर्जा और अधिकार दिये जाने के बावजूद इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि विकास और सामाजिक स्तर की दृष्टि से महिलायें अभी पुरुषों से काफी पीछे हैं। भारतीय समाज में महिला आज भी कमजोर वर्गों में शामिल है। महिला परिवार की आधारशिला है और सामाजिक विकास बहुत कुछ उसी के सद्प्रयासों से सम्भव है। जिस समाज की महिलायें उपेक्षा और तिरस्कार का शिकार होती है वह समाज कभी प्रगति नहीं कर सकता।

महिलाओं के ऊपर सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षणिक, व्यवसायिक एवं अन्य अनेक ऐसी निर्योग्यतायें लाद दी गई है जिसके कारण उन्हें जीवन में आगे बढ़ने एवं व्यक्तित्व का समुचित विकास करने का अवसर नहीं मिलता। ये निर्योग्यतायें उनके लिए बहुत बड़ी चुनौतियां एवं समस्यायें बनकर उभरी है। इन निर्योग्यताओं के कारण कार्य में दक्षता, योग्यता एवं कुशलता होने के बावजूद ये महिलायें न तो सार्वजनिक क्षेत्र में अपना योगदान कर सकती थी और न शिक्षा प्राप्त कर सकती थी, न उच्च संस्थानों में नौकरी कर सकती थी और न किसी प्रकार का धार्मिक कार्य बिना पुरूष के सम्पादित कर सकती थी। पुरूष वर्ग के साथ खानपान पर प्रतिबन्ध था। महिलाओं के लिये उच्च शिक्षा के दरवाजे पूर्णतया बन्द थे जिससे उन्हें विवशतापूर्ण जिन्दगी घर की चहारदीवारी के अन्दर व्यतीत करनी पड़ती थी। इन्हें पढ़–लिखकर नौकरी करने के अधिकारों से वंचित रखा गया था। महिलाओं की बदतर स्थिति के लिये मूलरूप से ही लड़कों, लड़कियों को संस्कार रूप में मिलने वाली सोच जिम्मेदार है, उसके बाद पारिवारिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक परम्पराये, मूल्य तथा रीति–रिवाज इस दृष्टिकोण की ओर पुष्टि करते हैं। अत: इस सोच में बदलाव लाना महिला विकास की सबसे बड़ी चुनौती है। महिलाओं की शिक्षा पर बल देते हुये विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948) के ये ऐतिहासिक शब्द भी ध्यान देने योग्य है, जो निम्न हैं –

'शिक्षित स्त्री के बिना शिक्षित पुरूष हो ही नहीं सकता। यदि पुरुषों और स्त्रियों में से केवल किसी एक के लिये सामान्य शिक्षा का प्रावधान करना हो तो यह अवसर स्त्रियों को दिया जाना चाहिए क्योंकि यह शिक्षा स्वयंएमेव अगली पीढ़ी को प्राप्त हो जायेगी।'

सन् 1963 के वनस्थली विद्यापीठ में भाषण देते हुये पं. जवाहर लाल नेहरू ने भी इसी तथ्य को दोहराया था कि लड़के की शिक्षा केवल एक व्यक्ति की शिक्षा है परन्तु एक लड़की की शिक्षा सम्पूर्ण परिवार की शिक्षा है। उपरोक्त विवेचन से महिलाओं के लिये शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व

स्पष्ट होता है लेकिन स्त्री शिक्षा इतनी आवश्यक होते हुये भी उपेक्षित है इसलिये महिलाओं के सामने यह एक जटिल समस्या एवं चुनौती के रूप में उभरकर सामने आयी है। शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक आदि सभी दृष्टियों से महिलायें अभी भी पिछड़ी हुई है। कानूनी और संवैधानिक दृष्टि से अनेक अधिकार प्राप्त होने और योजनागत विकास कार्यक्रमों के प्रावधानों के बावजूद महिलाओं की परिस्थिति शोचनीय ही है।

स्वामी विवेकानन्द के कथनानुसार कोई राष्ट्र तब तक अपना पूर्ण विकास नहीं कर सकता जब तक कि उसका प्रत्येक नागरिक राष्ट्र के विकास में भागीदार नहीं बनता।

इस प्रकार स्त्री एक अच्छे समाज और अच्छे राष्ट्र का स्रोत होती है। विद्या से ही व्यक्ति संकीर्ण मानसिकता और रूढ़िवादिता की जंजीरों को तोड़ सकता है। यदि स्त्री शिक्षित है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है। शिक्षा ही हमें सामाजिक भेदभावों और ऊँच-नीच की भावनाओं से उबारने का काम करती है। इसलिये स्त्रियों का शिक्षित होना बहुत आवश्यक हो जाता है क्योंकि उसके विचार ही उसके बच्चे होते है अगर वह अपने बच्चों को इन रूढ़िगत विचारों से दूर रखे और यह बताये कि कोई छोटा या बड़ा नहीं होता। व्यक्ति के कार्य और विचार ही उसे छोटा या बड़ा बनाते हैं। यदि माता अपने बच्चों में जाति-भेद और धर्म-भेद रहित विचारों का बीजारोपण करे तो आगे चलकर वह एक ऐसा वृक्ष बनेगा जिसमें सामाजिक-समरसता से पूर्ण फल लगेंगे जो बिना किसी भेदभाव के छाया भी प्रदान करेगा।

इस प्रकार एक शिक्षित स्त्री एक शिक्षित देश को जन्म देती है। यदि हम इतिहास पर नजर डालें तो हमें ऐसी बहुत सी विदुषी स्त्रियों के नाम मिल जायेंगे जिन्होंने अपनी विद्यता का लोहा मनवाया था और इस प्रकार इतिहास में अपना नाम अमर करवा लिया था। ऐसी स्त्रियों में अपाला, घोषा, गोपा, सावित्री, मैत्रेयी और गार्गी जैसी अन्य अनेक स्त्रियों के नाम मिलते हैं जिन्होंने विद्यार्जन कर स्त्रियों के अस्तित्व को गौरव प्रदान किया था। उनकी शक्ति थी उनकी विद्या, लेकिन बाद के कालों में उनकी यह शक्ति उनसे छीनी जाने लगी। उन्हें विद्या से रहित कर दिया गया और यही उनकी स्थिति की अवनति का कारण बना। देखा जाये तो आज भी वो स्थिति प्राप्त नहीं कर पाई है। हालांकि कुछ हद तक उसने अपने को उबारा है, लेकिन अभी भी पूर्णरूपेण उन्नति होना बाकी है। सामाजिक कुरीतियों का उसे शिकार बनाया गया। छोटी उम्र में विवाह प्रारम्भ हुये, उपनयन संस्कार से उसे वंचित किया जाने लगा, फलस्वरूप उसका व्यक्तित्व कुंठित हो गया है।

बाल-विवाह के कारण शिक्षा उससे छिन गई और तब यह केवल सभ्रान्त परिवारों की स्त्रियों तक ही सीमित हो गई या पुरूष की संकीर्ण मानसिकता, स्त्री को शिक्षा से वंचित होना पड़ा जिसके कारण वह पर्दा-प्रथा, सती प्रथा, नियोग-प्रथा आदि अनेक बुराईयों की बेड़ियां काटने में असक्षम हो गई क्योंकि उसका हथियार 'शिक्षा' उससे छीना जा चुका था। शिक्षा जो कि सिर्फ सर्वांगीण विकास ही नहीं करती बल्कि हमें समाज में व्याप्त बुराईयों से लड़ने की शक्ति भी प्रदान करती है। वो हमें अपने अधिकारों के प्रति सचेत करती है।

साहित्य अवलोकन - अनेक समाजशास्त्रियों, जनसंख्याविदों तथा शिक्षाविदों ने स्त्रियों की सामाजिक स्थिति का अनुभवात्मक अध्ययन किया है तथा अपने विश्लेषण के द्वारा महिलाओं की सामाजिक, व्यवसायिक गतिशीलता तथा पुरूषों के समान शैक्षणिक व सामाजिक अधिकार, परिवार में निर्णय निर्धारक भूमिका तथा प्रदत्ता परिस्थिति को नकार कर, अर्जित प्रस्थिति द्वारा अपनी क्षमता के नये आयामों को उद्घाटित करना, के सन्दर्भ में विभिन्न मत प्रस्तुत किये गये हैं। यहाँ शोध आलेख से सम्बन्धित विभिन्न समाजशास्त्रियों, जनसंख्याविदों तथा शिक्षाविदों के साहित्य का अवलोकन किया गया है जिसमें इनके अध्ययन के निष्कर्षों का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

मीनाक्षी मुखर्जी (1988) का मत है कि पुरूषों से स्वतन्त्र स्त्रियों की पहचान की अभिव्यक्ति वैचारिक दृष्टि से सम्भव है परन्तु व्यवहारिक तौर पर नहीं। एक पुरूष की अपेक्षा एक स्त्री के लिये सामाजिक अनुपालन अधिक आवश्यक है। सामान्यत: एक महिला की पहचान स्वयं और अन्य लोगों के द्वारा पुरुषों के साथ एक पुत्री, एक पत्नी और एक माँ के रूप में की जाती है। मीनाक्षी का मानना है कि परिवार ही स्त्रियों को गुलाम बनाने वाली संस्था नहीं है। समाज की प्रकृति ही ऐसी है कि जिसमें स्त्रियों के साथ अनादर रूप में व्यवहार किया जाता है।

माग्रेट कारमैक (1779) ने विश्वविद्यालय की 500 छात्राओं के अध्ययन के दौरान पाया कि लड़कियां कॉलेज जाना और लड़कों से मित्रता करना चाहती थीं लेकिन वे ये भी चाहती थीं कि उनका विवाह उनके माता-पिता तय करें। वे अपनी नव स्वतन्त्रता का भोग भी करना चाहती हैं लेकिन साथ ही साथ पुराने मूल्यों को भी बनाये रखना चाहती हैं।

गोविन्द केलकर (1981) ने अपने अध्ययन में पाया कि हरित क्रान्ति वाले क्षेत्र पंजाब में स्त्रियों को दिन-भर कामकाज के बाद पति की सेवा भी करनी पड़ती है। स्त्री द्वारा उलटकर जवाब देना, ठीक तरह से भेजन न परोसना या कभी-कभी पारिवारिक मामलों में बोलना उनका अपराध माना जाता है और इसके लिये उनकी पिटाई भी होती है।

कॉपर ने कानून की नजर में महिलाओं की स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इस अध्ययन के आधार पर महिलाओं की संवैधानिक स्थिति, प्रभुता, अधिकार, सम्पन्नता, कानूनी शक्ति इत्यादि को समझा जा सकता है। वस्तुत: महिलाओं की परिस्थिति को उच्च बनाने की दृष्टि से इनके पक्ष में कानून निर्मित किये गये हैं, किन्तु भारतवर्ष में पुरूष प्रधान समाज होने के कारण भारतीय महिलाओं का एक प्रमुख एवं विचारणीय भाग कानून के प्रावधान से अनभिज्ञ रह गया है फिर भी भारतीय समाज की उच्च वर्गीय महिलाओं ने इसका लाभ उठाकर अपनी सामाजिक परिस्थिति को उच्च किया है।

मिश्र (1981) ने अपने अध्ययन के द्वारा यह बताने का प्रयास किया है कि जब तक सामाजिक-सांस्कृतिक बाधायें समाप्त नहीं होगी तब तक भारतीय महिलाओं का सर्वांगीण विकास सम्भव नहीं है। महिलाओं के प्रति पुरूषों की दृष्टि में परिवर्तन आवश्यक है।

आज भी बहुत से ऐसे ग्रामीणजन हैं जो वासनात्मक निषेध के कारण अपनी बालिकाओं को घर के बाहर नहीं जाने देते और बाल्यावस्था में ही विवाह कर देते है। वस्तुत: आज भी महिलायें पुरुष की नजर में महिला और मात्र महिला है, इसके अतिरिक्त वे कुछ नहीं हैं और पुरुषों का वासनात्मक लक्ष्य बनी हुई हैं। इस दृष्टि में परिवर्तन अपरिहार्य है।

गोस्वामी तुलसीदास ने भी अपने रामचरित मानस के द्वारा इस तथ्य की पुष्टि की है। महिलाओं में अद्वितीय क्षमता पायी जाती है। इन्होंने भक्ति साहित्य, राजनीति, शिक्षा, विज्ञान, तकनीकी, चिकित्सा, सेना इत्यादि सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में जाकर अपनी अदभूत प्रतिभा का अनोखा परिचय दिया है। आज महिलाओं को पहचानने की आवश्यकता है। ये सब कुछ कर

सकती है। एक ओर बहुत अच्छी व्यवस्था कर सकती है तो दूसरी ओर समाज में क्रान्ति भी ला सकती है। पुरुषों की सेवा करने में समक्ष है तो पुरूषों को झुकने और उनसे अपनी सेवा कराने की क्षमता भी रखती है।

भारतीय महिलाओं की भूमिका के विभिन्न स्वरूप – विवाह मूलक परिवार में स्त्री की भिन्न-भिन्न परिस्थितियों होती है उदाहरण के लिए बेटी, पत्नी, बहू, माँ इत्यादि। इन परिस्थितियों से सम्बन्धित भूमिकाओं का निर्वाह करना होता है एवं प्रत्येक भूमिका निर्वाह के समय उनसे समपर्ण एवं भेदभाव की भावना की अपेक्षा की जाती है। वहाँ भी उसे निम्न परिस्थिति प्राप्त होती है एवं उनका कोई पृथक व स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता। इस प्रकार स्त्रियों की परिस्थितियों में उतार-चढ़ाव पाया गया है, परन्तु यह परिस्थिति सम्बन्धी उतार-चढ़ाव अचानक परिलिक्षित नहीं हुआ अपितु यह एक क्रमिक प्रक्रिया का परिणाम है। समाज में जैसे-जैसे परिवर्तन व बदलाव आते गये वैसे-वैसे स्त्रियों की स्थिति में भी परिवर्तन होते गये।

जब व्यक्ति की भूमिकाएं अनेक हो जाती है तो उन भूमिकाओं में कभी-कभी संघर्ष की स्थिति आ जाती है व्यक्ति अपनी सभी भूमिकाओं का पूर्ण और यथोचित निर्वाह नहीं कर पाता जिन महिलाओं को घर के भीतर और बाहर कार्य करना पड़ता है वे न तो घर में और न ही घर के बाहर अपने दायित्वों का पूर्ण रूपेण पालन कर पाती है। ग्रामीण समाज की शिक्षित लड़कियों के लिए उचित वर नहीं मिल पाता, जो मिलता भी है उसकी मांग इतनी अधिक होती है कि लड़की के पिता उन मांगों को पूरा करने में असमर्थ होते है। वैवाहिक समस्या एक ज्वलंत समस्या है। आज की शिक्षित महिलायें जिसका शिकार है।

इससे बड़ी कोई विडम्बना नहीं हो सकती कि पुरूष समाज ने समाज की इस आधी दुनिया को अत्याचारों की क्रूर जंजीरों में जकड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी हैं उसको कुचलने मसलने और उसके उपभोग से भिन्न अस्तित्व को स्वीकारने के संदर्भ में पुरुषों का सदैव दोहरा मानदण्ड रहा हैं महिला देह उसकी एक मात्र पहचान बना दी गई हैं वह पुरूष की इच्छा, वासना और निरंकुशता के नियंत्रण का अवांछित दंश भोगने को विवश रहती हैं। महिलाएं चूंकि शारीरिक शक्ति और क्षमताओं में पुरुष से कमजोर होती है इसलिए पुरूष जगत ने उन्हें अपनी पाशविक शक्ति के बल से बलात्कार, अपहरण, पिटाई तथा अन्य अत्यंत अमानुशिक अत्याचारों से दबा रखा हैं। प्रतिदिन के समाचार पत्र, पत्रिकाओं, रेडियो, टी.वी. तथा अन्य सूचना के माध्यमों से महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों का खुलासा पढ़कर रोगटे खड़े हो जाते हैं। बलात्कार महिलाओं के लिए सबसे बड़ी गाली तो है ही, अत्याचार की राक्षसी लीला भी है, लज्जा और ग्लानि से सारे पुरूष समाज का सिर झुक जाता है जब समाचार पत्रों में यह लाईन पढ़ने को मिलती हैं-'कोलकाता में एक पिता द्धारा अपनी नाबालिग पुत्री के साथ बलात्कार।' दरअसल नारी की पुरानी व नई स्थिति में कोई ज्यादा फर्क नहीं आया हैं, वरना मुल्क की आजादी के इतने वर्षों बाद भी लाखों माँ-बहनें, वेश्यावृत्ति करने को मजबूर नहीं होती। सैकड़ों बहनें दहेज के नाम पर मारी ना जाती या आत्महत्या करने को मजबूर न की जाती।

नारी की स्थिति में कोई फर्क तभी आ सकता है जब नारी अपनी सोच बदलेगी। दरअसल गुलामी के बंधन तभी टूटते हैं, जब बंधनों में जकड़ा आदमी अपने आप को आजाद महसूस करता हैं। महात्मा गांधी ने कहा था 'कई बार ऐसी परिस्थिति बन जाती है जब जेल में रहकर आदमी ज्यादा आजाद होता है, बजाय बाहर रहकर अनुचित कानूनों के मानने के।' आज यही स्थिति नारी पर लागू होती है।

भारतीय समाज में कामकाजी महिलाओं की वर्तमान स्थिति एवं समाज का बदलता स्वरूप – प्राचीन समय में महिलाओं को घर के बाहर काम करने के लिए नहीं जाने दिया जाता था, उनका मूल कार्य घर में रहकर घर के कामकाज करना था। महिलाएँ चूल्हों पर भोजन पकाती थी तथा सामान्य रूप से संयुक्त परिवार प्रथा का प्रचलन था। परिवार बड़ा होने के कारण प्राय: छोटे-बड़े सभी कार्य घर की महिलाओं को ही करने होते थे।

भारतीय सामाजिक संरचना पुरुष प्रधान है। पुरुष घर से बाहर काम करने जाते हैं एवं महिलाएं अपने घरेलू कार्य का संभालने में लगी रहती है। बच्चों का पालन-पोषण एवं परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करना उनका मुख्य कार्य है। आर्थिक उपार्जन उनका कार्य क्षेत्र नहीं रहा है। यद्यपि इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि प्राचीन काल से महिलाएँ प्रकृति प्रदत्ता वस्तुओं एवं कृषि कार्य में संलग्न रही है। आधुनिक युग में महिलाएं कामकाजी होने के साथ-साथ सफल गृहणियाँ भी सिद्ध हो रही है, लेकिन कभी किसी ने ध्यान नहीं दिया होगा कि महिलाएँ किस प्रकार सभी कार्यों का समायोजन करती होगी। वर्तमान युग में कामकाजी महिलाएँ बदलते हुए वैश्विक दौर में समय के साथ बदलते परिवेश के साथ अपना सामंजस्य करने में सक्षम हो रही है। सरकारी या निजी कार्यस्थल व घर के काम में अपने प्रबन्धन की भूमिका बखुबी से निभाती है।

धीरे-धीरे शिक्षा का विकास होने लगा, नवीन तकनीकी प्रकाश से पुरुषों के समान प्रत्येक क्षेत्र में महिलाएं भी आगे आने लगी। भारत में औसतन प्रत्येक घर की महिलाएं घर के बाहर या घर पर कुछ ना कुछ आय अर्जन करने में लगी है। साथ-साथ अपने निजी जीवन को भी गतिशील रखने के प्रयास करती है। कामकाजी महिलाएं अपने परिवार और अपने भविष्य को संवारने के लिए कार्य करती है। इतनी महगाई के युग में केवल घर के पुरूष की आय पर ही निर्भर रहना और उस पर खर्च का बोझ लादना अकेले बैल से खेत जुतवाने के समान है।

भारत में कुल 73 प्रतिशत साक्षरता, ग्रामीण क्षेत्र में 57.9, शहरी क्षेत्र में 79.1 प्रतिशत रही है। महिला शिक्षा के बढ़ते स्तर ने महिलाओं को कामकाजी होने की प्रेरणा दी है। फलत: उनकी प्रवृत्ति कामकाजी हो गयी है। आज वे विविध भूमिका का निर्वाह कर रही है, आज वे सभी क्षेत्रों में पुरूषों के समान पदों पर आसीन है। राजनीतिक सत्ता का क्षेत्र हो या आई.ए.एस. ऑफिसर की कुर्सी, अभिनय की अभिव्यक्ति हो या नृत्यांगना का नृत्य, साहित्य का क्षेत्र, ललित कला, आंगन, राग-रागिनीयों की सरगम हो या चित्रकारी की चितेरी, चिकित्सक या कानूनी सलाहकार, प्रशासन का क्षेत्र हो या शिक्षिका प्रोफेसर का दायित्व, ज्ञान विज्ञान हो या कलात्मक प्ररतुति, महिलाओं के कामकाज का विस्तार सभी क्षेत्रों में हुआ है। कामकाजी महिलाएं अपनी योग्यता से न केवल धन अर्जित करती है, अपितु वे अर्जित धन से पारिवारिक आर्थिक संरचना में अपना योगदान देकर आर्थिक संबल प्रदान करती है। महिलाओं का आर्थिक उपार्जन आर्थिक क्षेत्र में उनकी आत्म निर्भरता को प्रदर्शित करता है।

कामकाजी पत्नी को दोहरी नहीं, तीहरी भूमिका निभानी पड़ती है। पत्नी, मां और कामकाजी नारी। परिवार और कार्यक्षेत्र का दायित्व सफलतापूर्वक निभाने की होड़ में उसमें तनाव पैदा हो जाता है और उसका प्रभाव उसकी कार्यक्षमता पर पड़ता है। वह न तो कार्यालय में अपनी क्षमता का उपयोग कर पाती है और घर में भी वह सही ढंग से अपने उत्तरदायित्व

को नहीं निभा पाती है। अत: एक कामकाजी नारी को सफलतापूर्वक कार्य करने के लिए पारिवारिक वातावरण का सहयोग आवश्यक होता है तभी वह अपनी कार्यक्षमता का सही उपयोग कर सकेगी। तभी वह आगे बढ सकेगी और उन्नति कर सकेगी। वह समाज में स्वयं का और परिवार का स्थान बना सकेंगी। इससे उसके परिवार की भी प्रतिष्ठा बढेगी, सम्मान बढेगा।

समाज में आज कामकाजी नारी का सम्मानीय स्थान है। वह घर से बाहर जाकर सक्रिय हो रही है। आज समाज में ऐसा कोई कार्य नहीं है जो नारी की सीमा एवं योग्यता के बाहर हो। साथ ही नारी ने अपनी घरेलू भूमिका को भी निभाया है। आज भी घर की मुख्य जिम्मेदारी उसकी है। कामकाजी नारी के लिए घर एवं कार्यालय की दोहरी जिम्मेदारी होती है। दोनों ही भूमिकाएँ अपने-अपने स्थान पर महत्वपूर्ण है। किसी को भी नजर अंदाज किये बिना सुचारू रूप से निभाने में नारी के सामाने अनेक समस्याएँ आती है।

सामान्यत: परिवारजन अक्सर कामकाजी नारी के सम्बन्ध में गैर - कामकाजी नारी सोचती है कि कामकाजी नारी की स्थिति अच्छी है। उसे अतिरिक्त अधिकार और स्वतंत्रता प्राप्त है। किन्तु व्यवहार में कामकाजी नारी पारिवारिक दायित्वों से मुक्त नहीं है। कार्यक्षेत्र से घर आते ही वह एक घरेलू नारी बन जाती है।सभी आवश्यक घरेलू कार्य उसे ही करने पड़ते है। मैं रोजाना सुबह एक अध्यापिका को स्कूल जाते हुए देखती हूँ। उनके पति कार में उन्हें छोडने जाते है। तब उन की अध्यापिका के चहरे पर हँसी को देखकर सोचती हूँ कि क्या पारिवारिक वातावरण के सहयोगपूर्ण हाने पर उसकी कार्यक्षमता में वृद्धि होती है।

साथ ही अन्य महिला जो कार्यालय जाती है बहुत थकी-थकी सी लगती है। ऐसा लगता है कि कार्यालय जाना उसकी मजबूरी है। वह जिम्मेदारियों के बोझ तले दबी हुई है। उसके पारिवारिक वातावरण सहयोग पूर्ण नहीं होने से उसकी कार्यक्षमता में कमी हो रही है।

एक कामकाजी महिला को उसका पारिवारिक वातावरण सहयोग करता है तो अधिक कार्यकुशलता से कार्य करती है। जब वह अपने कार्यालय से थकी हुई लौटती है तब उसके परिवार के लोग उसकी परिस्थिति को देखते हुए उसका सहयोग करते है तो वह भी अपने परिवारजनों की भावनाओं का आदर करती है तथा उनका सम्मान करती है। वह उनके साथ समय व्यतीत करती है तथा अपने परिवार में अच्छे से समायोजित हो पाती है।

निष्कर्ष - अत: महिलाओं की अभाव, अत्याचार, घुटन, कुरीतियों तथा पशुओं से भी बदतर जीवन स्थितियों को आजादी प्राप्ति के बाद बदलने का सिलसिला प्रारम्भ अवश्य हुआ। पहले दशक में विस्तृत सर्वेक्षण कर विकास की नीतियों के चरण निर्धारित किए गए। महिला दशक की वैचारिकता ने उनके विकास के मुद्दों की नयी दिशा प्रदान की। इतिहास में पहली बार महिलाओं के विकास कार्यक्रमों में भागीदारी की पहचान बनना प्रारम्भ हुई। शिक्षा तथा कल्याण कार्यक्रमो का सुप्रभात दिखाई दिया तथा अधिकारों ओर समानता के प्रति जागरूकता के विकास की झलक मिलने लगी।

कामकाजी महिलाओं को चूकि घर बाहर दोनों जगह भूमिका का निर्वाह करना पड़ता है फलस्वरूप उन पर कार्य का बोझ तो बढ़ता ही है साथ ही कार्य स्थल पर एवं परिवार दोनों ही स्थान पर उनका कार्य प्रभावित भी होता है। दोहरी भूमिका इनके थकान का कारण भी है। अधिकांश महिलाओं के पास परिवार में मदद के लिए कोई सदस्य ना होने के कारण उन्हें घरेलू नौकरानियों की आवश्यकता होती है। कार्यस्थल में यौन शोषण, लिंग विभेदीकरण एवं असुरक्षा जैसी समस्याओं से ये महिलाएं जूझती हैं। अधिकांश महिलाओं के नौकरी करने का कारण आर्थिक विवशता है किन्तु अनेक महिलाएं आर्थिक स्वतन्त्रता एवं अपनी विशिष्ट पहचान बनाने के लिए भी नौकरी करती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. मीनाक्षी मुखजी : रियलिटी एण्ड रियलिज्म, इडियन वुमन ऐज प्रोटेगनिस्ट्स इन फोर नाइटींथ सेंचुरी नॉवेल्स, इकोनॉमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, 1884
2. राम आहूजा : भारतीय समाज, रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 2002
3. गोविन्द केलकर : इम्पैक्ट आफ ग्रीन रिवोल्यूशन आन वीमेन्स वर्क पार्टीसिपेशन एण्ड सैक्स, सेन्टर फॉर पोलिसी रिसर्च, नई दिल्ली, 1881
4. मैत्रेयी कृष्णराज : रिपोर्ट आन वर्किंग वीमेन साइंटिस्ट्स इन बाम्बे एस.एन.डी.टी,.वीमेन यूनिवर्सिटी रिसर्च यूनिट आन वीमेन स्टडीज, बम्बई, 1971
5. दीपा माथुर : वूमेन, फैमिली एंड वर्क, रावत पब्लिकेशन जयपुर, 1992
6. सुधीर श्रीवास्तव : वूमेन इमपावरमेंट, टाटा मैग्रोहिल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1985
7. मीनाक्षी व्यास : मिडिल एंड लोअर क्लास वर्किंग वूमेन, सौम्या पब्लिकेशन, मुंबई, 2002
8. सोरन सिंह : सिडियूल कास्ट इन इंडिया एंड डाईमेन्शन ऑफ सोशल चेंज, ज्ञान पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1997
9. नृपेन्द्र कुमार : पार्टीसीपेशम ऑफ वूमेन इनसोसाटी, एशिया पब्लिकेशन हाउस, मुंबई, 1982
10. प्रतिमा कपूर : द स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट ऑफ वर्किंग वूमेन इन इंडिया, आगरा पब्लिकेशन, 1986
11. ए0 एस0 अलटेकर : द पोजिशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, मोतिलाल बनारसी दास, वाराणसी।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारत की 5 ट्रिलियन डालर अर्थव्यवस्था : चुनौतियाँ और रोडमैप

डॉ. विवेक कुमार पटेल* श्री राजपाल यादव**

* सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (वाणिज्य) शासकीय शहीद केदारनाथ महाविद्यालय, मऊगंज (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) शासकीय शहीद केदारनाथ महाविद्यालय, मऊगंज (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – आज भारत विश्व की सबसे तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। लगभग 3.7 ट्रिलियन डॉलर की वर्तमान GDP के साथ भारत न केवल अपने विशाल जनसंख्या, बल्कि अपने विविध संसाधनों, नवाचार क्षमता और युवा कार्यबल के दम पर वैश्विक आर्थिक मानचित्र पर तेजी से उभर रहा है।भारत 21वीं सदी में विश्व की प्रमुख आर्थिक शक्तियों में से एक बनने की ओर अग्रसर है। सरकार ने वर्ष 2024–25 तक देश की अर्थव्यवस्था को 5 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँचाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है जो एक महत्त्वपूर्ण और प्रेरणादायक लक्ष्य है।यह लक्ष्य न केवल भारत की आर्थिक क्षमता को दर्शाता है, बल्कि वैश्विक मंच पर देश की भूमिका को भी पुनर्परिभाषित करता है।

यह लक्ष्य केवल आर्थिक वृद्धि का आंकड़ा नहीं है, बल्कि यह उस समावेशी विकास की दिशा में एक कदम है, जिसमें देश के प्रत्येक वर्ग को आर्थिक समृद्धि का लाभ मिल सके। यह 'आत्मनिर्भर भारत' और 'मेक इन इंडिया' जैसे अभियानों के माध्यम से घरेलू उत्पादन, रोजगार सृजन और निर्यात वृद्धि को बढ़ावा देने का एक मंच भी है।आज भारतने अमेरिका, चीन, जापानऔर जर्मनी के बाद विश्व की 5 वीं बड़ी अर्थव्यवस्था बनी हुई है। अब भारत के पुनरूत्थान के लक्ष्य अर्थात विकसित भारत– 2047 की ओर तेजी से ये अर्थव्यवस्था अग्रसर बनी हुई है। हालांकि, इस विकास यात्रा में कई बाधाएँ भी हैं। वैश्विक आर्थिक मंदी, जलवायु परिवर्तन की चुनौतियाँ, भू–राजनीतिक तनाव, ऊर्जा संसाधनों की सीमाएं, शिक्षा एवं स्वास्थ्य क्षेत्र की कमियाँ तथा असमान क्षेत्रीय विकासये सभी ऐसे कारक हैं जो इस लक्ष्य की राह में रोड़े अटका सकते हैं।भारत ने 2023 में जी – 20के 17वें सम्मलेन की अध्यक्षता सफलतापूर्वक करके विश्व भर को 'वसुधैव कुटुम्बकम' की अवधारणा से परिचित कराकर एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य One Earth, One Family & One Future का प्रेरक सन्देश दिया है।

इस शोध आलेख के माध्यम से हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि भारत को इस आर्थिक लक्ष्य तक पहुँचने के लिए किन प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, और साथ ही यह भी देखेंगे कि इन चुनौतियों से पार पाने के लिए क्या रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं। साथ ही हम एक समग्र रोडमैप प्रस्तुत करेंगे, जो भारत को आर्थिक रूप से न केवल मजबूत बनाएगा, बल्कि उसे वैश्विक नेतृत्व की ओर भी अग्रसर करेगा।

कुंजी शब्द – सकल घरेलू उत्पाद, डिजिटल इंडिया,स्टार्टअप इंडिया,सकल मूल्य वर्धित,लॉजिस्टिक्स MSME, औद्योगिक उत्पादन सूचकांक, जीएसटी, ड्रोन, सेंसर, AI और IoT,रिमोट सेंसिंग,GIS, समर्थन मूल्य, BPO, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020

भारत की वर्तमान आर्थिक स्थिति

1. भारत की GDP(सकल घरेलू उत्पाद) – भारत विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। वर्ष 2023 में भारत की GDP (सकल घरेलू उत्पाद) लगभग 3.7 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँच चुकी है, जो इसे विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाती है। यह उपलब्धि देश की निरंतर विकासशील नीतियों, उद्यमिता, तकनीकी प्रगति और जनसंख्या की उत्पादकता का परिणाम है।भारत की अर्थव्यवस्था कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्रों पर आधारित है, जिसमें सेवा क्षेत्र का योगदान सबसे अधिक है। सूचना प्रौद्योगिकी, वित्तीय सेवाएं, स्वास्थ्य सेवा और टेलीकॉम जैसे क्षेत्र भारत के आर्थिक इंजन बन चुके हैं। इसके अलावा, डिजिटल इंडिया और स्टार्टअप इंडिया जैसे सरकारी कार्यक्रमों ने नवाचार और निवेश को प्रोत्साहित किया है।विदेशी निवेशके क्षेत्र में भी भारत एक आकर्षक गंतव्य बना हुआ है। विदेशी कंपनियाँ भारत में निर्माण, टेक्नोलॉजी और रिटेल सेक्टर में भारी निवेश कर रही हैं, जिससे रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि हो रही है।

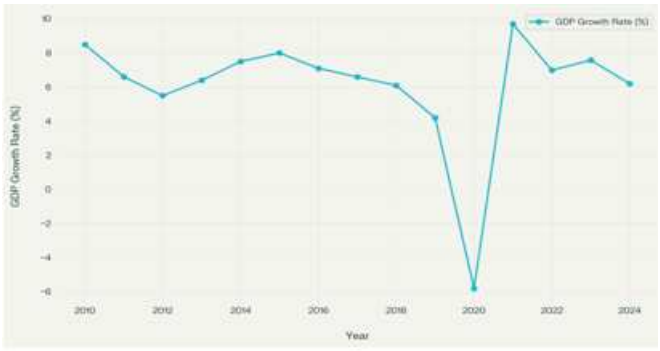

ऊपर दिए गए ग्राफ में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) की वृद्धि दर को 2010 से 2024 तक दर्शाया गया है। यह ग्राफ भारत की अर्थव्यवस्था में समय के साथ आए उतार–चढ़ाव को स्पष्ट रूप से दिखाता है।

1. 2010–2016 तक स्थिर वृद्धि रही है – 2010 में GDP वृद्धि दर 8.5% थी, जो 2012 तक घटकर 5.5% हो गई।इसके बाद 2014–2016

के बीच अर्थव्यवस्था ने पुन: गति पकड़ी और वृद्धि दर 7.5%–8% तक पहुंच गई।

2. 2017–2019 तक धीमी वृद्धि रही है – 2017 से GDP वृद्धि दर में गिरावट शुरू हुई, जो 2019 में 4.2% तक पहुंच गई। यह गिरावट मुख्यत: वैश्विक आर्थिक मंदी और घरेलू आर्थिक चुनौतियों के कारण हुई थी।

3. 2020 में Covid–19 का प्रभाव रहा है – 2020 में महामारी के कारण GDP वृद्धि दर –5.8% तक गिर गई, जो रिकॉर्ड निम्न स्तर था। यह गिरावट लॉकडाउन और आर्थिक गतिविधियों में ठहराव का परिणाम थी।

4. 2021–2023 तक वृद्धि की पुनर्प्राप्ति हुयी है – 2021 में अर्थव्यवस्था ने तेजी से वापसी की और GDP वृद्धि दर 9.7% तक पहुंच गई। हालांकि, इसके बाद 2022 और 2023 में क्रमश: 6.99% और 7.58% की स्थिर लेकिन धीमी गति से विकास हुआ।

5. 2024 वृद्धि में स्थिरीकरण आया है – 2024 में GDP वृद्धि दर लगभग 6.2% रही। यह पिछले वर्षों की तुलना में कम है लेकिन स्थिरता को दर्शाती है। उच्च ऊर्जा कीमतें, RBI की सख्त मौद्रिक नीति, और वैश्विक आर्थिक दबावों ने इस धीमी गति को प्रभावित किया।

भारत की अर्थव्यवस्था लंबी अवधि में लगभग 6% की औसत वृद्धि दर बनाए रखने की उम्मीद है। हालांकि, ऊर्जा कीमतें, वैश्विक व्यापार संबंध, और घरेलू नीतियां इस पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती हैं। यह विश्लेषण भारत की अर्थव्यवस्था के लचीलेपन को दर्शाता है, जो गंभीर चुनौतियों के बावजूद पुनर्प्राप्ति करने में सक्षम रही है।भारत की अर्थव्यवस्था लंबी अवधि में लगभग 6% की औसत वृद्धि दर बनाए रखने की उम्मीद है। हालांकि, ऊर्जा कीमतें, वैश्विक व्यापार संबंध, और घरेलू नीतियां इस पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती हैं।यह विश्लेषण भारत की अर्थव्यवस्था के लचीलेपन को दर्शाता है, जो गंभीर चुनौतियों के बावजूद पुनर्प्राप्ति करने में सक्षम रही है।

2. सेवा क्षेत्र का GDP में योगदान – भारत के सेवा क्षेत्र ने पिछले कुछ दशकों में अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और यह देश की GDP का प्रमुख घटक बन गया है।नीचे सेवा क्षेत्र के योगदान का विस्तृत विवरण दिया गया है:

1. **सकल मूल्य वर्धित (GVA) में हिस्सेदारी:** वित्त वर्ष 2014 में सेवा क्षेत्र का GVA में योगदान50.6% था, जो वित्त वर्ष 2025 में बढ़कर लगभग 55% हो गया है सेवा क्षेत्र की वास्तविक वृद्धि दर महामारी के बाद वित्त वर्ष 2023–25 में औसतन 8.3% रही, जबकि महामारी से पहले यह दर 8% थी।

2. **रोजगार सृजन:** सेवा क्षेत्र देश के कुल कार्यबल का लगभग 30.7% रोजगार प्रदान करता है।यह क्षेत्र आधुनिक सेवाओं और कौशल आधारित रोजगार को बढ़ावादेता है, जिससे श्रमिकों के कृषि और विनिर्माण से सेवा क्षेत्र की ओरस्थानांतरण को प्रोत्साहन मिलता है।

3. **सेवाओं का निर्यात:** भारत वैश्विक सेवा निर्यात में सातवें स्थान पर है, जिसकी हिस्सेदारी 4.3% है। वित्त वर्ष 2025 के अप्रैल–नवंबर महीनों में सेवाओं के निर्यात में 12.8% की वृद्धि दर्ज की गई, जो पिछले वर्ष की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि है।

4. **वित्तीय प्रदर्शन और निवेश:** नवंबर 2024 तक सेवा क्षेत्र को कुल बकाया बैंक ऋण रू48.5 लाख करोड़ था, जिसमें सालाना आधार पर 13% वृद्धि दर्ज की गई।वित्त वर्ष 2025 (अप्रैल–सितंबर) में सेवा क्षेत्र को क्र 5.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर का FDI प्राप्त हुआ, जिसमें बीमा और वित्तीय सेवाओं ने प्रमुख भूमिका निभाई।

5. **डिजिटल सेवाओं का विस्तार:** ऑनलाइन भुगतान, ई–कॉमर्स, और मनोरंजन प्लेटफॉर्म जैसे डिजिटल सेवाएं तेजी से बढ़ रही हैं, जिससे सेवा क्षेत्र को मजबूती मिली है।

6. **औद्योगिक सेवाकरण:** विनिर्माण उत्पादन में सेवाओं के उपयोग और उत्पादन के बाद मूल्य संवर्धन के माध्यम से सेवा क्षेत्र अप्रत्यक्ष रूप से GDP में योगदानकरता है।

7. **नीतिगत समर्थन:** सरकार ने नीतिगत सुधारों, निवेश प्रोत्साहन, कौशल विकास, और बाजार तक पहुंच सुगम बनाकर सेवा क्षेत्र को प्रतिस्पर्धी बनाने में मदद की है। इसके अलावा, लॉजिस्टिक्स और भौतिक अवसंरचना पर ध्यान केंद्रित करनेसे इस क्षेत्र को महामारी के बाद तेजी से उबरने में सहायता मिली।

भारत का सेवा क्षेत्र आर्थिक विकास का मुख्य आधार बना हुआहै। डिजिटल सेवाओं और उच्च तकनीक सेवाओं की बढ़ती मांग इसे और अधिक सशक्तबना रही है। साथ ही, वैश्विक स्तर पर इसकी निर्यात क्षमता भी लगातार बढ़ रही है।

3. कृषि, विनिर्माण, और MSME **क्षेत्रों का** GDP **में योगदान–** भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि, विनिर्माण और MSME (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम) क्षेत्रों का योगदान महत्वपूर्ण है। नीचेइन तीन क्षेत्रों के GDP में योगदान का विस्तृत विवरण दिया गया है:

1. **कृषि क्षेत्र–**कृषि क्षेत्र भारत के GDP में लगभग 14% का योगदान करता है, हालांकि इसके हिस्से में गिरावट देखी गई है।2024–25 के दूसरे तिमाही मेंकृषि क्षेत्र की विकास दर 3.5% रही। हाल के वर्षों में, कृषि क्षेत्र नेऔसतन 5% वार्षिक वृद्धि दर दर्ज की है।कृषि क्षेत्र ग्रामीणभारत की रीढ़ है, जहां 45% श्रमिक कार्यरत हैं। यह न केवल GDP में योगदानदेता है बल्कि ग्रामीण आय और जीवन स्तर सुधारने में भी सहायक है।कृषि से जुड़े उद्योग जैसे डेयरी, मत्स्य पालन और पोल्ट्री भी अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करते हैं।

2. **विनिर्माण क्षेत्र –** विनिर्माण क्षेत्र का GDP में योगदान 13–14% के बीच है। 2023 में यह आंकड़ा 12.93% था। 2023–24 में विनिर्माण क्षेत्र की उत्पादन वृद्धि दर 1.4% रही, जबकि 2022–23 में यह 4.7% थी।उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन (PLI) योजनाओं और राज्य स्तरीय औद्योगिक नीतियों ने इस क्षेत्र को बढ़ावा देने का प्रयास किया है।औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) के अनुसार, जनवरी 2025 में विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि दर 5.5% रही।

3. MSME **क्षेत्र –** MSME क्षेत्र भारत के GDP में लगभग 30% का योगदान करता है। सरकार ने इसे 2025 तक 50% तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा था, लेकिन यह लक्ष्य अभी अनिश्चित है।MSME ने लगभग 20.39 करोड़ लोगों को रोजगार प्रदान किया है, जिसमें औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार के उद्यम शामिल हैं। MSME कुल औद्योगिक उत्पादन का लगभग 45% और भारत के निर्यात का 40% से अधिक हिस्सा प्रदान करता है।

मुख्य चुनौतियाँ – भारत ने 2024–25 तक 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। हालांकि, इस लक्ष्य को हासिल करने की राह में कई चुनौतियाँ हैं, जिनमें प्रमुख हैं–

1. **बेरोजगारी और कौशल विकास–**

1. **युवा आबादी का दबाव:** भारत की जनसंख्या में युवाओं का बड़ा हिस्सा है। हर साल लाखों युवा रोजगार के लिए तैयार होते हैं, लेकिन उनके लिए पर्याप्त नौकरियाँ उपलब्ध नहीं हैं।

2. **संगठित और असंगठित क्षेत्र:** असंगठित क्षेत्र में कार्यरत लोगों की संख्या अधिक है, जहाँ स्थिर रोजगार और सामाजिक सुरक्षा की कमी है।

3. **तकनीकी परिवर्तन:** ऑटोमेशन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी तकनीकों ने पारंपरिक नौकरियों को प्रभावित किया है, जिससे नई चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं।

4. **कौशल का अभाव:** कई युवा उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद उद्योग की आवश्यकताओं के अनुसार प्रशिक्षित नहीं होते।

5. **प्रशिक्षण संस्थानों की कमी:** ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में गुणवत्तापूर्ण तकनीकी प्रशिक्षण केंद्रों की कमी है।

6. **नीति और क्रियान्वयन में अंतर:** सरकार की 'स्किल इंडिया' जैसी योजनाओं का उद्देश्य सराहनीय है, परंतु इनके क्रियान्वयन में अनेक खामियाँ देखी गई हैं।

2. **अवसंरचना की कमी –**

1. **परिवहन अवसंरचना की चुनौतियाँ:** देश के कई हिस्सों में सड़कों, रेलवे और बंदरगाहों की स्थिति अभी भी खराब है।मालवाहन और यात्री परिवहन की धीमी गति आर्थिक विकास को बाधित करती है।लॉजिस्टिक्स की उच्च लागत भारतीय उत्पादों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में पीछे करती है।

2. **ऊर्जा क्षेत्र की असमानताएँ:** ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में अब भी बिजली की अनियमित आपूर्ति एक बड़ी समस्या है।अक्षय ऊर्जा को बढ़ावा देने की योजनाएँ हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन धीमा है।

3. **शहरी अवसंरचना की कमी:** तेजी से बढ़ते शहरीकरण के बावजूद स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट्स और शहरी सुविधाएँ अभी भी अधूरी हैं।जल निकासी, यातायात प्रबंधन, और कचरा निपटान जैसे बुनियादी ढांचे में कमी से आर्थिक गतिविधियाँ प्रभावित होती हैं।

4. **डिजिटल अवसंरचना की असमान पहुँच:** डिजिटल इंडिया अभियान के बावजूद, कई ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में इंटरनेट की धीमी गति और सीमित पहुँच देखी जाती है।डिजिटल कौशल और ई-गवर्नेंस सेवाओं की कमी भी एक बाधा है।

5. **नीति और निवेश से संबंधित समस्याएँ:** अवसंरचना परियोजनाओं में देरी, भूमि अधिग्रहण की समस्याएँ, और नौकरशाही प्रक्रिया निवेशकों को हतोत्साहित करती हैं।सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मॉडल को और अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

3. **विनिर्माण क्षेत्र में पिछड़ापन–**भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में विनिर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी लगभग 15-17% के बीच है, जबकि चीन जैसे देशों में यह 25-30% से अधिक है। 'मेक इन इंडिया' जैसी योजनाओं के बावजूद यह क्षेत्र अपेक्षित गति से नहीं बढ़ पाया है।

1. **अपर्याप्त आधारभूत संरचना**: कई क्षेत्रों में बिजली, परिवहन, लॉजिस्टिक्स आदि की सुविधाओं की कमी विनिर्माण इकाइयों को प्रभावित करती है।

2. **तकनीकी पिछड़ापन:** ऑटोमेशन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और आधुनिक उत्पादन तकनीकों का सीमित उपयोग प्रतिस्पर्धा में भारत को पीछे रखता है।

3. **कुशल श्रमबल की कमी:** तकनीकी रूप से प्रशिक्षित श्रमिकों की उपलब्धता सीमित है, जिससे उत्पादकता प्रभावित होती है।

4. **नीतिगत जटिलताएँ:** लाइसेंसिंग, जीएसटी, लेबर लॉ आदि की जटिलताओं के कारण कई उद्यमों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

5. **निवेश में कमी:** घरेलू और विदेशी निवेशकों का विश्वास बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है, विशेषकर जब 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' में सुधार सीमित हो।

4. **नीतिगत जटिलता और क्रियान्वयन की धीमी गति–**

1. **नीतियों की जटिलता:** भारत में कई बार नीतियाँ अच्छी मंशा से बनाई जाती हैं, लेकिन उनका ढांचा इतना जटिल होता है कि जमीनी स्तर पर लोगों के लिए उन्हें समझना और अपनाना मुश्किल हो जाता है।व्यापार, निवेश और उद्यमिता को प्रोत्साहन देने वाली नीतियाँ अक्सर विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के बीच समन्वय की कमी से प्रभावित होती हैं।

2. **नियमों और मंजूरियों की भरमार:** 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' की दिशा में सुधार तो हुए हैं, परंतु आज भी छोटे और मध्यम उद्योगों को विभिन्न प्रकार की मंजूरियाँ और क्लियरेंस लेने में लंबा समय लगता है।कर प्रणाली में भी कई बार अस्पष्टता और अनिश्चितता देखने को मिलती है।

3. **क्रियान्वयन में देरी:** कई बार योजनाओं की घोषणा हो जाती है, लेकिन उनका क्रियान्वयन समय पर नहीं हो पाता, जिससे आर्थिक विकास की रफ्तार धीमी पड़ती है। बुनियादी ढांचे की परियोजनाओं में देरी और लागत बढ़ना आम समस्या है।

4. **नीति और जमीनी हकीकत में अंतर:** कई योजनाएँ जमीनी जरूरतों से मेल नहीं खातीं। उदाहरण के लिए, डिजिटल इंडिया जैसी योजनाएँ ग्रामीण इलाकों में नेटवर्क और डिजिटल साक्षरता की कमी से पूरी क्षमता से लागू नहीं हो पातीं।

5. **जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय दबाव–**

1. **खेती और खाद्य सुरक्षा पर असर:** भारत की बड़ी आबादी कृषि पर निर्भर है। लेकिन जलवायु परिवर्तन के कारण बेमौसम बारिश, सूखा, और गर्मी की तीव्र लहरें कृषि उत्पादन को प्रभावित करती हैं, जिससे खाद्य आपूर्ति और किसानों की आय पर असर पड़ता है।

2. **जल संसाधनों की कमी:** ग्लेशियरों के पिघलने, भूजल स्तर के गिरने और वर्षा के पैटर्न में बदलाव के कारण जल संकट गहराता जा रहा है, जो कृषि, उद्योग और घरेलू उपयोगतीनों को प्रभावित करता है।

3. **तटीय क्षेत्रों में खतरा:** समुद्र स्तर में वृद्धि और चक्रवातों की बढ़ती आवृत्ति तटीय राज्यों की अर्थव्यवस्था, विशेष रूप से पर्यटन और मछली पालन पर नकारात्मक असर डालती है।

4. **वायु और जल प्रदूषण:** तेजी से औद्योगिकीकरण और शहरीकरण ने भारत के कई प्रमुख शहरों को विश्व के सबसे प्रदूषित शहरों में शुमार कर दिया है। इससे जनस्वास्थ्य, श्रम उत्पादकता और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में हानि होती है।

5. **जैव विविधता का नुकसान:** जंगलों की कटाई और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से भारत की जैव विविधता खतरे में है, जो दीर्घकालिक सतत विकास के लिए आवश्यक है।

6. **अपशिष्ट प्रबंधन की समस्याएँ:** शहरीकरण के साथ ठोस कचरे और प्लास्टिक की समस्या गंभीर होती जा रही है, जिसका प्रभाव मिट्टी,

जल और समुद्री जीवन पर पड़ रहा है।

7. हिन्द महासागर असुरक्षा एवं अन्तकराष्ट्रीय व्यापार : अप्रैल 2025 में थाईलैंड में सम्पन्न हुए बिम्सिटेक के 6 वें शिखर सम्मेलन में हिन्द महासागर से जुडे, भारत एवं अन्यं तटीय देशों के मध्यी आपसी व्या पार के साथ ही सामुद्रिक सुरक्षा का प्रश्न भी छाया रहा । विश्व के तीसरे सबसे बड़ा महासागर के रूप में हिन्द महासागर वर्तमान भू-राजनीति के केन्द्र में आता जा रहा है । इस महासागर ने हमेशा न केवल भारत की सामुद्रिक सुरक्षा की है, बल्कि अन्तेराष्ट्रीय व्यापार और सांस्कृतिक संबन्धों को भी मजबूत किया है । इसका क्षेत्रफल 74 मिलियन वर्ग किलोमीटर है और वर्तमान में इसके तटवर्ती देशों की संख्याक 40 है ।

रोडमैप: 5 ट्रिलियन डॉलर की ओर-

1. औद्योगिक विकास और विनिर्माण को बढ़ावा देना-

1. बुनियादी ढांचे का विकास: औद्योगिक कॉरिडोर, लॉजिस्टिक्स हब, और स्मार्ट सिटी परियोजनाओं का तीव्र विकास।परिवहन, बिजली, जल आपूर्ति और डिजिटल कनेक्टिविटी को मजबूत बनाना।

2. 'मेक इन इंडिया' को सशक्त बनाना: घरेलू और विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए नीतिगत सुधार। रक्षा, इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल, फार्मास्यूटिकल्स जैसे क्षेत्रों पर विशेष ध्यान। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का हिस्सा बनने की रणनीति।

3. सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग को समर्थन: आसान ऋण सुविधा, तकनीकी उन्नयन और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म से जोड़ना।क्लस्टर आधारित विकास मॉडल अपनाना।

4. श्रम और भूमि सुधार: श्रम कानूनों को लचीला बनाना, श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा देना।भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाना।

5. नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा: अनुसंधान और विकास में निवेश बढ़ाना।स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया जैसे अभियानों के साथ तालमेल।

6. हरित और टिकाऊ औद्योगिकीकरण: पर्यावरण अनुकूल तकनीकों का उपयोग।ऊर्जा कुशल उत्पादन प्रणाली को प्रोत्साहन।

2. कृषि क्षेत्र का आधुनिकीकरण-

1. तकनीकी उन्नयन और स्मार्ट खेती: ड्रोन, सेंसर,AI और IoT जैसी आधुनिक तकनीकों को खेती में अपनाना।रिमोट सेंसिंग और GIS डेटा के माध्यम से मौसम पूर्वानुमान और फसल प्रबंधन।स्मार्ट इरिगेशन और जल संरक्षण तकनीकों का प्रयोग।

2. कृषि शिक्षा और प्रशिक्षण: किसानों को नई तकनीकों और आधुनिक खेती के तरीकों की जानकारी देना।एग्रीकल्चर एक्सटेंशन सर्विस को मजबूत करना।किसान उत्पादक संगठनों के जरिए सामूहिक प्रशिक्षण और संसाधनों की पहुँच बढ़ाना।

3. मूल्य श्रृंखला का विकास: उत्पादन से लेकर बाजार तक एक सशक्त सप्लाई चेन का निर्माण।भंडारण सुविधाओं, कोल्ड स्टोरेज और प्रोसेसिंग यूनिट्स की स्थापना।किसानों को सीधे बाजार से जोड़ने के लिए ई-नाम (E-Nam) और डिजिटल प्लेटफॉर्म का विस्तार।

4. वित्तीय समावेशन और निवेश: किसानों को आसान ऋण उपलब्ध कराना।निजी और विदेशी निवेश को आकर्षित करना, विशेष रूप से एग्रीटेक स्टार्टअप्स में।कृषि बीमा योजना को व्यापक और पारदर्शी बनाना।

5. टिकाऊ और जैविक खेती को बढ़ावा: जैविक खाद, कीटनाशक और प्राकृतिक कृषि को बढ़ावा देना।मिट्टी की गुणवत्ता को बनाए रखना और इसके परीक्षण को नियमित करना।पर्यावरण-संवेदनशील खेती की ओर बदलाव।

6. नीति सुधार और कृषि कानून: किसानों को उनके उत्पाद की उचित कीमत मिले, इसके लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) की व्यवस्था को मजबूत करना।फसल विविधीकरण को प्रोत्साहित करना द केवल गेहूं और चावल पर निर्भरता कम करना।मंडी व्यवस्था में पारदर्शिता और प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करना।

3. सेवा क्षेत्र का विस्तार-

1. आईटी और आईटीईएस का विकास: भारत की आईटी कंपनियां विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। निर्यात को और बढ़ावा देना होगा।उभरती तकनीकें जैसे AI, मशीन लर्निंग, साइबर सुरक्षा में कौशल विकास।डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाना।

2. पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्र: भारत के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थलों को वैश्विक स्तर पर प्रचारित करना।ई-वीजा प्रक्रिया को सरल और त्वरित बनाना।बुनियादी सुविधाएं (सड़कें, होटल्स, गाइड्स) में सुधार।

3. स्वास्थ्य सेवा : मेडिकल टूरिज्मको प्रोत्साहन, भारत की सस्ती और गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवाएं।ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में टेली मेडिसिन का विस्तार।निजी व सार्वजनिक अस्पतालों की साझेदारी (PPP मॉडल) को बढ़ावा।

4. शिक्षा और कौशल विकास: एडटेक स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित करना।ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म को ग्रामीण भारत तक पहुंचाना।विदेशी छात्रों के लिए भारत को शिक्षा केंद्र बनाना।

5. वित्तीय सेवाएं: डिजिटल बैंकिंग और फिनटेक स्टार्टअप्स को सहयोग देना।वित्तीय समावेशन के लिए जनधन, UPI, रूपे जैसे प्लेटफार्म को और मजबूत बनाना।

6. व्यावसायिक सेवाएं : लॉजिस्टिक्स, कंसल्टिंग, कानूनी सेवाओं, अकाउंटिंग आदि में नवाचार।वैश्विक कंपनियों के लिए बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (BPO)में भारत की स्थिति को और मजबूत करना।

7. सरकारी नीतियाँ और समर्थन: सेवा क्षेत्र को GST में राहत देना।स्टार्टअप्स और MSME के लिए विशेष प्रोत्साहन योजनाएं।

4. डिजिटल और भौतिक अवसंरचना का विकास-

1. परिवहन नेटवर्क का सशक्तिकरण: भारत माला परियोजना के तहत राष्ट्रीय राजमार्गों का विस्तार।सागर माला योजनासे बंदरगाहों का आधुनिकीकरण और समुद्री परिवहन को बढ़ावा।रेलवे के आधुनिकीकरण सेमी-हाई स्पीड ट्रेनों, विद्युतीकरण और स्मार्ट स्टेशनों का विकास।गति शक्ति योजना, बहु-मोडल कनेक्टिविटी के लिए समेकित अवसंरचना योजना।

2. शहरी अवसंरचना का विकास: स्मार्ट सिटी मिशनके अंतर्गत तकनीकी समाधान, सुरक्षित आवास, जल आपूर्ति और स्वच्छता।मेट्रो रेल नेटवर्कका विस्तार।सड़क एवं फ्लाईओवरनिर्माण में निजी भागीदारी (PPP मॉडल) को बढ़ावा।

3. ऊर्जा अवसंरचना: नवीकरणीय ऊर्जा (सौर,पवन) में निवेश। ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली पहुंचाने हेतु सौभाग्य योजना।ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर का निर्माण।

4. **डिजिटल अवसंरचना :** भारतनेट योजनाके तहत ग्राम पंचायतों तक हाई-स्पीड इंटरनेट पहुंचाना।5G नेटवर्क का तेजी से विस्तार और 6G की तैयारी।डिजिटल इंडिया मिशनके जरिए ई-गवर्नेंस और डिजिटल सेवाओं को गांव-गांव तक पहुंचाना।

5. **डिजिटल शिक्षा और स्वास्थ्य:** ई-विद्या, स्वयं, और दीक्षा पोर्टलके माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा।Esajeevani और टेलीमेडिसिन सेवाओं के जरिए ग्रामीण स्वास्थ्य तंत्र को मजबूती।

6. **डेटा केंद्र और साइबर सुरक्षा:** हाइपरस्केल डेटा सेंटर की स्थापना।डेटा स्थानीयकरण और साइबर सुरक्षा ढांचे को मजबूत करना।

5. **शिक्षा और कौशल विकास-**

1. **नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 का प्रभावी कार्यान्वयन:** शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला, बहुआयामी और कौशल आधारित बनाने की दिशा में यह नीति एक बड़ा कदम है।

2. **प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार:** बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (Foundational Literacy and Numeracy) पर विशेष ध्यान।

3. डिजिटल शिक्षा का विस्तारय ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में डिजिटल संसाधनों की पहुंच सुनिश्चित करना।

4. STEM **शिक्षा को प्रोत्साहन:** विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग और गणित में रुचि व दक्षता बढ़ाना, ताकि वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारत आगे बढ़ सके।

5. Skill India mission **को और मजबूती देना:** युवाओं को उद्योग आधारित व्यावसायिक प्रशिक्षण देना।

6. **पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप** PPP: उद्योगों के सहयोग से प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करना जो बाजार की मांग के अनुसार हों।

7. MSME **सेक्टर में प्रशिक्षण के अवसर:** लघु व मध्यम उद्योगों के लिए विशेष कौशल विकास कार्यक्रम जो स्थानीय रोजगार बढ़ाएं।

8. **डिजिटल और उभरती तकनीकों में प्रशिक्षण:** AI, Data Science, Robotics, Cloud Computing जैसे क्षेत्रों में युवाओं को कुशल बनाना।

9. **रोजगार के साथ शिक्षा और प्रशिक्षण का समन्वय:**'Earn while you learn' मॉडल को प्रोत्साहन इंटर्नशिप और अप्रेंटिसशिप कार्यक्रमों का विस्तार।

10. **महिला शिक्षा और कौशल विकास:** उच्च शिक्षा और तकनीकी प्रशिक्षण में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा।महिला उद्यमिता और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहन देना।

11. **क्षेत्रीय असमानताओं को कम करना:** पिछड़े क्षेत्रों के लिए विशेष शैक्षिक व कौशल विकास कार्यक्रम।स्थानीय भाषाओं में शिक्षा और प्रशिक्षण सामग्री उपलब्ध करानाजिससे भाषा बाधा न बने।

6. **नीतिगत स्थिरता और सुधार-**

1. **नीतिगत स्थिरता :**घरेलू और विदेशी निवेशकों में विश्वास पैदा करने के लिए स्थिर और पूर्वानुमेय नीतियाँ जरूरी हैं।जीएसटी और प्रत्यक्ष कर व्यवस्था को सरल और पारदर्शी बनाना।व्यापार समझौतों और निर्यात प्रोत्साहन नीतियों में स्थिरता।राजनीतिक स्थिरता और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में मजबूती।

2. **नीतिगत सुधार :** NPA नियंत्रण, डिजिटल बैंकिंग को बढ़ावा।निवेशकों को आकर्षित करने के लिए और अधिक उदारीकरण।ऋण सुविधा, टेक्नोलॉजी अपग्रेडेशन, और आसान नियामक ढांचा।स्मार्ट खेती, सिंचाई, और एग्री-टेक को बढ़ावा।कृषि उत्पादों की बाजार तक पहुँच सुनिश्चित करना।न्यूनतम समर्थन मूल्य(MSP),पारदर्शी और लाभकारी प्रणाली।प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव का विस्तार।मल्टी-मोडल ट्रांसपोर्ट और पोर्ट इन्फ्रास्ट्रक्चर।

3. **पर्यावरण और सतत विकास:** सोलर, विंड और हाइड्रो पर फोकस।क्लाइमेट चेंज से लड़ने के लिए प्रतिबद्धता।सतत शहरीकरण और बुनियादी ढाँचे में निवेश।

निष्कर्ष – भारत का 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का लक्ष्य था र्थवादीहै, लेकिन इसके लिए समन्वित प्रयास, नीतिसुधार, और आधारभूत ढाँचे में निवेश की आवश्यकता है। यदि सरकार, उद्योग और समाज मिलकर काम करें तो यह लक्ष्य समय बद्ध तरीके से प्राप्त किया जा सकता है और भारत विश्व आर्थिक शक्ति बन सकता है।यदि भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनना है, तो उसेअवसंरचना के क्षेत्र में व्यापक सुधार करने होंगे। सड़कों, बिजली, डिजिटल नेटवर्क, और शहरी सुविधाओं में सुधार केवल आर्थिक वृद्धि को गति नहीं देंगे, बल्कि जीवन की गुणवत्ता भी बेहतर बनाएंगे। भारतीय अर्थव्यवस्था के विकासात्मंक निष्पाकदन को देखकर अंतर्राष्ट्री य मुद्रा कोष,एशियाई विकास बैंक एवं भारतीय रिजर्व बैंक ने वर्ष 2024-25 में भारत की आर्थिक विकास दर 7 प्रतिशत से अधिक रहने का अनुमान लगाया है।

भारत का 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का लक्ष्य केवल आर्थिक आकड़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक समग्र विकास की परिकल्पना है जिसमें हर नागरिक की भागीदारी और उसका कल्याण शामिल है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों के साथ-साथ निजी क्षेत्र, स्टार्टअप्स, कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र को मिलकर काम करना होगा।भारत ने विश्वक मंच पर अनेक क्षेत्रों में उपलब्धियां अर्जित की हैं, जैसेद मजबूत और विश्व स्नीगय होते विदेश संबंध,अंतरिक्ष शोध में उत्कृष्टि प्रगति, विकासोन्मुखी अर्थव्यवस्था, क्षेत्रीय सहयोग, सूचना प्रोद्यौगिकी, बहुध्रवीयता, उत्कृंष्टम नेतृत्वृ, पर्यावरण संरक्षण, सफल भू-राजनीति आदि।

भारत की जनसंख्या, विशेष रूप से युवा वर्ग, इसकी सबसे बड़ी ताकत है। यदि उन्हें उचित शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार के अवसर मिलें, तो वे देश की उत्पादकता और नवाचार को अभूतपूर्व ऊँचाइयों तक पहुँचा सकते हैं।हालाँकि, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक आर्थिक अस्थिरता, ऊर्जा सुरक्षा, और सामाजिक असमानताएँ जैसी चुनौतियाँ इस राह को कठिन बना सकती हैं। इसके लिए दीर्घकालिक रणनीति, सशक्त संस्थान, और सतत विकास पर विशेष ध्यान देना अनिवार्य होगा।भारत के लिए 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनना न केवल एक आर्थिक मील का पत्थर है, बल्कि यह विश्व मंच पर भारत की शक्ति, क्षमता और नेतृत्व को स्थापित करने का एक ऐतिहासिक अवसर भी है। इसके लिए सरकार, उद्योग, किसान, श्रमिक, युवा महिला और समाज के हर वर्ग को मिलकर योगदान देना होगा।

यह लक्ष्य एक दिशा है, जो हमें नवाचार, आत्मनिर्भरता और सतत विकास की ओर ले जाती है। 'विकास सबका, साथ सबका' की भावना के साथ भारत यदि अपनी नीतियों में स्थिरता, क्रियान्वयन में तेजी और संसाधनों के समुचित उपयोग को सुनिश्चित करता है, तो यह लक्ष्य केवल

संभव ही नहीं, बल्कि निकट भविष्य में साकार भी हो सकता है।'इस यात्रा में भारत को अपनी परंपराओं की जड़ों से जुड़े रहकर आधुनिकता की ओर अग्रसर होना होगा। तभी हम आर्थिक रूप से समृद्ध, सामाजिक रूप से न्यायपूर्ण और वैश्विक रूप से सम्मानित राष्ट्र बन सकेंगे।'

आज भारत का लगभग 90प्रतिशत तेल का आयत और 70 प्रतिशत अंतर्राष्ट्रीय व्यापर जल मार्ग से ही होता है।अत: हिन्दत महासागरीय क्षेत्र में स्थानयी शांति एवं सुरक्षा बनी रहने पर ही भारत अपने राष्ट्र हितों की पूर्ति हेतु इसका पूर्ण दोहन करके अपनी विकास यात्रा को सुरक्षा एवं व्यापार हेतु निर्बाध रूप से जारी रख सकता है ।प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रूस के कजान शहर में अक्तूबर 2024 मे ब्रिक्स के 16 वें शिखर सम्मे्लन में अन्तमराष्ट्रीय राजनीति और व्यापार में भारत की उज्जवल संभावनाओं को इन शब्दों में व्यक्त किया है, 'अब भारत के पास कृषिगत व्यापार, ई–कामर्स, आपसी क्षेत्रीय सहयोग, सूचना प्रोद्यौगिकी, विशेष आर्थिक क्षेत्रों,अंतरिक्ष शोध आदि दर्जनभर क्षेत्रों में परस्पर सहयोग करने के अवसरों की भरपूर उपलब्धता है ।'

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Economic Survey of India 2022-23,Ministry of Finance, Government of India
2. https://www.indiabudget.gov.in
3. https://www.niti.gov.in/strategy-new-india-75
4. Handbook of Statistics on Indian Economy
5. https://www.rbi.org.in
6. India Development Update,भारत की आर्थिक वृद्धि, नीति सिफारिशें
7. https://www.worldbank.org/en/country/india
8. IMF Article IV Consultation Reports – India,भारत की वित्तीय स्थिति, नीति सुझाव
9. https://www.imf.org/en/Countries/IND
10. मिश्रा,राजेश, भारतीय विदेश नीति : भूमंडलीकरण के दौर में, 2019, ओरियंट ब्लैकस्वान प्रा.लि., हैदराबाद।
11. भारद्धाज,रामदेव,भारत एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध,2018, मध्यप्रदेश हिन्दीक ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
12. सिंह,बाल्मीमकी प्रसाद,21 वीं सदी : भू राजनीति लोकतंत्र और शांति, 2024,राष्ट्रीय पुस्तक न्यास,नई दिल्ली ।
13. श्रीवास्तव, सी.बी.पी. , भारत और विश्व राजनीति , 2002, किताब महल, नई दिल्ली।
14. कुमार अशोक, भारत की आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियां, 2024, मैक्ग्रा हिल एजुकेशन (इंडिया) प्रा. लि., चैन्न्ई।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय संविधान में संशोधनों की आवश्यकता एवं प्रासंगिकता

डॉ. नियाज अहमद अन्सारी* राखी गुप्ता**

* सहा. प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान एवं व्यक्तित्व विकास) शासकीय आदर्श महाविद्यालय, उमरिया (म.प्र.) भारत
** शोधार्थी (राजनीति विज्ञान) देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – वर्ष 2024 में भारतीय संविधान के लागू होने के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 26 नवम्बर को संविधान की हीरक जयंती को सालभर संविधान का अमृत महोत्सव के रूप में देशभर में मनाया जा रहा है। किसी भी देश का संविधान एक प्रगतिशील एवं परिवर्तनशील महत्वपूर्ण ग्रंथ होता है। देश के विकास के साथ-साथ संविधान का विकास होना भी जरूरी होता है, जो कि इसमें समयानुकूल संशोधन करके सम्पन्न किया जाता है।। भारतीय संविधान एक सदी के बड़े ब्रिटिश शासनकाल में क्रमिक रूप से विकसित हुआ है। ब्रिटिश संसद ने भी भारत के लिए अनेक अधिनियम बनाए। भारत में संविधान संशोधन की प्रक्रिया अमेरिका एवं आस्ट्रेलिया की तुलना में कम कठोर है। अत: अब भारतीय संविधान में संशोधनों की आवश्यकता प्रक्रिया एवं प्रासंगिकता की विवेचना किया जाने से इसकी प्रासंगिकता सामने लाना जरूरी प्रतीत होता है।

इसके तहत संविधान में संशोधन की आवश्यीकता एवं प्रक्रिया, महत्वपूर्ण संविधान संशोधनों एवं उनका प्रभाव, लोकतंत्र के विकास में संविधान संशोधनों का योगदान, विकसित भारत-2047 में संविधान की भूमिका, अत्यंधिक संशोधनों की आलोचना, भारत में संविधान के भविष्यो आदि बिन्दुओं में चर्चा प्रारंभ होना चाहिए।अबतक भारत में संविधान लागू होने की मात्र 75 वर्षीय न्यून अवधि में ही संविधान में 106 संशोधन किए जा चुके हैं। भारत के समग्र विकास में इन संशोधनों का भी योगदान रहा है।

अत: समय की मांग को ध्यान में रखकर संविधान में संशोधन करना तत्कालीन सरकार के लिए प्रासंगिक एवं अनिवार्य हो जाता है। यही कारण है कि संविधान में समय-समय पर लचीलापन अपनाते हुए कुछ प्रावधान जोड़े जाते है तो कुछ हटाए या परिवर्तित किए जाते हैं। इसलिए भारतीय संविधान में समयानुकूल नए राज्यों का गठन, अधिकारों पर उचित प्रतिबंध, मौलिक कर्तव्यों का विस्तार, कमजोर, शोषित वर्गो के लिए आरक्षण एवं अन्य प्रावधान संविधान संशोधनों के माध्यम से स्थापित किए जा सके हैं।ग्रेनविल ऑस्टिन जैसे संविधान समीक्षकों ने भारतीय संविधान को सामाजिक क्रांति का सशक्त माध्यम निरूपित किया है।

शब्द कुंजी – भारतीय संविधान, संविधान संशोधन,संवैधानिक विकास, लोक कल्याण,विकसित भारत-2047 एवं लोकतांत्रिक मूल्य।

प्रस्तावना –वर्ष 2024 में भारतीय संविधान के लागू होने के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 26 नवम्बर 2024 को 'भारतीय संविधान की हीरक जयंती'(डायमंड जुबली) को संविधान का अमृत महोत्सव के रूप में देशभर में सालभर मनाया जा रहा है।[1]अब सालभर भारत के सभी राज्यों में निबंध प्रतियोगिता,परिचर्चा,प्रश्नामंच एवं संविधान पर आधारित पुस्त कों की प्रदर्शनी आदि का आयोजन नवाचार के रूप मेंविभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की जा रहीं हैं। वास्त व में किसी भी देश का संविधान एक प्रगतिशील एवं परिवर्तनशील महत्वपूर्ण ग्रंथ होता है। देश के विकास के साथ-साथ संविधान का विकास होना भी जरूरी होता है, जो कि इसमें समयानुकूल संशोधन करके सम्पन्न किया जाता है। विश्व का सबसे बड़ा एवं लोकतांत्रिक संविधान होने के नाते इसका वैश्विक महत्व स्वत: बढ़ जाता है।

न्यायमूर्ति वी.आर कृष्णा अय्यरने इन शब्दों में व्यक्त किया है,' विश्व का हर छटवा व्यक्ति भारतीय है और वह प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर और आधुनिक संवैधानिक परम्परा का उत्तराधिकारी है।अत: भारतीय संविधान में निहित लोकतांत्रिक मूल्यों को सर्वोपरि रखना हर भारतीय का कर्तव्य है।'[2] 2015 से प्रतिवर्ष 26 नवम्बर को राष्ट्रीय संविधान दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारतीय संविधान एक सदी के बड़े ब्रिटिश शासनकाल में क्रमिक रूप से विकसित हुआ है। ब्रिटिश संसद ने भी भारत के लिए अनेक अधिनियम बनाए। भारत में संविधान संशोधन की प्रक्रिया अमेरिका एवं आस्ट्रेलिया की तुलना में कम कठोर है। सितम्बर 2023 तक भारतीय संविधान में 106 संशोधन हो चुके हैं। अत: भारतीय संविधान में संशोधनों कीआवश्यकता प्रक्रिया एवं प्रासंगिकता की विवेचना इन बिन्दुओं में की जा सकती है-

1. संविधान में संशोधन की आवश्यनकता एवं प्रक्रिया
2. अति महत्वपूर्ण संविधान संशोधन एवं उनका प्रभाव
3. लोकतंत्र के समग्र विकास में संविधान संशोधनों की प्रासंगिकता
4. विकसित भारत-2047 में संविधान का योगदान
5. अत्यिधिक संशोधनों की आलोचना
6. निष्कर्ष

संविधान मेंसंशोधन की आवश्यशकता एवं प्रक्रिया – भारतीय संविधान के भाग-20 के तहत अनुच्छेद-368 में संविधान में संशोधन की प्रक्रिया निम्नयलिखित तीन रूपों में व्यक्त की गई है- [3]

अ. साधारण बहुमत से संशोधन– वे अनुच्छेद जिन्हें संसद में साधारण

बहुमत से ही पारित किया जा सकता है। इनमें उल्लेखनीय हैं- 1. नए राज्यों का निर्माण(अनुच्छेद 3एवं 4) 2.राज्य के क्षेत्र, सीमा एवं नाम में परिवर्तन (अनुच्छेद- 169एवं 239-A)

ब. दो तिहाई बहुमत द्वारा संशोधन की प्रक्रिया- इस प्रकार के प्रक्रिया के तहत प्रत्येक सदन में सदस्यों की कुल संख्या का बहुमत और उस सदन में उपस्थित एवं मतदान करनेवाले सदस्यों के कम से कम दो तिहाई (2/3) बहुमत से संशोधन किया जा सकता है। इस प्रकार के संशोधन का प्रस्ताव संसद के किसी भी रखा जा सकता है, किंतु उसे पारित तभी माना जाता है , जब उसे संसद के दोनों सदन पारित कर दें। इसके बाद पारित प्रस्ताव राष्ट्रपति के हस्ताक्षर हेतु प्रेषित कर दिया जाता है। इस श्रेणी में आनेवाले अनुच्छेदों की संख्या बहुत ज्यादा है। वास्तव में प्रथम श्रेणी और तृतीय श्रेणी में आनेवाले अनुच्छेदों को छोड़कर शेष सभी अनुच्छेदों को संसद दो तिहाई बहुमत से ही संशोधन कर सकती है।

स. दो तिहाई बहुमत और राज्य विधान मंडलों की स्वीकृति- इस प्रकार की प्रक्रिया कठिन एवं दीर्घकालीन होती है। इस विशेष प्रक्रिया से संशोधन करने हेतु प्रस्ताव को संसद के 2/3 बहुमत के साथ ही कम से कम आधे राज्यों के विधानमंडलों की स्वीकृति मिलने के बाद ही पारित प्रस्ताव को राष्ट्रपति के पास हस्ताक्षरार्थ भेजा जाता है। इस विशेष श्रेणी में निम्नलिखित उपबंध/अनुच्छेद आते हैं-

1. राष्ट्रपति का चुनाव एवं निर्वाचन विधि / प्रक्रिया (अनु. 54 एवं 55)
2. केन्द्रीय कार्यपालिका की शक्ति का विस्तार (अनु. 73)
3. राज्यों की कार्यपालिका की शक्ति का विस्तार (अनुच्छेद-162)
4. केन्द्र शासित क्षेत्रों हेतु उच्च न्यायालय की व्यवस्था (अनु. 241)
5. राज्यों के लिए उच्च न्यायालय (भाग-5एवं 6)
6. केन्द्र-राज्यों के मध्य विधायी सम्बंध (भाग-17, अध्याय-1)
7. 7वीं अनुसूची से संबंधित कोई भी विषय
8. संसद में राज्यों के प्रतिनिधित्व से संबंधित विषय
9. संविधान संशोधन करने से संबंधित अनुच्छेद-368

2. अब तक हुए अति महत्वपूर्ण संविधान संशोधन एवं उनका प्रभाव- भारत में संविधान लागू होने की मात्र 75 वर्षीय न्यून अवधि में ही अबतक संविधान में106 संशोधन किए जा चुके हैं। भारत के समग्र विकास में इन संशोधनों का भी योगदान रहा है। अत: इन 106 संविधान संशोधनों में अति महत्वपूर्ण संशोधनों की विवेचना इन शब्दों में की जा सकती है- [4]

क्र.	संशोधन क्रमांक एवं वर्ष	विषयवस्तु
1	पहला, 1951	अनुच्छेद-19 में राज्य की सुरक्षा, लोक व्यवस्था, नैतिकता और शालीनता के आधार पर उचित प्रतिबंध लगाए गए। इस संशोधन से जमींदारी प्रथा को भी समाप्त किया गया। इसके साथ ही अनु. 31, 85, 87,174, 176, 341, 342, 372 एवं 376 में भी आंशिक संशोधन किए गए।
2	दूसरा, 1952	इसके द्वारा अनु. 181 में संशोधन करके लोकसभा के एक सदस्य के चुनाव हेतु 7,50,000 मतदाता एवं लोकसभा के लिए अधिकतम सदस्य संख्या 500 निश्चित की गई।
3	सातवां, 1956	इसके द्वारा राज्यों के पुनर्गठन के उद्देश्य से नए राज्यों की स्थापना एवं सीमाओं में बदलाव कर प्रचलित 3 प्रकार के राज्यों के वर्ग को समाप्त किया गया।
4	आठवां, 1960	अनु.334 में संशोधन करके SC एवं ST के लिए लोक एवं विधान सभा में आरक्षित स्थानों एवं आंग्ल- भारतीयों के प्रतिनिधित्व की व्यवस्था को 26 जनवरी, 1960 से 10 वर्ष के लिए पुन: बढ़ाया गया।
5	बारहवां, 1962	इस संशोधन द्वारा गोवा, दमन एवं दीवको केन्द्र शासित प्रदेश का दर्जा दिया गया।
6	सोलहवां, 1963	राज्यों को यह अधिकार दिया गया कि वह देश की एकता एवं अखण्डता की रक्षार्थ नागरिकों के अधिकारों पर उचित प्रतिबंध लगा सकते हैं।
7	तेईसवां, 1969	SC एवं ST हेतु संसद एवं राज्य विधान मंडलो में आरक्षण को 10 वर्ष और बढ़ा दिया गया।
8	चौबीसवां, 1971	संसद को मूलाधिकारों के साथ ही संविधान के समस्त उपबंधों में संशोधन करने का अधिकार दिया गया। इसके द्वारा गोलकनाथ मुकदमे का निर्णय भी निष्प्रभावी हो गया।
9	छब्बीसवां, 1971	पूर्व रियासतों के शासकों की मान्यता एवं उनको दी जानेवाली प्रिवीपर्स (शासकों को देय रियायतें) को समाप्त कर दिया गया।
10	अट्ठाईसवां, 1972	नया अनुच्छेद- 312 (A) जोड़कर IAS के विशेष अधिकारों एवं सेवा शर्तों को समाप्त किया गया।
11	इकतीसवां1973	अनुच्छेद-81में संशोधन करके लोकसभा में निर्वाचितों की संख्या 525 से 545 की गई।
12	अड़तीसवां,1975	अनुच्छेद- 123,213, 239 (B), 352,356 एवं 360 को संशोधित किया गया। राष्ट्रपति की आपातकाल की घोषणा, राष्ट्रपति एवं राज्यपालों के अध्यादेशों को न्यायिक पुनरावलोकन के क्षेत्र से अलग किया गया।
13	चालीसवां,1976	भारत के समुद्र या महाद्वीपीय जलमार्ग या आर्थिक क्षेत्र के भीतर सागर के तल की समस्त भूमि, खनिज सम्पदा पर केन्द्र सरकार को स्वामित्व प्रदान किया गया।
14	बयालीसवां,1976	यह संशोधन अब तक हुए संशोधनों में सबसेबड़ा संशोधन माना जाता है। वास्तव में यह संशोधन एक प्रकार से सम्पूर्ण संविधान का पुनरीक्षण था। इसके द्वारा अनुच्छेद-51 (क) जोड़कर 10 मूल कर्त्तव्य जोड़े गए। प्रस्तावना में 'प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष एवं लोकतंत्रात्मक गणराज्य' शब्द जोड़े गए। लोकसभा एवं विधानसभाओं का कार्यकाल 5

		से बढ़ाकर 6 वर्ष कर दिया गया। इसके अतिरिक्त मूल अधिकारों, नीति निदेशक तत्वों, संघीय कार्यपालिका, संघीय न्यायपालिका, नियंत्रक-महालेखा परीक्षक, सातवीं अनुसूची आदि में भी संशोधन किए गए। न्यायिक समीक्षा को भी सीमित किया गया।
15	चवालीसवां, 1978	सम्पत्ति के मौलिक अधिकार को संवैधानिक (कानूनी) अधिकार बना दिया गया। अनुच्छेद-352 में 'आंतरिक अव्यवस्था' के स्थान पर 'सशस्त्र विद्रोह' शब्द का प्रयोग किया गया। अनु. 356 को संशोधित करके राज्य में लागू राष्ट्रपति शासन की अवधि एक समय में 12 माह से घटाकर 6 माह कर दी गई।
16	बावनवां, 1985	राजनीतिक दलों के दल-बदल पर कानून बनाकर संविधान में 10 वीं अनुसूची के रूप में स्थापित किया गया।
17	सत्तवनवां, 1987	नागालैंड, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश में ST के लिए लोकसभा में स्थान आरक्षित करने हेतु अनु. 330 एवं 332 को संशोधित किया गया।
18	अठावनवां, 1987	राष्ट्रपति को यह शक्ति प्रदान की गई कि वह केन्द्रीय अधिनियमों एवं संविधान में किए गए हर संशोधन का हिन्दी अनुवाद का प्रकाशन करा सकता है।
19	इकसठवां, 1989	अनुच्छेद-326 में संशोधन करके मताधिकार की न्यूनतम आयु 21 से घटाकर 18 वर्ष की गई।
20	पैसठवां, 1990	SC एवं ST के लोगोंको संवैधानिक संरक्षण प्रदान करने हेतु राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग और राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग को संवैधानिक दर्जा दिया गया।
21	उनहत्तरवां, 1991	अनु. 239AA एवं 239 AB का समावेश कर के केन्द्रशासित क्षेत्र दिल्ली का नाम राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR) कर 70 सदस्यीय विधानसभा गठित की गई।
22	पचहत्तरवां, 1994	मकान मालिक एवं किराएदारों के विवादों को शीघ्र निपटाने हेतु न्यायाधिकरणों की व्यवस्था की गई।
23	सतहत्तरवां, 1995	सरकारी सेवाओं में पदोन्नति हेतु SC एवं ST का कोटा सुरक्षित किया गया।
24	बयासीवां, 2000	पदोन्नति देने हेतु SC एवं ST के सदस्यों के पक्ष में किसी परीक्षा हेतु अर्हताअकों या मूल्यांकन के स्तरों में नरमी बरतने की व्यवस्था की गई।
25	चौरासीवां, 2000	म. प्र. से छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश से उत्तरांचल एवं बिहार से झारखण्ड का क्रमश: 26,27 एवं 28वें राज्य के रूप में गठन किया गया।
26	छियालीवां, 2002	अनु.21A, 45 एवं 51A(K) जोड़कर 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा देने की व्यवस्था की गई।
27	चौरानवेवा,2006	म.प्र., उड़ीसा के साथ-साथ छत्तीसगढ़ एवं झारखंड को सम्मिलित किया जाकर ST के कल्याणार्थ एक मंत्री का प्रावधान किया गया। इस सूची से बिहार का नाम अलग किया गया।
28	एक सौ एक्वां, 2016	गुड्स एवं सर्विस टैक्स (GST) को लागू किया गया।
29	एक सौ दोवा, 2018	अनु.338 एवं 366में संशोधन करते हुए सामाजिक एवं शैक्षणिक पिछड़े वर्ग के लिए राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग का गठन किया गया।
30	एक सौ तीनवां, 2019	आर्थिक रूप से पिछड़े अनारक्षित वर्ग के लिए शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश और सरकारी नौकरी में अधिकतम 10% आरक्षण की व्यवस्था करने हेतु अनु. 15 एवं 16 में संशोधन किया गया।
31	एक सौ पांचवा, 2021	अनु. 338B, 342A एवं 366 में संशोधन कर राज्यों को भी पिछड़ा वर्ग की सूची बनाने का अधिकारप्रदान किया गया।
32	एक सौ छटवां, 2023	लोक सभा एवं राज्य विधान सभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने की व्यवस्था को निकट भविष्य में लागू करने का मार्ग प्रशस्त किया गया। इस अधिनियम को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' का नाम दिया है।
33.	एक सौ उन्तीं सवा दिसंबर, 2024	एक देश : एक चुनाव की व्यअवस्थाक से संबंधित प्रावधान।

लोकतंत्र के समग्र विकास में संविधान संशोधनों की प्रासंगिकता – एक संविधान किसी भी देश के लिए जीवंत ग्रंथ होता है जो वहां के नागरिकों की आकांक्षाओं का प्रतिबिम्बित करता है। समय-समय पर सरकार और जनता की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक सोच में बदलाव आता रहता है। इन सबको दृष्टिगत रखते हुए संविधान में समयानुकूल संशोधन करने की आवश्यकता होती है। समय पर जरूरी बदलाव न करने पर परिस्थितियां प्रतिकूल और ज्यादा चुनौतीपूर्ण बन जाती हैं।

अत: समय की मांग को ध्यान में रखकर संविधान में संशोधन करना तत्कालीन सरकार के लिए प्रासंगिक एवं अनिवार्य हो जाता है। यही कारण है कि संविधान में समय-समय पर लचीलापन अपनातेहुए कुछ प्रावधान जोड़े जाते है तो कुछ हटाए या परिवर्तित किए जाते हैं। इसलिए भारतीय संविधान में समयानुकूल नए राज्यों का गठन, अधिकारों पर उचित प्रतिबंध, मौलिक कर्तव्यों का विस्तार, कमजोर, शोषित वर्गो के लिए आरक्षण एवं अन्य प्रावधान संविधान संशोधनों के माध्यम से स्थापित किए जा सके हैं।ग्रेनविले ऑस्टिन जैसे संविधान समीक्षकों ने भारतीय संविधान को सामाजिक क्रांति का सशक्त माध्यम निरूपित किया है। [5]

विकसित भारत-2047 में संविधान का योगदान- आजादी एवं संविधान के अमृतकाल में भारत कालोतंत्र निरन्तर विकास की ओर अग्रसर है। संविधान के निर्माण से लेकर अबतक संविधान को अपेक्षाकृत ज्यादा लोककल्याणकारी एवं राष्ट्रहित में उपयोगी बनाने हेतु समयानुकूल संशोधन होते रहे हैं। इससे हमारी अर्थव्यवस्था एवं अंतर्राष्ट्रीय स्थिति मजबूत हुई है। आज भारत विश्व की 5 वीं बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर आजादी की शताब्दी वर्ष 2047 तक तीसरी अर्थव्यवस्था के रूप में विकसित देश बनने की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है।

आशा की जा रही है विभारत 2047 तक न केवल आर्थिक मामले, बल्कि अंतरिक्ष, रक्षा, प्रौद्यौगिकी, कनेक्टिविटी, खाद्यान्न, ध्रुवीय क्षेत्र एवं संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न विकास कार्यक्रमों में भारत की बढ़ती भूमिका एवं उपलब्धियों के आधार पर 2047 तक विकसित देश बन जाएगा। अंतर्राष्ट्रीय फलक पर भारत सूर्य की भाँति चमक रहा है। जैसाकि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रूस के कजान शहर में 23 अक्टूबर, 2024 को आयोजित ब्रिक्स के 16 वें शिखर सम्मेलन में अपने उद्धो धन भें कहा है,'अब भारत के पास ई-कामर्स, कृषिगत व्यापार, सूचना प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष शोध एवं व्यावसायिक प्रक्षेपण आदि दर्जनभर नए अवसर उपलब्ध हैं। भविष्य में भारत इन सभी स्वर्णिम अवसरों का भरपूर लाभ उठाने हेतु तत्पर बना हुआ हुआ है।'[6]

अत्याधिक संशोधनों की आलोचना- एक तरफ जहां 1789 में लागू हुए अमेरिकी संविधान में अबतक मात्र 27 और ऑस्ट्रेलिया के 1848 के संविधान में और भी कम संशोधन हुए है। वहीं दूसरी ओर विश्व के सबसे बडे लोकतात्रिक देश भारत में 75 साल की न्यूहनावधि में ही अबतक भारतीय संविधान में 106 संशोधन हो चुके हैं। समय-समय पर कई विद्धानों में भारतीय संविधान मेंअत्याधिक संशोधनों की कटु आलोचना भी की हैं। इसके पीछे मुख्य कारण ये रहा है कि सत्ताधारी दल ने स्वार्थवश एवं सत्ता में बने रहने के लिए अपनी शक्ति एवं बहुमत का दुरूपयोग भी किया है।

42 वें संविधान संशोधन के सम्बंध में 1976 में आचार्य कृपलानी ने टिप्पणी करते हुए कहा था, 'मुझे तो अब भारतीय संविधान में संशोधन ही संशोधन दिखाई दे रहे हैं, मूल संविधान नहीं।'[7] वास्तव में, यह संशोधन अब तक हुए संशोधनों में सबसे बड़ा संशोधन था। यह संशोधन एक प्रकार से सम्पूर्ण संविधान का पुनरीक्षण था। इसके द्धारा सरदार स्वर्ण सिंह समिति के सिफारिश पर अनुच्छेद-51 (क) जोड़कर 10 मूल कर्त्तव्य जोड़े गए थे। इसके साथ ही प्रस्तावना में 'प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष एवं लोकतंत्रात्मक गणराज्य' शब्द जोड़े कर लोकसभा एवं विधानसभाओं का कार्यकाल 5 से बढ़ाकर 6 वर्ष कर दिया गया था जिसे 44 वें संविधान संशोधन (1978) के द्धारा पुन: कार्यकाल 5 साल कर दिया गया। इसके अतिरिक्त मूलाधिकारों, नीति निदेशक तत्वों,संघीय कार्यपालिका,संघीय न्यायपालिका,नियंत्रक-महालेखा परीक्षक,सातवीं अनुसूची आदि में भी संशोधन कर तानाशाही ढंग से न्यायिक समीक्षा को सीमित किया गया था।

निष्कर्ष- उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था को और भी मजबूत बनाने हेतु अपनी 145 करोड़ की जनसंख्या की ज्ञान, कौशल एवं जनशक्ति का अधिकतम सकारात्मक दोहन करने हेतु अपने संविधान को भी लगातार अद्यतन किया है।भारत सरकार के प्रयासों से सितम्बतर 2023 में कई दशकों से लम्बित महिला आरक्षण विधेयक को 106 वें संविधान संशोधन के रूप में संसद से पारित कराकर 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023' से महिला सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त एवं प्रज्वलित कर दिया है।[8] अब भारत के लोकतंत्र एवं संवैधानिक विकास और निर्णयन की प्रक्रिया में महिलाओं का योगदान सुनिश्चित किया जा सकेगा। अत: भारतीय संविधान में समयानुकूल नए राज्यों का गठन, अधिकारों एवंमौलिक कर्तव्यों का विस्तार, कमजोर, शोषित वर्गो के लिए विशेष आरक्षण एवं अन्य प्रावधान संविधान संशोधनों के माध्यम से ही स्थापित किए जाने की सतत् प्रक्रिया जारी रहना विकसित भारत-2047 के लक्ष्य को प्राप्ति करने हेतु जरूरी भी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. दैनिक भास्कर, 27 नवम्बर, 2024, जबलपुर, पृ. 1
2. सिवाल, अश्विनी,भारतीय संविधान के 75 वर्ष: एक गौरवपूर्ण यात्रा, योजना, नवम्बर 2024, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, पृ. 7
3. Rajaram , Kalpna, Indian Polity : The Constitutional Framework and Topical Issues, 2024, Spectrum Books Pvt. Ltd. , New Delhi, p-804
4. भारतीय राजव्यवस्था एवं शासन, 2023, उपकार प्रकाशन, आगरा, पृ.62-67
5. काश्यप, सुभाष, हमारा संविधान, 2002, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, पृ. 121
6. प्रतियोगिता दर्पण, दिसम्बर, 2024, उपकार प्रकाशन, आगरा, पृ. 15
7. सिवाल, अश्विनी, भारतीय संविधान के 75 वर्ष : एक गौरवपूर्ण यात्रा, योजना, नवम्बर 2024, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, पृ. 14
8. प्रतियोगिता दर्पण, नवम्बर, 2023, उपकार प्रकाशन, आगरा, पृ. 111

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भीलवाड़ा जिले में वास्तु का तथा मानव का अन्त:सम्बन्ध का अध्ययन

डॉ. नीता सीकलीगर*

* पोस्ट डॉक्टारोल फैलो (संस्कृत) मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,उदयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – प्रस्तुत शोध पत्र भीलवाडा जिले में भवनों के वास्तु और मानव अन्त:सम्बन्ध पर आधारित है। वास्तु का हमारे जिंदगी घर परिवार सब पर प्रभाव पड़ता है वो भी गहरा प्रभाव पड़ता है,लेकिन कई लोग इसका प्रभाव को आनयास ही महसूस कर लेते हैं तो कई लोगों को धयान देने पर इसका प्रभाव दिखाई देता है। वास्तु का सूक्ष्म प्रभाव को हर कोई आसानी से नहीं समझ सकता लेकिन नहीं समझ सकता इसका अर्थ ये कतई नहीं है कि वास्तु का कोई प्रभाव ही नहीं है। बहुत से लोग अपने घर में हमेशा वस्तुवों को व्यवस्थित करते रहते हैं उन्हें देखकर बहुत से लोगों को लगता है इसकी तो अभी कोई आवश्यकता ही नहीं थी या ये तो ठीक ठाक रखा हुआ था। शरीर मे होने वाले रोग को शरीरदोष कहते है मकान,दुकान, मन्दिर, नगर, गांव को सही ढंग से न बनाने को वास्तु दोष कहते है हर स्थान के दोष कि अलग अलग हानी लाभ होते है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. भीलवाड़ा जिले के भवनों में वास्तुसंगत स्थितियों का परिवार के सदस्यो पर प्रभाव जानना।

अध्ययन क्षेत्र – प्रस्तुत अध्ययन हेतु भीलवाड़ा जिले में 30 भवनों का अवलोकन किया गया जिसमें 15 सरकारी भवन और 15 निजी भवन थे। उक्त भवनों का अवलोकन करने से पूर्ण भवन स्वामी से आज्ञा ली गई जिसमें शोध कार्य में मूल्य–मूक्त सहयोग की अपेक्षा की गई। अवलोकन सूची अथवा प्रश्नावली के आधार पर तथ्यों का संकलन किया गया है।

वास्तु का शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव – भीलवाड़ा में स्थित 30 भवनों के वास्तु का परिवार के सदस्यों पर शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव देखा गया है जिसमें 15 निजी भवनों में से 20 प्रतिशत में स्वास्थ्य बहुत अच्छा पाया गया और 33 प्रतिशत का अच्छा एवं 20 प्रतिशत परिवारों का सामान्य तथा 13 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों का स्वास्थ्य ठीक नहीं पाया गया जबकि 13 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों का स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक नहीं पाया गया। 15 सरकारी भवनों में से 27 प्रतिशत में स्वास्थ्य बहुत अच्छा पाया गया और 27 प्रतिशत का अच्छा एवं 20 प्रतिशत परिवारों का सामान्य तथा 13 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों का स्वास्थ्य ठीक नहीं पाया गया जबकि 13 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों का स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक नहीं पाया गया।

वास्तु का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव – भीलवाड़ा में स्थित 30 भवनों के वास्तु का परिवार के सदस्यों पर मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव देखा गया है जिसमें 15 निजी भवनों में से 47 प्रतिशत में स्वास्थ्य बहुत अच्छा पाया गया और 47 प्रतिशत का अच्छा एवं 13 प्रतिशत परिवारों का सामान्य तथा 0 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों का स्वास्थ्य ठीक नहीं पाया गया जबकि 0 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों का स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक नहीं पाया गया। 15 सरकारी भवनों में से 53 प्रतिशत में स्वास्थ्य बहुत अच्छा पाया गया और 27 प्रतिशत का अच्छा एवं 20 प्रतिशत परिवारों का सामान्य तथा 0 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों का स्वास्थ्य ठीक नहीं पाया गया जबकि 0 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों का स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक नहीं पाया गया।

वास्तु का सामाजिक स्थिति पर प्रभाव – भीलवाड़ा में स्थित 30 भवनों के वास्तु का परिवार के सदस्यों पर सामाजिक स्थिति के सन्दर्भ में प्रभाव देखा गया है जिसमें 15 निजी भवनों में से 67 प्रतिशत में सामाजिक स्थिति बहुत अच्छी पायी गयी और 20 प्रतिशत की अच्छी एवं 7 प्रतिशत परिवारों की सामान्य तथा 7 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की सामाजिक स्थिति ठीक नहीं पायी गई जबकि 0 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की सामाजिक स्थिति बिल्कुल ठीक नहीं पायी गई। 15 सरकारी भवनों में से 27 प्रतिशत में सामाजिक स्थिति बहुत अच्छी पायी गयी और 53 प्रतिशत की अच्छी एवं 20 प्रतिशत परिवारों की सामान्य तथा 0 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की सामाजिक स्थिति ठीक नहीं पायी गई जबकि 0 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की सामाजिक स्थिति बिल्कुल ठीक नहीं पायी गई।

वास्तु का आर्थिक स्थिति पर प्रभाव – भीलवाड़ा में स्थित 30 भवनों के वास्तु का परिवार के सदस्यों पर आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में प्रभाव देखा गया है जिसमें 15 निजी भवनों में से 60 प्रतिशत में आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी पायी गयी और 40 प्रतिशत की अच्छी एवं 0 प्रतिशत परिवारों की सामान्य तथा 0 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं पायी गई जबकि 0 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की आर्थिक स्थिति बिल्कुल ठीक नहीं पायी गई। 15 सरकारी भवनों में से 33 प्रतिशत में आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी पायी गयी और 47 प्रतिशत की अच्छी एवं 20 प्रतिशत परिवारों की सामान्य तथा 0 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं पायी गई जबकि 0 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की आर्थिक स्थिति बिल्कुल ठीक नहीं पायी गई।

वास्तु का शैक्षणिक स्थिति पर प्रभाव – भीलवाड़ा में स्थित 30 भवनों के वास्तु का परिवार के सदस्यों पर शैक्षणिक स्थिति के सन्दर्भ में प्रभाव देखा गया है जिसमें 15 निजी भवनों में से 27 प्रतिशत में शैक्षणिक स्थिति बहुत

अच्छी पायी गयी और 20 प्रतिशत की अच्छी एवं 20 प्रतिशत परिवारों की सामान्य तथा 13 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की शैक्षणिक स्थिति ठीक नहीं पायी गई जबकि 20 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की शैक्षणिक स्थिति बिल्कुल ठीक नहीं पायी गई। 15 सरकारी भवनों में से 47 प्रतिशत में शैक्षणिक स्थिति बहुत अच्छी पायी गयी और 27 प्रतिशत की अच्छी एवं 13 प्रतिशत परिवारों की सामान्य तथा 7 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की शैक्षणिक स्थिति ठीक नहीं पायी गई जबकि 7 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की शैक्षणिक स्थिति बिल्कुल ठीक नहीं पायी गई।

वास्तु का राजनैतिक स्थिति पर प्रभाव – भीलवाड़ा में स्थित 30 भवनों के वास्तु का परिवार के सदस्यों पर राजनैतिक स्थिति के सन्दर्भ में प्रभाव देखा गया है जिसमें 15 निजी भवनों में से 40 प्रतिशत में राजनैतिक स्थिति बहुत अच्छी पायी गयी और 33 प्रतिशत की अच्छी एवं 13 प्रतिशत परिवारों की सामान्य तथा 7 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की राजनैतिक स्थिति ठीक नहीं पायी गई जबकि 7 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की राजनैतिक स्थिति बिल्कुल ठीक नहीं पायी गई। 15 सरकारी भवनों में से 20 प्रतिशत में राजनैतिक स्थिति बहुत अच्छी पायी गयी और 33 प्रतिशत की अच्छी एवं 13 प्रतिशत परिवारों की सामान्य तथा 27 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की राजनैतिक स्थिति ठीक नहीं पायी गई जबकि 7 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की राजनैतिक स्थिति बिल्कुल ठीक नहीं पायी गई।

वास्तु का परिवार के सदस्यों पर प्रभाव – भीलवाड़ा में स्थित 30 भवनों के वास्तु का परिवार के सदस्यों पर आपसी सम्बन्ध की स्थिति के सन्दर्भ में प्रभाव देखा गया है जिसमें 15 निजी भवनों में से 20 प्रतिशत में आपसी सम्बन्ध की स्थिति बहुत अच्छी पायी गयी और 53 प्रतिशत की अच्छी एवं 13 प्रतिशत परिवारों की सामान्य तथा 13 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की आपसी सम्बन्ध की स्थिति ठीक नहीं पायी गई जबकि 0 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की आपसी सम्बन्ध की स्थिति बिल्कुल ठीक नहीं पायी गई। 15 सरकारी भवनों में से 40 प्रतिशत में आपसी सम्बन्ध की स्थिति बहुत अच्छी पायी गयी और 20 प्रतिशत की अच्छी एवं 20 प्रतिशत परिवारों की सामान्य तथा 13 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की आपसी सम्बन्ध स्थिति की ठीक नहीं पायी गई जबकि 7 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की आपसी सम्बन्ध की स्थिति बिल्कुल ठीक नहीं पायी गई।

निष्कर्ष :

1. 13 प्रतिशत निजी भवनों में परिवारों के सदस्यों का स्वास्थ्य ठीक नहीं पाया गया जबकि 20 प्रतिशत सरकारी भवनों में रहने वाले परिवारों का सामान्य स्वास्थ्य पाया गया।
2. 47 प्रतिशत निजी भवनों में स्वास्थ्य बहुत अच्छा पाया गया और 53 प्रतिशत सरकारी भवनों में रहने वालों का स्वास्थ्य बहुत अच्छा पाया गया।
3. 67 प्रतिशत निजी भवनों में रहने वालों की सामाजिक स्थिति बहुत अच्छी पायी गयी जबकि 20 प्रतिशत सरकारी भवनों में रहने वाले परिवारों की सामान्य पायी गई।
4. 60 प्रतिशत निजी भवनों में रहने वाले लोगों की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी पायी गयी 20 प्रतिशत सरकारी भवनों में रहने वालों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं पायी गई।

सुझाव – कभी-कभी खून की जांच एवं मेडिकल संबंधित सभी प्रकार के टेस्ट अथवा जांच आदि कराने के बाद भी सब कुछ नॉर्मल आता है, परन्तु तब भी शरीर में बीमारी बनी रहती है। बीमारी का कारण समझ में नहीं आता है, ऐसे में आजकल डॉक्टर भी दवा के साथ दुआ, अच्छे कर्म, सकारात्मक सोच की सलाह मरीज को देते हैं ताकि बीमार व्यक्ति शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सके। प्राचीनकाल से चिकित्सा जगत में यह कहा जाता है कि डॉक्टर इलाज करते हैं, मरहम-पट्टी करते हैं और भगवान स्वास्थ्य लाभ प्रदान करते हैं। स्वास्थ लाभ के लिए मरीज की ग्रह दशा के साथ वास्तु का भी धयान रखना चाहिए। ग्रह दशा के लिए उपाय करने से एवं वास्तुदोष दूर करने से दवा बहुत जल्द असर करती है जिसके काराण रोग, शोक, बीमारियां, घर-परिवार से दूर रहती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. वी. चक्रवर्ती, इंडियन आर्किटेक्चरल थ्योरी : गूगल बुक्स में वास्तु विद्या के समकालीन उपयोग
2. प्रभु, बालगोपाल, टी. एस. और अच्युतन, ए,'अ टेक्स्ट बुक ऑफ वास्तुविद्या', वास्तुविदप्रतिष्ठानम, कोझीकोड, नया संस्करण, 2.11.
3. वास्तु-शिल्प कोश, हिंदू मंदिर वास्तुकला का विश्वकोश और वास्तु / एस. के. रामचंद्र राव, दिल्ली, डिवाइन बुक्स, (लाला मुरारी लाल छारिया ओरिएंटल सीरीज) आईएसबीएन 978-93-81218-51-8 (सेट)

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

महेश्वर में सांस्कृतिक पर्यटन की संभावनाएँ: धरोहर संरक्षण और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के संदर्भ में

श्रीमती कविता आर्य रामाणी* श्री पवन पाटीदार**

* सहायक प्राध्यापक, पूनमचंद गुप्ता वोकेशनल महाविद्यालय, खंडवा (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक, पूनमचंद गुप्ता वोकेशनल महाविद्यालय, खंडवा (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – भारत विविधताओं से परिपूर्ण एक ऐसा देश है जहाँ प्रत्येक क्षेत्र अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और धार्मिक पहचान रखता है। मध्यप्रदेश स्थित महेश्वर नगर, नर्मदा नदी के तट पर बसा एक ऐतिहासिक नगर है, जो अपनी राजवंशीय परंपराओं, धार्मिक स्थलों, तथा सांस्कृतिक धरोहरों के लिए जाना जाता है। रानी अहिल्याबाई होलकर की प्रशासनिक और सांस्कृतिक दूरदृष्टि ने महेश्वर को एक जीवंत सांस्कृतिक केंद्र के रूप में स्थापित किया।

आज जब पर्यटन केवल मनोरंजन का साधन न होकर सांस्कृतिक बोध, स्थानीय जीवनशैली के अनुभव और धरोहर संरक्षण का माध्यम बन गया है, तब महेश्वर की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। सांस्कृतिक पर्यटन एक ऐसा क्षेत्र है जो पर्यटकों को न केवल स्थल भ्रमण कराता है बल्कि उन्हें उस भूमि की आत्मा से जोड़ता है। महेश्वर, अपनी स्थापत्य कला, घाटों, मंदिरों, उत्सवों और महेश्वरी वस्त्रों के कारण सांस्कृतिक पर्यटन की व्यापक संभावनाएँ प्रस्तुत करता है।

हालांकि, आधुनिकता की दौड़ में कई पारंपरिक सांस्कृतिक पहचान खतरे में हैं। धरोहर स्थलों की उपेक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में कमी, और स्थानीय कारीगरों की समस्याओं के चलते महेश्वर की सांस्कृतिक छवि धीरे-धीरे मंद पड़ रही है। ऐसे में सांस्कृतिक पर्यटन को एक पुनरुत्थानात्मक शक्ति के रूप में देखा जा सकता है, जो न केवल धरोहरों की रक्षा करेगा, बल्कि स्थानीय संस्कृति को जीवंत बनाए रखने में भी सहायक होगा।

यह शोध पत्र महेश्वर में सांस्कृतिक पर्यटन की संभावनाओं का अध्ययन करता है तथा यह विश्लेषण करता है कि कैसे धरोहर संरक्षण और सांस्कृतिक पुनरुत्थान को एक साथ जोड़ा जा सकता है। शोध का उद्देश्य है कि सांस्कृतिक दृष्टिकोण से पर्यटन की भूमिका का मूल्यांकन किया जाए, ताकि महेश्वर की संस्कृति को वैश्विक स्तर पर पहचान मिल सके।

महेश्वर की सांस्कृतिक विरासत –महेश्वर एक ऐसा नगर है जो इतिहास, संस्कृति और श्रद्धा की त्रिवेणी में प्रवाहित होता है। प्राचीन काल से ही यह नगर नर्मदा नदी के तट पर एक धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में प्रसिद्ध रहा है। यह नगर न केवल स्थापत्य और कला की दृष्टि से समृद्ध है, बल्कि इसकी आत्मा लोकजीवन, परंपराओं और धार्मिक आस्थाओं में रची-बसी है।

1. **ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और होलकर वंश का योगदान–** महेश्वर का सबसे उज्ज्वल और समृद्ध काल 18वीं शताब्दी में रानी अहिल्याबाई होलकर के शासनकाल में आया। रानी अहिल्याबाई न केवल एक सक्षम प्रशासिका थीं, बल्कि उन्होंने धर्म, संस्कृति और समाज कल्याण के क्षेत्रों में भी अनूठा योगदान दिया। उन्होंने महेश्वर को अपनी राजधानी बनाया और यहाँ भव्य घाटों, मंदिरों और भवनों का निर्माण कराया। उनके प्रयासों से महेश्वर एक सांस्कृतिक केंद्र के रूप में स्थापित हुआ।

2. **स्थापत्य और कला की विरासत–** महेश्वर का किला, जो नर्मदा तट पर स्थित है, स्थापत्य का अनुपम उदाहरण है। यह किला न केवल सैन्य दृष्टि से महत्वपूर्ण था, बल्कि सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र भी रहा। अहिल्येश्वर मंदिर, राजराजेश्वर मंदिर और अनेक छोटे-बड़े मंदिर इस नगर की धार्मिक और स्थापत्य विशेषताओं को दर्शाते हैं। महेश्वर के घाट जैसे दअहिल्या घाट,पेशवा घाट, तिल्बानेश्वर घाट आदि भी धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

3. **धार्मिक महत्त्व–** महेश्वर का धार्मिक महत्व अत्यधिक है। यह नगर नर्मदा नदी के कारण पवित्र माना जाता है, और यहाँ प्रतिवर्ष हजारों श्रद्धालु नर्मदा स्नान, पूजा और अन्य धार्मिक अनुष्ठानों के लिए आते हैं। स्कंद पुराण तथा अन्य प्राचीन ग्रंथों में महेश्वर का उल्लेख है, जो इसकी धार्मिक प्राचीनता को सिद्ध करता है।

4. **लोक संस्कृति और परंपराएँ–** महेश्वर की लोक संस्कृति विविध रंगों से भरपूर है। यहाँ की लोक कथाएँ, लोकगीत, वाद्ययंत्र और पारंपरिक नृत्य यहाँ की जीवंत सांस्कृतिक परंपराओं को दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त, यहाँ की भाषा, पहनावा और खान-पान भी स्थानीय संस्कृति की अनूठी पहचान बनाते हैं।

5 **महेश्वरी वस्त्र और कारीगरी–** महेश्वर की पहचान महेश्वरी साड़ियों से भी है, जो यहाँ की पारंपरिक हथकरघा कारीगरी का प्रतीक हैं। इन साड़ियों की डिजाइन, रंग संयोजन और गुणवत्ता विश्व प्रसिद्ध है। यह कारीगरी रानी अहिल्याबाई के समय से चली आ रही है और आज भी महेश्वर की सांस्कृतिक पहचान में इसका अहम स्थान है।

सांस्कृतिक पर्यटन की अवधारणा और महेश्वर में उसकी स्थिति

1. **सांस्कृतिक पर्यटन की परिभाषा–** सांस्कृतिक पर्यटन वह प्रकार का पर्यटन है जिसमें पर्यटक किसी क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत, कला, स्थापत्य, रीति-रिवाज, परंपराएँ, भाषा, धार्मिक स्थल और ऐतिहासिक स्मारकों को जानने और अनुभव करने के उद्देश्य से यात्रा करता है। यह पर्यटन केवल स्थल दर्शन तक सीमित नहीं होता, बल्कि पर्यटक स्थानीय

समाज के जीवन में सहभागी बनने का प्रयास करता है।

विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO) के अनुसार, 'सांस्कृतिक पर्यटन का तात्पर्य उस यात्रा से है, जिसका प्राथमिक उद्देश्य किसी क्षेत्र की संस्कृति को अनुभव करना है, जिसमें वास्तुकला, कला, ऐतिहासिक स्थल, त्योहार, हस्तशिल्प, संगीत, नृत्य और जीवनशैली शामिल है।'

2. सांस्कृतिक पर्यटन का महत्व– धरोहर संरक्षण को बढ़ावा, स्थानीय कारीगरों और कलाकारों को प्रोत्साहन, सास्कृतिक पहचान की पुनर्स्थापना, स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान, सांस्कृतिक संवाद और सौहार्द को बढ़ावा

3. महेश्वर में सांस्कृतिक पर्यटन की वर्तमान स्थिति– महेश्वर, अपने समृद्ध इतिहास और सांस्कृतिक विविधता के बावजूद, अभी भी पर्यटक मानचित्र पर सीमित रूप से स्थापित है। यहाँ पर आने वाले पर्यटकों की प्राथमिकता धार्मिक अनुष्ठान, घाट दर्शन और किले भ्रमण तक सीमित रहती है। यद्यपि महेश्वर महेश्वरी वस्त्र, स्थापत्य, धार्मिक आस्था और रानी अहिल्याबाई के योगदानों के लिए प्रसिद्ध है, फिर भी सांस्कृतिक दृष्टि से इसके पर्यटन का समुचित विकास नहीं हुआ है।

पर्यटकों की संख्या– विगत वर्षों में नर्मदा परिक्रमा और स्थानीय त्योहारों के अवसर पर पर्यटक संख्या में वृद्धि देखी गई है, परंतु यह मौसमी होती है।

आधारभूत संरचना की स्थिति– पर्यटन स्थल तक पहुंचने की सुविधा सीमित हैय साथ ही पर्यटकों के लिए उचित सांस्कृतिक सूचना केंद्रों की भी कमी है।

प्रचार–प्रसार की कमी– महेश्वर की सांस्कृतिक विशेषताओं का राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी प्रचार नहीं हो पा रहा है।

4. स्थानीय समुदाय की भागीदारी– महेश्वर के स्थानीय समुदायों में सांस्कृतिक परंपराएँ आज भी जीवित हैं, परंतु उन्हें पर्यटन से जोड़ने के लिए संगठित प्रयासों की कमी है। यदि हस्तशिल्प, पारंपरिक भोजन, स्थानीय नृत्य–संगीत और लोककथाओं को पर्यटन गतिविधियों में सम्मिलित किया जाए, तो सांस्कृतिक पर्यटन को नई दिशा दी जा सकती है।

धरोहर संरक्षण की स्थिति और चुनौतियाँ– महेश्वर, जो कि भारत की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहरों में से एक है, आज संरक्षण के संदर्भ में कई गंभीर चुनौतियों से जूझ रहा है। यद्यपि यह नगर ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, तथापि इसके धरोहर स्थलों की उपेक्षा, पर्यावरणीय दबाव और प्रशासनिक उदासीनता इसे संकट की ओर ले जा रही है।

1. धरोहर स्थलों की वर्तमान स्थिति– महेश्वर किलारू स्थापत्य की दृष्टि से अनुपम यह किला दीवारों में दरारें, क्षतिग्रस्त भाग और सफाई की कमी जैसी समस्याओं से ग्रस्त है।

अहिल्येश्वर और राजराजेश्वर मंदिर– धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मंदिर, यद्यपि पूजा–अर्चना होती है, लेकिन संरचनात्मक संरक्षण की दृष्टि से सक्रिय प्रयास नगण्य हैं।

घाट क्षेत्र– पर्यटन का प्रमुख आकर्षण होने के बावजूद घाटों पर भीड़, गंदगी और अनियंत्रित निर्माणों से उनकी मौलिकता प्रभावित हो रही है।

2. सरकारी और गैर–सरकारी प्रयास– पुरातत्व विभाग द्वारा सीमित संरक्षणरू कुछ स्थलों को राष्ट्रीय धरोहर घोषित कर सीमित संरक्षण कार्य किए गए हैं, परंतु अनेक छोटे–मंझोले स्थल उपेक्षित हैं।

स्थानीय निकायों की सीमित भागीदारी– नगर पालिका और पर्यटन विभाग द्वारा स्वच्छता और विकास की कुछ योजनाएँ बनीं, परन्तु उनका कार्यान्वयन अपूर्ण है।

NGOऔर समाजसेवियों की भूमिका– कुछ गैर–सरकारी संस्थाओं द्वारा हथकरघा, महिला स्वसहायता समूह और सांस्कृतिक कार्यशालाओं के माध्यम से धरोहरों को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जा रहा है।

3. प्रमुख चुनौतियाँ:

वित्तीय संकट– संरक्षण कार्यों के लिए पर्याप्त धन का अभाव है।

जन–जागरूकता की कमी– स्थानीय नागरिकों और पर्यटकों में धरोहर संरक्षण के प्रति अपेक्षित संवेदनशीलता नहीं है।

अवैध निर्माण और अतिक्रमण– धार्मिक और ऐतिहासिक स्थलों के पास अव्यवस्थित निर्माण कार्य धरोहर की मूल आत्मा को क्षति पहुँचा रहे हैं।

प्राकृतिक क्षरण– नर्मदा के किनारे स्थित होने के कारण जलवायु प्रभाव, नमी और वर्षा धरोहर स्थलों की दीवारों को क्षरण करते हैं।

पर्यटन का दुष्प्रभाव– अनियंत्रित पर्यटन गतिविधियाँ, ध्वनि और कचरा प्रदूषण, विरासत स्थलों की शांति और गरिमा को प्रभावित करते हैं।

4, स्थानीय समुदाय और शिक्षा की भूमिका– धरोहर संरक्षण के लिए केवल सरकारी प्रयास पर्याप्त नहीं होते। स्थानीय समुदायों, विद्यालयों, महाविद्यालयों और शोध संस्थानों की भागीदारी आवश्यक है। यदि महेश्वर के निवासी अपने अतीत की महत्ता को समझें और अपनी सांस्कृतिक जड़ों पर गर्व करें, तो वे संरक्षण प्रक्रिया के सक्रिय सहयोगी बन सकते हैं।

सांस्कृतिक पुनरुत्थान की संभावनाएँ– महेश्वर का अतीत अत्यंत गौरवशाली रहा है, किंतु वर्तमान में इसकी सांस्कृतिक छवि धूमिल होती जा रही है। ऐसे में यह अत्यंत आवश्यक है कि सांस्कृतिक पुनरुत्थान को एक सशक्त आंदोलन के रूप में देखा जाए, जिसमें धरोहर संरक्षण, लोककला संवर्धन और सांस्कृतिक आत्मबोध के तत्व समाहित हों।

1. सांस्कृतिक पुनरुत्थान की आवश्यकता:

सांस्कृतिक क्षरण की स्थिति– आधुनिकता और उपभोक्तावाद के प्रभाव में पारंपरिक कलाएँ, लोकगीत, महेश्वरी वस्त्र शिल्प और धार्मिक परंपराएँ लुप्त होने की कगार पर हैं।

पीढ़ियों के बीच सांस्कृतिक अंतर– नई पीढ़ी की रूचि अब तेजी से डिजिटल मीडिया की ओर बढ़ रही है, जिससे पारंपरिक सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ हाशिए पर जा रही हैं।

धरोहर स्थलों का उपेक्षित स्वरूप– जब तक सांस्कृतिक चेतना नहीं जागेगी, धरोहर स्थल केवल पत्थरों की संरचना बनकर रह जाएँगे।

2. प्रमुख पुनरुत्थान संभावनाएँ:

2.1 महेश्वरी वस्त्र उद्योग का संवर्धन– महेश्वर की हथकरघा परंपरा, विशेष रूप से महेश्वरी साड़ियों की बुनाई, सांस्कृतिक पहचान की वाहक है। यदि सरकार और गैर–सरकारी संस्थाएं इन कारीगरों को प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और बाजार उपलब्ध करवाएँ, तो यह कला वैश्विक पहचान पा सकती है।

2.2 लोक कला और लोक संगीत का पुनर्जीवन– महेश्वर की लोक कथाएँ, नर्मदा अष्टक, और पारंपरिक वाद्ययंत्र अब बहुत कम सुनाई देते हैं। स्थानीय महाविद्यालयों और सांस्कृतिक केंद्रों में इन कलाओं को पढ़ाया जाए व युवा पीढ़ी को इससे जोड़ा जाए।

2.3 सांस्कृतिक उत्सवों और मेलों का आयोजन–वार्षिक महोत्सव, जैसे 'महेश्वर सांस्कृतिक महोत्सव', में स्थानीय कलाकारों, हस्तशिल्पियों और सांस्कृतिक समूहों को मंच प्रदान किया जाए, ताकि वे अपनी कला का

प्रदर्शन करें और आमजन को सांस्कृतिक बोध हो।

2.4 धार्मिक पर्यटन और आध्यात्मिक अनुभव– महेश्वर में धार्मिक दृष्टि से अनेक स्थल हैं। यदि इन्हें एक संरचित ध्धार्मिक पर्यटन परिपथष के रूप में विकसित किया जाए, तो पर्यटक सांस्कृतिक–आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त कर सकेंगे। इसके लिए गाइडेड टूर, ऑडियो–विजुअल सामग्री और ध्यान केंद्रों की स्थापना सहायक होगी।

2.5 शैक्षिक संस्थानों की भागीदारी– स्थानीय स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में सांस्कृतिक पाठ्यक्रम, नाट्य कार्यशालाएँ, विरासत भ्रमण और शोध परियोजनाओं के माध्यम से छात्रों को संस्कृति से जोड़ा जा सकता है। इससे युवा वर्ग में स्थानीय गर्व और जिम्मेदारी की भावना विकसित होगी।

2.6 डिजिटल माध्यम से सांस्कृतिक प्रचार– डिजिटल प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया और वेबसाइटों के माध्यम से महेश्वर की सांस्कृतिक विशेषताओं का प्रचार–प्रसार किया जा सकता है। एक 'वर्चुअल महेश्वर म्यूजियम' भी बनाया जा सकता है, जहाँ पुरातात्विक वस्तुएँ, कथाएँ, गीत और चित्र उपलब्ध हों।

सांस्कृतिक पर्यटन के विकास हेतु प्रमुख रणनीतियाँ

1. पर्यटन अवसंरचना का सुदृढ़ीकरण:

यातायात सुविधा– सड़क, रेल और जलमार्ग को महेश्वर से बेहतर रूप में जोड़ा जाए।

आवास और सुविधा केंद्र– पर्यटकों के लिए विभिन्न श्रेणियों के होटल, धर्मशालाएँ, तथा सांस्कृतिक केंद्र विकसित किए जाएँ।

सूचना केंद्र– बहुभाषीय सांस्कृतिक सूचना केंद्रों की स्थापना की जाए जो पर्यटकों को ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जानकारी उपलब्ध कराएँ।

2. विरासत स्थलों का संरक्षण और प्रस्तुतिकरण– विरासत स्थलों की मरम्मत, सौंदर्यीकरण और तकनीकी संरक्षण के माध्यम से उन्हें और आकर्षक तथा सुरक्षित बनाया जाए।

ध्वनि–प्रकाश शो, डिजिटल गाइडिंग सिस्टम और फत कोड आधारित सूचना सेवाएँ शुरू की जा सकती हैं।

3. स्थानीय समुदाय को लाभ से जोड़ना– पर्यटन से जुड़ी नौकरियाँ (गाइड, शिल्प विक्रेता, प्रदर्शन कलाकार) स्थानीय नागरिकों को दी जाएँ। महिला स्वसहायता समूहों को स्थानीय भोजन, शिल्प, वेशभूषा और सांस्कृतिक गतिविधियों में जोड़ा जाए।

4. सांस्कृतिक गतिविधियों का स्थायित्व– मासिक या त्रैमासिक 'सांस्कृतिक सप्ताह'का आयोजन किया जाए, जिसमें शास्त्रीय संगीत, नृत्य, कथावाचन, शिल्प प्रदर्शन आदि हो।

महेश्वर के इतिहास और रानी अहिल्याबाई के जीवन पर आधारित नाट्य प्रस्तुतियाँ स्थानीय रंगमंच पर हों।

5. डिजिटल प्रचार और ब्रांडिंग– महेश्वर को 'इंडिया की सांस्कृतिक राजधानी' या 'नर्मदा की रानी' जैसे ब्रांड नामों से प्रचारित किया जाए।

एक समर्पित वेबसाइट, ऐप और सोशल मीडिया अभियान के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों तक पहुंच बनाई जाए।

6. शोध और नवाचार के अवसर– पर्यटन, संस्कृति और समाजशास्त्र के शोधार्थियों को महेश्वर में फील्ड वर्क और डॉक्युमेंटेशन का अवसर प्रदान किया जाए।

सांस्कृतिक इको–टूरिज्म की अवधारणा अपनाते हुए 'सस्टेनेबल टूरिज्म मॉडल– तैयार किया जा सकता है।

निष्कर्ष एवं अनुशंसाएँ

1. निष्कर्ष – महेश्वर भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता और इतिहास का जीवंत प्रतीक है। यहाँ की भौगोलिक स्थिति, धार्मिक महत्ता, ऐतिहासिक धरोहरें और पारंपरिक हस्तशिल्प इसे सांस्कृतिक पर्यटन के लिए उपयुक्त स्थल बनाते हैं। यद्यपि वर्तमान में यहाँ सांस्कृतिक पर्यटन की गतिविधियाँ सीमित रूप में संचालित हो रही हैं, परंतु इस क्षेत्र में अनंत संभावनाएँ विद्यमान हैं।

धरोहर संरक्षण की दिशा में कुछ प्रयास अवश्य हुए हैं, किंतु वे अभी भी अपर्याप्त हैं। वहीं, सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए स्थानीय समुदाय, शैक्षिक संस्थाएँ, सरकार और गैर–सरकारी संगठनों की सामूहिक भागीदारी आवश्यक है। यदि सुनियोजित रणनीतियों के साथ महेश्वर में सांस्कृतिक पर्यटन को विकसित किया जाए, तो यह न केवल स्थानीय विकास का साधन बनेगा, अपितु भारत की सांस्कृतिक गरिमा को वैश्विक पटल पर स्थापित करने का माध्यम भी बनेगा।

2 अनुशंसाएँ:

2.1. धरोहर स्थलों का वैज्ञानिक संरक्षण– महेश्वर के प्रमुख ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों का संरक्षण विशेषज्ञों की देखरेख में किया जाए, जिससे उनकी मूल संरचना और सांस्कृतिक मूल्य सुरक्षित रहें।

2.2. स्थानीय समुदाय का प्रशिक्षण और सहभागिता–स्थानीय युवाओं, महिलाओं और कारीगरों को पर्यटन संचालन, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और गाइड सेवाओं के लिए प्रशिक्षित किया जाए।

2.3. महेश्वरी वस्त्र उद्योग को प्रोत्साहन–महेश्वरी साड़ियों और हथकरघा शिल्प को GI टैग जैसी मान्यता देकर अंतरराष्ट्रीय बाजार में पहुँचाने के प्रयास हों।

2.4. सांस्कृतिक महोत्सवों का नियमित आयोजन– वार्षिक/मासिक महोत्सवों में सांस्कृतिक प्रदर्शन, कारीगरी, नृत्य, संगीत, पारंपरिक भोजन और लोककथाओं का मंचन किया जाए।

2.5. डिजिटल प्रचार तंत्र का विकास–महेश्वर की सांस्कृतिक विशेषताओं को डिजिटल माध्यम से प्रचारित करने के लिए वेबसाइट, मोबाइल ऐप, सोशल मीडिया कैंपेन और वर्चुअल टूर जैसी सेवाएँ विकसित की जाएँ।

2.6. पर्यटन नीति में महेश्वर को प्राथमिकता– राज्य सरकार की पर्यटन नीति में महेश्वर को एक विशेष सांस्कृतिक पर्यटन परिपथ के रूप में सम्मिलित कर, योजनाबद्ध निवेश किया जाए।

2.7. शोध व प्रलेखन केंद्र की स्थापना– एक स्थायी 'महेश्वर संस्कृति शोध केंद्र' की स्थापना हो, जहाँ ऐतिहासिक दस्तावेज, मौखिक परंपराएँ, चित्रकला और संगीत का संकलन किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. 'भारतीय लोक संस्कृति' – डॉ. नामवर सिंह, प्रकाशन वर्ष: 2005, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. 'संस्कृति और पर्यटन' – डॉ. अजय सोनी, प्रकाशन वर्ष: 2012, पुस्तक मंदिर, जयपुर।
3. 'धरोहर संरक्षण: सिद्धांत और व्यवहार' – प्रो. ए. के. जैन, प्रकाशन वर्ष: 2018, इंडियन हेरिटेज फाउंडेशन, दिल्ली।
4. 'महेश्वरी वस्त्र शिल्प: परंपरा और समकालीनता' – डॉ. श्वेता

अग्रवाल, प्रकाशन वर्ष: 2021, हस्तकला अध्ययन संस्थान, इंदौर।
5. 'भारतीय सांस्कृतिक पर्यटन' – डॉ. किरण जोशी, प्रकाशन वर्ष: 2016, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, वाराणसी।
6. 'रानी अहिल्याबाई होलकर: जीवन और कार्य' – डॉ. रामशंकर त्रिपाठी, प्रकाशन वर्ष: 2010, नर्मदा प्रकाशन, भोपाल।
7. 'नर्मदा अंचल की सांस्कृतिक विरासत' – डॉ. सुरेश चौरे, प्रकाशन वर्ष: 2014, संस्कृति प्रतिष्ठान, जबलपुर।
8. ''Tourism and Cultural Heritage in India" – Prof. Manoj Dixit, Publication Year: 2019, Gyan Publishing House, New Delhi.
9. 'सांस्कृतिक नवजागरण और भारत' – डॉ. अरविंद श्रीवास्तव, प्रकाशन वर्ष: 2009, प्रकाशन विद्या निकेतन, पटना।
10. 'मध्यप्रदेश का सांस्कृतिक वैभव' – म.प्र. राज्य संस्कृति संचालनालय, प्रकाशन वर्ष: 2020, मध्यप्रदेश शासन प्रकाशन विभाग, भोपाल।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

राजनीतिक दलों के माध्यम से भारत में चुनावी-जनसहभागिता की स्थिति

डॉ. डी.के.वर्मा *

* एसोसिएट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान) एस.बी.एन. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़वानी (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – नागरिकों द्वारा राजनीतिक व्यवस्था में भागीदार निभाने का एक अन्य माध्यम राजनीति दल है। राजनीतिक दल प्रमुख रूप में सरकार का गठन करने,सरकार की साझेदारी, सरकार गिराने, सरकार की आलोचना करने तथा इन सब कार्यों हेतु जनमत प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। इनकी सभी गतिविधियां प्राय: चुनाव से ही संबंधित होती है।इसके अतिरिक्त राजनीतिक दल, विरोध-प्रदर्शन, बन्द,जन-जागृति अभियान,रैली,बहिष्कार, सभा,रोड शो व अन्य माध्यमों से राजनीतिक गतिशीलता में योगदान देते है और जनता को राजनीतिक व्यवस्था की ओर आगत प्रेषित करने हेतु प्रेरित है।

शब्द कुंजी – राजनीतिक दल, चुनावी जनसहभागिता,लोकतंत्र, दक्षिण एशिया।

राजनीतिक दलों के माध्यम से चुनावी-जनसहभागिता – भारत के निर्वाचन आयोग द्वारा वर्ष 2021, सितम्बर 23 को जारी आंकड़ों के अनुसार, भारत में कुल 2858 राजनीतिक दल पंजीकृत है। जिनमें से 8 राष्ट्रीय,54 राज्यस्तरीय व 2796 दलों को कोई दर्ज़ा प्राप्त नहीं है। इनमें से 2019 के लोकसभा चुनाव में 2293 पंजीकृत दलों में सेमात्र 673 अर्थात 29.93 प्रतिशत दलों ने लोकसभा चुनाव हेतु अपने प्रत्याशी चुनावी मैदान में उतारे।इससे पूर्व वर्ष 2014 में भारत में राजनीतिक दलों की कुल संख्या 1627 थी और इनमें से कुल 464 राजनीतिक दलों ने ही लोकसभा चुनाव लड़ा अर्थात कि मात्र 28.51 प्रतिशत राजनीतिक दलों ने ही चुनावी-राजनीति में भाग लिया जबकि वर्ष 2009 में 1000 पंजीकृत राजनीतिक दलों में से 363 (36.3 प्रतिशत) ने चुनावी-मैदान में ताल ठोकी थी। वर्ष 2004 के लोकसभा आम चुनाव के दौरान 702 पंजीकृत राजनीतिक दलों में से 230 (32.76प्रतिशत) ने ही चुनाव लड़ा।

विगत एक दशक (2009 से 2019) में 'चुनाव' में राजनीतिक दलों की भागीदारी में करीब सात फीसदी की कमी दर्ज की गई है। इस दौरान कुल पंजीकृत राजनीतिक दलों की संख्या में तो लगभग ढ़ाई गुना की बढ़ोतरी हुई है लेकिन चुनावों में राजनीतिक दलों की घटती भागीदारी एक विडम्बना की स्थिति उत्पन्न करती है। वर्ष 2004 से 2019 के मध्य हुए लोकसभा आम चुनावों में भागीदार राजनीतिक दलोंव तत्कालीन पंजीकृत दलों के बीच संख्यात्मक अंतर है।

लोकसभा चुनावों में उम्मीदवार के रूप में भाग लेने की प्रवृत्ति में भी उतार-चढ़ाव देखने को मिला है। वर्ष 2004 की तुलना में 2009 के लोकसभा आम चुनाव में भाग लेने वाले उम्मीदवारों की संख्या में 48.48 प्रतिशत का भारी उछाल आया परन्तु वर्ष 2014 के चुनाव में मात्र 2.24 की बाद बढ़त दर्ज की गई।जबकि 2019 के लोकसभा चुनाव में पहले की तुलना में 2.38 प्रतिशत कम उम्मीदवारों की चुनावी भागीदारी दर्ज हुई।

17 वीं लोकसभा चुनाव में 18.7 प्रतिशत युवाओं ने चुनाव लड़ा। इनकी आयु 25 से 35 वर्ष के मध्य थी।शोध पत्र में 21वीं शताब्दी के चारों लोकसभा चुनावों में राष्ट्रीय राजनीतिक दलों द्वारा प्राप्त किया गया जनमत प्रतिशत निम्न-लिखित है:

चित्र – 1 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

राजनीतिक दलों द्वारा चुनाव में प्राप्त किये गए मत प्रतिशत का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि भारतीय जनता पार्टी को छोड़ दिया जाए तो सभी राष्ट्रीय राजनीतिक दलों के जनसमर्थन में कमी आई है। वहीं भारतीय जनता पार्टी को मिलने वाले मत प्रतिशत में लगभग डेढ़ गुना बढ़ोतरी दर्ज की गई है। जिसका प्रमुख कारण सोशल मीडिया का बढ़ता प्रयोग व इसके माध्यम से प्रचार-प्रसार,ई-सक्रियता,राष्ट्रवादी विचारधारा,वंशवाद के प्रति जनाक्रोश,अच्छे दिनों की आशा एवं नवीन विकल्प की जनइच्छा माना जा सकता है।

पुलिस अनुसंधान एवं विकास विभाग द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2009 से 2014 के बीच देश में हुए कुल विरोध-प्रदर्शनों में से करीब 32 प्रतिशत आंदोलनों का संचालन राजनीतिक दलों द्वारा किया गया था।यदि इसमें दलों से संबंधित छात्र-संगठन व मजदूर संघों को भी शामिल कर दिया जाए तो यह आंकड़ा 50 प्रतिशत तक पहुंच सकता है। विभाग के पूर्व राज्य पुलिस प्रमुख राहुल गोपाल का कहना है कि यद्यपि महाराष्ट्र में वर्ष 2009 से 2014 की कालावधि में बड़ी संख्या में प्रदर्शन दलों द्वारा संचालित/आयोजित थे,परन्तु उनका स्तर व गहनता इतनी अधिक ऊंची नहीं थी (ब्यूरो ऑफ पुलिस रिसर्च एंड डिपार्टमेंट, 2014)। राजनीतिक लाभ प्राप्ति हेतु राजनीतिक दलों व कार्यकर्ताओं द्वारा दंगों का सहारा लिया जाता है। जिसे पॉल ब्रास 'संस्थागत दंगा व्यवस्था' का नाम देते हैं।

जनता के अभिमुखन हेतु राजनीतिक दलों द्वारा सभा आयोजित कर उनका मत निर्धारित करने का प्रयास किया जाता है,परन्तु इन जनसभाओं

में जनभागीदारी जागृत/सक्रिय उतनी नहीं रह पाती है और न ही जनसभाओं में व्यक्त जनमत एवं जनव्यवहार में कोई साम्य पाया जाता है। इस सम्बंध में सत्येंद्र कुमार द्धारा वर्ष 2004 के लोकसभा चुनाव के दौरान किये गए एथनोग्राफिकल अध्ययन के उनके निम्न अनुभव को साझा करना प्रासंगिक होगा।

'वे (मेरठ जिले के खानपुर ग्रामवासी) कहते कुछ और थे और करते कुछ और थे।गाँव की एक चुनावी सभा में जब भारतीय जनता पार्टी की एक महिला नेत्री आईं तो लोगों ने अपनी राजनीतिक निष्ठा और जुड़ाव से परे जाकर उनका स्वागत किया और उनकी सभा में शामिल भी हुए थे।इसी तरह जब मैंने कांग्रेस पार्टी के समर्थकों से सभा में जाने के बारे में जानकारी लेनी चाही तो उन्होंने बताया कि सभा में शामिल होनागाँव का एक शिष्टाचार मात्र है,इससे अधिक कुछ नहीं'(कुमार, 2015-217)।

वर्ष 2019 में विकासशील समाज अध्ययन पीठ-लोकनीति द्धारा निष्पादित उत्तरमतदान राष्ट्रीय चुनाव सर्वेक्षण के परिणाम दर्शाते हैं कि नागरिकों की सह-चुनावी गतिविधियों यथा - चन्दा एकत्र करना/देना पोस्टर लगाना व पर्चे वितरित करने में अधिक रुचि नहीं है। जिनका सँख्यात्मक विवरण निम्न ग्राफ के माध्यम से दिया गया है। (उत्तर मतदान सर्वेक्षण, 2019 - 16-17)

विगत एक दशक में नागरिकों की मतदान प्रक्रिया में भागीदारी बढ़ी है परन्तु यह अभी भी राष्ट्रीय औसत से काफी कम है। सुहास पल्शीकर एवं संजय कुमार को उद्धरित करना यहाँ प्रासंगिक प्रतीत हो रहा है। लेखक द्धय के अनुसार 'सक्रिय भागीदारी आज भी समाज के विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों की ही अधिक है और उसमें भी शिक्षा व वर्ग प्रमुख निर्णायक कारक हैं यद्यपि अन्य पिछड़ा वर्ग ने पिछले कुछ वर्षों में राजनीति में प्रवेश किया हो किन्तु दलित,आदिवासी, महिलाएं एवं निर्धन आज भी परिधि पर है'(कुमार - पल्शीकर, 2004)

दक्षिण एशिया में लोकतंत्र की स्थिति- विकासशील समाज अध्ययन पीठ, लोकनीति एवं जैन विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वाधान में कराए गए सर्वेक्षण के प्रथम प्रतिवेदन में भारतीय लोकतंत्र की कमियों व मजबूतीयों का उल्लेख करते हुए लिखा है कि आजादी के सत्तर वर्षों के बाद भारत एक श्रेष्ठ लोकतंत्र का उदाहरण तो है,किन्तु उसे गरीबी,विविधता एवं मानवाधिकारों की समस्याओं का भी सामना करना पड़ा है।

प्रमुख निष्कर्ष (स्टेटऑफ डेमोक्रेसी इन साउथ एशिया, 2008):

1) लोकतंत्र की आकांक्षा - भारत की आर्थिक परिस्थितियां लोकतंत्र के अनुकूल नहीं है। फिर भी 92 प्रतिशत भारतीयों को लगता है कि लोकतंत्र उनके लिए श्रेष्ठ प्रणाली है। तथ्यों का संकेत है कि दक्षिण एशिया में भारत व श्रीलंका में सुदृढ़तम स्तर पर लोकतंत्र का समर्थन किया गया है। सर्वेक्षण के अनुसार, भारत 46 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने लोकतंत्र की परंपरागत परिभाषा के स्थान पर लोकतंत्र का अपना अलग अर्थ निकलते है।

2) संस्थाएं एवं राजनीति - सर्वेक्षण में अधिकांश व्यक्तियों ने तुलनात्मक रूप से संस्थओं में विश्वास व्यक्त किया है।विशेष रूप से वो संस्थाएं,जिनका गठन चुनाव के माध्यम से नहीं होता है,जैसे कि सशस्त्र सेनाओं पर सर्वेक्षित नब्बे फीसदी जनता ने विश्वास व्यक्त किया,जबकि साठ प्रतिशत ने लोकसेवकों पर विश्वास जताया है। शोधार्थियों के अनुसार, राजनीतिक दलों व संस्थाओं में न्यून विश्वास का कारण,इन संस्थाओं में वास्तविक प्रतिनिधित्व की कमी है।

3) राजनीतिक दल व प्रतिस्पर्धा - राजनीतिक दल आंदोलन व राजनीतिक गतिशीलता के साधन हैं वर्तमान में अपराधिकरण व भ्रष्टाचार राजनीतिक दलों में सामान्य है,व्यक्ति विशेष दल की पहचान बन चुके हैं।ये दल नवीन मशीनरी का निर्माण करने में विफल हैं।साथ ही राष्ट्रीय व राज्य-स्तरीय दलों में वंशवाद व केंद्रीकरण की प्रवृत्ति भी देखी जा सकती है।

अध्ययनकर्त्ताओं ने पाया कि राजनीतिक मंच एवं राजनीतिक संगठन परस्पर व्यापी हैं। जैसे करीब 75 प्रतिशत मजदूर संघ कार्यकर्त्ताओं ने स्वीकारा कि वो किसी न किसी राजनीतिक दल से सम्बद्ध हैं।

4) राजनीतिक निर्गत - भारत में लोगों के लिए मताधिकार न सिर्फ एक गंभीर प्रक्रिया है, बल्कि प्रभावी भी है। सर्वेक्षण के अनुसार,67 प्रतिशत भारतीय मानते हैं कि उनके मत(वोट) से परिवर्तन आएगा। साथ ही पांचों देशों की तुलना में नागरिकों को मतदान से मिलने वाली सन्तुष्टि का स्तर अधिक है।

स्टेट ऑफ डैमोक्रेसी इन साउथ एशिया की दूसरी रिपोर्ट हेतु एक प्रतिनिधि सेम्पल और सामान्य प्रश्नावली के आधार पर सर्वेक्षण किया गया। जिस हेतु 19,409 उत्तरदाताओं का चयन किया गया था। वर्ष 2017 में प्रकाशित इस प्रतिवेदन का कमल नयन चौबे द्धारा 'लोकतंत्र का वैकल्पिक विमर्श-विविधता, असमानता और पारंपरिक पहचानों की पेचीदगी' विषयक लेख में निम्न प्रकार से विश्लेषण किया गया है-

नागरिक संस्थाओं से अभिभूत नहीं हैं ; वे उन संस्थओं के प्राधिकार के चलते उनका अंधानुकरण नहीं करते हैं।संस्थाओं और नागरिकों के बीच का सम्बंधा संस्थाओं की शक्ति पर लोकतांत्रिक तरीके से प्रश्न करने और उनके प्रति सन्देह भाव रखने पर आधारित है।यह लोकतंत्र की सकारात्मक शक्ति को दर्शाता है।

अपेक्षाओं से भरे समाजों में संस्थाओं का प्रदर्शन- संस्थाएं लोकतंत्र की श्रृंखला में कमजोर कड़ी हैं। मोटे तौर पर सरकार के अंग सार्वजनिक जांच-पड़ताल और जवाबदेहिता से परे हैं। ये गंभीर आलोचना का सामना कर रही हैं, लेकिन इनके प्रति पूरी तरह से अविश्वास की संस्कृति नहीं है।

दलगत राजनीति,गैर-दलीय राजनीतिक संगठन और लोकतंत्र- दलीय व्यवस्था ने स्थानिक और सामाजिक विविधताओं को प्रदर्शित करना आरंभ कर दिया है।दक्षिण एशिया (भारत में भी) राजनीतिक दल चुनाव और संरक्षण (पेट्रोनेज) की मशीन बन चुके हैं। फिर भी इन्होंने सहभागी लोकतंत्र को गहनता प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि मतदान करने के अतिरिक्त राजनीतिक भागीदारी के संकेत काफी हद तक खामोश ही हैं।

सारांश में कलम नयन चौबे द्धारा किये गए रिपोर्ट के विश्लेषण का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा-लोकतंत्र की संस्कृति,व्यवहार और संस्थाओं ने लोगों को प्रजाजनों से नागरिक में बदल दिया है। प्रश्न खड़ा करते हुए की क्या दक्षिण एशिया (भारत भी शामिल है) में लोकतंत्र की परियोजना समाज के सभी तबकों के लिए ऐसा 'स्पेस' बना सकती है कि वे खुद को लोकतंत्र का मालिक समझें और इसकी सफलता में योगदान करें?

उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर देते हुए चौबे लिखते हैं कि स्पष्टत: लोकतंत्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि यहाँ वास्तविक अर्थों में समावेशन को बढ़ावा दिया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. उत्तर मतदान सर्वेक्षण (2019)'विकासशील समाज अध्ययन पीठ-

लोकनीति' – दिल्ली, प्रश्न संख्या 9(a,b,c,d,e) पृष्ठ संख्या–16–17

2. एपिसोड 6 –'यूथ पार्टिसिपेशन इन इंडियन एलेक्शन्स' (2020) 'असोसिएशन फ़ॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स' रीट्रीव्ड 2020, अगस्त 24. https://adrindia-org.content.episode-6-youth-participation-indian-elections
3. कुमार, संजय, पल्शीकर, सुहास,(2004)'पार्टिसिपेट्री नॉर्म्स– हाऊ ब्रॉड–बेस्ड इट इस?''इकनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली'वोल्युम – 39,इशू नम्बर – 51–2004, दिसम्बर 18
4. कुमार,सत्येंद्र,(2015)'राजनीतिक अध्ययन में एथनोग्राफी की भूमिका' प्रतिमान– समय,समाज,संस्कृति – जनवरी– जून 2015 (अंक – 1).पृष्ठ संख्या–217
5. चौबे,कमल नयन,(2017)'लोकतंत्र का वैकल्पिक विमर्श– विविधता, असमानता व पारंपरिक पहचानों की पेचीदगियां'प्रतिमान – समय,समाज,संस्कृति – जनवरी–जून 2017 (अंक–9). पृष्ठ संख्या–140
6. निर्वाचन आयोग, भारत।
7. ब्यूरो ऑफ पुलिस रिसर्च एंड डिपार्टमेंट,जुलाई–सितम्बर,2014
8. स्टेट ऑफ डेमोक्रेसी इन साउथ एशिया,(2008).इंडिया सम्री,1 एग्जेक्युटिव सम्री,इंटरनेशनल,आई.डी.ई.ए.,2008

चित्र –1: वर्ष 2004 से 2019 के आम चुनाव में राष्ट्रीय दलों को प्राप्त मत प्रतिशत

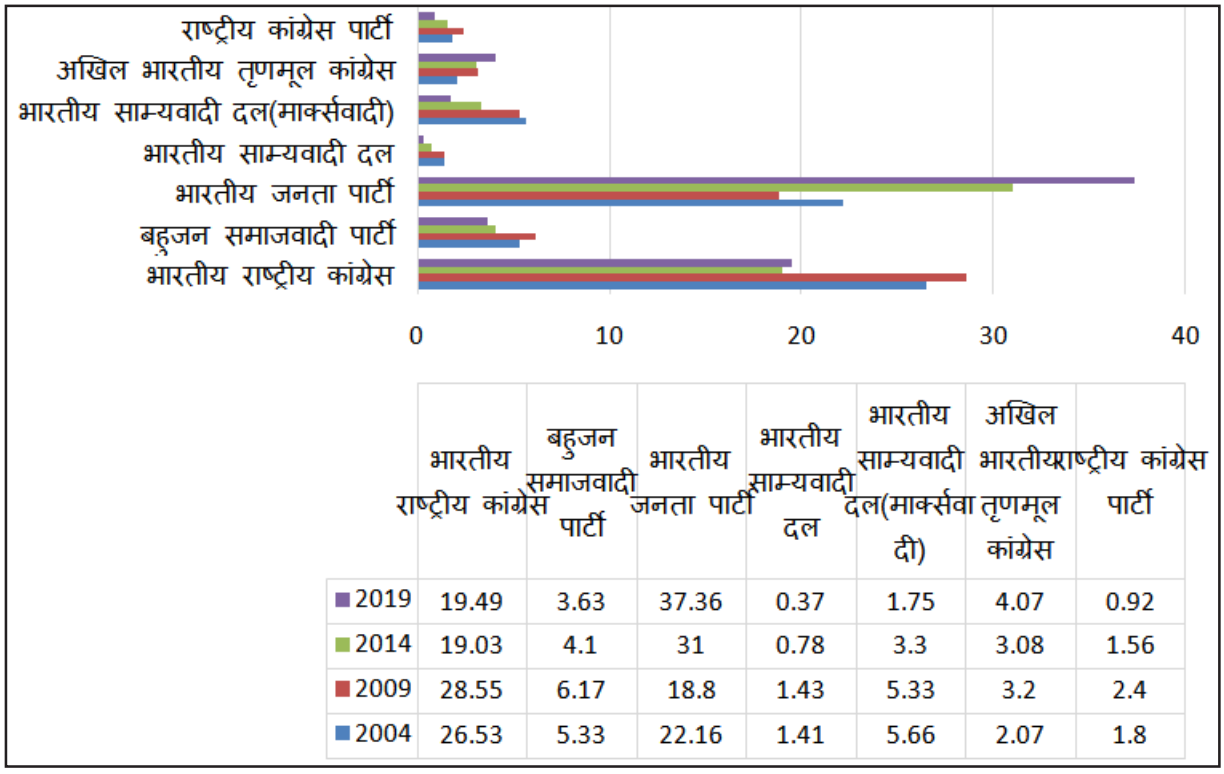

	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	बहुजन समाजवादी पार्टी	भारतीय जनता पार्टी	भारतीय साम्यवादी दल	भारतीय साम्यवादी दल(मार्क्सवादी)	अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस	राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी
2019	19.49	3.63	37.36	0.37	1.75	4.07	0.92
2014	19.03	4.1	31	0.78	3.3	3.08	1.56
2009	28.55	6.17	18.8	1.43	5.33	3.2	2.4
2004	26.53	5.33	22.16	1.41	5.66	2.07	1.8

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

A Comprehensive Study of the Retail Sector's Impact on India's GDP

Mr. Sourabh Kudarya* **Mr. Saurabh Awasthi**** **Ms. Vaishnavi Rajpoot*****

*Assistant Professor (MBA) LNCT Group of College, Bhopal (M.P.) INDIA
** Student (Commerce) LNCT University, Bhopal (M.P.) INDIA
*** Student (Management) LNCT University, Bhopal (M.P.) INDIA

Abstract : The retail sector plays a pivotal role in the economic development of India, contributing significantly to the nation's GDP. This study examines the dynamic role of retail in shaping India's economic landscape, focusing on its impact on GDP growth, employment generation, and investment. With the rise of organized retail, coupled with the expansion of e-commerce, the retail industry has evolved from traditional small businesses to a more structured and technologically advanced sector. Through the analysis of data from various sources, the study highlights the correlation between retail sector performance and GDP growth over the past decade. The research also explores the influence of government policies, foreign direct investment (FDI), and digitization in accelerating the sector's growth. Furthermore, the study delves into the challenges faced by the retail industry, such as regulatory barriers and competition from global players.

The growth of Indian organized retail market is mainly due to change in consumer behaviour. The scenario of Indian retail sector is very dynamic and varied. These papers provide information about the change in consumer income and their behaviour. This paper also provides the information about the current and future scenario of the retail sector.

Keywords: Retail Sector, GDP, E commerce, FDI, Global Players.

Introduction - Retail industry is the base and new of the Indian economy retail, contributes in GDP 10% and contributions to employment 8% of total population. This paper is related to the growth of GDP and consumer behaviour, their income, living of standard. Digital technology are also helpful for the growth of retail industry. In India retail industry expected to reach US$1,407 billion in 2026 and in 2030 expected valued is US$1,884 billion. From this data we say that in future retail will growth and they generate the employment. In simple word we can say that retail is the big source of employment.

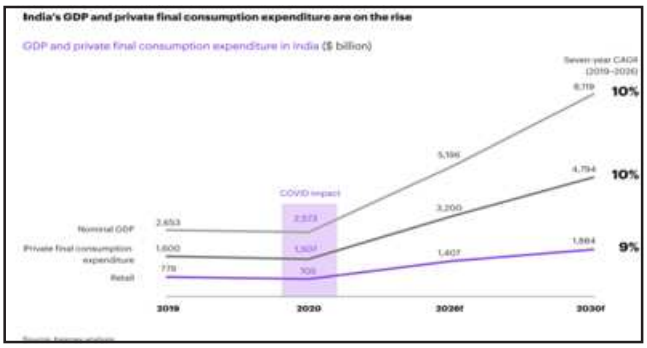

Fig.1.1 India's GDP and Private final Consumption expenditure are on the rise.

India's retail Platform is projected to increase at a slow down pace of 9 percent over this decade, from $779 billion in 2019 to $1,407 billion by 2026 and more than $1.8 trillion by 2030. Although the pandemic put major stress on discretional spending, mostly in lifestyle retail categories such as apparel, footwear, fashion accessories, Aesthetic, small appliances, home decor items , this segment is expected to bounce back stronger after the pandemic. The lifestyle retail categories are expected to grow at a healthy 10 percent to become a $249 billion market by 2026. The rest of the retail industry, dominated by food and groceries, will continue to grow at about 9 percent (see figure 1.2).

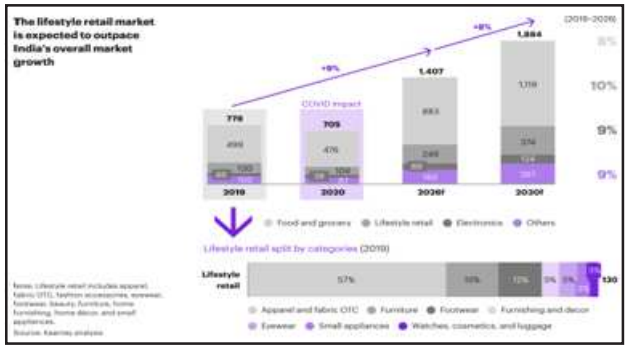

Fig. 1.2 Retail Market Split by Categories ($billions) Seven Year CAGR.

Retail plays a critical role in the growth of India's GDP, serving as a major economic driver through consumption, employment generation, and supply chain development. Here's an introduction to its role:

1. Employment Generation: Second-Largest Employer: Retail is India's second-largest employment provider after agriculture, engaging millions in both organized and unorganized sectors. From small local businesses to large chains, the sector creates diverse job opportunities, aiding overall economic growth.

2. Catalyst for Consumption and Demand: Retail serves as the final link in the supply chain, connecting consumers to goods and services. As consumption rises, driven by India's growing middle class and young population, retail plays a crucial role in expanding markets for goods produced domestically.

3. E-commerce and Digital Transformation: The rapid growth of e-commerce, driven by widespread internet and smartphone penetration, has revolutionized the retail sector. Online retail, logistics, and digital payments contribute to formalizing the economy, improving tax revenues, and supporting overall GDP growth.

4. Supporting Sectors: Retail growth boosts related industries such as manufacturing, logistics, and warehousing, creating a multiplier effect across the economy. The expansion of retail infrastructure stimulates investment in real estate, IT, and technology sectors, further supporting economic development.

Retail management strategies for a growth of GDP:

1. **Offering new product:** In today's time the customers asks for some new product every day. The customer asks for the product according to the trends and technology and if the desire of the customer is fulfilled then only he will buy the product.
2. **Customer attraction:** Focus on the needs and wants of the customer. The management of the retail be such that whatever the customers wants.
3. **E-Commerce and online shopping:** Online shopping allows retailers to reach wider customer. In online shopping customer can shop 21*7. They didn't go to visit a store.
4. **Customer income:** When income increase the demand for normal goods increase which is called income effect. This is reflected as an upward shift in the demand curve. When consumer spends more money, business performs better. This is why business and investors pay close attention to consumer spending pattern.

Various retail format in India

1. **Hyper Market:** Stores with 8K to 12K sq ft area. There are very in large in size they provide large parking then super market and depart mental stores.
2. **Super Market:** The super market typically has peaces for fresh meat, fresh dairy item, baked goods and similar food staffs. If space is also reserve for cane and packaged goods and for various non-food items such as kitchen wear, households cleaner, pharmacy products and some products that are consumed regularly such as alcohol, medicine and clothing.
3. **Shopping Mall:** It is an arrangement of retail store and providing the right mix of shopping. Here retail space is shared by other retailers who operates these retail outlay individually such group of a retail outplayed in the same building or premises is called a shopping mall.
4. **Department Store:** It have various departments like cosmetics, clothing and food products etc under one room. Here every department is trusted as a profit centre or strategic business unit. These stores are larger in size as compare to connivance store and speciality store.
5. **Convenience Store:** It is a small local easily access store with stocks steps such as bread milk and packaged food (FMCG) product.

Challenges faced by Retail industry in India

1. **Competition:** Intense competition from established player and new entrants including online retailers is a major challenge.
2. **Logistic and Infrastructure**: Navigating a complex logistic network and addressing infrastructure gaps, particula in rural area remains a hurdle.
3. **Inventory management:** Managing inventory table affecting minimizing waste and ensuring timing delivery are crucial challenges in a dynamic market.
4. **Consumer trust and safety:** Building consumer trust and ensuring a secure shoping experience are vital. Especially in the online space.
5. **Tax rates:** In India GST is the biggest challenge for the retailers. In india there are multiple tax rates 5%, 12%,18% and 28%.
6. **Real State:** In urban areas the cost of land is high, the landlords decide the rates as per their own and that rate retailer's will not afford.
7. **Human resource:** Retail industries turnover rate is 10%-12% this is due to lack of progression. HR should first ensure that the retail store is safe for customer and employees.

Under- Researched Gap: Based on a thorough review of retail management strategy implementation literature, two gaps emerged that need more empirical investigation. These gaps are:

Gap one: Despite existing studies on retail sector growth, several research gaps remain. Limited studies analyze the differential impact of organized retail on state-wise or district-wise GDP in India.

Understanding why some regions (e.g., Gujarat and Maharashtra) attract more organized retail investment compared to others (e.g., Bihar and Odisha).While organized retail creates jobs, it also displaces small traders. More empirical research is needed on net employment effects and income redistribution. The extent to which small Grocery stores adapt by integrating digital payments, e-

commerce, and supply chain improvements remains underexplored. Furthermore most studies focus on short-term retail expansion effects, but long-term contributions to GDP growth, employment stability, and structural transformation need further examination in this area.

Gap two: The growth of e-commerce in India is expected to have a significant impact on the country's GDP, particularly in rural areas. This is the most important factor in boosting the country's GDP. it Enhancing Market Accessibility, Increasing employment opportunities, Development of infrastructure and fostering entrepreneurship. By 2030 India's e-commerce market is projected to reach $325 billion, with rural India leading the growth. Forecasting a substantial surge to $325 billion By 2030, the report added that the nation's digital economy is expected to reach an impressive $800 billion By the same time. Currently valued at $70 billion, India's online shopping makes up approximately 7 per cent of the country's total retail market.

Relationship between ecommerce growth and India's gap has been widely studied, gaps remain in understanding its specific impact on rural economic development. Accurate data on rural e-commerce transactions and consumer behaviour is often scarce, making it difficult to quantify the true impact on rural GDP.

While we know e-commerce is contributing to rural GDP, there's a lack of precise data on the extent of this impact. More research is needed to quantify the direct and indirect effects of e-commerce on rural incomes, employment, and overall economic output. Furthermore studies should explore the challenges faced By rural businesses in adopting e commerce, such as poor internet connectivity, digital illiteracy, infrastructure limitations and logistical hurdles in rural areas. It needs to more exploration.

Research Methodology

Figure: 1.3 Retail sector is contribute to India's GDP

Pie chart that shows the distribution of responses to the question, "How much does the retail sector contribute to India's GDP?" According to 35 responses. The pie chart is divided into four sections: 57.1% of respondents believe the retail sector contributes 12%, 11.4% believe it contributes 15%, 20% believe it contributes 10%, and 11.4% believe it contributes 20%.

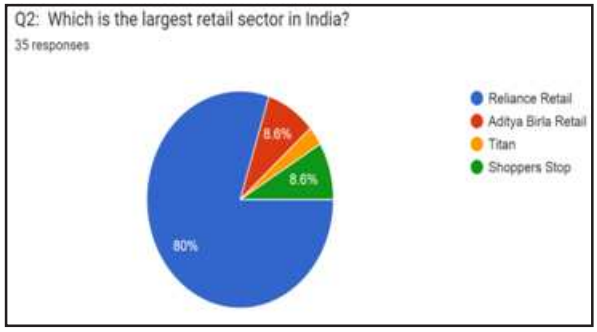

Figure: 1.4 The largest retail Sector in India.

Pie chart illustrating the results of a poll question: "Which is the largest retail sector in India?". There were 35 responses.

1. The pie chart is divided into four sections, each representing a different retail sector:
2. Reliance Retail: Dominates the chart, accounting for 80% of the responses. This section is colouring blue.
3. Aditya Birla Retail: Represents 8.6% of the responses. This section is colouring red.
4. Titan: Represents 8.6% of the responses. This section is colouring yellow.
5. Shoppers Stop: Represents 8.6% of the responses. This section is colouring green.
6. In summary, the pie chart indicates that Reliance Retail is considered the largest retail sector in India by a significant margin, according to the poll results.

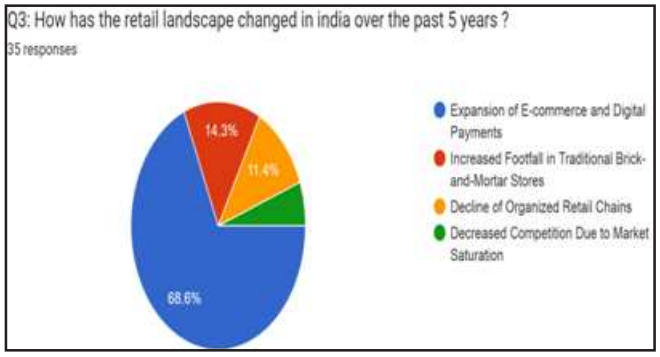

Figure: 1.5 The Landscape changed in India the past 5 Years.

The presents a pie chart illustrating the changes in the Indian retail landscape over the past 5 years. The data is based on 35 responses to the question: "How has the retail landscape changed in India over the past 5 years?".

1. The pie chart shows the following distribution:
2. Expansion of E-commerce and Digital Payments: 68.6%
3. Increased Footfall in Traditional Brick-and-Mortar Stores: 14.3%
4. Decline of Organized Retail Chains: 11.4%
5. Decreased Competition Due to Market Saturation: The remaining percentage (likely a smaller portion).

Figure:1.6 Consumer Behaviuor changed in India's over the last 5 Years

This pie chart show how consumer behavior in India has changed over the last 5 years, based on 35 responses. The chart is divided into four segments, each representing a different trend:

1. Increased digital adoption and e-commerce growth: This segment is the largest, accounting for 60% of the responses.
2. Shift away from value-for-money products towards luxury goods: This segment accounts for 17.1% of the responses.
3. Decline in online shopping and digital payments: This segment also accounts for 17.1% of the responses.
4. Preference for traditional offline shopping over online platforms: This segment accounts for 17.1% of the responses.

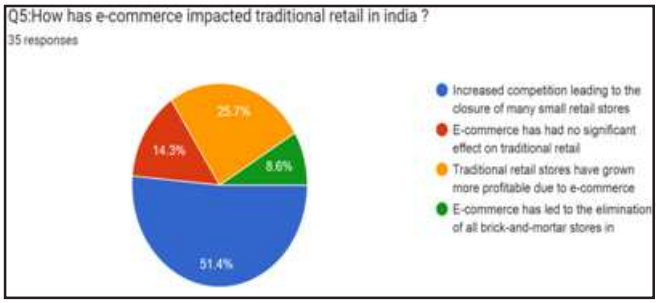

Figure:1.7 E-commerce impacted traditional retail in India

According to this pie chart the impact of e-commerce on traditional retail in India, based on 35 responses. The responses are divided into four categories:

1. Increased competition leading to the closure of many small retail stores (Blue): 51.4% of respondents believe that e-commerce has led to increased competition, causing the closure of small retail stores.
2. E-commerce has had no significant effect on traditional retail (Red): 14.3% of respondents think e-commerce has not significantly affected traditional retail.
3. Traditional retail stores have grown more profitable due to e-commerce (Orange): 25.7% of respondents believe traditional retail stores have become more profitable because of e-commerce.
4. E-commerce has led to the elimination of all brick-and-mortar stores (Green): Only 8.6% of respondents think that e-commerce has led to the elimination of all brick-and-mortar stores.
5. In summary, the pie chart indicates that most respondents believe e-commerce has increased competition and led to the closure of small retail stores in India.

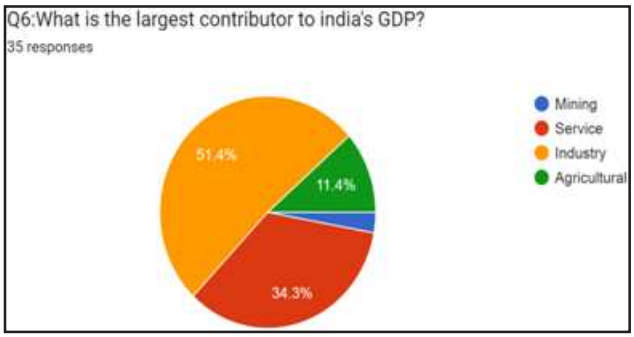

Figure: 1.8 The Largest contributor to India's GDP.

The chart is titled the largest contributor to India's GDP and indicates that it's based on 35 responses.

1. Here's a breakdown of the pie chart:
2. Industry (Orange): Represents the largest portion with 51.4%
3. Service (Red): Accounts for 34.3%
4. Agricultural (Green): Makes up 11.4%
5. Mining (Blue): Has the smallest share.

In summary, the pie chart visually represents that the Industry sector contributes the most to India's GDP, followed by the Service sector, with Agriculture and Mining contributing smaller portions.

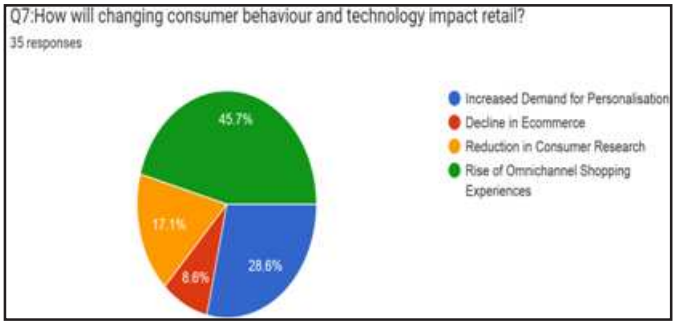

Figure: 1.9 The Changing consumer behaviour and technology impact in retail management.

The pie chart illustrating the impact of changing consumer behavior and technology on retail, based on 35 responses. The chart includes four categories:

Rise of Omni channel Shopping Experiences: This category has the largest share, accounting for 45.7% of the responses.

1. Increased Demand for Personalization: Represented by 28.6% of the responses.
2. Reduction in Consumer Research: This accounts for 17.1% of the responses.
3. Decline in Ecommerce: Has the smallest portion, with only 8.6% of the responses.

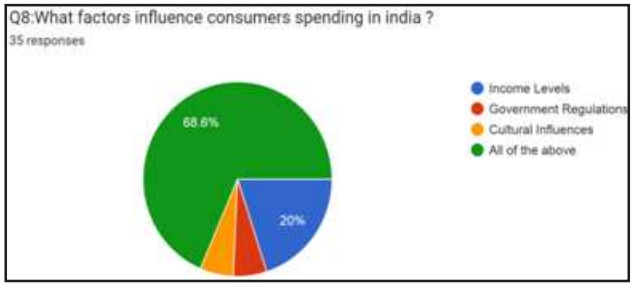

Figure: 1.10 Factors influence consumers spending in India.

Pie chart summarizing the responses to the question: "What factors influence consumer spending in India?". The data is based on 35 responses. The pie chart is divided into four sections, each representing a different factor:

1. Income Levels: Represented in blue, accounting for 20% of the responses.
2. Government Regulations: Represented in red. The exact percentage is not explicitly labelled on the pie chart.
3. Cultural Influences: Represented in orange. The exact percentage is not explicitly labelled on the pie chart.
4. All of the above: Represented in green, accounting for 68.6% of the responses.

In summary, the pie chart illustrates that the majority of respondents (68.6%) believe that income levels, government regulations, and cultural influences all play a role in influencing consumer spending in India. Income levels alone were cited by 20% of respondents.

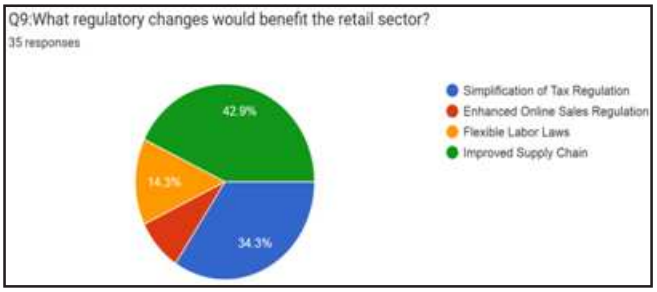

Figure: 1.11 Benefits of regulatory changes in the retail sector.

This pie chart displaying the results of a survey question: "What regulatory changes would benefit the retail sector?" The survey received 35 responses, and the pie chart breaks down the percentage of responses for each category. The categories and their corresponding percentages are as follows:

1. Improved Supply Chain: 42.9% (represented in green on the pie chart)
2. Simplification of Tax Regulation: 34.3% (represented in blue)
3. Flexible Labor Laws: 14.3% (represented in orange)

Enhanced Online Sales Regulation: The remaining percentage (represented in red, though the exact percentage isn't distinctly visible in the crop).

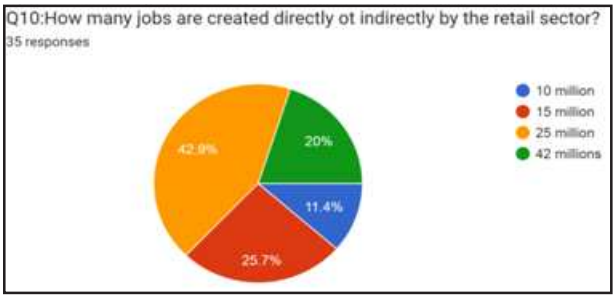

Figure: 1.12 Many jobs are created to directly and indirectly by the retail sector.

This pie chart representing the responses to the question "How many jobs are created directly or indirectly by the retail sector?" There were 35 responses in total. The pie chart is divided into four segments, each representing a different number of jobs:

1. 25 million: 42.9% (Orange)
2. 15 million: 25.7% (Red)
3. 42 million: 20% (Green)
4. 10 million: 11.4% (Blue)

This data highlights a significant perception that the retail sector has a substantial impact on job creation, with the majority of respondents estimating around 25 million jobs.

Conclusion: The Indian retail market is the largest sector among all the industries and it is very challenging. Retail Industry depends on government regulation, customer demands, etc. Many investors invest in the retail Industry but few investors can manage to survive. The retail industry contributes around 10-12% in the growth of India's GDP. The middle class plays an important role in the growth of the Retail Industry and the GDP of India. If the salary of the middle will increase then their buying capacity will also increase. Retail Industry expected to reach more than US$1.8 trillion by 2030. They increase the real estate business, they provide employment and they help to develop urban areas. Retail industry fulfills the needs of the customers. There are two types of retail sector organized or unorganized sector and it is a dynamic they will change according to technology and customers demand. This Retail is the link between manufacturer and customers.

References:-

1. Department of Industrial Policy and Promotion, 2010. "Foreign Direct Investment (FDI) in Multi- Brand Retail Trading," Discussion paper. Available at http://www.dipp.nic.in.
2. A.T. Kearney (2011): "Retail Global Expansion: A Portfolio of Opportunities - 2011 Global Retail Development Index", A.T. Kearney, 2011.
3. https://www.ijamtes.org/gallery/97.%20july%20ijmte-%20756.pdf
4. https://www.business-standard.com/amp/companies/news/india-fastest-growing-retail-market-to-cross-1-4-trn-by-2027-ril-124080701229_1.html

5. https://www.ibef.org/industry/retail-india
6. https://icrier.org/pdf/Abstract222.pdf
7. https://docs.google.com/forms/d/1qYxcSMjmdCI1QU9HhZrOka_StKvTNMNxfs_fcRNbj48/edit?ts=670e064c#responses
8. Sunita Sikri, Dipti Wadhava (2012), "Growth and Challenges of Retail Industry in India: An analysis", Haryana
9. www.atkearney.com "A T Kearney Index Report (2017)"
10. Minakshi Choudhary (2013), "Study on Growth of
11. Retail Market in India with special reference to Broadening of Mall culture in Tier II City", Bhopal

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

A Comprehensive Study on the Functioning and Services of APMC with Reference to Shajapur District

Nitya Sharma* **Dr. Sunil Advani****

*Research Scholar, School of Studies in Commerce, Vikram University, Ujjain (M.P.) INDIA
** Assistant Professor (Commerce) Pt. Balkrishna Sharma, "Naveen" P.G. College, Shajapur (M.P.) INDIA

Abstract : This study examines the functioning and services of the Agricultural Produce Marketing Committee (APMC) with a focus on its role in Shajapur District and the range of services it provides to farmers and traders. By ensuring fair prices and providing necessary services including grading, weighing, storage, and transportation, APMC plays a critical role in controlling agricultural markets. These services support fair trade between farmers and traders, maintain transparency, and prevent exploitation. The primary goal of the study is to evaluate the overall functioning of APMC with particular focus on how well it meets the needs of traders and farmers and to determine the level of satisfaction that farmers and traders have with the services they receive. The study will offer suggestions to enhance the efficacy and efficiency of APMC operations in light of these discoveries. Through qualitative techniques, including farmer and trader interviews, the study will offer an in-depth understanding of how the APMC operates and make recommendations for improvements to improve its services. The results will provide insightful information to enhance market efficiency and better serve Shajapur District's farming community.
Keywords- Agricultural Markets, APMC Services, APMC Functioning, Profitability, Accessibility.

Introduction - The foundation of the Indian economy is agriculture, and the agricultural market system is essential to ensuring that producers farmers and consumers traders have fair and equal access to products. APMC's known as marketing committees, as they are responsible for managing and supervising the operations of agricultural markets, widely known as mandis. These committees guarantee that agricultural products are available with reasonable prices, clear transactions, and suitable facilities. By offering crucial services including grading, weighing, storing, and transporting agricultural products, APMC serves as a liaison between farmers and dealers, protecting their interests. Under the APMC Act, APMCs were created in India to facilitate the trade of agricultural products in an organized manner and protect against middlemen taking advantage of farmers. They ensure that farmers are paid competitive prices for their produce and that transactions take place at government-regulated rates. Despite these initiatives, the efficiency of APMC's operations in different areas have frequently been questioned, particularly in relation to the extent to which farmers and traders' benefit from these services and how well they are being implemented. To find deficiencies and recommend changes in this situation, it is essential to comprehend how APMC operates and what services it provides. The purpose of this study is to evaluate the operations and services offered by the APMC in the Shajapur District. Like many other Indian districts, Shajapur is mostly dependent on agriculture, and the local agricultural community's and traders' livelihoods are directly impacted by the APMC's performance. There isn't much research explicitly examining the efficacy of APMC services in Shajapur, despite their crucial significance. This study will therefore close the gap byassessing different facets of the APMC's offerings and their effects on stakeholders, with an emphasis on farmers and traders in particularly. Furthermore, enhancing APMC's efficacy requires an awareness of the difficulties that farmers and traders come across. These real-world obstacles, such as long delays for grading and weighing or inadequate storage facilities that cause spoiling, must be recognized and removed. More effective policy changes and enhancements to APMC operations will be possible with a deeper comprehension of the stakeholders' perspectives. In the end, this study will advance a more thorough comprehension of the functioning of APMC services in Shajapur District by offering insightful information about areas in need of reform or development. The results will help market regulators and politicians improve their tactics to establish a more open, effective, and farmer-friendly marketplace. This can result in a more stable and efficient market system that benefits the district's economy as a whole as well as the agricultural sector. The performance of agricultural markets in India are largely dependent on how well APMCs work. Evaluating APMC's

operations and service delivery are not only a scholarly exercise but also a step toward a significant improvement in rural lives, particularly in areas like Shajapur where a major portion of the population is dependent on agriculture.

Review Of Literature-

1. Dr. Chitra Shashidhar, Dr, Ashish Khanna, Prof. Raghavendra (2024) discussed **"Contribution of APMC's in Agricultural Marketing-A Study on Arecanut Farmers Perspective in Malenadu Region"** The study investigated the key marketing challenges faced by arecanut farmers, including limited market accessibility due to geographical remoteness, price volatility, and inadequate storage infrastructure. It emphasized the role of Agricultural Produce Market Committees (APMC) in ensuring fair trade practices, price transparency, and improved market linkages. The primary objective was to assess farmers' expectations regarding APMC performance and to identify existing operational shortcomings.

2. Sathisha S.M, Dr. D. Rajajabasingh, Harshita K. (2021) examines **"Contribution of APMC's in Agricultural Marketing-A Study on Farmer Perspective in Tumkur District".** The study addressed persistent challenges in Indian agriculture despite technological advancement, including vulnerability to natural disasters and weak institutional support. It highlighted the uneven benefits of farmer-to-farmer marketing and stressed the need for improved transportation, warehousing, regulated markets, and cooperative systems. Focusing on Tumkur district, which has only nine APMCs, the research aimed to evaluate farmers' expectations and identify issues in APMC management and functioning.

3. Shyam Sundar Tumma. Dr. Ramesh Kumar Miryala (2023) discussed **"Factors influencing Agricultural Marketing Performance in Telangana's Agricultural Produce Market Committees (APMCS): A Mixed-Method Study".** The study focused on identifying key factors influencing agricultural marketing within Telangana's APMCs and aimed to develop a reliable model to assess their impact. It emphasized the role of APMCs in shaping agricultural trade in the region. By analyzing these variables, the study offers valuable insights for policymakers, market participants, and stakeholders to enhance marketing efficiency, improve APMC operations, and support the overall growth of Telangana's agricultural sector.

4. Shubhomay Saha, Chaitali Sinha and Shrabani Saha (2023) discussed **"Agricultural Marketing in India: Challenges, Policies and Politics."** The study critically examined India's agricultural marketing system in the context of the controversial farm laws introduced in 2020 and repealed in 2021. The authors explored the intended objectives of these laws, which aimed to modernize the agricultural marketing structure through increased private investment, market competition, and reduced role of intermediaries. They emphasized that the reforms were projected to empower farmers by providing more choices and better price realization for their produce.

However, the study also delved into the widespread protests and farmer apprehensions that arose in response to these laws. It highlighted concerns regarding the potential erosion of state-level protections such as Minimum 3 Support Price (MSP), regulated mandis, and government procurement, which many farmers viewed as safety nets for their livelihoods. The analysis brought to light the deep-rooted mistrust between policymakers and the farming community, which ultimately contributed to the political reversal of the reforms.

5. Sonali Bharat Khalate (2024) analyzed **"A Study of Marketing Challenges Faced by Agro Producers Through Agricultural Produce Marketing Committee in the State of Maharashtra."** The study highlighted the weak linkage between agricultural production and marketing, stressing that marketing-oriented production is crucial for success. It identified the lack of integration between production and marketing sectors at the district level as a major issue. The research aimed to address gaps in Maharashtra's agricultural marketing infrastructure by enhancing coordination and marketing efficiency. It also highlighted issues like poor market information, delayed transportation, and limited market access, stressing the need for stronger institutional support and strategic planning to ensure fair pricing for farmers.

Objectives Of The Study:

1. To evaluate the overall functioning of APMC in Shajapur district, with a focus on how effectively it meets the needs of farmers and traders.
2. To determine the level of satisfaction among farmers and traders with the services provided by the APMC.

Hypothesis-

1. H0- There are no significant changes in the functioning of APMC in Shajapur district.
   H1- There are significant changes in the functioning of APMC in Shajapur district.
2. H0- There is no significant satisfaction among farmers and traders with the services provided by the APMC.
   H1- There is significant satisfaction among farmers and traders with the services provided by the APMC.

Research Methodology- The research methodology encompasses the systematic approach researchers employ to investigate phenomena, address questions, or solve problems within a particular field. It involves careful planning, execution, and analysis of research activities to ensure the validity and reliability of findings. The data applied in this research paper are based on Primary data. A total sample size of 200 including both farmers and traders has been selected by using random sampling method from various APMC mandis of Shajapur district which includes Shujalpur, Shajapur, Kalapipal, Akodiya, Maksi, Bercha and Mo. Badodiya. This is a qualitative and survey- based study where data has been collected with the help of a questionnaire.

Data Analysis And Interpretation:

I. Assessing the Functioning of APMC in Shajapur District: Data was collected through a structured questionnaire from both Farmers and Traders with a total sample size of 200 respondents. Based on the responses ,86.4% of the participants answered 'Yes' and 13.1% answered 'No'. These findings have been visually represented through pie chart representation to provide a clear overview of the response's distribution.

Figure I: Pie Chart Representation of Yes and No Responses Based on the Survey.

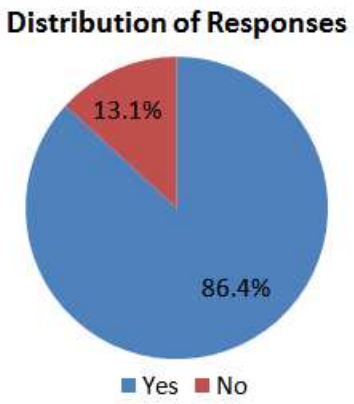

A Z-test for proportions was performed to assess the statistical significance of the observed response rate.

1. One -Tail Z-Test for Proportions.
2. Based on the Z-Test analysis with a sample size of 200.
3. Z Test for one proportion:

$$Z = \frac{p\hat{} - p0}{\sqrt{\frac{p0\,(1-p0)}{n}}}$$

Where:

p^ = Sample Proportion (Observed proportion of "Yes" percentage)

p0 =Population Proportion (Under the null hypothesis 50% or 0.50)

n= Sample Size (200)

Given Data:

Sample Proportion (p^) = 86.4% (0.864)

Population Proportion (p))= 0.50 (50%)

Sample Size(n)=200

Confidence Level=95%

Z-Critical (One-Tailed) =1.645

$$\text{Formula: } Z = \frac{p\hat{} - p0}{\sqrt{\frac{p0\,(1-p0)}{n}}} = \frac{0.864-0.5}{\sqrt{\frac{0.5\,(1-0.5)}{200}}} = \frac{0.864-0.5}{0.03536} = 10.31$$

Interpretations- For one-tailed test at 95% confidence level, critical Z-Value is 1.645. Since the calculated Z Value is 10.31, which is significantly greater than the critical value, we reject null hypothesis (H_0) and accept alternate hypothesis (H_1). The corresponding p-value is approximately 0.0000 which is below than the significance level of 0.05, further strengthening the decision to rejection (H_0). The sample proportion of positive responses is 86.4% substantially higher than assumed population proportion 50%, indicating a statistically significant improvement in the functioning of APMC. This confirms that significant changes have occurred, and these changes have led to measurable improvements in performance. The high level of positive response reflects that farmers and trader perceive the functioning as effective and aligned their needs.

II. Assessment of Farmers and Traders Satisfaction with APMC Services: Data was collected through a structured questionnaire from both farmers and traders with a total sample size of 200 respondents. Based on the responses, 88.7% of the farmers and traders were satisfied with the services provided by APMC where as 11.3 % expressed dissatisfaction. To visually depict the level of satisfaction among farmers and traders, a pie chart has been used, offering an easily interpretable summary of the survey results.

Figure II: Overview of Satisfaction among Farmers and Traders towards APMC Services.

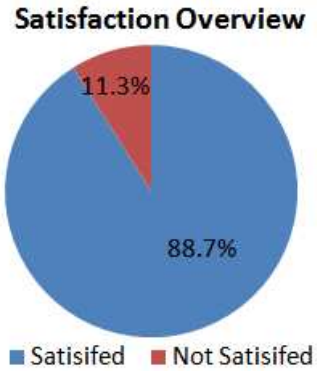

To test whether the proportion of satisfied farmers and traders is significantly greater than 50% a one-proportion Z-test was applied.

1. One -Tail Z-Test for Proportions.
2. Based on the Z-Test analysis with a sample size of 200.
3. Z Test for one proportion:

$$Z = \frac{p\hat{} - p0}{\sqrt{\frac{p0\,(1-p0)}{n}}}$$

Where:

p^= Sample Proportion (Observed proportion of "Yes" percentage)

p0 =Population Proportion (Under the null hypothesis 50% or 0.50)

n= Sample Size (200)

Given Data:

Sample Proportion =88.7% (0.887)

Population Proportion (p0)= 0.50 (50%)

Sample Size(n)=200

Confidence Level=95%

Z-Critical (One-Tailed) =1.645

Formula: $Z = \frac{\hat{p} - p_0}{\sqrt{\frac{p_0(1-p_0)}{n}}} = \frac{0.887-0.5}{\sqrt{\frac{0.5(1-0.5)}{200}}} = \frac{0.387}{0.03536} = 10.95$

Interpretations- For one-tailed test at 95% confidence level, critical Z-Value is 1. 645.Since the calculated Z-Value is10.95, which is significantly greater than the critical value of 1.645, we reject null hypothesis (H_0) and accept alternate hypothesis (H_1). Since the Z score of 10.95 indicates the test statistic is beyond the critical value, and the corresponding p-value is approximately 0.0000 which is much smaller than the significance level of 0.05. The result strongly supports rejecting the null hypothesis (H_0). This statistically confirms that there is a significant satisfaction among farmers and traders with the services provided by APMC. The observed satisfaction level is 88.7% not only exceeds the assumed base line of 50% but also provides strong statistical evidence supporting the presence of significant satisfaction.

Findings:

1. Significant improvement was observed in the overall functioning of APMC. It is clear from the sample proportion 86.4% that there have been significant changes in the operational efficiency, market handling, and services of APMC.A majority of the respondents believe that APMC's services have improved and are meeting their needs effectively.
2. APMC's market operations have now become more efficient and streamlined. In comparison to earlier, market transactions have become faster and transparency has also increased, which is beneficial for traders and farmers.
3. APMC has upgraded its physical infrastructure, better storage facilities, and enhanced market access. Digital infrastructure has also seen improvements in online platforms and market data access.
4. APMC has improved communication channels, which has increased transparency regarding market prices and services. Farmers are getting real-time information, which helps them in taking
decisions.
5. It is clear from this analysis that there have been substantial improvements in the overall functioning of APMC, which are positively impacting market operations, farmer welfare, and transparency. These positive developments are progressively transforming APMCs into more responsive, inclusive, and farmer-centric institutions.
6. The satisfaction level of farmers and traders regarding APMC services is very high, which is 88.7%. This indicates that APMC has made substantial improvements in its services, due to which their overall experience has been very positive.
7. Significant improvements have been observed in the service delivery of APMC. Farmers and traders are now getting timely services, clear communication, and efficient processes, which boost their satisfaction.
8. APMC has improved market transparency, infrastructure, and storage facilities, helping farmers and traders make better decisions. Access to accurate pricing and data has increased their convenience and satisfaction. With direct selling platforms and fair pricing policies, farmers are getting better returns. These reforms have strengthened their trust and overall satisfaction. Additionally, easier market access and reduced dependency on middlemen have empowered farmers economically and boosted their confidence.

Suggestions:

1. APMC should further expand its digital platforms. Such mobile apps and online systems can be implemented which can provide market updates, prices, and transaction information to farmers and traders instantaneously.
2. APMC should organize advanced training programs and agricultural best practices workshops for farmers. This will help them adopt modern technologies and market trends.
3. APMCs should launch specific programs to promote sustainable agricultural practices. These can make farming and market operations environmentally friendly and resource-efficient.
4. APMC will have to further strengthen its feedback mechanisms, so that farmers and traders can share their issues and suggestions quickly and timely solutions can be provided for them.
5. APMCs should further expand their digital platforms, like mobile apps and online marketplaces, so that farmers and traders can get real-time updates on market prices, trends, and transaction details.

Conclusion: The investigation clearly demonstrates significant improvements in APMC's overall operations, as supported by strong statistical evidence such as an 86.4% sample proportion indicating enhanced performance and efficiency. These enhancements cover a wide range of areas, such as farmer empowerment, market operations, physical infrastructure, and transparency. It is clear from the high satisfaction rate of 88.7% that these advancements are having a real positive impact on farmers and traders both. A system that is more efficient and farmer-friendly has been made possible by better infrastructure, better service delivery, and more seamless market operations. APMCs must keep bolstering their digital offerings, communication channels, training programs, and sustainability activities in order to maintain this good momentum and meet upcoming difficulties. In addition to significantly streamlining processes, this strategy will guarantee the maintenance and improvement of stakeholders' increasing levels of satisfaction. In summary, the data shows that APMC is changing into a more contemporary, open, and stakeholder-focused organization, which will boost confidence, improve service quality, and strengthen the agricultural ecosystem.

References:-

1. Shashidhar, C., Khanna, A., & Raghavendra, S. (2024). Contribution of APMC's in agricultural marketing: A study on arecanut farmer perspective in Malenadu region. Educational Administration: Theory and Practice, 30(1), 3976–3983. https://kuey.net/
2. Tumma, S. S., & Miryala, R. K. (2023). Factors influencing agricultural marketing performance in Telangana's Agricultural Produce Market Committees (APMCs): A mixed-methods study. International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR), 10(4). https://www.ijrar.org (E-ISSN 2348-1269, P-ISSN 2349-5138)
3. Sathisha, S. M., Rajajabasingh, D., & Harshitha, K. (2021). Contribution of APMC's in agricultural marketing: A study on farmer perspective in Tumkur District. Turkish Online Journal of Qualitative Inquiry, 12(7), 5644–5653.
4. Khalate, S. B. (2024). A study of marketing challenges faced by agro producers through Agricultural Produce Marketing Committees in the state of Maharashtra. Journal of Advanced Zoology, 45(S-4).
5. Patil, R. S., & Deshmukh, V. B. (2022). Role of APMCs in enhancing income of small and marginal farmers in India. International Journal of Agricultural Economics and Development,10(2), 45–52. https://doi.org/10.1234/ijaed.v10i2.5678

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतेन्दुयुगीन राज्योन्मुख राष्ट्रीयता

प्रियंका शर्मा *

* छात्रा, एम.ए. (उत्तरार्ध) (हिंदी) मेवाड़ विश्वविद्यालय, गंगरार (राज.) भारत

प्रस्तावना – भारतेन्दु युग को हिंदी साहित्य का नवजागरण काल कहा जाता है। इस युग में राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और सामाजिक सुधार की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। 'राज्योन्मुख राष्ट्रीयता' अर्थात उस राष्ट्रीय भावना का विकास जो तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थितियों से जुड़ा हुआ था। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने अपने लेखन के माध्यम से उस समय की राजनैतिक विसंगतियों को उजागर किया और जनमानस में राष्ट्रभक्ति की भावना को बल दिया।हिन्दी कविता के विकास क्रम में आधुनिक हिन्दी कविता ने नये सोपान निर्मित किए और कविता को युग के अनुरूप दिशा प्रदान की। आधुनिक हिन्दी कविता के प्रत्येक युग एक समान न होते हुए भी परस्पर एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं।आधुनिक हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना का एक नवीन रूप सामने आता हैतब उस समय भारतवर्ष अंग्रेजी शासन का गुलाम मानसिक रूप से हो चुका था। भारतीय इतिहास के सामाजिक–धार्मिक पुनर्जागरण के समानांतर आधुनिक काल हिन्दी साहित्य का नवजागरण का काल है। आधुनिक हिन्दी कविता की राष्ट्रीय चेतना के महत्त्व के बारे में शिवदान सिंह चौहान कहते हैं– 'आधुनिक हिन्दी कविता राष्ट्रीय जागरण के क्रोड़ में विकसित हुई है।'[1]

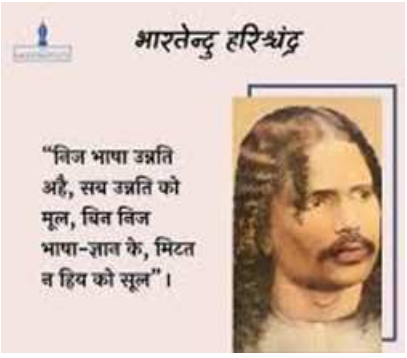

परिचय– भारतेन्दु हरिश्चंद्र (1850–1885) को हिंदी नवजागरण का अग्रदूत माना जाता है। वे न केवल कवि और नाटककार थे, बल्कि पत्रकार, सामाजिक चिंतक और राष्ट्रभक्त भी थे। उन्होंने साहित्य को समाज और राष्ट्र की सेवा का माध्यम बनाया। उनके युग में राष्ट्रीयता का स्वर तत्कालीन ब्रिटिश शासन की नीतियों के विरोध के रूप में उभरा।

राज्योन्मुख राष्ट्रीयता का अर्थ– राज्योन्मुख राष्ट्रीयता से आशय हैकृऐसी राष्ट्रीय चेतना जो शासन प्रणाली, राजकीय नीतियों और औपनिवेशिक सत्ता की आलोचना के माध्यम से विकसित होती है। यह चेतना सामाजिक सुधार, सांस्कृतिक पहचान और राजनीतिक स्वतंत्रता की ओर उन्मुख होती है।

आधुनिक काल में कविता के विकास काल को क्रमश: भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावादी युग, प्रगतिवादी, प्रयोगवाद, नयी कविता, साठोत्तरी अथवा समकालीन कविता के नाम से अभिव्यंजित किया गया है।आधुनिक हिन्दी कविता में राष्ट्रीयता सन्दर्भ में सर्वप्रथम भारतेन्दु युग का नामआता है। जहाँ स्वयं भारतेन्दु ने राष्ट्रीयता से ओत–प्रोत काव्य का सृजन किया। भारतेन्दु युग वस्तुत: राष्ट्रीय चेतना के विकास का एक महत्त्वपूर्ण युग है।

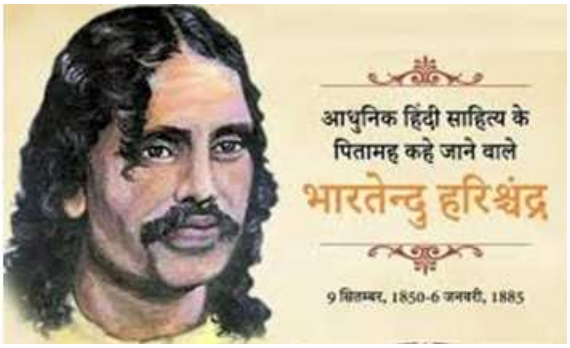

आधुनिकता के चिह्न अर्थात् भारतेन्दु युग, स्पष्ट हैं कि भारतेन्दु युगीन कविता पुनर्जागरण की कविता है। आधुनिक काल अर्थात् भारतेन्दु युग में राष्ट्रीयता को एक नया रूप मिला है। इस समय तक देश अंग्रेजी शासन की निर्दयता व कठोरता से पूरी तरह जकड़ चुका था। भारतेन्दुकालीन साहित्यकारों ने रीतिवादी सामन्ती मूल्यों को ध्वस्त किया और साहित्य में नवीन मूल्यों की स्थापना की।इस प्रकारहिन्दी कविता का आधुनिक काल वस्तुत: स्वाधीनता आन्दोलन के विकास का इतिहास है।

भारतवर्ष के देशी राजा–रजवाड़ों सहित जन–जन ने अपने पुरुषार्थ से 1857ई.के समय सम्पूर्ण देश में स्वतन्त्रता संग्राम के माध्यम से अंग्रेजी शासन को समाप्त करने का प्रयत्न किया गया था। इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप राष्ट्रीयता का स्वर अधिक मुखर हुआ। इस युग के कवियों ने जन–जन के मन में राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए काव्य की सर्जना की। स्वयं भारतेन्दु राष्ट्रीय चेतना के प्रबल समर्थकों में अग्रणी रहे और उन्होंने समाज सुधार के साथ–साथ अतीत का गौरवगान करते हुए भारतीय जनता में आत्मसम्मान व स्वाभिमान का भाव जगाया।

भारतेन्दु के कृतित्व में राज्योन्मुख राष्ट्रीयता:

पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्रचेतना: भारतेन्दु ने 'कविवचनसुधा', 'हरिश्चंद्र मैगजीन' जैसे पत्रों के माध्यम से ब्रिटिश शासन की नीतियों की आलोचना की। उनके संपादकीय लेखों में शिक्षा, स्वदेशी, और स्वराज की भावना प्रबल रूप से दिखाई देती है।

नाटकों में राजनीतिक चेतना: नाटक 'अंधेर नगरी' में उन्होंने भ्रष्ट शासन तंत्र और न्याय व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया। इसमें स्पष्ट रूप से तत्कालीन औपनिवेशिक शासन की विफलताओं का चित्रण है।

काव्य में राष्ट्रप्रेम: उनके काव्य में भारत की सांस्कृतिक गरिमा, गौरवपूर्ण अतीत और स्वतंत्रता की आकांक्षा झलकती है। उदाहरण स्वरूप–

'बिसरि गई सब बात, रहा अब तो भारत ही को प्यार'

यह पंक्ति राष्ट्रभक्ति का स्पष्ट उदाहरण है।

सांस्कृतिक चेतना: भारतेन्दु ने भारतीय भाषाओं, परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देने पर बल दिया, जो औपनिवेशिक सांस्कृतिक प्रभुत्व के प्रतिरोध का हिस्सा था।

सुज्ञात हैं कि भारतेन्दु युगीन राष्ट्रीय चेतना का प्रथम रूप राजभक्ति के माध्यम से प्रकट होता है। इस राजभक्ति के मूल में भारतीय जनता का ब्रिटिश शासन के प्रति आस्था भाव है। भारतेन्दु युगीन साहित्य में राजभक्ति और देशभक्ति परस्पर एक दूसरे से जुड़ी हुई थी। क्योंकि वह समय ही ऐसा था जिसमें राजभक्ति व देशभक्ति का एक साथ रहना आवश्यक था। हालांकि कम्पनी के शासन काल में भारतीय जनता को अनेकानेक कष्ट झेलने पड़े थे। किन्तु विक्टोरिया के शासन काल में उन्हें कुछ सुख शांति की आशा अवश्य दिखी। डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय अंग्रेजों के गुणगान का कारण बताते हुए लिखते हैं[2]– 'अंग्रेजी राज्य में भारतवासियों को मुसलमानी अत्याचार और दिन रात की कलह और अशांति से पहले पहल रक्षा मिली। इसीलिए उन्होंने मुसलमानी राज्य की अपेक्षा अंग्रेजी शासन कहीं श्रेयस्कर समझा।' स्वयं भारतेन्दु हरिशचन्द्र को भी राजभक्ति विरासत में मिली थी। उनकी दृढ़ मान्यता थी कि[3] 'विक्टोरिया देश की मल्लिका हैं और उनके तथा उनके परिवार के प्रति (राजपरिवार) वफादारी और निष्ठा का भाव रखना हर देशवासी का कर्त्तव्य है।' भारतेन्दु ने ग्यारह वर्ष की आयु में प्रिंस एलवर्ट के सम्मान में एक कविता लिखी थी तथा महारानी विक्टोरिया के पति प्रिंस एलबर्ट की मृत्यु पर श्री अलवरत वर्णन (अन्तर्लिपिका) लिखकर महारानी विक्टोरिया के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए लिखते हैं –

'कह सितार के सार?सत्रु के किमि मन तेरे? काकी मार प्रहार सीम अरि हनै घनेरे?

को महारानी को पति परम सोभित स्वर्गहि ह्वै रहौ? अलवरत एक छत्तीस इन प्रश्नन को उत्तर कह्यो।'

1857 ई. में प्रिंस ऑफ वेल्स (सम्राट एडवर्ड VII) के भारत आगमन पर 'श्री राजकुमार शुभागमन वर्णन' कविता में भारतेन्दु अपनी राजभक्ति का परिचय देते हैं। यथा

'स्वागत स्वागत धन्य तुम भावी राजधिराज भई सुनाया भूमि यह परसि चरन तुव आज।।'

इसी तरह 1869 ई. में श्री राजकुमार सुस्वागत पत्रश नामक कविता की रचना की और उसमें उन्होंने राजकुमार से प्रार्थना की–

'विनवत जुग प्रफुलित जलज, करि कलि कैक समान भुजा भुजा की छांह मैं, देहु अभय पद दान।।'

साथ ही 'भारत भिक्षा' शीर्षक कविता में राजकुमार के आगमन से भारत भूमि के आनन्दमय होने का वर्णन भी करते हैं–

'अहो आज का सुनि परत भारत भूमि मंझार।
चहूं ओर आनन्द धुनि कहा होत बहु बार।।
ब्रिटिश सुशासित भूमि में आनन्द उमगे जात।
सबै कहत जय आज क्या यह नहिं जान्यो जात ।।'

वे महारानी व युवराज की जय जयकार करते हुए लिखते हैं–

'बजे बृटिश डंका सघन गहगह शब्द अपार।
जय रानी विक्टोरिया जै जुवराज कुमार।।'

यही नहीं भारतेन्दु ने अंग्रेजों और हिन्दुओं में एक जातीत्व की स्थापना करते हुए महारानी विक्टोरिया को राजराजेश्वरी तक की उपमा दे डाली। साथ ही 'मनुमुकुल' नामक कविता में अंग्रेजों को आर्य जाति का कहकर हिन्दुओं में एकता की कामना भी करते हैं–

'होई भारत धीश्वरी आरज स्वामिनि आज।
तुम हुदै आरज जाति कहं मिलयो धन यह राज।।'[4]

भारतेन्दुयुगीन कवियों में मुख्य कवि बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' भी इसी पद्धति का अनुकरण करते हुए ब्रिटिश शासन के आगमन पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए लिखते हैं –

'धन्य ईसवीं सन अठारह सौं अट्ठा वन प्रथम नवम्बर दिवस
सतासित भेद मिटावन।।'

यहाँ सतासित भेद का अन्त है। आगे की पंक्तियों में वे लिखते हैं कि हे महारानी तेरा शासन धन्य है जैसे बकरी और सिंह एक घाट का पानी पीते हैं, वैसी समानता तेरे इस शासन काल में भी है –

'धन्य तिहारो राज, अरी मेरी महारानी।
सिंह, अजा संग पियत जहां एकहि थल पानी।।'[5]

राजभक्ति में 'प्रेमघन' जी भारतेन्दु तथा उनके युगीन अन्य कवियों से भी एक कदम आगे निकल गये हैं। अम्बिकादत्ता व्यास भी 'जयति राजराजेश्वरी जय जय परमेश' पंक्तियों द्वारा रानी विक्टोरिया के सुशासन के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।[6]

भारतेन्दु युगीन कवि पूर्णरूपेण देश भक्त थे और उनमें राष्ट्रीय चेतना का ज्वार भी उमड़ रहा था। उस युग के कवियों में राष्ट्रीयता का आदर्श ब्रिटिश राज्य को उखाड़ फेंकने की बजाय उनकी छत्रछाया में रहकर औपनिवेशिक स्वराज्य प्राप्त करना था। यही कारण है कि उस काल में उग्रवादी विचारधारा का प्रवर्तन धीरे–धीरे हुआ। महारानी विक्टोरिया के शासन में मध्यमवर्गीय समाज में शान्ति और सुख की अभिलाषा उत्पन्न हुई थी किन्तु परिणाम कुछ और ही रहा। कल्पना लोक में जीने वाले मध्यमवर्गीय लोगों को सुख–शान्ति की बजाय कठोर यथार्थ की पीड़ा की मार झेलनी पड़ी और समाज के इस वर्ग के सपने टूट गए। इस प्रकार जन जीवन में असन्तोष की लहर फैल गई और इसी असन्तोष के कारण जनता को अपनी परतन्त्रता और विपन्नता का आभास हुआ। इसी असन्तोष के कारण जनता में क्रान्तिकारी विचारधारा का उदय हुआ। भारतेन्दु अपनी रचना 'भारत दुर्दशा' में अतीत गान करते हुए उसके छठे अंक में लिखते हैं –

भारत के भुजबल जग रच्छित।
भारत विद्या लहि जग सिच्छित ।।
भारत तेज जगत विस्तारा भारत भय कांपत संसारा ।
जाके तनिकहिं भौंह हिलाए थर–थर कांपत नपृ डरपाए ।।
जाके जय की उज्ज्वल गाथा गावत सब महिं मंगल साथा।।

भारत के तेज, गौरव की सम्पूर्ण संसार में ख्याति है। भारत के तेज से यूरोप व अमेरिका सभी ईर्ष्या करते थे–

जिनके भय कंपित संसारा, जब जग जिनको तेज पसारा।
पुरुष अमरिका इहिहि सिहाहि, भारत भाग सरिस कोउ नहीं।।

भारत वर्ष पर ही सबसे पहले ईश्वर की कृपा हुई थी। इसीलिए उसने सबसे पहले इसे धन, धान्य व बल प्रदान किया, सभ्य बनाया। सर्वप्रथम विद्या का फल भी इसे ही मिला। रूप, रंग का रस भी सर्वप्रथम भारत को ही मिला है–

सबके पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनो।
सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनो ।।
सबके पहिले जो रूप रंग रस भीनो। सबके पहिले विद्याफल जिन गहि लीनो।।[7]

क्रान्ति की भावना को जनमानस में जगाने के लिए भारतेन्दु ने भारतीय शूरवीरों का स्मरण करते हुए जनता का जगाने का प्रयास किया है –

धन धन भारत के सब छात्री जिनकी सुजल धुजा फहराय
मारि मारि के शत्रु दिये हैं, लाखन बेर भगाय।
महानन्द की फौज सुनत ही डरे सिकन्दर राय।
राजा चन्द्रगुप्त लै आये बेटी सिल्यूकस की जाय।
मारि बलूचिन विक्रम रहे शकारी पदवी पाय।
बापा कासिम तनय मुहम्मद जीत्यौ सिन्धु दियो उत्तरायै।[8]

प्रेमधन भी अपने स्वर्णिम अतीत का स्मरण करते हुए वर्तमान पर क्षोम प्रकट करते हैं–

नहि अब भारत वह रह्यो, नहिं यामैं वह तत्व।
हाथ विधाता ने हर्यो, कैसो याको सत्व ।।
नहि वह काशी रह गई, हती हेम मय जौन।
नहिं चौरासी कोस की, रही अयोध्या तौन।।[9]

राधाकृष्ण दास ने अपनी षविजयिनी विलापष कविता में भी भारतीय ऐतिहासिक महापुरुषों का यश गान करते हुए अपनी सांस्कृतिक विरासत का भाव पूर्ण व मर्मस्पर्शी गान करते हुए वर्तमान की चिन्ता की है–

कहाँ परिक्षित कह जनमजेय कहं विक्रम कहं भोज नन्दवंश कहं चन्द्रगुप्त कहँ हाय कहाँ वह ओज। हा कबहुँ वह दिन फिर हुवै हैं वह समृद्धि वह शोभा। कै अब तरसि तरसि मसूसि कै दिन जैहै सब छोभा ।[10]

डॉ. उर्मिला जैन ने लिखा है कि, 'वर्तमान अधोगति की भावना वेदना उत्पन्न करती हैं जो केवल असहायता की वेदना नहीं है, बल्कि क्षोभ भरी है। हिन्दी के कवि इस माध्यम से विदेशी शासन के प्रति अपना आक्रोश प्रकट करते हैं। वर्तमान की धूमिल पृष्ठभूमि पर अतीत का चमकता हुआ उज्ज्वल चित्र सहज ही प्रकट हो जाता है।'[11]

भारत दुर्दशा में भारत की दयनीय स्थिति (दशा) को देखकर भारतेन्दु के कंठ से निकला था–

रोवहु सब मिलि कै आवहु भारत भाई।
हा ! हा ! भारत दुर्दशा न देखी जाई।।[12]

भारतेन्दु से भारत की दुर्दशा सही नहीं गई। इसकी अनुभूति इतनी अधिक तीव्र थी कि उन्होंने देशवासियों को भी आमंत्रित किया। उन्हें सर्वत्र दु:ख ही दु:ख दिखाई दिया और उनमें गहरा असन्तोष पैदा हो गया और उन्होंने लिखा

अब जहें देखहुँ तहँ दुख ही दुख दिखाई।
हा ! हा ! भारत दुर्दशा न देखी जाई।।[13]

पराधीनता से बढ़कर कोई दु:ख दूसरा नहीं है। इसी पीड़ा की अभिव्यक्ति करते हुए प्रेमधन ने पराधीनता को सबसे बड़ा दु:ख माना है। इसी कारण प्रकारान्तर में उन्होने अंग्रेजी शासन के प्रति अपना असन्तोष प्रकट किया है–

जदपि जगत में बहुदुख दुसह महान।
पराधीनता के सम तदपि न आन।।[14]

देशवासियों की इस स्थिति को देखकर इन कवियों का हृदय पीड़ा से रो उठता है। भारतेन्दु युगीन कवियों ने जहां देश की दुर्दशा को नजदीक से देखा था वहीं जनता के कष्टों को भी अपनी वाणी दी थी। जिस देश में कभी सोना बरसता था उसी देश की जनता एक रोटी के लिए ललचाई निगाहों से ताकती नजर आती है। बालमुकुन्द गुप्त इसी पीड़ा का गान अपनी कविता जातीय गीत में करते हुए कहते हैं–

जिनके कारण सब कुछ पावैं जिसका बोया सब जन खायें।
हाय हायउनके बालक नित भूखों के मारे चिल्लायें ।।[15]

अंग्रेजों ने अपने खजाने और राजकोष में वृद्धि करने हेतु भारतीय जनता का अत्यधिक शोषण किया, फलत: राजस्व मांग, करों एवं बढ़ती मंहगाई के बोझ से दबी जनता की दीनावस्था का चित्रण करते हुए प्रतापनारायण मिश्र लिखते हैं–

तबहिं लख्यों जहं रह्यो एक दिन कंचन बरसत।
तहं चौथाई जन रूखो रौटिहुं को तरसत
जहां आमन की गुठली अरू बिरछन की छालै।
ज्वार चून महं मेलि लोग परिवारहिं पालै ।।
नोन तेल लकरी घासहु पर टिक्स लगे जहाँ।
चना चिरौंजी मोल मिले जहँ दीन प्रजा तहाँ।।[16]

उपर्युक्त पंक्तियों में ब्रिटिश सरकार द्वारा किए जाने वाले आर्थिक शोषण और भारतीय दासता का चित्रण भली भाँति स्पष्ट होता है। तत्कालीन समय में पड़ने वाले अकाल, महामारी और कर के बोझ से दबी हुई जनता की करुणाजनक स्थिति को भारतेन्दु ने भी अपनी वाणी दी है –

ताहु पै महंगी, काल और बीमारी
दिन दिन दूनों दुख देत ईस हा हारी।।[17]

पं. बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमधन' ने देश के पतनोन्मुख समाज का वर्णन करते हुए चिन्ता व्यक्त करते हुए लिखते हैं –

भयो भूमि भारत में महा भयंकर भारत।
भये वीरवर सुभट एकहि संघ गारत ।।
भये विवुध नर नाह सवल चातुर गुन मंडित ।
बिगरो जनसमुदा बिनापथ दर्शक पंडित।
नये-नये न चले, नये झगरे नित बढ़े।
नये-नये दुख वरे सीस भारत पर गढे।।[18]

दादाभाई नौरोजी और रमेश चन्द्र मजुमदार जैसे स्वतंत्रता सेनानी आर्थिक-निष्कासन सिद्धांत में भारत की दासता का कारण खोज रहे थे,क्योंकि भारतीयों का आर्थिक शोषण उस काल की एक प्रमुख समस्या थी। बालकृष्ण भट्ट के शब्दों में[19] 'देश का धन विलायत ढोया चला जा रहा है, कितना भारी पाप हम कर रहे हैं तथा हजारों लाखों विलायती साहब लोग जो थोड़ा ही परिश्रम कर अलपायाम् महत् फलम् की भाँति लम्बी लम्बी तनख्वाहें फटकार असंख्य रुपया जमाकर विलायत में इंडियन जाय नवाब बनते हैं।' हरिशचन्द्र[20] की इन पंक्तियों में भी भारतीयों के आर्थिक शोषण का चित्रणद्रष्टव्य है -

इत की रूई सींगअरू चरमहि तित लौ जाय।
ताहि स्वच्छ करि वस्तु वहु भेजत इतहि बनाम ।।
तिनही को हम पाय कै. साजत निज आमोद।
तिन बिन छिन तृन सकल सुख स्वाद, विनोद प्रमोद ।।

भारतीयों का एक तरफ टैक्स व कर के बोझ से दबाया जा रहा था वहीं दूसरी ओर यहां का धन विलायत में भेजा जा रहा था।दादाभाई नौरोजी के धन-निष्कासन सिद्धांत के अनुसार भारत की ही वस्तुओं को निर्यात कर फिर पुन: भारत में अधिक दाम में बेचकर यहाँ की जनता का आर्थिक शोषण किया जा रहा था। इस प्रकार भारतेन्दु युग में जब देश इन सब समस्याओं से जूझ रहा था तब कवियों ने न केवल अतीत का गुणगान किया बल्कि वर्तमान दुरावस्था का चित्रण करते हुए उसका सामना करने के लिए जनता को कमर बांध कर शस्त्र धारण करते हुए आगे पांव बढ़ाने का सन्देश भी इस युग के कवियों ने दिया है। भारतेन्दु[21] ने स्वयं होली गाते हुए यह आह्वान किया है -

उठौ उठौ सब कमरन बाँधौ शस्त्रन सान धरो री।
विजय-निसान बजाइ बावरे आगेइ पाँव धरो री।।

तथा भारत पुत्रों को जगाने के लिए वे राम, युधिष्ठिर, और विक्रम की याद भी दिलाते-

उठी उठौ भैया क्यौ हारौ अपुन रूप सुमिरो री।
राम युधिष्ठिर विक्रम की तुम सटपट सुरत करोरी।।[22]

प्रताप नारायण मिश्र ने भी 'सब तजि गहनों स्वतंत्रता नहिं चुप लातै खाव' के द्वारा मूलत: अंग्रेजों के अत्याचार को ही दर्शाया है। प्राय: भारतेन्दु युग के कवियों ने इसी प्रकार के चित्र प्रस्तुत कर देश की यथार्थ स्थिति का चित्रण करते हुए भारतवासियों को प्रेरणा दी है। आचार्य शुक्ल ने इस युग की राष्ट्रीय काव्यधारा के विषय में लिखा है,[23] 'नवीनधारा' के बीच भारतेन्दु की वाणी का सबसे ऊँचा स्वर देश भक्ति का था। नील देवी, 'भारत दुर्दशा' आदि नाटकों के बीच आई हुई कविताओं में देश दशा की जो मार्मिक व्यंजना है, वह तो है ही, बहुत सी स्वतंत्र कविताएँ भी लिखी, जिनमें कहीं देश की अतीत गौरव गाथा का गर्व, कहीं वर्तमान अधोगति की क्षोम भरी वेदना, कहीं भविष्य की भावना से जागी हुई चिन्ता आदि अनेक पुनीत भावों का संचार पाया जाता है।' इस युग की राष्ट्रीयता के बारे में शिवदान सिंह चौहान[24] का मानना है कि 'हिन्दी की राष्ट्रीय आधुनिक कविता राष्ट्रीयता के क्रोड में पनपी है किन्तु उसके पोषण में भारतेन्दु युगीन रचनाकारों का सहयोग अधिक महत्वपूर्ण नहीं था।भारतेन्दु युग में राज्योन्मुख राष्ट्रीयता का स्वर न केवल साहित्य में, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलनों में भी दिखाई देता है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने साहित्य को सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रनिर्माण का माध्यम बनाया, जिससे आगे चलकर हिंदी क्षेत्र में राजनीतिक चेतना का विकास हुआ।'

यद्यपि इस युग के कवियों ने राजपरक कविताएं अधिक संख्या में लिखी है किन्तु इन कवियों में राष्ट्रीयता का अभाव नहीं था। सारांश रूप से कहे तो भारतेन्दुयुगीन कविताओं के युग ने राष्ट्रीय आन्दोलन व सामाजिक जागरण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। समय की मांग व परिस्थितिवश कवियों ने अपना रूख उस दिशा में भी मोड़ दिया था किन्तु सही अर्थों में देखें तो राष्ट्रीयता का बीजवपन भारतेन्दु युगीन रचनाओं से ही हुआ।भारतेन्दु का काव्य विदेशी शासन को समूल उखाड़ फेंकने के लिए उसकी आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक नीतियों पर प्रहार करता हुआ नवजागरण का संदेश देता है तथा देश की सोई हुई जनता को जगाने का प्रयत्न करता है।भारतेन्दु युग केवल हिन्दी साहित्य का नवजागरण काल ही नहीं, बल्कि आधुनिक भारत में राज्योन्मुख राष्ट्रीयता के बीज बोने वाला युग भी है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने भाषा, साहित्य और पत्रकारिता को एक सशक्त राजनीतिक उपकरण के रूप में प्रयोग किया, जिससे स्वतंत्रता संग्राम की नींव तैयार हुई।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. शिवदान सिंह चौहान, 'हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष', पृष्ठ संख्या 29 राजकमल प्रकाशन,1979
2. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, 'भारतेन्दु हरिशचन्द्र', पृष्ठ संख्या 48, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद,1953
3. ओम प्रकाश सिंह (सं.), 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ग्रंथावली', भाग 1. भूमिका से
4. ब्रजरत्नदास (सं.), भारतेन्दु ग्रंथावली, भाग-2, पृष्ठ संख्या 624,697,629, 283, 291, 302
5. बिन्दू दुबे, 'दिनकर के काव्य का अनुशीलन', पृष्ठ संख्या 49
6. शिवकुमार शर्मा, 'हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ', पृष्ठ संख्या 474
7. ओमप्रकाश सिंह (सं.). भारतेन्दु ग्रंथावली, भाग-1, पृष्ठ संख्या 132,140
8. ओम प्रकाश सिंह (सं.), भारतेन्दु ग्रंथावली, भाग-1, पृष्ठ संख्या 113
9. ब्रजरत्नदास, भारतेन्दु ग्रंथावली, भाग-2, पृष्ठ संख्या 503
10. उर्मिला जैन, 'आधुनिक हिन्दी काव्य में क्रान्ति की विचारधाराएं', पृष्ठ संख्या 103
11. रामरजन पाण्डेय, 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', पृष्ठ संख्या 282
12. उर्मिला जैन, 'आधुनिक हिन्दी काव्य में क्रान्ति की विचारधाराएँ', पृष्ठ संख्या 103
13. कृष्णवीर सिंह (सं.), 'भारतेन्दु हरिशचन्द्र रचित भारत दुर्दशा', पृष्ठ संख्या 42
14. वही, पृष्ठ संख्या 42
15. उर्मिला जैन, 'हिन्दी काव्य में क्रान्ति की विचारधाराएँ', पृष्ठ संख्या 104

16. रामरजन पाण्डेय,'हिन्दी साहित्य का इतिहास', पृष्ठ संख्या 282,
17. नगेन्द्र, 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', पृष्ठ संख्या 452
18. बिन्दू दुबे, 'दिनकर के काव्य का अनुशीलन', पृष्ठ संख्या 51
19. रामचन्द्र शुक्ल, 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', पृष्ठ संख्या 448
20. रेणुवर्मा, साहित्यिक निबन्ध, पृष्ठ संख्या 115, 116
21. ब्रजरत्नदास (सं.), 'भारतेन्दु ग्रंथावली', भाग–2, पृष्ठ संख्या 736
22. हेमन्त शर्मा (सं.), 'भारतेन्दु समग्र', पृष्ठ संख्या 473, 473
23. रामचन्द्र शुक्ल, 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', पृष्ठ संख्या 542
24. शिवदान सिंह चौहान, 'हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष', पृष्ठ संख्या 24
25. मिश्र, रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
26. उपाध्याय, हजारीप्रसाद द्विवेदी, भारतेन्दु युग, राजकमल प्रकाशन।
27. गोस्वामी, शिवप्रसाद, भारतेन्दु हरिश्चंद्ररू व्यक्तित्व और कृतित्व, साहित्य भवन।
28. जैन, रामकुमार, भारतेन्दु और नवजागरण, ग्रंथ शिल्पी।
29. पांडेय, रामविलास शर्मा, भारतेन्दु युग और भारतीय नवजागरण, लोकभारती प्रकाशन।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

A Comparative Study on Male and Female Beneficiaries of Mudra Yojana: Growth, Utilization, and Challenges in Shajapur District

Shubhangi Sharma* **Dr. Sunil Advani****

*ResearchScholar, School of Studies in Commerce, Vikram University, Ujjain (M.P.) INDIA
** Assistant Professor (Commerce) Pt. Balkrishna Sharma, "Naveen" P.G. College, Shajapur (M.P.) INDIA

Abstract : The Pradhan Mantri Mudra Yojana (PMMY) is one of India's flagship schemes for fostering self-employment and entrepreneurship, especially in rural and semi-urban regions. This paper examines gender-based trends in Mudra loan disbursements over a five-year period (2018–2023) in Shajapur District, Madhya Pradesh. The study uses real disbursement data and statistical testing (Paired t-test, independent t-test, and Linear Regression) to assess whether any significant differences exist between male and female beneficiaries. The results indicate no significant difference in mean disbursement between genders but reveal a strong growth trend in female participation, suggesting the scheme is gradually closing the gender gap in financial inclusion.
Keywords: Mudra Yojana, Financial Inclusion, Gender Disparity, Microfinance, Shajapur District, Women Entrepreneurs, Loan Disbursement.

Introduction - Inclusive economic growth remains a key objective for policy makers in India, especially in terms of strengthening self-employment opportunities. Mudra Yojana was launched in 2015 to provide micro and small entrepreneurs with collateral-free loans through formal banking channels. Over the years, the scheme has witnessed steady growth in the number of beneficiaries, including a significant rise in women borrowers.

This research seeks to evaluate gender-wise growth patterns, utilization, and challenges faced by male and female beneficiaries of Mudra Yojana in Shajapur District, based on five-year disbursement data.

Review of Literature

Government of India (2023) reports confirm Mudra Yojana's role in increasing financial inclusion but highlight a persistent gender gap in loan size and utilization.

RBI (2022) emphasizes the growth of women-led loan accounts under Mudra but notes regional disparities in participation and loan value. Sharma & Gupta (2020) discuss the gender gap in loan amounts sanctioned, suggesting women tend to avail smaller loans due to limited business capital requirements or social constraints. NITI Aayog (2021) recommends gender-targeted awareness and training to improve women's access to credit schemes in rural India. World Bank (2019) highlights that without complementary interventions (skill training, market access), credit schemes alone may not ensure entrepreneurship success, especially for women.

Research Methodology Objectives: To compare the growth, utilization, and challenges of Mudra loans between male and female beneficiaries in Shajapur District over five years.

Research Design: Descriptive and Analytical.

Data Type: Secondary data sourced from official Mudra loan records of Shajapur District (2018–2023).

Objectives:

1. To analyze the pattern of loan disbursement under the Pradhan Mantri Mudra Yojana (PMMY) among male and female beneficiaries in Shajapur district.

2. To test whether a significant difference exists in the number of loan accounts between male and female beneficiaries.

Hypothesis:

1. **H_0 (Null Hypothesis):** There is no significant difference in Mudra loan disbursements between male and female beneficiaries in Shajapur District.

H_1 (Alternative Hypothesis): There is a significant difference in Mudra loan disbursements between male and female beneficiaries in Shajapur District.

2. **H_0 (Null Hypothesis):** There is no significant difference in the number of loan accounts between male and female beneficiaries under the Mudra Yojana.

H_1 (Alternative Hypothesis): There is a significant difference in the number of loan accounts between male and female beneficiaries under the Mudra Yojana.

Data analysis & interpretation:

1. Statistics analysis of male & female beneficiaries under PMMY.

Table No. 1 : Gender wise loan disbursement table

Financial Year	Male (x_1)	Female (x_2)
2018-19	180.64	139.65
2019-20	199.59	170.66
2020-21	161.75	169.32
2021-22	160.40	221.83
2022-23	241.04	240.64

Source: Secondary data (RTI)

Calculate the means:-

(Male) $\bar{x}_1 = \frac{180.64 + 199.59 + 161.75 + 160.40 + 241.04}{5}$

(Female) $\bar{x}_2 = \frac{139.65 + 170.66 + 169.32 + 221.83 + 240.64}{5}$

$= 188.42$

Calculate the standard Deviations: -

S = $\sqrt{\frac{\Sigma(x-\bar{x})^2}{n}}$

(Male)S_1 = 33.35 (approx.)

(Female) S_2 = 41.54 (approx.)

+ - Test calculation: -

formula

$$t = \frac{\bar{x}_1 - \bar{x}_2}{\sqrt{\frac{s^2_1}{n_1} + \frac{s^2_2}{n_2}}}$$

Where

$\bar{x}_1 = 188.68$

$\bar{x}_2 = 188.42$

$S_1 = 33.35$

$S_2 = 41.54$

$n_1 = n_2 = 5$

Now substitute: -

$$t = \frac{188.68 - 188.42}{\sqrt{\frac{33.35^2}{5} + \frac{41.54^2}{5}}}$$

t = 0.0109 (approx.)

Decision rule: -

- Degree of freedom (df) **=** $n_1 + n_2 - 2 = 5 + 5 - 2 = 8$
- Critical +- Value at 5% significance (2 tailed) = 2.306 (approx.)

Conclusion: -

0.0109<2.306

Result: - Since calculated + value is lower than critical value, & p value = 0.9915 > 0.05 We fail to reject the null hypothesis so we accept the null hypothesis & reject alternative hypothesis.

There is no statistically difference in loan disbursement between male & female beneficiaries under mudra yojana.

1. Statistics analysis of the number of accounts between male & female PMMY.

Table No. 2 : The number of loan accounts between male & female data table

Financial Year	Male Accounts (x_1)	Female Accounts (x_2)
2018-19	38,312	34,422
2019-20	33,646	50,370
2020-21	23,455	41,217
2021-22	21,135	48,284
2022-23	24,019	45,396

Source: Secondary data (RTI)

Calculate the means:-

(Male) $\bar{x}_1 = \frac{38312+33646+23455+21135+24019}{5} = \frac{140567}{5}$

$= 28113.4$

(Female) $\bar{x}_2 = \frac{34422+50370+41217+48284+45396}{5} = \frac{219689}{5}$

$= 43937.8$

Standard deviation calculation:-

formula

SD = $\sqrt{\frac{\Sigma(x-\bar{x})^2}{n-1}}$

(Male)SD = 7,446.21 (approx.)

(Female) SD = 6,331.32 (approx.)

+ - Test calculation: -

formula

$$t = \frac{\bar{x}_1 - \bar{x}_2}{\sqrt{\frac{s^2_1}{n_1} + \frac{s^2_2}{n_2}}}$$

Where

$\bar{x}_1 = 28113.4$

$\bar{x}_2 = 43937.8$

$S_1 = 7446.21$

$S_2 = 6331.32$

$n_1 = n_2 = 5$

Now substitute: -

$$t = \frac{28113.4 - 43937.8}{\sqrt{\frac{7446.21^2}{5} + \frac{6331.32^2}{5}}}$$

t = -3.62 (approx.)

Decision rule: -

- Degree of freedom (df) **=** $n_1 + n_2 - 2 = 5 + 5 - 2 = 8$
- Critical +- Value at 5% significance (2 tailed) = 2.306 (approx.)

Conclusion: -

3.62 < 2.306

Result: - Since calculated + value is higher than critical value, & p value = 0.0067> 0.05 So we reject the null hypothesis & accept alternative hypothesis.

There is a significant difference in numberof loan accounts between male & female beneficiaries under mudra yojana.

Findings: The study collected 5-year data (2018-19 to 2022-23) on loan disbursements and the number of accounts under the Mudra Yojana for both male and female beneficiaries in Shajapur District.

The calculated p-value was approximately 1.0, which

is much higher than the common significance level (0.05). This result clearly shows that there is no statistically significant difference in loan disbursement amounts between male and female beneficiaries.

The p-value (0.0067) is less than the 0.05 significance level, confirming a statistically significant difference in the number of loan accounts between male and female beneficiaries. The data indicates that female beneficiaries have consistently held more accounts in recent years, showcasing growing financial independence.

Suggestions: Promote gender-inclusive training, targeted incentives for women, transparent local monitoring, and post-loan business support to ensure equal access, smooth implementation, and long-term success for Mudra Yojana beneficiaries.

Awareness, simplified documentation, and mentoring support can enhance participation and ensure balanced growth for both male and female Mudra beneficiaries.

Conclusion: This result suggests that the Mudra Yojana has been implemented in a gender-neutral manner and that the scheme equally supports both male and female entrepreneurs. However, the consistently higher number of loan accounts among female beneficiaries reflects a positive shift toward women's financial empowerment and growing participation in self-employment.

In the future, more gender-sensitive policies, financial training, and post-loan support will help both male and female entrepreneurs maximize the benefits of the Mudra Yojana and strengthen rural and semi-urban entrepreneurship in districts like Shajapur.

References: -

1. **Mudra Yojana Annual Reports (2018–2023).**www.mudra.org.in
2. **Reserve Bank of India. (2023).** Report on Trends and Progress of Banking in India.
3. **NITI Aayog. (2022).** Promoting Women Entrepreneurs through Credit Schemes in India.
4. **Sharma, R., & Gupta, A. (2020).** Financial Inclusion through Mudra Yojana: A Gender Analysis. International Journal of Economics and Development, 15(3).
5. **World Bank. (2019).** Financial Access and Women-Led Enterprises in South Asia.

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

कृषि आधारित उद्योग और ग्रामीण विकास का सुक्ष्म भौगोलिक अध्ययन

अनिल कुमार यादव* डॉ. ए.के. सिंह**

* शोध छात्र (भूगोल) एस.एल.पी. स्नातकोत्तर महाविद्यायल, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.) भारत
** प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (भूगोल) एस.एल.पी. स्नातकोत्तर महाविद्यायल, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – कृषि आधारित उद्योग सामान्यत: वे उद्योग होते हैं जिनका कृषि से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध होता है। इसमें कृषि कच्चे माल के साथ-साथ कृषि के आदानों के रूप में जाने वाली गतिविधियों और सेवाओं के आधार पर विभिन्न प्रकार की औद्योगिक, विनिमार्ण और प्रसंकरण गतिविधियों को शामिल किया गया हैं। ग्रामीण परिदृश्य में कृषि एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है इसलिए ग्रामीण विकास का आधार हैं कृषि आधारित उद्योग जो इस प्रमुख आर्थिक गतिविधि पर पनपते हैं, ग्रामीण विकास में भी एक महत्वपूर्ण पहलू हैं।

प्रस्तावना – ग्रामीण क्षेत्र को शहरी सुविधाओं के प्रावधान के माध्यम से गांवों का आर्थिक उत्थान एक महत्वपूर्ण विचार बन गया। इसमें कृषि और खाद्य प्रसंस्करण कृषि निर्माण इकाइयों के विकास, कृषि सेवा इकाई द्वारा ग्रामीण देश के सभी हिस्सों के लिए एक विश्वसनीय और गुणवत्तापूर्ण तरीके के बिजली का प्रवाधान ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के सभी विस्तार के लिए शिक्षा और स्वास्थ शामिल है। परमाणु प्रोद्योगिकी, अंतरिक्ष और अवज्ञा प्रौद्योगिकी जैसे रणनीतिक क्षेत्रों का विकास राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास में इसके महत्व को देखते हुए वर्तमान अध्ययन सुक्ष्म स्तर का अध्ययन है। कृषि आधारित उद्योग ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अध्ययन में कृषि उत्पाद प्रसंस्करण इकाइयों कृषि-उत्पाद निमार्ण इकाइयों कृषि आदानों, विनिमार्ण इकाइयों और कृषि सेवा केंद्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया था।

ग्रामीण विकास हेतु प्रसंस्करण उद्योग – प्रसंस्करण उद्योग उन गतिविधियों को संदर्भित करता है जो कृषि वस्तुओं को विभिन्न रूपों में परिवर्तित करते हैं जो उत्पाद में मूल्यों जोड़ते हैं। कृषि आधारित उद्योग वे उद्योग हैं जिनका कृषि से प्रत्यक्ष या अप्रयक्ष संबंध है। कृषि प्रसंस्करण उद्योग विशेष रूप से खाद्य निर्माण तंबाकू और कपड़ा प्रसंस्करण वाणिज्यिक औद्योगिक क्षेत्र पर हावी हैं। इस अर्थ में कृषि – प्रसंस्करण को एक समूह के रूप में परिभाषित किया गया है। कृषि उत्पादों के संरक्षण और संचालन के लिए और इसे भोजन ,चारा, फाइबर, ईंधन या औद्योगिक कच्चे माल के रूप में प्रयोग करने योग्य बनाने के लिए निम्नलिखित तकनीकी आर्थिक गतिविधियाँ आदि कृषि-प्रसंस्करण उद्योग गुंजाइश फसल से सभी कार्यों को शामिल करती हैं फसल के अंतिम चरण में सामग्री वांछित रूप मात्रा गुणावता और मूल्य में अंतिम उपयोगकर्ताओं तक पहुंचती हैं। प्राचीन भारतीय शास्त्र भोजन और औषधीय उपयोग के लिए कृषि उपज के संरक्षण का उल्लेख करते हैं और इसका विस्तृत विवरण है प्रसंस्करण के लिए कटाई के बाद और प्रसंस्करण प्रथाओं लेकिन अपर्याप्त ध्यान अतीत में कृषि-प्रसंस्करण क्षेत्र ने उत्पादक और उत्पादन दोनों को नुकसान पहुंचाया वही उपभोक्ता और इसने पर्यावरण को भी नुकासन पहुंचाया।

कृषि आधारित उद्योग परिर्माजन– कृषि एवं औद्योगिक विकास एक दूसरे के पूरक हैं कृषि के बिना उद्योग धन्धों का विकास नहीं हो सकता हैं और उद्योग धन्धों के बिना कृषि का समुन्नत विकास हो पाना असम्भव हैं। कृषि उद्योग धन्धों के बीच समन्वय होना आवश्यक है अध्ययन क्षेत्र की अर्थव्यवस्था कृषि नियोजन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण कार्य किये है। वस्तुत: कृषि नियोजन सम्पूर्ण कृषि समुदाय को उत्पादन की ओर अग्रसर कर आर्थिक वृद्धि के एक उच्च दर को प्राप्त करने का प्रयास होता हैं। कृषि विकास योजना द्वारा भूमि की प्रत्येक इकाई के अनुकूलतम उपयोग को निर्धारित किया जाता है। इस उद्देश्य से नियोजन प्रक्रिया में आवश्यकतानुसार परिर्माजन एवं संशोधन की सुविधा के साथ ही समयानुसार बदलती परिथितियों के सन्दर्भ में उसमें परिवर्तन की सम्भावना बनी रहती है।

ग्रामीण विकास संकल्पना की वास्तविक रूपरेखा का अभ्युदय कब हुआ, इस संदर्भ में निश्चित एवं प्रामाणित रूप में कुछ कहना, करना कठिन प्रतीत होता है, फिर भी ऐसा विश्वास किया जाता है कि प्राचीन काल में क्षेत्र के विद्यमान संसाधनों के आर्थिक विकास हेतु प्रादेशिक नियोजन आमतौर पर एक उपागम के रूप में अपनाया जाता था। सामाजिक आर्थिक उन्नयन एवं संरचनात्मक परिवर्तन हेतु पूर्व नियोजन की प्रक्रिया एक अभिनव उपागम है जो मूलत: समाजवादी राष्ट्रों की देन है। भारत में योजनाबद्ध ग्रामीण विकास की शुरूआत वर्तमान सदी में ही की गयी। इसका प्रारम्भिक श्रेय रवीन्द्रनाथ टैगोर को जाता है जिन्होंने 1920 ई में शान्ति निकेतन के पास स्थित कुछ गांवों के विकास हेतु योजना बनाई। महात्मा गांधी ने इसे अधिक यथार्थवाद रूप प्रदान किया, जब उन्होंने ग्रामीणों के आपसी सहयोग और सद्भावना से ग्रामीण क्षेत्रों की विभिन्न समस्याओं और आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करने का इस प्रयोजना में मेयर महोदय ने ग्रामीण नियोजन के कतिपय आधारभूत मुद्दों, अच्छा आवास विकसित परिवहन एवं संचार तंत्र ग्रामीण उत्पादो की नियमित और शीघ्र खपत, जल आपूर्ति एवं सिंचाई व्यवस्था और स्कूल, विकास हेतु कृषि कार्य, संचार शिक्षा स्वास्थ प्रशिक्षण समाज

कल्याण एवं गृह सम्बन्धी योजनाओं की समीक्षा प्रस्तुत की इसके बाद लाटन ने 1959 ई में ग्रामीण क्षेत्रों मे परिवर्तन में विभिन्न भौगोलिक तथ्यों पर तथा नाजियुत्त करीम 1967 ई समाज में व्याप्त कमियां जो आर्थिक सामाजिक उन्नयन में बाधक के नियन्त्रण पर बल दिया।

1967 ई में अल इण्डिया रूरल क्रेडिट रिफार्म कमेटी के सुझाव पर कृषिकों के तत्कालिक आवश्यकता एवं विकास के लिए लघु एवं सीमान्त तथा कृषि मजदूर विकास एजेन्सी गठित की गयी। इसके अन्तर्गत बैकों द्वारा भूमि विकास के लिए विभिन्न सुविधायों की गयी। ग्रामीण क्षेत्रों में व्यवसाय के अवसर बढाने हेतु तैयार की गयी नीतियों के अन्तर्गत आर्थिक वृद्धि कृषि का आधुनिकरण एवं ग्रामीण उद्योगों का विकास एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नये अवसर प्रदान करने का लक्ष्य रहा।

ग्रामीण विकास का केन्द्रीय लक्ष्य एक ऐसे विकास की प्रक्रिया का प्रारम्भ करता है जो लोगों के रहन-सहन के स्तर को उँचा उठा सके उनके लिए अधिक समूह और विभिन्नता पूर्ण जीवन की व्यवस्था कर सके। यह नियोजन तार्किक ढंग से भारतीय ग्रामीण विकास की विभिन्न समस्याओं का हल ढूंढता है, ग्रामीण के बीच व्याप्त आर्थिक और सामाजिक असमानताओं को दूर करता है। उपर्युक्त लक्ष्यों की प्राप्ति नियोजन के अभाव में सम्भव नहीं है। विभिन्न क्षेत्रों में विकास सम्बन्धी वरीयताएं रखी गयी है। यह नियोजन प्रजातांत्रिक ढंग से राजकीय निर्देशन में हो रहा हैं ग्रामीण विकास के सम्बन्ध में निम्न प्रविधियों का प्रयोग हुआ है संगठनात्मक संरचना में परिवर्तन मूल्य नीति के द्वारा साधनों का वितरण पूंजी संग्रह व साख व्यवस्था का विकास वित्तीय नीति का एक यंत्र के रूप में प्रयोग तथा विभिन्न विकास स्तरों पर नियंत्रण अकाल जांच आयोग ने कहा कि कृषि आधारित उद्योग वे है जो न केवल राज्य के औद्योगिकरण में सहायता करते हैं बल्कि खेतों के उत्पादों को संभालने के अलावा कृषि आदानों के साथ खेतों की आपूर्ति में भी शामिल है। नेशनल काउंसिल ऑफ एप्लाइड इकोनॉमिक रिसर्च 1965 ने कृषि आधारित उद्योग को परिभाषित किया करते हैं। इनमें बीज उर्वरक जरूरतों के लिए कृषि कच्चे माल उपयोग करते हैं इनमें केवल वस्तुएं शामिल हैं, बल्कि कृषि उपकरणों और मशीनरी की मरम्मत और सर्विसिंग भी शामिल है, कृषि आधारित उद्योगों को परिवर्तनकारी प्रक्रियाओं के विभिन्न स्तरों पर वर्गीकृत किया जा सकता है। सामान्य तौर पर पूंजी निवेश रूपांतरित तकनीकी जटिलता परिवर्तन की डिग्री के अनुपात में बढ़ जाती है। कच्चे माल या भोजन को बदलने का उद्देश्य प्रयोग करे योग्य रूप बनाना, भंडारण क्षमता को बढाना, अधिक आसानी से परिवहन योग्य रूप बनाना, और पौष्टिकता या पोषण गुणवत्ता को बढाना है।

ग्रामीण उद्योग की विशेषताऐ- कृषि आधारित उद्योग अपने कच्चे माल की तीन विशेषताओं के कारण अद्धितीय है- पहला-मौसमी, दूसरा-खराब होने, तीसरा-परिवर्तनशीलता।लेकिन सभी कृषि आधारित उद्योग इन विशेषताओं को समान रूप से साझा नहीं करते हैं।

कृषि उद्योगों में कच्चे माल की मात्रा और गुणवत्ता में परिवर्तनशीलता होती हैं मौसम में उतार-चढाव मिट्टी की स्थिति आदि के कारण मात्रा अनिशित है। मानवीकरण के कारण गुणवत्ता भिन्न होती हैं, कच्चे माल की मायावी बनी रहती है, भले ही पशु और पौधों के आनुवंशिकी में प्रगति हुई हो। विविधताएं उत्पादन शेडयूलिंग और गुणवत्ता नियंत्रण से संबंधित संचालन के संदर्भ में कृषि-औद्योगिक इकाइयों पर अतिरिक्त दबाव डालती है

ग्रामीण उद्योग का प्रसंस्करण- भारत में कृषि - प्रसंस्करण उद्योग आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और स्थानीय जरूरतों और निर्यात आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता रखता हैं। सरकार द्वारा वित्त पोषित ग्रामीण विद्युतिकरण कार्यक्रम और सड़क और दूरसंचार नेटवर्क के माध्यम से बिजली आपूर्ति के मामले में इस उद्योग के लिए सहायक बुनियादी ढांचा अच्छी तरह से स्थापित है। ग्रामीण कारीगरों और उपयोगकर्ताओं के लिए विनिर्माण में अच्छी तरह से स्थापित कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम भी हैं। हालांकि इस क्षेत्र केा वर्तमान में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के खराब प्रदर्शन स्थानिय और विदेशी वित्त दोनों सलाह, सीमित विपणन जानकारी और विश्वसनीय बाजारों की कमी से उत्पन्न कई चुनौतियों का सामान करना पड़ रहा है।

कृषि उद्योग कृषि उत्पादों जैसे कृषि फसलों वृक्ष फसलों, पशुधन और मत्स्य पालन के प्रसंस्करण में मदद करता है और उन्हें भोजन और अन्य उपयोगी रूपों में परिवर्तित करता हें निजी क्षेत्र को अभी तक कृषि उद्योग की पूरी क्षमता का एहसास नहीं हुआ है चीनी कॉफी चाय और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ जैसे सॉस जेली, शहद आदि के लिए वैश्विक बाजार बहुत बड़ा है केवल आधुनिक तकनीक और गहन विपणन के साथ निर्यात बाजार का भी पूरा फायदा उठाया जा सकता है। इसलिए यह जरूरी है कि खाद्य निर्माता बदलती उपभोक्ता प्राथमिकताओं प्रौद्योगिकी आधुनिकरण नवाचार और कृषि - उत्पादन में नवीनतम रूझानों और प्रोद्योगिकी के समावेश को संपूर्ण खाद्य श्रृंखला के साथ समझें भारत और दुनिया में कृषि उत्पादों की कुल उत्पादन क्षमता अगला है। दशक तक दोगुना होने की संभावना है। इसके अलावा फल प्रसंस्करण मंत्रालय ने खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र के कार्य योजना की स्थापना की थी। उद्देश्य खराब होने वाले खाद्य पदार्थ के प्रसंस्करण के स्तर को 6 प्रतिशत से बढकर 20 प्रतिशत मूल्यवर्धन को 20 प्रतिशत से 35 प्रतिशत से बढाकर 3 प्रतिशत और वैश्विक खाद्य व्यापार की हिस्सेदारी को 1.6 प्रतिशत से बढाकर 3 प्रतिशत करना है। कृषि में मशीनीकरण अथवा उन्नत आधुनिक क्रियाओं में बदल जायें यह मात्र एक दिन का कार्य नहीं हैं बल्कि दीर्घकालिक प्रक्रिया हैं। कृषि यंत्रीकरण में ट्रैक्टर सबसे महत्वपूर्ण कृषि - उद्योग में मुख्य रूप से मध्यवर्ती या अंतिम उपभोग के लिए कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण और संरक्षण की कटाई के बाद की गतिविधियाँ शामिल हैं। यह दुनिया भर में एक अच्छी तरह से मान्यता प्राप्त तथ्य है, विशेष रूप से औद्योगिक विकास के संदर्भ में कृषि - उद्योगों का महत्व कृषि के सापेक्ष बढ़ता है क्योंकि अर्थव्यवस्थाएं विकसित होती हैं। इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि भोजन केवल उत्पादन नहीं हैं। भोजन में प्रसंस्कृत उत्पादों की एक विस्तृत विविधता भी शामिल है। इस अर्थ में कृषि उद्योग विकाशील देशों में विनिमार्ण क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण हिस्सा है और औद्योगिक क्षमता निर्माण का साधन हैं।

कृषि आधारित उद्योग की समस्याऐं - हर साल लाखों गरीब परिवार काम की तलाश में पलायन करते हैं। गांवों में आजीविका के धराशायी होने के कारण वे पलायन को मजबूर हैं ये संकटग्रस्त प्रवासी अक्सर अपने धरों को बंद कर लेते हैं, कुछ मामूली सामान ले जाते है और लंबी दूरी तय करते है अपने माता-पिता के साथ जाने वाले बच्चो को स्कूल छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ता हैं। 14 वर्ष से कम आयु के ऐसे बच्चों की संख्या लगभग 9 हर साल लाखों होने का अनुमान है। अपने गाँव से दूर होने के कारण वे उन जगहों से संबंधित नहीं होते हैं जहाँ वे जाते हैं और तेजी से अपने ही गाँवों में स्वीकृति खो देते हैं वे अपने समुदाय , संस्कृति और परंपराओं से अलग हो

गए है, त्यौहारों ,मेलों, धार्मिक और सामाजिक कार्यो में भाग लेने में असमर्थ हैं। जो उनके जीवन का एक अभिन्न अंग हैं और इस प्रकार उनकी पहचान की भावना खो देते हें। राज्य की सीमाओं को परा करने वाले लोगों की भेद्यता और भी अधिक है क्योंकि वे खुद को अपने ठेकेदारों पर अधिक से अधिक पाते हैं।

परंपरगत रूप से, किसान प्राकृतिक संसाधनों, श्रम कौशल और ज्ञान के साथ-साथ अपने निवेश का उपयोग करके या तो अपनी बात या वित्तीय ऋण से खाद्य और अन्य कृषि उत्पादों के उत्पादन होते हैं। लेकिन कुछ किसान दूसरों की तुलना में गरीब हैं। आमतौर पर वे भूमिहीन किसान होते हैं जिन्हें दूसरे लोगों की जमीन किराए पर देनी पड़ती है या दिहाड़ी मजदूर बन जाते हैं कृषि उत्पादों को आमतौर पर स्थानीय बिचौलिया या दलालों को निर्देशित किया जाता है, जो कभी-कभी बड़े राष्ट्रीय आपूर्तिकर्ताओं को वितरित करने से पहले किसानों को ऋण और बंधी हुई शर्तो के साथ उत्पादन के कारक प्रदान करते हैं। ये लोग फिर उत्पादों को बाजारों में बेचेगे। इस बाजारोन्मुखी ढांचे के तहत ज्यादतर किसान कीमत लेने वाले होते हैं। दुर्लभ परिस्थितियों को छोड़कर उनकी सौदेबाजी की शक्ति कम होती है जैसे कि बहुत जल्दी या देर से मौसम या उस अवधि के दौरान जहां आपूर्ति की कमी होती हैं। बाजार की मांग का जवाब देने की आवश्यकता है, लेकिन कोई सीधी पहुंच नहीं है, आसानी से खराब होने वाले उत्पादों से निपटना और ऋणी होना इस कम सौदेबाजी की शक्ति में योगदान करने वाले प्रमुख कारक है।

वर्तमान परिपेक्ष में- वर्तमान में कॉर्पोरेट ने उत्पादन पक्ष को नियंत्रित करने में एक प्रमुख हिस्सा ले लिया है। कॉर्पोरेट द्वारा कृषि आमतौर पर बड़े पैमाने पर और राष्ट्रीय बाजारों या बाहरी बाजारों तक सीधी बाजार पहुंच होती है। कई कॉरपोरेट को स्थानिय बिचौलियों द्वारा कृषि उत्पादों की आपूर्ति की जाती है जबकि अन्य का किसानों के साथ अनुबंध हो सकता है। मालिको और कारपोरेटों में काम करने वाले लोगों के लिए, कृषि सिर्फ एक आर्थिक क्षेत्र है और उनकी मूख्य चिंता उनकी आजीविका का एक अभिन्न अंग होने के बजाय हानि लाभ और वित्तीय लाभ के बारे में है। राष्ट्रीय या क्षेत्रीय स्तर पर कृषि की स्थिति के बारे में चर्चा करते समय आपूत्रि श्रृंखला में विभिन्न खिलाड़ियों, कॉर्पोरेट, बिचौलियों और छोटे और मध्यम किसानों के बीच अंतर करना चाहिए- ताकि उन पर प्रभाव और किसी विशेष स्थिति के प्रति उनकी प्रतिक्रिया को उनके संदर्भो के तहत स्पष्ट रूप से समझा जा सके। और वर्तमान बाजार संरचनाएं। समायोजन खाद्य आपूर्ति खाद्य मूल्य छोटे पैमाने पर कृषि उत्पादन व्यवसाय, लाभ आदि। संसाधन आधार जैसे। बीज, पानी, भूमि, जंगल, जैव विविधता आदि। कॉर्पोरेट कृषि मूल्य, जीवन का तरीका, संस्कृति संबंध, आय आदि।

निष्कर्ष- वर्तमान स्वरूप एवं ग्रामीण विकास के दृष्टिगत चयनित किया गया है वस्तुत: विभिन्न विद्धानों द्धारा विभिन्न क्षेत्रों के कृषि एवं औद्योगिक विकास विचार के विश्लेषण के लिए आन्तरिक एवं वाह्य गुणाकों को सम्मिलित किया जाता है। सूक्ष्म स्तरीय अध्ययन क्षेत्र के दृष्टिगत जिन विचारों का चयन किया गया हैं उनमें कृषि एवं विकास के विभिन्न पक्षों को समाहित करने का प्रयास किया गया हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. विल्किसन और आर रोचा ,'द एग्रो-प्रोसेसिंग सेक्टर: अनुभवजन्य सारांश', हालिया
2. 'रुझान और विकास प्रभाव' , अंतर्राष्ट्रीय कृषि-उद्योग फोरम के लिए व्यापक पेपर , नई
3. दिल्ली ,अप्रैल 2008 ।
4. खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ), वैश्विक संगठन ,'सामाजिक आर्थिक विकास और आर्थिक,स्थिति में कमी के लिए कृषि-व्यवसाय का महत्व', संपत्ति विकास पर विश्व संगठन आयोग केलिए चर्चा पत्र, सोलहवां सत्र, न्यूयॉर्क, मई, 5 - 16 , 2008.
5. ए.ओ. कमसंर, 'खाद्य निर्माण में सामग्री उत्पादकता', यांक जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल सोशलसाइंस, वॉल्यूम। 74, नंबर 1, फरवरी 1992, पीपी. 177-185।
6. आर.ई. लोपेज,'कनाडाई खाद्य प्रक्रिया उद्योग के भीतर आपूर्ति प्रतिक्रिया और निवेश', अमेरिकनजर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल सोशल साइंस, वीओ। 67, नंबर 1, फरवरी , 1985, पीपी. 40-47
7. एस.एम. डाइट्ज़ और एस. मती, एसेसमेंट ऑफ़ द स्मॉल स्केल फूड प्रोसेस सब सेक्टर इनतंजानिया और अफ्रीकी राष्ट्र, आईएसबीएन , 2000।
8. Journal of the Association of North Indian Geographers Vol. 36, No. 1 June 2006,pp. 136.
9. Prakash Rao, V.L.S. (1963) Regional Planning Theoretical Approach, Calcutta, P. 5.
10. Kuklunski, A.K. (1978), Some Basic Issues in Regional Planning and NationalDevelopment in Mishra R.P. et. Al. (eds.) Vikas Publication, New Delhi, pp.5.
11. Mayer, A. and Associate (1959) : Pilot Project India the study of Rural Development ofEtawah, Uttar Pradesh Univ. of Calfornia Press, Berkeley and Los Angeles, 367.
12. Dubey, S.C. (1958) India's Changing Villages, Bombay.
13. Lawtan, G.H. (1958-59), India's Changing Villages, Royal Geographical SocietyofAustralia South Austrailian Branch paer (60), P. 17-24.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Koran-Crochet Lace: A Cultural Art and Its Sociological Relevance Among the Alavi Bohra Community of Baroda

Ms. Tehzib Barodawala* Dr. Virendra Singh**

*Temp. Assistant Professor (Sociology) Faculty of Arts, The Maharaja Sayajirao University, Vadodara (Gujarat) INDIA
**Assistant Professor,Head (Sociology) Faculty of Arts, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara (Gujarat) INDIA

Abstract : Crochet, a textile art with enigmatic beginnings, has shown diverse cultural expressions across nations. Within the Alavi Bohra community—a Shia Muslim group residing in Vadodara (formerly Baroda), India—this skill possesses distinct symbolic and aesthetic significance. Locally referred to as "Koran," the gold and/or silver crochet lace utilized in traditional women's garments embodies artistic legacy and social identity. This study examines the societal importance of this art, its contribution to community identity, and the factors contributing to its progressive decrease among the youth. The investigation employed comprehensive interviews with two women from the community who has expertise in Koran production. Utilizing historical, ethnographic, and sociological perspectives, the study emphasizes how this creative legacy functioned not only as a manifestation of creativity and talent but also as an instrument for gendered socialization, cultural preservation, and communal cohesion.
Keywords: Koran, Alavi Bohra community, minority within a minority, crochet.

Introduction - The Alavi Bohra community, a distinctive sect of the Musta'li Isma'ili Shia branch of Islam, is predominantly located in Vadodara, Gujarat, India. This community, a minority within a minority, has historically preserved its religious identity through distinctive practices, attire, language, and creative traditions. The tradition of crocheting intricate laces called "Koran" has been essential to women's cultural expression and domestic aesthetics.

Crochet, while universally practiced, gained local significance through its integration into community traditions. The incorporation of crochet in traditional Alavi garments, particularly as ornamental lace in women's dress such as the Ghagro Odhnu, exemplifies a complex fusion of functionality, aesthetics, and cultural identity. This study illustrates the evolution of crochet from a European ecclesiastical art to a vernacular, feminine, and culturally significant manifestation among the Alavi Bohra community, exemplifying a notable instance of cultural syncretism and gendered tradition.

The Historical Origins of Crochet: Crochet is a centuries-old art form that employs yarn and basic instruments such as a hook, needle, and stitch marker. The creation of a beautiful crocheted product necessitates both comprehension and imagination from the individual, including a spectrum from basic lace and shawls to sweaters, toys, and intricate works of art.

The term "crochet" originates from the French word "croche," which translates to "hook" (Mathieson, 2013). The exact origins of crochet are unclear, but it gained popularity during the Great Irish Famine (1846), when nuns instructed destitute people in the craft for income generation. This craft disseminated throughout Europe and ultimately reached colonial India, where indigenous tribes modified it into their ornamental and wearable art forms (Mathieson, 2013).

In contrast to knitting, which use two needles, crochet employs a single hook to manipulate and interlace yarn into diverse patterns. The artist employs many stitch techniques, including single crochet, half double crochet, double crochet, and treble crochet, to create an array of designs such as shell and bobble patterns(Mathieson, 2013). The spectrum can vary from delicate lacework to intricate Irish lace to more substantial fabric constructions, contingent upon the thread and hook dimensions. The tools and techniques employed are notably diverse, featuring hooks constructed from wood, bone, or metal, with sizes varying from 0.5 mm to 16 mm. (Govil, Chanana, & Mundkur, 2024).

The Koran Lace and the Alavi Bohra Tradition: Within the Alavi Bohra community, crochet has been adapted as "Koran" lace, predominantly employed to embellish the dupatta of the traditional Ghagro Odhnu.The Ghagro Odhnu consists of a flared skirt, blouse, and a dupatta, typically made of georgette or chiffon, often adorned with gold or

silver crochet lace borders. This lace, is typically crafted from 'kasab' (fine thread) or 'Jhink' (thicker thread). The threads utilized in Koran lace consist of either genuine or fake silver/gold threads entwined around cotton thread. Glass seed beads and pure silver or plastic sequins 'tikri' enhance the lace, transforming it into not merely a fashion accessory but also a representation of feminine artistry and communal aesthetics.

Abida, one of the respondents who began crafting these laces at the age of 19, stated that she acquired the skill from her maternal aunt and mother. She would often visit her friends to share and swap the koran designs. Another source of koran designs was her visits to shops selling koran materials, where she would observe and memorize various designs of the Korans available for sale or exhibition, come home and make samples of those designs for future reference.

These shops and businesses were located in Nakhuda Mohalla, adjacent to Mohamadali Road in Mumbai. The stores offered koran materials, and also sold readymade koran of both verity the handmade and machine-produced korans.The majority of the shops were owned or managed by members of the Daudi Bohra group or individuals from the Memon community. These stores possessed their own workshops where they manufactured kasab, jhink, and salmo. They also made customized zardozi embroidery on the ghagro odhnu. The other respondent, Tabassum, stated that the majority of the material for the koran was obtained from a business she refers to as the 'lal darwaza in dukan' - the shop with the red doors. Tabassum, who resides in Vadodara, would request her sister or one of her male cousins to procure the koran material from Bombay (now Mumbai). During 1974-75, when the price of silver was approximately 5000 rupees per/kilograms, the cost of one tola or ten grams of kasab/Jhink was ten rupees. One Koran required approximately 2 to 4 tolas of kasab, depending upon its size and design. Occasionally, 'salmo,' a spring-like metallic filament twined around a cotton thread, was incorporated in the production of the koran.

She stated that during the 1970s and 1980s, most girls in the neighbourhood had the skills to create the Koran, since they had ample time to do it. The creation of the lace was arduous, requiring prolonged periods of sitting over several days to finish the koran. Approximately seven and a half meters of koran is required, which is hand sewn along the margins of the dupatta. Every loop had to be sown on the dupatta to help maintain the shape of the lace. The technique is very simple where a needle and thread is used to carefully stitch the koran on the dupatta using a running stitch.

As most of the korans are made from real silver it has to be preserved with utmost care. Most women keep the folded dupatta in multi-layered cloth or a plastic bag which is sealed properly to prevent any perfume or strong scents from coming in contact with the koran. The perfume is one of the sources of oxidization of the silver according to Tabassum.

Image 1: Koran made from silver kasab and jhink

Image 2: Silver Koran made with kasab and jhink

Image 3: Silver Koran with glass seed beads

Image 4: Silver Koran made with kasab, salmo and silver sequins directly woven on the edges of the dupatta

The silver Koran must be preserved meticulously to prevent oxidation ascleaning it gets exceedingly challenging. Abida stated that a specific powder existed that eliminated oxidation from the Koran, restoring it to a pristine condition. To clean it, one must detach the lace

from the dupatta and immerse it in a solution created by combining the specific powder with water. She cannot remember the name of the powder but states that its sale was thereafter discontinued by the stores. Another technique for cleaning the Koran involved creating a solution by combining baking soda and detergent powder with water, then boiling the Koran in this combination using an aluminium saucepan. Tabassum, stated that she used a combination of detergent powder, turmeric powder, and lemon juice in boiling water to assist in removing oxidation.She had consulted the silversmiths for a treatment for the oxidation, but was informed that due to the cotton thread at the heart of the silver Koran, it is challenging to clean the oxidized areas. She was concerned as the majority of her Korans now exhibit signs of oxidation.

Image 5: Silver Koran that has become oxidized

Cultural and Religious Importance: The Alavi Bohra group prioritizes religious conservatism and cultural preservation. Crochet lace, particularly the silver-threaded Koran, symbolized feminine virtue, piety, and domestic proficiency. Women crafted this lace for their bridal trousseau, embellishing clothes utilized in religious rituals, community celebrations, and everyday attire.Tabassum, one of the interviewees, disclosed that she acquired the skill of making the koran at the age of 18 from her sister and cousin. However, due to the prolonged production period, she had commissioned seven silver laces for her youngest brother's wedding—five for her sisters-in-law, and one each for her sister and herself. That occurred in 1996 and it cost her 2500 rupees apiece. The expense of the lace was disregarded as wearing the traditional attire at the wedding was deemed essential. Womenmade six to seven traditional garments for the wedding of a close relative.

Tabassum states that the abilities of crafting a Koran and making a topi were deemed essential for girls.As the ghagro odhnu was the daily attire for women during that period every dress was decorated with a koran. Thus,all the girls in the neighbourhood were proficient in crafting the koran. It was seen as a source of pride to replicate any design after observing it for a few minutes, memorizing it, and thereafter replicating it at home. Tabassum stated that today the girls are not interested nor wanting to learn making the koran. Nor are they interested in wearing the traditional dress as they have plenty of options like Punjabi, Chaniya choli, Sharara, saree and other dresses to adorn themselves.

From a cultural anthropology perspective, this lace serves as a material artifact that reflects and symbolizes both individualism and the communal identity of the community. The deliberate, contemplative act of crocheting embodied spiritual patience and feminine solidarity, frequently taking place in informal assemblies.

Image 6: Alavi Bohra women wearing the traditional dress – the Ghagro Odhnu

Gender and Creative Labor: Crochet, in this sense, is a gendered activity traditionally transmitted from mother to daughter as a means of social grooming and preparation for matrimony. Women utilized crochet not only as a creative expression but also as a means of generating revenue, particularly within economically disadvantaged families. Custom-made Koran lace was offered for 100 rupees or less, whereas pure silver lace commanded greater prices in the 1970s. During that period, the price of silver per kilogram escalated rapidly, rising from 1,635 rupees in 1970 to 5,930 rupees by 1978. The ladies acquired crocheting skills to create lace and topis, a traditional headwear for males in the Bohra group, specifically the Alavi and Daudi Bohra.

This facet of the Alavi Bohras can be associated with the overarching notion of domestic economy, wherein female artistic talents and home-based manufacturing are indirectly connected to the capital market. The creation of craft or art, perhaps driven by necessity, serves to support the family. This labour remains obscured since it transpires within the domestic sphere. The craft of koran making is informally passed down from mother to daughter and among relatives and friends; yet, it is not acknowledged as labor, despite its importance in generating cash for family sustenance (Bourdieu, 1977)(Marvin, Cultural Anthropology, 1995). Embroidery has historically been regarded as women's activity, particularly during the Renaissance period when it became associated with femininity (Parker, 1984). Currently, males are engaged in commercial embroidery, including machine embroidery and zardozi work. However, the creation of the Koran within the Alavi Bohra community has consistently been the purview of women.

The Sociological Deterioration: Identity, Modernity, and Fashion Transformations: Notwithstanding its historical significance, the tradition of crocheting Koran lace has

experienced a marked decrease since the 1990s.A multitude of societal variables has contributed to this.

Young women have demonstrated less enthusiasm in acquiring this complex skill, preferring instead ready-made or machine-produced fashion items.This signifies a wider transition towards convenience, rapidity, and the globalization of fashion. Today, several factors such as advanced education, parental ignorance regarding the art of crocheting, the cost of silver and gold, and a deficiency in patience and commitment to engage in it as a hobby contribute to this situation.

The Ghagro Odhnu has predominantly been supplanted by the Rida, also known as the Libas al-Anwar for ladies, a multicolored attire with intricate lacework. Introduced in 1978 by the then leader of the Daudi Bohra community, this garment was designed with consideration for Islamic principles and Fatimid heritage(Libas al-Anwar: The Attire of the Dawoodi Bohra Community). The Rida was embraced by Alavi Bohra women as an emblem of modernism and intra-community solidarity. One answer indicated that Alavi Bohra members began to widely adopt the rida after 1990, currently, Alavi Bohra women wear the garment for religious and various events, including weddings and funerals.

Today, rather than crafting a koran, the dupattas are embellished with Zardozi, a traditional kind of embroidery from the Indian subcontinent that employs gold, silver, and colored threads to produce elaborate, delicate designs on fabrics such as silk, satin, or velvet. This art form has historically embellished royal attire, wall hangings, and ceremonial artifacts.The phrase “Zardozi” originates from Persian, with ‘zar’ signifying gold and ‘dozi’ denoting needlework. Women also use machine made lace, fabric paint and to decorate the dupatta.

Image 7:Zardozi work on the dupatta

Image 8: Handmade embroidery on dupatta with plastic sequins

Another reason for the decline in the traditional dress among the Alavi Bohra women is the traditional dupatta’s volume and impracticality for domestic tasks have rendered the garment unwieldy. Oral histories from community women indicate that some fought customary attire after marriage but ultimately conformed owing to patriarchal pressures. Subsequently, when the younger generation embraced a more pragmatic Punjabi costume, the older generation also adapted their daily clothing accordingly.

Cultural Deterioration and Communal Identity: This decline can be examined via the perspective of cultural erosion.The Alavi Bohra community’s shift towards mainstream Dawoodi Bohra cultural symbols jeopardizes the survival of distinctive traditions such as Koran lace. From the standpoint of identity theory (Jenkins, 2014), this signifies a shift from a unique group identity to a uniform religious identity, wherein aesthetic distinctions are obscured.

Conservation and Recovery: A Path Forward: Although its significance is diminishing, there exists potential for resurgence through community-organized seminars on traditional lacework and crocheting. Currently, crochet goods are seen as stylish. This has prompted numerous individuals from the younger age to create and market their work on online platforms such as Amazon, Etsy, and Flipkart for money generation(Govil, Chanana, & Mundkur, 2024).

The Alavi community trust, local NGOs, and cultural groups might significantly contribute to revaluing crochet lace creation, not merely as an artifact but as a vibrant tradition, by acknowledging it as cultural heritage.

Conclusion: The craft of Koran crochet lace among Alavi Bohra women transcends mere decoration; it serves as a cultural reservoir of religious meaning, feminine identity, and communal tradition. The decline signifies not just the disappearance of an art form but also indicates a wider cultural transition and identity conflict within the community. Comprehending and safeguarding this heritage necessitates a sociologically insightful and historically cognizant methodology, guaranteeing that what is deemed “lost” now may be “revived” tomorrow with pride and intent.

References:-

1. Boris, E. (1989). Crafts Shop or Sweatshop? The Uses and Abuse of Craftsmanship in Twentieth Century America. Journal of Design History 2, 2(3), 175-92.
2. Bourdieu, P. (1977). Outline of a Theory of Practice. (R. Nice, Trans.) Cambridge University Press. Retrieved 2024
3. Goggin, Daly, M., & Tobin, B. F. (2009). Women and the Material Culture of Needlework and Textile 1750-1950. Ashgate.
4. Govil, P. M., Chanana, B., & Mundkur, S. (2024, November). The Evolution of Crochet: Tools,

Techniques, and Artistic Trends. 30(11). doi:DOI: 10.37896/HTL30.11/11732
5. Jenkins, R. (2014). Social Identity (4 ed.). London : Routledge. doi:https://doi.org/10.4324/9781315887104
6. Kooler, D. (2002). Donna Kooler's Encyclopedia of Crochet. Little Rock, Ark.: Leisure Arts.
7. Libas al-Anwar: The Attire of the Dawoodi Bohra Community. (n.d.). Retrieved from The Dawoodi Bohras: https://www.thedawoodibohras.com/libas-al-anwar-the-attire-of-the-dawoodi-bohra-community/
8. Marks, R. (n.d.). History of Crochet. Retrieved from Crochet Guild of America: https://www.crochet.org/page/CrochetHistory
9. Marvin, H. (1979). Cultural Materialism. New York: Random House.
10. Marvin, H. (1995). Cultural Anthropology . Longman.
11. Mathieson, E. L. (2013). The complete Book of Crochet. Read Books Ltd. Retrieved from https://books.google.co.in/books?hl=en&lr=&id=ipt8CgAAQBAJ&oi=fnd&pg=PA14&dq=the+complete+book+of+crochet&ots=5RHzMZkKEG&sig=bMjZ6_duA-HGbi0kaA12yXPF1H0&redir_esc=y#v=onepage&q=the%20complete%20book%20of%20crochet&f=false
12. Parker, R. (1984). The Subversive Stitch: Embroidery and the Making of the Feminine. London: Women's Press.
13. Raheja, R., & Bhagat, D. S. (2022, July-December). Historic Indian Textiles of Gold and Silver. ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 3(2), 477–494. Retrieved 2024
14. Singh, S., & Gupta, A. H. (2020, October 15-17). Unseen, unheard, unnamed: The matchless and unsung heroes of the textile art and craft of Rajasthan. Hidden Stories/Human Lives: Proceedings of the Textile Society of America 17th Biennial Symposium. Retrieved 2024, from https://digitalcommons.unl.edu/tsaconf/
15. Tapestry Crochet in the Americas, Europe, Africa, and the Middle East: Tradition and Innovation. (2018, September 19 – 23). Textile Society of America Symposium Proceedings. doi:doi 10.32873/unl.dc.tsasp.0015

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Persist with Purpose : The Path to True Happiness Through Pranayama and Habit Formation

Dr. Pooja Dikshit Joshi* Ms. Manjari Nandy Mr. Paul Thomas*****

*Assistant Professor (Sociology) Faculty of Arts Faculty of Arts, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara (Gujarat) INDIA
** Assistant Professor (Sociology) Faculty of Arts Faculty of Arts, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara (Gujarat) INDIA
*** Assistant Professor (Sociology) Faculty of Arts Faculty of Arts, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara (Gujarat) INDIA

Abstract : True happiness can only be found in the serene of the mind and the discipline of the soul, not in transient pleasures or material gains. The article examines how pranayama (yogic breathing) and the development of mindful habits can result in ananda—lasting bliss—by bridging the gap between traditional knowledge from the Bhagavad Gita and contemporary science. We look at how mindful breathing and modest, deliberate activities can ground us in the present, rewire our neurophysiology, and foster tranquillity.
Keywords: Breathe, Tiny Habits, Happiness, Ananda, Bliss.

Introduction - "As the waters of different rivers enter the ocean, which though full on all sides remains undisturbed, likewise he, in whom all desires merge, attains peace; not the one who is full of desires."

In a world that constantly pulls us outward, the quest for lasting happiness leads us inward. True happiness is not a product of possessions, achievements, or external approval—it is the calm that arises from a peaceful mind, untouched by circumstances.

The *Bhagavad Gita* offers timeless wisdom on this journey. It teaches that real joy is **sattvik** in nature—born from self-discipline and inner clarity. Though it may feel difficult at first, like poison, it ultimately becomes sweet as nectar. In contrast, **rajasik** happiness, derived from sensory pleasure, fades quickly, and **tamasik** happiness, based on laziness or ignorance, leaves the soul stagnant.

To attain pure happiness, one must take **full responsibility** for their experiences. This shift from blame to ownership empowers healing. Through **meditation**, we access the healing energy within and gradually free the mind from emotional clutter, bringing focus, resilience, and peace.

Pranayama, Meditation, andMindfulness: Tools for Inner Growth

Life begins and is sustained by breath, yet in the confusion of modern life, we frequently ignore its full power. Pranayama, originating from Sanskrit ("prana" meaning life energy and "ayama" meaning control or expansion), is an ancient yogic technique centered on the purposeful management of breath. According to Patanjali's Yoga Sutras, Pranayama is the fourth limb of yoga, emphasizing its importance in bodily vigor, mental clarity, and spiritual awakening.

Pranayama is more than just breathing in and out; it is a purposeful act that balances the mind and body. Nadi Shodhana (alternate nostril breathing) and Bhastrika (bellows breath) are two practices that have been demonstrated to significantly reduce stress and improve cognitive functioning(Kuppusamy, 2017). Furthermore, research shows that pranayama practices assist control the HPA axis, resulting in decreased cortisol levels and higher emotional resilience (Sengupta, 2012 Jul;3(7)).

Meditation complements Pranayama by cleansing the mind of clutter, overthinking, and stress, just as bathing does for the body. Meditation may appear monotonous at first, but with consistent practice, it transforms into a peaceful refuge. Meditation encourages individuals to rest in themselves, shifting from being the "seen" to becoming the "seer." It gradually increases self-awareness and promotes emotional balance.

Mindfulness connects Pranayama and Meditation. It is the practice of remaining focused on the current moment without judgment. In mindfulness practice, unwavering concentration brings the mind to a condition of calm and clarity. However, cultivating deep awareness in the face of today's distractions is difficult. Mantra chanting is one supportive way. A mantra—a sacred phrase or sound—acts as a mental anchor. Repeating a mantra diverts attention away from stress and bad emotions, resulting in improved

mental stability and inner serenity.Over time, the mantra gets embedded in the subconscious, offering a steady source of power and peace, even when not explicitly repeated. Regular mantra recitation improves respiration, relaxes the nervous system, and builds resilience.

Pranayama, meditation, and awareness constitute a trio for internal growth. Pranayama energizes and calms the body, meditation purifies and stabilizes the mind, and mindfulness cultivates persistent awareness. These techniques not only alleviate stress, but also improve emotional management, cognitive performance, and spiritual development. They lead people to a life of balance, compassion, and clarity.In a world that continuously demands our attention outside, these ancient techniques gradually turn our focus within, helping us grow in strength, calmness, and self-understanding.

The Transformative Power of Tiny Routines: Cultivating Enduring Joy: In the never-ending pursuit of happiness, people frequently underestimate the huge influence of little, consistent behaviours. Just like the daily habit of showering cleanses the body, looking to one's inner well-being through intentional rituals can build long-term joy (Kennon M. Sheldon, 2007).The key to long-lasting happiness is not in spectacular gestures or brief moments of excitement, but in the accumulation of these modest, pleasant habits woven into the fabric of daily existence.Happiness is a result of tiny, regular actions rather than a big event. Small practices, such as journaling about gratitude or practicing mindfulness in the morning, can rewire the brain to feel happy and valuable(Fogg).These small changes gradually clear mental clutter and strengthen a good identity.

Daily activities like gratitude, mindfulness, or compassion have been shown to dramatically improve long-term well-being(Keltner).Developing thankfulness has been demonstrated to lower anxiety and depression while increasing happiness and life satisfaction. Gratitude has been shown to strengthen the immune system, lower blood pressure, improve sleep quality, and increase sentiments of joy, optimism, and other positive emotions. These advantages imply that integrating thankfulness exercises into regular activities can greatly enhance general wellbeing.Every tiny deed fills the reservoir of Ananda like a drop of water.

The Interaction between Behaviour and Breath: As pranayama develops into a habit, it transforms into more than merely breath. It has been demonstrated that practicing Bhastrika pranayama for four weeks greatly lowers anxiety and enhances emotional processing.When we look inward—through praGama, the profound respect and recognition of our actual Self—the tension between our thoughts and our actions starts to fade. Understanding the mind means seeing its waves, and understanding the Self means identifying the ocean from which those waves originate.

"The wave is the mind. The ocean is the self. We return to this awareness through breath. Habit is the foundation of consistency. Breath is the foundation of awareness. These two—breath and habit—create a route to inner serenity when they work together harmoniously.

Pranayama is sacred remembrance, not just breathwork. A reminder that there is a quiet, unmoving depth that remains unexplored beyond every agitated idea and every passing feeling. That's who you are.Living from such location means living in harmony.

Spirituality and Silence: The Inner Compass

One of the greatest teachers we have is silence.

When there is silence, we start to listen—really listen—rather than merely hearing the lack of sound. Not only to our thoughts, but also to the calm voice of our own souls and the wisdom of the universe.Forcing the mind to be empty is not the goal of inner silence. It's about making space—space where we may softly revert to ourselves, where the world's cacophony subsides, and where worries no longer hold us.

Sitting in solitude can cause your mind to race with ideas, some of which are welcome and many of which are not. Allow them to arrive. Avoid arguing with them. Avoid following them. Simply watch. Because you are the consciousness that underlies your thoughts, not your thoughts themselves.

Equanimity, a balanced condition where life's highs and lows no longer disturb you, is found in this knowledge. Being equanimous is approaching each situation with a level head—not apathy, but a strong sense of purpose. Allowing emotions to flow through you without resistance or clinging is more important than trying to avoid them. True silence occurs when your heart is joyful and your intellect is calm. You are most alive and connected at that moment, not just to yourself but to something much bigger. Being at peace means having a calmness inside, regardless of what the outside world throws at you. It does not mean being immune to it.It is in the silence that we find ourselves. Truth slowly comes to light in the calm of the heart and the quiet of the mind. Silence is presence, not emptiness. It is the hallowed place where healing starts—not by running away from life, but by fully and mindfully returning to it.

Spirituality is our anchor in the world, not a way out of it. We do not go away in silence; rather, we return to ourselves. We start to declutter our emotions, regain our inner equilibrium, and discover our value through meditation and inner quiet. True healing is achievable when we move from blaming to taking responsibility. Understanding comes from reflection, then it develops into acceptance, and finally it blossoms into transformation. In order to cultivate this quiet, spirituality is essential. It cultivates virtues like patience, humility, and soul-consciousness by teaching us to conform to the spiritual principles of nature. We start to perceive ourselves as aware souls with a mission rather than just as bodies or thoughts.

Our inner foundation is strengthened by spiritual

practices like meditation and mindful thought, which enable us to behave with compassion and clarity, observe without reacting, and develop patience in the face of uncertainty. Every moment becomes sacred, every breath becomes a prayer, and every deed reflects inner calm when we live soul-consciously.

Practical Practice Paths: Unlocking Your Personal Path to Happiness: The tiniest steps, followed regularly, with love and intention, are the first steps toward true transformation. These daily routines are offerings—to your potential, your purpose, and your serenity—rather than duties.

1. **Breathe first:** Spend two to five minutes each morning practicing Nadi Shodhana, or alternate nostril breathing. Allow it to soothe your body and establish a balanced attitude for the day.
2. **Stack with intention:** To naturally establish the habit in your life, tie your breathwork to an existing routine, such as brushing your teeth. You can incorporate quiet into your regular routine in this way.
3. **Express gratitude:** By writing down one thing for which you are grateful every night. It offers clarity, soothes the heart, and draws in additional things for which to be thankful.
4. **Be present in the mundane:** Feel the water while you wash your hands. Pay attention to the sounds around you while you stroll. Take note of the flavor and texture as you consume. These are gates to presence, not ordinary moments.
5. **Offer inwardly:** Every atomic habit is a flower offered to your own soul, just as a flower offered at the altar is a gesture of love to the Divine. When you consistently and carefully take care of your well-being, you are honoring the sanctity within.

You can unlock the doors to happiness by taking these modest yet serious steps. They influence not only your day but also your future. Keep coming back, keep giving, and keep believing that you are the treasure you are looking for.

Conclusion: "You experience joy and a river flowing through you when you act from your soul."-Rumi

Persistence is the quiet power that gets us through times of uncertainty, distraction, and adversity on the path to inner transformation. Persistence becomes more than just endurance when combined with a contemplative mind that is composed, alert, and grounded; it becomes a deliberate decision to change. Meditation teaches the mind to repeatedly return to clarity and silence while also observing without passing judgment. By doing this, we develop resilience, patience, and understanding while progressively releasing reactive tendencies. Growth is frequently the silent realization of our greater potential, fostered by consistent work and quiet introspection. It is not always loud or instantaneous. We become in tune with the beat of our soul's journey when we continue to be present. We become more centred, more aware, and more connected—to ourselves, to others, and to the more profound realities of life—one breath at a time.

References:-

1. Apar Avinash Saoji 1, ". B. (2018, feb). Effects of yogic breath regulation: A narrative review of scientific evidence. J Ayurveda Integr Med, 50–58. doi:https://doi.org/10.1016/j.jaim.2017.07.008
2. Chaudhri, R. (2017). 112 meditations for Self Realization. New Delhi: FINGERPRINT BELIEF.
3. Fogg, B. (n.d.). Tiny habits: The Small Changes That Change Everything. HarperCollins.
4. Keltner, D. (n.d.). Born to be Good: the science of a meaningful life. 2009: W. W. Norton & Company.
5. Kennon M. Sheldon, S. L. (2007). Is It Possible to Become Happier? (And If So, How?). social and personality psychology campus. doi:https://doi.org/10.1111/j.1751-9004.2007.00002.x
6. Kuppusamy, M. (2017, Mar). Effects of Bhramari Pranayama on health – A systematic review. Journal of Traditional Complementary Medicine, 18(8(1)), 11-16. doi:https://doi.org/10.1016/j.jtcme.2017.02.003
7. Sengupta, P. (2012 Jul;3(7), july). Health Impacts of Yoga and Pranayama: A State-of-the-Art Review. International Journal of Preventive Medicine., 7(3), 444-458.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

बड़े घर की बेटी पारिवारिक विघटन की कथा

रीता मौर्य *

* शोधार्थिनी (हिंदी) महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ.प्र.) भारत

प्रस्तावना – आपका जन्म बनारस से चार मील दूर लमही गांव में सावन बदी 10, संवत् 1937 (31 जुलाई सन् 1880 ई0) शनिवार को हुआ था। पिता का नाम अजायब राय था। माता का नाम आनंदी देवी आप कायस्थ दूसरे श्रीवास्तव थे। आपके तीन बहने थीं। उनमें दो तो मर गयीं, तीसरी बहुत दिनों जीवित रहीं। उस बहन से आप 8 वर्ष छोटे थे। तीन लड़कियों के पीठ पर होने से आप तेंतर कहलाते थे। आपके दो नाम और थे – पिता का रखा नाम मुंशी धनपत राय, चाचा का रखा नाम मुंशी नवाब राय। माता-पिता दोनों को संग्रहणी की बीमारी थी। पैदा होने के दो-तीन साल बाद आपको जिला बांदा जाना पड़ा आपकी पढ़ाई पांचवें वर्ष शुरू हुई पहले मौलवी साहब से उर्दू पढ़ते थे। उन मौलवी साहब के दरवाजे पर सब लड़कों के साथ पढ़ने जाते थे आप पढ़ने में बहुत तेज थे। लड़कपन में आप बहुत दुर्बल थे आपकी विनोद प्रियता का परिचय लड़कपन से ही मिलता है। एक बार की बात है- कई लड़के मिलकर नाई-नाई खेल रहे थे। आपने एक लड़के की हजामत बनाते हुए बाँस की कमानी से उसका कान ही काट लिया। उस लड़के की माँ झल्लाई हुई उनकी माता से उलाहना देने आयी। आपने जैसे ही उसकी आवाज सुनी, खिड़की के पास दुबक गये। माँ ने दुबकते हुए उन्हें देख लिया था पकड़कर चार झापड़ दिये।

'बड़े घर की बेटी' प्रेमचंद द्वारा लिखित भारतीय संयुक्त परिवार पर आधारित है। इस कहानी की प्रमुख पात्र आनंदी है, लेकिन उसका विवाह मध्यम परिवार में हो जाता है। आनंदी एक बड़े कुल की लड़की थी। उसके पिता एक छोटी सी रियासत के ताल्लुकेदार थे। विशाल भवन, एक हाथी, तीन कुत्ते, बाज, झाड़-फानूस, जो एक प्रतिष्ठित ताल्लुकेदार के भोग्य पदार्थ हैं, सभी यहां विद्यमान थे। आनंदी अपने नये घर में आयी तो यहाँ का रंग-ढंग कुछ और ही देखा। जिस टीम-टाम की बचपन से ही, आदत पड़ी हुई थी, वह यहाँ नाम मात्र को भी ना थी। हाथी-घोड़ों का तो कहना ही क्या, क्यों सजी हुई सुंदर बहली तक न थी। इनकी कहानी में जहां एक ओर रूढ़ियों, अंधविश्वासों, और अंध परंपराओं पर कड़ा प्रहार किया गया है वहीं दूसरी ओर मानवीय संवेदनाओं को भी उभारा गया है। अपने जीवन काल में वे विभिन्न सुधारवादी और पराधीनता की स्थितिजन्य, नवजागरण प्रवृत्तियों से प्रभावित रहे, यथा आर्य समाज, गांधीवाद वामपंथी विचारधारा आदि।

प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य को निश्चित दिशा दी है। प्रेमचंद आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने अपने दौर में रहे, बल्कि किसान जीवन की उनकी पकड़ और समझ को देखते हुए उनकी प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। उनकी रचनाओं में गरीब श्रमिक, किसान और स्त्री, जीवन का सशक्त चित्रण उनकी दर्जनों कहानियों और उपन्यासों में हुआ है, सद्गति, कफन, पूस की रात, गोदान में मिलता है। साहित्यिक क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान अतुलनीय है।

बड़े घर की बेटी कहानी में आनंदी पाव भर घी मांस में डाल देती है। घी खत्म हो जाता है, और दाल में घी न डालने पर देवर और भाभी में कहा-सुनी हो जाती है। इस बात को लेकर घर में विवाद शुरू हो जाता है और घर टूटने के कगार पर आ जाता है। लेकिन आनंदी कभी नहीं चाहती मेरा परिवार बिखर जाये। इसलिए देवर को माफ कर देती है। घर का माहौल पहले जैसा सौहार्द्रपूर्ण हो जाता है। सभी तारीफ करते हैं कि बड़े घर की बेटियां इसी तरह होती हैं। यदि कोई बात बिगड़ जाये तो बना लेती हैं। प्रेमचंद ने परिवार में विघटन को पहले ही पहचान लिया था। परिवार पहले ही टूट या बिखर जाये तो वह समाज के लिए ठीक नहीं है, और देश के लिए भी ठीक नहीं।

परिवार में यदि विघटन है तो परिवार में अकेलापन आ जाता है, व्यक्ति अकेलेपन से जूझता है, यदि परिवार में सभी मिलकर रहते हैं एक दूसरे का सहयोग करते हैं तो बड़ी से बड़ी मुसीबत पर विजय आसानी से पाया जा सकता है। परिवार में दादा-दादी, चाचा-चाची, बड़े पिताजी, बड़ी मां और परिवार के प्रत्येक सदस्य में प्रेम है तो बच्चे भी परिवार से अच्छे संस्कार और सहयोग की भावना सीखते हैं, बड़े बुजुर्गों का अदब करना, उनकी बात मानना, छोटों से प्रेम करना तथा परिवार में सहयोग करना यह सारे मूल्य बच्चे परिवार से सीखते हैं तो वह एक अच्छा नागरिक बनते हैं। एक अच्छा व्यक्तित्व समाज के लिए बहुत ही जरूरी है और देश के लिए भी। भारतीय संस्कार और भारतीय मूल्य एक बच्चे में डाला जाए तो वह बड़ा होकर एक आदर्श नागरिक बन सकता है जिससे स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण होगा प्रेमचंद ने बड़े घर की बेटी में यह दिखाने की कोशिश की है कि एक परिवार में घर को बनाने या बिगाड़ने में किसी स्त्री की कितनी बड़ी भूमिका होती है। स्त्री परिवार का केंद्र होती है परिवार में विघटन हुआ तो इसका असर समाज पर पड़ेगा। आजकल स्त्रियों को कुटुंब में मिलकर रहने की जो अरूचि होती है उसे वह जाति और देश दोनों के लिए हानिकारक समझते थे।

बड़े शहरों में संयुक्त परिवार नहीं रहते, जिससे व्यक्ति अकेले रहते-रहते तनाव में चला जाता है। लम्बे समय तक दवा खाने से दूसरी बीमारी का खतरा रहता है। तनाव का एक ही इलाज है खुशहाल परिवार। तनाव में रहने से नींद नहीं आना फिर सालों तक एलोपैथिक दवा खाना, फिर उसका साइड इफेक्ट, कोई दूसरी बीमारी हो जाना, फिर उसका इलाज लम्बे समय तक दवाईयां खाते रहना परेशान होकर आत्महत्या कर लेना यह बहुत बड़ी समस्या है।

सारी सुख-सुविधा पैसा, बंगला, गाड़ी रहते हुए भी सुकून नहीं जिंदगी खत्म कर लेना, इस बात को प्रेमचंद बहुत पहले ही भांप गये थे। आजकल नारियों में सहनशीलता नहीं रह गई है थोड़ा सा भी किसी ने कुछ कह दिया तो लड़ाई-झगड़ा शुरू हो जाता है।

प्रेमचंद ने कहानी में दिखाया है कि देवर लाल बिहारी ने कहा भईया (श्रीकंठ) से मेरा मुंह नहीं देखना चाहते, भाभी-भईया को प्रणाम कहना, आनंदी ने कहा मेरी सौगंध जो एक पग आगे बढ़ाया तो ईश्वर साक्षी है मेरे मन में तुम्हारे प्रति कोई मैल नहीं है श्रीकंठ का भी हृदय पिघल जाता है और भाई को गले लगाकर फूट-फूट कर रोने लगता है।

यह देखकर बेनी माधव सिंह खुश हो जाते हैं और कहने लगते हैं बड़े घर की बेटियां ऐसी ही होती हैं इस कहानी में प्रेमचंद ने भारत के संयुक्त परिवार के मनोविज्ञान को दिखाया है।

वर्तमान समय में भारतीय मूल्य को कम महत्व दिया जा रहा है। जिससे परिवार में विघटन होता जा रहा है। यदि परिवार में एक भाई आर्थिक रूप से सम्पन्न है या किसी बड़े पद पर है और दूसरा भाई कुछ नहीं है तो उसको अलग कर दिया जाता है। अपने लिए और अपने परिवार के लिए सब कुछ करना है स्वार्थ घेर लेता है भाई के साथ रहेंगे तो उसका भी परिवार देखना पड़ेगा। घर का बंटवारा हो जाता है, विभिन्न प्रकार की समस्याएं घेर लेती हैं। ईर्ष्या, द्वेष, कुटिल राजनीति घर में होने लगती हैं। भाई ही भाई के खून का प्यासा हो जाता है।

आनंदी दयालु है वह सोचती है मैं नहीं जानती थी कि बात इतनी बढ़ जायेगी। पति पर मन ही मन झुंझलाती है इस पर लाल बिहारी का कहना है कि भईया मेरा मुँह ना देख पाये इस पर आनंदी का रहा- सहा क्रोध भी चला जाता है, आनंदी रोने लगती है मन का मैल धोने के लिए नयन-जल से उपयुक्त और कोई वस्तु नहीं है। आनंदी माफ करके देवर को अपना घर बचा लेती है।

प्रेमचंद ने बताया है कि संयुक्त परिवार हुआ करता था, संवेदनाएं थी, प्रेम सहयोग था, एक दूसरे की जरूरत थी, परिवार एक साथ रहता था। पारिवारिक जीवन में कठिनाई क्यों आई, अवसाद क्यों आया यह ज्वलंत मुद्दाएं हैं। प्रेमचंद ने इन समस्याओं को सौ वर्ष पहले ही पहचान लिया था पारिवारिक विघटन को रोकना चाहिए। जब समाज में जीवन के मूल्यों को कम महत्व दिया जाने लगा तो पारिवारिक विघटन हुआ। समाज पर भी इसका प्रभाव पड़ा। हत्या, लूट, भ्रष्टाचार जो फैला है वह मूल्यों को छोड़ने के कारण ही है।

बड़े घर की बेटी में कहानीकार प्रेमचंद जी ने संयुक्त परिवार की समस्या को बड़ी कुशलता से चित्रित किया है। संयुक्त परिवार की मान-मर्यादा और प्रतिष्ठा को संभालना आज एक बड़ी समस्या है। कुछ छोटी-छोटी बातों को नजर अंदाज कर दिया जाए तो संयुक्त परिवार एक आदर्श पारिवारिक व्यवस्था मानी जाती है। वर्तमान समय में संयुक्त परिवार बिखरता जा रहा है। घर की स्त्रियां अपनी सहनशीलता और सूझबूझ से बिखरते परिवार को संभाल सकती हैं और बड़प्पन की मिसाल पेश कर सकती हैं इस कहानी का उद्देश्य कहानी के अंत में निहित है। प्रेमचंद जी ने प्रदर्शित किया है कि कुलीन परिवार की विवेकशील स्त्री ससुराल में आपसी प्रेम तथा एकता बनाने में मुख्य भूमिका निभाती हैं।

प्रस्तुत कहानी में बड़े घर की बेटी ऐसी नहीं होती है कि आपस में झगड़ा करवाये या अपने अहम के भाव को देखे। बल्कि आनंदी जैसी होती है, जो अपने अहम् का त्याग करके लाल बिहारी को माफ कर देती है और उसे घर छोड़कर नहीं जाने देती। इसी कारण घर और समाज में भी उसकी प्रशंसा होती है। कहानी का उद्देश्य यह भी स्पष्ट करता है कि एकल परिवार किसी समस्या का हल नहीं है बल्कि संयुक्त परिवार हर समस्या का निवारण करता है इसलिए घर की शोभा एवं समाज की शोभा इसी में है कि भाई-भाई साथ रहें एक दूसरे का सुख-दुख बांटें।

बड़े घर की बेटी मुंशी प्रेमचंद जी द्वारा लिखित प्रसिद्ध कहानी है इस कहानी में उन्होंने संयुक्त परिवार में होने वाली, समस्याओं, कलहों बात का बतंगड़ बन जाने और फिर आपसी समझदारी बिगड़ती परिस्थिति को सामान्य करने का हुनर दर्शाया है। बड़े घर की बेटी में कहानीकार ने पारिवारिक मनोविज्ञान को बड़ी सूक्ष्मता से दिखाया है। बेनीमाधव सिंह, गौरीपुर के जमींदार हैं उनके बड़े पुत्र की पत्नी आनंदी देवर द्वारा खड़ाऊ मारने पर कोप भवन में चली जाती है और अपने पति से देवर की शिकायत करती है। श्रीकंठ क्रोधित होकर भाई का मुख ना देखने की कसम खाते हैं परिवार में क्लेश और झगड़ा देखने के लिए कई लोग हुक्का चिलम के बहाने घर में जुट आये। दु:खी लाल बिहारी घर छोड़कर जाने लगता है जाते-जाते भाभी से क्षमा मांग लेता है आनंदी का हृदय पिघल जाता है और अपने देवर लाल बिहारी को क्षमा कर देती है। दोनों भाई गले मिलते हैं और सब कुछ पहले की तरह सामान्य व आनंददायक हो जाता है। पहले बेनी माधव और फिर सारे गांव के लोग यही कहने लगे बड़े घर की बेटियां ऐसी होती ही हैं।

इस प्रकार लेखक का उद्देश्य यथार्थ के साथ एक आदर्श भी स्थापित करना भी है जो कि उन्होंने आनंदी के माध्यम से बड़े घर की बेटी में दिखाया है, आनंदी ने आपसी सौहार्द्रपूर्ण, धैर्य, सहनशीलता से रिश्तों को टूटने से बचाया है।

बड़े घर की बेटी कहानी का शीर्षक अत्यंत सार्थक है कहानी के केंद्र में आनंदी की प्रमुख भूमिका है। आनंदी भूप सिंह की बेटी है देखने में बहुत सुंदर है और गुणवान है। उसके पिता उसे बहुत प्यार करते हैं वह बचपन से ही धन-धान्य से परिपूर्ण माहौल में रही है, लेकिन विवाह के बाद श्रीकण्ठ के घर आने पर वह अलग वातावरण पाती है। उसने बड़ी समझदारी से ससुराल के सभी अभावों से समझौता कर लिया है उसके सद्व्यवहार के कारण परिवार का वातावरण सामान्य हो जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. प्रेमचंद घर में, शिवरानी देवी, पेज नं0 17, प्रकाशन, नई किताब प्रकाशन, 1/11829 ग्राउण्ड फ्लोर,पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032, प्रथम संस्करण : 2020 ISBN : 978-93-87187-65-8
2. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पेज नं0 368, पेज नं0- 369
3. प्रेमचंद की चर्चित कहानियां, भाग-2, पेज नं0 86
4. प्रकाशक सर्व सेवा संघ, राजघाट, वाराणसी।
5. HindiKunj.com
6. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, पेज नं0 373

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य और उज्जैयिनी सामंत राव वेताल भट्ट का परिचय

मंगल सिंह बुटड़ेसा* डॉ.हेमेन्द्र सिंह सारंग देवोत**

* छात्र,एम.ए.(उत्तरार्ध) (इतिहास) मेवाड़ विश्वविद्यालय,गंगरार,चित्तौड़गढ़ (राज.) भारत
** सह–आचार्य (इतिहास) मेवाड़ विश्वविद्यालय,गंगरार, चित्तौड़गढ़ (राज.) भारत

प्रस्तावना – भारत का इतिहास बहुत ही गौरव शाली रहा है। परमार (पंवार) राजवंश के महान पुरूष चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य और उनके प्रमुख सामंत राव वेताल भट्ट का इतिहास बहुत कम ही उपलब्ध हो पाता है।

सम्राट विक्रमादित्य का पराक्रम, शौर्य व दानवीरता अद्भुत थी। इन्हें पूरे भारत वर्ष में न्याय सम्राट के रूप में जाना जाता है। कुछ इतिहासकारों ने विक्रमादित्य को काल्पनिक बताने की चेष्टा की और वेताल भट्ट को कहानियों से जोड़ कर कल्पना मात्र बता दिया जबकि विक्रम – वेताल कथाओं पर आधारित वेताल पच्चीसी के रचियता वेताल भट्ट को माना गया है। विक्रमादित्य के प्रमुख सामंत वेताल भट्ट एक योद्धा थे जिनकी हर युद्ध में अभियान में विक्रमादित्य के साथ महत्वपूर्ण भूमिका रहती थी और महाराज विक्रमादित्य की सभा में नौ रत्नों में वेताल जी को प्रमुख स्थान प्राप्त था।

विक्रमादित्य के अनेक किस्से व कहानियाँ पुराणों से लेकर लोक साहित्य में असंख्य रूप से उपलब्ध है। सम्राट विक्रमादित्य का शासन काल भारतीय इतिहास में स्वर्ण युग का परिचय देता है। अपने शासन काल में विक्रमादित्य ने अनेक तीर्थों एवं प्राचीन मंदिरों का निर्माण एवं जीर्णोद्धार करवाया था। प्राचीन नगरी अयोध्या को खोजने और पुन: अयोध्या नगरी को बसाने का श्रेय भी महाराज विक्रमादित्य को ही जाता है। सन 1767 ईस्वी में भारत की यात्रा करने वाले आस्ट्रियां के जेसुइट पादरी टाईफिनथेलर ने 1785 ईस्वी में फ्रेंच भाषा में प्रकाशित अपनी पुस्तक में सम्राट विक्रमादित्य द्वारा अयोध्या को पुन: बसाने और श्रीराम जन्मभूमि के मन्दिर निर्माण करवाये जाने का उल्लेख किया है।

विक्रमादित्य की अरब विजय का वर्णन अरबी कवि जरहाम किंतोर्ड ने अपनी पुस्तक शायर उर ओकुल में किया है। इसी पुस्तक में विक्रमादित्य से संबंधित एक शिलालेख का उल्लेख है, जिसमें कहा गया है कि वे लोग भाग्यशाली हैं जिन्होंने उस समय जन्म लिया और राजा विक्रम के शासन में जीवन व्यतीत किया। पुराणों और अन्य ऐतिहासिक ग्रंथों के अनुसार पता चलता है कि अरब और मिस्र विक्रमादित्य के अधीन थे।

महाराजा विक्रमादित्य के शासन में भारत सोने की चिड़िया कहलाता था। प्रजा उनके शासन काल में बहुत ही सुखी थी। महाराजा अपनी प्रजा के प्रति अत्यंत दयालु तथा उदारशील थे। महाराजा ने विक्रम सम्वत का प्रारम्भ नेपाल से ही किया था इसलिये नेपाल में आज भी विक्रम सम्वंत को माना जाता है। विक्रमादित्य हरसिद्धि माता के परम भक्त थे। वही सामंत राव वेताल भट्ट भी कई बार हर सिद्धि माता की पूजा में लीन रहते थे। उनकी अखंड भक्ति से माता का आशीर्वाद हमेशा उन पर रहता था।

महाराजा विक्रमादित्य ने हमेशा हिन्दू धर्म की रक्षा की। सनातन धर्म उन्हीं के कारण विश्व में अपनी पताका फैला रहा था। शकों को उज्जैन की धरती से नेस्तनाबूत करने के बाद ही विक्रमादित्य को शकारी की उपमा दी गई थी। उन्हें शकारी भी कहा जाता है। इस उपमा उपरांत विक्रम सम्वत की स्थापना की गई। किवदन्ती है कि भूटान निवासी नागार्जुन उस वक्त उज्जैन विक्रमादित्य के अतिथि बने थे। उनके सहयोग से विक्रमादित्य विक्रम सम्वत स्थापित करने में सक्षम हो पाये थे। अपने दरबार में नवरत्न रखने की परम्परा का शुभारम्भ विक्रमादित्य द्वारा ही किया गया। उन नवरत्नों में राव वेताल भट्ट को प्रमुख सामंतो में स्थान दिया गया जो उज्जैन की सेना का संचालन करते थे। अकबर ने विक्रमादित्य की नकल करते हुए ही अपने यहाँ नवरत्न की परम्परा चलाई।

महाकवि कालिदास ने विक्रमादित्य की सेना का वर्णन अपने ग्रन्थ ज्योतिर्विदाभरण में बताया है। उनकी सेना में 3 करोड़ पैदल सैनिक, 10 लाख वाहन, 1,62,000 हाथी और 4 लाख नौका थी। इतनी विशाल सेना और सामंत वेताल भट्ट हर युद्ध अभियान में उनके साथ ही रहते थे। विक्रमादित्य एक अजेय योद्धा थे जिन्होंने अपनी विशाल सेना के दम पर विश्व में विजय पताका फहराई।

राव वेताल भट्ट महाराजा विक्रमादित्य के प्रमुख सामंत और परम मित्र थे। इन्हीं वेताल जी के वंशज 400–500 वर्षों तक परमार राजवंश से जुड़े रहे फिर इन्होंने राजस्थान के मेवाड़ अंचल की ओर प्रस्थान किया और मेवाड़ राजवंश से कई जागीरिया युद्ध भूमि में बलिदान और अच्छे कार्यों के एवज में प्राप्त की। यहाँ पर बूटरेचा गौत्र के राव सिरदार से पहचाने गए।

राव वेताल भट्ट को कहीं ब्राह्मण तों कहीं कवि से परिभाषित किया गया जबकि विक्रमादित्य के दरबार में वेताल जी प्रमुख सामंत थे। महाकवि का पद कालिदास के पास था। वेताल जी को भट्ट शब्द एक उपाधि के रूप में प्राप्त हुआ था जिसे भ्रम वश पंडित से जोड़ दिया गया। वास्तव में वेताल जी के वंशज आज भी मेवाड़ में कई जागिरियो पर निवासरत है, जिनकी मूल गौत्र विलास है।

परमार पंवार राजवंश रत्नमाला में भी स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि वेताल भट्ट युद्ध कौशल के महारथी थे और हमेशा विक्रमादित्य के साथ ही रहते थे।

बात उस वक्त कि है जब हुणों का चीन पर कोई बल नहीं चला तो उन्होंने पश्चिम की ओर बढ़ना प्रारंभ किया। हुण जाति अत्यंत कट्टर, असभ्य और लूटमार करने वाली थी। हुणों ने यूची नामक कबीलाई जाति के लोगों को खत्म करना प्रारंभ कर दिया। यूची नामक कबीलाई जाति के लोग हुणों

से डरकर मैदानों की ओर भागे, जहां पर शीर नदी घाटी में (मध्य एशिया) शकों का शासन था। यूची जाति के लोगों ने यहां शकों पर ताबड़तोड़ हमला बोला और उनके राज्य को अपने कब्जे में ले लिया। यहां से शकों की एक शाखा ने बैक्टीरिया (यवन इलाका) देश पर आक्रमण कर उसे अपने कब्जे में ले लिया और शकों की वही शाखा भारत में प्रवेश कर गई। उस वक्त शकों का कट्टर राजा मोअस था। इसी मोअस ने अपनी अत्यंत विनाशक सेना के साथ उज्जैन पर भयंकर आक्रमण किया।

उस वक्त उज्जैन के राजा गंधर्वसेन (गर्दभील्ल) थे। शकों के अत्याचार से पूरी पृथ्वी त्रस्त थी। शक बहुत ही खूंखार और अत्याचारी थे। उनके आक्रमण से भारत के इतिहास पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। विदेशों से आकर इन्होंने पूरे भारत में अपना राज्य विस्तार किया। शकों ने मालवा क्षेत्र पर भयंकर आक्रमण किया और गंधर्व सेन को - हराकर पूरे क्षेत्र पर अपना अधिकार जमा लिया। यहीं से इन्होंने शक सम्वंत प्रारम्भ किया।

शकों की पराजय और विक्रमादित्य का राज्यारोहण - उस वक्त विक्रमादित्य बाल्यावस्था में थे और गंधर्वसेन को परिवार सहित जंगलों में निवास करना पड़ा। शायद ऐसा रहा होगा कि गंधर्वसेन का उन जंगलों में ही देहावसान हो गया हो किंतु यह बात बिल्कुल तर्कपूर्ण नहीं लगती क्योंकि गंधर्व सेन की समाधि (छतरी) आहड़ के गंगोद्भव कुंड में होना यह सत्यापित करता है कि मालवा क्षेत्र छीन जाने के बाद गंधर्वसेन अकेले ही जंगलों (वर्तमान मेवाड़) की ओर पलायन कर गए। उनकी गंगोदभव (गंगू कुंड) में समाधि होना प्रत्यक्ष दर्शाता है कि उनकी मृत्यु यहीं पर हुई थी। उस समय भ्रतहरि और विक्रमादित्य को मालवा के जंगलो में ही निवास स्थान बनाना पड़ा। विक्रमादित्य को अहसास था कि वो एक राजपुत्र है और उन्हें पुन: उज्जैन (अवंतिका) नगरी को प्राप्त करना है। यही सोच कर जंगलों में जीवन व्यतीत कर रहे थे। उस वक्त पाटनगढ़ (वर्तमान नाम) पर भीमसेण का अधिकार था। बड़वा पोथी में उल्लेख मिलता है कि भीमसेण पाताल लोक गए और नागराज पिंगल नामक ग्रंथ बनाया। भीमसेण के पुत्र वेताल का जन्म पाताल लोक में हुआ। भीमसेण पृथ्वी पर आए और पाटनगढ़ बसाया। भीमसेण पाटनगढ़ पर अपना राज काज संभाल रहे थे। भीमसेण के पुत्र वेताल भट्ट ने किसी कारण वश अपने पिता को छोड़ कर उज्जैन की ओर प्रस्थान किया। जंगलों से गुजरते समय में उनका महाराजा विक्रमादित्य से मिलना हुआ। उस वक्त दोनों युवा अवस्था में थे और उनमें घनिष्ठ मित्रता हो गई।

इतिहास की दृष्टि से देखा जाय तो विक्रमादित्य के परम मित्र में भट्ट नाम आता है। दोनों हम उम्र भी थे। सम्राट विक्रमादित्य को मालूम था कि वो मालवा देश के राजा के पुत्र है किन्तु आज उनके पास सैनिक के नाम पर केवल मित्र वेताल भट्ट है। भविष्य पुराण में उल्लेख मिलता है कि शिव पार्वती ने अपने सेवक वेताल को विक्रमादित्य के रक्षार्थ भेजा था इससे यह अनुमान लगता है कि पाताल लोक (नाग लोक) में ही वेताल जी को शिव पार्वती से उज्जैन जाने का आशीर्वाद मिल गया होगा। यहीं से दोनों ने अभियान प्रारम्भ किया। जंगलों में लोगों को इकट्ठा कर सैनिक तैयार करना प्रारम्भकर दिया जिसकी शकों को कानों- कान खबर नहीं थी। दोनों ने कुछ ही समय में एक विशाल सेना स्थापित कर दी, जिसका नाम भैरव सेना रखा गया। यह सेना इतनी शक्तिशाली थी कि युद्ध के अन्तिम परिणाम में जीत ही चाहती थी।

महाराजा विक्रमादित्य ने शकों को पराजित करने की रणनीति और सेना का संचालन मित्र वेताल भट्ट को सौंप दिया। इसमें विक्रमादित्य का धन्वंतरि, क्षपणक, अमर सिंह, शंकु, घटर्खपर, कालिदास, वराहमिहिर, वरूचि ने साथ दिया। इन्हें बाद में विक्रमादित्य ने अपने दरबार में 9 रत्नों में स्थान दिया था। विक्रमादित्य एवं वेताल भट्ट ने विचार विमर्श कर तय किया कि उज्जैन नगरी को पुन: हासिल करनी है। विक्रमादित्य के आदेश पर वेताल ने युद्ध से पहले ऐलान कर दिया की कि धावा इतना भयानक होना चाहिए कि दुश्मनों की रूह काँप उठे।

विक्रम और वेताल घोड़े पर सवार हो एक साथ खड़े थे और पीछे पूरी सेना। शकों को कानों - कान खबर ना लगी और एक तूफान की तरह आक्रमण हुआ। विक्रम और वेताल की तलवार ने शकों को कुछ ही घंटो में तहस-नहस कर दिया। खूंखार शक भाग खड़े हुए। विक्रमादित्य ने मालवा देश को कब्जे में लेकर उज्जैन नगरी को पुन: स्थापित कर दिया।

उस वक्त भ्रतहरि को उज्जैन का राजा बनाया गया और वेताल जी उनके प्रमुख मंत्रियों में रहे। उसके बाद विक्रमादित्य ने सीमा विस्तार के लिए उज्जैन से बाहर की ओर प्रस्थान किया। उज्जैन का शासन राजा भ्रतहरि और उनके मंत्री वेताल जी द्वारा चलाया जा रहा था। राजा भ्रतहरि ने कुछ ही समय बाद राजपाठ त्याग कर संन्यास ले - लिया। उसका मुख्य कारण अधिकांश लोक कथाओं में उनकी रानी पिंगला को माना जाता है। जब भ्रतहरि ने राजपाठ त्याग दिया तब विक्रमादित्य कई वर्षो के लिए सीमा विस्तार करने हेतु अभियान पर गए हुए थे। राजा भ्रतहरि ने वेताल जी को कहा कि जब तक विक्रम उज्जैन वापस नहीं आ जाते तब तक उज्जैन का शासन आप संभालें - रखना। विक्रम के आते ही उन्हें शासन सौंप देना। वेताल जी उज्जैन का शासन पूर्ण जिम्मेदारी से चला रहे थे।

कुछ वर्षो बाद विक्रमादित्य ने कई युद्ध जीत कर पुन: उज्जैन में प्रवेश किया। बेताल जी ने उज्जैन के द्वार पर राजा के लिए पूर्ण स्वागत की तैयारी की और विक्रमादित्य का राजतिलक कर उज्जैन के सिंहासन पर बिराजमान कराया। उस दिन से चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य की विजय पताका सब जगह फैलने लगी। फिर वेताल जी ने विक्रमादित्य से इजाजत मांगी कि महाराज मेरा कार्य पूरा हुआ अब मुझे जाने की इजाजत देवें। विक्रमादित्य ने कहा कि आज मेरे भाई भ्रतहरि ने संन्यास ले लिया है। मैं अब अकेला हूं। इसलिए आज से मैं आपको अपना भाई मानता हूं। अब आपको मेरे साथ ही रहना होगा। विक्रमादित्य ने वेताल भट्ट की भक्ति -शक्ति और मित्रता देखकर उन्हें अपना प्रमुख सामंत बनाया। नौ रत्नों में वेताल भट्ट को स्थान दिया। सीमा सुरक्षा और अवंतिका की पूरी सेना संचालन की पूर्ण जिम्मेदारी वेताल जी को सौंप दी गई। राव सिरदारों की बड़वा पोथी (बड़वा जी स्व. दिनेश जी चण्डीसा) के अनुसार विक्रमादित्य ने वेताल भट्ट को धारनगरी पर राज, एक हजार सैनिक, नौकर - चाकर, हाथी - घोड़े सौंप दिए। परमार (पँवार) राजवंश रत्नमाला (पृष्ठ संख्या 514 बड़वा जी शामलाजी करसन जी अनुसार) में जिक्र मिलता है कि वीर विक्रमादित्य के दरबार में नवरत्न थे और विक्रम जैसे वीर को रिझाने के लिए कीर्ति प्रधान वेताल दरबार में आए और राजा विक्रम से 93 तुलास्वर्ण मुद्राएं, 50 हाथी, 10000 अश्व पुरस्कार के रूप में प्राप्त किए। धार नगरी का अस्तित्व मुख्य रूप से राजा भोज के समय मिलता है जिन्होंने इस नगरी को भव्य बनाया। धार नगरी का अस्तित्व महाराज विक्रमादित्य से पहले भी था जहाँ कोई धारगिरी नामक राजा राज करते थे। बाद में विक्रमादित्य ने ही वेताल भट्ट को धार नगरी का राज सौंपा था। उस वक्त उज्जैन की राजधानी धार नगरी रही, जहाँ से सीमा सुरक्षा का कार्य संभाला जाता था।

वेताल भट्ट आग्नेय एवं विधुत यंत्रों के अच्छे जानकर थे। समय समय पर विक्रमादित्य को युद्ध एवं राक्षसों–दानवों से लड़ने में सहयोग करते थे। सम्राट विक्रमादित्य भी इतने शक्तिशाली और अवतारी थे कि उन्हें स्वयं अवतारी पुरूष माना जाता था। स्वयं इंद्र भगवान भी उनकी सहायता में तैयार रहते थे।

रोम पर आक्रमण और जुलियस सीजर – वेताल भट्ट की हर युद्ध में महाराजा विक्रमादित्य के साथ सहभागिता रहती थी और विक्रमादित्य हर युद्ध रणनीति में किसी भी अभियान में वेताल जी को हमेशा साथ रखते थे।

रोम का शासक जुलियस सीजर विक्रमादित्य का समकालीन था। रोम और विदेशों में सीजर को बहुत ही बढ़ा चढ़ाकर बताया जाता है। उसकी बहादुरी के किस्से सुनाए जाते हैं। रोमन इतिहासकारों ने अपनी नाकामी को छुपाने के लिए यह प्रचारित किया कि जूलियस छह माह अज्ञातवास में था जबकि उस समय विक्रमादित्य रोम के शासक जूलियस सीजर से युद्ध के लिए सीरिया तक गए थे । उस अभियान में बहुत बड़ी रणनीति तय हुई थी । विक्रमादित्य और जूलियस सीजर के बीच महासंग्राम हुआ था । इस महासंग्राम में वेताल जी उनके साथ गए थे। रोम के शासक जूलियस सीजर को विक्रमादित्य ने हरा दिया। विक्रमादित्य उसे बन्दी बना कर उज्जैन लेकर आये। विक्रमादित्य ने जूलियस सीजर को उज्जैन नगरी में खूब घसीटा एवं कई महीनों तक उज्जैन में वेताल भट्ट की निगरानी में बन्दी बना कर रखा। इसे बाद में छोड़ दिया गया।

महाराजा विक्रमादित्य और वेताल भट्ट ने आक्रमणकारियों को भारत की धरती से खदेड़ दिया था। उज्जैन की सेना इतनी विशाल थी कि महाराजा विक्रमादित्य के आदेश पर दुश्मन पर टूट पड़ती थी। विक्रमादित्य की विजय पताका पूरे विश्व में फैलने लगी थी। वेताल भट्ट महाराजा विक्रम के आदेश पर दुश्मन को गाजर मूली की तरह काटने के लिए तत्पर रहते थे। इतना नर संहार उनके द्वारा हो चुका था कि अब वेताल जी को पश्चाताप होने लगा था।

जिस तरह कलिंग युद्ध में सम्राट अशोक ने भीषण नरसंहार देखने के बाद बौद्ध धर्म को अपना लिया था। उसी प्रकार वेताल भट्ट जी को भी जब यह अहसास हुआ कि अवंतिका की सीमाओं को सुदूर विदेशों तक फैलाने में अथाह नरसंहार हुआ। इसका पूर्ण जिम्मेदार वेताल जी ने उज्जैन के सेनापति होने के नाते स्वयं को मान लिया। उन्होंने तुरंत ही निश्चय कर लिया कि अब इस दुनिया के वैभव को त्यागना उचित होगा उन्होंने राजा भ्रतहरि के पद चिन्हों पर चलते हुए राजसी वस्त्र–शस्त्र सभी का त्याग कर भगवा वस्त्र धारण कर जंगल की ओर प्रस्थान किया। वेताल जी ने गुरू गोरखनाथ की घोर तपस्या की। उनके चरणों में स्वयं को समर्पित कर दिया। वेताल जी ने फिर कभी उस अजेय नगरी अवंतिका की ओर मुँह नहीं किया। अपना जीवन नाथ पंथ में समर्पित कर दिया और योगी बन गए।

या रुकम देशाधिपति संकेश्वरं, जित्वा ग्रहित्वोज्जयिनी महादेव आनीय
सम्भ्राम्य मुमोच युवहों स विक्रममार्क: समसहविक्रम !!17!!
– ज्योतिर्विद्या भरण 22.13

अर्थात जिसने रक्म देश (रोम) के शक अधिपति (सीजर) को महासंग्राम में पराजित कर बंदी बनाया तथा उज्जैन लाकर घुमाया फिर बाद में छोड़ दिया ऐसा पराक्रमी विक्रम के अतिरिक्त अन्य कौन हो सकता है।

विक्रम – वेताल और नौलखा हार प्रसंग – राव वेताल भट्ट को एक बार जंगल में जाकर तपस्या करने की इच्छा जाग्रत हुई। वो महाराज से आज्ञा लेकर जंगल की ओर प्रस्थान कर गए। काफी समय बाद बेताल जी का पुन: अवंतिका में आगमन हुआ । महाराजा को समाचार प्राप्त हुए कि वेताल जी पधार रहे है तो उन्होंने वेताल जी के स्वागत की तैयारियां करवाई। उनका स्वागत कर दरबार में आसन ग्रहण करवाया। (ठा. भगवत सिंह जी भटवाड़ा रिटायर्ड पर्यटन विभाग (आर. टी. डी. सी.) से साक्षात्कार और बड़वा स्व. शंभूसिंह जी की पोथी के अनुसार)

कुछ समय बाद वेताल जी ने प्रस्थान की आज्ञा ली तो विक्रमादित्य ने विदा होते समय वेताल जी को नौलखा रत्नजड़ित हार उपहार दिया। वेताल जी उपहार लेकर विदा हुए। जाते समय मार्ग में उन्होंने देखा कि एक वेश्या के घर के बाहर लिखा था कि भवन के बाहर एक नौबत है जिसका अगर कोई एक डंका बजायेगा तो प्रति डंका एक लाख कर लगेगा। वेताल जी ने सोचा इस डंके में ऐसी क्या बात है, उन्होंने अंदर जाकर 9 डंके लगा दिए। डंके की आवाज सुनकर लाखापातर नाम की वेश्या बाहर आयी और नमस्कार कर कहा कि आप तो कोई महान पुरूष या राजा की तरह लगते हो। मैं आपको महल में आने का निमंत्रण देती हूं। वेताल जी ने अंदर जाने से मना कर दिया और नौलखा हार लाखापातर को देकर विदा हो गए। वेताल जी के साथ उनका सेवक पुरोहित खड़ा–खड़ा देख रहा था। उसने सारा वृत्तांत महाराजा विक्रमादित्य को कह सुनाया। विक्रमादित्य ने कहा बात झूठ निकली तो तुम्हें फांसी की सजा होगी।

सुबह के वक्त वेताल जी हरसिद्धि माता के मंदिर में ध्यान में बैठे थे। विक्रमादित्य ने अपने चार राजदूतों को कहा कि वेताल जी को ससम्मान दरबार में आने का निमंत्रण देकर आओ। निमंत्रण मिलने पर वेताल जी ने तुरंत मंदिर से दरबार की ओर प्रस्थान किया। विक्रमादित्य ने वेताल जी के आने पर उनका अभिवादन किया और तुरंत ही कह दिया कि मैं हार देखना चाहता हूँ। वेताल जी ने कहा कि वो तो मैं भेंट स्वरूप नगर की वेश्या को दे आया। राजा को संदेह हुआ कि इसमें कुछ तो रहस्य जरूर है। उन्होंने हार वेताल जी से वापस मांग लिया। इस पर वेताल जी को बहुत पश्चाताप हुआ। उन्होंने कहा कि राजन यह तो नीति के विरूद्ध है। फिर भी मैं प्रयत्न करूँगा।

वेताल जी ने तुरंत इंद्र भगवान का ध्यान लगाया तो इंद्र भगवान सुर लोक से मृत्यु लोक में आये. वेताल जी ने इंद्र भगवान को एक छपय कहा :–

दया छूट कर गयो – धरम धस गयो धरनी में, गयो पुण्य पाताल – पाप भयो वरनी में। घर– घर होय विपरीत – दु:खी नर अरु नारी, राजा करें न न्याय प्रजा की भई खुमारी, उल्टो भूपति मांगे – शील संतोष कित गया !

वेताल जी ने सारा वृत्तांत इंद्र को कह सुनाया। इंद्र ने अपने गले से नौ करोड़ का हार निकाल कर वेताल जी के सामने रख दिया और वहां से विदा ली। इस बार मेरे पास समय कम है इसलिए मैं विदा लेता हूँ, इतना कह कर इंद्र भगवान सुरलोक की ओर प्रस्थान कर गए। तब राजा विक्रम ने कहा कि मुझे इस बात का पश्चाताप है कि मैंने पुरोहित की बातों में आकर शंका की। तब वेताल जी ने कहा राजन मैं आपको नौलखा हार के बदले नौ करोड़ का हार भेंट करता हूँ। विक्रम ने वो हार पुन: वेताल जी को दे दिया। वेताल जी वहां से विदा हुए। विक्रमादित्य उन्हें हरसिद्धि माता मंदिर तक पहुंचाने गए। वहां पर वेताल जी ने मंदिर के पास बनी वाव (बावड़ी) में वो हार डाल दिया और कहा कि इस हार की मुझे आवश्यकता नहीं है जरूरत होगी तब मांग लूंगा। विक्रमादित्य को आश्चर्य हुआ कि इसमें भी कुछ राज लगता है। उन्होंने हार को पुन: देखने की इच्छा प्रकट की। वेताल जी ने वरूण देव से आह्वान किया तो वरूण देव ने जल से हाथ बाहर निकाल कर हार वेताल भट्ट कों सौंप दिया। राजा विक्रमादित्य ने नमस्कार कर वहाँ से महलों की ओर प्रस्थान किया ।

वेताल मंदिर उज्जैन की एतिहासिकता – संवत प्रवर्तक विक्रमादित्य (लेखक राजशेखर व्यास पेज न.210) में विक्रम के नौ रत्नों की मालिका में वेताल भट्ट का उल्लेख मिलता है। अत्यंत पुरातन: ग्रंथों में कुछ श्लोकों का वेताल भट्ट के नाम से उल्लेख मिलता है। विक्रम की शासन प्राप्ति से वेताल का सम्बन्ध बतलाता है कि कोई प्रचंड व्यक्ति वेताल, विक्रम पूर्व (विक्रम संवत पूर्व) इस अवन्ति में अपना प्रचंड नेतृत्व रखता हो और शासन को अपने नियंत्रण में लिए हो। विक्रम जैसे योग्य व्यक्ति को पाकर उसे शासक बनाने में सहायता की और बाद में विक्रम का सहयोगी, अमात्य आदि रहा हो। वेताल पंचविशती का वेताल केवल कल्पित कथा का पात्र होता तो पेशाची की वृहतकथा से उतरकर 11 वीं शती के कथा सरित्सागर, मेरूतुंग और नवीं शती के स्कन्दपुराण तक कैसे स्थान प्राप्त करता और किसी काल्पनिक कथा–पात्र का सदियों पुराना भव्य मन्दिर आज भी उज्जैन में कैसे है।

इन सब बातों को देखते हुए उज्जैन में स्थित उस स्थान पर भ्रमण किया गया तो वास्तव में ष्आज्ञा वीर वेतालष का मंदिर होना पाया गया। जहाँ पर वेताल भट्ट की मूर्ति स्थापित मिली। इससे यह प्रमाणित होता है कि विक्रमादित्य की आज्ञा से हर अभियान में उनके परम मित्र और सामंत वेताल भट्ट मुख्य रूप से रहे थे। वहां पर मंदिर के पुजारी द्वारा भी बताया गया कि ये स्थान सदियों पुराना हैं। सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी सुनते और पूजा करते आ रहे है। मंदिर के पास ही एक वेताल तलाई थी जो केवल वेताल तलाई के नाम से समतल स्थान ही रह गया है। कुछ दूरी पर ही खण्डहर अवस्था में महलनुमा अवशेष मिले जो बयां करते है कि वेताल जी का निवास स्थान यहाँ रहा होगा। बाद में उस स्थान पर पुन: जीर्णोद्धार होते रहें होंगें। महल की बड़ी दीवार के पीछे घाट बना हुआ है जिसे राजमल घाट पुकारा जाता है। राजाओं की मृत्युपर्यन्त अंतिम क्रिया इसी घाट पर होती थी। घाट पर एक समाधि है जिसके बारे मे पूर्णतया मालूम नहीं किसकी है परन्तु यह भी सत्य है की वेताल जी ने युद्ध वगैरह छोड़ कर अंतिम दौर में सन्यास लेकर नाथ पंथ अपनाया था और राजसी ठाठ बाट छोड़ कर जंगलो की ओर प्रस्थान किया था। समाधि पर पूजा पाठ होती रहती है। यहाँ यह कहना पूर्णतया सत्य होगा की समाधि का कुछ तो सम्बन्ध वेताल भट्ट से रहा होगा या उनकी समाधि होना भी सम्भव है।

वेताल भट्ट का मंदिर आज भी उज्जैन में स्थित है। मन्दिर में वेताल भट्ट की मूर्ति का होना सिद्ध करता है कि विक्रम वेताल एक दूसरे के बिना वास्तव में अधूरे थे। रण क्षेत्र में दोनों मित्र दुश्मनों के परखच्चे उड़ा देते थे। सम्राट विक्रमादित्य को युद्ध काल में वेताल की शक्तियों से सहायता अवश्य मिलती थी।

यदि स्कन्द पुराण और उसके अंतर्गत अवन्ति खंड को 9 वीं शती में विक्रम –वेताल को बहुत प्रसिद्धि एवं लोकप्रियता प्राप्त हो गई थी की यह एक तथ्य वस्तु से सम्बद्ध है और उसका अस्तित्व रहा है। इस प्रसिद्धि से वशीभूत होकर ही वेताल की समाधि ने पुराणों में स्थान प्राप्त किया होगा। यह बात भी प्रख्यात है कि विक्रम का सहायक अथवा मित्र वेताल ही था। शेमंकर ने कथा सरित्सागर में वेताल का नाम अग्निशिखा बतलाया है। जनकथा के आचार्य मेरूतूंग ने अग्नि वर्ण कहा है। इससे यह साबित होता है कि विक्रम के सहायक वेताल भट्ट आग्नेय अस्त्र में पूर्ण पारंगत थे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. बड़वाजी चंदन जी सुपुत्र दौलत जी (चंडीसा) – बड़वाजी स्व. दिनेश जी सुपुत्र राम सिंह जी (चंडीसा)
2. उज्जैन और उसका गौरवशाली इतिहास (डॉ. राम कुमार अहीर संस्करण 2004)
3. सम्वत् प्रवर्तक सम्राट विक्रमादित्य (लेखक राजशेखर व्यास, संस्करण–2019)
4. विक्रमादित्य और सम्वत प्रवर्तक (डॉ. राजबली पाण्डेय)
5. परमार (पंवार) राजवंश रत्नमाला (प्रधान संपादक ठा. नरेन्द्र सिंह पंवार, संस्करण–2019)
6. विक्रम स्मृति ग्रन्थ सम्वत 2001 (संपादक – मेजर जनरल श्रीमंत सर जीवाजी राव महाराज शिंदे ग्वालियर नरेश
7. राजस्थान रा दुहा प्रथम विभाग पेज नम्बर – 85
8. अजर अमर कालजयी महान योद्धा राव वीरानाथ बूटरेचा शोध पत्रिका संस्करण 2022
9. अखंड ज्योति दिसंबर 1969 पेज नंबर–22 (संपादक ब्रह्मवर्चस शांति कुंज हरिद्वार)
10. सम्राट विक्रमादित्य और भारतीय कालगणना की वैज्ञानिकता (डॉ. प्रदीप कुमावत, आलोक संस्थान, उदयपुर)
11. भविष्य–पुराण
12. बाप्पा रावल (डॉ. मोहब्बत सिंह राठौड़ – निदेशक प्रताप शोध प्रतिष्ठान)
13. साक्षात्कार – भगवत सिंह आसेलिया सुपुत्र श्री माधव सिंह ठि. चौबीसा भटवाड़ा (सेवानिवृत R.T.D.C.)
14. जूनी ख्यात (published in & junikhyat journal issn: 2278–4632) माह–मई, वर्ष – 2023, पेज न. – 42–44
15. डूंगरपुर राज्य का इतिहास (गौरीशंकर हीराचन्द ओझा), राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर
16. बांसवाड़ा राज्य का इतिहास (गौरीशंकर हीराचन्द ओझा), राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर
17. स्वयं द्वारा किया गया सर्वे

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों का सांस्कृतिक भूगोल और जीवन शैली: एक समीक्षात्मक अध्ययन

अनबर खान*

* सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (भूगोल) शासकीय शहीद केदारनाथ महाविद्यालय, मऊगंज (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक विशेषताएँ और जीवन शैली इस क्षेत्र के सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य आदिवासी समुदायों के सांस्कृतिक भूगोल की गहरी समझ प्राप्त करना है, जिसमें उनकी सामाजिक संरचनाएँ, पारंपरिक रीति-रिवाज, खानपान, वस्त्र, कला, और उनका पर्यावरणीय संबंध समाहित हैं। आदिवासी समुदाय अपने पारंपरिक ज्ञान, पुरानी कृतियों और प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन के प्रति अपनी आस्था को जीवित रखते हैं, जो इनकी जीवन शैली का अभिन्न हिस्सा है।

मध्य प्रदेश में आदिवासी जीवन शैली को समझने के लिए, इस अध्ययन में विभिन्न आदिवासी जातियों के सांस्कृतिक और भौगोलिक पहलुओं का विश्लेषण किया गया है। उदाहरण के रूप में, गोंड आदिवासी अपने पारंपरिक कारीगरी और कृषि कार्यों में लगे होते हैं, जबकि भील आदिवासी सामूहिक शिकार और जंगलों से जुड़ी पारंपरिक विधियों का पालन करते हैं। इन समुदायों की सांस्कृतिक पहचान उनका सांगीतिक और नृत्य परंपरा, जैसे कि गोंडी नृत्य और भील वाद्ययंत्र, उनके सामूहिक जीवन का एक प्रमुख हिस्सा हैं।आदिवासी जीवन में प्रकृति और पर्यावरण का गहरा प्रभाव है। इन समुदायों का विश्वास है कि पृथ्वी, जल, और वन उनके जीवन के अभिन्न अंग हैं। यह जीवन शैली पारंपरिक कृषि पद्धतियों, जंगलों में सामूहिक शिकार, और प्राकृतिक उपचार पद्धतियों से जुड़ी है। इनकी धार्मिक आस्थाएँ भी प्रकृति से जुड़ी होती हैं, जहां प्रत्येक पहाड़ी, नदी, और वृक्ष के प्रति सम्मान व्यक्त किया जाता है।

हालांकि, आधुनिक विकास और बाहरी प्रभावों ने आदिवासी समाज की जीवन शैली में काफी बदलाव लाया है। सरकारी योजनाओं, शिक्षा के प्रसार और बाहरी व्यापारिक गतिविधियों के कारण इनके पारंपरिक ज्ञान और रहन-सहन में बदलाव आ रहा है। इन परिवर्तनों का असर आदिवासी समाज की सामाजिक संरचनाओं पर भी पड़ा है, जिससे उनकी पारंपरिक रीति-रिवाजों में अवरोध उत्पन्न हो सकता है।

शोध के अंतर्गत यह निष्कर्ष भी निकला कि आदिवासी समुदायों के लिए सांस्कृतिक संवर्धन और पारंपरिक ज्ञान की रक्षा अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए, सरकारी नीतियों और योजनाओं को उनके सांस्कृतिक अधिकारों के साथ संतुलित करना होगा। इस शोध का उद्देश्य आदिवासी समुदायों के जीवन की समृद्धि को बनाए रखते हुए उन्हें आधुनिकता और विकास की दिशा में समर्थ बनाना है।समाज की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करना और उसे विकास की प्रक्रिया में सही तरीके से शामिल करना न केवल उनके जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाएगा, बल्कि हमारे समाज की विविधता और सांस्कृतिक धरोहर को भी सुदृढ़ करेगा।

प्रस्तावना – मध्य प्रदेश भारतीय उपमहाद्वीप के मध्य में स्थित एक समृद्ध सांस्कृतिक और भौगोलिक क्षेत्र है, जो अपनी विविधता और ऐतिहासिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के आदिवासी समुदाय, जो इस राज्य के लगभग 20% जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं, भारतीय सांस्कृतिक परिदृश्य का अभिन्न हिस्सा हैं। इन समुदायों का सांस्कृतिक भूगोल और जीवनशैली न केवल उनके पारंपरिक रीति-रिवाजों, विश्वासों, और परंपराओं से बल्कि उनके प्राकृतिक संसाधनों, पर्यावरणीय परिस्थितियों, और सामाजिक संरचनाओं से भी गहरे जुड़े होते हैं।आदिवासी समाज की जीवनशैली उनके पारंपरिक ज्ञान, कला, संगीत, नृत्य, वस्त्र, भोजन, और प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करने के तरीके से परिभाषित होती है। मध्य प्रदेश में आदिवासी समुदायों की मुख्य पहचान उनके पर्यावरणीय समन्वय, वन्यजीवों के साथ सह-अस्तित्व, और अपनी जमीन पर आधारित परंपराओं और संस्कृतियों के माध्यम से होती है। इन समुदायों का जीवन संरचनात्मक, धार्मिक, और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अत्यंत विविध है, जिसमें हर समुदाय की अपनी विशिष्टता है।

यह शोध पत्र मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों के सांस्कृतिक भूगोल और जीवनशैली का एक गहन विश्लेषण प्रस्तुत करेगा, जिसमें उनके पारंपरिक ज्ञान, सामाजिक संरचनाएँ, और पर्यावरणीय व्यवहारों का अध्ययन किया जाएगा। इस अध्ययन का उद्देश्य आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की आवश्यकता और उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए रणनीतियाँ विकसित करना है।आदिवासी समुदायों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, उनके विकास के अवसर, और उनके समक्ष आने वाली चुनौतियों को भी इस शोध में शामिल किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर आदिवासी समुदायों के अधिकारों की सुरक्षा और उनके सांस्कृतिक संवर्धन के लिए विभिन्न नीति-निर्माण पहलुओं पर भी चर्चा की जाएगी।

शोध प्राविधि– इस अध्ययन में मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों के सांस्कृतिक भूगोल और जीवन शैली की समीक्षात्मक जांच हेतु विभिन्न शोध प्रविधियों का सहारा लिया गया है। शोध कार्य में गुणात्मक तथा वर्णनात्मक पद्धतियों का प्रमुखत: उपयोग किया गया है। निम्नलिखित विधियों को अनुसरण किया गया।

अध्ययन क्षेत्र का चयन–अध्ययन हेतु मध्य प्रदेश के प्रमुख आदिवासी बहुल जिलों जैसे झाबुआ, अलीराजपुर, धार, मंडला, डिंडोरी, शहडोल, बड़वानी एवं अनूपपुर का चयन किया गया। इन क्षेत्रों में भील, गोंड, बैगा, कोरकू, और सहरिया समुदायों की प्रमुख उपस्थिति है।

प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत:

प्राथमिक स्रोत: फील्ड सर्वेक्षण, साक्षात्कार, प्रतिभागी अवलोकन तथा आदिवासी समुदायों के स्थानीय नेताओं एवं बुजुर्गों से प्रत्यक्ष वार्ता के माध्यम से डाटा एकत्र किया गया।

द्वितीयक स्रोत:शोध–पत्र, पुस्तकों, सरकारी रिपोर्ट्स (जैसे जनगणना 2011), एनजीओ द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट्स तथा अन्य प्रासंगिक दस्तावेजों का अध्ययन किया गया।

सीमाएँ: यह अध्ययन क्षेत्र विशेष तक सीमित है और समय तथा संसाधनों की सीमाओं के कारण कुछ समुदायों का आंशिक प्रतिनिधित्व संभव हो पाया है। इसके अतिरिक्त, कुछ आदिवासी समूहों की पारंपरिक जानकारी मौखिक होने के कारण उनके विवरणों में विविधता हो सकती है।

शोध के उद्देश्य:

1. मध्य प्रदेश के प्रमुख आदिवासी समुदायों की भौगोलिक अवस्थिति का अध्ययन करना।
2. आदिवासी समुदायों की पारंपरिक जीवन शैली, सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक विशेषताओं का विश्लेषण करना।
3. विभिन्न आदिवासी समूहों के बीच सांस्कृतिक विविधता तथा समानताओं की पहचान करना।
4. आधुनिकता और विकास कार्यों के प्रभाव से आदिवासी जीवन में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
5. आदिवासी समुदायों की आजीविका, रहन–सहन, लोककला, धार्मिक विश्वासों और त्योहारों के संरक्षण एवं परिवर्तन के कारकों का विश्लेषण करना।
6. सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों के प्रभाव का मूल्यांकन करना जो आदिवासी समाज के सामाजिक–आर्थिक विकास से जुड़े हैं।
7. आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने हेतु संभावित सुझाव प्रस्तुत करना।

सांस्कृतिक भूगोल: सांस्कृतिक भूगोल एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें किसी विशेष क्षेत्र के सांस्कृतिक तत्वों और उनके भौतिक स्थानों के बीच के संबंधों का अध्ययन किया जाता है। आदिवासी समुदायों का सांस्कृतिक भूगोल इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उनके पर्यावरण, जीवनशैली, पारंपरिक ज्ञान और समय के साथ विकसित हुए सामाजिक और सांस्कृतिक पैटर्न को दर्शाता है।मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों में प्रमुख समुदायों में गोंड, भील, सहरिया, हल्बा, एवं अन्य शामिल हैं। ये सभी समुदाय अपनी संस्कृति, भाषा, भोजन, धर्म और पारंपरिक कृतियों में अद्वितीय हैं, और उनका जीवन अधिकांशत: प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करता है।

मध्य प्रदेश में आदिवासी समुदायों की जनसंख्या

आदिवासी समुदाय	जनसंख्या (लाखों में)	राज्य में प्रतिशत (2011)
भील	52.4	7.8
गोंड	40.1	6.1
बैगा	0.8	0.1
सहरिया	0.7	0.1
कोरकू	1.3	0.2
भिलाला	1.5	0.2
अन्य आदिवासी	10.9	1.6

(स्रोत – 2011 जनगणना के अनुसार)

भौगोलिक वितरण: मध्य प्रदेश में आदिवासी समुदायों की संख्या और सांस्कृतिक विविधता काफी अधिक है। राज्य का भूगोल इन समुदायों के जीवन और सांस्कृतिक आदतों को प्रभावित करता है। मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदाय मुख्य रूप से राज्य के विभिन्न हिस्सों में फैले हुए हैं, जैसे कि सागर, जबलपुर, छिंदवाड़ा, शहडोल, मंडला, बालाघाट, और अन्य कई क्षेत्रों में। इन क्षेत्रों में जंगलों, पहाड़ों, और नदी घाटियों की उपस्थिति आदिवासी जीवनशैली के महत्वपूर्ण तत्व हैं, जो इन समुदायों के आर्थि क और सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करते हैं।

1. भील समुदाय – पश्चिमी मध्य प्रदेश के झाबुआ, अलीराजपुर, धार एवं बड़वानी जिलों में।
2. गोंड समुदाय – मंडला, डिंडोरी, बालाघाट, उमरिया, शहडोल एवं अनूपपुर जिलों में।
3. बैगा समुदाय – मंडला व डिंडोरी के सघन वन क्षेत्रों में।
4. सहरिया समुदाय – शिवपुरी, गुना, अशोकनगर तथा श्योपुर जिलों में।
5. कोरकू समुदाय – बेतूल और खंडवा के वनाच्छादित क्षेत्रों में।

मध्य प्रदेश के प्रमुख आदिवासी समुदायों का भौगोलिक वितरण

आदिवासी समुदाय	प्रमुख जिलों का नाम	भूगोलिक विशेषताएँ
भील	झाबुआ, अलीराजपुर, धार, बड़वानी	जंगल, पहाड़ी क्षेत्र, नदी के किनारे स्थित
गोंड	मंडला, डिंडोरी, बालाघाट, शहडोल	घने जंगल, पहाड़ी इलाके
बैगा	मंडला, डिंडोरी	घने वन क्षेत्र, प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियाँ
सहरिया	शिवपुरी, अशोकनगर, गुना	जंगलों के नजदीक, वन्य उत्पादों पर निर्भर
कोरकू	बेतूल, खंडवा	पर्वतीय क्षेत्र, प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर
भिलाला	खंडवा, बड़वानी, आलीराजपुर	पहाड़ी इलाके, कृषि आधारित जीवन

(स्रोत–मध्य प्रदेश आदिवासी विकास विभाग की रिपोर्ट)

आदिवासी समुदायों की सामाजिक संरचना (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भरता: आदिवासी समुदायों का जीवन मुख्य रूप से जंगलों, जल स्रोतों, और कृषि योग्य भूमि पर निर्भर है। वे न केवल खाद्य सामग्री के लिए बल्कि औषधियों, लकड़ी, और अन्य उपयोगी सामग्री

के लिए भी जंगलों पर निर्भर करते हैं। आदिवासी समुदायों के लिए जंगल जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं और ये उनके सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा भी हैं। पानी की उपलब्धता और कृषि भूमि का प्रबंधन इन समुदायों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। आदिवासी परिवारों की अधिकांश आय (लगभग 70-80%) जंगलों, जल स्रोतों, और कृषि संसाधनों से आती है। उदाहरण स्वरूप, मध्य प्रदेश में आदिवासी समुदायों का लगभग 30% जीवनयापन जंगलों से प्राप्त लकड़ी, फल, कंद, औषधियाँ, और अन्य वन उत्पादों पर निर्भर है।

आदिवासी परिवारों की आय का स्रोत: मध्य प्रदेश में आदिवासी परिवारों की लगभग70-80% आयजंगलों, कृषि, और जल स्रोतों से प्राप्त होती है। इनमें से अधिकतर संसाधन जंगलों से आते हैं, जैसे किफल, लकड़ी, औषधियाँ, और मांस।

भूमि उपयोग और कृषि: आदिवासी समुदायों का लगभग40% कृषि भूमिझूम कृषि में उपयोग होती है, जो मुख्य रूप से जंगलों पर आधारित होती है।वन उत्पादों (जैसे की महुआ, तेंदू, आंवला, और लाख) आदिवासी समुदायों की आय का लगभग15-20% हिस्सा बनाते हैं।

आदिवासी समुदायों की पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

1. **जल संसाधनों पर निर्भरता:** आदिवासी समाज के लिए जल का स्रोत महत्वपूर्ण है, और यह लगभग50-60% आदिवासी परिवारोंके लिए एक प्रमुख जीवनशैली का हिस्सा है। इन समुदायों का80% पानी नदी, तालाब और झरनों से प्राप्त होता है।आदिवासी क्षेत्र में500-600 पारंपरिक जल संचयन संरचनाएँ (जैसे की कूप, तालाब, चुआं) मौजूद हैं, जो इन समुदायों की जल सुरक्षा को सुनिश्चित करती हैं।

2. **वन और जैव विविधता:** मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में लगभग70% जंगलोंका संरक्षण और प्रबंधन आदिवासी समुदायों द्वारा पारंपरिक रूप से किया जाता है। यह जंगलजैव विविधताके संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।50% से अधिक वन्यजीवों की प्रजातियाँ (जैसे कि तेंदुआ, हाथी, भालू, आदि) आदिवासी क्षेत्र में पाई जाती हैं, जिनका संरक्षण आदिवासी समाज अपनी पारंपरिक पद्धतियों के माध्यम से करता है।

3. **खनिज संसाधनों पर निर्भरता:** मध्य प्रदेश में आदिवासी समुदायों की भूमि परखनिज संसाधनों का लगभग 40%भंडार मौजूद है। इन खनिजों मेंकोयला, बॉक्साइट, और लाइमस्टोनशामिल हैं, जिनका शोषण आदिवासी समुदायों की पारंपरिक जमीनों पर किया जा रहा है।खनिज उत्खनन के कारण इन समुदायों की भूमि और पारिस्थितिकी तंत्र में भारी बदलाव आ रहा है, जो उनके पारंपरिक जीवनशैली को प्रभावित करता है।

4. **शिकार और वन्य जीवन:** आदिवासी समुदायों का शिकार और मांसाहार पर निर्भरता बहुत अधिक है। मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में लगभग20-25%परिवार अपने आहार के लिए शिकार पर निर्भर रहते हैं।वन्यजीवों का शिकारआदिवासी समुदायों में पारंपरिक रिवाजों और अनुष्ठानों का हिस्सा होता है, लेकिन यह शिकार अब संसाधन संकट के कारण घटता जा रहा है।

5. **स्वास्थ्य और औषधियाँ:** आदिवासी समुदायों के लिएजड़ी-बूटियाँ और वनस्पतियाँमहत्वपूर्ण स्वास्थ्य संसाधन हैं।40-50% आदिवासी परिवारअपनी बीमारियों के इलाज के लिए पारंपरिक वनस्पतियों का उपयोग करते हैं।मध्य प्रदेश में 70% से अधिक आदिवासी परिवारोंके पास सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच है, जिससे यह समुदाय पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर निर्भर रहते हैं।

जीवन शैली: मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों की जीवन शैली प्राचीनता, प्रकृति के साथ सामंजस्य और परंपराओं से गहरी जुड़ी हुई है। इन समुदायों का जीवन मुख्य रूप से कृषि, वनोपज संग्रहण, और कारीगरी पर आधारित होता है। इनकी जीवन शैली में सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक पहलू गहरे हैं। आदिवासी समाज में आत्मनिर्भरता और पारिवारिक संरचनाओं का महत्व अधिक है, जहाँ बुजुर्गों का सम्मान और पारंपरिक ज्ञान को उच्च स्थान दिया जाता है।आदिवासी लोग अक्सर अपने समुदाय के भीतर पारंपरिक अनुष्ठान और संस्कारों का पालन करते हैं, जो उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे विवाह, जन्म, मृत्यु आदि से संबंधित होते हैं। इसके अलावा, आदिवासी महिलाएं घरेलू और बाहरी कार्यों के बीच संतुलन बनाए रखते हुए अपने परिवार की देखभाल करती हैं, जबकि पुरुष वन में शिकार और कृषि कार्यों में सक्रिय रहते हैं।

आधुनिकता के प्रभावों के बावजूद, इन समुदायों ने अपनी पारंपरिक जीवन शैली को बनाए रखा है। हालांकि, समय के साथ, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, और सरकार की योजनाओं का इनकी जीवन शैली पर असर पड़ा है।

आवास एवं निर्माण शैलीरूआदिवासी समुदायों के आवास और निर्माण शैली उनके पर्यावरण और संसाधनों के प्रति गहरी समझ को दर्शाते हैं। मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में घरों का निर्माण मुख्यत: स्थानीय सामग्री से किया जाता है, जैसे कि बांस, लकड़ी, घास, मिट्टी और चूना।

1. **मकान की संरचना:** आदिवासी समुदायों के मकान आमतौर पर 'पाकड़' या 'मशक' की छतों वाले होते हैं, जो वर्षा के पानी को बचाने में सहायक होते हैं। इन घरों को प्राकृतिक तापमान में संतुलन बनाए रखने के लिए डिजाइन किया जाता है।

2. **सामग्री का चयन:** बांस और लकड़ी का उपयोग आदिवासी समुदायों द्वारा अपने घरों के निर्माण में किया जाता है क्योंकि ये प्राकृतिक संसाधन हैं और सस्ते होते हैं। इसके अलावा, इन सामग्रियों से बनाए गए घरों में प्राकृतिक वेंटिलेशन और ठंडक बनाए रखने की क्षमता होती है।

3. **संरचनाओं का डिजाइन:** घरों की संरचना पारंपरिक होती है और पर्यावरणीय परिस्थितियों से मेल खाती है। ये घर सर्दी और गर्मी दोनों में संतुलित रहते हैं, और बहुत ही सरल, टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल होते हैं।

4. **समुदायिक भवन:** आदिवासी गांवों में अक्सर एक सामुदायिक भवन या चौपाल होता है, जहाँ समुदाय के लोग एकत्र होते हैं और महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं। यह स्थान उनकी सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों का केंद्र होता है।

आहार: मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों का आहार उनकी सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है और यह उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ा हुआ है। ये समुदाय परंपरागत रूप से प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहते हैं, जो उनके आहार में मुख्य भूमिका निभाते हैं। आदिवासी समाज में भोजन के चयन में क्षेत्रीयता, मौसम और उपलब्धता की भूमिका प्रमुख होती है।

1. **प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भरता:** आदिवासी समुदायों के आहार में वनस्पतियों, जड़ी-बूटियों, फल-फूल, कंद-मूल, और विभिन्न प्रकार के अनाजों का महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ के लोग कृषि पर भी निर्भर रहते हैं,

लेकिन उनका आहार मुख्य रूप से वनस्पति और जंगलों से प्राप्त सामग्री पर आधारित होता है।

2. **धान और मक्का:** मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में धान और मक्का का सेवन मुख्य आहार के रूप में किया जाता है। ये अनाज आदिवासी लोगों के जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं और इनके विभिन्न रूपों में उपयोग होते हैं जैसे पकवानों, दल, और रोटियों में।

3. **मांसाहार और पशुपालन:** कई आदिवासी समुदायों में मांसाहार का भी प्रचलन है। जंगली जानवरों का शिकार या घरेलू पशुओं का पालन करके वे मांस का सेवन करते हैं। मांसाहार उनके सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

4. **जड़ी-बूटियाँ और औषधीय खाद्य:** आदिवासी लोग पारंपरिक रूप से जड़ी-बूटियाँ और औषधीय पौधों का उपयोग अपने आहार में करते हैं। यह न केवल उनके आहार को पोषण प्रदान करता है, बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी होता है। उदाहरण के तौर पर, हल्दी, अदरक, और नीम जैसी जड़ी-बूटियाँ उनके दैनिक आहार में शामिल रहती हैं।

5. **पेय पदार्थ:** आदिवासी समुदायों में पेय पदार्थों के रूप में विभिन्न प्रकार के पारंपरिक पेय जैसे, ताड़ी (पाम के रस से बनता है) का सेवन किया जाता है। यह विशेष रूप से समुदायों में सामाजिक अवसरों और उत्सवों में लोकप्रिय होता है।

वस्त्र एवं आभूषण: आदिवासी समुदायों के वस्त्र और आभूषण उनकी सांस्कृतिक पहचान का एक अहम हिस्सा होते हैं। इन वस्त्रों की डिजाइन और रंग बिरंगे पैटर्न पारंपरिक रूप से उस समुदाय की सामाजिक स्थिति और क्षेत्रीय पहचान को दर्शाते हैं। महिलाओं के वस्त्र में अधिकतर सूती कपड़े होते हैं, जो उनके आसपास के प्राकृतिक संसाधनों से तैयार किए जाते हैं। पुरुषों के वस्त्र आम तौर पर लुंगी या धोती की तरह होते हैं। इसके अलावा, आदिवासी महिलाएँ अपनी पोशाक को सजाने के लिए विभिन्न प्रकार के आभूषण पहनती हैं, जैसे कि चांदी की चूड़ियाँ, हार, नथ, और कान की बालियाँ।आभूषणों का चुनाव और उनका डिजाइन भी विभिन्न समुदायों के बीच भिन्न-भिन्न होते हैं। कुछ आदिवासी समुदायों में तो आभूषणों को सामाजिक स्थिति का प्रतीक माना जाता है। आभूषणों का निर्माण प्राय: स्थानीय कारीगरों द्वारा किया जाता है, और यह कारीगरी भी पारंपरिक और सामुदायिक कला का हिस्सा है। इन आभूषणों में प्राकृतिक तत्व जैसे लकड़ी, हठी, और धातु का उपयोग होता है, जो इन समुदायों के पर्यावरणीय संबंधों को प्रकट करते हैं।समग्र रूप से देखा जाए तो मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों का जीवन शैली और वस्त्र-आभूषण उनकी सांस्कृतिक धरोहर और पर्यावरणीय समझ का हिस्सा हैं। इनका अध्ययन हमें केवल उनके भौतिक जीवन के बारे में ही नहीं, बल्कि उनके समाज, कला, और संस्कृति के गहरे अर्थों को भी समझने का अवसर प्रदान करता है।

1. पारंपरिक रंगीन वस्त्रय पुरुषों में धोती एवं अंगोछा, महिलाओं में लुगड़ा और ब्लाउज।
2. धातु, बीज एवं सीपियों से बने आभूषणों का विशेष स्थान।
3. शरीर पर गोदना (टैटू) बनवाने की परंपरा।

धार्मिक विश्वास एवं अनुष्ठान: आदिवासी समुदायों में धार्मिक विश्वास और अनुष्ठान महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनकी आधिकारिक धार्मिक व्यवस्था आदिवासी संस्कृति और परंपराओं से जुड़ी होती है।

1. **देवता और पूजा:** आदिवासी समाजों में प्रकृति के तत्वों जैसे सूरज, चाँद, पहाड़, नदियाँ, और पेड़-पौधों की पूजा की जाती है। इन समुदायों का विश्वास है कि इन प्राकृतिक तत्वों में आत्मा होती है जो उनकी दिनचर्या से जुड़ी रहती है। जैसे किभगवान बघेड़ा, ठाकुर देवता, यागांव के देवताकी पूजा होती है।

2. **आनुष्ठानिक संस्कार:** आदिवासी समुदायों में जन्म, विवाह और मृत्यु से संबंधित विभिन्न धार्मिक संस्कार होते हैं। विवाह परंपराएँ भी आदिवासी समाज में खास होती हैं, और इनमें विभिन्न रिवाजों का पालन किया जाता है।सगाई, विवाह रात्रि पूजा, औरसमाज की ओर से स्वीकृतिजैसी परंपराएँ खास हैं।

3. **साप्ताहिक और वार्षिक पर्व:** आदिवासी लोग अपने देवताओं की पूजा करने के लिए विभिन्न त्योहारों और मेलों का आयोजन करते हैं। इनमेंनवरेह, गणेश पूजा, औरलोकनृत्यप्रमुख हैं। ये पर्व विशेष रूप से सामूहिक जीवन का हिस्सा होते हैं, जिनमें आदिवासी समाज के लोग सामूहिक रूप से एकत्र होते हैं और अपनी संस्कृति को मनाते हैं।

आदिवासी समुदायों के प्रमुख त्योहार और अनुष्ठान

आदिवासी समुदाय	प्रमुख त्योहार/अनुष्ठान	धार्मिक विश्वास
भील	भगोरिया, माताजी का मेला	देवता पूजा, प्रकृति पूजा
गोंड	करमा, मटकी फोड़	बड़की, साध्वी देवी की पूजा
बैगा	हलमाई, करमा उत्सव	पुरखों की पूजा, टोटेम पूजा
सहरिया	हरी झंडी, सहेड़ा	प्रकृति और औषधि देवता की पूजा
कोरकू	रघुनाथ उत्सव, पूजा	टोटेम पूजा, नदी पूजा

(स्रोत-मध्य प्रदेश आदिवासी विकास विभाग की रिपोर्ट)

शिक्षा एवं स्वास्थ्य: मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा की स्थिति एक चुनौतीपूर्ण विषय है। आदिवासी समुदायों के बीच शिक्षा की साक्षरता दर अपेक्षाकृत कम है। राज्य सरकार ने आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा के विस्तार के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं, लेकिन अभी भी कई इलाकों में आधारभूत संरचनाओं की कमी और शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी देखी जाती है।अधिकतर आदिवासी इलाकों में स्कूलों का अभाव है, और जहाँ स्कूल हैं, वहाँ शिक्षकों की कमी और बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। इसके बावजूद, कुछ आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रसार में सुधार हुआ है, खासकर लड़कियों की शिक्षा में। आदिवासी संस्कृति और जीवनशैली के संदर्भ में शिक्षा का महत्व बढ़ता जा रहा है, और इसे एक महत्वपूर्ण सशक्तिकरण उपकरण के रूप में देखा जा रहा है।

स्वास्थ्य: आदिवासी समुदायों के स्वास्थ्य से संबंधित समस्याएँ भी काफी गंभीर हैं। आदिवासी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और गुणवत्ता में काफी अंतर है। कई आदिवासी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव है, और लोग पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों का सहारा लेते हैं।सरकारी योजनाएँ, जैसे आयुष्मान भारत योजना, आदिवासी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए प्रयासरत हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर इन योजनाओं का प्रभावी कार्यान्वयन एक चुनौती है। आदिवासी क्षेत्रों में कुपोषण, मातृ एवं शिशु मृत्यु दर, और संक्रामक बीमारियों की उच्च दर स्वास्थ्य की प्रमुख समस्याएँ हैं।

आदिवासी समुदायों में पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ **(अन्तिम पृष्ठ पर देखे)**

परिवर्तन एवं चुनौतियाँ: आधुनिकता और औद्योगिकीकरण के प्रभाव से आदिवासी समुदायों में कई परिवर्तन हुए हैं। जल, जंगल, और जमीन पर आदिवासी अधिकारों का उल्लंघन, सरकारी नीतियों की अनदेखी, और बाहरी व्यापारिक दबाव उनके जीवन में गहरे बदलाव लाए हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का विकास भी आदिवासी क्षेत्रों में हुआ है, लेकिन वह पर्याप्त नहीं है और कई बार बाहरी संस्कृतियों के प्रभाव में अपनी सांस्कृतिक पहचान को खोने का खतरा उत्पन्न होता है।

वनों का क्षरण: मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों का जीवन घने वनों और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहा है। वनों का क्षरण और अतिक्रमण इस समुदाय की पारंपरिक जीवनशैली पर गहरा प्रभाव डाल रहा है। आदिवासी लोग इन जंगलों का संरक्षण करते थे, लेकिन अब वनों की अन्धाधुंध कटाई और शहरीकरण के कारण उनके अस्तित्व को खतरा पैदा हो गया है। इस परिवर्तित परिप्रेक्ष्य में, आदिवासी समाज को जंगलों से अपनी निर्भरता को कम करने के उपाय खोजने की आवश्यकता है, जिससे उनकी पारंपरिक जीवनशैली और सांस्कृतिक धरोहर को बचाया जा सके।

आधुनिकता का प्रभाव: आधुनिकता के प्रभाव में सबसे पहलेशहरीकरणऔरविकासके तत्व प्रमुख रूप से उभरे हैं। मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में प्रमुख बदलावों में शिक्षा, चिकित्सा, तकनीकी प्रगति और बाजार अर्थव्यवस्था का हस्तक्षेप शामिल है। ये बदलाव आदिवासी समुदायों के पारंपरिक जीवन और उनके सांस्कृतिक परंपराओं में असंतुलन का कारण बने हैं। आदिवासी क्षेत्रों में शहरीकरण के कारण कई लोग रोजगार की तलाश में गांवों से बाहर जाने लगे हैं। इस प्रवृत्ति ने उनके पारंपरिक गांवों की संरचना और सामाजिक संबंधों को प्रभावित किया है। यह उनके पारंपरिक जीवन और संस्कृतियों को विस्थापित करने का कारण बन रहा है।

शिक्षा व रोजगार:

1. **शिक्षा की अपर्याप्तता और पहुँच:** आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा की कमी के कारण बच्चों को पर्याप्त शिक्षा नहीं मिल पाती है। इसके अलावा, कई आदिवासी क्षेत्रों में स्कूलों की कमी, बुनियादी सुविधाओं का अभाव और शिक्षकों की कमी जैसी समस्याएँ हैं।
2. **भाषाई और सांस्कृतिक बाधाएँ:** आदिवासी समुदायों की अपनी भाषाएँ और संस्कृति हैं, जो सामान्य शिक्षा प्रणाली के लिए एक बाधा हो सकती हैं। बच्चों को स्थानीय भाषा में शिक्षा देने की आवश्यकता है ताकि वे बेहतर तरीके से समझ सकें और सीख सकें।
3. **शिक्षा का खर्च:** आदिवासी क्षेत्रों में आर्थिक तंगी और शिक्षा के उच्च खर्च के कारण बच्चों को स्कूल भेजना मुश्किल हो जाता है, जिससे शिक्षा प्राप्ति में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं।
4. **कृषि पर निर्भरता:** अधिकांश आदिवासी समुदाय अपनी आजीविका के लिए कृषि और वनोपज पर निर्भर हैं, लेकिन आधुनिक कृषि तकनीकों की कमी और जलवायु परिवर्तन के कारण उनकी आजीविका प्रभावित हो रही है। इस क्षेत्र में उन्नति के लिए उचित प्रशिक्षण और संसाधनों की आवश्यकता है।
5. **रोजगार के अवसरों की कमी:** आदिवासी क्षेत्रों में औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के कारण रोजगार के अवसर सीमित हो गए हैं। अधिकतर आदिवासी युवा शहरों में रोजगार की तलाश में पलायन कर रहे हैं, लेकिन वहां भी उन्हें योग्यतानुसार अवसर नहीं मिल पाते।
6. **आर्थिक और सामाजिक असमानताएँ:** आदिवासी समुदायों के लिए रोजगार में असमानता और भेदभाव की समस्या भी बनी हुई है। विभिन्न सरकारी योजनाओं के बावजूद, इन समुदायों को बराबरी के अवसर नहीं मिल पा रहे हैं, और वे अक्सर निम्न-आय वर्गों में शामिल होते हैं।

संस्कृति पर संकट:

1. **विकास परियोजनाएँ:** जल विद्युत परियोजनाएँ, खनन कार्य, और औद्योगिकीकरण के कारण आदिवासी क्षेत्रों में भूमि का अधिग्रहण और प्राकृतिक संसाधनों का शोषण हुआ है। इन विकास परियोजनाओं के कारण आदिवासी समुदायों के पारंपरिक जीवन में दखलअंदाजी हुई है और उनकी सांस्कृतिक पहचान खतरे में पड़ी है।
2. **शहरीकरण और प्रवासन:** शहरीकरण की प्रक्रिया और गांवों से शहरों की ओर प्रवासन ने आदिवासी समुदायों को अपनी पारंपरिक जीवन शैली से दूर किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में मौजूद सामाजिक-सांस्कृतिक संरचनाएं शहरी जीवन के प्रभाव में टूट रही हैं।
3. **शिक्षा और आधुनिकता:** शिक्षा और आधुनिकता का प्रभाव आदिवासी समुदायों के बच्चों पर देखा जा रहा है। उनकी पारंपरिक भाषा, संगीत, नृत्य और कला अब कम होती जा रही हैं, और आधुनिक जीवन शैली की ओर बढ़ने का दबाव बढ़ रहा है। इसके परिणामस्वरूप, सांस्कृतिक विरासत का ह्रास हो रहा है।
4. **सामाजिक और राजनीतिक असमानता:** आदिवासी समुदायों को राजनीतिक और सामाजिक असमानताओं का सामना करना पड़ रहा है। उनके अधिकारों की रक्षा और उनकी संस्कृति को सशक्त बनाने के लिए राजनीतिक ध्यान और संसाधनों की कमी है, जो उनकी सांस्कृतिक पहचान को संकट में डालता है।

आर्थिक चुनौतियाँ: मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों की जीवनशैली, जो परंपरागत रूप से प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित रही है, अब कई आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रही है। कृषि, वनोपज और पशुपालन उनके आर्थिक ढांचे के प्रमुख स्तंभ हैं। लेकिन आधुनिकता और विकास की गति के साथ इन क्षेत्रों में कई समस्याएँ उत्पन्न हुई हैंरू

1. **भूमि अधिकारों का संकट:**आदिवासी क्षेत्रों में भूमि अधिकारों की कमी एक बड़ी समस्या है। कई आदिवासी समुदायों के पास अपनी जमीन पर कानूनी अधिकार नहीं होते, जिसके कारण उन्हें खेती और वनोपज के लाभ से वंचित होना पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप, वे कई बार श्रमिक के रूप में काम करने को मजबूर होते हैं और उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय होती है।
2. **विकास परियोजनाओं का प्रभाव:** बड़े विकास परियोजनाओं जैसे बांध निर्माण, खनन और अन्य उद्योगों के कारण आदिवासी समुदायों की पारंपरिक जमीन और संसाधन हड़प लिए जाते हैं। इससे उनकी जीवनशैली और आर्थिक सुरक्षा प्रभावित होती है। उदाहरण के लिए, नर्मदा नदी पर बने बांधों के कारण नर्मदा घाटी के आदिवासियों की परंपरागत जमीन और संसाधन समाप्त हो गए हैं।
3. **श्रमिक वर्ग में परिवर्तन:** आदिवासी समाज में कृषि और जंगल आधारित श्रमिक वर्ग का एक महत्वपूर्ण स्थान है। लेकिन शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण पारंपरिक रोजगार क्षेत्रों में कमी आई है, और आदिवासी समुदायों के लोग अब शहरी क्षेत्रों में श्रमिक के रूप में काम करने के लिए मजबूर हो रहे हैं। इससे उनकी सांस्कृतिक पहचान और पारंपरिक

जीवनशैली में भी बदलाव आया है।

4. वित्तीय अवसंरचना का अभाव: आदिवासी क्षेत्रों में बैंकिंग और अन्य वित्तीय सेवाओं की पहुँच सीमित है। इसके कारण, आदिवासी समुदायों के पास पर्याप्त संसाधन नहीं होते, जिससे वे अपनी कृषि और वाणिज्यिक गतिविधियों को बढ़ा नहीं पाते। इसके अलावा, सरकारी योजनाओं का लाभ सही तरीके से न मिलने के कारण आर्थिक स्थिति और भी बिगड़ जाती है।

5. शिक्षा और कौशल विकास की कमी: आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा और कौशल विकास के अवसरों की कमी है, जिससे वे आधुनिक अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम नहीं होते। इसका परिणाम यह होता है कि आदिवासी समुदाय के लोग मजदूरी, अस्थिर रोजगार और गरीबी के शिकार हो जाते हैं।

निष्कर्ष: मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों का सांस्कृतिक भूगोल और जीवनशैली पर शोध करते समय यह स्पष्ट होता है कि इन समुदायों की पारंपरिकता और सांस्कृतिक धरोहर जीवन के हर पहलू में बसी हुई है। यह समुदाय विभिन्न जैविक और सांस्कृतिक विविधताओं का संगम प्रस्तुत करते हैं, जहाँ उनका जीवन प्राकृतिक संसाधनों, भूमि, और वन्य जीवन से गहरे जुड़े हुए हैं। इनकी जीवनशैली में जीवन के सभी पहलुओंकृकृषि, शिकार, हस्तशिल्प, लोक संगीत, नृत्य, पर्व-त्योहार, और धार्मिक विश्वासों का मेल एक समग्र जीवन दर्शन को व्यक्त करता है।आदिवासी समुदायों का सामाजिक संगठन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो सामूहिकता, सहकार्य, और पारस्परिक सम्मान पर आधारित होता है। इनका समुदाय केंद्रित जीवन-शैली उन सबकों से भरी हुई है जो आधुनिक समाजों के लिए भी प्रासंगिक हैं, जैसे कि समानता, सहयोग, और आपसी सहायता। आदिवासी समाज की संरचनाओं में पितृसत्तात्मकता की तुलना में मातृसत्तात्मकता की मजबूत उपस्थिति को भी देखा जा सकता है, जो इनकी संस्कृति को और अधिक अद्वितीय बनाता है।

समाज के विकास के साथ-साथ आदिवासी जीवनशैली में जो परिवर्तन हुए हैं, वे इसे वैश्विक प्रभावों और सरकारी योजनाओं से प्रभावित करते हैं। नदियों और जंगलों के संरक्षण के प्रयासों में इनकी सक्रिय भागीदारी और सांस्कृतिक क्रियाएँ, जैसे कि वन-उपज से संबंधित गतिविधियाँ, पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार दृष्टिकोण प्रदान करती हैं। हालांकि, विकास की प्रक्रिया में अनियंत्रित खनन, औद्योगिकीकरण, और जंगलों के अतिक्रमण के कारण आदिवासी समुदायों के अस्तित्व और संस्कृति पर गंभीर खतरे उत्पन्न हो रहे हैं।इस संदर्भ में, यह अत्यंत आवश्यक है कि आदिवासी समुदायों के अधिकारों की रक्षा करते हुए, उनकी संस्कृति और जीवनशैली को संरक्षित करने के लिए ठोस कदम उठाए जाएं। सरकारों और गैर-सरकारी संगठनों को इस समुदाय के विकास में सहायता देने के साथ-साथ, उनके पारंपरिक ज्ञान और जीवनशैली को सम्मानजनक तरीके से बढ़ावा देना चाहिए।

सारांश रूप में, मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों का सांस्कृतिक भूगोल और जीवनशैली न केवल एक सांस्कृतिक धरोहर के रूप में महत्वपूर्ण है, बल्कि यह हमें जीवन और प्रकृति के बीच संबंधों की गहरी समझ भी प्रदान करता है। इनकी संस्कृति को सहेजने के लिए विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, ताकि यह धरोहर आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रह सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. भारत सरकार, जनगणना रिपोर्ट 2011
2. मध्य प्रदेश आदिवासी विकास विभाग की रिपोर्ट।
3. 'आदिवासी जीवन और संस्कृति' - डॉ. रवींद्र वर्मा।
4. क्षेत्रीय सर्वेक्षण रिपोर्ट, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद।
5. विभिन्न शोध पत्र एवं फील्ड सर्वेक्षण डेटा।
6. शर्मा, के.एल. (2010). भारतीय समाजशास्त्र में आदिवासी अध्ययन. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।
7. वर्मा, आर.सी. (1990). भारतीय आदिवासी समाज, नई दिल्ली: राष्ट्रीय प्रकाशन।
8. चौधरी, बिनय कुमार (2004). आदिवासी संस्कृति और परिवर्तन. भोपाल: मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय प्रकाशन।
9. मध्य प्रदेश जनजातीय अनुसंधान एवं विकास संस्थान (2018). मध्य प्रदेश की जनजातियाँ एवं उनका जीवन. भोपाल: शासकीय प्रकाशन।
10. मेहता, एस.आर. (1991). Tribal Identity and Modernization . नई दिल्ली: इंटर इंडिया पब्लिशर्स।
11. Ministry of Tribal Affairs, Government of India (2020). Statistical Profile of Scheduled Tribes in India.
12 Mishra, S.N. (2003). Tribal Development: An Overview. नई दिल्ली: मित्तल पब्लिकेशन।
13. Census of India (2011). Madhya Pradesh – Population by Scheduled Tribes. भारत सरकार: भारत की जनगणना कार्यालय।
14. Patel, S. (2015). "Cultural Geography of Tribes in Central India." Indian Journal of Social Research, 56(4), 507-520*d*
15. ठाकुर, देवेंद्र (2000). भारत के आदिवासी: सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अध्ययन. नई दिल्ली: दीप एंड दीप पब्लिकेशन।

आदिवासी समुदायों की सामाजिक संरचना

आदिवासी समुदाय	परिवार की संरचना	समाज में भूमिका	विवाह परंपराएँ	प्रमुख रीति-रिवाज
भील	संयुक्त परिवार, परिवार में स्त्री-पुरुष समान अधिकार	पुरुष प्रधान, महिलाएँ घर की प्रमुख	परंपरागत विवाह रीति, सामूहिक विवाह	हवन, पूजा, आदिवासी गीत और नृत्य
गोंड	परिवार में बड़ी उम्र के पुरुषों का आदर	सामूहिक निर्णय, बुजुर्गों की सलाह का महत्व	कन्यादान परंपरा, समाज के नेताओं द्वारा विवाह	करमा उत्सव, परिवारिक समारंभ
बैगा	संयुक्त परिवार, परिवार में एकता की भावना	सख्त पारंपरिक मान्यताएँ, आत्मनिर्भर	सादे विवाह संस्कार, समाज की स्वीकृति जरूरी	हलमाई का आयोजन, पारंपरिक नृत्य
सहरिया	खाप (गुट) आधारित परिवार व्यवस्था	समाज में प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी	समाज द्वारा चयनित दूल्हा-दुल्हन	शादी के पश्चात सामूहिक भोज, जन समूह की भागीदारी
कोरकू	परिवारों का विभाजन, सामूहिक गुट	छोटे गाँवों में वर्चस्व, संतुलित समानता	विवाह के पूर्व वार्ता, लड़की के परिवार से स्वीकृति	रघुनाथ उत्सव, सामूहिक पूजा
भिलाला	बड़े परिवार, परंपराओं के प्रति गहरी निष्ठा	परंपरा और कड़ी अनुशासन में विश्वास	सामाजिक विवाह निर्णय, घर के बुजुर्गों की सलाह	पारंपरिक नृत्य, सामूहिक गीत

(स्रोत -व्यक्तिगत अध्ययन अनुसार)

आदिवासी समुदायों की पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ

आदिवासी समुदाय	कृषि पद्धतियाँ	मुख्य फसलें	कृषि पर निर्भरता
भील	झूम कृषि , ट्राइबल प्लॉट्स में कृषि	मक्का, सोयाबीन, बाजरा, तिल, धान	उच्च (आर्थिक जीवन का प्रमुख हिस्सा)
गोंड	चावल की खेती, जलाशय आधारित कृषि	धान, तिल, मूँग, कुटकी, मक्का	उच्च (प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर)
बैगा	छोटे पैमाने पर कृषि, जंगलों के पास कृषि	मक्का, गेहूं, चना	मध्य (मूल रूप से जंगल पर निर्भर)
सहरिया	सिंचाई आधारित कृषि, छोटे तालाबों में जल संचयन	मक्का, दालें, ज्वार	मध्यम (खाद्य सुरक्षा के लिए कृषि आवश्यक)
कोरकू	झूम कृषि, नदियों के पास खेती	मक्का, गेहूं, चावल	उच्च (प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग)
भिलाला	आदिवासी खेती, वन भूमि पर आधारित	मक्का, चना, तिल	उच्च (वन उपज एवं कृषि के मिश्रण पर निर्भर)

(स्रोत-मध्य प्रदेश आदिवासी विकास विभाग की रिपोर्ट)

आदिवासी समुदायों में पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ

आदिवासी समुदाय	प्रमुख चिकित्सा पद्धतियाँ	उपयोग की जाने वाली जड़ी-बूटियाँ	चिकित्सा के क्षेत्र में ज्ञान का संरक्षण
भील	हर्बल चिकित्सा, वन्य उत्पादों का उपयोग	गिलोय, हल्दी, तुलसी, नीम	पारंपरिक चिकित्सक (हकीम) के माध्यम से ज्ञान का संरक्षण
गोंड	औषधीय पौधों का उपयोग, शारीरिक उपचार	आँवला, बबूल, सर्पगंधा, हल्दी	समुदाय में मौखिक रूप से ज्ञान का प्रसारण
बैगा	जड़ी-बूटियाँ और औषधियों का प्रयोग	धनिया, अजवाइन, आंवला, करेला	पारंपरिक वन चिकित्सकों के द्वारा उपचार
सहरिया	जड़ी-बूटियाँ और औषधियाँ, जल तत्वों का उपयोग	गिलोय, मेथी, हल्दी, मिर्च	हर्बल ज्ञान का संरक्षण परिवारों और समूहों के माध्यम से
कोरकू	जल और जड़ी-बूटियों का प्रयोग	नीम, गिलोय, बबूल, शहद	पारंपरिक चिकित्सकों द्वारा चिकित्सा का संचयन
भिलाला	वनस्पति आधारित उपचार, जल चिकित्सा	बबूल, कचनार, कड़ा, तुलसी	मौखिक रूप से चिकित्सा पद्धतियों का संरक्षण

(स्रोत-मध्य प्रदेश आदिवासी विकास विभाग की रिपोर्ट)

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Free Legal Aid In India: A Critical Analysis

Dr. Anoop Kumar Singh* Anand Mishra**

*Assistant Professor (Law) MLB Arts And Commerce College, Gwalior (M.P.) INDIA
**Assistant Professor (Law) MLB Arts And Commerce College, Gwalior (M.P.) INDIA

Introduction - Legal Services includes providing Free Legal Aid to those weaker sections of the society who fall within the purview of Section 12 of the Legal Services Authority Act, 1987.Free legal aid is the provision of free legal services in civil and criminal matters for those poor and marginalized people who cannot afford the services of a lawyer for the conduct of a case or a legal proceeding in any Court, Tribunal or Authority. These services are governed by Legal Services Authorities Act, 1987 and headed by the National Legal Services Authority (NALSA). Free legal aid is one of the fundamental rights guaranteed to all the citizens of the country. Article 21 of the Constitution of India states: No person shall be deprived of his life or personal liberty except according to procedure established by law. Hence ensuring legal aid to everyone is necessary for ensuring substantive equality.

Furthermore, the principal of free legal aid is stretched in Indian Constitution in the Directive Principles of the State Policy contained in Part IV which emphasizes the social security character and hence imposes certain obligations on the State to take positive action to promote the welfare of the society. According to Article 39-A, it has been directed to the State to ensure that the mechanism of legal system promote justice on the basis of equal opportunities and shall compulsorily provide free legal aid to economically backward classes by suitable legislation or schemes or in any other way. Consequently, legal aid is not a philanthropic activity, but rather is a constitutional prerequisite of the state and right of the citizens. In this way, legal aid endeavors to shield that the constitutional pledge is satisfied in its later and spirit and equal justice is made open to the intimidated and weaker areas of the general public.

It is the State's obligation to watch and keep check on the legal framework that emphasizes justice on the premise of equal opportunity for every one of its nationals. For the provisions of legal aid, the Government of India had taken massive steps such as setting up of Legal Aid Boards, Societies, Law Commissions and Law Departments and in the year 1980, Committee for Implementing Legal Aid Schemes (CILAS) was constituted under the Chairmanship of Honourable Justice P.N. Bhagwati to regulate legal aid programs all over the country.

Another step was in form of Lok Adalats which is established as a supplementary forum to the litigants in judicial dispense system of India. In 1987, to give a statutory acknowledgment to legal aid programs all through the nation the Legal Services Authorities Act was established and was implemented on 9 November 1995.

Constitutional Provisions: Article 39A of the Constitution of India provides that State shall secure that the operation of the legal system promotes justice on a basis of equal opportunity, and shall in particular, provide free legal aid, by suitable legislation or schemes or in any other way, to ensure that opportunities for securing justice are not denied to any citizen by reason of economic or other disability. Articles 14 and 22(1) also make it obligatory for the State to ensure equality before law and a legal system which promotes justice on a basis of equal opportunity to all.

The Objectives Of Legal Service Authorities:

1. Provide free legal aid and advice.
2. Spread legal awareness.
3. Organize lok adalats.
4. Promote settlements of disputes through Alternative Dispute Resolution (ADR) Mechanisms. Various kinds of ADR mechanisms are Arbitration, Conciliation, Judicial settlement including settlement through Lok Adalat, or Mediation.
5. Provide compensation to victims of crime.

The Institutions For Providing Free Legal Services

National Level: National Legal Services Authority (NALSA). It was constituted under the Legal Services Authorities Act, 1987. The Chief Justice of India is the Patron-in-Chief.

State Level: State Legal Services Authority. It is headed by the Chief Justice of the State High Court who is its Patron-in-Chief.

District Level: District Legal Services Authority. The

District Judge of the District is its ex-officio Chairman.
Taluka/Sub-Division Level: Taluka/Sub-Divisional Legal Services Committee. It is headed by a senior Civil Judge.
High Court Level: High Court Legal Services Committee
Supreme Court Level: Supreme Court Legal Services Committee.

Article 39A of the Constitution of India provides for free legal aid to the poor and weaker sections of the society and ensures justice for all. Articles 14 and 22(1) of the Constitution also make it obligatory for the State to ensure equality before law and a legal system which promotes justice on the basis of equal opportunity to all. In the year1987, the Legal Services Authorities Act was enacted by the Parliament which came into force on 9th November, 1995 to establish a nationwide uniform network for providing free and competent legal services to the weaker sections of the society on the basis of equal opportunity. The National Legal Services Authority (NALSA) has been constituted under the Legal Services Authorities Act, 1987 to monitor and evaluate implementation of legal aid programmes and to lay down policies and principles for making legal services available under the Act.

In every State, a State Legal Services Authority and in every High Court, a High Court Legal Services Committee have been constituted. District Legal Services Authorities, Taluk Legal Services Committees have been constituted in the Districts and most of the Taluks to give effect to the policies and directions of the NALSA and to provide free legal services to the people and conduct Lok Adalats in the State. Supreme Court Legal Services Committee has been constituted to administer and implement the legal services programme insofar as it relates to the Supreme Court of India.

NALSA lays down policies, principles, guidelines and frames effective and economical schemes for the State Legal Services Authorities to implement the Legal Services Programmes throughout the country. Primarily, the State Legal Services Authorities, District Legal Services Authorities, Taluk Legal Services Committees, etc. have been asked to discharge the following main functions on regular basis:

1. To Provide Free and Competent Legal Services to the eligible persons;
2. To organize Lok Adalats for amicable settlement of disputes and
3. To organize legal awareness camps in the rural areas.

The Free Legal Services Include:

1. Payment of court fee, process fees and all other charges payable or incurred in connection with any legal proceedings;
2. Providing service of lawyers in legal proceedings;
3. Obtaining and supply of certified copies of orders and other documents in legal proceedings.
4. Preparation of appeal, paper book including printing and translation of documents in legal proceedings.

Persons Eligible For Getting Free Legal Services Includes:

1. Women and children;
2. Members of SC/ST
3. Industrial workmen
4. Victims of mass disaster, violence, flood, drought, earthquake, industrial disaster.
5. Disabled persons. 6. Persons in custody
7. Persons whose annual income does not exceed Rs. 1 lakh (in the Supreme Court Legal Services Committee the limit is Rs. 5,00,000/-).
8. Victims of Trafficking in Human beings or beggar

Lok Adalats: Lok Adalat is one of the Alternative Disputes Resolution Mechanisms. It is a forum where the disputes/ cases pending in the court of law or at pre-litigation stage are settled/ compromised amicably. The Lok Adalat has been given statutory status under the Legal Services Authorities Act, 1987. Under this Act, an award made by a Lok Adalat is deemed to be a decree of a civil court and is final and binding on all parties and no appeal lies against thereto before any court.

Lok Adalats are being organized by the Legal Services Authorities/Committees for settlement of cases pending before courts u/s 19 of the Legal Services Authorities Act, 1987 and also for matters at pre-Litigative stage, under the guidance of NALSA.

Chapter VI-A has been inserted in the Legal Services Authorities Act, 1987 in the year 2002, with a view to provide compulsory pre-Litigative mechanism for conciliation and settlement of disputes relating to 'Public Utility Services'. Further in view of Covid, E-Lok Adalat has been conceptualized which significantly improved access to justice for people who were otherwise unable to participate in the Lok Adalats.

As a part of the preventive and strategic legal aid, NALSA through the State Legal Services Authorities, conduct legal literacy programmes. In some States, Legal Literacy Programmes are conducted every year in schools and colleges and also for empowerment of women in a routine manner, besides the rural legal literacy camps.

Free Legal Services also include provision of aid and advice to the beneficiaries to access the benefits under the welfare statutes and schemes framed by the Central Government or the State Government and to ensure access to justice in any other manner. According to Section 2(c) of the Legal Services Authorities Act, 1987, "legal services" includes any service in the conduct of any case or other legal proceeding before any court or other authority or tribunal and the giving of advice on any legal matter.

The scope of Article 39A has been widely explained in case of Air India Statutory Corporation v. United Labour

Union in which Supreme Court observed that Article 39A furnishes beacon light that justice is done on the basis of equal opportunity and no one is denied justice by reason of economic or other disabilities.Importance of legal aid is not only lightened up in Indian Constitution but also under Section 304(1) of the Code of Criminal Procedure, 1973 it is stated that in a trial before the sessions judge, if the accused has no sufficient means to engage a plea, the court should assign a pleader for his defence at the expense of the state. The enormous contribution in edging the legal aid system is of judiciary which can witnessed from Supreme Court's ardent announcement with regard to the rights of the poor and destitute people in judgment of Hussainara Khatoon in which the court observed the importance of Article 39A which emphasizes that free legal service was an inalienable element of reasonable, fair and just procedure and that the right to free legal services is impliedly guaranteed under Article 21 of the Indian Constitution.

The same was observed by Supreme Court in State of Haryana v Darshan Devi that the poor shall not be demarcated out of the justice market on the pretext of court-fee and refusal to apply the exempted provisions of Order XXXIII, Civil Procedure Code.

In addition, legal aid is a key factor in other countries too. In U.K, the scheme of legal aid is controlled by the Legal Service Commission, and is subjected to most of the criminal and civil cases but with exceptions such as libel, most personal injury cases (which are now dealt with under Conditional Free Agreements, interests of contingency fee) and cases associated with the running of a business.

Family law cases are also covered. Legal aid commissions in Australia plays a defining role in achieving equality before the law by striving to ensure that all citizens, including those who cannot afford to pay, have access to the legal services they need to obtain justice are present in each state and territory and are in eight in number all total.

UN convention affords some sustenance on free legal aid to the poor and impoverished persons precisely in criminal proceedings. Article 14 of said covenant clearly states in Article14(i) that all individuals must be treated equally before the courts and tribunals and under clause (f) it is provided that a person must have the free assistance of an interpreter if he cannot understand or speak the language used in court.

Relevant Case Laws

Khatri V. State Of Bihar: The Supreme Court held that the state is constitutionally bound to provide legal assistance by hiring a lawyer to an accused person not only at trial stage but also when they are first produced before the magistrate or remanded time and again and such a right shall not be denied on the ground of financial or administrative inability or that the accused did not ask for it. Magistrates and Sessions Judges have the must responsibility to inform the accused of his rights.

Suk Das V. Union Territory Of Arunachal Pradesh : Justice P.N. Bhagwati, highlighted the necessity of the constructing the legal awareness to the poor as they are unaware of their rights specifically right to free legal aid and further observed that in India people residing in rural areas are illiterates and are not aware of their innate legal rights conferred upon them by law. Even literate people are not knowledgeable of their rights. This absence of legal awareness makes them unapproachable to a lawyer for consultation.

Various Amendment Acts:

1. The Legal Services Authorities (Amendment) Act, 2002
2. National Legal Services Authority Rules, 1995
3. Permanent Lok Adalat (Other Terms and Conditions of appointment of Chairman and other persons) Rules, 2003
4. Punjab Legal Services Authority Rules, 1996
5. ADR Rules, 2003
6. High Court Legal Services Committee, Regulations, 1998

References:-

1. https://nalsa.gov.in/services/legal-aid/legal-services
2. AIR [1997] SC 645: [1997] 9 SCC 377: [1997]1 LLJ 113
3. Hussainara Khatoon v. State of Bihar, [1980] 1 SCC 98
4. AIR [1972] SC 855
5. Khatri v. State of Bihar, AIR[1981] SC 262
6. Suk Das v. Union Territory of Arunachal Pradesh AIR [1986] SC 991
7. Free Legal Aid: A Legal Service By Madhvipatidar
8. National Legal Services Authority (NALSA)
9. Source: PIB

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

The Impact of Nutrition and Physical Conditioning on Volleyball Performance: A Comparative Study in Rajasthan

Dr. Santosh Lamba* **Harish Chandra Patidar****

*Assistant Professor, Janardhan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth University, Udaipur (Raj.) INDIA
** Ph. D. Scholar, Janardhan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth University, Udaipur (Raj.) INDIA

Abstract: In volleyball, performance is driven not only by skill and teamwork but also by the physical conditioning and nutritional strategies that players employ. This research examines the combined effect of tailored nutrition and physical conditioning on the performance of volleyball players in Rajasthan. The study compares players following customized nutrition and conditioning plans with those adhering to general diets and traditional fitness routines. Using qualitative and quantitative methods, this paper evaluates key performance metrics such as strength, agility, endurance, and recovery. The results indicate that volleyball players on customized programs outperform those on standard routines in areas like vertical jump, spiking power, and recovery. The study concludes that integrating sports-specific nutrition and conditioning into volleyball training leads to enhanced athletic performance.
Keywords: Volleyball, nutrition, physical conditioning, Rajasthan, performance, strength, agility, endurance, recovery.

Introduction - Volleyball is a sport that demands explosive power, quick reflexes, and sustained endurance. Success in volleyball is determined by both physical attributes and technical skill. To perform at an elite level, volleyball players must focus not only on honing their skills but also on optimizing their physical conditioning and nutrition. These two factors play a critical role in determining the strength, agility, and endurance of players, which are essential for excelling in key volleyball actions such as serving, spiking, and blocking.

In Rajasthan, the rising popularity of volleyball has seen more athletes competing at the district, state, and national levels. However, despite the sport's growing prominence, many volleyball players continue to rely on traditional fitness routines and general dietary practices that may not fully support the demands of the sport. Proper conditioning programs tailored to volleyball, combined with a well-balanced, sports-specific diet, can have a profound effect on athletic performance, particularly in a physically demanding game like volleyball.

Nutrition is one of the most important yet often overlooked components of athletic success. A well-designed nutrition plan provides the fuel needed for energy, recovery, and muscle growth. Volleyball players, in particular, require a diet that is rich in carbohydrates for quick energy, proteins for muscle repair and growth, and healthy fats for sustained energy. Hydration is equally important, especially in Rajasthan's hot and arid climate, as dehydration can quickly impair performance.

Physical conditioning complements nutrition by building the strength, speed, and agility necessary for peak performance. Conditioning programs tailored to volleyball often include a mix of strength training, plyometrics, and aerobic exercises. These programs focus on improving explosive movements like jumping, diving, and lateral movements. Strength and agility are especially important in volleyball because they directly impact a player's ability to perform quick, powerful actions like spiking and blocking. This study aims to assess the impact of customized nutrition and physical conditioning programs on the performance of volleyball players in Rajasthan. By comparing players who follow tailored training plans with those who rely on general fitness and traditional diets, the research will provide insights into the role of conditioning and nutrition in volleyball success.

Review of Literature:

1. Nutrition and Athletic Performance: Proper nutrition is crucial for sustaining high-intensity physical activity. According to Sharma and Patel (2020), athletes who follow structured nutrition plans tailored to their sport exhibit better endurance and faster recovery times. Volleyball players, who engage in repetitive bursts of energy, benefit from a diet rich in carbohydrates and protein to support quick energy release and muscle repair.

2. Physical Conditioning in Volleyball: Volleyball requires explosive strength and agility, particularly for

actions like jumping and spiking. Studies by Rao and Gupta (2019) highlight that athletes who follow sport-specific conditioning programs show significant improvements in vertical jump height, agility, and lateral speed. Strength and conditioning programs that include plyometric exercises have been shown to improve volleyball players' explosive movements and overall performance.

3. Recovery and Injury Prevention: A balanced diet and adequate conditioning not only enhance performance but also reduce the risk of injury. Singh and Meena (2021) found that volleyball players with higher levels of conditioning and proper nutritional support experienced fewer injuries and shorter recovery times compared to those on general fitness routines. This highlights the importance of integrating recovery strategies into volleyball training programs.

Research Objectives:

The primary objective of this research is to assess how tailored nutrition and physical conditioning programs influence the performance of volleyball players in Rajasthan. The study aims to:

1. Analyze the effects of customized nutrition plans on endurance, strength, and recovery.
2. Compare the effectiveness of volleyball-specific conditioning programs with general fitness routines.
3. Examine how nutrition and conditioning impact key volleyball skills, such as vertical jump, spiking, and blocking.
4. Provide recommendations for optimizing volleyball training programs with tailored nutrition and conditioning strategies.

Research Hypotheses:

1. Volleyball players following customized nutrition plans demonstrate improved endurance, strength, and recovery compared to those on general diets.
2. Sport-specific conditioning programs significantly enhance vertical jump height, spiking power, and agility.
3. A combination of proper nutrition and conditioning reduces injury rates and improves recovery time.
4. Players on customized nutrition and conditioning plans perform better in volleyball-specific skills than those on traditional routines.

Research Methodology:

Subjects: The study will focus on 60 volleyball players, aged 18 to 30, from various clubs and schools in Rajasthan. The players will be divided into two groups:

Group	No. of Players	Focus Area
Customized Nutrition and Conditioning Group (CNCG)	30	Players following tailored nutrition plans and volleyball -specific conditioning programs
Traditional Fitness Diet Group (TFDG)	30	Players adhering to general and fitness routines and traditional diets

Tools & Instruments:

1. Strength and Conditioning Test:

(see in last page)

Data Collection Procedures:

1. Initial Assessments (Baseline Testing): Baseline data will be collected on each player's fitness levels, dietary habits, and volleyball-specific skills.

2. Midpoint Evaluation: After six months, the same tests will be conducted to track improvements in performance, comparing the impact of the customized nutrition and conditioning programs against traditional methods.

3. Final Assessment: At the end of the 12-month period, final assessments will be conducted, and results will be compared to both baseline and midpoint evaluations.

Data Analysis:

1. Descriptive Statistics: Summarize demographic information, baseline performance metrics, and dietary intake.

2. Paired T-Test: Analyze differences in performance between baseline and final assessments for each group.

3. ANOVA: Compare performance improvements between CNCG and TFDG groups.

4. Correlation Analysis: Evaluate the relationship between nutrition, conditioning, and volleyball-specific skills, such as vertical jump and spiking accuracy.

Conclusion:

1. Volleyball players who follow tailored nutrition and conditioning programs show marked improvements in endurance, strength, and skill execution.
2. Proper nutrition, particularly with adequate protein and carbohydrates, enhances recovery times and reduces the risk of injuries.
3. Conditioning programs designed specifically for volleyball significantly improve explosive movements like spiking and blocking.
4. Teams and coaches should consider integrating customized nutrition and conditioning plans to optimize player performance and reduce injury risks.

Recommendations for further studies:

1. Long-Term Effects of Customized Nutrition Plans: Future research could focus on the long-term effects of customized nutrition plans on volleyball performance, exploring how sustained dietary changes affect player endurance and recovery over several seasons.

2. Impact of Conditioning on Different Volleyball Positions: Research could analyze how nutrition and conditioning affect specific player positions, such as setters versus middle blockers, as the physical demands of each position vary.

3. Hydration and Performance in Hot Climates: Given the climate conditions in Rajasthan, a deeper study into the role of hydration and electrolyte balance on player performance, particularly during tournaments held in high-temperature environments, would be valuable.

4. Mental Conditioning and Nutrition: Future research could explore how mental conditioning, in combination with physical conditioning and nutrition, impacts the overall

performance and mental resilience of volleyball players during high-stress matches.

5. Gender-Based Differences in Nutrition and Conditioning: Investigating how nutrition and conditioning programs affect male versus female volleyball players could offer more tailored approaches for optimizing performance based on gender-specific needs.

References;-

1. Sharma, R., & Patel, M. (2020). "The Role of Nutrition in Enhancing Athletic Performance." *Journal of Sports Nutrition*, 12(3), 45-58.
2. Rao, V., & Gupta, A. (2019). "Physical Conditioning Programs for Volleyball Players: A Performance Analysis." *Indian Journal of Sports Science*, 18(2), 88-101.
3. Singh, V., & Meena, P. (2021). "Recovery and Injury Prevention Through Sports Nutrition and Conditioning." *International Journal of Sports Medicine*, 14(4), 102-119.
4. Kapoor, S., & Joshi, K. (2020). "Integrating Conditioning and Nutrition to Maximize Volleyball Performance." *Asian Journal of Sports Science*, 16(3), 123-135.

Test	Measurement	Customized Nutrition and Conditioning Group (CNCG)	Traditional Fitness and Diet Group (TFDG)
Vertical Jump	cm	56 cm	46 cm
Spiking Power (Speed)	km/h	98 km/h	83 km/h
1RM Bench Press	kg	80 kg	65 kg
1RM Squat	kg	125 kg	105 kg
Endurance Test (Yo-Yo)	Level	Level 17	Level 15

2. Skill-Specific Volleyball Test:

Skill	Customized Nutrition and Conditioning Group (CNCG)	Traditional Fitness and Diet Group (TFDG)
Defensive Blocks	88% success rate	67% success rate
Spiking Accuracy	82%	63%
Serving Consistency	92%	72%
Reaction Time (Defensive Play)	0.38 sec	0.68 sec

3. Dietary Assessment: Dietary intake will be assessed through a 7-day food diary analyzed for macronutrient and micronutrient balance.

Nutrient	CNCG Daily Intake	TFDG Daily Intake	Recommended Daily Intake (RDI)
Protein (grams)	105g	75g	95g
Carbohydrates (grams)	360g	270g	350g
Fats (grams)	70g	60g	70g
Water Intake (liters)	2.7L	2.2L	2.5L

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

A Study to Examine How Education Influences Women's Political Participation in Rongnihang

Tamhidi Terangpi*

***Department of Political Science, Mewar University, Gangrar, Chittorgarh (Raj.) INDIA**

Abstract : This review investigates the complex relationship between women's education and political participation, emphasizing the socio-cultural factors that mediate this dynamic. While education provides women with essential knowledge, skills, and confidence, its impact is often constrained by persistent gender norms, religious interpretations, and limited social capital. Drawing on case studies from South Asia, Africa, and other global contexts, the paper reveals that educated women still face cultural stereotypes, patriarchal constraints, and institutional exclusion that hinder their political engagement. In conservative societies, even educated women are often reduced to symbolic roles, with male relatives controlling their political influence. Religion emerges as both a restrictive and empowering force-certain interpretations limit women's leadership, while others inspire activism through faith-based literacy and advocacy. Social capital, such as women's networks and grassroots organizations, significantly affects their access to political opportunities, but its availability is shaped by societal norms. The review concludes that while education is a foundational tool for empowerment, it must be supported by broader socio-cultural shifts and institutional reforms to achieve meaningful political inclusion for women.

Keywords: Education, Women, Empowerment, Political Participation,civic engagement, rural Assam.

Introduction - Women's political participation remains a fundamental indicator of democratic inclusivity and societal progress. Despite legal and constitutional guarantees, women across many parts of the world-including India-continue to experience underrepresentation in political institutions due to entrenched socio-cultural norms. Education is widely acknowledged as a transformative tool for challenging these norms and empowering women to participate meaningfully in political life. It equips women with critical knowledge, strengthens self-confidence, and enhances the civic competencies required for leadership, policy engagement, and democratic participation (Bhat, 2015).

Numerous studies have demonstrated that higher levels of educational attainment are strongly linked with increased political engagement among women, including voting, political discourse, party involvement, and participation in governance (Burns et al., 2001; Norris, 2002). Education contributes to women's understanding of civic rights and responsibilities, develops political self-efficacy, and encourages active participation in public discourse. Beyond these cognitive gains, education fosters non-cognitive skills such as critical thinking, communication, and leadership, all of which are essential for civic engagement and representation (Wang & Chen, 2020).However, the influence of education is shaped significantly by broader socio-cultural, religious, and economic conditions. In patriarchal societies such as rural India, women's political voices are often muted despite educational advancement. Cultural expectations, gender stereotypes, and institutional barriers limit the extent to which women can convert educational empowerment into political agency (Prillaman, 2023; Li, 2024). For instance, even in regions where women have formal political representation through quotas, real decision-making power often remains with male family members or community leaders.Religious interpretations and social capital also mediate the impact of education. While some theological traditions restrict women's public roles, others have catalyzed empowerment through faith-based literacy and collective action. Similarly, access to community networks and support systems can enable educated women to overcome structural obstacles and influence public policy (Annisa et al., 2020).

This paper aims to examine how education influences women's political participation, especially in contexts where gender norms and religious ideologies act as both constraints and catalysts. By integrating global research and insights from specific Indian contexts like the Karbi community in Assam, the study seeks to highlight the complex interplay between education, culture, and political inclusion. It argues that for education to truly empower

women politically, it must be embedded within broader efforts to reform institutional practices, reshape societal attitudes, and expand socio-political opportunities for women.

Examining the intricate relationship between education and women's involvement in political processes constitutes a crucial area of investigation, particularly within specific socio-cultural contexts such as RongnihangDiphu in Karbi Anglong. The ability of women to participate fully and effectively in the political arena is greatly influenced by education, which acts as a catalyst for empowerment and social change (Le & Nguyen, 2020). Education can enhance women's understanding of their rights, increase their self-assurance, and equip them with the skills necessary to successfully negotiate the political environment (Kuteesa et al., 2024). In the context of RongnihangDiphu, where traditional patriarchal structures may still be present, education may be a particularly potent tool for dismantling gender-based obstacles to political engagement. It is important to conduct research that examines how education affects women's political participation in RongnihangDiphu in order to promote gender equality and inclusive governance in the area. The promotion of women's empowerment and the establishment of a more inclusive and representative political landscape depend on an understanding of the dynamics at play in this particular context (Pandey et al., 2021). An investigation into this subject can shed light on the particular difficulties and opportunities that women in RongnihangDiphu encounter as well as the ways that education can be used to overcome these obstacles and promote their involvement in political processes.

Global Perspectives on Education and Women's Political Participation: The impact of education on women's political participation is an essential area of research, especially in regions like Rongnihang, Diphu, and Karbi Anglong, where cultural, social, and economic factors shape women's roles. This analysis explores the global, national, regional, and local perspectives to better understand how education influences women's political engagement.Globally, education is recognized as a key tool for women's empowerment and political participation. Research shows that educated women are more likely to participate in political activities, challenge gender norms, and advocate for policies that benefit their communities (Kumari et al., 2024). Education equips women with the knowledge and skills necessary to navigate political spaces, making them more effective leaders and agents of change. A significant global strategy to increase women's political participation is the implementation of gender quotas in political representation. Studies indicate that gender quotas help boost women's political engagement by creating opportunities for them to hold public office and influence policy decisions. This approach has proven particularly effective in regions where cultural and structural barriers have historically hindered women's political involvement (Mohapatra et al., 2023; Kumari et al., 2024).Furthermore, educated women are more likely to push for policies that address gender inequality and improve access to essential services such as education and healthcare. Female politicians, for example, have played key roles in advocating for legislation that promotes gender equality and enhances public service delivery, particularly in areas like maternal health and education (Mathur, 2017; Karekurve-Ramachandra & Lee, 2024).

Table: Key Insights on Education and Women's Political Participation

Perspective	Key Insights	Citation
Global	Education empowers women, leading to increased political participation and policy influence.	(Kumari et al., 2024)
National(India)	Gender quotas have increased women's representation, focusing on education and health.	(Mathur,2017) (Karekurve-Ramachandra & Lee, 2024)
Regional (North East)	Education reduces gender disparities, but rural challenges persist.	(Hussain, 2025)
Local (Karbi Anglong)	Education empowers women, but cultural and economic barriers remain.	(Hussain, 2025) (Singh, 2023)

National Context: India's Journey Towards Women's Political Empowerment

The Role of Education in India's Political Landscape: In India, education has been a cornerstone in empowering women and enhancing their political participation. Research indicates that educated women are more likely to engage in political activities, challenge gender norms, and advocate for policies that benefit their communities (Kumari et al., 2024). Education has also been linked to higher political awareness and participation, particularly in rural areas where literacy rates have improved significantly in recent decades (Siingh, 2023). As more women gain access to education, they become more informed about political processes, enabling them to participate actively in public life.India has introduced gender quotas in local government bodies, reserving 33% of seats for women. This policy has significantly increased women's political representation at the grassroots level. Research shows that women elected to reserved seats are more likely to focus on issues such as education, healthcare, and public service delivery, leading to improved community outcomes (Mathur, 2017; Karekurve-Ramachandra & Lee, 2024). The reservation policy has been instrumental in enhancing women's political participation and in giving them a voice in local governance.

Regional Focus: North East India and Assam

The Role of Education in North East India: In North East India, education has played a significant role in enhancing women's political participation. The region has made notable

strides in reducing gender disparities in education, with states like Meghalaya and Mizoram leading the way in terms of female literacy rates. These states have also seen increased participation of women in public and political spheres. However, challenges persist, especially in rural areas where access to quality education remains limited (Hussain, 2025). The gap in educational access continues to hinder many women from fully engaging in political activities, emphasizing the need for more inclusive educational initiatives in these regions.

The Impact of Gender Quotas in North East India: The introduction of gender quotas in local government bodies has contributed to a rise in women's political representation across North East India. In many localities, women have become key players in enhancing access to education, healthcare, and public services, particularly in rural areas. Despite the progress, the success of gender quotas has been uneven, with some states achieving more significant outcomes than others (Mohapatra et al., 2023; Karekurve-Ramachandra & Lee, 2024). While the quotas have facilitated greater female participation, challenges in the effective implementation of these policies remain.

Challenges to Women's Political Participation in North East India: Women in North East India face distinct barriers that limit their political involvement. Cultural norms, limited educational opportunities, and economic dependence are key factors that discourage women's active participation in politics. Additionally, the region's complex ethnic and tribal dynamics pose unique challenges, creating further obstacles for women who wish to enter political roles (Hussain, 2025; Siingh, 2023). These socio-cultural complexities require targeted efforts to foster an inclusive environment for women's political engagement.

Local Perspective: Karbi Anglong and the Role of Education and Political: In Karbi Anglong, education has emerged as a powerful tool for empowering women and fostering their political participation. Over the years, the district has made notable progress in improving literacy rates among women, particularly in urban and semi-urban areas. This educational advancement has helped enhance women's awareness of political rights and governance processes, encouraging their involvement in public life. However, access to education in remote and rural pockets of the district remains limited, posing a challenge to broader female participation (Hussain, 2025).

The introduction of gender quotas in local self-governance institutions has significantly increased women's representation in Karbi Anglong's political landscape. Women elected to local government positions have played an essential role in improving access to education, healthcare, and community welfare programs. Their participation has led to more gender-sensitive policymaking at the grassroots level. Nonetheless, the effectiveness of gender quotas varies across the district, with some areas showing greater success in integrating women into political roles than others (Mohapatra et al., 2023; Karekurve-Ramachandra & Lee, 2024).

Challenges to Women's Political Participation in India and Assam Karbi Anglong: Despite these advancements, women in India continue to face significant barriers to political participation. Cultural norms, limited access to education, and economic dependence often restrict women's ability to engage in politics. Moreover, women in politics frequently encounter discrimination and violence, which can deter them from pursuing political careers (Siingh, 2023; Sharma, 2020). These challenges highlight the need for continued efforts to overcome societal barriers and foster a more inclusive political environment.

Despite these advancements, women in Karbi Anglong continue to face several barriers to political participation. Deep-rooted cultural norms, economic dependency, and insufficient educational opportunities still hinder many women from entering the political arena. Moreover, the district's ethnic diversity and tribal power dynamics present additional challenges, often reinforcing patriarchal control and limiting women's public agency (Hussain, 2025; Siingh, 2023). Addressing these barriers requires localized strategies that consider the socio-cultural fabric of Karbi Anglong while promoting inclusive education and political empowerment.

The Interplay Between Education and Women's Political Participation: Education serves as a foundational pillar for women's political empowerment. It enhances their ability to participate in decision-making processes, question societal norms, and advocate for change. Educated women are more likely to vote, run for office, and engage in civic discourse. They possess the confidence and knowledge needed to navigate political systems effectively, positioning themselves as strong leaders and advocates for their communities (Kumari et al., 2024; Sharma, 2020).Grassroots movements have been instrumental in strengthening women's political participation in India. These movements often emerge from within communities, helping women understand their rights and develop leadership skills. By challenging patriarchal norms and promoting gender-inclusive policies, grassroots organizations empower women to enter the political arena with greater confidence and purpose (Siingh, 2023; Sekhon & Joti, 2011).

Moreover, women's increased involvement in politics positively influences education itself. Female political leaders frequently prioritize education and health in their policy agendas. In rural areas, women in local governance have advocated for improved access to schools, better infrastructure, and support for girls' education. Their leadership contributes to tangible outcomes such as higher school enrollment and better public services (Mathur, 2017; Karekurve-Ramachandra & Lee, 2024), thus reinforcing the cycle of empowerment through education.

Conclusion: The impact of education on women's political

participation in Rongnihang, Diphu, Karbi Anglong is multifaceted. Globally, education has been recognized as a key driver of women's empowerment and political participation. In India, the implementation of gender quotas has led to an increase in women's political representation, particularly at the local level. In North East India, education has played a crucial role in empowering women and increasing their political participation, although challenges remain. Locally, in Karbi Anglong, education has been instrumental in improving women's political engagement, although cultural and structural barriers continue to limit their participation.To further enhance women's political participation in Karbi Anglong, it is essential to continue investing in education and to address the cultural and structural barriers that limit women's ability to engage in political activities. Additionally, grassroots movements and gender quotas have been effective in promoting women's political participation and should be supported and expanded.

References:-

1. Annisa, M., Setiyono, B., Yuwanto, Y., &Sardini, N. H. (2020). The effect of social capital on women's political participation. *PalArch's Journal of Archaeology of Egypt / Egyptology, 17*(7), 14255–14264.
2. Bhat, R. A. (2015). Role of education in the empowerment of women in India. *Journal of Education and Practice, 6*(10), 188–191.
3. Burchi, F. (2013). Women's political role and poverty in the educational dimension: A district-level analysis in India. *Social Science Research Network.*https://doi.org/10.2139/SSRN.2369248
4. Burchi, F. (2013). *Women's political role and poverty in the educational dimension*.
5. Burns, N., Schlozman, K. L., & Verba, S. (2001). *The private roots of public action: Gender, equality, and political participation*. Harvard University Press.
6. Clots-Figueras, I. (2012). Are female leaders good for education? Evidence from India. *American Economic Journal: Applied Economics, 4*(1), 212–244. https://doi.org/10.1257/APP.4.1.212
7. Figueras, I. C. (2006). *Female political representation and economic development in India* [Doctoral dissertation, London School of Economics]. http://etheses.lse.ac.uk/2692/
8. Goyal, T. (2020). Local female representation as a pathway to power: A natural experiment in India. *Social Science Research Network.*https://doi.org/10.2139/SSRN.3590118
9. Goyal, T. (2023). Replication data for: *Local political representation as a pathway to power: A natural experiment in India.*https://doi.org/10.7910/dvn/9xpv4i
10. Goyal, T. (2023). Replication data for: *Representation from below: How women's grassroots party activism promotes equal political participation.*https://doi.org/10.7910/dvn/clydwu
11. Goyal, T. (2023). Representation from below: How women's grassroots party activism promotes equal political participation. *American Political Science Review.*https://doi.org/10.1017/s0003055423000953
12. Goyal, T. (2024). Local political representation as a pathway to power: A natural experiment in India. *American Journal of Political Science.*https://doi.org/10.1111/ajps.12840
13. Haider, E., & Nooruddin, I. (2023). Well-behaved women: Engendering political interest in public opinion research. *Comparative Political Studies.*https://doi.org/10.1177/00104140231209961
14. Hussain, M. A. (2025). Gender equality and the educational achievement index (EAI) in Northeast India. *Social Science and Humanities Journal, 9*(01), 6567–6576. https://doi.org/10.18535/sshj.v9i01.1613
15. Karekurve-Ramachandra, V., & Lee, A. (2024). Can gender quotas improve public service provision? Evidence from Indian local government. *Comparative Political Studies.*https://doi.org/10.1177/0010414024 1252080
16. Kaur, K. P., & Philips, A. Q. (2022). A moveable benefit? Spillover effects of quotas on women's numerical representation. *Political Research Quarterly, 76*(2), 680–696. https://doi.org/10.1177/10659129221108697
17. Kumari, S., Nanduri, S., Sharma, H., &Batar, S. (2024). Women in politics: Examining their impact on policy development - A comprehensive review. *Multidisciplinary Reviews, 6*, 2023ss034. https://doi.org/10.31893/multirev.2023ss034
18. Kuteesa, K. N., Akpuokwe, C. U., & Udeh, C. A. (2024). Gender equity in education: Addressing challenges and promoting opportunities for social empowerment. *International Journal of Advanced Research in Social Sciences, 6*(4). https://doi.org/10.51594/ijarss.v6i4.1034
19. Le, K., & Nguyen, M. (2021). How education empowers women in developing countries. *The B.E. Journal of Economic Analysis & Policy, 21*(2), 511–536. https://doi.org/10.1515/bejeap-2020-0046
20. Li, Y. (2024). Systemic and sociocultural factors impeding women's political participation and leadership development. *SHS Web of Conferences, 174*, 03012.
21. Mathur, S. (2017). From reservation to public service provision: Impact of reservations for women in government on maternal health. https://thesis.eur.nl/pub/41854/SMathur_MA_2016_17_GDP.pdf
22. Mohapatra, B. P., Desai, U., & Pawar, A. (2023). Does gender-based representation matter in fostering political inclusion of women in local governments? A case of India. *Socioeconomic Challenges.*https://doi.org/10.61093/sec.7(3).63-75.2023
23. Nargis, A. A. (2023). Women 2019's political representation in India. *ShodhKosh Journal of Visual and Performing Arts.*https://doi.org/10.29121/

shodhkosh.v4.i2.2023.2814
24. Norris, P. (2002). *Democratic phoenix: Reinventing political activism*. Cambridge University Press.
25. Pandey, P., Choubey, A. K., & Rai, G. (2021). The involvement of women as the domestic decision maker: A study of Patna Metropolitan City, Bihar, India. *Sociedade&Natureza, 33*. https://doi.org/10.14393/SN-v33-2021-62053
26. Prillaman, S. A. (2023). The patriarchal political order and the gendered participation gap in India. *American Political Science Review, 117*(1), 123–140.
27. Sekhon, J. (2011). *Engendering grassroots democracy: Research, training, and networking for women in local self-governance in India.*
28. Sharma, D., & Devi, L. (2019). Role of education in women empowerment. *International Journal of Research and Analytical Reviews, 6*(2), 432–437.
29. Sharma, D., & Devi, L. (2022). Karbi women in oral traditions and folklore. In *Women in Diphu: Social and Political Dynamics*.
30. Sharma, E. (2020). Women and politics: A case study of political empowerment of Indian women. *International Journal of Sociology and Social Policy, 40*, 607–626. https://doi.org/10.1108/IJSSP-12-2019-0261
31. Siingh, S. (2023). The political participation of rural women and its societal impact. *Journal of Advances and Scholarly Research in Allied Education, 20*(3), 440–447. https://doi.org/10.29070/gqtmjg48
32. Teron, R. (2011). Gender and power in Karbi social institutions. *Karbi Cultural Studies, 3*(1), 22–30.
33. Wang, L., & Chen, X. (2020). Voter education and women's electoral participation in rural China. *Asian Journal of Political Science, 28*(2), 150–172.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

बाठेड़ा रावत एकलिंगदास सारंगदेवोत का मेवाड़ इतिहास में योगदान

शिल्पा मल्लिक* डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत**

* छात्रा, एम.ए.(उत्तरार्ध) (इतिहास) मेवाड़ विश्वविद्यालय, गंगरार, चित्तौड़गढ़ (राज.) भारत
** सह-आचार्य (इतिहास) मेवाड़ विश्वविद्यालय,गंगरार, चित्तौड़गढ़ (राज.) भारत

प्रस्तावना – मेवाड़ के सूर्यवंशी गुहिलोत सिसोदिया वंश की स्थापना मेवाड़ में 6-7वीं शताब्दी ई. में हुई और अपने पितृ पुरुष गुहिल (566 ई.) के नाम से यह वंश गुहिलोत कहलाया।[1] इस राजवंश के प्रसिद्ध शासक बप्पा रावल[2], खुमाण, जैतसिंह, महाराणा लाखा, कुम्भा, सांगा व प्रताप हुए। इनकी मुख्य वंशावली[3] इस प्रकार रही।

राजा गुहिल, भोज, महेन्द्र, नाग, शीलादित्य या शील (646 ई.), अपराजित, महेन्द्र द्वितीय, कालभोज बापा या बप्पा रावल, खुमाण, मत्तट, भर्तृभट्ट, सिंह, खुमाण द्वितीय, महायक, खुमाण तृतीय, भर्तृभट्ट द्वितीय, अल्लट या आलू रावल (951 ई.), नरवाहन, शालिवाहन, शक्तिकुमार (977 ई.), अंबा प्रसाद, शुचिवर्मा, नरवर्मा, कीर्तिवर्मा, योगराज, वैरट, हंसपाल, वैरिसिंह, विजयसिंह, अरिसिंह, चोड़सिंह, विक्रमसिंह, रणसिंह या कर्णसिंह, रावल क्षेमसिंह, रावल सामंत सिंह, कुमारसिंह, मथनसिंह, पद्मसिंह, जैत्रसिंह, तेजसिंह, समरसिंह, रावल रत्नसिंह (1303 ई.), महाराणा हम्मीरसिंह (1326-1364ई.) महाराणा क्षेत्रसिंह या खेता (1364-1382ई)।

बड़वा देवीदान की ख्यात में मेवाड़ महाराणा लाखा की रानीयों व कुँवरों के नाम इस प्रकार दिये गये हैं[4]-1 राव वीरमदेव खींची की पुत्री लखमादे कँवर, जिनके तीन पुत्र हुए-चूण्डा, राघवदेव, दुल्हा। 2 राव भीमसिंह चौहान की पुत्री प्यार कँवर, जिनके दो पुत्र हुए-अज्जा, डुंगर सिंह। 3 राव चूण्डा(चूड़ा) राठौड़, मण्डोर की पुत्री चम्पा कँवर जिनसे एक पुत्र और दो पुत्रियाँ हुई - मोकल, राजकँवर, करमेती। 4 राव डुंगर सिंह देवड़ा की पुत्री राव कँवर जिनसे तीन पुत्र हुए - उदो, भोम, नसो।

टोंकरा के बड़वा हम्मीरजी और राणीमंगा खेमराजजी की पोथी के संदर्भो से सोलंज ठिकाने की तवारीख बतलाती है कि चुण्ड, राघवदेव, व अज्जा, ये तीनों महाराणा लाखा की पाटवी रानी खींचणजी लखमादे कंवर के पुत्र थे।[5]
चित्तौड़-उदयपुर का पाटनामा के अनुसार..... महाराणा जी श्री लाषाजी के घरे गागरोण की षीचण करमावती कवर- उत की जी के बेटा चोडोजी 1 राघव देवजी 2 दुजी राठौड़ मंडोवरी गेगकवर जी के बेटा मोकलजी 3 तीजी देवड़ी सीराही री देउबाई जी के बेटा दुलोजी 4 चोथी देवड़ी अणतुबाई जी के बेटा मेरोजी 4 सीधोजी 5 अजोजी 6 डुगरसीजी 7 पाचमी डाभी देलुबाई जी के बेटा रूदरोजी 8 दुरगोजी 9 परबतजी 10 कहनोजी 11 चठी सांषली सहजाबाई जी के बेटा भीमजी 12 करणजी 13 केहरजी 14 सातमी राठौड़ मंडोवरी गेग कवरजी के बेटा मोकल जी 15 नीसलजी 16 माहाराणाजी श्री लाषाजी रे राजलोक छव 6 छव माहाराणीया थी।[6]
मुहणोत नैनसी की ख्यात में महाराणा लाखा के सात पुत्रों के नाम दिए गये हैं- चूण्डा, राघवदेव, उदा, रूदा, दुल्हा, गजसिंह, डुंगरसिंह। परन्तु इसमें अज्जा का नाम भूल से नहीं दिया गया है।[7]इतिहासकार डॉ. गोरीशंकर हीराचन्द ओझा ने वीर विनोद और ख्यातों के आधार पर नौ पुत्रों[8] के नाम दिए हैं-

चूण्डा – इनके वंशज चूण्डावत कहलाये जिनमें जग्गावत, सांगावत, मेघावत व कृष्णावत और कान्धलोत, मौजावत, आसावत प्रमुख उपशाखाएँ रही हैं। आमेट, देवगढ़, बेगूँ, सलुम्बर, कोशीथल, मेजा, बेमाली, भैंसरोड़गढ़, कुराबड़, आसीन्द, चावण्ड, भदेसर, लुणदा, बम्बोरा, बस्सी, राजाजी का करेड़ा, भगवानपुरा, लसाणी, संग्रामगढ़, ताल, थाणा, चिताम्बा, भादु, साड़ास, झालरा, बडु, सैलागुढ़ा, भोपजी का खेड़ा, कोटड़ी, ज्ञानगढ़ आदि ठिकाने चूण्डावतों के रहे हैं।[9]

राघवदेव – राठौड़ रणमल व उनके साथी राठौड़ों द्वारा षडयंत्र करके चित्तौडगढ़ में मार दिए गये।[10] इनकी छत्री चित्तौडगढ़ दुर्ग पर सिसोदियों की कुलदेवी बाणमाता मन्दिर के निकट स्थित है। इनको सिसोदिया वंश का पहला 'पितृ' मान कर अपार श्रद्धा के साथ इनकी पूजा की जाती है।[11] सोलंज ठिकाने की तवारीख के अनुसार 'कुँवर कलेशजी (कलशजी)के बाद दूसरे पूर्वज राघवदेवजी सिसोद कुल में कुँवारे मारे गये, सो पूजाते है।'[12] स्पष्ट है कि गुहिलोत सिसोदिया कुल के पहले पूर्वज बड़वा हम्मीरजी व राणीमंगा की पोथी के अनुसार कुँवर कलशजी है।

अज्जा – इनके ज्येष्ठ पुत्र सारंगदेव से सारंगदेवोत शाखा का प्रादुर्भाव हुआ जो कि 'सारंगदेवोत अज्जावत' कहलाये। इनके मेवाड़ में स्थित मुख्य ठिकाने इस प्रकार रहे हैं- कानोड़, बाठेड़ा, पराणा, मादड़ी, नैनवारा, भाणपा, कच्छेर, अचलाना, औनाडसिंहजी की भागल, कराणा, लवारतलाई, तलाउ, गुड़ा, शोभजी का गुड़ा, बांसा, सिसवी, कचुमरा, खेड़ी, देवरी, नया तलाब, सारण, मोड़ा का तलाव, लक्ष्मणपुरा, रचका का कुआँ, रावतपुरा, कालाखेत, गोपालपुरा, महासिंहपुरा।[13] इस सारंगदेवोत शाखा की एक स्वतंत्र स्टेट देवमूँगा या देवउमगा(मगध) की स्थापना 17वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में बिहार में की गई।[14]

ठिकाना बाठरड़ा – बाठरड़ा सारंगदेवोत सिसोदियों का द्वितीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। महाराणा रायमल (1473-1507 ई.) के समय रावत सारंगदेव प्रथम ने सूरजमल खेमकरणोत की सहायता से बाठरड़ा और उसके

आस-पास के क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था। कई वर्षो तक बंबोरा इनकी वतन-जागीर रही। महाराणा जगतसिंह प्रथम (1628-1652ई.) और महाराणा राजसिंह प्रथम (1652-1680ई.) कालीन जागीरदारों की पट्टा बहियों से विदित होता है कि उस समय बाठरड़ा सारंगदेवोतों के पट्टे में नहीं था। महाराणा संग्रामसिंह के समय रावत महासिंह के छोटे भाई सूरतसिंह को यह ठिकाना मिला।[15] रावत सूरतसिंह की मृत्यु के बाद उनके पौत्र जोगीराम (वि.स. 1798) 1741 ई. में गद्दी पर बैठे।

बाठेड़ा रावत एकलिंगदास सारंगदेवोत-इनका जन्म (वि.स. 1802) 1753 ई. में हुआ। कुँवरपदे में एकलिंगदास महाराणा हम्मीरसिंह द्वितीय (1773-1778 ई.) की सेवा में उदयपुर में ही अधिकांशत: रहा करते थे। अपने पिता जोगीराम की मृत्यु के बाद (वि.स. 1842) 1785 ई. में बाठरड़ा की गद्दी पर बैठे। उस समय मेवाड़ की बागडोर महाराणा भीमसिंह के हाथ में थी। महाराणा भीमसिंह (1778-1828 ई.) के काल में भी रावत एकलिंगदास महाराणा की सेवा में अधिकाशत: उदयपुर ही रहा करते थे। चूण्डावत व शक्तावतों के बीच पहले से ही मनमुटाव था। प्रधान सोमचन्द गांधी ने भीण्ड़र व लावा-सरदारगढ़ के शक्तावतों का पक्ष लेकर चूण्डावतों को क्षीण करने का प्रयास किया। इस पर सलुम्बर रावत भीमसिंह ने सोमचंद गांधी को मरवाने का निश्चय कर इसके लिए एकलिगंदास से बातचीत की परन्तु वह राजी नहीं हुए।[16]

(वि.स. 1846) 1789 ई. में कुराबड रावत अर्जुनसिंह और चावण्ड रावत सरदारसिंह चुण्डावत ने महलों में पहुँचकर सोमचंद का काम तमाम कर दिया। रावत एकलिंगदास सारंगदेवोत ने चूण्डावतों का साथ छोड़ दिया। इसलिए वे उनसे नाराज रहने लगे। तवारीख बाठरड़ा में लिखा है कि सलुम्बर रावत भीमसिंह, कुराबड़ रावत अर्जुनसिंह और चावण्ड रावत सरदारसिंह आदि चूण्डावतों ने एक दिन एकलिंगदास को दावत पर बुलाया और उन्हें खाने में विष मिलाकर दे दिया जिससे उनकी मृत्यु (वि.स. 1852) 1795 ई. में हो गई। इनके तीन पुत्र हुए- मोहब्बतसिंह, गोकुलदास व गिरवरसिंह। गिरवरसिंह को मोड़ा तालाब भाई-बंट में जागीर में मिला। रावत एकलिंगदास की पुत्री का प्रथम श्रेणी के 16 उमरावों में से एक बिजौलिया के पंवार जागीरदार से विवाह करवाया।[17]

'मेवाड़ राज्य की वि.सं. 1800-1809 की जागीरदारां री जमा राशि का विवरण'[18] नामक दस्तावेज में अग्रानुसार विवरण प्राप्त होता है कि-

....

रावत एकलिंगदास जोगीरामोत बाठरड़ा

वीगत

- 4500)संवत् 1802 आषाढ़ सुद 15 ज्मे रू.5601
- 1595) संवत्1812 फागुण सुदी 15
- 1422) संवत् 1804 री सुदी..... 2251)संवत् 1811 जेठ सुद 15 ...ज्मे रू. 5201)
- 2100)संवत् 1814 पौष सुद 15.... 300)संवत्1815 काती बद 12 ज्मे रू. 2401)म्ये.

रावत एकलिंगदास बाठरड़ा का विवरण 'बाठेड़ा तवारीख' में अग्रानुसार मिलता है कि- '.....रावत एकलिंगदास कुँवरपदे से ही महाराणा श्री हमीरसिंह की सेवा में रहते थे। उसी तरह गद्दी पर बैठने के बाद भी ज्यादातर उदयपुर में ही महाराणा हमीरसिंह तथा महारणा भीमसिंह की सेवा में हाजिर रहे। इस समय मेवाड़ देश के प्रधान का काम शाह सोमचंद गांधी करते थे और रावत एकलिंगदास की निजी तौर पर इनसे बड़ी दोस्ती थी। सलुंबर रावत भीमसिंह ने किसी अदावत से शाह सोमजी को मारना चाहा तब सलुंबर रावत भीमसिंह रावत एकलिंगदास से बोले, 'आप किसी रीति से शाह को मार डाले तो हमारे ऊपर बड़ा अहसान होगा।' रावत एकलिंगदास को यह बात नागवारा गुजरी। फलत: इन्होंने ये कुल हाल महाराणा भीमसिंह को श्रवण करा दिया और शाह सोमचंद को सचेत करने के लिए उन्हें बता दिया। तब तो रावत भीमसिंह ने शत्रुतावश होकर रावत एकलिंगदास को मारने का उपाय शुरू किया। उपर्युक्त घटनाक्रम एवं अदावत से एक दिन सलुंबर रावत भीमसिंह ने कुराबड़ रावत अर्जुनसिंह तथा चावंड रावत सरदारसिंह से मिलकर एक गोठ के आयोजन (खुशी की दावत) के बहाने से रावत एकलिंगदास को अपनी हवेली में बुलाया। कुछ देर तक राग-रंग होने के बाद खाना खाने के वक्त उपर्युक्त तीनों सरदारों ने अपने हाथ से रावत एकलिंगदास को संखिया(विष) मिला हुआ खाना खिलाया जिससे उसी रात उनका स्वर्गवास हो गया था। एकलिंगदास का जन्म वि.सं. 1810 में हुआ और वि.सं. 1852 में जहर देने से 42 वर्ष की आयु में देवलोक हुए। उनके तीन पुत्र थे - मोहब्बतसिंह, गोकुलदास, गिरिवरसिंह।.....'

बाठरड़ा रावत एकलिंगदास की पुत्री नात या नेतकंवर बाईजी का विवाह गोगुन्दा राजराणा शत्रुशाल द्वितीय(वि.सं.1835-वि.सं.1910)के साथ हुआ था जिसका उल्लेख गोगुन्दा की ख्यात में अग्रानुसार है - '.....राजसाब सत्रुसालजी के ब्याव ई मुजब हुआ.....(दूसरा राजलोक /विवाह)सीसादणीजी नात कंवर बाई बाटरड़े रावजी अेकलिंगदासजी री बेटी 1853 वैसाष सुदी 7.....।'[19] राजराणा शत्रुशाल द्वितीय गोगुन्दा ने तीन विवाह किये थे जिसमें से द्वितीय विवाह बाठेड़ा किया था।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. कविराजा श्यामलदास, वीर विनोद, भाग-1, पृ. 239, 248 महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन ट्रस्ट सिटी पेलेस उदयपुर एवं राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर 2017 ; ओझा, उदयपुर राज्य का

इतिहास, भाग–1, पृ. 96–98 राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर 2022
2. कविराजा श्यामलदास, वीर विनोद, भाग–1, पृ. 234–238; (बप्पा रावल ने मौर्य शासक मान मौरी को पराजित करके 734 ई. में चित्तौड़गढ़ में अपनी राजधानी चित्रकूट नाम से स्थापित की); राठौड़ मोहब्बतसिंह, बापा रावल, पृ 2–35प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर
3. कविराजा श्यामलदास, वीर विनोद, भाग–1, पृ. 267–272; ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग–1, पृ. 217, 218, 243–258
4. सं. पालीवाल देवीलाल, मेवाड़ के राजाओं की राणियों, कुँवरों और कुँवरियों का हाल (बड़वा देवीदान कृत ख्यात), पृ. 3 प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर
5. सोलंज ठिकाने की तवारीख, पाना सं.4,ठिकाना सोलंज का संग्रह
6. सं. डॉ. मनोहर सिंह राणावत, चित्तौड़–उदयपुर का पाटनामा, भाग–2, पृ.सं.78नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ
7. सं. ओझा गौरीशंकर हीराचंद, अनुवादक– दुग्गड़ रामनारायण, मुहणोत नैणसी की ख्यात, भाग–1, पृ. 58 राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर
8. देवगढ़ (मेवाड़) का इतिहास, पृ. 1अप्रकाशित तवारीख,प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर; कविराजा श्यामलदास, वीर विनोद, भाग–1, पृ. 308; ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग–1, पृ.270; राव शिवसिंह (महावीर सिंह, देवीसिंह) खेड़लिया (कुंठवा, नाथद्धारा, जिला राजसमन्द) की पोथी में सुरक्षित वंशावली के अनुसार महाराणा लाखा के तेरह पुत्र थे। प्रसिद्ध पुत्रों के अलावा इनमें से अन्य नाम इस प्रकार है: आहड़, सुलका (ठि. सायरों का खेड़ा, मड़का), डूंगर, सत्ता, रजोधर, सदो (बावजी चतरसिंह सारंगदेवोत संग्रह बोहेड़ा में सुरक्षित वंशावली की प्रतिलिपि)।
9. सं. जैतावत शशि, मासिक राज नोबल्स पत्रिका, राजसमन्द, वर्ष–6, अंक–7, पृ.4–5;विमला भंडारी, सलुंबर का इतिहास, पृ. 28, माण्डू सुल्तान होशंगशाह ने 42 लाख की वार्षिक आय का मंदसौर का जागीरी पट्टा रावत चूंडा को प्रदान किया;चूण्डावत उम्मेदसिंह, पत्त पत्त प्रमाण, पृ. 58–59
10. देवगढ़ (मेवाड़) का इतिहास, पृ.2 ; कविराजा श्यामलदास, वीर विनोद, भाग–1, पृ.319; ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास,भाग–1, पृ. 283; पालीवाल पुजारी प्रभुलाल, गुहिलवंशी सिसोदिया मेवाड़ महाराणाओं की कुलदेवी बायण माता एवं इष्टदेवी अन्नपूर्णा माता दुर्ग चित्तौड़गढ़ (राज), पृ. 10
11. Lieut col. Tod. James, Annals and Antiquities of Rajasthan,Vol.-I, pg. 325; बायण माता मन्दिर के पूजारी मुकेश पालीवाल का साक्षात्कार;पालीवाल पुजारी प्रभुलाल, गुहिलवंशी सिसोदिया मेवाड़ महाराणाओं की कुलदेवी बायण माता एवं इष्टदेवी अन्नपूर्णा माता दुर्ग चित्तौड़गढ़ (राज), पृ. 10
12. सोलंज ठिकाने की तवारीख, पाना सं.4
13. टोंकरा के बड़वा कृपाल सिंह की पोथी के अनुसार, पाना नं. 3–5
14. कानोड़ रावत प्रताप कृत हस्तलिखित डायरी 'कानोड़ का इतिहास' के अनुसार; तवारीख सार राजस्थान कानोड़, मेवाड़, पृ.21–22; बावजी चतरसिंह सारंगदेवोत संग्रह ठिकाना बोहेड़ा के अनुसार
15. सं. भाटी हुकमसिंह, मज्जमिका, महावजस प्रकाश, भाग–13, पृ. 49; सं.पाण्डेय डॉ. ललित, शोध पत्रिका, वर्ष–60, अंक–1–4, पूर्णांक 238–241, पृ. 296
16. बाठरड़ा की तवारीख, (प्र.शो.प्र.उ.),पृ.21–23
17. बाठरड़ा की तवारीख, (प्र.शो.प्र.उ.), पृ. 22–23;बाठेड़ा तवारीख (भाणावत संग्रह) के अनुसार रावत एकलिंगदास की पुत्री के विवाह का विवरण (बिजोलिया) प्राप्त होता है
18. वि.सं. 1800–1809 की जागीरदारां री जमा राशि का विवरण, राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर एवं अभिलेखागार फोटो जेरोक्स, 75– ग्रन्थांक परिग्रहण संख्या,पाना सं.34, रिकॉर्ड संग्रह प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर
19. सं. हुकमसिंह भाटी, मज्झमिका, गोगुन्दा की ख्यात, पृ.सं.33,प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

A Five-Year Analysis of Changes in Vegetable Arrivals at the APMC in Shajapur District: A Case Study of Potatoes, Onions and Garlic

Nitya Sharma* **Dr. Sunil Advani****

*Research Scholar, School of Studies in Commerce, Vikram University, Ujjain (M.P.) INDIA
** Assistant Professor (Commerce) Pt. Balkrishna Sharma, "Naveen" P.G. College, Shajapur (M.P.) INDIA

Abstract : The Agricultural Produce Marketing Committee (APMC) of Shajapur district plays a vital role in facilitating the marketing of agricultural produce, particularly vegetables. This study is based entirely on secondary data collected over a five-year period from 2018-2019 to 2022- 2023 focusing on the arrivals of key vegetables such as potatoes, onions, and garlic at APMC in Shajapur District. The objective is to analyze how the arrivals of these vegetables have changed over time and to explore the key factors influencing these changes. Factors such as climatic variations, shifts in cropping patterns, market demand, and price fluctuations have been considered to understand the observed trends. By systematically analyzing the annual arrival data, the study provides valuable insights into the dynamics of agricultural marketing in the region and suggests areas for improvement to strengthen the market system and agricultural planning.
Keywords- Agricultural Marketing, Climate Variations, Market Demand, Price Fluctuations, Vegetable Arrivals.

Introduction - Agriculture is the cornerstone of India's economy, providing employment to a significant portion of the population and contributing substantially to the national GDP. The agricultural sector not only supports domestic consumption but also plays a vital role in generating export revenue. Various districts across India are known for their unique agricultural contributions, and Shajapur, located in Madhya Pradesh, stands out as one such district. In Shajapur, agriculture remains the primary source of livelihood for a large portion of the population, with vegetables playing a critical role in the local economy. These crops are essential not only for local consumption but also significantly influence trade, local supply chains, and pricing mechanisms in the region. In Shajapur district, the Agricultural Produce Marketing Committee (APMC) serves as the central institution for the marketing and trade of agricultural produce, particularly vegetables. The APMC acts as a critical marketplace where farmers, traders, wholesalers, and retailers converge to buy and sell vegetables. This regulated market ensures a systematic approach to trade, promoting fair prices for both producers and consumers. Despite its crucial role, the quantity and types of vegetables arriving at APMC Shajapur have fluctuated significantly over the years. These variations are influenced by several factors, including climatic conditions, market demand, shifts in cropping patterns, and other economic variables impacting the agricultural sector. Climatic fluctuations, particularly unseasonal rains and extended dry periods, have a profound impact on vegetable yields in Shajapur. Such climatic changes can lead to reduced crop productivity, resulting in a decreased supply of vegetables in the market. The unpredictability of weather events has made it difficult for farmers to forecast their harvests, causing fluctuations in vegetable arrivals at APMC. These uncertainties disrupt the harvest schedules and affect both supply and demand dynamics. In addition to climate, shifts in cropping patterns among farmers also contribute to the variations in vegetable arrivals at APMC. Over time, farmers have altered their crop choices based on factors such as market demand, economic viability, and environmental conditions. This has led to changes in the types of vegetables available in the market, which directly affects pricing and supply. Market demand also experiences fluctuations due to factors such as seasonal preferences, changing consumer habits, and economic influences. Events like festive seasons and dietary trends play a crucial role in determining demand, while challenges like inadequate infrastructure, cold storage facilities, and transportation inefficiencies continue to impact the operations of APMC Shajapur.

Literature Review-

1. Samirkumar R. Bhadani and Snehal Mishra (2024) discussed, "Marketing of Fruits and Vegetables in the Agricultural Produce Marketing Committee, Vashi, Navi Mumbai". The purpose of this study is to examine the marketing dynamics and pinpoint areas for improvement

in the supply chain for fruits and vegetables at the Agricultural Produce Market Committee (APMC) in Vashi. The study looks into marketing expenses, sales and purchasing procedures, and the several aspects that affect price setting. Structured questionnaires were used to gather data. Their participation causes farmers' profit margins to shrink and marketing expenses to rise. The study also finds notable differences in pricing spreads, profit margins, and marketing expenses among various commodities. Price behavior is found to be significantly influenced by market rivalry, highlighting the significance of creating a more open and competitive economy.

2. Sharma Isha and Kumari Shailja (2021) examined "Trends in arrival and prices of major fruit and vegetables in APMC Kullu, Himachal Pradesh". The study discussed the trends in the arrival and prices of vegetable crops over a period of five years. It found that while prices of all vegetable crops increased, arrivals did not follow a consistent pattern. The variation in prices was lower compared to the variation in arrivals in the APMC Kullu and Lahul-Spiti markets. The seasonality of both fruit and vegetable crops was also investigated. Compared to vegetable crops, it was discovered that fruit crops had a comparatively low-price seasonality. Furthermore, because of local supply patterns, the seasonality in crop arrivals was much stronger for fruits, although the strong demand for both fruits and vegetables helped to limit the seasonality in prices.

3. Bhumit Shah, Shweta Chaudhry, Ajay Kumar Tripathi, Kiran Rana, Abhipsa Jena (2025) discussed "Impact of e-Nam on arrival and prices of selected vegetables: A case study of Rudrapur APMC". The study was conducted at the Rudrapur APMC in Udham Singh Nagar district, where data was gathered from two distinct groups: 40 farmers registered with e-NAM and 40 farmers who, although not registered, were actively involved in vegetable cultivation. The primary aim of this research was to assess the market dynamics and examine the effect of e-NAM registration on vegetable arrivals and pricing within the APMC.

4. Dr. Nilesh U. Bankar, Prof. Mohasin A. Tamboli (2018) examined "A Study of Fruits & Vegetables Marketing in Pune District: An Overview" highlighted the key challenges in marketing such as lack of infrastructure, poor storage facilities, and price fluctuations. They emphasized the need for improved logistics and modern market systems to ensure better price realization for farmers and reduce post-harvest losses.

Objectives of the Study:

1. To analyze the changes in the arrivals of major vegetables (potatoes, onions, and garlic) at the APMC in Shajapur District during the five-year period from 2018-2019 to 2022-2023.
2. To identify the key factors influencing the variations vegetable arrivals including climate conditions, market demand, pricing fluctuations and cropping patterns.
3. To provide recommendations for improving the agricultural market system and market planning.

Hypothesis-

H0: There is no significant change in the arrival of vegetables at the APMC in Shajapur District.

H1: There is a significant change in the arrival of vegetables at the APMC in Shajapur District.

Research Methodology- The research methodology employed in this study follows a systematic approach to investigate changes in the arrivals of vegetables at APMC in Shajapur district. This study is based on secondary data collected from the official records of the Agricultural Produce Marketing Committee (APMC), Shajapur. The data span a period from 2018-2019 to 2022-2023, and includes information from several mandis within the district, including Shujalpur, Shajapur, Kalapipal, Akodiya, Maksi, Bercha, and Mo. Badodiya. Quantitative methods are used to analyze trends, fluctuations, and other influencing factors, ensuring the reliability and relevance of the findings.

Data Analysis and Interpretation-

I. Analysis of changes in Vegetable Arrivals at APMC in Shajapur District.

Data were collected from the records maintained by the APMC office in Shajapur over a five-year period, covering the arrivals of potatoes, onions, and garlic from 2018-2019 to 2022-2023. The data set includes total annual arrivals for each of these vegetables and has been analyzed to identify trends and changes over the years.

Figure I: The data has been summarized and represented in the table below to show the vegetable arrivals at APMC over the five-year period. Additionally**, percentage changes** will be calculated to analyze the variations in the arrivals of potatoes, onions, and garlic. This analysis will help in understanding the trends and factors affecting the changes in arrivals. The changes in arrivals will also be visually represented using a **bar graph** to provide a clear comparison across the years.

Table (see in last page)

To analyze the variations in the total vegetable arrivals over the five-year period (2018-2019 to 2022-2023), the percentage change will be calculated year-by-year.

Formula-

Percentage Change:

$$\frac{\text{(Current Year Arrival - Previous Year Arrival)}}{\text{(PreviousYear Arrival)}} \times 100$$

Below is the year-wise table showing the total arrivals of vegetables and the percentage change for each year (2018-2019 to 2022-2023).

S.	Year	Total Arrivals	Percentage Change%
1	2018-2019	2680008	-
2	2019-2020	2141334	-20.10% (Decrease)
3	2020-2021	3317340	+54.92% (Increase)
4	2021-2022	3920159	+18.17%(Increase)
5	2022-2023	5986234	+52.70% (Increase)

Interpretations:

1. The percentage change cannot be calculated for 2018-2019 as it is the base year.
2. 2019-2020: The total arrivals of vegetables decreased by 20.10% compared to the previous year (2018-2019). This significant drop could be attributed to various factors such as market fluctuations, adverse climatic conditions, or reduced agricultural output during that year.
3. 2020-2021: The total arrivals saw a dramatic increase of 54.92%. This rise suggests a recovery or growth in vegetable production, likely due to better climatic conditions, higher crop yields, or increased demand in the market during this period.
4. 2021-2022: A moderate increase of 18.17% in vegetable arrivals compared to 2020-2021 indicates consistent growth in production or improved supply chain efficiency, though at a slower pace than the previous year.
5. 2022-2023: The total arrivals increased by 52.70%, which is another significant rise. This sharp increase could be attributed to favorable weather conditions, increased production capacity, or higher market demand during this year.

Over the five-year period from 2018–2019 to 2022–2023, the total vegetable arrivals at APMC Shajapur showed significant fluctuations. After a notable decline in 2019-2020, there was a strong upward movement in the subsequent years, with particularly sharp increases in 2020-2021 and 2022-2023. These changes reflect the impact of varying agricultural practices, climatic conditions, and market forces, indicating an overall positive growth trend in vegetable arrivals.

The following graph visually represents the year-wise total arrivals of key vegetables potatoes, onions, and garlic) at APMC, Shajapur District, highlighting the trends and fluctuations observed over a five-year period.

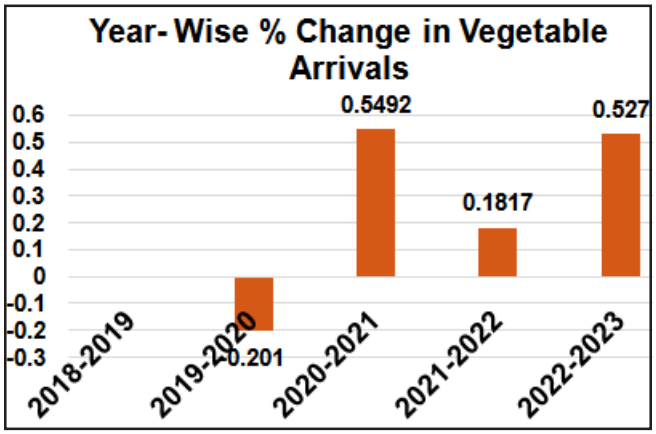

Result: The graphical representation clearly illustrates the **year-wise fluctuations** in the total arrivals of vegetables, reflecting both significant increases and decreases over the five-year period. **Notably, a substantial decrease of 20.10% was observed in 2019-2020**, followed by a **sharp increase of 54.92% in 2020-2021**, and subsequent **steady increases** in the following years. These trends **align with** the statistical analysis, which led to the rejection of the **null hypothesis (H_0)**, which proposed no significant change in arrivals. The acceptance of the **alternative hypothesis (H_1)** confirms that there is **indeed** a significant change in the arrivals of vegetables at APMC in Shajapur district from 2018–2019 to 2022–2023.

Findings:

1. There was significant year-wise variation in total vegetable arrivals from 2018-2019 to 2022- 2023, indicating fluctuations in production and supply influenced by climatic and market conditions.
2. In 2019-2020, a sharp decline of 20.10% in arrivals was recorded, likely due to adverse weather and disruptions in the agricultural supply chain.
3. In 2020-2021, arrivals surged by 54.92%, suggesting a strong recovery in production, potentially driven by improved climate, higher yields, and strong demand.
4. In 2021-2022, arrivals grew by 18.17%, pointing to stable and consistent production, though the growth rate was lower than the previous year.
5. The year 2022-2023 saw another sharp increase of 52.70%, reinforcing the continued growth in agricultural output and market responsiveness.
6. Climatic conditions and market demand impacted vegetable arrivals and cropping patterns, with unfavorable weather reducing output and favorable conditions boosting supply. Market trends also led farmers to focus more on high-demand vegetables like onions and garlic.

Suggestions- To ensure stability in vegetable arrivals and better support farmers, several measures are recommended. First, strengthening weather monitoring systems and providing timely advisories can help farmers manage weather-related risks. Second, promoting crop diversification through training and financial incentives can reduce reliance on specific vegetables like onions and garlic. Improving market linkages, such as transportation, cold storage, and market connectivity, will reduce post-harvest losses. Price stabilization measures are also essential to protect farmers from volatile prices. Finally, a data-driven approach to planning, based on arrival trends, will enable informed decisions on procurement, storage, and distribution, benefiting both farmers and markets.

Conclusion- The five-year analysis 2018-2023 of vegetable arrivals at APMC Shajapur shows notable year-to-year fluctuations, including a decline in 2019-2020 followed by consistent increases particularly sharp in 2022-2023. These changes were shaped by climatic conditions, market demand, and cropping patterns. Statistical analysis confirms significant variation, rejecting the null hypothesis. Overall, the trend reflects positive growth, highlighting the need for

better agricultural planning, infrastructure, and farmer support for a stable and efficient supply chain.

References:-

1. Bankar, N. U., & Tamboli, M. A. (2018). A study of fruits & vegetables marketing in Pune district: An overview. *IBMRD's Journal of Management & Research*, *7*(1), 1-10.
2. Sah, B., Chaudhary, S., Tripathi, A. K., Rana, K., & Jena, A. (2025). Impact of e-NAM on arrival and prices of selected vegetables: A case study of Rudrapur APMC. *International Journal of Agriculture Extension and Social Development*, *8*(2), 50-54. https://www.extensionjournal.com.
3. Bhadani, S. R., & Mishra, S. (2024). Marketing of fruits and vegetables in the Agricultural Produce Marketing Committee, Vashi, Navi Mumbai. *Asian Journal of Research in Agriculture & Forestry*, *24*(6), 1-10. https://doi.org/10.9734/acri/2024/v24i6802.
4. Sah, S., Johar, V., & Karthi, J. S. (2022). *Status and marketing of fruits and vegetables in India: A review*. Asian Journal of Agricultural Extension, Economics & Sociology, 40(7), 1–11.

Table: Annual Arrivals of Vegetables (Potatoes, Onion, and Garlic) at Different Locations in Shajapur District (2018-2019 to 2022-2023), based on secondary data obtained from the APMC Office, Shajapur (All Arrivals are in Quintals).

Year 2018-2019

S.	Vegetable Name	Shujalpur	Shajapur	Kalapipal	Akodiya	Maksi	Bercha	Mo. Badodiya	Total
1	Potato	3554	17943	0	0	0	0	0	21497
2	Onion	710397	905147	6654	438769	0	0	0	2060967
3	Garlic	411839	142581	4763	38361	0	0	0	597544
	Total	1125790	1065671	11417	477130	0	0	0	2680008

Year 2019-2020

S.	Vegetable Name	Shujalpur	Shajapur	Kalapipal	Akodiya	Maksi	Bercha	Mo. Badodiya	Total
1	Potato	11121	120191	0	1399	0	0	0	132711
2	Onion	526336	643917	123427	486778	0	0	0	1780458
3	Garlic	176532	11508	18398	21727	0	0	0	228165
	Total	713989	775616	141825	509904	0	0	0	2141334

Year 2020-2021

S.	Vegetable Name	Shujalpur	Shajapur	Kalapipal	Akodiya	Maksi	Bercha	Mo. Badodiya	Total
1	Potato	9052	71215	353	942	0	0	0	81562
2	Onion	785520	1268091	180074	665494	0	260	0	2899439
3	Garlic	178469	86559	34065	37246	0	0	0	336339
	Total	973041	1425865	214492	703682	0	260	0	3317340

Year 2021-2022

S.	Vegetable Name	Shujalpur	Shajapur	Kalapipal	Akodiya	Maksi	Bercha	Mo. Badodiya	Total
1	Potato	11482	239908	399	2042	0	681	0	254512
2	Onion	577583	1895369	107290	527210	0	13776	0	3121228
3	Garlic	248578	153522	54327	87344	0	648	0	544419
	Total	837643	2288799	162016	616596	0	15105	0	3920159

Year 2022-2023

S.	Vegetable Name	Shujalpur	Shajapur	Kalapipal	Akodiya	Maksi	Bercha	Mo. Badodiya	Total
1	Potato	2983	201894	243	992	0	0	0	206112
2	Onion	698029	2993169	144123	714762	0	5616	0	4555699
3	Garlic	526817	308240	157532	231683	0	151	0	1224423
	Total	1227829	3503303	301898	947437	0	5767	0	5986234

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Revival of Folktales and Culture Through Digital Media in Rajasthan

Reena Dadhich* Dr. Lokesh Sharma**

*Research Scholar (Journalism and Mass Communication) Banasthali Vidhyapith, Niwai (Raj.) INDIA
** Associate Professor (Journalism and Mass Communication) Banasthali Vidhyapith, Niwai (Raj.) INDIA

Abstract: The In the age of digital revolution, almost every field has been transformed by digitalization, and the media industry is no exception. Storytelling, a traditional medium, remains one of the most engaging and effective methods of communication. Stories are powerful tools for conveying information and ensuring it is remembered. A nation's culture, traditions, language, and history are its heritage, passing these from one generation to the next through stories is an age-old practice. In the modern world, digitalizing these stories has become essential. The revival of folktales and cultural heritage through digital media has emerged as a significant trend in contemporary times. This research paper explores the role of digital platforms, especially YouTube, in the preservation and dissemination of Rajasthan's folktales, which have historically been passed down orally. Using secondary data, the paper examines how digital media has reignited interest in Rajasthan's rich folk culture, making it accessible to a broader, global audience. It delves into both the historical roots and future potential of these platforms in maintaining cultural continuity while adapting to modern sensibilities. Additionally, with the integration of Artificial Intelligence (AI) into content creation and distribution, the scope of reviving folktales has expanded. AI tools, such as recommendation algorithms, automated captioning, and audience analytics, have enhanced the reach and engagement of folktales, connecting them with younger, tech-savvy audiences. The study highlights how content creators on YouTube engage these younger audiences, promoting cultural awareness and strengthening identity. By analyzing how AI and digital platforms such as YouTube can play a vital role in preserving endangered folktales and cultural practices, the paper underscores the importance of digitalization as a tool for safeguarding intangible cultural heritage for future generations. It also explores the challenges and future prospects of this trend, emphasizing how AI-driven platforms can shape the future of culture preservation and sustainability.

Keywords: Digitalization, storytelling, folktales, Rajasthan's culture.

Introduction - The advent of the digital age has revolutionized how stories are told and shared, bridging geographical and cultural gaps [1]. The proliferation of digital technologies has transformed traditional media landscapes, enabling instantaneous communication and access to information across the globe. Storytelling, an age-old practice integral to human culture, serves as a medium for preserving history, traditions, and moral values [2]. Throughout history, stories have been the vessels through which societies pass down collective knowledge, beliefs, and experiences. In Rajasthan, a state in India rich in cultural heritage, folktales like "Dhola-Maru" and "Pabuji Ki Phad" have been orally transmitted across generations, embodying the region's unique traditions and social values [3].

However, with modernization and globalization, there has been a decline in the oral transmission of folktales, leading to concerns about the preservation of intangible cultural heritage [4]. Younger generations are increasingly disconnected from traditional storytelling practices, often favoring digital content over oral narratives. Digital media platforms, particularly YouTube, have emerged as vital tools in the preservation and dissemination of these folktales [5]. Through digitization, these stories can reach a broader audience, transcending geographical boundaries and engaging with diasporic communities interested in reconnecting with their roots.

The integration of Artificial Intelligence (AI) in content creation and distribution has further expanded the reach of cultural narratives [6]. AI technologies facilitate the personalization of content, making it more accessible and engaging for users. AI algorithms enhance user engagement by personalizing content recommendations, thereby connecting traditional stories with contemporary audiences [7]. For instance, recommendation systems suggest folktale videos to users based on their viewing history, increasing the visibility of cultural content.

Furthermore, AI tools such as automated transcription

and translation services enable the subtitling and dubbing of folktales into multiple languages, making them accessible to non-native speakers [8]. This not only preserves the original essence of the stories but also promotes cross-cultural understanding. Content creators are leveraging AI-driven analytics to understand audience demographics and preferences, tailoring their content to maximize engagement [9].

The importance of preserving folktales is not merely about keeping stories alive; it's about maintaining the cultural identity and heritage that define a community [10]. Folktales are imbued with the collective wisdom, values, and historical experiences of a society. In Rajasthan, these stories often reflect the harsh desert landscapes, valor, romance, and the socio-cultural dynamics unique to the region. They serve as educational tools, imparting lessons and moral guidance to younger generations.

Despite their significance, traditional storytelling faces challenges in the modern era. The shift towards urbanization, changing lifestyles, and the dominance of global media content have contributed to the erosion of traditional practices. There is a risk that these invaluable cultural assets may fade into obscurity if not actively preserved and promoted.

Digital media offers a solution to this predicament by providing platforms where folktales can be archived, shared, and experienced interactively [11]. YouTube, for example, allows content creators to upload videos that can include animated versions of folktales, dramatizations, or readings, making the stories more appealing to modern audiences [5]. The interactive nature of digital platforms encourages audience participation through comments, shares, and likes, fostering a community around cultural content.

The role of AI in enhancing the reach of these stories cannot be overstated. AI-driven analytics help creators understand viewer behavior, preferences, and engagement patterns, enabling them to tailor content accordingly [6]. Machine learning algorithms can identify trends and suggest optimal times for content release, topics of interest, and even assist in content creation through tools like automated video editing. Moreover, AI-powered language processing tools aid in translating and subtitling content, breaking down language barriers and making folktales accessible to a global audience [8].

Additionally, AI chatbots and virtual assistants can be programmed to tell folktales interactively, providing a personalized storytelling experience. This innovative approach can make traditional stories more engaging for tech-savvy younger generations who are accustomed to interactive digital experiences.

However, the integration of digital media and AI in cultural preservation is not without challenges. Concerns about the authenticity of content, the potential for misrepresentation, and the digital divide affecting access to technology must be addressed [12]. There is also the risk that commercial interests may overshadow cultural preservation goals, leading to the commodification of cultural heritage.

This paper aims to explore these dynamics in depth, analyzing how digital media and AI technologies are reshaping the preservation and dissemination of Rajasthan's folktales. It seeks to understand the balance between embracing technological advancements and maintaining the integrity of traditional narratives.

By examining case studies of successful digital initiatives and analyzing data on audience engagement, the study will provide insights into best practices for leveraging technology in cultural preservation. It will also offer recommendations for policymakers, educators, and cultural organizations on how to support and promote the digital revival of folktales.

In conclusion, as we navigate the complexities of the digital age, it is imperative to harness technology to preserve and celebrate our cultural heritage. The real of Rajasthan's folktales through digital media and AI not only keeps these stories alive but also enriches the global cultural landscape, fostering understanding and appreciation across diverse communities.

Materials And Methods

Research Design: A qualitative content analysis was employed to examine how digital media platforms are used to revive and disseminate Rajasthan's folktales. The study focused on YouTube channels dedicated to Rajasthani culture and storytelling.

Data Collection: Data were collected from ten YouTube channels that specialize in Rajasthani folktales, such as *Rajasthan Tales* and *Folk Stories of India*. Videos were selected based on their relevance, view count, and engagement metrics.

Data Analysis: The selected videos were analyzed for content, presentation style, and use of AI tools. Comments and viewer interactions were also examined to assess audience engagement and cultural impact.

Ethical Considerations: All data used were publicly available, and no personal or sensitive information was collected. Proper attribution was given to the original content creators.

Results

Revival of Folktales through Digital Media: The analysis revealed that digital platforms have significantly contributed to the revival of Rajasthan's folktales. Traditional stories such as *Dhola-Maru*, a tragic romance symbolizing eternal love and sacrifice, and *Pabuji Ki Phad*, a folk epic narrating the heroic deeds of a local deity, have been transformed into various digital formats. These include animated videos, short films, audio narrations, and interactive storytelling sessions with subtitles, making them accessible to a global audience regardless of language barriers.

Content creators have utilized platforms like YouTube, Vimeo, and podcasts to disseminate these stories widely.

The "Folktales of India" YouTube channel, for instance, showcases a rich collection of Rajasthani folktale videos that have garnered substantial viewer engagement. These adaptations often incorporate modern audiovisual techniques while retaining the core essence of the original narratives, thereby appealing to both traditionalists and new-age viewers.

Figure 1: Screenshot of the "Folktales of India" YouTube channel, showcasing a variety of folktale videos and their viewer engagement. This image illustrates the channel's role in disseminating Rajasthani folk stories to a global audience.

The digital revival has not only preserved these stories but also enhanced their reach beyond geographical constraints. The accessibility of online platforms allows individuals from diverse cultural backgrounds to experience Rajasthan's rich folklore, fostering cross-cultural appreciation and understanding.

Role of AI in Content Creation and Distribution: Content creators are leveraging AI tools for various aspects of storytelling, which has significantly amplified the impact of their work:

1. Recommendation Algorithms: AI-driven recommendation systems analyze user behavior and preferences to suggest relevant content. This increases the visibility of folktale videos to users interested in similar themes, genres, or cultural content. For example, a user watching videos on Indian mythology might receive recommendations for Rajasthani folktales, thereby expanding the audience base organically.

2. Automated Captioning and Translation: AI provides real-time subtitles and translations in multiple languages, breaking language barriers and reaching non-native speakers. This feature enables the folktales to resonate with an international audience, enhancing global engagement and promoting cultural diversity.

3. Audience Analytics: Creators use AI-powered analytics tools to understand viewer demographics, engagement patterns, and content performance. Insights gained from data on watch times, drop-off points, and viewer feedback allow creators to tailor their content to audience preferences, optimize video length, and schedule releases for maximum impact.

The implementation of these AI tools has resulted in a significant uptick in viewership and subscriber growth, as depicted in Figure 2. Over a six-month period following the adoption of AI technologies, content creators observed an average increase of 45% in views and 30% in subscriber counts.

Engagement with Younger Audiences

The integration of modern elements, such as high-definition animations, contemporary music scores, and relatable themes, has notably attracted younger audiences. Interactive features provided by digital platforms, including live chats during premieres, polls, Q&A sessions, and social media integrations, have enhanced viewer engagement. These features encourage active participation, allowing viewers to share their interpretations, request specific stories, and even contribute content, thereby fostering a vibrant community centered around Rajasthan's cultural narratives.

Figure 3 illustrates the audience demographics, revealing that a significant majority (approximately 65%) of viewers are within the 18-35 age group. This demographic trend underscores the effectiveness of digital media in bridging the gap between traditional folklore and modern entertainment preferences.

Challenges Identified: Despite the positive outcomes, several challenges have been identified that could impact the sustainability of these digital initiatives:

- **Digital Divide:** Accessibility issues in rural areas, both within Rajasthan and in other parts of India, limit the reach of digital content. Factors such as inadequate internet infrastructure, lack of digital literacy, and economic constraints prevent a segment of the population from accessing online folktale content. This digital divide highlights the need for targeted efforts to improve infrastructure and education to ensure inclusive access.
- **Cultural Authenticity:** Concerns have been raised about the potential dilution or misrepresentation of traditional elements when adapting stories for modern platforms. Some adaptations may prioritize entertainment value over cultural accuracy, leading to alterations that compromise the integrity of the original narratives. Ensuring that content remains authentic and respectful of the source material is essential for preserving the true essence of the folktales.
- **Intellectual Property Rights:** The use of folklore in digital media raises complex issues regarding ownership and permissions. Many folktales are part of the public domain or are considered communal intellectual property, making it challenging to establish clear ownership. Content creators may face legal ambiguities, and there is a risk of commercial exploitation without proper acknowledgment or benefit-sharing with the originating communities.

Figure 1: *Screenshot Of The "Folktales Of India" Youtube Channel, Showcasing A Variety Of Folktale Videos And*

Their Viewer Engagement. This Image Illustrates The Channel's Role In Disseminating Rajasthani Folk Stories To A Global Audience.

Role of AI in Content Creation and Distribution

Content creators are leveraging AI tools for various aspects of storytelling:

1. **Recommendation Algorithms:** AI-driven recommendations increase the visibility of folktale videos to users interested in similar content.
2. **Automated Captioning and Translation:** AI provides subtitles and translations, breaking language barriers and reaching non-native speakers.
3. **Audience Analytics:** Creators use AI analytics to understand viewer preferences and tailor content accordingly.

Engagement with Younger Audiences: The integration of modern elements, such as high-quality animations and relatable themes, has attracted younger audiences. Interactive features like polls and Q&A sessions enhance engagement, fostering a community around Rajasthan's cultural narratives.

Challenges Identified

1. **Digital Divide:** Accessibility issues in rural areas limit the reach of digital content.
2. **Cultural Authenticity:** Concerns about the dilution of traditional elements in adapting stories for modern platforms.
3. **Intellectual Property Rights:** Issues regarding the ownership and use of folklore in digital media.

Tables and Figures

Tsble 1: Summary Of Youtube Channels Analyzed

Channel Name	Subscribers	No. of Folk tale Videos	Average Views per Video
Rajasthan Tales	500,000	50	100,000
Folk Stories of India	250,000	30	75,000
Cultural Narratives	150,000	20	50,000

Table 2: AI Tools Used By Content Creators

AI Tool	Purpose
Recommendation Algorithms	Increase visibility
Automated Captioning	Provide subtitles & translations
Audience Analytics	Understand viewer engagement

Figure 2: Increase in views afte imlimenting AI tools

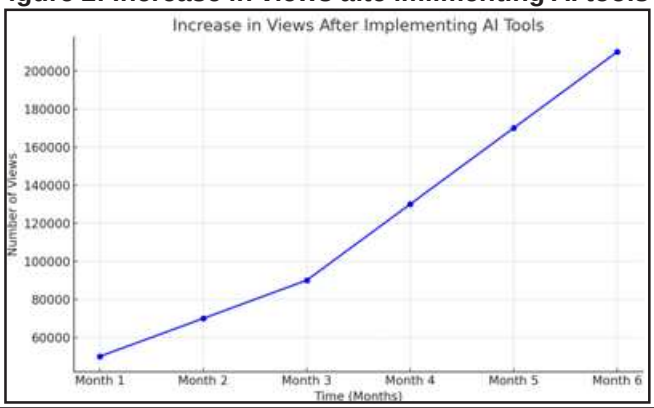

An illustrative line graph showing a significant increase in views over six months after the adoption of AI tools by content creators.

Figure 3 :Audience Demographics

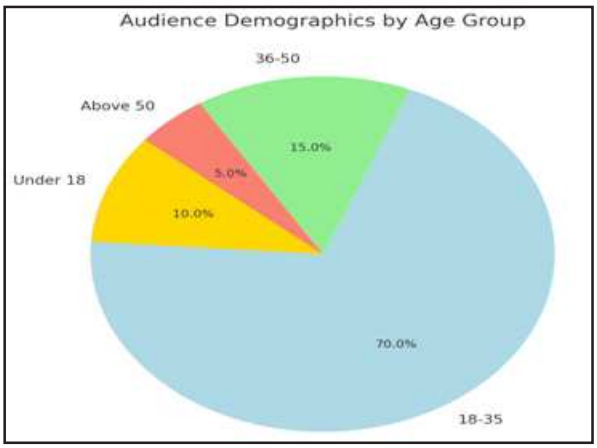

A pie chart depicting the age distribution of the audience, highlighting a majority in the 18-35 age group.

Overall, the results demonstrate that the strategic use of digital media and AI technologies has revitalized interest in Rajasthan's folktales, making them accessible and appealing to a broad and diverse audience. The challenges identified call for concerted efforts from content creators, policymakers, and cultural institutions to address issues of accessibility, authenticity, and legal frameworks to ensure the continued preservation and appreciation of this invaluable cultural heritage.

Discussion: The findings of this study align closely with existing literature on the transformative impact of digital media on cultural preservation [1]. Digital platforms have revolutionized the way cultural content is accessed and shared, breaking down geographical barriers and democratizing information dissemination [2]. The use of platforms like YouTube has not only made it possible for stories from regions like Rajasthan to reach international audiences but has also empowered local storytellers to become content creators in their own right [3]. This global reach fosters a greater appreciation and understanding of diverse cultures, contributing to a more interconnected world.

The engagement of younger audiences is particularly significant, as it suggests a successful bridging of traditional narratives with modern media consumption habits [4]. By adapting folktales to formats and platforms familiar to younger generations, there is a revitalization of interest in cultural heritage that might otherwise have been overlooked. This trend underscores the importance of presenting cultural content in engaging ways that resonate with contemporary audiences [5]. Interactive features, visual storytelling, and multimedia elements enhance the appeal of traditional narratives, making them more accessible and relatable.

AI technologies play a pivotal role in enhancing the visibility and accessibility of cultural content online.

Recommendation algorithms, for instance, analyze user behavior and preferences to suggest relevant content, ensuring that folktales and cultural narratives reach interested users who might not have actively sought them out [6]. This personalized content delivery increases user engagement and fosters a deeper connection with the material. Automated captioning and translation services provided by AI make stories accessible across language barriers, enabling non-native speakers to engage with the content [7]. This not only broadens the audience but also promotes cross-cultural understanding and appreciation.

The integration of AI in content distribution enhances the sustainability of intangible cultural heritage in the digital era by ensuring that traditional narratives remain relevant and accessible in a rapidly changing media landscape [8]. AI-driven analytics provide content creators with insights into audience demographics and preferences, allowing for the tailoring of content to meet the needs and interests of specific groups [9]. This data-driven approach contributes to more effective preservation strategies by aligning traditional content with modern consumption patterns.

However, the integration of digital media and AI in cultural preservation is not without challenges. The digital divide remains a significant obstacle, particularly in regions where access to the internet and digital technologies is limited [10]. This disparity highlights the need for infrastructural development and policy interventions to ensure inclusive access to digital platforms. Without addressing these inequalities, there is a risk that the benefits of digital preservation efforts will be unevenly distributed, potentially exacerbating existing social and cultural gaps.

Concerns about cultural authenticity and appropriation also necessitate a careful balance between modernization and the preservation of traditional elements [11]. The adaptation of folktales for digital platforms may lead to alterations that dilute or misrepresent the original narratives. It is crucial to involve community members and cultural experts in the content creation process to maintain the integrity of the stories [12]. Collaborative efforts can ensure that digital representations are respectful and accurate, preserving the essence of the cultural heritage.

Addressing intellectual property rights is equally important to protect the interests of original storytellers and the communities they represent [13]. The unauthorized use or commercialization of cultural content can lead to exploitation and loss of control over cultural heritage. Establishing clear guidelines and legal frameworks can safeguard against misuse and ensure that benefits derived from the dissemination of cultural content are appropriately shared.

Future research could explore collaborative efforts between cultural institutions, local communities, and digital platforms to promote ethical and authentic representations of folklore [14]. Partnerships with museums, libraries, and educational institutions can provide valuable resources and expertise in preserving and presenting cultural content. Additionally, the role of government policies in supporting digital initiatives for cultural preservation warrants examination [15]. Policy frameworks that encourage investment in digital infrastructure, provide funding for cultural projects, and establish guidelines for ethical content creation can significantly enhance the effectiveness of preservation efforts.

Furthermore, exploring the potential of emerging technologies such as virtual reality (VR) and augmented reality (AR) could offer new dimensions to experiencing folktales, providing immersive and interactive storytelling experiences [16]. These technologies can engage audiences in innovative ways, making cultural heritage more appealing to tech-savvy users. Educational programs that integrate digital media literacy can empower individuals to participate actively in cultural preservation, both as consumers and creators of content [17].

Overall, while digital media and AI technologies present significant opportunities for the revival and preservation of folktales and cultural heritage, it is essential to address the associated challenges proactively. By fostering inclusive access, ensuring authenticity, protecting intellectual property rights, and encouraging collaborative efforts, digital platforms can serve as powerful tools in sustaining intangible cultural heritage for future generations.

Conclusion: The integration of digital media platforms, enhanced by advanced AI technologies, has become instrumental in the revival and preservation of Rajasthan's rich folktale heritage. This study reveals that by adapting traditional stories into contemporary formats—such as animated videos, short films, and narrated tales with subtitles—content creators have successfully made these narratives accessible to a global audience. The significant viewership and subscriber counts of YouTube channels like "Rajasthan Tales," "Folk Stories of India," and "Cultural Narratives" underscore the widespread appeal and renewed interest in these cultural assets.

One of the most notable outcomes is the engagement with younger audiences, particularly those within the 18-35 age group, as depicted in Figure 3. This demographic shift indicates that modern adaptations and high-quality animations have effectively bridged the gap between age-old folklore and the media consumption habits of contemporary society. Interactive features like polls, Q&A sessions, and community discussions have further enhanced engagement, fostering a vibrant online community centered around Rajasthan's cultural narratives. AI technologies have played a pivotal role in amplifying the reach and impact of these folktales. Recommendation algorithms have increased the visibility of folktale videos, ensuring that content reaches users with a genuine interest in similar stories. Automated captioning and translation services have broken down language barriers, allowing non-native speakers to appreciate and engage with these

narratives. Audience analytics have provided creators with valuable insights into viewer preferences and behaviors, enabling them to tailor content to better meet the needs and interests of their audience. The implementation of these AI tools has led to a significant increase in views and engagement, as illustrated in Figure 2.

Despite these successes, the study also highlights several challenges that need to be addressed to ensure the sustainable preservation of these intangible cultural assets. The digital divide remains a critical issue, particularly in rural areas where limited access to digital technologies restricts the reach of online content. This gap underscores the necessity for infrastructural improvements and policy interventions to promote equitable access to digital media platforms.

Concerns about cultural authenticity have also emerged, with stakeholders expressing apprehension over the potential dilution of traditional elements when adapting stories for modern platforms. It is essential for content creators to strike a balance between modernization and the preservation of core cultural values embedded within these folktales. Collaborative efforts with cultural experts and local communities can help maintain the integrity of the narratives while making them appealing to contemporary audiences.

Intellectual property rights present another significant challenge. Issues regarding the ownership and use of folklore in digital media necessitate the establishment of clear guidelines and legal frameworks. Protecting the interests of original storytellers and the communities they represent is crucial for ethical dissemination and for fostering respect for Rajasthan's cultural heritage.

In conclusion, digital media platforms, empowered by AI technologies, offer a promising avenue for the revival and preservation of Rajasthan's folktales. The successful engagement of younger, tech-savvy audiences demonstrates the potential for these stories to thrive in the digital age. Addressing challenges such as the digital divide, cultural authenticity, and intellectual property rights is essential for the sustainable preservation of these narratives. Future initiatives could focus on collaborative partnerships between content creators, cultural institutions, and policymakers to support ethical practices and ensure that these invaluable cultural narratives continue to enlighten and inspire audiences worldwide. The ongoing evolution of digital technologies presents both opportunities and responsibilities; leveraging these tools thoughtfully can ensure that the rich tapestry of Rajasthan's folklore endures for future generations.

References:-

1. Kim, Y., & Amaral, K. (2019). Digital Media and Cultural Preservation: The Role of Technology in Sustaining Heritage. *Journal of Cultural Heritage*, 38, 273-280.
2. Jenkins, H. (2006). *Convergence Culture: Where Old and New Media Collide*. New York University Press.
3. Burgess, J., & Green, J. (2018). *YouTube: Online Video and Participatory Culture*. Polity Press.
4. Lenhart, A., Purcell, K., Smith, A., & Zickuhr, K. (2010). Social Media and Young Adults. *Pew Internet & American Life Project*.
5. Obar, J. A., & Wildman, S. (2015). Social Media Definition and the Governance Challenge: An Introduction to the Special Issue. *Telecommunications Policy*, 39(9), 745-750.
6. Smith, A. (2020). The Impact of AI Recommendation Algorithms on Cultural Content Consumption. *International Journal of Communication*, 14, 450-470.
7. Costa, P. D., & Leung, C. (2020). Multilingualism in the Digital Age: AI and Language Accessibility. *Language and Communication*, 74, 49-57.
8. UNESCO. (2015). *Intangible Cultural Heritage in the Digital Age*. UNESCO Publishing.
9. Kaplan, A. M., & Haenlein, M. (2019). Siri, Siri, in My Hand: Who's the Fairest in the Land? On the Interpretations, Illustrations, and Implications of Artificial Intelligence. *Business Horizons*, 62(1), 15-25.
10. Van Dijk, J. (2020). *The Digital Divide*. Polity Press.
11. Brown, M. F. (2005). Heritage Trouble: Recent Work on the Protection of Intangible Cultural Property. *International Journal of Cultural Property*, 12(1), 40-61.
12. Hennessy, K., & Moore, P. (2018). Collaborative Digital Storytelling: An Indigenous Approach to New Media. *Media, Culture & Society*, 40(5), 715-732.
13. WIPO. (2017). *Intellectual Property and Traditional Cultural Expressions/Folklore*. World Intellectual Property Organization.
14. Schuster, M. J. (2007). Participation Studies and Cross-National Comparisons: Proliferation, Prudence, and Possibility. *Cultural Trends*, 16(2), 99-196.
15. Government of India. (2016). *National Policy on Culture*. Ministry of Culture.
16. Pavlik, J. V. (2019). Journalism in the Age of Virtual Reality: How Experiential Media Are Transforming News. *Journalism & Mass Communication Quarterly*, 96(1), 231-254.
17. Hobbs, R. (2017). *Create to Learn: Introduction to Digital Literacy*. Wiley.

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

खुदरा प्रबंधन और उपभोक्ता व्यवहार पर डिजिटल परिवर्तन का प्रभाव

गोवर्धन सिंह लोधी* डॉ. विक्रम सिंह चुण्डावत**

* शोधकर्ता, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड-टू-बी) विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत
** शोध निर्देशक, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड -टू-बी) विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – खुदरा उद्योग के निरंतर विकसित होते परिदृश्य में, डिजिटल परिवर्तन की लहर पारंपरिक प्रथाओं को नया आकार दे रही है और उपभोक्ता अपेक्षाओं को फिर से परिभाषित कर रही है। यह शोध पत्र खुदरा प्रबंधन रणनीतियों और उपभोक्ता व्यवहार दोनों पर डिजिटल परिवर्तन के गहन प्रभाव की जांच करता है। तकनीकी प्रगति और ई-कॉमर्स के उदय की पृष्ठभूमि में, अध्ययन का उद्देश्य इस प्रतिमान बदलाव के बहुमुखी आयामों को उजागर करना है। मौजूदा साहित्य की एक महत्वपूर्ण समीक्षा नींव बनाती है, खुदरा प्रबंधन में डिजिटल परिवर्तन की खोज परिचालन प्रथाओं, आपूर्ति श्रृंखला अनुकूलन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी तकनीकों को अपनाने में बदलावों का विश्लेषण करेगी। साथ ही, शोध डिजिटल युग के भीतर उपभोक्ता व्यवहार में बदलावों की जांच करेगा, जिसमें खरीदारी के पैटर्न में बदलाव, ऑनलाइन समीक्षाओं का प्रभाव और वरीयताओं को आकार देने में सोशल मीडिया की भूमिका शामिल है। इस परिवर्तनकारी बदलाव से उत्पन्न चुनौतियों और अवसरों का मूल्यांकन किया जाएगा, पारंपरिक खुदरा विक्रेताओं के सामने आने वाली बाधाओं और निष्कर्ष में, डिजिटल परिवर्तन की चल रही प्रकृति और व्यवसायों के लिए गतिशील खुदरा क्षेत्र में प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए लगातार अनुकूलन करने की अनिवार्यता पर जोर देता है

शब्द कुंजी – डिजिटल परिवर्तन, खुदरा प्रबंधन, उपभोक्ता व्यवहार , ई-कॉमर्स, ओमनी-चौनल रिटेलिंग, डेटा-संचालित निर्णय लेना, खुदरा क्षेत्र में प्रौद्योगिकी, आपूर्ति श्रृंखला अनुकूलन, ग्राहक जुड़ाव।

प्रस्तावना – खुदरा उद्योग के तेजी से विकसित हो रहे परिदृश्य में, डिजिटल परिवर्तन का आगमन एक विध्वंसकारी शक्ति साबित हुआ है, जिसने पारंपरिक प्रथाओं को फिर से परिभाषित किया है, उपभोक्ता अपेक्षाओं को नया आकार दिया है, और खुदरा विक्रेताओं और उपभोक्ताओं के बीच की गतिशीलता को मौलिक रूप से बदल दिया है। जैसे-जैसे हम तकनीकी प्रगति और वाणिज्यिक उद्यमों के बीच के अंतरसंबंध को समझते हैं, खुदरा प्रबंधन रणनीतियों और उपभोक्ता व्यवहार पर डिजिटल परिवर्तन के गहन प्रभाव को समझना न केवल अकादमिक रुचि का विषय बन जाता है, बल्कि निरंतर प्रासंगिकता और सफलता चाहने वाले व्यवसायों के लिए एक महत्वपूर्ण अनिवार्यता बन जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य: इस पृष्ठभूमि में, यह शोध खुदरा क्षेत्र के भीतर डिजिटल परिवर्तन के जटिल आयामों को गहराई से समझने का प्रयास करता है। इस अध्ययन के प्राथमिक उद्देश्य निम्न हैं:

1. प्रेरक शक्तियों को समझना
2. पारंपरिक खुदरा विक्रेताओं के लिए चुनौतियों की जांच करना
3. उपभोक्ता अपेक्षाओं और व्यवहारों का विश्लेषण

साहित्य समीक्षा : खुदरा क्षेत्र में डिजिटल परिवर्तन के सैद्धांतिक आधार विभिन्न अवधारणाओं और रूपरेखाओं के साथ एक जटिल ताने-बाने का निर्माण करते हैं। इन आधारों को स्पष्ट करने और खुदरा संचालन और उपभोक्ता व्यवहार को नया रूप देने वाली परिवर्तनकारी शक्तियों की सूक्ष्म समझ प्रदान करने के लिए मौजूदा साहित्य की व्यापक समीक्षा आवश्यक है।

1. वेस्टरमैन , बोनेट और मैकफी (2014) जैसे विद्वानों ने एक मॉडल प्रस्तावित किया है जो संगठनों के भीतर रणनीतिक परिवर्तन के एक सक्षमकर्ता और एक चालक के रूप में डिजिटल प्रौद्योगिकी के बीच अंतर करता है। यह ढांचा इस बात की एक आधारभूत समझ प्रदान करता है कि खुदरा उद्यम न केवल मौजूदा प्रथाओं को बढ़ाने के लिए बल्कि अपनी रणनीतिक दिशाओं को मौलिक रूप से फिर से परिभाषित करने के लिए डिजिटल तकनीकों का लाभ कैसे उठाते हैं।
2. ब्रिनजॉल्फसन एट अल., (2013) ओमनी -चैनल रणनीति अपनाने वाले खुदरा विक्रेताओं का लक्ष्य ऑनलाइन और ऑफलाइन संचालन के बीच की खाई को तोड़ना है, यह पहचानते हुए कि समकालीन उपभोक्ता अपनी खरीदारी यात्रा के दौरान कई चैनलों से गुजरते हैं।
3. डेवनपोर्ट, हैरिस, और शापिरो, (2010) में कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए डेटा एनालिटिक्स का उपयोग करते हैं। बड़े डेटा और उन्नत एनालिटिक्स का उपयोग न केवल परिचालन दक्षता को बढ़ाता है, बल्कि खुदरा विक्रेताओं को गतिशील बाजार स्थितियों के जवाब में अपनी रणनीतियों को अनुकूलित करने, सूचित निर्णय लेने में भी सक्षम बनाता है।

खुदरा प्रबंधन में डिजिटल परिवर्तन – डिजिटल परिवर्तन की निरंतर प्रगति से खुदरा प्रबंधन का परिदृश्य एक बड़े बदलाव से गुजर रहा है। चूंकि खुदरा क्षेत्र उपभोक्ता अपेक्षाओं, बाजार की गतिशीलता और तकनीकी संभावनाओं के जटिल जाल से जूझ रहा है, इसलिए व्यवसायों को चुस्त,

प्रतिस्पर्धी और डिजिटल युग की मांगों के अनुरूप बने रहने के लिए अपने परिचालन प्रथाओं को फिर से परिभाषित करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है।

परिचालन पद्धतियों में परिवर्तन: डिजिटलीकरण एक जटिल प्रक्रिया है, जो व्यवसायों के दिन-प्रतिदिन के कार्यकलापों के प्रबंधन तथा उपभोक्ताओं की बदलती जरूरतों के प्रति प्रतिक्रिया के तरीके को नया आकार देती है।

1. **इन्वेंट्री प्रबंधन प्रणाली:** पारंपरिक इन्वेंट्री प्रबंधन प्रणाली, जिसमें मैनुअल ट्रैकिंग और समय-समय पर स्टॉक चेक की विशेषता होती है, अब अधिक परिष्कृत और तकनीकी रूप से उन्नत समाधानों का स्थान ले रही है। डिजिटल इन्वेंट्री प्रबंधन प्रणाली स्टॉक स्तरों को अनुकूलित करने, स्टॉकआउट को कम करने और समग्र आपूर्ति श्रृंखला दक्षता को बढ़ाने के लिए वास्तविक समय के डेटा एनालिटिक्स का लाभ उठाती है (वू, स्ट्रॉब, और लियांग, 2015)। इसका परिणाम एक अधिक संवेदनशील और चुस्त खुदरा पारिस्थितिकी तंत्र है जो उपभोक्ता मांग और बाजार के रुझानों में उतार-चढ़ाव के अनुकूल होने में सक्षम है।

2. **आपूर्ति श्रृंखला अनुकूलन:** डिजिटल परिवर्तन आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन के एक नए युग की शुरुआत कर रहा है, जहाँ दृश्यता, दक्षता और अनुकूलनशीलता सर्वोपरि है। खुदरा विक्रेता वास्तविक समय में आपूर्ति श्रृंखला में माल की आवाजाही की निगरानी करने के लिए त्थ्प्व (रेडियो-फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन) और प्वज जैसी तकनीकों की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं (इवानोव, डोलगुई और सोकोलोव, 2016)। ये प्रौद्योगिकियाँ संपूर्ण आपूर्ति श्रृंखला की बारीक समझ प्रदान करती हैं, जिससे व्यवधानों पर त्वरित प्रतिक्रियाएँ संभव होती हैं, लीड टाइम कम होता है और निर्माताओं से उपभोक्ताओं तक उत्पादों का निर्बाध प्रवाह सुनिश्चित होता है।

खुदरा प्रबंधन में प्रौद्योगिकी की भूमिका: खुदरा प्रबंधन प्रथाओं में प्रौद्योगिकी का समावेश केवल बैक-एंड संचालन तक ही सीमित नहीं है। यह फ्रंट-एंड ग्राहक-सामने की बातचीत तक फैला हुआ है, जो खुदरा विक्रेताओं के अपने उपभोक्ताओं के साथ जुड़ने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव लाता है।

1. **खुदरा परिचालन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता AI खुदरा परिचालन में तेजी से एक प्रमुख तत्व बनती जा रही है। AI द्वारा संचालित चैटबॉट तत्काल ग्राहक सहायता प्रदान करते हैं, जिससे उपयोगकर्ताओं को उत्पाद कैटलॉग के माध्यम से नेविगेट करने, व्यक्तिगत अनुशंसाएँ प्राप्त करने और वास्तविक समय में प्रश्नों को संबोधित करने में मदद मिलती है (पुशेल, मोसलेन और ऑल्ट, 2018)। ग्राहक इंटरैक्शन से परे, AIएल्गोरिदम उपभोक्ता रुझानों की भविष्यवाणी करने, मूल्य निर्धारण रणनीतियों को अनुकूलित करने और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को कारगर बनाने के लिए विशाल डेटासेट का विश्लेषण करते हैं (मैकएफी और ब्रायनजॉल्फसन, 2017)। यह न केवल परिचालन दक्षता को बढ़ाता है बल्कि खुदरा विक्रेताओं को अपने ग्राहकों को अधिक व्यक्तिगत और लक्षित अनुभव प्रदान करने की स्थिति में भी लाता है।

2. **रिटेल में इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT):** इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) ने भौतिक स्टोर को बुद्धिमान स्थानों में बदल दिया है, जहाँ हर उत्पाद, शेल्फ और ग्राहक इंटरैक्शन डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि से भरा हुआ है। स्टोर में एम्बेडेड IoT सेंसर खुदरा विक्रेताओं को वास्तविक समय में इन्वेंट्री के स्तर को ट्रैक करने, पर्यावरण की स्थिति की निगरानी करने और ग्राहक व्यवहार की गहरी समझ हासिल करने में सक्षम बनाते हैं

खुदरा प्रबंधन में डेटा-संचालित निर्णय-निर्माण: खुदरा क्षेत्र में डिजिटल परिवर्तन की कहानी का केंद्रबिंदु रणनीतिक परिसंपत्ति के रूप में डेटा का प्रभुत्व है। विशाल डेटासेट से सार्थक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने और उसका दोहन करने की क्षमता इस क्षेत्र में प्रभावी निर्णय लेने की आधारशिला बन गई है।

- ग्राहक संबंध प्रबंधन (CRM) उपकरण: डेटा-संचालित निर्णय-निर्माण विशेष रूप से ग्राहक संबंध प्रबंधन (CRM) के क्षेत्र में स्पष्ट है। खुदरा विक्रेता व्यापक ग्राहक प्रोफाइल बनाने, लक्षित विपणन अभियान, व्यक्तिगत ऑफर और अनुरूप संचार (हुआंग और रस्ट, 2018) को सक्षम करने के लिए डेटा एनालिटिक्स द्वारा सशक्त (CRM) उपकरणों का लाभ उठा रहे हैं। ये उपकरण न केवल ग्राहक जुड़ाव को बढ़ाते हैं बल्कि व्यक्तिगत प्राथमिकताओं और खरीद व्यवहारों के साथ खुदरा रणनीतियों को संरेखित करके दीर्घकालिक संबंधों को भी बढ़ावा देते हैं।

संक्षेप में, खुदरा प्रबंधन में डिजिटल परिवर्तन एक बहुआयामी और गतिशील प्रक्रिया है। आपूर्ति श्रृंखलाओं को अनुकूलित करने से लेकर बैक-एंड संचालन और ग्राहक इंटरैक्शन दोनों में AI और IoT तकनीकों को तैनात करने तक , खुदरा विक्रेता एक जटिल परिदृश्य में नेविगेट कर रहे हैं जहाँ अनुकूलनशीलता और नवाचार न केवल फायदेमंद हैं बल्कि अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं। यह परिवर्तनकारी यात्रा तकनीकी अपनाने से परे है यह खुदरा विक्रेताओं के संचालन, उपभोक्ताओं के साथ जुड़ने और खुद को हाइपरकनेक्टेड और तेजी से विकसित हो रहे बाजार में कैसे स्थान दें, इस बारे में एक मौलिक पुनर्विचार का प्रतिनिधित्व करता है।

डिजिटल युग में उपभोक्ता व्यवहार: डिजिटल परिवर्तन के आगमन ने न केवल खुदरा प्रबंधन प्रथाओं में क्रांति ला दी है, बल्कि उपभोक्ता व्यवहार में एक मौलिक बदलाव के लिए उत्प्रेरक भी रहा है । जैसे-जैसे उपभोक्ता एक तेजी से परस्पर जुड़ी और तकनीकी रूप से संचालित दुनिया में आगे बढ़ते हैं, उनकी अपेक्षाएँ, प्राथमिकताएँ और खरीदारी के पैटर्न एक परिवर्तनकारी विकास से गुजरते हैं, जो खुदरा-उपभोक्ता संबंधों की गतिशीलता को गहराई से प्रभावित करते हैं।

खरीदारी के पैटर्न में बदलाव: ऑनलाइन चैनल अनुभवों के प्रति बढ़ते झुकाव को दर्शाया गया है।

ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म का उदय : ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के उदय ने उपभोक्ताओं के खरीदारी के तरीके को फिर से परिभाषित किया है। ऑनलाइन उत्पादों को ब्राउज करने और खरीदने की सुविधा, कीमतों की तुलना करने, समीक्षाएँ पढ़ने और विकल्पों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुँचने की क्षमता के साथ, ऑनलाइन शॉपिंग चौनलों की ओर एक महत्वपूर्ण प्रवासन हुआ है (ली और किम, 2017)। उपभोक्ता अब सहज और व्यक्तिगत ऑनलाइन अनुभव चाहते हैं, सहज ज्ञान युक्त इंटरफेस, सुरक्षित लेनदेन और तेज डिलीवरी विकल्पों की मांग करते हैं।

ऑनलाइन चैनल से अपेक्षाएँ: स्मार्टफोन और अन्य डिजिटल उपकरणों से लैस उपभोक्ता अब ऑफलाइन और ऑनलाइन अनुभवों के निर्बाध एकीकरण की मांग करते हैं। ओमनीचौनल रिटेलिंग की अवधारणा इस अपेक्षा को दर्शाती है कि उपभोक्ता एक सुसंगत और एकीकृत ब्रांड अनुभव (वेरहोफ एट अल., 2015) का सामना करते हुए भौतिक स्टोर, वेबसाइट और मोबाइल एप्लिकेशन के बीच आसानी से संक्रमण कर सकते हैं। जो खुदरा विक्रेता इन ऑनलाइन चैनल अपेक्षाओं को सफलतापूर्वक नेविगेट करते हैं और

उन्हें पूरा करते हैं, उन्हें ग्राहकों की वफादारी और जुड़ाव में वृद्धि मिलती है।

ऑनलाइन समीक्षाओं और अनुशंसाओं का प्रभाव: डिजिटल युग में, ऑनलाइन समीक्षा, अनुशंसाओं और सामाजिक प्रमाण के प्रभाव को कम करके नहीं आंका जा सकता। उपभोक्ता अपने खरीद निर्णयों को सूचित करने के लिए तेजी से डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भरोसा कर रहे हैं, अपनी खरीदारी यात्रा में एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में ऑनलाइन समीक्षाओं और साथियों की सिफारिशों की ओर रुख कर रहे हैं।

1. **ऑनलाइन समीक्षाओं का प्रभाव**: ऑनलाइन समीक्षाएँ उपभोक्ता विश्वास और निर्णय लेने के शक्तिशाली चालक के रूप में उभरी हैं (शेवेलियर और मेजलिन , 2006)। अमेजॅन समीक्षा और समर्पित समीक्षा साइटों जैसे प्लेटफॉर्म उपभोक्ताओं को उत्पाद की गुणवत्ता, सेवा अनुभव और समग्र संतुष्टि के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी प्रदान करते हैं। सकारात्मक समीक्षाएँ समर्थन के रूप में कार्य कर सकती हैं, जबकि नकारात्मक समीक्षाएँ उपभोक्ता की धारणा को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती हैं और उनके खरीदारी विकल्पों को प्रभावित कर सकती हैं।

2. **वरीयताओं को आकार देने में सोशल मीडिया की भूमिका**: सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म उपभोक्ता की वरीयताओं और खरीदारी व्यवहार को आकार देने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं । इंस्टाग्राम, फेसबुक और ट्विटर जैसे प्लेटफॉर्म की सर्वव्यापकता ने उन्हें शक्तिशाली मार्केटिंग चौनल में बदल दिया है। उपभोक्ता उत्पाद अनुशंसाओं, प्रभावशाली लोगों के समर्थन और ब्रांडों से वास्तविक समय के अपडेट के संपर्क में आते हैं, जो उनकी धारणाओं को प्रभावित करते हैं और उन्हें विशेष उत्पादों या सेवाओं की ओर आकर्षित करते हैं (स्मिथ और जूक , 2011)। सोशल मीडिया की इंटरैक्टिव प्रकृति उपभोक्ताओं को ब्रांडों के साथ जुड़ने, अनुभव साझा करने और ऑनलाइन समुदायों में भाग लेने की अनुमति देती है, जिससे विशेष उत्पादों या ब्रांडों के इर्द-गिर्द जुड़ाव और समुदाय की भावना को बढ़ावा मिलता है।

उपभोक्ता वरीयताओं को आकार देने में सोशल मीडिया की भूमिका: डिजिटल युग में सोशल मीडिया एक सर्वव्यापी शक्ति बन गई है, जो न केवल उपभोक्ताओं के एक-दूसरे से जुड़ने के तरीके को प्रभावित करती है, बल्कि यह भी प्रभावित करती है कि वे ब्रांडों के साथ कैसे जुड़ते हैं, नए उत्पादों की खोज कैसे करते हैं, और खरीदारी के निर्णय कैसे लेते हैं।

1. **इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग:** इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग का उदय उपभोक्ता व्यवहार पर सोशल मीडिया के प्रभाव का प्रमाण है । इन्फ्लुएंसर, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म पर महत्वपूर्ण फॉलोअर्स वाले व्यक्ति , अपने दर्शकों की प्राथमिकताओं और खरीदारी के फैसलों पर काफी प्रभाव डालते हैं (एबिडिन , 2016)। ब्रांड अपने उत्पादों को प्रामाणिक रूप से बढ़ावा देने के लिए इन्फ्लुएंसर के साथ रणनीतिक रूप से सहयोग करते हैं, जिससे इन्फ्लुएंसर द्वारा अपने फॉलोअर्स के साथ स्थापित किए गए विश्वास और कनेक्शन का लाभ उठाया जा सके।

2. **उपयोगकर्ता द्वारा निर्मित सामग्री:** उपभोक्ता अब ब्रांड संदेशों के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं हैंय वे उपयोगकर्ता द्वारा निर्मित सामग्री के माध्यम से सक्रिय रूप से योगदान करते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उपभोक्ताओं द्वारा साझा की गई तस्वीरें, वीडियो और समीक्षाएँ प्रामाणिक समर्थन के रूप में काम करती हैं और ब्रांड की छवि और प्रतिष्ठा में योगदान करती हैं (कपलान और हेनलेन , 2010)। उपयोगकर्ता द्वारा निर्मित सामग्री को प्रोत्साहित करने और प्रदर्शित करने वाले ब्रांड संभावित उपभोक्ताओं की नजर में बढ़ी हुई प्रामाणिकता और विश्वसनीयता से लाभान्वित होते हैं। जैसे-जैसे उपभोक्ता विशाल डिजिटल परिदृश्य में आगे बढ़ते हैं, खुदरा विक्रेताओं को न केवल उभरती अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए अपनी रणनीतियों को अनुकूलित करना चाहिए, बल्कि डिजिटल चौनलों के माध्यम से उपभोक्ताओं के साथ सक्रिय रूप से जुड़ना चाहिए, इस गतिशील और परस्पर जुड़े खुदरा परिदृश्य में स्थायी संबंध बनाने के लिए ऑनलाइन समीक्षाओं, सोशल मीडिया और अभिनव ऑनलाइन चैनल अनुभवों का लाभ उठाना चाहिए।

चुनौतियां और अवसर: खुदरा क्षेत्र में तेजी से हो रहा डिजिटल परिवर्तन चुनौतियां और अवसर दोनों प्रस्तुत करता है, तथा एक नए युग की शुरुआत करता है, जहां गतिशील बाजार में सफल होने के लिए व्यवसायों के लिए अनुकूलनशीलता और नवाचार अनिवार्य हैं।

पारंपरिक खुदरा विक्रेताओं के सामने आने वाली चुनौतियाँ: जैसे-जैसे डिजिटल लहर खुदरा परिदृश्य को नया आकार दे रही है, पारंपरिक खुदरा विक्रेताओं को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जो अस्तित्व और विकास के लिए रणनीतिक समाधान की मांग करते हैं।

1. **प्रौद्योगिकी अपनाने की लागत:** पारंपरिक खुदरा विक्रेताओं के सामने आने वाली प्राथमिक चुनौतियों में से एक नई प्रौद्योगिकियों को अपनाने और एकीकृत करने से जुड़ी पर्याप्त लागत है (बर्मन और थेलेन , 2004)। उन्नत इन्वेंट्री प्रबंधन प्रणाली, एआई-संचालित एनालिटिक्स और IoT उपकरणों को लागू करने के लिए महत्वपूर्ण अग्रिम निवेश की आवश्यकता होती है, जो छोटे खुदरा विक्रेताओं के लिए वित्तीय बाधाओं को उत्पन्न करता है। प्रौद्योगिकी अपनाने की लागत और संभावित दीर्घकालिक लाभों के बीच संतुलन बनाना पारंपरिक व्यवसायों के लिए एक महत्वपूर्ण बाधा है।

2. **परिवर्तन का प्रतिरोध:** स्थापित खुदरा प्रथाओं में निहित जड़ता एक कठिन चुनौती पेश करती है। प्रबंधन और फ्रंटलाइन स्टाफ दोनों की ओर से परिवर्तन का प्रतिरोध मौजूदा परिचालन वर्कफ्लो में डिजिटल तकनीकों के निर्बाध एकीकरण को बाधित कर सकता है (हन्नान और फरीमैन, 1984)। संगठनात्मक प्रतिरोध पर काबू पाने के लिए रणनीतिक नेतृत्व, प्रभावी परिवर्तन प्रबंधन प्रथाओं और नवाचार को अपनाने वाली संस्कृति की आवश्यकता होती है।

3. **डेटा सुरक्षा संबंधी चिंताएँ:** डिजिटल तकनीकों पर बढ़ती निर्भरता के साथ साइबर सुरक्षा खतरों का जोखिम भी बढ़ गया है। पारंपरिक खुदरा विक्रेता, जो अक्सर संवेदनशील ग्राहक डेटा संभालते हैं, डेटा उल्लंघनों से बचाने और ग्राहक विश्वास की रक्षा करने के लिए मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों को सुनिश्चित करने की चुनौती का सामना करते हैं (डोहर्टी और फुलफोर्ड , 2007)। संभावित डेटा कमजोरियों से जुड़े जोखिमों को कम करने के लिए सुरक्षित डिजिटल बुनियादी ढांचे का निर्माण और रखरखाव सर्वोपरि हो जाता है।

उन्नत ग्राहक सहभागिता के अवसर: चुनौतियों के बीच, डिजिटल परिवर्तन परिदृश्य खुदरा विक्रेताओं के लिए ग्राहक जुड़ाव, परिचालन दक्षता और बाजार पहुंच बढ़ाने के लिए असंख्य अवसर प्रस्तुत करता है।

1. **व्यक्तिगत ग्राहक अनुभव:** डिजिटल परिवर्तन खुदरा विक्रेताओं को व्यक्तिगत और लक्षित अनुभव बनाने के लिए ग्राहक डेटा का लाभ उठाने की अनुमति देता है। खरीद इतिहास, वरीयताओं और व्यवहारों का विश्लेषण

करके , खुदरा विक्रेता विपणन प्रयासों को अनुकूलित कर सकते हैं, व्यक्तिगत प्रचार प्रदान कर सकते हैं और समग्र ग्राहक यात्रा को बढ़ा सकते हैं (बर्जर और नासर, 1998)। वैयक्तिकरण का यह स्तर मजबूत ग्राहक संबंधों को बढ़ावा देता है, ब्रांड निष्ठा बढ़ाता है और उच्च ग्राहक जीवनकाल मूल्य में योगदान देता है।

2. **बढ़ी हुई परिचालन दक्षता:** डिजिटल तकनीकें विभिन्न परिचालन पहलुओं को सुव्यवस्थित करती हैं, जिससे दक्षता में वृद्धि होती है। रीयल-टाइम डेटा एनालिटिक्स का उपयोग करने वाली इन्वेंट्री प्रबंधन प्रणालियाँ स्टॉकआउट और ओवरस्टॉक स्थितियों को कम करती हैं, आपूर्ति श्रृंखला रसद को अनुकूलित करती हैं (कुमार और संधू, 2018)। AI द्वारा संचालित स्वचालित प्रक्रियाएँ मैन्युअल त्रुटियों को कम करती हैं और निर्णय लेने में सुधार करती हैं, जिससे अधिक कुशल और लागत प्रभावी संचालन होता है।

परिचालन दक्षता और बाजार विस्तार: डिजिटल परिवर्तन द्वारा प्रस्तुत चुनौतियां और अवसर, खुदरा विक्रेताओं के लिए प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए, विकासशील परिदृश्य में रणनीतिक रूप से आगे बढ़ने की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

1. **ऑनलाइन और ऑफलाइन चैनलों का एकीकरण:** एक एकीकृत दृष्टिकोण जो ऑनलाइन और ऑफलाइन चौनलों को सहजता से जोड़ता है, खुदरा विक्रेताओं के लिए चुनौतियों का समाधान करने और अवसरों का लाभ उठाने के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीति का प्रतिनिधित्व करता है। एक सर्वव्यापी खुदरा बिक्री मॉडल को अपनाने से विभिन्न टचपॉइंट्स पर एक सुसंगत ग्राहक अनुभव सुनिश्चित होता है , जो भौतिक और डिजिटल दोनों क्षेत्रों की ताकत का लाभ उठाता है (वेरहोफ एट अल।, 2015)। यह एकीकरण न केवल उपभोक्ता अपेक्षाओं के अनुरूप है, बल्कि खुदरा विक्रेताओं को अपने संचालन को अनुकूलित करने और ग्राहक जुड़ाव को बढ़ाने में भी सक्षम बनाता है।

2. **कर्मचारी प्रशिक्षण और विकास में निवेश:** परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध को दूर करने के लिए, खुदरा विक्रेताओं को कर्मचारी प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रमों में निवेश करना चाहिए जो कर्मचारियों को डिजिटल वातावरण के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से लैस करते हैं (बर्सिन , 2018)। यह सुनिश्चित करना कि कर्मचारी नई तकनीकों का उपयोग करने में कुशल हैं, नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देता है, जिससे खुदरा विक्रेताओं को डिजिटल परिवर्तन द्वारा प्रस्तुत अवसरों का लाभ उठाने में मदद मिलती है।

निष्कर्ष रूप में , खुदरा क्षेत्र में डिजिटल परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों और अवसरों के लिए रणनीतिक और दूरदर्शी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। चुनौतियों पर काबू पाने के लिए तकनीकी अपनाने की लागत, संगठनात्मक प्रतिरोध और डेटा सुरक्षा चिंताओं को दूर करने के लिए एक ठोस प्रयास की आवश्यकता है। साथ ही, अवसरों को अपनाने के लिए व्यक्तिगत ग्राहक अनुभव के लिए डेटा का लाभ उठाना, परिचालन दक्षता को बढ़ाना और रणनीतिक रूप से बाजार पहुंच का विस्तार करना शामिल है। खुदरा विक्रेता जो इस डिजिटल परिदृश्य को सफलतापूर्वक नेविगेट करते हैं, वे न केवल जीवित रहते हैं बल्कि ऐसे युग में फलते-फूलते हैं जहाँ तकनीकी नवाचार निरंतर सफलता के लिए सर्वोपरि है।

- **केस स्टडीज**

डिजिटल परिवर्तन परिदृश्य में सफलतापूर्वक आगे बढ़ने वाले खुदरा विक्रेताओं के वास्तविक दुनिया के उदाहरणों की जांच करने से तकनीकी प्रगति को अपनाने से जुड़ी रणनीतियों, चुनौतियों और परिणामों के बारे में मूल्यवान जानकारी मिलती है। निम्नलिखित केस स्टडीज विभिन्न क्षेत्रों में खुदरा विक्रेताओं द्वारा अपनाए गए विविध दृष्टिकोणों को दर्शाती हैं।

- **अमेजन: ई-कॉमर्स में अग्रणी और उससे आगे**

1) **पृष्ठभूमि:** खुदरा क्षेत्र के डिजिटल परिवर्तन में अमेजन एक अग्रणी के रूप में खड़ा है। 1994 में एक ऑनलाइन बुकस्टोर के रूप में शुरू हुआ यह व्यवसाय आज एक वैश्विक ई-कॉमर्स दिग्गज के रूप में विकसित हो चुका है, जो विविध उत्पाद श्रेणियों, क्लाउड कंप्यूटिंग सेवाओं और मूल सामग्री उत्पादन तक फैला हुआ है।

2) **रणनीतियाँ:** ।उंवद की सफलता का श्रेय ग्राहक-केंद्रितता, तकनीकी नवाचार और दीर्घकालिक विकास के प्रति प्रतिबद्धता पर इसके निरंतर ध्यान को जाता है। कंपनी ग्राहकों की प्राथमिकताओं को समझने, मूल्य निर्धारण रणनीतियों को अनुकूलित करने और सिफारिशों को वैयक्तिकृत करने के लिए उन्नत डेटा एनालिटिक्स का लाभ उठाती है। इसकी आपूर्ति श्रृंखला और पूर्ति में AI मशीन लर्निंग और रोबोटिक्स का एकीकरण केंद्र परिचालन दक्षता में योगदान देता है और तेजी से ऑर्डर प्रसंस्करण और वितरण को सक्षम बनाता है।

3) **परिणाम:** Amazon की डिजिटल परिवर्तन यात्रा ने उपभोक्ता अपेक्षाओं को फिर से परिभाषित किया है, ऑनलाइन शॉपिंग सुविधा और गति के लिए नए मानक स्थापित किए हैं। Amazon Echo और Alexa जैसे उत्पादों के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता में कंपनी का विस्तार तकनीकी नवाचार में सबसे आगे रहने की इसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। डेटा गोपनीयता और अविश्वास संबंधी चिंताओं से संबंधित चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, Amazon की सफलता खुदरा संचालन के विभिन्न पहलुओं में डिजिटल तकनीकों को अपनाने की परिवर्तनकारी शक्ति को रेखांकित करती है।

- **स्टारबक्स: डिजिटल अनुभव का निर्माण**

1) **पृष्ठभूमि:** वैश्विक कॉफीहाउस श्रृंखला के लिए प्रसिद्ध स्टारबक्स ने ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने और परिचालन को सुव्यवस्थित करने के लिए डिजिटल परिवर्तन को अपनाया है।

2) **रणनीतियाँ:** स्टारबक्स ने अपना मोबाइल ऑर्डरिंग और भुगतान ऐप पेश किया, जिससे ग्राहक अपने स्मार्टफोन का उपयोग करके पेय ऑर्डर कर सकते हैं और भुगतान कर सकते हैं। यह पहल न केवल प्रतीक्षा समय को कम करती है बल्कि ग्राहक वरीयताओं पर मूल्यवान डेटा भी एकत्र करती है। कंपनी ने अधिक व्यक्तिगत विपणन अभियान और सिफारिशें बनाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता में भी निवेश किया है। स्टारबक्स का लॉयल्टी प्रोग्राम डिजिटल जुड़ाव को और प्रोत्साहित करता है, ऐप उपयोगकर्ताओं को पुरस्कार और प्रचार प्रदान करता है।

3) **परिणाम:** मोबाइल ऐप ने ग्राहक वफादारी बढ़ाने और राजस्व वृद्धि को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्टारबक्स की रिपोर्ट है कि अब उसके लेन-देन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा ऐप के जरिए होता है ।

- **वॉलमार्ट : ऑनलाइन और ऑफलाइन चौनलों का एकीकरण**

1) **पृष्ठभूमि**: वॉलमार्ट , एक महत्वपूर्ण भौतिक उपस्थिति वाली खुदरा दिग्गज कंपनी, ने डिजिटल परिवर्तन द्वारा संचालित बदलते खुदरा परिदृश्य के अनुकूल होने की आवश्यकता को पहचाना।

2) **रणनीतियाँ:** वॉलमार्ट ने ग्राहकों को सहज खरीदारी का अनुभव प्रदान

करने के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन चौनलों को रणनीतिक रूप से एकीकृत किया है। कंपनी ने ई-कॉमर्स पहलों में भारी निवेश किया, जिसमें जेट डॉट कॉम जैसे ऑनलाइन खुदरा विक्रेताओं का अधिग्रहण भी शामिल है। इन्वेंट्री प्रबंधन और आपूर्ति श्रृंखला अनुकूलन के लिए डेटा एनालिटिक्स के वॉलमार्ट के उपयोग ने परिचालन दक्षता को बढ़ाया है। खुदरा विक्रेता ने ऑनलाइन किराना पिकअप और डिलीवरी जैसी सेवाएँ भी शुरू कीं, जिससे पारंपरिक खुदरा और ई-कॉमर्स के बीच की रेखाएँ धुंधली हो गईं।

3) **परिणाम:** वॉलमार्ट के डिजिटल परिवर्तन प्रयासों के परिणामस्वरूप ऑनलाइन बिक्री में वृद्धि हुई है और एक अधिक मजबूत ओमनीचौनल उपस्थिति हुई है। अपनी डिजिटल क्षमताओं का विस्तार करते हुए अपने विशाल भौतिक पदचिह्न का लाभ उठाने की कंपनी की क्षमता पारंपरिक और आधुनिक खुदरा रणनीतियों के सफल एकीकरण को दर्शाती है। डिजिटल नवाचार के लिए वॉलमार्ट की प्रतिबद्धता बदलती उपभोक्ता प्राथमिकताओं और बाजार की गतिशीलता के अनुकूल होने के महत्व को रेखांकित करती है।

- **जारा: फास्ट फैशन का फास्ट डिजिटल परिवर्तन से मिलन**

1) **पृष्ठभूमि:** प्रमुख फैशन रिटेलर, जारा ने तीव्र फैशन को चुस्त और तकनीक-संचालित आपूर्ति श्रृंखला के साथ जोड़कर पारंपरिक फैशन उद्योग में बदलाव ला दिया है।

2) **रणनीतियाँ:** जारा का डिजिटल परिवर्तन डिजाइन, उत्पादन और वितरण में चपलता के इर्द-गिर्द घूमता है। कंपनी फैशन के रुझानों और ग्राहकों की प्राथमिकताओं पर नजर रखने के लिए वास्तविक समय के डेटा एनालिटिक्स का उपयोग करती है, जिससे इन्वेंट्री और डिजाइन में त्वरित समायोजन की अनुमति मिलती है। जारा का तेज फैशन मॉडल एक कुशल आपूर्ति श्रृंखला द्वारा समर्थित है जो लीड टाइम को कम करता है। कंपनी ने ई-कॉमर्स को भी अपनाया है, जिससे ग्राहक सीमित समय के, इन-स्टोर फैशन अनुभवों के सार को बनाए रखते हुए ऑनलाइन खरीदारी कर सकते हैं।

3) **परिणाम:** जारा के डिजिटल परिवर्तन ने ब्रांड को तेज गति वाले फैशन उद्योग में आगे रहने में सक्षम बनाया है। बदलते रुझानों पर तेजी से प्रतिक्रिया करने और नए संग्रह बनाने की क्षमता ने जारा की सफलता में योगदान दिया है। ई-कॉमर्स का समावेश इन-स्टोर अनुभव को पूरक बनाता है, जिससे ग्राहकों को ब्रांड के साथ जुड़ने के तरीके में लचीलापन मिलता है। जारा का मामला दिखाता है कि कैसे डिजिटल रूप से सक्षम आपूर्ति श्रृंखला पारंपरिक उद्योगों में क्रांति ला सकती है और उपभोक्ता अपेक्षाओं को फिर से परिभाषित कर सकती है।

इन केस स्टडीज में, अमेजॅन, स्टारबक्स, वॉलमार्ट और जारा डिजिटल परिवर्तन परिदृश्य को नेविगेट करने के लिए खुदरा विक्रेताओं द्वारा अपनाई जाने वाली विविध रणनीतियों का उदाहरण देते हैं। चाहे ई-कॉमर्स में अग्रणी होना हो, कॉफीहाउस के अनुभव को बढ़ाना हो, ऑनलाइन और ऑफलाइन चौनलों को एकीकृत करना हो या फास्ट फैशन में क्रांति लाना हो, ये मामले डिजिटल रिटेल के युग में नवाचार, अनुकूलनशीलता और ग्राहक-केंद्रितता के महत्व को दर्शाते हैं।

निष्कर्ष : खुदरा क्षेत्र के डिजिटल परिवर्तन ने अभूतपूर्व परिवर्तन के युग की शुरुआत की है, जिसने व्यवसायों के संचालन, उपभोक्ताओं के साथ जुड़ने और बाजार में खुद को स्थापित करने के तरीके को फिर से परिभाषित किया है। जैसे-जैसे हम इस गतिशील परिदृश्य की अपनी खोज को समाप्त करते हैं, कई प्रमुख विषय और निहितार्थ सामने आते हैं, जो खुदरा उद्योग के भीतर परिवर्तनकारी शक्ति और चल रहे विकास पर प्रकाश डालते हैं।

वॉलमार्ट और जारा के केस स्टडीज डिजिटल परिवर्तन परिदृश्य को नेविगेट करने के लिए खुदरा विक्रेताओं द्वारा नियोजित विविध रणनीतियों का एक विस्तृत दृश्य प्रस्तुत करते हैं। ग्राहक-केंद्रितता और नवाचार पर अमेजॅन के निरंतर ध्यान ने वैश्विक स्तर पर ई-कॉमर्स के लिए नए मानक स्थापित किए हैं।स्टारबक्स दर्शाता है कि मोबाइल तकनीक और डेटा एनालिटिक्स का लाभ उठाने से कैसे अधिक व्यक्तिगत और सहज ग्राहक अनुभव बनाया जा सकता है। वॉलमार्ट के ऑनलाइन और ऑफलाइन चौनलों का एकीकरण आधुनिक खुदरा वातावरण में सर्वव्यापी रणनीतियों के महत्व को दर्शाता है जारा की चुस्त और तकनीक से प्रेरित आपूर्ति श्रृंखला इस बात का उदाहरण है कि कैसे डिजिटल परिवर्तन पारंपरिक उद्योगों में क्रांति ला सकता है, विशेष रूप से फास्ट फैशन के क्षेत्र में। केस स्टडीज से परे, खुदरा प्रबंधन और उपभोक्ता व्यवहार में डिजिटल परिवर्तन की हमारी खोज महत्वपूर्ण रुझानों और चुनौतियों को उजागर करती है। ऑनलाइन चौनलों की ओर उपभोक्ता खरीदारी पैटर्न में बदलाव और ऑनलाइन समीक्षाओं का प्रभाव एक मजबूत डिजिटल उपस्थिति के महत्व को रेखांकित करता है। उपभोक्ता वरीयताओं को आकार देने में सोशल मीडिया की भूमिका और प्रभावशाली मार्केटिंग को अपनाना खुदरा परिदृश्य में डिजिटल और सामाजिक तत्वों की परस्पर संबद्धता पर जोर देता है।

निरंतर प्रकृति: खुदरा क्षेत्र में डिजिटल परिवर्तन एक मंजिल नहीं बल्कि एक सतत यात्रा है। तकनीकी प्रगति की तेज गति यह सुनिश्चित करती है कि आज जो अत्याधुनिक है वह कल आम हो सकता है। खुदरा विक्रेताओं को इस निरंतर विकसित होते परिदृश्य में आगे रहने के लिए अनुकूलनशीलता, नवाचार और आगे की सोच वाली मानसिकता की संस्कृति विकसित करनी चाहिए । कृत्रिम बुद्धिमत्ता, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और डेटा एनालिटिक्स जैसी उभरती हुई तकनीकों का एकीकरण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार है। ये तकनीकें खुदरा विक्रेताओं को परिचालन दक्षता बढ़ाने, ग्राहक अनुभवों को वैयक्तिकृत करने और विशाल से कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के अभूतपूर्व अवसर प्रदान करती हैं

खुदरा विक्रेताओं के लिए निहितार्थ: जैसे-जैसे खुदरा विक्रेता डिजिटल युग में अपनी राह तैयार कर रहे हैं, कई निहितार्थ उभर रहे हैं:

1. **ग्राहक-केंद्रितता पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता:** अमेजन और स्टारबक्स की सफलता ग्राहक-केंद्रितता के स्थायी महत्व को रेखांकित करती है। ग्राहकों की प्राथमिकताओं को समझना और उन्हें पूरा करना, व्यक्तिगत अनुभव प्रदान करना और बदलती अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए निरंतर नवाचार करना सफलता के लिए मौलिक हैं।

2. **ऑनलाइन और ऑफलाइन चैनलों का एकीकरण महत्वपूर्ण है:** वॉलमार्ट की सफलता की कहानी ऑनलाइन और ऑफलाइन चौनलों को सहजता से एकीकृत करने के महत्व को उजागर करती है। एक सर्वव्यापी दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि खुदरा विक्रेता उपभोक्ताओं से वहीं मिलें जहाँ वे हैं, विभिन्न टचपॉइंट्स पर एक सुसंगत और सुसंगत ब्रांड अनुभव प्रदान करते हैं ।

3. **डेटा एक रणनीतिक संपत्ति है:** डेटा-संचालित निर्णय लेना, जैसा

कि स्टारबक्स और अमेजॅन द्वारा उदाहरण दिया गया है, एक रणनीतिक अनिवार्यता है। खुदरा विक्रेताओं को उपभोक्ता व्यवहार में सार्थक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने , संचालन को अनुकूलित करने और सूचित व्यावसायिक रणनीतियों को चलाने के लिए डेटा एनालिटिक्स की शक्ति का उपयोग करना चाहिए।

4. नैतिक विचार और विश्वास सर्वोपरि हैं: ऐसे युग में जहाँ डेटा गोपनीयता की चिंताएँ बढ़ रही हैं, खुदरा विक्रेताओं को नैतिक विचारों को प्राथमिकता देनी चाहिए। डेटा सुरक्षा, पारदर्शिता और प्रौद्योगिकी के जिम्मेदार उपयोग को सुनिश्चित करके उपभोक्ता विश्वास का निर्माण और उसे बनाए रखना दीर्घकालिक सफलता के लिए महत्वपूर्ण है।

5. भविष्य की दिशाएँ और शोध दिशाएँ: खुदरा क्षेत्र में डिजिटल परिवर्तन की भविष्य की दिशाएँ उभरती हुई प्रौद्योगिकियों, विकसित होते उपभोक्ता व्यवहारों और विनियामक ढाँचों जैसे बाहरी कारकों द्वारा आकार लेने की संभावना है। इस क्षेत्र में शोध को डेटा-संचालित निर्णय लेने के नैतिक निहितार्थों, खुदरा क्षेत्र में रोजगार पर उभरती हुई प्रौद्योगिकियों के प्रभाव और स्थिरता और सामाजिक जिम्मेदारी को संबोधित करने में खुदरा की भूमिका पर गहराई से विचार करना चाहिए। जैसे-जैसे हम इस गतिशील परिदृश्य में आगे बढ़ते हैं, यह स्पष्ट होता जाता है कि प्रौद्योगिकी और मानव-केंद्रित मूल्यों के बीच तालमेल खुदरा क्षेत्र के भविष्य को परिभाषित करेगा। उपभोक्ता की जरूरतों की गहरी समझ के साथ नवाचार को संतुलित करना, समावेशिता को बढ़ावा देना और स्थिरता को अपनाना एक ऐसा खुदरा परिदृश्य बनाने के लिए केंद्रीय होगा जो न केवल जीवित रहेगा बल्कि डिजिटल युग में फलता-फूलता रहेगा।

निष्कर्ष रूप में, खुदरा क्षेत्र का डिजिटल परिवर्तन एक जटिल और बहुआयामी यात्रा है, जो चुनौतियों, अवसरों और प्रासंगिकता की निरंतर खोज से चिह्नित है। ग्राहक-केंद्रितता, नवाचार और नैतिक विचारों के सिद्धांतों को अपनाने वाले खुदरा विक्रेता न केवल डिजिटल युग के अनुकूल होने के लिए तैयार हैं, बल्कि तेजी से परस्पर जुड़े और तकनीकी रूप से संचालित दुनिया में खुदरा क्षेत्र के भविष्य का नेतृत्व और आकार देने के लिए तैयार हैं।

- **भावी अनुसंधान के लिए सिफारिशें :** खुदरा क्षेत्र में डिजिटल परिवर्तन का उभरता परिदृश्य हमारी समझ को गहरा करने, उभरते रुझानों का अनुमान लगाने और अनसुलझे सवालों को हल करने के लिए आगे की खोज और शोध को आमंत्रित करता है। जैसा कि हम भविष्य के शोध प्रयासों के लिए मार्ग तैयार करते हैं, खुदरा प्रबंधन और उपभोक्ता व्यवहार में ज्ञान के बढ़ते भंडार में सार्थक योगदान देने के लिए कई प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान देने की आवश्यकता है ।

1. डेटा-संचालित निर्णय लेने में नैतिक विचार: जबकि डेटा-संचालित निर्णय लेना खुदरा रणनीतियों का आधार बन गया है, उपभोक्ता डेटा की विशाल मात्रा का उपयोग करने के नैतिक निहितार्थ भविष्य के शोध के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बने हुए हैं। खुदरा सेटिंग्स में डेटा संग्रह, भंडारण और उपयोग के आसपास के नैतिक विचारों की जांच करना सर्वोपरि है। शोधकर्ताओं को उपभोक्ता सहमति, गोपनीयता सुरक्षा और खुदरा संचालन में तेजी से परिष्कृत डेटा एनालिटिक्स के सामाजिक प्रभावों के सवालों पर गहराई से विचार करना चाहिए। जिम्मेदार डेटा उपयोग के लिए नैतिक ढांचे और दिशानिर्देशों की सूक्ष्म खोज उद्योग प्रथाओं को आकार देने और नवाचार और उपभोक्ता संरक्षण के बीच संतुलन सुनिश्चित करने में सहायता करेगी।

2. रोजगार पर उभरती हुई प्रौद्योगिकियों का प्रभाव: खुदरा परिचालन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स और स्वचालन जैसी उभरती हुई प्रौद्योगिकियों का एकीकरण इस क्षेत्र में रोजगार के भविष्य के बारे में सवाल उठाता है। भविष्य के शोध में कार्यबल पर प्रौद्योगिकी-संचालित परिवर्तनों के प्रभावों का पता लगाना चाहिए, जिसमें संभावित नौकरी विस्थापन, नई भूमिकाओं का उदय और डिजिटल खुदरा युग में आवश्यक कौशल सेट शामिल हैं। तकनीकी प्रगति के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों को समझना नीति निर्माताओं, उद्योग के नेताओं और शिक्षकों को खुदरा क्षेत्र में रोजगार की बदलती प्रकृति को नेविगेट करने के लिए रणनीति विकसित करने में मार्गदर्शन करेगा।

3. खुदरा प्रथाएँ: चूँकि उपभोक्ताओं और व्यवसायों के लिए समान रूप से एक केंद्रीय चिंता बनती जा रही है, इसलिए भविष्य के शोध में डिजिटल परिवर्तन और संधारणीय खुदरा प्रथाओं के प्रतिच्छेदन की जाँच की जानी चाहिए। इसमें खुदरा संचालन के पर्यावरणीय पदचिह्न को कम करने, संधारणीयता के लिए आपूर्ति श्रृंखलाओं को अनुकूलित करने और पर्यावरण के अनुकूल और सामाजिक रूप से जिम्मेदार खुदरा प्रथाओं के प्रति उपभोक्ता धारणाओं और व्यवहारों को समझने में प्रौद्योगिकी की भूमिका का पता लगाना शामिल है।

4. खुदरा क्षेत्र में संवर्धित वास्तविकता (AR) और आभासी वास्तविकता (VR) की भूमिका: संवर्धित वास्तविकता (AR) और आभासी वास्तविकता (VR) के आगमन से खुदरा अनुभव को बदलने की रोमांचक संभावनाएँ सामने आती हैं। भविष्य के शोध में ग्राहक जुड़ाव को बढ़ाने, इमर्सिव शॉपिंग अनुभव बनाने और ऑनलाइन और ऑफलाइन खुदरा के बीच की खाई को पाटने में AR और VR के संभावित अनुप्रयोगों पर गहराई से विचार किया जाना चाहिए। AR और VR तकनीकों के प्रति उपभोक्ता की प्रतिक्रियाओं को समझना, खरीदारी के निर्णयों पर उनका प्रभाव और खुदरा विक्रेताओं के लिए उनके द्वारा प्रस्तुत चुनौतियाँ और अवसर खुदरा वातावरण के भविष्य को आकार देने के लिए आवश्यक होंगे।

5. डिजिटल रिटेल में समावेशिता और सुलभता: डिजिटल परिवर्तन समावेशी होना चाहिए, जिससे यह सुनिश्चित हो कि तकनीकी प्रगति विविध उपभोक्ता जनसांख्यिकी को लाभ पहुंचाए। भविष्य के शोध में डिजिटल रिटेल में समावेशिता और सुलभता के मुद्दों की जांच की जानी चाहिए, जिसमें उपयोगकर्ता इंटरफेस, डिजिटल साक्षरता और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के डिजाइन जैसे कारकों पर विचार किया जाना चाहिए। यह पता लगाना कि खुदरा विक्रेता किस तरह से विकलांग व्यक्तियों और हाशिए पर पड़े समुदायों सहित विविध जरूरतों को पूरा करने के लिए तकनीक का लाभ उठा सकते हैं, एक अधिक न्यायसंगत डिजिटल रिटेल परिदृश्य बनाने में योगदान देगा।

6. व्यवहार में क्रॉस-कल्चरल विविधताएँ : डिजिटल युग में उपभोक्ता व्यवहार सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होता है जो धारणाओं, वरीयताओं और खरीद निर्णयों को आकार देते हैं। भविष्य के शोध में डिजिटल उपभोक्ता व्यवहार में क्रॉस-कल्चरल विविधताओं का पता लगाना चाहिए , यह देखते हुए कि सांस्कृतिक बारीकियाँ ऑनलाइन खरीदारी की आदतों, डिजिटल प्लेटफॉर्म पर विश्वास और व्यक्तिगत मार्केटिंग के प्रति प्रतिक्रियाओं को कैसे प्रभावित करती हैं। वैश्विक बाजारों में काम करने वाले खुदरा विक्रेताओं के लिए इन विविधताओं को समझना महत्वपूर्ण होगा ताकि वे अपनी

रणनीतियों को प्रभावी ढंग से तैयार कर सकें और विविध उपभोक्ता आबादी के साथ सार्थक संबंध बना सकें।

निष्कर्ष में, भविष्य के शोध के लिए सिफारिशें खुदरा क्षेत्र में डिजिटल परिवर्तन परिदृश्य की गतिशील और विकसित प्रकृति को रेखांकित करती हैं। नैतिक विचारों की खोज करके, रोजगार पर उभरती प्रौद्योगिकियों के प्रभाव को समझकर, टिकाऊ खुदरा प्रथाओं में तल्लीन होकर, एआर और वीआर की भूमिका की जांच करके, समावेशिता और पहुंच को संबोधित करके, और डिजिटल उपभोक्ता व्यवहार में क्रॉस-सांस्कृतिक विविधताओं की खोज करके, शोधकर्ता मूल्यवान अंतर्दृष्टि का योगदान कर सकते हैं जो खुदरा उद्योग को अधिक अभिनव, जिम्मेदार और उपभोक्ता-केंद्रित भविष्य की ओर ले जाएगा। प्रौद्योगिकी, नैतिकता और उपभोक्ता गतिशीलता का परस्पर संबंध अन्वेषण के लिए एक समृद्ध टेपेस्ट्री प्रस्तुत करता है, और भविष्य के शोध प्रयासों से प्राप्त अंतर्दृष्टि आने वाले वर्षों में खुदरा क्षेत्र के प्रक्षेपवक्र को आकार देगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. बिदीन , सी. (2016). श्रम दृश्यता: प्रभावशाली लोगों के फैशन ब्रांड विज्ञापन से जुड़ना इंस्टाग्राम . मीडिया इंटरनेशनल ऑस्ट्रेलिया, 161(1) , 86-100.
2. बर्जर, पीडी, और नस्र, एनआई (1998)। ग्राहक जीवनकाल मूल्य: विपणन मॉडल और अनुप्रयोग। जर्नल ऑफ इंटरएक्टिव मार्केटिंग, 12(1) , 17-30।
3. बर्सिन , जे. (2018). डिजिटल लर्निंग का विघटन: दस बातें जो हमने सीखी हैं. डेलोइट यूनिवर्सिटी प्रेस.
4. चौफी, डी., एलिस-चाडविक, एफ., मेयर, आर., और जॉनसन, के. (2016). डिजिटल मार्केटिंग: रणनीति, कार्यान्वयन और अभ्यास। पियर्सन यूके ।
5. शेवेलियर, जेए, और मेजलिन , डी. (2006)। बिक्री पर मौखिक प्रचार का प्रभाव : ऑनलाइन पुस्तक समीक्षा। जर्नल ऑफ मार्केटिंग रिसर्च, 43(3) , 345-354।
6. हन्नान , एम.टी., और फ्रीमैन, जे. (1984). संरचनात्मक जड़ता और संगठनात्मक परिवर्तन। अमेरिकी समाजशास्त्रीय समीक्षा, 149-164।
7. हुआंग, एमएच, और रस्ट, आरटी (2018)। सेवा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता । जर्नल ऑफ सर्विस रिसर्च, 21(2) , 155-172।
8. इवानोव , डी., डोलगुई , ए., और सोकोलोव , बी. (2016)। आपूर्ति श्रृंखलाओं में तरंग प्रभाव : व्यवधान प्रबंधन में व्यापार-बंद दक्षता-लचीलापन-लचीलापन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ प्रोडक्शन रिसर्च, 54(23) , 7142-7163।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

अनुसूचित जनजाति का आर्थिक शोषण के संरक्षणात्मक उपाय एवं उसका प्रभाव (म.प्र. के धार जिले के विशेष संदर्भ में)

अरूणा गेहलोत* डॉ. पी. सी. बंसल**

* शोधार्थी (अर्थशास्त्र) डॉ. बी. आर. अंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, डॉ. अंबेडकर नगर, महू, जिला– इंदौर (म.प्र.) भारत
** विभागाध्यक्ष (अर्थशास्त्र) डॉ. बी. आर. अंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, डॉ. अंबेडकर नगर, महू, जिला– इंदौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – संविधान में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजातियों के अलावा अन्य कमजोर वर्गों का शैक्षिक एवं आर्थिक दृष्टि के उत्थान करने एवं उनकी सामाजिक असमर्थताओं को दूर करने के उद्देश्य से उन्हें सुरक्षा तथा संरक्षण प्रदान करने की व्यवस्था की गयी है। जैसे कि – अनुच्छेद 15, 16. 17, 19, 23, 29, 46, 330, 332 एवं 335 आदि संविधान में अनुच्छेद बनाकर आर्थिक शोषण के विरूद्ध निपटने के लिये उपाय किये गये है।
शब्द कुंजी – अनुसूचित जनजाति का आर्थिक शोषण एवं उनके संरक्षणात्मक उपाय।

प्रस्तावना – अनुसूचित जनजाति को भारत के संविधान की धारा 366(25) उन समुदायों को अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिये जाने का प्रावधान करती है, जो अनुच्छेद 342 के तहत अनुसूचित है।

अनुच्छेद 342 के अनुसार –राष्ट्रपति किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र के संबंध में और जहां वह राज्य है, उसके राज्यपाल से परामर्श करने के पश्चात लोक अधिसूचना द्वारा उन जनजातियों या जनजाति समुदायों के भागों या उनमें से यूथों को विनिर्दिष्ट कर सकेगा, जिन्हें इस संविधान के प्रयोजनों के लिये यथास्थिति उस राज्य या संघ राज्य क्षेत्र के संबंध में अनुसूचित जनजातियां समझा। भारत की कुल जनसंख्या में जनजातियों का भाग 8.2 प्रतिशत है। इनमें से 58 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन कर रहे।

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम 1989 – इस अधिनियम के अंतर्गत अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के ऊपर होने वाले अत्याचारों को रोकने का प्रावधान किया गया है।

मध्यप्रदेश में अनुसूचित जनजाति को ऋणों से छुटकारा पाने हेतु किये गये कानूनी प्रावधान बनायें गये, जो इस प्रकार से है–

1. मध्यप्रदेश अनुसूचित जनजाति ऋण मुक्ति (संशोधन) विनिमय 1963
2. मध्यप्रदेश महाजन अधिनियम
3. मध्यप्रदेश कुसीदात्मक (यूज्यूरियस) ऋण अधिनियम 1938
4. मध्यप्रदेश देनदार सुरक्षा अधिनियम
5. मध्यप्रदेश अनुसूचित जनजाति ऋण सहायता अध्यादेश 1966
6. मध्यप्रदेश अनुसूचित जनजाति साहूकार विनिमय 1972

अध्ययन क्षेत्र –मध्यप्रदेश का धार जिला है जिसमें अनुसूचित जनजाति एवं गैर अनुसूचित जनजाति दोनों ही वर्गो के लोग निवास करते है लेकिन धार जिला जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र है। अध्ययन क्षेत्र में धार जिले के 13 विकासखण्डों में से 5 विकासखण्ड धरमपुरी, मनावर, उमरबन, नालछा एवं धार को सम्मिलित किया गया है, जो कि अनुसूचित जनजातिय बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण उपयोजना क्षेत्र में सम्मिलित है।

अध्ययन का समग्र –मध्यप्रदेश का धार जिलें में चयनित विकासखण्ड के अनुसूचित जनजाति परिवार अध्ययन का समग्र है।

अध्ययन की इकाई –मध्यप्रदेश के धार जिले की चयनित 5 विकासखण्डों से 300 परिवार अध्ययन की इकाई है।

निदर्शन विधि –शोध अध्ययन हेतु सोद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। शोध अध्ययन अनुसूचित जनजाति बाहुल्य क्षेत्र धार जिले के 13 विकासखण्डों में से 5 विकासखण्डों का चयन किया गया है। जिसमें प्रत्येक विकासखण्ड से 60 परिवारों के सदस्य संख्या एवं प्रत्येक विकासखण्ड से 6–6गांव तथा प्रत्येक गांव से 10–10 परिवारों को चुना गया है।

निदर्शन का आकार –धार जिले के 300 परिवार को निदर्शन के आकार के रूप में चुना गया है।

समंक संकलन के स्त्रोत – दो प्रकार से किया गया है।

1. **प्राथमिक स्त्रोत** –प्राथमिक आंकडे शोधकर्त्ता के द्वारा अध्ययन क्षेत्र में जाकर अनुसूचित जनजाति के लोगों से प्रत्यक्ष रूप से संपर्क करके जानकारी प्राथमिक स्त्रोतों जैसे – अवलोकन, समूहचर्चा, साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्राप्त किये गये।
2. **द्वितीयक स्त्रोत** –द्वितीयक स्त्रोत यह प्रकाशित एवं अप्रकाशित होते हैं तथा यह किसी भी सरकारी कार्यालय द्वारा प्राप्त किये जा सकते है। जैसे कि – समाचार पत्र, पुस्तक, शोध पत्रिकायें, शासकीय दस्तावेज एवं अभिलेख द्वारा द्वितीयक समंको को एकत्रित किया गया है।

यंत्र एवं तकनीकी –अध्ययन से संबंधित आंकडों का संकलन करने के लिये मोबाइल फोन, ओडियो–वीडियों रिकार्डिंग, कैमरा एवं कम्प्यूटर का उपयोग किया गया है।

समंको का विश्लेषण –समस्त एकत्रित आंकडो व सूचनाओं को जो चयनित क्षेत्र से एकत्रित किये गये है उनके आधार पर SPSS के माध्यम से तथ्यों का सारणीयन वर्गीकरण एवं सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है।

शोध अध्ययन क्षेत्र धार जिला –धार जिले का क्षेत्रफल 8153 वर्ग

किलोमीटर है। धार जिला परमार वंश की राजधानी थी। यह सर्वाधिक जनजाति वाला जिला है।

2011 की जनगणना के अनुसार धार जिले की जनसंख्या 21,85,793 व्यक्ति है, जिसमें 11,12,725 पुरूष एवं 10,73,068 महिलायें है। अर्थात जिले का लिंगानुपात 1000 पुरूषों पर 964 महिलायें है। जिले की साक्षरता दर 60.57 प्रतिशत है जिसमें 18.90 प्रतिशत आबादी शहरी क्षेत्रों में रहती है। जिले का जनसंख्या घनत्व 270 प्रति वर्ग किलोमीटर है। जिले में अनुसूचित जाति 6.65 प्रतिशत एवं 55.94 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति के लोग रहते है, इस कारण यह अनुसूचित जनजाति बाहुल्य क्षेत्र है।

धार जिले का सर्वेक्षण करने पर निम्नलिखित आंकडे प्राप्त हुये जो इस प्रकार से है–

सारिणी क्रं. 1: उत्तरदाता को आर्थिक शोषण के संरक्षात्मक उपाय की जानकारी के आधार पर वर्गीकरण

उत्तरदाता को आर्थिक शोषण के संरक्षणात्मक उपाय की जानकारी	उत्तरदाता	प्रतिशत
हां,संरक्षणात्मक उपाय की जानकारी है	190	63.3प्रतिशत
नहीं, संरक्षणात्मक उपाय की जानकारी है	110	36.7 प्रतिशत
योग	300	100.0 प्रतिशत

आरेख क्रं.– 1

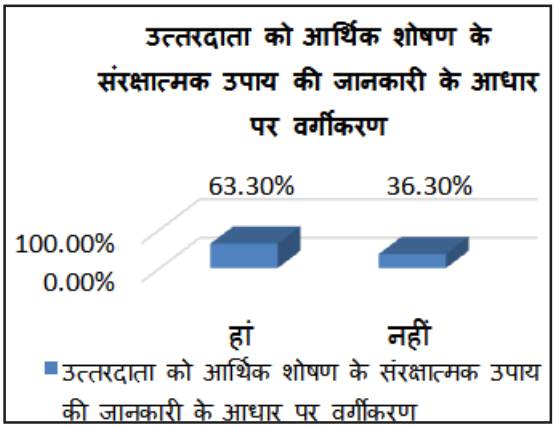

उपरोक्त सारिणी में उत्तरदाता से अनु. जनजाति पर होने वाले आर्थिक शोषण के कारण जानने के आधार पर वर्गीकरण 300 उत्तरदाताओं में से 190 उत्तरदाताओं का कहना है कि वे आर्थिक शोषण के संरक्षणात्मक उपाय के बारे में जानते है जिसका 63.3 प्रतिशत है जो कि सबसे अधिक है जबकि 110 उत्तरदाताओं का कहना है कि उनको इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है जिसका 36.7 प्रतिशत है जो कि सबसे कम है। अत: धार जिले के अधिकांश उत्तरदाता आर्थिक शोषण के संरक्षात्मक उपाय के बारे में जानते है।

सारिणी क्रं. 2: उत्तरदाता को शासकीय रोजगार मूलक योजनाओं की जानकारी होने के आधार पर वर्गीकरण

उत्तरदाता को रोजगार मूलक योजनाओं की जानकारी	उत्तरदाता	प्रतिशत
हां	178	59.3 प्रतिशत
नहीं	122	40.7 प्रतिशत
योग	300	100.0 प्रतिशत

आरेख क्रं.– 2

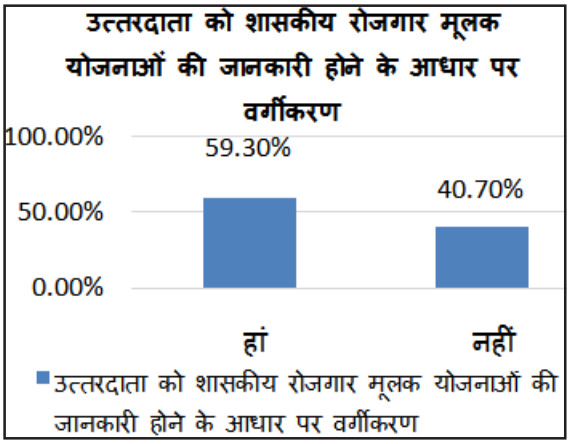

उपरोक्त सारिणी में उत्तरदाता को शासकीय रोजगार मूलक योजनाओं की जानकारी होने के आधार पर वर्गीकरण करने पर ज्ञात हुआ कि 300 उत्तरदाताओं में से 178 उत्तरदाता ने यह स्वीकार किया कि वे रोजगार मूलक योजनाओं के बारे में जानकारी रखते है जिसका 59.3 प्रतिशत है जो कि सर्वाधिक है जबकि 122 उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्हें रोजगार मिलक योजनाओं के बारे में कोई जानकारी नहीं है जिसका 40.7 प्रतिशत है, जो कि सबसे कम है। अत: इससे स्पष्ट है कि जिले के अधिकांश उत्तरदाताओं को रोजगार मूलक योजनाओं की जानकारी है।

सारिणी क्रं. 3: उत्तरदाता के सामाजिक योजनाओं का लाभ मिलने से सामाजिक स्थिति में परिवर्तन के आधार पर वर्गीकरण

उत्तरदाता के सामाजिक स्थिति में परिवर्तन	उत्तरदाता	प्रतिशत
हां, सामाजिक योजनाओं से परिवर्तन आया	117	39.0 प्रतिशत
नहीं, कोई परिवर्तन नहीं आया है।	56	18.7 प्रतिशत
हां, थोडा बहुत हुआ है	92	30.7 प्रतिशत
पहले से बेहतर हुआ है	35	11.6 प्रतिशत
योग	300	100.0 प्रतिशत

आरेख क्रं.– 3

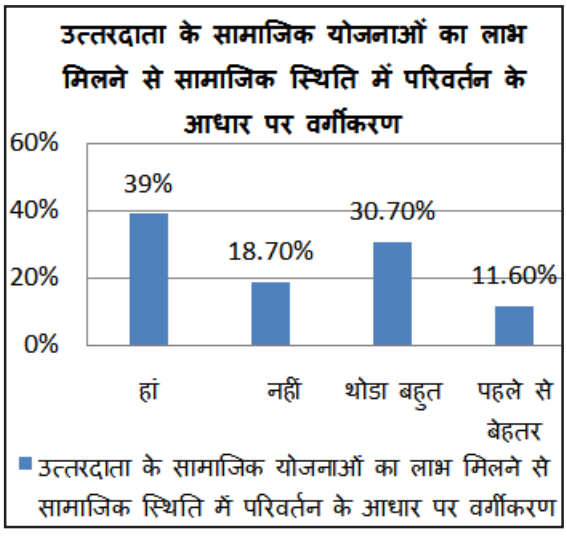

उपरोक्त सारिणी में उत्तरदाता के सरकार द्वारा चलायी जा रही सामाजिक योजनाओं का लाभ मिलने से सामाजिक स्थिति में परिवर्तन के आधार पर वर्गीकरण करने पर 300 उत्तरदाताओं में से 117 उत्तरदाताओं का कहना है कि सामाजिक योजनाओं का लाभ मिलने से उनकी सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आया है जिसका 39.0 प्रतिशत है, जो कि सबसे अधिक है जबकि 56 उत्तरदाताओं ने इस बात को अस्वीकार किया कि सामाजिक योजनाओं का उन्हें कोई लाभ नहीं मिला और न ही उनकी सामाजिक स्थिति में कोई सुधार हुआ है, जिसका 18.70 प्रतिशत है। उसी प्रकार 92 उत्तरदाताओं का कहना है कि सामाजिक योजनाओं का लाभ मिलने से उनकी सामाजिक स्थिति में थोडा बहुत सुधार हुआ है जिसका 30.7 प्रतिशत है जबकि 35 उत्तरदाताओं ने कहा कि सामाजिक योजनाओं का लाभ मिलने से उनकी सामाजिक स्थिति पहले से बेहतर हुई है जिसका 11.3 प्रतिशत है। अत: इससे स्पष्ट है कि धार जिले के अधिकांश उत्तरदाता सरकार द्वारा चलायी जा रही सामाजिक योजनाओं का लाभ मिलने से लाभांवित हुये है जिससे उनकी सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आया है।

निष्कर्ष :

1. धार जिले के 63.3 प्रतिशत उत्तरदाता आर्थिक शोषण के संरक्षात्मक उपाय के बारे में जानते है जबकि 46.7 प्रतिशत उत्तरदाता आर्थिक शोषण के संरक्षणात्मक उपाय के बारे में कुछ नहीं जानते है।
2. धार जिले के 59.9 उत्तरदाताओं को रोजगार मूलक योजनाओं की जानकारी है जबकि 40.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं को इन रोजगार मूलक योजनाओं की कोई जानकारी नहीं है। इससे स्पष्ट है कि धार जिले के अधिकांश उत्तरदाताओं को रोजगार मूलक योजनाओं की जानकारी है।
3. धार जिले के 39 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार सरकार द्वारा चलायी जा रही सामाजिक योजनाओं का लाभ मिलने से उनकी सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आया है जबकि 18.70 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार सरकार द्वारा चलायी जा रही सामाजिक योजनाओं से उनके सामाजिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया है। उसी प्रकार 30.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार सरकार द्वारा चलायी जा रही सामाजिक योजनाओं से उनके सामाजिक स्थिति में थोडा बहुत सुधार हुआ है जबकि 11.30 प्रतिशत उततरदाताओं के अनुसार इन सरकारी योजनाओं से उनके सामाजिक जीवन में पहले से बेहतर सामाजिक परिवर्तन आया है। अत: इससे स्पष्ट है कि धार जिले के अधिकांश उत्तरदाता इन सरकारी योजनाओं से लाभांवित हुये है जिससे उनकी सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आया है।

सुझाव :

1. जनजातियों का विकास सुनिश्चित करने के लिये उनके आर्थिक शोषण को समाप्त करने की आवश्यकता है।
2. यह तभी संभव हो सकता है, जब जनजातियों की नीति निर्धारण प्रक्रिया एवं कार्यक्रमों के कार्यांवयन में सहभागिता सुनिश्चित की जायें।
3. संविधान की छठी अनुसूची के प्रावधानों, पांचवी अनुसूची क्षेत्रों तथा अन्य जनजातीय बाहुल्य क्षेत्रों में जो जनजातीय उपयोजना के अंतर्गत या इसके बाहर भी विस्तार करने की आवश्यकता है।
4. प्रस्तावित छठी अनुसूची क्षेत्रों के लिये अलग से धनराशि का प्रबंध करने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. भारती एवं डॉ. पाण्डेय (1994),**'भारतीय अर्थव्यवस्था (स्वतंत्रता पश्चात)',** मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल।
2. डॉ. माथुर, बी.एल. (2009),**'ग्रामीण अर्थव्यवस्था',** अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली।
3. पुणेकर (2021),**'अनु.जाति एवं अनु.जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम',** पुणेकर पब्लिकेशन्स इंदौर, पृ. 114
4. हसनैन नदीम (1996),**'जनजातीय भारत',** जवाहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली, पांचवा संस्करण, पृ.553

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

The Challeges of Divorce & Remarriage in Hindu Law

Prof. (Dr.) Bijay Kumar Yadav*

***Dean (Law) IIMT College of Law, Greater Noida (U.P.) INDIA**

Abstract : This abstract delves into the legal framework governing divorce and remarriage under Hindu law in India, highlighting its evolution from traditional norms to contemporary legislative provisions. Historically, Hindu marriage was considered a sacred and indissoluble union, with ancient texts like Manusmriti emphasizing its lifelong nature. However, societal changes necessitated legal reforms, leading to the enactment of the Hindu Marriage Act, 1955. This landmark legislation introduced divorce into Hindu law, outlining specific grounds such as adultery, cruelty, desertion, and others, thereby offering legal recourse for individuals in untenable marriages.

The Act also addresses special provisions for women, acknowledging their unique vulnerabilities. Remarriage is permitted under the Act, provided certain legal conditions are met, enabling individuals to rebuild their lives post-divorce. Despite the progressive legal framework, societal acceptance of divorce and remarriage varies, with urban areas showing greater acceptance compared to rural regions where stigma may persist.

Challenges in the practical implementation of these laws include lack of legal awareness, judicial delays, and persistent gender biases. This abstract underscores the need for continuous legal education, judicial reforms, and societal change to bridge the gap between the law and lived realities, ensuring that individuals can lead dignified and fulfilling lives post-divorce and remarriage.

Keywords: Adultery, Divorce, Remarriage.

Introduction - Divorce and remarriage, as concepts, have undergone significant transformation within Hindu law, reflecting broader social changes and the dynamic nature of the legal framework. Historically, Hindu marriage was viewed as a sacred and indissoluble union. However, modern legislative changes have acknowledged the need for legal recourse in marital breakdowns and have provided pathways for divorce and remarriage.

Divorce and remarriage are significant aspects of modern societal dynamics, reflecting evolving attitudes towards marriage, personal freedom, and the pursuit of happiness. Both concepts, while distinct, are deeply interwoven with cultural, legal, and psychological threads that influence individuals' lives globally. This article explores the contemporary landscape of divorce and remarriage, examining their causes, impacts, and the changing societal norms surrounding these phenomena.

Litreture Review: Here are some reference books in India specifically focusing on divorce and remarriage laws, providing comprehensive insights and analyses.A comprehensive resource that covers various aspects of family law in India, including divorce and remarriage.

1. "Hindu Law" by Mulla: This authoritative text includes detailed commentary on divorce and remarriage laws under Hindu personal law.

2. "Introduction to Hindu Law" by N.R. Raghavachariar : It Provides insights into Hindu family law, including marriage, divorce, and remarriage.

3. "Law of Marriage and Divorce" by Kusum: This book offers a detailed examination of marriage and divorce laws applicable to various religious communities in India, including Hindu, Muslim, Christian, and Parsi laws.

4. "Law of Divorce: A Commentary on Hindu Marriage Act, 1955" by Dr. Rega Surya Rao :Focuses specifically on the provisions of the Hindu Marriage Act, 1955, relating to divorce.

5. "Muslim Law in Modern India" by Paras Diwan:Addresses divorce and remarriage under Muslim personal law, providing a comparative perspective with other personal laws in India.

6. "Christian Law of Divorce and Matrimonial Relief" by Sebastian Champappilly :Focuses on the legal framework for divorce and remarriage under Christian personal law in India.

7. "Parsi Law of Marriage and Divorce" by Feroze B. Andhyarujina: Explores the specific laws governing marriage and divorce within the Parsi community in India.

8. **"The Hindu Marriage Act, 1955"** by Satyajeet A. Desai :Offers detailed commentary on the Hindu Marriage Act, including sections related to divorce and remarriage.

9. **"Modern Hindu Law" by Paras Diwan :**A modern take on Hindu family law, covering contemporary issues in marriage, divorce, and remarriage.

10. "Family Law Lectures – Family Law II" by Poonam Pradhan Saxena :This book includes lectures and detailed discussions on divorce and remarriage under different personal laws in India.

11. "Law of Maintenance and Divorce" by Dr. S. R. Myneni :Focuses on maintenance and divorce laws applicable to various communities in India.

These books are essential for understanding the legal landscape of divorce and remarriage in India, offering detailed analysis, case law references, and commentary on statutory provisions.

Historical Context: Traditionally, Hindu marriages were considered sacramental, with the belief that marriage was a lifelong bond that could not be broken. Ancient texts like Manusmriti and the Dharmashastras emphasized the indissolubility of marriage, with the primary aim of ensuring the stability of the family unit and the continuity of societal order. Divorce was virtually non-existent and severely stigmatized.

The Hindu Marriage Act, 1955: The introduction of the Hindu Marriage Act in 1955 marked a significant departure from traditional norms, modernizing Hindu personal law to accommodate the changing social landscape. The Act applies to Hindus, Buddhists, Jains, and Sikhs, and it governs marriage, divorce, and related matters.

Grounds for Divorce: Section 13 of the Hindu Marriage Act, 1955, lists the grounds for divorce, including:

1. Adultery
2. Cruelty
3. Desertion for a continuous period of not less than two years
4. Conversion to another religion
5. Unsoundness of mind
6. Leprosy
7. Venereal disease in a communicable form
8. Renunciation of the world by entering a religious order
9. Not being heard of as alive for seven years or more

These provisions offer a legal mechanism for individuals to exit untenable marriages, reflecting a balance between traditional values and modern needs.

Special Provisions for Women: The Act includes special provisions that enable women to seek divorce on additional grounds:

1. If the husband has been guilty of rape, sodomy, or bestiality.
2. If a girl was married before she was fifteen years old and repudiated the marriage before turning eighteen.These provisions recognize the unique vulnerabilities women may face in marital relationships.

Remarriage under Hindu Law: Remarriage is legally permitted under the Hindu Marriage Act, 1955. Section 15 of the Act states that when a marriage has been dissolved by a decree of divorce and either there is no right of appeal against the decree or the time for appealing has expired, the parties to the marriage are at liberty to remarry. This provision ensures that individuals have the opportunity to rebuild their lives and form new familial bonds post-divorce.

Social and Cultural Considerations: While the legal framework permits divorce and remarriage, societal acceptance varies widely. In many parts of India, particularly in rural areas, divorced individuals, especially women, may still face social stigma and ostracization. Remarriage, though legally sanctioned, can also attract societal scrutiny. However, urban areas and progressive circles have shown greater acceptance of these legal provisions, reflecting a shift in cultural attitudes.

Challenges and Criticisms

Despite the progressive legal framework, several challenges persist:

Legal Awareness: Many individuals, especially in rural areas, are unaware of their legal rights concerning divorce and remarriage.

Judicial Delays: The judicial process can be lengthy and cumbersome, causing emotional and financial strain on the parties involved.

Gender Bias: Although the law provides equal grounds for divorce, societal norms often result in biases against women, affecting their social and economic well-being post-divorce.

The Landscape Of Divorce : Divorce, the legal dissolution of a marriage, has become increasingly common worldwide. Several factors contribute to this trend:

1. Changing Social Norms: Modern society places greater emphasis on individual happiness and fulfillment. This shift has made it more acceptable for individuals to end marriages that are unhappy or unfulfilling.

2. Economic Independence: As more people, especially women, achieve financial independence, they are less likely to stay in unsatisfactory or abusive marriages due to economic necessity.

3. Legal Reforms: Over the past few decades, many countries have reformed their divorce laws to make the process more accessible and less adversarial. No-fault divorce laws, for instance, allow couples to divorce without assigning blame.

4. Reduced Stigma: The stigma surrounding divorce has lessened considerably. While it remains a sensitive issue in some cultures, many societies have grown more accepting of divorce as a natural part of life.

Causes Of Divorce

Divorce can result from a myriad of reasons, often involving a combination of factors. Common causes include:

Communication Breakdown: Poor communication often leads to misunderstandings and unresolved conflicts.

Infidelity: Extramarital affairs can erode trust and intimacy, leading to irreparable damage in a marriage.

Financial Stress: Money-related issues, including debt, unemployment, or differing spending habits, can strain relationships.

Abuse: Physical, emotional, or psychological abuse is a critical reason for seeking divorce.

Incompatibility: Over time, couples may realize they have grown apart or have incompatible life goals and values.

The Process and Impact of Divorce

The process of divorce varies by jurisdiction but generally involves several stages: filing a petition, serving the spouse, responding, negotiating settlements, and finalizing the divorce decree. The impacts of divorce are profound and multifaceted:

Emotional Impact: Divorce can be emotionally taxing, involving feelings of grief, anger, and loss. Therapy and counseling can be crucial in helping individuals navigate these emotions.

Children: Children of divorced parents may face emotional and psychological challenges. Co-parenting arrangements and support systems are vital to mitigate negative impacts.

Financial Consequences: Divorces often lead to significant financial adjustments. Legal fees, division of assets, and potential alimony or child support can affect both parties' economic stability.

Remarriage: A Second Chance: Remarriage, entering into a new marriage after a divorce, is increasingly common. It represents a fresh start and the hope for a more fulfilling relationship. Key aspects of remarriage include:

1. Healing and Self-Reflection: Before remarrying, it is essential for individuals to take time to heal and reflect on their previous marriage. Understanding past mistakes and personal growth can contribute to the success of a new marriage.

2. Blended Families: Remarriages often involve blending families, which can be complex. Establishing new family dynamics and building relationships with stepchildren require patience and effort.

3. Legal and Financial Considerations: Remarrying can have legal and financial implications, especially concerning property rights, inheritance, and existing alimony or child support arrangements.

Challenges And Rewards Of Remarriage.

Remarriage comes with its unique set of challenges and rewards:

Challenges:

Trust Issues: Past experiences can lead to trust issues, requiring open communication and reassurance.

Blending Families: Integrating children from previous marriages into a new family unit can be challenging.

Ex-Spouse Dynamics: Maintaining a cooperative relationship with ex-spouses, particularly when children are involved, is crucial but often difficult.

Rewards:

Companionship: Remarriage offers a second chance at companionship and emotional support.

Personal Growth: Individuals often enter remarriage with more self-awareness and life experience, potentially leading to healthier relationships.

Stability: A successful remarriage can provide emotional and financial stability for both partners and their children.

Conclusion: The evolution of divorce and remarriage laws under Hindu law represents a significant shift towards acknowledging individual rights within the marital relationship. While the Hindu Marriage Act, 1955, has provided a robust legal framework, societal attitudes need to evolve concurrently to ensure that divorced and remarried individuals can lead dignified and fulfilling lives. Continuous efforts in legal education, judicial reforms, and societal awareness are essential to bridge the gap between the letter of the law and the lived realities of individuals.In essence, Hindu law's approach to divorce and remarriage underscores a delicate balance between preserving traditional values and embracing modernity, aiming to cater to the diverse and evolving needs of society.

Divorce and remarriage are integral aspects of modern life, reflecting broader societal changes towards individual fulfillment and autonomy. While divorce can be a challenging and painful process, it also offers an opportunity for personal growth and a fresh start. Remarriage, with its potential for new beginnings, requires thoughtful consideration and effort to build a harmonious and supportive family environment.

As societal attitudes continue to evolve, the importance of compassion, understanding, and effective communication in navigating these transitions cannot be overstated. Both divorce and remarriage, when approached with care and respect, can lead to meaningful and fulfilling lives for all involved.

References;-

1. "Family Law" by Paras Diwan
2. "Hindu Law" by Mulla
3. "Introduction to Hindu Law" by N.R. Raghavachariar
4. "Law of Divorce: A Commentary on Hindu Marriage Act, 1955" by Dr. Rega Surya Rao
5. "Law of Marriage and Divorce" by Kusum
6. "Muslim Law in Modern India" by Paras Diwan
7. "Christian Law of Divorce and Matrimonial Relief" by Sebastian Champappilly
8. "Parsi Law of Marriage and Divorce" by Feroze B. Andhyarujina
9. "The Hindu Marriage Act, 1955" by Satyajeet A. Desai
10. "Law of Maintenance and Divorce" by Dr. S. R. Myneni

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Mental Hygiene of College & University Students: Challenges and Solutions

Prof. (Dr.) Bijay Kumar Yadav*

***Dean (Law) IIMT College of Law, Greater Noida (U.P.) INDIA**

Abstract: The mental health of college students in 2025-26 faces unprecedented challenges due to a convergence of academic pressures, social expectations, and the ongoing impact of digital and societal transformations. With the rise in mental health issues such as anxiety, depression, and burnout, students are struggling to cope with an increasingly complex educational landscape. The transition to hybrid or fully online learning, alongside the pressures of social media and the competitive nature of academics, has further contributed to mental health concerns. Additionally, the stigma surrounding mental health in many societies, including India, continues to hinder students from seeking the help they need.

This paper explores the key mental health challenges faced by college students today, focusing on the socio-cultural, academic, and technological factors that shape these issues. It also discusses innovative solutions, including the integration of mental health services within the educational system, digital mental health tools, peer support programs, and the role of mindfulness and self-care practices.

The study highlights the importance of a holistic approach to student mental health, emphasizing collaboration between educational institutions, mental health professionals, and families. By leveraging technology, fostering peer support, and promoting mental health awareness, colleges can create environments that better support the well-being of students. As we move towards 2025, it is critical to develop proactive, accessible, and culturally sensitive mental health solutions that address the evolving needs of college students.

Keywords: Mental health, college students, anxiety, depression, digital stress, hybrid learning, peer support, mental health stigma, mindfulness, well-being.

Introduction - In 2025-26, mental health continues to be a critical concern for college students worldwide. The pressures and demands faced by students have evolved significantly with the rapid advancement of technology, increased academic competition, and the changing landscape of social interactions. College students, often between the ages of 18 and 25, are in a pivotal period of life where they navigate the complexities of adulthood, career expectations, and personal growth. This transitional phase can be both exciting and overwhelming, making mental health support more essential than ever.

This article delves into the primary mental health challenges faced by college students in 20-25-26 and offers potential solutions that institutions and individuals can adopt to mitigate these issues. It also discusses the role of technology, societal pressures, and institutional responses in addressing mental health concerns in a rapidly changing world.

Literature Review

1. "Unposted Letter" by T.T. Rangarajan (2016)

Though not explicitly focused on mental health or college students, *Unposted Letter* by T.T. Rangarajan provides timeless wisdom on personal growth, emotional resilience, and coping with life's challenges. The book is a collection of short reflections that encourage readers to introspect and develop a more balanced approach to life. Rangarajan's philosophy emphasizes mindfulness, self-compassion, and emotional regulation—all of which are crucial skills for managing mental health challenges.

2. "Well-being and Mental Health in India: Assessments and Interventions" by R.C. Mishra and Satish Pandey (2021)

In this academic work, R.C. Mishra and Satish Pandey present an in-depth analysis of mental health issues in India, with a focus on well-being and interventions that can be applied in educational settings. The book looks at the specific challenges Indian students face, including societal pressures, academic competition, and the stigma associated with seeking mental health care. Mishra and Pandey argue for the importance of developing mental health curricula in Indian schools and colleges, proposing evidence-based interventions to promote student well-

being.

3. "Mindscape: Coping with Stress and Anxiety in the Digital Age" by Dr. Samir Parikh (2018)

Dr. Samir Parikh, one of India's leading psychiatrists, focuses on the mental health challenges posed by the digital age in *Mindscape*. Although this book does not exclusively focus on college students, its themes are highly relevant to young adults who are navigating the pressures of academic life alongside the influence of technology and social media. Parikh explores how constant connectivity, social media comparisons, and digital overload contribute to stress, anxiety, and depression, issues that are particularly prevalent among college students.

4. "Counseling and Mental Health Care in Educational Institutions: India's Perspective" edited by R.N. Kakkar (2020)

This edited volume by Dr. R.N. Kakkar brings together contributions from various Indian mental health experts, educators, and counselors who focus on mental health care in Indian educational institutions. The book discusses the role of counseling in addressing the mental health needs of students, with a particular focus on the increasing demand for mental health services in schools and colleges. The authors explore how Indian colleges are evolving to meet these needs by introducing counselingcenters, wellness programs, and mental health awareness campaigns.

5**. "Life Skills and Mental Health for Adolescents" by Shikha Kapoor (2019)**

Shikha Kapoor's *Life Skills and Mental Health for Adolescents* focuses on providing young adults, including college students, with the necessary life skills to manage their mental health. The book covers essential topics such as emotional regulation, interpersonal skills, stress management, and decision-making, all of which are crucial for students in higher education. Kapoor emphasizes the importance of building resilience and self-awareness to navigate the academic and social challenges that come with college life.

6**. "Stress Management for Students" by Dr. Swati Y. Bhave and Sunil Saini (2017)**

Dr. Swati Bhave, a renowned pediatrician and expert on adolescent health, along with co-author Sunil Saini, addresses the issue of stress management for students in India. This book highlights the various stressors faced by Indian students, including academic pressures, societal expectations, and the competitive nature of entrance exams. Bhave and Saini provide practical techniques such as time management, relaxation exercises, and strategies for building emotional resilience, all of which are essential skills for managing mental health in 2025.

7**. "College Students' Mental Health: A Guide for Parents, Families, and Friends" by Sherrie Bourg Carter (2019)**

Sherrie Bourg Carter's *College Students' Mental Health* addresses the growing mental health crisis among young adults in higher education. The book focuses on providing parents and families with the tools they need to recognize mental health warning signs in their college-aged children. Bourg Carter covers anxiety, depression, suicidal ideation, and academic burnout, providing clear advice on how to approach these sensitive topics.

I. The Mental Health Crisis in 2025-26: Understanding the Landscape

1.1. Increased Academic Pressure

One of the most significant challenges facing college students in 2025-26 is the heightened pressure to excel academically. The increasing competitiveness of the global job market has amplified the focus on academic success. In a world where automation, artificial intelligence, and technological advancements have reshaped industries, students feel compelled to not only master traditional subjects but also acquire specialized skills in emerging fields.

This pressure is compounded by the constant fear of obsolescence, with students worrying that their education might not be enough to secure stable employment. The pressure to keep up with peers, engage in extracurricular activities, pursue internships, and develop a professional network while maintaining high grades creates an overwhelming environment for many.

1.2. Financial Stress and Economic Uncertainty

In 2025-26, financial stress remains a prominent issue for college students, with tuition costs continuing to rise globally. The burden of student loans, coupled with the uncertainty of securing well-paying jobs after graduation, creates significant anxiety. Many students are juggling part-time jobs or freelance gigs alongside their academic responsibilities, further adding to the strain on their mental health.

Moreover, the economic repercussions of the COVID-19 pandemic and other global crises have left many families struggling financially, which trickles down to students who may feel the weight of supporting themselves or contributing to their family's financial stability.

1.3. Social Media and Digital Overload

The omnipresence of social media and digital communication has created an environment where students are constantly connected but often feel isolated. Platforms like Instagram, TikTok, and Snapchat offer a curated view of life, leading to unrealistic comparisons that can trigger feelings of inadequacy, loneliness, and depression.

In 2024-25, students are even more digitally immersed than in previous years, with virtual learning, online collaborations, and social networking platforms forming the backbone of their academic and social lives. While technology offers numerous benefits, it also contributes to digital burnout, screen fatigue, and reduced face-to-face interactions, which are essential for emotional well-being.

1.4. Loneliness and Social Isolation

Despite living in an interconnected world, many college

students in 2024-25 report feelings of loneliness and social isolation. The rise of hybrid or fully online learning models, accelerated by the pandemic, has made it more challenging for students to form meaningful in-person connections. Virtual interactions, while convenient, lack the depth and emotional nuance of face-to-face conversations.

Furthermore, college students often experience significant life transitions, such as moving away from home, adjusting to new environments, and navigating the complexities of relationships. The combination of these factors can lead to increased feelings of isolation, contributing to anxiety, depression, and other mental health issues.

1.5. Burnout and Exhaustion

The culture of constant productivity and multitasking in 2024-25 has led to widespread burnout among college students. The expectation to excel academically, engage in extracurricular activities, maintain a social life, and prepare for future careers has left students feeling overwhelmed and emotionally drained. Burnout, characterized by chronic stress, exhaustion, and feelings of detachment, has become a prevalent issue in higher education.

Many students struggle to maintain a healthy balance between their academic responsibilities and personal well-being, leading to physical and emotional exhaustion. This state of constant stress can have long-term implications for their mental and physical health.

II. Mental Health Solutions: Institutional and Personal Approaches

2.1. Holistic Mental Health Support on Campus

To address the mental health challenges faced by students in 2024-25, colleges and universities must adopt a holistic approach to mental health support. This includes offering comprehensive counseling services, mental health awareness programs, and access to trained professionals who can provide both psychological and emotional support. One effective strategy is integrating mental health services into the academic curriculum. By incorporating mental health education into courses, colleges can help students understand the importance of mental well-being and equip them with tools to manage stress, anxiety, and other challenges. Additionally, universities should ensure that mental health resources are easily accessible and destigmatized, encouraging students to seek help when needed.

2.2. Digital Mental Health Solutions

As students become more reliant on technology, digital mental health solutions have gained prominence in 2024-25. Apps and platforms offering virtual counseling, meditation, mindfulness practices, and mental health tracking have become valuable tools for students. These platforms provide on-demand mental health support, allowing students to access help from the comfort of their homes.

Teletherapy, or online counseling, has become a popular option for students who prefer the flexibility of virtual sessions. AI-powered chatbots are also being used to offer instant emotional support and guidance to students, particularly in crisis situations.

While these digital tools offer convenience and accessibility, it's important to recognize their limitations. In-person therapy and counseling remain essential for students dealing with more severe mental health issues, as virtual platforms may not always provide the depth of care required.

2.3. Fostering Community and Social Connections

To combat loneliness and social isolation, colleges must actively foster a sense of community among students. In 2024-25, many institutions have begun implementing programs designed to encourage meaningful social interactions, whether through clubs, peer support groups, or social events.

Universities can create virtual spaces for students to connect, engage in conversations, and collaborate on projects. Virtual reality (VR) platforms, for instance, are being used to simulate in-person experiences, enabling students to interact with peers in immersive environments. These innovations offer new ways to build relationships, even in a digital landscape.

However, fostering in-person connections remains crucial. Institutions must prioritize creating opportunities for students to gather in person, whether through on-campus events, study groups, or wellness retreats. Building these social connections can reduce feelings of loneliness and help students feel more integrated into the college community.

2.4. Time Management and Academic Flexibility

Burnout often stems from poor time management and an overwhelming workload. To address this, colleges should offer workshops and resources to help students develop effective time management strategies. Students can benefit from learning how to prioritize tasks, set realistic goals, and create a balance between academic and personal commitments.

In addition to time management, academic flexibility can play a critical role in alleviating stress. Institutions that offer flexible learning models, such as the option to take courses part-time, hybrid learning, or gap years, can help students manage their academic responsibilities more effectively.

For students experiencing burnout or mental health crises, universities can implement policies that allow them to take mental health breaks without jeopardizing their academic standing. This flexibility can give students the space they need to recover and return to their studies when they are ready.

2.5. Financial Support and Counseling

Given the financial pressures faced by college students in 2025-26, institutions should provide robust financial support systems. Scholarships, grants, and low-interest loans can

help alleviate some of the economic burdens students face. Additionally, financial counseling services can equip students with the knowledge and skills to manage their finances effectively, helping to reduce stress related to money matters.

Many colleges are also establishing emergency funds for students facing unexpected financial difficulties. These funds can be a lifeline for students struggling to cover the costs of tuition, housing, or other essential expenses.

2.6. Promoting Physical Health for Mental Well-Being

Physical health and mental well-being are closely intertwined. In 2025-26, many colleges are emphasizing the importance of physical health as a component of overall mental wellness. Institutions can promote regular exercise, healthy eating, and sufficient sleep through wellness programs, fitness centers, and dining options.

On-campus wellness centers that offer yoga, meditation, and fitness classes can help students reduce stress and improve their physical and mental health. Universities can also provide resources for sleep management, as sleep deprivation is a common issue that contributes to poor mental health among students.

III. The Role of Technology in Mental Health Solutions

3.1. AI and Machine Learning in Mental Health

Artificial intelligence (AI) and machine learning have transformed mental health care in 2025-26, providing innovative solutions for early detection and intervention. AI-powered tools can monitor student behavior, assess their emotional states, and identify potential mental health concerns before they escalate.

For instance, AI-driven platforms can analyze students' engagement in academic and social activities, offering insights into potential signs of anxiety, depression, or burnout. These tools can provide real-time feedback to students, encouraging them to seek help or take preventive measures before their mental health deteriorates.

While AI offers promising solutions, ethical concerns about data privacy and the accuracy of these tools must be addressed. Institutions should ensure that AI-based mental health platforms are used responsibly and that students' personal data is protected.

3.2. Virtual Reality (VR) for Mental Health Support

Virtual reality (VR) is emerging as a powerful tool for mental health treatment in 2024-25. VR platforms can simulate therapeutic environments, offering students immersive experiences that help them manage stress, anxiety, and phobias. For example, VR meditation apps can transport students to calming environments, such as beaches or forests, allowing them to practice mindfulness in a virtual setting.

VR therapy is also being used to treat conditions like post-traumatic stress disorder (PTSD) and social anxiety by providing controlled exposure to triggering situations in a safe environment. As VR technology becomes more affordable and accessible, it holds great potential for expanding mental health support for college students.

3.3. Wearable Technology for Mental Health Monitoring

Wearable technology, such as smartwatches and fitness trackers, has become an integral part of students' lives in 2025-26. These devices can monitor physical activity, heart rate, sleep patterns, and stress levels, providing valuable insights into a student's overall well-being.

Some wearable devices are equipped with sensors that detect changes in mood or stress levels, alerting students to potential mental health concerns. By integrating these devices with mental health apps, students can receive personalized recommendations for managing their stress, improving sleep, and staying physically active.

IV. The Importance of Destigmatizing Mental Health in 2024-25

4.1. Changing Cultural Attitudes

Despite progress in recent years, mental health stigma remains a barrier for many students seeking help in 2024-25. Cultural attitudes toward mental health vary across different communities, with some viewing mental health struggles as a sign of weakness or failure. This stigma can prevent students from seeking the support they need, exacerbating their mental health issues.

Colleges and universities must prioritize mental health awareness campaigns that aim to reduce stigma and normalize seeking help. These campaigns can feature testimonials from students who have successfully navigated mental health challenges, as well as workshops and seminars that educate students about the importance of mental well-being.

4.2. Peer Support Networks: Peer support networks have proven to be effective in destigmatizing mental health and providing students with a safe space to share their experiences. Many universities in 2024-25 have established peer counseling programs, where trained students offer emotional support and guidance to their peers. These networks allow students to connect with others who may have faced similar struggles, fostering a sense of community and understanding.

Peer support groups can also play a role in raising awareness about mental health and encouraging students to seek professional help when needed. By creating a culture of openness and empathy, colleges can help break down the barriers associated with mental health stigma.

Conclusion: In 2025-26, mental health challenges among college students have become more complex, driven by academic pressure, financial stress, digital overload, and social isolation. However, the solutions to these challenges are evolving just as rapidly. By adopting a holistic approach that integrates mental health services, digital tools, peer support, and community building, colleges can create environments where students feel supported, both emotionally and academically.

As we move further into the future, the key to addressing mental health challenges lies in fostering a

culture of empathy, flexibility.

References:-

1. Bhave, S. Y., & Saini, S. (2017). *Stress management for students*. Mumbai: Jaico Publishing House.
2. Kapoor, S. (2019). *Life skills and mental health for adolescents*. New Delhi: Rupa Publications.
3. Kakkar, R. N. (Ed.). (2020). *Counselling and mental health care in educational institutions: India's perspective*. New Delhi: Global Vision Publishing House.
4. Parikh, S. (2018). *Mindscape: Coping with stress and anxiety in the digital age*. New Delhi: Wisdom Tree.
5. Mishra, R. C., & Pandey, S. (2021). *Well-being and mental health in India: Assessments and interventions*. New Delhi: Sage Publications.
6. Rangarajan, T. T. (2016). *Unposted letter*. Chennai: Westland Publications.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

कालिदास एवं वर्डज्वर्थ : पारस्परिक तुलना

डॉ. हिमांशु शर्मा*

* उपप्राचार्य, प्रभाशंकर पंड्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, परतापुर-बांसवाड़ा (राज.) भारत

शोध सारांश – साहित्य के क्षेत्र में कालिदास (संस्कृत)और वर्डज्वर्थ (अंग्रेजी) में दो ऐसे महान कवि हैं, जिन्होंने अपनी अपनी भाषाओं और संस्कृतियों में काव्य की नई ऊंचाइयां स्थापित की। दोनों ने प्रकृति, मानव- मन और भावनाओं को अपनी रचनाओं में विशेष स्थान दिया किंतु उनके दृष्टिकोण, शैली और काव्य दर्शन में कई समानताएं और भिन्नताएं भी हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में दोनों कवियों की सामाजिक चेतना की तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है जो शोध पत्र के लिए आधार प्रदान करता है। इस शोध से यह अपेक्षित है, कि यह कालिदास और वर्ड वर्थ के साहित्यिक योगदान की गहरी समझ विकसित करने में सहायक होगा। उनके प्रकृति प्रेम, मानवीय भावनाओं के चित्रण, काव्य शैली और दार्शनिक दृष्टिकोण की तुलना करके दोनों कवियों के बीच की साहित्यिक संवाद को स्पष्ट करता है। यह सोच भारतीय और अंग्रेजी साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

शोध के उद्देश्य :

1. कालिदास और वर्डज्वर्थ की रचनाओं में सामाजिक चेतना की तुलना करना और विश्लेषण करना कि दोनों कवियों में किस प्रकार सामाजिक चेतना अनुभव किया और अपनी कविताओं में प्रस्तुत किया।
2. दोनों कवियों की रचनाओं में प्रेम और मानवीय संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. दोनों कवियों की रचनाओं में निहित दार्शनिक और आध्यात्मिक विचार क्या है ? का अध्ययन करना।

शोध पद्धति – प्रस्तुत शोध मुख्य रूप से तुलनात्मक साहित्यिक विश्लेषण पद्धति पर आधारित होगा इसके अंतर्गत :

1. प्राथमिक स्रोतों का अध्ययन कालिदास की प्रमुख रचनाओं और वर्डज्वर्थ की प्रमुख कविताओं का मूल पाठ और विश्वसनीय अनुवादों के माध्यम से गहन अध्ययन किया जाएगा।
2. द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन किया जायेगा।
3. तुलनात्मक विश्लेषण प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों के अध्ययन के आधार पर शोध तथ्यों के संदर्भ में दोनों कवियों की रचनाओं के विभिन्न पहलुओं का व्यवस्थित तुलनात्मक विश्लेषण किया जाएगा।

सामाजिक चेतना – संस्कृत साहित्य के अलौकिक नक्षत्र, सरस्वती के वरद् पुत्र महाकवि कालिदास एवं अंग्रेजी साहित्य को नवीन दिशा देने वाले स्वच्छन्दतावादी कवियों में अग्रगण्य प्रकृति के अनन्योपासक विलियम वर्ड्ज्वर्थ की कृतियों में अनेक प्रकार से साम्य दृष्टिगोचर होता हैं। दोनों महाकवियों की कृतियों में सामाजिक चेतना, प्रकृति चित्रण, एकान्त प्रियता, कल्पना शक्ति, भावुकता, परिवेशगत वर्णना (नगर एवं ग्राम्य) एवं प्रगतिशिलता आदि के दर्शन होते हैं। दोनों कवियों की कृतियों में सामाजिक चेतना स्पष्ट रुप से दिखाई देती है जो निम्न रुप से है –

कालिदास की कृतियों में सामाजिक चेतना– महाकवि कालिदास के अद्वितीय रुपक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में पदे पदे सामाजिक चेतना के दर्शन होते हैं, जो निम्न रूपेण है :-

कृष्णमृग का पीछा करते हुए राजा दुष्यन्त ने जैसे ही बाण का सन्धान किया, वैसे ह.....

आश्रम में सदैव विनीत वेश में ही प्रवेश करना चाहिए। महाकवि कालिदास ने इस स्थिति को स्पष्ट किया है कि विनयशीलता जीवन में परमावश्यक है एवं अपने से बड़ों के पास सदैव विनय युक्त भाव से ही रहना और जाना चाहिए। अत: दुष्यन्त भी अपने अस्त्र-शस्त्र को रथ में रखकर विनय युक्त भाव से तपोवन में प्रवेश करते है। विनीत वेषेण

प्रवेष्टव्यानि तपोवनानि नाम ।

महाकवि ने 'सादा जीवन उच्च विचार' इसके दर्शन शाकुन्तलम् में करवाये है। शकुन्तला अलौकिक सौन्दर्य से युक्त है, फिर भी उसने मात्र वल्कल वस्त्रों को ही धारण किया है। ये वल्कल वस्त्र ही उसकी शोभा को और बढ़ा रहे हैं, क्योंकि सुन्दर व्यक्ति के लिए सभी वस्तुएँ उसकी शोभा बढ़ाने वाली ही होती हैं ।

इयमधिक मनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ।।

शाकुन्तलम् में कालिदास ने विवाह कर्म को भी जाति में करना श्रेयस्कर माना है। उस काल में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये चार जातियाँ थी। दुष्यन्त द्वारा क्षत्रिय कन्या से ही विवाह सामाजिक स्थिति में मर्यादित था। अत: सर्वप्रथम दुष्यन्त शकुन्तला की जाति ज्ञात कर ही उसे अपने योग्य मानते है।

असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा, यदार्यमस्यामभिलाषि मे मन: ।
सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु, प्रमाणमन्त: करणप्रवृत्तय: ।।

भारतीय परम्परा में अतिथि को देवतातुल्य माना जाता है। यहीं सामाजिक मर्यादा है कि हम उस अतिथि का उचित आतिथ्य सत्कार करें।

कालिदास ने उसी लौकिक व्यवहार को उद्घाटित किया है। सखियों द्वारा दुष्यन्त का आतिथ्य सत्कार किया गया है।

इदानीमतिथि विशेष लाभेन। हलाशकुन्तले, गच्छोटजम्।
फलमिश्रमर्घ्यमुपहर। इदं पादोदकं भविष्यति।

शकुन्तला के विषय में सम्पूर्ण जानकारी सखियों से प्राप्त कर दुष्यन्त शकुन्तला को अपने योग्य मानते है। जब शकुन्तला दुष्यन्त के पास से जाना चाहती है, तब दुष्यन्त शकुन्तला को पकड़ना चाहते है। कालिदास ने यहाँ दुष्यन्त को रोककर सामाजिक मर्यादा का पालन करवाया है।

अनुयास्यन् मुनितनयां सहसा विनयेन वारित प्रसरः।
स्थानादनुच्चलन्नपि गत्वेव पुनः प्रतिनिवृत्तः॥

शकुन्तला की दोनों सखियों एवं दुष्यन्त के मध्य शकुन्तला को लेकर इतना विचार-विमर्श होने के उपरान्त भी कालिदास ने स्त्रियोचित लज्जा नामक आभूषण से युक्त ही शकुन्तला को बताया है। शकुन्तला सर्वत्र दुष्यन्त के साथ मर्यादित व्यवहार ही सम्पादित करती है। दुष्यन्त को यह आभास तक नहीं हो पाता कि शकुन्तला उस पर आसक्त है या नहीं। कालिदास ने शकुन्तला को उत्कृष्ट नारी व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया है।

शकुन्तला पर अतिशय आसक्ति के उपरान्त दुष्यन्त मृगया से विरत हो जाता है। कालिदास ने यह भी प्रदर्शित करने का प्रयास किया है कि व्यक्ति एक दूसरे से प्रेरणा प्राप्त कर अपनी शक्तियों को निर्माण कार्य में प्रवृत्ता कर सकता हैं। शकुन्तला ने दुष्यन्त को वन्यजीवों पर स्वभावतः सुन्दर दृष्टिपात का उपदेश दिया है।

सहवसतिमुपेत्य यः प्रियायाः कृत इव मुग्धविलोकितोपदेशः॥

अतः सेनापति द्वारा मृगया के लाभ बताये जाने पर भी दुष्यन्त प्रसन्न नहीं होते है।

महाकवि कालिदास ने पति धर्म को भी प्रदर्शित किया है। पत्नी को उचित मान सम्मान देना, उसकी सदैव रक्षा करना, यह धर्म पति का है। अनसूया दुष्यन्त को पूछती है कि राजा की पत्नियाँ होती हैं, ऐसी स्थिति में शकुन्तला की आपके राजप्रासाद में शोचनीय स्थिति तो नहीं होगी। तब दुष्यन्त अनसूया को बताते है कि मेरे कुल की दो प्रतिष्ठाएं हैं - एकसमुद्ररूपी मेखला वाली पृथ्वी और दूसरी आपकी यह सखी (शकुन्तला)।

परिग्रह बहुत्वेऽपि दे प्रतिष्ठे कुलस्य मे।
समुद्ररशना चोर्वी सखी च युवयोरियम्॥

राजा दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को गान्धर्व विवाह हेतु प्रेरित किया जाता है। कालिदास ने सामाजिक मर्यादा का पालन शकुन्तला के माध्यम से करवाया है। दुष्यन्त के इस प्रस्ताव को शकुन्तला एक बार ठुकरा देती है। वह स्वयं को पिता के अधीन मानती हुई, बिना स्वीकृति के विवाह हेतु उद्यत नहीं होती है। यह सामाजिक मर्यादा है कि पुत्री बिना पिता की स्वीकृति के विवाह नहीं कर सकती है। कालिदास ने इस मर्यादा की पालना शकुन्तला के माध्यम से करवाने की चेष्टा की है।

शकुन्तला द्वारा सम्पादित गान्धर्व विवाह को कण्व अपने तपोबल से जान लेते है। पुत्री द्वारा योग्यवर चयन को पिता भी उचित ही मानते है। कालिदास ने कण्व को एक आदर्श पिता के रूप में उपस्थापित किया है। इस विवाह का अनुमोदन कण्व द्वारा कर दिया जाता है। कण्व शकुन्तला को कहते है कि योग्य शिष्य को दी गई विद्या के समान तुम अशोचनीय हो गई हो।

सुशिष्य परिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता।
अद्यैव ऋषिरक्षितां त्वां भर्तुः सकाशं विसर्जयामीति।

लोक व्यवहार में पुत्री की विदाई के समय मंगलगीत गाये जाते हैं, उसे मांगलिक अलंकरणों से अलंकृत किया जाता हैं। घर के सभी बड़े उसे शुभाशीष देते हैं। कालिदास ने भी उसी सामाजिक स्थिति का चित्रण किया है।

पुत्री की विदाई परिवारजन हेतु कितनी कष्टदायक है, इस सामाजिक रीति का सजीव चित्रण कालिदास ने शकुन्तला विदाई पर किया है। पालिता पुत्री की विदाई पर कण्व अत्यधिक दुःखी होते है, तो उन गृहस्थों की स्थिति निश्चय ही विचारणीय ही हैं।

पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।।

माता - पिता विदाई पर पुत्री को सामाजिक शिक्षा देते हैं। पतिगृह में किसके साथ कैसा व्यवहार सम्पादित करना है ? यहीं दायित्व कालिदास ने कण्व से पूर्ण करवाया है। कण्व मानते हैं कि वनवासी होते हुए भी वे लोक व्यवहारों को जानते है। कण्व शकुन्तला को यहीं शिक्षा प्रदान करते है।

शुश्रूषस्व गुरून् कुरू प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने,
भर्तुर्विप्रकृताऽपि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी यान्त्येवं
गृहिणीपद युवतयो वामाः कुलस्याधयः॥

यह एक सामाजिक रीति है कि पुत्री के विवाहोपरान्त पिता स्वयं को अत्यन्त भाग्यशाली एवं ऋणोन्मुक्त मानता है। उसे लगता है कि उसने अपने जीवन काल में एक बहुत बड़े दायित्व को पूर्ण कर लिया है। यहीं लौकिक स्थिति कण्व भी महसूस करते है। कालिदास ने पिता की उसी निश्चिन्तता को कण्व के मुख मण्डल पर दर्शाया हैं।

अर्थो हि कन्या परकीय एव, तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातोऽस्मि सद्यो विशदान्तरात्मा, चिरस्य निक्षेपमिवोर्पयित्वा॥

विवाहिता के लिए उसका पतिगृह ही सब कुछ माना गया है। अगर विवाहिता अधिक समय तक पिता के घर में रहती है, तो वह लोकापवाद का कारण होती है। इस सामाजिक स्थिति का चित्रण करते हुए कालिदास ने शकुन्तला को शीघ्र ही पतिगृह प्रेषित किया। शार्ङ्गरव उसी स्थिति का वर्णन दुष्यन्त के समक्ष करता है।

सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां
जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते।
अतः समीपे परिणेतुरिष्यते
प्रियाऽप्रिया वा प्रमदा स्वबन्धुभिः॥

कालिदास ने प्राचीन काल से चली आ रही परम्परा एवं लोक व्यवहार का संकेत किया है। 'पद्मपुराण' में भी इसी का चित्रण है :-

कन्या पितृगृहे नैव सुचिरं वासमर्हति।
लोकापवादः सुमहान् जायते पितृवेश्मनि।।

महाकवि कालिदास ने अपनी रचनाओं में सर्वत्र सामाजिक स्थितियों का अंकन किया है। वे समाज में होने वाली हर गतिविधि के पूर्ण ज्ञाता थे। कालिदास ने 'मेघदूत' में भी सामाजिक व्यवहारों का प्रदर्शन किया है। धन पति कुबेर से शापग्रस्त यक्ष रामगिरि पर निवास करता है। अपने प्रियजनों से अधिक समय तक कोई भी दूर नहीं रह सकता, यहीं स्थिति यहां यक्ष की भी बताई है। जब सन्देश ले जाने वाला कोई नहीं मिलता, तब कालिदास ने मेघ का चयन करवाया है। आषाढ़ माह के प्रथम दिन ही मेघ को देखकर यक्ष आशावान हो जाता है। कालिदास ने मेघ को चेतन बताया है। अतः जब कोई

अतिथि आता है, तो उसका उचित आतिथ्य सत्कार हमारी परंपरा है। इस सामाजिक रीति का पालन कालिदास ने यक्ष से करवाया है। यक्ष उठकर मेघ का स्वागत करता है

स प्रत्यग्रै: कुटजकुसुमै: कल्पितार्घाय तस्मै
प्रीत: प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार ।।

प्रशंसा अमोघ अस्त्र है । कालिदास ने इसका पूर्ण परिचय यक्ष के माध्यम से प्रदान किया है। अगर कार्य पूर्ण करवाना है, तो प्रशंसा आवश्यक है। यक्ष ने भी मेघ को पुष्करावर्तक मेघों का वंशज बताया एवं यह भी प्रदर्शित किया कि आप उच्चकुलोत्पन्न हैं, अत: अगर मेरी प्रार्थना को आप स्वीकार न भी करें तो निरर्थक नहीं होगी ।

जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां,
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोन:
तेनाथित्वं त्वयि विधिवशाद् दूरवन्धुर्गतोऽहं
याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा ।।

लोक व्यवहार में कालिदास अत्यन्त निपुण हैं। किससे, कैसा शिष्टाचार, कब सम्पादित करना है, इस लोक व्यवहार का प्रदर्शन कालिदास ने यक्ष के माध्यम से करवाया है। यक्ष मेघ को कहता है कि उचित स्थान एवं समय को देखकर ही मेरे द्वारा प्रेषित सन्देश को तुम यक्षिणी तक पहुँचाना।

सव्यापारामहनि न तथा पीडयेद् विप्रयोग:,
शके रात्रौ गुरुतरशुचं निर्विनोदां सखीं ते ।
मत्सन्देशै: सुखयितुमलंपश्य साध्वीं निशीथे,
तामुन्निद्रामवनिशयनां सौधवातायनस्थ: ।।

स्त्रियों का अन्त:करण अत्यन्त कोमल होता है। वियोग उनके लिए असहनीय होता है। अत: संदेश रूप में यक्ष ने यक्षिणी के साथ व्यतीत किये, एक-एक क्षण का परिचय मेघ को दिया है। उससे संदेश रूप में कहता है कि समय की गति सदैव समान नहीं रहती । पहिये के आरे के समान उपर नीचे होती रहती है। अत: समय हमारा भी अच्छा आयेगा, यह विचार कर मैं भी जीवन धारण किये हुए हूँ और तुम भी जीवन धारण करना ।

नन्वात्मानं बह कवणयन्नात्मनैवावलम्बे,
तत्कल्याणि ! त्वमपि नितरां मा गम: कातरत्वम् ।
कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दु:खमेकान्ततो वा
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण ।।

कालिदास ने सामाजिकों को एक शिक्षा प्रदान की है कि बुरे समय को आँख बन्द कर व्यतीत कर दो । इसके उपरान्त अच्छे समय में विचारणीय समस्त कार्य सरलता से सम्पादित हो सकते हैं।

कालिदास ने जीवन में परमावश्यक विश्वास को माना है । व्यक्ति विश्वास के द्वारा जीवन धारण करता है। उसी विश्वास को उन्होंने प्रदर्शित किया है। यक्ष मेघ से कहता है कि मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरा सन्देश तुम मेरी प्रियतमा तक अवश्य पहुँचा दोगे ।

विलियम वर्ड ज्वर्थ की कविताओं में सामाजिक चेतना – अंग्रेजी साहित्य में क्रान्ति का बिगुल बजाने वाले प्रकृति के अनन्योपासक, प्रकृतिपुत्र महाकवि विलियम वर्डज्वर्थ है। पूर्व से आ रही समस्त साहित्यिक परम्पराओं एवं नियमबद्धता के जाल को तोडकर कवि पीढ़ी को नवीन दिशा देने का श्रेय भी वर्ड्ज्वर्थ को जाता है। वज्वर्थ के लिए कविता कोई मानसिक व्यायाम नहीं वरन् आनंद का उद्रेक है। इसी उद्रेक में मानव का मानव तक, प्रकृति तक और सम्पूर्ण चराचर सृष्टि में स्वतन्त्रता पूर्वक विचरण करने और पहुँचने का प्रयास है। महाकवि कालिदास के तुल्य विलियम वर्ड्ज्वर्थ की कविताओं में भी सामाजिक चेतना के दर्शन होते हैं ।

वर्ड्ज्वर्थ Ode on Intimation of Immortality कविता में मनुष्य और प्रकृति को सम्बोधित करते हुए कहते है कि मैं तुम्हारे भारी सुख के सम्पूर्ण स्वरूप को महसूस कर रहा हूँ।

"The Fulness of your bliss, I Feel - I Feel it all."

कवि इस कविता के माध्यम से जीवन की नश्वरता का पाठ भी सामाजिकों को देते है। कवि का मानना है कि मनुष्य का अन्त:करण जितना पवित्र बाल्यकाल में होता है, उतना युवा एवं प्रौढ़ावस्था में नहीं रह पाता। उसके अन्त:करण पर नित नवीन खोखलें आडम्बरों की परतें चढ़ती जाती हैं। वह ईश्वरीय स्वरूप को धीरे-धीरे भूलता चला जाता हैं। इस संसार में रम कर अपने उद्देश्य से भटक जाता है। छोटा बालक संसार में मात्र अनुकरणों से ही सीखता चला जाता है। एक बालक जो खिलौनों के मध्य सोया है, वह कुछ समय पश्चात लोगों के व्यापार, प्रेम, झगड़ों से सम्बन्धित नकल करेगा । इस प्रकार वह जीवन पर्यन्त लोगों की नकल ही करता रहेगा ।

वर्ड्ज्वर्थ व्यक्ति को श्रेष्ठ जीवनयापन करने के रहस्य भी बताते है । यह उनकी सामाजिक चेतना का उत्कृष्ट उदाहरण कहा जा सकता है, क्यों कि मानव जीवन सदैव दु:खों से ही व्याप्त रहता है, उसमें भी कवि ने कुछ ऐसा मनुष्य को दिया है, जिससे उनमें नवीन ऊर्जा का संचरण अवश्य ही होगा । कवि का मानना है कि जिस दीव्य ज्योति को मैं बचपन में पाता था, अब वह मुझमें नहीं है, फिर भी हम दु:खी नहीं होंगे। उस दीव्य ज्योति द्वारा छोड़े गए मानसिक प्रभावों से कार्य शक्ति प्राप्त करेंगे। जिसमें प्रथम सहानुभूति है, दूसरा शान्तिदायक विश्वास कि मानव दु:ख क्षणभंगुर हैं, तीसरा मृत्यु के बाद मानव की आत्मा ईश्वरीय लोक में अनन्त सुख प्राप्त करेगी और अन्तिम प्रभाव यह विश्वास है कि महत्वपूर्ण वयस्कता की उम्र में मानव मस्तिष्क चिन्तनशील होता है, हम इन विश्वासों से कार्य शक्ति प्राप्त करेंगे।

In the Primal Sympathy
Which having been must ever be;
In the soothing thoughts that spring
Out of human suffering;
In the faith that looks through death,
20 In years that bring the philosophic mind.

जीवन में संकट क्षणभंगुर हैं। अत: प्राणी को सुख - दु:ख में सम रहते हुए, सदैव ईश्वरीय चिंतन करना चाहिए, क्योंकि वहीं ऊर्जा देने वाला है। वर्ड्ज्वर्थ ने अपनी कविताओं में सदैव मनुष्य को जगाने का ही प्रयास किया है । वे कहते है कि मनुष्य अपने तुच्छ स्वार्थों के वश निरर्थक कार्यों में अपनी शक्ति को खर्च करता है। उस परमात्मा के आप दीव्य शक्ति पुंज है। अत: निरर्थक कार्यों में अपनी शक्तियों को व्यय न करें। The world is too much with us ने कविता में भी मनुष्य को वे धनोपार्जन करने में ही इन्द्रियों की शक्तियों का ह्रास करने वाला बताते हैं । प्रकृति में समस्त शक्तियाँ व्याप्त है। फिर भी मानव भटकता है। थककर स्वयं को एकाकी महसूस करने लगता है ।

Ode to Duty कविता के माध्यम से भी चेतना का संचार किया है। वे कर्त्तव्यपरायणता को श्ईश्वर की आवाज की कठोर पुत्री कहते हैं। वे व्यक्ति को सदैव कर्म करने की प्रेरणा देते हैं। यहीं कर्त्तव्यपरायणता कर्त्तव्यच्युत व्यक्ति के लिए मार्गदर्शक प्रकाश है। कवि ने इसे बेंत भी कहा हैं, जिसके डर

से व्यक्ति पदच्युत नहीं होता ।

Stern daughter of the voice of God
O Duty! if that name thou love
Who art a light to guide, a rod
To check the erring, and re prove.

फ्रांस की राज्य क्रान्ति में लोगों की संकीर्ण मानसिकता, धनलोलुपता, स्वार्थवृत्ति से वर्ड्ज्वर्थ अत्यन्त दु:खी हो जाते हैं। अत: वे दूसरों के प्रति सहानूभुति रखने वाले, ईश्वर में आस्था रखने वाले 'मिल्टन' को सम्बोधित करते है। To Milton कविता में वे हमें नैतिक चरित्र, आध्यात्मिक सौन्दर्य, स्वतन्त्र चिंतन शक्ति का पाठ पढ़ाते है ।

वर्ड्ज्वर्थ Resolution and Independence कविता में कर्म करने की सीख देते है। उन्हें यह सीख एक बूढ़ें जोंक पकड़ने वाले व्यक्ति से मिली । उसके लिए आयु नहीं, कर्म ही प्रधान है। जिसके शरीर में शक्ति नही है, ऐसा प्राणी घंटों नदी किनारे जोंक पकड़कर अपना जीवनयापन करता है।

ऐसे प्राणी को देख वज्वर्थ सोचने लगते है कि मुझे ऐसा अस्पष्ट वह प्राणी लग रहा था जिसे ईश्वर ने किसी सुदूर स्थित प्रदेश से अपने दृढ़ निश्चय एवं साहस के उपयुक्त उहाहरण द्धारा मुझमें मानवीय शक्ति भरने के लिए भेजा है।

कवि में उस व्यक्ति ने अटूट आत्मविश्वास भर दिया, कर्म करने की शिक्षा दे दी । कवि मन ही मन विचार करने लगते है कि हे ईश्वर ! भविष्य में मुझे कभी गरीबी का भय सतायेगा, तो मैं उस एकाकी वनस्थली वाले जोंक एकत्रकर्ता को याद कर लूंगा, जिसने मुझमें अतिशय उत्साह एवं उमंग का संचार किया है।

'God Said I be my help and stay secure
I'll think of the leech - Gatherer on the lonely moor.

Peele - Castle कविता में भी सामाजिक चेतना के दर्शन होते है। संघर्षो में व्यक्ति को धैर्य रखकर उनका सामना करना पडता हैं। कवि धैर्य की यह सीख 'पील कासिल' दुर्ग को समुद्र की तुफानी लहरों से टकराते एवं शान्तिपूर्वक खड़े रहते देखकर देते है ।

धैर्य, साहस,संतोष, सहनशीलता आदि को सुखी जीवन के लिए आवश्यक माना है। मानव मात्र के लिए ये सीखें परमावश्यक है, क्योंकि वह सामाजिक प्राणी है। जीवन सदैव एक समान नहीं चलता है । यह समुद्र के समान है, जहाँ लहरें शान्त भी हैं, तो दूसरी ओर तुफान भी ।

विलियम स्वच्छ, निश्छल एवं पवित्र मन को श्रेष्ठ मानते है। व्यक्ति कितना ही बड़ा क्यों न हो जाय, उसके मन में मानवता सदैव पोषित होनी चाहिए। Highland Hut कविता में वे नदी के दृष्टान्त से यह सीख देते है। यह नदी पास के पर्वत का स्पर्श कर निकलती है। उस पर्वत को वह सम्मान देती है।

वह निर्मल पर्वत नाला, करता इसको नहीं उपेक्षित
फिर तुम ही क्यों करो ? अगर समुचित विधि से होवें मानवता
शिक्षित और प्रपोषित

The limpid mountain rill avoids it not , And why shouldst thou? It rightly
trained and bred, Huminity is humble.

कवि को जहाँ अवसर प्राप्त हुआ हैं, अपनी कविताओं के माध्यम से उन्होंने समाज में चेतना का संचार किया है। वे सदैव निराश्रितों को सहारा देनें, उन्हें प्यार परोसने की भावना ही व्यक्त करते है ।

कवि प्रकृति को क्षति पहुँचाने वाले एवं स्वयं को अत्यन्त सुखी मानने वाले लोगों को भी फटकार लगाते है। वे मानते है कि प्रकृति से ही मानव का जीवन सुरक्षित है। इस प्रकृति को क्षति पहुँचाने का अधिकार आपको किसी ने नही दिया। यह प्रकृति ही आपके कष्टों को समाप्त कर सुखी समृद्ध शाली जीवन देती है । वे Admonition कविता में चेतावनी देते है कि जब हे मानव ! तु अपने इन हाथों से, जो सदैव विनाश रचते हैं, इससे प्रकृति का स्पर्श करेगा, तो तु विनाशलीला ही रचेगा । तु

कवि प्रकृति के विविध दृष्टान्तों से मानव मन में सदैव ऊर्जा का संचार करते है। वे पुष्प, पशु, पक्षी, पहाड़, नदी इनके दृष्टान्तों से आगे बढ़ने की सीख देते है। प्रकृति के इन सुन्दर उपहारों से समाज को नवीन दिशा देने का सारा जिम्मा कवि ने अपने कन्धों पर उठाया है। To the Daisy कविता में फूल के माध्यम से संघर्षो में भी सदैव मानव को आशावादी बने रहना सीखया है।

किन्तु सिखाया तूने उसको
पाना आश्रय अंधड में हो कितने प्रतिकूल भयंकर रखना आशा !
घिरा हुआ हो चाहे कितना दुर्दिवसों का क्रूर कुहासा । चाहे कैसा भी मौसम हो 125

Yet pleased and willing
meek, yielding to the occasion's And all things suffering from all Thy fanction apostolical
call, In peace fulfilling.

कवि की यह हार्दिक इच्छा प्रतीत होती है कि हर प्राणी प्रसन्नता एवं आनन्द पूर्वक जीवन जीये। उन्होंने अपनी कविताओं में प्रेमपूर्वक मानव को समझाने का प्रयास किया है कि यह संसार, जिसमें असीम दु:ख हैं, किन्तुउन दु:खों में तुम आशावान बने रहना, प्रकृति की गोद में खेलते रहना, तुम्हारें कष्ट स्वत: समाप्त होते चले जायेंगे। कवि की कविताओं में हमें सामाजिक चेतना के पुष्पित – पल्लवित वटवृक्ष दिखाई देते हैं।

निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध अध्यन में दोनों कवियों ने प्रकृति के मध्य जीवन को सुरक्षित एवं सन्तुलित माना है। मनुष्य एक उत्कृष्ट सामाजिक स्थिति को प्राप्त करें, इस निमित विलियम वज्वर्थ और कालिदास दोनों ने सामाजिक समस्याओं को उद्धाटित करने के साथ–साथ समाधानों को भी प्रस्तुत किया हैं । सामाजिक स्थिति की जानकारी कवि की कृतियों से ही ज्ञात होती है। कालिदास एवं वर्ड्ज्वर्थ दोनों के समय में पर्याप्त अंतर है, फिर भी दोनों कवियों की कृतियों में सामाजिक चेतना प्राप्त होती हैं । वे सदैव समाज को नवीन दिशा देते हुए ही दिखाई देते हैं। दोनों की रचनाओं में सामाजिक चेतना के दर्शन होते है । इन दोनों कवियों की कृतियों की विशेषता यह है कि समाज में व्याप्त बुराइयों को बताने के साथ–साथ दोनों ने उसका समाधान भी दिया है। भारतीय एवं पाश्चात्य दो अलग–अलग सभ्यता और संस्कृति में पले बढ़ें कवियों में पर्याप्त साम्य प्राप्त होता है। इनकी सामाजिक चेतना से तात्पर्य मानव मात्र सुसंस्कारी एवं सभ्य हो ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 23
2. वहीं (1/13)
3. वहीं 29 25
4. वहीं (1/17)
5. वहीं (1/19)

6. वहीं (1/25)
7. वहीं (2/3)
8. वहीं 6
9. वहीं (उ. मे. – 48)
10. वहीं (4/18)
11. वहीं (4/22)
12. वहीं (प्रस्तावना) (5/17)
13. मेघदूत (पू. मे. – 4)
14. वहीं 88
15. Ode the Duty (1–4) 492
16. Resolution and Independence (139–140) 252
17. वर्ड्ज्वर्थ का काव्यलोक (यतेन्द्र सिंह)
18. Highland Hut (5-9)
19. Tinterm Abbey (40-42)
20. Solitary Reper..... (31-32) 289
21. To the cuckoo..... (31-32) 289
22. A slumber did..... (5-8)
23. The Fountain..... (41-44)
24. वर्ड्ज्वर्थ का काव्यलोक.88
25. वहीं 205
26. अभिज्ञान शाकुन्तलम् (1/18)
27. मेघदूत (पू. मे. – 15)

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

An Analytical Study on the Impact of Pradhan Mantri Mudra Yojana on Small Enterprises in Shajapur District

Shubhangi Sharma* **Dr. Sunil Advani****

*ResearchScholar, School of Studies in Commerce, Vikram University, Ujjain (M.P.) INDIA
** Assistant Professor (Commerce) Pt. Balkrishna Sharma, "Naveen" P.G. College, Shajapur (M.P.) INDIA

Abstract: The Pradhan Mantri Mudra Yojana (PMMY) was launched in 2015 to extend collateral-free micro-finance to small entrepreneurs. This research paper aims to analyze the impact of Mudra loans on the growth and development of small enterprises in Shajapur District. Using primary data collected from small business owners, the study assesses whether access to Mudra finance has contributed to business expansion, employment generation, and improved financial stability. The findings indicate a positive impact on business growth, though gaps in awareness and repayment challenges still exist. Recommendations for improved outreach and post-loan support are suggested.
Keywords: Mudra Yojana, Small Enterprises, Business Growth, Loan Disbursement, Financial Inclusion, Shajapur District.

Introduction - Small enterprises play a vital role in strengthening the rural economy by generating employment and promoting entrepreneurship. Launched in 2015, the Pradhan Mantri Mudra Yojana aims to provide financial support to non-corporate and small business sectors. This paper focuses on the extent to which Mudra loans have facilitated business growth for entrepreneurs in Shajapur District, and identifies the challenges faced during loan utilization and repayment.

Review of Literature

Government of India (2023) reports confirm Mudra Yojana's role in increasing financial inclusion but highlight a persistent gender gap in loan size and utilization.

RBI (2022) emphasizes the growth of women-led loan accounts under Mudra but notes regional disparities in participation and loan value.

Sharma & Gupta (2020) discuss the gender gap in loan amounts sanctioned, suggesting women tend to avail smaller loans due to limited business capital requirements or social constraints.

NITI Aayog (2021) recommends gender-targeted awareness and training to improve women's access to credit schemes in rural India.

World Bank (2019) highlights that without complementary interventions (skill training, market access), credit schemes alone may not ensure entrepreneurship success, especially for women.

Research Methodology: -

1. **Type of Research:** Descriptive and analytical.
2. **Data Collection:**
3. **Primary data:** Collected through a structured questionnaire from 100 small enterprise owners in Shajapur.

Objectives:

1. To study the relationship between Mudra loan utilization and the business growth of small enterprises in Shajapur District.
2. To evaluate the overall impact of Pradhan Mantri Mudra Yojana on the growth of small enterprises in Shajapur District.

Hypothesis:

1. H_0 (Null Hypothesis): There is no significant relationship between Mudra loan utilization and business growth of small enterprises in Shajapur District.

H_1•(Alternative Hypothesis): There is a significant relationship between Mudra loan utilization and business growth of small enterprises in Shajapur District.

2. H_0 (Null Hypothesis): There is no significant impact of Mudra Yojana on the growth of small enterprises in Shajapur District.

H_1•(Alternative Hypothesis): Mudra Yojana has a significant positive impact on the growth of small enterprises in Shajapur District.

Data analysis & interpretation: -

1. Mudra loan utilization & business growth small enterprises in shajapur district.

Data was collected through a structured questionnaire from the small enterprises with a total sample. Siege of 100 respondents. Based on the responses 86.2% of the

participants answered 'Yes' & 13.8% answered 'No'. These findings have been represented through pie chart.

Chart No. 01: Pie chart representation of Yes & No responses based on the survey.

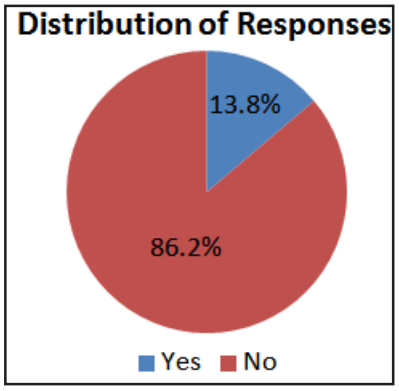

A Z-Test for proportions was performed to assess the statistical significance of the observed response rate.

1. One - fail Z- test for proportions
2. Based on the Z- test analysis with a sample size of 100
3. Z test for one proportion

$$Z = \frac{\hat{P} - P_0}{\sqrt{\frac{P_0 - (1-P_0)}{n}}}$$

$\hat{P}$ **(Sample proportion)** = 86.2%
= 0.862
(This value is come from survey of yes responses)
P_0**(Population proportion) =** 0.5 (assume value)
n **(Sample value) =** 100
Now the value put in the formula.

$$Z = \frac{0.862 - 0.5}{\sqrt{\frac{0.5\ (1-0.5)}{100}}}$$

$$Z = \frac{0.362}{\sqrt{0.0025}}$$

$$Z = \frac{0.362}{0.05} = 7.24$$

Now we check significant level.
Z (Critical value) + 95% Confidence level
So, Z = 1.645 (one tailed test)
Z (Score) = 7.24
Now Z Score > 1.645
7.24 > 1.645

Which is significantly greater than the critical value of 1.645, we reject the null hypothesis (H_0) and accept alternative hypothesis (H_1).

There is a significant relationship between mudra loan utilization and business expansion in shajapur district.

2. The Impact of the mudra yojana on small enterprises in shajapur district Data was collected through a structured questionnaire from the small enterprises with a total sample. Siege of 100 respondents. Based on the responses 83.7% of the participants answered 'Yes' & 16.3% answered 'No'. These findings have been represented through pie chart.

Chart No. 02: Pie chart representation of Yes & No responses based on the survey.

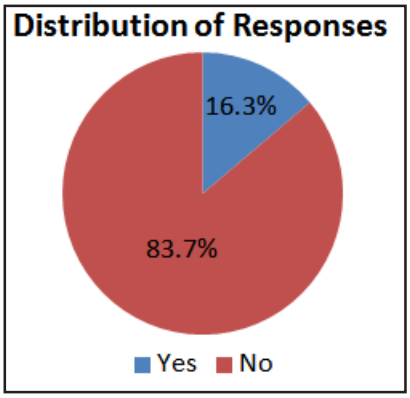

A Z-Test for proportions was performed to assess the statistical significance of the observed response rate.

1. One – fail Z- test for proportions
2. Based on the Z-test analysis with a sample size of 100
3. Z test for one proportion

$$Z = \frac{\hat{P} - P_0}{\sqrt{\frac{P_0 - (1-P_0)}{n}}}$$

$\hat{P}$ **(Sample proportion)** = 83.7%
= 0.837
(This value is come from survey of yes responses)
P_0**(Population proportion) =** 0.5 (assume value)
n **(Sample value) =** 100
Now the value put in the formula.

$$Z = \frac{0.837 - 0.5}{\sqrt{\frac{0.5\ (1-0.5)}{100}}}$$

$$Z = \frac{0.337}{\sqrt{0.0025}}$$

$$Z = \frac{0.337}{0.05} = 6.74$$

Now we check significant level.
Z (Critical value): - 95% Confidence level
So, Z= 1.645 (one tailed test)
Z (Score) = 6.74
Z Score > 1.645
6.74 > 1.645

Which is significantly greater than the critical value of 1.645, we reject the null hypothesis (H_0) and accept alternative hypothesis (H_1).

Mudra yojana has a significant positive impact on the youth of small enterprises in shajapur district.

Findings:

1. A very high proportion (86.2%) of respondents confirmed that Mudra loan utilization helped in their business growth.
2. The Z-test value (7.24) is much higher than the critical

value (1.645), leading to the rejection of the null hypothesis.

3. There is a statistically significant positive relationship between Mudra loan utilization and the business growth of small enterprises in Shajapur District.
4. High Utilization Impact: 83.7% of the respondents reported a positive impact of Mudra Yojana on their business growth.
5. Statistical Significance: The Z-test value (6.74) significantly exceeds the critical value (1.645), confirming a meaningful difference.

Suggestions: To enhance the effectiveness of the Mudra Yojana, awareness programs should be conducted in rural and semi-urban areas. Post-loan support like advisory services and mentoring must be provided to ensure proper utilization. Simplifying the loan process can boost participation, especially from micro-entrepreneurs. Targeted support for women, such as flexible repayment and lower interest, can increase inclusivity. Lastly, regular monitoring is essential to track loan usage and business outcomes.

Conclusion: The research clearly shows that the Pradhan Mantri Mudra Yojana (PMMY) has a significant positive impact on the growth of small enterprises in Shajapur District. The high acceptance rate and the strong statistical significance prove that Mudra loans are instrumental in business development. However, for sustained success, it is important to back financial support with non-financial assistance like mentoring, training, and financial literacy. Overall, Mudra Yojana has been a game-changer for small businesses, helping them scale and contribute more meaningfully to local economic.

The findings clearly indicate that the Mudra Yojana has a statistically significant and positive impact on the growth and development of small enterprises in Shajapur District. The high proportion of affirmative responses and strong Z-test result validate the effectiveness of the scheme. To maximize the benefits, continued support, awareness, and simplified processes are essential.

References: -

1. Mudra Yojana Annual Reports (2018–2023). www.mudra.org.in
2. Reserve Bank of India. (2023). Report on Trends and Progress of Banking in India.
3. NITI Aayog. (2022). Promoting Women Entrepreneurs through Credit Schemes in India.
4. Sharma, R., & Gupta, A. (2020). Financial Inclusion through Mudra Yojana: A Gender Analysis. International Journal of Economics and Development, 15(3).
5. World Bank. (2019). Financial Access and Women-Led Enterprises in South Asia.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Birhor Tribe and Their Health Status

Dr. Ranjana Mishra*

***Asst. Professor, PSP College, Partapur, Banswara (Raj.) INDIA**

Abstract: The present research paper is on Birhor tribe and their health status (with special reference to Jashpur district of Chhattisgarh state). Birhor tribe is one of the 75 primitive tribes. This tribe has been suffering from many problems since the beginning. Due to living in forests and mountains, this tribe has been living in poverty, this tribe is a very backward and endangered tribe living in small groups in the mountains and mountains. The presented research study discusses the health development of backward tribe Birhor, focusing on the social, cultural dimensions affecting their health status, highlighting the impact of social and health factors responsible for their poor health outcome and declining population due to neglect. The study emphasizes on nutritional deficiencies, health problems and lack of availment of government health schemes, which shows the need to improve their health and well-being.
Keywords- Birhor tribe, health behaviour, causes of disease, treatment.

Introduction of Birhor tribe: Regarding the origin of Birhor tribe, there is an ancient belief that seven brothers were dropped on the earth by the Sun who came to this country from Kaimur Hills. Out of these, four brothers went to the east (Jharkhand) and three brothers stayed in Raigarh district. Birhor is derived from the Mundari word Bir means forest and Hor means man. In Chhattisgarh state, this tribe is found in Jashpur, Raigarh, Korba and Bilaspur districts. The total number of their families in the state is 689.

The present research paper is on Birhor tribe and their health status (with special reference to Jashpur district of Chhattisgarh state). Birhor tribe is one of the 75 primitive tribes. This tribe has been suffering from many problems since the beginning. Due to living in forests and mountains, this tribe has been living in poverty, this tribe is a very backward and extinct tribe living in small groups in mountains and mountains. In the presented research study, an attempt has been made to focus on the dimensions affecting the health status of the Birhor tribe and to improve their health, which is based on primary data.

Sociological importance of the study: The Birhor tribe is one of the 75 primitive tribes. Due to living in the jungles and mountains, this tribe has been living in poverty. In such a situation, studying the health status and development projects of the Birhor tribe shows the importance of research. The importance of the presented research is as follows.

1. The government has implemented many schemes for the development of the Birhor tribe. To find out to what extent the scheme has been successful in their health treatment shows not only the importance but also the need for the study.

Objectives of the study:

1. To know the health status of the people of Birhor tribe.
2. To know about the diseases of Birhor women and their perception.
3. To know the methods of treatment.

Research study methodology: The present study is based on Jashpur district of Chhattisgarh state. Jashpur is one of the 27 districts of Chhattisgarh. Initially it was included in Raigarh district, later it came into existence as a new district on 25.05.98. Which is spread over an area of 5,838 sq. km. The total population here as per 2011 is 8,52,048 in which male population is 4,25,085 and female population is 4,26,958. Jashpur has a literacy rate of 68.60 percent in which male literacy rate is 78.24 percent and female literacy rate is 59.05 percent. Units like Collectorate, Session Court, District Hospital, District Jail, District Panchayat etc. are operated in the headquarters.

The tribe under study lives in 11 villages of Duldula, Kasambel, Pathalgao, Bagicha and Kunkuri development blocks of Jashpur district, whose total number of families is 131. For the research study, about 90 percent of the total Birhor families i.e. 119 families have been selected through the lottery system of divine direction. The head of the family has been selected as the study unit.

Health status of Birhor tribe: Health is a condition in which the physical and mental conditions are able to maintain adjustment with the physical world. The state of balance of the body with its organs is healthy. Health plays an important role in determining all the activities of a person. This is the basis on which the happiness of a person depends. Poverty, illiteracy, lack of hygiene and ignorance are widely prevalent

among the people of the endangered Birhor tribe. Sharma and Ahiwar's (1992) study of backward tribe shows that on malaria eradication, 25% of the tribal families used mosquito nets to avoid malaria while 75% of the families did not even know about it. Similarly, Vasu and Sharma (1992) have suggested in their study that it would be important to determine the outline of health policies for backward tribes on the basis of their problems in different tribes. In the previous studies related to health of tribes, it is clear from the studies of Burman (1990), Haque (1990), Rizvi (1986) that the health of tribes has not been satisfactory. In the present study, an attempt has been made to find out whether the tribes have the facility of a health center in their village or not. The details of the collected facts are shown in Table No. 1.1

Table no. 1.1: Availability of health center in the village

S.	Health center	Frequency	Per.
1.	Yes	46	38.7
2.	No	73	61.3
	Total	**119**	**100**

From the above table regarding the presence of health centres in the village, it is clear that maximum 61.3 percent of the respondents do not have health centres in their villages and 38.7 percent of the respondents have health centres in their villages.

During the survey in the research study, it was observed that most of the Birhors have to travel 15-20 kilometres and sometimes even more from the village for treatment.

If yes, should the health centre be open every day: An attempt has also been made to find out from the respondents whose villages have health centres whether the health centre is open every day or not. The facts are shown in the table below-

Table No. 1.2: If yes, should the health centre be open every day

S.	Health centre be open every day	Frequency N= 46	Per.
1.	Yes	32	69.6
2.	No	14	30.4
	Total	**46**	**100**

It is clear from the above table that maximum 69.6 percent health centres are open daily and 30.4 percent health centres are not open daily.

Having sufficient staff in health centre: An attempt has been made to find out from the respondents whether there are sufficient staff in the health centre-

Table No. 1.3: Having sufficient staff in health centre

S.	Sufficient staff in health centre	Frequency N= 46	Per.
1.	Yes	36	78.3
2.	No	10	21.7
	Total	**46**	**100**

It is clear from the table regarding availability of sufficient staff in health centres that maximum 78.3% health centres do not have staff and 21.7% health centres have sufficient staff.

How do respondents get their illness treated: It has been observed in many studies regarding Birhor tribe that this tribal group lives in remote areas and due to lack of education and traditional thinking, in case of any illness or disease, they assume that some divine soul is angry or other similar assessments are made due to which when any member of the family falls ill, they get the illness treated by domestic and BaigaGuniya, and due to this traditional treatment, the illness increases a lot, sometimes a life threatening situation is created due to the illness. In the research study, an attempt has been made to find out how the respondents get their illness treated. The details of the collected facts are shown in Table No. 1.4.

Table No. 1.4: How to treat disease

S.	How to treat disease	Frequency	Per.
1.	Doctor	46	38.7
2.	Home remedies	12	10.1
	Brushwood	48	40.3
	Home remedies and exorcism	13	10.9
	Total	**119**	**100**

From the above table regarding how to get the disease treated, it is clear that maximum 38.7 percent of the respondents get treatment done both by home and exorcism, 38.7 percent in hospital, 40.3 percent of the respondents get treatment done only by exorcism, and 10.9 percent get treatment done at home.

The table presented shows that most of the Birhor families get their disease treated by home and exorcism. There is a belief behind getting treatment from exorcism or Baiga.

An attempt has been made to find out from the respondents of the study what is their belief behind getting exorcism done by Baiga, in which 100 percent of the respondents said that they have faith in exorcism.

The above analysis shows that the respondents have more faith in exorcism, this was also observed by the researcher during the study.

Where should women deliver their babies: The structural background of human health and social welfare is comprised of various aspects of the health of pregnant women and newborn babies. Reproduction is a natural physiological process and it is essential for pregnant women to remain healthy during this period. 35 Valentin Tine (1902) was the first to present a scientific basis for the need for care of pregnant women. Most women die during pregnancy due to infectious diseases, accidents and other diseases as well as various social reasons such as the age of the woman at the time of childbirth, poor economic status, illiteracy, lack of reproductive services, poor environmental conditions, social customs and illiteracy. As a result of the increasing mortality rate of pregnant women in developed, developing and underdeveloped nations, a planned strategy regarding maternal and child welfare was introduced by the World Health Organization in 1948. 37 The present

condition of education in tribal areas is very pathetic. Important guidelines can be provided to women through education towards safe pregnancy and the health condition of the entire family can be improved. In most societies, only a few parents send their girls to school. They give more importance to the education of boys. Girls are kept at home to take care of the children in the household. Most girls have to leave school due to early marriage or pregnancy. 39 Generally, very few girls go back to school after having a child. In fact, education affects women in various ways. Educated women marry and conceive late and adopt the desired means of family planning and take proper care during pregnancy. Their maternal mortality rate is one-fourth that of women who have received formal education. 41 In tribal areas, most deliveries are done through traditional means of delivery, in which the role of old women of the Chamin house and women of the neighbourhood is prominent. Even in the availability of trained midwives and doctors, women find it appropriate to deliver through traditional delivery workers. Apart from this, traditional delivery workers are less expensive than modern doctors and money is also spent on delivery. An important contribution can be made in this direction by training the women who give birth. Delivery workers can arouse faith in the community towards new methods of treatment by receiving modern training, and can help women in getting rid of diseases occurring during pregnancy and after delivery. Information regarding where the pregnant woman of the family should deliver is shown in the following table-1.5

Table No. 1.5: Where should women deliver their babies

S.	Deliver their babies	Frequency	Per.
1.	Gharmein	89	74.8
2.	Health center	30	25.2
	Total	**119**	**100**

The table related to the delivery of women shows that maximum 74.7 percent women deliver at home, 25.2 percent deliver in health center. The findings of Sharma and Wali (1989) confirm our figures.

In the Birhor tribe, to avoid infectious diseases or contagious diseases at the time of delivery, a delivery room is made outside the house, which is called Saur and it is demolished after delivery.

Conclusion: It is clear that the Birhors are dependent on traditional healers or exorcists and diseases like malnutrition, malaria, diarrhea are common among them. These government health services do not reach remote areas and there is also a great lack of awareness in them. The health condition of the Birhor tribe is worrisome, and a multi-pronged strategy is required for this. Along with implementing government schemes at the ground level, respect and inclusion of traditional medical practices is necessary.

References:-

1. Government of India Census Report 2011
2. Tribal research institute ki report
3. Local health department annual report
4. Balgir, R.S. (2004b). Hereditary Persistence of FoetalHaemoglobin in a Tribal Family of Orissa, India. National Medical Journal of India, 17(3):138-40.
5. Balgir, R.S., Dash, B.P. and Murmu, B. (2004a). Blood Groups, Hemoglobinopathy and G-6-PD Deficiency Investigations among Fifteen Major Scheduled Tribes of Orissa, India. The Anthropologist, 6(1): 69-75.
6. Basu, S. (2000). Dimensions of Tribal Health in India. Health and Popul, 23 (2), 61-70. 9. Bhargava, A. (1998). A dynamic model for the cognitive development of Kenyan school children. J of Educ Psych, 90:162–166. https://doi.org/10.1037/0022-0663.90.1.162
7. Bhattacharya, S. (1994). A Dictionary of Indian History. Cosmo Publications, 1. 11.
8. Chandana, K.R. and Kumar, R. (2020). Health status of tribal women of BhadradriKothagudem district in Telangana state. Int J Health Sci Res, 10(1): 53–62.
9. Dalal, A.K. and Ray, S. (2005). Social dimensions of health and well-being: An overview of research trends. In: Dalal,
10. A. K., Ray S. (eds.), Social Dimensions of Health. Jaipur: Rawat Publications, 1-33. 13. Das, S., and Bose, K. (2015). Adult tribal malnutrition in India: An anthropometric and socio-
11. demographic review. Anthrop Rev, 78(1):47-65. https://doi.org/10.1515/anre-2015-0004 14. Debbarma, M., Pala, N.A., Kumar, M. and Bussmann, R.W. (2017).
12. Traditional knowledge of medicinal plants in tribes of Tripura in Northeast, India. Afr J Tradit Complement Altern Med, 14(4):156–68.
13. https://doi.org/10.21010/ ajtcam.v14i4.19
14. Debnath, D. (2014). The health problems and status of the particularly vulnerable tribal groups of Madhya Pradesh - a case study in anthropological dimension. Man in India, 94 (4):597-609
15. Fogel, R.W. (2004). The Escape from Hunger and Premature Death, 1700- 2100: Europe, America,and the Third World. Cambridge: Cambridge University Press.
16. Indian Council of Medical Research (ICMR) (2003). Health status of primitive tribes of Orissa. ICMR Bulletin, 33(10).
17. Kanrar, P., Goswami, M. and Roy, S. (2023). Health issues of the indigenous communities with special/ reference to the particularly vulnerable tribal groups (PVTGS) of odisha: A review, Papers on Anthropology XXXII/1, 2023, pp. 45-80
18. https://www.researchgate.net/publication/374280613 19.
19. Pritchett, L. and Summers, L.H. (1996). Wealthier is Healthier. The J Hum Reso, 31(4):841-868.

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

India-Fiji Relations: The Indian Diaspora's Role on the Formation of Bilateral Relations

Dr. Aaditya Swaroop*

***Research Scholar, Centre For Indo-Pacific Studies, School Of International Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi, INDIA**

Abstract: With a focus on the influence of the Indian diaspora on the development of bilateral relations, this article explores the complex connection between India and Fiji. The study examines the socioeconomic contributions, cultural identity, and demographic makeup of the Indo-Fijian population, starting with the entrance of Indian indentured labourers in 1879. The study also looks at how the diaspora's presence has affected the two countries diplomatic, economic, and cultural ties. To offer a modern viewpoint, recent advancements in India-Fiji relations such as high-level diplomatic visits and bilateral agreements—are examined. The article's conclusion highlights the relationship's prospects and problems while emphasising the Indian diaspora's ongoing significance as a link between these two historically linked but geographically different countries.

Keywords: India Fiji relations,Girmitya,Indo Fijian, Indian Diaspora in Fiji, Fiji Indian community.

Introduction - Since the initial influx of Indian indentured labourers in 1879, the relationship between India and Fiji has seen tremendous change. Beginning as a colonial agreement to provide labour for Fiji's sugar plantations, the two countries now have a complicated bilateral relationship that encompasses people-to-people, diplomatic, economic, and cultural aspects. The Indian diaspora in Fiji, which has been instrumental in determining the parameters of bilateral interaction between these two countries, is at the centre of this relationship. One of the most important demographic shifts in the Pacific during the colonial era was the historical migration of Indians to Fiji. More than 60,000 Indians were brought to Fiji under the indentured labour system, known locally as "girmit," during the span of over 40 years (1879–1916). A unique Indo-Fijian community that now makes up over one-third of Fiji's population was established as a result of this migration.This sizable diaspora has acted as a bridge between South Asia and the South Pacific, establishing organic ties between India and Fiji. Even as both countries have negotiated challenging political environments in the post-colonial era, diplomatic cooperation has been made easier by shared historical experiences, familial ties, and cultural links.

The goal of this article is to present a thorough examination of India-Fiji ties from the perspective of the Indian diaspora. It looks at the development of the Indo-Fijian community, the historical background of Indian migration to Fiji, and the effects of this diaspora on bilateral ties. It also looks at recent changes in the relationship, such as diplomatic efforts, business alliances, and cross-cultural interactions. We can better comprehend the distinctive nature of India-Fiji relations and their possible course in the ensuing decades by comprehending the pivotal role played by the Indian diaspora.

1. Fiji's Indian Migration History: The Girmit System (1879-1916): The basis of contemporary India When the first Indian indentured labourers arrived in Fiji in 1879, relations were developed. The British colonial labour system, which attempted to fill labour shortages in plantation economies after slavery was abolished, was the larger framework in which this movement took place. The Pacific Island nation of Fiji saw a dramatic change in its population on May 15, 1879, when the first Indians landed on board the ship Leonidas.

1.1 The System of Indentured Labour: The indenture system was created to provide labour for Fiji's growing sugar industry and is referred to locally as "girmit," which is a derivation of the English term "agreement." Indians were required to sign five-year contracts under this system, which included details about their pay, housing, and working conditions. The reality, however, frequently deviated greatly from the promises made. Workers endured difficult working conditions, including as excessive hours, subpar accommodation, and few rights. While some historians have referred to the system as "a new form of slavery," others have highlighted the agency that migrants exerted within its confines.

Approximately 60,965 Indians were brought to Fiji between 1879 and 1916. Smaller numbers came from Punjab, Tamil Nadu, and other parts of India;however, the

majority came from the United Provinces (present-day Uttar Pradesh and Bihar). With men outnumbering women by about 2:1, the gender ratio was wildly unbalanced. This disparity affected the cultural development of the newly formed Indo-Fijian group and caused social problems.

1.2 Suspension of Settlement and Indenture: The girmit system Fiji operated until 1916, when it was abolished following growing opposition both in India and internationally. Prominent Indian leaders, including Mahatma Gandhi, had begun to criticize the system, while reports of mistreatment reached India through returning labourers. After the system's abolition, Indians in Fiji faced a critical decision: return to India or remain in Fiji. Approximately one-third chose to return, while the majority elected to stay, establishing permanent settlements and beginning the transition from temporary labourers to permanent residents. In order to grow sugarcane or other crops, those that stayed frequently leased small parcels of land, thereby creating unique Indo-Fijian villages. In order to retain Indian cultural traditions while adjusting to the Fijian environment, schools, temples, mosques, and cultural organisations were established at this time. The choice to stay in Fiji was the first step towards a unique Indo-Fijian identity that would develop over the course of succeeding generations.

1.3 The Girmit System's Legacy and Historical Significance: India-Fiji ties and Indo-Fijian identity are still influenced by the girmit system's legacy. The indenture experience is a fundamental story of hardship, tenacity, and ultimate achievement for many Indo-Fijians. The yearly celebration of "Girmit Day" on May 14th serves as a reminder of this momentous occasion and its role in forming the identity of the community.India and Fiji have a shared history of colonisation and indenture, which has given them a sense of historical kinship from a diplomatic standpoint. Indian authorities have often recognised this historical connection during diplomatic meetings. The sacrifices made by Indian indentured workers have "laid the foundation for strong relations between our countries," Prime Minister Narendra Modi said during his historic 2014 visit to Fiji.

Significant scholarly interest has also been aroused by the girmit experience, and researchers from both nations are working together to record and examine this historical movement. India and Fiji now have stronger intellectual and cultural ties because to these academic exchanges, which have also helped both countries better grasp their common past.

2. The Generational Formation of Indo-Fijian Identity: By fusing Pacific and Indian customs, the Indo-Fijian population has created a distinctive cultural identity. This identity has developed over many generations in reaction to shifting social, political, and economic conditions, resulting in a unique cultural formation that is distinct from indigenous Fijian customs as well as Indian customs.

2.1 Demographic Profile: According to the 2017 census, there are about 289,237 Indo-Fijians, or 32.7% of Fiji's total population. Due mostly to emigration after political unrest and coups in 1987 and 2000, this is a sharp drop from their peak of 51% in the 1960s. The majority of the community is urban, with notable concentrations in Nadi, Lautoka, and Suva.The three main religions practiced by Indo-Fijian people are Christianity (6.1%), Islam (15.9%), and Hinduism (76.7%). The many religious backgrounds of the initial migrants and later converts are reflected in this. Institutions of higher learning have been essential in maintaining cultural customs and offering support systems to the community.

2.2 Preservation of Culture in the Indian Community of Fiji: To maintain its culture, the Indian minority in Fiji has founded a number of cultural organisations. These include language groups, religious organisations, and cultural societies that preserve customs, plan festivals, and pass on cultural information to the next generation. Diwali, Holi, and Eid are traditional festivals observed by the Indian community in Fiji and have grown to be significant cultural occasions on the country's calendar.One particularly significant identifying marker has been language. In contrast to conventional Hindi, the population has created its own dialect called Fiji Hindi, which combines English and Fijian terminology with parts of Bhojpuri, Awadhi, and other Indian languages. Although English is widely spoken, several ancient Indian languages are preserved in religious situations, and Fiji Hindi is the community's primary language.

2.3 The Indian diaspora's socioeconomic contributions to Fiji: The economic growth of Fiji has benefited greatly from the efforts of the Indian diaspora there. Indo-Fijians progressively established themselves in a variety of economic areas after indenture ended. After initially focussing on agriculture, especially sugarcane growing, they eventually expanded into manufacturing, professional services, and retail trade.The Indian diaspora in Fiji has made significant contributions to education. The society strongly emphasised education as a means of achieving social mobility in spite of early obstacles. As a result, they are highly represented in fields including education, law, medicine, and accounting. Significant Indo-Fijian involvement, both as academics and students, has benefited the Suva-based University of the South Pacific.

There have also been significant Indo-Fijian contributions to the commercial sector. Indo-Fijian firms, ranging from tiny family-run retail stores to bigger manufacturing, tourism, and service companies, have grown to be essential to Fiji's economy. Prominent local business executives have forged global ties, notably with India, which has aided in investment and trade between the two nations.

2.4 Political Engagement and Barriers: The Indian diaspora's political involvement in Fiji has changed as a result of numerous constitutional amendments and political upheavals. The complicated ethnic dynamics of Fijian society are reflected in the community's political journey,

which has been characterised by both periods of development and failures.Indo-Fijians became more active in national politics after the country gained independence in 1970. This political engagement peaked in 1987 with the election of Dr. Timoci Bavadra's coalition government, which had a sizable Indo-Fijian representation. But this was followed by military takeovers in 1987 and 2000, which were prompted in part by worries about the political influence of Indo-Fiji.A secondary diaspora was created as a result of the large-scale exodus of Indo-Fijians to Australia, New Zealand, Canada, and the United States brought on by these political upheavals. The remaining individuals persisted in negotiating a convoluted political environment, pursuing representation while resolving issues of marginalisation.

The goal of recent constitutional amendments has been to create a more inclusive national identity by eschewing politics based on ethnicity. By eliminating ethnic voting and establishing a single national identity, the 2013 Constitution may open up new avenues for Indo-Fijian political engagement based on citizenship rather than ethnicity.

3. **India's Relationship with Fiji: Colonial Heritage to Contemporary Diplomacy:** Through a number of initiatives, such as technical collaboration and educational exchanges, the connection between India and Fiji has improved. From historical ties based on diaspora ties to a more comprehensive partnership encompassing diplomatic, economic, and strategic dimensions, the bilateral relationship has undergone significant change since Fiji gained independence in 1970.

3.1 Early Ties in Diplomacy: Shortly after Fiji gained its independence in 1970, formal diplomatic ties were established between India and Fiji. Fiji later opened a mission in New Delhi, while India first set up its High Commission in Suva. The existence of the Indian diaspora and shared Commonwealth membership significantly influenced these early diplomatic interactions.

The connection remained friendly but rather narrow in scope throughout the first 20 years after Fiji gained its independence. The key goals of India's strategy were to uphold ties with the Indo-Fijian population and promote their well-being within the parameters of Fiji's democratic structure.

3.2 Relationship Challenges: Tensions in the bilateral relationship were brought on by the military takeovers in 1987 and 2000, which had a negative impact on the Indo-Fijian community. India voiced worries over Fiji's democratic backsliding and the way individuals of Indian descent are treated. While formal relations were never broken, these worries caused periods of diplomatic hostility.

At first, India and other international actors criticised the 2006 coup headed by Commodore Frank Bainimarama. However, India progressively reengaged as Bainimarama's government worked to restore democracy and execute policies aimed at building a "race-blind" Fiji, realising that all Fijians, including those of Indian heritage, could benefit from better conditions.

3.3 Developing Diplomatic ties between India and Fiji in the Twenty-First Century: A new era in India-Fiji relations began in 2014 with Prime Minister Modi's historic visit. India's increasing interest in the Pacific region was demonstrated by this tour, which was the country's first prime ministerial visit in thirty-three years. In addition to meeting with Pacific Island leaders and addressing the Fijian parliament, Modi launched the Forum for India-Pacific Islands Cooperation (FIPIC) during this visit.A Memorandum of Understanding on defence cooperation, development cooperation, and diplomatic exchanges was among the agreements that came out of the visit. Recognising a major issue for these vulnerable states, Modi also launched a special adaptation fund for Pacific Island States to confront climate change challenges.

The friendship has been further reinforced by subsequent high-level visits. In 2016, Fijian Prime Minister Bainimarama travelled to India, while in 2018, Indian President Ram Nath Kovind travelled to Fiji. These interactions have facilitated the establishment of consistent diplomatic communication and the growth of multisectoral collaboration.

3.4 Regional Cooperation: In addition to their bilateral interactions, India and Fiji have collaborated in a number of multilateral settings. As members of the Commonwealth and the UN, both nations frequently hold similar views on matters like climate change, sustainable development, and international institution reform.Given the Pacific nation's susceptibility to the effects of climate change and its moral authority on the subject, India has backed Fiji's leadership role in international climate negotiations. India, a developing country that has established itself as a pioneer in climate action, worked closely with Fiji during their 2017 COP23 leadership.

The relationship between India and Fiji is also part of India's larger "Act East" policy, which aims to improve relations with countries in the Asia-Pacific region. India has increased its interaction with Pacific Island nations through programs like FIPIC, and Fiji is a crucial regional partner in this strategy.

4. Present Aspects of the Bilateral Relationship between India and Fiji: The basis of contemporary India Economic cooperation, development assistance, cultural exchanges, and strategic collaborations are just a few of the many facets that make up Fiji relations. These diverse involvement strands have produced a complex connection that keeps altering to adapt to shifting local and international circumstances.

4.1 Growing Investment and Trade: Although they are still relatively small in relation to each nation's overall trade profile, economic ties between India and Fiji have been progressively growing. In 2022, bilateral trade was valued at about US$100 million, and it has room to develop significantly. Pharmaceuticals, machinery, automobiles, and

textiles are among the goods that India sells to Fiji, whereas Fiji exports gold, mineral water, and agricultural products to India.The majority of investment flows into Fiji have come from India, with Indian businesses establishing themselves in the country's banking, information technology, and pharmaceutical industries. One of the first and most prosperous Indian ventures in Fiji was the Bank of Baroda, which opened for business there in 1961.

Both nations have set up institutional frameworks, such the India-Fiji Business Forum, which brings together leaders of the private sector to discuss trade and investment opportunities, in order to promote more economic interaction. The Joint Trade Committee offers a forum for addressing trade restrictions and advancing economic cooperation at the governmental level.

4.2 Cooperation in Development and Capacity Building: One significant aspect of the two countries relationship has been India's development support to Fiji. This support comes in a number of forms, such as technical collaboration through capacity-building programs, lines of credit for development projects, and grants for infrastructure projects.In 2022, a major development agreement was formed with a line of credit of US$70 million for Fijian infrastructure projects. In line with Fiji's development aims, this funding supports projects in the fields of healthcare, agriculture, and renewable energy.

Fijian officials and professionals have had access to training opportunities in fields like public administration, information technology, agriculture, and healthcare through the Indian Technical and Economic Cooperation (ITEC) program. Hundreds of Fijians have been trained in Indian institutions since the program's start, producing a cadre of professionals with firsthand knowledge of India.

4.3 Fostering Friendship Between India and Fiji Through Cultural Exchange Initiatives: Building on the historical ties created by the Indian diaspora, cultural interactions are an essential part of bilateral relations. Through language instruction, dance and music performances, and cultural festivals, the Indian Cultural Centre in Suva, which was founded in 1972, acts as a hub for advancing Indian culture in Fiji.Scholarship schemes that allow Fijian students to pursue higher study in India have increased educational cooperation. Fijian students can apply for scholarships from the Indian Council for Cultural Relations (ICCR), and there are other options through Study in India and other initiatives.

Initiatives for digital connectedness have improved cross-cultural interactions even more. Fijian patients and students can connect with Indian healthcare practitioners and educational institutions through the e-VidyaBharati and e-ArogyaBharati networks, which offer telemedicine and teleeducation services.

4.4 Recent Bilateral Agreements Between India and Fiji and Their Implications: The conclusion of a number of significant bilateral agreements in recent years has further institutionalised collaboration. These consist of:

1. The Memorandum of Understanding on Agricultural Cooperation for 2021, which emphasises agricultural research, sustainable farming methods, and food security.
2. The 2022 Agreement on Healthcare Cooperation, which promotes capacity building in healthcare systems, collaborative research, and medical professional exchanges.
3. The 2023 Visa Waiver Agreement, which makes travel easier for diplomats and government officials with official and diplomatic passports.

These agreements demonstrate the growing breadth of bilateral cooperation and the shared desire to work together to address common issues. They also show how the relationship has developed to include wider strategic objectives in addition to diaspora ties.

5. Cultural Relationships and Interpersonal Bonds: Rich interpersonal ties and formal diplomatic interactions are just one aspect of India-Fiji relations' cultural character. These connections take many different forms, ranging from language and the arts to religious and cultural customs, opening up several avenues for communication and impact.

5.1 Religion and Traditional Customs of the Indian Community in Fiji: The Indo-Fijian community's religious customs have been essential to preserving their cultural ties to India. In addition to being places of worship, Sikh gurudwaras, Muslim mosques, and Hindu temples also function as community hubs that pass down cultural information and preserve customs.Indo-Fijian culture is especially evident during religious festivals. Many ethnic groups now participate in Fiji's Diwali celebrations, which have grown into national occasions that highlight how Indian cultural aspects have been incorporated into the country's multicultural culture. In a same vein, despite adjusting to the Fijian environment, Holi, Ram Leela performances, and Eid festivals preserve ties to Indian cultural customs.

Many Indo-Fijian families, especially those from Uttar Pradesh and Bihar, have kept in touch with their ancestral villages in India. Even though time and distance have diminished these ties, they nonetheless influence cultural behaviours and the development of identities. Indo-Fijians pilgrimages to India are an important example of cultural tourism that strengthens these historical connections.

5.2 Literary and Language: One of the most important means of fostering cultural exchange and development has been language. Although Fiji Hindi has greatly deviated from mainstream Hindi, it nonetheless maintains essential vocabulary and grammatical constructions that make communication with Indian Hindi speakers easier. Both Indian and Fijian cultural institutions have supported efforts to record and preserve Fiji Hindi.

Themes of diaspora, identity, and cultural heritage have been handled in both English and Fiji Hindi literary works. Contributing to both the Pacific and Indian literary traditions, authors like Subramani, Satendra Nandan, and Mohit

Prasad have become well-known for their examinations of the Indo-Fijian experience. Cultural relations have been further reinforced by literary exchanges, such as writer visits and collaborative publication.

5.3 Culture, Media, and the Arts: Another platform for cross-cultural communication and expression has been made available by the performing arts. In Fiji, traditional Indian dance traditions like Kathak and Bharatanatyam are taught and practiced, while fusion dances with Pacific influences have become popular. Indo-Fijians continue to enjoy music, especially Bollywood-inspired genres and traditional bhajans, and other communities are becoming more interested in it.Fiji's cultural environment has been greatly influenced by Indian film. Bollywood films are extensively viewed and distributed, fostering cultural connections between Fiji and India. These ties have been further strengthened by the popularity of Indian television series, which are now readily available via satellite and internet platforms.

The creation of local media, such as English-language content addressing Indo-Fijian topics and radio shows in Fiji Hindi, promotes integration into the national discourse of Fiji while preserving cultural uniqueness. Indo-Fijians can now interact with both Indian and Fijian cultural content because to the expansion of cultural exchange opportunities brought about by digital platforms.

6. Constraints and Opportunities in Bilateral Partnership: The course of this bilateral engagement is shaped by a number of opportunities and difficulties, despite the fact that India-Fiji relations have significantly improved in recent years. Comprehending these elements is crucial for determining the relationship's future course and pinpointing areas that could want improvement.

6.1 Relationship Challenges: One practical obstacle to deeper engagement is still geographic distance. India and Fiji are separated by around 10,000 kilometres, which makes travel, trade, and cross-cultural interactions logistically challenging. Time zone variations make planning and communication more difficult, while a lack of direct transportation linkages and high shipping costs limit business exchanges.Another problem is economic asymmetry. Trade and investment flows are unbalanced since India's economy is significantly bigger and more varied than Fiji's. It takes innovative thinking and focused actions that address Fiji's development priorities while providing possibilities for Indian enterprises to find complementarities that benefit both economies.Complex strategic issues are brought about by regional geopolitical dynamics, especially China's expanding influence in the Pacific. India must negotiate this shifting regional environment while pursuing its own interests and alliances as China expands its diplomatic and economic ties with Pacific Island countries, especially Fiji.

For bilateral relations, the Indo-Fijian community's changing identity offers both opportunities and challenges. The character of diaspora links is evolving as younger Indo-Fijians form identities that are more Fijian than Indian. It is necessary to acknowledge these changing identities and modify interaction tactics in order to preserve significant cultural linkages.

6.2 Opportunities for Greater Collaboration: Cooperation on climate change is a significant component of the current India-Fiji partnership. There are many chances for cooperation because both nations deal with serious climate-related issues, albeit on different scales. Fiji is a frontline state in the climate catastrophe due to its susceptibility to extreme weather events and increasing sea levels, while India's dedication to sustainable development and renewable energy generates organic synergies for collaboration.

The potential in this field is demonstrated by recent projects. With an emphasis on solar-powered cold storage units, healthcare facility solarisation, and solar water pumping systems for irrigation, India has allocated USD 2 million to the execution of solar projects in Fiji. These initiatives help achieve climate mitigation targets while meeting Fiji's energy demands. The promotion of sustainable agriculture, capacity building for adaptation, and infrastructure investment in climate-resilient projects are the main focusses of the India-Fiji Climate Action Partnership.Following his 2014 visit, Prime Minister Modi announced a special adaptation fund for Pacific Island countries, and since then, there have been tangible implementation measures. This fund leverages India's increasing climate adaptation expertise to promote climate resilience initiatives that target Fiji's unique vulnerabilities. Additional opportunities for collaboration are provided via collaborative research projects on climate impacts and mitigation techniques, which take advantage of Fiji's real-world climate difficulties experience and India's scientific prowess.

6.2.1 Technology Share and Digital Transformation: One of the most promising avenues for improved India-Fiji relations is digital cooperation. An important step forward was taken with the signing of the Digital Transformation Memorandum of Understanding in November 2024, which included the sharing of India Stack technology such as the development of DigiLocker, the Unified Payments Interface (UPI), and the biometric digital identity system Aadhaar.

This digital collaboration showcases India's technology prowess while meeting Fiji's development goals. India's experience with extensive digital transformation offers Fiji useful models and technological know-how as it looks to update its governance structures and increase digital services. By putting these tools in place, Fiji may improve government service delivery, increase financial inclusion, and open up new business opportunities.Digital technology education programs reinforce this collaboration even more. With an emphasis on government officials, representatives of the commercial sector, and academics, the ITEC

Scholarship Program currently provides 200 fully funded scholarships each year. These training programs use of Industry 4.0 technologies guarantees that participants acquire skills pertinent to the digital economy, hence building Fiji's long-term capabilities.With its strong emphasis on education and expanding influence in the technology industry, the Indo-Fijian community can help facilitate these digital endeavours. Their expertise of both Fijian and Indian contexts makes it easy for them to transfer knowledge and modify technology to suit local requirements.

6.2.2 Blue Economy and Cooperation in the Maritime Sector: The relationship between India and Fiji might be greatly improved by maritime cooperation. Both countries have significant interests in ocean governance, sustainable resource management, and maritime security because they are island nations—Fiji is an archipelagic state, while India has a vast coastline and many islands.

The Forum for India-Pacific Islands Cooperation (FIPIC) and the Indo-Pacific Oceans Initiative (IPOI) are two important programs that organise India's marine cooperation with Fiji. These frameworks offer formal channels for cooperation in the areas of blue economy development, sustainable marine resource management, and maritime security.Commercial aquaculture projects, sustainable marine resource management initiatives, and the creation of economic frameworks that connect conservation with community benefits are recent advancements in blue economy collaboration. These projects provide chances for Indian investment and experience while also being in line with Fiji's development aspirations.

Concerns about illegal fishing, transnational crime, and environmental preservation are all addressed via maritime security cooperation, which includes cooperative monitoring of exclusive economic zones and the development of Fiji's naval forces capabilities. This relationship benefits greatly from India's expanding naval capabilities and maritime domain awareness expertise.This collaboration is made easier by the historical ties that Indians in Fiji have to the sea, ranging from the girmit era's ocean expeditions to their current participation in fishing and maritime trade. Beyond official governmental agreements, the bilateral cooperation is enhanced by these common experiences of maritime settings and difficulties.

6.2.3 Intercultural and Educational Exchanges: Cooperation in education has become a vital component of the partnership between India and Fiji. Opportunities for Fijian professionals and students to acquire knowledge and credentials in Indian institutions have been made possible by the growth of scholarship programs, such as the ITEC project. In addition to developing Fiji's human capital, these educational opportunities generate enduring interpersonal bonds that fortify bilateral relations.

These ties are further strengthened via cultural endeavours. With two committed Indian teachers, the Tamil Language Teaching Program was introduced in December 2024 and exemplifies a dedication to community involvement and cultural preservation. In addition to fostering new avenues for cross-cultural interaction, this initiative honours the language legacy of a portion of the Indian diaspora in Fiji.Language instruction, training in the performing arts, and cultural festivals are just a few of the cultural events that continue to take place at the Indian Cultural Centre in Suva. By involving the Fiji Indian community as well as the larger Fijian populace, these events foster cross-cultural understanding and communication.

By enabling online language courses, virtual performances, and digital access to cultural materials, digital platforms have broadened the scope of these cultural exchanges. By addressing the geographical gap between India and Fiji, these technologies increase the accessibility and sustainability of cultural engagement.The celebrations of the ICCR's 75th anniversary have offered chances to emphasise the two countries historical links and rich cultural legacy. These celebrations honour their position as cultural bridges and acknowledge the contributions made by the Indian diaspora in Fiji to the cultural environment of both nations.

6.2.4 Development of Infrastructure and Healthcare: Cooperation in the healthcare industry offers a substantial chance to improve bilateral engagement. India's commitment to bolstering Fiji's healthcare infrastructure is demonstrated by the ongoing development of a 100-bed Super Speciality Hospital, which was declared by Indian Prime Minister Narendra Modi. This project showcases Indian medical technology and experience while addressing Fiji's pressing healthcare needs.In addition to infrastructure, there are chances for collaboration in telemedicine, pharmaceutical access, and medical education. India's status as a major pharmaceutical producer presents an opportunity to provide Fiji with reasonably priced medications and vaccines. India helped Fiji with vaccines during a crucial time during the COVID-19 pandemic, highlighting the value of such collaboration.

Collaboration opportunities are also presented by infrastructure development outside of the healthcare industry. Fiji's development needs are best served by India's experience with major infrastructure projects and dedication to development partnerships rather than just commercial engagements. Indian knowledge and funding could be advantageous for projects in the fields of water management, renewable energy, and transportation.Natural routes for knowledge transfer and project implementation are created by the presence of Indo-Fijian experts in engineering, healthcare, and other related disciplines. Effective adaptation of development models to local demands is made possible by their comprehension of both Fijian and Indian contexts and capacities.

6.2.5 Tourism and Business Development: There is a

lot of room for economic collaboration in the growth of tourism. With the help of visa-free travel for Indian visitors, recent initiatives seek to increase Indian tourism to Fiji by double digits. High-value segments of the Indian market are the focus of wedding tourism and the MICE (Meetings, Incentives, Conferences, and Exhibitions) industry.By acting as business facilitators and cultural interpreters, the Fiji Indian population may contribute significantly to the growth of tourism. Their knowledge of both the Indian and Fijian settings aids in the development of tourism experiences that respect local environmental and cultural values while appealing to Indian tourists.

Opportunities for increased trade and investment relations exist outside of the tourism industry. Although bilateral commerce is still small, at about US$100 million in 2022, there is a lot of room for expansion in industries like agriculture, information technology, medicines, and renewable energy. Institutional frameworks for removing trade barriers and fostering economic cooperation have been established by the Joint Trade Committee and the India-Fiji Business Forum.

With a foothold in the banking, information technology, and pharmaceutical industries, Indian investment in Fiji's economy has been increasing significantly. One of the first and most prosperous Indian ventures in Fiji was the Bank of Baroda, which has been there since 1961. The development priorities of both nations are in line with emerging investment opportunities in digital services, sustainable agriculture, and renewable energy.

Conclusion: From their historical roots in colonial-era migration, India-Fiji relations have undergone tremendous change to become a comprehensive alliance with diplomatic, economic, cultural, and strategic facets. This progress has been greatly aided by the Indian diaspora in Fiji, which acts as a link between the two countries and promotes interaction in a variety of fields.Growing collaboration in fields including digital transformation, blue economy development, healthcare partnerships, educational exchanges, and climate change adaptation are characteristics of modern bilateral ties. These programs build on historical linkages and cultural affinities while addressing common issues and development concerns.With India's increasing involvement in the Pacific through initiatives like the Indo-Pacific Oceans Initiative (IPOI) and the Forum for India-Pacific Islands Cooperation (FIPIC), the strategic backdrop of this partnership has also changed. Fiji is an ideal partner for India's increased regional engagement because of its status as a regional centre in the South Pacific.

The future course of India-Fiji relations will be influenced by a number of factors. Cultural and interpersonal links will be shaped by the Indo-Fijian community's ongoing identity development and its ties to India. India's skills in fields like digital technology, renewable energy, and healthcare, along with Fiji's development aspirations, will open up new avenues for collaboration. China's expanding influence in the Pacific is one of the regional geopolitical factors that will present both obstacles and opportunities for closer India-Fiji ties.The relationship between India and Fiji serves as an example of how, despite geographical distance, historical links, diaspora ties, and current interests may come together to form significant bilateral alliances. Their collaboration provides a model for South-South engagement founded on respect for one another, a shared past, and shared goals as both countries negotiate the problems of the twenty-first century, from digital transformation to climate change.

References:-

1. Chandra, R., & Chand, S. (2020). "Colonial Legacies and Contemporary Development: The Case of the Indo-Fijian Diaspora." *Journal of Pacific Studies*, 40(1), 5-23.
2. Chatturvedi, Sanjay**.** "India and the Indian Diaspora in the South Pacific." *Journal of Indian Ocean Studies*.
3. Government of India, Ministry of External Affairs. (2023). *India-Fiji Bilateral Relations: Brief*. New Delhi: MEA Publications.
4. Kant, R. (2021). "Digital Transformation in the Pacific: Opportunities and Challenges for Fiji." *Pacific Economic Bulletin*, 36(2), 45-62.
5. Lal, Brij V. (1997). *Broken Waves: A History of the Fiji Islands in the Twentieth Century*. University of Hawaii Press.
6. Lal, B. V. (2019). *Girmitiyas: The Origins of the Fiji Indians*. Fiji Institute of Applied Studies, Lautoka.
7. Lal, Brij V. (2003). "The Precarious Calm: The South Pacific after the 2000 Coups." *The Round Table: The Commonwealth Journal of International Affairs*, Taylor & Francis.
8. Ministry of Finance, Republic of Fiji. (2024). *2024-2025 Budget Supplement*. Retrieved from https://www.finance.gov.fj/wp-content/uploads/2024/07/2024-2025-Budget-Supplement_Final-1-1.pdf
9. Modi, N. (2014, November 19). Address to the Parliament of Fiji [Speech transcript]. Ministry of External Affairs, Government of India.
10. Prasad, B. C., & Kumar, S. (2022). "Climate Change Adaptation in Pacific Island Countries: The Role of External Partners." *Journal of Environmental Management*, 305, 114-128.
11. Ratuva, S. (2021). "Ethnicity, Development and Security in Fiji: Historical Trajectories and Contemporary Challenges." *The Round Table: The Commonwealth Journal of International Affairs*, 110(1), 27-45.
12. Singh, A. (2023). "India's Engagement with Pacific Island Countries: Strategic Imperatives and Development Partnerships." *Strategic Analysis*, 47(2), 112-129.
13. Tarte, S. (2020). "The Blue Pacific: Reclaiming Pacific Regionalism and Reshaping External Relationships."

The Contemporary Pacific, 32(2), 347-370.

14. The Australia Today. (2023). "Fiji and India to boost bilateral ties with focus on key development areas." Retrieved from https://www.theaustraliatoday.com.au/fiji-and-india-to-boost-bilateral-ties-with-focus-on-key-development-areas/
15. Tinker, Hugh (1974). *A New System of Slavery: The Export of Indian Labour Overseas 1830–1920*. Oxford University Press.
16. Voigt-Graf, C. (2018). "Migration and Transnational Linkages of the Indo-Fijian Diaspora." *Global Networks*, 18(3), 424-442.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

शेखावाटी प्रदेश के ग्रामीण पर्यटन स्थलों का एक समीक्षात्मक अध्ययन

संजू बिशू*

* सहायक आचार्या VSY* (इतिहास) राजकीय महाविद्यालय, आहोर, जालोर (राज.) भारत

शेखावाटी प्रदेश का नामकरण – शेखावाटी उत्तर पूर्वी राजस्थान का एक अर्द्ध शुष्क क्षत्रे है। राजस्थान के सीकर, चूरू और झुंझुनूं तीनों जिलों के सम्मिलित भागों को 'शेखावाटी प्रदेश' के नाम से जाने जाते है। इस क्षेत्र में आजादी से पूर्व 15वीं से 19वीं शताब्दी तक राव शेखा के वंशजों का शासन होने के कारण इसका नाम शेखावाटी प्रचलन में आया। 'शेखावाटी' शब्द का उल्लेख सबसे पहले 'बांकीदास की ख्यात' में किया गया था। बांकीदास के समकालीन कर्नल डब्ल्यू. एस.माली जिन्होंने वर्ष 1803 मेंशेखावाटी शब्द का प्रयागे किया। इसके बाद में कर्नल जेम्स टॉड ने शेखावाटी का पहला इतिहास लिखा 'वंश भास्कर' में शेखावाटी शब्द का प्रयोग किया जाता था। इससे पता चलता है कि शेखावाटी शब्द लगभग ढ़ाई शताब्दी पहले प्रयोग कियाजाता था। शेखावाटी का नाम राजपूत कच्छवा सरदार राव शेखा जी के नाम पर पड़ा है। राव शेखा के वंशज 'शेखावत' कहलाते हैं। शेखावाटी क्षेत्र पाषाणकाल से आजादी तक अपने गौरवशाली अतीत के लिए जाना जाता है।

शेखावाटी का ग्रामीण पर्यटन – वर्तमान शेखावाटी क्षेत्र ग्रामीण पर्यटन और शिक्षा के क्षेत्र में विश्व मानचित्रमें तेजी से उभर रहा है। यहां पिलानी और लक्ष्मणगढ़ भारत में प्रसिद्ध शिक्षा केंद्रहै। वहीं नवलगढ़, फतेहपुर, गगियासर, मलसीसर, लक्ष्मणगढ़, बलोदा, मंडावा, नवलगढ़, शाकंभरी आदि जगहों पर बनी प्राचीन बड़ी-बड़ी हवेलियां अपनी विशालता और भिति चित्रकारी के लिए विश्व प्रसिद्ध है। जिन्हें देखने देशी-विदेशी पर्यटकों का तांता लगा रहता है। पहाड़ों में सुरम्य जगहों पर बनेजीणमाता मंदिर, राणी सती मंदिर, मनसा माता, शाकंभरी माता, लक्ष्मणगढ़ का किला, नादीन लेप्रिंस हवेली, मंडावा किला, नवलगढ़, लोहार्गल मेला, बादलगढ़ किला, सीता मंदिर (झुंझुनूं) शेखावाटी क्षेत्र की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में माना जाने वाला फतेहपुर राजस्थान का एक विचित्र ऊनिंदा रेगिस्तान शहर है।

डॉ. पंकज धीरेंद्र (2021) की महत्वपूर्ण रचना 'शेखावाटी की मन्दिर वास्तुकला एवं मूर्ति कला' (आठवीं से 12वीं शताब्दी ईस्वी) में शेखावाटी क्षेत्र में अनेक मंदिर वह पर्यटन स्थलों का विस्तृत विवरण दिया है।

ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से राजस्थान भारत के उन्हें प्रदेशों में से एक है। जिसका नाम अपनी प्राचीन गौरवमय में परंपरा के लिए प्रसिद्ध रहा है।इसी राजस्थान की जयपुर रियासत 16वीं से 19वीं शताब्दी के दौरान अपने रूप निर्माण, रंग-योजना तथा स्थापत्य आदि के लिए विश्व विख्यात है।शेखावाटी क्षेत्र के नवलगढ़, लक्ष्मणगढ़, फतेहपुर, मंडावा, पिलानी जिससे हमें धार्मिक सांस्कृतिक जीवन की जानकारी प्राप्त होती है।

शेखावाटी के मंदिर, किले, हवेलियां की वास्तुकला अद्धितीय है तथा इनकानिर्माण स्थानीय वास्तुशास्त्र के मानकों पर आधारित है। ग्रामीण पर्यटन स्थलकलाकृतियो और अनोखी वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है।मंदिर सांसारिक जीवन पर अध्यात्म के महत्व का प्रतीक है। मंदिर एकऐसा पवित्र स्थान है। जहां प्रवेश मात्र से ही हम सकारात्मकता को महसूस करते हैं तथा ये यहां के जनजीवन को प्रभावित करते हैं और ग्रामीण पर्यटन उद्योग के महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में कार्य करते हैं। जिससे मंदिरों के आस-पास के क्षेत्रमें रोजगार प्राप्त होता है तथा वहां के लोगों को आर्थिक सम्बल मिलता है।

शेखावाटी के ग्रामीण पर्यटन स्थल सांस्कृतिक झलक प्रस्तुत करते हैं। शेखावाटी के ग्रामीण पर्यटन स्थलों की संस्कृति अत्यंत रोचक व अद्धितीय है। शेखावाटी की संस्कृति विविधता व विशिष्टता से भरपूर है। पहनावे से लेकर हवेलियो, खानपान और त्योहार से लेकर मेलों में यहां कई रंग देखने को मिलते हैं। जो अतीत के सैकड़ों सालों में भी अपनी चमक बरकरार रखते हुए हैं यहांकी संस्कृति में सरलता समरसता व शौर्य के साथ आस्था, उल्लास, व आनंद भी अनन्त है। और शेखावाटी के ग्रामीण पर्यटन स्थल जनता के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अत: शेखावाटी ग्रामीण पर्यटन स्थलों के महत्व संस्कृति और विरासत से समाज विकसित होता है और लोग इनकी समृद्धि से भी परिचित हो जाते हैं।शेखावाटी राजस्थान का एक ऐसा ग्रामीण पर्यटन स्थल है। जहां पर कईमहल, किले, मंदिर, तीर्थ स्थल व हवेलियां स्थित है। जो इसकी सुंदरता कोबढ़ाते हैं। शेखावाटी को राजस्थान की ओपन आर्ट गैलरी के रूप में मान्यता दी गई है। शेखावाटी ग्रामीण पर्यटन की दृष्टि से काफी संपन्न है और यहां पर्यटकों के घूमने के लिए बहुत महत्वपूर्ण स्थान है।

साहित्य समीक्षा – शेखावाटी क्षेत्र के इतिहास पर कई शोधार्थियों एवं इतिहासकारों ने कार्य किया है जिसमें प्रमुख रूप से महावीर पुरोहित (2010), जय हर्षनाथ, जय जीणभवानी, संजय भालोटिया ने 'शेखावाटी मे पर्यटन के पारिस्थितिकीय आधार' शोध ग्रंथ में शेखावाटी के प्रमुख पर्यटक स्थलों का स्थानिक वर्णन किया है। शेखावाटी के पर्यटक स्थलों का विशेष प्रभाव बताया है।

हरफूल सिंह आर्य की पुस्तक 'शेखावाटी के ठिकानों का इतिहास एवं योगदान, (1987) में भिति-चित्रों से युक्त इमारतो के निर्माण में राजस्थान

की बहुमुखी ऐतिहासिक, साहित्यक सांस्कृति और कला विषयक परंपराओं का निरूपण किया गया है। इस पुस्तक से शेखावाटी के ऐतिहासिक स्वरूप की महत्वपूर्ण जानकारी भी प्राप्त होती है।

लाजपतराय भल्ला की पुस्तक 'राजस्थान का भूगोल' (2014) पुस्तक से हमें राजस्थान में शेखावाटी की जलवायु, खनिज, जनसंख्या व पर्यटन आदि का अध्ययन किया गया है।

"Tourism in Rajasthan' M-phil Dissertation, university of Rajasthan Jaipur(1977) मे एम.पी. बंसल अनुसार राजस्थान में पर्यटन की अत्यधिक संभावनाएं हैं। यहां भव्य दुर्ग, हवेलियां, व ऐतिहासिक इमारतें विद्यमान है। जो स्थापत्य कला की शिल्प सौंदर्य से परिपूर्ण है। पर्यटन को बढ़ावा देने से राजस्थान के आर्थिक विकास में यह सहायक हो सकता है। अत: इस लेख से राजस्थान एवं शेखावाटी की ग्रामीण पर्यटन की आवश्यक जानकारी प्राप्त होती है।

Ilay Cooper ने अपनी यात्रा वृतांत "Rajasthan Exploring Painted Shekhawati'(2014) मे शेखावाटी ग्रामीण पर्यटन स्थल रामगढ़-शेखावाटी से अपनी यात्रा आरंभ कर शेखावाटी के विभिन्न नगरों से गुजरते हुए यहां के सामाजिक सांस्कृतिक जीवन की कई पहलुओं के बारे में बताया है। इस पुस्तक में मौजूद भित्ति चित्रों से युक्त इमारतो एवं पर्यटन स्थलों की जीवंत झांकी देखी जा सकती है। शेखावाटी के ग्रामीण पर्यटन स्थल के अध्ययन की दृष्टि से पुस्तकअत्यंत है।

डॉ. रीता प्रताप (2021) ने अपने ग्रंथ 'भारतीय चित्रकला एवं मूर्ति कला का इतिहास' लिखा डॉ. मीनाक्षी कासलीवाल भारती (2013) ने 'भारतीय मूर्तिकला एवं स्थापत्य भूमिका कला' नामक पुस्तक लिखी। पुरा संपदा (2009-2020) पुरातत्व, एवं संग्रहालय विभाग जयपुर, शोध पत्रिका उदयपुर, पुरातत्व मैगजीन,सीकर का राजकीय संग्रहालय।

उपयुक्त नवीन अनुसंधानों के अध्ययन और पुरातात्विक स्थापत्य के स्थलों को देखने से पता चलता है कि शेखावाटी क्षत्रे में ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर एक अध्ययन की विशेष आवश्यकता है। जिससे अतीत की सांस्कृतिक महत्व को पहचान सकते हैं।

3. शोध का उद्देश्य – शेखावाटी के ग्रामीण पर्यटन स्थलों के क्षेत्र में विभिन्न पर्यटन स्थलों को चिन्हित किया गया है। उनमें से विभिन्न मंदिरों, हवेलियो, किलो, तीर्थ स्थलों, के बारे में अध्ययन किया गया है तथापि अभी तक ग्रामीण पर्यटन क्षेत्र में कोई रिपोर्ट प्रकाशित नहीं हुई है। अब तक हुए अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शेखावाटी के क्षेत्र में अलग-अलग कालो में भिन्न-भिन्न पर्यटन स्थलों का निर्माण होता रहा है। इस क्षेत्र की ग्रामीण पर्यटन की विभिन्न कलाकृतियों की महता दृष्टिगोचर होती है। अध्ययन के दौरान मुझे यह अनुभव हुआ कि यद्यपि पर्यटन के क्षेत्र में अध्ययन हो चुका है। लेकिन शेखावाटी के ग्रामीण पर्यटन में विभिन्न कलाकृतियों में महत्व को पुन: गहन की आवश्यकता है। जैसे ग्रामीण पर्यटन स्थलों का निर्माण कैसे हुआ और विकसित अवस्था तक कैसे पहुंचे।

उदाहरणार्थ, इन ग्रामीण पर्यटन स्थलों में हवेलियों की चित्रकारी किलो की महता, तीर्थ स्थलों में आस्था आदि का क्या कारण था। शेखावाटी ग्रामीण पर्यटन, कृषि गतिविधियों के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन के तत्वों के रूप में सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के बहादुरीकरण की विशेषता है और ग्रामीण पर्यटन में विभिन्न कलाकृतियों का प्रयोग किया गया है ऐसे ग्रामीण पर्यटन स्थलों के बारे में मुझे कई जानकारियां प्राप्त हुई है परंतु अभी तक उन शेखावाटी के ग्रामीण पर्यटन स्थलों के बारे में अध्ययन शेष है।इन ग्रामीण पर्यटन स्थलों से उस समय की सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक धार्मिक तथा लोक जीवन की स्थिति का अध्ययन महत्वपूर्ण है। प्राचीन समय से वर्तमान तक इन ग्रामीण पर्यटन स्थलों के मंदिर, तीर्थ स्थलों का क्या महत्व रहा है। शेखावाटी के इन ग्रामीण पर्यटन स्थलों कासमाज में प्रभाव था या नहीं इत्यादि का अध्ययन करना इस अनुसंधान के उद्देश्य में शामिल है।

शोध की समस्या – शेखावाटी क्षेत्र में ग्रामीण पर्यटन स्थलों के बारे में अलग-अलग विद्धानों द्धारा प्रकाश मे लाई गई जानकारी का अध्ययन एक विश्लेषण होना शेष है।शेखावटी ग्रामीण पर्यटन स्थलो में विशेष तौर से उनके ऊपर उत्तीर्ण कलाकृतियों के प्रयोग के कारणों को जानकारी प्राप्त करना तथा उसके महत्वको स्थापित करना अत्यंत आवश्यक है। ग्रामीण पर्यटन स्थलों में हवेलियो में चित्रकला व मंदिरों में मूर्ति कला के उदाहरण देखने को मिलते हैं। उनके प्रयागे का क्या प्रयोजन था? इन पर्यटन स्थलों से शेखावाटी क्षेत्र के सांस्कृतिक जीवन का क्या महत्व एवं इस क्षेत्र में क्या स्वरूप रहा होगा। वास्तविक सांस्कृति जीवन कैसा था इन ग्रामीण पर्यटन स्थलों में उत्कीरण सामग्री के आधार पर तत्कालीन संस्कृति जीवन में वास्तविक स्वरूप एवं उसकी महता को स्थापितकरने का प्रयास है साथ ही इन ग्रामीण पर्यटन स्थलों को संरक्षण हेतु किया गया प्रयास भी है।

शोध की परिकल्पना – प्रस्तुत शोध प्रबंध में ग्रामीण पर्यटन स्थलो में शिलालेख एवं स्मारकों में अंकित कला व संस्कृति के विभिन्न आयामों को निकटता से समझने का प्रयास किया है। इन पर्यटन स्थलों से कला एवं संस्कृति के मूल्यों को खाजे कर वर्तमान समाज में उसके महत्व का अवलोकन करने का प्रयास किया है।अध्ययन कालीन पर्यटन स्थलों का वर्तमान सामाजिक जीवन से तुलना कर उस समय के समाज की जातियो उनके द्धारा बोली जाने वाली भाषा तथा वर्ण व्यवस्था के साथ ही उनके मुख्य कार्य, आय के स्रोतो को भी जानने का प्रयास है।ग्रामीण पर्यटन स्थलों से समाज की व्यवस्था के साथ-साथ धार्मिक जीवन तथा सारंकृतिक स्थिति का भी अध्ययन करने का प्रयास है। ग्रामीण पर्यटन से कला एवं संस्कृति के क्षत्रे में सर्वेक्षण विभिन्न हवेलिया, तीर्थ स्थलो, मंदिरों आदि के द्धारा अध्ययन करने का प्रयास भी किया गया है। किले, हवेलियां, मंदिर व तीर्थ स्थलों के आधार पर ग्रामीण पर्यटन स्थलों का महत्व उजागर होता है।

शोध पद्धति – ग्रामीण पर्यटन स्थलों का वर्गीकरण (किला, महल, मंदिर, तीर्थ-स्थल, हवेलियां) करके विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है। ग्रामीण पर्यटन स्थलों में कलाकृतियों का गंभीर परिमॉर्गन करने हेतु गावं-गांव में पर्यटन स्थलों तक किया है। ग्रामीण पर्यटन के परिमार्गन से देखे गए पर्यटक स्थलों का वर्गीकरण (सुरक्षित, खंडहर, अवशेष) किया जा रहा है,लेख क्षेत्र में देखे गए पर्यटन स्थल का वर्गीकरण मंदिरों का धर्म के आधार पर और आर्थिक आधार पर किया है। इसके अध्ययन के लिए प्राथमिक और द्धितीयस्त्रोत का उपयागे किया गया है।इसका तत्कालीन समाज का इन ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर क्या प्रभाव पड़ा है। तथा इन पर्यटन स्थलों का उस समय की राजनीतिक, धार्मिक आर्थिक व सांस्कृतिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है।शेखावाटी के ग्रामीण पर्यटन स्थलों का राजस्थान व भारत के अन्य पर्यटन स्थलों से तुलनात्मक विश्लेषण किया जा रहा है। इसके विश्लेषणात्मक अध्ययन के द्धारा यह पता लगाया है कि ग्रामीण पर्यटन स्थलों को कैसे विकसित किया जाए।ग्रामीण पर्यटन स्थलों से प्राप्त

कलाकृतियां वर्तमान काल में भी अपना विशेष स्थान बनाए हुए हैं। यह उपलब्धि अचानक नहीं मिलती है। इनकी समुचित पृष्ठभूमि है और वहीं से उन्नत अवस्था तक पहुंची है। इनके बारे में समुचित अध्ययन किया जाना अपेक्षित है।

शोध अंतराल – शेखावाटी क्षेत्र के पाषाणकालीन इतिहास पर डॉ. मुरारी लाल शर्मा (2018)ने अपने अनुसंधान ग्रंथ 'राजस्थान की शैल चित्रकला' में शेखावाटी क्षेत्र केस्थलों का पुरातात्विक महत्व बनाया। जिसके आधार पर कह सकते है कि यहांग्रामीण पर्यटन स्थल पर कार्य होना शेष है।

डॉ. मदन लाल मीना (2020) ने अपने अनुसंधान ग्रंथ 'शेखावाटी क्षेत्र का प्रागैतिहासिक एवं आद्यऐतिहासिक पुरातत्व' में शेखावाटी के पुरातात्विक स्थलोंका बारीकी से अध्ययन किया है। इस पुस्तक के आधार से पता चलता है कि शेखावाटी क्षेत्र में अभी ग्रामीण पर्यटन स्थलों की महता को पहचानना शेष है। डॉ. पंकज धीरिन्द्र (2021) की महत्वपूर्ण रचना 'शेखावाटी की मन्दिर वास्तुकला' (आठवीं से बारहवीं शताब्दी ईस्वी) में शेखावाटी क्षेत्र के अनेक मन्दिरों का विस्तृत विवरण दिया गया है। डॉ. रीता प्रताप (2021) ने अपने ग्रंथ 'भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला काइतिहास' लिखा पुरा संपदा (2009–2023) पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग जयपुर, पुरातत्व मैंग्जीन, सीकर का राजकीय संग्रहालय।

उपर्युक्त नवीन अनुसंधान ग्रंथों के अध्ययन और पुरातात्विक स्थापत्य के स्थलों, तीर्थ स्थलों, किलो, हवेलियों को देखने से पता चलता है कि शेखावाटी क्षेत्र में ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर एक अध्ययन की विशेष आवश्यकता है। जिससेग्रामीण पर्यटन स्थलों को पहचाना जा सके।

शोध का महत्व – शेखावाटी में ग्रामीण पर्यटन स्थलों का जरूरी कायाकल्प करने और सैलानियों को पर्यटन स्थलों का संपूर्ण अनुभव प्रदान करने में ग्रामीण पर्यटन स्थलों के संसाधन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। यदि शेखावाटी के ग्रामीण पर्यटन स्थलों की पूरी क्षमता विकसित कर दी जाए तो उन ग्रामीणों को रोजगार प्रदान कर सकता है जिनका शहरो की ओर पलायन बढ़ता जा रहा है।इन ग्रामीण पर्यटन स्थलों से हमें सामाजिक स्थिति व व्यापारिक महतासमाज की वर्णव्यवस्था स्थानीय लोगों की आर्थिक व्यवस्था का स्वरूप कैसे हैं यहां रहने वाले लोगों का ग्रामीण पर्यटन स्थल में क्या योगदान रहा?शेखावाटी क्षत्रे में ग्रामीण पर्यटन स्थलों का विकास किन परिस्थितियों में हुआ। शेखावाटी क्षत्रे में जो ग्रामीण पर्यटन स्थल विद्यमान है वो प्रकाश में आएंगे उनका महत्व प्रतिपादित किया जायेगा। जो उनके संरक्षण का मुख्य आधारहोगा। अत: पर्यटन स्थलो एवं धरोहर को संरक्षित करना भी इस शोध की विषय के चयन का एक कारण रहा है। वर्तमान सामाजिक जीवन में आर्थिक दृष्टि कीआकांक्षाओं ने मानव को तथाकथित बना दिया है। प्राकृतिक संसाधनो के अधिकाधिक दोहन करने की लालसा में यह ग्रामीण पर्यटन स्थल भेंट चढ़ते जारहे हैं। अत: इनका प्रलेखन कार्य अत्यंत आवश्यक हो गया है। इस जानकारी के उपरांत ग्रामीण पर्यटन क्षेत्र में शोध के नए आयाम लक्षित होंगे।

डॉ. एच. एस आर्य (2020) ने अपनी पुस्तक 'शेखावाटी का राजनीतिक व सांस्कृतिक इतिहास',पंडित झाबरमल शर्मा ने 'सीकर का इतिहास (1922)', 'खेतड़ी काइतिहास (1927)' व 'खाटूश्याम जी का इतिहास' लिखा 'रतनलाल मिश्रा (1998)' ने 'शेखावाटी का नवीन इतिहास' लिखा तथा गोपीनाथ शर्मा वह गौरीशंकर, हीराचंद ओझा, ने राजस्थान के इतिहास लेखन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन आदि ग्रंथो के अध्ययन से शेखावाटी ग्रामीण पर्यटन स्थलों कीजानकारी उपलब्ध होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. आर्य, एच.एस. : 2020, शेखावाटी का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर।
2. डॉ. पंकज धरेन्द्र : 2021 शेखावाटी के मन्दिर वास्तुकला और मूर्तिकला, (8वीं से 12वीं शताब्दी) महावीर पब्लिकेशन, जयपुर।
3. मीणा डॉ. मदनलाल : 2020, शेखावाटी क्षेत्र का प्रागैतिहासिक एवं आद्यैतिहासिक पुरातत्व, लिट्रेररी सर्किल्स, जयपुर।
4. मेहता डॉ. अमित : 2022, शेखावाटी का इतिहास और स्थापत्य (16वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी तक), यूनिक ट्रेडर्स जयपुर।
5. मील, संदीप कुमार : 2018, शेखावाटी की लोक संस्कृति, प्रकाशन विभाग,सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
6. शेखावत्, सुरजन सिंह : 1989, शेखावाटी प्रदेश का प्राचीन इतिहास,सुरजन सिंह शेखावत स्मृति संस्थान प्रकाशन, झाझड़, झुंझुनूं।
7. आर्य, हरफूल सिंह : 1987, शेखावाटी के ठिकानों का इतिहास एवं योगदान, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
8. भल्ला लाजपत राय : 2014, 'राजस्थान का भूगोल', कुलदीप पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।
9. भालोटिया, संजय : 2004, शेखावाटी में पर्यटन के पारिस्थितिकीय आधार,शोध प्रबन्ध, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
10. Cooper, Ilay : 2014, Rajasthan : Exploring Painted Shekhawati, Niyogi Books, New Delhi, 2014
11. Bansal, M.P. : 1977, Tourism in Rajasthan, University of Rajasthan, Jaipur
12. स्वामी चेतन : जून 2005, फतेहपुर की चित्रांकित हवेलिया, भित्ति–चित्रअंक शेखावाटी बोध।
13. महरिया भंवरलाल : 2005, मंडावा की भित्ति–चित्रकला, भित्ति–चित्र अंक शेखावाटी बोध, जून 2005।
14. भारद्धाज, विनोद : 2015 मरूधरा का गौरव शेखावाटी, राजस्थान सुजस।
15. शर्मा झाबरमल : 1922, सीकर का इतिहास, 'खेतड़ी का इतिहास 1927' व 'खाटूश्याम जी का इतिहास' राजस्थान एजेंसी कलकत्ता।
16. शर्मा, महेश कुमार : 2004, शेखावाटी के स्थापना स्तम्भ, राजस्थान साहित्य संस्थान जोधपुर।
17. मनोहर, डॉ. राघवेंद्र सिंह : 2010, राजस्थान के प्रमुख शक्तिपीठ, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
18. वशिष्ठ, नीलिमा : 1989, स्कल्पचर्स ट्रेडीशंस ऑफ राजस्थान, जयपुर 2001, राजस्थान की मूर्तिकला परम्परा, जयपुर।
19. शर्मा गोपीनाथ : 1990, राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
20. व्यास, डॉ. राजेश कुमार : 2019, सांस्कृतिक राजस्थान, राजस्थान हिन्दीग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
21. ओझा, गौरीशंकर हिराचन्द : 2010, राजपूताने का इतिहास, राजस्थान ग्रन्थागार, जोधपुर।

22. टॉड, कर्नल जेम्स : 1971, राजस्थान का इतिहास भाग–1 एवं भाग–2,साहित्यागार जयपुर '2008'।
23. Rajasthan History Congress, Volume - 34, December 2019
24. Rajasthan History Congress Department of History J.N.V. University, Jodhpur
25. सुरजन सिंह झाझड़ : 1983, राव शेखा, सीकर।
26. सूर्यनारायण शर्मा, खंडेला का इतिहास, आगरा।
27. उदयवीर शर्मा : 2000 शेखावाटी का लोकरंग, राजस्थान साहित्य समितिबिसाऊ।
28. पी.एस. प्रकाश, शेखावाटी वैभव, शेखावाटी इतिहास शोध संस्थान, शिमला(झुंझुनू)।
29. नारायण सिंह : 1960, शेखावाटी का भूगोल जयपुर।
30. निरंजन जोशी : 1960, बिसाऊ का इतिहास (हस्तलिखित) बिसाऊ।
31. डॉ. महावीर प्रसाद शर्मा : 2001, तोरावाटी का इतिहास, लोक भाषा प्रकाशन, कोटपूतली।
32. रघुनाथ सिंह शेखात, शेखावाटी का सांस्कृतिक इतिहास।
33. भूरसिंह मलसीसर, विविध संग्रह (शेखावाटी का इतिहास) हस्तलिखित,जयपुर।

अभिलेखागारीय सामग्री :

1. पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर।
2. राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।
3. जिला सूचना केन्द्र सीकर व झुंझुनूं।
4. जीणमाता का शिलालेख विक्रम संवत् 1196।
5. हर्ष का शिलालेख विक्रम संवत् 1030।

पत्र पत्रिकायें :

1. आर्कियोलॉजीकल स्टडीज
2. पुरातत्व, नई दिल्ली
3. परम्परा (शोध पत्रिका) चोपासनी
4. रिसर्चर, (राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, जयपुर)
5. शोधक जयपुर
6. मरू श्री पत्रिका चूरू (त्रैमासिक)
7. मरू – भारती, पिलानी
8. राजस्थान साहित्य संस्थान, झुंझुनूं

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

A Study on the Health and Nutritional Benefits of Millets

Dr. Priyanka Devara*

***Assistant Profssor (Home Science) Govt. Girls College, Barwani (M.P.) INDIA**

Abstract: In this era of climatic change, millets are the most convenient crops, which fit well in the current scenario of hunger, poverty, nutritional challenges, and marginal farming. This review focuses in detail on the potential health benefits, and with updated literature from the recent past. Millets store an ample amount of proteins, essential amino acids, dietary fibre, vitamins, minerals, essential fatty acids, antioxidants, and other phytochemicals attributes place them in "Nutraceuticals". Due to lack of nutrients in diet lifestyles leads to numerous diseases like cardiovascular diseases, obesity and diabetes. Millets are rich in dietary fibers, antioxidants, protein, carbohydrates and fats.Millets are the ones that are cultivated in poor soils.The incorporation of millet into the daily diet of an individual might help in curing many health complications. Millet is an important ancient cereal crop known for its nutritional value. It has served as a staple food for various cultures for thousands of years, offering a rich source of carbohydrates, protein,fiber, vitamins, and minerals. Millet grains are small, round, and have a hard outer layer, making them versatile for processing into various food products. They are commonly ground into flour or grits for making porridge, bread, and crackers, and can be used in fermented foods like beer and sour dough. In the context of climate change, water scarcity, and global population growth, millet's role in ensuring foodsecurity is becoming increasingly important. Food scientists, technologists, and nutritionists are showing growing interest in millet due to its nutritional benefits and potential health advantages.

Keywords- Millet, nutritional value, nutraceuticals.

Introduction - Millets are considered as "minor cereals" and are the world's sixth most important cereal grains (Das et al. 2019; Sarita and Singh, 2016), which along with maize, sorghum, oats and barley are known as "coarse cereals". Millets account for only 2% of the world cereal production and 95% of the world millet production comes from Asia and Africa (FAO, 2018). Millets belong to the family of grasses Poaceae (Gramineae). Sub family Panicoideae consists of millets: Panicum miliaceum L. (Common millet) also known as broomcorn millet is mostly grown in China, Afghanistan, India, Turkey; Pennisetum glaucum L. (Pearl millet) which is also known as Bajra, Bulrush, is mostly grown in Africa, India, the United States; Setaria italica L. (Foxtail millet) is also known as Italian millet and is mostly grown in Eurasia, China, India, Australia; Digitaria exilis Stapf (White Fonio) and Digitaria iburua Stapf (Black Fonio), also known as Hungry rice are mostly grown in Africa Sahel region; Echinochloa esculenta (A. Braun) H. Scholz (Japanese Barnyard Millet) also known as white millet is mostly grown in Japan, China, Korea; Echinochloa frumentacea Link (Indian Barnyard Millet) also known as Sama is mostly grown in India, China; Panicum sumatrense Roth (Little Millet) also known as Blue panic, is mostly grown in China, Pakistan, India, Nepal, Malaysia and Paspalum scrobiculatum L. (Kodo millet) also known as Kodra is mostly grown in India Millets boost immunity, provide fodder for cattle, improve biodiversity, and protect the livelihood of farmers. The right composition of minerals, vitamins, and antioxidants present in the millet grains suggests the optimization of immune system functioning. High amount of resistant starch in millets ensure the slow and sustained glucose release into the blood stream and the supply of up to 2000–3000 calories per person per day (Muthamilarasan and Prasad, 2021).

Just like cereals, legumes that are known as "poor man's meat" are excellent sources of protein, minerals, dietary fibre and B vitamins. These include red gram, green gram, black gram, green peas that possess a good nutritional profile with potential health benefits (Kumari and Sangeetha, 2017). Both millets and legumes are known as "climate smart crops" and "smart -food" as these foods are good for us, the planet as well as the farmers. Pigeon pea and chicken pea are important sources of protein especially for the people who cannot afford animal source protein and are vegetarian. Both pigeon pea and chicken pea have an amino acid profile that is comparable to soybean but the sulfur containing amino acids such as methionine and cysteine are less. This deficiency can be complemented

by the use of coarse cereals called millets, which are naturally rich in methionine and cysteine. However, the lysine content of millets is less than that of pigeon pea and chicken pea (Anitha et al. 2020). The blend of millets with pulses or legumes have been known to enhance the overall acceptability of the product (Kumar et al. 2018). It was reported by Anitha et al. (2020), that pearl millet showed a higher iron, zinc content as compared to pigeon pea and chicken pea, while the protein digestibility was also higher.It was reported that, finger millet had the highest calcium content amongst the all. In a study conducted by Lardner et al. 2016, it was concluded that as compared to grass-legume hay, millet and barley had a higher nutritive value and may be excellent annual forages for extensive grazing.

Several traditional millet foods and beverages are consumed in Africa, Indian sub-continent and East Asia such as whole-grain foods, flatbreads, steamed meals, dumplings, porridges, puffed products, non-alcoholic beverages “Oshikundu” from Namibia; “Kunun-zaki” from Nigeria, Niger and Tchad; “Malwa/Ajon” from Uganda; “Uji” from Kenya, Uganda and Tanzania. Alcoholic beverages include “Kodo ko jaanr” from India, Nepal, and Bhutan; “Jandh” from Nepal, “Burukutu” from West Africa; “Koozh” and “Madua Apong” from India; “Xiao mi jiao” from Taiwan (Amadou, 2019). Millets have been an integral part of the Tribal communities in India like the Soligas tribe of BR Hills in Chamarajanagar district of Karnataka, that celebrate “Ragi Habba festival” with the harvesting of millets (Behera, 2017). Most of the pearl millet flour in India is used in baking chapatis “Bajre ki roti” (Reddy at al. 2018). “Madira ki Kheer” is a Barnyard millet porridge that is a popular sweet dish in Uttarakhand, India (Verma et al. 2018). The Muthuvan tribe in Kerala, India consumes Ragi (Finger millet) locally called ‘‘Kepa’’ for making a pudding called “Katty’’ (Rawat et al. 2021). In West Africa, “Ogi” (Porridge) is the staple food and infant meal that is prepared from fermented millet (Adebiyi et al. 2018). Pearl millet is used in several traditional ceremonies among the ethnic groups of Northern Benin, as a stimulator of milk production in wet nurses of “Mokole group” and in the production of mash flour, traditional foods such as “Foura” (Adeoti et al. 2017). In a study conducted by Poshadri et al. (2019), it was reported that energy-rich complementary weaning malted food sample comprising of sorghum, wheat, ragi, soybean may cause improvement in the growth and prevention of malnutrition in children, infants, and nursing mothers in tribal areas of Adilabad district, of India. Some of the millet-based foods in the Indian market are millet muesli, flour, dosa mix, multigrain choco malt, porridge, rava, chikkis, flakes, cookies, organic baby food, pops, roti (Alavi et al. 2019). Ethnic millet foods of Karnataka, India such as papads, chakli, fermented “Paddu” are highly nutritious and have a great potential for livelihood generation (Kahane et al. 2013).

Health benefits of millets-

Strong antioxidants help in increasing immunity.
Low glycemic Index help in decreasing diabetes.
Good source of magnesium keep heart healthy.
Gluten free keep gut healthy.
High dietary fibre helps in digestion and keep weight under control.

Millets have potential health benefits and epidemiological studies have showed that consumption of millets reduces risk of heart disease, protects from diabetes, improves digestive system, lowers the risk of cancer, detoxifies the body, increases immunity in respiratory health, increases energy levels and improves muscular and neural systems and are protective against several degenerative diseases such as metabolic syndrome and Parkinson’s disease (Manach et al., 2005;

Scalbert et al., 2005; Chandrasekara and Shahidi, 2012). The important nutrients present in millets include resistant starch,oligosaccharides, lipids, antioxidants such as phenolic acids, avenanthramides, flavonoids, lignans and phytosterols which are believed to be responsible for many health benefits (Miller, 2001; Edge et al., 2005).

Cardiovascular Diseases: Being rich sources of magnesium, millets help in reducing blood pressure and risk of heart strokes especially in atherosclerosis.Also, the potassium present in millets helps in keeping blood pressure low by acting as a vasodilator and help to reduce cardiovascular risk. Also, the plant lignans present in millets have the ability to convert into animal lignans in presence of micro flora in digestive system and protect against certain cancers and heart disease. The high fiber present in millets playsa major role in cholesterol lowering eliminating LDL from the system and increasing the effects of HDL.

Diabetes Mellitus: Diabetes mellitus is a chronic metabolic disorder characterized by hyperglycemia with alterations in carbohydrate, protein,and lipid metabolism. It is considered as the most common endocrine disorder and results in deficient insulin production(type 1) or combined resistance to insulin action and the insulin-secretory response (type 2) (Saleh et al., 2013). The efficiency of insulin and glucose receptors in the body is increased by the significant levels of magnesium content present in millets and help in preventing diabetes. Finger millet based diets have shown lower glycemic response due to high fiber content and also alpha amylase inhibition properties which are known to reduce starch digestibility and absorption (Kumariand Sumathi, 2002).

Gastrointestinal Disorders: Regulating digestive process can increase nutrient retention and reduce chances of more serious gastrointestinal conditions like gastric ulcers or colon cancer. Fiber content in millets helps in eliminating disorders like constipation, excess gas,bloating and cramping. An immune mediated enteropathic disease called celiac disease which is usually triggered by the ingestion of gluten in susceptible individuals (Catassi and Fasano, 2008). A gluten free diet primarily plays a major role in affecting food consumption in the grain food group.

Replacing cereals like wheat, barley, rye-based foods made from gluten free grains, including rice, corn, sorghum, millet, amaranth, buck wheat, quinoa, wild rice may help people adhering to gluten free diet. (Thompson, 2009). As millets are gluten free, they have considerable potential in foods and beverages and can meet the growing demand for gluten free foods and will be suitable for individuals suffering from celiac disease. (Taylor et al., 2006; Taylor and Emmambux, 2008; Chandrasekara and Shahidi, 2011b and 2011c2.2.4 CancerMillet grains based on literature values are known to be rich in phenolic acids, tannins, and phytate (Thompson, 1993).These nutrients reduce the risk for colon and breast cancer in animals (Graf and Eaton, 1990). The fiber present in sorghu mand millet and also the phenolic have been attributed for lower incidence of esophageal cancer than those consuming wheat or maize (Van Rensburg, 1981). Recent research has revealed that fiber as one of the best and easiest ways to prevent the on set of breast cancer in women. They can reduce their chances of breast cancer by more than 50% by eating more than 30 gm of fiber every day.

Detoxification: Many of the antioxidants found in millet have beneficial impact on neutralizing the free radicals, which can cause cancer and clean up other toxins from body such as those in kidney and liver. Quercetin, cucurmin, ellagic acid and various other beneficial catechins can help to clear the system on any foreign agents and toxins by promoting proper excretion and neutralizing enzymatic activity in those organs. Therefore, tremendous attention has been given to polyphenol due to their roles in human health (Tsao R, 2010).

Conclusion: Whilst a grain millets has very much importance in India, still more emphasis has been given to rice, wheat and maize production. Millets are small grain crops, cultivated on degraded poor soils. Over-reliance on cereals post-green-revolution has completely left these grains unnoticed. These grains are still regarded as orphan crops. Due to the rise of sedentary lifestyle many health ailments has risen like diabetes, cardiovascular diseases, obesity, gastrointestinal disorders and malnutrition. Millet cultivation would provide twofold benefits. As they would help in conserving resources by limiting the use of water, and the fertility of the soil and would help in health benefits to society. These grains are a highly rich source of carbohydrates, proteins, vitamins, fats, minerals, and antioxidants. So, the addition of these grains to the daily diet will surely lead to a healthy lifestyle. Further the integration of various international ,national programs with diet based on coarse grains will be highly beneficial. Increasing the use of these grains for a healthy lifestyle, gluten-free substitute, farmer beneficiaries, and conservation of natural resources, there is an urgent need for developing the processing technologies that will help in upgrading the shelf life of millets. Moreover, educating the population about consuming these grains for a healthy, disease-free life. Advancement in these nutritious, high-value grains will increase the immunity, health, and socio-economic status of the population.

References:-

1. Abbasi, Y. F.; See, O. G.; Ping, N. Y.; Balasubramanian, G. P.; Hoon, Y. C.; Paruchuri, S. Diabetes Knowledge, Attitude, and Practice Among Type 2 Diabetes Mellitus Patients in Kuala Muda District, Malaysia – a Cross-Sectional Study. Diabetes Metab. Syndr: Clin. Res. Rev. 2018, 12, 1057–1063. DOI: 10.1016/j.dsx.201
2. Ahmed, S. M. U.; Luo, L.; Namani, A.; Wang, X. J.; Tang, X. Nrf2 Signaling Pathway: Pivotal Roles in Inflammation. Biochim. et Biophys. Acta (BBA) - Mol. Basis Dis. 2017, 1863(2), 585–597. DOI: 10.1016/j.bbadis.2016.11.005.
3. Amadou, I.; Gounga, M. E.; Le, G. W. Millets: Nutritional Composition, Some Health Benefits and Processing - AReview. Emir. J. Food Agric. 2013, 25(7), 501–508. DOI: 10.9755/ejfa.v25i7.12045.
4. Babele, P. K.; Kudapa, H.; Singh, Y.; Varshney, R. K.; Kumar, A. Mainstreaming Orphan Millets for Advancing Climate Smart Agriculture to Secure Nutrition and Health. Front Plant Sci. 2022, 13. DOI: 10.3389/fpls.2022.902536.
5. Bora, P.; Ragaee, S.; Marcone, M. Characterisation of Several Types of Millets as Functional Food Ingredients. Int. J. Food Sci. Nutr. 2019, 70(6), 714–724. DOI: 10.1080/09637486.2019.1570086.
6. https://millets.res.in/m_recipes/Nutritional_health_benefits_millets.pdf

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Impact of Social Media Addiction on Social Withdrawal Among Adolescents

Dr. Kirti Dashora* Priya Joe**

*Assistant Professor (Psychology) MLV Rajasthan Vidyapeeth Deemed University, Udaipur (Raj.) INDIA
** Research Scholar (Psychology) MLV Rajasthan Vidyapeeth Deemed University, Udaipur (Raj.) INDIA

Abstract: In the digital age, adolescents' pervasive engagement with social media platforms has sparked concerns about its potential impact on their social behaviors. This study investigates the relationship between social media addiction and social withdrawal among adolescents in Udaipur, India. A total of 300 students from three schools were initially assessed using the Social Media Addiction Scale (SMAS). From this cohort, 240 participants were purposively selected and categorized into two equal groups: 120 identified as social media addicted and 120 as non-addicted. The Social Withdrawal Scale (Hikikomori) was administered to evaluate their levels of social withdrawal. Statistical analysis revealed a significant difference between the two groups, with addicted adolescents exhibiting markedly higher social withdrawal scores compared to their non-addicted counterparts. These findings suggest that excessive social media use is associated with increased social withdrawal in adolescents. The study underscores the need for early identification and intervention strategies to address social media addiction and its potential psychosocial consequences. Implementing educational programs that promote balanced digital habits and encourage real-life social interactions may mitigate the adverse effects of social media overuse on adolescent development.

Introduction - In recent years, the rapid advancement of technology and the widespread accessibility of smartphones have significantly transformed the ways in which adolescents communicate, connect, and interact. Social media platforms such as Instagram, Snapchat, TikTok, and Facebook have become integral to the daily lives of young people, offering spaces for social interaction, identity expression, and peer validation. While these platforms provide numerous benefits, including enhanced connectivity and access to information, there is growing concern among educators, psychologists, and parents regarding the excessive and often compulsive use of social media by adolescents, leading to what is now widely referred to as *social media addiction*.

Social media addiction is characterized by excessive concern about social media, an uncontrollable urge to log on or use social media, and devoting so much time and effort to social media that it impairs other important areas of life. This addiction has been linked to a variety of psychological issues such as anxiety, depression, and low self-esteem. Among these concerns, one of the most critical yet often overlooked outcomes is *social withdrawal* — a condition in which individuals reduce or entirely avoid face-to-face interactions, exhibit poor interpersonal functioning, and become increasingly isolated from society. Adolescents, due to their developmental stage and heightened sensitivity to peer evaluation, are particularly vulnerable to these effects.

Social withdrawal during adolescence can severely impact emotional development, academic performance, and future social relationships. It may stem from feelings of inadequacy, cyberbullying, or the fear of missing out (FOMO), all of which are exacerbated by prolonged exposure to social media. As virtual interactions increasingly replace real-life communication, adolescents may find it challenging to engage in meaningful social encounters, leading to detachment, loneliness, and even early signs of social anxiety disorders. This behavioral shift raises significant questions about the long-term consequences of digital engagement on adolescent mental health and social functioning.

Despite a growing body of research on the psychological impacts of social media, there is still limited empirical focus on the specific relationship between social media addiction and social withdrawal among adolescents. Understanding this dynamic is essential for educators, parents, and mental health professionals seeking to design effective interventions. This study aims to explore the extent to which social media addiction contributes to social withdrawal in adolescents and to identify the underlying behavioral and psychological mechanisms that mediate this relationship.

By examining this issue, the present research intends to shed light on a pressing concern of contemporary

adolescent development. The findings may serve as a foundation for the development of preventive strategies, awareness programs, and therapeutic modules to mitigate the negative impact of social media overuse and to promote healthy, balanced digital habits among youth.

Objectives: The objectives of the present research are as follows:

1. To study the social withdrawal of social media non-addicted adolescents.
2. To study the social withdrawal of social media addicted adolescents.
3. To compare the social withdrawal between social media non-addicted and social media addicted adolescents.

Review of Literature

Guazzini et al. (2022) explores adolescents' perceptions of how the COVID-19 pandemic affected their tech use, sense of community, and loneliness. Technology use increased, helping maintain social contact, but many felt lonelier and less connected to their communities. The study stresses the need to balance digital and meaningful social interaction for adolescent well-being.

Moretta et al. (2021) review traces 20 years of research on problematic internet and social media use, analyzing psychological models, diagnostic tools, and challenges in standardization. It highlights inconsistencies in assessments and stresses the need for theory-based, cross-cultural, and developmental research. The authors propose a future research agenda combining psychological and biological approaches.

Reer et al. (2020) in their study examined problematic social media use (PSMU) and problematic game use (PGU) among 1,520 adolescents and young adults in Germany. PSMU was more common, especially among females, while males showed more PGU. Loneliness and stress were strong predictors of both behaviors, which were linked to higher psychological distress and lower life satisfaction. The study calls for early intervention to reduce the negative mental health impacts of excessive digital media use.

Choi & Noh (2019) research links social media use to attitudes toward suicide, mediated by well-being, isolation, and social support. Excessive use lowered well-being and increased isolation, leading to more accepting views of suicide. Supportive social media use, however, improved mental health. The study emphasizes both risks and benefits of social media in shaping suicidal attitudes.

Corvaglia et al. (2008) study examines bullying in schools, focusing on depression, self-esteem, and gender differences among perpetrators and victims. Victims showed more depression and lower self-esteem, while bullies also had low self-esteem with externalizing behaviors. Boys were more involved in direct bullying; girls in relational forms. The authors highlight the need for gender-sensitive mental health support.

Corsano (2003) explores how adolescence, a time of identity and social change, often brings loneliness due to struggles with autonomy, communication, and forming deep relationships. The chapter emphasizes loneliness as a subjective, developmental issue with potential long-term mental health effects, underscoring the importance of timely support.

Research Gap: While a considerable body of research has explored various aspects of adolescents' digital behavior, including the psychological and emotional effects of social media use, there remains a notable gap in specifically understanding *social withdrawal* as a distinct construct in the context of social media addiction. Studies like Guazzini et al. (2022) and Choi & Noh (2019) emphasize loneliness, isolation, and well-being, yet they do not distinctly isolate or deeply examine how these experiences translate into behavioral withdrawal from real-world social interactions. Moreover, while Reer et al. (2020) and Moretta et al. (2021) provide insights into problematic digital media usage, their focus remains largely on mental health outcomes, diagnostic challenges, and general behavioral patterns, rather than addressing the nuanced manifestations of social withdrawal in addicted versus non-addicted adolescents.

Furthermore, existing literature often discusses social media's role during specific events (like the COVID-19 pandemic) or examines broader developmental and emotional factors (as seen in Corsano, 2003 and Corvaglia et al., 2008). However, few studies have conducted direct comparative analyses between adolescents who are addicted to social media and those who are not, especially in terms of their real-life social engagement and withdrawal behaviors. This leaves a critical research gap in understanding how addiction to social media may uniquely influence adolescents' tendency to disengage from social environments. Addressing this gap is essential for designing targeted interventions aimed at fostering healthier social development in the digital age.

Methodology

Sample: The present study included a total of 300 adolescents who were randomly selected from three different schools in Udaipur. From this initial group, a purposive sample of 240 adolescents was identified—comprising two equal groups: 120 adolescents with a high level of social media addiction and 120 adolescents showing no signs of addiction. The selected participants included individuals of both genders.

Tools of the Research Study:

Social Media Addiction Scale (SMAS): The Social Media Addiction Scale (SMAS), developed by Tutgun-Ünal and Deniz (2015), is a well-established instrument used to assess the level of addiction to social media. The scale contains 41 items, divided into four major sub-dimensions: *Virtual Tolerance, Virtual Communication, Virtual Problems,* and *Virtual Information*. Each sub-dimension reflects a specific aspect of problematic social media behavior. The scale employs a 5-point Likert response format, where 1 =

Strongly Disagree, 2 = Disagree, 3 = Neutral, 4 = Agree, and 5 = Strongly Agree. Participants are required to indicate how strongly they agree with each statement. Higher overall scores reflect greater social media addiction, indicating more intensive involvement in one or more of the sub-dimensions. The SMAS demonstrates strong reliability and validity, making it a reliable tool for research purposes.

Social Withdrawal Scale (Hikikomori): The Social Withdrawal Scale (Hikikomori) is a psychological tool developed to assess tendencies toward social withdrawalis used. The scale uses a Likert-type format and focuses on three key dimensions: *socialization* (interest and comfort in social interactions), *self-isolation* (preference for solitude and avoidance of social roles), and *emotional support seeking* (willingness to seek help and emotional openness). Psychometrically sound, the scale demonstrates strong reliability and validity, with Cronbach's alpha values typically above 0.80 and stable test-retest scores. Factor analysis supports its three-dimensional structure, confirming that it captures distinct aspects of social withdrawal. It also shows strong construct validity when compared with related psychological traits such as anxiety, depression, and loneliness, making it a useful tool for identifying at-risk individuals and informing interventions. The low score shows low social withdrawal.

Procedure of Data Collection: The data collection process began with obtaining formal permission from the principals of three selected schools located in Udaipur. Once approval was granted, the researchers visited each school and explained the study's objectives, ensuring students were informed about the confidentiality and voluntary nature of their participation. An initial group of 300 adolescents was randomly chosen from these schools to take part in a preliminary screening. To evaluate their level of social media use and detect signs of addiction, the Social Media Addiction Scale (SMAS) by Tutgun-Unal and Deniz (2015) was administered to all 300 participants.

Following the screening, a purposeful sample of 240 adolescents was selected for the main phase of the study. This group was evenly divided, with 120 students identified as having a high level of social media addiction and 120 showing no signs of addiction. The sample included both male and female participants to maintain gender diversity. These selected students were then assessed using the Social Withdrawal Scale by (Hikikomori), to evaluate their overall social withdrawal status. Data collection was carried out in a consistent and organized manner during school hours, in a quiet setting free from distractions, and under the direct supervision of the researcher. Participants were reassured about the confidentiality of their responses and reminded that their involvement was entirely voluntary.

Results and Discussion: Table 1 shows comparison of Social Media Non-Addicted and Addicted adolescents on total dimensions of social withdrawal through independent group 't' test.

Table 1: Comparison of Social Media Non-Addicted and Addicted adolescents on Total dimensions of Social Withdrawal

Social Withdrawal	Social Media	
	Non-addicted	Addicted
N	120	120
Mean	34.117	88.325
Std. Deviation	8.077	8.215
Mean Difference	54.208	
t'	51.547	
p value	0.000	

Table 1 presents a comparison between adolescents addicted to social media and those who are not, based on their overall scores on the Social Withdrawal Scale. Each group includes 120 participants, ensuring a well-balanced and sufficiently large sample for meaningful comparison.

The mean scores reveal a striking difference between the two groups. Adolescents who are not addicted to social media have an average score of 34.117, indicating lower levels of social withdrawal. In contrast, those identified as addicted show a much higher mean score of 88.325, suggesting a strong association between social media addiction and increased social withdrawal. The large mean difference of 54.208 clearly points to a substantial disparity between the two groups in terms of their social withdrawal tendencies.

Standard deviations for both groups are quite similar 8.077 for the non-addicted group and 8.215 for the addicted group), indicating consistent patterns within each group and that the observed difference in mean scores is not due to variability in responses. The calculated t-value of 51.547 further supports the presence of a significant difference, while the p-value of 0.000 confirms that the results are statistically significant and not due to random chance.

In summary, the data strongly indicate that adolescents addicted to social media experience much higher levels of social withdrawal compared to their non-addicted peers. This highlights the potential negative impact of excessive social media use on adolescents' social functioning and underscores the importance of developing effective strategies and interventions to address social withdrawal and limit social media addiction.

Discussion: Adolescents addicted to social media are more likely to experience higher levels of social withdrawal because excessive time spent online can gradually replace real-life social interactions. Constant engagement with virtual platforms may reduce opportunities and motivation to connect face-to-face with peers, leading to feelings of isolation and discomfort in offline social settings. Over time, these adolescents may begin to prefer the predictability and control of online communication over the complexities of real-world relationships, which can lead to withdrawal from social activities, avoidance of group interactions, and a decline in social confidence.

Additionally, social media addiction often affects

emotional regulation and self-esteem, especially during adolescence, a period marked by identity formation and social comparison. The pressure to maintain an idealized online presence, fear of missing out (FOMO), and exposure to unrealistic standards can increase anxiety and social insecurity. These emotional challenges may cause adolescents to retreat further from social environments they perceive as judgmental or overwhelming. This combination of reduced offline engagement, increased emotional strain, and dependency on virtual validation contributes to a pattern of social withdrawal among adolescents addicted to social media.

Implications: The findings of this study carry several important implications for educators, parents, mental health professionals, and policymakers:

Awareness of Social Media Impact: The study highlights the significant link between social media addiction and increased social withdrawal among adolescents. This raises awareness about the potential psychological and social consequences of excessive social media use.

Early Identification and Intervention: By identifying clear differences in social withdrawal levels between addicted and non-addicted adolescents, the study emphasizes the need for early screening tools in schools to detect signs of social media addiction and social withdrawal at an early stage.

Guidance for Parents and Educators: The research provides valuable insights that can help parents and educators monitor and manage adolescents' social media usage, encouraging more real-life social engagement and balanced online behavior.

Development of Intervention Programs: The strong association between social media addiction and social withdrawal suggests the need for targeted intervention programs aimed at reducing screen time, improving face-to-face interactions, and promoting emotional well-being among adolescents.

Policy and Curriculum Integration: The results support the integration of digital literacy and mental health education into school curricula, helping students understand the responsible use of technology and develop coping strategies to manage online behaviors.

Support for Mental Health Professionals: The study provides empirical evidence that can be used by counselors and psychologists to develop specialized therapy or support groups addressing both social media addiction and social withdrawal symptoms in adolescents.

Overall, this research reinforces the importance of balanced digital usage and the urgent need for a supportive environment to foster healthy adolescent development in an increasingly digital world.

References:-

1. Choi D.-H., Noh G.-Y. (2019). The influence of social media use on attitude toward suicide through psychological well-being, social isolation, and social support. Inf. Commun. Soc. 23:1–17.
2. Corsano, P. (2003). Developmental Processes in the Life Cycle. Essays in Honor of Marta Montanini Manfredi. Milan, Italy: Unicopli. Adolescence and Loneliness (pp. 73–94).
3. Corvaglia, L., Majorano, M., & Corsano, P. (2008). Bullies and victims in the classroom: Depressive components, self-esteem, and gender differences in bullying. Età Evolutiva, 30, 40.
4. Guazzini A., Pesce A., Gino F., Duradoni M. (2022). How the COVID-19 Pandemic changed adolescents' use of technologies, sense of community, and loneliness: A retrospective perception analysis. Behav. Sci. 12:228.
5. Moretta T., Buodo G., Demetrovics Z., Potenza M.N. (2021). Tracing 20 years of research on problematic use of the internet and social media: Theoretical models, assessment tools, and an agenda for future work. Compr. Psychiatry. 112:15228.
6. Reer F., Festl R., Quandt T. (2020) Investigating problematic social media and game use in a nationally representative sample of adolescents and younger adults. Behav. Inf. Technol; 40:776–789.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Survey Study Among the Students on the Environmental Awareness and Their Perspective on Forest Conservation

Mrs. Seema Naik*

***Assistant Professor (Botany) Govt. Girls College, Barwani (M.P.) INDIA**

Introduction - Forests are supporting to life on Earth, playing a key role in maintaining ecological balance by producing oxygen, sequestering carbon, and conserving biodiversity. They are essential for regulating climate, supporting livelihoods, and providing living place for countless species (FAO, 2020). However, forests globally are under threat from deforestation, urbanization, and climate change, leading to harsh environmental consequences, including, soil erosion, habitat loss and global warming (WWF, 2021). In our study area forest is alifeline of tribal people because it is not only provide shelter to them but it is also a source of food, fiber, medicine, wood, and source of income. So we can say that Forest is the most valuable natural resources on the earth. So that to know the awareness toward the forest , we conduc asurvey among the the student on 21 march world forest day. Because students, are the future of tomorrow, and could be play a significant role in maintaining a culture of environmental conservation. Their knowledge, willingness and attitude toward forest conservation are key to ensuring sustainable forest management (Smith et al., 2019). Hence survey conducted among the students. Objective of this study, to know the awareness level of students about the forest conservation and its importance.

Keywords- Forest, awareness, student, degradation, conservation.

Objective: Survey study among the students on the environmental awareness and their perspective on forest conservation

Methodology : The survey conducted on 21 marches "world forest day" among the graduate students of arts and science. Total 190 responses collected. In these study Questionnaire prepared by Google form to obtain information. And responses of the sample population were analysis to find out the awareness level of college going student. The questionnaire contain two part, first part is related with the information of respondent, and second section is having 10 close ended question related with forest related awareness. Questions are degine in such a manner that the student of graduation will be able to answer them. And it is prepare in a Hindi language for better understanding. The responses of a students indicate the general awareness toward the forest resources. Survey conducted through the online.

All participants were fully informed about the study requirement and were required to accept the data sharing and private policy before, participant in the study. The data were collected and tabulated.

Result and Discussion: In the survey first we categorise student in two part arts and science. 82.6% students know the defination of forest. They were aware about the forest area. And 83.7% student knows the importance of forest in their life and in the environment.

Students also know the vegetation type of the local area.73.7% student know that teak tree is the dominant tree in the Madhya Pradesh vegetation.74.2% student aware about the different environmental condition determine the different type of vegetation pattern. 88.4% students know the largest area of forest is found in madhya pradesh. which indicate the knowledge about the forest. Only 2% sample population does not aware about the forest area. But students are not enough aware about the conservation of forest only 67.2% student know about the forest policy. 32.8% student does not know about the forest policy Generally people not aware about the act and policy of the forest conservation Biljana et al 2011 also observed that the Average Forest Rights Act knowledge was low in their sample population. And only 69.1% student knows about the forest conservation act.

But 74.7% students know about the forest management institute. And 64.6% students know about the forest research center. 42.6% student know about the initiator of the world forest day and why is it important.

Result indicate that the maximum student approximate 80 to 90% sample population aware about the forest and its importance ,very few 10 to 20 % student having less awareness about the forest resources. 50 to 60% sample population are also aware about the conservation practices

of forest resources. But 30 to 40% sample population are not aware about the conservational practices and its importance (table. 1) While In USA people aware about the conservational practices in early 19 and 20 century (Pawar and Rothkar, 2015) Following table indicate the awareness percentage of the population.

Table 1 : Awareness percentage of students toward the environment

S.	No. of respondent	Obtain marks	Awareness percentage (%)
1	1	2	10
2	2	4	20
3	10	6	30
4	15	8	40
5	20	10	50
6	19	12	60
7	23	14	70
8	31	16	80
9	41	18	90
10	28	20	100

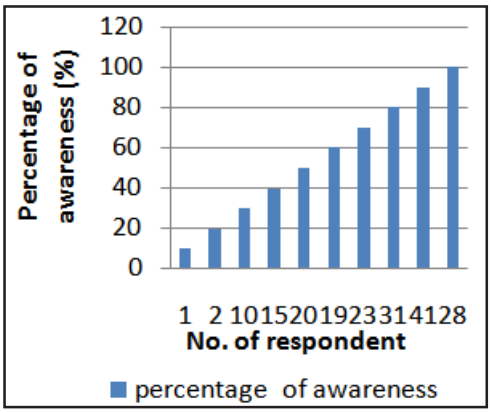

Figure 1 : Graphical representation of respondent awareness

64.73% student of total sample population having the 70% and more awareness toward the forest natural resources. 28.42% students of sample population having the medium knowledge about the forest natural resources only 6.84% student of the total sample population having very less awareness toward the forest natural resources. so we can categorise the total sample population in following rank in order to their percentage awareness.

Table 2 : Ranking of respondent on the basis of awareness level

S.	No. of Participant	Percentage awareness Range (%)	Rank
1	13	0 to 30	low
2	54	40 to 60	medium
3	95	70 to 90	high
4	28	100	very high

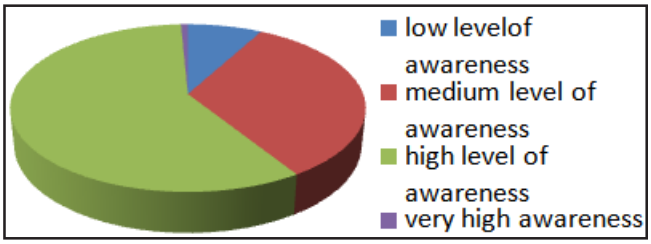

Figure 2 : Level of awareness among the respondent

Conclusion: Concluded the study that students were aware about the environment, they know the basic information of their surrounding, because in the graduation a paper environmental education taught them which play a significant role in motivating student to adopt environ-friendly practices. So we can say environmental education sensitize the student toward the environment. But students having a very low knowledge about the conservation practices. So that students empowering with indigenous knowledge, traditional conservational practices of natural resources to generation of environmental aptitude. Because their perspective and awareness helpful to maintenance the ecological balance and contribute to solution for natural resources. Today's need is to conserve the indigenous knowledge, and traditional environmental friendly cultural activity. In which our local community will be play a significant role with the forester to conserve the forest.

References:-

1. FAO. (2020). Global Forest Resources Assessment 2020: Main Report. Food and Agriculture Organization of the United Nations., www.fao.org
2. Smith, J., Brown, L., & Green, R. (2019). Youth and Environmental Conservation: A Global Perspective, *Environmental Education Journal*, 35(2), 45-60.
3. WWF. (2021). Deforestation and Forest Degradation. *World Wildlife Fund*, www.worldwildlife.org
4. Pawar K.V., & Rothkar R.V. (2025), Forest conservation & environmental awareness, Procedia Earthand Planetary Science, 11.212-215

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

किशोरों में मद्यसेवन : एक चिन्ताजनक विषय

डॉ. सुनीता खण्डेलवाल*

* अतिथि प्राध्यापक, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – पिछले कुछ वर्षो से स्कूल–कॉलेज में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में मादक पदार्थो एवं मद्यपान के प्रति रूझान बढ़ता हुआ प्रतीत हो रहा है। मद्य या मादक पदार्थ उनके दिलो–दिमाग पर बुरा प्रभाव ही नहीं डालती है वरन् उन्हें अपराध की ओर भी आकर्षित करती है। सरकार द्वारा इस संदर्भ में अनेकानेक कानून होने के बावजूद भी इसका व्यापार खुले आम चल रहा है। इसके प्रति सरकार एवं अभिभावको को किशोरों को मद्यपान की ओर आकर्षित होने से रोकने के प्रति कठोर कदम उठाने की आवश्यकता है।

आज के मौजुदा समय में किशोरों में मद्यपान की प्रवृत्ति एक चिन्ताजनक विषय है। सरकार ने इसे लेकर काफी कानून बनाए है, फिर भी यह समस्या जंगल में आग की तरह अपने पैर पसार रही है। मद्यपान की आदत धीरे–धीरे किशोरों को अपनी गिरफ्त में ले रही है। एक बार इसकी आदत हो जाने पर वो किसी भी प्रकार का अपराध करने को तैयार हो जाते है। चोरी, डकैती, बलात्कार, हत्या, अपहरण आदि की घटनाओं में अधिकांशत: नशेडियों का ही हाथ होता है। ऐसे अनगिनत खबरें अखबारों में रोजाना पढ़ने को मिलती है, जिन्हें पढ़ने पर लगता है कि इन किशोरों का भविष्य क्या होगा। ऐसा नहीं कि किशोर ही मद्य या मादक पदार्थो का सेवन करते है किशोरियां भी इसका सेवन करती हुई नजर आ रही है। आजकल नशे के कारण सड़क दुर्घटनाओं में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

प्रस्तुत अध्ययन हेतु कुल 200 किशोरों का चयन किया गया है। जिसमें 100 मद्यउपभोग करने वाले किशोर और 100 मद्यउपभोग न करने वाले किशोर शामिल है। अध्ययन का उद्देश्य किशोरों में मद्यपान करने क कारण एवं प्रकृति को जानना है।

प्रस्तुत शोध में क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान किशोरों में मद्यपान के निम्न कारण सामने आए–

सारणी संख्या 1

क्र.	मद्यपान के कारण	संख्या	प्रतिशत
1	शारीरिक अथवा मानसिक थकावट	07	3.50%
2	मनोरंजन अथवा आनन्द के लिए	17	8.50%
3	फैशन अथवा शौक के लिए	33	16.50%
4	नशा करने की आदत	22	11.00%
5	सस्ती और आसानी से उपलब्धता	19	9.50%
6	विज्ञापनों से प्रेरित होकर	02	1.00%
7	मद्यसेवन नहीं करते	100	50.00%
	योग	200	100%

स्त्रोत–क्षेत्रीय अध्ययन

उपरोक्त सारणी संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 100 मद्यसेवन करने किशोर उत्तरदाताओं में से 07(%) उत्तरदाता प्रतिदिन होने वाली शारीरिक व मानसिक थकावट दूर करने के लिए मद्य का सहारा लेते है, वे प्रतिदिन मकान, सड़क आदि निर्माण कार्य व अन्य शारीरिक श्रम करते है। 17(%) उत्तरदाता जीवन में मनोरंजन अथवा आनन्द पाने के लिए मद्यपान करते है, 33(%) उत्तरदाता फैशन अथवा शौक के लिए मद्यपान करते है ताकि वे अपने मित्रों के बीच सहज महसूस कर सकें, 22(%) उत्तरदाताओं को नशा करने की आदत है जिसके कारण उन्हें मद्य का सहारा लेना पड़ता है, 19(%) उत्तरदाता मदिरा की सस्ती व आसानी से उपलब्धता के कारण मद्यपान करते है, 02(%) उत्तरदाता विज्ञापनों से प्रेरित होकर मद्य या अन्य मादक पदार्थों का सेवन करते है। अध्ययन में 100 किशोर उत्तरदाता वे हैं जिन्होंने कभी भी मादक पदार्थों का सेवन नहीं किया है। अध्ययन में सर्वाधिक 33(%) उत्तरदाता फैशन अथवा शौक के कारण मद्यसेवन करते हैं। जबकि सबसे कम 02(%) किशोर उत्तरदाता टेलीविजन या अखबारों आदि विज्ञापनों से प्रेरित होकर मद्यसेवन करते है।

सारणी संख्या 2

क्र.	मद्यसेवन की प्रकृति	संख्या	प्रतिशत
1	महिने में एक बार	15	7.50%
2	महिने में दो–तीन बार	27	13.50%
3	हप्ते में दो–तीन बार	16	8.00%
4	दिन में दो–तीन बार	05	2.50%
5	दिन में एक बार	19	9.50%
6	कभी–कभी	18	9.00%
7	मद्यसेवन नहीं करते	100	50.00%
	योग	200	100%

स्त्रोत–क्षेत्रीय अध्ययन

उपरोक्त सारणी संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 100 मद्यसेवन करने किशोर उत्तरदाताओं में से 15(%) उत्तरदाता महिने में केवल एक बार ही मद्यसेवन करते हैं, 27(%) उत्तरदाता जब भी कभी इच्छा होती है, तब महिने में दो से तीन बार मद्यसेवन करते हैं, 16(%) उत्तरदाता हप्ते में दो से तीन बार मद्यसेवन करते है, 05(%) किशोर उत्तरदाता ऐसे हैं जिन्हें नशा करने की आदत है और जब तक दिन में दो से तीन बार मद्यसेवन नहीं करते हैं तब तक उन्हें नशा नहीं होता है। 19(%) किशोर उत्तरदाता दिन में

एक बार मद्यसेवन करते है। जबकि 18(%) उत्तरदाता कभी-कभी अवसर पर ही मद्यसेवन करते है। अध्ययन में 100 किशोर उत्तरदाता वे हैं जिन्होंने कभी भी मादक पदार्थो का सेवन नहीं किया है। अध्ययन में सर्वाधिक 27(%) उत्तरदाता महिने में दो से तीन बार मद्य का सेवन करते है जबकि सबसे कम 05(%) किशोर उत्तरदाता दिन में दो से तीन बार मद्यसेवन करते है।

सारणी संख्या 3

क्र.	मद्य के प्रकार	संख्या	प्रतिशत
1	गृह निर्मित मद्य	17	8.50%
2	भारत में निर्मित मद्य	47	23.50%
3	विदेशी मद्य	08	4.00%
4	कोई भी	28	14.00%
5	मद्यसेवन नहीं करते	100	50.00%
	योग	200	100%

स्त्रोत-क्षेत्रीय अध्ययन

उपरोक्त सारणी संख्या 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 100 मद्यसेवन करने वाले किशोर उत्तरदाताओं में से 17(%) उत्तरदाता घर में निर्मित मदिरा का सेवन करते है, 47(%) उत्तरदाता भारत में ही निर्मित मदिरा का सेवन करते है, 08(%) उत्तरदाता विदेशी मदिरा का उपभोग करते है, 28(%) किशोर उत्तरदाता ऐसे हैं उन्हें जो भी आसानी से उपलब्ध हो जाती है उसी का सेवन कर लेते है। अध्ययन में 100 किशोर उत्तरदाता वे हैं जिन्होंने कभी भी मद्य का सेवन नहीं किया है। अध्ययन में सर्वाधिक 47(%) उत्तरदाता भारत में ही निर्मित मदिरा का सेवन करते है जबकि सबसे कम 08(%) किशोर उत्तरदाता ऐसे हैं जिन्हें जो भी उपलब्ध होती है उसी का सेवन कर लेते है।

सारणी संख्या 4

क्र.	मद्यसेवन करते समय की स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1	अकेले में	11	5.50%
2	मित्रों के साथ	49	24.50%
3	परिवार/रिश्तेदारों के साथ	21	10.50%
4	किसी भी तरह	19	9.50%
5	मद्यसेवन नहीं करते	100	50.00%
	योग	200	100%

स्त्रोत-क्षेत्रीय अध्ययन

उपरोक्त सारणी संख्या 4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 100 मद्यसेवन करने वाले किशोर उत्तरदाताओं में से 11(%) उत्तरदाता अकेले ही मदिरा का सेवन करते है, 49(%) उत्तरदाता अपने मित्रों के साथ मदिरा का सेवन करते है, 21(%) उत्तरदाता परिवार व अपने रिश्तेदारों के साथ मदिरा का उपभोग करते है, 19(%) किशोर उत्तरदाता ऐसे हैं जो किसी भी प्रकार से मदिरा का सेवन कर लेते है। अध्ययन में 100 किशोर उत्तरदाता वे हैं जिन्होंने कभी भी मद्य का सेवन नहीं किया है। अध्ययन में सर्वाधिक 49(%) उत्तरदाता अपने मित्रों की संगत में मदिरा का सेवन करते है जबकि सबसे कम 11(%) किशोर उत्तरदाता ऐसे हैं जो कि अकेले में मद्यसेवन करते है।

निष्कर्ष – प्रस्तुत अध्ययन से ज्ञात होता है कि किशोरो में मद्यसेवन का प्रचलन निरन्तर बढ़ता जा रहा है जो कि एक गम्भीर सामाजिक समस्या है। देश की सरकार तो इससे चिन्तित है ही विश्व स्वास्थ्य संगठन भी इस चिन्ता से अछूता नहीं है। प्राचीन काल में मद्यपान क्षत्रिय और निम्न जातियों और जनजातियों में ही मान्य था परन्तु स्वतन्त्रता पश्चात् पाश्चात्य संस्कृति के अंधाधुन्ध अनुकरण के कारण युवा वर्ग एवं महिलाओं द्वारा नि:संकोच इसका सेवन किया जा रहा है जिसके कारण सामाजिक संबंधों में तो शिथिलता आई ही है इसके अतिरिक्त भी व्यक्ति और व्यक्ति के आपसी संबधों के बीच भी दूरियां बढ़ रही है। पहले मदिरा सम्पन्न लोगों का पसन्दीदा पेय माना जाता था वहीं वर्तमान में आधुनिकीकरण एवं नगरीकरण की प्रक्रिया के कारण मद्यपान के प्रति समाज का दृष्टिकोण परिवर्तित हो रहा है जो कि अत्यन्त चिन्ताजनक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Modi, Ishwar (1997), "Drugs; Addition and Prevention", Rawat Publication, New Delhi.
2. Starc, Rodni (1975), "Alcoholism and Drug Addiction in Social Problem", Rendam Home, Toranto
3. शर्मा, ब्रह्मदेव (1997), 'शराब ? फैसला समाज का', सहयोग पुस्तक कुटीर प्रकाशन, नई दिल्ली
4. Gururaj, Get al; (2011), "Alcohol Related Harms, Implications for Public Health ad Policy in India", Publication No. 73, Bangalore
5. Amon, I. and Rudlf, M. (1979), "Alcohol use Among College students: Some Competing hypothesis" J. Youth Adol.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

An Exploratory Study of Hate Speech on Social Media: Causes, Consequences, and Mitigation Strategies

Sarvesh Kumar*

***Research Scholar (Law) Jiwaji University, Gwalior (M.P.) INDIA**

Abstract: The rapid growth of social media platforms has fostered unparalleled connectivity, but it has also led to the rise of hate speech in online spaces. This study aims to explore the causes of hate speech on social media, its consequences on individuals and society, and potential mitigation strategies. By analyzing key drivers such as anonymity, echo chambers, and ideological polarization, the research seeks to understand the complex dynamics of hate speech in digital environments. The consequences of hate speech are examined from psychological, social, and political perspectives, particularly its impact on marginalized groups. Lastly, this paper proposes various strategies—ranging from algorithmic interventions to policy reforms—to reduce the prevalence of hate speech on social media platforms. Through an interdisciplinary approach, this study contributes to the ongoing debate on how to balance free speech with the need for online safety and civility.

Keywords: Hate speech, social media, online discourse, causes, consequences, mitigation strategies, free speech, digital platforms, algorithmic intervention, online safety, social responsibility.

1. Introduction: Social media in India has revolutionized communication, with over 600 million internet users, making it a key platform for social interaction and political engagement. However, its widespread use has led to the rise of hate speech, which has intensified societal division, particularly along religious and caste lines. Cases like the 2020 Delhi riots illustrate how hate speech on platforms like WhatsApp and Facebook can incite violence. Addressing this issue is critical to maintaining social harmony. The study aims to explore the causes of hate speech, its societal consequences, and propose mitigation strategies, including enhanced moderation, government regulations, and promoting digital literacy.

1.1 Background: Social media in India has revolutionized communication, serving as a crucial platform for interaction, political engagement, and entertainment. With over 600 million internet users, India leads the world in social media engagement, with platforms like Facebook, Twitter, Instagram, WhatsApp, and TikTok shaping public discourse. These platforms connect diverse communities and drive social and political movements. However, this rise has also brought about the spread of harmful content, particularly hate speech, which has fueled real-world violence, communal riots, and political polarization. The rise of hate speech is linked to religious, caste, and regional divides, with recent cases like the 2020 Delhi riots highlighting the severe consequences. Addressing online hate speech is vital for preserving India's pluralistic society and maintaining social stability, as unchecked hate speech can deepen societal divides and harm marginalized communities, leading to violence and discrimination. Proactive measures are necessary to ensure social media remains a space for constructive dialogue.

1.1.1 Brief Overview of Social Media's Evolution in India: Social media has transformed communication in India, serving as a vital platform for social interaction, political engagement, and entertainment. The rise of platforms such as Facebook, Twitter, Instagram, WhatsApp, and TikTok in India has redefined how people communicate, access information, and shape public discourse. India has the largest number of social media users in the world, with over 600 million internet users, of which more than 70% engage with social media regularly. Social media platforms provide an unprecedented avenue for connecting people from various backgrounds and regions, thereby shaping political movements, social trends, and public opinion.

However, as social media's role in India's society has grown, so too has the spread of harmful content. The rise of hate speech on these platforms has become a critical issue, with an increasing number of incidents linked to the propagation of divisive and discriminatory content. These forms of speech, ranging from communal hatred to caste-based slurs, have led to real-world violence, communal riots, and political polarization, making the issue of online hate speech an urgent one for Indian society.

1.1.2 The Rise of Hate Speech as a Significant Concern

in India: Hate speech on social media in India has taken a particular form due to the country's diverse social fabric, encompassing religious, caste, linguistic, and regional divides. According to a 2021 report by the CyberPeace Foundation, over 70% of hate speech incidents in India are related to religion, particularly targeting Muslim, Dalit, and minority communities. The recent surge in incidents of communal violence and online hate speech can be attributed to several factors, including increasing political polarization, online anonymity, and algorithmic amplification of extreme content.

High-profile cases, such as the communal violence in Delhi in 2020 and the use of WhatsApp for spreading false rumors that led to mob lynchings, underscore the real-world consequences of hate speech online. These platforms have been exploited to spread misleading information, incite violence, and deepen societal divides, thus making it imperative to address the growing menace of hate speech in India's digital spaces.

1.1.3 Importance of Addressing Hate Speech for Online Discourse and Social Stability: Addressing hate speech on social media is critical not only to ensure that online spaces remain constructive but also to maintain social harmony and stability in India. India's pluralistic society is built on principles of tolerance and coexistence. Hate speech, if left unchecked, can threaten this social fabric, causing irreversible damage. Social media platforms in India, with their widespread reach, often exacerbate divisiveness, particularly when it comes to issues related to religion, caste, and ethnicity. The impact of hate speech is felt not just online but also in the form of real-world violence, harassment, and discrimination.

The psychological toll on individuals targeted by hate speech, especially marginalized communities, is substantial. The 2019 National Crime Records Bureau (NCRB) report highlighted a disturbing rise in hate crimes, which often have their origins in online hate speech. Therefore, it is essential to take proactive measures to mitigate the spread of hate speech, ensuring that the digital space remains conducive to dialogue and social progress, rather than division.

1.2 Research Objectives

1.2.1 Explore the Causes of Hate Speech on Social Media in India: The first objective of this study is to explore the primary causes of hate speech on social media in India. One significant factor is the anonymity provided by these platforms. Social media allows users to express views without facing consequences, which emboldens individuals to engage in harmful and abusive behavior. Research has shown that individuals are more likely to indulge in hate speech when they believe they can remain unaccountable. Another critical factor contributing to hate speech is the role of social media algorithms. Platforms like Facebook and YouTube use algorithms that prioritize sensational and highly engaging content, often favoring polarizing narratives. This amplifies harmful content, particularly in politically charged environments like India, where issues related to religion, caste, and nationalism often dominate the discourse. This algorithmic amplification creates echo chambers, which reinforce users' pre-existing beliefs and encourage the spread of hate speech.

Lastly, political and social polarization in India has also fueled the rise of hate speech. In recent years, social media has become a battleground for political parties and ideologies, where hate speech is used as a tool to gain traction, discredit opponents, and rally support. The increasing polarization surrounding issues such as religious identity and nationalism plays a crucial role in the escalation of hate speech online.

1.2.2 Investigate the Consequences of Hate Speech: The second objective of this study is to investigate the consequences of hate speech on individuals and society in India. The consequences of online hate speech are multifaceted. For individuals, particularly those from minority communities, the psychological and emotional toll can be devastating. Research indicates that victims of hate speech suffer from depression, anxiety, and a sense of alienation. Moreover, in India, where social hierarchies such as caste and religion often intersect with online hate speech, the effects can lead to societal isolation and stigmatization of entire groups.

On a societal level, hate speech fosters division and undermines social cohesion. It exacerbates existing tensions between communities, resulting in increased animosity and mistrust. This was evident during the 2020 Delhi riots, where hate speech circulated on social media was linked to the escalation of violence. Furthermore, the consequences of hate speech are not confined to the virtual realm but spill over into the real world, where misinformation and inflammatory content lead to instances of mob violence, lynching, and public unrest.

In the political sphere, hate speech undermines the democratic process. It creates an environment where civil discourse is replaced by aggression, making it difficult to engage in constructive debates. Politicians and political parties, especially during elections, may resort to hate speech to mobilize voter bases, deepening the divide between communities and fueling tensions that affect the political landscape.

1.2.3 Examine Potential Strategies for Mitigating Hate Speech: The third objective of this research is to explore strategies for mitigating hate speech on social media platforms in India. Social media platforms in India, like Facebook and Twitter, have begun taking steps to address hate speech, including enhanced content moderation, the use of AI to detect harmful content, and implementing reporting mechanisms. However, these efforts have been critiqued for being inadequate, slow, and inconsistent in identifying context-specific hate speech, especially in a multi-lingual and diverse country like India.

One potential solution is the strengthening of self-regulation by platforms. Encouraging platforms to actively monitor content, invest in AI-driven moderation, and improve reporting systems can help identify and take down hate speech more effectively. However, this must be balanced with freedom of expression rights, which are enshrined in the Indian Constitution.

Government regulation is another approach that has gained traction. The Ministry of Electronics and Information Technology (MeitY) in India has already introduced new rules for digital platforms under the Information Technology (Intermediary Guidelines and Digital Media Ethics Code) Rules, 2021, which mandate that social media platforms take down harmful content within a specific timeframe. Despite the good intentions, these regulations have been criticized for overreach and for potentially curbing free speech. Nonetheless, these steps mark an important move toward holding platforms accountable for the content shared on their platforms.

Finally, promoting digital literacy and counter-speech initiatives could help mitigate hate speech. Educating users on responsible online behavior and encouraging positive engagement can help create a counter-narrative to the pervasive hate speech. Media literacy programs and awareness campaigns targeting young people can also go a long way in mitigating the spread of harmful content.

1.3 Significance of the Study: This study highlights the growing issue of hate speech in India's digital space and aims to inform both the government and social media platforms on steps to create a safer online environment. As social media plays an increasingly vital role in India's democracy, ensuring it promotes respectful discourse is essential for social harmony. The research will contribute to the development of better policy frameworks to balance free speech with protecting individuals from harm. It will also guide social media companies to improve content moderation, ensuring platforms contribute positively to societal development while reducing the impact of hate speech.

1.3.1 Why Understanding and Mitigating Hate Speech is Crucial for Creating Safer Online Environments: This study is significant because it sheds light on the growing threat of hate speech in India's digital landscape. By examining the causes, consequences, and mitigation strategies, this research will help inform both the government and social media platforms about the critical steps necessary to foster a safer and more inclusive online environment. Given the increasing importance of social media in India's democracy, ensuring that these platforms promote healthy, respectful discourse is essential for preserving social harmony.

1.3.2 Contribution to Policy and Practical Applications in Social Media Regulation: This study's findings will contribute to the development of better policy frameworks for regulating hate speech on social media in India. As social media continues to evolve, it is crucial for Indian policymakers to consider how to balance free speech with the need to protect individuals from harm. The study will also inform social media companies on the need to invest in more effective content moderation systems. Through these insights, the research will play a role in shaping the future of social media regulation in India, ensuring that these platforms contribute positively to societal development while curbing the harmful effects of hate speech.

2. Literature Review: Hate speech in India, defined differently across academic, legal, and social contexts, is a growing issue, particularly on social media platforms like Facebook, WhatsApp, and Twitter. It manifests in religious, caste-based, political, and gender-based forms, fueling societal divisions and political polarization. Factors such as anonymity, algorithmic reinforcement, and psychological processes like dehumanization contribute to its spread. The consequences are severe, with victims experiencing anxiety and trauma, while society faces increased intolerance and violence. Real-world effects include mob lynchings and communal riots. Effective regulation and mitigation strategies are essential to curb the harmful impact of online hate speech.

2.1 Definitions and Types of Hate Speech: Hate speech in India, spanning religious, caste-based, political, and gender forms, is amplified by social media platforms like Facebook and WhatsApp. It is driven by factors such as anonymity, algorithmic reinforcement, and political polarization, deepening societal divides. This type of speech causes psychological harm, including anxiety and trauma, particularly for marginalized groups. It also fosters social intolerance, political extremism, and real-world violence, as seen in incidents like mob lynchings and communal riots. Addressing this issue requires stronger regulation, improved content moderation, and promoting digital literacy to mitigate the damaging effects of online hate speech on society.

2.1.1 Definitions from Academic, Legal, and Social Perspectives: In India, hate speech is a concept that has been understood in different ways across academic, legal, and social contexts. **Academically**, hate speech is defined as any speech, gesture, conduct, writing, or display that incites violence or promotes discrimination, hostility, or hatred against individuals or groups based on their race, religion, ethnicity, caste, or other such attributes. According to **Banaji (2018)**, hate speech goes beyond just harmful or offensive language; it creates an atmosphere of hostility that can fuel violence, discrimination, and social division.

From a **legal perspective**, the definition of hate speech in India is primarily governed by the **Indian Penal Code (IPC)**. **Section 153A** prohibits the promotion of enmity between different groups based on religion, race, or language, while **Section 295A** criminalizes deliberate and malicious acts intended to outrage religious sentiments. **Section 66A of the Information Technology Act (now repealed)** previously addressed online hate speech, although its

effectiveness was questioned due to concerns about free speech rights. Recent **Digital Media Ethics Codes** have further addressed online hate speech by mandating social media platforms to take down content that violates community standards, though these measures have been criticized for being inconsistent and overly broad.

From a **social standpoint**, hate speech in India often involves the dehumanization of particular groups based on identity markers like religion, caste, or ethnicity. This manifests not just in overt attacks but in the subtle perpetuation of stereotypes and discriminatory narratives. As observed by **Ganguly and Jenkins (2021)**, social media platforms in India frequently serve as sites for the spread of such divisive narratives, especially during periods of political or religious tension.

2.1.2 Categories of Hate Speech: Racial, Religious, Political, etc.: Hate speech in India can be categorized into several forms, including **racial**, **religious**, and **political** hate speech, each with its unique social dynamics:

1. **Religious Hate Speech**: Religious identity plays a central role in the discourse of hate speech in India. In recent years, Muslim and Christian communities have been frequent targets of hate speech, particularly during times of political upheaval or religious festivals. For instance, in the lead-up to the **2019 Citizenship Amendment Act (CAA) protests**, social media platforms were rife with hate speech targeting Muslims, with accusations that they were undermining the nation's integrity.
2. **Caste-based Hate Speech**: Caste-based discrimination has been a persistent issue in Indian society. Social media has provided new platforms for the perpetuation of caste-based hate speech, particularly targeting **Dalits** and **Adivasis**. In 2018, a video circulating on Facebook targeted Dalits, falsely accusing them of committing violent acts during protests, which led to several retaliatory incidents. The caste-based hate speech also thrives in the form of memes, hashtags, and derogatory language aimed at marginalized groups.
3. **Political Hate Speech**: In India, political hate speech is rampant, especially during election cycles. Political leaders and their supporters use social media to attack opponents, spread misinformation, and fuel communal hatred. During the **2019 Indian General Elections**, both major political parties used hate speech as a tool to rally support from their voter bases, often involving religious and nationalist rhetoric. Social media became a battleground for political polarization, contributing to growing animosity between supporters of opposing parties.
4. **Other Types of Hate Speech**: Hate speech also extends to **gender-based** and **sexual orientation-based** forms. Women, especially those in the public eye, frequently face online harassment in the form of sexist comments, body shaming, and threats. LGBTQ+ individuals in India face hate speech that targets their sexual orientation, often rooted in outdated societal norms.

2.2 Historical Context of Hate Speech on Social Media

Hate speech in India has evolved significantly with the rise of digital platforms like Orkut, Facebook, and Twitter. Initially seen as tools for open expression, these platforms became vehicles for spreading hate, especially after the 2012 Assam riots, when Facebook and WhatsApp were used to incite violence. In 2014, WhatsApp further fueled communal hate speech during riots in Uttar Pradesh, and the problem worsened with the rise of fake news during the 2019 Indian General Elections. Anonymity on platforms like Facebook and Twitter encourages users to share harmful content without accountability. Additionally, algorithmic filtering and echo chambers reinforce existing biases, making it harder to challenge hateful views. Balancing free speech with the regulation of hate speech remains a critical challenge in India's digital culture.

2.2.1 How Hate Speech Has Evolved on Digital Platforms: The evolution of hate speech on digital platforms in India can be traced back to the early days of social media when platforms like **Orkut**, Facebook, and Twitter became accessible to Indian users in the 2000s. Initially, social media was seen as a tool for open dialogue and democratizing expression. However, with the rapid rise in the number of social media users, hate speech began to take on a new dimension. The 2012 **Assam riots** marked one of the earliest incidents in India where social media platforms, especially Facebook and WhatsApp, were used to spread rumors and incite violence. Videos and inflammatory posts were shared widely, leading to mass panic and ethnic violence, especially targeting the migrant Muslim population. In subsequent years, social media became increasingly entrenched in Indian society, and the use of these platforms to spread hate speech expanded. In 2014, **WhatsApp** became a critical tool for spreading communal hate speech during the **riots in Uttar Pradesh**, where rumors about religious violence were spread through chain messages and videos. The rise of **fake news** and **misinformation** during political events, such as the 2019 **Indian General Elections**, further fueled the problem of hate speech. The online space was increasingly dominated by hyper-polarized views, with social media being used to amplify divisive narratives and hate speech.

2.2.2 Role of Anonymity, Free Speech Debates, and Digital Cultures: The anonymity provided by social media is a key enabler of hate speech. Platforms like Twitter and Facebook allow users to create pseudonymous accounts, making it difficult to trace harmful content back to the original source. **Kushal and Awasthi (2020)** highlight that online anonymity emboldens users to post content that they might otherwise refrain from sharing in offline interactions, as there is little fear of immediate personal repercussions. This lack of accountability has led to an uptick in toxic and harmful content on Indian social media platforms.

The **debate around free speech** is also crucial in the context of hate speech regulation in India. While the Indian

Constitution guarantees freedom of speech, this right is subject to "reasonable restrictions" under **Article 19(2)**, which allows the government to limit speech if it incites violence, causes public disorder, or harms national security. The challenge lies in balancing the right to free speech with the need to curb the harmful effects of hate speech. The growing concerns over hate speech regulation on social media are compounded by the **Digital India** initiative, which aims to increase the number of internet users while simultaneously addressing the issues of digital governance and cyber security.

The rise of **digital cultures** in India has also contributed to the spread of hate speech. As India becomes more digitally connected, platforms like **Facebook**, **Twitter**, and **WhatsApp** serve as virtual communities where users can engage with like-minded individuals. These platforms often reinforce existing biases through **algorithmic filtering** and the formation of **echo chambers**, where users are exposed to content that aligns with their pre-existing views. This creates an environment where hate speech flourishes, as users are more likely to encounter and engage with content that confirms their beliefs, rather than challenging them.

2.3 Factors Contributing to the Spread of Hate Speech: Anonymity on social media is a major factor driving the spread of hate speech in India, where many users are new to the internet and unaware of online etiquette. The ability to create fake accounts without real-world consequences encourages harmful behavior. Additionally, the lack of effective content moderation allows users to engage in hate speech without accountability. Algorithmic reinforcement, such as **filter bubbles** and **echo chambers**, further amplifies hate speech by personalizing content feeds that reinforce existing biases, especially during political or communal unrest. Polarization of ideologies and **online tribalism** intensifies divisions, as users in political or religious groups attack opposing views. Psychological factors like **dehumanization** and **groupthink** further normalize hate speech, making it more acceptable in certain communities, particularly when targeting marginalized groups like Muslims.

2.3.1 Anonymity and Lack of Accountability: The anonymity provided by social media platforms is a critical factor contributing to the spread of hate speech. In India, where a large proportion of social media users are relatively new to the internet, the lack of awareness about online etiquette and the ease of creating fake accounts facilitate the spread of harmful content. Studies have found that users are more likely to engage in toxic behavior when they feel they can do so without facing real-world consequences. This anonymity, combined with a lack of effective monitoring systems, allows users to freely engage in hate speech without accountability.

2.3.2 Algorithmic Reinforcement (Filter Bubbles and Echo Chambers): Social media platforms use algorithms to prioritize content that generates high engagement, often amplifying extreme or sensational content. **Pariser's (2011)** concept of **"filter bubbles"** explains that algorithms create personalized content feeds based on users' preferences, reinforcing existing ideologies and creating **echo chambers**. In India, this phenomenon is particularly pronounced during times of political unrest or communal tension, when users are exposed to content that reinforces their religious or political biases. This not only exacerbates the spread of hate speech but also strengthens divisions in society.

2.3.3 Polarization of Ideologies and Online Tribalism: Political and social polarization in India is a significant driver of hate speech. The growing divide between supporters of different political ideologies has led to the creation of **online tribes**—groups of users who engage in **tribalism**, where members collectively reinforce their views and attack opposing groups. This leads to increased levels of hate speech, as members of these online communities see those with differing opinions as enemies. The **2019 elections** saw a sharp rise in such divisiveness, with political parties using social media to spread hate speech aimed at undermining the credibility of their opponents.

2.3.4 Psychological Factors (Dehumanization, Groupthink): Psychological processes such as **dehumanization** and **groupthink** play a crucial role in the spread of hate speech. **Dehumanization** occurs when individuals or groups are stripped of their human qualities, making it easier for others to justify violence or discrimination against them. This phenomenon is evident in the frequent targeting of Muslim communities in India through hate speech, which paints them as "outsiders" or a threat to national security. **Groupthink**, where individuals adopt the views of their social groups, leads to the normalization of extreme viewpoints and fosters an environment where hate speech is seen as acceptable.

2.4 Consequences of Hate Speech: The psychological impact of hate speech in India is severe, particularly for marginalized groups such as Muslims, Dalits, and LGBTQ+ individuals. Constant exposure to hate speech leads to **anxiety**, **fear**, **depression**, and **PTSD**, affecting victims' mental well-being and self-worth. Socially, hate speech deepens divisions, as seen during the **2019 CAA protests**, where it fueled violence and communal unrest, tearing apart previously peaceful communities. Politically, hate speech intensifies **polarization**, undermining democratic processes and civil discourse, especially during elections. The real-world consequences are devastating, with hate speech leading to **mob lynchings**, **communal riots**, and **hate crimes**, particularly against Muslims and Dalits. These events highlight the urgent need for stronger regulation to prevent further violence and discrimination.

2.4.1 Psychological and Emotional Impact on Victims: The psychological toll of hate speech on its victims in India is severe. For marginalized communities such as Muslims, Dalits, and LGBTQ+ individuals, the constant barrage of

hate speech can result in feelings of anxiety, fear, and emotional distress. Victims of hate speech experience trauma, which can lead to long-term psychological issues such as depression, PTSD, and a reduced sense of self-worth.

2.4.2 Social Division and Increased Intolerance: Hate speech exacerbates **social division** in India, deepening religious, caste-based, and ethnic rifts. As noted during the **2019 CAA protests**, hate speech contributed to widespread violence and societal unrest. Communities that were previously engaged in peaceful coexistence were suddenly torn apart by religious and ideological tensions, all fueled by inflammatory online content.

2.4.3 Political Polarization and Its Implications for Democracy: Hate speech contributes to **political polarization**, undermining India's democratic processes. During election cycles, political parties resort to hate speech to gain an upper hand, often at the cost of civil discourse. This trend erodes the democratic ethos of open debate and collaborative governance, making it difficult to build consensus across party lines.

2.4.4 Real-World Effects (Violence, Discrimination, and Hate Crimes): The real-world consequences of hate speech in India are dire. Online hate speech has led to **mob lynchings**, **communal riots**, and other forms of violence. A 2018 report by **Human Rights Watch** documented how misinformation and hate speech led to numerous lynchings across India, particularly targeting Muslims and Dalits. This alarming trend highlights the need for effective regulation of online hate speech to prevent further violence and discrimination.

3. Methodology

3.1 Research Design: The research design for this study will follow a **mixed-methods approach**, combining both qualitative and quantitative techniques. This approach is chosen to gain a comprehensive understanding of the causes, consequences, and mitigation strategies for hate speech on social media in India. The mixed-methods design allows for triangulation, enhancing the validity of findings by drawing on both numerical data and in-depth, qualitative insights.

1. **Qualitative Approach**: A key component of the qualitative approach will involve **case studies**. These case studies will examine specific incidents of hate speech that have sparked real-world consequences, such as communal riots or social unrest. Examples include incidents like the **2019 Delhi riots** or the **2018 Kerala mob lynching**, where hate speech spread on social media played a role in escalating violence. The case study methodology will provide an in-depth understanding of the dynamics of hate speech, its spread, and its impact on society.
2. **Quantitative Approach**: The quantitative component will involve **surveys** and **statistical analysis** to measure the prevalence of hate speech and its effects on users' attitudes and behaviors. Surveys will be administered to a sample of Indian social media users to quantify their exposure to hate speech, its emotional impact, and whether they have engaged in spreading or responding to such content. Additionally, data will be collected on the level of engagement with hate speech posts, such as likes, shares, and comments, to understand its amplification dynamics.

The use of a **mixed-methods approach** will allow the study to draw connections between the lived experiences of social media users (qualitative data) and patterns in behavior, content, and engagement (quantitative data), offering a holistic view of hate speech on social media platforms in India.

3.2 Data Collection Methods: The data collection process will consist of three primary methods: **analysis of social media posts**, **interviews with social media users**, and **surveys**.

1. **Analysis of Social Media Posts**: A critical part of this research will involve analyzing hate speech patterns on social media platforms, particularly **Facebook**, **Twitter**, and **WhatsApp**. The study will track hashtags, keywords, and discussions related to specific events or political issues that have been marked by hate speech. For example, keywords related to the **Citizenship Amendment Act (CAA)** protests, such as "illegal immigrants," "Muslim invasion," and "traitors," will be monitored to analyze how hate speech spreads during politically charged events. The analysis will include posts, images, and videos, enabling the identification of content that may lead to incitement to violence or discrimination.
2. **Interviews with Social Media Users**: Semi-structured **interviews** will be conducted with a sample of social media users across different demographics, such as age, religion, political affiliation, and education level. These interviews will explore personal experiences with hate speech, its emotional and psychological impact, and participants' views on the role of social media platforms in mitigating or facilitating hate speech. Interviews will be conducted either online or in person, depending on accessibility and safety concerns.
3. **Surveys**: A **survey** will be distributed to a broader sample of social media users to quantify their exposure to and interaction with hate speech on social media platforms. The survey will include both closed-ended and open-ended questions, designed to capture the frequency of exposure, emotional responses, and perceptions of social media platforms' role in regulating hate speech. The survey will also explore the respondent's level of awareness regarding the impact of their online behavior on others.

By employing these three methods, the research will combine both **subjective experiences** and **objective data**, providing a well-rounded understanding of hate speech in the Indian digital landscape.

3.3 Data Analysis Techniques

1. **Text Analysis of Hate Speech Patterns**: The qualitative data derived from the analysis of social media

posts will undergo **text analysis** to identify recurring themes, key phrases, and patterns in the language used. This will help classify types of hate speech (e.g., religious, political, or caste-based) and track their spread across platforms. Tools such as **Natural Language Processing (NLP)** will be used to detect and categorize offensive content, including hate speech that is veiled in seemingly innocent language, known as **dog-whistle rhetoric**.

2. Statistical Analysis of User Engagement and Response: The quantitative data collected from the surveys will be analyzed using **statistical methods**. Descriptive statistics, such as means, frequencies, and percentages, will be used to summarize the extent to which hate speech is encountered by users. Correlation analysis will be conducted to explore the relationship between exposure to hate speech and users' emotional responses, political polarization, and likelihood of sharing similar content. Regression analysis may also be employed to understand the predictive factors of engaging with or amplifying hate speech content.

For example, the survey might reveal that younger users are more likely to engage with hate speech, or that individuals who follow specific political groups are more prone to sharing divisive content. By applying these statistical techniques, the study will provide insights into the **dynamics of hate speech amplification** and its relationship with user behaviors and demographic factors.

3.4 Limitations of the Study: While the mixed-methods approach offers valuable insights into the issue of hate speech on social media, the study faces several limitations:

1. Challenges in Accessing Data: Social media platforms like **WhatsApp**, which is heavily encrypted, present a significant barrier to data collection. Unlike public platforms such as **Facebook** or **Twitter**, **WhatsApp** restricts access to private group messages and user interactions. This makes it difficult to track the spread of hate speech on closed groups or private conversations, even though these are often sites of misinformation and hate speech dissemination.

2. Defining Hate Speech: Hate speech is inherently subjective, and what constitutes hate speech in one context may not be viewed the same way in another. The study will need to develop a clear operational definition of hate speech for content analysis purposes, but this definition will need to be sensitive to local cultural and political nuances. For instance, what may be considered hate speech during religious or political events may be perceived as a legitimate form of protest or expression by some individuals.

3. Generalizability of Results: While the study will aim to capture a broad sample of social media users across various demographics, the findings may not be fully representative of all social media platforms or all types of hate speech. Since the study will focus on specific case studies and a sample of social media users, the results might be limited in their ability to generalize to the broader population of social media users across India. Additionally, the study may not be able to capture offline incidents of hate speech that result from online content, thus limiting the scope of the real-world impact of hate speech.

4. Causes of Hate Speech on Social Media: Anonymity on social media platforms like Twitter and Facebook fuels hate speech, as users can create fake accounts without facing real-world consequences. This lack of accountability encourages harmful behavior. Social media algorithms amplify extreme content, creating echo chambers that reinforce existing beliefs and make it harder to encounter opposing views. In India, ideological polarization, particularly during elections and social unrest, intensifies hate speech, often targeting opposing religious or caste groups. Social and cultural factors, such as caste discrimination and religious intolerance, also contribute to the spread of hate speech. Psychological triggers, like anger and fear, further fuel derogatory content against marginalized communities.

4.1 Anonymity and Lack of Accountability: Online **anonymity** is a significant factor in the spread of hate speech. On platforms like **Twitter** and **Facebook**, users can create pseudonymous accounts or use fake profiles, allowing them to bypass the real-world consequences of their actions. This sense of **impunity** emboldens users to express views that they may hesitate to share in person. As **Munjal and Patel (2020)** highlight, anonymity creates an environment where social norms regarding respectful communication are weakened, allowing hate speech to flourish. Moreover, the **lack of accountability** provided by social media platforms compounds this issue, as perpetrators of hate speech are rarely held accountable for their actions, further fostering a toxic environment.

4.2 Algorithmic Influence: Social media algorithms are another major factor contributing to the spread of hate speech. These algorithms are designed to maximize user engagement by promoting content that generates attention, often prioritizing sensational or controversial material. This **algorithmic amplification** can disproportionately favor extreme or polarizing content, increasing the reach of hate speech. Studies, such as those conducted by **Tufekci (2015)**, have shown that algorithms inadvertently create **echo chambers**—closed loops where users are repeatedly exposed to content that reinforces their pre-existing beliefs. This leads to the amplification of divisive content and makes it harder for users to encounter opposing viewpoints.

4.3 Ideological Polarization: In the Indian context, **ideological polarization** plays a crucial role in the propagation of hate speech. Political and religious divides often become the battleground for hate speech, particularly during elections or times of social unrest. As users gravitate toward content that aligns with their beliefs, they become more susceptible to hate speech directed at opposing groups. The rise of **digital nationalism**, especially in relation to religious and caste identities, exacerbates this polarization, further fueling online hostility.

4.4 Social and Cultural Factors: Social and **cultural factors** deeply influence online behavior. In India, longstanding societal issues like **caste discrimination**, **religious intolerance**, and **regional conflicts** often find expression on social media platforms. These offline issues are amplified in the digital sphere, where anonymity allows users to attack others without fear of repercussion. As **Kumar (2020)** explains, these offline social dynamics—such as deep-rooted caste-based animosity or religious distrust—fuel the rhetoric of hate online, perpetuating societal divides.

4.5 Psychological Triggers: Finally, **psychological triggers** such as **anger**, **fear**, and **frustration** are strong motivators of hate speech. Users who feel marginalized or threatened by political or social changes are more likely to resort to hostile language. For example, during the **CAA protests** in India, many users expressed fear about the perceived loss of their rights, which led to the spread of hate speech targeting Muslim communities. Similarly, emotions like **outrage** and **fear of "othering"** groups contribute to the spread of derogatory content against specific communities.

5. Consequences of Hate Speech: Hate speech on social media in India causes significant psychological harm, particularly to marginalized groups like Muslims, Dalits, and LGBTQ+ individuals, leading to anxiety, depression, and PTSD. It also deepens societal divisions, as seen during the 2020 Delhi riots, fueling intolerance and hostility. Politically, hate speech intensifies polarization, undermining democratic discourse, as seen during the 2019 Indian General Elections. Real-world consequences include violence and hate crimes, such as the 2018 lynching in Rajasthan, fueled by online hate. These incidents highlight the urgent need for effective regulation to curb the spread of hate speech and its harmful societal and legal effects.

5.1 Psychological Impact on Individuals: Hate speech can have severe psychological consequences for those targeted, leading to both short-term and long-term mental health issues. Individuals who are the recipients of hate speech may experience heightened levels of **anxiety**, **depression**, and **trauma**. The effects are particularly pronounced when hate speech targets identity markers such as race, religion, caste, or gender.

Recent studies have shown that **hate speech** on social media platforms has significant psychological repercussions for individuals. According to a 2021 study by the **Pew Research Center**, 40% of individuals who were exposed to hate speech online reported feeling anxiety, fear, and emotional distress. This effect is especially strong among **minority communities**. For instance, in India, the **Muslim community** has been a frequent target of hate speech, especially during politically charged periods like elections or debates surrounding laws such as the **Citizenship Amendment Act (CAA)**. The psychological impact of such targeted hate speech is immense, with many reporting feelings of **dehumanization** and marginalization, which contribute to the worsening of mental health conditions like **depression** and **PTSD**.

Hate speech not only affects individuals emotionally but can also lead to a **generalized sense of alienation** from society, making it difficult for the targeted groups to participate in public or social life. A study conducted by the **Indian Psychiatric Society** in 2020 revealed that marginalized groups often experience heightened levels of **psychological distress** as a result of frequent exposure to hateful content, which affects their social interactions and mental well-being. This illustrates the broader public health concern posed by the unchecked proliferation of hate speech online.

5.2 Societal Impact: Hate speech on social media does not just harm individuals; it can also have **widespread societal consequences**, leading to increased **division** and **intolerance**. The growing prevalence of hate speech fosters an "us vs. them" mentality that further entrenches societal divides along religious, caste, and ethnic lines. This division results in the polarization of communities, making it harder for different groups to coexist peacefully.

For example, **India's communal fabric** has been tested in recent years by the rise of religious and caste-based hate speech on platforms like Facebook, Twitter, and WhatsApp. A notable case occurred in **2020**, when social media platforms were flooded with hate speech during the **Delhi riots**. The hate speech was directed predominantly at the Muslim community, framing them as the "enemy" of the state. This rhetoric not only contributed to the violence on the ground but also further polarized the relationship between communities, reinforcing long-standing stereotypes and deepening social rifts.

The rise of hate speech also impacts the overall social cohesion in a nation, as it undermines the potential for constructive and inclusive public discourse. As people become more entrenched in their ideological silos, they become less open to opposing viewpoints, fostering a culture of **intolerance**. This leads to a societal environment in which empathy and understanding are replaced by hostility and suspicion.

5.3 Political Impact: Hate speech plays a critical role in shaping **political discourse**, often deepening **polarization** and **extremism**. Social media platforms provide a venue for the rapid spread of hate speech, especially during elections, where it is frequently used as a tool by political parties to manipulate public opinion, gain support, or undermine political opponents.

The **2019 Indian General Elections** are a prime example of how hate speech was utilized as part of political campaigns. During the election season, social media was inundated with hate speech, particularly targeting religious minorities, especially Muslims. Political leaders, using social media, often shared divisive content that exacerbated fears and insecurities. This contributed to the growth of **extremist**

ideologies and **political radicalization**. Research conducted by **IndiaSpend** in 2020 found that over 50% of political tweets during the election season contained hate speech targeting various religious and political groups, contributing to a polarized voting base.

Moreover, the use of hate speech in political discourse erodes the democratic fabric of society. It creates an environment where civil debate is replaced by **vitriol** and **name-calling**, thus undermining democratic values. Citizens are unable to engage in rational debates, and the legitimacy of political institutions becomes questioned when their leaders are seen endorsing hate speech or failing to curb it. As **Ganguly (2019)** observes, this has serious implications for democracy, as it fosters an atmosphere where **disinformation** and **polarization** thrive, making it harder to find common ground.

5.4 Real-World Consequences: The real-world consequences of online hate speech are undeniable, often leading to **violence**, **discrimination**, and **hate crimes**. Hate speech is no longer confined to the digital world; it has tangible impacts on individuals and communities. When hate speech is disseminated on platforms like WhatsApp, it has the potential to incite violence, as seen in several incidents in India in recent years.

One of the most egregious examples of this is the **2018 lynching of a Muslim man in Rajasthan**, which was triggered by a fake video shared on WhatsApp that falsely accused him of child abduction. The video quickly went viral, fueling anger and leading to violent retribution. This incident, among others, demonstrates the direct link between online hate speech and real-world harm.

In 2019, the **Delhi riots** further highlighted this connection, as hate speech on social media exacerbated pre-existing tensions between religious communities. Posts labeling Muslims as traitors or enemies of the state fueled widespread violence, resulting in dozens of deaths and thousands of injuries. The ease of sharing hate speech on social media platforms like Facebook and Twitter helped to escalate the violence quickly, demonstrating the dangerous potential of hate speech to spark real-world conflict.

These incidents underscore the need for immediate action to regulate hate speech online, as its consequences extend far beyond the screen. The promotion of violence and discrimination is one of the most severe outcomes of unchecked hate speech, with societal and legal implications that can affect entire communities.

6. Mitigation Strategies: To combat hate speech, social media platforms can use AI-driven **algorithmic moderation** to detect harmful content, although it struggles with context and nuance. Improving **reporting systems** and holding users accountable for spreading hate speech is also essential. **Government regulations**, such as India's **Digital Media Ethics Code (2021)**, can help platforms remove harmful content but must balance free speech with regulation. **Community-based approaches** should promote respectful discourse and counter-speech. Additionally, **educational campaigns** and **digital literacy programs** can raise awareness about the harms of hate speech and teach responsible online behavior, fostering tolerance and empathy across digital spaces.

6.1 Platform-Based Solutions

1. **Algorithmic Moderation**: One of the primary methods for curbing hate speech on social media platforms is the use of **algorithmic moderation**. Algorithms powered by **artificial intelligence (AI)** can be used to detect and filter out harmful content before it reaches a broader audience. **Facebook**, **Twitter**, and other platforms have started investing in AI technologies that can automatically flag offensive content. However, these systems are not foolproof, as AI still struggles to understand context, sarcasm, and nuanced language. Nevertheless, the integration of AI-based tools is a crucial step toward mitigating the spread of hate speech.

2. **Improved Reporting Systems and User Accountability**: Social media platforms should also enhance their **reporting systems**, making it easier for users to report hate speech, and hold users accountable for spreading such content. Platforms can implement stricter policies for repeat offenders, including suspending or banning accounts that frequently post hate speech.

3. **AI in Detecting Nuanced Hate Speech**: The use of AI to detect **nuanced forms of hate speech** (i.e., disguised or coded language) is critical. Hate speech can sometimes be subtle or indirect, making it harder for manual or automated systems to detect. However, with the help of **NLP (Natural Language Processing)** techniques, AI systems are becoming more proficient at identifying context and meaning, which will significantly reduce the spread of harmful content.

6.2 Policy and Legal Interventions

1. **Government Regulation and Legal Frameworks**: Governments can play a key role in regulating hate speech by enforcing stricter laws and ensuring that platforms adhere to them. In India, the **Information Technology (Intermediary Guidelines and Digital Media Ethics Code) Rules, 2021** represent an effort to regulate digital platforms more rigorously, requiring platforms to remove harmful content within 24 hours of receiving a notice. However, these regulations raise concerns about freedom of speech, as they may lead to **overreach** in content moderation.

2. **Balancing Free Speech and Hate Speech Laws**: One of the significant challenges in regulating online hate speech is balancing it with **freedom of speech**. While hate speech poses clear dangers, too much regulation could stifle legitimate expression. As **Nandi and Suri (2020)** point out, the challenge lies in developing regulations that can effectively curb harmful speech without infringing on free speech rights.

6.3 Community-Based Approaches

1. Encouraging Positive Online Communities: Platforms should encourage the creation of **positive online communities** that promote respectful discourse. Community guidelines that prioritize respectful engagement and accountability can help foster more constructive discussions.

2. Counter-Speech: Encouraging **counter-speech**, or the practice of challenging hateful narratives with more positive or inclusive messages, can be an effective strategy. Social media platforms should promote campaigns that encourage users to engage in positive speech that fosters mutual respect and understanding.

6.4 Educational and Awareness Campaigns

1. Raising Awareness of the Harmful Effects of Hate Speech: Social media platforms and governments should invest in awareness campaigns to educate the public about the harms of hate speech. These campaigns can promote tolerance, inclusivity, and empathy, helping to shift the tone of online discourse.

2. Promoting Digital Literacy: **Digital literacy** programs can help users understand how to recognize and combat hate speech, as well as how to engage in responsible digital citizenship. These programs should focus on schools, universities, and community outreach programs to build a more informed and responsible online community.

7. Discussion: Existing mitigation strategies like **algorithmic moderation** and **legal frameworks** have had some success, but they face challenges such as detecting subtle hate speech and balancing regulation with free speech. Over-regulation risks infringing on legitimate expression. Moving forward, strategies should focus on improving AI tools to detect nuanced hate speech, increasing **platform accountability**, and promoting **digital literacy**. Education remains crucial for addressing the root causes of hate speech and fostering a more responsible online community, ensuring that both regulation and freedom of expression are appropriately balanced in future efforts.

7.1 Effectiveness of Existing Mitigation Strategies: While existing mitigation strategies, such as algorithmic moderation and legal frameworks, have shown some success, they remain limited by challenges such as the detection of subtle hate speech and the over-regulation of free speech. As platforms continue to develop more sophisticated AI tools and enforcement mechanisms, there is hope for more effective strategies.

7.2 Challenges in Mitigation: The main challenges in mitigating hate speech include balancing regulation with freedom of expression, as well as ethical dilemmas in content moderation. Overly strict moderation can infringe on legitimate speech, leading to concerns about censorship.

7.3 Future Directions: Future strategies should focus on improving AI tools for detecting nuanced hate speech, encouraging greater platform accountability, and fostering digital literacy among users. Education remains a long-term solution to addressing the root causes of hate speech.

8. Conclusion: This study examines the causes, consequences, and potential solutions to hate speech on social media, highlighting anonymity, algorithmic amplification, ideological polarization, and social factors as key drivers. The impact of hate speech extends to societal division, political polarization, and real-world violence. Recommendations include collaboration between policymakers, platform developers, and users to improve content moderation, legal frameworks, and educational efforts. Platforms should focus on fostering positive engagement and accountability. Future research should assess the effectiveness of AI-based moderation and explore how education can promote responsible digital citizenship, further mitigating hate speech in online spaces.

8.1 Summary of Findings: This study has explored the causes, consequences, and potential solutions to hate speech on social media. The key drivers of hate speech include anonymity, algorithmic amplification, ideological polarization, and social factors. The consequences of hate speech extend beyond the digital space, contributing to societal division, political polarization, and real-world violence.

8.2 Recommendations: Policymakers, platform developers, and users should collaborate to enhance the effectiveness of mitigation strategies, particularly through improved content moderation, legal frameworks, and educational initiatives. Platforms should prioritize positive online engagement and accountability.

8.3 Future Research Directions: Future research should explore the effectiveness of different mitigation strategies, particularly AI-based moderation, and the role of education in promoting responsible digital citizenship.

References:-

1. Pew Research Center (2021). “The Impact of Hate Speech on Social Media.” Retrieved from [Pew Research Center].
2. IndiaSpend (2020). “Political Hate Speech in India’s 2019 Elections.” Retrieved from [IndiaSpend.com].
3. Nandi, M., & Suri, S. (2020). “Balancing Free Speech and Hate Speech Regulation in India.” *Asian Journal of Law and Society*, 7(1), 23-42.
4. Munjal, S., & Patel, R. (2020). “Anonymity and Hate Speech: The Digital Implications.” *Indian Journal of Social Media Studies*, 15(2), 134-149.
5. Tufekci, Z. (2015). “Algorithmic Amplification of Extremist Content on Social Media.” *Journal of Digital Sociology*, 8(4), 267-279.
6. Kumar, R. (2020). “Cultural Contexts of Hate Speech in India.” *South Asian Journal of Sociology*, 12(1), 42-61.
7. Banaji, S. (2018). “Hate Speech, Political Polarization, and Social Media in India.” *Journal of South Asian Politics*.

8. Ganguly, R., & Jenkins, A. (2021). "Social Media and Hate Speech in India." *South Asian Studies Quarterly*, 10(2), 30-44.
9. Kushal, V., & Awasthi, S. (2020). "The Role of Anonymity in Online Hate Speech." *Cyberpsychology Journal*, 18(4), 79-91.
10. Pariser, E. (2011). "The Filter Bubble: What the Internet Is Hiding from You." *Penguin Books*.
11. Human Rights Watch. (2018). "Lynching, Hate Speech, and the Spread of Violence in India." *HRW Report*.
12. CyberPeace Foundation. (2021). "Hate Speech and Cybercrime in India." Retrieved from [CyberPeace Foundation Report].
13. Delhi Riots 2020: Investigation, Evidence, and the Role of Social Media. (2020). *Journal of South Asian Studies*, 19(3), 50-72.
14. Ministry of Electronics and Information Technology. (2021). "Information Technology (Intermediary Guidelines and Digital Media Ethics Code) Rules, 2021." Government of India.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

नैतिक मूल्य और मानव जीवन

डॉ. सीमाबाला अवास्या*

* सहायक प्राध्यापक (हिंदी) शासकीय माधव कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – ***जो भरा नहीं है भाव से, बहती जिसमें रसधार नहीं।***
वो हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश प्यार नहीं।।

एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण उस राष्ट्र में रहने वाले लोगों के माध्यम से ही संभव है। राष्ट्र के प्रति निष्ठा और प्रेम, आपसी सद्भाव, अनुशासन और स्थापित नियमों के अनुसार अपना आचरण रखना अच्छे और सच्चे मानव की पहचान है। आचरण वह नैतिक मूल्य है, जो व्यक्ति स्वयं के लिए करता है। अर्थात् स्वयं का स्वभाव, स्वयं की आदत, स्वयं की प्रकृति और जब व्यक्ति दूसरों के लिए कुछ कार्य करता है तो वह उसका व्यवहार कहलाता है। अर्थात् दूसरों के साथ किया गया आचरण व्यवहार कहलाता है।

शिक्षा ज्ञान रूपी आलोक और आध्यात्मिक शक्ति का एक स्रोत है, जो हमारी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास यात्रा के लिए हमारी अंतर्निहित प्रकृति में आवश्यक परिवर्तन लाता है। इसके लिए समाज में शिक्षा का स्तर, उसकी गुणवत्ता और व्यवस्था का उत्तम होना अपरिहार्य है। अच्छी शिक्षा वह होगी जो हमारे भूतकाल से उत्तम बातों को ग्रहण कर सके । वर्तमान का श्रेष्ठ उपयोग कर सके, साथ ही भविष्य की दिशा भी निर्धारित कर सके। जब भी मूल्यों की बात होती है, कई शब्द अलग-अलग संदर्भ में उपयोग में लाते हैं – जैसे जीवन मूल्य और मानवीय मूल्य। संभवत: इन सभी शब्दों के अर्थ और अभिप्राय एक ही हैं । मूल्य को किसी भी नाम से क्यों न पुकारा जाए, वे उन गुणों की ओर इंगित करते हैं, जिन्हें व्यक्ति महत्वपूर्ण और उपयोगी मानता है तथा जिन मूल्यों के पालन करने से व्यक्ति अपने लिए सामाजिक मान्यता प्राप्त करता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार जीवन में मूल्य ही सत्य होते हैं। जीवन की शुद्ध क्रियाएं धर्म कहलाती है, धर्म में शांति, प्रेम और अहिंसा समाहित रहते हैं। ये पांच तत्व सत्य, धर्म, शांति, प्रेम और अहिंसा मानव मूल्य माने जाते हैं।

हम बात करते हैं सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र की, जिन्होंने अपने सत्यनिष्ठा के लिए, धर्म परायणता के लिए अपना सर्वस्व निछावर कर दिया, यहां तक की न्याय के लिए उन्होंने अपनी पत्नी से भी कफन मांगा । यह उनके उच्च आदर्शों का परिचय है। यही बात हम रामायण में भी देखते हैं, जब चक्रवर्ती सम्राट दशरथ के पुत्र राम जो शिक्षा के लिए गुरुकुल जाते हैं तो उनके द्वारा भी मां से भिक्षा मांगना यह सिखाता है कि एक राजा के बेटे होते हुए भी समाज में विनम्रता का भाव होना चाहिये । हम बात करते हैं भगवान कृष्ण की, उन्होंने भी आश्रम में रहकर सत्य और नैतिकता की बातें सीखी। इस प्रकार हम सकते हैं कि वह सर्वेश्वर जिसके आगे सारी दुनिया झूकती है, वह भी शिक्षा दीक्षा के लिए स्वयं को समर्पित कर रहा है। इस प्रकार कह सकते हैं कि नैतिकता विनम्रता का एक आवश्यक गुण है, जो चाहे राजा हो या रंग सभी में होना आवश्यक है।

इस प्रकार प्राचीन काल से ही चाहे जैन धर्म हो, बौद्ध धर्म हो, वैदिक धर्म हो, सनातन धर्म हो यह हमारे प्राचीनतम सनातन धर्म है। यह हमारी सभ्यता संस्कृति है। यहां हमें नैतिक मूल्य सिखाए जाते हैं। मूल्य हमारी आस्थाओं और सामाजिक मर्यादाओं पर आधारित आचरण के सिद्धांत हैं। जब हम अपने आचरण और व्यवहार को समाज के नीतिगत दायरे में लाते हैं तो हमारा मूल्य नैतिक मूल्य बन जाते हैं। भगवतगीता जिसे हम मानवीय संबंधों, दृष्टिकोण, दर्शन, ज्ञान और उपदेश का सर्वोत्कृष्ट और सर्वकालिक ग्रंथ मानते हैं, उसमें 26 मानवीय मूल्यों की विवेचना की गई है। इन गुणों में निर्भीकता, पवित्रता, स्वयं पर नियंत्रण, त्याग, शास्त्रों का अध्ययन, स्पष्टवादिता, सत्यनिष्ठा, क्रोध का अभाव, शांतिप्रियता, छल, कपटरहित व्यवहार, सभी के प्रति क्षमा का भाव, विनम्रता, ऊर्जावान, क्षमाशीलता, दृढ़ता, शुद्धता, चुनौतियों का सामना करने की शक्ति, उत्तम व्यक्ति के प्रमुख गुण माने जाते हैं।

परिवार व्यक्ति के जीवन का प्रथम पड़ाव है। परिवार के जीवन मूल्यों को बच्चा आत्मसात करता है। अपनी शैशवावस्था में बच्चा अपने पारिवारिक वातावरण से अपनी प्रारंभिक अनौपचारिक शिक्षा ग्रहण करता है। परिवार द्वारा दिए गए संस्कार पूरी जिंदगी हमारे साथ रहते हैं और परिवार के संस्कारों की छाप हमारे व्यक्तित्व में स्पष्ट दिखाई देती है। कहा गया है कि परिवार व्यक्ति की प्रथम पाठशाला है और बच्चे की मां ही उसकी प्रथम गुरु होती है। प्रारंभ में मूल्यों की पहचान परिवार और माता-पिता के माध्यम से ही बच्चे तक पहुंचते है। परिवारों से ही समाज बनता है। अत: समाज के निर्माण में परिवार की भूमिका सर्वोपरि है। यदि परिवार अपने सदस्यों के व्यवहार और आचरण की जिम्मेदारी ले और इस राष्ट्रीय दायित्व को पूरी निष्ठा के साथ निभाए तो एक स्वस्थ समाज का निर्माण होगा, जो स्वस्थ राष्ट्र की आधारशिला होगी।

परिवार के बाद मनुष्य के समाजीकरण की दूसरी कड़ी के रूप में शिक्षा जगत विशेष महत्व रखता है। विशेष रूप से बच्चों के मन में शिक्षकों का प्रभाव गहरा और लगभग स्थाई रहता है। एक अच्छा शिक्षक अपने विद्यार्थी के लिए एक अनुकरणीय आदर्श व्यक्ति रहता है। शिक्षक की कही हुई हर बात विद्यार्थी के लिए ग्राह्य और अंतिम होती है। कहा जाता है कि एक अच्छा शिक्षक हमारा जीवन बना देता है और एक खराब सहपाठी जीवन की दिशा ही बदल देता है।

शिक्षा विद्यार्थियों को अच्छा इंसान बनने, शाश्वत मानवीय मूल्यों को आत्मसात करने और भविष्य में जीवन संघर्ष में शुचिता पूर्ण उपयोग करते हुए सफल होने का मार्ग प्रशस्त करती है साथ ही उसमें जिज्ञासा एवं प्रश्नानुकूलता का अंकुरण करती है। सही गलत का विवेक पैदा करती है। सच्चे ज्ञान अर्जुन का यही सफल मंत्र होता है। महात्मा गांधी के अनुसार 'जो शिक्षा आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मार्ग प्रशस्त करें, वही शाश्वत शिक्षा है।' आज शिक्षित युवाओं में कुंठा, हताशा, दिशा भ्रम दिखाई देता है। यह इस बात की ओर संकेत देता है कि ज्ञान अर्जन की सही मार्ग से उनका कहीं न कहीं विचलन हुआ है।

शिक्षाविदों का मानना है कि विषयगत वैशिष्ट्य अर्जित न कर पाने का एक बड़ा कारण विद्यार्थियों का माध्यमगत अभाव है। महात्मा गांधी की भी यही राय थी कि शिक्षा का माध्यम उच्च स्तर तक मातृभाषा ही होना चाहिए। मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा सहज ग्राह्य और संप्रेक्षणिय तो होती ही है, शिक्षार्थी पर अतिरिक्त भाषा का अनावश्यक दबाव भी नहीं होता है। उसकी सृजनात्मक प्रतिभा परवान चढ़ती है, उसमें मौलिक सोच पैदा होती है।

फ्रांस, रूस, चीन, जापान, जर्मनी आदि देशों में शिक्षा सहित सभी क्षेत्रों में विकास की दूरी अपनी भाषा में अध्ययन अध्यापन ही रही है। सभी देश मौलिक अनुसंधान के क्षेत्र में बड़े चढ़े हैं। उनकी तुलना में भारत सहित अन्य सभी औपनिवेशिक देशों ने स्वतंत्र हो जाने के बाद भी शासक देश की भाषा का शिक्षा का माध्यम बनाए रखा, इसका परिणाम शिक्षा अनुसंधान के क्षेत्र में वे पीछे रह गए।

यह आकस्मिक नहीं कि जब शिक्षा के सारे संसाधन हमारे अपने ही है, हमारे पास विश्व के सर्वाधिक समुचित विश्वविद्यालय हैं। शिक्षा, चिकित्सा, भूगोल, खगोल विज्ञान,वास्तुशास्त्र और गणितज्ञ थे। यहां विश्व स्तरीय अनुसंधान है, फिर शिक्षा जगत में हम पीछे कैसे रह गए। यह सोचने का विषय है। कहीं ना कहीं हम अपने दायित्व से बिछड़ गए हैं। विद्यार्थियों को लेखन की ओर प्रेरित नहीं किया। पढ़ने समझने के लिए प्रेरित नहीं किया। विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या विभिन्न नए विषयों की प्रति बढ़ती अभिरुचि के अनुरूप मौलिक लेखन की आवश्यकता भी निरंतर बढ़ रही है।

उच्च शिक्षा का मुख्य उद्देश्य युवा शक्ति को वैश्विक मानकों की कसौटी पर खड़ा उतरना है। ज्ञान ही वह साधन है जो मानव संसाधनों को उद्धत मूल्य, प्रभावशाली व्यक्तित्व और सार्थक अस्तित्व प्रदान करने में सक्षम है। हमारे उच्च शिक्षा ज्ञान की पराकाष्ठा को अपने मूल्यों में समाहित करके पाठ्यक्रमों का प्रारूप रोजगारोन्मुख बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। शिक्षा की परिपूर्णता, अंतरण, अनुशासनात्मक ज्ञान से संपन्न है। किसी भी समृद्ध व्यक्तित्व के लिए इन सब विषयों का ज्ञान अनिवार्य है। आज की प्रतिष्ठनात्मक जीवन शैली में एक छात्र को पर्याप्त आत्मविश्वास व संप्रेषण की शक्तियां प्रदान करने में हमारे पाठ्यक्रम की संरचना अत्यंत आधारभूत होनी चाहिए। हमारा उद्देश्य है कि हमारा विद्यार्थी न केवल सफल जीविका जीविकोपार्जन करें, अपितु सार्थक, सक्षम, जागरूक नागरिक बनकर राष्ट्र निर्माण की अद्भुत अनिवार्य कड़ी भी बनें। उसके पास ज्ञान का तेज के साथ-साथ नैतिकता का बल भी हो। वह जीवन के हर क्षेत्र में वांछित प्रभाव एवं सफलता प्राप्त कर सकता हैं।

देश कि शिक्षा नीति उस देश की प्रकृति, संस्कृति और प्रगति के अनुरूप होना चाहिए। आनंद और प्रसन्नता का विषय है कि 34 वर्षों के उपरांत देश में 'नई शिक्षा नीति 2020' सामने आई है। यह भारत केंद्रित व समग्रता के साथ भारतीय भाषाओं को प्राथमिकता देने व अनेक विशेषताओं के साथ हमारे समझ आई है। छोटे बच्चे अपने परिवार की भाषा मातृभाषा में जल्दी किसी बात को ग्रहण कर लेते हैं, इसलिए बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा भारतीय भाषा में हो, इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए। महाविद्यालयीन शिक्षा के साथ उच्च शिक्षा में भी अनेक महत्वपूर्ण कदम भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ाने के लिए उल्लेखनीय है।

भारतीय भाषाओं में लिखा गया साहित्य भारत की राष्ट्रीय पहचान और धरोहर है। परिवार की भाषा अपनेपन का एहसास कराती है और भावनाओं की अभिव्यक्ति भी करती है। संस्कृति के संरक्षण, संवर्धान और प्रचार के लिए हमें अपने देश की भाषाओं का संरक्षण व संवर्धन करना होगा। यह तभी संभव होगा जब उन्हें नियमित रूप से तथा शिक्षण अधिगम के लिए उपयोग किया जाए। विश्व में भारत ऐसा देश है, जहां मौसम, खानपान, वेशभूषा और भाषा में इतनी विविधता है। यह विविधताएं ही हमारी ताकत हैं और भाषा ही एकता और एकात्मता का सशक्त माध्यम होती है। भारतीय भाषाओं में जो समता है, वह दूसरे देश की भाषाओं के साथ देखने को नहीं मिलता है।

युवा उद्यमी और ऊर्जावान होते हैं, काम करने का जुनून भी रखते हैं, लेकिन सही दिशा निर्देशों के अभाव में वे कहीं भटक जाते हैं, उनकी ऊर्जा को सही दिशा और गति देने के लिए सक्षम नेतृत्व की आवश्यकता है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था-'उठो जागो और तब तक न रुको जब तक अपना ध्येय न पा लोय का संदेश शिक्षा के माध्यम से उन तक पहुंचाना ही नैतिक मूल्य है। उच्च शिक्षा के छात्र जो देश के युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं, उनमें समाज के प्रति जवाबदेही होना अत्यंत आवश्यक है। युवा पीढ़ी में समाज की ओर देखने का दृष्टिकोण निर्मित होना चाहिए। उनके आसपास का समाज किस प्रकार राष्ट्रहित के लिए कार्य करें, इसकी योजना तैयार की जानी चाहिए। युवा पीढ़ी समाज को एक नया रूप प्रदान कर सकती है, समाज की उपयोगिता बढ़ा सकती है। इसके लिए युवाओं को अपना स्वयं का चारित्रिक निर्माण करना होगा, सामान्य नैतिक मूल्यों का पालन करना होगा तथा अपनी आत्मशक्ति द्वारा समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास करना होगा। नैतिक मूल्य समाज के सूखी, संयमित, समाजोपयोगी जीवन के लिए सशक्त आधार प्रदान करते हैं। नैतिक मूल्य की कमी सामाजिक विघटन की ओर संकेत करती है। पीढ़ी- दर- पीढ़ी नैतिक मूल्यों की परिभाषाएं बदलती रहती है, लेकिन कुछ मूल्य ऐसे हैं जो शाश्वत है। प्रत्येक काल और समय में उसका अस्तित्व अनिवार्य है। ऐसे मूल्यों की रक्षा करना, उनके संवर्धन के प्रयास करना और उनकी कमी को पूरा करने के लिए उन्हें पुन: प्रतिष्ठित करना प्रत्येक परिवार, समाज और राष्ट्र का कर्तव्य है। इस निर्माण में शिक्षण संस्थानों की अहम भूमिका है।

आने वाला युग युवा पीढ़ी का होगा। ऐसा अनुमान है कि हमारे देश की आबादी का लगभग 70 प्रतिशत अंश युवा पीढ़ी का है। युवा पीढ़ी देश का भविष्य निर्धारित करेगी। यदि युवा इस जिम्मेदारी को निभाने के लिए तैयार है तभी हम देश के भविष्य को सुरक्षित मान सकते हैं। यदि युवाओं में राष्ट्र के प्रति प्रेम ही न हो, देशभक्ति का जज्बा न हो, समाज की प्रति दायित्वबोध न हो और उसका अपना व्यक्तिगत आचरण, व्यवहार संयमित न हो तो वे किस प्रकार अपना और राष्ट्र का हित कर पाएंगे। यह गंभीरता से सोचने की बात है। यदि अब हमने अधिक विलंब किया, युवाओं को कर्तव्य

बोध कराने में सफल नहीं हुए तो शायद इतिहास भी हमें कभी क्षमा नहीं कर पाएगा।

यह कटु सत्य है कि किसी भी राष्ट्र का समुचित उत्थान उस राष्ट्र के शिक्षा स्तर पर निर्भर करता है। शिक्षा का स्तर स्वच्छ, अनुशासनप्रिय तथा सदाचार से परिपूर्ण होना चाहिए।, तभी तो व्यक्ति शिक्षित होकर राष्ट्र के संबंध में कुछ सोच- समझ सकता है और राष्ट्र के विकास के मार्ग को समझते हुए, उसके विकास के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा सकता है। फलस्वरुप राष्ट्र के विकास में शिक्षा की भूमिका अपने आप में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सच पूछा जाए तो राष्ट्रीयता की भावना एक ऐसा सोपान है जिसके जरिए राष्ट्र विकास के अंतिम पड़ाव तक पहुंचने में सक्षम बनता है, लेकिन क्या किया जाए। फिलहाल तो हमारे राष्ट्र के विकास के सब द्वार बंद दिखाई दे रहे हैं क्या हो गया हमारे हिंदुस्तान को, जहां गुजरे हुए वक्त में हमारे राष्ट्र में जहां बड़े-बड़े दिग्गज, राजा- महाराजा, विद्वान, ऋषि मुनि थे। हमारे देश को सोने की चिड़िया कहा जाता था। आज गरीबों का देश कहा जा रहा। अभी भी समय है देश में शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा बहुत आवश्यक हैं। नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण हो हमारा राष्ट्र तभी वह एक विकसित राष्ट्र के साथ एक नैतिक राष्ट्र भी बन सकता है। युवा वर्ग अपनी कर्तव्य परायणता के जरिए राष्ट्र को पूर्ण सार्थक बना सकता है। इस प्रकार हम कह सकतें हैं कि शिक्षा वह सीढ़ी है जिस पर चढ़कर हम विकास के मंजिल तक पहुंच सकते हैं। हमारा राष्ट्र भविष्य में विकसित राष्ट्र का दर्जा प्राप्त कर लेगा,यदि हम एकजुट होकर हाथ से हाथ मिलाकर काम करें। अपने राष्ट्र को परंपरागत मूल्यों और आदर्श से विकसित करना है और इसके लिए हमें अपनी प्राचीन परंपरा और संस्कार को कायम रखना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. हिंदी भाषा और नैतिक मूल्य मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी पृष्ठ संख्या 112 से 123 तक।
2. भाषा और संस्कृति- मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल।
3. नैतिक मूल्य और भाषा मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
4. हिंदी निबंध आनंद प्रकाशन ग्वालियर।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित

डॉ. अरविन्द कुमार शर्मा *

*सहायक प्राध्यापक (गणित) शासकीय महाविद्यालय कायथा, जिला उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित के योगदान के प्रमाण संसार के प्रारम्भ से मिलते है वैदिक काल में ही संख्याओं का एवं दशमलव प्रणाली का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित केवल संख्याओं और समीकरणों का विषय नहीं रहा, बल्कि यह एक समग्र दार्शनिक और व्यावहारिक प्रणाली का हिस्सा रहा है। प्राचीन भारतीय गणितज्ञों ने न केवल गणना पद्धतियों का विकास किया, बल्कि शून्य, दशमलव प्रणाली, अनंत की अवधारणा और बीजगणित जैसे क्षेत्रों में ऐसे मौलिक सिद्धांत प्रस्तुत किए, जो आज भी आधुनिक गणित के मूल आधार हैं।इस शोध का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित के इतिहास में प्रमुख रूप से शोध के बारे में उल्लेख करना है साथ ही कुछ भारतीय गणितज्ञ और उनका योगदान के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना है।

प्रस्तावना – भारतीय ज्ञान परंपरा अत्यंत समृद्ध और व्यापक रही है, जिसमें गणित का महत्वपूर्ण स्थान है। वेदांग ज्योतिष में गणित की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए लिखा है–

यथा शिखा मयूराणां, नागानां मणयो यथा।
तद् वेदांगशास्त्राणां, गणितं मूर्ध्नि वर्तते ।।

अर्थात जिस प्रकार मयूरों की शिखाऐं और सर्पों की मणियां शरीर में सर्वोपरि मूर्धा स्थान (मस्तक) पर विराजमान है, उसी प्रकार वेदों के सब अंगों तथा शास्त्रों में गणित शिरोमणि है।

ठीक उसी प्रकार जैन गणितज्ञ महावीराचार्य ने गणित के सम्बन्ध में यहाँ तक कहा है–

बहुभिर्विप्रलापै: किम् त्रैलोक्ये सचराचरे।
यत्किंचिद्धस्तु तत्सर्व गणितेन बिना न हि।।

अर्थात् बहुत अधिक प्रलाप करने से क्या लाभ है। इस सचराचर जगत में जो कुछ भी वस्तु है वह सब गणित के बिना समझना सम्भव ही नहीं है।

प्राचीन भारत में गणित न केवल एक शुद्ध बौद्धिक विषय था, बल्कि उसका संबंध खगोल विज्ञान, वास्तुशास्त्र, यज्ञ, व्यापार, आयुर्वेद और संगीत जैसे विविध क्षेत्रों से भी था। वैदिक युग से लेकर मध्यकालीन भारत तक, भारतीय गणितज्ञों ने गणना, बीजगणित, त्रिकोणमिति, ज्यामिति और संख्यात्मक विश्लेषण के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिए।

बौधायन, आर्यभट, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य और श्रीनिवास रामानुजन जैसे विद्वानों ने न केवल भारत बल्कि विश्वभर में गणित की दिशा और दृष्टिकोण को प्रभावित किया। भारतीय गणित की एक विशिष्ट विशेषता यह रही है कि इसमें गणना और सिद्धांत दोनों को एक व्यावहारिक तथा दार्शनिक दृष्टिकोण से देखा गया। शून्य (Zero) की खोज, दशमलव प्रणाली का विकासऔर अनंत के विचार ये सब भारतीय गणित की देन हैं, जिनका प्रभाव आज भी आधुनिक गणित में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

यह शोध–पत्र भारतीय गणितीय परंपरा में गणित के इतिहास को कालखण्डों में प्रदर्शित करता है। इसमें भारत के महान गणितज्ञों में से कुछ गणितज्ञों के बारे में जानने एवं उनके गणित के क्षेत्र में योगदान को रेखांकित किया गया हैं।

प्राचीन भारतीय गणित का संक्षिप्त इतिहास – भारतीय गणित का शुभारंभ'ऋग्वेद' से होता है।प्राचीन भारतीय गणित के इतिहास को निम्न कालों में विभक्त किया जा सकता है

1. आदि काल (3000 ईस्वी पूर्व से 500 ईस्वी पूर्व तक)– आदिकाल भारतीय गणित के इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।यह काल अंकगणित, बीजगणित एवं रेखागणित को विधिवत् एवं दृढ़तापूर्वक स्थापित किए जाने वाला रहा है।इसे भी निम्न दो काल खंडो में विभाजित किया गया हैरू–

(क) वैदिक काल (3000 ईस्वी पूर्व से 1000 ईस्वी पूर्व तक)– वैदिक काल की विश्व को सबसे बड़ी देन, संख्याओं का तथा उन की दाशमिक प्रणाली है ऋग्वेद की एक ऋचा है–

द्वादश प्रधयश्य क्रमेकं त्रीणि नभ्यामिक उतच्चिकेत।
तस्मिन्त्सामकं त्रिशता न शंकवोऽर्विता षष्टिर्न चलचला ही स।।

इसमें द्वादश अर्थात् बारह, त्रीणि अर्थात तीन, त्रिशत अर्थात् तीन सौ, षष्टि अर्थात् साठ संख्याओं का प्रयोग दाशमिक प्रणाली का स्पष्ट उदाहरण है।

भारत में दशमलव प्रणाली, हड़प्पाकाल में अस्तित्व में थी जैसा कि हड़प्पा के बाटों और मापों के विश्लेषण से पता चलता है। उस काल के0.05, 0.1, 0.2, 0.5, 1, 2, 5, 10, 20, 50, 100, 200 और 500 के अनुपात वाले बाट पहचान में आये हैं।

उन्नत ईंट (brick) तकनीक जिसमें अनुपात (ratio) का प्रयोग किया गया, पूर्ण समकोण (right angle) पर गलियाँ बनायीं गयी, साथ ही कई ज्यामितीय आकारों और डिजाइनों का प्रयोग किया गया ।

दाशमिक स्थानमान पद्धति भारत से अरब गयी और अरब से पश्चिमी देशों में पहुँची। यही काल हैं कि अरब के लोग 1 से 9 तक के अंकों को

श्हिन्दसांश कहते हैं और पश्चिमी देशों में (0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9) को हिन्दू अरबीक न्यूमरल्स (Indo-Arebic Numericals) कहा जाता है।यह ज्ञात नहीं है कि शून्य का आविष्कार कब और किसने किया, किन्तु इसका प्रयोग वैदिक काल में होता रहा है। शून्य एवं दाशमिक स्थान मान पद्धति का महत्व इसी से परिलक्षित होता है कि आज यह पद्धति सम्पूर्ण विश्व में प्रचलित है तथा इसी के आविष्कार ने गणित एवं विज्ञान को प्रगति के उन्नत शिखरों तक पहुँचाया है।

(ख) उत्तर वैदिक काल (1000 इस्वी पूर्व से 500 इस्वी पूर्व तक) – इस युग में गणित का भारत में अधिक विकास हुआ। शुल्व वह रज्जु (रस्सी) होती थी, जो यज्ञ वेदी बनाने के लिए माप में काम आती थी। इसी युग में बोधायन शुल्व सूत्र की खोज हुई जिसे हम आज पाइथागोरस प्रमेय के नाम से जानते है।

बोधायन एवं आपस्तम्ब ने ईसा से 800 वर्ष पूर्व अपने शुल्व सूत्रों में वैदिक यज्ञ हेतु विविध वेदियों के निर्माण हेतु आवश्यक स्थापत्यमान दिए हैं।किसी त्रिकोण के बराबर वर्ग खींचना, ऐसा वर्ग खींचना जो किसी वर्ग का द्विगुण, त्रिगुण अथवा एक तृतीयांश हो। ऐसा वृत्त बनाना, जिसका क्षेत्र उपस्थित वर्ग के क्षेत्र के बराबर हो।

सूर्य प्रज्ञप्ति में 'दीर्घवृत्त' का स्पष्ट उल्लेख मिलता है, जिसका अर्थ है 'दीर्घ (आयत) पर बना परिवृत्त'जिसे परिमण्डल के नाम से जाना जाता था। अत: भारतीयों को दीर्घवृत्त का ज्ञान मिनमैक्स (350 ई.पू.) से पूर्व ही हो चुका था।उल्लेखनीय है कि भंगवती सूत्र (300 ई.पू.) में भी श्परिमण्डलश शब्द दीर्घवृत्त के लिए प्रयुक्त किया है

2. पूर्व मध्य काल (शैशव काल) (500 इस्वी पूर्व से 500 इस्वी तक) – इस काल में लिखी गयी पुस्तकों वक्षाली गणित, सूर्य सिद्धांत और गणित अनुयोग के कुछ पृष्ठों को छोड़कर शेष कृतियाँ काल कवलित हो गयी। । किन्तु इन पृष्ठों से और मध्ययुगीन आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त आदि के उपलब्ध साहित्य से यह निष्कर्ष निकलता है कि इस काल में भी गणित का विकास पर्याप्त रूप से हुआ था।

अनुयोगद्धार, स्थानांग सूत्र व भगवतीसूत्र इस युग के प्रमुख ग्रंथ हैं। इनके अतिरिक्त जैनाचार्य उमास्वाति (135 ई.पू.) की कृति 'तत्वार्थाधिगम सूत्र भाष्य' एवं आचार्य यतिवृषम (176 ई. के आस-पास) की कृति 'तिलोयपण्णती' भी इस काल के प्रसिद्ध जैन ग्रंथ हैं। इस काल में पदम, बवेपदम की खोज हुई।

3. मध्य काल अथवा स्वर्ण-युग (500 इस्वी से 1200 इस्वी तक) – मध्यकाल को भारतीय गणित का स्वर्ण युग कहा जाता है क्योंकि इस काल में आर्यभट्ट (प्रथम व द्वितीय), ब्रह्मगुप्त, श्रीधराचार्य, भास्कर, महावीराचार्य जैसे अनेक महान एवं श्रेष्ठ गणितज्ञ हुए। वेदों में जो सिद्धान्त,नियम एवं विधियाँ सूत्र रूप में है वे इस युग में जन साधारण के समक्ष आयी।

4. उत्तर-मध्य काल (1200 इस्वी से 1800 इस्वी तक) – इस काल की प्रमुख देन 'प्राचीन ग्रन्थों पर टीकाएँ'है। इस युग में केरल के एक गणितज्ञ नीलकण्ठ ने 1500 ई. में ज्या (sinr) का मान ज्ञात किया उनके अनुसार इस सूत्र का उल्लेख मलयालम पाण्डलेख 'मुक्तिभास' में भी किया गया है जिसे हम 'ग्रेगरी श्रेणी' के नाम से जानते हैं।

इस काल मे नारायण पण्डित (1356 ई.), नीलकण्ठ (1587 ई.), कमलाकर (1608 ई.) तथा सम्राट जगन्नाथ (1731 ई.) नामक गणितज्ञों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

5. वर्तमान काल (1800 इस्वी से अद्यावधि) – इस युग में श्री रामानुजन का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है मैजिक नम्बर 1729 की खोज की गई ।इस काल में संख्या सिद्धांत के क्षेत्र में अधिक काम किया।

रामानुजन के अतिरिक्त इस युग में नृसिंह बापू देव शास्त्री (1831 ई.), स्वामी भारती कृष्णतीर्थ जी महाराज (1884-1960 ई.) तथा सुधाकर द्विवेदी के नाम प्रमुख हैं। 19वीं शताब्दी में, गणित की कार्यशैली अमूर्त (।इेजतंबज) तथा और अधिक अमूर्त होती गई।

कुछ भारतीय गणितज्ञ और उनका योगदान

1. बौधायन(जन्म: 800 ई. पू.मृत्यु: 740 ई. पू.)- प्रारम्भिक जीवनरू-उनका जन्म सीतामढ़ी जिले के बाजपट्टी प्रखंड स्थित बानगांव मेंहुआ था।

प्रमुख ग्रंथ (पुस्तकें) – बौधायन सूत्रों में कुल छह प्रमुख ग्रंथ शामिल हैंरू शुल्बसूत्र (3 अध्याय), श्रौतसूत्र (संभवत: 19 प्रकरण), गृह्यसूत्र (4 प्रकरण), धर्मसूत्र (4 प्रकरण), दैवधसूत्र (4 प्रकरण), कर्मातरसूत्र (20 अध्याय) इन ग्रंथों में धार्मिक अनुष्ठानों, दैनिक जीवन, गणित और आचारधर्म से संबंधित विस्तृत निर्देश दिए गए हैं।

कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ (योगदान)

1. शुल्बसूत्र में बौधायन ने पाइथागोरस से 200-250 साल पहले ही तथाकथित पाइयागोरस प्रमेय की जानकारी दे दी थी।

दीर्घचतुरश्रस्याक्ष्णया रज्जु: पार्श्वमानी तिर्यग् मानी
च यत् पृथग् भूते कुरूतस्तदुभयं करोति ।।

अर्थात विकर्ण पर कोई रस्सी तानी जाय तो उस पर बने वर्ग का क्षेत्रफल ऊर्ध्व भुजा पर बने वर्ग तथा क्षैतिज भुजा पर बने वर्ग के योग के बराबर होता है।

2. बौधायन ने 2 के वर्गमूल को 5 अंकों तक शुद्धरूप से आज से 2800 साल पहले प्राप्त करने का सूत्र बताया।

समस्य द्विकर्णि प्रमाणं तृतीयेन वर्धयेत।
तच् चतुर्थेनात्मचतुस्त्रिंशोनेन सविशेष:।।

किसी वर्ग का विकर्ण का मान प्राप्त करने के लिए भुजा में एक-तिहाई जोड़कर, फिर इसका एक-चौथाई जोड़कर, फिर इसका चौतीसवाँ भाग घटाकर जो मिलता है वही लगभग विकर्ण का मान है।

$$\sqrt{2} \approx 1+\frac{1}{3}+\frac{1}{3.4}-\frac{1}{3.4.34}=\frac{577}{408} \approx 1.414216$$

3. बौधायन को 'पाई' का मान खोजने वाले पहले गणितज्ञों में से एक माना जाता है। उनके शुल्बसूत्र में इसका उल्लेख है। बौधायन ने विभिन्नवेदिक वेदी निर्माणों के लिए पाइ (π) के विभिन्न मानों का उपयोग किया।
उनके कुछ ग्रंथों में निम्नलिखित पर प्रमेय शामिल हैं।

- किसी भी समचतुर्भुज में विकर्ण (विपरीत कोनों को जोड़ने वाली रेखाएं) एक दूसरे को समकोण (90 डिग्री) पर समद्विभाजित करती हैं
इ.एक आयत के विकर्ण बराबर होते हैं तथा एक दूसरे को समद्विभाजित करते हैं।
- एक आयत के मध्यबिन्दुओं को जोड़ने पर एक समचतुर्भुज बनता है जिसका क्षेत्रफल आयत का आधा होता है।
- किसी वर्ग के मध्य बिन्दुओं को मिलाकर बनाए गए वर्ग का क्षेत्रफल मूल वर्ग का आधा होता है।

2. आर्यभट्ट (जन्म: 476ई. मृत्यु: 550 ई.)

प्रारम्भिक जीवन –आर्यभट्ट का जन्म कुसुमपुरा (पटना) में 476 ई. में हुआ था।आर्यभट्ट ने अपनी शिक्षा कुसुमपुर और नालंदा विश्वविद्यालय में प्राप्त की। वे नालंदा विश्वविद्यालय के प्रमुख भी रहे।उनके दो प्रमुख योगदान हैं शून्य का परिचय और पाइ के अनुमानित मान की गणना।

प्रमुख ग्रंथ (पुस्तकें):–आर्यभटीय, दशगीतिका और आर्यभट्ट सिद्धांत

कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ (योगदान)

1. आर्यभटीय में उन्होंने वर्ग और घनमूलों को हल करने के लिए दशमलव संख्या प्रणाली का उपयोग किया।
2. उन्होंने 'पाई' का मान 3.1416दिया, जो दशमलव के 4 स्थानों तक सही था।
3. आर्यभट्ट ने अपने सूत्रों से यह सिद्ध किया कि एक वर्ष में 366 दिन नहीं वरन 365.2951 दिन होते हैं।
4. सर्वप्रथम उन्होंने ही 'कॉपरनिकस' से लगभग हजार साल पहले,सैद्धांतिक रूप से सिद्ध किया था कि पृथ्वी गोल है उसकी परिधि अनुमानत24835 मील है इस गणनाकी सटीकता99.8 प्रतिशतथी ।
5. आर्यभट्ट ने दशमलव अंक प्रणाली का उपयोग किया और शून्य के महत्व को समझा।आर्यभटीय में दाशमिक स्थान मान की सूची 10 पदों तक उपलब्ध हैं।
6. आर्यभट के अनुसार किसी वृत्त की परिधि और व्यास का अनुपात 62,832 : 20,000 आता है।

चतुराधिकं शतमष्टगुणं द्वाषष्टिस्तथा सहस्राणाम्।
अयुतद्वयस्य विष्कम्भस्यासन्नो वृत्तपरिणाह:।।

अर्थात, ((4100)8+62,000)/20,000 = 62,832/20,000

7. आर्यभट के अनुसार किसी त्रिभुज का क्षेत्रफल, लम्ब के साथ भुजा के आधे के (गुणनफल के) परिणाम के बराबर होता है।

'त्रिभुजस्य फलशरीरं समदलकोटि भुजार्ध संवर्गी'

8. उन्होंने 'ज्या' (sine) और 'कोज्या' (cosine) जैसे त्रिकोणमितीय गुणांकों का परिचय दिया।
9. वह आर्यभट्ट ही थे जिन्होंने त्रिभुज के क्षेत्रफल की गणना की थी, जो कि (1X2. लम्बाई X चौड़ाई) है।
10. बीजगणित में उन्होंने वर्गों और क्यूब्स की श्रृंखला का सार बताया और ax by = c प्रकार के समीकरणों को हल किया है।

3. वराहमिहिर (जन्म: 499 ई. मृत्यु: 587 ई.)

प्रारम्भिक जीवन– उनका जन्म कायथा जिला उज्जैन में छठी शताब्दी 499 ई. में हुआ था। भारतीय परंपराओं के अनुसार, वे मालवा के राजा यशोधर्मन विक्रमादित्य के दरबार में 'नौ रत्नों' (नवरत्नों) में से एक थे।वृहत् संहिता, वास्तुकला, मंदिर, ग्रहों की गति, ग्रहण, कालगणना, ज्योतिष, ऋतुएँ, बादल निर्माण, वर्षा, कृषि, गणित, रत्न विज्ञान, इत्र और कई अन्य विषयों पर एक विस्तृत अध्ययन, वराहमिहिर के सबसे प्रसिद्ध कार्यों में से एक था।वे पांचवीं–छठी शताब्दी के एक प्रमुख विद्वान थे, जिन्होंने भारतीय और पाश्चात्य खगोलशास्त्र के बीच सेतु का कार्य किया।

प्रमुख ग्रंथ (पुस्तकें)–पंचसिद्धांतिका, वृहत संहिता।

कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ (योगदान)

1. उन्होंने द्विघात गुणांकों की गणना की, जिसे यूरोपीय सभ्यता में पास्कल त्रिकोण के रूप में जाना जाता है।।
2. उन्होंने आर्यभट्ट की साइन टेबल की सटीकता को बढ़ाया।उन्होंने साइन और वर्साइन तालिकाओं को 3.75 डिग्री के अंतराल में 0 से 90 डिग्री तक 4 दशमलव स्थानों की सटीकता के साथ निर्धारित किया
3. उन्होंने 4X4 मैजिक स्क्वायर का आविष्कार किया।
4. 'सूर्य सिद्धांत' में वराहमिहिर ने मंगल ग्रह के व्यास का उल्लेख किया है। इस पुस्तक में वराह मिहिर ने मंगल ग्रह के बारे में विस्तृत जानकारी दी है। उन्होंने मंगल ग्रह पर पानी और लोहे की उपस्थिति के बारे में भविष्यवाणी की थी।
5. वराहमिहिर ने बताया कि सभी वस्तुओं का पृथ्वी की ओर आकर्षित होना किसी अज्ञात बल के कारण है।
6. अपने पूर्ववर्ती वैज्ञानिक आर्यभट की तरह उन्होंने भी कहा कि पृथ्वी गोल है।
7. उनका कहना था कि पौधे और दीमक जमीन के नीचे के पानी को इंगित करते हैं।
8. वराहमिहिर ने त्रिकोणमिति के कुछ महत्वपूर्ण सूत्रों की खोज की, जैसे:

$\sin^2(x) + \cos^2(x) = 1$
$(1 - \cos(2x))/2 = \sin^2(x)$

4. ब्रह्मगुप्त (जन्म: 598 ई. मृत्यु: 668 ई.)

प्रारम्भिक जीवन – उनका जन्म गूर्जरदेसा (वर्तमान में राजस्थान, भारत में भीनमाल) के भीलमाला में छठी शताब्दी 598 ई. में हुआ थावे जिष्णुगुप्त के पुत्र थे।ब्रह्मगुप्त गणित ज्योतिष के बहुत बड़े आचार्य थे। आर्यभट्ट के बाद भारत के पहले गणित शास्त्री श्भास्कराचार्य प्रथमश थे। उसके बाद ब्रह्मगुप्त हुए। ब्रह्मगुप्त खगोल शास्त्री भी थे।ब्रहगुप्त को संख्यात्मक विश्लेषण (Numerical Analysis) का जनक माना जाता है।

प्रमुख ग्रंथ (पुस्तकें)–ब्रह्मस्फुटसिद्धान्त (सन 628 ई), खण्ड–खाद्यक (सन 665 ई.)

कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ (योगदान)

1. उन्होंने शून्य, गणित के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी खोज की शुरुआत की और उल्लेख किया कि शून्य का अर्थ 'कुछ भी नहीं' है।

- जब हम किसी संख्या को स्वयं से घटाते हैं तो हमें शून्य प्राप्त होता है।
- शून्य से विभाजन अनंत के बराबर होता है।
- शून्य को शून्य से भाग देने पर शून्य प्राप्त होता है।

2. उन्होंने एक चक्रीय चतुर्भुज के क्षेत्रफल को ज्ञात करने के लिए भी विलक्षण सूत्रों का आविष्कार किया। इस सूत्र के बारे में लिखते हुए उन्होंने अपने ग्रंथ 'ब्रह्मस्फुटसिद्धांत' में लिखा कि–

'भुजयोगार्थचतुष्टय भुजोनघातत् पदं सूक्ष्मम्।'

यदि एक ABCD चक्रीय चतुर्भुज की चार भुजाएँ p,q,r,s हैं तो उनका क्षेत्रफल

$=\sqrt{((t-p)(t-q)(t-r)(t-s))}$

जहां t, चक्रीय चतुर्भुज का अर्धपरिमाप है

3. अपने दूसरे ग्रंथ 'खण्डखाद्यक' में उन्होंने ज्या के मूल्य की गणना करने के लिए प्रक्षेप सूत्र भी दिया।
4. ब्रह्मगुप्त ने द्विघातीय उन्होंने Simultaneous एवं समीकरणों को हल करने के लिए एक सूत्र विकसित किया।
5. उन्होंने पाई का मान 3.162 आंका, जो वास्तविक मान 3.14 से थोड़ा अधिक था।

6. उन्होंने गणना की कि पृथ्वी सूर्य की अपेक्षा चंद्रमा के अधिक निकट है।

7. ब्रह्मगुप्त ने निर्धारित किया कि एक वर्ष 365 दिन, 6 घंटे, 12 मिनट और 9 सेकंड का होता है।

8. उन्होंने गुरुत्वाकर्षण की अवधारणा का उल्लेख करते हुए कहा कि पिंड पृथ्वी की ओर इसलिए गिरते हैं क्योंकि यह उन्हें अपनी ओर आकर्षित करती है, ठीक उसी प्रकार जैसे पानी बहता है।

9. ब्रह्मगुप्त ने धनात्मक और ऋणात्मक संख्याओं के साथ काम करने के लिए नियमों का आविष्कार किया:

- एक ऋणात्मक संख्या को दूसरी ऋणात्मक संख्या में जोड़ने पर ऋणात्मक परिणाम प्राप्त होता है।
- किसी धनात्मक संख्या में से ऋणात्मक संख्या घटाना दो संख्याओं को जोड़ने जैसा है।
- दो ऋणात्मक संख्याओं को गुणा करने पर एक धनात्मक संख्या प्राप्त होती है।

10. ब्रह्मगुप्त प्रमेय कहता है कि यदि एक चक्रीय चतुर्भुज लम्बविकर्णीय है (अर्थात, इसमें लंबवत विकर्ण हैं), तो विकर्णों के प्रतिच्छेद बिंदु से किसी भुजा पर डाला गया लंबवत सदैव विपरीत भुजा को समद्विभाजित करता है।

5. भास्कर प्रथम (जन्म: 600 ई. मृत्यु: 680 ई.)

प्रारम्भिक जीवन – उनका जन्म 7वीं शताब्दी ई. में महाराष्ट्र के परभणी जिले में हुआ था।भास्कर प्रथम, भारत के एक प्रमुख गणितज्ञ और खगोल शास्त्री थे। वे प्राचीन भारत के उन विद्वानों में से एक थे जिन्होंने आर्यभट के कार्यों को आगे बढ़ाया और उन पर टीकाएँ लिखीं।

प्रमुख ग्रंथ (पुस्तकें) –महाभास्करिया, लघुभास्करिया

कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ (योगदान)

1. वे पहले गणितज्ञ थे जिन्होंने शून्य को एक वृत्त के साथ चित्रित किया।
2. वे पहले गणितज्ञ थे जिन्होंने सबसे पहले संख्याओं को हिन्दू दशमिक पद्धति में लिखना आरम्भ किया।उन्होंनेआर्यभट के दशमलव आधारित स्थानिक मान प्रणालीको विस्तार से समझाया।
3. भास्कर प्रथम ने एक सटीक सूत्र दिया था जिससे sine (ज्या) के मान का अनुमान लगाया जा सकता है।

$$\sin \approx \frac{16x(\pi - x)}{5\pi^2 - 4x(\pi - x)}, \quad (0 \le x \le \pi)$$

4. आर्यभटीय पर उन्होने सन् 629 में आर्यभटीयभाष्य नामक टीका लिखी जो संस्कृत गद्य में लिखी गणित एवं खगोलशास्त्र की प्रथम पुस्तक है।
5. आर्यभट की परिपाटी में ही उन्होने महाभास्करीय एवं लघुभास्करीय नामक दो खगोलशास्त्रीय ग्रंथ भी लिखें।
6. भास्कर ने (Differential Calculus) की नींव रखी, और (Differential Coefficient) का एक उदाहरण दिया जिसे आज हम Rolle's के प्रमेय के रूप में क्या जानते हैं।

6. महावीर(महावीराचार्य)(800ई-870 ई)

प्रारम्भिक जीवन–उनका जन्म कर्नाटक के गुलबर्गा में हुआ था।प्राचीन भारत के एक महान जैन गणितज्ञ थे।वे तत्कालीन राष्ट्र कूट शासक अमोघ वर्ष के दरबार में विद्वान थे।

प्रमुख ग्रंथ(पुस्तकें)–गणितसार संग्रह

कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ (योगदान)

1. दीर्घवृत्त की परिधि का सूत्र विकसित किया।
2. उन्होंने एक संख्या के वर्ग और घनमूलों का अनुमान लगाने के तरीके भी खोजे हैं।
3. n–घात वाले समीकरणों $ax^n=q$ तथा $a\frac{x^n-1}{x-1}=p$ का हल प्रस्तुत किये।
4. समान्तर श्रेणी के पदों के वर्ग वाली श्रेणी के द–पदों का योग निकाला।
5. महावीर ने चक्रीय चतुर्भुजों की भुजाओं (sides) की सहायता से विकर्णों (daigonals) की लम्बाई ज्ञात करने के लिये समीकरण दिये।
6. आपने बताया कि ऋणात्मक संख्याओं का प्रकृति में वर्गमूल नहीं होता है इससे काल्पनिक संख्याओं के विकास का पथ प्रशस्त हुआ।
7. उन्होंने शून्य (0)के गुणों को विस्तार से समझाया और उसका उपयोग बीजगणित में किया।उन्होंने स्पष्ट किया कि 'किसी भी संख्या को शून्य से भाग नहीं दिया जा सकता' ।

7. भास्कर द्वितीय भास्कराचार्य(1114ई– 1185ई)

प्रारम्भिक जीवन –उनका जन्म 1114 ई. में विज्जादविड़ा में हुआ था, जो आधुनिक कर्नाटक में बीजापुर के पास माना जाता है।इनके द्वारा रचित मुख्य ग्रन्थ सिद्धान्त शिरोमणि हैजिसमें लीलावती, बीजगणित, ग्रहगणित तथा गोलाध्याय नामक चार भाग हैं। ये चार भाग क्रमश: अंकगणित, बीजगणित, ग्रहों की गति से सम्बन्धित गणित तथा गोले से सम्बन्धित हैं। उन्हें मध्यकालीन भारत का सबसे महान गणितज्ञ कहा जाता है।

प्रमुख ग्रंथ (पुस्तकें)–करण कौतुहला, सिद्धान्त शिरोमणि

कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ (योगदान)

1. उन्हें मध्यकालीन भारत का सर्वश्रेष्ठ गणितज्ञ माना जाता है यह उज्जैन की वेधशाला के अध्यक्ष भी थे।
2. उन्होंने न्यूटन और लाइबनिज से पहले अवकलन गुणांक और अवकलन कलन तैयार किया था।
3. हिंदू खगोलविदों में पहली बार चाँद के समीकरण को दुनिया के समक्ष प्रस्तुत करने का गौरव भी भास्कराचार्य को ही प्राप्त हुआ था।
4. भास्कराचार्य ने अपने 'सिद्धांतशिरोमणि' ग्रंथ में पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के बारे में लिखा है कि 'पृथ्वी आकाशीय पदार्थों को विशिष्ट शक्ति से अपनी ओर खींचती है। इस कारण आकाशीय पिण्ड पृथ्वी पर गिरते हैं।' सर आइजक न्यूटन से 500 साल पहले, भास्कराचार्य गुरुत्वाकर्षण की खोज करने वाले पहले व्यक्ति थे।
5. भास्कराचार्य ने चक्रवाल पद्धति का भी आविष्कार किया था।
6. उनकी प्रसिद्ध कृति सिद्धांत शिरोमणि ने अंकगणित, बीजगणित आदि में विभिन्न सिद्धांतों के लिए आधार तैयार किया है।
7. चंद्रमा का एक दिन(रात), 15 पृथ्वी दिनों के बराबर होता है।

8.संगमग्राम के माधव (प्रसिद्ध केरलीय गणितज्ञ)(1350ई–1425ई)

प्रारम्भिक जीवन– उनका जन्म 1350 ई. कोचीन ((इरञ्ञलक्कुता) केरल में हुआ था।

प्रमुख ग्रंथ (पुस्तकें) –वेण्वारोह

कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ (योगदान)

1. बहुपद प्रसार की विधियों
2. अनंत श्रृंखला का अभिसरण

3. अनंत निरंतर भिन्न
4. आबीजीय समीकरणों को हल करने के लिए पुनरावृति का उपयोग।
5. ज्याश्रेणी एवं कोसाइन श्रेणी

$$\sin q = q - q^3/3! + q^5/5! - \ldots$$

$$\cos q = 1 - q^2/2! + q^4/4! - \ldots$$

माधव–ग्रेगरी श्रेणी

Pi के लिए माधव का सूत्र $\pi/4 = \Sigma^{\infty}_{n=0} \frac{(-1)^n}{2n+1}$

9. श्रीनिवास रामानुजन(22 दिसम्बर 1887 – 26 अप्रैल 1920)

प्रारम्भिक जीवन –उनका जन्म 22 दिसम्बर 1887 को कोयम्बटूर के ईरोड नाम के गांव में हुआ था।

वे एक महान भारतीय गणितज्ञ थे, जिनकी गिनती विश्व के सबसे प्रतिभाशाली गणितज्ञों में की जाती है। उन्होंने 32 साल की कम उम्र में उन्होंने गणित के 3,884 प्रमेयों का संकलन किया।

भारत सरकार ने उनके सम्मान में 2012 को 'राष्ट्रीय गणित दिवस' घोषित किया, जो हर वर्ष 22 दिसम्बर को मनाया जाता है।

कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ (योगदान)

1. रामानुजन ने पाई के लिए दूसरा सूत्र (सन् 1910 में) दिया था–

$$\pi = \frac{9801}{2\sqrt{2}\sum_{n=0}^{\infty}\frac{(4n)!}{(n!)^4}\times\frac{[1103+26390n]}{(4\times 99)^{4n}}}$$

2. रामानुजन संख्याएँ–'रामानुजन संख्या'उस प्राकृतिक संख्या को कहते हैं – जिसे दो अलग–अलग प्रकार से दो संख्याओं के घनों के योग द्वारा निरूपित किया जा सकता है।उदाहरण – 1729, 4104, 20683, 39312, 40033 आदि रामानुजन संख्याएं हैं। इन्हें हार्डी–रामानुजन संख्या भी कहते हैं।

3. रामानुजन के अन्य उल्लेखनीय योगदानों में हाइपर जियोमेट्रिक सीरीज, रीमान सीरीज, एलिप्टिक इंटीग्रल, उवबा थीटा फंक्शन, रामानुजन प्राइम और डाइवर्जेंट सीरीज का सिद्धांत।

4. रामानुजन ने जी. एच. हार्डी के साथ मिलकर वृत्त विधि का आविष्कार किया, जिसने 200 से आगे की संख्याओं के विभाजन का पहला सन्निकटन दिया।

5. गेम थ्योरी, प्राइम नंबर थ्योरी में उनका योगदान विशुद्ध रूप से अंतर्ज्ञान पर आधारित है।प्राइम नंबर थ्योरी का वर्तमान मे क्रिप्टोग्राफी, यादृच्छिक संख्या सृजन एवं त्रुटि का पता लगाना और सुधार करना ज्ञात करने मे किया जा रहा है।

6. उनका प्रसिद्ध 'रामानुजन नोटबुक' आज भी शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

7. हाल में इनके सूत्रों को क्रिस्टल–विज्ञान में प्रयुक्त किया गया है।

8. इन्होने शून्य और अनन्त को हमेशा ध्यान में रखा और इसके अंतर्सम्बन्धों को समझाने के लिए गणित के सूत्रों प्रतिपादित किया।

10. भारतीकृष्ण तीर्थ(14 मार्च 1884 – 2 फरवरी 1960)

प्रारम्भिक जीवन –उनका जन्म 14 मार्च 1884, तिन्नवेली (अब तमिलनाडु), भारत में हुआ था।एक महान भारतीय गणितज्ञ, वेदांत विद्वान, और शंकराचार्य थे, जिन्हें वेदिक गणित के जनक के रूप में जाना जाता है। इनका मूल नामवेणीकृष्ण शास्त्री था इन्होने गणित, संस्कृत, वेद, दर्शन, इतिहास, अंग्रेजी और विज्ञान में गहरी शिक्षा प्राप्त की। इन्होंने 1911 से 1918 के बीच, आठ वर्षों तक हिमालय में ध्यान एवं अध्ययन के माध्यम से प्राचीन वैदिक सूत्रों पर आधारित गणितीय तकनीकों को पुन: खोजा।

प्रमुख ग्रंथ (पुस्तकें) –'वंडर्स ऑफ वैदिक मैथेमेटिक्स'

कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ (योगदान)

1. वैदिक गणित नामक पुस्तक में 16 सूत्रों एवं 13 उपसूत्रों कीसहायता से गणित की जटिल संक्रियाओं (गुणन ,भाग, वर्ग, घन, गुणनखंड, महत्तम समापवर्तक, वर्गमूल, घनमूल आदि)को अत्यंत सरल, त्वरित गति से किए जाने की विधियों का उल्लेख है।
2. वैदिक गणित की सहायता से सरल, युगपत, द्विघात, घन, चतुर्घात , समीकरण को सरलता से हल किया जा सकता है।
3. वैदिक गणित की सहायता से अनंतस्पर्शी का समीकरण ज्ञात किया जा सकता है।
4. वैदिक गणित की सहायता से अवकल समीकरणों को सरलता से हल किया जा सकता है।
5. 1925 में उन्हेंगोवर्धन मठ, पुरीकाशंकराचार्यबनाया गया।उन्होंने विश्वभर में भारतीय संस्कृति और वेदांत का प्रचार किया।

11. डी.आर. कापरेकर(दत्तात्रेय रामचंद्र कापरेकर)

प्रारम्भिक जीवन –दत्तात्रेय रामचंद्र कापरेकर का जन्म1905 में दहानू में हुआ था।एक प्रसिद्ध भारतीय गणितज्ञ थे, जिन्होंने गणित को एक खेल और सौंदर्य के रूप में प्रस्तुत किया। उन्हें कापरेकर संख्या और कई अद्भुत गणितीय पहेलियों व संख्यात्मक गुणों की खोज के लिए जाना जाता है।उन्होने स्कूल में गणित शिक्षक के रूप में कार्य किया।

कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ (योगदान)

1. वह एक भारतीय मनोरंजक गणितज्ञ थे जो प्राकृतिक संख्याओं के कई वर्गों का वर्णन करते थे
2. उन्होंने कापरेकर संख्या (Kaprekar Number)की खोज की। संख्या, 6174, जिसे 'कापरेकर स्थिरांक'(Kaprekar Constant) भी कहा जाता है।

यह एक प्रसिद्ध प्रक्रिया से जुड़ी है, जिसेकापरेकर रूटीन कहते हैं:

संख्या 6174 को कापरेकर स्थिरांक (Kaprekar Constant) कहते हैं। इस संख्या का एक विशेष गुण है सर्वप्रथम हमें

(1) चार अंक की कोई भी संख्या लेना है, जिसके दो अंक भिन्न हों।

(2) संख्या के अंको को आरोही और अवरोही क्रम में लिखें ।इससे आपको दो संख्यायें मिलेंगी।

(3) अब बड़ी संख्या को छोटी से घटाएँ।

जो संख्या मिले इस पर पुन: क्रम संख्या 2 तथा 3 वाली प्रक्रिया दोहराएँ। इस प्रक्रिया को 'कापरेकर रूटीन(व्यवहार)' कहते हैं। कुछ निश्चित चरणों के बाद आपको संख्या 6174 मिलेगी। इसके साथ 'कापरेकर व्यवहार' अपनाने पर भी फिर यही संख्या मिलती है, इसीलिये इसे कापरेकर स्थिरांक कहते हैं ।

उदाहरण– हमने संख्या ली 3141 । अब प्रक्रिया क्रमांक 2 को दोहराने पर ऐसे क्रम चलेगा–

4311 – 1134 = 3177

7731 – 1377 = 6354

6543 – 3456 = 3087
8730 – 0378 = 8352
8532 – 2358 = 6174
7641 – 1467 = 6174

यह गणितीय प्रक्रिया इतनी आकर्षक और रहस्यमय है कि इसे अक्सर '6174 का जाद' कहा जाता है।

निष्कर्ष – इस शोध पत्र से हम इस निष्कर्ष निकाल सकते है कि आज के आधुनिक काल में हम गणित का जो स्वरूप देख रहे है इसके मूल में भारत की समृद्ध गणितीय ज्ञान परंपरा निहित हैभारतीय गणित की विशेषता इसकी मौलिकता, सूक्ष्मता और सार्वकालिकता में है। वैदिक सूत्रों में छिपी गणनात्मक क्षमताएँ, बौधायन और पिंगल जैसे ऋषियों के योगदान, और आर्यभट, ब्रह्मगुप्त तथा भास्कराचार्य जैसे महान गणितज्ञों का कार्य यह सिद्ध करता है कि भारत में गणितीय चिंतन अत्यंत उन्नत और वैज्ञानिक रहा है।

आज नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा को उसका महत्व एवं स्थान मिला है हमे विद्यार्थियों को भारतीय गणित ज्ञान परंपरा एवं भारतीय गणितज्ञों के योगदान को न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से, बल्कि एकजीवंत ज्ञान प्रणाली के रूप में पढ़ाए जाने की आवश्यकता है। इससे न केवल भारतीय विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व होगा, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी भारत के गणितज्ञों के योगदान को उचित स्थान प्राप्त होगा ।

अत: यह शोध स्पष्ट करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित एक अमूल्य धरोहर के रूप मे निहित है।इस शोध में हमारे देश के केवल कुछ ही गणितज्ञों के योगदान को शामिल किया गया है यदि विस्तारपूर्वक देखे तो अनेक ऐसे और भी गणितज्ञ हैं जिनके योगदान को केवल एक ही शोधपत्र में उल्लेख करना संभव नहीं है तथा उनका गणित के क्षेत्र में योगदान किसी भी दृष्टि से कम नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Vedic Mathematics and the Mathematics of Vedic Period-An Analysis and Application by Dr. V. K. Gupta, Veda- Vidya, An international Refereed Research Journal, Vol.XXVI, July-December 2015.
2. महान भारतीय गणितज्ञ रामानुजन, डॉ. वी. के. गुप्ता, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास , नई दिल्ली।
3. आर्यभट्ट कृत आर्यभटीय दकेदारनाथ शुक्ल।
4. संसार के कई महान गणितज्ञ–गुणाकर मुले, वजकमल प्रकाशन।
5. पाटीगणित– संपादन एवं अनुवाद दप्रो कृपाशंकर शुक्ल, लखनऊ 1959.
6. त्रिशतिका– संपादन एवं अनुवाद दडॉ सागूमन शुक्ल, लखनऊ 1959।
7. विश्व के महान गणितज्ञ– राजेश कुमार ठाकुर, दिल्ली।
8. 'भारतीय गणितकार: बौधायन' द्धारा रामजी त्रिपाठीhttps://hi.wikipedia.org/wiki/बौधायन.
9. भारत के प्रमुख गणिताचार्य, लेखक देवी प्रसाद वर्मा, प्रकाशक विद्या भारती संस्कृति विश्व संस्थान, कुरुक्षेत्र.
10. संसार के महान गणितज्ञ, गुणाकर मुले (2008).
11. महावीराचार्य एक समीक्षात्मक अध्ययन, अनुपम जैन एवं सुरेश चंद्र अग्रवाल (1985).
12. महावीराचार्य की जैन गणित को देन, एम.श्रीलाल अग्रवाल (1964).
13. गणित का शिक्षण शास्त्र (भाग ८), शिक्षक शिक्षा विभाग, शिक्षाशास्त्र विद्या शाखा उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी
14. https://en.wikipedia.org/wiki/Baudhayana_sutras?utm_source=chatgpt.com
15. www.en.wikipedia.org/wiki/history_of_mathematics
16. https://en.wikipedia.org/wiki/दत्तात्रय रामचन्द्र कर्पेकर

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

A Study of Creativity Among Senior Secondary Students in Government and Private Schools

Dr. Sheela Salvi* **Surendra Malvi****

*Assistant Professor, Pacific University, Udaipur (Raj.) INDIA
** PhD scholar, Pacific University, Udaipur (Raj.) INDIA

Abstract: The present study investigates the creativity levels of senior secondary students studying in government and private schools. A sample of 100 students (50 from government schools and 50 from private schools) was selected randomly. A self constructed creativity scale was used to measure their creative thinking. The study aimed to compare creativity scores based on the type of school and gender. The results revealed that students from private schools exhibited slightly higher creativity levels compared to those from government schools, while gender differences were found to be insignificant.
Keywords: Creativity, Senior Secondary Students, Government Schools, Private Schools, Gender.

Introduction - Creativity is a vital skill in the 21st century, enabling students to solve problems, think innovatively, and adapt to new situations. Schools play an important role in nurturing creativity. The type of school environment-government or private-can influence the opportunities and encouragement students receive to express creativity. This study explores how school type affects creativity among senior secondary student.

Objectives of the Study:

1. To assess the creativity levels of senior secondary students.
2. To compare the creativity of students studying in government and private schools.
3. To study the gender-wise difference in creativity.

Hypotheses:

1. There is no significant difference in creativity between government and private school students.
2. There is no significant difference in creativity between male and female students.

Methodology:

Sample: 100 senior secondary students (5) from government schools and 50 from private schools).

Tool Used: Self-developed Creativity Scale including dimensions like originality, fluency, and flexibility.

Statistical Techniques: Mean, Standard Deviation, and t-test were applied for data analysis

Data Analysis and Interpretation: To examine the differences in creativity among senior secondary students based on the type of school (government/private) and gender, statistical analysis was performed using Mean, Standard Deviation (SD), and t-test.

Table 1: Comparison of Creativity between Government and Private School Students

Group	N	Mean creativity score	Standard deviation SD	t-value	Signif-icance
Govt. School	50	68.45	7.92	2.31	0.05 level
Private School	50	72.90	8.15		

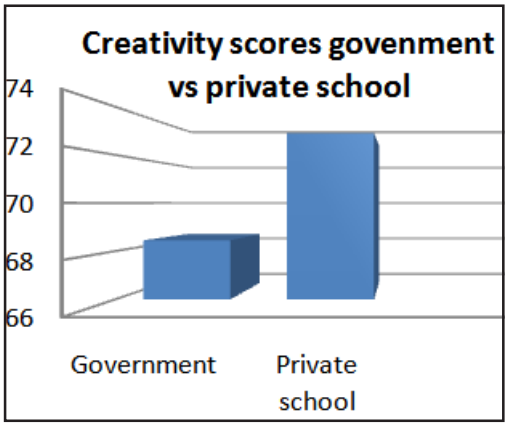

The calculated 1-value (2.31) is greater than the critical value at the 0.05 level of significance, indicating a significant difference in creativity between government and private school students. Private school students scored higher in creativity, suggesting a more encouraging environment for creative development

Table 2: Comparison of Creativity between Male and Female Students

Group	N	Mean creativity	Standard deviation	t-value	Signif-icance
Male	50	70.20	8.10	0.56	Not significant
Female	50	71.15	7.85		

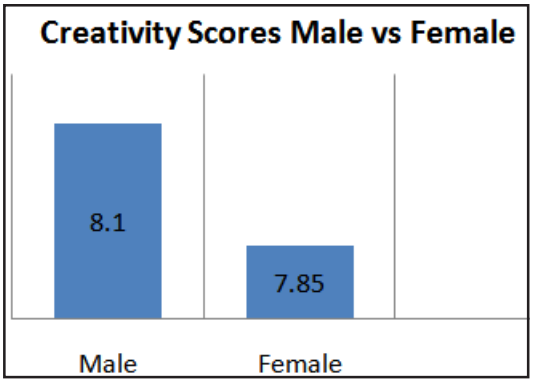

Female Interpretation : The t-value (0.56) is less than the critical value at the 0.05 level, which means there is nosignificant difference in creativity between male and female students. Both genders show nearly equal creative abilities.

Conclusion: The study concludes that the type of school has a mild impact on student creativity, with private school students showing slightly better performance. However, gender does not play a significant role in creative development at this level.

Educational Implications: Government schools should enhance resources and offer more opportunities for creative expression.

Teachers should use innovative teaching strategies in both types of schools to nurture creativity.

Equal emphasis should be given to developing creativity among both male and femaleStudents

References: -

1. Guilford J. P. (1950) Creativity American Psychologist, 5(9), 444-454
2. Torrance. E. P. (1974). Torrance Tests of Creative Thinking. Scholastic Testing Service.
3. Runco, M. A. & Acar, 5. (2012). Divergent Thinking as an indicator of Creative Potential. Creativity Research Journal, 24(1), 66-75
4. Sternberg, R. J. (2006). The Nature of Creativity. Creativity Research Journal, 18(1) 87-98.
5. Mangal, S. K. & Mangal, S. (2013). Essentials of Educational Psychology. PHI Leaming.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारत में जाति और समुदाय की पहचान को बनाए रखने में विवाह की भूमिका

डॉ. योगेन्द्र जैन*

* अतिथि विद्वान (समाजशास्त्र) शासकीय महाविद्यालय, शामगढ़ (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारत में विवाह जाति, समुदाय, धर्म और सामाजिक मानदंडों के एक जटिल मैट्रिक्स में गहराई से समाया हुआ है। कई पश्चिमी समाजों के विपरीत जहाँ विवाह को मुख्य रूप से एक व्यक्तिगत या रोमांटिक मिलन के रूप में देखा जाता है, भारत में यह अक्सर जाति और समुदाय की सीमाओं को बनाए रखने के लिए डिजाइन किए गए एक सामाजिक-सांस्कृतिक तंत्र के रूप में कार्य करता है। यह शोध पत्र भारत में जाति और समुदाय की पहचान को मजबूत करने वाली एक मौलिक संस्था के रूप में विवाह की भूमिका का पता लगाता है, जिसमें विद्वानों के स्रोतों, सरकारी रिपोर्टों और समाजशास्त्रीय केस स्टडीज की एक श्रृंखला से द्वितीयक डेटा का उपयोग किया गया है। यह समझने का प्रयास करता है कि कैसे वैवाहिक प्रथाएँ, विशेष रूप से अंतर्विवाह (अपने ही समूह के भीतर विवाह), एक आधुनिक, संवैधानिक रूप से समतावादी समाज में भी जाति पदानुक्रम और सामुदायिक अलगाव की निरंतरता में योगदान करती हैं।

धार्मिक और ऐतिहासिक स्तरीकरण में निहित जाति व्यवस्था, भारतीय सामाजिक जीवन के कई पहलुओं को प्रभावित करती है, जिसमें विवाह इसके सबसे मजबूत स्तंभों में से एक है। मनुस्मृति युग से ही जातिगत अंतर्विवाह के सिद्धांत पर जोर दिया जाता रहा है और सामाजिक रीति-रिवाजों में संस्थागत रूप दिया गया है, जो यह सुनिश्चित करता है कि जाति की सीमाएँ अभेद्य रहें। अपनी जाति के भीतर विवाह करना शुद्धता बनाए रखने, सांस्कृतिक अनुष्ठानों को संरक्षित करने, संपत्ति और वंश की रक्षा करने और समूह की एकजुटता को मजबूत करने के तरीके के रूप में देखा जाता है। समुदाय के बुजुर्ग, परिवार और सामाजिक मानदंड इस परंपरा को बनाए रखने के लिए मिलकर काम करते हैं, जो सामाजिक पुनरुत्पादन और पहचान संरक्षण के एक उपकरण के रूप में कार्य करता है। यह शोधपत्र जाति-आधारित विवाह प्रथाओं में रुझानों की पहचान करने के लिए भारत की जनगणना, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFMS), अकादमिक शोध (जैसे, एम.एन. श्रीनिवास, दीपांकर गुप्ता, पेट्रीसिया उबेरॉय द्वारा किए गए कार्य) और समकालीन सामाजिक शोध लेखों के आंकड़ों की व्यवस्थित रूप से जाँच करता है।

शब्द कुंजी – जाति प्रथा, सगोत्र विवाह, सामुदायिक पहचान, जातिगत अंतर्विवाह।

प्रस्तावना – एक सामाजिक संस्था के रूप में विवाह भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक ढांचे में एक केंद्रीय स्थान रखता है। दो व्यक्तियों के बीच एक व्यक्तिगत संबंध से कहीं अधिक, यह एक सामूहिक, अक्सर रणनीतिक व्यवस्था है जो पारिवारिक गठबंधन निर्माण से लेकर सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं की निरंतरता तक कई कार्य करती है। भारतीय समाज में विवाह द्वारा निभाई जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण भूमिकाओं में से एक जाति और सामुदायिक पहचान को सुदृढ़ और स्थायी बनाना है। तेजी से आधुनिकीकरण, बढ़ते शहरीकरण और व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए बढ़ती वकालत के बावजूद, विवाह निर्णयों पर जाति का प्रभाव शक्तिशाली और व्यापक बना हुआ है।

भारतीय समाज में, जाति व्यवस्था ऐतिहासिक रूप से सामाजिक जीवन को व्यवस्थित करने, व्यवसाय, स्थिति और यहां तक कि पारस्परिक संबंधों को निर्धारित करने के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य करती रही है। यह स्तरीकरण, जो सदियों से गहराई से संस्थागत है, अपनी संरचना और सुसंगतता को बनाए रखने के लिए अंतर्विवाही विवाह – एक जाति समूह के भीतर विवाह करने की प्रथा – पर बहुत अधिक निर्भर करता है। अंतर्विवाह ने यह सुनिश्चित किया है कि जाति की सीमाएँ बरकरार रहें, जिससे सामाजिक पदानुक्रमों की निरंतरता और पीढ़ियों में सांस्कृतिक मानदंडों, अनुष्ठानों और मूल्यों का संचरण हो सके। धार्मिक रीति-रिवाजों, पितृसत्तात्मक मूल्यों और क्षेत्रीय परंपराओं के साथ जाति के अंतर्संबंध ने एक जटिल और बहुस्तरीय मैट्रिक्स को जन्म दिया है, जहां विवाह पहचान संरक्षण के एक महत्वपूर्ण तंत्र के रूप में कार्य करता है।

भारत में विवाह प्रथाओं की ऐतिहासिक जांच से पता चलता है कि जाति के मानदंड कितने गहरे हैं। मनुस्मृति जैसे प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों में स्पष्ट रूप से नियम दिए गए थे कि कौन किससे विवाह कर सकता है, जिसमें जाति की शुद्धता बनाए रखने पर जोर दिया गया था। सामाजिक बहिष्कार की धमकी देकर विचलन को हतोत्साहित किया जाता था, और कई मामलों में, अंतर-जातीय विवाह के लिए दंड बहुत कठोर था, जिसमें बहिष्कार से लेकर हिंसा तक शामिल थी। इन धार्मिक और सांस्कृतिक निषेधाज्ञाओं को बाद में औपनिवेशिक प्रशासकों द्वारा संहिताबद्ध किया गया, जिन्होंने जाति को शासन और जनगणना वर्गीकरण के लिए एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया। इस प्रकार, पारंपरिक और आधुनिक दोनों संस्थाओं ने भारत में वैवाहिक प्रथाओं के मूल ढांचे में जाति को समाहित करने में भूमिका निभाई है।

स्वतंत्रता के बाद भारत ने एक प्रगतिशील संविधान अपनाया जिसने जाति-आधारित भेदभाव को गैरकानूनी घोषित किया और समानता को बढ़ावा दिया। हालाँकि, कानूनी और राजनीतिक ढाँचे सामाजिक दृष्टिकोण को बदलने में केवल आंशिक रूप से ही सफल रहे हैं। विवाह, एक निजी और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र होने के कारण, प्रभावी राज्य हस्तक्षेप के दायरे से काफी हद तक बाहर रहा है। विशेष विवाह अधिनियम (1954) जैसे कानून अंतर-जातीय और अंतर-धार्मिक विवाह को सक्षम करने के लिए बनाए गए थे, लेकिन उनके कार्यान्वयन को समाज और प्रशासनिक तंत्र दोनों से लगातार प्रतिरोध का सामना करना पड़ा है। जाति के मानदंडों की अवहेलना करने वाले जोड़ों को अक्सर भारी पारिवारिक और सामाजिक दबाव का सामना करना पड़ता है, और चरम मामलों में, सम्मान-आधारित हिंसा के अधीन होते हैं।

इन चुनौतियों के बावजूद, बदलाव के संकेत मिल रहे हैं, खास तौर पर समाज के शहरी और शिक्षित वर्गों में। प्रेम विवाहों में वृद्धि, गतिशीलता में वृद्धि और शिक्षा के प्रसार ने जातिगत मानदंडों को चुनौती देना शुरू कर दिया है। फिर भी, ये तथाकथित आधुनिक विवाह भी अक्सर अनजाने में जातिगत प्राथमिकताओं को दर्शाते हैं। अध्ययनों से पता चला है कि शहरी युवाओं में भी जो प्रेम विवाह करते हैं, उनमें से एक महत्वपूर्ण अनुपात अपनी ही जाति से साथी चुनते हैं। वैवाहिक वेबसाइटें, जो विवाह-सम्बन्धी विवाह के लिए एक लोकप्रिय माध्यम के रूप में उभरी हैं, नियमित रूप से जाति को प्राथमिक खोज फिल्टर के रूप में शामिल करती हैं, जो आधुनिक तकनीक की आड़ में अंतर्जातीय विवाह प्रथाओं को मजबूत करती हैं।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFMS-5), भारत की जनगणना और विभिन्न शैक्षणिक अध्ययनों जैसे द्वितीयक डेटा स्रोत इस बात को पुष्ट करते हैं कि जाति विवाह में प्रमुख भूमिका निभाती है। NFMS-5 के आंकड़ों के अनुसार, भारत में केवल 5.8% विवाह अंतरजातीय हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में यह संख्या और भी कम है, जहाँ सामुदायिक निगरानी और रिश्तेदारी नेटवर्क अधिक मजबूत हैं। एम.एन. श्रीनिवास और दीपांकर गुप्ता जैसे शैक्षणिक शोधकर्ताओं ने यह सिद्धांत बनाया है कि जातिगत अंतर्विवाह न केवल सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए बल्कि सांस्कृतिक पूंजी, आर्थिक संपत्ति और पारिवारिक सम्मान को भी संचारित करने के लिए कार्य करता है।

विवाह के माध्यम से जाति संरक्षण का लिंग आधारित पहलू एक और महत्वपूर्ण आयाम है। महिलाओं को अक्सर परिवार और जाति के सम्मान की वाहक के रूप में देखा जाता है, और उनके वैवाहिक विकल्पों पर कड़ी निगरानी और नियंत्रण रखा जाता है। दहेज, कन्यादान (बेटी का उपहार) और अरेंज मैरिज जैसी प्रथाएं महिलाओं के वस्तुकरण और पितृसत्तात्मक और जाति-आधारित पदानुक्रम को बनाए रखने में उनकी भूमिका को दर्शाती हैं। उच्च जाति की महिलाओं और निम्न जाति के पुरुषों के बीच अंतर-जातीय विवाहों को सबसे कठोर प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप अक्सर सम्मान हत्या या जबरन अलगाव होता है। ये प्रथाएं बताती हैं कि सामाजिक पदानुक्रम को बनाए रखने के लिए जाति और लिंग उत्पीड़न कैसे एक दूसरे से जुड़ते हैं।

क्षेत्रीय और धार्मिक विविधताएं भी इस बात को आकार देती हैं कि विवाह जाति और समुदाय की पहचान को बनाए रखने के लिए एक उपकरण के रूप में कैसे कार्य करता है। उत्तारी भारत में, विशेष रूप से हरियाणा, उत्तार प्रदेश और राजस्थान जैसे राज्यों में, जाति-आधारित पंचायतें (खाप पंचायतें) विवाह गठबंधनों को सक्रिय रूप से विनियमित करती हैं और सामाजिक प्रतिबंधों के माध्यम से सजातीय विवाह को लागू करती हैं। दक्षिण भारत में, हालांकि थोड़ा अधिक उदार दृष्टिकोण है, लेकिन वैवाहिक निर्णयों में जातिगत विचार अभी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मुसलमानों, ईसाइयों और सिखों में -जाति के धार्मिक विरोध के बावजूद - सामाजिक प्रथाएँ अक्सर हिंदू जाति पदानुक्रमों को प्रतिबिंबित करती हैं, जिसमें बिरादरियों, संप्रदायों या जाति-समतुल्य समूहों के भीतर सजातीय विवाह का अभ्यास किया जाता है।

प्रौद्योगिकी ने जाति-सचेत वैवाहिक प्रथाओं में एक नया आयाम जोड़ा है। शादी.काम, भारत मैट्रिमोनी और जीवनसाथी जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म उपयोगकर्ताओं को जाति, उप-जाति और सामुदायिक संबद्धता के आधार पर साथी खोजने की अनुमति देते हैं। इन प्लेटफॉर्म को प्रगतिशील के रूप में विपणन किया जाता है, लेकिन अक्सर पारंपरिक प्राथमिकताओं को मजबूत करते हैं। यहां तक कि डेटिंग ऐप भी इसी तरह के रुझान दिखाते हैं, जिसमें उपयोगकर्ता सांस्कृतिक और जाति-आधारित पहचान के आधार पर संभावित मैचों को फिल्टर करते हैं। जाति मानदंडों का यह डिजिटल सुदृढ़ीकरण तकनीकी परिवर्तन के सामने पारंपरिक संरचनाओं की अनुकूलनशीलता को दर्शाता है। फिर भी, जातिगत सजातीय विवाह के प्रति प्रतिरोध बढ़ रहा है, जिसका नेतृत्व नागरिक समाज संगठन, युवा आंदोलन और अंतरजातीय जोड़े स्वयं कर रहे हैं। साहित्य, सिनेमा और सोशल मीडिया भी रूढ़ियों को चुनौती देने और जाति-तटस्थ प्रेम और विवाह के विचार को बढ़ावा देने में तेजी से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। 'सैराट' और 'आर्टिकल 15' जैसी फिल्मों में अंतरजातीय संबंधों के चित्रण ने सार्वजनिक बहस को जन्म दिया है और विशेष रूप से युवा आबादी के बीच जागरूकता बढ़ाई है।

शोध उद्देश्य - भारत में जाति और समुदाय की पहचान को बनाए रखने में विवाह की भूमिका का अध्ययन करना।

शोध पद्धति - यह अध्ययन द्वितीयक डेटा विश्लेषण पर आधारित गुणात्मक शोध डिजाइन का उपयोग करता है। यह समझने के लिए विभिन्न डेटा स्रोतों की खोज की गई कि भारत में जाति और समुदाय की पहचान को संरक्षित करने में विवाह किस प्रकार योगदान देता है। राष्ट्रीय सर्वेक्षण डेटा, जनसांख्यिकीय रुझानों और मौजूदा विद्वानों की चर्चाओं पर सामग्री विश्लेषण किया गया। जाति-आधारित वैवाहिक प्रथाओं के आसपास प्रचलित पैटर्न और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों की व्याख्या करने के लिए निष्कर्षों को विषयगत रूप से वर्गीकृत किया गया था।

शोध विश्लेषण - यह शोध विश्लेषण करता है कि भारत में विवाह किस तरह जाति और समुदाय की पहचान को बनाए रखने के लिए एक महत्वपूर्ण तंत्र के रूप में कार्य करना जारी रखता है। द्वितीयक डेटा स्रोतों, ऐतिहासिक अंतर्दृष्टि और समाजशास्त्रीय सिद्धांतों से आकर्षित होकर, विश्लेषण सामाजिक समानता को बढ़ावा देने के संवैधानिक और कानूनी प्रयासों के बावजूद जाति पदानुक्रम को मजबूत करने में अंतर्विवाह की निरंतर भूमिका को रेखांकित करता है।

भारत में विवाह केवल एक व्यक्तिगत निर्णय नहीं है यह एक रणनीतिक सामाजिक प्रथा है जो बड़े जाति ढांचे में गहराई से अंतर्निहित है। ऐतिहासिक रूप से धार्मिक निषेधाज्ञाओं में निहित, विशेष रूप से मनुस्मृति जैसे ग्रंथों में, अंतर्विवाह की परंपरा को जाति शुद्धता और सामाजिक व्यवस्था बनाए

रखने के साधन के रूप में स्थापित किया गया था। यह प्रणाली, जिसे बाद में औपनिवेशिक प्रशासनिक प्रथाओं द्वारा मजबूत किया गया, स्वतंत्रता के बाद के भारत में भी लचीली बनी हुई है।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFMS-5) जैसे द्वितीयक डेटा से सबसे चौंकाने वाले खुलासे में से एक यह है कि दशकों के आधुनिकीकरण, शिक्षा और शहरीकरण के बावजूद, 90% से अधिक विवाह अभी भी एक ही जाति में होते हैं। यह दर्शाता है कि जातिगत अंतर्विवाह आबादी में गहराई से समाया हुआ है। जबकि शहरी और शिक्षित समूह थोड़े विचलन दिखाते हैं, बहुसंख्यक अभी भी पारंपरिक मानदंडों के अनुरूप हैं, अक्सर पारिवारिक दबाव और सामाजिक अपेक्षाओं के कारण।

शोध इस बात पर प्रकाश डालता है कि विवाह न केवल सामाजिक पुनरुत्पादन के साधन के रूप में कार्य करता है, बल्कि पीढ़ियों में सांस्कृतिक मूल्यों, आर्थिक संसाधनों और प्रतीकात्मक पूंजी को प्रसारित करने का एक तरीका भी है। एम.एन. श्रीनिवास और दीपांकर गुप्ता जैसे विद्वानों ने लंबे समय से इस बात पर जोर दिया है कि जाति न केवल सामाजिक स्तरीकरण की एक प्रणाली है, बल्कि सांस्कृतिक पहचान का एक रूप भी है, जिसे विवाह जैसे अनुष्ठानों और प्रथाओं के माध्यम से मजबूत किया जाता है। लिंग गतिशीलता इस तस्वीर को और जटिल बनाती है। महिलाओं को, विशेष रूप से, जाति सम्मान के वाहक के रूप में देखा जाता है, जिससे उनके वैवाहिक विकल्प अत्यधिक विनियमित होते हैं। दहेज, तयशुदा विवाह और अंतरजातीय विवाह पर प्रतिबंध जैसी प्रथाएँ ऐसे उपकरण हैं जिनके माध्यम से पितृसत्तात्मक और जातिगत मानदंड पदानुक्रमिक संरचनाओं को बनाए रखने के लिए एक दूसरे से जुड़ते हैं। उच्च जातियों की महिलाओं और निचली जातियों के पुरुषों को शामिल करने वाले अंतरजातीय विवाहों को सबसे कठोर प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ता है, जो अक्सर सम्मान हत्याओं या सामाजिक बहिष्कार के रूप में प्रकट होता है। मैट्रिमोनियल वेबसाइट और डेटिंग ऐप जैसी तकनीकी प्रगति ने विरोधाभासी रूप से जाति चेतना को मजबूत किया है। जबकि ये प्लेटफॉर्म स्वतंत्रता और विकल्प का भ्रम प्रदान करते हैं, उनमें अक्सर जाति फिल्टर और समुदाय-विशिष्ट श्रेणियाँ शामिल होती हैं जो अंतर्जातीय वरीयताओं को बनाए रखती हैं। इस प्रकार, पारंपरिक मानदंडों को एक नए आवरण के तहत बनाए रखने के लिए आधुनिक उपकरणों का उपयोग किया जा रहा है।

धार्मिक और क्षेत्रीय मतभेद भी जाति-आधारित वैवाहिक प्रथाओं को प्रभावित करते हैं। उत्तर भारत में, खाप पंचायतें विवाह मानदंडों को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जबकि दक्षिण भारत में, हालाँकि अधिक उदार, जाति अभी भी विवाह-सम्बन्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मुस्लिम, ईसाई और सिख जैसे गैर-हिंदू समुदाय भी जाति-समतुल्य पदानुक्रम को दर्शाते हैं, जो अपने-अपने संप्रदायों और बिरादरियों के भीतर सजातीय विवाह को बनाए रखते हैं।

इन जड़ जमाए हुए सिस्टम के बावजूद, नागरिक समाज, अंतरजातीय जोड़ों और युवा वकालत समूहों के नेतृत्व में प्रतिरोध बढ़ रहा है। लव कमांडो और धनक ऑफ ह्यूमैनिटी जैसी पहल जाति की सीमाओं को चुनौती देने वाले जोड़ों को महत्वपूर्ण समर्थन प्रदान करती हैं। लोकप्रिय संस्कृति – फिल्मों, साहित्य और सोशल मीडिया के माध्यम से – भी सार्वजनिक प्रवचन को बदलना शुरू कर दिया है, जिससे जाति-तटस्थ प्रेम और विवाह के आख्यानों के लिए जगह बन रही है।

हालांकि, बदलाव धीमा है। सर्वेक्षणों से पता चलता है कि अंतरजातीय विवाह के लिए सैद्धांतिक समर्थन बढ़ रहा है, लेकिन वास्तविक अभ्यास काफी पीछे है। विश्वास और व्यवहार के बीच यह अंतर भारतीय समाज में जाति चेतना की गहरी जड़ें दर्शाता है।

संक्षेप में, विश्लेषण पुष्टि करता है कि भारत में विवाह जाति और सामुदायिक पहचान को बनाए रखने का एक प्राथमिक साधन बना हुआ है। जबकि कुछ बदलाव दिखाई दे रहे हैं, खासकर युवाओं और शहरी क्षेत्रों में, समग्र प्रवृत्ति सजातीय विवाह के पक्ष में बनी हुई है। स्थायी परिवर्तन के लिए न केवल कानूनी सुधारों की आवश्यकता होगी, बल्कि व्यापक सांस्कृतिक बदलाव की भी आवश्यकता होगी जो जाति-आधारित पहचान के मूलभूत तर्क को चुनौती दे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. National Family Health Survey (NFHS-5), 2019–2
2. Uberoi, Patricia. Family, Kinship and Marriage in India. Oxford University Press, 1993.
3. Srinivas, M.N. Social Change in Modern India. Orient Longman, 1966.
4. Gupta, Dipankar. Interrogating Caste. Penguin Books, 2000.
5. Sharma, Ursula. Caste. Open University Press, 1999.
6. Government of India. Census Reports (2011).
7. Sharma, K. (2016). "Caste and Marriage: Interrogating the Patterns of Continuity and Change." Economic and Political Weekly.
8. Indian Journal of Psychology and Education (2024). "Relationship among Caste Identity, Chastity Beliefs, and Marriage Practices.https://ijip.in/wp-content/uploads/2024/09/18.01.230.20241203.pdf
9. Journal of International Women's Studies. "Insidious Interlocking of Gender and Caste: Consequences of Endogamy in India. https://vc.bridgew.edu/jiws/vol25/iss1/15/

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Leadership in Inclusive Education: Understanding the Perspectives of School Principals

Dipteshwari Rathore* Dr. Surekha Jain**

*PhD Research Scholar, Vikram University, Ujjain (M.P.) INDIA
** Principal, Maharaja College, Vikram University, Ujjain (M.P.) INDIA

Abstract : Inclusive education seeks to incorporate students with disabilities into conventional schooling by guaranteeing equitable access to educational opportunities. Although regulations like India's National Education Policy (NEP) 2020 and the Rights of Persons with Disabilities Act, 2016, advocate for inclusive education, their execution primarily relies on school leadership. This study examines the role of school principals in promoting inclusive education, emphasizing their duties, problems, and strategies for cultivating an inclusive school climate. The study employs qualitative interviews with school administrators to identify critical aspects affecting inclusive education, such as leadership strategies, teacher assistance, resource limitations, and community involvement. Research indicates that although administrators act as primary proponents of inclusion, they frequently encounter obstacles like insufficient teacher training, opposition from stakeholders, and inadequate infrastructure. Innovative leadership tactics, collaborative teacher training, and partnerships with external organizations have shown to be beneficial solutions. The research highlights the necessity for policy-oriented support mechanisms to enable school administrators in promoting inclusive education. Recommendations encompass improved professional development initiatives, augmented funding, and intensified stakeholder involvement to reconcile the disparity between policy and practice.
Keywords: Inclusive Education, School Leadership, Children with Disabilities, Policy Implementation, School Principals, India.

Introduction - Inclusive education is a universally acknowledged methodology that prioritizes equitable learning opportunities for all students, including those with impairments, in mainstream educational environments (UNESCO, 2020). This concept seeks to eliminate obstacles that hinder students with disabilities from fully engaging in academic and social activities with their classmates (Ainscow, 2020). In India, the National Education Policy (NEP) 2020 and the Rights of Persons with Disabilities Act, 2016, underscore the significance of inclusive education by requiring equitable access and provisions for students with special needs (Ministry of Education, 2020). Notwithstanding these progressive regulations, their implementation at the school level predominantly relies on the leadership and dedication of school principals.

School principals are crucial in advancing inclusive education through the execution of policies, the cultivation of an inclusive school culture, and the provision of sufficient teacher training and resource distribution (Sharma &Salend, 2016). Their leadership determines the degree to which inclusive education is adopted in schools, serving as the principal connection between national policy and classroom practices (Forlin et al., 2019). Principals frequently face considerable obstacles, such as opposition from educators and parents, insufficient resources, and a deficiency in specialized training (Mahapatra, 2021). Comprehending their viewpoints and experiences is crucial for recognizing the obstacles and potential for inclusive education within the present educational framework.

This study investigates the ideas underpinning inclusive education by analysing the roles and obstacles encountered by school principals in executing inclusive practices. The research, conducted via qualitative interviews with school principals, identifies critical aspects including leadership methods, teacher support, community engagement, and infrastructural limitations. This study seeks to enhance the debate on inclusive education by providing insights on how school administrators may cultivate a more supportive and effective learning environment for students with disabilities.

Literature Review

Inclusive education has achieved worldwide acknowledgment as a core tenet of egalitarian schooling, guaranteeing that children with disabilities have access to the same educational opportunities as their counterparts. The UN Convention on the Rights of Persons with Disabilities (CRPD) emphasizes the imperative for inclusive education systems that cater to varied learning

requirements (Bedi & Lafrance, 2023). In India, legislation like the Rights of Persons with Disabilities Act, 2016, and the National Education Policy (NEP) 2020 have established ambitious objectives for enhancing educational inclusivity. Nonetheless, despite these policies, the execution of inclusive education is inconsistent across schools due to systemic obstacles, including infrastructural limits, teacher readiness, and leadership deficiencies (Bhan &Panshikar, 2023).

A primary obstacle to inclusive education is school readiness. Research conducted by Bhan and Panshikar (2023) in Tripura, a northeastern state of India, indicates that numerous schools are deficient in critical physical infrastructure, qualified educators, and sufficient financial resources to properly adopt inclusive policies. Educational institutions in rural and undeveloped areas face considerable challenges due to a lack of essential resources, hindering the integration of students with disabilities into mainstream classrooms. Krishan and Sharma (2023) underscore a significant deficiency in the awareness of Universal Design for Learning (UDL) among general educators in Himachal Pradesh. Universal Design for Learning (UDL) is a framework that facilitates the development of curriculum tailored to diverse learning abilities; nevertheless, the majority of educators are not acquainted with its concepts, hence constraining its implementation in educational institutions. These findings demonstrate that, despite robust policy mandates, insufficient readiness at the institutional level persists in obstructing inclusive education in India.

The role of school leadership is a crucial aspect affecting the success of inclusive education. Principals have a crucial role in executing inclusive policies, cultivating school culture, and guaranteeing that teachers obtain sufficient assistance to effectively manage diverse classes (Sarikha Srinivasavarathan& Rajendran, 2023). Research indicates that their ability to spearhead inclusive education initiatives is frequently hindered by structural challenges. In numerous Indian schools, the lack of principal vacancies, restricted autonomy, and inadequate training diminish the capacity of school leaders to advocate for inclusion successfully. Moreover, Gale et al. (2022) assert that leadership involvement, in conjunction with continuous teacher development and robust stakeholder collaboration, enhances the execution of inclusive practices. This indicates that principals who prioritize inclusive education through systematic policy execution, teacher mentorship, and community collaboration significantly contribute to cultivating an inclusive school climate.

Teacher training and attitudes are equally crucial in influencing the results of inclusive education. Research indicates that educators' views and readiness significantly affect their capacity to assist children with impairments (Sharma et al., 2022). Numerous educators in India continue to possess deficit-oriented perspectives on disability, frequently viewing children with impairments as necessitating specialized environments instead of inclusion in general classes (Taneja-Johansson et al., 2021). Mathur (2022) emphasizes that although initiatives like the Right to Education (RTE) Act have augmented the enrollment of students with disabilities, educators frequently lack the requisite skills and confidence to execute inclusive teaching methodologies. Likewise, Ahmed et al. (2022) discovered a deficiency in structured teacher professional development programs centered on disability-inclusive education, especially in low- and middle-income areas. This leads to educators feeling inadequately prepared to address the varied requirements of kids with disabilities, hence strengthening opposition to inclusion initiatives.

In addition to teacher preparedness, structural obstacles like insufficient infrastructure, accessibility constraints, and societal perceptions further hinder the execution of inclusive education. Aruldas et al. (2023) conducted a study in Tamil Nadu that underscored substantial obstacles to educational access for children with impairments. They discovered that physical inaccessibility, insufficient assistive technology, and adverse attitudes from both educators and peers posed substantial obstacles to inclusive education. Fernandes (2022) challenges the latent ableism in Indian education systems, contending that although inclusion is frequently touted as a policy objective, children with disabilities persistently encounter exclusionary practices in the classroom. This highlights a broader concern regarding the conceptualization of inclusive education, viewing it as a theoretical ideal rather than a practical, well-supported endeavour.

A significant difficulty is the absence of children with disabilities from large-scale assessments and mainstream curriculum, which exacerbates their educational marginalization. Sarkar (2023) challenges India's educational systems for reinforcing ableist norms, contending that current frameworks inadequately address the varied needs of students with disabilities. This results in these pupils frequently being excluded from standardized examinations, hindering their educational advancement. Ramchand (2021) emphasizes that, although India's endeavours to conform to global commitments like the Sustainable Development Goals, a disparity persists between policy goals and actual classroom conditions. Educators, frequently encumbered by substantial class numbers and inflexible curricula, find it challenging to serve students with impairments in the absence of supplementary institutional assistance.

Not with standing these limitations, numerous research indicate promising solutions for enhancing inclusive education. Gale et al. (2022) underscore the significance of cultivating a cooperative strategy among school leadership, educators, and external entities, including NGOs and special education professionals. Their study emphasizes effective solutions that incorporate ongoing

teacher training, inclusive curriculum development, and the implementation of assistive technologies to improve accessibility. Ahmed et al. (2022) emphasize the necessity for evidence-based professional development programs for teachers that concentrate on inclusive pedagogical approaches, encompassing differentiated instruction and behaviour control techniques.

Furthermore, research indicates that investment in educational infrastructure and technological advancements can markedly enhance inclusion. Krishan and Sharma (2023) advocate for the incorporation of assistive technologies, including text-to-speech software, adaptive learning gadgets, and adaptable seating arrangements, to aid students with impairments. Kundu et al. (2020) indicate that awareness and accessibility of assistive technologies are still restricted in numerous Indian schools, especially in rural regions. Broadening access to these resources, along with specialized training for educators on their successful utilization, may significantly enhance the execution of inclusive education.

A vital aspect of enhancement is the involvement of parents and the community. Aruldas et al. (2023) discovered that numerous caregivers in Tamil Nadu acknowledged the importance of schooling for children with disabilities but encountered logistical obstacles, including transportation difficulties, safety apprehensions, and financial limitations. By enhancing collaborations between educational institutions and local communities, schools may more effectively tackle these difficulties and cultivate more inclusive learning environments. Mir and Waheed (2022) advocate for universities to reevaluate existing inclusion policies and enhance support networks for students with disabilities, ensuring their academic and social requirements are adequately addressed.

Despite India's commendable progress in advancing inclusive education via policy frameworks and legal obligations, substantial hurdles persist in execution. The efficacy of inclusive education relies on various elements, such as institutional leadership, educator training, infrastructure, public perceptions, and community engagement. Research highlights the necessity for a comprehensive approach that connects policy and practice, ensuring that schools are both legally obligated and physically and pedagogically prepared to assist students with disabilities. Confronting these difficulties necessitates coordinated efforts from politicians, educators, and stakeholders to establish a truly inclusive education system that serves all learners.

Methodology: This study used a qualitative research approach to examine the viewpoints of school principals toward inclusive education for students with disabilities. A qualitative methodology is suitable for this research as it facilitates a comprehensive exploration of the challenges, tactics, and responsibilities of school administrators in the execution of inclusive education (Creswell &Poth, 2018). The study employs an exploratory research approach to investigate leadership attitudes and contextual elements affecting inclusive education policies and practices.

a. Sampling and Participants: The research employs purposive sampling to pick school principals with experience in inclusive education policies and practices. School principals from urban and rural environments were invited to obtain varied perspectives on resource availability, policy execution, and teacher readiness. Fifty principals participated in the study, representing schools with diverse levels of inclusion initiatives.

Participants were chosen according to the subsequent criteria:

1. Minimum of five years of experience in a leadership role at a school
2. Direct involvement in decision-making and policy implementation related to inclusive education
3. Representation from both public and private schools to ensure diverse institutional perspectives

b. Data Collection Method: Data was gathered via semi-structured interviews with the chosen school principals. Semi-structured interviews provide flexibility while preserving a structured framework to investigate essential issues pertinent to the inquiry (Bryman, 2016). The interview guide was built based on principal themes identified in the literature review, concentrating on:

1. Understanding of Inclusive Education – How principals define and perceive inclusive education
2. Implementation Strategies – Methods used to integrate inclusive education in schools
3. Challenges and Barriers – Key difficulties faced in implementing inclusive education
4. Teacher Training and Support – Initiatives taken to enhance teacher preparedness
5. Parental and Community Engagement – The role of external stakeholders in fostering inclusivity
6. Resource Availability and Infrastructure – Access to assistive technologies and physical infrastructure

The interviews were executed in person and through virtual platforms, contingent upon the participants' availability and convenience. Each interview lasted 30 to 45 minutes and was audio-recorded with the participants' consent to guarantee precision in data transcription and analysis.

c. Data Analysis: The collected data was analysed using thematic analysis, following Braun and Clarke's (2006) six-step framework:

1. Familiarization with Data – Transcribing interviews and reviewing responses for accuracy
2. Generating Initial Codes – Identifying key themes and coding relevant responses
3. Searching for Themes – Grouping codes into broader themes related to the research objectives
4. Reviewing Themes – Refining and validating themes to ensure consistency
5. Defining and Naming Themes – Assigning

conceptual labels to each theme for interpretation

6. **Producing the Report** – Integrating findings into a coherent narrative

NVivo software was used for organizing and coding qualitative data, allowing for efficient theme identification and pattern recognition (Bazeley & Jackson, 2013).

d. Ethical Considerations: Ethical principles were rigorously adhered to in order to safeguard participants' rights and uphold study integrity. Prior to participation, all principals received a comprehensive informed consent form defining the study's aims, confidentiality protocols, and their right to withdraw at any point. To preserve anonymity, the identities of participants and the names of schools were obscured in transcripts and reports. The research conformed to the ethical criteria established by the Institutional Review Board (IRB) and adhered to the research ethics delineated by the American Psychological Association (APA, 2017).

Data Analysis: The data obtained from interviews with school principals were analysed utilizing thematic analysis, adhering to Braun and Clarke's (2006) six-step methodology. This method facilitated the discovery of salient themes from the data, elucidating the challenges, strategies, and viewpoints of school leaders concerning inclusive education.

Thematic Analysis Process and Key Findings:

Table 1: Key themes emerged from data analysis

Key Theme	**Findings from Data**	**Interpretation**
Leadership and Vision	Some principals drive inclusion, ensuring resources & teacher motivation, while others struggle with autonomy.	Leadership is crucial, but institutional constraints limit action.
Resource and Infrastructure Barriers	Rural schools lack ramps, assistive technologies, and special educators. Funding shortages persist.	Urban-rural divide in access to inclusive education resources.
Teacher Preparedness and Training	Many teachers lack . training. Some schools offer internal programs, but resistance remains	Continuous training needed to build confidence and skills.
Parental and Community Engagement	Parents of non-disabled students worry about learning impact; parents of disabled students feel support is lacking.	Awareness programs needed to foster acceptance and involvement.
Policy and Implementation Gaps	Policies exist, but unclear guidelines and funding issues hinder execution.	Stronger monitoring, funding, and structured implementation needed.
Successful Inclusive Strategies	Peer mentoring, teacher collaboration, NGO partnerships, and tech integration help.	Multi-stakeholder collaboration and technology enhance inclusion.

Discussion: This study's findings underscore the pivotal role of school principals in executing inclusive education, highlighting their leadership impact and the obstacles they face. This study offers distinct insights into how school leadership, resource limitations, teacher readiness, and policy deficiencies influence the efficacy of inclusion initiatives in Indian schools, building on prior research that has examined different facets of inclusive education.

The Role of School Leadership in Inclusive Education: School principals are essential in promoting inclusive education, acting as intermediaries between legislative mandates and classroom execution. The results demonstrate that principals that advocate for inclusive education typically execute strategic initiatives, including teacher training programs, collaborations with NGOs, and the incorporation of technology. This corresponds with the research conducted by Sarikha Srinivasavarathan and Rajendran (2023), which underscores that proficient school leadership is crucial for promoting inclusiveness, especially in resource-constrained environments. In contrast to their study, which concentrated on the effects of leadership training programs, our data reveal that principals frequently encounter restricted autonomy and administrative limitations, hindering their ability to implement inclusion methods effectively.

Comparable research in many regions has likewise emphasized the significance of school leadership. Gale et al. (2022) performed a scoping review on inclusive education in India and determined that principals who participate in ongoing capacity-building initiatives and collaborative decision-making considerably enhance the success of inclusive education. Our research corroborates these findings while emphasizing that numerous principals, especially in rural regions, lack formal training in inclusive education policies, resulting in variable implementation of inclusion initiatives among various schools.

Resource and Infrastructure Barriers: A significant hurdle found in our study is the insufficiency of resources and facilities, especially in rural and low-income educational institutions. Principals identified restricted funding, insufficient assistive devices, and inadequate classroom adjustments as significant obstacles. The findings align with Bhan and Panshikar (2023), who discovered that numerous schools in Tripura are deficient in the physical infrastructure necessary for inclusive teaching, including ramps, sensory rooms, and accessible restrooms.

Conversely, research in high-income nations has indicated fewer infrastructural obstacles but a heightened focus on educator training and policy coherence. Bedi and Lafrance (2023) investigated the implementation of inclusive education in Canada and discovered that, despite enough

resources, policy inconsistencies and insufficient teacher preparedness persisted as significant obstacles. Our research indicates that, in contrast to Canada, infrastructure continues to be a significant impediment in India, necessitating immediate intervention from policymakers.

Teacher Preparedness and Training: Teacher readiness has surfaced as a significant concern. Numerous principals indicated that educators were insufficiently trained in special education methodologies, leading to diminished confidence and opposition to inclusion initiatives. This aligns with the observations of Ahmed et al. (2022), who indicated that professional development programs for teachers centred on inclusive education are limited in low- and middle-income nations. Our research substantiates this claim, demonstrating that even when training programs exist, they frequently lack consistency, are inadequately organized, or fail to align with the practical realities of the classroom.

Nevertheless, certain investigations yield conflicting results. Sharma et al. (2022) discovered that although Indian university educators exhibited a readiness to adopt inclusive methods, their perceptions were not markedly affected by their years of experience or educational attainment. This differs from our study, which indicates that educators with increased experience to inclusive education programs generally have heightened confidence and receptiveness to inclusion. This mismatch may be ascribed to the contextual distinctions between university educators and school-level teachers, as the latter frequently encounter more pressing classroom difficulties that necessitate practical answers over academic understanding.

Parental and Community Engagement: Parental perspective and community involvement were recognized as critical variables affecting the effectiveness of inclusive education. Numerous principals observed that parents of non-disabled students frequently voiced apprehensions regarding the potential decline in overall classroom performance due to inclusion, whereas parents of disabled students believed that schools failed to offer sufficient support services. The findings correspond with Mir and Waheed (2022), who discovered that students with impairments in Indian higher education frequently face social exclusion due to insufficient institutional assistance and a lack of awareness among peers.

Narayan and Patnaik (2021) discovered that robust parent-teacher collaboration is essential for surmounting these obstacles, indicating that schools that involve parents in decision-making processes generally achieve greater acceptance and participation in inclusive education initiatives. Our findings corroborate this assumption, although they also emphasize that principals frequently encounter difficulties in fostering parental involvement due to time limitations, administrative burdens, and the absence of organized engagement initiatives.

Policy and Implementation Gaps: A notable disparity between policy and practice emerged as a primary problem in this study. Although the National Education Policy (NEP) 2020 and the Rights of Persons with Disabilities Act, 2016 advocate for inclusive education, principals indicated a lack of clarity regarding the implementation of these policies at the school level. This aligns with Ramchand (2021), who contends that India's attempts to conform to global obligations like the Sustainable Development Goals (SDGs) are impeded by an absence of definitive implementation plans.

Nonetheless, certain foreign research offer an alternative viewpoint on the efficacy of policies. Taneja-Johansson et al. (2021) investigated inclusive education policies in rural Indian government schools and discovered that, despite the existence of such policies, numerous schools lack the institutional frameworks necessary for their monitoring and enforcement. Our findings indicate that principals frequently perceive exclusion from policymaking conversations, which constrains their capacity to tailor policies to the specific circumstances of their schools.

Successful Inclusive Strategies: Notwithstanding these hurdles, several principals have effectively executed inclusive policies by utilizing peer mentoring programs, collaborative teaching approaches, and alliances with non-governmental organizations. This corresponds with Gale et al. (2022), who assert that schools that actively involve various stakeholders in their inclusion initiatives generally have improved student outcomes.

Furthermore, Krishan and Sharma (2023) propose that assistive technologies, including speech-to-text software and adaptive learning aids, can markedly enhance accessibility in inclusive classrooms. Our research revealed that urban schools are more inclined to implement these technologies, while rural schools persistently encounter technological challenges stemming from inadequate internet connectivity and financial limitations.

Conclusion: This analysis corroborates numerous established findings in the literature while also illuminating distinct insights and discrepancies. School leadership, deficiencies in teacher preparation, and infrastructural obstacles persist as significant impediments to inclusive education in India. Nonetheless, our study contrasts with certain prior research by illustrating that principals frequently encounter substantial autonomy restrictions, hence hindering their capacity to effectuate real change. Moreover, whereas numerous studies highlight the significance of teacher training, our findings indicate that the absence of institutional support and policy clarity impedes long-term sustainability, even when training is administered.

The results indicate a necessity for enhanced policy enforcement mechanisms, augmented financial resources for educational infrastructure, and broadened professional development initiatives for educators and school administrators. Future study should investigate methods to augment principal autonomy and institutionalize multi-stakeholder cooperation to establish a more sustainable

form of inclusive education in India.

Limitations of the Study: This study offers significant insights into the role of school principals in inclusive education, although several limits must be recognized. The sample size is restricted to 50 principals, thereby failing to encompass the complexity and diversity of inclusive education methods across various areas. An expanded sample may yield a more thorough comprehension of the discrepancies in leadership tactics and institutional obstacles (Creswell &Poth, 2018). Secondly, the geographical scope of this study is limited to schools in Madhya Pradesh, rendering the findings more pertinent to this particular region rather than universally relevant to all schools in India. Inclusive education policies and their execution might differ markedly due to regional infrastructure, finance resources, and socio-cultural influences (Ramchand, 2021). Finally, the study depends on self-reported data, which introduces a potential social desirability bias, as principals may depict their activities more favourably than they actually are (Bryman, 2016). Self-reported replies, although beneficial for grasping impressions, may not consistently represent actual implementation difficulties. Notwithstanding these constraints, the study provides essential insights into school leadership within inclusive education, pinpointing both challenges and exemplary approaches that can guide future research and policy improvements. Enhancing future research by using a bigger sample size, varied geographic locations, and triangulated data sources—such as classroom observations and teacher surveys—would significantly bolster the validity and relevance of the findings (Gale et al., 2022).

References:-

1. Ahmed, S. K., et al. (2022). *Teacher professional development for disability inclusion in low and middle income Asia Pacific countries: An evidence and gap map.* Campbell Systematic Reviews, 18(4). https://doi.org/10.1002/cl2.1287
2. Ainscow, M. (2020). *Promoting equity in schools: Collaboration, inquiry and ethical leadership*. Routledge.
3. American Psychological Association. (2017). *Ethical principles of psychologists and code of conduct.* APA.
4. Aruldas, K., Banks, L. M., Nagarajan, G., Roshan, R., Johnson, J., Musendo, D., Arpudharangam, I., Walson, J. L., Shakespeare, T., &Ajjampur, S. S. R. (2023). "If he has education, there will not be any problem": Factors affecting access to education for children with disabilities in Tamil Nadu, India. *PLOS ONE, 18*(8), e0290016. https://doi.org/10.1371/journal.pone.0290016
5. Bazeley, P., & Jackson, K. (2013). *Qualitative data analysis with NVivo.* SAGE Publications.
6. Bedi, S., & Lafrance, S. (2023). *Right to Inclusive Education for Children with Disabilities.* Routledge.
7. Bhan, S., &Panshikar, A. (2023). *School readiness for inclusive education in Tripura, India.* Disability, CBR and Inclusive Development.
8. Braun, V., & Clarke, V. (2006). Using thematic analysis in psychology. *Qualitative Research in Psychology, 3*(2), 77–101. https://doi.org/10.1191/1478088706qp063oa
9. Bryman, A. (2016). *Social research methods* (5th ed.). Oxford University Press.
10. Creswell, J. W., &Poth, C. N. (2018). *Qualitative inquiry and research design: Choosing among five approaches* (4th ed.). SAGE Publications.
11. Fernandes, K. (2022). Inclusive education in practice: Disability, "special needs" and the (Re)production of normativity in Indian childhoods. *Children's Geographies, 20*(4), 521–537. https://doi.org/10.1080/14733285.2022.2124845
12. Forlin, C., Sharma, U., & Loreman, T. (2019). *Inclusive education for students with disability: A review of the best evidence in the field*. International Journal of Inclusive Education, 23(12), 1284-1302.
13. Gale, L., Bhushan, P., Eidnani, S., Graham, L., Harrison, M., McKay-Brown, L., Pande, R., Shreeraman, S., &Sivashunmugam, C. (2022). Overcoming barriers to inclusion in education in India: A scoping review. *Social Sciences & Humanities Open, 5*(1), 100237. https://doi.org/10.1016/j.ssaho.2021.100237
14. Gale, L., et al. (2022). *Overcoming barriers to inclusion in education in India: A scoping review.* Social Sciences & Humanities Open, 5(1), 100237.
15. Krishan, S., & Sharma, N. (2023). *Awareness of Universal Design for Learning (UDL) among teachers in India.* Journal of Educational Technology Development and Exchange, 16(1), 109–125.
16. Kundu, A., Bej, T., & Dey, K. N. (2020). Indian educators' awareness and attitude towards assistive technology. *Journal of Enabling Technologies, 14*(4), 233–251. https://doi.org/10.1108/jet-04-2020-0015
17. Mahapatra, S. (2021). *Challenges in inclusive education: Perspectives from Indian school leaders*. Educational Review, 73(4), 512-528.
18. Mathur, A. (2022). The demands of ethical learning and character development in our changing times. *Routledge EBooks*, 183–208. https://doi.org/10.4324/9781003046059-10
19. Ministry of Education. (2020). *National Education Policy 2020*. Government of India.
20. Mir, A. A., & Waheed, A. (2022). *Experiences of students with disabilities in Indian higher education: An interpretative phenomenological study.* Higher Education for the Future, 9(2), 186–202.
21. Ramchand, M. (2021). *Conceptions, perceptions, and practices of inclusive education in schools in Karnataka*

(India). International Journal of Inclusive Education.

22. Sarikha Srinivasavarathan, & Rajendran, P. (2023). Principals in Indian inclusive schools: Bridge over troubled waters. *Asian Education and Development Studies, 12*(4/5), 249–261. https://doi.org/10.1108/aeds-07-2023-0086
23. Sarkar, T. (2023). Learning for all? Ableism, education policy, and the "global learning crisis" in India. *International Journal of Inclusive Education*, 1–17. https://doi.org/10.1080/13603116.2023.2274109
24. Sharma, A., Malik, R., & Nagy, H. (2022). Exploring the teachers' perception towards educational inclusion: A study of teachers' in Pune, India. *Journal on Efficiency and Responsibility in Education and Science, 15*(1), 23–32. https://doi.org/10.7160/eriesj.2022.150103
25. Sharma, U., &Salend, S. J. (2016). *School leadership and inclusive education: Practices and challenges*. European Journal of Special Needs Education, 31(3), 265-278.
26. Taneja-Johansson, S., Singal, N., & Samson, M. (2021). Education of children with disabilities in rural Indian government schools: A long road to inclusion. *International Journal of Disability, Development and Education*, 1–16. https://doi.org/10.1080/1034912x.2021.1917525
27. UNESCO. (2020). *The state of the education report for India 2020: Children with disabilities*. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

E-Governance and Service Delivery : Transforming CitizenGovernment Interface

Dr. Kartikay Gadiya*

***Ph.D, Department of Public Administration, MLSU Udaipur, Udaipur (Raj.) INDIA**

Abstract: The paradigm of governance has undergone a significant transformation with the advent of digital technologies, leading to the emergence of e-governance as a pivotal mechanism for enhancing public service delivery. This paper explores the intricate relationship between e-governance and service delivery, emphasizing how digital platforms have redefined the citizen-government interface. Through an analysis of theoretical frameworks, global best practices, and empirical evidence, including a regional case study of Rajasthan, the paper highlights the transformative potential of e-governance in fostering transparency, accountability, efficiency, and citizen empowerment.
Keywords: E-Governance, Service Delivery, Digital Governance, Public Administration, Citizen Empowerment, ICT, Transparency, Rajasthan.

Introduction - Governments around the world are under increasing pressure to deliver services more efficiently, transparently, and inclusively. In this context, Information and Communication Technology (ICT) has emerged as a transformative force, redefining traditional models of public administration. E-governance, which refers to the strategic use of ICT to support government functions and services, is not merely a technological intervention but a paradigm shift in how governance is conceptualized and operationalized.

The digitalization of governance processes aims to simplify bureaucratic procedures, reduce delays, increase accessibility, and enhance the overall quality of public services. By integrating ICT into administrative functions, governments can not only reach larger segments of the population especially those in remote or marginalized communities but also foster greater citizen engagement and trust. The use of online portals, mobile applications, biometric identification systems, and real-time data analytics represents a significant departure from paper-based and hierarchical administrative systems.

E-governance is particularly relevant in developing countries like India, where challenges related to service delivery, corruption, and administrative inefficiencies are prevalent. The Indian government's Digital India initiative reflects a concerted effort to bridge the digital divide and bring services closer to the citizens. States like Rajasthan have emerged as frontrunners in implementing innovative e-governance solutions, making the topic particularly timely and regionally significant.

This study analyses the relationship between e-governance and public service delivery with focus on the transformation of the citizen–government interface.

The study also identifies the challenges encountered in e-governance implementation and proposes evidence-based policy recommendations to enhance the efficacy of digital governance in India and beyond.

Conceptual Framework of E-Governance: E-governance encompasses a range of applications including Government-to-Citizen (G2C), Government-to-Business (G2B), Government-to-Government (G2G), and Government-to-Employee (G2E) services. The core objectives are to enhance service delivery, reduce corruption, increase transparency, and empower citizens through participatory governance.

Key components of e-governance include:

1. **Digital Infrastructure:** Robust ICT systems that support online services.
2. **Policy Framework:** Legal and regulatory support for digital operations.
3. **Capacity Building:** Training and development of human resources.
4. **Citizen Engagement:** Mechanisms for public participation and feedback.

Literature Review

The academic and policy discourse on e-governance has evolved substantially over the last two decades. Heeks (2006) argues that successful e-governance initiatives depend on aligning digital reforms with existing institutional capacities and socio-cultural contexts. Bhatnagar (2009) highlights the role of ICT in improving transparency and reducing corruption in public service delivery.

Recent studies have expanded this understanding. Misra (2021) presents a comprehensive view of Indian e-governance case studies, emphasizing the importance of citizen-centric approaches. Rathore (2022) specifically analyzes Rajasthan's Jan Soochna Portal, showcasing its innovative approach to proactive transparency. According to Kumar and Singh (2023), digital platforms have significantly improved the speed, efficiency, and accuracy of service delivery, although challenges such as digital divides and cyber risks persist.

Globally, the United Nations (2022) notes that countries with high e-government development indexes tend to demonstrate greater public trust and engagement. The World Bank (2020) emphasizes the significance of "GovTech" technology that puts people first in advancing inclusive governance. These findings align with NITI Aayog's (2021) strategic vision of transforming India into a digitally empowered society.

E-Governance and Public Service Delivery: Service delivery in public administration refers to the process through which government provides goods and services to citizens. E-governance transforms this process by digitizing records, automating workflows, and enabling real-time monitoring. It leads to:

1. **Efficiency:** Cost and time reduction which are associated with manual processes.
2. **Transparency:** Making information accessible and reducing discretion.
3. **Accountability:** Enabling tracking and evaluation of service delivery.
4. **Accessibility:** Reaching remote and marginalized populations.

Global Best Practices: Several countries have demonstrated global leadership in implementing effective e-governance models. These best practices highlight the importance of digital inclusivity, secure infrastructures, and citizen-centric approaches:

1. **Estonia:** It has implemented a robust digital identity system, enabling citizens to access a wide range of public services online. The X-Road platform allows for secure data exchange between public and private institutions, ensuring interoperability while safeguarding data privacy.
2. **Singapore:** Singapore's Smart Nation initiative integrates technologies like AI, IoT, and big data to create a seamless digital experience for citizens. MyInfo, a one-stop digital identity service, pre-fills personal data across government forms, reducing redundancy and increasing efficiency. The system emphasizes personalization and proactiveness in service delivery.
3. **South Korea:** It provides real-time, integrated services through platforms like GOV24. Its emphasis on citizen engagement, digital literacy, and institutional transparency has led to high levels of trust in public services.
4. **United Arab Emirates (UAE):** The UAE's Smart Government program includes AI-driven services and mobile-first strategies that enhance citizen satisfaction. The use of blockchain for secure transactions and document verification has positioned the UAE as a global innovator in digital trust frameworks.
5. **Denmark:** It focuses on inclusivity through mandatory digital communication, supported by strong digital literacy programs. The NemID digital signature system ensures secure transactions across health, taxation, and municipal services.
6. **India:** Through initiatives like Digital India, Aadhaar, and e-Governance Mission Mode Projects (MMPs), India has expanded digital access across sectors. Programs like the Unified Mobile Application for New-age Governance (UMANG) and the Direct Benefit Transfer (DBT) system have significantly improved service efficiency.

These examples underscore the importance of integrated platforms, secure data handling, proactive service models, and digital capacity building. Lessons from these global experiences can guide regional implementations like those in Rajasthan to scale innovations and improve citizen outcomes.

Regional Case Study: E-Governance in Rajasthan: Rajasthan has emerged as a leading state in India for implementing e-governance initiatives aimed at improving public service delivery. The state has adopted innovative digital solutions to bridge the gap between the government and its citizens:

1. **e-Mitra:** A flagship G2C service platform operational through over 70,000 kiosks across urban and rural areas. It provides over 300 services including utility bill payments, certificates, licenses, and public grievance redressal.
2. **Bhamashah Yojana:** A financial inclusion and direct benefit transfer (DBT) scheme that uses biometric authentication linked to a family-based card. It ensures transparent and efficient delivery of subsidies and social welfare benefits directly to beneficiaries.
3. **RajSSP (Rajasthan Social Security Pension):** A digital portal for managing pensions under various schemes for elderly, widows, and differently-abled citizens. It promotes transparency, timely disbursement, and grievance redressal through real-time monitoring.
4. **Jan Soochna Portal:** A proactive transparency initiative, it makes public information accessible in real time regarding welfare schemes, beneficiaries, and allocations at the village level. This aligns with the Right to Information (RTI) Act and enhances accountability.

These programs have collectively improved access to government services, reduced corruption, and promoted citizen participation in governance. However, challenges such as limited digital literacy, infrastructure disparities, and language barriers continue to affect universal access.

Challenges in E-Governance Implementation: Despite its potential, e-governance faces several barriers that hinder its effective implementation and impact:

1. **Digital Divide:** A significant proportion of the

population, particularly in rural and underdeveloped areas, lacks access to reliable internet connectivity, digital devices, and the skills needed to utilize e-governance platforms. This divide exacerbates existing inequalities and limits the inclusivity of digital governance.

2. **Cybersecurity and Data Privacy Concerns:** As government services increasingly rely on digital platforms, the risk of cyber threats, hacking, and data breaches grow. Many citizens are also wary of how their personal information is collected, stored, and used, especially in the absence of comprehensive data protection laws.

3. **Institutional Resistance and Bureaucratic Inertia:** Traditional administrative systems often exhibit resistance to adopting new technologies due to fear of change, lack of awareness, and inadequate incentives for innovation. This hampers the speed and effectiveness of digital reforms.

4. **Inadequate Infrastructure:** Many regions, particularly in developing countries like India, still lack the basic ICT infrastructure—such as stable electricity, high-speed internet, and technical support—that is essential for running e-governance systems effectively.

5. **Lack of Digital Literacy:** A substantial segment of the population, including senior citizens, women, and marginalized communities, may not possess the literacy or digital skills required to interact with online platforms. This restricts their ability to access essential services.

6. **Interoperability and Integration Issues:** Fragmentation among various government departments and lack of coordination can lead to inefficiencies. Integrating multiple databases and ensuring seamless communication among departments remains a challenge.

7. **Funding and Resource Constraints:** Developing and maintaining digital systems require significant investment. Budgetary constraints, especially in lower-income states or regions, can limit the scalability and sustainability of e-governance projects.

8. **Legal and Regulatory Gaps:** The legal frameworks governing e-governance are often outdated or incomplete. Issues such as data ownership, digital signatures, and cybercrime need clear, enforceable legislation to support digital governance.

Policy Recommendations: To fully realize the transformative potential of e-governance for effective and inclusive service delivery, governments must address existing limitations through comprehensive, strategic, and citizen-centric policy measures. Based on both global best practices and the Indian experience particularly in Rajasthan, the following policy recommendations are proposed:

1. **Expand and Strengthen Digital Infrastructure:** Reliable and affordable access to the internet is foundational for successful e-governance. Governments should invest in expanding broadband connectivity, especially in rural and tribal regions where digital access is limited. Public Wi-Fi hotspots, fiber-optic networks under the BharatNet project, and mobile network expansion should be prioritized. Infrastructure must also include adequate power supply, data centers, and disaster recovery mechanisms to ensure uninterrupted services.

2. **Promote Digital Literacy and Capacity Building:** Lack of digital literacy remains a significant barrier, especially for the elderly, women, and marginalized communities. Policymakers should implement targeted digital education campaigns through schools, local governance bodies (panchayats), and NGOs. Government staff also requires ongoing training in ICT tools, cybersecurity practices, and citizen-service orientation to ensure efficient implementation and adoption.

3. **Ensure Robust Cybersecurity and Data Protection:** The increased reliance on digital systems raises concerns over data breaches, identity theft, and unauthorized surveillance. Governments should enforce stringent data protection laws aligned with international standards like the General Data Protection Regulation (GDPR). Investments in cybersecurity infrastructure, encrypted platforms, and regular audits are critical. Creating an independent Data Protection Authority can provide oversight and redressal mechanisms.

4. **Design Inclusive and Accessible Services:** E-governance platforms must be inclusive, user-friendly, and accessible to all sections of society. Services should be available in regional languages and designed with accessibility features for persons with disabilities. User interfaces must be intuitive, with minimal technical complexity. Feedback mechanisms, chatbots, and helplines can support users who encounter difficulties.

5. **Enhance Interoperability and Integration Across Departments:** Fragmentation and duplication of efforts often reduce the efficiency of e-governance systems. An integrated approach that enables interdepartmental data exchange and coordinated workflows is essential. National and state governments should develop unified digital architecture standards and APIs (Application Programming Interfaces) to ensure interoperability across various platforms and departments.

6. **Leverage Public-Private Partnerships (PPPs):** Private sector entities possess advanced technical capabilities and innovation potential that can be harnessed through strategic PPP models. Governments should encourage partnerships in areas such as app development, infrastructure deployment, cloud services, and cybersecurity solutions, while maintaining control over public interest and privacy concerns. Clear guidelines and transparent contractual frameworks are necessary to manage these partnerships effectively.

7. **Implement Real-Time Monitoring and Evaluation Frameworks:** Continuous monitoring and evaluation ensure accountability and help measure the actual impact of e-governance initiatives. Dashboards, performance indica-

tors, and third-party audits should be employed to assess usage rates, citizen satisfaction, and service quality. Data from grievance redressal systems and user feedback can be used for course correction and service enhancement.

8. Empower Local Governments and Decentralize Digital Governance: Local governance institutions, including municipal bodies and gram panchayats, should be empowered with financial, technical, and administrative autonomy to implement localized e-governance solutions. Decentralization ensures that services are contextually relevant, culturally sensitive, and more responsive to local needs. Capacity-building programs and budgetary allocations at the local level are essential for this process.

9. Foster a Culture of Innovation and Research: Governments should create institutional support for innovation labs, research centers, and pilot programs that explore emerging technologies like artificial intelligence, blockchain, and geospatial mapping in governance. Incubating startups and collaborating with academic institutions can drive continuous improvement and customization of e-governance tools.

10. Institutionalize Citizen Participation and Co-Creation: E-governance should move beyond service provision to become a platform for participatory democracy. Digital platforms can be used to crowdsource ideas, conduct online consultations, and facilitate direct engagement in decision-making processes. Tools such as participatory budgeting portals, e-petition systems, and citizen scorecards enhance trust, accountability, and co-ownership of public services.

These policy recommendations are intended to provide a holistic framework for governments to build inclusive, secure, and responsive e-governance ecosystems. By addressing both technological and human dimensions of governance, the state can ensure that digital transformation leads to tangible improvements in the lives of citizens.

Conclusion: E-governance has fundamentally reshaped the citizen-government interface, offering a pathway to more transparent, accountable, and efficient public service delivery. While regional successes like Rajasthan's e-governance initiatives demonstrate potential, overcoming challenges related to digital access, infrastructure, and policy is critical. Learning from global best practices and implementing inclusive, secure, and interoperable digital governance frameworks will be key to realizing the full benefits of e-governance.

References:-

1. Bhatnagar, S. (2009). *Unlocking E-Government Potential: Concepts, Cases and Practical Insights*. SAGE Publications India.
2. Heeks, R. (2006). *Implementing and Managing eGovernment: An International Text*. SAGE Publications Ltd.
3. Kumar, M., & Singh, A. (2023). E-Governance in India: An Assessment of Digital Service Delivery. *International Journal of Public Administration in the Digital Age*, 10(1), 12–27.
4. Misra, D. C. (2021). *E-Governance: Concepts and Case Studies*. PHI Learning Pvt. Ltd.
5. NITI Aayog. (2021). *Strategy for New India @75: Digital India Chapter (Updated)*. Government of India.
6. Rathore, A. S. (2022). Digital Governance and the Right to Information: A Study of the Jan Soochna Portal in Rajasthan. *Journal of E-Governance Studies*, 8(2), 33–45.
7. United Nations. (2022). *E-Government Survey 2022: The Future of Digital Government*. Department of Economic and Social Affairs.
8. World Bank. (2020). *GovTech: Putting People First*. World Bank Publications.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

अनामिका के 'तृन धरि ओट' उपन्यास में पारिस्थितिक नारीवाद और सीता की नई व्याख्या

राजविन्द्र कौर* डॉ.पूजा धमीजा**

* शोधार्थी, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.) भारत
** सह आचार्य (हिंदी) टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.) भारत

शोध सारांश – अनामिका द्वारा रचित 'तृन धरि ओट' उपन्यास पारंपरिक नारीवादी विमर्श को पारिस्थितिक दृष्टिकोण से जोड़ते हुए स्त्री और प्रकृति के पारस्परिक संबंधों को स्थापित करता है। इसमें सीता को केवल मिथकीय चरित्र के रूप में नहीं बल्कि एक बौद्धिक, संवेदनशील एवं तर्कशील स्त्री के रूप में प्रस्तुत किया गया है। सीता का व्यक्तित्व मातृत्व की पारंपरिक संकल्पना से परे जाकर समावेशी करुणा और सामाजिक दायित्वबोध से जुड़ता है। वह स्वयं की मुक्ति तक सीमित नहीं बल्कि प्रकृति, दलित–आदिवासी समुदायों और समस्त शोषित वर्गों की स्वतंत्रता में अपनी मुक्ति को देखती है। वे पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक न्याय को आपस में जोड़ते हुए एक समतामूलक समाज की संकल्पना प्रस्तुत करती हैं। यह उपन्यास स्त्री स्वायत्तता, पर्यावरणीय चेतना एवं सामाजिक समता के अंतर्संबंधों को उजागर करता है तथा पारिस्थितिक नारीवाद को भारतीय साहित्य और सांस्कृतिक संदर्भों में पुनर्परिभाषित करता है। यह शोध आलेख 'तृन धरि ओट' उपन्यास के माध्यम से नारीवाद और पारिस्थितिकी के अंतर्संबंध को विश्लेषित करते हुए पारिस्थितिक नारीवाद की अवधारणा को समझने और उसके बहुआयामी पक्षों की व्याख्या करने का प्रयास करता है।

शब्द कुंजी – पारिस्थितिक नारीवाद, पर्यावरणीय चेतना, स्त्री स्वायत्तता, मातृत्व की अवधारणा, न्यायप्रिय स्त्री, समतामूलक समाज, शिक्षा और स्वाधीनता, रामायण पुनर्पाठ, सामाजिक न्याय, संवेदनशीलता और तर्कशीलता, लैंगिक भेदभाव।

प्रस्तावना – पारिस्थितिक नारीवाद एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक विचारधारा है, जो नारीवाद और पर्यावरणीय चिंताओं को जोड़ते हुए यह दर्शाती है कि स्त्री और प्रकृति के शोषण के बीच एक गहरा संबंध है। पारिस्थितिक नारीवाद की संकल्पना का सबसे प्रारंभिक उल्लेख फ्रांसीसी नारीवादी विचारक फ्रन्स्वा द यूबोण द्वारा 1974 में किया गया। उन्होंने अपनी पुस्तक 'ले फेमिनिज्म ओ ला मोर्ट' (Le Feminism ou la Mort (नारीवाद या मृत्यु) 1974 में पारिस्थितिक नारीवाद की विचारधारा को प्रारंभिक रूप से व्याख्यायित किया। फ्रन्स्वा द यूबोण ने पारिस्थितिक क्रांति में महिलाओं की केंद्रीय भूमिका को रेखांकित करते हुए 'इकोफेमिनिज्म' शब्द का प्रयोग किया जो पर्यावरणीय विमर्श और नारीवादी चिंतन के अंतर्संबंध को स्पष्ट करता है। 'फ्रन्स्वा के अनुसार स्त्रीत्व पर आधारित भूमि सबको सुरक्षा प्रदान करेगी।'[1] पारंपरिक समाजों में प्रकृति को एक माँ के रूप में देखा जाता था, जो जीवन प्रदान करती है, ठीक वैसे ही जैसे एक स्त्री अपने मातृत्व द्वारा जीवन का आधार बनती है। लेकिन उपनिवेशवाद, औद्योगीकरण और विज्ञान की पितृसत्तात्मक व्याख्या ने इस संबंध को कमतर आंकते हुए प्रकृति और स्त्रियों को केवल उपयोगी संसाधन के रूप में प्रस्तुत किया। 'ज्यों–ज्यों पुरुष का आत्मगौरव बढा, प्रकृति का शोषण चालाकी से करने के साथ ही वह युक्तिसंगत ढंग से औरत का भी शोषण करने लगा।'[2] इसके परिणामस्वरूप स्त्रियों को द्वितीयक दर्जे की स्थिति में रखा गया, जिससे उनके स्वतंत्र अस्तित्व और सामाजिक सहभागिता पर प्रतिबंध लगाए गए। इस सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि महिलाओं को केवल पीड़ित के रूप में नहीं बल्कि प्रकृति की संरक्षक और पर्यावरणीय संतुलन की संवाहक के रूप में देखा जाना चाहिए। महिलाओं के नेतृत्व में हुए चिपको आंदोलन और नर्मदा बचाओ आंदोलन जैसे पर्यावरणीय संघर्ष यह प्रमाणित करते हैं कि पारिस्थितिक नारीवाद केवल एक सैद्धांतिक अवधारणा न होकर एक सक्रिय और व्यवहारिक आंदोलन भी है। इस प्रकार पारिस्थितिक नारीवाद पर्यावरण और स्त्री के शोषण की चर्चा तक सीमित न रहकर एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। 'इको–फेमिनिज्म का मूल मंत्र पृथ्वी के समस्त जीव–जंतुओं में चौतन्य देखना और करुणा एवं स्नेह के व्यवहार से वे जिस शोषण का सामना करते हैं, उन्हें उनसे बचाना है।'[3] इस प्रकार पारिस्थितिक नारीवाद समाज, पर्यावरण और स्त्री के समानांतर संबंधों को न्यायसंगत बनाने की वकालत करता है।

साहित्य में यह प्रवृत्ति उन रचनाओं में देखने को मिलती है जो स्त्री–जीवन को प्रकृति के साथ जोड़कर देखती हैं और उसमें अंतर्निहित शोषण, संघर्ष, और प्रतिरोध को उजागर करती हैं। 'तृन धरि ओट' उपन्यास इस दृष्टिकोण से विशेष रूप से महत्तवपूर्ण है। इसमें सीता के चरित्र को पारिस्थितिक नारीवाद की अवधारणा के अंतर्गत पुनर्परिभाषित किया गया है। इस उपन्यास में सीता केवल एक पौराणिक पात्र न रहकर पर्यावरणीय चेतना से संपन्न, संवेदनशील और जागरूक नायिका के रूप में उभरती हैं, जो प्रकृति, वन्यजीव, जल संसाधन और हाशिए पर स्थित समुदायों के प्रति आत्मीय संबंध स्थापित करती हैं। पारंपरिक रामायण की कथावस्तु को स्त्री–दृष्टि से देखने का यह प्रयास सीता को एक नई पहचान देता है। सीता का विचार है कि जब तक पृथ्वी का प्रत्येक जीव स्वतंत्र नहीं हो जाता तब तक उनकी मुक्ति अधूरी है। इस विचार से उनकी प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता

और संरक्षण की प्रतिबद्धता प्रकट होती है। उपन्यास में 'सीतायण' नामक एक नया अध्याय जोड़ा गया है, जो सीता के दृष्टिकोण से रामायण की पुनर्कल्पना करता है। सीता अपने सीतायण की शुरुआत एक तीखे वाक्य से करती हैं, 'बाल-कांड' होगा, पर 'बालिका-कांड' जैसा पद तो अवधारणा के इतिहास में नहीं है।'[4] यह वाक्य सीता के भीतर के गहरे क्षोभ और विरोध को व्यक्त करता है। स्त्री और बालिका की पहचान को हमेशा से एक निश्चित और सीमित तरीके से प्रस्तुत किया गया है, जो उनके अस्तित्व और संघर्षों को नजरअंदाज करता है। इस वाक्य के माध्यम से सीता स्त्री के संदर्भ में समाज की भ्रांतियों और यथास्थितिवादी दृष्टिकोण की आलोचना करती हैं, जो उसे केवल एक निष्क्रिय, मूक पात्र के रूप में प्रस्तुत करता है और उसकी स्वायत्तता तथा संघर्ष को नकारता है। 'तृन धरि ओट' में नारीवाद केवल स्त्री-पुरुष संबंधों तक सीमित न होकर पारिस्थितिकी से भी जुड़ा हुआ है। अनामिका की सीता समाज के अन्याय का प्रतिकार करती हैं और प्रकृति व पर्यावरण के साथ गहरे संबंध को भी दर्शाती हैं। सीता वन में रहकर मातंगी के साथ मिलकर वन्य जीवन और आदिवासी संस्कृति को अपनाती हैं, जो पारिस्थितिकी और नारीवाद के सहसंबंध को इंगित करता है। उपन्यास इस बात पर बल देता है कि जब तक धरती का प्रत्येक प्राणी स्वतंत्र नहीं होगा तब तक स्त्री भी पूर्ण रूप से मुक्त नहीं हो सकती।

'तृन धरि ओट' में चित्रित सीता पारंपरिक लोकमानस में स्थापित रूढ़िगत छवि से भिन्न एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं। इसमें सीता का चिंतन तार्किक है। वे पति की केवल अनुगामिनी नहीं बल्कि उनके प्रत्येक निर्णय में सक्रिय सहभागिता निभाती हैं। 'हमेशा ही तर्क किया-कभी बोलकर, कभी चुप रहकर! हां, तर्क करते हुए कभी आपा नहीं खोया, न सन्तुलन ही, और सामने वाले की हर बात गौर से सुनकर विचार लेने के बाद ही धीरे-धीरे अपनी बात रखी-जैसे माँ बाबा के सामने रखती थी।'[5] उनकी यह विशेषता उन्हें एक बौद्धिक एवं तर्कशील नायिका के रूप में स्थापित करती है। राम स्वयं भी शासन-प्रशासन से जुड़े प्रत्येक विषय पर उनकी राय लेना आवश्यक समझते हैं। सीता न केवल राम को उपदेश देती हैं बल्कि सामाजिक अन्याय और लैंगिक भेदभाव का सशक्त प्रतिरोध भी करती हैं। शूर्पणखा की नाक काटने की घटना पर सीता का स्पष्ट प्रतिरोध यह दर्शाता है कि वे स्त्री के प्रेम-अभिव्यक्ति के अधिकार को मान्यता देने की पक्षधर हैं और पुरुषों के विशेषाधिकार को चुनौती देती हैं। वे लक्ष्मण के कृत्य की आलोचना करते हुए शूर्पणखा के प्रति सहानुभूति प्रकट करती हैं, 'एक किशोरी ही तो थी तुम। तुम्हारा प्रणय-निवेदन कोई इतना बड़ा पाप नहीं था कि तुम्हें क्षत-विक्षत कर छोड़ देते यों लक्ष्मण। नाक-कान काट लेना, वह भी किसी अबोध बाला का, कहीं से भी युक्तिसंगत नहीं।'[6] इस कथन के माध्यम से सीता पुरुषसत्तात्मक समाज में स्त्रियों के प्रति पूर्वाग्रहों की ओर ध्यान आकर्षित करती हैं और लैंगिक असमानता की आलोचना करती हैं।लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा की नाक काटने की घटना को व्यापक सामाजिक संदर्भ में रखते हुए वे तर्क करती हैं कि यदि स्त्रियाँ पुरुषों की तरह ही प्रेम-अभिव्यक्ति के अधिकार का उपयोग करें और हर अनुचित प्रणय-निवेदन का प्रतिकार करें तो पुरुषों को भी सामाजिक दंड का समान रूप से भागी होना पड़ेगा-'कितने कामना-कातर पुरुषों के प्रणय-निवेदन, अपात्रों के प्रणय-निवेदन हर स्त्री को आठ से अड़तीस बरस तक झेलने होते हैं, अगर वह सबके नाक-कान काटती चले तो अधिकतर पुरुष नकटे ही मिलें।'[7] सीता समाज में स्त्री के प्रति एक असमान दृष्टिकोण और शोषण के खिलाफ सवाल उठाती हुईं पारिस्थितिक नारीवाद के मूल सिद्धांतों को भी मूर्त रूप देती हैं। वे सामाजिक अन्याय और लैंगिक भेदभाव का विरोध करने के साथ-साथ पर्यावरणीय चेतना और समावेशिता को भी केंद्र में रखती हैं। उनका विमर्श केवल व्यक्तिगत अधिकारों तक सीमित न रहकर संपूर्ण सृष्टि के कल्याण की दिशा में विस्तारित होता है।

सीता न केवल सामाजिक अन्याय और पितृसत्तात्मक मान्यताओं पर प्रश्न उठाती हैं अपितु आवश्यकता पड़ने पर राम को तर्कपूर्ण परामर्श भी देती हैं। अयोध्या के एक धोबी द्वारा सीता पर कटाक्ष किए जाने और तत्पश्चात अपनी पत्नी को घर से निर्वासित कर देने की घटना इस संदर्भ में उल्लेखनीय है। उस स्त्री का एकमात्र तथाकथित अपराध यह था कि वह संपूर्ण रात्रि अपने घर वापस नहीं लौटी। जब राम ने इस प्रसंग को सीता के समक्ष प्रस्तुत किया तब सीता ने इस विषय में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए राम को कहा, 'अगर किसी स्त्री को छल ही करना होगा तो वह रात की प्रतीक्षा क्यों करेगी? दिन में भी कितने कोने-अंतड़े ऐसे होते हैं जहाँ कुछ भी कर गुजरा जा सकता है। तू डाल-डाल, मैं पात-पात का पूरा वितान बिछाया जा सकता है!..'[8] इस घटना पर सीता की प्रतिक्रिया पितृसत्तात्मक नैतिकताओं की आलोचना के साथ-साथ स्त्री के आत्मनिर्णय और स्वतंत्रता के अधिकार को रेखांकित करती है। वे इस बात की ओर संकेत करती हैं कि जिस प्रकार स्त्री को समाज में संकीर्ण नैतिक मानकों के तहत नियंत्रित किया जाता है उसी प्रकार प्रकृति को भी एक उपभोग की वस्तु मानकर उस पर अनुचित प्रतिबंध लगाए जाते हैं। स्त्री और प्रकृति दोनों को ही नियंत्रण और शोषण की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है, जहाँ उनके अस्तित्व और स्वतंत्रता को सीमित करने के लिए नैतिकता और परंपरा के माध्यम से दमनकारी संरचनाएँ निर्मित की जाती हैं। सीता एक ऐसी न्याय व्यवस्था का समर्थन करती हैं जो संवेदनशीलता और पुनर्स्थापनात्मक न्याय पर आधारित हो। वे राम को सुझाव देती हैं, 'धोबिन को मानपूर्वक यहाँ लाइए। मैं यहाँ उसे अपने महल में स्थान दूंगी। हर आहत स्त्री का मायका यह राजभवन होगा, तो ही रामराज्य का स्वप्न पूरा करा पायेंगे आप!'[9] राम-राज्य और सामाजिक न्याय के संबंध में सीता स्पष्ट रूप से कहती हैं कि राजा का धर्म केवल सत्ता संचालन नहीं बल्कि समाज में न्याय और करुणा की स्थापना करना भी है। वे कहती हैं कि मर्यादा केवल एक नियम ना होकर एक जीवंत प्रक्रिया है, जो समय के साथ बदलनी चाहिए। सीता की वैकल्पिक न्याय की अवधारणा पितृसत्तात्मक न्याय-व्यवस्था को चुनौती देती है और संवेदनशील व समावेशी न्याय प्रणाली की आवश्यकता पर बल देती है। यह विचार पारिस्थितिक नारीवाद के सिद्धांतों से भी मेल खाता है, जहाँ न्याय केवल मानव समाज तक सीमित नहीं रहता बल्कि प्रकृति और समाज के अन्य उपेक्षित वर्गों के प्रति भी उत्तरदायी होता है।

सीता का शिक्षा और अहिंसा पर बल देना प्रकृति और समाज के बीच सामंजस्य स्थापित करने की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया को दर्शाता है। सीता राम को पत्रों के माध्यम से युद्ध और हिंसा के स्थान पर शिक्षा और संस्कार द्वारा समाज को बदलने की बात करती हैं। वे मानती हैं कि, 'युद्ध और हिंसा तात्कालिक शमन भले कर दें दुर्वृत्तियों का, उसका दुष्ट चक्र नहीं तोड़ पाते! असल समाधान तो बच्चों का संस्कार-प्रक्षालन है जो अच्छी परवरिश और सद्शिक्षा से ही सम्भव है।'[10] वे राम को यह समझाने का प्रयास करती हैं कि जंगलों को काटकर और धरती को रक्तरंजित करके कोई भी सभ्यता नहीं टिक सकती। वे चाहती हैं कि अगली पीढ़ी संघर्ष और हिंसा के चक्र से मुक्त

होकर समरसता और सह-अस्तित्व के सिद्धांत को अपनाए। उनका मानना है कि समाज को शिक्षा और नैतिकता के आधार पर विकसित किया जाना चाहिए जिससे दीर्घकालिक शांति और पारिस्थितिक संतुलन बना रहे। सीता का विश्वास है, 'सुशिक्षा की आंच में ही इनकी हिंसक वृत्तियां हमेशा के लिए गलेंगी! सुशिक्षित बच्चे अपने अभिभावकों के चरित्र का परिष्कार कर सकते हैं।'[11] सीता राम को बताती हैं कि रावण अपने अहंकार, हठ और पूर्वाग्रहों का परित्याग कर चुका था, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उसका आत्मिक परिष्कार हो चुका था। रावण जो प्रारंभ में अहंकार और शक्ति का प्रतीक था, धीरे-धीरे एक परिष्कृत चेतना की ओर अग्रसर होता है। वह सीता से रुद्रवीणा सीखने की इच्छा व्यक्त करता है। इसके द्धारा वह प्रतीकात्मक रूप से यह दर्शाता है कि वास्तविक शक्ति हिंसा में नहीं बल्कि संगीत और सृजनात्मकता में निहित है। सीता भी उसे यह संदेश देती हैं कि सच्ची प्रगति वही है जो प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखे। रावण के साथ संवाद में भी सीता प्रकृति के स्वायत्ता अस्तित्व की बात करती हुई स्पष्ट करती हैं कि कोई भी व्यक्ति किसी और की रुद्रवीणा नहीं बजा सकता। हर व्यक्ति को स्वयं अपनी चेतना विकसित करनी होगी और प्रकृति स्वयं उसे आवश्यक ज्ञान प्रदान करेगी। उनका यह विचार दर्शाता है कि बाहरी सत्ता या प्रभुत्व के बजाय आत्मज्ञान और प्रकृति के साथ एकात्मता ही वास्तविक विकास का मार्ग है।

'तृन धरि ओट' उपन्यास में मातृत्व की नई परिभाषा दी गई है। पारंपरिक रूप से मातृत्व को केवल जैविक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता रहा है, लेकिन इसमें मातृत्व को एक व्यापक सामाजिक और संवेदनात्मक भूमिका के रूप में प्रस्तुत किया गया है। ऋषि वाल्मीकि के आश्रम में जब राक्षस वंश के अनाथ बच्चों को स्थान दिया जाता है, तो सीता उनमें अपने पुत्र लव-कुश का प्रतिबिंब देखती हैं। अनामिका की सीता पर्यावरण को सृष्टि का पूरक मानती हैं और प्रकृति के संचालन में मातृ-दृष्टि को केंद्रीय स्थान देती हैं, जो किसी भी प्रकार के भेदभाव से परे है। उनका विचार है कि मातृत्व केवल जैविक प्रक्रिया नहीं बल्कि एक मानसिक और संवेदनात्मक अनुभव है, जो किसी भी व्यक्ति के भीतर विद्यमान हो सकता है। इस संदर्भ में वे मातृत्व को केवल स्त्री तक सीमित न रखकर पुरुष की संवेदनशीलता को भी मातृ-दृष्टि का हिस्सा मानती हैं। 'जैविक मातृत्व से भी बड़ा है दृष्टि का मातृत्व, जो धीरे-धीरे अर्जित किया जा सकता है- युद्धक्लान्त और स्वार्थाक्रान्त इस आवेग-शासित धरती पर किसानों के धैर्य से प्रेम और शांति की हरीतिमा संचरित करना जरूरी है।'[12] सीता का यह व्यापक मातृत्व दृष्टिकोण दलित-आदिवासी समुदायों के प्रति सहानुभूति और समावेशिता को भी दर्शाता है। पारंपरिक आख्यानों में वनवास केवल राम, सीता और लक्ष्मण के लिए एक संघर्षपूर्ण यात्रा के रूप में वर्णित किया गया है, लेकिन 'तृन धरि ओट' में यह सामाजिक न्याय और परस्पर सहयोग का माध्यम बनता है। सीता वाल्मीकि के आश्रम में रहकर दलित-आदिवासी समुदायों के साथ एक समान दृष्टिकोण अपनाती हैं और उनके जीवन को सुधारने के लिए शिक्षा और समावेशिता को बढ़ावा देती हैं। वे मानती हैं कि, ' जब जंगल के आदिवासी बच्चों और राक्षसों की भोली सन्ततियों के लिए कोई पाठशाला जंगल में चले तो 'संस्कृति' और 'प्रकृति' के बीच के सम्यक् संवाद की सुभग आधारपीठिका ये बन सकेंगे।'[13] सीता केवल एक राजकुमारी या पत्नी के रूप में सीमित नहीं रहतीं हैं बल्कि वे एक शिक्षिका, मार्गदर्शिका और सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उभरती हैं।

सीता अपने पुत्रों लव-कुश को पत्र लिखती हैं, तब वे केवल मातृस्नेह नहीं प्रकट करतीं बल्कि एक गहरी जीवनदृष्टि भी प्रदान करती हैं। लव-कुश को संबोधित पत्र में सीता उन आदर्शों पर बल देती हैं जो समावेशी समाज की स्थापना और मानवीय करुणा को सुदृढ़ करने में सहायक होते हैं। वे कहती हैं कि संसार को हमेशा माँ की आँखों से देखो, क्योंकि मातृत्व केवल गर्भधारण तक सीमित नहीं है बल्कि यह करुणा और संवेदनशीलता का प्रतीक है। यह विचार पारिस्थितिक नारीवाद की उस मूल भावना को अभिव्यक्त करता है, जिसमें स्त्री और प्रकृति को एक-दूसरे का पूरक माना जाता है। 'दुनिया को माँ की ही आंख से देखना हमेशा। धरती की माँ बनकर जीना। सब उसके संसाधनों के दोहन में लगे हैं। इस ओर सजग रहना कि कोई किसी पर हावी न हो- सबको अपनी संभावनाएँ मुकुलित करने के अवसर मिलें, संसाधनों का वितरण सम्यक् हो और धरती के कोष से जितना लिया जाए, उससे दूना लौटाया जाये।'[14] सीता का यह कथन संसाधनों के न्यायसंगत वितरण और उनके सतत विकास की आवश्यकता पर बल देता है। वे उन शक्ति-संबंधों की असमानता की आलोचना करती हैं, जिसमें कुछ समूह प्रकृति और कमजोर वर्गों का दोहन कर अपनी सत्ता को कायम रखते हैं। पारिस्थितिक नारीवाद इसी वर्चस्ववादी संरचना का प्रतिरोध करता है और यह तर्क प्रस्तुत करता है कि सामाजिक न्याय और पारिस्थितिक संतुलन परस्पर जुड़े हुए हैं। सीता के शब्दों से यह स्पष्ट होता है कि धरती को केवल संसाधन के रूप में देखने के बजाय उसे एक पोषक और जीवंत इकाई के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए ताकि सभी जीवों को अपनी संभावनाओं को विकसित करने का समान अवसर मिल सके। प्रकृति संतुलन स्थापित करने की अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुरूप कार्य करती है, जिसके अंतर्गत वह किसी भी क्षति की भरपाई विभिन्न प्रक्रियाओं और तंत्रों के माध्यम से सुनिश्चित करती है। इसलिए सीता कहती हैं, 'प्रकृति क्षतिपूर्ति के सिद्धांत में विश्वास करती है।'[15] मनुष्य की तामसी प्रवृत्तियाँ समाज के विघटनकारी तत्वों के रूप में सामने आती हैं और पर्यावरणीय असंतुलन का कारण भी बनती हैं। सीता अपने पुत्रों को संबोधित करते हुए उन प्रवृत्तियों की पहचान कराती हैं। वे समझाती हैं कि, 'किसी के पीछे पड़ जाना, सबकी खाट खड़ी करना, स्वयं को श्रेष्ठ, दूसरों को अधम जानकर शेखियाँ बघारा करना, अधिकार और कर्तव्य में सही सन्तुलन न बिठा पाना ऐसी तामसी वृत्तियाँ हैं, जिनसे ग्रस्त कोई व्यक्ति सहज प्रसन्न रह ही नहीं सकता और इससे प्रकृति का सन्तुलन भी भंग होता है।'[16] मनोवैज्ञानिक एवं नैतिक पतन की ये प्रवृत्तियाँ मनुष्य को अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए संसाधनों का अति-दोहन करने तथा सत्ता एवं वर्चस्व की प्रतिस्पर्धा में पारिस्थितिकीय तंत्र की उपेक्षा करने के लिए प्रेरित करती हैं।पारिस्थितिक नारीवाद के दृष्टिकोण से देखा जाए तो सीता का यह मातृत्व दृष्टिकोण प्रकृति और मानव समाज के बीच सहजीवी संबंध को भी उजागर करता है। वे प्रकृति को केवल संसाधन के रूप में नहीं बल्कि जीवन के मूल आधार के रूप में देखती हैं, जिसमें हर जीव और समुदाय का समान अधिकार होना चाहिए। उनकी दृष्टि में केवल स्त्रियों की स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं बल्कि संपूर्ण सृष्टि की मुक्ति आवश्यक है। इस प्रकार 'तृन धरि ओट' उपन्यास पारिस्थितिक नारीवाद, सामाजिक न्याय और समावेशिता के अंतर्संबंधों को स्पष्ट करते हुए एक समतामूलक समाज की कल्पना प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष - 'तृन धरि ओट' में अनामिका का प्रयोगात्मक लेखन पारंपरिक आख्यानों की सीमाओं को तोड़ता है और स्त्री-दृष्टि से इतिहास और मिथकों की पुनर्व्याख्या करता है। रामकथा के भीतर रहते हुए भी यह उपन्यास नए

विमर्श खोलता है, जिसमें भारतीय समाज में स्त्री चेतना को एक नए परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है। सीता के चरित्र का पर्यावरणीय और नारीवादी दृष्टि से पुनर्परिभाषण किया गया है। सीता सामाजिक अन्याय और पितृसत्तात्मक संरचनाओं के खिलाफ संघर्ष करती हुई पर्यावरणीय चेतना और सामूहिक न्याय की प्रेरक शक्ति के रूप में सामने आती हैं। सीता का दृष्टिकोण पारिस्थितिक नारीवाद की मूल भावना को अभिव्यक्त करता है, जिसमें स्त्री और प्रकृति को एक-दूसरे का पूरक माना गया है। वे सामाजिक अन्याय और पितृसत्तात्मक मान्यताओं पर प्रश्न उठाते हुए संवेदनशील न्याय व्यवस्था की आवश्यकता पर बल देती हैं। उनका विचार केवल स्त्रियों की स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रहता अपितु समाज में वंचित और शोषित वर्गों के प्रति भी एक न्यायसंगत दृष्टिकोण की वकालत करता है। पर्यावरण और स्त्री की स्थिति के बीच अंतर्संबंध को समझने तथा उसे एक नई परिभाषा प्रदान करने का यह प्रयास पारिस्थितिक नारीवाद के सिद्धांतों को सशक्त करने के साथ-साथ समाज में संवेदनशील, समावेशी और न्यायसंगत दृष्टि विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पारिस्थितिक नारीवाद केवल एक सैद्धांतिक विमर्श नहीं अपितु सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण उपकरण भी हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. के. वनजा, ईको-फेमिनिज्म, वाणी प्रकाशन, 2013, पृष्ठ संख्या-103
2. सीमोन द बोउवार, स्त्री उपेक्षिता(अनु. प्रभा खेतान), हिंदी पॉकेट बुक्स प्रा.लि., 2002, पृष्ठ संख्या-67
3. के. वनजा, ईको-फेमिनिज्म, वाणी प्रकाशन, 2013, पृष्ठ संख्या-41
4. अनामिका, तृन धरि ओट, वाणी प्रकाशन, 2023, पृष्ठ संख्या-45
5. वही, पृष्ठ संख्या-40
6. वही, पृष्ठ संख्या-213
7. वही, पृष्ठ संख्या-108
8. वही, पृष्ठ संख्या-155
9. वही, पृष्ठ संख्या-155
10. वही, पृष्ठ संख्या-36
11. वही, पृष्ठ संख्या-24
12. वही, पृष्ठ संख्या-26
13. वही, पृष्ठ संख्या-46
14. वही, पृष्ठ संख्या-218
15. वही, पृष्ठ संख्या-57
16. वही, पृष्ठ संख्या-19

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक के ध्येय, उद्देश्य एवं मूल्यों का विवेचन

डॉ. तृप्ति शुक्ला *

* अतिथि विद्वान, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – देश की अर्थव्यवस्था में बैंकों का स्थान महत्वपूर्ण होता है क्योंकि देश के आर्थिक विकास एवं उन्नति के लिए एक अच्छी बैंकिंग व्यवस्था का होना बहुत आवश्यक हैं। वर्तमान में बैंकिंग का विस्तार काफी व्यापक हो चुका हैं। बैंकों के बिना राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की प्रगति की कल्पना करना ठीक उसी प्रकार होगा जिस प्रकार बिना रक्त के मानव शरीर होता हैं इसलिए गाँवों के विकास के लिए ग्रामीण बैंकों की स्थापना की गई हैं। देश में उद्योगों की स्थापना, कृषि व लघु उद्योगों का विकास, संचय एवं पूँजी निर्माण, रोजगार के अवसरों का विस्तार बिना बैंकों के सम्भव नहीं है अत: इस शोध पत्र में म.प्र. ग्रामीण बैंक द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं के साथ बैंक के ध्येय, उद्देश्य एवं मूल्यों का विस्तार पूर्वक अध्ययन किया गया हैं।

शब्द कुंजी – मूल्य, उद्देश्य, ध्येय, बैंक, ग्रामीण, सुविधाएँ, अर्द्धशहरी, आर्थिक विकास, वित्तीय स्थिरता, ऋणों की वसूली, अर्थव्यवस्था, उद्योग।

प्रस्तावना – यह बैंक क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के संरचनात्मक समेकन की प्रक्रिया के भाग के रूप में, मध्यप्रदेश राज्य में तीन पूर्ववर्ती क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के समामेलन से, भारत सरकार की अधिसूचना दिनांक 08.10.2012 के तहत अस्तित्व में आया है।

1 अप्रैल 2019 से सेंट्रल म.प्र. ग्रमीण बैंक और नर्मदा झाबुआ ग्रामीण बैंक का विलय हो गया और नया नाम म.प्र. ग्रामीण बैंक है अर्थात – इन दोनों बैंको (आर.आर.बी.) को मिलाकर एक एकल ग्रामीण बैंक का गठन किया गया। म.प्र. ग्रामीण बैंक का मुख्यालय इन्दौर म.प्र. में स्थित हैं। समामेलित बैंक, बैंक ऑफ इंडिया (बी.ओ.आई.) के प्रयोजन के अधीन हैं।

शाखा तंत्र

म.प्र. ग्रामीण बैंक का कार्य क्षेत्र – बैंक को अपनी सेवाओं को विस्तारित करने तथा व्यवसाय की गतिशीलता को बढ़ाने की नीतियों को अपनाते हुए वर्ष 2018–19 तक 01 नवीन पूर्णत: कम्प्युटरीकृत, शाखा सीबीएस के साथ खोली गई है, जिससे बैंक की कुल शाखाएं 456 हो गई है। जनगणना 2011 के अनुसार इन शाखाओं में 274 ग्रामीण, 134 अर्द्ध शहरी, 31 शहरी, व 17 महानगरीय शाखाएं है। वर्तमान में यह बैंक म.प्र. के 39 जिलों में अपनी 866 शाखाओं, 14 क्षेत्रीय कार्यालयों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय सेवायें प्रदान करता हैं। बैंक का नेटवर्क बहुत मतबूत हैं। जो ग्रामीण निवासियों को व्यापक कवरेज के साथ पहुँच प्रदान करता हैं। मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक के बढ़ते हुए रूप को देखते हुए इनकी शाखाओं को क्षेत्रवर, जिलेवार एवं श्रेणीवार किया गया है।

बैंक द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएँ

- म.प्र. ग्रामीण बैंक द्वारा ग्रामीण एवं अर्द्धशहरी क्षेत्रों के लिए निम्न लिखित सेवाएँ प्रदान की जाती हैं।

1. **बचत खाता एवं चालू खाता।**
2. **फिक्स डिपोजिट ।**
3. **व्यक्तिगत एवं कृषि ऋण।**
4. **स्वरोजगार ऋण योजनाएँ।**
5. **एटीएम एवं माइक्रो सेवाएँ।**
6. **किसान क्रेडिट कार्ड ।**

कोर फाइनेंशियल साल्यूशन CBS तकनीक जो सुचारू ग्राहक अनुभव प्रदान करने के लिए कई वित्तीय सेवाओं को एकीकृत करती है। साथ ही सभी म.प्र. ग्रामीण बैंक शाखाओं को शक्ति प्रदान करती है। बैंक की सभी शाखाएँ RTGS/NEFT सुविधाएँ प्रदान करती है। जो ग्राहकों को आसान एवं तेज इलेक्ट्रॉनिक फंड लेन–देन प्रदान करती है।

ग्राहकों एवं उपयोग कर्ताओं की सुविधा को और बेहतर बनाने के

लिए इसमें इन्टरनेट पर सामग्री देखने सम्बंधी सुविधा भी उपलब्ध कराती हैं। ग्रमीण अर्थव्यस्था को मजबूत करने के लिए ग्रमीण एवं कृषि क्षेत्रों के लिए संस्थागत ऋण बढ़ाकर एवं सहकारी ऋण संरचना को पूरक बनाने का प्रयास करते हैं।

शोधा अवधि – मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक का अध्ययन विगत वर्ष 2018-19 से 2023-24 तक के आधार पर उल्लेख किया गया है।

शोध प्रविधि – इस शोध पत्र को पूर्ण करने के लिए द्वितीय समंकों एवं वार्षिक प्रतिवेदनों की आवश्यकता होगी। अत: बैंक के वार्षिक प्रतिवेदनों की सहायता ली गई है।

शोध के उद्देश्य – मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक के ध्येय, उद्देश्य एवं मूल्यों का अध्ययन करना एवं साथ ही साथ यह भी देखना की बैंक अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने में सक्षम है या नहीं।

बैंक के ध्येय, उद्देश्य और मूल्य – बैंक का मूल मकसद सतत् आर्थिक विकास, वित्तीय स्थिरता को बढ़ावा देना एवं कुशल वित्तीय प्रणाली के विकास को सुनिश्चित करना है। साथ ही ग्रामीण अर्द्धशहरी और शहरी क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाना हैं।

1. **मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक का ध्येय –** लघु किस्म के उद्योगों को प्रोत्साहित करने एवं लघु स्तर के किसानों को उधार धनराशि को उपलब्ध कराने के लिए समय-समय पर सभाओं को स्थापित करते हुए प्रोत्साहित करना एवं हितकारकों की सेवा करना बैंक का मुख्य ध्येय रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने हेतु लघु उद्योगों की स्थापना करते हुए सम्पूर्ण देश की अर्थव्यवस्था में सुधार लाना साथ ही किसानों की व्यक्तिगत आर्थिक परिस्थितियों में भी सुधार लाते हुए सामाजिक उत्थान में सहयोग करना बैंक का ध्येय रहा है, एवं म.प्र. ग्रामीण बैंक को प्रगतिशील म. प्र. की पसंद का बैंक बनाना प्रमुख ध्येय हैं।

2. **बैंक के उद्देश्य**

वर्तमान में बैंक निम्नलिखित उद्देश्यों पर कार्य करता हैं-

1. **व्यापार, उद्योग, कृषि एवं अन्य उत्पादक गतिविधियों के लिए वित्तीय सहायता –** म.प्र. ग्रामीण बैंक जरूरत मंदों को समय पर और पर्याप्त मात्रा में ऋण प्रदान करता है जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार होता हैं और इन सभी क्षेत्रों को प्रोत्साहित करता हैं।
2. **बचत की आदत डालना-** ग्रामीण गरीबों में संचय की आदत डालने के लिए बैंक द्वारा बैंकिंग चैनलों के माध्यम से प्रोत्साहित करना उद्देश्य रहा हैं। ग्रामीणों की छोटी-छोटी बचतों को संग्रह करके उन्हे लाभदायक तथा उत्पादक कार्यो में लगाने का श्रेय बैंकों को ही जाता हैं।
3. **वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देना –** बैंक का प्रमुख उद्देश्य भारत सरकार और आर.बी. आई. द्वारा निर्धारित वित्तीय समावेशन के लक्ष्यों को पूरा करना हैं। सथ ही विभिन्न जनहित योजनाओं का समय पर लाभ लिया जा सकता हैं।
4. **रोजगार के अवसर सृजन करना-** छोटे शहरों एवं ग्रामीण कस्बों में रोजगार के अवसर पैदा करके बेरोजगारी की समस्या को कम करना।

मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक का मुख्य उद्देश्य रहा है कि वह अपने अधिाकारियों एवं कर्मचारियों को बैंक की प्रगति के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्य या अन्य लघु उद्योगों को विकसित करने में कार्यरत व्यक्तियों एवं लघु उद्योगपतियों को वित्त की व्यवस्था प्रदान करने के लिए बेहतर सेवाएँ प्रदान करें एवं ग्रामीण क्षेत्रों में सेवाएँ अधिक से अधिक प्रदान करे। बैंक द्वारा प्रदत्त सेवाओं में मुख्य रूप से वर्तमान आधुनिक युग से व्यवसाय को बढ़ाने हेतु क्या - क्या कदम उठाए जाएँ। ऋणों की वसूली से संबंधित जानकारियों को प्रदान करें, मानव संसाधन के अंतर्गत बैंक अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान करते हुए उन्हें ग्राहकों के प्रति नम्रतापूर्वक व्यवहार अपनाने के लिए प्रेरित करता रहे। बैंक का मुख्य उद्देश्य भारतीय रिजर्व बैंक, राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार, नाबार्ड, एन. सी. डी. सी., एन.सी.यू. आदि से मिलकर गाँवों को विकासशील बनाने के लिए विभिन्न योजनाओं को निर्मित करना भी है। बैंक का अंतिम लक्ष्य ग्राहक के लिए सर्वोत्तम परिणाम प्रदान करना है।

बैंक द्वारा अपने ग्राहकों को उत्कृष्ट, अभिनव एवं अत्याधुनिक बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करते हुए उनकी आर्थिक रिपोर्ट में सुधार लाते हुए समस्त गाँवों में विकास के लिए कई आवश्यक कदम उठाए गए हैं।

3. **बैंक के मूल्य –** बैंक के ग्राहक ही बैंक के मूल मूल्यों के संरक्षक हैं और सही कार्यप्रणाली को साकार करने में मदद करते हैं बैंक की नीतियों एवं निर्णयों को प्रतिविम्बित करने वाले मूल मूल्यों में निम्न शामिल है।

सकारात्मकता – मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक अपने सभी ग्राहकों को इस भावना के साथ सेवाएँ प्रदान करता हैं जिससे ग्राहकों द्वारा ली जाने वाली वित्तीय सहायता का प्रतिफल सकारात्मक रूप में प्राप्त हो। इसके लिए बैंक द्वारा समय-समय पर भिन्न-भिन्न स्थानों पर केम्पों की व्यवस्था की जाती रही है, जिसमें बैंक के सभी अधिकारी वर्ग एवं अन्य कर्मचारियों द्वारा कृषकों एवं अन्य व्यवसायियों को उनकी सेवाओं का सकारात्मक पहलु देखने को मिलता है जहाँ बैंक एवं ग्राहक दोनों के पास सकारात्मक अनुभव होता है।

निरन्तरता – मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक द्वारा स्वयं की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के साथ-साथ सम्पूर्ण देश की अर्थव्यवस्था में सुधार लाने हेतु अनेक योजनाओं का निर्माण करते हुए उन्हें निरन्तर कार्य विधि में लाया गया है जिससे समय-समय पर वित्तीय सहायता के रूप में बैंक द्वारा लघु कृषकों एवं लघु व्यवसायियों को वित्तीय सहायता प्राप्त हो सके। बैंक द्वारा यह भी प्रयास किया जाता है कि सभी वर्ग के कृषकों एवं व्यवसायियों को बिना किसी रूकावटों के निरंतर सेवाएँ प्रदान की जा सकें।

निष्कपटता – मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में विकास करने एवं कृषि क्षेत्र की उन्नति के लिए प्रयोग में आने वाले सभी संसाधनों को निष्कपटतापूर्वक उपयोग में लाया जाता है, अर्थात् बैंक द्वारा कृषकों या लघु किस्म के उद्योगकर्ताओं को निष्पक्ष भावना से बिना किसी कपट भावना के सभी आवश्यक जानकारियाँ उपलब्ध कराई जाती है। बैंक द्वारा अपने अधिकारियों एवं अन्य कर्मचारियों को आवश्यक निर्देशों में यह भी निर्देश दे रखे हैं कि जरूरतमंद लघु कृषकों एवं लघु उद्योगपतियों को समय-समय पर बैंक की गतिविधियों से अवगत कराते हुए वित्तीय सुविधायें प्रदत्त करें।

पारदर्शिता – मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक द्वारा अपने ग्राहकों को वित्तीय सहायता प्रदान करना एवं अपनी उन्नति के लिए पारदर्शिता का विशेष धयान रखा जाता है, जिसके अंतर्गत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले सभी कृषकों एवं लघु व्यवसायियों को आसानी से एवं बिना किसी बाधाओं के सूचनाओं से अवगत कराया जाता है। बैंकिंग व्यवसाय में पारदर्शिता का विशेष मूल्य समझते हुए सामाजिक, राजनैतिक एवं प्रशासनिक गतिविधियों से अपने ग्राहकों को सभी सूचनाओं को व्यवस्थित तरीकों से उपलब्ध कराया जाता है जिससे आवश्यकतानुसार जरूरतमंदों को वित्तीय सहायता प्राप्त हो सके अत: बैंक द्वारा पारदर्शी रहकर ग्राहकों के भरोसे की रक्षा की

जायेगी।

सदाचार – मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक द्वारा अपनी सेवाओं को प्रदान करने में मुख्यता नीतिशास्त्र या व्यवहार दर्शन, नीतिदर्शन एवं आचार–शास्त्र की भूमिकाओं का विशेष ध्यान रखा जाता है, जिसके अंतर्गत बैंक द्वारा लघु कृषकों एवं व्यवसायियों को यह बताने का प्रयास किया जाता है कि किस समय वित्तीय सहायता का लाभ लेना उचित रहेगा एवं कितनी मात्रा में राशि ऋण के रूप में उधार ली जाए जिससे राशि वापस करने में कठिनाईयों का सामना ना करना पड़े। इन सभी कार्यों को करने के लिए बैंक द्वारा अपने ग्राहकों के प्रति सदाचार व्यवहार की नीति अपनाई जाती है।

निष्कर्ष – मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक का ध्येय बैंक को मध्यप्रदेश में एक विकसित बैंक के रूप में स्थापित करना है साथ ही इसका उद्देश्य उत्तम बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करना तथा ग्राहकों को सुरक्षित एवं सरल वित्तीय सुविधाएँ प्रदान करने हेतु प्रतिबद्ध होना है। बैंक ने अपने मूल्यों में निष्कपटता, पारदर्शिता, सदाचार, सकारात्मकता एवं निरंतरता जैसे गुणों को आत्मसात किया है।

'बैंक की टैग लाइन आपका अपना बैंक (Your Own Bank)
जो अपने ग्राहकों के प्रति प्रतिबद्धता और विश्वास को दर्शाती हैं।'

सुझाव – रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया द्वारा आर्थिक सुधार कि प्रक्रिया के अन्तर्गत बैंक एवं ग्राहक के बीच पारदर्शिता लाने के लिए कई सुधार लागू किये गए हैं। बैंक की एक उपयुक्त कार्यप्रणाली होनी चाहिए जिसके फलस्वरूप बैंक अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने में सफल हो। साथ ही बैंक को सकारात्मक सोच के साथ नीतियाँ बनाकर उन पर अमल करना होगा। बैंक का मूल उद्देश्य तभी पूर्ण होगा जब गाँव में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति बैंकिंग लेन–देन को अच्छी तरह जान सकेगा। बैंकिंग व्यवहार ईमानदारी एवं पारदर्शिता के नैतिक सिद्धांतो पर अधारित होना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. बैंकिंग विधि एवं व्यवहार मिश्रा, पी, 1987, प्रिंटेबल पब्लिशर्स जयपुर प्रकाशन, दिल्ली।
2. कार्यप्रणाली एव्र उपलब्धियाँ, यादव, डॉ. जी.पी. 2017, आदित्य पब्लिशर्स बीना म.प्र. प्रकाशक, दिल्ली।
3. भारत के ग्रामीण क्षेत्र डी. हिंगरा आई.सी. (1987) एस. चंद और एस ऑन, नई दिल्ली।
4. मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक के वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2016–17 से 2023–24 तक।
5. रिसर्च मेथोडोलाजी वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
6. जी. के. वार्ष्णेय बैंकिग विधि एवं व्यवहार।
7. जर्नल ऑफ बैंकिंग एण्ड फाइनेंस।

वेब साईट:

1. www.shodhganga.com
2. www.rbi.com.in
3. www.cmpgb.com.in
4. https://mpgb.co.in/sitemap.php

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Assessing Rural Sanitation Progress through Individual Household Latrine (IHHL) Implementation: A Case Study of Four Villages in Sidhi distt. (M.P.)

Aman Singh Gaharwar* **Dr. Kumud Shrivastava****

*Research Scholar (B.A. hons. Economics) Govt. T.R.S. College, Rewa (M.P.) INDIA
** Professor (Economics) Govt. T.R.S. College, Rewa (M.P.) INDIA

Abstract: This paper presents findings from a primary field survey on rural sanitation conducted in four villages as part of the Swachh Bharat Mission–Gramin (SBM-G) initiative. The survey included 120 respondents (30 per village) and focused on the construction, usage, benefits, and challenges associated with Individual Household Latrines (IHHL). The study reveals that while infrastructure development under SBM-G has improved access to sanitation, persistent challenges such as water scarcity, cultural resistance, and poor maintenance continue to impact sustained toilet use. The research highlights key perceived benefits, especially for women, and offers policy recommendations to enhance future sanitation interventions.

Introduction - Sanitation remains a critical development challenge in rural India. The Government of India launched the Swachh Bharat Mission–Gramin (SBM-G) in 2014 to achieve universal sanitation coverage and eliminate open defecation. Among the key components of SBM-G is the promotion of Individual Household Latrines (IHHL), which aims to provide every rural household with a functional toilet facility.

This research investigates the real-world implementation of IHHL in four selected villages using primary survey data. It evaluates sanitation behavior, perceived benefits, and existing constraints to inform future sanitation strategies.

Objectives:

1. To assess the reach and effectiveness of IHHL in the selected rural areas.
2. To analyze the perceived health, social, and economic benefits.
3. To identify constraints in usage and maintenance of toilets.
4. To provide policy suggestions based on grassroots findings.

Methodology

Study Area: The study was conducted in four villages (Mawai,Tikhat,Duara,Dadhiya), representing different socio-geographical contexts (tribal, flood-prone, semi-urban, and agrarian).

Sample Size and Tools:

1. 120 respondents (30 per village)
2. Tools: Structured questionnaires, in-depth interviews, and observation checklists

Grampanchayat-Mawai (LGD-152356) Village-Mawai (LGD-502484)

IHHL(Phase 1)	IHHL (Phase 2)	Total IHHL(including Selffunded)	
511		58	569

Total population of Mawai village is 3363 as per 2011 censes and no. of houses is 599 out of them 569 toilets constructed under SBM-G.

Grampanchayat-Tikat Kala (LGD-152394) Village-Tikat Kalan (LGD-502482)

IHHL(Phase 1)	IHHL (Phase 2)	Total IHHL(Phase 1 + Phase 2) (Including Selffunded)
398	56	454

Total population of Tikatkalan village is 3452 as per 2011 censes and no. of houses is 694 out of them 454 toilets constructed under SBM-G.

(LGD-4023)| Gram Panchayat-Duara (LGD-152226) | Village-Duara (LGD-502480)

IHHL(Phase 1)	IHHL (Phase 2)	Total IHHL(Phase 1 + Phase 2) (Including Selffunded)	
194		38	232

Total population of Duara village is 2,087 as per 2011 censes and no. of houses is 350 out of them 232 toilets constructed under SBM-G.

GD-4023)| GramPanchayat-Dadhia (LGD-152223)| Village-Dadhiya (LGD-502478)

IHHL(Phase 1)	IHHL (Phase 2)	Total IHHL(Phase 1 + Phase 2) (Including Selffunded)	
235		124	359

Total population of Dadhiya village is 1143 as per 2011 censes and no. of houses is 373 out of them 359 toilets constructed under SBM-G.

Sidhi district in Madhya Pradesh has 1092 villages. These villages are spread across 8 tehsils and 400 Gram Panchayats. There are also 5 JanpadPanchayats and 5 Revenue Sub Divisions within the district.

Total IHHL beneficiaries in sidhi distt. is - 168281

Key Indicators Surveyed:

1. Toilet construction status.
2. Usage patterns.
3. Health and hygiene behaviors.
4. Funding and subsidy awareness.
5. Benefits for women and vulnerable groups.

Results and Analysis

As per my own primary survey raw data was collected from authorities and presented in this research paper.

Pictures showing the reality of Rural sanitation infrastructure IHHL in Villages covered during survey.

Toilet Construction and Usage

Village	Households with IHHL(%)	Households using IHHL(%)
MAWAI	100%	98%
TIKHAT	85%	70%
DUARA	60%	45%
DADHIYA	75%	65%

*Village A demonstrated near-universal adoption.

*Village C showed poor usage due to cultural beliefs and infrastructure issues.

Perceived Benefits

1. **Health**: 68% of respondents reported a decline in waterborne diseases.
2. **Women's Safety and Dignity**: 74% of female respondents felt safer using IHHL.
3. **Economic Benefits**: Reduced healthcare costs reported by 59% of respondents.
4. **Social Status**: 62% noted an increase in dignity and social inclusion.

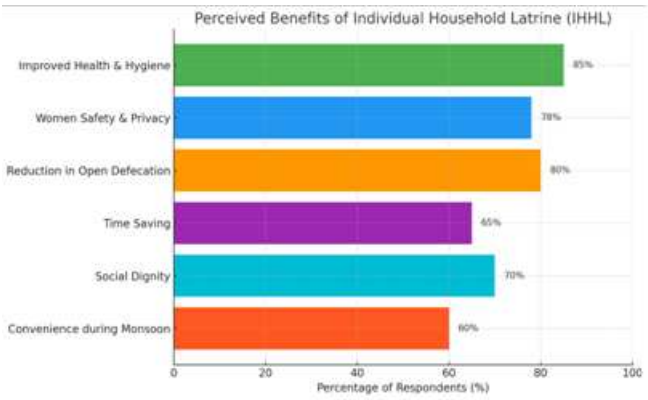

Constraints Identified

1. **Water Scarcity**: Reported by 38% of respondents.

2. Irregular Subsidy Disbursement: 27% did not receive full SBM-G incentives.

3. Lack of Awareness: 22% unaware of hygienic toilet maintenance.

4. Cultural Barriers: Noted significantly in tribal Village C.

Discussion: The findings indicate that IHHL under SBM-G has significantly improved rural sanitation conditions, particularly in terms of coverage. However, behavioral change, infrastructure maintenance, and access to water remain critical barriers. Socio-cultural resistance still impedes adoption in remote and tribal areas.

As per govt. record these villages have achieved 100% Open defecationfree certified

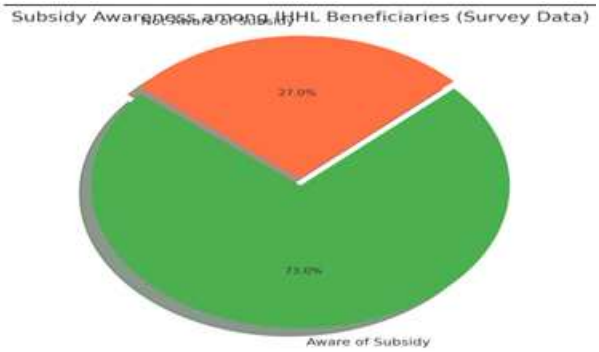

Policy Recommendations:

1. Strengthen local governance and monitoring to ensure subsidy delivery and toilet maintenance.
2. Introduce behavioral training via schools, self-help groups, and local influencers.
3. Ensure water availability through micro-infrastructure like rainwater harvesting.
4. Tailor IEC (Information, Education, Communication) campaigns to local cultural contexts.
5. Aware illiterate community regarding health impact of using toilet.
6. Size of toilets should increase so that it will be used by all family members.

Conclusion: While SBM-G has achieved substantial progress in sanitation infrastructure, the success of IHHL depends on continuous community engagement, behavior change, and systemic support. The research emphasizes that future sanitation programs must integrate health education, cultural sensitivity, and reliable service delivery to ensure long-term sustainability.

1. Improved health & hygiene was reported by 85%. Women's safety & privacy was recognized by 78%.
2. Reduction in open defecation was noted by 80%.
3. Time saving and convenience during monsoon were also significant.

References:-

1. Ministry of Jal Shakti. (2023). SBM-G Annual Report.
2. WHO/UNICEF JMP. (2021). Sanitation Progress Report.
3. UNICEF India. (2021). Sanitation Behavior Change in Rural India.
4. NSSO. (2019). 76th Round Survey on Drinking Water and Sanitation.
5. Field Data from Four Village Surveys (2025).
6. Raw data from gram panchayat's.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

A Study of the Role of Indian Transportation System in the Economic Development of our Country

Dr. Dharmesh Jain* **Dr. Yogendra Singh Thakur**** **Dr. Suchitra Srivastava****

*Director, Department of MBA, SGI, Bhopal (M.P.) INDIA
** Asst. Prof., Department of Management, SIRTE, Bhopal (M.P.) INDIA
*** Prof., Department of Management, SIRTE, Bhopal (M.P.) INDIA

Abstract : Indian Transport System is one of the most important systems for transporting goods from one place to another. This paper will analyse the contribution transportation in economic development by quantitative Data. Its contribution in economic development is highly significant. The Indian transport system plays a vital role for the upliftmentof a country's economic development and its people as well. A well-maintained physical connectivity is very important for the infrastructural development of a country. Transportation is the life line of our country. It gives a boost to our economic work as well. This era of youth will become the witness of transportation development, rail transport system, waterways and airways. Growth of Indian transportation system is growing rapidly. It earns millions of rupees per year. This research paper aims to study deeply about the transportation system and its pros and cons. It will also investigate the development of transport sector and its economic contribution. The economic infrastructure development helps for the growth of employment, per capita income and control on poverty within the country. This is the fundamental work for the development of our country.

Keywords: Infrastructure, PPT Model, Economic reforms, PMGSY, Economic reforms.

Introduction - Because of India's well economic development in transport sector, it is growing rapidly. In all over the country this sector plays vitalrole. Economic infrastructure helps this sector both directly and indirectly. Transport sector is facing many challenges this time. In the developing country like India this sector is also facing much type of challenges. The government is creating many plans for this sector but at thesame time these efforts are not enough. Indian government is trying inthis field with more powerfulimpacts and policies. The government of our country is giving economic help to this sector as well. This paper will try to focus on this great field.

Research Methodology: The methodology of this research paper will use secondary data. Research reports,research works on transport system,research data from the government departments will be used herein the pilot study; primary data will be used for the purpose of information gathering. Central tendency will be used for the exploration of data; analysis of data, statistical tools will be used. Madhya Pradesh state will be the area of study for this research paper.

Review Of Literature: A Literature review on transportation examines the role of transport .It also examines the movement of goods and services in all over the country .Here are various modes of transport providing services to the development of our country .different modes of transport are here like Air Transport ,Road Transport ,Water Transport ,Pipelines, Land Transport Cable Transport and space transport .The review of literature generally based on the research work of Monteiro 2015.Economic development measured on the bases of per capita income and Gross Domestic Production .Human Development Index information plays great role for measuring the development of our country .

Research Gap : Despite significant growth in India's transportation sector, several research gaps remain. There is limited data on the integration and efficiency of multi-modal transport systems, especially in urban and rural linkages. The environmental impact of growing transportation demand is under-researched, particularly in relation to sustainable practices and green technologies. Employee and corporate transportation services are evolving, yet studies on service quality, cost-effectiveness, and safety standards are scarce. Additionally, the role of digital technologies and AI in optimizing transport operations is not fully explored in the Indian context. There is also a need for more localized studies that address region-specific transportation challenges and policy implications.

Statement Of The Problem: India's transport system, though expanding rapidly, faces critical challenges that hinder its efficiency, safety, and sustainability. The existing infrastructure struggles to meet the growing demand caused by urbanization, industrialization, and population growth. Congestion, inadequate public transport, poor road conditions, and insufficient last-mile connectivity continue to affect the daily mobility of millions. Additionally, the lack

of integration between various modes of transport leads to inefficiencies and increased travel time. Environmental concerns such as rising emissions and fuel consumption further aggravate the problem. There is an urgent need for a comprehensive, modernized, and inclusive transportation framework that addresses these issues and supports India's socio-economic development.

Hypothesis:

H0: Indian Transport system is playing vital role for economic development

H1: Indian transport system is not playing vital role for economic development

H0: It helps to reduce unemployment

H1: It doesn't help to reduce unemployment

H0: It helps to improve supply chain management

H1: It doesn't help to supply chain management.

Objectives Of This Research Paper: The objectives of this research paper are to find the solutionsfor the problems faced by the transport sector.

1. To understand the problem of unemployment and solution of it.
2. To analyse the rapid growth of infrastructure.
3. To understand the transporters problems.
4. To understand the economic benefits of this sector.

Scope Of The Study: This study explores the current state, challenges, and potential improvements within the Indian transport system. It covers various modes of transport including roadways, railways, airways, and waterways, with a special focus on urban mobility and public transport services. The study examines infrastructure quality, operational efficiency, policy frameworks, and the integration of technology in transport management. It also investigates environmental impacts and sustainability practices in the sector. Furthermore, the scope includes evaluating regional disparities in transport development and identifying opportunities for investment and innovation to enhance connectivity and accessibility across the country.

Tools Used In Research Paper On Indian Transport System:

1. Questionnaires & Surveys – To gather primary data from commuters, transport service providers, and government officials regarding usage patterns, satisfaction levels, and challenges faced.
2. Statistical Tools (SPSS, Excel, R) – For analysing quantitative data, identifying trends, and performing regression, correlation, or factor analysis.
3. GIS (Geographic Information System) – To map transport routes, identify traffic congestion zones, and study spatial distribution of transport facilities.
4. SWOT Analysis – To evaluate the strengths, weaknesses, opportunities, and threats within the Indian transport system.
5. Secondary Data Analysis – Using data from government reports, research articles, and databases like NITI Aayog, MoRTH, and Indian Railways for comparative and trend analysis.
6. Case Studies – To analyse successful transport models in cities like Delhi Metro or BRTS in Ahmedabad, and derive best practices.
7. Interview Method – For qualitative insights from transport experts, urban planners, and policymaker.

Limitations Of The Study:

1. Limited Primary Data – Due to time and resource constraints, the study may rely heavily on secondary data, limiting firsthand insights from commuters and stakeholders.
2. Geographical Scope – The research may focus on select regions or urban areas, which may not fully represent transportation issues in rural or remote parts of India.
3. Data Availability and Reliability – Inconsistent or outdated government data can affect the accuracy and depth of analysis.
4. Dynamic Policies and Reforms – Ongoing changes in transportation policies and infrastructure development may outpace the study's findings.
5. Technological Variations – Differences in the adoption of transport technologies across states may limit the generalization of results.
6. Environmental and Social Factors – Diverse socio-economic and environmental conditions across regions may influence transport needs and challenges differently, limiting uniform conclusions.

Transport System And Its Important:

1. Transport system helps the supply chain management system of our country as well.
2. It also helps people to move goods in all parts of the country.
3. It plays a significant role for the development of our economic growth.
4. It fosters the flow of goods and services in all parts of the country.
5. It also facilitates to Indian industries for rapid growth and production.
6. Road transport plays an important role for the economic development.

Transport System In India

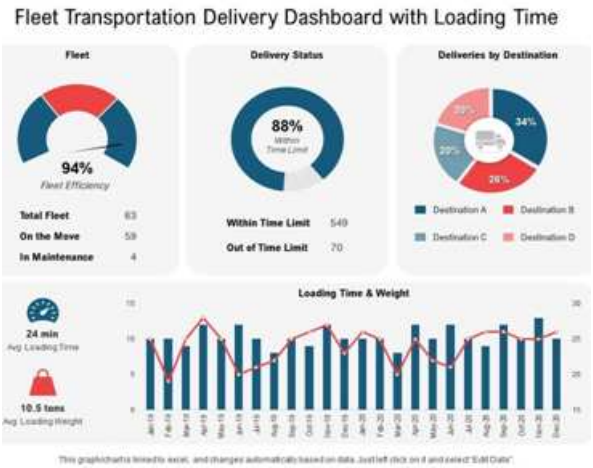

By the Fleet delivery dashboard with loading time, this shows the great role of the transport system in our country.Fleet efficiency increases by better loading time. delivery time reduced with the help of transport. loading time and weight ratio also helps to better result in this field.The **delivery status** highlights that **88% of deliveries were completed within the scheduled time limit**, demonstrating strong operational punctuality. However, the **12% of out-of-time deliveries** suggests scope for improvement in route planning or real-time traffic management. Among the destinations, **Destination A** had the highest delivery share at **34%**, followed by **Destination B (26%)**, and both **Destinations C and D** accounted for **20% each**, offering insights into delivery concentration and demand.In terms of logistics handling, the **average loading time** is **24 minutes**, and the **average loading weight** is **10.5 tons**, which suggests a moderate turnaround per shipment.

Logistic companies transport management can be understood with the help of the above graph.

Table 2: Total Number of Registered Motor Vehicles in India: 1951-2002

(in Thousands)

Year	All Vehicles	Two-Wheelers	Cars, Jeeps, and Taxis	Buses	Goods Vehicles	Others
1951	306	27	159	34	82	4
1961	665	88	310	57	168	42
1971	1865	576	682	94	343	170
1981	5391	2618	1160	162	554	897
1991	21374	14200	2954	331	1356	2533
1999	44875	31328	5556	540	2554	4897
2000	48857	34118	6143	562	2715	5319
2001(P)	54991	38556	7058	634	2948	5795
2002(P)	58863	41478	7571	669	3045	6100

Source: Transport Research Wing, Ministry of Road Transport & Highways, Government of India, New Delhi. Motor Transport Statistics of India. Various issues.

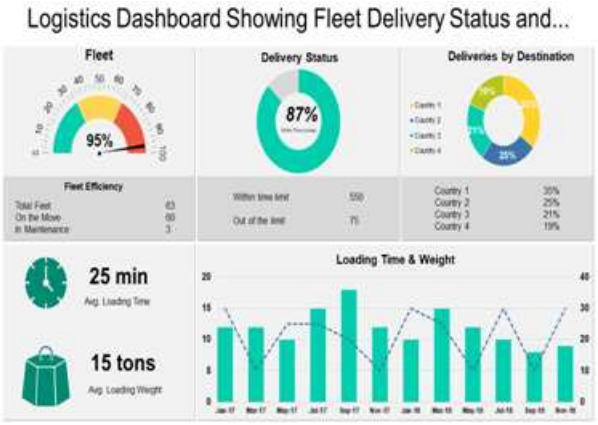

*The source of the above image is internet.

This logistics dashboard provides a comprehensive overview of fleet delivery performance. The fleet efficiency is high, with 95% of vehicles operational and only 3 out of 63 in maintenance. Delivery timeliness is strong, with 87% of deliveries made within the set time limit (550 on time vs. 75 late). The pie chart reveals that Count. This logistics dashboard provides a comprehensive overview of fleet delivery performance. The fleet efficiency is high, with 95% of vehicles operational and only 3 out of 63 in maintenance. Delivery timeliness is strong, with 87% of deliveries made within the set time limit (550 on time vs. 75 late). The pie chart reveals that Country 1 has the highest delivery share at 35%, followed by Country 2 at 25%. The average loading time is 25 minutes, and the average loading weight is 15 tons. The bar and line chart track monthly loading time and weight, showing noticeable fluctuations throughout the year, with peaks in September 2017 and July 2018.ry 1 has the highest delivery share at 35%, followed by Country 2 at 25%. The average loading time is 25 minutes, and the average loading weight is 15 tons. The bar and line chart track monthly loading time and weight, showing noticeable fluctuations throughout the year, with peaks in September 2017 and July 2018.

*The source of the above image is internet.

Inventory and logistics stock quantity and cost dashboards show the inventory turnover growth, stock quality increase,

average cost graph and quality purchase and average cost purchase and how the balance can bemade, easily understood easily The Inventory & Logistics Stock Quantity and Cost Dashboards present a detailed overview of inventory performance from 2015 to 2018. The stock quality saw a significant decline from 76k in 2016 to just 12k in 2018, indicating potential issues in stock management. Average cost and average cost per purchase surged sharply in 2018, reaching 28k and 650k respectively, despite a drastic reduction in quality purchases. The stock balance shows a shift from items less than 1 year old to older inventories over time. Inventory turnover improved to 1.8 days in 2018, indicating better efficiency, while cost of purchases and balances also show fluctuating trends, peaking in 2016 and 2018. This dashboard highlights the need for better cost control and inventory quality monitoring.

The growth of the India Employee Transportation Services Market from 2020 to a forecasted 2030. The market revenue rose from ₹ 1,094 crore in 2020 to ₹ 2,017.5 crore in 2023, reflecting a strong CAGR of 22.6% during that period. From 2024 onwards, growth is projected to continue at a moderate CAGR of 8.2%, reaching ₹ 3,430.7 crore by 2030. This trend indicates sustained demand and investment in employee transportation services. The steady increase highlights the sector's vital role in workforce mobility and corporate logistics in India.

Table 3. Private and Public Transport Vehicles in Selected Metropolitan Cities in India (as of March 31, 2000)

Metro politan Cities	Two-wheelers	Cars (including jeeps)	Taxies (including auto-rickshaws)	Buses	Others	Total
Ahmedabad	616738	104179	43865	14993	19316	799091
Bangalore	1164204	238374	77375	6380	63362	1549695
Chennai	848118	207860	45016	4409	44223	1149626
Delhi	2184581	869820	104747	37733	226593	3423474
Hyderabad	757684	99314	48898	2539	42189	950624
Jaipur	444889	76133	12513	14362	49760	597657
Kanpur	273208	323212	5252	882	23556	626110
Kolkata	298959	238560	41946	8586	75995	664046
Lucknow	344268	53069	15454	2816	26779	442386
Mumbai	407306	325473	156261	15414	65226	969680
Nagpur	272734	27573	10666	2788	17478	331239
Patna	184585	40357	16302	3785	30989	276018
Pune	443266	62885	44590	7827	34046	592614

Source: Transport Research Wing, Ministry of Road Transport & Highways, Government of India, New Delhi. *Motor Transport Statistics of India*. Various issues.

The percent change in employment across major U.S. industries from February 2020 to March 2022. It highlights that the transportation and warehousing industry saw the largest increase in employment, growing by nearly 10%. In contrast, industries like mining & logging, leisure & hospitality, and other services experienced significant job losses during this period. Despite the pandemic's economic impact, transportation and warehousing added over half a million jobs, while many other sectors still haven't recovered to pre-pandemic employment levels.

The number of travel and tourism jobs worldwide from 2019 to 2023, along with forecasts for 2024 and 2034.

1. In 2019, there were 334 million jobs.
2. The number dropped to 271 million in 2020 due to the COVID-19 pandemic.
3. Employment gradually recovered, reaching 330 million in 2023.
4. Forecasts show further growth to 348 million in 2024 and 449 million by 2034, indicating a strong long-term rebound in the travel and tourism sector.

The global number of travel and tourism jobs from 2019 to 2023, with projections for 2024 and 2034. Employment dropped sharply from 334 million in 2019 to 271 million in 2020 due to the COVID-19 pandemic. Gradual recovery is evident with jobs increasing to 330 million in 2023. The forecast predicts further growth, reaching 348 million in 2024 and 449 million by 2034. This reflects a strong revival and expansion of the travel and tourism sector worldwide.

Trend of goods moved, vehicle kilometres, and goods lifted in the UK from 2004 to 2018, alongside real UK GDP.

1. The 2008–09 recession caused a sharp drop in all three metrics.
2. Events like severe weather (2013) and major storms (2014, 2016) further impacted goods movement.
3. While goods moved steadily increased after 2012, vehicle kilometres and goods lifted remained lower.
4. In 2018, GDP grew by 1% and the number of GB heavy goods vehicles rose by 0.5% compared to 2017.

Findings On Indian Transportation System:

1. Overdependence on Road Transport – A majority of passenger and freight movement relies on roadways, leading to congestion, pollution, and increased road maintenance costs.
2. Urban Transport Challenges – Major cities face traffic congestion, inadequate public transport systems, and poor last-mile connectivity, affecting daily commuters.
3. Infrastructure Gaps – While significant investments are being made, many regions still suffer from poor road quality, insufficient railway connectivity, and underdeveloped logistics infrastructure.
4. Environmental Impact – High fuel consumption and vehicular emissions contribute to air pollution and climate change concerns, especially in urban centres.
5. Digital Integration is Emerging – Technologies like GPS tracking, e-ticketing, and app-based mobility services are being adopted, but unevenly across cities and transport modes.
6. Policy and Planning Issues – Lack of coordination

between different transport authorities and inconsistent implementation of policies hinder efficient transportation.

Suggestions On Indian Transport System:

1. Promote Integrated Transport Systems – Develop seamless connectivity between road, rail, metro, and waterways to enhance mobility and reduce congestion.
2. Invest in Public Transport – Strengthen and expand affordable, reliable, and eco-friendly public transport options like metros, buses, and BRT systems across cities and towns.
3. Adopt Smart Technologies – Implement intelligent traffic management systems, GPS tracking, and digital ticketing to improve operational efficiency and commuter experience.
4. Improve Rural Connectivity – Focus on upgrading roads and transport services in rural and remote areas to bridge regional disparities and support inclusive development.
5. Encourage Green Transport – Promote the use of electric vehicles, non-motorized transport (bicycles, walking paths), and renewable energy solutions to reduce environmental impact.

Recommendations:

1. Promote Integrated and Multimodal Transport Networks- Encourage the development of interconnected systems combining railways, roadways, airways, and waterways. Seamless integration through common ticketing, synchronized schedules, and smart mobility hubs can improve passenger convenience and logistics efficiency.

2. Invest in Green and Sustainable Transport - Prioritize eco-friendly initiatives like electric vehicle infrastructure, non-motorized transport (cycling, walking), and low-emission public transport systems (like electric buses and metro rail). This will reduce pollution, fuel dependence, and contribute to India's climate goals.

3. Enhance Infrastructure and Digitalization -Upgrade existing infrastructure—like highways, ports, and railway stations—with modern technologies such as Intelligent Transport Systems (ITS), GPS-based fleet tracking, and automated toll collection. Digital tools can improve safety, reduce delays, and support real-time data management.

References:-

1. Ministry of Road Transport and Highways (MoRTH). (2023). *Annual Report 2022-23*. Government of India. Retrieved from https://morth.nic.in
2. NITI Aayog. (2021). *Transforming Mobility in India: Towards Sustainable and Smart Transport Systems*. Retrieved from https://www.niti.gov.in
3. Indian Railways. (2023). *Statistical Summary 2022-23*. Ministry of Railways, Government of India. Retrieved from https://indianrailways.gov.in
4. TERI (The Energy and Resources Institute). (2020). *Sustainable Urban Transport in India: Role of the Government and Private Sector*. TERI Publications.
5. Singh, S. K. (2019). *Future of Transport in India: Vision 2030*. *Journal of Transport and Infrastructure*, 16(2), 45-58.
6. World Bank. (2020). *India - Enhancing Urban Mobility*. Retrieved from https://www.worldbank.org
7. RITES Ltd. (2016). *Transport Demand Forecast Study*. Ministry of Urban Development, Government of India.
8. Ministry of Housing and Urban Affairs (MoHUA). (2022). *Urban Transport Report*. Government of India. Retrieved from https://mohua.gov.in
9. International Energy Agency (IEA). (2021). *India Transport Energy Outlook*. Retrieved from https://www.iea.org
10. National Highways Authority of India (NHAI). (2023). *Annual Report*. Retrieved from https://nhai.gov.in
11. CSE (Centre for Science and Environment). (2020). *The Urban Commute and How it Contributes to Pollution and Energy Consumption*. Retrieved from https://www.cseindia.org
12. Asian Development Bank (ADB). (2021). *Developing India's Transport Sector: Issues, Challenges, and Opportunities*. Retrieved from https://www.adb.org
13. Ministry of Civil Aviation (MoCA). (2023). *Annual Report 2022-23*. Government of India. Retrieved from https://civilaviation.gov.in
14. Institute of Urban Transport (IUT). (2021). *Best Practices in Urban Transport in India*. Retrieved from https://www.iutindia.org
15. McKinsey & Company. (2020). *India's Transport Infrastructure: Challenges and Way Forward*. Retrieved from https://www.mckinsey.com
16. OECD (Organisation for Economic Co-operation and Development). (2021). *Decarbonising Urban Mobility in India*. Retrieved from https://www.oecd.org
17. Centre for Policy Research (CPR). (2019). *Mobility and Urban Transport in Indian Cities: Emerging Trends and Issues*. Retrieved from https://cprindia.org
18. International Transport Forum (ITF). (2022). *Improving Transport Resilience in India*. Retrieved from https://www.itf-oecd.org
19. NIUA (National Institute of Urban Affairs). (2020). *Smart Mobility in Indian Cities: Strategies and Innovations*. Retrieved from https://niua.in
20. Institute for Transportation and Development Policy (ITDP) India. (2021). *Best Practices for Sustainable Transport in India*. Retrieved from https://www.itdp.in

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Artificial Intelligence and the Future of Legal Profession

Raj Mishra*

***Ph.D. Scholar (Law) Sage University, Indore (M.P.) INDIA**

Abstract: Artificial intelligence (AI) is the creation of computer systems capable of doing tasks that would normally require human intelligence, such as learning, reasoning, problem-solving, and decision-making. AI comprises a variety of technologies such as machine learning, natural language processing, robotics, and computer vision.AI has altered industries worldwide, increasing efficiency and innovation. AI is used in healthcare to help with disease diagnosis and personalized treatment regimens. Chatbots, predictive analytics, and fraud detection help to streamline business operations. AI also plays an important part in autonomous vehicles, entertainment, and education, providing solutions that were once considered science fiction.

However, the rise of AI presents challenges. Ethical considerations such as data privacy, bias, and employment displacement must be carefully considered. The long-term integration of AI requires balancing technology developments with societal benefits.AI has enormous potential to transform the world, making lives easier and industries more efficient. As AI's capabilities grow, responsible development and regulation are critical to ensuring it benefits humanity while following ethical standards.

Keywords: Artificial Intelligence, replacement, unemployment, convenience, inconvenience, automation, augmentation, legal research.

Introduction - Artificial Intelligence [AI] is a computer system able to perform tasks which normally require human intelligence. These systems are mainly powered by machine learning, some by deep learning and rules. This comes with learning which involves garnering the rules and information for using the data. It has become very popular and necessary due to data-based service industries like telecommunication, insurance, banking, etc. including law.

Today's AI systems are not intelligent thinking machines in any meaningful sense though they produce useful and intelligent results without using intelligence. These systems do this by detecting patterns in different data and using knowledge, rules, and information specifically encoded in forms able to be processed by computers. Through these computational methods, AI systems produce commendable results on complex tasks that, if done by humans, require cognition. However, the systems do it with the help of computational methods which are not at all in accordance with the human mind.

Meaning of Artificial Intelligence: Artificial Intelligence (AI) is a phrase coined by John McCarthy, the father of Al. The Oxford Dictionary defines Artificial Intelligence as "the theory and development of computer systems able to perform tasks normally requiring human intelligence, such as visual perception, speech recognition, decision-making, and translation between languages. (see here) Simply described, artificial intelligence (Al) is a vast discipline of computer science whose purpose is to develop systems that can operate autonomously and intelligently. It can be described as an intelligent machine capable of thinking, understanding, and acting on its own, as well as the ability to replicate certain human behavior. As a result, Artificial Intelligence is a system that has the capability and ability to solve problems that we humans would normally solve using our natural intelligence. To elaborate further, the goal of Al development is to meet the need for and desire for automation in today's fast-paced human lives. Artificial intelligence (Al) is currently being used to do mundane or even difficult tasks.

Literature review

AI refers to the ability of machines to perform tasks that typically require human intelligence, such as reasoning, learning, and perception. Machine learning is a type of AI that enables machines to learn and improve their performance without being explicitly programmed. NLP is a subset of AI that focuses on the interaction between computers and natural human language.

Previous research has demonstrated the potential of AI to revolutionize the legal profession. For example, a study by Katz et al. (2017) used machine learning algorithms to

predict the outcomes of Supreme Court cases, achieving an accuracy rate of 70.2%. Another study by Aletras et al. (2016) used NLP to predict the decisions of the European Court of Human Rights, achieving an accuracy rate of 79%.

However, there are also critiques of the use of AI in the legal profession. Some argue that the use of AI could lead to the replacement of human lawyers and judges, while others raise concerns about bias in AI algorithms and the potential for errors in decision-making.

Objective Of Study AI:

1. Develop the problem-solving ability
2. Incorporate knowledge representation
3. Facilitate planning
4. Allow continuous learning
5. Achieve General Intelligence
6. Promote synergy between humans and AI

Types Of Artificial Intelligence: AI applications today are of two forms i.e. "narrow AI" or artificial specialized intelligence (ASI) and "general AI" or artificial general intelligence (AGI).

The "narrow AI" aims to solve specific problems or take actions within a limited set of parameters such as communicating with a device to book film tickets or pay a bill or listen to GPS directions, Using Google translate service. This type of AI appears to be smart but it lacks functions other than what is defined. To simplify, it has zero self-awareness. Artificial Intelligence can facilitate a machine for copying the cognitive functions which are naturally ingrained in human beings to associate with other beings such as problem-solving or grasping new data.

The latest AI software is not too flexible to adapt in terms of switching unrelated activities, i.e. from one to another, unrelated activities. It would be a fault on our part to assume that just because AI knocks the human thought process in some tough game, it will necessarily lead to the automation of other difficult tasks like creative legal argumentation or problem solving. Simply put, contemporary AI tends to work best for activities where there are underlying patterns, rules, definitive right answers, and semi-formal or formal structures that make up the process and it works poorly in conceptual, abstract, value-laden, open-ended, policy or judgment-oriented activities.

Statement problem of AI: The rapid advancement of artificial intelligence (AI) has brought numerous benefits, but it also poses significant challenges. One major problem is ensuring that AI systems are developed and deployed in a way that is transparent, explainable, and fair. As AI becomes increasingly pervasive in various aspects of life, there is a growing need to address issues related to bias, accountability, and security. For instance, AI systems can perpetuate existing biases if they are trained on biased data, leading to unfair outcomes. Moreover, the lack of transparency and explainability in AI decision-making processes can erode trust and make it difficult to identify and address errors. Therefore, it is crucial to develop AI systems that are not only efficient and effective but also transparent, fair, and accountable. This requires a multidisciplinary approach that incorporates technical, ethical, and regulatory considerations.

Hypothesis:

1. **Systems can improve decision-making accuracy -** AI can analyze large datasets and identify patterns, leading to more accurate predictions and decisions.
2. **AI can enhance customer experience -** AI-powered chatbots and virtual assistants can provide personalized support and improve customer satisfaction.
3. **AI can detect and prevent cyber threats -** AI-powered systems can identify patterns and anomalies in network traffic, helping to detect and prevent cyber-attacks.
4. **AI can augment human capabilities -** AI can automate routine tasks, freeing up humans to focus on more complex and creative tasks, leading to increased productivity and innovation.

Research Design: An AI research design involves a structured approach to investigating AI-related questions, defining research questions, and selecting a methodology. Data collection and analysis are crucial, using techniques like machine learning. The design should consider ethical implications and potential biases. Results are presented clearly, discussing implications and limitations. The goal is to contribute valuable insights to the field of AI.

Research Methodology: AI research methodology involves a systematic approach to data collection, analysis, and interpretation. It may utilize both quantitative and qualitative methods. Techniques like machine learning and deep learning play a crucial role. The research design should consider ethics and biases. Its purpose is to achieve accurate and relevant results in the field of AI.

Artificial Intelligence and The Impact onthe Legal Profession: Artificial Intelligence (AI) is revolutionizing the legal profession, bringing about a paradigm shift in the way legal professionals operate. The integration of AI in the legal field has both positive and challenging impacts, which are discussed below:

1.Positive Impacts

1. **Document Review and Analysis -** AI-powered tools can quickly review and analyze large volumes of documents, reducing the time and cost associated with manual review. This enables lawyers to focus on high-level tasks and provide more efficient services to clients.
2. **Predictive Analytics -** AI can help predict the outcome of cases, enabling lawyers to make more informed decisions. By analyzing large datasets, AI can identify patterns and trends that may not be apparent to human lawyers.
3. **Contract Analysis -** AI can analyze contracts and identify potential risks, saving time and reducing the risk of errors. This enables lawyers to focus on high-level tasks and provide more efficient services to clients.
4. **Research Assistance -** AI-powered tools can assist

lawyers in researching case law, statutes, and regulations. This enables lawyers to quickly access relevant information and provide more accurate advice to clients.

5. **Client Service -** AI-powered chatbots can provide 24/7 client support, improving client satisfaction. Chatbots can answer routine questions, freeing up lawyers to focus on more complex tasks.

2.Challenging Impacts

1. **Job Displacement -** AI may automate routine tasks, potentially displacing some jobs in the legal profession. Lawyers need to adapt to new technologies and develop skills that complement AI.
2. **Bias and Ethics -** AI systems can perpetuate biases present in the data used to train them, raising ethical concerns. Lawyers need to ensure that AI systems are designed and trained to avoid biases and ensure fairness.
3. **Cybersecurity Risks -** AI systems can be vulnerable to cyber-attacks, compromising sensitive client information. Lawyers need to ensure that AI systems are designed with robust security measures to protect client data.
4. **Regulatory Frameworks -** The legal profession needs to develop regulatory frameworks to address the use of AI in legal practice. This includes ensuring that AI systems are transparent, explainable, and accountable.
5. **Transparency and Explainability -** AI decisions need to be transparent and explainable to ensure accountability. Lawyers need to understand how AI systems arrive at their decisions to ensure that they are fair and unbiased.

3 . Future Directions

1. **Augmenting Human Capabilities -** AI can augment human capabilities, freeing up lawyers to focus on high-level tasks. Lawyers can use AI to analyze large datasets, identify patterns, and provide more accurate advice to clients.
2. **Collaboration between Humans and AI -** Lawyers and AI systems can collaborate to achieve better outcomes. AI can analyze data, identify patterns, and provide insights that lawyers can use to make more informed decisions.
3. **Continuous Learning -** AI systems need to be continuously updated and trained to ensure they remain relevant. Lawyers need to stay up-to-date with the latest developments in AI and ensure that their AI systems are trained on the latest data.
4. **Addressing Bias and Ethics -** The legal profession needs to address bias and ethics concerns in AI systems. This includes ensuring that AI systems are designed and trained to avoid biases and ensure fairness.
5. **Developing Regulatory Frameworks -** Regulatory frameworks need to be developed to ensure the responsible use of AI in the legal profession. This includes ensuring that AI systems are transparent, explainable, and accountable.

In conclusion, AI is transforming the legal profession, bringing about both opportunities and challenges. While AI can improve efficiency and accuracy, it also raises concerns about job displacement, bias, and ethics. The legal profession needs to address these challenges and develop regulatory frameworks to ensure the responsible use of AI. By embracing AI and addressing its challenges, the legal profession can harness its potential to provide better services to clients and improve justice outcomes.

Artificial Intelligence in Legal Research : Artificial Intelligence (AI) is revolutionizing legal research by transforming the way attorneys and legal professionals conduct research. With the emergence of AI-powered tools, legal research has become more efficient, accurate, and accessible. AI can quickly analyze large volumes of data, identify relevant information, and provide predictive analytics, enabling lawyers to make more informed decisions. Institutions like LexisNexis, Blue J Legal, and others have been at the forefront of developing AI-powered tools, streamlining document review, and improving research outcomes in legal research. By leveraging AI, legal professionals can reduce manual research time, increase productivity, and provide better services to clients. As AI continues to evolve, it is likely to have a profound impact on the legal profession, enabling lawyers to focus on high-level tasks and deliver more effective representation. With AI-powered research tools, lawyers can stay ahead of the curve and provide cutting-edge services to their clients, making it essential for legal professionals to remain competitive. The integration of AI in legal research is not just a trend, but a necessity for law firms and legal departments looking to improve their efficiency, accuracy, and client satisfaction. By embracing AI-powered research tools, lawyers can unlock new levels of efficiency, accuracy, and insight, ultimately leading to better outcomes for their clients. Furthermore, AI-powered research tools can help lawyers identify potential risks, opportunities, and trends, enabling them to develop more effective strategies and provide better counsel to their clients. As the legal profession continues to evolve, it is clear that AI will play an increasingly important role in shaping the future of legal research and practice. Additionally, AI-powered research tools can also help lawyers to identify patterns and connections that may not be immediately apparent, allowing them to build stronger cases and provide more effective representation. Moreover, AI can assist in automating routine tasks, freeing up lawyers to focus on more complex and high-value tasks. The use of AI in legal research is also likely to lead to the development of new business models and services, such as predictive analytics and data-driven insights, which can help law firms to differentiate themselves and provide more value to their clients. Overall, the impact of AI on legal research is likely to be profound, and it is essential for legal professionals to stay ahead of the curve and adapt to the changing landscape. By doing so, they can unlock the full potential of AI and provide better services to their clients. As the technology continues to evolve, it will be exciting to see the new opportunities and challenges that arise, and

how the legal profession responds to the changing landscape. The future of legal research is likely to be shaped by AI, and it is essential for legal professionals to be prepared for the changes that are coming.

suggestions for the future of the legal profession with AI:

1. **Upskilling and Reskilling -** Lawyers should develop skills to work effectively with AI tools, such as data analysis, machine learning, and natural language processing.
2. **AI-Assisted Research -** AI can help lawyers conduct research more efficiently and accurately, freeing up time for high-level tasks.
3. **Predictive Analytics -** AI-powered predictive analytics can help lawyers identify potential risks, opportunities, and trends, enabling them to develop more effective strategies.
4. **Document Automation -** AI can assist in automating document drafting and review, reducing manual labor and increasing efficiency.
5. **Collaboration between Humans and AI -** Lawyers should work closely with AI systems to leverage their strengths and improve the quality of legal services.
6. **Ethics and Bias -** Lawyers should be aware of the potential biases in AI systems and ensure that they are used ethically and responsibly.
7. **Continuous Learning -** Lawyers should stay up-to-date with the latest developments in AI and its applications in the legal profession to remain competitive and provide high-quality services.

Conclusion: Artificial Intelligence (AI) in the legal profession is poised to revolutionize the way lawyers practice law, transforming the landscape of legal services. As AI continues to evolve, it is likely to have a profound impact on the legal profession, enabling lawyers to work more efficiently, accurately, and effectively. With AI-powered tools, lawyers can automate routine tasks, conduct research more efficiently, and provide more informed counsel to their clients. However, it is essential for lawyers to develop the necessary skills to work effectively with AI tools and to be aware of the potential biases and ethics implications. As the legal profession continues to adapt to the changing landscape, it is clear that AI will play an increasingly important role in shaping the future of law, enabling lawyers to provide higher-quality services, improve client satisfaction, and stay ahead of the competition. Ultimately, the future of the legal profession will depend on its ability to harness the power of AI while ensuring that the use of AI is responsible, ethical, and beneficial to society as a whole. By embracing AI, lawyers can unlock new opportunities and create a more efficient, effective, and innovative legal system. Furthermore, the integration of AI in the legal profession will also lead to new business models, innovative services, and enhanced client experiences, ultimately transforming the way justice is delivered. As the legal profession continues to evolve, it is crucial for lawyers to stay ahead of the curve and leverage AI to drive growth, improve outcomes, and enhance the overall quality of legal services. By doing so, lawyers can ensure that the legal profession remains relevant, effective, and responsive to the needs of society, while also harnessing the full potential of AI to drive innovation and excellence.

References :-

1. Artificial Intelligence and Bioinformatics - Dr. Sarita DehariyaMehra.
2. Artificial Intelligence: Law And Policy Implications by Purvi Pokhariyal, Amit K. Kashyap and Arun B. Prasad.
3. Law & Justice Artificial Intelligence and Law Challenges Demystified by Rodney D Ryder & Nikhil Naren & A K Sikri.
4. Artificial Intelligence and Law: Challenges Demystified by Rodney D Ryder, Nikhil Naren.
5. Law & Artificial Intelligence - Dr. Shruti Bedi, RattanSingh, Dr. Jai Mala.
6. Artificial Intelligence and the Future of Power - Rajiv Malhotra.
7. Newspaper and Magazine - Danik Bhaskar, Time of India, Patrika.
8. Current affairs magazine Employment News, Cyber law journals, The Economics Time of India, Hindustan Times.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

छत्तीसगढ़ की प्रचलित वैवाहिक रस्म : एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. महेश कुमार शुक्ला* सोनिया तिवारी**

* सह प्राध्यापक(इतिहास) डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** शोधार्थी, डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत

प्रस्तावना – 'विवाह' वेदोक्त सोलह संस्कारों में सम्मिलित एक प्रमुखतम संस्कार है, जिसे विभिन्न नाम दिए गए हैं, इनमें से कुछ हैं, पाणिग्रहण, विवाहोत्सव, परिणय, शादी, ब्याह, गठबंधन इत्यादि। वैदिक विवाह की पद्धति से परम्परानुसार धर्म के मार्ग द्वारा गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया जाता है। श्रुति का वचन है – विवाह में दो शरीर, दो मन, बुद्धि, हृदय, प्राण, आत्माओं का समन्वय कर के अगाध प्रेम के व्रत को पालन करने वाले दंपत्ति उमा–महेश्वर सम प्रेम के आदर्श को धारण करते हैं। वैदिक संस्कृति में विवाह एक पवित्र धार्मिक संस्कार है जो एक यज्ञ है। इसमें दो प्राणी या जातक वर और वधू के रूप में अपने पृथक अस्तित्वों के स्थान पर एक सम्मिलित, एकीकृत इकाई निर्मित करते हैं।

वैदिक संस्कृति के अनुसार वैवाहिक पद्धतियों एवम् परम्पराओं के आठ प्रकार माने गए हैं, ये क्रम से हैं – ब्रम्ह, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, असुर, गंधर्व, राक्षस और पैशाच। शुभ योग– मुहूर्त में देवी पूजा, वर वरण तिलक, हरिद्रालेप, द्वार पूजा, मंगलाष्टकं, हस्तपीतकरण, मर्यादाकरण, पाणिग्रहण, ग्रंथिबन्धन, प्रतिज्ञाएं, प्रायश्चित, शिलारोहण, सप्तपदी, शपथ आश्वासन आदि पम्पराओं को सम्पन्न किया जाता है। इस विधि से दाम्पत्य संबंध से एक हुए गृहस्थ पारिवारिक संस्था का निर्माण करते हैं। इसके फलस्वरूप पवित्र दम्पत्ति गर्भाधान संस्कार द्वारा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के ध्येय को चरितार्थ करते हुए उत्तम संतति को समाज एवं राष्ट्र के लिये आहूत करते हैं।

वैवाहिक संस्था के महत्व पर भारतीय वेदों, गृह्यसूत्रों, स्मृतियों, पुराणों एवम् काव्यग्रन्थों में जो दृष्टांत मिलते हैं, वे अक्षरश: सत्य हैं। विवाह संस्कार वैदिक काल से ही अनिवार्य हो चुका था। ऋग्वेद तथा अथर्ववेद मे वैवाहिक विधि को काव्यमयी अभिव्यक्ति मिली हुई थी। स्मृतियों में भी ब्रम्हचर्य के पूर्णता के पश्चात् प्रत्येक मनुष्य को विवाह करने का प्रतिपादन किया गया है। वैदिक काल में विवाह काल में विवाह करके गृहस्थ धर्म का पालन करना आवश्यक तथा नितांत श्रेयस्कर विधान माना जाता था। सुरों, असुरों, मानवों, गंधर्वों आदि समस्त भिन्न–भिन्न योनियों में विवाह की अनिवार्यता थी, लिहाजा यह विवाह धन, कुल, ऐश्वर्य, सौन्दर्य और आयु की समानता का ध्यान रखकर ही किया जाना उचित माना जाता था। अपने से श्रेष्ठ अथवा अधम के साथ उचित नहीं माना जाता था, भले ही इसके कुछ अपवाद स्वरूप उदाहरण भी मिलते थे। धर्मशास्त्र में आया है कि–

'यथोरात्मंसमं वित्तं जन्मैश्वर्याकृतिर्भव:।
तशोर्विवाहो मैत्री च नोत्तमाथमयो: क्वचित् ।।'

एकादश स्कन्ध में वर्णित है क ब्रम्हचारी को चाहिए कि वह अपने अनुरूप तथा शास्त्रोक्त लक्षणों से युक्त कुलीन कन्या से विवाह करें। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार मानव जीवन को चार आश्रमों यथा ब्रम्हचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, सन्यास आश्रम तथा वानप्रस्थ आश्रम में विभक्त किया गया हैं इन चारों आश्रमों की पूर्णता के लिये पाणिग्रहण संस्कार अर्थात् विवाह की आवश्यकता तथा महत्व सर्वस्वीकृत व सर्वमान्य है।

छत्तीसगढ़ राज्य की लोक संस्कृति में विवाह का कार्यक्रम तीन से पाँच दिवस का होता है। इसकी प्रमुख रस्में निम्नलिखित है –

मंगरोहन – यह रस्म विवाह के समय होने वाले अपशकुन को मिटाने के लिए यटोटका' के रूप में की जाती है। इस रस्म के अवसर पर यमंगरोहन गीत' गाया जाता है। इसमें दो बांसों का मंडप बनाया जाता है। बांसों को आँगन में गड़ाया जाता है। बाँसों के पास माटी के दो कलश रखे जाते हैं, जिनमें दीप जलते रहते हैं। उन्हीं बांसों के संग नीचे ज़मीन से लगाकर आम, डुमर, गूलर या खदिर की लकड़ी की एक मानवीय आकृति बनाकर रखी जाती है। दोनों बांसों के साथ दोनों आकृतियॉ स्थापित की जाती है। बांसों के ऊपर, पूरे आंगन में पत्तियों का झालर लटकाया जाता है। इस मानवीय आकृति युक्त लकड़ी को ही मंगरोहन कहा जाता है। यह रस्म विवाह संस्कार का एक अनिवार्य अंग है।

चुलमाटी – विवाह के शुरूआती दिन चुलमाटी की रस्म पूरी की जाती है। यह रस्म कुंवारी मिट्टी लाकर की जाती है। घर की महिलाएँ ढेड़हीन (सुवासिन) नए वस्त्र पहनकर देवस्थल या जलाशय के पवित्र स्थान पर जाकर सब्बल से मिट्टी खोदने की रस्म पूरी की जाती है। चुलमाटी के साथ तेल–हल्दी का कार्यक्रम भी प्रारंभ होता है। इसमें घर के आँगन मे बाँस की बल्ली से मंडप बनाया जाता है, यहाँ कलश–स्थापना कर वर या वधू को तेल व हल्दी का लेप लगाया जाता है। इस मौके पर खास लोकगीत 'एक तेल चढ़गे ओ हरियर–हरियर, ओ हरियर–हरियर' गाया जाता है।

तेलमाटी – इस संस्कार में भी चुलमाटी की तरह देवस्थल या गांव में निर्धारित स्थल से मिट्टी लाई जाती है और इस मिट्टी को मड़वा यानी मंडप के नीचे रखा जाता है जिसके ऊपर मड़वा बांस व मंगरोहन स्थापित किया जाता है। इस रस्म से मड़वा स्थल पर देवताओं के वास का भाव जुड़ा है।

देवतला – विवाह में अपने ग्राम देवता को पहला आमंत्रण देने के लिये यह संस्कार संपन्न किया जाता है, जो आमंत्रण 'देवतला' कहा जाता है। महिलाओं द्वारा स्थानीय मंदिरों में जाकर ठाकुर देव, शीतला, साहड़ादेव, हनुमान आदि देवी–देवताओं को हल्दी और तेल का लेप चढ़ाती है और आशीर्वाद प्राप्त करती हैं कि विवाह मंगलकारी हो।

मायन एवं चिकट – इस रस्म में वर को परदे के आड़ में रख कर सगे–संबंधितयों के द्वारा वस्त्र, द्रव्य और अन्य उपहार–सामग्रियॉ भेंट में देते हैं। इस अवसर पर गाए जाने वाले लोकगीतों को 'मायमौरी' कहा जाता है। गीत में गलतियों की माफी मांगी जाती है, और देव अनुग्रह मांगते हुए निवेदन किया जाता है कि , देवी–देवता एवं कौटुम्बिक पूर्वज निमंत्रण स्वीकार करें व मंगल कार्य को अच्छी प्रकार पूर्ण करवा दें। इस रस्म में गाया जाने वाला गीत है, 'हाये जोरि न्यौतेव मोर देवी देवाला' जिसके बाद मायन के बाद देवतला की रस्म को पूरा किया जाता है। बारात के प्रस्थान से पहले मंगल कामना के लिये देव–देवताओं का पूजन–आराधन करने के लिये पूरा किया जाता है। बारात के प्रस्थान से पहले मंगल कामना के लिये देव–देवताओं का पूजन–आराधन करने के लिये मंदिर जाते हैं। इस रस्म में महिलाएँ ही हिस्सा लेती हैं। छत्तीसगढ़ी विवाह में हरदियाही कार्यक्रम होता है, इसे चिकट भी कहा जाता है। इसमें मड़वा के नीचे सभी लोग हल्दी खेलते हैं। इस अवसर पर 'अंचरा के छाव दाई मोला देबे ढवेऊ भउजी अंचा के छाव' गीत गाया जाता है।

नहडोरी – इस अवसर पर वर या वधु को मंडप के नीचे साफ जल से स्नान करवा कर नए कपड़े धारण करवाये जाते हैं। इस अवसर पर मउर सौपने और कंकन बाँधने क रस्म पूरी की जाती हैं। महिलाओं द्वारा – 'दे तो दाई दे तो दाई अस्सी ओ रूपईया' गीत गाया जाता है।

परछन/मऊर परछन – बारात के प्रस्थान पर परछन की रस्म निभाई जाती है जिसमें महिलाएँ पी करे नज़र तथा अन्य अपशकुनों और विपदाओं से बचाने के लिए कलश में जलते दीपक से आरती उतारती हैं। यह रस्म बारात की वापसी पर भी दोहराई जाती है। इसमें–'जुग जुग जीवो मोर बेटा, बहुरिया जनम जनम हेवाती हो' गीत गाया जाता है।

परघनी/परघउनी – बाराती जब बारात लेकर वधु के घर पहुंचते हैं तब उन्हें परघाया यानी स्वागत किया जाता है, इसे परघनी कहते हैं। परघनी के बाद बारातियों को जेवनासा ले जाया जाता है। इस अवसर पर भड़ौनी गीत गाया जाता है।

लालभाजी/रातिभाजी – परघनी के बाद लालभाजी की रस्म निभाई जाती है इसमें वधू की छोटी बहन वर को लाल भाजी खिलाती है। यह रस्म हल्की–फुल्की मस्ती से भरी होती है।

पाणिग्रहण – इस रस्म में वधू के पिता द्वारा वर के हाथों में वधू का हाथ रखा जाता है, उसमें आटे की लोई रखकर धागे से बांधते हैं। इसके बाद वर और वधू के पैरों के अंगूठों को दूध से धोया जाता है, फिर माथे पर चावल टिकते हैं।

भांवर – यह छत्तीसगढ़ के बिहाव संस्कार की अनिवार्य रस्म है। इस रस्म के पूर्ण होने पर वर और वधू पूर्ण रूप से परिणय सूत्र में बंध जाते है। मड़वा के नीचे सील रखकर उसमें सिंघोलिया रखा जाता है जिसे वधू द्वारा प्रत्येक फेरे के पश्चात् अपने पैरों से गिराया जाता है। अग्निवेदी में प्रज्वलित अग्नि को साक्षी मानकर मंत्रोच्चारण के साथ भांवर घूम कर वर–वधू द्वारा आजीवन साथ निभाने की शपथ ली जाती है।

टिकावन – यह वर रस्म है जिसमें विवाह में पधारे परिजन सामर्थ्यानुसार टिकावन के रूप में वधू को उपहार देते हैं, जिसके पश्चात् भाव विह्व कर देने वाली वधू की विदाई की रस्म सम्पन्न होती है।

डोली परछन – यह छत्तीसगढ़ में एक तरह का टोटका होता है। जब डोली घर के द्वार पर रूकती है, उस समय लड़के की माँ डोली के ऊपर सूपा रखकर पांच मुट्ठी नमक रखती है। ऊपर से मुसर को इस पार से उस पार करती है। इसके बाद मायके के झेंझरी में जिस पर धान भरा होता है, बहू को उस पर पैर रख कर उतारा जाता है। भीतर जाकर वधू मायके के चावल को सात डिब्बों में भरती है, उसे हर बार वर पैरों की ठोकर से गिरा देता है। चावल भरने के ढंग से वधू की कार्यकुशलता का अंदाजा लगाया जाता है। डोला परछन का आशय वधू का अपने नए घर में स्वागत और लक्ष्मी का अभिनंदन है।

कंकन मोक्ष–मउर या धरमटीका – यह रस्म वर–वधू के संकोच को दूर करने का उपक्रम होती है जिसे वर के घर पर पूरा किया जाता है। इस रस्म में कन्या के घर से लाए लोचन पानी को एक परात में रखकर दूल्हा–दुल्हन का मड़वा के समीप एक–दूसरे का कंकन छुड़वाया जाता है। इसके बाद लोचन पानी में कौड़ी, सिक्का, माला, मुंदरी,खेलाते हैं, इसमें वर एक हाथ से और वधू दोनों हाथों से सिक्के को ढूंढते हैं। जो सिक्का पहले पाता है वह खेल में जीत जाता है। यह नेंग सात बार किया जाता है। इसके बाद सभी टिकावन टिकते हैं, जिसे धरमटीका कहते हैं।

इसी श्रृखला में भारत में प्रत्येक प्रदेश में विवाह की अपनी–अपनी विविधताएँ एवं विशेषताएँ हैं। इन सब के पीछे सर्वमान्य सत्य है कि हमारी मानव सभ्यता विविधतम परंपराओं, परिपाटियों, संस्कृतियों को साथ लेकर, उनके समन्वयन के साथ निरन्तर आगे बढ़ रही है।

भारतीय विवाह की वैदिक परंपराएँ एवम् पद्धतियाँ एक आनंदोत्सव है, जिसमें समग्र ईश्वरीय सत्ता को निमंत्रित किया जाता है। विवाह आदिकाल से मानव संस्कृति की अतीव महत्वपूर्ण प्रथा है, जो एक मर्यादित समाजिक बंधन है, जिसे समाज के निर्माण की सबसे अणुतम इकाई अर्थात् विभु परिवार का मूल माना जाता है। भारतीय संस्कृति में विवाह पर जन आस्था सदियों से रही है।

हमारी वैदिक कालीन वैवाहिक पद्धतियॉ एवं परम्पराएँ मर्यादाओं की हितैषी हैं। यह कर्त्तव्यों एवं अधिकारों की मर्यादाओं को प्रोत्साहित करती है। इसी परिप्रेक्ष्य में वैदिक विवाह संस्कार की सम्पूर्ण प्रक्रिया को अभिमंत्रित कर मर्यादा के गठबंधन से बांधकर वचनों से प्रतिबद्ध कर व्रत धारण करवाऐ जाते हैं। यह जीवन को संकल्प और व्रत बनाकर जातक को सही दिशा और गति प्रदान करते हैं। मंत्रों के सही उच्चारण से ये सजीव हो उठते हैं, क्योंकि मंत्रों का समूचा अस्तित्व ध्वनियों का एक संचरण–तंत्र है, जिनमें ब्रम्हाण्ड के प्रत्येक आयाम को खोलने वाली कुंजियां स्थित है। विवाह का जन्म ही मर्यादा के अस्तित्व को लक्षित कर हुआ है। यह सर्वविदित सत्य है कि मर्यादा के अस्तित्व को लक्षित कर हुआ है। यह सर्वविदित सत्य है कि मर्यादा ही विवाह को अनुप्राणित करती है। मर्यादा में बंधे वैवाहिक बन्धन ही सफल और खुशहाल बन्धन हैं। यदि विवाह असफल होते हैं तो उनका कारण मर्यादाहीनता, वर्जनाओं के विभिन्न रूप ही हैं जो आर्थिक, सामाजिक, भावनात्मक, वैयक्तिक, मनोवैज्ञानिक आदि विभिन्न स्तरों पर की जाती हैं, और इतिहास साक्षी है कि जब–जब मर्यादाएँ टूटती हैं, टूटी हैं तब–तब समाज टूटते हैं, परिवार बिखरते हें, राष्ट्रीय एकता खण्डित होती है, वैश्विक विषमताएँ उत्पन्न होती हैं।

वैदिक विवाह की पद्धतियाँ और परम्पराओं के प्रति वेदों का उद्घोष है कि,

दाम्पत्यमनुकूलं चेत्किं स्वर्गस्य प्रयोजनम्।
दाम्पत्यं प्रतिकूलं चेन्नरकं किं गृहमेव तत्।।

अर्थात्, मनुष्य का दाम्पत्य जीवन यदि अनुकूल हो तो स्वर्ग का क्या

प्रयोजन है, साथ ही यदि मनुष्य का दाम्पत्य जीवन प्रतिकूल हो जाए तो नर्क क्या है, वह घर ही नर्क बन जाता है।

भारतीय राष्ट्र में शिव-शक्ति, सीता-राम, रूक्मिणी-कृष्ण, अत्रि-अनुसूया, वशिष्ठ-अरूंधति जैसे वैदिक सद्गृहस्थों के उदाहरण यह प्रतिपादित करते हैं कि वेदसम्मत जीवन पद्धति में सृष्टि-संचालन, धर्म, याज्ञिक अनुष्ठानों, आर्थिकोपार्जन से लेकर मोक्ष प्राप्ति तक की यात्रा की पूर्णता के निमित्त विवाह की व्यवस्था पर विश्वास किया गया है। इस प्रकार यह आदिकाल से चली आ रही हमारी संस्कृति, सभ्यता के परंपरागत मूल्य हैं जो हमारी अनमोल थाती है। विवाह यहाँ मात्र एक संयोग, आवश्यकता, परिपाटी होने की सीमा से भी आगे की विस्तृत एवं व्यापक व्यवस्था है, जिससे जुड़े वैदिक इतिहास पर अभी अनुसंधान शेष है। विवाह वह संस्था है जो सबका मूल है, इसके आधार पर अन्य समस्त सत्ताएँ अपने अस्तित्व को कायम रखे हैं। विवाह जब तर्कसंगत होता है तो वह पशु को मानव और मानव को ईश्वर बनाने की शक्ति एवं सामर्थ्य रखता है, क्योंकि वह स्वयं में एक आचार-संहिता, एक संविधान बन जाता है और ऐसी न्याय व्यवस्था को जन्म देता है जो प्राकृतिक ममता और समता की रीति-नीति पर आधारित होती है।

इस प्रकार वैदिक कालीन पद्धति तथा परम्पराओं पर आधारित विवाह का आयोजन धर्म सम्मत आधार पर सम्पन्न होता है जिसमें अनेक धार्मिक क्रियाएं सम्पन्न की जाती है। इस धार्मिक भावना से उपजा पति-पत्नी का आपसी सम्बन्ध स्थायी और जन्म-जन्मांतर का होता है। भारत के आर्षग्रंथों के अन्तर्गत विवाह सम्बन्धित सृष्टि की विवेचना की गई है, जिन के अध्ययन तथा अनुशीलन द्धारा व्यक्तित्व के विकास में विवाह की प्रधानता और महत्व का प्रतिपादन किया गया है। धर्म से प्रेरित विवाह संस्था हर युग में अनुशासन, मर्यादा और श्रेष्ठता का प्रतिनिधित्व करती आ रही है जो 'विवाह' के समसामयिक महत्ता का परिचायक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. आर्य रवि प्रकाश, वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता, 2022, आईएसबीएन: 9789394724037, इंडियन फाउंडेशन फॉर वैदिक साइंस, रोहतक।
2. अथर्ववेद।
3. कृष्णद्वैपायन रचित 'श्रीमद्भागवतमहापुराण' (प्यारे लाल त्रिवेदी द्धारा सरल पद्यानुवाद-दोहा, चौपाई-छनद में), 1 जनवरी 2019, आईएसबीएन-10 819426751 एक्स, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
4. मीणा सुनीता, धर्मशास्त्रों के संदर्भ में गृहस्थाश्रम-विवेचन, सं.2014, आईएसबीएन: 9789381951613, साहित्यिक मण्डल, जयपुर
5. कोठारी गुलाब, विवाह-सूक्त (ऋग्वेद 10.07.85, कर्पूर भाष्य), 2015 सं., आईएसबीएन 9789381224045, वेद-विज्ञान माला, पं0 मधुसूदन ओझा वैदिक अध्ययन एवं शोध-पीठ संस्थान।
6. मिश्र श्रीनारायण (शुभाशंसा लेखक), केशव किशोर कश्यप (संपादक), कृष्णदास संस्कृत श्रृंखला 202, 'मनुस्मृतिः', (1 जनवरी 2007), प्र.स., चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

डिजीटल भुगतान की दिशा में ई-वॉलेट प्रणाली की बढ़ती उपयोगिता का अध्ययन

डॉ. दीपिका यादव*

* सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, श्री नीलकण्ठेश्वर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिविल लाईन, खण्डवा (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – आधुनिक युग उन्नत तकनीकों का युग है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आज नित्यनई तकनीकों का अविष्कार एवं प्रयोग हो रहा है। व्यावसायिक जगत भी नवीन तकनीकों के प्रयोग से अछूता नहीं है। परंपरागत व्यावसायिक प्रणाली के स्थान पर आज ऑनलाईन व्यावसायिक प्रणाली अधिक प्रचलन में है। ई-कॉमर्स प्रणाली के आ जाने से व्यापारी वर्ग एवं उपभोक्ता वर्ग के मध्य भुगतान की प्रणालियों में भी परिवर्तन देखने को मिला है। आज का ग्राहक परंपरागत नकदी भुगतान के स्थान पर ऑनलाईन भुगतान प्रणाली को अधिक वरीयता प्रदान करता है। आज के दौर में डिजीटल भुगतान लेन-देन का सबसे सरल एवं प्रचलित माध्यम बनकर उभरा है इस तकनीक ने परंपरागत नकदी भुगतान प्रणाली की जटिलताओं को समाप्त करते हुए लेन-देन को अधिक त्वरित, सुरक्षित, विश्वसनीय एवं सुविधाजनक बना दिया है। आज के युग में ऑनलाईन भुगतान या डिजीटल भुगतान के विभिन्न विकल्प मौजूद है जैसे :- डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, RTGS, NEFT एवं UPI या ई-वॉलेट आदि। इन सभी माध्यमों में से अधिक सुविधायुक्त माध्यम है ई-वॉलेट भुगतान। सामान्यत: ई-वॉलेट भुगतान प्रणाली को ही डिजीटल भुगतान प्रणाली की संज्ञा दी जाती है, किन्तु वास्तव में डिजीटल भुगतान प्रणाली भुगतान का एक इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है जिसके अन्तर्गत डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, मोबाईल वॉलेट एवं यूपीआई आदि सभी के द्वारा भुगतान किया जाना समाहित होता है, जबकि ई-वॉलेट भुगतान का वह माध्यम है जिसका प्रयोग मोबाईल एप के माध्यम से किया जाता है। भारत में विभिन्न प्रकार की ई-वॉलेट कंपनियाँ मौजूद है जो कि ग्राहकों को त्वरित भुगतान, होटल, बिजली, टिकिट भुगतान, मोबाईल रिचार्ज, ऋण पुनर्भुगतान, किराया, बीमा एवं यातायात सुविधाओं जैसी अनेक सुविधाएँ एक क्लिक पर उपलब्ध कराती है। जिनमें मुख्यत: Bhim, Phone-Pay, G-Pay, Amazon-Pay, Paytm आदि अधिक प्रचलित ई-वॉलेट कंपनियाँ है, जो कि अपने ग्राहकों के लिए अपनी भुगतान प्रक्रिया को अधिक सरल एवं सुविधाजनक बनाने हेतु कार्यरत है, चूँकि इस तकनीक के अन्तर्गत भुगतान एक बटुए की भाँति होने वाले भुगतान की तरह इलेक्ट्रानिक माध्यम से किया जाता है इसलिए ही इसे ई-वॉलेट भुगतान प्रणाली की संज्ञा दी जाती है। भारत में कोरोना महामारी के उपरान्त ई-भुगतान प्रणाली का प्रचलन अधिक बढ़ गया है। आज हम सभी कहीं न कहीं ई-भुगतान प्रणाली का प्रयोग अवश्य कर रहे है, जो इस तकनीक की लोकप्रियता की कहानी स्वयं ही कहता है।

साहित्य समीक्षा – प्रस्तुत शोध पत्र हेतु निम्न साहित्यों की समीक्षा की गई है –

1. विनोथ कुमार एवं देवी (2023) का शोध पत्र डिजीटल वॉलेट के प्रति ग्राहकों के रवैये तथा उन्हें अपनाने पर आधारित रहा। इन्होंने 217 उत्तरदाताओं से प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी एकत्रित कर उनका विभिन्न सांख्यिकीय विधियों से परीक्षण कर निष्कर्ष दिए कि G-PAY एवं PHONE-PAY ई-वॉलेट कंपनियाँ उत्तरदाताओं के मध्य सर्वाधिक लोकप्रिय है इसके पश्चात् उत्तरदाताओं ने पेटीएम ई-वॉलेट को तीसरी वरीयता प्रदान की है। अपने अध्ययन द्वारा उन्होंने यह भी बताया कि सर्वाधिक उत्तरदाताओं का यह मानना रहा है कि ई-वॉलेट तकनीक से भुगतान की प्रक्रिया त्वरित, सरल एवं सुविधाजनक होती है। वर्तमान समय में स्मार्टफोन एवं इन्टरनेट के बढ़ते प्रयोग ने उत्तरदाताओं को ई-वॉलेट भुगतान तकनीक के प्रति अधिक आकर्षित किया है।
2. कट्टी एवं अंगदी (2020) का शोध पत्र डिजीटल वॉलेट के प्रति भारतीय उपभोक्ताओं के रवैये पर आधारित रहा। इन्होंने वर्णनात्मक शोध पद्धति के आधार पर द्वितीयक समंकों का प्रयोग किया साथ ही 125 उत्तरदाताओं से प्राथमिक समंकों का एकत्रीकरण कर प्रतिशत विधि का प्रयोग कर निष्कर्ष दिए कि भारतीय उपभोक्ताओं के मध्य डिजीटल वॉलेट लोकप्रियता प्राप्त कर रहे है तथा सुरक्षा, विश्वसनीयता, सुविधाजनक आदि वे घटक है जो कि उपभोक्ताओं को डिजीटल वॉलेट तकनीक का प्रयोग करने के लिए सर्वाधिक प्रभावित करते है। शोध अध्ययन में शामिल सर्वाधिक उत्तरदाता G-PAY की तुलना में PHONE-PAY के माध्यम से डिजीटल भुगतान को अधिक वरीयता प्रदान करते है।
3. प्रेमा (2023) का शोध पत्र भारत में डिजीटल वॉलेट के परिदृष्य में ग्राहक संतुष्टि का अध्ययन करने पर आधारित रहा। इन्होंने 100 उत्तरदाताओं से प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी एकत्रितकर उनका प्रतिशत विधि के आधार पर विश्लेषण किया तथा निष्कर्ष दिए कि सर्वाधिक उत्तरदाताओं द्वारा विभिन्न भुगतान कार्यों हेतु PHONE-PAY ई-वॉलेट का अन्य ई-वॉलेट कंपनियों की तुलना में अधिक प्रयोग किया जाता है। डिजीटल वॉलेट कंपनियाँ अपने ग्राहकों के लिए धन के लेन-देन को अधिक सरल बनाने की दिशा में निरन्तर सफलता प्राप्त कर रही है। वर्तमान परिदृष्य को देखते हुए इस बात की पूर्ण संभावना है कि वर्ष 2025 तक उपभोक्ताओं के मध्य डिजीटल वॉलेट का प्रयोग 300 प्रतिशत तक बढ़ सकता है।

4. अग्रवाल एवं वेश (2020) का शोध पत्र भारत में ई–वॉलेट बाजार के संदर्भ में ग्राहकों की प्राथमिकता को प्रभावित करने वाले विभिन्न घटकों पर आधारित रहा है। इन्होंने प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों ही प्रकार के समंकों का प्रयोग कर विश्लेषण किया तथा निष्कर्ष दिए कि सरकार द्वारा BHIM UPI एप के माध्यम से ई–वॉलेट भुगतान के लिए ग्राहकों को अभिप्रेरित किया जा रहा है। सुरक्षा एवं गोपनीयता, सुविधाजनक भुगतान, ऑफर एवं लाभ तथा सामाजिक प्रभाव आदि वे तत्व है जो कि उपभोक्ताओं की ई–वॉलेट प्रणाली के द्वारा भुगतान किए जाने की प्राथमिकता को प्रभावित करते है। ई–वॉलेट या मोबाईल वॉलेट का उपयोग करनेवाले उपयोगकर्ता इन ई–वॉलेट कंपनियों की सेवा से संतुष्ट है। अधिकांश उत्तरदाताओं का यह भी मानना है कि भविष्य में ई–वॉलेट, भुगतान का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरेगा।

5. मिश्रा एवं राजोरा (2018) का शोध पत्र युवाओं के विशेष संदर्भ में 'डिजीटल भुगतान प्रणाली' के अध्ययन पर आधारित रहा। इन्होंने 48 उत्तरदाताओं से प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर उनका रेखाचित्रों, ग्राफ एवं सहसंबंध आदि के आधार पर विश्लेषण किया तथा निष्कर्ष दिए कि अधिकांश युवा डिजीटल भुगतान प्रणाली की पूर्ण जानकारी रखते है तथा उनका प्रयोग भी करते है। अधिकांश युवाओं द्वारा डिजीटल भुगतान के लिए डेबिट कार्ड तथा क्रेडिट कार्ड का उपयोग किया जाता है। उत्तरदाताओं का यह भी मानना है कि डिजीटल भुगतान प्रणाली भुगतान का एक बेहतर एवं सुविधाजनक माध्यम है, इसलिए अधिक से अधिक लोग इस प्रणाली के लाभों से अवगत होकर अपने दैनिक लेन–देनों के लिए डिजीटल भुगतान को वरीयता प्रदान करने लगे है।

शोध के उद्देश्य – प्रस्तुत शोध निम्न उद्देश्यों पर आधारित रहा:

1. ई–वॉलेट या मोबाईल वॉलेट भुगतान तकनीक की कार्यप्रणाली का अध्ययन करना।
2. ई–वॉलेट तकनीक के विभिन्न प्रकारों का अध्ययन करना।
3. ई–वॉलेट तकनीक के प्रयोग को बढ़ावा देने वाले घटकों का पता लगाना।
4. वर्तमान परिदृष्य में ई–वॉलेट कंपनियों की उपयोगिता का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत शोध पत्र पूर्णत: द्वितीयक समंकों पर आधारित है। शोध अध्ययन को पूर्ण करने हेतु विवरणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक समंकों के संग्रहण हेतु विभिन्न वेबसाईटों, शोध पत्रों, शोध आलेखों, सूचनाओं, समाचार पत्रों आदि के माध्यम से जानकारी प्राप्त की गई है।

ई–वॉलेट तकनीक – ई–वॉलेट, मोबाईल वॉलेट या डिजीटल वॉलेट तकनीक भुगतान का एक इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है, जिसके अन्तर्गत दो बैंक खातों के मध्य स्मार्ट फोन, लेपटॉप जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का प्रयोग कर ऑनलाईन भुगतान ऐपका प्रयोग कर लेन–देन किए जाते है। यह एक कान्टेक्टलैस भुगतान पद्धति है। यह एक तरह का सॉफ्टवेयर एप्लिकेशन ही है, जो अपने उपयोगकर्ता को कहीं से भी किसी भी स्थान पर त्वरित भुगतान की सुविधा उपलब्ध कराता है। ई–वॉलेट एक डिजीटल टूल है जो भुगतान की जानकारी को पूर्ण रूप से सुरक्षित कर स्टोर करता है। इस उपकरण का उपयोगकर्ता ऑनलाईन ट्रॉन्जेक्षन के माध्यम से किसी को भी कहीं से भी एक क्लिक पर धन का हस्तांतरण कर सकता है। अत: यह तकनीक त्वरित इलेक्ट्रानिक भुगतान का बेजोड़ उदाहरण है।

ई–वॉलेट के प्रकार – ई–वॉलेट या मोबाईल वॉलेट एक डिजीटल मनी मैनेजमेंट एप्लिकेशन है जिसके अन्तर्गत प्रयोगकर्ता के कार्ड या बैंक के विवरण को प्रयोगकर्ता के मोबाईल पर संग्रहित किया जाता है तथा उन्हें वस्तुओं और सेवाओं के लिए भुगतान करने के लिए अनुमति प्रदान की जाती है। ये वॉलेट निम्न तीन प्रकार के होते है –

1. **ओपन ई–वॉलेट** – ओपन ई–वॉलेट किसी विशेष बैंक खाते से जुड़े नहीं होते है। इनका प्रयोग विभिन्न चैनलों अर्थात् विभिन्न उद्देश्यों हेतु अलग–अलग भुगतान माध्यमों हेतु किया जा सकता है। ओपन ई–वॉलेट हेतु भुगतानकर्ता किसी भी भुगतान विधि जैसे डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, नेट बैंकिंग, यूपीआई आदि का प्रयोग करके अपने वॉलेट में धनराशि को जोड़ सकते है। इस प्रकार के ई–वॉलेट में शेष बची धनराशि बीमा कवर के अन्तर्गत शामिल नहीं होती है, क्योंकि उपयोगकर्ता द्वारा जोड़ी गयी धनराशि ई–वॉलेट शेष में संग्रहित होती है तथा बैंक खाते से जुड़ी नहीं होती है। ICICI पॉकेट एवं M-PAISA 'ओपन ई–वॉलेट' के उदाहरण है।
2. **क्लोज्ड ई–वॉलेट** – क्लोज्ड अर्थात् बंद ई–वॉलेट सीधे उपयोगकर्ता के बैंक खाते से जुड़े होते हे। ऐसे ई–वॉलेट में भुगतान केवल किसी एक ऐप या प्लेटफार्म पर ही किया जा सकता है। विभिन्न चैनलों पर नहीं। क्लोज्ड ई–वॉलेट में उपयोगकर्ता द्वारा संग्रहित शेष धनराशि सुरक्षित रहती है, क्योंकि ऐसी धनराशि वॉलेट में संग्रहित न होकर सीधे उपयोगकर्ता द्वारा जोड़े गए बैंक खाते में संग्रहित होती है। क्लीयर ट्रीप, मेक माय ट्रीप एवं बुक माय शो आदि क्लोज्ड ई–वॉलेट के कुछ उदाहरण है।
3. **सेमी क्लोज्ड ई–वॉलेट** – सेमी क्लोज्ड ई–वॉलेट में ओपन एवं क्लोज्ड दोनों ही प्रकार के ई–वॉलेट की विशेषताएँ समाहित होती है। ऐसे ई–वॉलेट में क्लोज्ड ई–वॉलेट की भाँति धन की सुरक्षा का गुण विद्यमान होता है क्योंकि धनराशि सीधे ग्राहक के बैंक खाते से जुड़ी होती है तथा ओपन ई–वॉलेट की भाँति भुगतान भी विभिन्न प्लेटफार्म या चैनलों पर किया जा सकता है। इस प्रकार सेमी क्लोज्ड ई–वॉलेट बैंलेंस की सुरक्षा के साथ–साथ विभिन्न चैनलों पर भुगतान की सुविधा प्रदान करते हे। G-Pay, Paytm, Phone-Pay, Bhim आदि ई–वॉलेट ऐप सेमी क्लोज्ड ई–वॉलेट के कुछ प्रमुख उदाहरण है।

ग्राहकों में ई–वॉलेट तकनीक के प्रयोग को प्रभावित करने वाले घटक

वर्तमान तकनीकी युग में ग्राहकों को भुगतान हेतु नकदी के स्थान पर ई–वॉलेट तकनीक का प्रयोग करने के लिए निम्न घटक प्रभावित करते है

1. **सुविधाजनक** – ई–वॉलेट तकनीक अपने ग्राहकों को नकदी रखने की आवश्यकता से मुक्त करती है। इस तकनीक के अन्तर्गत भुगतान एक क्लिक पर ऑनलाईन माध्यम से हो जाता है, जिससे ग्राहकों को बटुए में नकदी धन रखने के झंझट से छुटकारा मिल जाता है अत: हर समय नकदी न संभालने की सुविधा वह प्रमुख घटक है,जो कि ग्राहकों को ई–वॉलेट तकनीक का प्रयोग करने हेतु प्रेरित करता है।
2. **त्वरित भुगतान** – ई–वॉलेट तकनीक अपने ग्राहकों को त्वरित भुगतान की सुविधा प्रदान करती है। इस तकनीक के माध्यम से व्यक्ति किसी भी व्यक्ति को कभी भी, कहीं भी,एक क्लिक पर धन का हस्तांतरण किया जा सकता है। इसके लिए भुगतान प्राप्तकर्ता को प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित होने की आवश्यकता नहीं रहती है। अत: त्वरित भुगतान भी वह घटक है जो इस तकनीक के प्रयोग हेतु ग्राहकों को अभिप्रेरित करता है।

3. सुरक्षा एवं निजता – यह तकनीक अपने ग्राहकों को धन की सुरक्षा की सुविधा भी प्रदान करती है। इस तकनीक का प्रयोग करने हेतु ग्राहकों को मोबाईल एप पर अपने बैंक खाते को लिंक करना होता है तथा प्रत्येक लेन–देन के पूर्व एक पूर्व निश्चित पासवर्ड का प्रयोग करना होता है, जिससे कि कोई अन्य व्यक्ति उपयोगकर्ता की अनुपस्थिति में इस तकनीक के माध्यम से धन का हस्तांतरण नहीं कर सके। इस तरह यह तकनीक अपने ग्राहकों को सुरक्षा एवं निजता दोनों ही सुविधाएँ प्रदान करती है, जो कि ग्राहकों को ई–वॉलेट तकनीक का प्रयोग करने हेतु अभिप्रेरित करते है।

4. सामाजिक प्रभाव – कई बार ग्राहक अपने रिश्तेदारों, मित्रों एवं पड़ोसियों तथा समाज के अन्य व्यक्तियों से भी प्रभावित होकर इस तकनीक का प्रयोग करने हेतु अभिप्रेरित होते है।

5. ऑफर एवं रिवार्ड – कई ई–वॉलेट कंपनियाँ अपने ग्राहकों को कैष बैक, डिस्काउण्ट एवं अन्य प्रमोशनल ऑफर भी प्रदान करते है, जिससे उनकी ट्रांजेक्शन वैल्यु में वृद्धि होती है। अत: रिवार्ड एवं ऑफर भी वे तत्व है जो, ग्राहकों को ई–वॉलेट तकनीक का प्रयोग करने हेतु अभिप्रेरित करते है।

वर्तमान परिदृष्य में ई–वॉलेट कंपनियों की उपयोगिता – वर्तमान समय में भारत में ई–वॉलेट कंपनियों ने भुगतान के विभिन्न माध्यमों में सबसे सरल, सहज एवं सुविधाजनक माध्यम के रूप में अपना वर्चस्व स्थापित किया है। इन कंपनियों के माध्यम से यूपीआई अर्थात् यूनिफाइड पेमेन्ट्स इन्टरफेस डिजीटल भुगतान का सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। वर्तमान तकनीकी युग में जहाँ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव आए है, ऐसे में भुगतान प्रक्रिया के क्षेत्र में भी ई–वॉलेट कंपनियाँ क्रांतिकारी परिवर्तन लाई है। आज कोई भी व्यक्ति कहीं से भी अपने मोबाईल अथवा लेपटॉप के माध्यम से एक क्लिक पर अन्य किसी भी स्थान पर स्थित व्यक्तियों को भुगतान कर सकता है। भारत में ई–वॉलेट या यूपीआई भुगतानों की लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि अक्टूबर 2024 तक यूपीआई कंपनियों ने कुल 16.58 बिलियन वित्तीय लेन–देन में 23.49 लाख करोड़ रूपये का प्रभावशाली लेन–देन किया है जो अक्टूबर 2023 में 11.40 बिलियन लेन–देन से 45 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि को दर्शाता है। विभिन्न यूपीआई एप से देश के कुल 632 बैंक जुड़े हुए है। यूपीआई भुगतानों में हुई यह वृद्धि देश में डिजीटल भुगतान के बढ़ते हुए प्रभुत्व को दर्शाता है। यूपीआई भुगतान देश में कैशलेस अर्थव्यवस्था की संकल्पना एवं डिजीटल भारत के अभियान को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यूपीआई लेनदेनों की मात्रा एवं मूल्यों में हुई वृद्धि को निम्न रेखाचित्रों के माध्यम से समझा जा सकता है।

रेखाचित्र क्रमांक 1

भारत में यूपीआई लेन–देन मात्रा (बिलियन में)

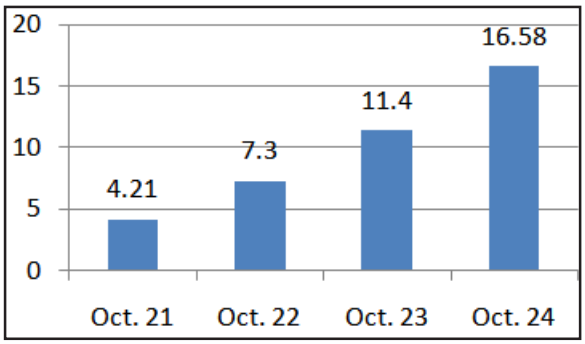

स्त्रोत – नेशनल पेमेन्ट्स कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया(NPCI)

उपर्युक्त रेखाचित्र क्रमांक 1 के विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि अक्टूबर 2021 से अक्टूबर 2024 तक की अवधि में यूपीआई लेनदेनों की मात्रा में निरन्तर वृद्धि हुई है। अक्टूबर 2021 में देश में कुल 4.21 बिलियन यूपीआई लेन–देन हुए, जो कि अक्टूबर 2024 तक बढ़कर 16.58 बिलियन तक हो गए अर्थात इस अवधि में यूपीआई लेन–देनों में कुल 293.82% वृद्धि हुई है जो कि यूपीआई लेन–देनों की बढ़ती लोकप्रियता का सफल चित्रण प्रस्तुत करता है।

रेखाचित्र क्रमांक – 2

भारत में यूपीआई लेन–देन मूल्य (रूपये लाख करोड़ में)

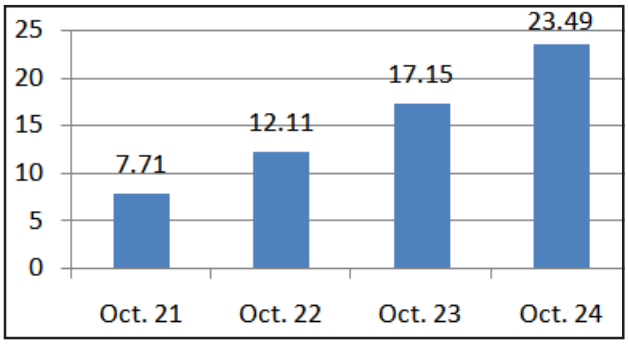

स्त्रोत – नेशनल पेमेन्ट्स कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया(NPCI)

उपर्युक्त रेखाचित्र क्रमांक 2 के विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि भारत में अक्टूबर 2021 से अक्टूबर 2024 की अवधि में हुए यूपीआई लेन–देनों के मूल्य में भी निरन्तर वृद्धि हुई है। अक्टूबर 2021 में हुए यूपीआई लेन–देनों का मूल्य 7.71 लाख करोड़ रूपये था जो कि अक्टूबर 2024 की अवधि तक बढ़कर 23.49 लाख करोड़ रूपये हो गया है अर्थात् इस अवधि में हुए यूपीआई लेनदेनों के मूल्य में कुल 204.67% की वृद्धि हुई है। अत: यह कहा जा सकता है कि भारत में विभिन्न ई–वॉलेट कंपनियों का भविष्य उज्जवल है। भविष्य का उपभोक्ता परंपरागत भुगतान प्रणालियों के स्थान पर डिजीटल भुगतान प्रणाली को अधिक महत्व प्रदान करेगा।

निष्कर्ष – उपर्युक्त शोध पत्र के अध्ययन के पश्चात् निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए है:

1. ई–वॉलेट भुगतान प्रणाली डिजीटल भुगतान प्रणाली का एक अभिन्न अंग है, जो अपने उपयोगकर्ता को मोबाईल या लेपटॉप के माध्यम से एक क्लिक पर किसी भी स्थान पर भुगतान करने या प्राप्त करने की सुविधा प्रदान करता है।
2. भारत में मुख्यत: तीन प्रकार के ई–वॉलेट प्रचलन में है – ओपन ई–वॉलेट, क्लोज्ड ई–वॉलेट एवं सेमी क्लोज्ड ई–वॉलेट।
3. ई–वॉलेट भुगतान तकनीक के माध्यम से उपयोगकर्ता एक ही प्लेटफार्म के माध्यम से विभिन्न भुगतानों जैसे बिजली बिल, होटल बिल, शॉपिंग बिल, परिवहन टिकट, व्यापारिक लेन–देनों का भुगतान सहजता से बिना किसी रूकावट के कर सकता है।
4. ई–वॉलेट भुगतान तकनीक डिजीटल भुगतान का त्वरित, सुविधाजनक एवं सुरक्षित माध्यम है, जिसमें ऑनलाईन धोखाधड़ी की संभावना कम रहती है।
5. भुगतान की सुविधा, त्वरित भुगतान, सुरक्षा एवं निजता, सामाजिक प्रभुत्व एवं रिवार्ड तथा ऑफर वे प्रमुख घटक है जो कि ग्राहकों को ई–

वॉलेट भुगतान तकनीक का प्रयोग करने हेतु प्रभावित करते है।

6. भारत में अक्टूबर 2024 की अवधि तक कुल 632 बैंक यूपीआई कंपनियों के साथ जुड़े हुए है, जिनमें इस अवधि तक 16.58 बिलियन यूपीआई लेनदेनों के माध्यम से कुल 23.49 लाख करोड़ रूपये की धनराशि का हस्तांतरण किया गया है।

उपसंहार – वर्तमान भारतीय परिवेश डिजीटलीकरण के क्षेत्र में प्रवेश कर चुका है। भविष्य का भुगतान बाजार डिजिटलीकरण के मार्ग पर प्रशस्त रहेगा। आज प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में आधुनिक तकनीकों का उपयोग कर रहा है। डिजीटलीकरण के इस दौर में उपभोक्ता वर्ग भी भुगतान की आधुनिक तकनीकों के प्रयोग से अछुता नहीं है। आज का ग्राहक भुगतान हेतु डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, RTGS, NEFT एवं ई–वॉलेट जैसे आधुनिक माध्यमों का प्रयोग करने में हिचकता नहीं है। भुगतान के विभिन्न डिजीटल या इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में सबसे त्वरित, सरल, सहज एवं सुविधा युक्त माध्यम है ई–वॉलेट भुगतान तकनीक। इस तकनीक ने अपने ग्राहकों को नकदी रखने की झंझट से मुक्त कर दिया है। ई–वॉलेट तकनीक भुगतान की एक महत्वपूर्ण प्रणाली बनकर उभरी है। आज के परिदृष्य में डिजीटल भुगतान के क्षेत्र में ई–वॉलेट कंपनियों की लोकप्रियता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है,क्योंकि इस तकनीक का उपयोग करने वाले उपयोगकर्ताओं की संख्या में भी निरंतर वृद्धि हो रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Vinoth Kumar, D. and Dr. Devi Saranya, 2023, "Consumer Perceptions and Adoption of Digital Wallets; A Survey Based Study", Mukt Shabd, Journal, August, Vol.-XII, Issue-VIII, Page No. 1594-1607.
2. Katti, Shilpa and Angadi, Amit 2020, "Perception of Indian Consumers towards Digital Wallets a Study," Sdmimd, December, Page No. 1-7.
3. Dr. Prema, N., 2023, "Digital Wallet Scenario In India : "A Study on Customers' Satisfaction", International Journal of Novel Research and Development (IJNRD), March, Vol.-8, Issue-3, Page No. B459-B467.
4. Aggarwal, Garima and Vaish, Arti, 2020, "E-wallet Market in India and to Indentify Various Factors Affecting Customer Preference," Annals of R.S.C.B., December, Vol.-24, Issue–2, Page No. 484-499.
5. Mishra, Sweta and Rajora, Vidhi, 2018, "A study on Digital Payment System with Special Reference to Youth", International Journal of Creative Research Thoughts, Page No. 237-242.
6. https://www.npci.org.in
7. https://www.pib.gov.in
8. https://www.bajajfinserv.in
9. https://www.hindi.economictimes.com
10. https://www.epayspace.com
11. https://www.egovernance.vikaspedia.in
12. https://www.corporatefinanceinstitute.com
13. https://www.shiprocket.in

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Digital Democracy in Central India: Social Media Usage Trends of MPs from Madhya Pradesh

Dr. Priya Dave*

***Assistant Professor (Political Science) I.K. College, Indore (M.P.) INDIA**

Abstract: Digital democracy has emerged as a vital force reshaping political communication in India. This research paper investigates the patterns of social media usage among Members of Parliament (MPs) from Madhya Pradesh, a central Indian state with a diverse political and social landscape. By analyzing quantitative and qualitative data from official MP social media accounts, particularly Twitter and Facebook, the study highlights the extent of digital engagement, content typologies, and the role of social media in constituency outreach and policy communication. Findings suggest a growing but uneven adaptation of digital tools among MPs, with implications for democratic participation and governance.The findings indicate a growing but uneven adoption of digital strategies among MPs, shaped by factors such as party affiliation, age, urban-rural constituency profiles, and digital literacy. While some representatives have embraced social media to enhance transparency and citizen connection, others exhibit minimal or symbolic presence. The paper argues that while digital platforms offer significant potential to deepen democratic participation, structural disparities and inconsistent digital engagement practices limit their transformative impact. The study concludes by highlighting the need for policy-level interventions to promote inclusive digital political participation in emerging democracies like India.

Keywords: Digital Democracy, Social Media, MPs, Madhya Pradesh, Political Communication, Central India.

Introduction - The digital age has transformed democratic participation, offering new avenues for political actors and constituents to interact. In India, with its rapidly increasing internet penetration, social media platforms have become essential tools for political engagement. Madhya Pradesh, being at the heart of India both geographically and politically, provides a unique context to explore these trends. This paper examines how MPs from this region are utilizing social media to engage with constituents, shape narratives, and contribute to the evolving fabric of digital democracy.

Madhya Pradesh, situated in the heart of India, presents a compelling case for examining these developments. With its diverse socio-political fabric and mix of urban and rural constituencies, the state offers valuable insights into how digital engagement is evolving among elected representatives. The rise in smartphone penetration, affordable internet access, and growing digital literacy have created fertile ground for MPs to communicate directly with citizens, bypassing traditional media gatekeepers. However, the patterns of social media usage among these representatives vary significantly in terms of frequency, content type, platform preference, and levels of interaction.

Literature Review

The intersection of technology and democracy has been extensively studied globally. Scholars like Coleman and Blumler (2009) argue that digital media can rejuvenate democracy by enabling more direct interaction between politicians and citizens. In India, scholars such as Udupa (2018) have highlighted how social media platforms have transformed political discourse, particularly during elections. Previous studies on Indian MPs' social media usage (e.g., Kumar & Bhardwaj, 2020) have found varying levels of engagement based on factors such as age, education, party affiliation, and constituency type. However, there remains a gap in region-specific studies, particularly in states like Madhya Pradesh, which straddle urban-rural divides and feature diverse socio-economic dynamics.

Methodology: This study employs a mixed-methods approach. Quantitatively, it analyzes the official Twitter and Facebook accounts of all 29 MPs from Madhya Pradesh elected in the 2019 General Elections. Key metrics include frequency of posts, follower count, type of content (e.g., personal updates, constituency work, national issues), and engagement (likes, shares, comments).

Qualitatively, the paper includes content analysis of selected posts to understand thematic patterns and the tone of communication. Interviews with political analysts and

media consultants were conducted to provide contextual understanding. The data was collected over a six-month period (January to June 2024).

Findings and Discussion:

1. Usage Patterns: Most MPs from Madhya Pradesh maintain active Twitter accounts, while Facebook is used more sporadically. On average, MPs post 3–5 times per week on Twitter, primarily sharing updates about their constituency work, party events, and national issues. Urban MPs, such as those from Bhopal and Indore, show higher digital engagement compared to their rural counterparts.

2. Content and Themes: A significant portion of social media content is event-driven, such as festival greetings, political rallies, and budget reactions. However, some MPs use platforms for interactive purposes—responding to citizens' grievances, conducting live Q&A sessions, and promoting government schemes. BJP MPs tend to have a more coordinated digital strategy, often sharing centralized party content, while Congress MPs display more individualistic messaging.

3. Public Engagement and Democratic Impact: Engagement levels vary widely. MPs with a younger demographic of followers and those from urban constituencies receive more likes, shares, and comments. Despite the potential for participatory democracy, many interactions remain one-way, with limited responsiveness to citizen feedback. Nonetheless, social media has enhanced political visibility and accessibility, especially during the COVID-19 pandemic when physical campaigning was restricted.

4. Challenges: Barriers include digital literacy, especially in rural areas, uneven internet access, and the risk of misinformation. There is also a growing concern about the performative nature of social media, where visibility may overshadow substantive political work. Additionally, reliance on third-party teams for managing accounts raises questions about authenticity and direct engagement.

Conclusion : The study finds that while social media is increasingly integrated into the political practices of MPs from Madhya Pradesh, its impact on democratic deepening remains limited by structural and contextual factors. Digital platforms have the potential to make politics more participatory and transparent, but their use remains uneven and often symbolic. Future efforts should focus on digital literacy, capacity building for MPs, and creating institutional norms for digital engagement that prioritize responsiveness and accountability.

References:-

1. Coleman, S., & Blumler, J. G. (2009). *The Internet and Democratic Citizenship: Theory, Practice and Policy*. Cambridge University Press.
2. Kumar, A., & Bhardwaj, S. (2020). "Political Communication in the Digital Age: A Study of Indian Parliamentarians' Social Media Usage." *Journal of Media Studies*, 12(2), 45-67.
3. Udupa, S. (2018). *Digital Dissonances: The Politics of Online Media in India*. Oxford University Press.
4. Government of India. (2019). *Digital India Programme: Annual Report*.
5. Election Commission of India. (2019). *General Elections Data Booklet*.

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Ancient Indian Scripts: A Comprehensive Overview

Dr. Rajkumari Sudhir*

***Asst. Professor (English) Govt. Sarojini Naidu Girls P.G. College, Bhopal (M.P.) INDIA**

Abstract: Ancient Indian scripts have been a cornerstone of the country's linguistic and cultural heritage. This paper aims to provide an in-depth exploration of these scripts, their evolution, and significance, with a focus on South Indian scripts. We will examine the Brahmi script, its descendants, and other prominent ancient Indian scripts, highlighting their characteristics, usage, and impact on Indian languages and culture.

Introduction - India's rich cultural landscape is reflected in its diverse array of ancient scripts. These scripts not only facilitated communication but also played a pivotal role in preserving the country's history, mythology, and cultural narratives. The evolution of ancient Indian scripts is a testament to the country's linguistic diversity and cultural exchange.

Based on the ancient Indian scripts topic, here are some facts:

Ancient Indian Scripts:

1. Indus Script: Used by the Indus Valley Civilization (2700-1900 BCE) and remains undeciphered.
2. Brahmi Script: Emerged in the 3rd century BCE, is an abugida, and gave rise to many modern Indian scripts like Devanagari, Odia, and Gujarati.
3. Kharosthi Script: Used in the northwest region (3rd century BCE to 3rd century CE) and was deciphered by James Prinsep.
4. Gupta Script: Developed from Brahmi and gave rise to scripts like Nâgarî, Úâradâ, and SiddhaC.

Script Origins:

1. Brahmi's origin is debated, with most scholars believing it was derived from or influenced by Semitic scripts, such as Aramaic.
2. The Indus script's connection to Brahmi remains unproven.
3. Other Scripts:
4. Tibetan Script: Derived from Brahmi and used to write Tibetic languages.
5. Sharada Script: An abugida writing system used in the northwestern Indian subcontinent (8th-12th centuries).
6. Devanagari Script: Used to write languages like Hindi, Sanskrit, and Marathi.

Types of Ancient Indian Scripts:

Brahmi Script: The Brahmi script is one of the most influential writing systems in India, giving rise to numerous scripts used across the country and beyond. Decoded by James Princep in 1837, Brahmi is an abugida writing system, where each consonant has an inherent vowel sound.

South Indian Scripts:

1. Tamil Script: Emerged from the Tamil-Brahmi script, the Tamil script is used to write the Tamil language, which is spoken in southern India and northeastern Sri Lanka.
2. Grantha Script: Originating from Brahmi, Grantha was used to write Sanskrit and Manipravalam in South India. It played a significant role in the development of Malayalam and other South Indian scripts.
3. Malayalam Script: Developed from the Grantha script, the Malayalam script is used to write the Malayalam language, which is spoken in Kerala, India.
4. Telugu-Kannada Script: This script gave rise to the Telugu and Kannada scripts, which are used to write the Telugu and Kannada languages, respectively.
5. Telugu Script: Used to write the Telugu language, which is spoken in the states of Andhra Pradesh and Telangana.
6. Kannada Script: Used to write the Kannada language, which is spoken in the state of Karnataka.
7. Vatteluttu Script: An ancient script used in South India, particularly in the Tamil region, Vatteluttu is believed to have originated from the Brahmi script.
8. Tigalari Script: Used to write the Tulu language, which is spoken in the coastal regions of Karnataka and Kerala.
9. Kadamba Script: An ancient script used in South India, the Kadamba script is believed to have given rise to several other scripts, including the Kannada and Telugu scripts.

Characteristics of Brahmic Scripts: Brahmic scripts share certain characteristics, including :

1. Abugida System: Each consonant has an inherent vowel sound, with other vowels indicated by diacritical marks.
2. Ligatures: Consonants can be combined in ligatures, with special marks denoting the combination of 'r' with another consonant.
3. Alphabetical Order: The order of letters follows a specific pattern, with vowels, velar consonants, palatal consonants, and so on.

Conclusion: Ancient Indian scripts have played a vital role in shaping the country's linguistic and cultural identity. Understanding these scripts is essential for appreciating India's rich cultural heritage and the evolution of its languages. This paper has provided an overview of the prominent ancient Indian scripts, including South Indian scripts, their characteristics, and significance, highlighting the importance of preserving and promoting India's linguistic diversity.

References:-

1. "Ancient Indian Scripts - Introduction, Types, Indian Scripts and FAQs." Vedantu. Accessed 25 January 2025.
2. "Brahmic Scripts." Wikipedia, Wikimedia Foundation, 24 January 2025. Accessed 30 January 2025.
3. "Dravidian Languages." Wikipedia, Wikimedia Foundation, 29 January 2025.
4. Falk, Harry. Scriptural Periods of the Indus Script. EB-Verlag, 2014.
5. Salomon, Richard. Indian Epigraphy: A Guide to the Study of Inscriptions in Sanskrit, Prakrit, and Other Indo-Aryan Languages. Oxford University Press, 1998.
6. Salomon, Richard. "New Insights into the Brahmi Script." Journal of the American Oriental Society, vol. 125, no. 2, 2005, pp. 171-184.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

वागड़ क्षेत्र में पाषाण पर उत्कीर्ण लोक देवी-देवताओं एवं पूर्वजों की प्रतिमाएं

सीमा डामोर*

* शोधार्थी (दृश्यकला) गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा (राज.) भारत

प्रस्तावना – राजस्थान में प्रचलित पाषाण प्रतिमाओं का सृजन सदियों से चला आ रहा है। इन प्रतिमाओं में लोक एवं पारम्परिक कला तत्वों को देखा जा सकता हैं। वागड़ क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत के संबंध में यहां की लोक जीवन से पल्लवित लोकाभिव्यक्तियों में निहित प्राचीनतम जनजातीय संस्कृति के आधार बिम्बों को स्पष्ट रुप से देखा जा सकता है।

आदिमानव के प्राकृतिक एवं भौगोलिक परिवेश को देखा जाए तो पाषाण ही एक ऐसा माध्यम रहा जिसमें मानव मन की अभिव्यक्ति को उकेरने व रंगाकन करने को प्रेरित किया। वनों से आच्छादित पहाड़ों और प्राकृतिक वातावरण में निवासरत् आदिमानव ने अपनी जीवन शैली के भावों को मुखरित करने के लिये सर्वप्रथम चट्टानों पर रेखाएं उकेरी तथा उन्हें रंगाकित किया। अपने आस-पास के वातावरण, आखेटक जीवन शैली आदि को अभिव्यक्त किया। ऐसा कहा जा सकता है कि मानव मन के भावों को उकेरने का पहला माध्यम पाषाण ही रहा।

वागड़ के क्षेत्र में अरावली की श्रृंखलाओं के मध्य उबड़-खाबड़ भू-क्षेत्र, वनोंच्छादित भूमि, नदीयों, नालों एवं वन्यजीवों से युक्त यह क्षेत्र पाषाण कालीन बागौर सभ्यता एवं बनास सभ्यता तथा ताम्र पाषाण कालीन आहड़ एवं गिलुण्ड की सभ्यता के अवशेष दीर्घकालीन मानव सभ्यता के निरंतरता के प्रतीक है। यह क्षेत्र जनजाति बाहुल्य होने एवं आधुनिक संसाधनों की कमी होने के बावजूद भी यहां के जीवन में सांस्कृतिक विरासत से ओत-प्रोत है।

मानव की विकास यात्रा के साथ-साथ पाषाण कला में भी विभिन्न परिवर्तन देखने को मिलते है। पत्थरों के औजारों के साथ-साथ मानव ने दैनिम जीवन की उपभोग-उपयोग की वस्तुओं का निर्माण किया जिसमें खड़-खड़ियां, ओखली एवं खरल आदि प्रमुख है। जब मानव सभ्य हो गया तब उसने सामाजिक व पारम्परिक संरचना के अनुरुप लोक भावनाओं के साथ लोक देवी-देवताओं और पूर्वजों को उकेरने के साथ लोक प्रतीक रुपों, लोक प्रतिमानों एवं लोक तत्वों को भी विशेष महत्व दिया है। साथ ही लोक कलाकारों द्वारा सदियों से अपनी इस लोक अभिव्यक्ति से लोक देवी-देवताओं और पूर्वजों का अंकन करने की पारम्परिक प्रवृत्ति को निरंतर उजागर किया।

वागड़ क्षेत्र में विकसित पाषाण कला के कई ऐसे छोटे-बड़े कलागत उदाहरण हमें गांव, कस्बों, नगरों में निर्मित कुण्ड-बावड़ियों में देखने को मिलते है जो जन उपयोगी होने के साथ-साथ स्थापत्य के कलात्मक भावों को भी दर्शाते है। इन कुण्ड-बावड़ियों में लोक देवी-देवताओं की मूर्तियों के अलावा द्वार एवं खिड़कियां की नक्काशी का उच्च रुप दिखाई देता है जो क्षेत्र विशेष की कला कौषलता को दर्शाता है।

वागड़ प्रदेश में प्रचलित पाषाण से निर्मित लोक कलाओं का स्वरुप आदिकाल से देखा जा सकता है। मानव ने अपने धार्मिक भावों को अभिव्यक्त करने के लिये पाषाण से विभिन्न लोक देवी-देवताओं की अनगढ़ सी प्रतिमाएं बनाकर अपने भावों को मुखरित किया है। लोक देवी-देवताओं के साथ-साथ स्थानीय शिल्पकारों ने मंदिर परम्परा में भी अपनी कौशलता का परिचय दिया है।

वागड के प्राचीन परिवेश को देखा जाए तो ऐसे कई छोटे-बडे स्थल हैं जहां पाषाण पर उत्कीर्ण कलागत सृजन को आज भी उसी रुप में देखा जाता है। जिसमें केसरियाजी एवं तलवाड़ा प्रमुख है। आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में स्थानीय लोक कलाकारों द्वारा छोटे-बड़े आकारों की प्रतिमाओं का निर्माण कर इस प्राचीन परम्परा को जीवत बनाये हुये है। जिसमें स्थानीय जन समुदाय की विशेष भूमिका है।

आदिवासी जनजातिय समुदाय के लोगों द्वारा अपनी मनौतियां पूर्ण होने पर अपने लोक देवी-देवताओं की प्रतिमाएं खरीदकर लाते है और अपनी विधि अनुसार घर के आंगन, खेत, चौक-चोपालों पर बने देवरों में स्थापित करते हैं। साथ ही आदिवासी समुदाय के लोगों की मान्यतानुसार यदि किसी व्यक्ति की अकाल मृत्यु या किसी दुर्घटनावश मृत्यु हो जाये तो उस मृत आत्मा की शांति के लिए उसके भावोनुरुप पूर्वजों की पाषाण निर्मित प्रतिमाएं स्थापित करते है। पूर्वजों को स्थापित करने की परम्परा सदियों से चली आ रही है।

बांसवाड़ के तलवाड़ा ग्राम में सोमपुरा जाति के शिल्पकार पाषाण कला में अपनी महत्वपूर्ण पहचान रखते है। तलवाड़ा से प्राप्त काले पत्थर पर मूर्तियों का निर्माण करते समय सही अनुपात का ध्यान रखते है। कई सदियों से चली आ रही पाषाण कला परम्परा आज भी अपने मौलिक स्वरुप में विद्यमान है। साथ ही यहां पर पूर्वजों की मूर्तियों के साथ-साथ लोक देवी-देवताओं की मूर्ति बनाने की परम्परा रही है। यहां से प्राप्त काला पत्थर सफेद संगमरमर से नरम होता है तथा मूर्तियां बनने के उपरांत उन पर तेल लगाकर धुप में सुखने के लिये रख दिया जाता है जिससे मूर्तियों में चमक और कालापन आ जाता है। आदिवासी क्षेत्र में रहने के बावजूद भी सोमपुरा जाति के लोगों ने अपनी पारम्परिक कला कौशलता को न केवल बनाये रखा बल्कि समृद्ध भी

बनाया।

तलवाड़ा में बहुतायात से पाया जाने वाल 'परेवा' पत्थर से बनी मूर्तियों के कारण यह क्षेत्र पूरे भारतवर्ष में अपनी एक अलग ही पहचान रखता है। यहां निर्मित मूर्तियों में राम-कृष्ण, देवी शारदा, शिव-पार्वती, नंदी, गणेश, महात्मा, महापुरूष तथा पूर्वजों की आकारद मूर्तियां उल्लेखनिय है। साथ ही सूर्य मंदिर, त्रिपुरा सुंदरी, सत्यनारायण, द्वारकाधीश, सिद्धिविनायक, गोकर्णेश्वर, लक्ष्मीनारायण, संभवनाथ आदि मूर्तियां जग प्रसिद्ध है। जैन धर्म से संबंधित मूर्तियां का निर्माण भी यहा भरपूर होता है।

राजस्थान की लोक कलाओं में लोक तत्व, लोक प्रतिमान एवं लोक तत्वों को पाषाण में निर्मित कला रुपों का विशेष स्थान है। वही वागड़ के बांसवाड़ा, डुँगरपुर एवं ऋषभदेव के प्रमुख स्थानों पर लोक देवी-देवताओं की प्रतिमाएं आकृति मूलक कला के साथ-साथ उनमें निहित लोक तत्वों व कलागत सौन्दर्यबोध के रुप में विशिष्ठ पहचान रखते है। यहां निर्मित पाषण आकृतियां आदिवासी समाज की सामाजिक एवं धार्मिक आस्था से जुड़ी हुई है। तथा देवी-देवताओं के स्वरूप के साथ लोक कला तत्वों का समावेष भी दिखाई देता है जो इस लोक कला के वैभव को दृष्टिगत करता है।

वागड़ क्षेत्र में शिल्पकला का प्राचीन इतिहास रहा है। यहां बनने वाली मूर्तियों में भी कला के प्रतीकात्मक भाव को बखूबी दर्शाया गया है। इन मूर्तियों में लक्ष्मी के रुप में कमल, शक्ति के रुप में आयुध-त्रिशुल, मुकुट के रुप में शासक प्रमिमानों को आकरद किया जाता है। साथ ही त्रिभूज प्रगति, उल्टा त्रिभुज अवनती, चतुर्भूज, पंचभूज, षष्टभुज, अष्टभुज आदि का प्रयोग तंत्र-मंत्र में अलंकरण के रुप में भी उजागर किया जाता रहा है।

यहां आदिवासी जनजातिय संस्कृति से संबंधित प्रमुख लोक देवी-देवताओं एवं पूर्वजों की मृण, काष्ठ, एवं पत्थरों की मूर्तियों के बारे में उल्लेखित करने का प्रयास किया गया है। जिनमें प्रमुख रुप से पूर्वजों के सीराबावजी मृतआत्माओं का अदृश्य शक्ति के रूप में स्थापित कर आदिवासी समाज पूजा अर्चना करता है। यह अनगढ़त पत्थरों से लगाकर कर विभिन्न घटित घटनों से मृत्यू होने पर उससे संबंधित मूर्ति बनाकर पूजा-अर्चना की जाती है। तो कहीं-कहीं प्रतिकात्मक मूर्ति बनाकर। वर्तमान में व्यक्ति के मृत्यू के किसी घटना से हुई जैसे मोटरसाईकिल से दुर्घटना से मृत्यू होने पर मोटर साईकिल पर बैठाए घोडे से गिरने पर मृत्यू होने पर घोडे पर सीराबावजी हाथ में बंदूक लिए, हाथ में तलवार या तीर-कमान लिए, सीरा बावजी का सृजन होने लगा। काष्ठ कला एवं मृणकला से बने घोड़ा बावजी, नाग देवता, सीरा बावजी का भी प्रचलन है।

घोडे पर सवार सीरा बावजी : यह पुरुष पूर्वज की घोडे पर सवार मूर्ति अपने परिवाजनों की इच्छानुसार घोडे पर सवार, हाथ में भाला, तीर-धनुष, तलवार लिए आभूषणों युक्त सिर पर पगड़ी, साफा एवं मुकुट धराकर बनवाई जाती है।

स्त्री-पुरूष सीरा बावजी : यह सीरा बावजी स्त्री-पुरुष को खड़ी मुद्रा में बनाया जाता है। इन आकृति में पुरुष धोती, शर्ट एवं पगड़ी पहने बनाये जाते हैं साथ ही स्त्रीयों को अपनी पारम्परिक वेशभूषा के साथ खडी मुद्रा में आकारित किया जाता है।

अकाल मृत्यु एवं दुर्घटना में घटित मृत्यू पर सीरा बावजी : आदिवासी जनसमुदाय द्वारा यदि किसी व्यक्ति की मृत्यू किसी दुर्घटनावश जैसे मोटरसाईकिल की दुर्घटना में मृत्यू होने पर मोटरसाईकिल पर सवार सीरा बावजी एवं बस से दुर्घटना होने पर बस पर सवार सीरा बावजी इत्यादि घटनाओं से संबंधित मूर्तियों का निर्माण कर विधिवत स्थान पर स्थापित किया जता है।

वीर पुरूषों एवं महात्मा के रुप में सीरा बावजी : यदि किसी साधु, महात्मा एवं सन्त की मृत्यु होने पर इनकी वेशभूषा अनुसार हाथ में वीणा एवं पूजा में उपयोग में ली जाने वाली वस्तुओं के साथ सीरा बावजी की मूर्तियां उकेरी जाती है। महात्मा लोगों को देव तुल्य माना जाता है। इन्हें साखल देव भी कहा जाता है। खेत के किनारे स्थापित होने पर खेत के रखवाले या साखल देव कहा जाता है। इन्हें साँप के रूप में आकारद कर पूजा जाता है। इन आकृतियों में विशेषकर एक फणी, दो फणी, पाँच फणी, सात फणी एवं नौ फणी साँप की आकृतियों की मूर्तिया बनवाई जाती है। देवरों पर हाथ की आकृतियों बने शिल्प भी स्थापित किये जाते है। इसके साथ ही आदिवासी समाज के लोकिक भावों अनुरुप साँप की आकृति में लोक देवताओं की मूर्तियाँ, धर्मराज, देवनारायण, तेजाजी, कल्लाजी, गोगाजी को साँप की आकृति मे पूजा जाता है। मूर्ति पर चाँदए सूरज एवं तारों के प्रतीकात्मक चिन्ह भी बने होते है।

इसी क्रम में वागड़ में स्थित समाधी स्थलों पर भी आदिवासी समाज द्वारा अपने-अपने पूर्वजों की प्रतिताएं स्थापित करने का चलन वर्षों पुराना है। पुरुष की समाधि पर पाषाण की बनी मुडी स्थापित की जाती है एवं स्त्रीयों की समाधि पर पगल्ये स्थापित करते है जिसे शोकली कहा जाता है।

मौटे रुप देखा जाए तो यहां की कला संस्कृति का एक जीवन्त उदाहरण है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में देखा जा सकता है। यहां का सांस्कृतिक वैभव युवा कलाकारों को आकर्षित करता है तथा नये माध्यमों से इन लोक तत्वों को निरुपित करने की जिज्ञासा को भी उजागर करता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :-

1. भानावत, महेन्द्र, लोक कलाओं का आजादीकरण, मुक्तक प्रकाशन, उदयपुर, 2002, पृष्ठ संख्या-01
2. राव, धनपतसिंह, जनजाति मेले एवं त्योंहार विशेषांक, ट्राईब, समकक्ष व्यक्ति समीक्षित त्रैमासिक पत्रिका, माणिक्य लाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, अशोक नगर, उदयपुर, खण्ड-50 (2-4) अप्रेल-दिसम्बर, 2018, खण्ड-51 (1) जनवरी-मार्च, 2019, पृष्ठ संख्या-01
3. जाटव, गिरिराज, मेवाड़ भू-भाग की पारम्परिक कलाएं : एक समीक्षात्मक अध्ययन (रचनात्मकता के परिवेश में) पृष्ठ संख्या-145
4. बरण्डा, यशपाल, जनजातीय संस्कृति एवं परम्पराएँ, आशा पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण, 2019, पृष्ठ संख्या-77
5. शर्मा, जयसिंह नीरज, भगवतीलाल, राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, 41वां सस्करण, 2017, पृष्ठ संख्या-92
6. जाट, मोहल लाल, 'दक्षिण राजस्थान की जन जातीय चित्रकला' ऐपेक्स पब्लिशिंग हाउस, उदयपुर, चतुर्थ संस्करण, 2014
7. सामर देवी लाल,'संस्कृति के रखवाले' प्रथम अध्याय राजस्थान के लोक देवता सांस्कृतिक परिवेश भारतीय लोक कला ग्रंथावली-ग्रंथ संख्या-47, प्रथम संस्करण, अक्टुबर, 1980
8. विशिष्ट नीलिमा, 'राजस्थान की मूर्तिकला परम्परा', राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2001
9. कृष्णदास, राय 'भारतीय मूर्तिकला', प्रधान मंत्री, ना.प्र.सभा काशी।
10. ओझा, गौरीशंकर हीराचंद 'बांसवाड़ा राज्य का इतिहास' वैदिक मंत्राल।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

हिंदुओं में विवाह विच्छेद की उभरती प्रवृत्तियों का राजस्थान के विशेष संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

पुष्पा लौहार* डॉ. मीता चौधरी**

* शोधार्थी (विधि) जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड-टू-बी विश्वविद्यालय) उदयपुर (राज.) भारत
** सहायक आचार्य (विधि) जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड-टू-बी विश्वविद्यालय) उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – यह शोध पत्र हिंदुओं में विवाह विच्छेद (तलाक) की उभरती प्रवृत्तियों का राजस्थान के विशेष संदर्भ में विश्लेषण करता है। परंपरागत रूप से हिंदू समाज में विवाह एक पवित्र बंधन माना जाता था, लेकिन सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक परिवर्तनों के प्रभाव से तलाक की घटनाओं में वृद्धि देखी जा रही है। यह अध्ययन तलाक के कानूनी, सामाजिक और व्यक्तिगत कारकों पर केंद्रित है, जिसमें शहरीकरण, शिक्षा का स्तर, महिलाओं की आत्मनिर्भरता, और पारिवारिक संरचना में बदलाव प्रमुख भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त, तलाक से उत्पन्न सामाजिक चुनौतियों, जैसे कि महिलाओं और बच्चों पर प्रभाव, समाज के दृष्टिकोण और पुनर्विवाह के संदर्भ में चर्चा की गई है। राजस्थान राज्य के आंकड़ों और मामलों का विश्लेषण कर, इस शोध में विवाह विच्छेद से जुड़े रुझानों और उनके कारणों का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अंत में, तलाक की बढ़ती प्रवृत्तियों से निपटने के लिए सुझाव और समाधान भी दिए गए हैं।

शब्द कुंजी – हिंदू विवाह, तलाक की प्रवृत्तियाँ, सामाजिक परिवर्तन. राजस्थान, पारिवारिक संरचना, कानूनी प्रावधान, स्त्री आत्मनिर्भरता, पुनर्विवाह, शहरीकरण, समाजशास्त्रीय विश्लेषण।

प्रस्तावना – हिंदू समाज में विवाह को केवल एक सामाजिक अनुबंध के रूप में नहीं, बल्कि एक धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा के रूप में देखा जाता रहा है, जो दो व्यक्तियों के साथ-साथ उनके परिवारों को भी आपस में जोड़ता है। विवाह को पवित्र बंधन माना जाता है, जिसका उद्देश्य न केवल पारिवारिक जीवन का आरंभ करना है, बल्कि समाज में नैतिक मूल्यों और स्थिरता को बनाए रखना भी है। परंपरागत रूप से, हिंदू विवाह में विच्छेद या तलाक की धारणा को हतोत्साहित किया जाता था, क्योंकि इसे समाज और धर्म की दृष्टि से अनुचित माना जाता था।

हालांकि, समय के साथ बदलते सामाजिक और आर्थिक परिवेश ने विवाह और पारिवारिक संरचना पर गहरा प्रभाव डाला है। आधुनिक जीवनशैली, शिक्षा का प्रसार, शहरीकरण, और महिलाओं की आत्मनिर्भरता में वृद्धि ने वैवाहिक संबंधों में नए आयाम जोड़े हैं। नतीजतन, तलाक की घटनाओं में वृद्धि देखी जा रही है, जो कि पारंपरिक हिंदू समाज के मूल्यों में परिवर्तन का संकेत देती है।

राजस्थान जैसे राज्य, जहाँ समाज पारंपरिक मूल्यों और रीति-रिवाजों से गहराई से जुड़ा हुआ है, वहाँ भी विवाह विच्छेद की प्रवृत्ति में इजाफा देखने को मिला है। शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में तलाक की बढ़ती दर ने इस विषय पर गहन विश्लेषण की आवश्यकता उत्पन्न की है। विवाह विच्छेद के कानूनी पहलुओं के साथ-साथ इसके सामाजिक, मानसिक, और भावनात्मक प्रभावों पर विचार करना आज के समय में अत्यंत आवश्यक हो गया है।

इस लेख में राजस्थान के संदर्भ में विवाह विच्छेद की उभरती प्रवृत्तियों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य तलाक के कारणों, इसके प्रभावों, और समाज की प्रतिक्रिया को समझना है। साथ ही, यह भी देखा जाएगा कि कैसे पारिवारिक संरचना और सामाजिक दृष्टिकोण समय के साथ परिवर्तित हो रहे हैं। अंत में, इस लेख के माध्यम से विवाह विच्छेद से जुड़े कानूनी और सामाजिक समाधान भी प्रस्तुत किए जाएंगे, ताकि भविष्य में स्थायी वैवाहिक संबंधों को प्रोत्साहित किया जा सके।

राजस्थान, जिसे उसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और परंपरागत मूल्यों के लिए जाना जाता है, में विवाह सदियों से केवल दो व्यक्तियों का ही नहीं, बल्कि परिवारों और समुदायों का भी मिलन माना जाता है। हिंदू विवाह पद्धति विशेष रूप से धार्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण मानी जाती है, जहाँ तलाक या विवाह विच्छेद का विचार सदियों तक अस्वीकार्य रहा है। विवाह के प्रति यह दृष्टिकोण आज भी समाज के एक बड़े हिस्से में प्रचलित है। किंतु समय के साथ, समाज में तेजी से आए परिवर्तन और आधुनिक जीवनशैली के प्रभाव के कारण विवाह विच्छेद की प्रवृत्ति राजस्थान में भी बढ़ने लगी है।

इस लेख का उद्देश्य राजस्थान के संदर्भ में हिंदू समाज में तलाक की बढ़ती प्रवृत्ति का विश्लेषण करना है। इसमें तलाक के प्रमुख कारणों, इसके सामाजिक और व्यक्तिगत प्रभावों, कानूनी पहलुओं तथा भविष्य के समाधान की चर्चा की गई है।

राजस्थान की सामाजिक संरचना और विवाह की परंपरा – राजस्थान की सामाजिक संरचना गहरी सांस्कृतिक और पारंपरिक जड़ों से बंधी हुई है। यहाँ विवाह एक सामाजिक कर्तव्य के रूप में देखा जाता है, जहाँ परिवारों और जातीय समूहों की प्रतिष्ठा का प्रश्न जुड़ा होता है। पारंपरिक रूप से हिंदू विवाह जीवनभर के बंधन के रूप में माना जाता था, जिसे धार्मिक रूप

से भी अनिवार्य समझा जाता है। समाज में महिलाओं की भूमिका पारिवारिक संरक्षक और गृहिणी की रही है, जबकि पुरुषों की भूमिका परिवार के भरण-पोषण तक सीमित मानी जाती थी।

हालांकि, आधुनिक समय में शिक्षा, शहरीकरण और आर्थिक स्वतंत्रता के प्रभाव ने इन पारंपरिक धारणाओं को चुनौती दी है। विशेष रूप से महिलाओं की आत्मनिर्भरता और समाज में बदलते पारिवारिक मूल्यों ने विवाह संबंधों को नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर दिया है। इस पृष्ठभूमि में तलाक की घटनाओं में वृद्धि एक महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन का संकेत है।

तलाक के प्रमुख कारण- राजस्थान में विवाह विच्छेद की प्रवृत्ति में वृद्धि के कई प्रमुख कारण हैं, जो पारिवारिक, सामाजिक और व्यक्तिगत कारकों से प्रभावित हैं।

1. **महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता-** महिलाओं में शिक्षा और रोजगार के अवसरों की वृद्धि ने उन्हें आत्मनिर्भर बना दिया है। अब वे अपने अधिकारों के प्रति अधिक सजग हैं और असफल वैवाहिक संबंधों में बंधे रहने के लिए बाध्य नहीं हैं।
2. **शहरीकरण और बदलते सामाजिक मूल्य-** शहरी क्षेत्रों में परिवारों का स्वरूप संयुक्त परिवारों से एकल परिवारों में परिवर्तित हो रहा है। इस परिवर्तन ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता को बढ़ावा दिया है, जिससे तलाक की प्रवृत्ति में वृद्धि देखी जा रही है।
3. **संवादहीनता और असंगत अपेक्षाएँ-** वैवाहिक जीवन में सफल संबंध के लिए संवाद आवश्यक होता है, लेकिन आज के समय में भागदौड़ भरी जीवनशैली के कारण दंपति एक-दूसरे के साथ पर्याप्त समय नहीं बिता पाते। इससे आपसी तनाव और मतभेद बढ़ते हैं।
4. **सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक दबाव का घटता प्रभाव-** जहाँ पहले समाज का दबाव और सांस्कृतिक मूल्य विवाह को बचाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे, अब लोगों की व्यक्तिगत प्राथमिकताओं ने इन दबावों को कम कर दिया है।
5. **प्रेम विवाहों की बढ़ती प्रवृत्ति-** राजस्थान में भी प्रेम विवाहों का चलन बढ़ा है, लेकिन कई बार अपेक्षाएँ पूरी न होने पर यह विवाह असफल हो जाते हैं।

कानूनी प्रावधान और तलाक के प्रकार- भारत में तलाक से संबंधित कानून हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 (Hindu Marriage Act, 1955) के अंतर्गत आते हैं, जो तलाक के विभिन्न आधारों को मान्यता प्रदान करता है। इसमें क्रूरता, परित्याग, व्यभिचार, मानसिक विक्षिप्तता, संतानहीनता, और धर्मांतरण जैसे कारणों को शामिल किया गया है। राजस्थान में भी तलाक के मामले इन्हीं कानूनी प्रावधानों के अंतर्गत सुने जाते हैं।

तलाक के प्रकार:

1. **पारस्परिक सहमति से तलाक ((Mutual Consent Divorce)-** दोनों पक्षों की सहमति से तलाक का निर्णय लिया जाता है, जिसमें विवादों की संभावना कम होती है।
2. **एकतरफा तलाक (Contested Divorce)-** एक पक्ष द्वारा तलाक की अर्जी दी जाती है, जबकि दूसरा पक्ष इसका विरोध करता है। यह प्रक्रिया लंबी और जटिल हो सकती है।

तलाक के सामाजिक और व्यक्तिगत प्रभाव - तलाक केवल दो व्यक्तियों के बीच का कानूनी अलगाव नहीं है, बल्कि इसका गहरा सामाजिक और व्यक्तिगत प्रभाव पड़ता है।

1. **महिलाओं और बच्चों पर प्रभाव-** तलाक के बाद महिलाओं को सामाजिक कलंक का सामना करना पड़ता है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। बच्चों पर भी इसका मनोवैज्ञानिक असर पड़ता है, जिससे उनकी शिक्षा और मानसिक विकास प्रभावित हो सकता है।
2. **सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन-** हालांकि शहरी क्षेत्रों में तलाक को अब सामान्य रूप से स्वीकार किया जाने लगा है, लेकिन ग्रामीण समाज में अभी भी तलाक को अस्वीकार्य माना जाता है। समाज का यह विभाजन तलाकशुदा व्यक्तियों के पुनर्विवाह में भी अवरोध उत्पन्न करता है।
3. **आर्थिक असुरक्षा-** तलाक के बाद विशेष रूप से महिलाओं को आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जब तक कि वे आत्मनिर्भर न हों।
4. **पारिवारिक संरचना पर प्रभाव-** तलाक से संयुक्त परिवारों का विघटन होता है और बच्चों की परवरिश पर इसका गहरा असर पड़ता है।

राजस्थान में तलाक की प्रवृत्तियों का विश्लेषण - राजस्थान में विवाह विच्छेद के मामलों में धीरे-धीरे वृद्धि देखी गई है। शहरी क्षेत्रों जैसे जयपुर, उदयपुर और जोधपुर में तलाक की घटनाएँ अधिक देखी जाती हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में अब भी पारंपरिक मूल्यों का प्रभाव मजबूत है। हालाँकि, शिक्षा और जागरूकता के प्रसार ने ग्रामीण महिलाओं को भी अपने अधिकारों के प्रति सजग किया है, जिससे तलाक के मामलों में वृद्धि हो रही है।

राज्य सरकार और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और तलाक के बाद के जीवन को सुचारू बनाने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं।

निष्कर्ष - राजस्थान में विवाह विच्छेद की उभरती प्रवृत्तियाँ समाज में हो रहे गहन परिवर्तनों का संकेत हैं। पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक जीवनशैली के बीच संतुलन स्थापित करना एक चुनौती बन गया है। तलाक के बढ़ते मामलों से यह स्पष्ट होता है कि वैवाहिक संबंधों में संवाद, समझ और आपसी सम्मान की आवश्यकता है।

हालाँकि तलाक को व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्म-सम्मान के रूप में देखा जा सकता है, लेकिन इसके सामाजिक और व्यक्तिगत प्रभावों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यह आवश्यक है कि समाज तलाकशुदा व्यक्तियों को समान अवसर प्रदान करे और उन्हें पुनर्विवाह तथा सामाजिक स्वीकार्यता का अवसर मिले।

प्रस्तावित समाधान और सुझाव

1. **परिवार परामर्श केंद्रों की स्थापना -** तलाक से पहले परिवारों को परामर्श देने के लिए सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा प्रयास किए जाने चाहिए।
2. **महिलाओं के लिए स्वरोजगार के अवसर-** तलाकशुदा महिलाओं के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करने हेतु स्वरोजगार और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए।
3. **पुनर्विवाह के प्रति समाज का दृष्टिकोण बदलना-** समाज में पुनर्विवाह को प्रोत्साहित करना और तलाकशुदा व्यक्तियों को एक नया जीवन शुरू करने का अवसर देना आवश्यक है।
4. **कानूनी प्रक्रिया का सरलीकरण-** तलाक की कानूनी प्रक्रिया को सरल और समयबद्ध बनाना जरूरी है, ताकि विवादों को शीघ्र निपटाया जा सके।

राजस्थान में तलाक की बढ़ती प्रवृत्तियों का विश्लेषण समाज के

विकासशील स्वरूप का परिचायक है। इस विषय पर गहन शोध और समाधानमूलक उपायों के माध्यम से स्थायी वैवाहिक संबंधों को प्रोत्साहित करना आज के समय की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. अग्निहोत्री, ए. (2018). भारत में विवाह और पारिवारिक कानून: एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण, नई दिल्ली, प्रकाशन संस्थान।
2. चतुर्वेदी, बी. (2015). समकालीन समाज में विवाह विच्छेद की चुनौतियाँ, जयपुर, राजस्थान साहित्य अकादमी।
3. गुप्ता, आर. (2017). हिंदू विवाह और तलाक: सामाजिक और कानूनी विश्लेषण, मुंबई, लक्ष्मी पब्लिकेशन।
4. भारद्वाज, पी. (2019). राजस्थान का समाज और तलाक की प्रवृत्तियाँ, उदयपुर, मेवाड़ पब्लिकेशन।
5. शर्मा, के. (2016). भारत में वैवाहिक विवादों का कानूनी अध्ययन, दिल्ली, इंद्रप्रस्थ लॉ पब्लिकेशन।
6. मिश्रा, डी. (2020). पारिवारिक संरचना और तलाक: एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण, पटना, प्रिया पब्लिकेशन।
7. तिवारी, एम. (2018). हिंदू समाज में विवाह और पारिवारिक जीवन. वाराणसीरू ज्ञान गंगा प्रकाशन।
8. सिंह, ए. (2021). भारत में तलाक का मनोवैज्ञानिक और कानूनी प्रभाव, दिल्ली: यूनीवर्सल लॉ पब्लिकेशन।
9. जोशी, वी. (2022). राजस्थान में पारिवारिक कानून और तलाक की प्रवृत्तियाँ, जोधपुर, मारवाड़ पब्लिशिंग हाउस।
10. देवी, एस. (2019). महिलाओं के अधिकार और तलाक: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, जयपुर, साहित्य भवन।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Legal Rights of Individuals Under India's Data Protection Laws

Dr. Surendra Singh Baghel*

***Director, Law Academy, Bhopal (M.P.) INDIA**

Abstract: India's digital economy is rapidly expanding, leading to the generation and processing of massive volumes of personal data. The right to privacy, affirmed as a fundamental right by the Supreme Court of India in 2017, necessitated the establishment of a legal framework for data protection. The Digital Personal Data Protection Act, 2023 (DPDP Act) was introduced to address this need. This paper explores the legal rights conferred on individuals under the DPDP Act, examining the provisions for consent, data access, correction, erasure, grievance redressal, and remedies. It also assesses the effectiveness of these rights in safeguarding individual privacy in a digital society.
Keywords: Data Protection, Digital Rights, India, Privacy, Personal Data, Consent, DPDP Act, 2023.

Introduction - India's digital economy is witnessing unprecedented growth, leading to the large-scale generation, processing, and dissemination of personal data. With the increasing dependence on digital platforms, safeguarding the privacy and security of personal data has become a pressing concern. The Supreme Court of India, in its historic judgment in Justice K.S. Puttaswamy v. Union of India (2017), recognized the right to privacy as a fundamental right under Article 21 of the Constitution. This pivotal ruling underscored the necessity for a comprehensive data protection framework in India. Responding to this legal and social imperative, the Indian Parliament enacted the Digital Personal Data Protection Act, 2023 (DPDP Act), marking a significant milestone in the country's digital governance landscape.

The DPDP Act aims to protect digital personal data and lays down the rights of individuals, referred to as Data Principals, while imposing obligations on entities that collect and process data, known as Data Fiduciaries. The Act is designed to ensure the responsible use of personal data while upholding the privacy rights of individuals. In a society increasingly reliant on technology, these legal rights empower individuals to exercise greater control over their personal data and enhance their ability to seek redress in cases of misuse or negligence.

At the core of the DPDP Act is the recognition of several key rights of individuals. The right to access information is one of the most fundamental entitlements, allowing individuals to know whether their data is being processed, the nature of such data, the purpose of processing, and the entities with whom the data has been shared. This provision promotes transparency and accountability among data fiduciaries and enables individuals to make informed decisions about the sharing and usage of their personal data.

Another crucial right enshrined in the Act is the right to correction and erasure. Individuals can request the correction of inaccurate or outdated data, the completion of incomplete data, and the erasure of data that is no longer necessary or for which consent has been withdrawn. This right ensures that the data maintained about individuals is accurate, up-to-date, and limited to what is necessary, thereby aligning with the principles of data accuracy and minimization.

Consent is central to the data protection regime under the DPDP Act. The law mandates that consent must be free, informed, specific, and unambiguous. Individuals must be provided with clear information about the purpose and scope of data processing. Importantly, the Act grants individuals the right to withdraw consent at any time, which must be as easy to perform as giving it. This reinforces the autonomy of individuals over their personal data and places a significant responsibility on data fiduciaries to ensure transparent and ethical data practices.

In recognition of the possibility of grievances arising from data processing activities, the Act provides individuals with the right to grievance redressal. Data Principals can lodge complaints with the data fiduciary and, if not satisfactorily resolved, escalate the matter to the Data Protection Board of India (DPBI). This two-tier redressal mechanism provides a structured pathway for individuals to assert their rights and seek remedies in cases of violation.

The DPBI, established as an independent regulatory authority under the Act, is empowered to investigate complaints, enforce compliance, and impose penalties for contraventions.

The DPDP Act also introduces the right to nominate. This allows individuals to designate a nominee who can exercise their rights under the Act in the event of death or incapacity. This right ensures that the digital legacy and privacy preferences of individuals are respected even after their death, offering a humane and forward-looking dimension to data protection.

In scenarios involving data breaches, the Act mandates that individuals must be informed promptly when such breaches are likely to have a significant impact on their rights. Timely notification empowers individuals to take preventive or corrective actions, such as changing passwords, monitoring accounts, or seeking assistance, thereby mitigating potential harms. This right to be informed reflects the principle of accountability and enhances trust in digital ecosystems.

In addition to these rights, the DPDP Act imposes certain duties on individuals, thereby fostering a balanced framework of rights and responsibilities. Data Principals are required not to impersonate others, not to suppress any material information while exercising their rights, and to comply with lawful orders or directions. This provision ensures that the data protection framework is not misused and that individuals exercise their rights responsibly and ethically.

The enforcement of the rights under the DPDP Act is entrusted to the Data Protection Board of India. The DPBI functions as a quasi-judicial authority with powers to adjudicate disputes, issue directives, and impose monetary penalties. The penalties for non-compliance range from INR 10,000 to INR 250 crore, depending on the severity and nature of the violation. This strong enforcement mechanism acts as a deterrent against negligent or willful misuse of personal data and reinforces the seriousness of compliance with the law.

In terms of alignment with international standards, the DPDP Act shares common features with the European Union's General Data Protection Regulation (GDPR), such as the emphasis on consent, rights to access and erasure, and accountability of data processors. However, the DPDP Act also differs in certain respects. For instance, the centralized regulatory structure and the exemption clauses for government agencies under certain conditions have raised concerns among privacy advocates regarding potential overreach and dilution of individual rights.

Despite its promising framework, the implementation of the DPDP Act faces several challenges. One major issue is the low level of public awareness and digital literacy in India. Many individuals remain unaware of their data rights and the means to exercise them. This lack of awareness undermines the effectiveness of the rights granted under the Act and highlights the need for widespread public education campaigns.

Another concern pertains to the institutional capacity of the Data Protection Board. Given the complexity and volume of digital transactions in India, the Board must be equipped with adequate resources, technological expertise, and independence to function effectively. The success of the data protection regime hinges on the credibility and operational strength of this regulatory body.

Moreover, the balance between privacy rights and national security remains a contentious issue. The Act permits the government to exempt certain data processing activities from the application of the Act for reasons of national interest, sovereignty, or public order. While such provisions may be necessary in exceptional circumstances, they must be clearly defined and subjected to judicial or parliamentary oversight to prevent abuse and ensure that they do not erode the fundamental right to privacy.

The Act's approach to cross-border data flow is also an area of ongoing debate. It allows for the transfer of personal data to countries or territories notified by the central government. However, the criteria for such notification and the safeguards required for international data transfers are not comprehensively detailed. This creates uncertainty for businesses and may raise concerns about data sovereignty and the adequacy of protection in foreign jurisdictions.

To strengthen the data protection regime in India, several measures can be recommended. Firstly, awareness and literacy programs must be rolled out nationwide to educate citizens about their rights under the DPDP Act and the steps to take in case of violations. This can be done through schools, community centers, digital campaigns, and partnerships with civil society organizations.

Secondly, the regulatory oversight of the Data Protection Board must be fortified. The Board should operate independently and transparently, free from undue influence. Its decisions should be subject to judicial review to uphold the principles of natural justice and accountability.

Thirdly, the DPDP Act should be periodically reviewed and updated to address new challenges emerging from technological advancements such as artificial intelligence, big data analytics, and the Internet of Things (IoT). These technologies raise complex data protection issues that require nuanced and adaptive legal responses.

Fourth, promoting privacy-by-design in technological development can enhance compliance and trust. Companies and developers should be encouraged to incorporate data protection principles at the design stage of digital products and services, ensuring that privacy safeguards are built into the architecture of digital systems. Finally, collaboration between the public and private sectors is essential to create a robust data governance ecosystem. Businesses, especially startups and small enterprises, should be provided with guidance and resources to comply with the law. Industry associations and regulatory bodies

can work together to develop sector-specific codes of practice and certification mechanisms.

In conclusion, the Digital Personal Data Protection Act, 2023 marks a critical step forward in India's journey toward safeguarding digital privacy. By conferring comprehensive rights to individuals and establishing a robust enforcement mechanism, the Act lays the foundation for a privacy-respecting digital economy. However, the realization of its objectives requires proactive implementation, widespread public engagement, and continuous legal evolution. A participatory, rights-based approach that places the individual at the center of data governance will be key to building trust and resilience in India's digital future.

India's success in this endeavor will serve not only its own citizens but also position it as a leader in shaping global norms for data protection and digital rights. As the world grapples with the challenges of data misuse, surveillance, and algorithmic bias, India's data protection journey offers a unique opportunity to blend constitutional values with technological innovation, ensuring that the digital revolution is inclusive, ethical, and just.

References:-

1. The Digital Personal Data Protection Act, 2023 (India).
2. Justice K.S. Puttaswamy v. Union of India, (2017) 10 SCC 1.
3. Ministry of Electronics and Information Technology (MeitY). (2023). Explanatory Note on DPDP Act.
4. Bhandari, V. (2023). Data Privacy in India: A Legal Analysis. Indian Journal of Law and Technology.
5. European Union. (2016). General Data Protection Regulation (GDPR).
6. Internet Freedom Foundation. (2023). Critique of India's DPDP Act.
7. Ramanathan, U. (2022). Privacy and the Indian State. Economic and Political Weekly.
8. Dvara Research. (2023). Personal Data Protection in India: Opportunities and Challenges.
9. Narayan, S. (2023). Digital Rights and Data Protection. LexisNexis India.
10. World Economic Forum. (2022). Principles of Digital Trust.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Study of Water Quality Analysis of Surface Water Bodies of Jabalpur City

Yagyesh Narayan Shrivastava* Priyansh Sharma**

* Department of Soil & Water Engineering, College of Agricultural Engineering, JNKVV, Jabalpur (M.P.) INDIA
** Department of Soil & Water Engineering, College of Agricultural Engineering, JNKVV, Jabalpur (M.P.) INDIA

Abstract : Water is a crucial component of the environment; but surface water and groundwater quality have long been deteriorating due to both natural and human-related activities. Natural factors that influence water quality are hydrological, atmospheric, climatic, topographical and lithological factors such as anthropogenic activities that adversely affect water quality are mining, livestock farming, production and disposal of waste (industrial, municipal and agricultural), increased sediment run-off or soil erosion due to land-use change and heavy metal pollution. Many of the water bodies of the Jabalpur town have been completely vanished due to change of land use pattern, encroachment, urbanization and anthropocentric activities. Water resources management is a critical issue facing global concern. Water pollution occurs when harmful substances—often chemicals or microorganisms—contaminate a stream, river, lake, ocean, aquifer, or other body of water, degrading water quality and rendering it toxic to humans or the environment. Water bodies can be polluted by a wide variety of substances, including pathogenic microorganisms, putrescible organic waste, fertilizers and plant nutrients, toxic chemicals, sediments, heat, petroleum (oil), and radioactive substances. To some extent a river is a self-renewing resource. If polluting discharges to a river are intermittent, the river is often able to return to a clean and unpolluted condition as the pollutants are flushed out and carried down to the sea. Water quality monitoring is an essential part of keeping the planet healthy and sustainable. As we continue to build cities, clear land for farming and make other man-made changes to the natural environment, water quality monitoring becomes increasingly important. Land based activities can have a huge impact on water systems and it's critical that we realize how these affect waterbodies, both above and below ground.

Introduction - Water is one among the prime necessities of life required for growth and activity of all living beings on globe. It is also known as 'blue gold'. About 98% of planet's water is salt water which is unusable for drinking, only 0.036% freshwater that is found in rivers and lakes. Colorless, tasteless, and odor less water is always pure. Most living organisms have 60% water in their body. Evolution of life on Earth was impossible without presence of water. Jabalpur is the district head quarter situated and situated in the 'MahaKaushal' region of Madhya Pradesh 308 Km from capital Bhopal (M.P.) also known as 'Sanskar Dhani' and located at longitude 23.1815 N and latitude 79.9864 E and Mean Sea Level 403 M It is rich in small water bodies. Jabalpur is a medium size historical city of Madhya Pradesh India and had 52 Tals(tanks) 85 Tallaiyas and does an of Ghats(banks used by people). But with the evident of time only 8 tanks are remaining all six ghats and 8 tanks facing severe threats of pollution continuously. An example of such pollution is the discharge of domestic sewage efluent to rivers. In small quantities it does no serious harm and may indeed be beneficial, providing a source of organic carbon that provides nutrients to the animals in the river. But if inadequately treated or in excessive quantities, sewage efluent can seriously damage the plant and animal life of a river by reducing the oxygen content of the water. In extreme cases, where the oxygen content is reduced to zero (or nearly so), the river will support very little life, and will become foul smelling and grossly offensive. A river in such a state is obviously not desirable as a water source for potable supply.

Water quality monitoring is an essential part of keeping the planet healthy and sustainable. In the physicochemical properties of water, standard methods prescribed in literature were used. Turbidity, pH, Conductivity, Dissolve Oxygen, and B.O.D. were determined in the laboratory. The Physio- Chemical parameters were determined as per standard methods of APHA (2002) and by Indian standard-2296 (1982). pH of water sample measured by pH meter using standard solutions, temperature of water sample measured by thermometer, Conductivity measured by conductivity meter, Turbidity of water sample measured by turbidity meter, BOD also analysed using BOD incubator. The Water quality Index was calculated with the help of online Water quality Index calculator tool.

Water Quality Indices: Water quality indices are tools to evaluate the Water quality index. Determine conditions of water quality and, like any other tool require knowledge about principles and basic concepts of water and related issues. It is a well-known method of expressing water quality that offers a stable and reproducible unit of measure which responds to changes in the principal characteristics of water. WQI is a mechanism for presenting a cumulatively derived numerical expression defining a certain level of water quality. In other words, WQI summarizes large amounts of water quality data into simple terms e.g., excellent, good, bad, etc. for reporting to management and the public in a consistent manner.

Water Quality Index Level	Water Quality Status
91-100	Excellent
71-90	Good
51-70	Average
26-50	Fair
0-25	Poor

Details Of Sampling Location

Sampling Location	Latitude	Longitude
Gwarighat	23.1100°N	79.9277°E
Tilwaraghat	23.1079°N	79.8758°E
Jilharighat	23.1059°N	79.9310°E
Bhedarghat	23.1306°N	79.7969°E
Pariyat 1	23.2501°N	79.9816°E
Pariyat 2	23.2510°N	79.9719°E
Supatal	23.1664°N	79.9063°E
Adhartaal	23.2093°N	79.9517°E
Hanuman Tal	23.1817°N	79.9378°E
Ranital lake	23.1738°N	79.9184°E
Sangram Sagar	23.1397°N	79.8829°E
Ganga Sagar	23.5552°N	79.8972°E
Devtal	23.1564°N	79.9118°E
College Nala (JNKVV)	23.2120°N	79.9580°E

Material Method: Jabalpur is the district head quarter situated and situated in the 'MahaKaushal' region of Madhya Pradesh 308 Km from capital Bhopal (M.P.) also known as 'Sanskar Dhani' and located at longitude 23.1815 N and latitude 79.9864 E and Mean Sea Level 403 M It is rich in small water bodies. River Narmada flows and passes from through the whole Jabalpur city as well nearby area of district and hence used in municipal supply as major drinking water source for the city people. For the present study several samples from river ghats and historical lakes were selected. The samples were taken on the date 15 and 16 October 23 and test were conducted on 16 October 23. The samples were collected from the sub surface of the water bodies in polypropylene bottles Samples were collected in from the sampling sites Jabalpur. In the physicochemical properties of water, standard methods prescribed in literature were used. Turbidity, pH, Conductivity, Dissolve Oxygen, and B.O.D. were determined in the laboratory. The Physio- Chemical parameters were determined as per standard methods of APHA (2002) and by Indian standard-2296 (1982). pH of water sample measured by pH meter using standard solutions, temperature of water sample measured by thermometer, Conductivity measured by conductivity meter, Turbidity of water sample measured by turbidity meter, BOD also analysed using BOD incubator. The Water quality Index was calculated with the help of online Water quality Index calculator tool.

Detailes Of Sampling Location

Sampling Location	Date	Time	Latitude	Longitude
Gwarighat	15/10/23	18:13	23.1100°N	79.9277°E
Tilwaraghat	15/10/23	23:42	23.1079°N	79.8758°E
Jilharighat	15/10/23	18:52	23.1059°N	79.9310°E
Bhedarghat	05/11/23	14:52	23.1306°N	79.7969°E
Pariyat 1	16/10/23	08:19	23.2501°N	79.9816°E
Pariyat 2	16/10/23	09:37	23.2510°N	79.9719°E
Supatal	15/10/23	17:01	23.1664°N	79.9063°E
Adhartaal	16/10/23	07:17	23.2093°N	79.9517°E
Hanuman Tal	16/10/23	09:22	23.1817°N	79.9378°E
Ranital lake	16/10/23	08:54	23.1738°N	79.9184°E
Sangram Sagar	05/11/23	11:52	23.1397°N	79.8829°E
Ganga Sagar	05/11/23	13:43	23.5552°N	79.8972°E
Devtal	05/11/23	18:53	23.1564°N	79.9118°E
College Nala (JNKVV)	16/10/23	06:53	23.2120°N	79.9580°E

The water quality analysis was conducted to analyse the impact of idol immersion on the water quality and its physicochemical parameters. The samples were collected after 1 week of idol immersion from Adhartaal and Hanuman Tal Lake

Sampling After Immersion Of Idol

Adhartal	06/11/23	15 23	23.2093°N	79.9517°E
Hanuman Tal	06/11/23	10:01	23.1817°N	79.938°E

Water Quality Parameters

1. **Colour and odour**: Colour and odour from lake is first sign of its pollution.
2. **pH**: High pH levels are undesirable since they may impart a bitter taste to the water. Furthermore, the high degree of mineralization associated with alkaline water will result in the encrustation of water pipes and water-using appliances. The combination of high alkalinity and calcium with low pH levels may be less corrosive than water with a combination of high pH, low alkalinity and calcium content. High pH levels also depress the effectiveness of disinfection by chlorination, thereby requiring the use of additional chlorine or longer contact times. A range of pH 6.5-8.5 was determined because it would achieve the maximum environmental and aesthetic benefits.
3. **Turbidity**: Turbidity is a measurement of the cloudiness of water, measured by passing a beam of light through the water and measuring photometrically. Cloudiness is caused by material suspended in water. Clay, silt, organic matter, plankton and other microscopic organisms cause turbidity in natural water. This has been recognized as a valuable

limiting factor in the biological productivity of the water bodies.

4. Electrical conductivity (EC): EC is the measure of the ability of an aqueous solution to convey an electric current. This ability depends upon the presence of ions, Dissolved oxygen (their total concentration, mobility, valence and temperature.

5. Dissolved oxygen (DO): Dissolved oxygen analysis measure the amount of gaseous oxygen (O2) dissolved in an aqueous solution. A small amount of oxygen, up to about ten molecules of oxygen per million of water, is normally dissolved in water.

6. Biochemical Oxygen Demand (BOD): The biochemical oxygen demand abbreviated as BOD, is a test for measuring the amount of bio-degradable organic material present in a sample of water. The results are expressed in term of mg/L of BOD which microorganisms, principally bacteria will consume while degrading these materials. As the measurement of BOD takes too long time (20 days at 20p C), the determination of BOD after 5 days incubation is preferred (BOD).

Result: The observation recorded after the investigation of the water quality parameters and discussion of results with regards to standard values of the concerned authorities and agencies.

Table & graph (see in last page)

Conclusion: Studies carried out in present investigation revealed that one of the most important causes of water pollution is unplanned urban development without adequate attention to suitable management of sewage and waste material and negligence of the concerned authorities. The study identifies a number of factors leading to contamination of water of water bodies such as bathing, washing, cleaning, religious rituals and animal related activities. The emission and disposal of dairy waste and efluents directly into waterbody without any treatment contaminates and degrades the quality of water to the large extent which is serious matter of concern as seen in the case Pariyat River. From the mythological point of view, the rivers and lakes are the holy places for the Idol immersion, but this results in the change in the water physicochemical parameters such as increase in biological oxygen demand (BOD) of water which affects the aquatic ecosystem of the water body. The observation shows that the pH and electrical conductivity also increases with the increase in pollutants while in case of Hanuman Tal, Adhartaal and Pariyat which is a matter of concern. **The religious activities in waterbodies not only causes the pollution in the waterbodies but also responsible for degrading the water quality as they increase the organic matter accumulation in the water which also leads to bacterial activity in the water which also increases the BOD.** Even after many guidelines regarding waste disposal and management, waste disposal and daily household garbage can be seen on the banks of waterbodies, sewage drainage are directly connected to water bodies for sewage disposal and drainage and waste collection near waterbodies is still into practice.

References:-

1. Arora Gargi, Sharma Atul, Bhatia R.K ASSESSMENT OF GROUND WATER QUALTIY NEAR LINED OMTI NALA & UNLINED MOTI NALA: A CASE STUDY IN JABALPUR CITY
2. Auroa Gargi, Sharma Atul, Bhatia R.K., Jabalpur Engineering College, JBP, MP, 2018 IJCRT| Vol-6, issue 2 April 2018|ISSN:2320-2882
3. Bhattacharya Sayan, Ghosh Uday Chand, Effects of Idol Immersion on the Water Quality Parameters of Indian Water bodies: Environmental Health Perspectives.
4. Devendra Dohare, Shriram Deshpande and Atul Kotiya Research (2014) Journal of Engineering Sciences, Vol. 3(5), 26-31,
5. Evaluation of portability of different water sources at District Jabalpur, Madhya Pradesh
6. Gharat and Nisar Shaikh Impact of Ganesh Idol Immersion Activities On The Water Quality of Govathane Lake, Uran (Maharashtra) India Dharati.
7. Jain, Verma, Bhatia Impact of Dairy Efluent on Environment Rajarajan G. Irshad A. Assessment of water Quality of Pariyat River at Panagar Region in Jabalpur City (M.P.) ISSN: 2321-9653
8. Jha M. and Tignath S (2009) Assessment of Impacts of the Surface Water Environment in and Around Jabalpur City MP, Journal Earth Science India, Vol.2 (II), April, 2009, pp. 111 – 116
9. Mishra Vijay Shrikant, Kaur Gurdeep, Chandok Volume 9, Issue 4 Quality Index (W.Q.I.) of Pariyej Lake Dist. Kheda – Gujarat. Current World Environment Vol. 6(2), 225-231 (2011)
10. Ramkrishnan R, (2010), Characterization and assessment of ground water quality of Bhopal city by its Physico-chemical studies with special reference on certain trace elements. Ph.D. Thesis, Barkatullah University, Bhopal.
11. Shrivastava Apurva, Thakur C.S., Dept. of Civil Engineering, Shri Ram Group of Institution, Jabalpur M.P, India. Determination of Water quality index by using physico-chemical Properties of various Lake in Jabalpur (M.P.).
12. Thakor, Bho, Dabh, Pandya and Nikitraj, Chauhan. Water
13. Tignath S. and Jha M., (2007), On the Efficacy of Jabalpur Water Supply System Sci-fronts: A Journal of multiple Sciences, vol.1, Dec.2007, p. 141144.
14. Verma Sanjay Kumar & Akhtar Saleem, Assessment of Pollution in Lakes of Jabalpur Town, Proceeding of International conference on Interdisciplinary Research in Engineering, Management, Pharmacy and Science, ICIREMPS- 2K15, at SIRT Bhopal M.P, 19-22 March, 2015. pp 31-39, 2015

15. Verma Sanjay Kumar, Akthar Saleem (2015), assessment of water pollution in lakes of Jabalpur, Takshshila Group of Institutions, JBP, MP, India
16. Verma Pradeep, Chandawat Deepika, Solanki Hitesh Arvind, Water Quality Analysis of an Organically Polluted Lake by Investigating Different Physical and Chemical Parameters.
17. Water Quality Analysis of Devtal and Ganga Sagar Lake at Jabalpur (M.P.) Volume-5, Issue-9, September-2016 • ISSN No 2277 - 8160
18. Water Quality Assessment in Different Festivals at Pariyat River before Its Linkage with Hiran River Jabalpur (M.P.) Vol. 4, Issue 4, pp: (62-67), Available at: www.researchpublish.com

Sampling Location	pH	Electrical conductivity	BOD	Turbidity	DO	COLOUR
Gwarighat	7.04	359.3	0.9	0.1	7.6	Colourless
Tilwaraghat	6.64	385.2	1.5	0.3	7.8	Colourless
Jilharighat	7.22	365.8	0.2	0.2	7.7	Colourless
Bhedarghat	6.67	367.3	1.1	0.2	8.1	colourless
Pariyat 1	7.80	489.5	1.6	0.1	7.0	Colourless
Pariyat 2	6.68	344.8	7	49.6	4.8	Muddy
Supatal	6.62	959.9	0	1.4	7.2	Pale yellow
Adhartaal	7.68	539	4	6.2	-	Greenish
Hanuman Tal	7.99	584.9	9.8	42	6.9	Greenish
Ranital lake	6.85	1123	2	20.1	-	Greenish
Sangram Sagar	6.71	1310	6	90.3	6.4	Greenish
Ganga Sagar	6.87	1470	5	0.2	6.8	colourless
Devtal	6.53	346.6	1.3	0.1	7.1	Colourless
College Nala (JNKVV)	6.82	330.3	1.4	0.2	6.9	Colourless

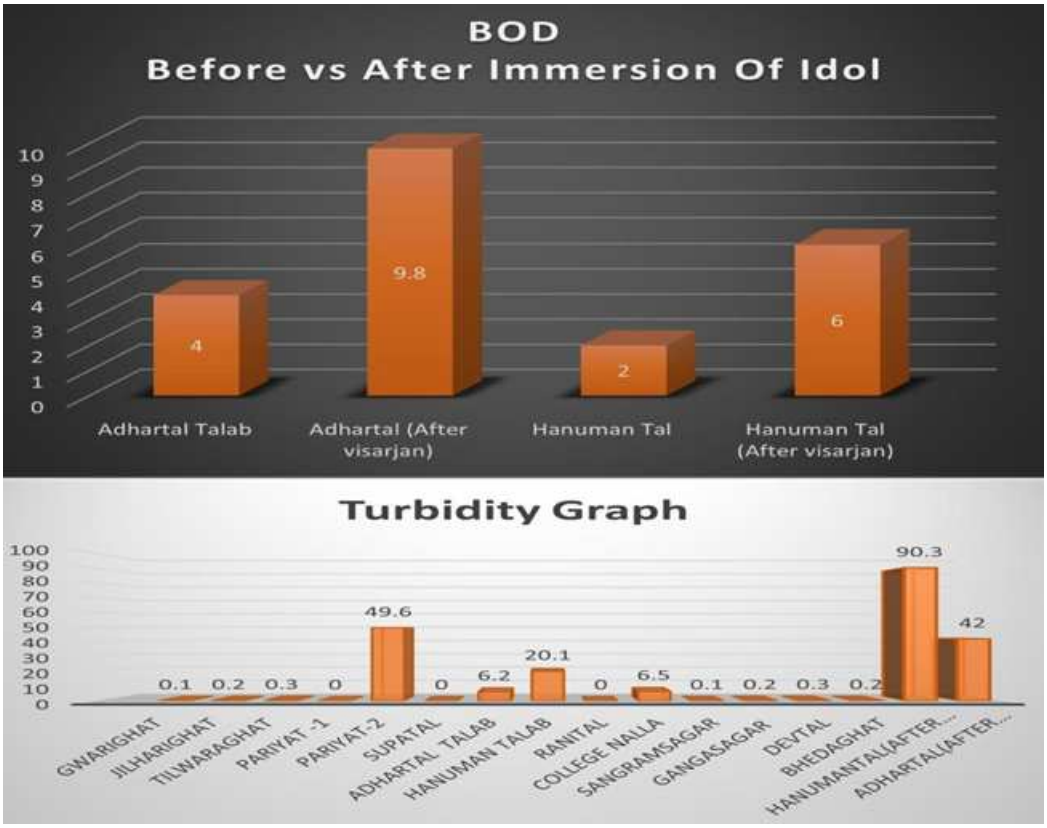

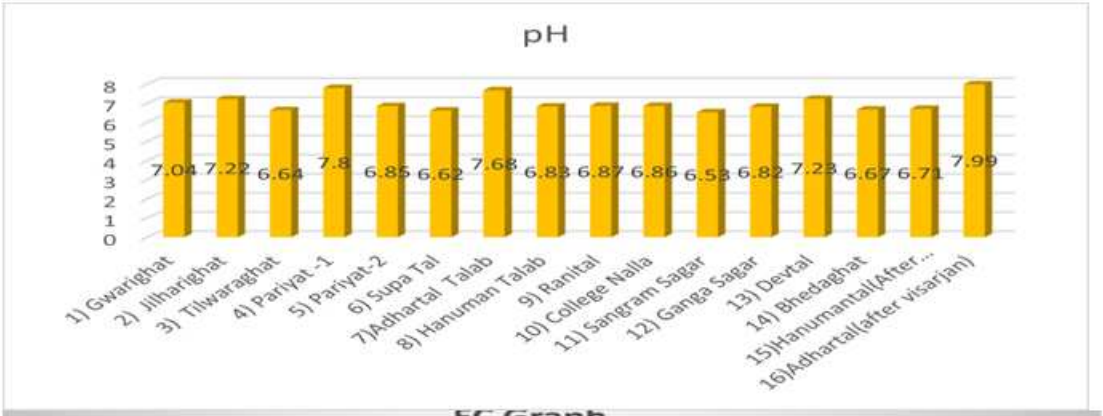
pH
7.04
7.22
6.64
7.8
6.85
6.62
7.68
6.83
6.87
6.86
6.53
6.82
7.23
6.67
6.71
7.99
1) Gwarighat
2) Jilharighat
3) Tilwaraghat
4) Pariyat -1
5) Pariyat-2
6) Supa Tal
7)Adhartal Talab
8) Hanuman Talab
9) Ranital
10) College Nalla
11) Sangram Sagar
12) Ganga Sagar
13) Devtal
14) Bhedaghat
15)Hanumantal(After ...
16)Adhartal(after visarjan)

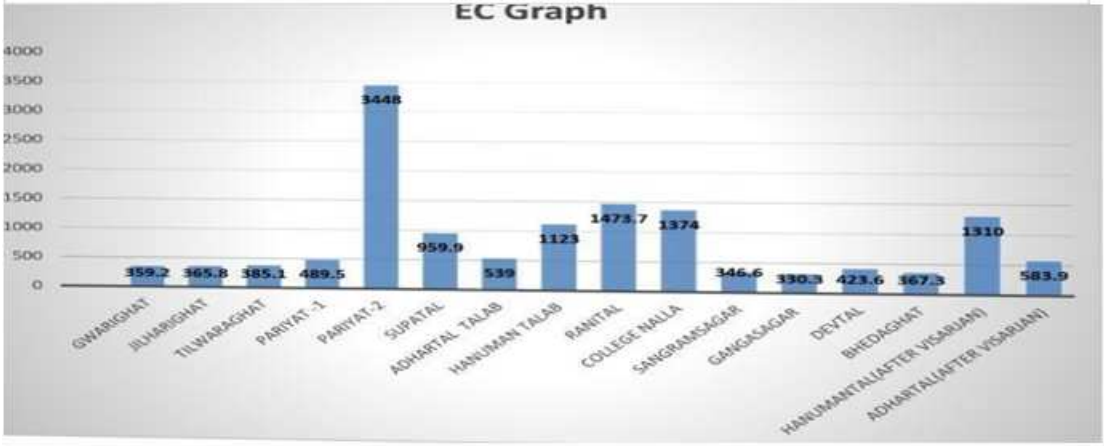
EC Graph
359.2
365.8
385.1
489.5
3448
959.9
539
1123
1473.7
1374
346.6
330.3
423.6
367.3
1310
583.9
GWARIGHAT
JILHARIGHAT
TILWARAGHAT
PARIYAT -1
PARIYAT-2
SUPATAL
ADHARTAL TALAB
HANUMAN TALAB
RANITAL
COLLEGE NALLA
SANGRAMSAGAR
GANGASAGAR
DEVTAL
BHEDAGHAT
HANUMANTAL(AFTER VISARJAN)
ADHARTAL(AFTER VISARJAN)

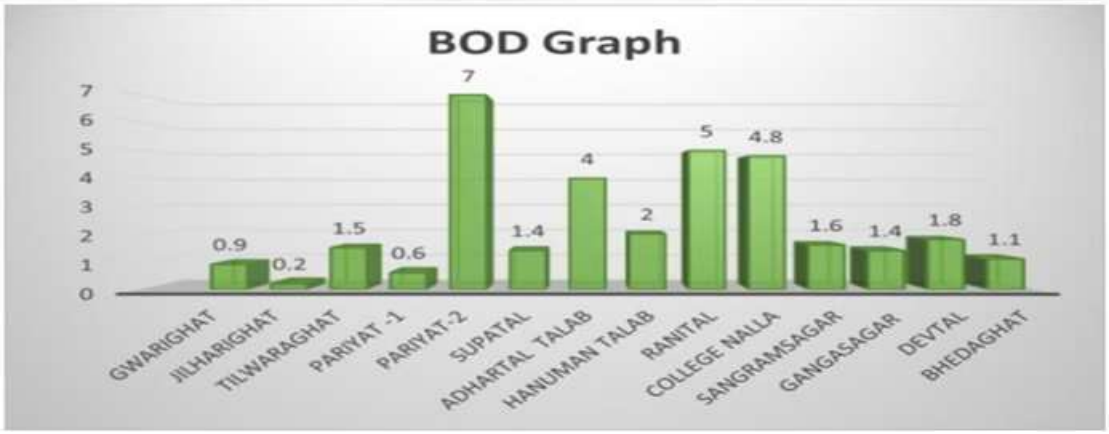
BOD Graph
0.9
0.2
1.5
0.6
7
1.4
4
2
5
4.8
1.6
1.4
1.8
1.1
GWARIGHAT
JILHARIGHAT
TILWARAGHAT
PARIYAT -1
PARIYAT-2
SUPATAL
ADHARTAL TALAB
HANUMAN TALAB
RANITAL
COLLEGE NALLA
SANGRAMSAGAR
GANGASAGAR
DEVTAL
BHEDAGHAT

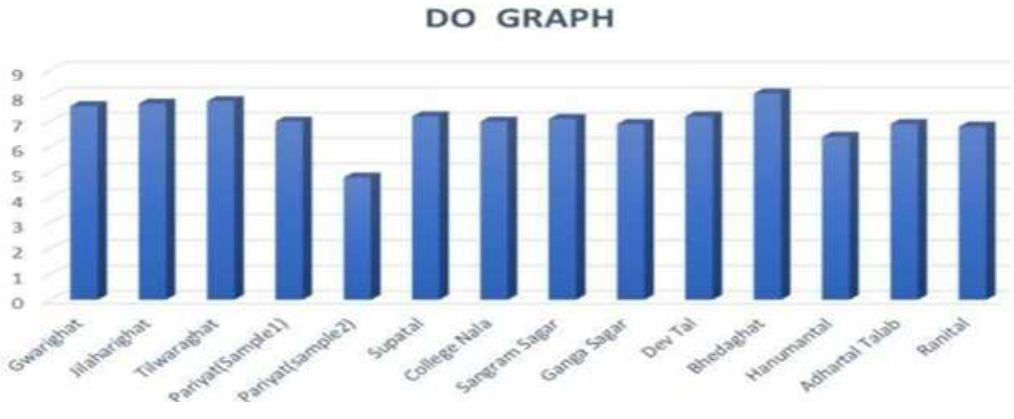
DO GRAPH
Gwarighat
Jilaharighat
Tilwaraghat
Pariyat(Sample1)
Pariyat(sample2)
Supatal
College Nala
Sangram Sagar
Ganga Sagar
Dev Tal
Bhedaghat
Hanumantal
Adhartal Talab
Ranital

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता में भारतीय ज्ञान परंपरा की भूमिका

श्रीमती रूचि पालीवाल*

* शोधार्थी, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – भारतीय ज्ञान परंपरा, जो सहस्राब्दियों के चिंतन, अनुभव और सृजन का परिणाम है, ने भारतीय समाज और संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया है। वेद, उपनिषद, दर्शनशास्त्र, काव्यशास्त्र, नीतिशास्त्र, आयुर्वेद, योग और कला जैसे विविध क्षेत्रों में इसका विशाल और समृद्ध विस्तार है। इक्कीसवीं सदी में जहाँ एक ओर वैश्विक सूचना क्रांति और पश्चिमी विचारों का तीव्र प्रवाह है, वहीं दूसरी ओर भारतीय चिंतन की प्रासंगिकता और पुनर्जागरण की आवश्यकता पर बल दिया जा रहा है। समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता, जिसमें साहित्यिक पत्रिकाएँ, अखबारों के साहित्यिक परिशिष्ट, ऑनलाइन साहित्यिक पोर्टल और ब्लॉग शामिल हैं, इस संवाद और अन्वेषण का एक महत्वपूर्ण मंच है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता में भारतीय ज्ञान परंपरा की उपस्थिति, उसके विभिन्न आयामों और उसके प्रभाव का गंभीर विश्लेषण करना है।

यह शोध ऐसे समय में विशेष रूप से प्रासंगिक है जब भारतीय ज्ञान परंपरा को लेकर एक नया विमर्श चल रहा है। भूमंडलीकरण और तकनीक के तीव्र प्रसार के कारण पाश्चात्य विचारों का प्रभाव बढ़ा है, जिसके परिणामस्वरूप कई बार भारतीय मूल्य और चिंतन हाशिए पर धकेल दिए जाते हैं। ऐसे में, साहित्यिक पत्रकारिता की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि यह विचारों के आदान-प्रदान, आलोचनात्मक विश्लेषण और सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने का एक सशक्त माध्यम है। यह शोध यह समझने में मदद करेगा कि कैसे हिंदी पत्रकारिता भारतीय ज्ञान परंपरा को पुन: स्थापित करने, उसकी व्याख्या करने और उसे समकालीन संदर्भों में प्रासंगिक बनाने में योगदान दे रही है। यह उन अंतरालों को भी उजागर करेगा जहाँ भारतीय ज्ञान परंपरा का और अधिक समावेश किया जा सकता है।

शब्द कुंजी – भारतीय ज्ञान परंपरा, हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता, समकालीन साहित्य, दर्शन, कला, संस्कृति, वैदिक ज्ञान, उपनिषद, आधुनिकता, प्रासंगिकता, मूल्य।

प्रस्तावना – भारतीय ज्ञान परंपरा का अनादि काल से भारतीय समाज, संस्कृति और चिंतन पर गहरा प्रभाव रहा है। यह केवल धार्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें दर्शन, साहित्यशास्त्र, कला, विज्ञान, चिकित्सा (आयुर्वेद), गणित, खगोल विज्ञान, राजनीति और नैतिकता जैसे विविध क्षेत्र शामिल हैं। यह ज्ञान परंपरा जीवन के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

इक्कीसवीं सदी में, जब वैश्वीकरण और डिजिटल क्रांति ने सूचना के प्रसार को तीव्र कर दिया है, साहित्यिक पत्रकारिता की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। यह केवल साहित्यिक कृतियों की समीक्षा या खबरों का माध्यम नहीं है, बल्कि यह गंभीर चिंतन, विचार-विमर्श और सांस्कृतिक संवाद का मंच भी है।

शोध का उद्देश्य– इस शोध आलेख का उद्देश्य समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता में भारतीय ज्ञान परंपरा की उपस्थिति, उसके प्रस्तुतीकरण के तरीके और उसके प्रभाव का गहन विश्लेषण करना है। यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि वर्तमान में साहित्यिक पत्रिकाएं भारतीय ज्ञान परंपरा को किस प्रकार नए संदर्भों में ढालकर पाठकों तक पहुंचा रही हैं।

शोध प्रश्न:

1. समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता भारतीय ज्ञान परंपरा के किन-किन पहलुओं पर ध्यान केंद्रित कर रही है?
2. ज्ञान परंपरा को प्रस्तुत करने के लिए किन शैलियों और प्रारूपों (आलेख, साक्षात्कार, समीक्षा, विशेष अंक) का उपयोग किया जा रहा है?
3. क्या साहित्यिक पत्रकारिता भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और प्रसार में प्रभावी भूमिका निभा रही है?
4. क्या यह ज्ञान परंपरा को आधुनिक चुनौतियों के संदर्भ में प्रासंगिक बनाने में सफल है?

भारतीय ज्ञान परंपरा: स्वरूप और विविधता–भारतीय ज्ञान परंपरा में 'वसुधैव कुटुंबकम्','सर्वे भवन्तु सुखिन:', और 'अयं निज: परो वेति' जैसे विचार प्रमुख हैं, जो विश्व बंधुत्व, समरसता, और उदारता को प्रोत्साहित करते हैं।इन विचारों का प्रभाव भारतीय साहित्य, कला, और संस्कृति में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। भारतीय ज्ञान परंपरा की जीवन्तता और उसकी सांस्कृतिक धारा आज भी प्रवाहमान है।

भारतीय ज्ञान परंपरा एक समृद्ध और बहुआयामी प्रणाली है, जो मानव जीवन के विविध पहलुओं को समाहित करती है।इस परंपरा की नींव वेदों में रखी गई है, जो 'श्रुति' के रूप में मौखिक परंपरा द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी संप्रेषित हुई हैं।ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्ववेद में न केवल धार्मिक अनुष्ठानों

का वर्णन है, बल्कि इनमें जीवन के विविध पहलुओं पर गहन चिंतन भी मिलता है।उपनिषदों में आत्मा, ब्रह्म, और मोक्ष जैसे गूढ़ विषयों पर विचार किया गया है, जिससे अद्वैत, द्वैत, और विशिष्टाद्वैत जैसे दर्शनिक विचारों का विकास हुआ।

भारतीय ज्ञान परंपरा की एक प्रमुख विशेषता इसकी विविधता और समावेशिता है।यह परंपरा विभिन्न विचारधाराओं, भाषाओं, और संस्कृतियों को समाहित करती है, जिससे यह एक बहुलतावादी प्रणाली बन जाती है।भारतीय ज्ञान परंपरा को केवल धर्म या अध्यात्म तक सीमित नहीं समझना चाहिए। इसमें वेदों, उपनिषदों, पुराणों, स्मृतियों, दर्शनशास्त्रों (न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदांत), काव्यशास्त्र (भरत मुनि का नाट्यशास्त्र, आनंदवर्धन का ध्वन्यालोक), कला (चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य), विज्ञान (आर्यभट्ट, भास्कर, चरक, सुश्रुत), और राजनीति (कौटिल्य का अर्थशास्त्र) जैसे विविध स्रोत शामिल हैं।

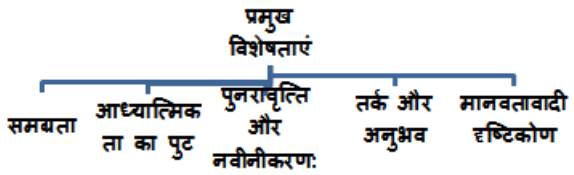

समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य– समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य भारतीय समाज, संस्कृति और साहित्यिक विमर्शों के गहन प्रतिबिंब के रूप में उभरकर सामने आया है।यह परंपरा भारतेंदु हरिश्चंद्र के युग से प्रारंभ होकर आज तक निरंतर विकसित हो रही है।भारतेंदु युग (1867–1900) में 'हरिश्चंद्र मैगजीन', 'कविवचनसुधा' और 'सरस्वती' जैसी पत्रिकाओं ने सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक चेतना को जागृत किया।इन पत्रिकाओं ने साहित्यिक पत्रकारिता को एक नई दिशा दी, जिसमें सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के तत्व प्रमुख थे।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता ने राष्ट्रीय आंदोलन को समर्थन प्रदान किया।महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित 'सरस्वती' पत्रिका ने साहित्यिक पत्रकारिता को एक नई ऊंचाई पर पहुंचाया।इस काल में पत्रकारिता ने न केवल साहित्यिक रचनाओं को प्रस्तुत किया, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर भी गहन विमर्श किया।

हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता का स्वरूप– एक बहुआयामी और विकासशील प्रक्रिया का परिणाम है, जिसने समय के साथ विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों के अनुरूप अपने रूप को ढाला है। इसकी शुरुआत 19वीं शताब्दी में हुई, जब हिंदी पत्रकारिता ने सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय चेतना के प्रसार का माध्यम बनना शुरू किया।भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा 1867 में 'कविवचनसुधा' और 1873 में 'हरिश्चंद्र मैगजीन' जैसे पत्रिकाओं के प्रकाशन ने हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता की नींव रखी।इन पत्रिकाओं में पुरातत्व, उपन्यास, कविता, आलोचना, ऐतिहासिक, राजनीतिक, साहित्यिक तथा दार्शनिक लेख, कहानियाँ एवं व्यंग्य आदि प्रकाशित होते थे।

20वीं शताब्दी की शुरुआत में, महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के संपादन के माध्यम से हिंदी भाषा और साहित्य को एक नई दिशा दी।उन्होंने भाषा के परिष्कार, व्याकरण की शुद्धता और साहित्यिक मानकों की स्थापना पर बल दिया।उनकी प्रेरणा से मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', रामनरेश त्रिपाठी जैसे लेखक हिंदी में सक्रिय हुए।

समय के साथ, हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता ने राष्ट्रीय आंदोलनों, सामाजिक सुधारों और सांस्कृतिक पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पत्रिकाओं ने न केवल साहित्यिक रचनाओं को प्रकाशित किया, बल्कि सामाजिक मुद्दों, शिक्षा, महिला सशक्तिकरण और राष्ट्रीय आंदोलन से संबंधित विषयों पर भी प्रकाश डाला। इस प्रकार, हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता का स्वरूप एक जीवंत, गतिशील और समाजोन्मुखी माध्यम के रूप में विकसित हुआ है, जो आज भी साहित्यिक संवाद और विचारों के आदान–प्रदान का एक प्रभावशाली मंच बना हुआ है।

समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश एक महत्वपूर्ण और विचारणीय विषय है, जो भारतीय सांस्कृतिक चेतना, दार्शनिक दृष्टिकोण और साहित्यिक मूल्यों के संरक्षण और प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता ने इस ज्ञान परंपरा को आधुनिक संदर्भों में पुन: प्रस्तुत करने का कार्य किया है।विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाओं, जैसे 'हंस', 'सरस्वती', 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिंदुस्तान', 'कादम्बिनी' आदि ने भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित विषयों पर लेख, निबंध, समीक्षाएँ और संवाद प्रकाशित किए हैं।इनमें वेदांत, योग, आयुर्वेद, भारतीय दर्शन, नाट्यशास्त्र, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष और अन्य शास्त्रों पर आधारित सामग्री शामिल है।

समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश विभिन्न रूपों में देखा जा सकता है:

1. **दर्शन और आध्यात्मिकता–** हिंदी साहित्यिक पत्रिकाओं में भारतीय दर्शन, जैसे सांख्य, योग, वेदांत, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा आदि पर आधारित लेख और चर्चाएँ प्रकाशित होती रही हैं।इनमें अद्वैत वेदांत, भगवद्गीता के उपदेश, उपनिषदों की शिक्षाएँ और अन्य आध्यात्मिक विषयों पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

2. **योग और आयुर्वेद–** योग और आयुर्वेद भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्वपूर्ण अंग हैं।हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता ने इन विषयों पर लेख, साक्षात्कार, अनुभव साझा करने वाले लेख और विशेषज्ञों के विचार प्रकाशित किए हैं।योग के विभिन्न आसनों, प्राणायाम, ध्यान विधियों और आयुर्वेदिक जीवनशैली पर आधारित सामग्री पाठकों को स्वास्थ्य और मानसिक शांति के प्रति जागरूक करती है।

3. **कला और संस्कृति–** भारतीय नाट्यशास्त्र, संगीत, नृत्य, चित्रकला, वास्तुकला आदि परंपराओं पर आधारित लेख और समीक्षाएँ हिंदी साहित्यिक पत्रिकाओं में स्थान पाती रही हैं।इनमें भरतनाट्यम, कथक, कथकली, ओडिसी जैसे नृत्य रूपों, शास्त्रीय संगीत, राग–रागिनियों, मंदिर वास्तुकला, चित्रकला की शैलियों आदि पर आधारित सामग्री शामिल है।

4. **शिक्षा और भाषा–** भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा और भाषा का विशेष स्थान रहा है।हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता ने संस्कृत, पालि, प्राकृत जैसी भाषाओं के महत्व, शिक्षा प्रणाली, गुरुकुल परंपरा, पाठ्यपुस्तकों की भूमिका आदि पर आधारित लेख प्रकाशित किए हैं।इनमें शिक्षा के भारतीय मॉडल, मूल्य–आधारित शिक्षा, नैतिक शिक्षा आदि विषयों पर चर्चा की गई है।

5. **समाज और नैतिकता–** भारतीय ज्ञान परंपरा में सामाजिक संरचना, नैतिक मूल्यों, धर्म, कर्तव्य, अहिंसा, सत्य, दया, करुणा आदि पर बल

दिया गया है।हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता ने इन मूल्यों को समकालीन समाज में पुन: स्थापित करने के लिए लेख, निबंध, कहानियाँ और कविताएँ प्रकाशित की हैं।इनमें सामाजिक सुधार, महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण, मानवाधिकार आदि विषयों पर भारतीय दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है।

समकालीन साहित्यिक पत्रकार और उनका भारतीय ज्ञान परम्परा में योगदान– समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश न केवल सांस्कृतिक पुनर्जागरण का संकेत है, बल्कि यह आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास भी है।इस समावेश के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता ने भारतीय समाज को अपनी जड़ों से जोड़ने, आत्मगौरव की भावना को प्रबल करने और वैश्विक मंच पर भारतीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस प्रकार, समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश एक सतत प्रक्रिया है, जो भारतीय समाज के बौद्धिक, सांस्कृतिक और नैतिक विकास में सहायक है।यह समावेश न केवल अतीत की विरासत को संरक्षित करता है, बल्कि भविष्य की दिशा भी निर्धारित करता है।

समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता में भारतीय ज्ञान परंपरा को उजागर करने वाले प्रमुख साहित्यिक पत्रकारों ने भारतीय संस्कृति, दर्शन और परंपराओं को आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।इन पत्रकारों ने अपने लेखन और संपादन के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा को जनसामान्य तक पहुँचाया है। जिसमे से कुछ महत्वपूर्ण साहित्यिक पत्रकारों का योगदान इस प्रकार है–

1. **डॉ. वेद प्रताप वैदिक–** डॉ. वैदिक एक प्रतिष्ठित पत्रकार और हिंदी सेवी हैं, जिन्होंने भारतीय भाषाओं को वैश्विक मंच पर स्थापित करने के लिए कार्य किया है।उन्होंने 'नवभारत टाइम्स' और 'भाषा' समाचार एजेंसी में संपादक के रूप में कार्य किया और भारतीय विदेश नीति तथा दर्शन पर अपने विचार प्रस्तुत किए।
2. **डॉ. गुलाब कोठारी–** 'राजस्थान पत्रिका' के प्रधान संपादक डॉ. कोठारी ने वेदों और भारतीय दर्शन पर आधारित लेखन के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा को समकालीन पत्रकारिता में स्थान दिया।उन्हें श्मैं ही राधा, मैं ही कृष्णश पुस्तक के लिए मूर्तिदेवी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
3. **डॉ. अर्पण जैन–**'अविचल': मातृभाषा उन्नयन संस्थान के अध्यक्ष डॉ. जैन ने हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार और पत्रकारिता के माध्यम से भारतीय संस्कृति और परंपराओं को बढ़ावा दिया है।उन्होंने 'भारतीय पत्रकारिता और वैश्विक चुनौतियाँ' विषय पर शोध कार्य किया है।
4. **डॉ. हेमलता महिश्वर–** डॉ. महिश्वर एक हिंदी लेखिका और आलोचक हैं, जिन्होंने दलित साहित्य और महिला अध्ययन में विशेष योगदान दिया है।उनका कार्य भारतीय सामाजिक संरचना और परंपराओं के विश्लेषण में महत्वपूर्ण है।
5. **डॉ. सूरज पालीवाल–** डॉ. पालीवाल एक हिंदी लेखक और शिक्षाविद् हैं, जिन्होंने हिंदी साहित्य में आलोचना और कथा साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज और संस्कृति की विविधताओं को उजागर किया है।

इन साहित्यिक पत्रकारों के योगदान से समकालीन हिंदी पत्रकारिता में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश हुआ है, जिससे पाठकों को भारतीय संस्कृति, दर्शन और परंपराओं की गहन समझ प्राप्त होती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा को प्रस्तुत करने के लिए विविध शैलियों और **प्रारूपों का उपयोग–** भारतीय ज्ञान परंपरा को प्रस्तुत करने के लिए हिंदी साहित्यकारों ने विविध शैलियों और प्रारूपों का उपयोग किया है।इन शैलियों के माध्यम से उन्होंने भारतीय संस्कृति, दर्शन, और परंपराओं को साहित्यिक रूप में अभिव्यक्त किया है। जिनमें काव्यात्मक शैली, निबंध और आलोचना, गद्य साहित्य, पत्रकारिता और संपादन, लोक साहित्य और मौखिक परंपरा, शास्त्रीय ग्रंथों का अनुवाद और व्याख्या, आलेख, साक्षात्कार, समीक्षा और विशेषांक प्रमुख हैं।इन माध्यमों के द्वारा उन्होंने भारतीय संस्कृति, दर्शन और परंपराओं को समकालीन संदर्भों में प्रस्तुत किया है।

1. **काव्यात्मक शैली–** कवियों ने भक्ति, नीति, और दर्शन को काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया।उदाहरणस्वरूप, तुलसीदास की रामचरितमानस में राम को मर्यादा पुरुषोत्ताम के रूप में चित्रित किया गया है, जिससे भारतीय समाज में राम के आदर्शों का प्रचार हुआ।इसी प्रकार, सूरदास और मीराबाई ने भक्ति काव्य के माध्यम से कृष्ण भक्ति और वैष्णव परंपरा को जन–जन तक पहुँचाया।
2. **निबंध और आलोचना–** निबंधकारों और आलोचकों ने भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया।बाबू गुलाबराय ने अपने निबंधों में भारतीय दर्शन और संस्कृति पर प्रकाश डाला।आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने साहित्यिक आलोचना के माध्यम से लोकमंगल की अवधारणा को प्रस्तुत किया, जिसमें समाज के कल्याण को साहित्य का उद्देश्य माना गया।
3. **गद्य साहित्य–** उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से भी भारतीय ज्ञान परंपरा को अभिव्यक्त किया गया।प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं और भारतीय ग्रामीण जीवन का चित्रण है, जो भारतीय समाज की वास्तविकताओं को उजागर करता है।महादेवी वर्मा ने अपने गद्य लेखन में नारी चेतना और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को प्रस्तुत किया।
4. **पत्रकारिता और संपादन–** हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता ने भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।राजेंद्र यादव ने श्हंसश पत्रिका के माध्यम से सामाजिक न्याय और समकालीन मुद्दों पर केंद्रित लेखन को बढ़ावा दिया।कमलेश्वर ने श्सारिकाश पत्रिका के संपादन के दौरान समांतर कथा आंदोलन को प्रोत्साहित किया, जिससे समाज के विविध पहलुओं को साहित्य में स्थान मिला।
5. **लोक साहित्य और मौखिक परंपरा–** भारतीय ज्ञान परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा लोक साहित्य और मौखिक परंपरा में निहित है।लोकगीत, कहावतें, और लोककथाएँ भारतीय समाज की सांस्कृतिक धरोहर को संजोए हुए हैं।इनके माध्यम से जीवन मूल्य, नैतिकता, और सामाजिक संरचनाओं की जानकारी पीढ़ी दर पीढ़ी संप्रेषित होती रही है।
6. **शास्त्रीय ग्रंथों का अनुवाद और व्याख्या–** हिंदी साहित्यकारों ने संस्कृत और अन्य प्राचीन भाषाओं में रचित शास्त्रीय ग्रंथों का अनुवाद और व्याख्या करके भारतीय ज्ञान परंपरा को व्यापक जनसमूह तक पहुँचाया।इस प्रयास से वेद, उपनिषद, और अन्य शास्त्रों की शिक्षाएँ हिंदी भाषी समाज में प्रचलित हुईं।
7. **आलेख (शोध और विवेचनात्मक लेख)–** हिंदी साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित आलेखों के माध्यम से लेखक भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करते हैं।उदाहरणस्वरूप, प्रियंका द्वारा लिखित ष्हिंदी एनीमेटेड सिनेमा में भारतीय ज्ञान परंपरा का बोधष शीर्षक आलेख में भारतीय मूल्यों जैसे करुणा, अहिंसा और आत्म–परिष्कार को एनिमेटेड फिल्मों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

8. **साक्षात्कार –** साक्षात्कारों के माध्यम से साहित्यकारों, विचारकों और कलाकारों के अनुभवों और दृष्टिकोणों को साझा किया जाता है, जिससे भारतीय ज्ञान परंपरा की विविधता और गहराई को समझा जा सकता है।इन साक्षात्कारों में वे अपने लेखन, प्रेरणाओं और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों पर प्रकाश डालते हैं, जो पाठकों को भारतीय परंपराओं के प्रति जागरूक करते हैं।

9. **समीक्षा –** समीक्षाओं के माध्यम से साहित्यिक कृतियों, फिल्मों और अन्य सांस्कृतिक उत्पादों का विश्लेषण किया जाता है।इन समीक्षाओं में भारतीय ज्ञान परंपरा के तत्वों की पहचान और उनकी प्रस्तुति पर चर्चा की जाती है, जिससे पाठकों को इन कृतियों में निहित सांस्कृतिक मूल्यों की समझ मिलती है।

10. **विशेषांक –**हिंदी साहित्यिक पत्रिकाएं समय-समय पर विशेषांकों का प्रकाशन करती हैं, जो किसी विशेष विषय या व्यक्तित्व पर केंद्रित होते हैं।इन विशेषांकों में भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित विषयों पर गहन लेख, साक्षात्कार और समीक्षाएं शामिल होती हैं, जो पाठकों को उस विषय की व्यापक समझ प्रदान करती हैं।

इन विविध शैलियों और प्रारूपों के माध्यम से हिंदी साहित्यकारों ने भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध किया है, जिससे यह परंपरा आज भी जीवंत और प्रासंगिक बनी हुई है।

समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता का भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और प्रसार में भूमिका– समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।यह पत्रकारिता न केवल प्राचीन भारतीय दर्शन, साहित्य, कला और संस्कृति के मूल्यों को पुन: प्रस्तुत कर रही है, बल्कि उन्हें आधुनिक संदर्भों में भी प्रासंगिक बना रही है।भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा स्थापित 'कविवचन सुधा' जैसी पत्रिकाओं ने प्रारंभिक दौर में ही साहित्य, समाज और राजनीति के बीच सेतु का कार्य किया।वर्तमान में, 'हंस','कथादेश', 'नया ज्ञानोदय', 'वागर्थ' जैसी पत्रिकाएँ भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध पहलुओं को समकालीन विमर्शों के साथ जोड़ने का प्रयास कर रही हैं।ये पत्रिकाएँ न केवल पारंपरिक विषयों पर लेख प्रकाशित करती हैं, बल्कि आधुनिक सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर भी भारतीय दृष्टिकोण से विचार प्रस्तुत करती हैं।इसके अतिरिक्त, डिजिटल माध्यमों के माध्यम से साहित्यिक पत्रकारिता ने अपनी पहुँच को विस्तृत किया है, जिससे युवा पीढ़ी भी भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़ रही है।इस प्रकार, समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और प्रसार में एक सेतु के रूप में कार्य कर रही है, जो अतीत और वर्तमान के बीच संवाद स्थापित करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के समक्ष समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता की चुनौतियाँ और संभावनाएं– समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, परंतु इसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।इन चुनौतियों को निम्नलिखित बिंदुओं में विस्तृत रूप से समझा जा सकता है:

1. **पाठकों की रुचि बनाए रखना–** भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित विषय अक्सर गूढ़ और अकादमिक होते हैं, जिन्हें आम पाठकों के लिए आकर्षक बनाना एक बड़ी चुनौती है।आज के डिजिटल युग में, जहाँ त्वरित और मनोरंजक सामग्री की मांग अधिक है, वहाँ गंभीर विषयों को रोचक ढंग से प्रस्तुत करना आवश्यक हो गया है।उदाहरण स्वरूप, Eshtory जैसे ऑडियो प्लेटफॉर्म भारतीय मौखिक परंपरा को आधुनिक रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं, जिससे युवा पीढ़ी की रुचि बनी रहे।

2. **आधुनिकता बनाम परंपरा –** भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत करना आवश्यक है, परंतु इसके मूल तत्वों को संरक्षित रखते हुए।यह संतुलन साधना कठिन है, क्योंकि परंपरा को आधुनिक रूप में ढालते समय उसके मूल भाव और उद्देश्य को बनाए रखना आवश्यक होता है।उदाहरण स्वरूप, Vedic Heritage Portal जैसे सरकारी प्रयास वेदों और उपनिषदों को डिजिटल रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं, जिससे परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बना रहे।

3. **व्यावसायिक दबाव –** मीडिया संस्थानों पर व्यावसायिक दबाव के चलते, गुणवत्ता और अकादमिक ईमानदारी को बनाए रखना कठिन होता जा रहा है।लाभप्रदता की दौड़ में, पारंपरिक और गंभीर विषयों को प्राथमिकता देना चुनौतीपूर्ण हो गया है।इससे साहित्यिक पत्रकारिता में भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित विषयों को स्थान देना कठिन हो गया है।

4. **डिजिटल माध्यम में प्रस्तुति–** डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर गहन और गंभीर सामग्री को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना आवश्यक है, जिससे पाठकों की रुचि बनी रहे।डिजिटल माध्यमों में सामग्री की अधिकता और त्वरित उपभोग की प्रवृत्ति ने गहन लेखन के लिए स्थान सीमित कर दिया है।हालांकि, Traditional Knowledge Digital Library जैसे प्रयास पारंपरिक ज्ञान को डिजिटल रूप में संरक्षित करने में सहायक हो रहे हैं।

5. **विद्वानों की कमी–** भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न पहलुओं पर गंभीर लेखन करने वाले विद्वानों की कमी भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है।विशेषज्ञों की सीमित संख्या के कारण, साहित्यिक पत्रकारिता में इन विषयों पर गुणवत्ता युक्त सामग्री प्रस्तुत करना कठिन हो गया है।इसके समाधान के लिए, शैक्षणिक संस्थानों और शोधकर्ताओं को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

इन चुनौतियों के बावजूद, डिजिटल मीडिया ने नई संभावनाओं के द्वार भी खोले हैं।ऑनलाइन पत्रिकाएं, ब्लॉग्स, पॉडकास्ट्स और वेबिनार्स के माध्यम से साहित्यिक सामग्री का प्रसार व्यापक हुआ है।यह माध्यम न केवल भारतीय ज्ञान परंपरा को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने में सक्षम हैं, बल्कि युवा पीढ़ी को भी इससे जोड़ने में सहायक हैं।इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर साहित्यिक चर्चाओं और समूहों की सक्रियता ने भी पारंपरिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया है।

समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।इस संदर्भ में, निम्नलिखित संभावनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं:

1. **युवा पीढ़ी से जुड़ाव–** भारतीय ज्ञान परंपरा को युवा पीढ़ी के लिए प्रासंगिक बनाना एक महत्वपूर्ण संभावना है।डिजिटल प्लेटफॉर्म्स, जैसे कि ऑनलाइन पत्रिकाएँ, ब्लॉग्स, पॉडकास्ट्स और वेबिनार्स, के माध्यम से यह संभव हो रहा है कि युवा पीढ़ी इन परंपराओं से जुड़ सके।उदाहरणस्वरूप, Eshtory जैसे ऑडियो प्लेटफॉर्म भारतीय मौखिक परंपरा को आधुनिक रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं, जिससे युवा पीढ़ी की रुचि बनी रहे।

2. **अंतर्राष्ट्रीय पहचान–** भारतीय ज्ञान परंपरा को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करना एक और महत्वपूर्ण संभावना है।डिजिटल माध्यमों के माध्यम से, जैसे कि ऑनलाइन कोर्स, वेबिनार्स और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के आयोजन,

भारतीय ज्ञान परंपरा को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई जा सकती है।इससे न केवल भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रसार होगा, बल्कि भारत की सॉफ्ट पावर भी सुदृढ़ होगी।

3. शोध और अकादमिक विकास– भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न पहलुओं पर नए शोध और अकादमिक विमर्श को बढ़ावा देना एक महत्वपूर्ण संभावना है।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत, भारतीय ज्ञान प्रणाली को एक विषय के रूप में कई प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों में शामिल किया गया है। इससे संबंधित विषयों पर गहन अध्ययन और अनुसंधान को प्रोत्साहन मिलेगा, जिससे भारतीय ज्ञान परंपरा का संरक्षण और विकास संभव होगा।

4. बहु-विषयक दृष्टिकोण– विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों को एक साथ लाना, अर्थात् बहु-विषयक दृष्टिकोण अपनाना, भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन और प्रचार-प्रसार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।इससे विभिन्न क्षेत्रों, जैसे कि साहित्य, इतिहास, दर्शन, विज्ञान, और सामाजिक विज्ञान, के विशेषज्ञ मिलकर एक समग्र दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं, जो भारतीय ज्ञान परंपरा को व्यापक रूप से समझने और प्रस्तुत करने में सहायक होगा। इन संभावनाओं का समुचित उपयोग करके, समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और प्रसार में एक प्रभावी माध्यम बन सकती है।यह न केवल सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखने में सहायक होगी, बल्कि युवा पीढ़ी को भी अपनी जड़ों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

भविष्य की दिशा में, साहित्यिक पत्रकारिता को तकनीकी नवाचारों को अपनाते हुए, सामग्री की गुणवत्ता और प्रामाणिकता बनाए रखने पर ध्यान केंद्रित करना होगा।साथ ही, पाठकों की बदलती रुचियों को समझते हुए, प्रस्तुतिकरण की शैली और माध्यमों में विविधता लानी होगी।शोध और विश्लेषणात्मक लेखन को प्रोत्साहित करते हुए, भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न पहलुओं को समकालीन संदर्भों में प्रस्तुत करना आवश्यक होगा।इस प्रकार, समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और प्रसार में अपनी प्रभावशीलता बनाए रख सकती है।

निष्कर्ष :

1. समकालीन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण, प्रसार और आधुनिकीकरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।
2. यह एक पुल का काम कर रही है जो प्राचीन ज्ञान को समकालीन समाज से जोड़ता है।
3. भविष्य में, साहित्यिक पत्रकारिता को भारतीय ज्ञान परंपरा को और अधिक सुलभ, आकर्षक और प्रासंगिक बनाने के लिए नए दृष्टिकोणों और तकनीकों को अपनाना होगा।
4. यह न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत को मजबूत करेगा बल्कि वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए नए विचार और समाधान भी प्रदान करेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. Mishra, U. (2015). हिंदी की वैश्विक अभिव्यक्ति और भारत. यू.एस.एम. पत्रिका, अप्रैल 2015. वाराणसीरू उत्तार भारत साहित्य परिषद् प्रकाशन।
2. Singh, Y. P. (2014). बुंदेलखंडी लोकसाहित्य में पारिवारिक जीवन. हिंदी अनुशीलन (विशेषांक), जनवरी-दिसंबर 2014. नई दिल्ली: साहित्य साधना प्रकाशन।
3. Parmar, B. S.(2015). बुंदेलखंड में प्रचलित लोकोक्तियों में अनुभवजन्य ज्ञान. बुंदेली बसंता, मार्च 2015. झांसी: बुंदेली साहित्य अकादमी प्रकाशन।
4. Bhargav, V. (2015). भोजपुरी भाषा: चुनौतियाँ और संभावनाएँ. शिक्षामित्र, मार्च 2015. पटना: भोजपुरी साहित्य परिषद् प्रकाशन।
5. Bhargav, V. (2015). संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का विकास. शिक्षामित्र, दिसंबर 2015. पटना: भोजपुरी साहित्य परिषद् प्रकाशन।
6. Parmar, B. S.(2016). बुंदेलों की वीरभूमि: बुंदेलखंड. बुंदेली बसंता, फरवरी 2016. झांसी: बुंदेली साहित्य अकादमी प्रकाशन।
7. Prasad, S.(2016). स्नामानिक लोककथा के कथा-मानक रूप का तुलनात्मक अध्ययन. सदानीरा, फरवरी-अप्रैल 2016. लखनउ: लोकभारती प्रकाशन।
8. Yadav, J. (2017). समकालीन हिंदी कहानी में स्त्री विमर्श. शब्द ब्रह्म, 5(11), 19-22. भोपाल: नव साहित्य निकेतन प्रकाशन।
9. Trivedi, V. (2017). हिंदी लघुकथाओं में स्त्री विमर्श एवं माँ का स्वरूप. शब्द ब्रह्म, 5(11), 23-26. भोपाल: नव साहित्य निकेतन प्रकाशन।
10. Jha, D. K. (2017) 'भीष्म साहनी के उपन्यासों में आर्थिक जीवन' शब्द ब्रह्म, 5(11), 27-31. भोपाल: नव साहित्य निकेतन प्रकाशन।
11. https://shodhganga.inflibnet.ac.inShodhganga (INFLIBNET): भारतीय विश्वविद्यालयों के शोध प्रबंधों का डिजिटल भंडार।
12. https://www.ndl.gov.in National Digital Library of India (NDLI): शैक्षणिक संसाधनों का एक व्यापक डिजिटल पुस्तकालय।
13. https://samalochan.comSamalochan: हिंदी साहित्य, कला और संस्कृति पर केंद्रित एक प्रतिष्ठित ब्लॉग।
14. https://newswriters.in Newswriters.in: हिंदी पत्रकारिता और साहित्यिक लेखन पर केंद्रित एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

वेदों में स्त्री माहात्म्य

डॉ. रागिनी श्रीवास्तव*

* असिस्टेंट प्रोफेसर (संस्कृत) शशि भूषण बालिका डिग्री कॉलेज, लखनऊ (उ.प्र.) भारत

प्रस्तावना – विद् धातु से उत्पन्न वेद शब्द का अर्थ है ज्ञान। 'विद्यन्ते ज्ञायन्ते लभ्यन्ते वा एभिर्धर्मादि पुरुषार्था:' अर्थात वेद धर्म,अर्थ, काम,मोक्ष रूप पुरुषार्थों की प्राप्ति का सशक्त माध्यम है। आम्नाय,आगम,श्रुति आदि नामों से भी वेदों को अभिहित किया जाता है। वेद ईश्वर द्वारा रचित हैं, अपौरुषेय हैं,नित्य हैं और असीम ज्ञान के अनंत भंडार हैं। मानव जाति के हित के लिए ईश्वर ने ऋषियों के अंत:स्तल में इन्हें उद्घाटित किया।

वेदों का काल अत्यंत समृद्ध, विकसित और उन्नत समाज को परिलक्षित करता है और जब हम किसी भी समाज की प्रगति,उन्नति,सुव्यवस्था की बात करते हैं तो उसके परिप्रेक्ष्य में कहीं ना कहीं स्त्री की परोक्ष और अपरोक्ष रूप से भूमिका को स्वीकार करना जरूरी हो जाता है। आदिकाल से ही स्त्री को शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। जब स्त्री की उत्पत्ति ही तेज से शक्ति रूप में हुई हो तो स्त्री की महत्ता स्वयं ही प्रकट हो जाती है–

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति–रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम:।।

दुर्गा सप्तशती

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता: ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया: ।।

मनुस्मृति 3/56

मनुस्मृति का यह वाक्य वेदों में स्त्रियों की सम्माननीय गौरवमयी स्थिति को दर्शाता है। उनकी महत्ता हर क्षेत्र में सम्माननीय रूप में स्वीकार की गई है। वेद में स्त्री की शिक्षा, शालीनता,गुण,कर्तव्य, अधिकार का अत्यंत सुंदरता पूर्वक विवेचन प्राप्त होता है। वेद स्त्रियों को साम्राज्ञी,शासक, यज्ञीय अर्थात पूजनीय रूप में स्वीकार करते हैं।

वेदों में 'स्त्री' शब्द को मात्र महिला या औरत के रूप में स्वीकार नहीं किया गया है, बल्कि उसे विस्तृत और सम्मानजनक रूप में प्रस्तुत किया गया है। वेदों में स्त्री को ज्ञान, शक्ति,देवी और सृजनकत्री के रूप स्वीकार किया गया है।

वेदों में स्त्री को तेज युक्त, ज्ञान प्रदान करने वाली,सुख ऐश्वर्य प्रदात्री,तेज युक्त, विदुषी, उषा,इंद्राणी,सरस्वती आदि अनेक अभिधानों से अलंकृत किया गया है। वेद नारी के गौरवपूर्ण अस्तित्व को विभिन्न प्रकार से प्रकट करता है।

ऋग्वेद में स्त्री को ब्रह्म पद से सुशोभित किया गया है–

'स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ'

(ऋग्वेद 8.33.19)

यहां पर स्त्री को सृजनात्मक शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। ब्रह्म का अर्थ ज्ञान,बुद्धि,एवं सृजनात्मक शक्ति से है अर्थात ज्ञान विज्ञान में पुरुष के समान ही पारंगत होने के कारण स्त्री ब्रह्म है।यह वाक्यांश स्त्री के महत्व और शक्ति को प्रकाशित करता है।

इसी क्रम में 'अयमाकाश: स्त्रियां पूर्यते' (बृहदारण्यक उपनिषद 1.4.3) मंत्र स्त्री की महत्वपूर्ण भूमिका को प्रकट करता है।

वेदों में नारी को घर कहा गया है–'जायेदस्तम्' । 'जाया' का अर्थ है पत्नी और 'अस्तम्' का अर्थ है घर अर्थात् पत्नी ही घर है। (ऋग्वेद 3.53.4)

वेद काल में अनेक ऋषिकाएं हैं जिन्होंने वैदिक धर्म की ध्वजा फहराकर समाज को आध्यात्मिकता और नैतिकता के पाठ पढ़ाये। आपला, घोषा, सरस्वती, सूर्या,अदिति,लोपामुद्रा, आत्रेयी, सर्वराज्ञी, सावित्री दाक्षायणि, विश्ववारा आदि अनेक नाम है जिन्होंने शिक्षा एवं ज्ञान के क्षेत्र में तत्कालीन स्त्री के महत्वपूर्ण स्थान को निर्धारित करने में अभूतपूर्व योगदान दिया है।

तत्कालीन स्त्री अध्ययन अध्यापन तक की सीमित नहीं थी अपितु उसे रण क्षेत्र में जाने तथा शासक के रूप में भी स्वीकार किया गया।

'स्त्रियो हि दास आयुधानि चक्रे'

(ऋग्वेद 5.30.9)

यह मंत्र स्त्री के महत्व को ही दर्शाता है।

इसी क्रम में विश्पला नाम की वीरांगना स्त्री के घायल होने का विवेचन ऋग्वेद में प्राप्त होता है–

चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्णमाजा खेलस्य परितक्म्यायाम् ।
सद्यो जङ्घामायसीं विश्पलायै धने हिते सर्तवे प्रत्यधत्तम् ।।

जिससे प्रतीत होता है कि स्त्रियों को युद्ध भूमि में अपना कौशल दिखाने की पूर्ण स्वतंत्रता थी।

ऋग्वेद में उषा को आदर्श स्त्री के रूप में माना है और उषा से प्रसिद्ध की प्रार्थना की गई है जो स्त्री महत्व की परिचायक है–

माता देवानामदितेरनीकं
यज्ञस्यं केतुर्बृहती वि भांहि।
प्रशस्तिकृद्ब्रह्मणें नो व्युच्छा
नो जनें जनय विश्ववारे।।

(ऋग्वेद1.113.19)

अर्थात् हे देवों की माता और अदिति से प्रतिस्पर्धा करने वाली उषा! तुम यज्ञ का ज्ञापन और महत्व प्राप्त करती हुई प्रकाशित एवं हमारे स्त्रोत की प्रशंसा करती हुई उदित हो और हमें संसार में प्रसिद्ध बनाओ।

इसी तरह उषा रूपी स्त्री से पुरुष के लिए कल्याणकारी और धन प्रदान करने की कामना की गई है–

यच्चित्रमप्नं उषसो वहन्तीजानायं शशमानायं भद्रम्।
तन्नो मित्रो वरुंणो मामहन्तामदिति: सिन्धुं: पृथिवी उत द्यौ:।।

(ऋग्वेद 1. 113.20)

ऋग्वेद के दसवें मंडल का पच्चासीवां सूक्त विवाह सूक्त है, जिसमें सूर्य पुत्री सूर्या और सोम के विवाह का कथन है। विवाह सूक्त की द्रष्टा ऋषिका सावित्री सूर्या हैं।इसमें वर वधू के अखंड सौभाग्य की कामना की गई है। सूर्या सावित्री ने 47 मंत्रों में विवाह सूक्त लिखकर स्त्री माहात्म्य को स्वत: प्रकट कर दिया है। वेदों में स्त्री को साम्राज्ञी पद से विभूषित किया गया है–

साम्राज्ञी श्वशुरे भव साम्राज्ञी अधि देवृषु।
ननान्दुषु साम्राज्ञी भव साम्राज्ञी पत्ये इन्द्रस्य ।।

(अथर्ववेद 14.1.6)

अर्थात् पत्नी को अपने श्वसुर, देवर, ननद और पति के साथ साम्राज्ञी (समान अधिकार और सम्मान) का पद प्राप्त होना चाहिए। यह श्लोक स्त्री के महत्व और परिवार में उसकी भूमिका को तो प्रकट करता ही है साथ में यह पत्नी के कर्तव्यों,अधिकारों का वर्णन करता है और उसे परिवार में सम्मानजनक स्थान पर प्रतिष्ठित भी करता है।

वेदों में पिता की संपत्ति में भी स्त्री के अधिकार को स्वीकार किया है–

अमाजुरिव पित्रों सचां सती समानादा:

(ऋग्वेद 2.17.7)

अर्थात् 'पुत्री अपने पिता की संपत्ति में समान अधिकार रखती है, जैसे पुत्र।'

यह मंत्र स्त्री के अधिकारों और उनकी स्थिति को दर्शाता है, जिसमें उन्हें अपने पिता की संपत्ति में समान अधिकार प्राप्त है।

इसी प्रकार वेदों में अनेक स्त्रियों के महत्व से संबंधित उद्धरण प्राप्त होते हैं,जैसे–अपने सौभाग्य के लिए पति पत्नी का हाथ पकड़ता है–

गृह्णामिं ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्यां जरदष्टिर्यथास:।
भगों अर्यमा संविता पुरंन्धिर्मह्यंत्वादुर्गार्हपत्याय देवा:।।

(अथर्ववेद 14.1.50)

स्त्रियों में अपार शक्तिपुंज को वेदों ने स्वीकार किया है–

नारीणां शक्ति: सा नारीणां साहसं नारीणामोजो बलं च।
नारीणां सर्वमेव तत्।।

(अथर्ववेद 7.46.3)

अर्थात् स्त्रियों में शक्ति होती है, साहस होता है,ओज और बल होता है। स्त्रियों में यह सब कुछ होता है।

माता भूमि: पुत्रो अहं पृथिव्या:

(अथर्ववेद 12.12)

वेद की यह उद्घोषणा स्वयं ही स्त्री माहात्म्य की प्रतिपादक है।

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा।।

मनुस्मृति

अर्थात् जहां स्त्रियां दुखी रहती हैं वह कुल ही नष्ट हो जाता है। मनुस्मृति का यह उद्घोष स्त्रियों के महत्व को परिलक्षित करता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वैदिक साहित्य में स्त्री यशस्वी थी,आदरणीय और स्तुत्य थी,आवाह्न योग्य, सुशील एवं सम्माननीय पद पर स्वतंत्र रूप में प्रतिष्ठित थी और अर्धनारीश्वर की परिकल्पना को साकार रूप में उपस्थित करने में सक्षम थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. ऋग्वेद
2. यजुर्वेद
3. अथर्ववेद
4. सामवेद
5. वेदों में नारी का स्थान(डॉ. विवेक आर्य)
6. वेदों में नारी का महत्व (काजल पटेल)
7. वैदिक नारी(डॉ.रामनाथ वेदलंकार)
8. स्त्रियों का वेदाध्ययन और वैदिक कर्मकांड में अधिकार (डॉ.धर्मदेव विद्यामार्तड)
9. मनुस्मृति
10. दुर्गा सप्तशती

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Tourism in Darbhanga District, Bihar: Problems and Sustainable Solutions for Regional Development

Rahul Kumar Jha*

***Department of Business Administration, Jai Narain Vyas University, Jodhpur (Raj.) INDIA**

Abstract: Darbhanga district, located in northern Bihar and known for its rich Maithil culture, ancient palaces, and temple architecture, holds immense potential for tourism-led development. Despite its cultural wealth, tourism in the region remains significantly underdeveloped. This study investigates the problems hindering tourism in Darbhanga and proposes sustainable and inclusive strategies for overcoming them. Using primary surveys, SWOT analysis, and stakeholder perspectives, the research emphasizes the need for infrastructure modernization, policy reforms, digital marketing, and community-based tourism development. The findings provide a roadmap for transforming Darbhanga into a prominent heritage and cultural tourism destination in eastern India.

Introduction - Darbhanga, a historic district in the Mithila region of Bihar, is synonymous with Maithili art, language, and royal heritage. The district's cultural assets—such as the Raj Darbhanga palaces, Shyama Temple, and Maithili festivals—are powerful indicators of its untapped tourism potential. Unlike more commercialized destinations such as Bodhgaya or Rajgir, Darbhanga lacks the necessary infrastructure, investment, and visibility to attract both domestic and international tourists.

Tourism, if properly developed, could serve as a catalyst for employment, infrastructure, and cultural preservation in Darbhanga. This paper analyzes the current tourism ecosystem in Darbhanga, identifies its challenges, and suggests a sustainable, stakeholder-driven roadmap to enhance its tourism profile.

Literature Review

Tourism development in India has largely focused on a few key destinations, leaving culturally rich regions like Mithila underexplored (Bhatia, 2013). Studies show that heritage tourism can generate substantial socio-economic benefits if supported by proper policy, infrastructure, and marketing (UNWTO, 2019). According to Singh (2020), rural and cultural tourism in Bihar faces challenges due to weak institutional support and poor connectivity.

Mishra and Singh (2021) specifically noted that although Darbhanga holds historical and cultural significance, it remains absent from mainstream tourism circuits. Lack of stakeholder coordination and minimal community engagement have been identified as major bottlenecks. According to Jigyasu (2002), cultural heritage management must incorporate local knowledge systems and community participation to be sustainable.

This research builds on these insights to create a localized framework for tourism development in Darbhanga, emphasizing sustainability, inclusivity, and policy integration.

Objectives:

1. To assess the current tourism status in Darbhanga.
2. To identify the infrastructural, institutional, and social constraints limiting tourism growth.
3. To propose a sustainable tourism model tailored to Darbhanga's unique heritage.
4. To explore the role of local communities and private stakeholders.
5. To develop recommendations for policymakers, investors, and civil society.

Methodology

1. Primary Data

Surveys: Conducted with 100 domestic tourists visiting Darbhanga and 50 local residents, focusing on tourism perception, experiences, and expectations.

Key Informant Interviews: 10 in-depth interviews with government officials, private tour operators, artisans, and heritage scholars.

2. Secondary Data

i. Government reports (Bihar Tourism Policy 2022).
ii. Scholarly articles and comparative case studies from similar heritage towns in India.

Analytical Tools

i. SWOT analysis.
ii. SPSS software for analyzing survey data.
iii. Stakeholder Mapping (public-private-community roles).

Sampling was purposive and convenient due to the limited tourism flow in the region.

Tourism Landscape in Darbhanga: Darbhanga is a

treasure trove of cultural and architectural assets. It is considered the intellectual and cultural capital of Mithila, known for its Maithili language, folk traditions, and royal lineage.

Key Attractions:

Raj Darbhanga Palaces – AnandBagh Palace, Rambagh Palace

Shyama Temple – A religious site of local and regional importance

Chandradhari Museum – Rich in Maithili paintings and artifacts

AhilyaAsthan – A sacred site with mythological significance

Maithili Culture – Mithila paintings, festivals (Chhath, Sama-Chakeva), traditional cuisine

Despite these assets, the tourist footfall remains negligible due to lack of awareness, poor infrastructure, and negligible government efforts.

Problems Hindering Tourism in Darbhanga

1. Infrastructural Challenges

i. Dilapidated roads and poor last-mile connectivity.
ii. Inadequate accommodation facilities.
iii. No tourist information centers or digital kiosks.
iv. Unhygienic conditions around heritage sites.

2. Promotional and Branding Gaps

i. No official branding or mention in Incredible India campaigns.
ii. Weak online presence and digital storytelling.
iii. Lack of tourism events, fairs, or packages.

3. Policy and Institutional Gaps

i. No Darbhanga-specific tourism development authority.
ii. Fragmented and short-term initiatives.
iii. Limited funding and lack of PPP investmen.t

4. Socio-Economic Challenges

i. Youth migration due to lack of local employment.
ii. Low local awareness about tourism's benefits.
iii. Language barriers for international tourists.
iv. Underrepresentation of women in the tourism economy.

SWOT Analysis

Strengths	**Weaknesses**
Rich cultural and historical heritage	Poor infrastructure and connectivity
Unique Maithil traditions festivals	Lack of skilled tourism and workforce
Educational hubs and cultural identity	Absence of packaged tour experiences
Opportunities	**Threats**
Inclusion in state/national circuits	Policy neglect or inconsistent governance
Digital marketing and influencer tourism	Urban encroachment on heritage zones
Sustainable tourism and cultural entrepreneurship	Environmental and flooding risks

Proposed Sustainable Tourism Strategies

1. Infrastructure Development

i. Improve roads, signage, and transport from Darbhanga Junction and airport.
ii. Develop heritage walk circuits and eco-friendly homestays.
iii. Install multilingual digital kiosks and mobile charging spots.

2. Policy and Governance

i. Create a Darbhanga Tourism Development Authority (DTDA).
ii. Build PPP frameworks for investment in hotels, travel services.
iii. Include Darbhanga in "Mithila Tourism Circuit" under Bihar Tourism.

3. Promotion and Marketing

i. Launch an official tourism website and app.
ii. Collaborate with travel bloggers and heritage influencers.
iii. Host Maithil festivals and crafts exhibitions.

4. Community-Based Tourism (CBT)

i. Train local youth as multilingual tourist guides.
ii. Encourage women's SHGs in hospitality, handicrafts.
iii. Set up tourism cooperatives for shared economic benefit.

5. Academic and Institutional Partnerships

i. Partner with LNMU and KSDSU for tourism education and research.
ii. Set up museum-tourism linkages and local interpretation centers.

Stakeholder Roles

Stakeholder	**Role**
Government	Provide funding, policy support, infrastructure
Private Sector	Invest in accommodations, logistics, digital services
NGOs	Capacity building, gender empowerment, cultural programs
Academic Institutions	Data collection, tourism training, impact studies
Local Community	Provide services, cultural experiences, sustainability practices

Findings and Analysis

i. Tourist Feedback: 82% of surveyed tourists saw potential in Darbhanga's culture, but only 19% rated the facilities as adequate.
ii. Stakeholder Interviews: Common issues highlighted included policy fragmentation and lack of visionary leadership.
iii. Community Perceptions: Locals showed enthusiasm but expressed a need for skill development and tourism awareness programs.
iv. This data confirms that the district has the cultural capital needed for tourism growth but requires serious policy, infrastructural, and grassroots action.

Conclusion: Darbhanga is a culturally rich but underutilized tourism destination in Bihar. With its palaces, temples, and Maithil traditions, it has the potential to transform into a

sustainable heritage tourism hub. However, challenges related to infrastructure, policy, visibility, and community readiness must be addressed. A coordinated, stakeholder-inclusive, and sustainable development model can unlock Darbhanga's tourism economy and preserve its unique cultural identity.

Policy Recommendations:

1. Establish a dedicated Darbhanga Tourism Development Authority (DTDA).
2. Integrate Darbhanga into national tourism promotion campaigns.
3. Develop public-private partnerships in hospitality and services.
4. Organize an annual Darbhanga Heritage and Craft Festival.
5. Create tourism-based vocational training programs for youth.
6. Launch digital platforms promoting Maithil art and folklore.
7. Ensure cultural site conservation through regular audits and CSR funding.

References:-

1. Bhatia, A. K. (2013). Tourism Development: Principles and Practices. Sterling Publishers.
2. Mishra, P., & Singh, R. (2021). Cultural Tourism in Mithila: A Case Study of Darbhanga. International Journal of Tourism and Heritage Studies, 9(2), 45–56.
3. Singh, S. (2020). Rural Tourism and Cultural Heritage in Bihar. Journal of Indian Culture & Heritage, 5(1), 12–20.
4. United Nations World Tourism Organization. (2019). Sustainable Tourism for Development Guidebook. UNWTO.
5. Government of Bihar. (2022). Bihar Tourism Policy 2022. Patna: Department of Tourism.
6. Jigyasu, R. (2002). Traditional Knowledge Systems for Disaster Mitigation: A Case Study from India. N-AERUS Conference.

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारत में जनजातीय अधिकारों पर संवैधानिक विमर्श: एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन और समकालीन प्रासंगिकता

राहुल रोत*

* शोधार्थी (राजनीति विज्ञान) मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – भारतीय संविधान, जो भारत के सामाजिक–राजनीतिक संरचना का प्रमुख आधार स्तंभ है, ने अपने निर्माण के प्रारंभिक चरण से ही देश के जनजातीय समुदायों (अनुसूचित जनजातियों) के अधिकारों, पहचान और विकास से संबंधित मुद्दों पर गहन चिंतन और विमर्श को समाहित किया है। संविधान सभा की बहसों और विभिन्न समितियों की रिपोर्टों में इन समुदायों की विशिष्ट आवश्यकताओं, उनके ऐतिहासिक शोषण, और उन्हें राष्ट्र की मुख्यधारा में समाहित करने की चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा की गई थी। इन बहसों का परिणामस्वरुप ही पांचवीं और छठी अनुसूची, अनुच्छेद 244, तथा जनजातीय सलाहकार परिषदों जैसे विशेष संवैधानिक प्रावधानों के रूप में सामने आया, जिनका उद्देश्य इन समुदायों के पारंपरिक रीति रिवाज, पारंपरिक जीवन शैली, संस्कृति और भूमि अधिकारों का संरक्षण सुनिश्चित करते हुए उनके समावेशी विकास को गति देकर उनके कल्याण और समग्र विकास की नींव रखनी थी।

भारत जैसे विविधतापूर्ण राष्ट्र में, जहाँ जनजातीय समुदाय एक महत्वपूर्ण जनसंख्यात्मक और महत्वपूर्ण सांस्कृतिक घटक का प्रतिनिधित्व करते हैं, संवैधानिक निर्माताओं की दूरदर्शिता और उनके द्वारा स्थापित ढाँचे का विश्लेषण अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। स्वतंत्रता के सात दशकों से अधिक समय बीत जाने के बाद भी, जनजातीय क्षेत्रों में विकास की असमानताएँ, चुनौतियाँ, भूमि विस्थापन, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच का अभाव तथा सांस्कृतिक पहचान का क्षरण जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। यह स्थिति इस प्रश्न को उठाती है कि क्या संविधान सभा में की गई बहसें, उनसे निकले प्रावधान और उनके पीछे की मूल भावना वर्तमान संदर्भ में अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भारत में जनजातीय मुद्दों पर हुई संवैधानिक बहसों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का गहन विश्लेषण करना है। यह अध्ययन विशेष रूप से उन तर्कों, विचारों और आशंकाओं पर प्रकाश डालेगा जो संविधान के निर्माण के समय जनजातीय कल्याण और प्रशासन के संबंध में व्यक्त किए गए थे। इसके साथ ही, शोध इन बहसों की वर्तमान प्रासंगिकता का मूल्यांकन करेगा कि कैसे वे आज भी जनजातीय नीतियों, कानून निर्माण और उनके सामाजिक–राजनीतिक सशक्तिकरण के प्रयासों को प्रभावित कर रही हैं। क्या वे बहसें वर्तमान चुनौतियों के समाधान के लिए कोई मार्गदर्शन प्रदान करती हैं, या समय के साथ उनकी व्याख्या और कार्यान्वयन में बदलाव की आवश्यकता है? यह शोध संवैधानिक बहसों और वर्तमान जनजातीय स्थिति के बीच के अंतर्संबंधों की पड़ताल करके नीति–निर्माताओं, शोधकर्ताओं और नागरिक समाज के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करने का प्रयास करेगा, जिससे जनजातीय समुदायों के अधिकारों और आकांक्षाओं को बेहतर ढंग से संबोधित किया जा सके।

जब 13 दिसम्बर 1946 को पण्डित नेहरु ने संविधान सभा में ऐतिहासिक उद्देश्य प्रस्ताव पेश किया। जिसमें संवैधानिक ढांचे एंव दर्शन की झलक के साथ यह भी कहा गया कि अल्पसंख्यको, पिछडे वर्गों तथा जनजातीय क्षेत्रो के लोगो को पर्याप्त सुरक्षा प्रदान की जाएगी।

अत: प्रस्तुत शोध–पत्र में संविधान निर्माण के दौरान संविधान सभा में जनजातीय विषयो पर हुई बहस, विचार–विमर्श के आधार को समझने हेतु भारत के जनजाति समुदायों के विस्तृत इतिहास को संक्षेप में विभिन्न काल खंडो में समझने का प्रयास किया गया है। इस क्रम में जनजातियो की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, नृजातीय लक्षण(रेशियल प्रोफाइलिंग),ब्रिटिश काल और आधुनिकरण के दौरान जनजाति, स्वतंत्रतोत्तर काल में जनजातियों की स्थिति और अंत में इन सब उपरोक्त बिन्दुओ के आधार पर जनजातीय क्षेत्रो के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण मुद्दे जो सभा में उठाये गए, बाद में सम्मिलित प्रावधानों में विशेष रूप से पांचवीं अनुसूची और छठी अनुसूची की महत्वता और आवश्यकता और अंतत: अनुसूचित क्षेत्रो के लिए विशेष प्रावधान करते समय संविधान की मूल भावना का विस्तृत अध्ययन और विश्लेषण किया गया है।

भारतीय उपमहाद्धीप में आदिवासी समुदाय की उपस्थिति अत्यंत प्राचीन है यह समुदाय सदियों से जंगलो और दूर–दराज के पहाड़ी क्षेत्रो में निवास करते हुए आये है। सामान्यत: आदिवासी शब्द का प्रयोग किसी भौगोलिक क्षेत्र के उन निवासियों के लिए किया जाता है जिनका उस भौगोलिक क्षेत्र से ज्ञात इतिहास में सबसे पुराना सम्बन्ध रहा हो। भारत में आदिवासियों के लिए भारतीय संविधान में जनजाति शब्द का प्रयोग किया गया है। जनजाति शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा जे ट्रिबुस (Tribus) से हुई है (Oxford english dictionary, 1933)। पहले रोमन इस शब्द का प्रयोग समाज में विभाजन को निर्दिष्ट करने के लिए करते थे। कालांतर में इस शब्द का प्रयोग गरीब लोगो के लिए किया जाने लगा। फ्राइड के अनुसार 'जनजाति' शब्द का इस्तेमाल सामान्य तौर पर 'सामाजिक रूप से सामंजस्य पूर्ण इकाई' के रूप में किया जाता है जो एक क्षेत्र से जुडी होती है और जिसके

सदस्य खुद को राजनीतिक रूप से स्वयं को स्वायत्ता मानते है' (Morton, 1975)।

अंग्रेजी भाषा में इस शब्द का प्रचलन उपनिवेशवाद के विस्तार के दौरान विशेष रूप से एशिया और अफ्रीका के सन्दर्भ में हुआ। यूरोप में राष्ट्रवाद के उभार के साथ, जनजाति शब्द का इस्तेमाल एक निर्दिष्ट क्षेत्र के भीतर एक निश्चित भाषा बोलने वाले लोगो के समुदाय के सामाजिक-राजनीतिक उपयोग में विशिष्ट स्थिति को दर्शाने के लिए किय गया था। यूरोपीय शब्दावली में उदारवादी विचारधारा से राष्ट्रवादी विचारधारा के क्रमिक अवस्था को प्रकट करने के लिए कबीले, जनजाति और राष्ट्र जैसे शब्दों का उपयोग किया गया (Morton, 1975)।

अब हम जानते है की ट्राइब अत: जनजाति शब्द एक साम्राज्यवादी आकांक्षाओ का परिणामस्वरूप एक उत्पाद है, जिसमे आदिवासियों पर सैंकड़ो वर्षो के दमन, अत्याचार, प्राकृतिक संसाधनों-जंगलो को छीनकर उनकी सांस्कृतिक विरासत को खंडित कर आधुनिकता के नाम पर उन्हें मुख्य धारा में लाने का पाखंड मात्र है। इस सन्दर्भ में उदय चन्द्र का मानना है ऐतिहासिक रूप से ये पहाड़ो और जंगलो में बसने वाले लोग कृजो बाद में जनजाति बनेकृ वे ना तो राज्यविहीन थे, ना ही इतिहास से बाहर, ना ही सरल, गैर-श्रेणीबद्ध, समतावादी समुदाय। वास्तव में तो ये पूर्ण रूप से व्यस्त थे अपने शासन में,जंगल-जमीन राजनीति में, अन्य समूहों के साथ सहायक संबंधो में, अपनी विशिष्ट व्यावसायिक विशेषज्ञता में, और युद्धों मेंद्य सामाजिक प्रथाओ रीति-रिवाजो के आधार पर वे आंतिरक रूप से विविधतापूर्ण श्रेणीबद्ध और लैंगिक समुदाय भी थे। (Banerjee, 2016)

अत: जब भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई तब भारतीय संविधान सभा में जनजातियों के अधिकारों और उनकी सुरक्षा को लेकर कई महत्तवपूर्ण बिन्दुओ पर बहस हुई जो अंतत: संविधान में उनके संरक्षण हेतु प्रावधानों के रूप में परिणित हुए।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि- ऋग्वैदिक काल में मुख्यत: आर्य और अनार्य का वर्णन मिलता है। इसमें अनार्य भारतवर्ष के सबसे प्राचीन निवासी है। एकमत के अनुसार आर्यो के भारत आगमन से पूर्व अनार्य ही भूमि के स्वामि थे। आर्यो के आगमन के पश्चात इनमे सदैव संघर्ष होने लगे अंतत: आर्यों ने अनार्यो को पराजित किया। प्राचीन साहित्यों में इन्हें अनेक शब्दों से अभिहित किया गया जैसे अनासा(चपटी नाक वाले) मुध्रावक(जिनकी भाषा समझ ना आएं), दस्यु (दास) आदि।

किसी भी भारतीय भाषा में जनजातियो के लिए पहले कभी कोई शब्द प्रयुक्त नही हुआ था। प्राचीन काल में जनजातियाँ कुछ विशिष्ट नामो से जन जाती थी जैसे गोंड, संथाल और भील परन्तु कालांतर में आधुनिक भारतीय भाषा में इनके लिए नए नाम गढ़े गए जैसे-वन्यजाति, वनवासी, पहाड़ी, आदिमजाति, आदिवासी। यही बात यहाँ भी सिद्ध होती है कि भारत में प्रथम जनगणना के समय से ही जनजाति समुदाय की जनसँख्या का सही-सही अनुमान लगाना कठिन रहा है, और उतनी ही कठिनाई उनकी परिभाषा गढ़ने और उन्हें वर्गीकृत करने में भी रही है क्यूंकि जातियों और जनजातियो कि विभिन्न जनगणना रिपोर्टो और अध्ययनों में,उन्हें विभिन्न नामो से पुकारा गया है, जैसे आदिवासी जनजातियाँ, आदिम जनजातियाँ, आदिवासी आबादी, एनिमिस्ट, हिन्दू आदिवासी,आदि (Mehta, 1953)।

जॉन हेनरी हट्टन जो 1931 में जनगणना आयुक्त थे उन्होंने कहा कि 'ट्राइब(जनजाति) शब्द का प्रयोग उन समुदायो को शामिल करने के लिए किया था कि जो अभी भी इस आधार पर संगठित है की वे अब तक जाति नहीं बन पायी' (Hutton, 1933)।

भारत में जनजातियो के क्षेत्र, भाषा, रीति-रिवाज, संस्कृति, धर्म, नस्लीय लक्षण आदि के आधार पर एक दुसरे से भिन्न होते है। अक्सर एक जनजाति के पास एक अलग बोली और अलग सांस्कृतिक लक्षण होते है। पश्चिमी देशो और भारत में भी जनजाति शब्द का अर्थ पहले से भिन्न हो गया है (Verma, 1990)।

जनजातियों के जातीय लक्षण (रेशियल प्रोफाइल)- भारतीय जनजातीय वर्गीकरण पर चर्चा करते समय भारतीय मानवविज्ञानी बी.एस.गुहा (1894-1961) को सदैव उद्धृत किया जाता है। गुहा ने अपने शोध में जनजातीय समूहों के बीच शारीरिक रूप से अन्तरो को निर्धारित करने के लिए ऐन्थ्रोपोमेट्रिक(Anthropometric) मापों का उपयोग किया किया। ऐन्थ्रोपोमेट्रिक माप मनुष्यों के शारीरिक पहुलओं को मापते है जैसे कि आपके सर की परिधि, आप कितने लम्बे है या आपका वजन कितना है बैठने की स्थिति से आपकी ऊंचाई कितनी है, त्वचा और मांसपेशियों की मोटाई और आपकी बांह की लम्बाईद्य आपकी त्वचा का रंग आदि।

इस तरह नस्लीय विशेषता के आधार पर गुहा(1935) ने इन्हें मुख्य रूप से तीन नस्लीय श्रेणियों में विभक्त किया है-

1. **प्रोटो ऑस्ट्रेलियाड-** इस समूह के लोगो की विशेषता काले रंग की त्वचा, चपटी अर्थात धंसी हुई नाक और माथे की चौड़ाई कम। यह शारीरिक विशेषताएं गोंड (मध्य प्रदेश),मुंडा(छोटा नागपुर), हो(झारखण्ड) आदि में पाई जाती है।
2. **मोंगोलोइड-** इस समूह की विशेषता त्वचा का रंग हल्का, सर और चेहरा चौड़ा है, नाक का पूल अर्थात नासा दंड (नाक के ऊपर और आँख के बीच का भाग) बहुत नीचे है, और उनकी आँख के ऊपर की त्वचा एक तह के साथ तीरछी होती है अर्थात भौंहों के नीचे आँखों के ऊपर क्रीज एब्सेंट होता है। ये विशेषताएं भोटिया(मध्य हिमाचल, वांचू(अरुणाचल प्रदेश) नागा(नागालैंड), खासी (मेघालय) आदि में अप्पी जाती है।
3. **नेग्रीटो-** इस समूह के लोगो की त्वचा का रंग गहरा काला होता है (थोडा नीला होता हुआ दिखाई देता है), नाक चौड़ी होती है, माथे का आकार गोलाकार होता है। ये विशेषताएं कदर(केरला), ओंगे (अंडमान), जारवा (अंडमान द्वीप समूह)

ब्रिटिश काल और जनजाति - अंग्रेजों के आगमन से पूर्व मुस्लिम शासको द्वारा जनजातियो को पूरी तरह से अपने अधीन करने का प्रयास नहीं किया गया था। मुस्लिम शासको ने स्थानीय आदिवासी राजकुमारों या आदिवासी सरदारों के साथ समझौता करना ज्यादा पसंद किया। उन्होंने आदिवासी प्रथागत कानूनों, जीवन शैली और आर्थिक ताने-बाने में हस्तक्षेप नहीं किया। परिणामस्वरूप, मुस्लिम शासन के दौरान राजनीतिक उथल-पुथल के कारण भी जनजातीय जीवन उतना प्रभावित नहीं हुआ। अंग्रेजो के आगमन तक आदिवासी जंगलो और अपनी पुश्तैनी जमीनों के मालिक थे।

ब्रिटिश काल के दौरान भारतीय राज्य के आधुनिकरण और जनजाति- आदिवासी इतिहास का आधुनिक चरण अंग्रेजो के आगमन से हुआ। अंग्रेज देश के सभी हिस्सों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने की चेष्टा में थे, और अपने उद्योगों के लिए संसाधनों की तलाश में थे। इस तरह भारत के विशाल

क्षेत्र को केन्द्रीयकृत प्रशासन के अंतर्गत लाने की प्रक्रिया प्रारंभ हुई।

जनजातियो के प्रति अंग्रेजो की नीति के दो प्रमुख तत्त्व थे। पहला तत्त्व यह कि जनजातियो के मुख्य धारा से अलगाववाद को समर्थन या उसको स्वीकारना था (Bhowmick, 1980; Chaudhary, 1982) और इस तरह एक्सक्लूडेड और पार्शियली एक्सक्लूडेड क्षेत्र की अवधारणा अस्तित्व में आई। अंग्रेजों की यह नीति उनकी राजीतिक और उपनिवेशवादी महत्वाकांक्षा को पोषित करती थी। उन्हें इस बात का डर था कि जनजाति(तीर कमान के साथ जनजाति समुदाय के लोगो को अक्सर सैन्य,बर्बर योद्धा और जंगली समझा जाता था) अगर उनका संपर्क मुख्यधारा के लोगो के साथ हो गया तो अंग्रेजों के खिलाफ राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन को और बल मिलेगा। इस तरह जनजाति बहुल इलाको को मुख्याधारा से अलग-थलग रखने का प्रावधान अंग्रेजों के लिए प्रशासनिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से उचित था।

अंग्रेजों की नीति का दूसरा तत्तव जनजातियो को सभ्य बनाने अत: आधुनिक बनाने का था। स्वजातीय केन्द्रवाद के मूल्यांकन की दृष्टिकोण से अंगेज जनजातियो को पाशविक जंगली और बर्बर मानते थे। विकासवाद के शास्त्रीय सिद्धांत जिसने 90 के दशक के अंत में और 20वी सदी के प्रारभ में अकादमिक ध्यान आकर्षित किया था, वे समकालीन आदिम को मानवता, जंगलीपन और बर्बरता के प्रारंभिक चरणों के अवशेष या अस्तित्व के रूप में माना था। ब्रिटिश एन्थ्रोपोलोजिस्ट सर इ. बी. टेलर के शब्दों में विरल आबादी और कठिन संचार-संपर्क वाले पहाड़ी या जंगली इलाको में रहने वाले ये लोग सामाजिक जीवाश्म थे, एक अध्ययन के रूप में जो मानव अस्तित्व के प्रागैतिहासिक चरणों को रोशन करेगा।

इस तरह जनजातियोका आधुनिकरण प्रारभ हुआ, इसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु दूर दराज के जनजाति बहुल इलाको में राज्य प्रायोजित ईसाई मिशनरीज का आगमन हुआ। हालांकि ध्यान देने योग्य बात यह है कि सारे जनजाति समूह आधुनिकता के फैरे में नहीं आए। बहुत से जनजातीय समूह आज भी अपनी वही प्राचीन विशिष्ट जीवन शैली के लिए जाने जाते। मिशनरीज का अधिकतर प्रभाव उत्तर पूर्व और छोटा नागपुर का पठार वाले क्षेत्र में पड़ा, जहाँ ईसाई मिशनरीज द्वारा विद्यालयों की स्थापना की गयी, अंग्रेजी शिक्षा, सभ्यता और धर्म का प्रचार प्रसार किया गया जिसका एक मात्र उद्देश्य जनजातियो को सभ्य बनाकर, उनकी सांस्कृतिक विरासत से दूर कर जो अंग्रेजो के हिसाब से पिछड़ी और असभ्य थी।

स्वातंत्रोत्तर काल- भारत के संविधान में 1950 में आदिवासी समुदायों को अनुसूचित जनजाति कहा गया। भारत के संविधान के अनुच्छेद 342 के खंड (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राष्ट्रपति ने संयुक्त राज्यों के राज्यपालों और राज प्रमुखों से परामर्श करने के पश्चात अपने प्रसाद से **निम्नलिखित आदेश किया :-**

1. यह आदेश संविधान (अनुसूचित जनजातियाँ) आदेश, 1950 कहा जा सकेगा।
2. वे जनजाति समुदाय या जनजातियो या जनजाति समुदायों के भाग जो इस आदेश की अनुसूची के भाग 1 से लेकर भाग 22, तक में विनिर्दिष्ट है, उन राज्यों के सम्बन्ध में जिनसे वे भाग क्रमश: सम्बद्ध है, वहां तक जहाँ तक कि उनके उन सदस्यों का सम्बन्ध है, जो उन परिक्षेत्रो में निवासी है।
3. इस आदेश में किसी राज्य अथवा किसी जिले या अन्य प्रादेशिक खंड के प्रति निर्देश का अर्थ यह लगाया जाएगा की वह 1 मई 1976 को यथा गठित राज्य , जिले या अन्य प्रादेशिक खंड के प्रति निर्देश है। (GOI, 1950)

अत: अनुसूचित जनजातियाँ शब्द की परिभाषा संविधान के अनुच्छेद 366(25) इस प्रकार की गयी है, 'ऐसी जनजातियो या जनजाति समुदायों के अंतर्गत भागो या समूहों, जिन्हें संविधान के प्रयोजन के लिए अनुच्छेद 342 के अंतर्गत अनुसूचित जनजातियाँ होना समझा जाता है।'

संविधान सभा में जनजातीय विषय पर गहन वाद- विमर्श: अत: उपरोक्त बिन्दुओ से स्पष्ट है कि भारत में आदिवासी के लिए संवैधानिक प्रावधानों की आवश्यकता इसलिए पड़ी क्यूंकि वे समाज का ऐसा वर्ग थे, जो ऐतिहासिक रूप से हाशिये पर रहा है और सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षणिक दृष्टि से अत्यधिक पिछड़ा था।

संविधान सभा की सर्वप्रथम बैठक के तीन दिन बाद यानी 13 दिसम्बर 1946 को पण्डित नेहरु ने संविधान सभा में ऐतिहासिक उद्देश्य प्रस्ताव पेश किया तब इसमें कहा गया कि भारत के सभी लोगो के लिए न्याय, सामाजिक, आर्थिक एंव राजनीतिक स्वतन्त्रता एंव सुरक्षा की स्थापना सुनिश्चित की जाएगी साथ ही अल्पसंख्यको, पिछड़े वर्गों तथा जनजातीय समुदायों के लोगो को पर्याप्त सुरक्षा प्रदान की जाएगी। इस प्रकार संविधान एक महत्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में स्वतंत्र भारत के भविष्य का रोडमेप होने वाला था। जिसमे आदिवासी समाज की भूमिका का निर्धारण उनके पारंपरिक मूल्यों, प्रकृति के साथ अध्यात्मिक घनिष्ठता तथा समृद्ध विविध सांस्कृतिक विरासत के साथ बिना किसी समझौतें के साथ ही किया जा सकता था।

आदिवासी जीवन शैली की पहचान प्रकृति के कस्टोडियन के रूप में रही है। आदिकाल से वे जंगलो में रहते आए है और प्रकृति के नियमो के साथ परस्पर तालमेल बिठाते हुए अन्य जन समुदायों से अलग सामाजिक अस्तित्व की रचना की जिसकी अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक महत्वता है। वैसे तो इतिहास के अलग-अलग काल खंडो में अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु आदिवासी समाज के संघर्ष दर्ज है परन्तु ब्रिटिश काल में आदिवासियों के अस्तित्व की पहचान को बहुत अधिक ठेस पहुंची थी। इसलिए स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यह सुनिश्चित करना आवश्यक हो गया था कि देश में के सभी वर्गों को सामान अवसर मिले और किसी भी समूह के साथ भेदभाव न हो। जनजातीय समुदायों की विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और उनके पारंपरिक अधिकारों की सुरक्षा के लिए विशेष संवैधानिक उपाय आवश्यक समझे गए।

अत: संविधान में इनके अस्तित्व और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन को प्रमुखता से स्थान दिया जाना अपेक्षित समझा गया। इस तरह से यह विषय महत्वपूर्ण एंव संवेदनशील प्रकृति का हो जाता है जिस पर संविधान सभा में गंभीर और विस्तृत चर्चा की आवश्यकता थी।

संविधान सभा में जनजातीय विषय पर गहन विचार विमर्श के प्रमुख कारण निम्नलिखित है:

1. ऐतिहासिक उपेक्षा और शोषण
2. समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षण की आवश्यकता
3. सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़ापन
4. भूमि और संसाधनों पर अधिकार
5. स्वतंत्र भारत में राजनीतिक प्रतिनिधित्व और स्वायत्तता

संविधान सभा में आदिवासी विषयो पर विचार-विमर्श एंव उनके हितो को प्रखरता से प्रतिनिधित्व करने वालो में बिहार से जयपाल सिंह मुंडा सबसे

प्रमुख थे जिन्होंने संविधान सभा में बेहद वाक्पटुता से देश के आदिवासी समुदाय के बारे में सकारात्मक ढंग से अपनी बात रखीद्य जयपाल सिंह मुंडा का जन्म 03 जनवरी 1903 में छोटा नागपुर का पठार तब बिहार प्रान्त में हुआ था। वे भारतीय सिविल सेवक के साथ 1928 में एम्स्टर्डम में ओलिंपिक हॉकी में पहला स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय टीम के कप्तान थे।

संविधान सभा में जनजातीय अधिकारों के प्रमुख प्रवक्ता– जयपाल सिंह मुंडा को संविधान सभा में जनजातीय समुदायों के एक सशक्त और मुखर प्रतिनिधि के रूप में जाना जाता है। उन्होंने 1946 में बिहार से संविधान सभा के लिए चुने गए और इस मंच का उपयोग उन्होंने पूरे भारत में आदिवासी लोगों के हितों को बढ़ावा देने और उनकी चिंताओं को आवाज देने के लिए किया। उन्होंने यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया कि संविधान में जनजातीय समुदायों के संरक्षण के लिए विशेष प्रावधान शामिल किए जाएँ। उन्हें आदिवासियों के संघर्षों के नेता और प्रतिनिधि के रूप में मान्यता मिली, जिससे उन्हें आदिवासियों के बीच 'मारांग गोमके' या सर्वोच्च नेता का उपनाम मिला।

प्रमुख हस्तक्षेप और मांगें:

1. **आदिवासी पहचान और स्वशासन–** जयपाल सिंह मुंडा ने इस बात पर जोर दिया कि आदिवासी भारत के मूल निवासी हैं और उन्हें अपनी सांस्कृतिक विरासत, भूमि और संसाधनों की रक्षा के लिए कुछ हद तक स्वशासन का अधिकार होना चाहिए। उन्होंने अपनी संस्कृति, परंपराओं और भाषा के संरक्षण की वकालत की।

2. **भूमि अधिकार–** उन्होंने संविधान सभा में आदिवासियों के भूमि अधिकारों को मौलिक अधिकार बनाने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने मौजूदा कानूनों को बनाए रखने और उन्हें मजबूत करने पर बल दिया ताकि आदिवासियों की जमीनों की रक्षा हो सके।

3. **प्रतिनिधित्व और आरक्षण–** उन्होंने शिक्षा, रोजगार और विधानमंडल में अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षण का प्रावधान सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने संविधान सभा में जनजातीय प्रतिनिधित्व की कमी पर भी चिंता व्यक्त की, खासकर जनजातीय महिला सदस्यों की अनुपस्थिति पर।

4. **'आदिवासी' शब्द का प्रयोग–** उन्होंने 'अनुसूचित जनजाति' शब्द के बजाय 'आदिवासी' शब्द के प्रयोग पर जोर दिया, यह तर्क देते हुए कि आदिवासी किसी जाति व्यवस्था का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि भारत के मूल निवासी हैं जिनकी अपनी एक अलग पहचान है।

5. **झारखंड राज्य की मांग–** जयपाल सिंह मुंडा ने जनजातीय समुदायों के लिए एक अलग राज्य 'झारखंड' की वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने 1939 में आदिवासी महासभा के अध्यक्ष के रूप में यह मांग उठाई थी और इसे अपने राजनीतिक दर्शन का केंद्रीय बिंदु बनाया। हालाँकि, झारखंड राज्य उनके जीवनकाल में नहीं बन पाया, लेकिन उनकी इस मांग ने भविष्य के आंदोलन की नींव रखी।

दूरदर्शिता और विरासत– जयपाल सिंह मुंडा ने अपनी ऑक्सफोर्ड–शिक्षित पृष्ठभूमि के बावजूद, आदिवासियों की पारंपरिक जीवनशैली, उनकी समस्याओं और आकांक्षाओं को गहराई से समझा और उन्हें राष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत किया। उन्होंने यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि आदिवासियों को केवल वन–निवासी के रूप में न देखा जाए, बल्कि उन्हें शिक्षित, आधुनिक और राजनीतिक रूप से जागरूक समुदाय के रूप में मान्यता मिले। उनके हस्तक्षेपों ने, जो कभी–कभी संविधान सभा के लिए असहज थे जो एक 'एकीकृत राष्ट्र' के विचार को पेश करने की कोशिश कर रही थी, आदिवासी मामले की एक शक्तिशाली अभिव्यक्ति का गठन किया। उनका योगदान आज भी जनजातीय अधिकारों और पहचान के संघर्ष में एक प्रेरणा स्रोत बना हुआ है, और भारतीय संविधान में जनजातीय समुदायों के लिए किए गए प्रावधानों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। जयपाल सिंह मुंडा के आलावा डॉ. भीमराव अम्बेडकर जो संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे। उन्होंने आदिवासियों और अन्य हाशिये पर खड़े समुदायों के लिए विशेष प्रावधानों का समर्थन किया। अम्बेडकर ने आदिवासियों की सामाजिक और आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए संवैधानिक आरक्षण और अन्य विशेष उपायों की आवश्यकता पर बल दिया। इसी क्रम में आगे जे.जे.एम निकोल्स रॉय का नाम भी महत्त्वपूर्ण है जिन्होंने 6ठी अनुसूची के प्रावधानों के हक में आवाज उठाई थी। वे आदिवासी क्षेत्रो के प्रशासन और उनकी स्वायत्तता के प्रबल समर्थक थे।

वेरियर एल्विन एक प्रसिद्ध मानवविज्ञानी और आदिवासी समाज के गहरे जानकार थे। वैसे वे संविधान सभा के सदस्य नहीं थे परन्तु उनकी विचारधारा का प्रभाव रहा। उन्होंने आदिवासी क्षेत्रो में राज्य के हस्तक्षेप को सीमित करने माँ सुझाव दिया, ताकि आदिवासी समुदाय अपनी संस्कृति और परम्पराओं को बनाएं रख सकें।

संविधान सभा में आदिवासी मुद्दों पर 16 दिसम्बर 1946 को पहली बार संविधान सभा में आदिवासी प्रतिनिधि के रूप में मरंग गोमके जयपाल सिंह मुंडा ने अपना अभिभाषण दिया, जिसके प्रमुख अंश है:

'मैं स्वतंत्रता के अपरिचित योद्धाओ, भारत के मूल निवासी, जिन्हें विभिन्न प्रकार से पिछड़ी जनजाति, आदिम जनजाति, आपराधिक जनजाति और अन्य सभी रूप में जाना जाता है, की लाखो अज्ञात भीड़– फिर भी महत्वपूर्ण– की और से बोलने के लिए खड़ा हुआ। 'श्रीमान, मुझे गर्व है जंगली होने के लिए, यही वह नाम है जिस से हम देश के अपने हिस्से में जाने जाते है। एक जंगली, एक आदिवासी के रूप में, मुझसे संकल्प की कानूनी पेचीदगियो को समझने की उम्मीद नहीं की जाती है। आप जनजातीय लोगो को लोकतंत्र नहीं सीखा सकते। आपको उनसे लोकतान्त्रिक तरीके सीखने होंगेद्य वे पृथ्वी पर सबसे अधिक लोकतान्त्रिक लोग है।'

उन्होंने अपने आगे के अभिभाषण में सम्पुर्ण आदिवासी समुदाय की तरफ से यह भरोसा एंव उम्मीद जताई कि वर्षो से उपेक्षित आदिवासी समाज की स्वतंत्र भारत में अब उपेक्षा न हो।

'मेरे लोगो का सम्पूर्ण इतिहास भारत के गैर– आदिवासियों द्वारा निरंतर शोषण और उन्हें बेदखल करने का रहा है, जो विद्रोह और अव्यवस्था से भरा हुआ है, और फिर भी मैं पण्डित जवाहरलाल नेहरु को उनके शब्दों में मानता हूँ। मैं आप सभी को आपके वचन पर मानता हूँ कि अब हम एक नया अध्याय शुरू करने जा रहे हैं। स्वतंत्र भारत का नया अध्याय जहाँ अवसर की समानता हो, जहाँ किसी की उपेक्षा ना हो।'

उन्होंने संविधान सभा में आदिवासी प्रतिनिधित्व की कमी की आलोचना की और विशेष रूप से आदिवासी महिलाओ की अनुपस्थिति की तरफ इशारा किया। उन्होंने तर्क दिया कि आदिवासी समुदाय के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक सशक्तिकरण के लिए विधायी हस्तक्षेप अनिवार्य था। भारतीय समाज में पुरुषो की तुलना में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति वैसे ही कमजोर है। स्वास्थ्य और शिक्षा के अवसरों

में घोर असमानता ने उनमे निर्णय लेने की क्षमता को ओर भी कम किया है। इसका प्रभाव संविधान सभा में भी दिखता है, सभा में कुल महिलाओ की संख्या केवल 15 थी जिनमे आदिवासी महिलाओ की संख्या शुन्य थी। हालाँकि ऐसा नहीं था की उस समय योग्य आदिवासी महिलाओ की कमी थी। रानी गाइदिन्ल्यू, हेलेन लेपचा, पुतालिमाया तमांग, दशरी बेन चौधरी आदि जैसी प्रमुख आदिवासी महिला थी जिन्होंने स्वतंत्रता के आन्दोलन में अपना अमूल्य योगदान दिया था।

इस सन्दर्भ में 19 दिसम्बर,1946 संविधान सभा में उनका प्रस्तुत भाषण उल्लेखनीय है। 'आदिवासियो से मेरा मतलब है, महोदय, केवल पुरुष ही नहीं बाकि महिलाएं भी.... जबकि मुझे इसमें अपना नाम मिलता है, में यह बताना चाहता हूँ कि सलाहकार समिति में किसी भी आदिवासी महिला का नाम नहीं है। इसे कैसे छोड दिया गया है..? यह उन लोगो के साथ कभी नहीं हुआ जो समिति के सदस्यों के चयन के लिए जिम्मेदार थे।'

अत: संक्षेप में यह कहना ठीक होगा कि जयपाल सिंह मुंडा ने विशेष रूप से आदिवासियों की सांस्कृतिक पहचान और उनके अधिकारों के संरक्षण के लिए जोरदार तरीके से आवाज उठाई।

छठी अनुसूची और आदिवासी क्षेत्रो में स्वायत्ता शासन की मांग को जे. जे. एम. निकोल्स रॉय ने प्रबल तरीके से संविधान सभा में रखा। जे. जे. एम. निकोल्स रॉय मेघालय के खासी जनजाति से आते है। उन्होंने सभा को जनजातियों की आशंकाओ से अवगत करवाया। उन्होंने 6वी अनुसूची बनाकर उनकी चिन्ताओ को दूर करने का प्रस्ताव रखा, जो उन्हें अपनी परपराओ के अनुसार स्वशासन का अधिकार देगा। रॉय के प्रस्ताव का असम के उनके साथी सदस्य रोहिणी कुमार चौधरी ने विरोध किया,जो आदिवासियों को गैर-आदिवासी आबादी में शामिल करना चाहते थे। चौधरी ने तर्क दिया कि छठी अनुसूची ने आदिवासी आबादी को अन्य भारतियों के साथ घुलने-मिलने रोकने की ब्रिटिश नीति को जारी रखा और भी सदस्यों जैसे कुल्हाड़ चलिहा और बी. दास ने चौधरी का समर्थन किया और दर जाहिर किया कि छठी अनुसूची में साम्यवाद को भड़काने की क्षमता है। उन्होंने यह भी कहा कि रॉय के इस प्रस्ताव में द्वि राष्ट्र सिद्धांत की निरंतरता है।

रॉय ने अपनी प्रभावी तर्क शैली से उपरोक्त शंकाओ को मिटाने का सफल प्रयास किया। रॉय ने गांधीवादी सिद्धांतो के माध्यम से लोकतंत्र और राष्ट्रनिर्माण में स्वशासन की महत्वत्ता को बताया। उन्होंने कहा कि स्वशासन के अधिकार से न सिर्फ आदिवासियों में विश्वास उत्पन्न होगा बल्कि वे अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को बनायें रखने में सक्षम भी रहेंगे।

अत: संक्षेप में यह कहना उचित होगा कि गहन वाद विवाद और विचार विमर्श के बाद संविधान सभा में निम्नलिखित प्रावधानों पर आपसी सहमती बनी जिससे विभिन्न क्षेत्रो में अनुसूचित जनजातियो के सर्वांगीण विकास और अधिकारों को सुरक्षित रखने और उनके हितो को बढ़ावा देने के लिए संविधान में कई प्रावधान सम्मिलित किए गए है जिसका मूल उद्देश्य उन्हें राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल किया जा सके।

समकालीन प्रासंगिकता – भारतीय संविधान सभा में जनजातीय मुद्दों पर हुई गहन बहसों और उनसे उत्पन्न संवैधानिक प्रावधानों का आज के समय में मूल्यांकन करना अत्यधिक समकालीन प्रासंगिकता रखता है। यद्यपि संविधान निर्माण के समय की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियाँ वर्तमान से पूर्णरूप से भिन्न थीं, परंतु उन बहसों में निहित मूल सिद्धांत, आशंकाएँ और आकांक्षाएँ आज भी जनजातीय समुदायों की स्थिति को समझने तथा उनके समक्ष खड़ी चुनौतियों का समाधान खोजने के लिए एक महत्त्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रदान करती हैं।

वर्तमान परिदृश्य में, भूमंडलीकरण, तीव्र औद्योगीकरण और विकास परियोजनाओं के विस्तार ने जनजातीय क्षेत्रों पर अभूतपूर्व दबाव डाला है। जल, जंगल और जमीन पर आधारित जनजातीय समुदायों की पारंपरिक आजीविका और सांस्कृतिक पहचान इन प्रक्रियाओं के कारण गंभीर संकट का सामना कर रही है। ऐसे में, संविधान सभा में भौतिक विकास के नाम पर भूमि विस्थापन, वन अधिकारों और जनजातीय स्वशासन को लेकर हुई बहसें यह समझने में सहायक सिद्ध होती हैं कि राष्ट्र निर्माताओं ने इन संवेदनशील मुद्दों को कितनी गंभीरता से लिया था। उनकी दूरदर्शिता आज भी हमें यह याद दिलाती है कि विकास की किसी भी योजना को जनजातीय समुदायों की सहमति और उनके पारंपरिक अधिकारों का सम्मान किए बिना लागू नहीं किया जा सकता।

इसके अतिरिक्त, संविधान में जनजातीय समुदायों के लिए विशेष प्रावधानों, जैसे पाँचवीं और छठी अनुसूची, के बावजूद उनके क्रियान्वयन में आज भी कई विसंगतियाँ मौजूद हैं। पेसा (Panchayats Extension to Scheduled Areas - PESA) अधिनियम, 1996 जैसे कानून, जिनका उद्देश्य जनजातीय क्षेत्रों में स्वशासन को मजबूत करना था, पूर्ण रूप से प्रभावी नहीं हो पाए हैं। संविधान सभा में सत्ता के विकेंद्रीकरण और स्थानीय समुदायों को सशक्त करने पर जो बल दिया गया था, वह आज भी इन प्रावधानों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कार्य करता है। उन बहसों से यह समझा जा सकता है कि केवल कानून बनाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनकी भावना के अनुरूप उनका क्रियान्वयन सुनिश्चित करना कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण और आवश्यक है।

सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर पर भी संवैधानिक बहसों की प्रासंगिकता बनी हुई है। जनजातीय पहचान, भाषा, और संस्कृति के संरक्षण पर संविधान निर्माताओं का जोर वर्तमान में बढ़ती सांस्कृतिक एकरूपता और मुख्यधारा के प्रभाव के संदर्भ में विशेष महत्त्व रखता है। जयपाल सिंह मुंडा जैसे नेताओं द्वारा उठाई गई 'आदिवासी पहचान' की बात आज भी जनजातीय समुदायों द्वारा अपनी विशिष्टता को बनाए रखने के संघर्ष में प्रतिध्वनित होती है।

अंतत:, जनजातीय समुदायों के राजनीतिक प्रतिनिधित्व और उनके सशक्तिकरण को लेकर संविधान सभा में हुई चर्चाएँ आज भी प्रासंगिक हैं। जब हम देखते हैं कि जनजातीय क्षेत्रों में राजनीतिक नेतृत्व किस हद तक अपने समुदाय की वास्तविक आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित कर पा रहा है, तो हमें उन बहसों की ओर लौटना पड़ता है जहाँ एक सच्चे लोकतांत्रिक और समावेशी प्रतिनिधित्व की नींव रखी गई थी। यह शोध जनजातीय मुद्दों पर संवैधानिक बहसों के ऐतिहासिक संदर्भ और उनकी वर्तमान प्रासंगिकता के बीच के सेतु का निर्माण करेगा, जिससे वर्तमान चुनौतियों को संबोधित करने और भविष्य के लिए अधिक न्यायसंगत तथा प्रभावी नीतियों को आकार देने में सहायता मिल सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Banerjee, P. (2016). writing the Adivasi: Some histographicacl notes. *The Indian Economic and Social History Review* , 1-23.
2. Bhowmick, P. (1980). *Some Aspects of Indian Anthropology.* Calcutta: Subernarekha.
3. Chaudhary, B. (1982). *Tribal Developments in*

India:Problems and Prospects. Delhi: Inter-India.
4. GOI, l. m. (1950). *Constitution(ST) order 1950.* Delhi.
5. Hutton, J. (1933). *Censu of India 1931.*
6. Mehta, B. H. (1953). HISTORICAL BACKGROUND OF TRIBAL POPULATION. *The Indian Journal of Social Work , 14* (3), 236-244.
7. Morton, F. (1975). *The notion of tribe.* Menlo park, CA: Cummings publishing company.
8. (1933). Oxford english dictionary.
9. Ray, N. (1972). Tribal situation in India.
10. Verma, R. (1990). *Indian tribes through ages .* Publication division of ministry of information and broadcasting .
11. Ghurye, G.S.(1959), *The Scheduled Tribes*, Bombay, Popular Book Depot
12. Devy, G.N.(2009) *Oxford India Elwin*, Oxford University Press
13. GoI, Department of Social Security(1965), The Report Of The Advisory Committee on the REVISION OF THE LIST OF SC and ST
14. https://tribal.nic.in/downloads/Statistics/Other Report/LokurCommitteeReport.pdf

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

बाह्य देशों से प्राचीन एवं आरंभिक मध्यकालीन भारत का व्यापारिक सम्बन्ध

डॉ. सीमा गौतम*

* सह आचार्य (इतिहास) साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली (उ.प्र.) भारत

शोध सारांश – किसी भी राष्ट्र के विकास में व्यापार वाणिज्य की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। भारत को उत्तर में हिमालय और दक्षिण में समुद्र की सीमा होने का सौभाग्य प्राप्त है।समुद्र की उपस्थिति ने महाद्वीपों में व्यापार के प्रसार में बहुत सहायता की है। प्राचीन काल में भारत कपास, रेशम, चीनी, बहुत से कीमती पत्थरों एवं मसाले का प्रमुख निर्यातक था। यह सभी वस्तुएं अन्य देशों से सोने और चांदी के बदले में निर्यात की जाती थी। कई राजवंशों के सम्राटों ने व्यापार वाणिज्य को प्रोत्साहन देते हुए विभिन्न प्रकार के सिक्कों का प्रचलन प्रारंभ किया। मुस्लिम सत्ता स्थापित हो जाने के बाद मुसलमान व्यापारियों तथा सौदागरों की गतिविधियां तेज हो गई जिसके परिणाम स्वरुप उत्तारी भारत में व्यापार वाणिज्य की प्रगति हुई। 11 वीं शती तक आते-आते भारत और पश्चिमी देशों के बीच व्यापार पुन: तेज हो गया जिससे देश आर्थिक दृष्टि से समृद्ध हुआ।

प्रस्तावना – विदेशों में भारत का विस्तार एवं प्रसार केवल सांस्कृतिक रूप में ही नहीं हुआ अपितु राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से भी भारत बहुत दूर तक फैला हुआ था। अत्यंत प्राचीन काल से ही भारत और पश्चिमी देशों का व्यापारिक संबंध था।[1]चोल, पाण्डय और केरल राज्यों के व्यापारी ग्रीस रोम और चीन के बाजारों से व्यापार किया करते थे।व्यापार के कारण इन प्रदेशों के परस्पर घनिष्ठ संबंध स्थापित हो गए थे।[2] पश्चिमी देशों के साथ भारत के व्यापारिक संबंधों की प्राचीनता प्रागैतिहासिक युग तक जाती है। अत्यंत प्राचीन काल से ही यहां के निवासियों ने व्यापार वाणिज्य के क्षेत्र में गहरी दिलचस्पी दिखाई। राज्य की ओर से भी व्यापारियों को पर्याप्त प्रोत्साहन एवं संरक्षण प्रदान किया गया। परिणाम स्वरुप यहां का आंतरिक एवं बाह्य दोनों ही व्यापार विकसित हुआ।[3] ज्ञात होता है कि सिंधु सभ्यता के निवासियों का मेसोपोटामिया की सुमेरियन सभ्यता के निवासियों के साथ घनिष्ठ व्यापारिक संबंध था। गावरा, हमा, असमर, उर, किश, लगश आदि मेसोपोटामिया के नगरों से लगभग एक दर्जन सिंधु सभ्यता की मुहरें प्राप्त होती हैं।[4] मुहरों के अतिरिक्त सोने-चांदी तथा तांबें के विभिन्न प्रकार के आभूषण हाथी दांत के कंघें, मनके, मिट्टी के विभिन्न प्रकार के बर्तन, लकड़ी का सामान आदि भी मेसोपोटामिया के नगरों से प्राप्त होता है।[5] बहरीन दीप की खुदाई के दौरान कुछ ऐसे अवशेष प्राप्त हुए जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि यहां के व्यापारी सिंधु और मेसोपोटामिया के व्यापारियों के मध्य बिचौलिया के रूप में कार्य किया करते थे। दूसरी ओर सुमेरियन उत्पत्ति की अनेक वस्तुएं जैसे मिट्टी की मुहरें हथौड़ा, रेखित, कालेर्नियन मनका, भेड़ का खिलौना, सफेद संगमरमर की मुहर आदि सिंधु घाटी सभ्यता के विभिन्न स्थलों से भी प्राप्त होती हैं।

सुमेरियन शासक सारगोन (2371.2316 ईसा पू:) के समय कुछ लेखों से यह जानकारी प्राप्त होती है कि उर तथा अन्य नगरों के व्यापारियों का मेलूहा (जिसका समीकरण सिंध प्रदेश अथवा इस में स्थित मोहनजोदड़ो से किया जाता है) के व्यापारियों के साथ संबंध था। अत: यह स्पष्ट हो जाता है कि सिंधु घाटी सभ्यता के समय से ही भारत का पाश्चात्य जगत के साथ व्यापारिक संबंध न केवल स्थापित हो चुका था अपितु यह अत्यंत विकसित भी था। यह व्यापार मुख्यत: जलमार्ग के माध्यम से ही होता था उस समय का प्रसिद्ध समुद्री बंदरगाह लोथल था।

पाश्चात्य जगत के साथ भारत का संबंध वैदिक युग में भी चलता रहा। भारत के व्यापारी फारस की खाड़ी तक जाते थे तथा वहां वस्तुओं का क्रय-विक्रय किया करते थे।[6] ऋग्वेद से यह पता चलता है कि सिंधु प्रदेश के पानीदार घोड़े, ऊनीवस्त्र, शक्तिशाली रथ पूरे विश्व में प्रसिद्ध थे। इसी प्रकार गांधार क्षेत्र चिकनी तथा सुंदर ऊन के लिए प्रसिद्ध था। भारत तथा पश्चिमी देशों के बीच घनिष्ठ व्यापारिक संबंधों की पुष्टि बौद्ध साहित्य से भी होती है। भारत में इस समय भृगुकच्छ तथा सोपारा प्रसिद्ध बंदरगाह थे, जहां पर कई देशों के व्यापारी अपने जहाजों में वस्तुएं भरकर लाते तथा ले जाते थे। बाबेरू जातक से ज्ञात होता है कि भारतीय व्यापारी बेबीलोन से मोर तथा कौवे को खरीदा करते थे। व्यापारियों द्वारा समुद्री यात्रा करने तथा कभी-कभी जहाजों के दुर्घटनाग्रस्त होने का उल्लेख जातक ग्रंथों में कई स्थानों पर प्राप्त होता है।

ईसा पूर्व छठी शताब्दी के मध्य साइरस महान के नेतृत्व में ईरान में हखामनी साम्राज्य की स्थापना हुई। उसके उत्तराधिकारी दारा प्रथम (522-486 ई.पू.) ने सिंधु तथा पंजाब को जीत कर भारत को अपने साम्राज्य का अंग बना लिया जिससे भारत का पश्चिमी देशों के साथ व्यापारिक संबंध बढ़ा। दारा के नौ सेनाअध्यक्ष स्काईलैक्स ने दोनों देशों के बीच एक नए समुद्री मार्ग का पता लगाया। इससे होकर भारतीय व्यापारी पश्चिमी देशों में व्यापार करने गए तथा वहां से उन्होंने काफी धन कमाया। कुछ ईरानी सिक्के पश्चिमोत्तर सीमा से प्राप्त होते हैं जिनसे ईरान के साथ भारतीय व्यापार की पुष्टि हो जाती है।[7]

मौर्य युग में अनेक विदेशी राज्यों के साथ भारत का व्यापारिक संबंध विद्यमान था। इस बात की कतिपय सूचनाएं कौटिल्य रचित ग्रंथ अर्थशास्त्र से प्राप्त होती हैं।[8] इस समय भारत का व्यापार सीरिया, मिस्र तथा अन्य पाश्चात्य देशों के साथ स्थापित हुआ। यूनानी रोमन लेखक भारत के समुद्री व्यापार का वर्णन करते हैं।[9] समुद्री यात्रियों को पोत विज्ञान की शिक्षा दी जाती थी जिसका नाम था नियामकसिप। उन्हें विविध व्यापारिक मार्गों, हवा की दिशाएं और दिशकों का प्रयोग की जानकारी कराई जाती थी।[10] एरियन लिखता है कि भारतीय व्यापारी मुक्ता बेचने के लिए यूनान के बाजारों में जाते थे। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से भी ज्ञात होता है कि इस समय व्यापारी विदेश जाते थे तथा पण्याध्यक्ष और नवाध्यक्ष नामक अधिकारी विदेश जाने वाले व्यापारियों की देखरेख किया करते थे। विदेशी सार्थवाहों का भी उल्लेख मिलता है। जो उत्तरी पश्चिमी भारत के स्थल मार्गों से व्यापार के लिए आते थे।[11] मौर्य काल में सड़कों में साइन बोर्ड लगे हुए थे जिसमें मोड़ और बीच-बीच में दूरियां बताई रहती थी।[12]

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद दक्कन में सातवाहनों तथा उत्तर पश्चिम में कुषाणों ने शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की। इस काल में भारत का मध्य एशिया तथा पश्चिमी देशों विशेषकर रोम के साथ व्यापारिक संबंध काफी बढ़ गया था।[13] रोम के शासक भारत के व्यापार को बहुत अधिक महत्व देते थे। उनकी नीति थी कि पूर्वी देशों का यह व्यापार समुद्र के मार्ग से हो और ईरान से होकर आने वाला स्थल मार्ग अधिक प्रयोग में ना आये। इसी कारण 25 ईसा पूर्व में सम्राट आगस्टस ने एक मंडल इस प्रयोजन से नियुक्त किया था कि वह समुद्र के मार्ग को विकसित व उन्नत करने का प्रयत्न करें। इस मंडल के प्रयास से शीघ्र ही अदन और इजिप्ट पर ग्रीस के व्यापारियों ने कब्जा कर लिया और वहां अपनी बस्तियां बसा ली। सामुद्रिक वायु का भली-भांति ज्ञान हो जाने के कारण इस समय के जहाज 3 माह से भी कम समय में भारत से अलेक्जेंड्रिया जोकि इजिप्ट का एक बंदरगाह था, तक आने-जाने लग गए थे। इस समय अलेक्जेंड्रिया से भारत की ओर जाने वाले जहाजों की संख्या प्रतिदिन 1 की औसत से थी। इस प्रकार यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि भारत का इन पाश्चात्य देशों के साथ व्यापार संबंध कितना अधिक था।[14]

भारत से जो भी सामान पाश्चात्य देशों में बिकने के लिए जाता था वहां उसकी मांग बहुत अधिक थी। हाथी दांत का सामान, मसाले, मोती, सुगंधियां और सूती वस्त्र आदि सामान भारत से बहुत बड़ी मात्रा में रोम व साम्राज्य के अन्य नगरों में बिकने के लिए जाता था और उसके बदले बहुत सा सोना भारत को प्राप्त होता था। यही कारण है जो रोम की बहुत सी स्वर्ण मुद्राएं आज भी भारत के कई स्थानों से प्राप्त होती हैं।[15] दक्षिण भारत के कोयंबटूर तथा मदुरा जिलों से रोम के इतनी बड़ी संख्या में सिक्के प्राप्त हुए हैं, जिन्हें 5 कुली भी उठाने में असमर्थ होंगे। पंजाब के हजारा जिले से भी रोम के बहुत से सिक्के मिले हैं जिनके कारण भारत और रोमन साम्राज्य के पारस्परिक व्यापार के संबंध में कोई भी संदेह नहीं रह जाता। भारत से रोम जाने वाले सामान में सबसे महत्वपूर्ण स्थान सूती वस्त्रों का था। एक रोमन लेखक ने शिकायत की थी कि रोम की स्त्रियां भारत से आने वाले बुनी हुई 'हवा के जाले' मलमल को पहनकर अपने सौंदर्य को प्रदर्शित करती हैं। इसमें संदेह नहीं कि प्राचीन समय में भी भारत अपने महीन वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध था।[16]

मौर्योत्तर काल में भी भारत विश्व के कई देशों से स्थल और जल मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ था। असुरक्षा और मार्ग की अन्य कठिनाइयों के कारण स्थल मार्गों की अपेक्षा जल मार्गों का उपयोग अधिक किया जाता था। आगे चलकर गुप्त सम्राटों के समय में विदेशी व्यापार का और भी विस्तार हुआ। यह व्यापार पूर्व की तरह से पूर्वी एवं पश्चिमी देशों से स्थल तथा जल दोनों प्रकार के मार्गों द्वारा होते थे।[17]

सातवीं शताब्दी में हर्ष काल को विद्वानों ने आर्थिक दृष्टि से पतन का काल बताया है। हवेनसांग के विवरण के अनुसार इस समय तक कई नगर तथा शहर वीरान हो चुके थे।[18]मुद्राओं और मुहरों का भी अभाव हो गया था। इससे यह प्रतीत होता है कि यह व्यापार वाणिज्य के पतन का काल था तथा समाज उत्तरोत्तर कृषि मूलक होता जा रहा था।कृषि हर्ष के शासन काल की आर्थिक रीढ थी।[19]

पूर्व मध्यकाल में भी भारतीय मालवाहक जहाज अरब, फारस, मिस्र आदि देशों को जाया करते थे। हेमचंद्र के अनुसार भारत में अरब से घोड़े मंगाए जाते थे।पर्शिया से रंग भारत को आता था। इब्नखुर्ददवा के विवरण से ज्ञात होता है कि कपूर, चंदन जायफल, लॉग, चीनी, नारियल, मखमली कपड़े, हाथी दांत, मोती, काली मिर्ची, बांस आदि भारत से इराक तथा अरब के देशों में निर्यात किया जाता था। किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि इस युग में अतिरिक्त उत्पादन के अभाव ने दूरवर्ती देशों के साथ व्यापार को प्रभावित तथा सीमित किया। राजपूत काल में सामंतों द्वारा छोटे-छोटे राज्यों को स्थापित किया गया जो अपनी शक्ति और प्रभाव बढ़ाने के लिए परस्पर संघर्ष में उलझ गए। सामंतों ने व्यापार वाणिज्य को हतोत्साहित किया तथा आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन दिया।[20]

विद्वानों ने आर्थिक विकास की दृष्टि से पूर्व मध्यकाल को दो भागों में बांटा हैं। प्रथम भाग जो कि 650 से 1000 ई. तक है, में व्यापार वाणिज्य का ह्रास हुआ। रोम साम्राज्य का इस समय तक पतन हो चुका था इसके परिणाम स्वरूप भारत का पश्चिमी देशों के साथ व्यापार बंद हो गया। इस्लाम के उदय के कारण भी भारत के स्थल मार्ग से होने वाला व्यापार प्रभावित हुआ। इसी कारण इस काल में हमें स्वर्ण मुद्राओं तथा मुहरों का अभाव देखने को मिलता है। स्वर्ण मुद्राओं का प्रचलन काफी हद तक बंद हो चुका था तथा चांदी एवं तांबे की मुद्राएं भी बहुत कम ढलवाई गयी। नगरीय पतन के कारण व्यापारी वर्ग गांव की ओर उन्मुख हुआ। किंतु इस काल का अगर दूसरे भाग 1000 से 1200 ईसवी पर दृष्टिपात किया जाए तो व्यापार वाणिज्य की स्थिति में सुधार मिलता है। इस समय कुछ बड़े राज्यों- चौहान, परमार, चंदेल आदि की स्थापना हुई तथा विकेंद्रीकरण की प्रवृत्तियों पर अंकुश लगा। इन राजवंशों के सम्राटों ने व्यापार वाणिज्य को प्रोत्साहन देते हुए सिक्कों का प्रचलन पुन: प्रारंभ किया। मुस्लिम सत्ता स्थापित हो जाने के बाद से मुसलमान व्यापारियों तथा सौदागरों की गतिविधियां तेज हो गयी जिसके परिणाम स्वरूप उत्तरी भारत में व्यापार वाणिज्य की प्रगति हुई। 11वीं शती तक आते-आते भारत और पश्चिमी देशों के बीच व्यापार पुन: तेज हो गया। जिससे देश आर्थिक दृष्टि से समृद्ध हुआ। इस समय के सिक्के तथा मुहरें बड़ी संख्या में प्राप्त होती हैं।

उत्तर भारत के समान दक्षिण भारत के चालुक्य, पल्लव, पाण्डय तथा चोल राजाओं के काल में भी भारत का पश्चिमी देशों के साथ व्यापारिक संबंध अत्यंत विकसित रहा।[21] आबू जैद के अनुसार भारत के व्यापारी सिरफ जो कि फारस की खाड़ी के पूर्वी तट पर स्थित एक व्यापारिक केंद्र था, बड़ी संख्या में वहां जाते थे[22] तथा मुस्लिम व्यापारियों के साथ संपर्क स्थापित

करते थे।आबू जैद ने आगे लिखा है कि सिरफ से व्यापारी जहाज लाल सागर से होकर चीन नहीं जाया करते थे बल्कि जैद्दा से होकर भारत चले जाते थे।इसका कारण था कि भारत के समुद्र में मोती तथा अंबर बड़ी संख्या में पाये जाते थे तथा यहां के पहाड़ों में रत्नों और सोने की खाने थीं। दक्कन के राष्ट्रकूट राजाओं ने भी अरब के व्यापारियों के साथ मधुर संबंध बनाए रखें उनसे सामान खरीदने में उन को लाभ होता था। इस समय दक्षिण में कई प्रसिद्ध बंदरगाह थे जिससे होकर पश्चिमी देशों को जाया जाता था। इसमें भडौच, सोमनाथ, खंभात,कोलम आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। कोलम सुदूर दक्षिण तथा समुद्र पार के पश्चिमी देशों के बीच व्यापारिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र था। पश्चिमी देशों से आने वाले जहाज यहां रुका करते थे और इस देश को जाने वाले चीनी जहाजों का भी यह विश्राम स्थल हुआ करता था।

भारत में पश्चिमी देशों को जाने के लिए तीन प्रमुख व्यापारिक मार्ग थे पहला मार्ग सिंधु नदी के मुहाने से समुद्र तट होता हुआ फारस की खाड़ी में स्थित दजला फरात तक जाता था। दूसरा व्यापारिक थल मार्ग था जो कि हिंदूकुश दर्रो से होकर बल्ख और इरान होते हुए अंतियोक तक जाता था तथा तीसरा मार्ग जो कि जलमार्ग हुआ करता था वह फारस तथा अरब के तटवर्ती क्षेत्रों से होता हुआ लाल सागर को पार कर यूनान तथा मिस्र की ओर जाता था। भारत के व्यापारियों ने अधिकांशत: जल मार्गों का ही उपयोग किया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारत का पाश्चात्य देशों के साथ व्यापारिक संबंध प्रागैतिहासिक युग से प्रारंभ होकर 12 वीं सदी तक निर्बाध रूप से चलता रहा जो कि भारत के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ तथा उसकी समृद्धि का एक महत्वपूर्ण साधन बना।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. वेदालंकार, चंद्रगुप्त: वृहत्तर भारत, प्रकाशक मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी-1939 पृष्ठ 275(उत्थानिका)
2. मुखर्जी, राधा कुमुद: हिस्ट्री ऑफ इंडियन शिपिंग एंड मैरिटाइम एक्टिवली फ्रॉम द अर्लीएस्ट टाइम, पृष्ठ 116
3. श्रीवास्तव, के सी: प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, पृष्ठ 930
4. वही पृष्ठ सं 931
5. वही पृष्ठ सं 931
6. वही पृष्ठ सं 931
7. श्रीवास्तव, के सी: प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, पृष्ठ 932
8. विद्यालंकार, सत्यकेतु: प्राचीन भारत का धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक जीवन- श्री सरस्वती सदन(मसूरी) सफदर जंग, नई दिल्ली,पृष्ठ 363
9. श्रीवास्तव, के सी: प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, पृष्ठ 932
10. चौधरी, राधा कृष्ण:, प्राचीन भारत का आर्थिक इतिहास, जानकी प्रकाशन पटना, पृष्ठ 160
11. श्रीवास्तव, के सी: प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, पृष्ठ 933
12. चौधरी, राधा कृष्ण: प्राचीन भारत का आर्थिक इतिहास, जानकी प्रकाशन, पटना, पृष्ठ 158
13. श्रीवास्तव, के सी: प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, पृष्ठ 934
14. विद्यालंकार, सत्यकेतु: प्राचीन भारत का धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक जीवन, श्री सरस्वती सदन(मसूरी) सफदरजंग, नई दिल्ली, पृष्ठ 385
15. वही पृष्ठ-385
16. वहीं पृष्ठ 385-386
17. पाण्डेय, संजय कुमार: प्राचीन भारत में व्यापारिक मार्ग, कला एवं शोध संस्थान, वाराणसी, पृष्ठ 130
18. श्रीवास्तव, केसी: प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, पृष्ठ 934
19. ई पत्रिका इंडिया नेट जोन: हर्ष युग के दौरान सामाजिक आर्थिक जीवन
20. श्रीवास्तव, के सी: प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, पृष्ठ 934
21. वही पृष्ठ 935
22. पांडे, संजय कुमार: प्राचीन भारत में व्यापारिक मार्ग, कला एवं शोध संस्थान, वाराणसी, पृष्ठ 131

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

सागर जिले में महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक विकास में महिला एवं बाल विकास विभाग की योजनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. मन्सूर खान* सुदर्शन केशरवानी**

* विभागध्यक्ष (वाणिज्य) पीएमसीओई शा. माधव महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत
** शोधार्थी, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – मध्यप्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्थित सागर जिला है, जहाँ परम्परागत सामाजिक संरचना में महिलाओं की भूमिका सीमित रही है। वर्तमान में महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा संचालित योजनाओं के माध्यम से महिलाओं के शैक्षिक, स्वास्थ्य और सुरक्षा स्तर में सुधार लाने के प्रयास किए जा रहे है। यह शोध पत्र जिले में संचालित योजनाओं जैसे – प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, महिला शक्ति केन्द्र, बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओं, पोषण अभियान आदि के क्रियान्वयन की समीक्षा करता है और उनके महिलाओं की सामाजिक स्थिति, आर्थिक निर्भरता और पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करता है। योजनाओं के संचालन में आ रही समस्याओं जैसे – प्रशासनिक कमियाँ, बजट में विलम्ब, जागरूकता की कमी, सामाजिक समस्याएँ और निगरानी तंत्र की कमजोरियों को व्यक्त करता है। योजनाओं की प्रभावशीलता बढ़ाने हेतु सुझाव प्रस्तुत किए गये है। यदि इन योजनाओं का क्रियान्वयन अधिक संगठित, पारदर्शी और सामुदायिक सहयोग पर आधारित हो तो सागर जिले में महिलाओं का सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण और सुदृढ़ हो सकता है।

शब्द कुंजी – महिला एवं बाल विकास विभाग, सामाजिक संरचना, आर्थिक विकास, सरकारी योजनाएँ, महिला सुरक्षा, ग्रामीण विकास, सामाजिक परिवर्तन, महिला सशक्तिकरण।

प्रस्तावना – जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होता, तब तक विश्व का कल्याण संभव नहीं है। किसी चिड़िया के लिए एक पंख से उड़ना संभव नहीं है।[1] महिलाओं के स्वास्थ्य, शिक्षा और सशक्तीकरण की दिशा में बेहतर लक्ष्य हासिकल किये बिना विकास का सफर तय नहीं किया जा सकता है। देश की आबादी में महिलाओं की संख्या करीब 49 प्रतिशत है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका धीरे–धीरे आर्थिक रूप से सशक्त होती जा रही है, इसका श्रेय काफी हद तक सरकारी योजनाओं को जाता है। सागर जिला, मध्यप्रदेश राज्य के बुन्देलखण्ड अंचल में स्थित है। यहाँ की सामाजिक संरचना में महिलाएँ पारम्परिक रूप से घरेलू कार्यों तक सीमित रही है, लेकिन महिला एवं बाल विकास विभाग की विभिन्न योजनाओं ने इस ढाँचे को चुनौती दी है और महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में सहायक सिद्ध हुई है। प्रस्तुत शोध पत्र सागर जिले में महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक विकास में महिला एवं बाल विकास विभाग की योजनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

सागर जिले की सामाजिक पृष्ठभूमि – सागर जिले की जनसंख्या 23.78 लाख (वर्ष 2011 की जनगणना अनुसार) है, इसमें महिलाओं की संख्या 11,22,201 (47.2 प्रतिशत) है। सागर जिले का सामाजिक ढाँचा पारम्परिक है, जिले की ग्रामीण जनसंख्या 1669662 (70.2 प्रतिशत) तथा नगरीय जनसंख्या 708796 (29.8 प्रतिशत) है, यहाँ पुरूष प्रधान मानसिकता आज भी प्रचलित है। जिले की साक्षरता दर 76.5 प्रतिशत है, जिसमें पुरूष साक्षरता दर 84.8 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 67 प्रतिशत है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की साक्षरता दर शहरी क्षेत्रों की तुलना में कम है, परन्तु गत दशक में लड़कियों की शिक्षा, स्वास्थ्य और आत्मनिर्भरता की दर बढ़ी है।

महिला एवं बाल विकास विभाग की प्रमुख योजनाएँ :–

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना – गर्भवती महिलाओं को पोषण भत्ता और स्वास्थ्य सुविधा देने वाली यह योजना ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं के लिए अत्यन्त लाभकारी है।

महिला शक्ति केन्द्र – ग्राम स्तर पर महिलाओं को सूचना, प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करने की दिशा में यह योजना महत्वपूर्ण रही है।

बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ – इस योजना में बालिका शिक्षा को बढ़ावा दिया है, विशेष कर ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका जन्म दर सुधारने में भी यह योजना सफल रही है।

समेकित बाल विकास योजना (ICDS) – इस योजना के अन्तर्गत बच्चों, गर्भवती एवं छात्री माताओं के पोषण एवं स्वास्थ्य पर ध्यान दिया जाता है। यह योजना आँगनवाड़ी केन्द्रों के माध्यम से सम्पूर्ण देश में संचालित है।

आत्म निर्भर महिला अभियान – इस अभियान के तहत महिलाओं को स्वरोजगार, कौशल प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाती है। महिला हेल्प लाइन 181 महिलाओं की सुरक्षा, सहायता और मार्गदर्शन हेतु यह सेवा महत्वपूर्ण है।

शक्ति सदन – निर्धनता का सामना कर रही महिलाओं के सशक्तीकरण के

लिए घर और संस्थागत सहायता प्रदान करने वाली स्वाधार गृह (बेसहारा महिलाओं के लिए) और उज्जवला गृह (पीड़ित और तस्करी) को शक्ति सदन में शामिल किया गया है। शक्ति सदनों में निवास करने वाली महिलाओं के बैंक खाते में 500/– रूपये की मासिक राशि जमा होगी, यह उन्हें सदन से बाहर जाने पर दी जायेगी।

सरकार द्वारा कई योजनाओं को देश की नारी शक्ति को सशक्त बनाने के लिए शुरू की गई है। स्वच्छ भारत मिशन से महिलाओं को गरिमा मिली। जन–धन योजना से उन्हें बैंकिंग प्रणाली से जोड़ा गया। उज्जवला योजना से लाखों घरों को धुएँ से मुक्ति दिलायी। मुद्रा योजना से महिलाओं को स्वयं का व्यवसाय प्रारम्भ करने का अवसर मिला। प्रधानमंत्री आवास योजना में महिलाओं के नाम पर घर देने से उन्हें सम्पत्ति में हिस्सेदारी मिली। लाड़ली बहना योजना से महिलाओं को नकद सहायता प्रदान कर परिवार में उनकी भूमिका को बढ़ाया है। माता–बहनों ने वो दौर भी देखा है, जब उन्हें कदम–कदम पर मुश्किलों का सामना करना पड़ता था, लेकिन आज विकसित भारत के संकल्प से महिलाओं के नेतृत्व में विकास से उनकी भागीदारी बढ़ी है।

योजना का सामाजिक प्रभाव – सरकारी योजनाओं ने महिलाओं और उनके परिवारों को शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के महत्व के प्रति सजग किया है। योजनाओं के चलते कई परिवार महिलाओं को काम करने और स्वरोजगार अपनाने (स्व–सहायता समूह) के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। सामाजिक रूढ़ियों में कमी से पारिवारिक सोच में बदलाव देखा गया है, जैसे – लड़कियों की शिक्षा से रोकने की प्रवृत्ति में कमी आयी है।

योजनाओं का आर्थिक प्रभाव – महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा प्रोत्साहित स्व–सहायता समूहों ने महिलाओं को छोटे व्यापार, सिलाई, पापड़ निर्माण, हस्तकला, ब्यूटी पार्लर आदि में आत्मनिर्भर बनाया है।

कौशल विकास प्रशिक्षण – महिलाओं को टेलरिंग, कम्प्यूटर, ब्यूटीशियन जैसे प्रशिक्षण देकर उन्हें आय अर्जित करने योग्य बनाया गया है। बैंकिंग सेवाओं तक पहुँच – योजनाओं के माध्यम से महिलाएँ बैंकिंग सेवाओं, जन–धन योजना, मुद्रा योजना इत्यादि से जुड़ने लगी है।

आर्थिक निर्णयों में भागीदारी – महिलाएँ अब घरेलू आर्थिक निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभाने लगी है। जैसे – घर का बजट, बचत, बच्चों की शिक्षा आदि। (लाड़ली बहना योजना)

अध्ययन के उद्देश्य :

1. सागर जिले में महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा संचालित योजनाओं का विश्लेषण करना।
2. सागर जिले में महिलाओं की सामाजिक संरचना में आए परिवर्तनों को समझना।
3. महिला एवं बाल विकास विभाग की योजनाओं का महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर प्रभावों का अध्ययन करना।
4. योजनाओं के क्रियान्वयन में आ रही समस्याओं एवं चुनौतियों की पहचान करना।

अध्ययन का महत्व :

1. सागर जिले की महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों को दस्तावेजबद्ध करता है।
2. प्रस्तुत शोध पत्र नीति निर्माताओं, सरकारी संस्थाओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए उपयोगी होगा।
3. महिलाओं के विकास में सामाजिक अवरोधों की पहचान कर, उनके समाधान की दिशा में सुझाव प्रदान करता है।
4. भविष्य में महिला सशक्तीकरा से जुड़ी योजनाओं की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए एक आधारभूत संदर्भ प्रदान करता है।

शोध की परिकल्पनाएँ :

1. सागर जिले की ग्रामीण महिलाओं में योजनाओं के प्रति जागरूकता अब भी सीमित है।
3. शासकीय योजनाओं से महिलाओं की सामाजिक संरचना में सकारात्मक परिवर्तन आया है।

शोध अध्ययन की प्रविधि – प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है। शोध अध्ययन का क्षेत्र सागर जिले के विभिन्न विकासखण्डों से किया गया है। शोध अध्ययन हेतु डेटा संग्रह द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित है, जिसमें सरकारी रिपोर्ट्स, पुस्तकें, प्रकाशित शोध पत्र, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं से आँकड़ें संग्रहित किए गए है। इनका विभिन्न सांख्यिकीय विधियों और तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।

शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र सागर जिला है। सागर जिले की 100 महिला उत्तरदाताओं से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से तथ्यों को एकत्रित किया गया है। तथ्यों को एकत्रित करने के लिए अवलोकन प्रणाली का प्रयोग किया गया। दैव निदर्शन प्रणाली के माध्यम से उत्तरदाताओं का चयन करके साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से तथ्यों का एकत्रीकरण किया गया है।

तालिका क्रमांक 1: न्यादर्श महिलाओं की जाति वर्ग विश्लेषण की स्थिति

क्र.	उत्तरदाताओं का विवरण	उत्तरदाताओं की संख्या
1	अनुसूचित जाति	28
2	अनुसूचित जनजाति	3
3	अन्य पिछड़ा वर्ग	50
4	अनारक्षित	19
	कुल योग	**100**

तालिका क्रमांक 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित क्षेत्र की न्यादर्श महिलाओं में 28 अनुसूचित जाति वर्ग की है,3 अनुसूचित जनजाति वर्ग से है, 50 अन्य पिछड़ा वर्ग से है तथा 19 अनारक्षित वर्ग से है।

तालिका क्रमांक 2: सागर जिले में महिला हितग्राहियों की जागरूकता की स्थिति

महिला हितग्राही जागरूक है	महिला हितग्राही जागरूक नहीं है
34 प्रतिशत	66 प्रतिशत

तालिका क्रमांक 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित क्षेत्र से 34 प्रतिशत उत्तरदाता जागरूक है, जबकि 66 प्रतिशत उत्तरदाता जागरूक नहीं है। इसका कारण ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का कम शिक्षित होना तथा योजनाओं का तकनीकी विस्तार होना है। ग्रामीण क्षेत्रों में नेटवर्क की कमी सरकारी योजनाओं का पर्याप्त प्रचार–प्रसार के बाद भी महिला हितग्राही जागरूक नहीं है।

तालिका क्रमांक 3 : महिला बाल विकास विभाग की योजनाओं से महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार की स्थिति

हाँ जीवन स्तर में सुधार हुआ	नहीं जीवन स्तर में सुधार नहीं हुआ	कह नहीं सकते
77 प्रतिशत	13 प्रतिशत	10 प्रतिशत

योजनाओं के संचालन से 77 प्रतिशत उत्तरदाताओं के जीवन स्तर में सुधार हुआ है। 13 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उनके जीवन स्तर में सुधार नहीं हुआ है, 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं का उत्तर स्पष्ट नहीं है। महिला एवं बाल विकास विभाग की योजनाओं से महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति में सुधार हुआ है।

तालिका क्रमांक 4: न्यादर्श महिलाओं की शिक्षा स्तर की स्थिति

प्राथमिक	माध्यमिक	हाईस्कूल	हायर सेकेण्डरी	स्नातक	स्नातकोत्तर
11 प्रतिशत	20 प्रतिशत	28 प्रतिशत	18 प्रतिशत	17 प्रतिशत	6 प्रतिशत

तालिका क्रमांक 4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 11 प्रतिशत न्यादर्श महिलाएँ प्राथमिक शिक्षा स्तर की है, 20 प्रतिशत उत्तरदाता का शिक्षा स्तर माध्यमिक है, 28 प्रतिशत उत्तरदाताओं का शिक्षा स्तर हायर सेकेण्डरी है, 17 प्रतिशत न्यादर्श महिलाएँ स्नातक स्तर की है जबकि 6 प्रतिशत उत्तरदाताओं की शिक्षा स्नातकोत्तर स्तर की है।

तालिका क्रमांक 5: बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ योजना से बेटियों के प्रति समाज की सोच में परिवर्तन आने की स्थिति

बहुत अच्छा	सामान्य	कोई जानकारी नहीं
50 प्रतिशत	41 प्रतिशत	9 प्रतिशत

तालिका क्रमांक 5 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ योजना से बेटियों के प्रति समाज की सोच में 50 प्रतिशत न्यादर्श महिलाओं के अनुसार बहुत अच्छा परिवर्तन आया है जबकि 41 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ योजना से सामान्य परिवर्तन आया है। 9 प्रतिशत न्यादर्श का मत स्पष्ट नहीं है, उन्हें इस बारे में जानकारी नहीं है।

तालिका क्रमांक 6: मुख्यमंत्री लाड़ली बहना की राशि का उपयोग आप स्वयं करती है।

हाँ	नहीं	कह नहीं सकते
81 प्रतिशत	12 प्रतिशत	9 प्रतिशत

तालिका क्रमांक 6 से स्पष्ट होता है कि मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना से प्राप्त राशि का उपयोग 78 प्रतिशत उत्तरदाता महिला द्वारा स्वयं किया जाता है, 12 प्रतिशत न्यादर्श महिलाओं को योजना से प्राप्त राशि का उपयोग परिवार के अन्य लोगों द्वारा किया जाता है, 9 प्रतिशत उत्तरदाताओं की स्थिति स्पष्ट नहीं है। इस प्रकार अधिकांश न्यादर्श महिलाएँ स्वयं लाड़ली बहना योजना राशि का उपयोग स्वयं करती है। इससे परिवार में उनकी स्थिति सम्मानपूर्ण हुई है।

परिकल्पना परीक्षण :–

परिकल्पना 1 – सागर जिले की ग्रामीण महिलाओं में योजनाओं के प्रति जागरूकता अब सीमित है। उपरोक्त परिकल्पना को लेकर किये गये शोध कार्य के अन्तर्गत तालिका क्रमांक 2 के अध्ययन पश्चात् यह पाया गया है कि सागर जिले में ग्रामीण महिलाओं में शासकीय योजनाओं के प्रति जागरूकता अब भी सीमित है, क्योंकि सागर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में सरकारी योजनाओं के पर्याप्त प्रचार–प्रसार के बाद भी महिला हितग्राही जागरूक नहीं है। इसका कारण ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का कम शिक्षित होने के साथ आधुनिक तकनीकी का कम उपयोग करना है। एक और कारण यह है कि अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट नेटवर्क की कमी है। अतः यह शून्य परिकल्पना का सत्यापन होता है कि सागर जिले के ग्रामीण महिलाओं में योजनाओं के प्रति जागरूकता अब भी सीमित है।

परिकल्पना 2 – शासकीय योजनाओं में महिलाओं की सामाजिक संरचना में सकारात्मक परिवर्तन आया है।

उपरोक्त परिकल्पना को लेकर किये गये शोध कार्य के अन्तर्गत तालिका क्रमांक 3, 4, 5, 6 के अध्ययन के पश्चात् यह पाया गया है कि सागर जिले में शासकीय योजनाओं से महिलाओं की सामाजिक संरचना में परिवर्तन आया है, इसका कारण महिलाओं की शिक्षा स्तर स्थिति में सुधार आने के साथ महिला एवं बाल विकास विभाग की योजनाओं से महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार हुआ है, इसका एक और कारण सागर जिले में बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ योजना से बेटियों के प्रति समाज की सोच में परिवर्तन आया है और महिलाएँ लाड़ली बहना योजना से प्राप्त राशि का उपयोग स्वयं परिवार पर करती है। इससे परिवार में उनकी स्थिति मजबूत हुई है।

अतः यह शून्य परिकल्पना सत्य होती है कि सागर जिले में शासकीय योजनाओं में महिलाओं की सामाजिक संरचना में सकारात्मक परिवर्तन आया है।

समस्याएँ एवं चुनौतियाँ – कई बार पुरूष सदस्यों या समुदाय से विरोध का सामना करना पड़ता है। योजनाओं का लाभ लेने के लिए आवश्यक पूँजी या संसाधन की अनुपलब्धता। ग्रामीण क्षेत्रों में अब भी कई महिलाएँ योजनाओं की जानकारी से वंचित है। अशिक्षित महिलाओं को कई बार योजनाओं का लाभ सीधे नहीं मिल पाता। उनसे कमीशन या लाभ की अपेक्षा करते है।

समाधान और सुझाव – ग्राम स्तर पर सूचना केन्द्र और प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देना। पंचायत, स्कूल और समाजसेवी संस्थाओं को योजना कार्यान्वयन से जोड़ना। योजनाओं से जुड़ी महिलाओं को समय–समय पर नई तकनीकों का प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए, ताकि वे समयानुकूल कार्य संपादन कर सकें। सफल महिलाओं की कहानियाँ साझा करके अन्य महिलाओं को प्रेरित करना चाहिए।

निष्कर्ष – सागर जिले में महिला एवं बाल विकास विभाग की योजनाओं ने महिलाओं की सामाजिक संरचना को प्रभावित किया है और उन्हें आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर किया है। हालाँकि चुनौतियाँ बनी हुई है, फिर भी योजनाएँ महिला सशक्तिकरण के लिए प्रभावी माध्यम बनकर उभरी है। यदि इन योजनाओं का प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन और व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाए तो महिलाओं के आर्थिक विकास की गति और अधिक तीव्र हो सकती है। इन कार्यक्रमों /योजनाओं का मूल्यांकन भौतिक आधार पर नहीं किया जाकर इनके गुणात्मक परिणामों पर आधारित होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. डॉ. विप्लव (2013), महिला सशक्तीकरण : विविध आयाम, राहुल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
2. सोनी साक्षी (2022), महिला सुरक्षा अभियान एवं सशक्तिकरण, पार्क पब्लियर्स, जयपुर।
3. शर्मा, संगीता, शर्मा, राजेश कुमार (2005), महिला विकास एवं राजकीय योजनाएँ , रितु पब्लिकेशन्स, जयपुर।
4. रजी शाहीन, रजी नौशीन (2019) महिला सशक्तिकरण की कवायद, योजना, अगस्त 2019 पृष्ठ संख्या 45–48
5. Verma, S. & Tiwari, A : (2020), "Impect of Women

Centric Government Schemes on Economic Empower -ment in M.P. Social Change and Development." Vo. 14(3) pp 92-109.

6. Mishra. R. K. (2021), "Rural Women Empowerment in Bundelkhand Region : Role of SHG's", International Journal of Rural Development Studies, Vol. 7(2) pp 45-58.
7. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार, वार्षिक रिपोर्ट वर्ष 2023–24
8. भारत सरकार प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, दिशा निर्देश http://pmmvy.cas.nic.in
9. http://censusindia.gov.in
10. समाचार पत्र– दैनिक भास्कर।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

ऋषभदेव की वर्तमान जनांकिकी एवं आधुनिकता का परिप्रेक्ष्य

डॉ. विनिता श्रीमाली* हिमांशु जैन**

* सहायक आचार्य (इतिहास) माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड) विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

** शोधार्थी (इतिहास) जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड) विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – प्रस्तुत शोध पत्र ऋषभदेव पंचायत समिति क्षेत्र की जनांकिकी और आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य के तथ्यों पर आधारित है। धार्मिक दृष्टिकोण से ऋषभदेव पर कई अध्ययन हो चुके है। उपलब्ध अध्ययनों के कई नवीन संस्करण भी उपलब्ध है। स्वतंत्रता के पश्चात् अलग-अलग दशकों में इस क्षेत्र का विकास होता रहा लेकिन उदयपुर जिले के खेरवाड़ा तहसील की छाया में जनांकिकीय और उपलब्ध संसाधनों के तथ्यों को स्पष्ट किया जा ना सका।

प्रशासनिक अस्तित्व – सन् 2001 की जनगणना के बाद उदयपुर जिले में ऋषभदेव और लसाड़िया नाम से दो नई तहसीलें बनाई गई हैं। ऋषभदेव तहसील का गठन 03 अप्रेल 2008 को खेरवाड़ा के 79 गांवों और सराड़ा तहसीलों के 19 गांवों को शामिल करके किया गया है, जबकि लसाड़िया तहसीलों में सलूंबर के 19 गांवों और धारियावद तहसीलों के 88 गांवों को 25 जनवरी 2008 को शामिल किया गया है।

ऋषभदेव पंचायत समिति – ऋषभदेव पंचायत समिति में 25 ग्राम पंचायतें है और गांवों की संख्या 100 है तथा कुल क्षेत्रफल 47940 हेक्टेयर है जिसमें से कुल कृषि भूमि 2872 हेक्टेयर है। कुल जनसंख्या 172935 है और 63.6 प्रतिशत साक्षरता है। पुरुष जनसंख्या 88216 तथा 78.75 प्रतिशत है और महिला जनसंख्या 84719 तथा 47.97 प्रतिशत है।

ऋषभदेव तहसील – जनगणना 2011 के अनुसार कुल जनसंख्या में से 5.3 प्रतिशत लोग शहरी क्षेत्रों में रहते हैं जबकि 94.7प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। शहरी क्षेत्रों में औसत साक्षरता दर 85.6प्रतिशत है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में 62.3प्रतिशत है। साथ ही ऋषभदेव तहसील में शहरी क्षेत्रों का लिंग अनुपात 923 है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों का 962 है।

तालिका : 01

विवरण	कुल	पुरूष	महिलाएँ
बच्चे (आयु 0-6)	32,371	16,788	15,583
साक्षरता	63.62%	63.77%	39.15%
अनुसूचित जाति	5,039	2,622	2,417
अनुसूचित जनजाति	1,45,576	73,977	71,599
अशिक्षित	83,515	31,962	51,553

ऋषभदेव तहसील में 0-6 वर्ष की आयु के बच्चों की जनसंख्या 32371 है जो कुल जनसंख्या का 19प्रतिशत है। 0-6 वर्ष की आयु के बीच 16788 लड़के और 15583 लड़कियाँ हैं। इस प्रकार जनगणना 2011 के अनुसार ऋषभदेव तहसील का बाल लिंग अनुपात 928 है जो ऋषभदेव तहसील के औसत लिंग अनुपात (960) से कम है। ऋषभदेव तहसील में अनुसूचित जाति (एससी) की जनसंख्या 2.9 प्रतिशत है जबकि अनुसूचित जनजाति (एसटी) की जनसंख्या 84.2 प्रतिशत है।

तालिका : 02

धर्म	कुल	पुरूष	महिलाएँ
हिंदू	1,68,969	86,162	82,807
मुस्लिम	108	56	52
ईसाई	493	262	231
सिख	24	15	9
बौद्ध	2	2	0
जैन	2,946	1,525	1,421
अन्य धर्म	3	3	0
कोई धर्म निर्दिष्ट नहीं	390	191	199

कस्बे के लगभग तीन-चौथाई निवासी हिंदू हैं, जो ब्राह्मण, सुथार, लोहार, दर्जी, मोची, कुम्हार, सोमुपुरा, वाल्मीकि और अन्य जातियों से संबंधित हैं और एक-चौथाई (95 प्रतिशत दिगंबर जैन) कई सालों से यहाँ रह रहे हैं। श्वेतांबर जैन भी यहाँ रहते हैं। ऋषभदेव के आस-पास कई भीलों के गाँव हैं, और वे प्रतिदिन प्रार्थना के लिए ऋषभदेव आते हैं, जो बीसपंथी नरसिंहपुरा और हुमड़ समुदायों से संबंधित संप्रदायों में हैं। जैन समाज के अलावा आदिवासी समाज के लोगों का भी इस मंदिर के प्रति अटूट आस्था है। ऋषभदेव विष्णु के आठवें अवतार के रूप में भी माने जाते हैं। यही कारण है कि आदिवासी समाज के लोग भी इनकी आराधना करते हैं। यह मेवाड़ के प्रमुख चार धामों में से एक है। वहीं, मंदिर में भगवान की काले रंग की प्रतिमा स्थापित है। जिसे आदिवासी भील, मीणा समुदाय के लोग कालिया बाबा कहते हैं।

कार्यशील जनसंख्या – ऋषभदेव तहसील की कुल जनसंख्या में से 73,042 लोग कार्य गतिविधियों में लगे हुए थे। 33.5 प्रतिशत श्रमिक अपने काम को मुख्य कार्य (6 महीने से अधिक रोजगार या कमाई) बताते हैं, जबकि 66.5 प्रतिशत 6 महीने से कम समय के लिए आजीविका प्रदान करने वाली सीमांत गतिविधि में शामिल थे। मुख्य कार्य में लगे 73,042 श्रमिकों में से 10,507 किसान (मालिक या सह-मालिक) थे जबकि 1,763 कृषि मजदूर थे।

शैक्षणिक संस्थान – ऋषभदेव के शैक्षणिक संस्थानों में 144 प्राथमिक विद्यालय है और 95 माध्यमिक विद्यालय है और 24 उच्च माध्यमिक विद्यालय है तथा 1 सरकारी महाविद्यालय है। इसके अलावा महावीर पब्लिक स्कूल, विवेकानंद केंद्र विद्यालय, ईडन इंटरनेशनल स्कूल, विद्या निकेतन, क्लासिक पब्लिक स्कूल, जेआर शर्मा महाविद्यालय भी अपनी सेवाएं दे रहे है।

अर्थव्यवस्था – इस क्षेत्र में 200 से ज़्यादा ग्रीन मार्बल की खदानें हैं। ऋषभदेव ग्रीन मार्बल का सबसे बड़ा खननकर्ता है। दुनिया का 90 प्रतिशत ग्रीन मार्बल ऋषभदेव में ही बनता है। मार्बल उद्योग का टर्नओवर 500 करोड़ से ज्यादा है। यह कई मज़दूरों को रोज़गार भी देता है। इसके अलावा शहर में एलएनजे भीलवाड़ा समूह की कताई और बुनाई मिल भी है। इस तरह से 10000 स्थानीय मज़दूरों को रोज़गार मिलता है। मंदिर की मौजूदगी से कई लोगों की आय भी होती है। मंदिर के पास कई दुकानें हैं जहाँ पूजा सामग्री बेची जाती है।

बैंकिंग संस्थान – ऋषभदेव में बैंक ऑफ बड़ौदा, इलाहाबाद बैंक, भारतीय स्टेट बैंक ऋषभदेव, कोटक महिंद्रा बैंक, उदयपुर सेंट्रल को-ऑपरेटिव बैंक ऋषभदेव, आईसीआईसीआई बैंक अपनी सेवाएं दे रहे है।

बस परिवहन – राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम राजस्थान राज्य में एक सरकारी स्वामित्व वाली परिवहन सेवा है। सड़क परिवहन अधिनियम, 1950 के तहत 1964 में स्थापित है। इसका मुख्यालय राज्य की राजधानी जयपुर में स्थित है। केसरियाजी से उदयपुर के बीच 13 से अधिक बसें संचालित करती है। उदयपुर की सड़क मार्ग से दूरी लगभग 57 किमी है। निगम सभी प्रमुख कस्बों और गांवों के लिए बसें चलाता है। केसरियाजी से उदयपुर मार्ग राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम द्वारा संचालित प्रमुख बस मार्गों में से एक है। यात्री केसरियाजी से उदयपुर तक यात्रा करने के लिए एक साधारण बस, डीलक्स, एक्सप्रेस या सेमी-स्लीपर विकल्प के साथ अल्ट्रा लग्जरी बस चुन सकते हैं।

रिखबदेव रोड रेलवे स्टेशन – रिखबदेव रोड रेलवे स्टेशन से सभी प्रमुख भारतीय शहरों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। रिखबदेव रोड से 5 साप्ताहिक ट्रेनें चलती हैं। रिखबदेव रोड रेलवे स्टेशन पर 5 ट्रेनें गुजरती हैं और कोई ट्रेन खत्म नहीं होती। रिखबदेव रोड से चलने वाली/गुजरने वाली पहली ट्रेन 06:30 बजे रवाना होती है।

स्थानीय आकर्षण – आसपास के दर्शनीय स्थलों में गुरुकुल जैन मंदिर, कांच का मंदिर, पगल्याजी, महावीर जिनालय, ऋषभ गार्डन, पाठशाला जैन मंदिर, राम मंदिर, ईमलियाचौड़ हनुमान जी, चंद्रगिरी, भीम पगल्या, भट्टारक कीर्ति भवन, विश्वकर्माजी मंदिर, सत्यनारायण मंदिर, सूरज कुंड गणेश मंदिर, रायाणा हनुमान जी, दादाबाड़ी और वघुवन।

जल घड़ी – प्राचीनकाल में भारतीयों ने पूरे दिन को आठ भागों में विभक्त किया था। जिसे घड़ी की संज्ञा दी गई। ठीक इसी प्रकार आगे चलकर इसे चार भागों में बांटा गया, जिसे प्रहर कहा जाता है। इसी के आधार पर यहां जल घड़ी का निर्माण किया गया, जिसके अनुसार ही यहां पूजा की जाती है। उन्होंने बताया कि यह घड़ी एक लकड़ी के बक्से में तांबे के बड़े से भगौने में पानी भर कर रखा जाता है। जिसके अंदर पानी भरा जाता है। साथ ही इसके भीतर एक तांबे का कटोरा होता है। जिसमें एक छिद्र होता है, जो 24 मिनट में पारी से भर जाता है। जैसे ही यह कटोरा भरता है वैसे ही मंदिर का गार्ड घंटी बजाता है और समय का संकेत देता है। खास बात यह है कि यहां पिछले 1500 सालों से इस घड़ी के आधार पर पूजा की जाती है।

उपसंहार – ऋषभदेव में समय के साथ-साथ आधुनिकता का प्रवेश होता गया है। वर्तमान में उत्तर आधुनिकता के पहलु भी समाहित हो रहे है। यहाँ का मुख्य आकर्षण ऋषभदेव जैन मदिर है। ऋषभदेव पंचायत समिति, तहसील और अन्य कार्यालयों से जुड़े तथ्यों का द्वितयीक स्तर पर उपलब्धता बहुत कम है। अत: उपलब्ध तथ्यों के आधार पर ही उक्त शोध पत्र लिखित किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Emerging Trends in Indian Tourism and Hospitality: Transformation and Innovation. (2019). India: Copal Publishing Group.
2. Directorate of Census Operations. (2011). Udaipur District 2011 Census Handbook Part B.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय विदेश नीति : परम्परागत व समकालीन आयामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. शोभा गौतम*

* सह आचार्य (राजनीति विज्ञान) से. मु .मा .राजकीय कन्या महाविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.) भारत

शोध सारांश – भारतीय विदेश नीति का कई चरणों में विकास हुआ है। भारतीय विदेश नीति का इतिहास उसके औपनिवेशिक अतीत, शीत युद्ध के दौरान गुटनिरपेक्ष आंदोलन के रुख और 1990 के दशक में आर्थिक उदारीकरण ने भारत को धीरे-धीरे एक अधिक व्यावहारिक और बहुआयामी विदेश नीति की ओर अग्रसर किया। स्वतंत्रता के बाद, भारत की विदेश नीति गुटनिरपेक्षता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, और रणनीतिक स्वायत्तता के सिद्धांतों से प्रेरित थी। 1962 का चीन-भारतीय युद्ध, 1971 का भारत-पाकिस्तान युद्ध, और 1998 के परमाणु परीक्षण जैसे प्रमुख घटनाओं ने भारत की विदेश नीति की रणनीतियों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। 21वीं सदी की शुरुआत में भारत ने वैश्विक शक्तियों के साथ अधिक संलग्न होना, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में भाग लेना और एक अधिक व्यावहारिक विदेश नीति दृष्टिकोण अपनाना शुरू किया।वर्ष 2014 के बाद की अवधि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक अधिक मुखर और सक्रिय दृष्टिकोण द्वारा चिह्नित है, जिसमें वैश्विक शक्तियों, क्षेत्रीय पड़ोसियों और प्रवासी समुदायों के साथ बढ़ती भागीदारी शामिल है। प्रस्तुत शोध पत्र में भारत की परंपरागत विदेश नीति को रेखांकित करते हुए वर्ष 2014 से 2024 के काल में भारतीय विदेश नीति में आए परिवर्तनों का अध्ययन किया गया है। इस हेतु भारतीय विदेश मंत्रालय द्वारा जारी नीति पत्रों, आधिकारिक बयानों और रिपोर्टों, विशेषज्ञ राजनयिकों, नीति निर्माताओं और अकादमिक विशेषज्ञों के साक्षात्कार, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओंतथा पूर्व में प्रकाशित शोध पत्रों-पुस्तकोंका अध्ययन किया गया है।

शब्द कुंजी – विदेश नीति, गुटनिरपेक्षता, पंचशील, एक्टईस्ट, आपूर्ति श्रृंखला।

प्रस्तावना – अंतरराष्ट्रीय संबंधों का परिदृश्य लगातार बदलता रहता है, जिसे भू-राजनीतिक परिवर्तनों, आर्थिक बदलावों और उभरती वैश्विक चुनौतियों से प्रभावित किया जाता है। वर्ष 2014 से 2024 के दौरान भारतीय विदेश नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, जो क्षेत्रीय और वैश्विक गतिशीलता के प्रति एक सूक्ष्म दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करते हैं। यह अवधि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक रणनीतिकपुनर्संयोजन को चिह्नित करती है, जिन्होंने विश्व मंच पर भारत की भूमिका को पुन: परिभाषित करने का प्रयास किया है।

विदेश नीति का अर्थ – विदेश नीति किसी सरकार की अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा, अपने मूल्यों को बढ़ावा देने और कूटनीतिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अन्य देशों और अंतर्राष्ट्रीय कारकों के साथ व्यवहार करने की रणनीति को संदर्भित करती है। यह कूटनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो वैश्विक मंच पर किसी देश की अंत:क्रियाओं को आकार देता है। विदेश नीति के उद्देश्य विविध और परस्पर जुड़े हुए हैं, जो प्रत्येक राज्य के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण में योगदान करते हैं। रक्षा और सुरक्षा अक्सर इसके प्राथमिक लक्ष्य होते हैं।

भारत कीपारंपरिक विदेश नीति के प्रमुख तत्व :

1. गुटनिरपेक्षता– विदेश नीति के एक साधन के रूप में भारत की गुटनिरपेक्षता घरेलू परिस्थितियों और बाहरी वातावरण के साथ निरंतर अंत:क्रिया के माध्यम से विकसित हुई है। स्थायित्व, शक्ति के अस्थिर स्वरूपों का सामना करने की क्षमता और परिस्थितियों द्वारा अपेक्षित परिवर्तनों को आत्मसात करने का लचीलापन इस विकास की विशेषता थी। स्वतंत्र विदेश नीति अपनाने की इच्छा, सोवियत संघ जैसे शक्तिशाली समाजवादी राज्य के साथ मित्रता का व्यावहारिक विकल्प और शांति को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता जैसी परिस्थितियों के संयोजन ने गुटनिरपेक्षता की अवधारणा और व्यवहार को आकार दिया। अपने विकास की प्रक्रिया में, गुटनिरपेक्षता ने छोटे अफ्रीकी-एशियाई राज्यों को रूढ़िवादी सामाजिक व्यवस्थाओं के बीच उलझे विश्व में अपनी पहचान बनाने के लिए प्रेरित किया। इन राज्यों के अंतत: गुटनिरपेक्ष आंदोलन की मुख्यधारा में विलय ने आंदोलन की मुख्य चिंताओं को पूर्व-पश्चिम तनावों से उत्तर-दक्षिण मुद्दों और नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था में बदल दिया।

2. पंचशील सिद्धांत – पंचशील समझौते, जिसे औपचारिक रूप से तिब्बत क्षेत्र के साथ व्यापार और अंतर्संबंध पर समझौते के रूप में जाना जाता है, पर 29 अप्रैल, 1954 को चीन में भारतीय राजदूत एनराघवन और चीन के विदेश मंत्री झांगहान-फू ने हस्ताक्षर किए थे।पंचशील संधि की प्रस्तावना में पांच मार्गदर्शक सिद्धांत निर्धारित किए गए हैं: 1) एक दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता के लिए पारस्परिक सम्मान; 2) पारस्परिक अनाक्रमण; 3) पारस्परिक अहस्तक्षेप; 4) समानता और पारस्परिक लाभ्य और 5) शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व। यद्यपि यह समझौता भारत ने चीन के साथ किया था। किंतु अन्तर्राष्ट्रीय विषयों में भारत ने इन सिद्धांतों का पालन

सभी देशों के साथ किया है।

3. गतिशीलता और अनुकूलनशीलता– भारत सार्वभौमिकता, अभेदभाव और सत्यापन के सिद्धांतों पर आधारित सामान्य और पूर्ण निरस्त्रीकरण के लक्ष्य के प्रति दीर्घकालिक रूप से प्रतिबद्ध है और परमाणु निरस्त्रीकरण की दिशा में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के प्रयासों में सक्रिय भूमिका निभाता रहा है। 1948 में ही, भारत ने परमाणु ऊर्जा के उपयोग को केवल शांतिपूर्ण उद्देश्यों तक सीमित रखने और राष्ट्रीय आयुध भंडार से परमाणु हथियारों को हटाने का आह्वान किया था। भारत 1954 में परमाणु परीक्षण पर प्रतिबंध लगाने का आह्वान करने वाला पहला देश था। इसके बाद कई अन्य पहल की गईं, उदाहरण के लिए, आंशिक परीक्षण प्रतिबंध संधि और परमाणु हथियारों के अप्रसार पर अंतर्राष्ट्रीय वार्ता का आह्वान। जैसे य वर्ष 1978,1982,1988,2010सहित कई वर्षों में भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ में निशस्त्रीकरण के समर्थन में महत्वपूर्ण प्रस्ताव रखे हैं व उनका पालन किया है।

4. अन्य विशेषताएं – पंचशील के सिद्धांतों का पालन करते हुए भारत ने उपनिवेशवाद, नस्ल भेद, रंग भेद व तानाशाही का विरोध किया है तथा संयुक्त राष्ट्र संघ की संरचना में सुधार वउसकी निर्णय प्रक्रिया के लोकतन्त्रीकरण का समर्थक रहा है। भारत ने आरंभ से ही अपनी विदेश नीति में आतंकवाद के प्रति शून्य सहिष्णुता की नीति अपनाई है। संयुक्त राष्ट्र संघ सहित अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं व संगठनों के कानून तथा राज्यों की संप्रभुता का सम्मान करते हुए भारत नेराज्यों के मध्य मतभेदों व विवादों का समाधान करने में अन्य देशों के हस्तक्षेप का विरोध करने की नीति अपनी है।

वर्ष 2014 के बाद भारतीय विदेश नीति में आए बदलाव – प्रस्तुत शोधपत्र वर्ष 2014 से 2024 के दौरान भारत की विदेश नीति के विविध आयामों का अन्वेषण करता है, जिसमें आर्थिक कूटनीति, रणनीतिक साझेदारी, क्षेत्रीय सुरक्षा और वैश्विक शासन जैसे प्रमुख क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। उक्त अवधि में मोदी सरकार की सक्रिय और आक्रामक विदेश नीति पर जोर देने की कई पहलें सामने आई हैं, जिनका उद्देश्य भारत की रणनीतिकस्वायत्तता को मजबूत करना और प्रमुख शक्तियों और पड़ोसी देशों के साथ गहरे संबंध स्थापित करना है। इससे सिद्ध होता है कि भारत अब यह सुनिश्चित करने के लिए बाध्य है कि वह वैश्विक एजेंडे को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाए, वह 'नियमों का पालन' करने के बजाय 'नियम बनाने' का हिस्सा बने और बहुध्रुवीय विश्व में एक मजबूत ध्रुव के रूप में उभरे। इससे विस्तारित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनने की आकांक्षा जुड़ी हुई है, जिसके लिए बड़ी संख्या में देशों ने पहले ही समर्थन का वादा किया है।

पारंपरिक कूटनीति के साथ-साथ, इस अवधि में भारतीय विदेश नीति की संरचना में आर्थिक, सांस्कृतिक और तकनीकी तत्वों का एकीकरण भी देखा गया है। जिनका निम्नानुसारबिंदुवारविश्लेषण किया गया है :

1. पड़ोसी प्रथम की नीति – 'पड़ोसी प्रथम' नीति, जो भारत के अपने निकटतम पड़ोसी देशों के साथ संबंधों के प्रबंधन का मार्गदर्शन करती है, स्थिरता और समृद्धि के लिए पारस्परिक रूप से लाभकारी, जन-उन्मुख, क्षेत्रीय ढांचे के निर्माण पर केंद्रित है, जिसमें भौतिक, डिजिटल और लोगों से लोगों के बीच संपर्क का निर्माण शामिल है। भारत इन देशों के साथ परामर्शात्मक, गैर-पारस्परिक और परिणाम-उन्मुख आधार पर जुड़ता है, जो सम्मान, संवाद, शांति और समृद्धि के सिद्धांतों से प्रेरित है।

इस संबंध में विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने लोकसभा में एक प्रश्न के उत्तर में बताया कि ...भारत की 'पड़ोसी पहले' नीति के हिस्से के रूप में, सरकार पड़ोसी देशों की जरूरतों और आकांक्षाओं के अनुसार आवश्यक विकासात्मक सहायता और क्षमता निर्माण की पहल कर रही है, जिससे उनके देशों के समग्र आर्थिक विकास में योगदान मिल रहा है। इस दृष्टिकोण के तहत, भारत बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचे से लेकर समुदाय से संबंधित परिसंपत्तियों और प्लेटफार्मों के प्रावधान, क्षमताओं में वृद्धि और वित्तीय, बजटीय और मानवीय सहायता प्रदान करने वाली बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के विकास पर पड़ोसी देशों की सहायता कर रहा है।

2. वैश्विक शांति का पक्षधर – भारत संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से एक है, जिसने चार महाद्वीपों में 49 शांति अभियानों में भाग लिया है और कुल 2,00,000 से अधिक सैनिकों का योगदान दिया है। इसके अतिरिक्त रूस-यूक्रेन संघर्ष तथा इजराइल-फिलिस्तीन संघर्ष में भी भारत ने तटस्थ भूमिका में नहीं रहकर स्वयं को शांति के पक्ष में बताया। अगस्त 2024 में यूक्रेनी राष्ट्रपति व्लादिमीरजेलेंस्की के साथ अपनी बातचीत में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत यूक्रेन में शांति बहाल करने के लिए 'सक्रिय भूमिका' निभाने के लिए हमेशा तैयार है। श्री मोदी ने कहा, 'हम (भारत) तटस्थ नहीं हैं। शुरू से ही, हमने पक्ष लिया है। और हमने शांति का पक्ष चुना है।' प्रधानमंत्री ने देशों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करने के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

3. एक्टईस्टपॉलिसी – भारत की एक्टईस्ट नीति (AEP) को देश की विदेश नीति संरचना में उच्च प्राथमिकता प्राप्त है। यह आसियान देशों के साथ संबंध बनाने और क्षेत्र के राज्यों के सामने आने वाले मानवीय सहायता, समुद्री सुरक्षा, आर्थिक सहयोग और शक्ति संतुलन जैसे विविध मुद्दों के समाधान हेतु समर्पित प्रयासों और संसाधनों से स्पष्ट है।इस नीति की शुरुआत से भारत का आसियान से द्विपक्षीय व्यापार 2014-15 के 74 अरब डॉलर से बढ़कर 2023-24 में 121 अरब डॉलर हो गया है। आसियान में भारत का वार्षिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 2019 के 1.5 अरब डॉलर से बढ़कर 2023 में 5.6 अरब डॉलर हो गया, जबकि 2000-24 के दौरान भारत में आसियान का संचयी निवेश 117 अरब डॉलर था। इसके अतिरिक्त एईपी ने भारत को हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (आईओआरए), बंगाल की खाड़ी बहु-क्षेत्रीय, तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल (बिम्सटेक), और प्रशांत द्वीप समूह मंच (पीआईएफ) जैसी अन्य क्षेत्रीय संस्थाओं को मजबूत करने के लिए प्रेरित किया।

4. ग्लोबलसाउथ के नेतृत्वकर्ता के रूप में भारत की नीति – 'ग्लोबलसाउथ' शब्द अंतरराष्ट्रीय राजनीति के नेताओं और टिप्पणीकारों के बीच वैश्विक विभाजनों को दर्शाने और वैश्विक मुद्दों पर समान दृष्टिकोण रखने वाले देशों को एक साथ लाने के लिए लोकप्रिय हो गया है। इन देशों को लग सकता है कि उनके विचारों को पूरी तरह से नहीं सुना गया है या बहुपक्षीय व्यवस्था में उनके हितों को पर्याप्त रूप से प्रतिबिंबित नहीं किया गया है।जी20 की अपनी अध्यक्षता के दौरान, भारत ने वैश्विक दक्षिण की आवाज बनने को प्राथमिकता दी है और चिंताओं को उठाने के लिए कदम उठाए हैं। इसमें कोविड महामारी के दौरान विकासशील देशों को टीके और दवाइयाँ भेजना शामिल है। भारत ने वॉयस ऑफ ग्लोबलसाउथ शिखर

सम्मेलन की मेजबानी की और यह सुनिश्चित किया कि यह क्षेत्र जी7 शिखर सम्मेलन में केंद्रीय भूमिका में रहे। भारत अफ्रीकी संघ को जी20 का पूर्ण सदस्य बनाकर वैश्विक दक्षिण की वकालत कर रहा है। दक्षिण केंद्र के सहयोग से, भारत ने वैश्विक दक्षिण के निहितार्थों पर विचार करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय कराधान पर एक कार्यक्रम आयोजित किया।

5. वैकल्पिक आपूर्ति श्रृंखला काअग्रगामी– हाल के वर्षों में, दुनिया भर की कंपनियों ने 'चीन+1' रणनीति अपनानी शुरू कर दी है। चीन पर निर्भरता कम करने के लिए आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाना। भारत उस '1' स्थान के लिए शीर्ष दावेदार के रूप में उभर रहा है।इस संबंध में वर्ष 2021 में भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया के बीच आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन पहल (एससीआरआई) नामक औपचारिक समझौता हुआ। भारत को इस पहल से कई तरह से लाभ मिलने की उम्मीद है:

i. यह बदलते वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला परिदृश्य में भारत को एक विश्वसनीय सोर्सिंग भागीदार के रूप में स्थापित करेगा।
ii. आत्मनिर्भर भारत पहल को और बढ़ावा मिलेगा।
iii. भारतीय अर्थव्यवस्था की ओर अधिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आकर्षित होगा।
iv. भारत को हिंद–प्रशांत क्षेत्र में चीनी प्रभुत्व का मुकाबला करने के लिए मजबूत साझेदार मिलेंगे।

सांस्कृतिक कूटनीति व प्रवासी भारतीयों की भूमिका – भारत के विदेशी समुदायों की भागीदारी उसकी विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई है। खासकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में।प्रवासी भारतीयों की विदेश नीति द्वारा पेश की जाने वाली समस्याओं और अवसरों पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) – नेतृत्वकारी सरकार विशेष ध्यान दे रही है। विदेशों में भारतीय समुदायों के महत्व ने कुछ ही लोगों में नई शक्ति का संचार किया है, जब वह प्रधानमंत्री थे, तब विकास यात्रा और रणनीतिक पूंजी के रूप में विदेशों में भारत की विदेश नीति के हितों को बढ़ावा दिया। साथ ही, मोदी सरकार को भारत से उत्पन्न होने वाले मुद्दों से निपटने में काफी समय लगा ना पड़ा जिससे उसकी वैश्विक पहचान का विस्तार हुआ है। भारतीय प्रवासी, जिन्हें कभी मुख्य रूप से धन प्रेषण और आर्थिक समर्थन केस्रोत केरूप में देखा जाता था, अब भारत की वैश्विक रणनीति के केंद्र में हैं। मोदी सरकार प्रवासी समुदाय को न केवल एक आर्थिक परिसंपत्ति के रूप में देखती है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत के राजनीतिक, रणनीतिक और सांस्कृतिक हितों को आगे बढ़ाने के एक साधन के रूप में भी देखती है।

निष्कर्ष – उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि भारत की पारंपरिक विदेश नीति में निहित आधारभूत मूल्य का समावेश वर्तमान में भी देखा जा सकता है इस प्रकार से वर्ष 2014 के बाद भारत की विदेश नीति को लागू करने का केवल तरीका बदला है किंतु उद्देश्य व मूल्यों में विशेष अंतर नहीं आया है। अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों व आंतरिक आवश्यकताओं के आधार पर विदेश नीति के मूल्य की प्राथमिकता तथा वरीयता क्रम में अंतर आना प्रत्येक देश के लिए स्वाभाविक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. https://www.diplomacy.edu/topics/foreign-policy/
2. रेड, स्टीवनबी; मिंट्ज, एलेक्स (5 अप्रैल 2013)। 'राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति निर्णय लेने पर नीतिगत दृष्टिकोण' ।पॉलिसी स्टडीज जर्नल।41(S1)"https://en.m.wikipedia.org/wiki/Doi_(identifier)" *doi:10.1111/psj.12010.ISSN0190-292X.S2CID154618621*
3. भारत की गुटनिरपेक्षता: JSTOR पर वैचारिक पुनर्निर्माण का एक प्रयास https://share.google/hNidUFQon5NopiyJK
4. चीन की विदेश नीति के 'पाँचसिद्धांत': इसकी शुरुआत कैसे हुई, अब यह कहाँ है Explained News - The Indian Express https://indianexpress.com/article/explained/everyday-explainers/chinas-panchsheel-five-principles-today-9419195/
5. निरस्त्रीकरण – संयुक्त राष्ट्र में भारत का स्थायी मिशन, न्यूयॉर्क https://www.pminewyork.gov.in/pages?id=eyJpdiI6IlZtdUdZUS tOcGQ1blowUVIrem hpYWc9PSIsInZhbHVlIjoicHVwNUlUV3V0K3V0Zk95cnV4YlZLUT09Iiwib WFjoiNTFiZTRlZGZjMjk3YTE5MDA0YzNmMmM4YTg5M2QyMjQ2ZmUyYWJiMTgyZWVmYTc5NjBjY2Y3MGZlZTBjYTA3NiJ9&subid=eyJpdiI6IkNyUFV1VCsyWHZiZEI2cStyNEYrbkE9PSIsInZhbHVlIjoicFU1TDBrWVp3TzhqaXRRajB1OHpSQT09IiwibWFjIjoiZmY4NGI2NGIzMTE1MDRhNDkyYWFlODFkNzQ3ZDUwMWMwNTFmMzMwZjZlYjBiMWM0Yzc5YWM4ZTQ5NmI5MzA5NCJ9
6. विशिष्ट व्याख्यानों का विवरणी https://share.google/b9C8BrHSUmVGuQVhW
7. QUESTION NO- 262 INDIA'S NEIGHBOURHOOD FIRST POLICY https://share.google/L8ZTTfRraWdJDL1so
8. The United Indian | Social Cause | Role Of India in Global Peace keeping & Humanitarian Aid https://share.google/CzkgO7gxmdw39L8SH
9. यूक्रेन में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, भारत तटस्थ नहीं, शांति के पक्ष में – द हिंदू https://www.thehindu.com/news/national/prime-minsiter-narendra-modi-on-a-historic-visit-to-ukraine-on-august-23-2024/article68558850.ece/amp/#amp_tf=From%20%251%24s&aoh=17524135267861&csi=1&referrer=https%3A%2F%2Fwww.google.com
10. भारत की एक्ट ईस्ट नीति: रुझान, प्रभाव और संभावनाएँ – इंडो–कैनेडियन वॉयसीज https://voiceonline.com/indias-act-east-policy-trends-impact-and-prospects/
11. वैश्विक दक्षिण क्या है?https://share.google/SLOLP3etm8HAsr0u7
12. दक्षिण: जी–20: भारत कैसे वैश्विक दक्षिण की आवाज बनकर उभरा – द इकोनॉमिक टाइम्स https://share.google/Ccs8PVfV2eeMz4Uiw
13. https://share.google/Alb8PFZOXz5KoQHmW

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Access and Aspiration: Higher Education and The Class Divide in Professor Vikas Sharma's *Tomorrow and Tomorrow and Tomorrow*

Sapna Singh*

***Research Scholar (English) IIMT University, Meerut (U.P.) INDIA**

Abstract : Professor Vikas Sharma is a social writer and he often touches upon social themes. In many of his works, he has attached the theme of class division and the importance of education. In his novel, *Tomorrow and Tomorrow and Tomorrow,* he talks about how class distinction affects the access to higher education. This novel is based in the small town of Panipat. Through a wide range of characters that come from different backgrounds, he talks about the journey of different people who aspire for higher education. He also talks about the difference between characters who choose different paths to fulfill their aspirations of upward mobility. This research paper presents a close analysis of the novel in an attempt to highlight how the lack of educational institutions, financial barriers, and the commodification of education, create impediments for people who come from economically weaker backgrounds. This paper also investigates the rule of education as a tool of aspiration and also as a marker of privilege and exclusion. Professor Vikas Sharma also throws light on the moral compromises, psychological burdens, and fractured ambitions that arise when education becomes accessible.

Keywords: education, exclusion, infrastructure, development, class differences, intellectual spaces, educational institutions.

Introduction - Professor Vikas Sharma has authored a number of novels based on themes concerning Indian society, thereby establishing him as a contemporary social writer. His novels touch upon the aspects of a common man's daily lives. This makes his works highly relevant and relatable for the masses. The novel, *Tomorrow and Tomorrow and Tomorrow,* is also structured on the same lines. It is constructed in a way that explores powerful themes of social mobility, class difference, and education, in postcolonial India. The novel is set in the small town of Panipat. Panipat is not a developed town or a metropolitan city. At the same time, it is also not completely immersed in traditional values. It seems to be stuck between tradition and transition. Professor Vikas Sharma has woven this novel around characters that come from a middle-class background. Characters like Pritesh, Yukti, Dipali, etc. portray the complexity of the lives of middle-class people in India. For these people, education is a tool for change. They aspire to get educated as a way to change their lives and climb the social ladder. It also operates as a status symbol. The novel comments on the inequalities that prevail in the system that create a wide gap between the number of people who aspire for higher education and the number of people who are actually able to realize this aspiration. Professor Vikas Sharma constantly refers to mythological narratives, famous political thinkers, and examples from contemporary life to add to the discourse. The novel presents a very rich commentary on India's education divide. The novel addresses important questions about class struggle and the attempts made by people like Pritesh to climb the social ladder through education. Despite being talented, brilliant, and highly dedicated, Pritesh struggles to get higher education because of his family's financial situation. Professor Vikas Sharma also comments on the need to walk on the right path. Through the example of Ajoy, Professor Vikas Sharma delivers the message that there are no shortcuts to success and hard work is the only way to change your life.

Education And Class Distinction In Panipat: Professor Vikas Sharma uses the town of Panipat as a symbol of industrial rebirth in this novel. The small town of Panipat serves as the backdrop in this novel. The town is not very big and it is still under the process of industrialization. It is historically known for its battlefield. However, in the modern day, it has gained recognition for its blanket industry. As a centre for the trade of blankets, carpets, bedsheets, and other textiles, it provides employment to the residents. This industrial growth also plays a very important role in the novel.

While it brings with it modest prosperity, industrialization also widens the gap between people as it deepens class stratification. While the town has definitely progressed a lot, not everyone has benefitted from the same. Only a small portion of the population has reaped the true benefits of this progress while the rest continue to sustain themselves and their families within limited means.

Just like industrialization, the effects of urbanization are also not uniform. Not everyone has benefited from urbanization. While some areas of the town have developed a lot, the major part of the town continues to reside in smaller towns without any real change or progress. This reflects how prosperity is often selective. Only a small portion of the people actually benefit from drastic changes like these while the majority continues to live in the same, and sometimes even worse, conditions. The infrastructure of the whole town speaks volumes about this disparity. Public colleges, for example, offer very limited opportunities, while private ventures serving the rich people offer a wide range of facilities. This shows how economic growth does not always guarantee inclusivity or overall development. Despite progressing so much economically, the town of Panipat fails to offer important services like higher education to people like Pritesh who need it the most. Professor Vikas Sharma also highlights how education does not operate as a tool to attain enlightenment; it is often a marker of class privilege and social capital. Pritesh is an intelligent and hard-working student. This is evident from his marks and his dedication towards higher education. He wants to go to college and pursue an M.A. in English. However, it is not easy for him to do despite being a brilliant student. Because of his financial conditions, and the lack of colleges in Panipat that offer higher education, Pritesh is forced to accept the harsh reality that he can not gain higher education. Professor Vikas Sharma also presents a contrast in the form of his classmates- Yukti and Dipali. Despite being uninterested in higher education, they are able to go to a different city for education. This is all because of their family's elite status. Their families are well-off and they can send them to different cities, rent apartments for them, and even pay for private colleges. Their family status also enables them to be more confident and comfortable with the culture of big colleges and educational institutions. They have access to better facilities and exposure to a lot of opportunities. On the other hand, Pritesh, despite being more deserving than both of them combined, is unable to go to a decent college that offers the course that he wants to do, let alone go to a college of his choice, solely because of his weak financial condition. He feels the clear divide between him and his friends.

"I knew the gap that existed between me and my friends like Yukti, Dipali and Naini. Yukti's parents used to earn a lot of money from their nursing home and her mother Anuradha was M.S. and hence known in the town as the best surgeon. I had accompanied her to Ambala, Kurukshetra, Karnal, Jind, Sonepat etc. to take part in the seminars, debates and Quiz contests. She needed company and security and I needed somebody to pay for travelling expenses. She had studied in Sharma Convent School since childhood with Dipali and Naini. Kamal Naini (18) was known as the best player of basketball and tennis and I had no interest in these games. Often I watched the rich guys playing tennis in the Downtown Club and hoped Someday I too would play like them."

(Tomorrow and Tomorrow and Tomorrow, 12)

Here, education operates as a gateway to both status and exclusion. Students like Pritesh come from poorer families and struggle with access to basic facilities. On the other hand, rich students use education as a lifestyle choice. They join courses and programs they are not even interested in, only as a symbol of status and social class. This disparity grows even more because of the commercialization of education. Rich students like Yukti spend a lot of money just to obtain notes that she does not even study with interest or dedication. Pritesh, on the other hand, uses material from public library books to prepare his notes. In towns like Panipat, education is not just a right or a basic necessity; it is more like a social filter that divides the rich from the poor.

Access To Education And Aspirations: This novel starts with Pritesh and his desire to gain higher education. He is the protagonist of the novel and he represents the lower middle class students in India. He struggles a lot as his aspirations and much larger than what his circumstances can provide. He is not rich by any means and his father barely earns enough to support the entire family. In such a situation, Pritesh feels that his dream of pursuing an MA in English will most likely remain a dream. He does not merely want to pursue education as an academic ambition; instead, for him, it represents a desire to move upwards in society and attain intellectual fulfillment. His family's already struggling financial background and the lack of colleges to provide post graduate education in his hometown, add to his struggle. He is aware of his family's financial situation and he realises that there is no way that his parents can send him to a different city and pay his college fees as well as lodging expenses just for his educational aspirations. His father is a subordinate clerk and his income is very limited. Because of a lack of financial resources, his father fails to see the feasibility of funding further education. For this family, even daily survival is a huge challenge in itself. In such circumstances, it is not possible for them to fund their child's higher education. Pritesh is also aware of this situation. It is true that he aspires to gain higher education and become a scholar, but he also realises that he must navigate his dreams in a reality where ambition is often dismissed as impractical and unachievable. This internal conflict is not unique to him. It represents a wider phenomena and Indian society. Many people like Pritesh

have high aspirations but because of weak support systems and infrastructure, they are often forced to settle for less.

Professor Vikas Sharma also comments on the inequality in access to education. Panipat has developed a lot because of the industrial revolution. However, the town still lacks institutions for higher education. This forces students like Pritesh to move out of their hometown to other cities like Ambala or Amritsar for education. This movement causes a lot of burden on their family in the form of relocation, hostel fees, and academic expenses. It is not possible for everyone to afford this. In the end, it becomes impossible for people like Pritesh to gain higher education as their families often live from paycheck to paycheck. On the other hand, people like Yukti and Dipali do not have to think about all these things at all. They face no obstacles of any sort and exercise a great level of freedom in choosing between universities, renting apartments, and travelling for extra curricular activities. This gives them a privilege over students like Pritesh. Because of their family's wealth, they have better access to education and other facilities. This highlights how higher education is less about talent, interest, or intellect, but more about resources, networking, and inherited advantage.

Education also serves as a tool for social mobility and legitimacy. For people like Pritesh, education is not just about ambition or aspiration, it is required to change their social status. Pritesh is very intelligent and interested in studies. Because of his intellect and talent, he is able to make his place in intellectual circles. However, he can do so only when he is able to afford the cost of entry, which is not easy at all. On the other hand, Yukti effortlessly moves through such intellectual circles and spaces. She does not have to think twice before deciding to move to a different city to gain education. She even offers to loan some money to Pritesh for his education. This highlights how education can become a transactional privilege which is offered to the aspirational by the privileged. Educational access is also attached with a certain number of social implications. Pritesh views education as a tool to earn legitimacy and social respect. He struggles to keep up with academically elite peers and maintain his image as a scholar. On the other hand, his younger brother, Ajoy, seeks money and financial stability. He abandons education and enters the world of gold smuggling. This gives him a lot of money in a very short period of time. However, he fails to earn legitimacy or respect.

Educational goals are also affected by cultural expectations and family dynamics. Within the institution of the family, aspirations of education are often based on economic necessity and gender roles. Pritesh's parents somewhat acknowledge and appreciate his desire to study. It is true that it is always subject to their financial means. However, the picture is entirely different for his sisters. They are tied to marriage prospects instead of education or academic ambition. This highlights how access to education is also severely affected by gender roles in our society. The difference between Pritesh and his siblings highlights the class struggle within Indian families. All of them want to improve their social status and financial condition. However, the path that is chosen for them is very different. Pritesh turns out to be the scholar while Ajoy becomes the businessman. Their sister, Toshi, remains confined in the four walls of her house. This highlights how economic class often restricts the freedom of choice. People like Pritesh do not form a part of the urban elite class, have to struggle a lot for education, while privileged people like Yukti and Dipali gain education as a luxury.

"To my surprise more than 40% students took education as a luxury as most of them hailed from rich families. Nearly 20% of the students were pretty serious and remained dedicated listeners in the lecture halls. They wanted to achieve their goal and a few were interested in I.A.S. and I.P.S. competitions."
(Tomorrow and Tomorrow and Tomorrow, 20)

Structural Barriers And Mobility : Professor Vikas Sharma uses the lack of educational institutions in Panipat to highlight structural barriers that make it difficult for people like Pritesh to climb the social ladder. Panipat has developed a lot and has become economically active and semi-urbanized. Despite this, the town does not provide good educational institutions. There are no postgraduate colleges that offer an MA in English. Because of this, students who want to gain higher education have to consider migration as the only option to realise their dreams. This becomes a source of tension for many people. The same happens to Pritesh. He is very willing to pursue an EMI in English, but he is also aware of the fact that we cannot do so while staying in Panipat. The weak academic structure of the city forces him to compromise his ambition. His friends plan to move to cities like Ambala or Amritsar for higher education and suggest he do the same. However, this presents another challenge for him. Contrary to popular belief, migration is not just geographical; it involves high economic as well as emotional costs. If Pritesh decides to leave Panipat and move to Amritsar or Ambala, he will have to arrange for a lot of capital. This is because he will have to settle down in a new place where he will require rent, food, books, etc. Pritesh knows his family cannot afford this. This is why he hesitates to gain higher education or promise anything to his friends. This highlights a larger truth in the smaller towns of India- while education is available, it is not available locally, affordably, or equitably. Pratibha Tyagi and Anshu Devi write in their research paper titled, *"Tomorrow And Tomorrow And Tomorrow: How Poverty And Wealth Dictate The Lives Of People":*

"He had an aim in his life and he was devoted to it. Unfortunately, he had to rethink his career plans because of his poor financial condition. He could not go to his dream college not because he was not intelligent enough but because he could not afford the

cost of higher education. Education is a thing that so many people take for granted. Yet, there are so many people who yearn for it but cannot afford it. This is what poverty does to people. What Pritesh wanted was not a huge luxury or anything of the sort; he simply wanted to pursue higher education so that he could become an assistant professor. But it was not easy for him in any sense as he had to think about his family's financial condition as well."

(Virtues and Vices: The Moral Tug-of-War in Vikas Sharma's Writings, 5)

As a student, Pritesh does not just have to face the cost of education in the form of tuition fees. Education requires multiple expenses like rent, study materials, daily sustenance, etc. All of these are things that his family cannot afford. While his friend, Yukti, offers to help him by sharing a flat with him, Pritesh knows that this comes with a lot of emotional burden as well as the risk of dependency and imbalance in power. Professor Vikas Sharma also talks about the moral complexity in a student's life when he enters hostel or off-campus living cultures. Yukti talks about the scandals that take place in hostels and expresses her desire to rent a private flat instead. For a number of students, especially women, hostel life is a site of surveillance, insecurity, and social suspicion. On the other hand, male students like Prite who come from poor backgrounds feel alienated and inferior in elite academic spaces. This pushes them towards moral compromise and emotional isolation. Professor Vikas Sharma highlights how educational institutions create environments that give rise to a number of inequalities instead of overcoming or eliminating them. Education is often talked about as a liberating force. However, in reality, it is used as an instrument of exclusion that comes with a number of social costs.

Professor Vikas Sharma also offers a contrast to Pritesh and his dedication to earning a place in intellectual circles. His younger brother, Ajoy, is not like him in any way. He lacks an interest in studies and soon quits formal education to pursue a life of illegal trade and smuggling. At a very young age, he is employed by a man named Vikrant. Vikrant is a gold merchant. He offers Ajoy a huge sum of money in exchange for his contribution to smuggling. Ajoy soon turns into a smuggler of gold, and when Vikrant moves to Delhi in search of a better life and social status, Ajoy takes over his shop and becomes an independent businessman. His life is not governed by books or knowledge; instead, he works on risk and opportunism. At the young age of 17, Ajoy has already become a millionaire. This is very ironic as his elder brother, Pritesh, struggles to fund his education, while his younger brother achieves great wealth by engaging in criminal activities. While Ajoy earns money, he fails to earn a good lifestyle. He soon falls prey to evils like drinking, prostitution, etc. He fails to keep up with his own lifestyle and soon finds himself in the hospital after a life-threatening accident. He barely survives but requires multiple surgeries. This symbolizes the crash of his short-lived dream of quick wealth. His story is a cautionary tale. It delivers the message that in the absence of accessible education, out of frustration and a pressing need to get rich, poor people often resort to illegal ways and shortcuts to fulfill their dreams. These shortcuts often destroy their entire lives. Ajoy's fall is not just symbolic of an ethical crash, but it also highlights how unchecked ambition for economic advancement can be fatal. He takes a leap towards mobility without morality, and this proves to be very unsustainable. Kamal Kant Sharma writes in his book:

"Through Ajoy and Vikrant, the novel explores the dark reality of smuggling. Ajoy's greed for money leads him down an illegal path, revealing how financial desperation and the lure of wealth can push people into crime. His involvement in smuggling is not an isolated case but rather a reflection of how many individuals fall into such traps in real life."

(Vikas Sharma and His Literary Works: Defictionalising the Reality, 149)

The Commodification Of Education: Professor Vikas Sharma also addresses the modern trend of treating education as a commodity. He criticizes this trend. In India, the failure of public institutions to meet the growing qualitative and quantitative demands of the students is a major issue. Private institutions often claim to fill this gap by providing opportunities to students. However, this comes at a hefty price. The institution that Pritesh's friends attend for their higher education represents this trend. The annual fees in this college are very high. In a way, such institutions cater to the wealthy elite class. This makes education purchasable instead of accessible. Education no longer remains a right and turns into a profit-based enterprise. Students from different social and financial backgrounds have very different experiences. While the rich students are able to enjoy their college life while also being able to access multiple opportunities, poor students like Pritesh struggle to make ends meet and have to rely on public colleges. These private institutions promote an exclusionary academic culture where merit means nothing without money. Professor Ajay Shukla writes in his research paper titled *"The Prominence of Education as Depicted in the Novel "Tomorrow and Tomorrow and Tomorrow":*

"Moreover, "Tomorrow and Tomorrow and Tomorrow" sheds light on the barriers that hinder marginalized communities from accessing education. It addresses socio-economic constraints, limited infrastructure, and the educational disparities faced by rural and backward areas. By doing so, the novel raises awareness about the urgent need to address these inequalities and inclusive education for all.

Through the representation of Pritesh's family, the novel underscores the far reaching impact of education. It showcases how education can serve as a

pathway to socio-economic mobility, shaping aspirations, and influencing family dynamics."
(Dynamic Narrative Concerns in the Novels of Vikas Sharma, 58)

Higher education is often inaccessible for students like Pritesh. It operates as a site for class-based exclusion. It does so financially as well as culturally. Wealthy students are more groomed, confident, and familiar with academic norms. Their families possess the means to give them a number of facilities from a young age, which transform them into more confident individuals. Pritesh's friends enjoy their lives and feel free to talk about seminars, research topics, novels, etc., while Pritesh struggles to pay rent and continue his education. This difference leads to academic elitism as poor students get marginalized. Their voices are often suppressed and unheard in intellectual circles. Professor Vikas Sharma criticizes this effect of education that creates a two-tier system.

Conclusion : Hence, it is clear that this novel exposes the deeply entrenched class inequalities in Indian society that govern access to higher education. While characters like Pritesh represent the endless struggle for academic advancement and upward mobility in a society that has been characterised by poverty, institutional failure, and emotional pressure, students like Yukti are able to access higher education and other opportunities without any difficulty because of their privilege and wealth. In such a situation, people like Ajoy, who are not very determined, fall prey to the deceiving idea of quick wealth through illegal trade. This exposes the dangerous steps that some people take because the educational system shuts its doors on them. This novel is not only a tale of individual induction but it is a social documentary. It calls for urgent attention to educational policy and equality. Professor Vikas Sharma suggests that true access to education does not mean mere physical enrollment. It should extend to dignity, affordability, and meaningful opportunity for all people regardless of their social class and economic background.

References:-

1. SHARMA, VIKAS. *Tomorrow and Tomorrow and Tomorrow*. DIAMOND BOOKS. 2023.
2. SHARMA, KAMAL KANT. *Vikas Sharma and His Literary Works: Defictionalising the Reality*. AUTHORS PRESS. 2025.
3. SHUKLA, AJAY. *The Prominence of Education as Depicted in the Novel "Tomorrow and Tomorrow and Tomorrow".* In SHARMA, PAYAL. D*ynamic Narrative Concerns in the Novels of Vikas Sharma*. DOABA HOUSE. 2024.
4. TYAGI, PRATIBHA and DEVI, ANSHU. *Tomorrow And Tomorrow And Tomorrow: How Poverty And Wealth Dictate The Lives Of People.* In KHURANA, MONIKA and SHARMA, KAMAL KANT. *Virtues and Vices: The Moral Tug-of-war in Vikas Sharma's Writing.* B.R. PUBLISHING CORPORATION. 2025.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Ethnophytological Magic Therapies Used by Tribal People of Sehore District of M.P.

Mrs. Madhurima Tiwari*

***Assistant Professor (Botany) PMCoE C.S.A. Govt. P.G. Lead College, Sehore (M.P.) INDIA**

Abstract: Tribal communities in Madhya Pradesh, India, including those in the Sehore district, possess a rich tradition of utilizing medicinal plants for both treatment and prevention of various illnesses and ailments. Their knowledge, often incorporating a belief in the "magicotherapeutic properties" of plants, has been passed down orally through generations. However, this valuable traditional knowledge faces the risk of being lost due to several factors, including the oral nature of its transmission and a decline in interest among younger generations. In an effort to preserve and document this invaluable heritage, an attempt has been made to document 32 such ethnophytomagico-therapeutics belonging to 26 families, along with 41 folk-claims. Studies on the ethnobotany of Sehore have revealed that tribal communities utilize plants to address a wide range of health issues, including skin diseases, fever, stomach disorders, respiratory problems, snake bites, scorpion stings, gynecological issues, and wound healing. Documenting this traditional knowledge is crucial for several reasons: it preserves a unique cultural heritage, enables wider dissemination of knowledge, facilitates research and development of new drugs, and empowers local communities to make informed decisions about their healthcare and traditional practices. Documentation efforts also play a vital role in protecting this knowledge from biopiracy and ensuring that communities are recognized and benefit from their intellectual property. The present paper reports 32 ethno-medicinal plants of Sehore district of M.P. which is used by the villagers .
Keywords : Tribe, Ethnophytomagicotherapeutics, Ethnobotany, ethno-medicinal plants.

Introduction - Ethnophytomagicotherapeutics are plants which are when touched, kept within, worn or tied on body give magic like effect in cure and prevention of various diseases and troubles (Kumar, 2004). India is the country of villages. More than seventy percent population of India resides in villages. Villagers, especially scheduled tribes generally live in surrounding flora and fauna of ecofriendly nature with peace and harmony. They have enormous knowledge about medicinal uses of plants. Ethnomedicines attribute a methodology to use medicinal plant, differrent diagnostic ways and a combination of two or more herbs together (Kanta et al. 2018). The practice of oral tradition is still prevalent among tribes. They have strong believe in supernatural power of plants. This knowledge is undocumented except Singh and Maheshwari (1989), Pandey et al. (1999), Singh and Singh (2001), Kumar et al. (2003a,b, 2005 and 2006) and transmitted through oral traditions from generation to generation. Similarly observations on ethno-medicinal use of herbal plants based on different ethnic communities of the country have been reported earlier which emphasized the need of such studies for exploring more and more hidden informations. Saxena Lal et al., (1994), Malviya et al., (2008), Manjunath et al., (2006), Patel (2007).Shetty et al., (2007) have evaluated the wound healing effect of alcoholic extract of *Ocimum sanctum*. Recently, Sharma et al., (2010) have also reported the Ethnomedicinal study of edible plants used by Gond and Bharia tribes of Chhindwara district of M.P. Looking to the wide occurrence of burn wound in the modern societies and the ointments used showing irritation on skin. Recently due to various reasons both natural resources (forest and vegetation) and tribal cultures are depleting at an alarming rate, therefore, the present study was undertaken for documentation.

Study Area : Sehore stands in the foothills of Vindhyachal Range in the middle of Malwa region. According to the 2011 census Sehore district has a population of 1,311,332. Scheduled Tribes make up 20.69% and 11.10% of the population. Sehore district is 39 km away from state capital Bhopal towards south and situated on Bhopal- Indore highway. District area is 6578 kmsq The District lies between 22°31' to 22°40' North latitude and 76 ^{0}22' to 78^{0}08' East longitude. Its hight from sea-level is 1500 ft-2000ft. It is surrounded by 7 districts i.e. Bhopal, Raisen, Hoshangabad, Dewas, Shajapur, Rajgarh, and Harda. The lacquer bangles of the district are a coveted adornment of the Gond , Bhiala,

Nad, Korku ,Keer, Paradhi tribes of the region. Although these people are very poor but they have their unique culture and life style. They depend on the plants for day-to-day medicinal purposes. There is only one territorial forest division in the district namely Sehore forest division, which has been selected for GIM. The forests of Sehore district are Tropical Dry Deciduous forest. Teak is a major species of the forest and a large area belongs to teak forest. Rest of the forests are mixed forest with rich biodiversity .

Methodology: Extensive and intensive survey were made in tribal areas of sehore district between 2023-2024 to collect the Ethno-medicinal information and herbarium specimen. Altogether, 28 villages were covered during the present study. The plant listed in table 1 have been collected after one year survey of the remote villages of Sehore district and the knowledge gained from the local peoples. All the ethnophytomagicotherapeutics and associated folk-claims were collected either by contacting the local healers, village headmen, elderly persons, and persons having thorough knowledge of plants or influences during field work. After identifying the plants having magicotherapeutic value knowledgeable persons were interviewed for various ethnobotanical aspects i.e. utilization, domestication, conservation and phytoworship practices for each plant and recorded in the field note book. Residents of different villages confirmed the information's gathered. The methodology described by Rao (1989) was followed. The collected plant specimens were made into herbarium following Jain and Rao (1967) and identified with the help of various flora and literatures (Singh, 1991; Duthie, 1960; Kanjilal, 1933 and Shukla, 1991)

Result And Discussion: During present study, 32 ethnophytomagicotherapeutics with 41 folk-claims were documented in form of table which are enumerated alphabetically according to their botanical names followed by family in parenthesis, vernacular name (V), special feature (S.F.) and utilization.

(Table see in next page)

Discussion: These tribes have superstitious believes on some plants. During present study, it was observed that 32 plant species are touched/ tied on the body or worn around the neck to cure various diseases and ailments. These plant species are used to prevent abortion, to achieve easy delivery, eye problem, fever, evil eyes and evil spirits, antidote for snake and scorpion bite, sun stroke, Arthritis, Hydrocoele, toothache, cough, to increase sexual power of man, dysentery, Jaundice, to test the sex of progeny, to induce sleep and respiratory problems.

In recent times, the relevance of ethnopharmacology is increasing day by day. Medicinal plant drug formulations are the symbol of purity and safety when compared with synthetic drugs. The specific mechanisms by which these plants exert their effects are currently unknown and require further scientific investigation. Chemical analysis is crucial to identify and isolate bioactive compounds within these plants, potentially leading to new drug discoveries.

This research highlights the intersection of traditional knowledge, cultural beliefs, and the potential for scientific advancements. The importance of ethnopharmacology, the study of traditional medicine's biological and pharmacological effects, is increasing in this context. It can serve as a bridge between sustainable development and biodiversity conservation, ensuring the preservation and responsible utilization of these valuable plant resources for future generations.

These valuable medicinal plants necessitate conservation efforts and responsible utilization. Exploring their ethnopharmacological uses and conducting new phytochemical studies could lead to discovering novel bioactive compounds. Planting these medicinal species in forests and community areas is vital for their conservation and for ensuring sustainable development.

References:-

1. Duthie, JF, (1960) Flora of upper Gangetic plain and of the adjacent Sivalic and Sub-Himalayan Tract. BSI, Calcutta 2 Vol..
2. Jain, SK and Rao, RR (1967) A handbook of field and herbarium methods. Today and Tomorrow Printers and Publishers, New Delhi, ...: 33-58.
3. Kanjilal (1933) Forest flora of Pilibhit, Oudha, Gorakhpur and Bundelkhand. Govt. Printing Press, Allahabad.
4. Kanta C, Prakash Sharma I, Ahmad Shiekh M (2018) Ethnobotanical studies on medicinal plants of Langate area. J Med PlantsStud 6:94–97
5. Rao, RR (1989) Methods and techniques in ethobotanical study and research: some basic consideration, in Method and approaches in Ethnobotany edited by S.K. Jain Society of Ethnobotanist, Lucknow, ...: 13-23.
6. Singh, KK and Maheshwari, JK (1989) Traditioal herbal remedies among the Tharus of Baharaich district, U.P., India, J. Ethnobotany, 1: 51-56.

S.	Botanical Name, Family, Vernacular Name	Magicotherapeutic Uses	Images
1.	*Achyranthes aspera L.* (Amaranthaceae), V: Latzeera, Lahchichira	Leaf, collected only on Sunday, are mixed with 'gur' to form pills and given orally twice a day in intermittent fever.Root, tied with the left side hair of women in labour to achieve easy delivery and also tied in the waist to cure dysentery Root piece, worn in right year to keep scorpions away.	
2.	*Aegle mormelos* (L). Corr. (Rutaceae), V: Bel	Allium cepa L. (Liliaceae), V: Piyaz Twig with fruit intact; hung on the southern wall of home after delivery to keep evil spirits away. Wood; kept on burning at the door of delivery room to protect the new born and mother from evil spirits.	
3.	*Allium cepa* L. (Liliaceae), V: Piyaz	Bulb is said to prevent from sun stroke (Loo) when kept within in summer	
4.	*A. sativum* L.(Liliaceae) V: Lahsun	Bulb; base of 7 bulblets are, touched with sty one by one and kept in shade to cure sty of eye.	
5.	*Azadirachta indica* A. Juss. (Meliaceae), V: Neem	Wood; used to fumagate vagina on Sunday or Tuesday as protective measure against abortion. Tree trunk; embraced 7 times by scorpion stinged victim to make poison ineffective	
6.	*Bacopa monnieri*(L) Penn. syn. Herpestis monnieri(L) HBK (Scrophulariaceae) V : Brahmi	A poultice of boiled plant is applied externally on chest of child to cure cough.	

7.	*Beta vulgaris* L. (Chenopodiaceae), V: Chukander	Leaf; 2-3 drops juice put into nostrils of pregnant woman on Tuesday morning, to ascertain the sex of child in her womb. If she sneezes, the child is male otherwise female.	
8.	*Brassica campestris L*. (Brassicaceae), V: Sarson	Seed; 5 gm with 'lohbaan' is used to fumigate victim suffering from evil eyes on Sunday and Tuesday.	
9.	*Butea monosperma* (Lamk.) Taub. (Fabaceae), V: Palas, Dhak	Dried flowers; soaked in water and this water is used to take bath as preventive measure against sunstroke.	
10.	*Calotropis gigantea (L.)* Br., (Asclepiadaceae), V: Safed Madar, Akahuwa	Leaf; two and half put on forehead of woman in labour to achieve easy delivery.	
11.	*Datura metel* L. (Solanaceae), V: Dhatoora	Seeds; wrapped into cloth made into belt and tied on waist of pregnant woman, to prevent abortion.	
12.	*Euphorbia antiquorum L*. (Euphorbiaceae), V: Sehund	Latex; applied over navel to achieve easy delivery	

13.	*Emblica officinalis* Gaertn. Syn. Phyllanthus emblica L. (Euphorbiaceae),	A small piece of twig is worn into neck on Tuesday to cure toothache	
14.	*Holoptelea integrifolia* (Roxb.) Planch. (Ulmaceae), V: Chilbil	Stem bark; made into pouch, tied on arm to cure hydrocoele.	
15.	*Loranthus longiflorus Desr.* (Loranthaceae), V: Banda.	Plant tied with door to protect children from evil eyes.	
16.	*Launaea procumbens* (Roxb.) Ram. and Raj. (Asteraceae), V: Bangobhi,	Leaf; paste applied over forehead of children to bring down fever	
17.	*Madhuca indica* Gmel. Syn. Bassia latifolia Roxb. (Sapotaceae), V: Mahua	Water, rice, flower and sweets are offered and seven round of tree are taken by arthritis patient with request to cure his\her disease on Monday morning.	
18.	*Mangifera indica* L. (Anacardiaceae), V: Aam,	Seven Leaves plucked from the tree along with leaf base and leaf base are touched 7 times with sty. These leaves are put under the shade. As the leaves dry the sty will vanished. (ii) Inflorescence; massages on hands on 'Basant Panchmi day', as protective measure against scorpion sting and snakebite for one year. (94	
19.	*Mimosa pudica* L. (Mimosaceae), V: Chhui-mui	Root; put upon head of bitterly weeping sleepless child for quick relief	

20.	*Nyctanthes arbor-tristis* L. (Oleaceae), V: Harsinghar	Leaf; paste is applied on forehead of children in fever.	
21.	*Nymphaea pubescens L.* (Nymphaeaceae), V: Chhota Kamal,	Root; made into wreath and tied on waist of pregnant woman to avoid abortion.	
22.	*Ocimum canum Sims* (Lamiaceae), V: Bantulsi	Stem; chopped into pieces to form chaplet and worn into neck to cure respiratory problems.	
23.	*Ocimum sanctum* L., (Lamiaceae), V: Tulsi,	Leaf; paste is applied over navel of the mother to protect the baby in womb from evil eyes.	
24.	*Ricinus communis L.* (Euphorbiaceae), V: Andi, Rendi	Slightly warmed leaf; coated with mustered oil is applied externally on chest and stomach to cure pneumonia.	
25.	*Solanum surattense* Burm , f. syn. Solanum xanthocarpum Sch and wandl. (solanaceae), V: Bhatkataiya	Flower; stamens of one flower given orally at onset of rainy season to prevent conjuctivities in that year.	

26.	*Streblus asper* Lour. (Moraceae), V: Sihoor,	Tender twig; made into wreath by wrapping threads and worn into neck to cure chronic conjunctivitis and inflammatory eyes.	
27.	*Syzygium heyneanum* wall. (Myrtaceae) V: Kat-Jamun, Rai- Jamun, Madanua	Stem bark; decoction is used to take bath as preventive measure from sunstroke.	
28.	*Tamarindus indica L.* (Caesalpiniaceae), V: Imli	Tender twig; made into ring and worn into left index finger of woman in labour to achieve easy delivery.	
29.	*Tinospora cordifolia (*Willd.) Miers., (Menispermaceae), V: Gurch, Giloy	Aerial root; cut into pieces, made into chaplet by wrapping string and worn into neck on Tuesday or Sunday to Cure jaundice. (ii) Aerial root; chaplet worn in neck as protective against snakebite.	
30.	*Trianthema portulacastrum L*. Syn. T. monogyna L. (Aizoaceae),V: Gadapunna	Root; tied in left hand on Tuesday or Sunday to cure malaria	
31.	*Xanthium strumarium L.* (Asteraceae), V: Kuthuru	Leaf; folded and tied at wrist of left hand to cure malarial. (ii) Seed; made into wreath and worn into neck of children on Thursday or Sunday to cure chronic conjunctivitis and inflammation of eye.	

32.	*Ziziphus mauritiana Lamk.* (Rhamnaceae), V: Ber	Leaf; 7 plucked from the tree along with leaf base and leaf base of each leaf is touched 7 times with sty and put under the shade. As the leaves dry the sty will vanishes.	

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

महाराजा तुकोजीराव होल्कर द्वितीय का व्यक्तित्व : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. मंजुला निंगवाल*

* सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (इतिहास) भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – मध्य भारत के इतिहास में होल्करवंश का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यह शोध-पत्र इन्दौर के ग्यारहवें शासक महाराजा तुकोजीराव (तुकोजी राव) होल्कर द्वितीय (1835-1886) के व्यक्तित्व का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। उनके व्यक्तित्व को उनके पालन-पोषण, प्रशासनिक निर्णयों, राजनीतिक नीतियों और सांस्कृतिक संरक्षण के आधार पर समझा गया है। उपलब्ध स्रोतों से यह स्पष्ट होता है कि तुकोजीराव द्वितीय परंपरागत दरबारी संवेदनशीलता और व्यावहारिक प्रशासनिक दृष्टिकोण दोनों को साथ लेकर चलने वाले शासक थे। उनका व्यक्तित्व संयम, निष्ठा और क्रमिक सुधारों की प्रवृत्ति से परिपूर्ण था, जिसने उन्नीसवीं शताब्दी में इन्दौर के आधुनिकीकरण को दिशा दी।

शब्द कुंजी– तुकोजीराव होलकर द्वितीय, इंदौर, होलकर वंश, व्यक्तित्व, प्रशासन, आधुनिकीकरण।

प्रस्तावना –इतिहास में शासकों का व्यक्तित्व अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है क्योंकि उनका स्वभाव और दृष्टिकोण ही राज्य की नीतियों और जनता के भाग्य को आकार देता है। तुकोजीराव होल्कर द्वितीय, जिनका जन्म 3 मई 1835 को हुआ और जिन्होंने 1844 से 1886 तक इन्दौर पर शासन किया, एक ऐसे कालखंड में सक्रिय रहे जब भारत में अंग्रेजी सत्ता स्थापित हो चुकी थी और देसी रियासतें अपनी स्वायत्तता और आधुनिकीकरण के बीच संतुलन साध रही थीं। यह शोध उनके व्यक्तित्व के उन पहलुओं को उजागर करता है जिनमें कृब्रिटिश सत्ता के प्रति निष्ठा, प्रशासनिक व्यवहारिकता, व्यक्तिगत परंपरावाद और सांस्कृतिक संरक्षणकृस्पष्ट दिखाई देते हैं।

तुकोजीराव द्वितीय का बाल्यकाल दरबारी राजनीति और अंग्रेजी रेजिडेंट की देखरेख में बीता। वे मात्र बारह वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठे, किन्तु वास्तविक शासन एक परिषद और ब्रिटिश रेजिडेंट के हाथों में रहा। लगभग सोलह वर्ष की आयु से उन्हें प्रशासन में सम्मिलित किया गया और 1852 में पूर्ण अधिकार प्राप्त हुए। इस दौर ने उनके व्यक्तित्व में सावधानी, सत्ता-संरचनाओं के प्रति आदर और परिवर्तन की बजाय क्रमिक सुधार की प्रवृत्ति विकसित की। तुकोजीराव होल्कर द्वितीय का व्यक्तित्व सरल,दयालु और न्यायप्रिय था।वे अपनी प्रजा की समस्याओं को सुनने के लिए अलग से समय निकालते थे।उनका व्यक्तित्वन केवल शासक की दृष्टि से अपितु मानवतावादी दृष्टिकोण से भी प्रेरक है।उनकी ईमानदारी तथा धर्मपरायणता उन्हें अन्य समकालीन शासकों से भिन्न बनाती हैं।

महाराजा कूटनीति में निपुण थे एवं अनावश्यक संघर्षों से अपने राज्य को दूर रखा।1857 के विद्रोह के समय तुकोजीराव ने ब्रिटिश सत्ता के प्रति निष्ठा बनाए रखी। जहाँ कई रियासतों ने विद्रोह का समर्थन किया, वहीं इन्दौर ने स्थिरता का मार्ग अपनाया। यह निर्णय उनके राजनीतिक यथार्थवाद और संयमी व्यक्तित्व को दर्शाता है। वे विद्रोह के अनिश्चित परिणामों की बजाय स्थिरता और राज्य के हित में अंग्रेजों के साथ सहयोग को अधिक उचित मानते थे। इस कारण उन्हें तत्कालीन अंग्रेजी प्रशासन से विश्वास और संरक्षण मिला, जिसने आगे चलकर इन्दौर में सुधारात्मक कदम उठाने की सुविधा दी।यद्यपि तुकोजीराव व्यक्तिगत जीवन में परंपरावादी थे, किन्तु प्रशासन में वे व्यवहारिक और सुधारवादी सिद्ध हुए। 1870 के दशक में उन्होंने प्रसिद्ध प्रशासक सर टी. माधवराव को इन्दौर का दीवान नियुक्त किया। यह निर्णय उनके व्यक्तित्व का एक महत्तवपूर्ण पहलू दर्शाता हैकृवे अपनी सीमाओं को पहचानते थे और प्रशासन को सुदृढ़ करने के लिए योग्य अधिकारियों को बुलाने से संकोच नहीं करते थे।इसके अतिरिक्त उन्होंने होल्कर राज्य रेलवे के निर्माण में निवेश किया, जिससे इन्दौर को बंबई प्रेसीडेंसी की रेल-व्यवस्था से जोड़ा गया। इस कदम ने व्यापार और उद्योग को गति दी।स्पष्ट है कि उनके व्यक्तित्व में दीर्घकालिक दृष्टि और आर्थिक-संस्थागत विकास की सोच विद्यमान थी। वे व्यक्तिगत रूप से अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर निगरानी रखते थे।

व्यक्तिगत जीवन में तुकोजीराव परंपरागत शासक थे। उन्होंने दरबार

की रीति-नीति और धार्मिक अनुष्ठानों को बनाए रखा। राजवाड़ा महल को उन्होंने होल्कर पहचान का केंद्र बनाए रखा। किन्तु साथ ही वे अंग्रेज अधिकारियों से मेलजोल रखते और कुछ प्रशासनिक सुधारों में पश्चिमी पद्धतियों को अपनाने के लिए भी तैयार रहते थे। उनका व्यक्तित्व इस प्रकार परंपरा और आधुनिकता का संतुलन प्रस्तुत करता है।वे धार्मिक प्रवृत्ति के शासक थे।वे मंदिरों का निर्माण और जीर्णोद्धार में रुचि रखते थे।इसके साथ ही उन्होंने साधु-संतों और विद्धानों को भी संरक्षण दिया।

तुकोजीराव ने नगर-प्रशासन और स्वच्छता के क्षेत्र में भी पहल की। इन्दौर में नगरपालिका व्यवस्था की प्रारम्भिक नींव उनके शासनकाल में रखी गई। स्वच्छता, कर-व्यवस्था और अनुशासनात्मक प्रबंधन पर उनका विशेष ध्यान था। इससे यह स्पष्ट होता है कि उनका व्यक्तित्व नियमप्रियता, अनुशासन और सार्वजनिक कल्याण की भावना से जुड़ा था। यही कारण है कि इन्दौर बाद के काल में 'स्वच्छता' की परंपरा को आगे बढ़ाने वाला नगर बना।

हालाँकि तुकोजीराव सुधारवादी थे, किन्तु उनकी नीतियाँ अत्यधिक सावधानीपूर्ण और सीमित थीं। वे अंग्रेजों के प्रति अधिक निष्ठावान रहे, जिससे गहन सामाजिक सुधारों की गति धीमी रही। फिर भी, उनके निर्णयों-जैसे रेलवे में निवेश और योग्य प्रशासकों की नियुक्तिकृने आगे चलकर इन्दौर के समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त किया। अत: उनके व्यक्तित्व को मध्यमार्गी, व्यवहारिक किन्तु परंपरावादी कहना उचित होगा।

निष्कर्ष- महाराजा तुकोजीराव होल्कर द्वितीय का व्यक्तित्व हमें एक ऐसे शासक के रूप में दिखाई देता है जिसने परंपरा और आधुनिकता का संतुलन साधते हुए राज्य को क्रमिक सुधारों की ओर अग्रसर किया। वे व्यक्तिगत रूप से परंपरावादी, राजनीतिक रूप से सतर्क और प्रशासनिक दृष्टि से व्यवहारिक एवं सुधारोन्मुख थे। उनकी नीतियों ने इन्दौर को स्थिरता, आर्थिक उन्नति और प्रशासनिक सुदृढ़ता प्रदान की। यद्यपि वे किसी क्रांतिकारी सुधारक की तरह नहीं उभरे, परन्तु उनकी सावधानीपूर्ण और व्यावहारिक दृष्टि ने इन्दौर के आधुनिकीकरण की ठोस नींव रखी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. बर्वे, मुन्तजिम बहादुर एम. डब्ल्यू., महाराजा तुकोजीराव होल्कर द्वितीय, शासक इन्दौर का जीवन (इन्दौर: होल्कर स्टेट प्रिंटिंग, 1925)।
2. 'होल्कर स्टेट रेलवे', एफ.आई.बी.आई.एस., विकिपीडिया ।
3. 'तुकोजीराव होल्कर द्वितीय, महाराजा इन्दौर (1835-86)',रॉयल कलेक्शन ट्रस्ट।
4. 'इन्दौर: इतिहास एवं धरोहर', स्मार्ट सिटी इन्दौर (आधिकारिक वेबसाइट)।
5. कलकत्ता, बॉम्बे और शिमला: बॉर्न एंड शेफर्ड (सक्रिय 1864-1900) -तुकोजीराव होल्कर द्वितीय, इंदौर के महाराजा (1835-86) https://share.google/QWgFmg3JBSQARuEYh
6. 'सर टी. माधवराव', विकिपीडिया

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका

डॉ. ममता पंवार*

* सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शास. माधव महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुआयामी है। सदियों से, ग्रामीण महिलाएं न केवल घर-परिवार संभालती आ रही हैं, बल्कि कृषि, पशुपालन, हस्तशिल्प और अन्य गैर-कृषि कार्यों में भी सक्रिय रूप से योगदान दे रही हैं। यह शोध पत्र ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की महत्वपूर्ण भागीदारी का विश्लेषण करता है। इसमें उनके आर्थिक योगदान, सामाजिक स्थिति, और सशक्तिकरण के मार्ग में आने वाली चुनौतियों का गहन अध्ययन किया गया है। यह पत्र दर्शाता है कि महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण केवल लैंगिक समानता का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह गरीबी उन्मूलन, खाद्य सुरक्षा और सतत ग्रामीण विकास के लिए भी एक आवश्यक शर्त है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ की एक बड़ी आबादी आज भी गाँवों में निवास करती है। इस ग्रामीण परिदृश्य में, महिलाएं अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। हालांकि, उनका योगदान अक्सर अदृश्य या कम करके आंका जाता है। पारंपरिक रूप से, उन्हें केवल गृहणी के रूप में देखा जाता है, जबकि वे खेतों में, मवेशियों की देखभाल में, और घरेलू उद्योगों में महत्वपूर्ण श्रम का योगदान करती हैं। भारत में, कृषि क्षेत्र में लगभग 80% ग्रामीण महिलाएं कार्यरत हैं। यह शोध पत्र इसी छिपे हुए योगदान को उजागर करने और उनके सशक्तिकरण की आवश्यकता पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं का योगदान– ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं का योगदान कई क्षेत्रों में फैला हुआ है। उनका श्रम न केवल परिवार की आय बढ़ाता है बल्कि समग्र आर्थिक विकास में भी सहायक होता है।

कृषि और संबद्ध क्षेत्र – कृषि ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा हिस्सा है और इसमें महिलाओं की भागीदारी बहुत अधिक है। वे बुवाई से लेकर कटाई, निराई, रोपण और फसल के बाद के कार्यों तक हर चरण में सक्रिय रहती हैं।

फसल उत्पादन– महिलाएं धान, गेहूं, बाजरा और अन्य फसलों के उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अक्सर, कृषि के कुछ कठिन कार्य, जैसे कि रोपण और निराई, मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा ही किए जाते हैं।

पशुपालन– गाय, भैंस, बकरी और मुर्गीपालन में भी महिलाओं की भूमिका प्रमुख होती है। वे दूध निकालना, चारे की व्यवस्था करना और पशुओं की देखभाल जैसे कार्य करती हैं। पशुपालन से होने वाली आय अक्सर घरेलू खर्चों और बच्चों की शिक्षा में लगाई जाती है।

मत्स्य पालन और वन उत्पाद– तटीय और वन-क्षेत्रों में, महिलाएं मछली पकड़ने, वन उत्पाद जैसे लकड़ी, औषधीय पौधों और तेंदू के पत्तो इकट्ठा करने में भी संलग्न होती हैं, जो उनके परिवार की आजीविका का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

गैर-कृषि गतिविधियां– कृषि के अलावा, महिलाएं कई गैर-कृषि गतिविधियों में भी शामिल हैं, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को विविधता प्रदान करती हैं।

हस्तशिल्प और कुटीर उद्योग– ग्रामीण महिलाएं मिट्टी के बर्तन, कपड़े, टोकरियाँ, खिलौने और अन्य हस्तशिल्प वस्तुएं बनाती हैं। ये उत्पाद स्थानीय बाजारों और कभी-कभी शहरी क्षेत्रों में भी बेचे जाते हैं, जिससे उन्हें अतिरिक्त आय होती है।

छोटे व्यवसाय और उद्यमिता– स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के उदय के साथ, ग्रामीण महिलाएं छोटे व्यवसाय शुरू कर रही हैं। वे मसाले पीसने, पापड़ बनाने, सिलाई-कढ़ाई और खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों को सफलतापूर्वक चला रही हैं। इन पहलों ने न केवल उनकी आय में वृद्धि की है, बल्कि उन्हें सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त भी बनाया है।

ग्रामीण महिलाओं के समक्ष चुनौतियां– महिलाओं के महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद, उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो उनके पूर्ण सशक्तिकरण में बाधा डालती हैं।

लैंगिक असमानता और सामाजिक मानदंड– पारंपरिक सामाजिक सोच अक्सर महिलाओं की भूमिका को घर तक सीमित रखती है। उन्हें अक्सर निर्णय लेने की प्रक्रिया से बाहर रखा जाता है और उनकी राय को महत्व नहीं दिया जाता।

शिक्षा और कौशल की कमी– ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों के लिए शिक्षा तक पहुंच सीमित है, जिससे वे कौशल विकास और तकनीकी प्रशिक्षण से वंचित रह जाती हैं। यह उन्हें कम-मजदूरी वाले, अकुशल कार्यों तक ही सीमित रखता है।

वित्तीय संसाधनों तक सीमित पहुंच– महिलाओं को अक्सर ऋण, बैंक खातों और अन्य वित्तीय सेवाओं तक पहुँचने में कठिनाई होती है, क्योंकि उनके पास संपत्ति या जमीन का स्वामित्व नहीं होता।

भूमि और संपत्ति का स्वामित्व– अधिकांश ग्रामीण महिलाओं के नाम पर कोई जमीन या संपत्ति नहीं होती। यह उन्हें आर्थिक रूप से कमजोर बनाता है और उन्हें कृषि या व्यवसाय के लिए ऋण लेने से रोकता है।

सशक्तिकरण के लिए सरकारी पहल और रणनीतियाँ – इन चुनौतियों

को दूर करने के लिए, भारत सरकार और विभिन्न संगठनों ने कई पहलें शुरू की हैं।

स्वयं सहायता समूह (SHGs)– SHGs ने ग्रामीण महिलाओं को एकजुट कर बचत करने, ऋण लेने और सामूहिक रूप से आर्थिक गतिविधियां शुरू करने में मदद की है। ये समूह महिलाओं को नेतृत्व कौशल और आत्मविश्वास विकसित करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं।

कौशल विकास कार्यक्रम– विभिन्न सरकारी योजनाएं, जैसे दीनदयाल अंत्योदय योजना–राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY NRLM), महिलाओं को उनके कौशल को बढ़ाने और उन्हें स्वरोजगार के लिए तैयार करने में मदद करती हैं।

संपत्ति का स्वामित्व– कुछ राज्यों ने महिलाओं के नाम पर संपत्ति खरीदने पर स्टांप शुल्क में छूट जैसे प्रोत्साहन दिए हैं। इससे उन्हें भूमि और संपत्ति का स्वामित्व प्राप्त करने में मदद मिलती है।

वित्तीय समावेशन– प्रधानमंत्री जन धन योजना (PMJDY) और अन्य वित्तीय समावेशन पहलों ने महिलाओं के लिए बैंक खाते खोलना और उन्हें बैंकिंग सेवाओं से जोड़ना आसान बना दिया है।

निष्कर्ष– ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका निर्विवाद रूप से महत्वपूर्ण है। वे न केवल परिवार की आय में वृद्धि करती हैं, बल्कि सामाजिक और सामुदायिक विकास को भी बढ़ावा देती हैं। हालांकि, उनके योगदान को पूरी तरह से साकार करने के लिए, हमें उनके सामने आने वाली चुनौतियों को दूर करने की आवश्यकता है।

भविष्य में, नीति निर्माताओं को महिलाओं के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, और वित्तीय संसाधनों तक पहुँच सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। भूमि और संपत्ति के स्वामित्व को बढ़ावा देना, कौशल विकास कार्यक्रमों को मजबूत करना और महिला–केंद्रित नीतियों को लागू करना महत्वपूर्ण है। जब ग्रामीण महिलाएं सशक्त होंगी, तो वे न केवल अपने परिवारों को गरीबी से बाहर निकालेंगी, बल्कि एक मजबूत और समृद्ध राष्ट्र के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देंगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. गुप्ता, एन. (2023). ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन. Journal of Research in Innovative Agricultural Review,14.
2. संयुक्त राष्ट्र महिला (UN Women). (2013). The role of women in rural development, food production and poverty eradication.
3. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO). (2017). Empowering Women in the Rural Economy.
4. चौधरी, ए., और शर्मा, एम. (2023). ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. शोध मंथन, खंड XIV,, अंक III.भारत सरकार. (2019).
5. दीनदयाल अंत्योदय योजना–राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM). ग्रामीण विकास मंत्रालय।
6. सिंह, आर. (2023). Women as Catalysts of Rural Economic Development. CDPP.
7. पटेल, एस., और देवी, पी. (2022). भारतीय ग्रामीण समाज में महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Intertwining Nature and Womanhood: An Ecofeminist Reading of Sara Joseph's Translated Novels

Shema S Palathar* **Dr. Anu Saxena****

* Research Scholar, Ravindranaath Taigore University, Raisen (M.P.) INDIA
** Professor, Ravindranaath Taigore University, Raisen (M.P.) INDIA

Abstract: Ecofeminism has emerged as a vital literary and philosophical framework that explores the intersection between ecological concerns and feminist thought. It asserts that the oppression of women and the degradation of the natural environment are interconnected phenomena rooted in patriarchal structures. This research paper examines the ecofeminist sensibilities in the translated novels of Sara Joseph, one of the most influential voices in contemporary Malayalam literature. Known for her evocative portrayals of women's struggles and environmental crises, Joseph's works bridge the personal and the ecological, demonstrating how the fates of women and nature are intertwined. Through a close reading of her translated novels—*The Scent of the Other Side*, *Gift in Green*, *The Vigil*, and *Budhini*—this paper investigates how Joseph uses narrative, symbolism, and character development to highlight the shared exploitation of women and nature. By emphasizing the spiritual and physical connections between female characters and their surrounding landscapes, Joseph's works provide a powerful critique of modernity's destructive tendencies. Translation plays a key role in extending the reach of these ecofeminist themes to a global readership. This study ultimately argues that Joseph's novels offer a vision of harmony, resilience, and resistance, where reclaiming the dignity of women and restoring ecological balance are deeply interconnected.

Introduction - Literature has long served as a mirror reflecting human relationships with nature, society, and the self. In recent decades, the rise of ecological consciousness has led to the development of literary approaches such as ecofeminism, which links environmental degradation with gender oppression. Ecofeminism views the domination of women and the exploitation of nature as parallel processes rooted in patriarchal ideologies. By challenging the hierarchical binaries that separate culture from nature and male from female, ecofeminism seeks to create an integrated vision of equality and sustainability.

Sara Joseph, a celebrated Malayalam writer and activist, is a leading voice in the literary representation of these intertwined struggles. Her novels draw upon the cultural and environmental landscapes of Kerala, portraying women and nature as deeply interconnected. Through lyrical prose and symbolic imagery, Joseph exposes the systemic violence inflicted upon both women and ecosystems, while also celebrating their resilience.

This paper focuses specifically on Joseph's translated works, which have made her ecofeminist narratives accessible to readers beyond Kerala. Translation is crucial in this context, not merely as a linguistic act but as a cultural bridge that transmits local struggles to a global stage. By analyzing four key novels—*The Scent of the Other Side*, *Gift in Green*, *The Vigil*, and *Budhini*—this research examines how Joseph intertwines nature and womanhood, presenting them as sites of resistance and renewal. The study also highlights the challenges and opportunities of translating ecofeminist literature, where cultural specificity and ecological imagery must be preserved for international audiences.

Ecofeminism: A Theoretical Perspective

Ecofeminism, a term first popularized by Françoise d'Eaubonne in 1974, emerged as a movement that combines ecological awareness with feminist politics. It critiques the dualistic worldview that places men, culture, and reason above women, nature, and emotion. This hierarchical thinking has justified both the subjugation of women and the exploitation of the earth. Ecofeminists argue that patriarchal capitalism treats both women and nature as resources to be controlled, commodified, and consumed. The theoretical foundation of ecofeminism is diverse, encompassing spiritual, cultural, and social dimensions. Scholars such as Vandana Shiva emphasize the spiritual and material connections between women and nature, particularly in non-Western contexts where rural women often serve as custodians of ecological knowledge. In India, ecofeminism has been closely associated with grassroots movements such as Chipko, where women actively defended forests from deforestation.

In literary criticism, ecofeminism offers a lens to analyze

how texts represent the relationships between gender and ecology. It focuses on the symbolic associations of women with the natural world, while also critiquing the romanticization of these links. Ecofeminist readings seek to uncover narratives of resistance that challenge both environmental destruction and gender oppression. Sara Joseph's novels are ideal for such analysis, as they weave ecological imagery with feminist themes, presenting interconnected struggles that resonate across cultural boundaries.

Sara Joseph: Voice of Feminism and Ecology

Sara Joseph is widely recognized for her bold engagement with social justice issues, including gender equality, religious reform, and environmental sustainability. Her literary career spans several decades and includes novels, short stories, and essays that confront the complexities of Kerala's social fabric. Joseph's activism, particularly her involvement in the StreeVedi (Women's Forum) and other movements, deeply informs her writing.

Her narratives are characterized by their deep sensitivity to place and community. Kerala's lush landscapes—its rivers, forests, and coastal areas—are not merely backdrops but integral elements of her storytelling. In Joseph's works, nature is imbued with symbolic meaning, reflecting the inner lives of characters and the larger social tensions they navigate. Her women characters are often marginalized by patriarchy yet connected to the land in ways that empower them to resist and reclaim agency.

The translation of Joseph's works into English has played a crucial role in amplifying her voice. Translators like ValsonThampu and J. Devika have brought her novels to international audiences, ensuring that her ecofeminist vision reaches beyond linguistic boundaries. These translations retain the lyrical and political power of the originals, allowing readers worldwide to engage with Kerala's environmental and gender struggles.

Analysis of Translated Novels

The Scent of the Other Side: This novel explores themes of memory, identity, and ecological belonging. Joseph uses rich sensory imagery to depict the landscapes of Kerala, where rivers and forests mirror the emotional states of her characters. The narrative draws parallels between the exploitation of women and the degradation of the natural environment. For instance, women's bodies are often described using metaphors of land and water, emphasizing their shared vulnerability to patriarchal violence.

The translation retains the poetic quality of the original Malayalam text, making its ecofeminist symbolism accessible to non-Malayalam readers. Through its portrayal of intertwined human and ecological suffering, the novel calls for a holistic understanding of justice that encompasses both gender equality and environmental sustainability.

Gift in Green: Perhaps Joseph's most explicitly ecofeminist work, *Gift in Green*centers on Aathi, an idyllic island community where people live in harmony with their natural surroundings. The novel depicts a symbiotic relationship between humans and water bodies, presenting a vision of sustainable living rooted in spiritual reverence for nature. However, this harmony is disrupted by external capitalist forces seeking to commercialize the land.

The degradation of Aathi's environment is mirrored in the subjugation of its women, whose voices are silenced by both patriarchy and development projects. Characters like Ponmani emerge as symbols of resistance, fighting to protect their ecological and cultural heritage. The translation effectively conveys the spiritual dimensions of the narrative, highlighting the urgency of ecological activism and the inseparability of women's liberation from environmental preservation.

The Vigil: In *The Vigil*, Joseph explores the psychological dimensions of ecofeminism. The novel portrays women grappling with personal trauma against the backdrop of environmental crises. Nature serves as both a source of healing and a reminder of destruction. The narrative suggests that reconnecting with the natural world is essential for individual and collective renewal.

The translated version captures the symbolic associations between landscapes and women's inner lives, emphasizing themes of resilience and transformation. Through its nuanced portrayal of ecological and emotional interconnections, *The Vigil* expands the scope of ecofeminist literature.

Budhini: *Budhini* is based on the true story of a tribal woman exploited during the inauguration of a major dam project in Jharkhand. The novel critiques development narratives that prioritize industrial progress over indigenous rights and ecological balance. Budhini's personal suffering mirrors the destruction of her community's environment, illustrating the double oppression of marginalized women and vulnerable ecosystems.

The translation brings this local story to a global audience, highlighting the universal relevance of Joseph's critique. By intertwining the fate of Budhini with that of her natural surroundings, the novel exemplifies ecofeminism's central insight: the liberation of women and the protection of the earth are inseparable.

Symbolism and Ecofeminist Imagery: Sara Joseph's novels are rich in symbolism, using ecological imagery to represent women's experiences. Rivers, forests, and water bodies often serve as metaphors for female subjectivity. In *Gift in Green*, water symbolizes both life and resistance, while its pollution reflects the corruption of social systems. Similarly, the earth is depicted as nurturing yet vulnerable, paralleling the roles imposed on women in patriarchal societies.

These symbolic associations are not merely aesthetic devices but political statements. By linking women's bodies to ecological spaces, Joseph challenges readers to recognize the interconnectedness of all forms of

oppression. The translations retain these symbolic layers, ensuring that their political resonance is not lost in cross-cultural transmission.

Translation as Cultural Mediation: Translation plays a vital role in transmitting ecofeminist literature across linguistic and cultural boundaries. In the case of Sara Joseph's novels, translation allows local ecological and feminist struggles to enter global conversations. However, this process involves challenges, particularly in preserving cultural specificity.

Kerala's landscapes, rituals, and idioms are deeply embedded in Joseph's narratives. Translators must navigate these elements carefully to maintain authenticity while ensuring accessibility for international readers. For example, ecological metaphors rooted in local traditions may require contextual explanations. Successful translations strike a balance between fidelity to the original and adaptation for new audiences.

Through translation, Joseph's works contribute to a global ecofeminist canon. They foster cross-cultural solidarity by revealing the universal dynamics of gender and environmental oppression, while also highlighting the particularities of Kerala's socio-ecological context.

Interconnectedness of Women and Nature: At the heart of Joseph's ecofeminist vision is the idea of interconnectedness. Her novels portray women and nature not as passive victims but as active agents of renewal. Characters who form deep bonds with their natural surroundings often emerge as leaders of resistance movements. This interconnectedness is spiritual as well as material, suggesting that ecological harmony is essential for human well-being.

For instance, in *Gift in Green*, the community's reverence for water reflects an ethical worldview that values sustainability over exploitation. Similarly, Budhini's struggle against developmental projects symbolizes the fight for both gender justice and ecological balance. By intertwining the fates of women and nature, Joseph challenges readers to envision alternative futures grounded in care and reciprocity.

Conclusion: Sara Joseph's translated novels offer profound insights into the intertwined struggles of women and the environment. Through her evocative storytelling, she exposes the shared roots of gender oppression and ecological degradation, while also celebrating the resilience of marginalized communities. Works like *The Scent of the Other Side*, *Gift in Green*, *The Vigil*, and *Budhini* demonstrate how literature can serve as a site of resistance, challenging dominant narratives of progress and development.

Translation plays a crucial role in extending the reach of Joseph's ecofeminist vision. By making her works accessible to global audiences, translators enable cross-cultural dialogues about sustainability and justice. These translations preserve the poetic and political power of Joseph's narratives, ensuring that their message resonates across linguistic boundaries.

In an era marked by climate crises and gender inequalities, Joseph's novels remind us that the liberation of women and the protection of the earth are inseparable. Her ecofeminist vision offers both a critique of destructive systems and a hope for renewal. By intertwining nature and womanhood, Joseph's works inspire readers to imagine a world where harmony, equality, and sustainability are central values.

References:-

1. Devika, J. (2010). *En-gendering Individuals: The Language of Re-forming in Early Twentieth Century Keralam*. Orient BlackSwan.
2. Joseph, S. (2009). *The Scent of the Other Side* (Trans. Valson Thampu). New Delhi: Harper Collins.
3. Joseph, S. (2010). *Gift in Green* (Trans. Valson Thampu). New Delhi: Harper Collins.
4. Joseph, S. (2014). *The Vigil* (Trans. J. Devika). New Delhi: Oxford University Press.
5. Joseph, S. (2019). *Budhini* (Trans. Sangeetha Sreenivasan). New Delhi: Harper Perennial.
6. Merchant, C. (1996).*Earthcare: Women and the Environment*. Routledge.
7. Plumwood, V. (2002).*Environmental Culture: The Ecological Crisis of Reason*. Routledge.
8. Shiva, V. (1993).*Staying Alive: Women, Ecology and Development*.Zed Books.
9. Warren, K. J. (2000). *Ecofeminist Philosophy: A Western Perspective on What It Is and Why It Matters*. Rowman& Littlefield.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Cultural Transitions and Aspirations: Analyzing the Identity of New Generation Indians in the Works of Chetan Bhagat

Jibi Joseph* **Dr. Anu Saxena****

*Research Scholar, Ravindranaath Taigore University, Raisen (M.P.) INDIA
** Professor, Ravindranaath Taigore University, Raisen (M.P.) INDIA

Abstract: Chetan Bhagat has emerged as one of the most influential voices in contemporary Indian literature, especially in the context of depicting the life, struggles, and aspirations of the new generation Indians. His novels explore themes such as cultural globalization, youth ambitions, middle-class challenges, gender dynamics, and the evolving urban-rural divide. This paper critically analyzes Bhagat's works with a focus on how they reflect the transitional identities of young Indians who are caught between traditional Indian values and modern global influences. By examining novels such as *Five Point Someone*, *2 States*, *The 3 Mistakes of My Life*, and *Revolution 2020*, this paper demonstrates how Bhagat captures the hopes and dilemmas of India's youth. Through an interdisciplinary approach, drawing from sociological, cultural, and literary perspectives, the study aims to understand how his narratives give voice to a generation navigating rapid social and economic changes.
Keywords: Chetan Bhagat, new generation Indians, globalization, cultural identity, youth aspirations.

Introduction - India in the 21st century is a land of profound transitions. With rapid globalization, technological advancements, and socio-economic transformations, the youth of India today stand at a unique crossroads of tradition and modernity. The contemporary generation is experiencing unprecedented opportunities while simultaneously facing challenges of identity, cultural values, and aspirations. Literature, as a mirror of society, captures these dynamic changes and offers valuable insights into the psyche of the youth. Among the modern Indian writers, **Chetan Bhagat** stands out for his ability to connect deeply with young readers through simple language, relatable themes, and realistic portrayals of urban and semi-urban life. His novels do not merely tell stories; they encapsulate the dilemmas, conflicts, and dreams of the "new generation Indian."

Bhagat's works reflect the zeitgeist of post-liberalization India, where education, employment, love, and family expectations intersect to shape young people's lives. His characters often represent the middle-class youth who grapple with competitive academic environments, career anxieties, societal norms, and personal aspirations. In novels like *Five Point Someone*, he critiques the rigid Indian education system, while in *2 States*, he addresses inter-cultural relationships and the challenge of inter-caste marriage. Similarly, *The 3 Mistakes of My Life* and *Revolution 2020* explore corruption, ambition, and moral dilemmas in a rapidly changing society.

This paper explores the theme of **cultural transitions and aspirations** by analyzing Bhagat's portrayal of youth identity. It examines how his narratives capture the tension between modernity and tradition and how his characters reflect the broader societal changes in contemporary India.

Theoretical Framework: Cultural Transition and Youth Identity

Cultural transition refers to the process through which individuals and societies adapt to changing cultural landscapes, often driven by globalization, technological development, and social mobility. In India, liberalization in the 1990s opened new economic avenues, leading to rapid urbanization, Western influence, and shifting value systems. Youth identity, therefore, becomes a complex construct shaped by competing forces of traditional Indian norms and modern global ideals.

Sociologists such as Anthony Giddens emphasize the reflexivity of modern identity, where individuals actively construct their self-concepts in response to societal changes. Bhagat's novels serve as case studies of this phenomenon, portraying young protagonists navigating career pressures, romantic relationships, and cultural negotiations. His narratives resonate because they capture the "in-betweenness" of the new generation, who neither fully reject tradition nor wholly embrace modernity.

Chetan Bhagat as a Voice of the New Generation:

Chetan Bhagat's popularity stems from his ability to write in a conversational style, making his stories accessible to a wide readership. His novels are often criticized for being "light literature," yet their impact on popular culture cannot be overlooked. Bhagat writes about the concerns of ordinary youth, giving voice to a generation often marginalized in classical literature.

Bhagat's protagonists are typically urban or semi-urban, middle-class individuals striving to achieve personal and professional success. They embody the ambitions of a young India that seeks progress but remains entangled in socio-cultural constraints. His works capture the realities of globalization, inter-state migrations, cross-cultural marriages, and the tension between personal freedom and familial obligations.

For instance, in *Five Point Someone*, the characters struggle within the rigid framework of the Indian Institutes of Technology (IITs), symbolizing the oppressive education system that values grades over creativity. In *2 States*, the inter-cultural love story between Krish and Ananya highlights the challenges faced by modern couples attempting to reconcile love with parental expectations and cultural boundaries. Similarly, *Revolution 2020* deals with corruption, political ambition, and moral compromises, reflecting the darker aspects of contemporary Indian society.

Depiction of Cultural Transitions in Bhagat's Novels: Bhagat's works vividly portray the cultural transitions occurring in Indian society. These transitions manifest in various domains such as education, relationships, career choices, and societal norms.

1. **Education and Career Pressure:** In *Five Point Someone*, Bhagat critiques the competitive and mechanical education system in India. The protagonists—Hari, Ryan, and Alok—represent students burdened by expectations to excel academically while suppressing their individuality. This reflects a broader cultural transition where education is seen not as a means of intellectual growth but as a pathway to economic stability and social mobility. The novel resonates with millions of Indian students who feel trapped in a system that prioritizes grades over creativity.
2. **Romantic Relationships and Cultural Conflict:** *2 States* explores the theme of inter-cultural love, highlighting how traditional notions of marriage clash with modern ideals of individual choice. Krish and Ananya's relationship symbolizes the aspirations of young Indians who desire personal freedom while respecting familial and cultural obligations. The novel also reflects the increasing mobility of the youth, as higher education and employment opportunities lead to inter-state migrations and cross-cultural interactions.
3. **Ambition and Corruption:** In *Revolution 2020*, Bhagat delves into the moral compromises individuals make in their pursuit of success. The novel's setting in Varanasi, a city deeply rooted in tradition, contrasts with the characters' modern ambitions. Gopal's decision to engage in corrupt practices to achieve wealth reflects the darker side of India's economic growth. The narrative captures the disillusionment of youth who see systemic corruption as an inevitable part of their journey.
4. **Urbanization and Globalization:** Bhagat's novels frequently depict urban landscapes where traditional values collide with modern lifestyles. Characters navigate the fast-paced life of metropolitan cities while dealing with the slower, value-driven life of small towns. This urban-rural divide represents the broader cultural transitions shaping Indian society.

Aspirations of the New Generation: The new generation Indians in Bhagat's novels are characterized by their aspirations for success, love, and self-fulfillment. These aspirations are shaped by globalization and India's economic liberalization, which opened doors to new opportunities and challenges.

1. **Personal Freedom and Individuality:** Bhagat's protagonists often seek personal freedom, challenging traditional norms that restrict individuality. For instance, in *One Night @ the Call Center*, the characters desire to break free from monotonous jobs and societal expectations, reflecting the growing need for self-expression among Indian youth.
2. **Career and Economic Mobility:** Economic aspirations play a central role in Bhagat's narratives. His characters strive for upward mobility through education, entrepreneurship, and career advancements. This reflects the broader societal trend where middle-class youth view professional success as a means of achieving independence and social recognition.
3. **Love and Relationships:** Romantic aspirations are another recurring theme. Bhagat's novels portray love as a powerful force that challenges cultural barriers. However, these relationships are often fraught with conflicts arising from caste, religion, and regional differences, as seen in *2 States*. This highlights the tension between modern ideals of romantic love and traditional arranged marriage systems.
4. **Social Change and Activism:** In *Revolution 2020*, Bhagat introduces the theme of social activism through characters who aim to bring positive change. This reflects the growing political awareness among young Indians and their desire to challenge systemic corruption and injustice.

Critical Reception and Controversies: While Chetan Bhagat enjoys immense popularity, his works have been subject to critical debate. Scholars argue that his novels, though commercially successful, lack literary depth and rely heavily on clichés. However, his critics often overlook the sociological significance of his storytelling. Bhagat's ability to reach millions of readers and spark conversations about youth issues cannot be dismissed.

His novels have been adapted into successful films, further amplifying their cultural impact. Movies like *3 Idiots* (based on *Five Point Someone*) and *2 States* have brought his narratives to a wider audience, influencing public

discourse on education, love, and societal change.

Conclusion: Chetan Bhagat's works serve as a mirror reflecting the cultural transitions and aspirations of the new generation Indians. Through relatable characters and engaging narratives, he captures the complexities of youth identity in a rapidly changing society. His novels highlight the tensions between tradition and modernity, personal freedom and societal expectations, ambition and morality. Bhagat's contribution lies in his ability to democratize literature by making it accessible to the masses while addressing contemporary issues. His portrayal of youth struggles resonates with millions, making him a significant voice in modern Indian literature. As India continues to evolve, Bhagat's works will remain relevant in understanding the hopes, dreams, and dilemmas of its young population.

References:-

1. Bhagat, C. (2004). *Five Point Someone*. New Delhi: Rupa Publications.
2. Bhagat, C. (2005). *One Night @ the Call Center*. New Delhi: Rupa Publications.
3. Bhagat, C. (2008). *The 3 Mistakes of My Life*. New Delhi: Rupa Publications.
4. Bhagat, C. (2009). *2 States: The Story of My Marriage*. New Delhi: Rupa Publications.
5. Bhagat, C. (2011). *Revolution 2020*. New Delhi: Rupa Publications.
6. Giddens, A. (1991). *Modernity and Self-Identity: Self and Society in the Late Modern Age*. Stanford University Press.
7. Kumar, R. (2015). *Indian Youth and Globalization: A Cultural Perspective*. New Delhi: Sage Publications.
8. Nayar, P. K. (2008). *Postcolonial Literature: An Introduction*. New Delhi: Pearson Education.
9. Ray, S. (2014). "The Middle-Class Indian Youth and the Literary World of Chetan Bhagat." *Journal of Contemporary Literature Studies*, 12(2), 45-58.
10. Sharma, V. (2020). *Globalization and Indian Society: Changing Cultural Landscapes*. Jaipur: Rawat Publications.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

पर्यावरण प्रबंधन में भौगोलिक सूचना प्रणाली का महत्व

डॉ. मोहन निमोले* डॉ. प्रमिला बघेल**

* सहायक प्राध्यापक (भूगोल) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, माधव महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक (भूगोल) शास. माधव विज्ञान महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) ने हमारे पर्यावरण को समझने और उसके साथ बातचीत करने के तरीके को बदल दिया है। ये सिस्टम स्थानिक विश्लेषण और मानचित्रण के माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता हैं, जिससे वे विभिन्न क्षेत्रों में, विशेष रूप से जैसे पर्यावरण प्रबंधन और पारिस्थितिक संरक्षण के लिए उपयोगी बन जाते हैं। भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) भौगोलिक आकड़े को एकत्रित करने, विश्लेषण करने और प्रस्तुत करने के लिए उपयोग किए जाने वाले महत्वपूर्ण उपकरण हैं। कार्टोग्राफी, सांख्यिकीय विश्लेषण और डेटाबेस प्रौद्योगिकी के मिश्रण का उपयोग करते हुए, GIS अनुप्रयोग शहरी नियोजन, पर्यावरण प्रबंधन और आपदा प्रतिक्रिया सहित विभिन्न क्षेत्रों में अमूल्य योगदान प्रदान करता हैं, जिससे ऐसे निर्णय लेने की प्रक्रिया में सुधार होता है जहाँ भौगोलिक परिणामों को तेजी से प्रभावित करते हैं।

पर्यावरण प्रबंधन में भौगोलिक सूचना प्रणाली का महत्व – भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) अपने ग्रह पर निवास करने वाले और पृथ्वी पर पाये जाने वाले संसाधनों की सुरक्षा में मदद करने वाला एक शक्तिशाली और आवश्यक उपकरण है। पर्यावरण प्रबंधन, संरक्षण और सुरक्षा के लिए जीआईएस का उपयोग करना पर्यावरण की रक्षा, संरक्षण और इसकी पुनर्स्थापना के लिए काम करते समय एक महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करता है। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती जार ही है और जलवायु भी परिवर्तन हो रहै हैं, जीआईएस के द्धारा पर्यावरण एजेंसियां और संरक्षणवादी प्राकृतिक संसाधनों को बचाने में लगा हैं।

जीआईएस क्यों महत्वपूर्ण है?

भौगोलिक सूचना प्रणाली के माध्यम से जलवायु परिवर्तन और मानवीय गतिविधियों के प्रभाव को आसानी से देखा जा सकता हैं। भौगोलिक सूचना प्रणाली प्रभावी रूप से पर्यावरण से संबधित आकड़े विश्लेषण की निगरानी करता है, जिससे बेहतर नियोजन करने में सहायता करता है। भौगोलिक सूचना प्रणालीय वर्तमान और ऐतिहासिक आकड़े को आसानी से देखने और समझने की अनुमति देता है। इसमें कई पर्यावरणीय मापदंडों और प्रभाव विश्लेषण को निर्धारित करने के लिए ढलानों, वनस्पतियों, खतरे में पड़ी प्रजातियों, वाटरशेड और अन्य पहलुओं जैसे विभिन्न कारकों का विश्लेषण किया जा सकता है।

भौगोलिक सूचना प्रणाली का उपयोग – जीआईएस का उपयोग करके उपयोगिताओं और बुनियादी ढांचे को परिवर्तित करके पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव डालने में भी जीआईएस मदद करता है ।

1. प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन – भौगोलिक सूचना प्रणाली प्रौद्योगिकी मानचित्रण, सुदूर संवेदन, ऐतिहासिक आकड़े, जलवायु और पर्यावरण परिवर्तनों के माध्यम से जल, वन और कृषि संसाधनों के रखरखाव और प्रबंधन में मदद करती है। जल पृथ्वी पर सभी जीवन के लिए आवश्यक एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जीआईएस इसकी निगरानी करने में मदद करता है ताकि विवेकपूर्ण प्रबंधन और वितरण सुनिश्चित किया जा सके और इस महत्वपूर्ण संसाधन का उपयोग करने में यह आवश्यक है। जीआईएस प्रौद्योगिकी वन और कृषि संसाधनों की निगरानी को सरल बनाती है, जिससे उन उद्योगों को आज और भविष्य की पीढ़ियों के लिए सर्वोत्ताम विकल्प चुनने में मदद मिलती है।

2. पर्यावरण प्रभाव विश्लेषण – भौगोलिक सूचना प्रणाली पर्यावरण और उसके प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा और संरक्षण में मदद करने का एक साधान है। जैसे-जैसे हमारी जलवायु बदलती है, मानव आबादी बढ़ती है, और कई क्षेत्र अधिाक विकसित होते जा रहे हैं, तो यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि वहा के निवासियों और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा की जाए। पर्यावरणीय प्रभाव विश्लेषण आवश्यक है क्योंकि वे किसी विकास, भवन, बुनियादी ढांचे के विकास, प्रदूषण, पर्यावरणीय खतरों, खतरेग्रस्त प्रजातियों के स्थान आदि के प्रभाव के संबंध में उचित निर्णय लेने में मदद करने के लिए कई कारकों का विश्लेषण करते हैं। भौगोलिक सूचना प्रणाली संभावित प्रतिकूल प्रभावों का निर्धारण करेगा ताकि निर्णय लेने वाले व्यक्ति सभी संभावित परिणामों के आधार पर अपने विकल्प चुन सकें।

3. आपदा प्रबंधन और तैयारी – भौगोलिक सूचना प्रणाली जोखिम कम करने और आपदा प्रबंधन के लिए एक बहुत ही उन्नत उपकरण है । भौगोलिक सूचना प्रणाली प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित क्षेत्रों की पहचान करने और निर्मित आपदा से प्रभावित होने वाले संभावित क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करता है। प्राकृतिक आपदा के लिए भौगोलिक सूचना प्रणाली के उपयोग का एक उदाहरण बाढ़ की आशंका वाले क्षेत्र की ओर बढ़ रहे तूफान का हो सकता है। जीआईएस ने आपदा राहत को ट्रैकिंग और पूर्वानुमान से बदलकर बचाव और राहत प्रयासों में सहायता करने में बदल दिया है।

4. खतरों की पहचान – भौगोलिक सूचना प्रणाली संभावित खतरों को समय से पहले पहचानने में मदद कर सकता है। इनमें से कुछ खतरे इस प्रकार है कि किसी क्षेत्र की संरचनात्मक, सतही आवरण, भूवैज्ञानिक और ढलान विशेषताओं सहित विभिन्न स्थानिक डेटा को एकीकृत करके संभावित भूस्खलन का आकलन करना निचले इलाकों में बाढ़ का खतरा ज्वालामुखी

खतरे वाले क्षेत्र और मानव जीवन और पर्यावरण पर उनके प्रभाव से बच सकते है, जिसमें गर्म कण, गैस बादल, लावा प्रवाह, गर्म हिमस्खलन और विस्फोट शामिल हैं,

5. भूमि उपयोग और भूमि आवरण का निर्धारण – भूमि उपयोग से तात्पर्य सतह पर किसी विशेष उद्देश्य के लिए उपयोग किए जाने वाले क्षेत्र से है। वनस्पति, पेड़, पानी या पृथ्वी की सतह को ढकने वाली अन्य विशेषताएँ भूमि आवरण का प्रतिनिधित्व करती हैं। समय के साथ भूमि आवरण या भूमि उपयोग में परिवर्तन या पैटर्न का पता लगाने के लिए भौगोलिक सूचना प्रणाली प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा रहा है। भूमि उपयोग कटाव, प्राकृतिक तत्वों या अन्य मानव-संबंधित गतिविधियों जैसे वनों की कटाई के कारण अचानक परिवर्तन का पता लगाना तेज और कुशल है। भौगोलिक सूचना प्रणाली ऐसी निजी और सरकारी संगठन हैं, जो नदियों के मुहाने, जंगलों और कृषि में पर्यावरण अनुसंधान में भाग ले रहे हैं, जो परिवर्तन की निगरानी करने, जोखिम को कम करने और पुनर्स्थापन की आवश्यकता वाले क्षेत्रों की पहचान करने के लिए उपयोग किया जा रहा हैं।

6. आपदा क्षति की निगरानी – भौगोलिक सूचना प्रणाली आपदाओं से होने वाले नुकसान का दस्तावेजीकरण और पता लगाने में मदद करता है। सरकार और बीमा एजेंसियाँ बाढ़, तूफान, आग, बवंडर और अन्य प्राकृतिक या मानव निर्मित आपदाओं के कारण होने वाले नुकसान और संपत्ति के नुकसान का मौद्रिक मूल्य निर्धारित करने के लिए इस जानकारी का उपयोग करती हैं।

7. आद्र भूमियों का मानचित्रण – आर्द्रभूमि स्वस्थ पर्यावरण को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे शुष्क अवधि के दौरान पानी को बनाए रखते हैं और तूफान से होने वाले नुकसान को कम करने में मदद करते हैं। तूफान और बाढ़ के दौरान, वे नमी को अवशोषित करने के लिए स्पंज की तरह काम करते हैं। वे हमारे जलमार्गों, सागर और महासागर पर इसके नकारात्मक प्रभाव को कम करने में मदद करने के लिए अतिरिक्त पोषक तत्वों के बहाव को रोकने में भी मदद करते हैं। रिमोट सेंसिंग को जीआईएस के साथ एकीकृत किया गया है ताकि विभिन्न पैमानों का उपयोग करके आर्द्रभूमि का मानचित्रण करने में मदद मिल सके, जिसमें क्लोरोफिल, विशिष्ट पौधों की प्रजातियाँ और कई घटकों का पता लगाना शामिल है। भौगोलिक सूचना प्रणाली आर्द्रभूमि संरक्षण परियोजनाओं को बहुत तेज़ी से सहायता प्रदान कर रहा है ।

8. मृदा मानचित्रण – मृदा मानचित्रण कंपनियों या व्यक्तियों को विभिन्न भूमि-उपयोग गतिविधियों को समझने में मदद करता है और किसी विशिष्ट स्थान और उसकी मिट्टी की उपयुक्तता के लिए संसाधन जानकारी प्रदान करता है। यह पर्यावरणीय गिरावट को रोकने में एक आवश्यक घटक है, जिससे से अक्सर भूमि के दुरुपयोग के साथ देखा जाता है। भौगोलिक सूचना प्रणाली विभिन्न मिट्टी के प्रकारों, मिट्टी की सीमाओं और मिट्टी के वर्गीकरण की पहचान करने में मदद करता है। किसान अक्सर फसलों के लिए अधिकतम उपज सुनिश्चित करने में मदद करने के लिए मिट्टी के पोषक तत्वों को बनाए रखने और पहचानने में मदद के लिए भौगोलिक सूचना प्रणाली का उपयोग करते हैं।

9. सिंचाई प्रबंधन – कई क्षेत्रों में फसल उत्पादन के लिए जल उपलब्धता का प्रबंधन करना आवश्यक है। भौगोलिक सूचना प्रणाली किसानों के लिए पानी का सही उपयोग करने का एक त्वरित और कुशल तरीका है।

10. रिमोट सेंसिंग – रिमोट सेंसिंग एक सामान्य रूप से इस्तेमाल की जाने वाली विधि है, जो भौगोलिक सूचना प्रणाली में एकीकृत जैविक डेटा एकत्र करने के लिए उपयोग की जाती है। रिमोट सेंसर परावर्तित ऊर्जा का पता लगाकर पृथ्वी पर वस्तुओं से डेटा एकत्र करते हैं। ये सेंसर उपग्रहों, विमानों और अक्सर ड्रोन पर पाए जा सकते हैं और बहुत उपयोगी होते हैं।

11. संकटग्रस्त प्रजातियों के आवास की पहचान – भौगोलिक सूचना प्रणाली संकटग्रस्त और लुप्तप्राय प्रजातियों की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दुनिया भर के रिजर्व, नागरिक वैज्ञानिक और कई अन्य संरक्षण कार्यक्रम जैव विविधता, दुर्लभ और प्रतिबंधित प्रजातियों पर नज़र रखते हैं। प्राथमिकता वाली प्रजातियों की निगरानी करते हैं और बहुत कुछ करते हैं। एकत्र किए गए सभी डेटा को भौगोलिक सूचना प्रणाली तकनीक का उपयोग करके साझा किया जाता है। जीआईएस प्रौद्योगिकी के उपयोग का एक बेहतरीन उदाहरण राष्ट्रीय जैव विविधता नेटवर्क है, जिसमें 127 मिलियन से अधिक प्रजातियां शामिल हैं और यह 160 से अधिक भागीदारों के साथ काम करता है जो किसी को भी डेटा प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष – सूचना तकनीकी एक ऐसी तकनीकी है, जो दुनिया में किसी भी व्यक्ति को किसी भी समय और किसी भी स्थान में घटने वाली घटना या प्रसंग के बारे में संपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराती है। पर्यावरण से संबंधित सभी जानकारियाँ तथा भौगोलिक सूचना प्रणाली के माध्यम से घर बैठे ज्ञात हो जाते हैं। इसके साथ ही संवेदी उपग्रहों की सहायता से दुनिया भर में हो रही पर्यावरणीय घटनाओं जैसे ओजोन क्षरण, प्राकृतिक प्रकोप, वन-विनाश इत्यादि से संबंधित सूचनाएँ तुरन्त ही संसार के विभिन्न भागों में पहुँच जाती हैं। वर्तमान में पर्यावरण प्रबंधन में भी सूचना प्रौद्योगिकी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। पर्यावरण के संबंध में जन-जागरूकता पैदा करने में अपना सहयोग प्रदान कर रहे हैं। आधुनिकता आने से पर्यावरण को क्षति तथा पर्यावरण में प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। इस कारण शहरी इलाकों में भी सूचना तकनीकी का विकास तेजी से हो रहा है। अगर ग्रामीण इलाकों की बात करें तो यहाँ लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता के साथ-साथ पर्यावरण शिक्षा भी अपेक्षाकृत कम देखने को मिलती है। सूचना तकनीकी के माध्यम से ग्रामीण इलाकों में भी पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने की आवश्यकता है।

झसंदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. उपाध्याय, सीमा, पर्यावरण संरक्षण और चुनौतियाँ।
2. मिश्र, डॉ. राजेन्द्र, मीडिया मंथन।
3. टी.एन. शुक्ला, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल।
4. Environment Assessment, Country Date, India "The Wold Bank.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

जन्मकुण्डली में न्यायाधीश बनने के योग – एक अध्ययन

महामहोपाध्याय डॉ. गोविन्द गन्धे* डॉ. कुलदीप श्रीवास्तव**

* शोध निर्देशक, कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन (म.प्र.) भारत
**सेवानिवृत्त वरिष्ठ चिकित्साधिकारी एवं ज्योतिषाचार्य, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – ज्योतिष शास्त्र के मान्य सिद्धांतों द्वारा व्यवसाय चयन में सहायता प्राप्त होती है। इस अध्ययन का उद्देश्य जन्मकुण्डली द्वारा व्यवसाय चयन के सिद्धांतों की व्यवहारिकता प्रमाणित करना है। इस अध्ययन में 15 न्यायाधीशों की कुण्डलियों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है। जिसमें पाया गया है कि कारक ग्रहों एवं भावों का, अत्यधिक प्रभाव व्यवसाय की सफलता में पड़ता है। कानूनविदों में गुरू, शनि ग्रह तथा द्वादशेश का बलशाली होना आवश्यक होता है।

प्रस्तावना – ज्योतिर्विज्ञान प्राचीनकाल में एक स्थापित विद्या रही है तथा उसका उपयोग खगोलीय घटनाओं को समझने तथा उनके प्रभाव से जनमानस को भविष्य की घटनाओं के शुभाशुभ बताने के लिये किया जाता था। वर्तमान में इसके पुर्नस्थापन की आवश्यकता है, ताकि भविष्य में पूर्वानुमान से, जनसाधारण भविष्य की योजनायें बना सकें।

वर्तमान में हर किसी को, अपने एवं परिवार के जीवनयापन हेतु कुछ न कुछ व्यवसाय करना होता है। विद्याध्ययन काल में ही यह मार्गदर्शन प्राप्त हो जाये कि किस व्यवसाय में सफलता प्राप्त होगी तो जीवन में भी सफलता की संभावना बढ़ जाती है।

ज्योतिषशास्त्र में, कारक भावों, कारक ग्रहों तथा विभिन्न ग्रहयोगों से व्यवसाय की प्रकृति का निर्धारण निर्देशित किया गया है। व्यवसायों के प्रकार का निर्णय, ग्रहों के स्वरूप, ग्रहबल आदि पर निर्भर करता है, जो ग्रह बलवान होकर लग्न, लग्नेश एवं अन्य आजीविका के स्वरूप अथवा प्रकार को प्रदर्शित करने वाला होता है तदानुसार व्यवसाय का निर्धारण होता है। बृहतपाराशरहोराशास्त्र में अथ वृत्ति निर्णयाध्याय में,

लग्नादिन्दोश्च दशमं प्रबलं वृत्तिदायकम्।
तदिशात् तत्रगात् खेटात्तदंशेशाच्च चिन्तयेत् ॥
तद्दृष्टुश्च तद्राशेः स्वाभावोत्थं वदेत्पुमान्।
तेषां वृद्ध्या भवेद् वृद्धिरन्यथान्यत् फलं स्मृतम् ॥[1]

उक्त उल्लेखित श्लोकों में बलवान लग्न या चन्द्रमा से दशम स्थान से मनुष्य की जीविका एवं व्यवसाय का विचार करना निर्देशित किया गया है।

इसी प्रकार विचारणीय दशम भाव में स्थित राशि, दशमेश, दशमगत्, नवांशेश ग्रह, दशमस्थ ग्रह इनमें से बलवान ग्रह या राशि के स्वभाव अनुसार व्यक्ति की वृत्ति कहें। यदि उक्त राशि या ग्रह बलवान हो तो उत्तम व्यवसाय फल तथा मध्यम बली हो तो मध्यम फल तथा साधारण या हीन बली हो तो क्रमशः साधारण या नाममात्र फल कहें, ऐसा उल्लेख है।

इसी आशय का फलादेश श्रीकल्याण वर्मा विरचित सारावली के कर्मचिन्ताध्याय के निम्न श्लोकों में भी उल्लेखित है,

लग्नाद्दशमे राशौ कर्मफलं यत्प्रकीर्तितं मुनिभिः।
राशिग्रहणस्वभावैर्ग्रहदृष्ट्या तदहमपि वक्ष्ये ॥
होरेन्द्वोर्बलयोगाद्यो दशमस्तत्भा वजं कर्म।
तस्याधिपपरिवृद्ध्या वृद्धिर्ज्ञेयाऽन्यथा हानिः ॥[2]

श्री वैद्यनाथ विरचित जातक पारिजात के दशम भाव फल में निम्नलिखित श्लोक में,

आज्ञामानविभूषणानि वसनव्यापारनिद्राकृषि –
प्रव्रज्यागमकर्मजीवनयशोविज्ञानविद्याः क्रमात्।
कर्मस्वामिदिनेशबोधन गुरुच्छायासुतैश्चिन्तये –
दुक्तानि प्रविहाय पूर्वमशुभे मानी विमानो भवेत् ॥[3]

उक्त श्लोक में दशमेश, सूर्य, बुध, गुरु, और शनि से निम्नलिखित बातों का विचार करना चाहिये :–

आज्ञा, सम्मान, भूषण, वस्त्र, व्यापार, निद्रा, खेती–बाड़ी, प्रव्रज्या, आगम, कर्म या कार्य, जीवन निर्वाह, यश, विज्ञान, विद्या, इन सब का क्रम से विचार करें।

इसके अतिरिक्त धनेश, लाभेश, भाग्येश तथा व्यवसाय से सम्बन्धित भाव एवं षष्ठ भाव (न्यायालीन प्रकरण व वाद–विवाद भाव) व द्वादश भाव (जेल एवं अपराध भाव) से सम्बन्ध का विचार न्यायाधीश की कुण्डली में विचारणीय होता है।

उद्देश्य– ज्योतिषशास्त्र के अनेकानेक उपयोगों में से एक महत्वपूर्ण उपयोग व्यवसाय चयन में सहायता प्रदान करना भी है। वर्तमान में कैरियर मार्गदर्शन एवं परामर्श का प्रचलन है। कैरियर मार्गदर्शन करते समय यदि फलित ज्योतिषशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार व्यवसाय के विषय का चुनाव किया जाये तो व्यक्ति विशेष की सफलता के अवसर बढ़ जाते हैं।

प्रस्तुत शोधपत्र में ज्योतिषशास्त्र की इस उपयोगिता को दृष्टिगत् को रखते हुए '***जातक की कुण्डली में न्यायाधीश बनने के योग का अध्ययन***' किया गया है।

प्रविधि– उक्त अध्ययन के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया का उपयोग किया गया –

1. सर्वप्रथम न्यायाधीशों की 15 कुण्डलियों का संग्रह किया गया।
2. ज्योतिषशास्त्र में उल्लेखित व्यवसाय चयन में सहायक विभिन्न ग्रह योगों का अध्ययन किया गया तथा उन ग्रह योगों के परिप्रेक्ष्य में समस्त

कुण्डलियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया।
विश्लेषण के लिए निम्नानुसार तालिकाओं का निर्माण किया गया :-

1. जन्म लग्न, चन्द्र राशि एवं नवांश लग्न की तालिका 1

तालिका क्रमांक 1: अध्ययन में सम्मिलित न्यायाधीशों की कुण्डलियों में जन्मलग्न, चन्द्रराशि एवं नवमांश लग्न

कुण्डली क्र.	जन्मलग्न	चन्द्रराशि	नवमांश लग्न
1	मेष	तुला	वृष
2	मेष	कर्क	मेष
3	मेष	मकर	वृश्चिक
4	मिथुन	कन्या	वृश्चिक
5	मिथुन	धनु	वृष
6	कर्क	मीन	वृश्चिक
7	कन्या	कन्या	कर्क
8	कन्या	धनु	मिथुन
9	कन्या	कर्क	मिथुन
10	तुला	मिथुन	मेष
11	तुला	वृश्चिक	मीन
12	धनु	मीन	मेष
13	मकर	वृष	मीन
14	मकर	वृष	वृष
15	मीन	तुला	वृश्चिक

2. विभिन्न भावों में स्थित ग्रहों की आवृति की तालिका 2

तालिका क्रमांक 2: अध्ययन में सम्मिलित न्यायाधीशों की कुण्डलियों में विभिन्न भावों में स्थित ग्रहों की आवृति

भाव/ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
प्रथम	1	1	4	1	3	2	0	3	0
द्वितीय	2	1	1	0	1	2	0	1	0
तृतीय	3	0	1	4	1	1	2	3	1
चतुर्थ	1	4	3	2	0	2	1	3	1
पंचम	0	2	2	0	1	2	2	1	0
षष्ठ	2	0	1	1	0	0	4	1	2
सप्तम्	1	2	2	1	3	0	0	0	3
अष्टम्	1	1	0	1	0	0	0	0	1
नवम्	0	2	0	0	2	1	0	1	2
दशम्	1	1	0	0	2	2	2	1	3
एकादश	1	1	1	1	2	0	2	.0	1
द्वादश	3	0	0	4	0	3	2	2	1

3. विभिन्न राशियों में स्थित ग्रहों की आवृति की तालिका 3

तालिका क्रमांक 3: अध्ययन में सम्मिलित न्यायाधीशों की कुण्डलियों में विभिन्न राशियों में स्थित ग्रहों की आवृति

राशि/ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	2	0	3	1	1	1	0	0	1
वृष	1	2	0	1	0	2	2	1	1
मिथुन	2	1	2	2	1	0	0	3	1
कर्क	3	1	2	2	1	2	0	0	1
सिंह	1	0	0	3	1	4	1	4	0
कन्या	2	2	1	1	1	0	2	2	1
तुला	0	2	4	1	0	0	2	1	0
वृश्चिक	1	2	1	1	4	1	2	1	1
धनु	2	2	0	3	2	0	4	1	3
मकर	1	1	1	0	3	1	2	1	0
कुम्भ	0	0	1	0	0	2	0	0	4
मीन	0	2	0	0	1	3	0	1	2

4. लग्नानुसार द्वादश भाव में ग्रहों की स्थिति की तालिका 4

तालिका क्रमांक 4 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

समस्त तालिकाओं का क्रमश: अध्ययन किया गया। अध्ययन करते समय प्रत्येक कुण्डली में जन्म लग्न, चन्द्र राशि एवं नवांश लग्न का गंभीरता से अध्ययन किया गया। इन कुण्डलियों में विभिन्न भावों में स्थित ग्रहों की आवृति का अध्ययन किया गया। तत्पश्चात् विभिन्न राशियों में स्थित ग्रहों की आवृति का अध्ययन किया गया। अंत में लग्नानुसार द्वादश भाव में ग्रहों की स्थिति का अध्ययन किया गया।

विश्लेषण एवं निष्कर्ष- उक्त समस्त तालिकाओं के अध्ययन करने के पश्चात् तालिकावार लग्न, भावों में स्थित ग्रहों की तथा राशियों में स्थित ग्रहों की आवृति व प्रत्येक लग्न के अनुसार द्वादश भाव में ग्रहों की स्थिति का विश्लेषण कुण्डली में न्यायाधीश बनने के योग के आधार पर निम्नानुसार किया गया :-

जातक की कुण्डली में न्यायाधीश बनने के योग के अध्ययन निष्कर्ष-

न्यायाधीश बनने के लिये धैर्यशीलता, कानूनीज्ञान, राजयोग, निर्णय क्षमता आदि का विधिवत सम्मिश्रण होता है। न्यायाधीश बनने के लिये निम्नलिखित कारक ग्रह, ग्रहयोगों, ग्रह संबंधों तथा भाव एवं भावेशों का प्रभाव पड़ता है, यह निष्कर्ष कुण्डलियों के विश्लेषण के पश्चात् पाया गया है।

जन्म लग्न, चन्द्र राशि एवं नवांश लग्न की तालिका (तालिका क्रमांक 1) **के निष्कर्ष-**

1. मेष लग्न की तीन, कन्या लग्न की तीन तथा मिथुन, तुला व मकर की दो-दो एवं कर्क, धनु व मीन लग्न की एक-एक कुण्डली पाई गई।
2. वृष, सिंह, कुम्भ, लग्न की एवं मेष, सिंह, कुम्भ राशि की एवं सूर्य एवं शनि के नवांश की कुण्डलियों का अभाव पाया गया।
3. चन्द्र लग्न, जन्म लग्न, नवांश लग्न में से अधिकांश कुण्डलियों में मेष या वृश्चिक राशि पाई गई।

अत: निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि बुध एवं मंगल का लग्न एवं राशि पर न्यायाधीशों की कुण्डलियों में अत्यधिक प्रभाव रहता है।

विभिन्न भावों में स्थित ग्रहों की आवृति की तालिका (तालिका क्रमांक 2) **के निष्कर्ष-**

1. सूर्य अधिकांश कुण्डलियों में तृतीय, द्वादश, द्वितीय एवं षष्ठ भाव में पाया गया।
2. चन्द्र चतुर्थ भाव में सर्वाधिक चार बार स्थित पाया गया। इसके अतिरिक्त पंचम्, सप्तम् एवं नवम् शुभ भावों में भी पाया गया।
3. मंगल अधिकांशत: प्रथम, चतुर्थ, पंचम् एवं सप्तम् भाव में पाया गया।
4. बुध मुख्यत: तृतीय एवं द्वादश स्थान में पाया गया।
5. गुरू मुख्यत: लग्न, सप्तम्, नवम्, दशम्, एकादश भाव में पाया गया,

अर्थात् लग्न, केन्द्र, भाग्य, कर्म एवं लाभ भाव में स्थित पाया गया।

6. शुक्र द्वादश भाव में सर्वाधिक तीन कुण्डलियों में स्थित पाया गया तथा प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम् तथा दशम् भाव में स्थित पाया गया।
7. शनि जो कि वाद-विवाद एवं मुकदमों का कारक ग्रह है, सर्वाधिक चार कुण्डलियों में इन्हीं विषयों के कारक भाव षष्ठ भाव में स्थित पाया गया। इसके अतिरिक्त तृतीय, पंचम्, एकादश एवं द्वादश भाव में स्थित पाया गया।
8. राहू मुख्यत: लग्न, चतुर्थ, तृतीय एवं द्वादश भाव में स्थित पाया गया।
9. केतु मुख्यत: सप्तम्, दशम्, षष्ठ एवं नवम् भाव में स्थित पाया गया।

अत: उक्त तालिका का निष्कर्ष प्राप्त होता है कि न्यायाधीश की कुण्डली में गुरू मुख्य ग्रह होता है तथा शुभ भावों में स्थित रहता है। इसके अतिरिक्त मंगल, सूर्य, शनि आदि क्रूर ग्रह एवं बुध अधिकांशत: तृतीय, षष्ठ, द्वादश भाव में स्थित रहते हैं।

विभिन्न राशियों में स्थित ग्रहों की आवृति की तालिका (तालिका क्रमांक 3) **का निष्कर्ष**

1. धनु राशि में सबसे अधिक 17 ग्रह पाये गये।
2. इसके पश्चात् सिंह एवं वृश्चिक राशि में 14 ग्रह स्थित पाये गये।
3. मिथुन, कर्क और कन्या में क्रमश: 12-12 ग्रह स्थित पाये गये।
4. वृष, तुला एवं मकर में 10, 10, 10 ग्रह स्थित पाये गये।
5. कुम्भ, मीन एवं मेष में क्रमश: 7, 8, 9 ही ग्रह स्थित पाये गये।

अत: निष्कर्ष प्राप्त होता है कि न्यायाधीशों की कुण्डलियों में गुरू के स्वामित्व की धनु राशि तथा मंगल के स्वामित्व की वृश्चिक राशि व बुध के स्वामित्व की मिथुन और कन्या राशि एवं शुक्र के स्वामित्व की वृष एवं तुला राशि बली पाई जाती है।

लग्नानुसार द्वादश भाव में ग्रहों की स्थिति की तालिका (तालिका क्रमांक 4) **का निष्कर्ष**

1. सात कुण्डलियों में बुधादित्य योग पाया गया, अर्थात् सूर्य, बुध की युति पाई गई।
2. सात कुण्डलियों में गजकेसरी योग पाया गया अर्थात् चन्द्र, गुरू 1, 4, 7, 10 वें स्थान पर अर्थात् परस्पर केन्द्र में हैं।
3. चार कुण्डलियों में बुधादित्य व गजकेसरी दोनों योग पाये गये।
4. अत: 10 कुण्डलियों में बुधादित्य एवं गजकेसरी योग होने के कारण राजसेवा एवं उच्च पद का योग बना।

उपसंहार - भारतीय ज्योतिषशास्त्र मानव के भाग्य, भविष्य, आयु, सन्तान तथा जीवन में घटने वाली घटनाओं की जानकारी देने वाला ऐसा विज्ञान है, जिसे हजारों वर्षों से मान्यता प्राप्त है। वर्तमान में भी दिन प्रतिदिन ज्योतिषशास्त्र में लोकाभिरुचि की वृद्धि हो रही है। नवीन शिक्षा-दीक्षा से सम्पन्न नवयुवक, समुदाय भी दिनानुदिन ज्योतिषशास्त्र की ओर आकृष्ठ हो रहा है।

फलित ज्योतिष में ग्रहों का फल विचारने के लिये ग्रहस्पष्ट, भावस्पष्ट, ग्रहबल, ग्रहस्थिति आदि जानकर ग्रहों के गुण, धर्म, दृष्टि, स्थान आदि अनेक बातों पर पूर्णरुप से विचार कर ग्रहों की स्थिति आदि द्वारा बनने वाले अनेक योगों पर ध्यान देकर, देश, काल, अवस्था के अनुसार फलादेश किया जाता है।

ज्योतिषशास्त्र के अनेकानेक उपयोगों में एक उपयोग व्यवसाय चयन में सहायता प्रदान करना भी है। वर्तमान में कैरियर मार्गदर्शन एवं परामर्श का प्रचलन है। कैरियर मार्गदर्शन करते समय यदि फलित ज्योतिषशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार व्यवसाय के विषय का चुनाव किया जाये तो व्यक्ति विशेष की सफलता के अवसर बढ़ जाते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन न्यायाधीश के व्यवसाय के चयन से संबंधित है, इसमें कानून एवं विधि व्यवसाय में राजसेवा को आधार बनाकर उससे सम्बन्धित ज्योतिषीय योगों का विवेचन किया गया है। इसी को आधार बनाकर अन्य व्यवसायों के लिए भी विद्यार्थियों की कुण्डलियों का ज्योतिषीय अध्ययन कर उन्हें यह परामर्श उपलब्ध करा सकते हैं कि जातक को कौन सा व्यवसाय अपनाना चाहिये।

संदर्भ ग्रन्थों की सूची :-

1. बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, पाराशर डॉ. सुरेशचन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 2008
2. श्रीमत्कल्याणवर्म-विरचरिता सारावली, डॉ. मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसीदास इंटरनेशनल, नई दिल्ली, 2025,
3. जातकपारिजात:, वैद्यनाथ पण्डित गोपेश कुमार ओझा, मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी 2008
4. बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, पाराशर डॉ. सुरेशचन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 2008
5. भारतीय ज्योतिष, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली 2008
6. लघुपाराशरी, पाराशर डॉ. सुरकान्त झा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी 2007
7. जातकाभरणम्, ढुण्डिराज श्री सीताराम झा, ठाकुर प्रसाद पुस्तक भंडार वाराणसी 1982
8. सचित्र ज्योतिष-शिक्षा, बी0एल0 ठाकुर, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, 1998
9. भृगु संहिता महाशास्त्र, आचार्य भृगु पण्डित केवल आनन्द जोशी, राधा पॉकेट बुक्स, मेरठ, 1998
10. चमत्कार चिन्तामणि:, भट्टनारायण ब्रजबिहारीलाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, 1994
11. ग्रह-फल चन्द्रिका, जगदीश पण्डित, सुमित प्रकाशन, आगरा, 1991
12. फलदीपिका, श्री गोपेश कुमार ओझा, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 2015

4. लग्नानुसार द्वादश भाव में ग्रहों की स्थिति की तालिका 4

तालिका क्रमांक 4 : अध्ययन में सम्मिलित न्यायाधीशों की कुण्डलियों में लग्नानुसार द्वादश भावों में ग्रहों की स्थिति

लग्न	प्रथम भाव	द्वितीय भाव	तृतीय भाव	चतुर्थ भाव	पंचम् भाव	षष्ठम् भाव	सप्तम् भाव	अष्टम् भाव	नवम् भाव	दशम् भाव	एकादश भाव	द्वादश भाव
मेष 1			मंगल	सूर्य, बुध	शुक्र, शनि	केतु	चन्द्र			गुरू		राहु
मेष 2	शुक्र		सूर्य, बुध	मंगल,चन्द्र	राहु					गुरू, शनि	केतु	
मेष 3				शुक्र, राहु	गुरू	सूर्य, बुध, शनि	मंगल			चन्द्र, केतु		
मिथुन 1	बुध, मंगल , गुरू		राहु	चन्द्र					केतु	शुक्र		सूर्य, शनि
मिथुन 2		सूर्य	बुध, शुक्र		शनि	मंगल,केतु	चन्द्र, गुरू					राहु
कर्क		शुक्र, राहु	सूर्य	मंगल, बुध		शनि	गुरू	केतु	चन्द्र			
कन्या 1	चन्द्र		शनि, राहु		मंगल			सूर्य, बुध	शुक्र, केतु		गुरू	
कन्या 2	मंगल, राहु		गुरू	चन्द्र, शनि			केतु					सूर्य, बुध, शुक्र
कन्या 3	मंगल		केतु			शनि			गुरू, राहु		सूर्य, चन्द्र	बुध, शुक्र
तुला 1	मंगल			राहु			गुरू		चन्द्र	सूर्य, शुक्र, केतु	बुध	शनि
तुला 2		चन्द्र, गुरू	सूर्य, बुध, शनि	शुक्र	केतु	मंगल						राहु
धनु	गुरू, राहु			चन्द्र		शनि	केतु				मंगल	सूर्य, बुध, शुक्र
मकर 1				मंगल, केतु	चन्द्र, शुक्र	सूर्य	बुध		गुरू	राहु	शनि	
मकर 2	सूर्य	मंगल, शुक्र			चन्द्र	राहु				शनि	गुरू	बुध, केतु
मीन	गुरू, शुक्र	सूर्य	बुध	राहु	मंगल			चन्द्र		केतु	शनि	

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मध्य प्रदेश में उद्यमिता विकास और रोजगार सृजन : उज्जैन एवं रतलाम जिले का तुलनात्मक अध्ययन

पूजा झाला* डॉ. एल. एन. शर्मा **

*शोधार्थी (वाणिज्य) विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत
** शोध निर्देशक (वाणिज्य) विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – यह शोध-पत्र मध्य प्रदेश के उज्जैन एवं रतलाम जिलों में उद्यमिता विकास और रोजगार सृजन की स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में सरकारी योजनाओं, विशेषकर मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना, मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना और मुख्यमंत्री कृषक उद्यमी योजना की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। दोनों जिलों में लाभार्थियों की सामाजिक, लिंग आधारित एवं आर्थिक पृष्ठभूमि के साथ-साथ बैंक द्वारा स्वीकृत एवं वितरित राशि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। परिणाम बताते हैं कि उज्जैन जिले ने रतलाम जिले की तुलना में अधिक लाभार्थियों, विशेष रूप से सामान्य वर्ग और महिलाओं को योजनाओं का लाभ पहुँचाया है। साथ ही, बैंकिंग सहयोग एवं सरकारी प्रचार-प्रसार की प्रभावशीलता भी उज्जैन जिले में अपेक्षाकृत अधिक पाई गई।

शब्द कुंजी – उद्यमिता विकास, रोजगार सृजन, नवाचार, आर्थिक संरचना, सामाजिक वर्गीकरण।

प्रस्तावना – भारत के आर्थिक विकास में उद्यमिता (Entrepreneurship) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। यह केवल रोजगार सृजन का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज में आत्मनिर्भरता, नवाचार, तकनीकी प्रगति और संसाधनों के प्रभावी उपयोग को भी प्रोत्साहित करती है। आधुनिक वैश्विक अर्थव्यवस्था में उद्यमिता को आर्थिक विकास की रीढ़ कहा जा सकता है क्योंकि यह नई संभावनाओं को जन्म देती है, स्थानीय स्तर पर उत्पादन को बढ़ाती है और क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने में योगदान देती है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की विविधता और विशालता को देखते हुए, विभिन्न राज्यों में उद्यमिता विकास की रणनीतियाँ भिन्न हो सकती हैं। विशेषकर मध्य प्रदेश जैसे राज्य में, जहाँ कृषि-प्रधान समाज के साथ-साथ औद्योगिक विकास की भी अपार संभावनाएँ मौजूद हैं, वहाँ उद्यमिता विकास की आवश्यकता और भी अधिक हो जाती है। ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में बढ़ती बेरोजगारी और युवाओं की रोजगार संबंधी चुनौतियाँ इस ओर संकेत करती हैं कि यदि उद्यमिता को प्रभावी ढंग से प्रोत्साहित किया जाए, तो यह राज्य की अर्थव्यवस्था को नई दिशा दे सकती है।

मध्य प्रदेश सरकार ने समय-समय पर युवाओं, महिलाओं, किसानों और समाज के विभिन्न वर्गों को उद्यमिता की ओर आकर्षित करने और उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से कई योजनाएँ प्रारंभ की हैं। इनमें प्रमुख योजनाएँ हैं:

- **मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना –** जिसके अंतर्गत युवाओं को व्यवसायउद्योग प्रारंभ करने हेतु वित्तीय सहायता एवं बैंक ऋण की सुविधा दी जाती है।
- **मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना –** यह योजना छोटे उद्यमों और स्वरोजगार को प्रोत्साहित करने के लिए बनाई गई है।
- **मुख्यमंत्री कृषक उद्यमी योजना –** इसका उद्देश्य किसानों को कृषि आधारित उद्योगों और व्यापार से जोड़कर उन्हें अतिरिक्त आय के साधन उपलब्ध कराना है।

इन योजनाओं का सीधा प्रभाव केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका सकारात्मक प्रभाव समाज एवं स्थानीय अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है। इससे रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होते हैं, उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है और सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को कम करने में मदद मिलती है।

इस शोध-पत्र का केंद्र बिंदु उज्जैन एवं रतलाम जिले हैं। दोनों जिले मध्य प्रदेश के महत्वपूर्ण औद्योगिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र माने जाते हैं, परंतु उनकी आर्थिक संरचना, जनसंख्या का स्वरूप और संसाधनों की उपलब्धता में अंतर है। इसलिए यह तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि एक ही राज्य की योजनाएँ अलग-अलग जिलों में किस प्रकार लागू हो रही हैं और उनका प्रभाव किन बिंदुओं पर भिन्न है।

इस अध्ययन में विशेष ध्यान निम्न पहलुओं पर दिया गया है:

1. लाभार्थियों की संख्या का तुलनात्मक विश्लेषण
2. लिंग आधारित भागीदारी (महिला एवं पुरुष उद्यमी)
3. सामाजिक वर्गीय वितरण (सामान्य, पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति एवं जनजाति)
4. बैंक द्वारा स्वीकृत एवं वितरित राशि का आकलन

इन सभी पहलुओं का तुलनात्मक अध्ययन करके यह समझने का प्रयास किया गया है कि उज्जैन और रतलाम जिलों में उद्यमिता विकास की वास्तविक स्थिति क्या है, योजनाओं का कितना प्रभाव रहा है और किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है।

साहित्य समीक्षा

1. Sharma & Sharma (2021) ने अपने अध्ययन में पाया कि मध्य प्रदेश की रोजगार-आधारित योजनाएँ ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में उद्यमिता को प्रोत्साहन देती हैं। हालांकि, प्रचार-प्रसार की कमी और बैंकिंग प्रक्रियाओं की जटिलता योजनाओं की सफलता में बाधक हैं।
2. Mishra (2022) के अनुसार, युवाओं का झुकाव स्टार्ट-अप्स की ओर बढ़ा है, किंतु पूँजी की कमी, प्रशिक्षण की अनुपलब्धता और सामाजिक जोखिम की धारणा, उद्यमिता के विकास को प्रभावित करती है।

अध्ययन का उद्देश्य:

1. उज्जैन एवं रतलाम जिले में सरकारी योजनाओं के तहत उद्यमिता विकास की स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
2. उद्यमिता के विकास का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

समंक विश्लेषण एवं विवेचना – प्रस्तुत शोध-पत्र में उपरोक्त योजनाओं का उज्जैन एवं रतलाम जिले के मध्य एक तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, जो की निम्नानुसार है :

1. मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना का वर्गों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।
2. मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना का वर्गों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।
3. मुख्यमंत्री कृषक उद्यमी योजना का वर्गों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

तालिका क्रं. 1 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)
आरेख क्रं. 1 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

सर्वेक्षित तालिका क्रं. 1 के आधार पर उज्जैन एवं रतलाम जिले के मध्य मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना का विभिन्न वर्गों (सामान्य, पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति) के आधार पर, वर्ष 2014-15 से 2018-19 तक, तुलनात्मक अध्ययन करने पर निम्नलिखित बिन्दु प्राप्त हुए हैं-

1.1 उज्जैन एवं रतलाम जिले के मध्य सामान्य वर्ग के हितग्राहीयों की तुलना करने पर:

1. वर्ष 2014-15 में योजना के अंतर्गत उज्जैन जिले में सामान्य वर्ग के 17 हितग्राही है, जबकि रतलाम जिले में वर्ष 2014-15 के आंकड़ों की उपलब्धता के अनुसार 2 हितग्राहियों कि संख्या ज्ञात की जा सकी है। अत: उक्त वर्ष में उज्जैन एवं रतलाम जिले के मध्य हितग्राहियों की तुलना में उज्जैन जिले में 15 हितग्राही अधिक हैं।
2. वर्ष 2015-16 में योजना के अंतर्गत उज्जैन जिले में सामान्य वर्ग के 26 हितग्राही है, जबकि रतलाम जिले में सामान्य वर्ग के 10 हितग्राही हैद्य अत: उक्त वर्ष में जिले के मध्य हितग्राहियों की तुलना में उज्जैन जिले में 16 हितग्राही अधिक हैं।
3. वर्ष 2016-17 में योजना के अंतर्गत उज्जैन जिले में सामान्य वर्ग के 32 हितग्राही है, जबकि रतलाम जिले में सामान्य वर्ग के 7 हितग्राही हैद्य अत: उक्त वर्ष में जिले के मध्य हितग्राहियों की तुलना में उज्जैन जिले में 25 हितग्राही अधिक हैं।
4. वर्ष 2017-18 में योजना के अंतर्गत उज्जैन जिले में सामान्य वर्ग के 34 हितग्राही है, जबकि रतलाम जिले में सामान्य वर्ग के 4 हितग्राही है हैद्य अत: उक्त वर्ष में जिले के मध्य हितग्राहियों की तुलना में उज्जैन जिले में 30 हितग्राही अधिक हैं।
5. वर्ष 2018-19 में योजना के अंतर्गत उज्जैन जिले में सामान्य वर्ग के 21 हितग्राही है, जबकि रतलाम जिले में सामान्य वर्ग के 2 हितग्राही है अर्थात उक्त वर्ष में उज्जैन जिले में 19 हितग्राही अधिक हैं।

वर्ष 2014-15 से 2018-19 तक के पाँच वर्षों में उज्जैन जिले में कुल 130 तथा वर्ष 2014-15 से 2018-19 तक के पाँच वर्षों में रतलाम जिले में कुल 25 सामान्य वर्ग के हितग्राही हुए हैं।

अत: यह स्पष्टतया कहा जा सकता है कि रतलाम जिले की तुलना में उज्जैन जिले में सामान्य वर्ग के 105 युवाओं ने अधिक संख्या में योजना का लाभ उठाया है तथा उज्जैन एवं रतलाम जिले में सामान्य वर्ग के कुल 155 हितग्राहियों में उज्जैन जिले में 83.87 प्रतिशत तथा रतलाम जिले में 16.13 प्रतिशत युवा उद्यमी हैं। इस प्रकार उज्जैन जिले में 67.74 प्रतिशत हितग्राही अधिक हैं।

तालिका क्रं. 2 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)
आरेख क्रं. 2 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

सर्वेक्षित तालिका क्रं. 2 के आधार पर उज्जैन एवं रतलाम जिले के मध्य मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना का विभिन्न वर्गों (सामान्य, पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति) के आधार पर, वर्ष 2014-15 से 2018-19 तक, तुलनात्मक अध्ययन करने पर निम्नलिखित बिन्दु प्राप्त हुए हैं-

2.1 उज्जैन एवं रतलाम जिले के मध्य सामान्य वर्ग के हितग्राहियों की तुलना करने पर:

1. वर्ष 2014-15 में योजना के अंतर्गत उज्जैन जिले में सामान्य वर्ग के 300 हितग्राही है, जबकि रतलाम जिले में वर्ष 2014-15 के आंकड़ों की उपलब्धता के अनुसार 166 हितग्राहियों कि संख्या ज्ञात की जा सकी है। अत: उक्त वर्ष में उज्जैन एवं रतलाम जिले के मध्य हितग्राहियों की तुलना में उज्जैन जिले में 134 हितग्राही अधिक हैं।
2. वर्ष 2015-16 में योजना के अंतर्गत उज्जैन जिले में सामान्य वर्ग के 355 हितग्राही है, जबकि रतलाम जिले में सामान्य वर्ग के 319 हितग्राही हैद्य अत: उक्त वर्ष में जिले के मध्य हितग्राहियों की तुलना में उज्जैन जिले में 36 हितग्राही अधिक हैं।
3. वर्ष 2016-17 में योजना के अंतर्गत उज्जैन जिले में सामान्य वर्ग के 392 हितग्राही है, जबकि रतलाम जिले में सामान्य वर्ग के 361 हितग्राही हैद्य अत: उक्त वर्ष में जिले के मध्य हितग्राहियों की तुलना में उज्जैन जिले में 31 हितग्राही अधिक हैं।
4. वर्ष 2017-18 में योजना के अंतर्गत उज्जैन जिले में सामान्य वर्ग के 474 हितग्राही है, जबकि रतलाम जिले में सामान्य वर्ग के 387 हितग्राही है हैद्य अत: उक्त वर्ष में जिले के मध्य हितग्राहियों की तुलना में उज्जैन जिले में 87 हितग्राही अधिक हैं।
5. वर्ष 2018-19 में योजना के अंतर्गत उज्जैन जिले में सामान्य वर्ग के 327 हितग्राही है, जबकि रतलाम जिले में सामान्य वर्ग के 154 हितग्राही है अर्थात उक्त वर्ष में उज्जैन जिले में 173 हितग्राही अधिक हैं।

वर्ष 2014-15 से 2018-19 तक के पाँच वर्षों में उज्जैन जिले में कुल 1848 तथा वर्ष 2014-15 से 2018-19 तक के पाँच वर्षों में रतलाम जिले में कुल 1387 सामान्य वर्ग के हितग्राही हुए हैं। अत: यह स्पष्टतया कहा जा सकता है कि रतलाम जिले की तुलना में उज्जैन जिले में सामान्य

वर्ग के 461 युवाओं ने अधिक संख्या में योजना का लाभ उठाया है तथा उज्जैन एवं रतलाम जिले में सामान्य वर्ग के कुल 3235 हितग्राहियों में उज्जैन जिले में 57.13 प्रतिशत तथा रतलाम जिले में 42.87 प्रतिशत युवा उद्यमी हैं। इस प्रकार उज्जैन जिले में 14.26 प्रतिशत हितग्राही अधिक हैं।

उज्जैन एवं रतलाम जिले में मुख्यमंत्री कृषक उद्यमी योजना का वर्गों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन वर्ष 2018-19

तालिका क्रं. 3 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

आरेख क्रं. 3 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

सर्वेक्षित तालिका क्रं. 3 के आधार पर उज्जैन और रतलाम जिले के मध्य मुख्यमंत्री कृषक उद्यमी योजना का विभिन्न वर्गों (सामान्य, पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति) के आधार पर, वर्ष 2018-19 का, तुलनात्मक अध्ययन करने पर निम्नलिखित बिन्दु ज्ञात हुए है-

1. वर्ष 2018-19 में उज्जैन जिले में सामान्य वर्ग के कुल 04 हितग्राही है, जबकि रतलाम जिले में सामान्य वर्ग के कुल 09 हितग्राही हुए है। अत: यह स्पष्टतया कहा जा सकता है कि उज्जैन जिले की तुलना में रतलाम जिले में 05 हितग्राही अधिक है तथा उज्जैन एवं रतलाम जिले में सामान्य वर्ग के कुल 13 हितग्राहियों में उज्जैन जिले में 30.77 प्रतिशत तथा रतलाम जिले में 69.23 प्रतिशत हितग्राही है। इस प्रकार रतलाम जिले में 38.46 प्रतिशत हितग्राही अधिक है।
2. वर्ष 2018-19 में उज्जैन जिले में पिछड़ा वर्ग के कुल 05 हितग्राही है, जबकि रतलाम जिले में सामान्य वर्ग के कुल 03 हितग्राही हुए है। अत: यह स्पष्टतया कहा जा सकता है कि रतलाम जिले की तुलना में उज्जैन जिले में 02 हितग्राही अधिक है तथा उज्जैन एवं रतलाम जिले में पिछड़ा वर्ग के कुल 08 हितग्राहियों में उज्जैन जिले में 62.5 प्रतिशत तथा रतलाम जिले में 37.5 प्रतिशत हितग्राही है। इस प्रकार उज्जैन जिले में 25 प्रतिशत हितग्राही अधिक है।
3. वर्ष 2018-19 में उज्जैन जिले में अनुसूचित जाति के कुल 03 हितग्राही है, जबकि रतलाम जिले में अनुसूचित जाति के कुल 00 हितग्राही हुए है। अत: यह स्पष्टतया कहा जा सकता है कि रतलाम जिले की तुलना में उज्जैन जिले में 03 हितग्राही अधिक है तथा उज्जैन एवं रतलाम जिले में अनुसूचित जाति के कुल 03 हितग्राहियों में उज्जैन जिले में 100 प्रतिशत तथा रतलाम जिले में शून्य प्रतिशत हितग्राही है। इस प्रकार उज्जैन जिले में 100 प्रतिशत हितग्राही अधिक है।
4. वर्ष 2018-19 में उज्जैन जिले में अनुसूचित जनजाति के कुल 04 हितग्राही है, जबकि रतलाम जिले में अनुसूचित जनजाति के कुल 00 हितग्राही हुए है। अत: यह स्पष्टतया कहा जा सकता है कि रतलाम जिले की तुलना में उज्जैन जिले में 04 हितग्राही अधिक है तथा उज्जैन एवं रतलाम जिले में अनुसूचित जनजाति के कुल 04 हितग्राहियों में उज्जैन जिले में 100 प्रतिशत तथा रतलाम जिले में शून्य प्रतिशत हितग्राही है। इस प्रकार उज्जैन जिले में 100 प्रतिशत हितग्राही अधिक है।
5. वर्ष 2018-19 में उज्जैन जिले में कुल 16 एवं रतलाम जिले में कुल 12 हितग्राही हुए है। अत: यह स्पष्टतया कहा जा सकता है कि रतलाम जिले की तुलना में उज्जैन जिले में 04 हितग्राहियों ने अधिक संख्या में इस योजना का लाभ उठाया है तथा उज्जैन एवं रतलाम जिले में कुल 28 हितग्राहियों में उज्जैन जिले में 57.14 प्रतिशत तथा रतलाम जिले में 42.86 प्रतिशत हितग्राही कृषक उद्यमी है। इस प्रकार उज्जैन जिले में 14.28 प्रतिशत हितग्राही अधिक है।

शोध परिकल्पना :

1. H_0: उद्यमिता विकास में शासकीय योजनाओं की बड़ी भूमिका है।

   H_1: उद्यमिता विकास में शासकीय योजनाओं की बड़ी भूमिका नहीं है।

भविष्य में शासकीय योजनाओं का लाभ लेने के इच्छुक व्यक्तियों का विश्लेषण

तालिका क्र. 4 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

तालिका से स्पष्ट है की F value = 3.564 (Sig.138) है जो और 0.05 स्मअमस और df= 11 पर सार्थक नहीं है। अत: यह स्पष्ट है की उद्यमिता विकास में शासकीय योजनाओं की कोई सार्थक भूमिका नहीं है। अत: उपकल्पना H_1 अस्वीकार होती है।

मुख्य निष्कर्ष:

1. उज्जैन जिले में योजनाओं का लाभ लेने वाले लाभार्थियों की संख्या रतलाम जिले से कहीं अधिक रही।
2. महिलाओं की भागीदारी दोनों जिलों में संतोषजनक रही, परंतु उज्जैन में प्रतिशत अधिक पाया गया।
3. शिक्षा के आधार पर अधिकांश लाभार्थी स्नातक और स्नातकोत्तार थे, जिससे पता चलता है कि शिक्षित युवा उद्यमिता की ओर आकर्षित हो रहे हैं।
4. दोनों जिलों में उद्यमिता विकास से न केवल लाभार्थियों को बल्कि अन्य व्यक्तियों को भी रोजगार के अवसर प्राप्त हुए।
5. उज्जैन और रतलाम दोनों जिलों के अधिकांश लाभार्थियों ने भविष्य में पुन: शासकीय योजनाओं का लाभ लेने की इच्छा व्यक्त की है। विशेष रूप से मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना और मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के प्रति उच्च रुचि देखी गई।

सांख्यिकीय परीक्षण का परिणाम:

ANOVA विश्लेषण में प्राप्त F value = 3.564 तथा Sig. = 0.138 (P> 0.05) होने से यह स्पष्ट है कि दोनों जिलों के लाभार्थियों के बीच योजनाओं को अपनाने की प्रवृत्ति में कोई सार्थक सांख्यिकीय अंतर नहीं पाया गया।

शोध परिकल्पना का परीक्षण – चूँकि प्राप्त परिणाम 0.05 के स्तर पर महत्वपूर्ण नहीं है, अत: यह परिकल्पना कि 'उद्यमिता विकास में शासकीय योजनाओं की बड़ी भूमिका है' सार्थक रूप से प्रमाणित नहीं होती। इसलिए वैकल्पिक उपकल्पना (H_1) को अस्वीकार किया गया।

निष्कर्ष – अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि उद्यमिता विकास और रोजगार सृजन में सरकारी योजनाएँ अत्यंत प्रभावी रही हैं। उज्जैन जिले ने रतलाम की तुलना में अधिक प्रगति की है, जो प्रशासनिक सहयोग, जागरूकता और लाभार्थियों की भागीदारी के कारण संभव हुआ। रतलाम जिले में सुधार की गुंजाइश है, विशेषकर महिला उद्यमियों और पिछड़े वर्गों की भागीदारी बढ़ाने में।

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि मध्य प्रदेश की रोजगार-आधारित योजनाएँ उद्यमिता विकास की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं और यदि प्रचार-प्रसार, प्रशिक्षण तथा वित्तीय सहयोग और बेहतर हो तो यह राज्य की आर्थिक प्रगति और रोजगार सृजन में और अधिक योगदान दे सकती हैं।

सुझाव :

1. योजनाओं के प्रचार-प्रसार को और प्रभावी बनाया जाए, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में।
2. प्रशिक्षण और मार्गदर्शन कार्यक्रमों को अनिवार्य किया जाए ताकि उद्यमियों की सफलता दर बढ़ सके।
3. महिलाओं एवं पिछड़े वर्गों की अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु विशेष प्रोत्साहन योजनाएँ बनाई जाएँ।
4. बैंकिंग प्रक्रियाओं को सरल और समयबद्ध किया जाए ताकि लाभार्थियों को शीघ्र ऋण व अनुदान मिल सके।
5. योजनाओं की मॉनिटरिंग एवं मूल्यांकन प्रणाली को मजबूत बनाया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. शर्मा, आर. एवं वर्मा, एस. (2021)'मध्य प्रदेश में उद्यमिता विकास और रोजगार मूलक योजनाओं का प्रभाव: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन' भोपाल: शोध प्रकाशन।
2. मिश्रा, पी. (2022)'भारतीय युवाओं में स्टार्ट-अप संस्कृति और उद्यमिता की संभावनाएँ' दिल्ली: राष्ट्रीय आर्थिक शोध संस्थान।
3. मध्य प्रदेश शासन, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग। (2019). मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना, मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना एवं मुख्यमंत्री कृषक उद्यमी योजना: दिशा-निर्देश एवं प्रगति रिपोर्ट. भोपालरू शासन प्रकाशन।
4. जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र, उज्जैन एवं रतलाम। (2015-2019). वार्षिक प्रतिवेदन एवं योजनाओं से संबंधित आँकड़े.
5. भारतीय रिजर्व बैंक। (2020)'सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के लिए ऋण प्रवाह की स्थिति' मुंबई: आरबीआई प्रकाशन।
6. अग्रवाल, एम. (2020)'भारत में महिला उद्यमिता और सरकारी योजनाओं की भूमिका' जयपुर: साहित्य अकादमी।

अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय जर्नल्स:

1. Journal of Indian Accounting Association- ISSN 0972&1479 (National)
2. Madhya Pradesh journal of Social Sciences- ISSN 0973&855X (National)
3. Pacific Business Review- ISSN 0974&438X (International)

वेबसाईट्स:

1. en.m.wikipdia.org>wiki>Neemuch-
2. https//book.google.co.in
3. https://mandsaur.nic.in

तालिका क्रं. 1: उज्जैन एवं रतलाम जिले में मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना का वर्गों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

उज्जैन जिला							रतलाम जिला						
क्रं	वर्ष	सामान्य	पिछड़ा वर्ग	अनु. जाति	अनु. जनजाति	कुल हितग्राही	क्रं	वर्ष	सामान्य	पिछड़ा वर्ग	अनु. जाति	अनु. जनजाति	कुल हितग्राही
1	2014-15	17	10	3	1	31	1	2014-15	2	6	4	1	13
2	2015-16	26	12	6	2	46	2	2015-16	10	9	5	10	34
3	2016-17	32	14	4	2	52	3	2016-17	7	11	3	11	32
4	2017-18	34	16	4	2	56	4	2017-18	4	10	10	8	32
5	2018-19	21	11	6	2	40	5	2018-19	2	3	9	12	26
	कुल	130	63	23	9	225		कुल	25	39	31	42	137

आरेख क्रं. 1 : उज्जैन एवं रतलाम जिले में मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना का वर्गों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

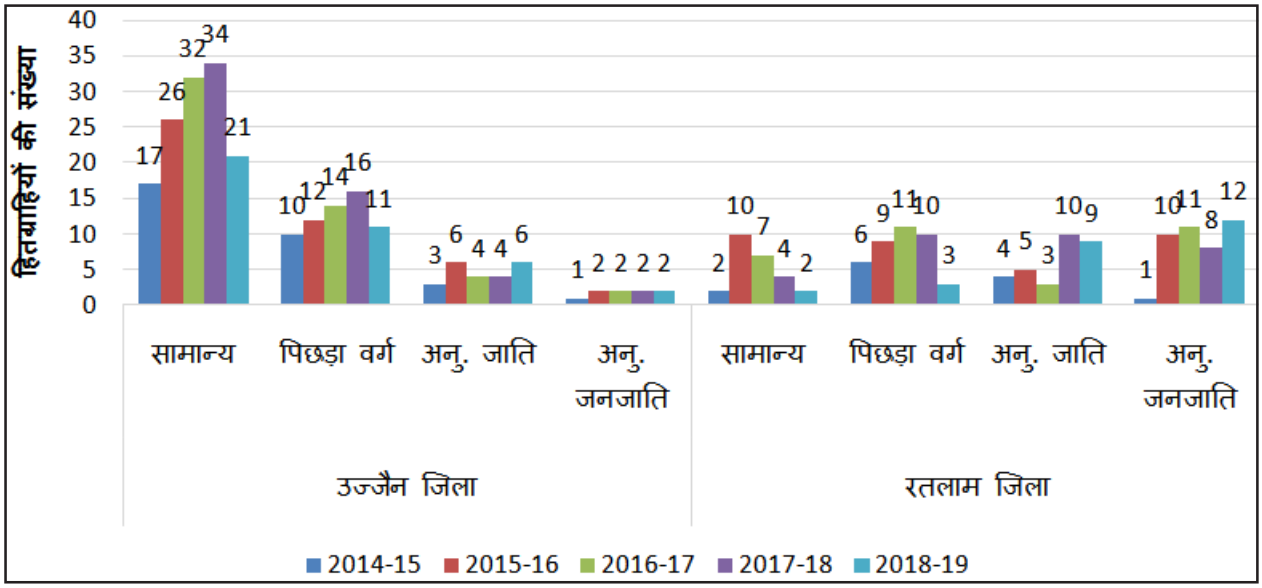

तालिका क्रं.2 : उज्जैन एवं रतलाम जिले में मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना का वर्गों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन वर्ष 2014-15 से 2018-19

उज्जैन जिला							रतलाम जिला						
क्रं	वर्ष	सामान्य	पिछड़ा वर्ग	अनु. जाति	अनु. जनजाति	कुल हितग्राही	क्रं	वर्ष	सामान्य	पिछड़ा वर्ग	अनु. जाति	अनु. जनजाति	कुल हितग्राही
1	2014-15	300	137	78	33	548	1	2014-15	166	136	66	34	402
2	2015-16	355	167	115	49	686	2	2015-16	319	145	87	29	580
3	2016-17	392	225	90	33	740	3	2016-17	361	120	60	61	602
4	2017-18	474	227	126	78	905	4	2017-18	387	188	93	70	738
5	2018-19	327	201	103	37	668	5	2018-19	154	87	70	44	355
	कुल	1848	957	512	230	3547		कुल	1387	676	376	238	2677

आरेख क्रं.2: उज्जैन एवं रतलाम जिले में मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना का वर्गों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन वर्ष 2014-15 से 2018-19

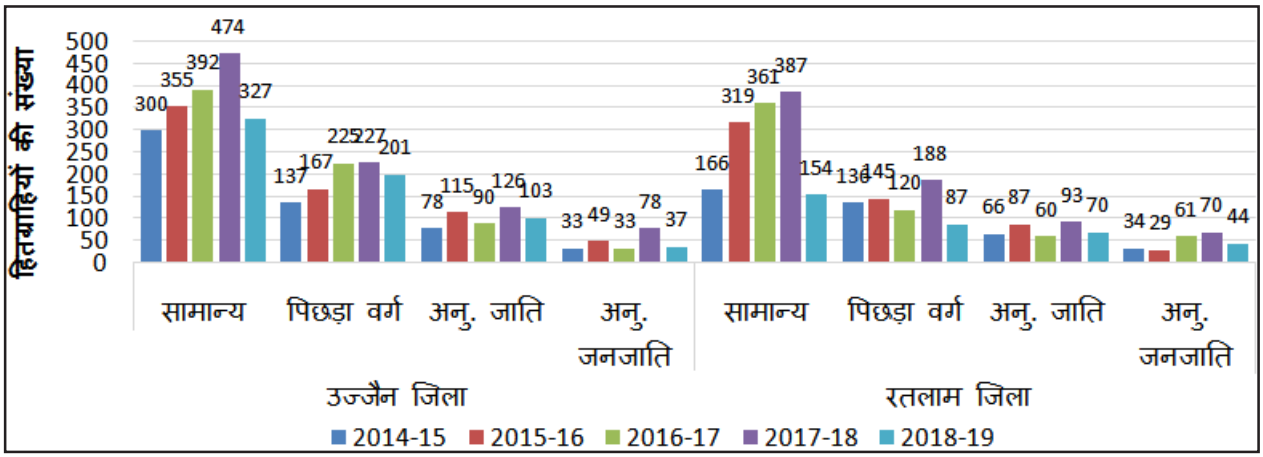

तालिका क्रं. 3

उज्जैन जिला							रतलाम जिला						
क्रं	वर्ष	सामान्य	पिछड़ा वर्ग	अनु. जाति	अनु. जनजाति	कुल हितग्राही	क्रं	वर्ष	सामान्य	पिछड़ा वर्ग	अनु. जाति	अनु. जनजाति	कुल हितग्राही
1	2018-19	4	5	3	4	16	1	2018-19	9	3	0	0	12
	कुल	4	5	3	4	16		कुल	9	3	0	0	12

स्रोत:- जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र, उज्जैन एवं रतलाम

आरेख क्रं. 3 : उज्जैन एवं रतलाम जिले में वर्गों का अध्ययन वर्ष 2018-19

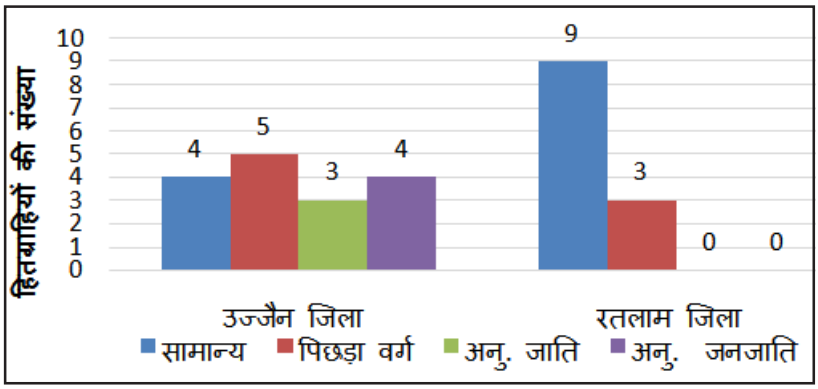

तालिका क्रमांक: 4:

योजनाओं के नाम	भविष्य में शासकीय योजनाओं का लाभ लेने के इच्छुक	उज्जैन जिला		रतलाम जिला	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना	हाँ	33	66	37	74
	नहीं	17	34	13	26
मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना	हाँ	32	64	36	74
	नहीं	18	36	14	26
मुख्यमंत्री कृषक उद्यमी योजना	हाँ	9	50	8	57.14
	नहीं	9	50	6	42.86

स्त्रोत : – व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर

Descriptive

Frequency		N	Mean	Std. Devia -tion	Std. Error	95% Confidence Interval for Mean		Mini mum	Maxi mum	Between Component Variance
						Lower Bound	Upper Bound			
Yes		6	23.2	12.21	4.235	10.84	37.62	8	37	
No		6	14.52	5.305	2.065	7.65	20.26	6	18	
Total		12	18.68	10.224	3.246	11.26	26.88	8	37	
Model	Fixed Effects			11.134	3.1	14.26	26.53			
	Random Effects				5.213	-32.82	84.34			36.894

ANOVA

Frequency	Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
Between Groups	313.456	1	313.456	3.564	0.138
Within Groups	1203.4	10	120.34		
Total	1516.856	11			

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Cyber Crime Against Women and Children in India

Dr. Anoop Kailasia*

***Assistant Professor (Law) Govt. Law College, Gwalior (M.P.) INDIA**

Abstract : The internet is one of the most effective communication tools available, and Indians use the most internet data worldwide. As industrialization and technical breakthroughs increased, the realm of cyberspace saw an exponential growth in the potential and characteristics of the internet. It may be used for both constructive and negative impact. The distance significantly decreased, and we could now easily access any far-flung region of the globe. But emerging technology has also become a vehicle for cybercrime, or violence in cyberspace. Due to their ambiguity, cybercrimes are very difficult to trace back, which is why criminals frequently choose to commit them. Cyberspace violence blurs the boundaries of jurisdiction, and victims become more numerous as a result of ignorance and unfamiliarity. Women, children, and other vulnerable populations are the targets of the bulk of cybercrimes. Common instances include financial exploitation, child grooming, blackmail, and pornography. The Information Technology Act of 2000 (amended 2008) regulates such offenses. The current condition of cybercrimes against Madhya Pradesh's women and children will be discussed in this article. The findings presented in this article are derived from a research study focused on this topic. Overall, there is a need to explore the methods of executing cybercrimes and to propose specific measures to prevent and manage cybercrime targeting women and children in cyberspace.

Introduction - In India, cybercrimes against women and children are becoming a bigger problem. These crimes include child grooming, cyberstalking, cyberpornography, online harassment, cyberblackmail, and child pornography, which use digital platforms to reinforce offline harms. Due to societal factors and the increasing prevalence of the internet, women and children are particularly vulnerable and frequently targeted by digital abuse, including revenge pornography and deepfakes. There are calls for stronger legal frameworks and specialized investigative bodies, like the online cybercrime reporting portal, because, despite the fact that the Indian Penal Code, with sections like 354A, and the Information Technology Act, 2000, offer some legal recourse, it is difficult to address the complexity of these crimes.

Concept Of Cyber crime : One must first understand crime, which is connected to computers and the internet, in order to understand cybercrime. There is no difference between the idea of cybercrime and the idea of conventional offense. Whether by action or inaction, both entail actions that are against the law and are compensated for by the government. Cybercrime is distinct in that the victim and the offender may never come into direct contact. Bloodless and non-violent, cybercrime is committed through highly sophisticated means. The emergence of e-crime has made it difficult for the legal system to pinpoint instances of cloning being used in cybercrime.

India's Cyber Legislation For Women: In India, cybercrimes against women are addressed through a combination of provisions under the new Bharatiya Nyaya Sanhita (BNS, 2023), the Information Technology (IT) Act, 2000, and the Protection of Children from Sexual Offences (POCSO) Act, 2012. These laws cover a range of offenses, from cyberstalking and obscenity to identity theft and violation of privacy.

legal provisions for women's cyber safety in Bharatiya Nyaya Sanhita (BNS, 2023)

Section 78 (Stalking): Criminalizes following or repeatedly contacting a woman, electronically or otherwise, despite her clear disinterest.

Section 79 (Outraging the Modesty of a Woman): Addresses online actions like sharing offensive content or making derogatory remarks intended to insult a woman's dignity.

Section 77 (Voyeurism): Punishes capturing or distributing images of a woman engaged in a private act without her consent. Sharing images even with initial consent but not for dissemination is also an offense.

Section 351(4) (Criminal Intimidation): Covers threats made through anonymous communication on electronic platforms.

Information Technology (IT) Act, 2000

Section 66C (Identity Theft): Punishes the fraudulent use of a person's digital identity, including passwords or

electronic signatures, which is common in cases of creating fake profiles.

Section 66D (Cheating by Personation): Addresses using a computer resource to impersonate another person for harassment.

Section 66E (Violation of Privacy): Punishes capturing, publishing, or transmitting images of a person's private parts without their consent, often used for cases of "revenge porn".

Section 67 (Publishing Obscene Content): Prohibits publishing or transmitting obscene material in electronic form.

Section 67A (Publishing Sexually Explicit Content): Prescribes stricter punishment for disseminating sexually explicit material.

IT (Intermediary Guidelines and Digital Media Ethics Code) Rules, 2021: Hold social media platforms accountable for user safety and require them to remove violating content within specified timelines.

Government initiatives and support systems:

National Cyber Crime Reporting Portal (cybercrime.gov.in): A central government portal where anyone can report cybercrimes, with a special focus on crimes against women and children. It also allows for anonymous reporting in cases related to child sexual abuse material (CSAM) and explicit rape or gang rape content.

Cybercrime Prevention against Women and Children (CCPWC): A project by the Ministry of Home Affairs to create awareness, provide training to law enforcement, and improve cyber forensic facilities.

Digital Shakti Program: An initiative by the National Commission for Women (NCW) that aims to provide women with digital awareness and cyber safety tips.

Collect evidence: Take screenshots, save URLs, and preserve chat logs or emails related to the harassment.

File a complaint: Report the incident on the National Cyber Crime Reporting Portal or at the nearest police station or cybercrime cell.

Seek support: Contact legal experts, NGOs, or the NCW for assistance and guidance.

Cybercrime against children's : The increasing digitalization of daily life has led to a concerning rise in cybercrime against children in India. With more children accessing the internet for education, entertainment, and social connections, they are becoming increasingly exposed to online risks. This has been particularly exacerbated since the COVID-19 pandemic, where a shift to online schooling resulted in more screen time and digital isolation for children.

Scale of the problem

Rising statistics: According to data from the National Crime Records Bureau (NCRB), cases of cybercrime against children have been steadily increasing. A significant surge of 32% was reported between 2021 and 2022, with a total of 1,823 cases recorded in 2022.

Growing vulnerability: Children are vulnerable targets for online predators due to their inherent trust, naiveté, and curiosity. Many lack the digital literacy to identify and assess online threats, making them susceptible to exploitation.

Diverse platforms: The risks appear across various platforms, including social media, chat rooms, online games, and encrypted messaging apps, which offer anonymity to malicious actors.

Common forms of cybercrime against children

Child Sexual Abuse Material (CSAM): The creation, publishing, and transmission of child sexual abuse material in electronic form is a severe and prevalent crime. Cases of this offense have shown a worrying increase, with 1,171 cases reported in 2022 alone.

Cyber grooming: Perpetrators befriend children online, often by using false identities and preying on their need for attention, with the intent of sexual exploitation.

Cyberbullying: The use of digital platforms to harass, threaten, and manipulate minors is widespread and can have severe psychological impacts, including anxiety and depression.

Sextortion and sexting: Criminals manipulate or pressure children into sharing explicit images, which are then used for blackmail or extortion.

Exposure to harmful content: This includes exposure to violent, pornographic, and inappropriate material that can cause severe emotional and mental harm.

Identity theft and fraud: Malicious actors can hack accounts to steal personal information for fraudulent purposes or impersonate the child.

Legal framework: India addresses cybercrime against children through a multi-pronged legal approach, drawing from several key acts:

Information Technology (IT) Act, 2000: This act includes provisions like Section 67B, which specifically penalizes the publication, transmission, or viewing of child sexual abuse material online.

Protection of Children from Sexual Offences (POCSO) Act, 2012: The POCSO Act provides for mandatory reporting of offenses and child-friendly procedures for recording evidence. It also criminalizes various forms of online sexual harassment, enticement, and pornography involving children.

Digital Personal Data Protection Act (DPDPA), 2023: This legislation aims to regulate how companies handle children's data, requiring verifiable parental consent for those under 18.

Government and public initiatives: The government has launched several initiatives to combat cybercrime and protect children online:

Indian Cyber Crime Coordination Centre (I4C): Established by the Ministry of Home Affairs, this center coordinates efforts among law enforcement agencies to deal with cybercrime.

National Cyber Crime Reporting Portal (www.cybercrime.gov.in): This portal allows the public to

report cybercrime incidents, with a specific focus on crimes against women and children.

POCSO e-Box: The National Commission for Protection of Child Rights (NCPCR) has set up an online platform for children or guardians to report sexual abuse cases.

Awareness campaigns: The government and NGOs regularly conduct awareness campaigns for parents, teachers, and students on online safety.

Ongoing challenges:

Jurisdictional issues: The global nature of the internet, with varied legal standards across countries, poses significant challenges in tracking and prosecuting offenders.

Lack of uniform legislation: Despite recent reforms, some legal gaps remain, including the lack of explicit legal provisions for certain crimes like online grooming and cyberbullying.

Underreporting: The stigma associated with sexual crimes and a lack of awareness among parents and children about reporting mechanisms often lead to underreporting.

Latest cybercrime statistics against women and children in India (2025): The latest available data on cybercrime in India indicates an increasing trend in cases reported against women and children. Here's a summary of the situation based on recent reports:

Overall rise in cybercrime: A total of 6,593,682 cybercrime incidents were reported to the National Cybercrime Reporting Portal (NCRP) from 2021 to June 2025.

There's been a significant surge in cybercrime cases in India, with reported losses crossing [1] 22,845 crore in 2024, a 206% rise from 2023.

In 2024 alone, 36.37 lakh incidents of financial fraud were reported through the NCRP and the Citizen Financial Cyber Fraud Reporting and Management System (CFCFRMS).

Cybercrime against women: Nearly 20 lakh cybercrime complaints were recorded in 2024, and 1 in every 5 cases involved online abuse against women.

However, many women hesitate to report these crimes due to shame, dismissal, and a lack of understanding within the system regarding gendered trauma, according to an Instagram post by Her Circle.

According to MediaNama, funding for a women-focused cybercrime scheme dropped by 89% amidst the rising online abuse.

Cybercrime against children: The National Crime Records Bureau's (NCRB) 2022 report, the latest available, showed a 32% increase in cybercrimes against children, highlighting challenges in addressing online exploitation and child sexual abuse material (CSAM). Between 2018 and 2022, there has been a steady increase in cybercrime cases against children in India.

Conclusion: first and most important recommendation is that women should be courageous enough to confront the issue and warn their loved ones about such acts. The state and the federal government ought to enact new laws to combat this cybercrime. To sum up, cybercrime directed at women is a developing issue in India that has major ramifications for women's online safety and wellbeing. Prioritizing women's safety and wellbeing online is crucial, as is working to build a more just and inclusive society where women can enjoy their rights without worrying about violence or harassment.

Social media has become a lucrative target for criminals. Common crimes perpetrated online include stalking, honey trapping, and the release of personal information. The longer moms and kids spend online, without fully understanding the dangers of the internet, the more exposed they are. According to the survey, cybercriminals and female and child internet users in India are still vying for control of the internet's future. People are still afraid about the cyber apocalypse. Due to several shortcomings, the Indian Information Technology Act of 2000 is not being implemented efficiently, which leads to a rise in cybercrimes against women and children.

References:-

1. "Cyber Crimes against Women in India," by Dr. Ritu Sharma, published in 2019
2. "Women and Cybercrime in India: Challenges and Solutions," edited by Dr. Debarati
3. Halder and Dr. K. Jaishankar, published in 2017
4. C. Burgess-Proctor, "Understanding the Malevolent Use of Technology by Intimate
5. Partner Abusers," Violence Against Women, vol. 21, no. 8, pp. 995-1016, 2015.
6. Haldar, D., & Jaishankar, K. (2011), Victimization of Women inCyber Space Cyber Crime and Victimization of Women :Law,Rights and regulations, IGI Global.
7. Vanita P.K. (2012), Cyber Crime against women-perception and opinion of cyber cell officials and counselors, Retrieved from
8. https://oaji.net/articles/2021/1201-1610009923.pdf
9. Drirender Kumar (July 2018), Ministry of women and children,Retrieved from https://pib.gov.in/ Press Release Page.aspx?PRID=1540340
10. Shashya Mishra (Dec. 2018), Dimension of cybercrime againstwomen in India, Retrieved from https:// www.ijrar. org/papers/IJRAR1944342.pdf
11. Dharmraj,S. (2018),The current state of Cyber Security in India.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Understanding the New Education Policy 2020 in the light of Swami Vivekananda's Concept of Education : An Analysis

Dr. Akhilesh Mani Tripathi*

***Assistant Professor (Political Science) Govt. Autonomous P.G College, Satna (M.P.) INDIA**

Abstract : The New Education Policy (NEP) 2020 has outlined significant reforms in the Indian Education System. It has mainly emphasized on early childhood education, a mother-tongue-based medium of instruction up to primary education, mandatory vocation training, and a move towards holistic assessment together with developing scientific temperament and a critical thinking to global competitiveness. The principal features of NEP-2020 documents are so close to the ideas of Swami Vivekananda's expressed on education that document seems to a great extent, on exposition of the ideas of Swami Vivekananda on education which were reflected upon during the Renaissance period of Indian history more than two thousand year back . This released paper humbly attempt to explore how the ideas of Swami Vivekananda are still relevant for the need of preparing human resources for India even in 21st century.
Keywords: NEP 2020, ECCE, Multilingualism, Mother tongue, Skill development, holistic progress card, Equity and Access, SEDGs, positive discrimination.

Introduction - The new education policy 2020(NEP) was announced by the Government of India on 29th July 2020. Subsequent to the National Education Policy announced in 1986, NEP policy of India 2020 is the first major change in the educational policy of India.

Principal features of NEP-2020- NEP -2020 provides fundamental structure and functional changes in India's educational system with a view to prepare the youth of India competent both the nation's need and global competitiveness along with the growth of their personality imbued in the value of Indian culture and tradition. Its key aspects, in brief, are summarized as following.

(A) New Curriculum Structure- The policy introduces an education structure designated as '5+3+3+4' stage structure for education covering title the completion of secondary education. This structure includes —

(1) Fundamental stage (5 years)- This stage runs from age 03 to 08. This stage covers 'Anganwadi' and grades (classes) 1 and 2 education.
(2) Preparatory Stage (3 year)- this stage runs from age 8 to age of 11 and covers grades(classes) 03 to 05.
(3) Middle stage-(3 years)- This stage runs from Ages 11-14 and covers grades(classes) 6 to 8.
(4) Secondary stage (4 years)- This stage runs from Ages 14-18 and covers grades(classes) 9 to 12.

(B) Early Childhood Education- This significant feature of the structural changes is reflected in incorporating early child care education (ECCE), IE. 'Anganwadi' is to formal school system for early learning and mental development. This early childhood education initiated at the age of 03 reminds Platonic system of education which prescribed educational initiation to the child from the birth.

(C) Multilingualism and medium of mother tongue instruction- The NEP-2020 emphasized education in the mother tongue or regional languages up to class five with no language imposition on students. This aspect of NEP has carefully addressed to both the biological and psychological need of the child."Language is the chief means and index of a nation's progress"[1], Swami Vivekananda upheld; and he advocated that the fittest languagefor education is that "in which we naturally express ourselves, in which we communicate our anger, grief, or love etc.—there cannot be filter language than that."[2] Swami Vivekananda argued that no artificial language can ever have that force, and that gravity and expressiveness, or admit of being given ant truth you please,as that spoken language."[3] Swami Vivekananda emphatically stressed on the need of mother – languages as the medium of education. He pleaded –"Language must be made like pure steel – turn and twist it , any way you like, it is again the same –it clones rock in the twin at one stroke, without its edge being turned."[4]

(D) Focus on skill development- The NEP-2020 aims to get skilled youth for the nation. Therefore, apart from

traditional education, it introduced vocational education and internship mandatory from class six onwards with the purpose to develop skills among the growing youth. Swami Vivekananda conceived of such a system of education for the masses which could help them "to regain their faith in their own self which was essential to wake up the inherent Brahman in them."[5] In his mission of education "the destitute the poor, the illiterate peasantry and laboring classes" prevailed over the gentry.[6]upholding that "a nation is advanced in proportion as education and intelligence(skill) spread among the msasses"[7] he prescribed a practical education as to inculcate skill among "the poor boys" who " would rather go to plough to earn their living than come to your schoor".[8] skill development got so much importance in Swami Vivekananda's education system that to him the ploughman and factory workers needed the first moral of education— "If the poor cannot come to education, education must reach them at the plough, in the factory, everywhere."[9] The entire endeavor behind the introduction of NEP-2020 is to evolve out an education system which can enable the Indian youth to stand on their own feet. The same motive was active in Swami Vivekananda's mind when he was stating for a "Man making education".[10] He was clear in his vision of education for Indian Youth when he conceived of an education which can "help the common mass of people equip themselves for the struggle of life" and enable them " to stand on one's own legs".[11] Swami Vivekananda must be remembered as the forerunner of the mission of the 'Skilled- India'.

(E) Reform in assessment system- The NEP-2020 has found the assessment system of the students going on so far inadequate and recommends "holistic progress could" which includes progress in extracurricular and vocational activities. This holistic assessment system of NEP- 2020 can better be understood in the light of the idea of Swami Vivekananda on education when he has conceived education as the manifestation of 'free-will' trained enough to be ensued rightly and efficiently. He viewed that assessment of the student must be done on the basis of the idea of an education system which reflects the assimilation of all the idea which are 'life – building' , 'man-making' , and 'character –making'.[12]According to Swami Vivekananda the right system of education – the system through which Free- Will can manifest it rightly and efficiently must comprise four dimensions in its body.[13]

(I) Character Forming
(II) Strengthen the mind
(III) Expending of intellect
(IV) Bringing self – reliance

As such a continuous assessment process must be active to evaluate the progress and growth of the student on the basis of these four dimensions of education.

(F) Equity and Access- The NEP-2020 specially focuses on providing quality education to "Socially and Economically Disadvantaged Group (SEDGs)." This idea can also trace itself back in the idea of education expounded by Swami Vivekananda. Essentially, the feature of ' equity and access' incorporated in NEP-2020I is a step forward to ensure the democratization and social justice in the field of education to the disadvantaged and marginalized social sections in India. To Swami Vivekananda, education is national concern, it is not mere an individual affair. A nation can never rise up unless availability of education is ensured to masses. He deplored that downfall of India as a nation was caused mainly due to the monopolization of entire education and intelligence of the land by handful of men, especially royal authority[14]; and it is the expansion of the education to the masses which would expand the life- force of the nation. India failed to complete with the western nations only due to depriving the masses from education by narrowing its field.[15] Further Swami Vivekananda comes as the first personality in whose plan of education destitute, poor illiterate peasantry and laboring classes were given priority over the class of gentry. He clearly supported 'positive discrimination' in favor of socially and economically disadvantaged people. He full throatily spoke- " if there is in equality in nature, still theremust be equal chance for all of its greater for some and for some less-the weaker should be given more chances than strong".[16] In order to ensure access and equality to the deprived masses uncompromised Swami Vivekananda went to this extent to state that " if the son of a Brahmin needs one teacher, that of Chandal needs ten" and greater help must be given to him when nature has not endowed with an acute intellect from birth".[17]

Conclusion- The discussion, made above clearly brings out that the features of NEP-2020 enormously coincide with the idea of Swami Vivekananda propounded on education. It seems that during the course of the preparation of the documents of "NEP-2020" , concerned stakeholders were charged with the spirit of the idea of education propounded by Swami Vivekananda. In this way the document of NEP-2020 can be treated as an authenticate tribute to the great thinker on conceptional plan. However, the same spirit is vehemently awaited in its execution and implementation.

References:-

1. Vivekananda, Swami, the Bengali Language, The Complete Works,Vol-6, Advaita Ashram, Calcutta, 1999, p.188.
2. Ibid, p.187.
3. Ibid, p.187.
4. Ibid, p.187-188.
5. Vivekananda, Swami, Letters, The Complete Works, Vol-6, Advaita Ashram, Kolkata , 2012,p.329.
6. Ibid, p.412.
7. Ibid, p328.
8. Ibid, p.114.
9. Ibid, p.114.
10. Vivekananda, Swami, Letters, Lectures from Colombo

to Almora,Advaita Ashram, Kolkata, 2001, p.141.
11. Vivekananda, Swami, Letters, Conversation and Dialouge,The Complete Work,Vol-7, Advaita Ashram, Kolkata, 1999, p.147-148.
12. Ibid, p.233..
13. Vivekananda, Swami, Letters, Conversation and Dialouge,The Complete Work, Vol-05, Advaita Ashram, Kolkata, 1999, p.233.
14. Vivekananda, Swami, op. cit. 05, p.113.
15. Ibid, p.113.
16. Ibid, p.255.
17. Ibid, p.255.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मध्य प्रदेश में कमजोर वर्ग की महिलाओं हेतु मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन (सतना जिले के विशेष संदर्भ में)

डॉ. गायत्री मिश्रा* शहाना परवीन**

* प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) शासकीय टीआरएस महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.) भारत
** शोधार्थी, शासकीय टीआरएस महाविद्यालय, रीवा, एपीएस विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – समाज के ऐसी महिला सदस्य जो आर्थिक, सामाजिक या राजनीतिक रूप से वंचित है और जिन्हें विशेष सहायता और संरक्षण की आवश्यकता होती है कमजोर वर्ग की महिलाओं में वे महिलाएं शामिल है।

जो आर्थिक रूप से गरीब है शिक्षा तक उनकी पहुंच सीमित है या उन्हें सामाजिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है इन महिलाओं को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य,रोजगार और सुरक्षा तक पहुंच की कमी घरेलू हिंसा और सामाजिक भेदभाव। मध्य प्रदेश में महिलाओं के लिए कई तरह की योजनाएं चलाई जा रही है बेटियों की पढ़ाई से लेकर बुजुर्ग महिलाओं को पेंशन तक कई तरह की स्कीम महिलाओं के कल्याण के लिए लागू की गई है इन्हीं में से एक खास योजना है मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना।

इस योजना के अंतर्गत समाज के गरीब पहले से भी लोग अपनी बेटियों की शादी सम्मानजनक तरीके से कर पा रहे हैं लड़की की शादी में मध्य प्रदेश सरकार की ओर से 51000 की राशि थी अब हाल में 55000 तक की मदद की जाती है इनमें नगद राशि घर की जरूर का सामान और सामूहिक विवाह समारोह में होने वाला खर्च भी शामिल है।

शब्द कुंजी – महिलाएं ,योजनाएं,मध्यप्रदेश ,कमजोर वर्ग, बेटियां,विवाह कन्या, मुख्यमंत्री।

प्रस्तावना – भारतीय समाज मे महिला आज भी कमजोर वर्गों मे शामिल है।महिला परिवार की आधारशिला है।और सामाजिक विकास बहुत कुछ उसी के सदप्रयासो के सम्भव है। जिस समाज की महिलायें उपेक्षा और तिरस्कार का शिकार होती है।वह समाज कभी प्रगति नही कर सकता।

महिलाओ के ऊपर सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक एवं अन्य अनेक ऐसी नियोग्यताओ शौप दी गई है।जिसके कारण उन्हे जीवन मे आगे बढ़ने एवं व्यक्तित्व का समुचित विकास करने का अवसर नही मिलता। ये निर्योग्यताये उनके लिए बहुत बड़ी चुनौतियां पर समस्याये बनकर उभरी है।शिक्षित स्त्री के बिना शिक्षित पुरुष हो ही नही सकता यदि पुरुषों मे से केवल किसी एक के लिए सामान्य शिक्षा का प्रावधान करना हो तो यह अवसर स्त्रियो को दिया जाना चाहिए क्योंकि यह शिक्षा स्वयंमेंव अगली पीढ़ी को प्राप्त हो जायेगी विवाह मूलक परिवार मे स्त्री की भिन्न-भिन्न परिस्थितिया होती है उदहारण के लिए बेटी, पत्नी, बहू, माँ इत्यादि इन परिस्थितियों से संबंधित भूमिकाओं का निर्वाह करना होता है एवं प्रत्येक भूमि का निर्वाह के समय उनसे संपूर्ण एवं भेदभाव की भावना की अपेक्षा की जाती है वहाँ भी उसे निम्न परिस्थिति प्राप्त होती है एवं उनका कोई पृथक एवं स्वतंत्र अस्तित्व नही होता है इस प्रकार स्त्रियों की परिस्थितियों मे उतार चढाव पाया गया है समाज मे जैसे जैसे परिवर्तन व बदलाव आते गए वैसे वैसे स्त्रियों की स्थिति मे भी परिवर्तन होते गए भारत के मध्य प्रदेश मे कमजोर वर्ग की महिलाएँ '(Vulnerable Women)' उन महिलाओं को कहा जाता है।जो सामाजिक, आर्थिक या सांस्कृतिक कारणों से असुरक्षित है।इन महिलाओं को अवसर भेदभाव, हिंसा और बुनियादी सुविधाओं तक अपर्याप्त पहुंच का सामना करना पड़ता है।

कमजोर वर्ग की महिलाओं के कुछ उदहारण –

1. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की महिलाएँ।
2. गरीब और बेसहारा महिलाएं।
3. घरेलु हिंसा का शिकार महिलाएं।
4. विधवाएं और परिव्यक्त महिलाएं।
5. अन्य कमजोर समूह।

इन महिलाओ को सशक्त बनाने के लिए, सरकार और गैर सरकारी संगठनों द्वारा विभिन्न योजनाएं एवं कार्यक्रम चलाए जा रहे है।इन प्रयासो का उद्देश्य महिलाओ को शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक अवसरों तक पहुंच प्रदान करना, हिंसा और भेदभाव से बचाना और उन्हे समाज मे समान भागीदार बनाना है।मध्य प्रदेश मे कमजोर वर्ग की महिलाओ के लिए कई सरकारी योजनाएं चलाई जा रही है।जिनका उद्देश्य उनकी सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक स्थिति मे सुधार करना है।इन योजनाओ मे शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वरोजगार और सुरक्षा से संबंधित प्रावधान शामिल है।

मध्य प्रदेश शासन द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के परिवारों को मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजनाध्निकाह योजना में गत 2 वर्षों में 75 हजार से अधिक बेटियों के विवाह के लिए 414 करोड़ रुपए से अधिक की सहायता दी गयी। आयुक्त सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन कल्याण डॉ. आर. आर भोंसले से प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रदेश में आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की कन्याओं के विवाह के लिए अप्रैल 2006 से मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना प्रारंभ की गई थी। अभी हाल में ही इस योजना में एक

विवाहध्निकाह के लिए 55 हजार रुपए की आर्थिक सहायता दी जाती है इसमें 49 हजार रुपए का अकाउंट पर ही चौक बधु (कन्या) के नाम से तथा 6 हजार रुपए आयोजन कराने वाले निकाय को दिया जाता है।

डॉ. भोंसले ने बताया है कि वर्ष 2023-24 में मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री कन्या विवाह/योजना में 62 हजार 84 विवाह कराये गये है। इसमें 341 करोड़ 46 लाख रूपये की आर्थिक सहायता दी गयी। 1 अप्रैल 2024 से अभी तक 12 हजार 979 कन्याओं के विवाह निकाह के लिये 73 करोड़ 22 लाख रुपये की सहायता राशि दी गयी।

मध्य प्रदेश शासन की योजनाओं में माननीय शिवराज सिंह चौहान द्धारा कन्या विवाह योजना की शुरुआत की गई अप्रैल 2006 इसमें कमजोर वर्ग की निराश्रित परिवार की कन्या/विधवा/परिवक्तता के सामूहिक विवाह हेतु आर्थिक सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से योजना आरंभ की गई , जो योजना वर्तमान में मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान के द्धारा कन्या विवाह योजना के नाम से संपूर्ण प्रदेश में संचालित है

अभी तक इस योजना के संचालन हेतु जारी सभी दिशा - निर्देशों को अधिक्रमित करते हुए प्रचलित प्रावधान एवं अब तक किए गए सभी संसाधनों को समाहित कर योजना को नवीन स्वरूप प्रदान कर मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के नवीन दिशा - निर्देश जारी किए जाते हैं।

मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना एवं निकाह योजना क्या है !- मध्य प्रदेश सरकार द्धारा मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना की शुरुआत साल 2006 में की गई थी। मध्य प्रदेश सरकार द्धारा शुरू की गई इस योजना का उद्देश्य गरीब परिवारों की बेटियों की शादी में आर्थिक सहायता देना है ताकि उनके माता-पिता पर वित्तीय बोझ ना पड़े और अपनी बेटियों का विवाह सम्मानजनक तरीके से वो कर सके।

शोध का उद्देश्य - हम किसी भी शोध को करते हैं तो इसका कुछ मुख्य उद्देश्य होता है अधिकतर लोगों के लिए ही शोध किया जाता है क्योंकि इसमें शोधार्थी का कुछ नया योगदान तथा नया अवसर होता है जो आगे आने वाले समय में इसका उपयोग किया जा सके तथा इस उद्देश्य को निम्नलिखित बिंदुओं से समझ सकते हैं इस शोध का उद्देश्य है कि -

1. गरीब परिवार की बेटियों की शादी में आर्थिक मदद करना।
2. बेटियों की शादी का आयोजन सम्मानजनक तरीके से करना।
3. सामाजिक कुरीतियों पर लगाम लगाना और दहेज प्रथा को खत्म करना।
4. कमजोर वर्ग की महिलाओं को आर्थिक सुरक्षा देकर उन्हें सशक्त बनाना।
5. सामूहिक विवाह को बढ़ावा देकर शादी में होने वाले खर्चो को कम करना।
6. मध्य प्रदेश में रहने वाली लड़की को इस योजना का फायदा नहीं मिलेगा।
7. इस योजना के लिए सरकार द्धारा तय की गई तारीखो में ही शादी करनी होगी।

किन महिलाओं को नहीं मिलेगा मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना का फायदा-

1. वे लड़कियां जो मध्यप्रदेश की निवासी नहीं है।
2. वह लड़कियां जिनकी उम्र 18 से कम है।
3. जिन लड़कियों ने सरकार द्धारा तय तारीख पर सामूहिक विवाह के बजाय अलग से शादी की है।

मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के लिए जरूरी दस्तावेज -

1. आधार कार्ड (लड़के- लड़की और माता-पिता का)
2. लड़के और लड़की का जन्म प्रमाण पत्र
3. समग्र आईडी नंबर (वर और वधु दोनों का)
4. जाति प्रमाण पत्र, अगर लागू हो तो
5. लड़की के नाम से सिंगल बैंक खाते की जानकारी।
6. दूल्हा -दुल्हन की पासपोर्ट साइज 2 - 2 फोटो।
7. लड़के और लड़की का मोबाइल नंबर।
8. अगर लड़की विधवा है तो पूर्व पति का मृत्यु प्रमाण पत्र।
9. अगर तलाकशुदा है तो तलाक का कागज।
10. रजिस्टर्ड श्रमिक है तो श्रमिक पंजीयन कार्ड की कॉपी ।

जिला एवं निकाय स्तरीय मुख्यमंत्री कन्या विवाह आयोजन समिति - सामूहिक कन्या विवाह कार्यक्रम का सुचारू रूप से आयोजन निश्चित किए जाने हेतु जिला स्तरीय एवं निकाय स्तरी - समितियां का गठन जिला कलेक्टर द्धारा जिले के प्रभारी मंत्री के अनुमोदन प्राप्त कर किया जाएगा ।उक्त समितियां में प्रभारी मंत्री द्धारा प्रत्येक समिति हेतु क्षेत्रीय विधायकों एवं 5 स्थानीय प्रतिनिष्ठ नागरिकों को नामांकित किया जायेगा। अशासकीय सदस्यों के अलावा निम्नानुसार शासकीय अधिकारी सदस्य होंगे।

1. जिला स्तरीय समिति में जिला कलेक्टर ,पुलिस अधीक्षक ,मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जिला कार्यक्रम अधिकारी एवं महिला एवं बाल विकास विभाग, परियोजना अधिकारी, जिला शहरी विकास अभिकरण (डूडा),जिला श्रम अधिकारी संयुक्तध्उप संचालक ,सामाजिक न्याय एवं नि:शक्तजन कल्याण विभाग
2. नगर निगम क्षेत्र की समिति में जिला कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक, आयुक्त नगर निगम, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जिला कार्यक्रम अधिकारी, महिला एवं बाल बाल विकास - विभाग, जिला शहरी विकास अभिकरण(डूडा), जिला श्रम अधिकारी, संयुक्त उप संचालक, सामाजिक न्याय एवं नि:शक्तजन कल्याण, समग्र सामाजिक सुरक्षा विस्तारअधिकारी, सामाजिक न्याय एवं नि:शक्तजन कल्याण विभाग।

कार्यक्रम के आयोजन हेतु अधिकृत संस्था- वो इस योजना के अंतर्गत सामूहिक विवाह कार्यक्रम के आयोजन हेतु निम्नलिखित संस्थाएं अधिकृत रहेगी।

1. नगरी क्षेत्र - नगरी निकाय (नगर निगम या नगर पालिका या नगर परिषद)

2 . ग्रामीण क्षेत्र - जनपद पंचायत

अन्य किसी संस्था द्धारा कराये जा रहे सामूहिक विवाह इस योजनांतर्गत लाख पाने हेतु पात्र नहीं होंगे।

कन्या विवाह योजना एवं निकाह योजना की तिथियो का निर्धारण सामूहिक विवाह की तिथियां एवं संस्था का निर्धारण जिले के प्रभारी मंत्री द्धारा किया जाएगा। इन तिथियों में सामूहिक विवाह कार्यक्रम आयोजित किया जा सकेंगे। इन तिथियां का व्यापक प्रचार- प्रसार करना सुनिश्चित किया जाये। इससे इच्छुक जोड़ो द्धारा समय पर आवेदन किया जा सके सतना जिले के संयुक्त/ उप- संचालक सामाजिक न्याय एवं नि:शक्तजन कल्याण विभाग द्धारा उक्त तिथियो को विवाह पोर्टल पर परस्पर किया

जायेगा

मुख्यमंत्री कन्या विवाह हेतु हितग्राहियो द्वारा आवेदन की प्रक्रिया –

1. सामूहिक विवाह में सम्मिलित होने वाली लड़का एवं लड़की को संयुक्त रूप से निर्धारित प्रयत्न मैं आवेदन संबंधित निकाय (नगर निगम या नगर पालिका नगर परिषद या जनपद पंचायत) को सामूहिक विवाह कार्यक्रम की निर्धारित दिनांक से 15 दिन पहले करना होगा आवेदन पत्र नि: शुल्क जनपद पंचायत नगरी निकाय में उपलब्ध होंगे आवेदन पत्र विभाग की वेबसाइट पर भी उपलब्ध है।
2. यह आवेदन उस निकाय में करना होगा जिसके अंतर्गत सामूहिक विवाह कार्यक्रम में आवेदक सम्मिलित होना चाहते हैं।
3. लड़की द्वारा निम्नानुसार स्व प्रमाणित घोषणा पत्र आवेदन पत्र के भाग –2 में देना होगा।

3.1. कन्या हेतु कि कन्या का इससे पहले कई विवाह नहीं हुआ।

3.2. विधवा हेतु कि उनका पूर्व में विवाह हुआ किंतु उनके पति की मृत्यु हो गई हो।

3.3. परिवक्तता हेतु कि उनके पूर्व में विवाह हुआ किंतु उनके पति से कानूनी तलाक हो चुका हो।

4. कड़िका 3– की तर्ज पर लड़का द्वारा स्व प्रमाणित घोषणा पत्र (आवेदन पत्र)।
5. आवेदन पत्र के साथ पात्रता संबंधी दस्तावेज संलग्न करने होंगे।
6. संबंधित निकाय द्वारा पूर्ण आवेदन प्राप्त होने के दिवस में ही आवेदक को पार्वती(प्रारूप देना अनिवार्य होगा)
7. सभी प्राप्त आवेदनो को विवाह पोर्टल में सामूहिक विवाह कार्यक्रम से 7 दिवस पूर्व दर्ज करने की जिम्मेदारी संबंधित स्थानीय निकाय की होगी।

सतना जिले के मुख्यमंत्री कन्या विवाह सम्मेलन के लाभार्थियों की सूची कुछ इस प्रकार हैं :

	वधू	वर
1.	अमिता साकेत	राज कमल
2.	अंजलि दाहिया	सचिन दाहिया
3.	अंजु साकेत	राजेश साकेत
4.	दीपा सेन	बृजेश कुमार सेन
5.	दुर्गा वर्मा	शुभम वर्मा
6.	काजल साहू	धर्मेन्द्र कुमार साहू
7.	महक सोनी	सचिन पटेल
8.	मोनू साकेत	आशीष वर्मा
9.	पूजा कोल	विशाल कोल
10.	सपना कोल	सचिन कोल

1. प्रतिमा बागरी राज्य मंत्री ने बताया है कि 'मध्यप्रदेश के आज सतना नगर निगम द्वारा प्रदेश सरकार की योजना के तहत 189 बेटियों का विवाह संपन्न कराया गया मैं धन्यवाद देना चाहती हूं प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ .मोहन यादव का जिन्होंने मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के तहत उन बेटियों को अपना परिवार बसाने का मौका दिया जिनकी आर्थिक स्थिति कमजोर है ऐसे परिवार जो बेटियों को बोझ मानते हैं उनके लिए भी यह योजना लाभकारी साबित हुई है।
2. महापौर योगेश ताम्रकार ने बताया 'सतना नगर निगम हमारे पास मुख्यमंत्री कन्या विवाह की योजना के अंतर्गत 242 आवेदन आए थे जिनकी स्कूटनी करने के बाद 196 आवेदन सही पाए गए बीटीआई ग्राउंड में पहुंचे पूरे कार्यक्रम व भोजन पानी की व्यवस्था सतना नगर निगम द्वारा की गई थी इस आयोजन में एससी. एसटी पिछड़ा वर्ग सहित अन्य वर्गों के जोड़े भी शामिल हुए जिनका विवाह धूमधाम से संपन्न कराया गया।

पात्र आवेदन		अपात्र आवेदन
242	–	46 लोगो का हुआ नहीं
196	–	7 सम्मिलित नहीं हुए
189	–	जोड़ों का कन्या विवाह सम्मेलन संपन्न हुआ

इससे यह ज्ञात होता है कि मध्य प्रदेश सरकार की मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के तहत सतना में सामूहिक विवाह का आयोजन किया गया यह आयोजन सतना जिले के नगर निगम की तरफ से 189 जोड़ो का विवाह हिंदू रीति रिवाज से संपन्न कराया गया।

समस्या – मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना में मुख्य समस्याएं आवेदन प्रक्रिया में जटिलता आवश्यक दस्तावेजों की कमी और योजना के लाभों का सही समय पर न मिलाना है कुछ लोगों को आवेदन करने की प्रक्रिया समझ में नहीं आती है जिससे उन्हें योजना का लाभ नहीं मिल पाता कई बार लोगों के पास इस योजना के जरूरी दस्तावेज नहीं होते हैं जिससे उनका आवेदन खारिज हो जाता है कई लोग योजना के बारे में पूरी जानकारी नहीं रखते हैं जिससे वे योजना का लाभ उठाने से वंचित रह जाते हैं तथा अधिकारियों की लापरवाही के कारण योजना के लाभो का सही तरीके से वितरण नहीं हो पता है कुछ गरीब परिवारों के पास योजना के लिए जरूरी दस्तावेजों को जमा करने के लिए पैसे नहीं होते हैं जिससे वह इस योजना का लाभ नहीं ले पाते हैं तथा इन्हीं सारी समस्याओं का सामना इन्हें देखने को मिलता है।

निष्कर्ष – निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत शोध में मध्य प्रदेश सरकार की मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना प्रभावशाली योजना है जो आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की बेटियों के विवाह के लिए सहायता प्रदान करती है यह योजना न केवल समाज में बेटियों के प्रति सम्मान और समानता का संदेश देती है बल्कि गरीब परिवारों को आर्थिक बोझ से राहत देकर उनके जीवन में अच्छी जिंदगी जीने का बदलाव लाने का प्रयास करती हैं जो समाज को प्रगति की दिशा में आगे बढ़ाने में सहायक है इस योजना का लाभ उठाकर कमजोर वर्ग की महिलाएं अपनी बेटियों का सुरक्षित कर सकती हैं और आने वाली परेशानियों का सामना कर सकती हैं।

सुझाव – प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन के अंतर्गत प्राप्त परिणाम के आधार पर किया गया है इस योजना का लाभ गरीब,जरूरतमंद, और निराश्रित परिवारों की बेटियों को मिले विधवा और तलाकशुदा महिलाओं को भी इसका लाभ दिया जाए इस योजना के तहत कन्याओं के खाते में पैसे जमा किए जाएं और कन्याओं को गृहस्थी के लिए जरूरी सामान भी दिए जाएं तथा कन्याओं को आभूषण और बर्तन भी दिए जाएं दहेज जैसी प्रथा को रोकने के लिए प्रयास किए गए हैं कन्या विवाह योजना के अंतर्गत कन्याओं के विवाह के लिए आर्थिक सहायता के साथ–साथ उन्हें पढ़ाई पूरी करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाए तथा उनके विवाह में होने वाली परेशानिया न हो और गरीब परिवारों की बेटियों की शादी में आर्थिक सहायता भी प्राप्त हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. www.scstyojana.com

2. Bhaskar.Com
3. tvbharat.com
4. https://Cmhelpline.mp.gov.in
5. http://www.social.justice.com
6. http://www.socialsecurity.mp.gov.in
7. http://www.Indiatimes.com
8. https://vahan.parivahan.gov.in
9. डॉ. पटेल आर.आर भोसले आयुक्त सामाजिक न्याय एवं दिव्यागंजन कल्याण अधिकारी इंदौर
10. बागरी प्रतिमा राज्य मंत्री सतना मध्यप्रदेश
11. महापौर ताम्रकार योगेश नगर निगम सतना मध्यप्रदेश
12. माननीय मुख्यमंत्री डॉ. यादव मोहन जी मध्यप्रदेश
13. श्री पटेल प्रेम सिंह मंत्री सामाजिक न्याय एवं की नि: शक्तजन कल्याण विभाग मध्यप्रदेश

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

छत्तीसगढ़ राज्य के जांजगीर-चांपा जिले में ग्रामीण क्षेत्र की एनीमिक महिलाओं एवं सामान्य महिलाओं के स्वास्थ्य पर किए गए व्यय का तुलनात्मक अध्ययन

सुनील साहू* डॉ. सुचि शर्मा **

* शोधार्थी (अर्थशास्त्र) डॉ. सी. वी. रामन विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** सहायक प्राध्यापक, सामाजिक विज्ञान विभाग (अर्थशास्त्र) डॉ. सी. वी. रामन विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – महिलाओं का स्वास्थ्य किसी भी समाज की प्रगति और विकास का दर्पण होता है। विशेषकर ग्रामीण महिलाओं को स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिनमें से एनीमिया (रक्ताल्पता)प्रमुख समस्या है। एनीमिया से ग्रस्त महिलाएँ शारीरिक रूप से दुर्बल हो जाती हैं, जिससे उनके श्रम करने की क्षमता घटती है और स्वास्थ्य व्यय बढ़ जाता है। दूसरी ओर, सामान्य (गैर-एनीमिक) महिलाओं में स्वास्थ्य व्यय अपेक्षाकृत कम होता है।छत्तीसगढ़ का जांजगीर-चांपा जिला कृषि प्रधान क्षेत्र है, जहाँ महिलाओं का जीवन सीधे श्रम व कृषि कार्यों से जुड़ा है। एनीमिक और सामान्य महिलाओं के स्वास्थ्य व्यय का तुलनात्मक अध्ययन इस जिले के ग्रामीण सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है।

शब्द कुंजी – स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों , स्वास्थ्य व्यय।

प्रस्तावना – भारत में महिलाओं मेंएनीमियाएक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में पोषण की कमी, स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव और सामाजिक-आर्थिक पिछड़ेपन के कारण महिलाओं में हीमोग्लोबिन की कमी आम समस्या बन गई है। एनीमिया के कारण महिलाओं में थकान, कमजोरी, गर्भधारण में कठिनाई, प्रतिरक्षा प्रणाली की कमजोरी और कार्य क्षमता में कमी जैसे कई स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न होती हैं।छत्तीसगढ़ राज्य का जांजगीर-चांपा जिला कृषि प्रधान क्षेत्र है, जहाँ ग्रामीण महिलाओं की स्थिति अन्य शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण है। यहां महिलाओं की स्वास्थ्य देखभाल पर होने वालाखर्चउनकी आर्थिक स्थिति और परिवार की समग्र भलाई पर प्रभाव डालता है। विशेषकर उन महिलाओं में जो एनीमिक हैं, उनके लिए दवा, पोषण, चिकित्सक और यात्रा संबंधी खर्च अन्य सामान्य महिलाओं की तुलना में अधिक होता है।जांजगीर-चांपा जिले में अधिकांश ग्रामीण महिलाएं कृषि और घरेलू कार्यों में संलग्नहैं। इनकी आय सीमित है, और स्वास्थ्य व्यय उनके घरेलू बजट पर सीधे असर डालता है।एनीमिया के कारण होने वाले स्वास्थ्य व्यय का तुलनात्मक अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि:

1. यह महिलाओं कीस्वास्थ्य स्थिति और जीवन गुणवत्ताका संकेत देता है।
2. यहसरकारी और गैर-सरकारी स्वास्थ्य कार्यक्रमोंकी प्रभावशीलता का आंकलन करने में मदद करता है।
3. ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य व्यय की जानकारीनीति निर्माण और स्वास्थ्य बजट नियोजनमें उपयोगी है।

समीक्षित साहित्य

National Family Health Survey (NFHS-5, 2021) के अनुसार, छत्तीसगढ़ की ग्रामीण महिलाओं में 46% से अधिक को एनीमिया है। इसने स्पष्ट किया कि ग्रामीण क्षेत्रों में पोषण और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी गंभीर समस्या है। **Kumari & Singh** (2022)ने अपने अध्ययन में पाया कि एनीमिक महिलाओं का औसत स्वास्थ्य व्यय सामान्य महिलाओं की तुलना में लगभग 35-40% अधिक है। इसमें दवा, चिकित्सक और पोषण पर अधिक खर्च होता है। **Sharma et al.** (2020)ने मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के स्वास्थ्य व्यय का तुलनात्मक अध्ययन किया। उनका निष्कर्ष था कि एनीमिक महिलाओं में कार्य क्षमता और आय स्तर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। **Patel & Verma** (2023)ने जांजगीर-चांपा जिले के 10 गांवों में सर्वेक्षण किया। अध्ययन से पता चला कि एनीमिक महिलाओं में स्वास्थ्य सेवाओं का उपयोग सीमित होने के बावजूद उच्च खर्च होता है, मुख्यत: दवा और पोषण पर **World Health Organization (WHO,** 2021) की रिपोर्ट के अनुसार, एनीमिया महिलाओं में स्वास्थ्य संबंधी व्यय में वृद्धि करती है और परिवार की आर्थिक स्थिति पर दबाव डालती है।

अध्ययन के उद्देश्य – इस शोध का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों कीएनीमिक और सामान्य महिलाओं के स्वास्थ्य व्ययका तुलनात्मक अध्ययन करना है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित विशेष उद्देश्य हैं:

1. ग्रामीण क्षेत्रों में एनीमिक महिलाओं और सामान्य महिलाओं केस्वास्थ्य व्यय की संरचनाका विश्लेषण करना।
2. दवा, चिकित्सक सेवाओं, पोषण और यात्रा खर्च के आधार परएनीमिक और सामान्य महिलाओं के स्वास्थ्य व्यय की तुलनाकरना।
3. स्वास्थ्य व्यय में अंतर केकारणों और प्रभावोंकी पहचान करना।
4. अध्ययन के निष्कर्षों के आधार परनीति और स्वास्थ्य कार्यक्रमों के

लिए सुझावदेना।

अनुसंधान पद्धति

अनुसंधान प्रकार – यह अध्ययनक्षेत्रीय और तुलनात्मक अनुसंधान (Field-based Comparative Study) है। इसमें वास्तविक ग्रामीण महिलाओं से प्राप्त डेटा का विश्लेषण किया गया है ताकि एनीमिक और सामान्य महिलाओं के स्वास्थ्य व्यय में अंतर को समझा जा सके।

अध्ययन क्षेत्र – यह अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के जांजगीर–चांपा जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में किया गया। चयनित क्षेत्र कृषि प्रधान है और यहाँ की महिलाएं घरेलू और कृषि कार्यों में संलग्न हैं।

नमूना चयन :

1. अध्ययन के लिए 120 महिलाओं का नमूनालिया गया।
2. नमूना में 60 एनीमिक महिलाएंऔर 60 सामान्य महिलाएंशामिल हैं।
3. नमूना का चयनसुविधाजनक यादृच्छिक (Convenience Random Sampling) पद्धति से किया गया।
4. चयनित महिलाओं की आयु 18–45 वर्ष के बीच थी।

डेटा संग्रह – डेटा संग्रह के लिए निम्न विधियाँ अपनाई गईं–

1. सर्वेक्षण प्रश्नावली ,प्रत्यक्ष साक्षात्कार,स्वास्थ्य रिकॉर्ड/क्लिनिक डेटा

डेटा विश्लेषण विधि

1. डेटा को Microsoft Excel और SPSS सॉफ्टवेयर में दर्ज किया गया।
2. तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis) किया गया:

i. औसत (Mean) स्वास्थ्य व्यय
ii. खर्च के विभिन्न घटकों का प्रतिशत
iii. एनीमिक और सामान्य महिलाओं के बीच t-test से सांख्यिकीय अंतर।

3. परिणामों कोतालिका और ग्राफके माध्यम से प्रस्तुत किया गया।

विश्लेषण – अध्ययन में प्राप्त डेटा के अनुसार, जांजगीर–चांपा जिले की ग्रामीण महिलाओं का स्वास्थ्य व्यय मुख्य रूप से निम्न चार श्रेणियों में विभाजित है:

1. दवा खर्च
2. चिकित्सक/क्लिनिक खर्च
3. पोषण संबंधी खर्च
4. यात्रा खर्च

निम्न तालिका में एनीमिक और सामान्य महिलाओं के औसत मासिक स्वास्थ्य व्यय का विवरण प्रस्तुत किया गया है:

श्रेणी	एनीमिक महिलाएं (रू प्रति माह)	सामान्य महिलाएं (रू प्रति माह)	अंतर (रू)	प्रतिशत अंतर (%)
दवा खर्च	850	500	350	70%
चिकित्सक/ क्लिनिक खर्च	600	350	250	71.4%
पोषण खर्च	700	400	300	75%
यात्रा खर्च	300	150	150	100%
कुल स्वास्थ्य व्यय	2450	1400	1050	75%

तालिका में औसत मासिक खर्च दर्शाया गया है।

1. **दवा खर्च–** एनीमिक महिलाओं का दवा खर्च सामान्य महिलाओं की तुलना में 70% अधिक पाया गया। इसका कारण एनीमिया के लिए आयरन सप्लीमेंट, विटामिन और अन्य चिकित्सकीय दवाओं की आवश्यकता है।
2. **चिकित्सक/क्लिनिक खर्च–** एनीमिक महिलाएं नियमित चिकित्सक से परामर्श लेती हैं, जिससे उनकी स्वास्थ्य देखभाल पर खर्च अधिक होता है।
3. **पोषण खर्च–** एनीमिक महिलाओं में आयरन युक्त आहार और पौष्टिक तत्वों की मांग अधिक होने के कारण पोषण खर्च सामान्य महिलाओं की तुलना में लगभग 75% अधिक है।
4. **यात्रा खर्च–** स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने के लिए एनीमिक महिलाओं को अक्सर दूर के स्वास्थ्य केंद्र जाना पड़ता है। इसके कारण यात्रा खर्च सामान्य महिलाओं की तुलना में दोगुना है।

अध्ययन से स्पष्ट है कि एनीमिक महिलाओं का स्वास्थ्य व्यय सामान्य महिलाओं की तुलना में लगभग 75% अधिक है। यह ग्रामीण परिवारों की आय पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है और घरेलू बजट में असंतुलन पैदा करता है.एनीमिक महिलाएं अक्सर आर्थिक रूप से निर्बल परिवारों से आती हैं। उच्च स्वास्थ्य व्यय उनके अन्य आवश्यक खर्चों जैसे बच्चों की शिक्षा, घर का भोजन और कृषि कार्य में बाधा डाल सकता है।सरकारी योजनाओं मेंनिशुल्क आयरन सप्लीमेंट, पोषण पैकेज और ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँचबढ़ाई जानी 'स्थानीय स्वास्थ्य केंद्रों में नियमित जांच और परामर्शउपलब्ध कराना आवश्यक है, ताकि यात्रा खर्च कम हो।सामुदायिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम से एनीमिया की रोकथाम और समय पर उपचार को बढ़ावा दिया जा सकता है।'

निष्कर्ष और सुझाव – इस अध्ययन से स्पष्ट होता है किजांजगीर–चांपा जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में एनीमिक महिलाओं का स्वास्थ्य व्यय सामान्य महिलाओं की तुलना में काफी अधिक है।प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:

1. **स्वास्थ्य व्यय में अंतर:**

i. एनीमिक महिलाओं का औसत मासिक स्वास्थ्य व्यय रू 2450 है, जबकि सामान्य महिलाओं का रू1400।
ii. दवा, पोषण और चिकित्सक सेवाओं पर खर्च सबसे अधिक अंतर दिखाता है।

2. **सामाजिक–आर्थिक प्रभाव:**

i. उच्च स्वास्थ्य व्यय ग्रामीण परिवारों के घरेलू बजट पर दबाव डालता है।
ii. यह परिवार की अन्य आवश्यकताओं जैसे बच्चों की शिक्षा, भोजन और कृषि कार्य पर असर डाल सकता है।

3. **स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच:**

i. एनीमिक महिलाएं नियमित चिकित्सा परामर्श और उपचार के लिए लंबी दूरी की यात्रा करती हैं, जिससे यात्रा खर्च में भी वृद्धि होती है।

4. **नीति और योजना की आवश्यकता**:

i. वर्तमान सरकारी योजनाएं पर्याप्त नहीं हैं और ग्रामीण महिलाओं को स्वास्थ्य देखभाल में समर्थ बनाने के लिए विशेष नीतिगत हस्तक्षेप आवश्यक हैं।

सुझाव – इस अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं:

1. **निशुल्क आयरन और विटामिन सप्लीमेंट:**

i. ग्रामीण एनीमिक महिलाओं को नियमित रूप से आयरन और विटामिन

सप्लीमेंट निशुल्क प्रदान किए जाएँ।

2. स्थानीय स्वास्थ्य केंद्रों की पहुँच बढ़ाना:

i. स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या बढ़ाई जाए और ग्रामीण क्षेत्रों में मोबाइल हेल्थ क्लिनिक संचालित किए जाएँ ताकि यात्रा खर्च कम हो।

3. पोषण कार्यक्रम:

i. स्कूल और सामुदायिक स्तर परपोषण संबंधी शिक्षा और आहार पैकेजउपलब्ध कराए जाएँ।

4. सामुदायिक जागरूकता:

i. एनीमिया और स्वास्थ्य व्यय की जानकारी के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य जागरूकता अभियान चलाए जाएँ।

ii. महिलाओं को समय पर उपचार और पोषण के महत्व के बारे में शिक्षित किया जाए।

5. नीति निर्माण और आर्थिक सहायता– गरीब और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लिए स्वास्थ्य व्यय में सहायता प्रदान करने के लिए सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए।

ग्रामीण क्षेत्रों में एनीमिया महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति और आर्थिक भार पर गंभीर प्रभाव डालता है। उचित नीतिगत हस्तक्षेप, पोषण और स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुँच से न केवल महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार होगा, बल्कि पूरे ग्रामीण परिवार की जीवन गुणवत्ता में भी वृद्धि होगी। इस अध्ययन ने स्पष्ट रूप से दिखाया किस्वास्थ्य व्यय का तुलनात्मक अध्ययन नीति निर्माण और सामाजिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिए महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Kumari, S., & Singh, R. (2022). Health expenditure among anemic and non-anemic women in rural India. Journal of Rural Health Studies, 15(2), 45–56.
2. National Family Health Survey (NFHS-5). (2021). India: Key indicators. Ministry of Health and Family Welfare, Government of India.
3. Patel, A., & Verma, P. (2023). Comparative study of health expenditure of anemic and normal women in Jangir-Champa district, Chhattisgarh. International Journal of Public Health Research, 10(1), 78–88.
4. Sharma, V., Gupta, K., & Mishra, S. (2020). Health expenditure patterns among rural women: A study of central India. Indian Journal of Community Medicine, 45(4), 112–119.
5. World Health Organization. (2021). Global nutrition report: Anemia in women. WHO Publications.
6. Rani, P., & Kaur, H. (2019). Socio-economic impact of anemia on rural households. Indian Journal of Social Studies, 8(3), 33–42.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मुस्लिम किशोरियों के समायोजन पर बालिका सशक्तिकरण के प्रभाव का अध्ययन

कुलदीप* डॉ. महेश कुमार तिवारी**

* शोधार्थी (शिक्षा) मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत
** प्राचार्य, मेवाड़ गर्ल्स कॉलेज ऑफ टीचर्स ट्रेनिंग, चित्तौड़गढ़ (राज.) भारत

प्रस्तावना – शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करके उसे तेजस्वी, बुद्धिमान चरित्रवान, विद्वान तथा वीर बनाती है, उसी प्राकर दूसरी ओर शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी एक आवश्यक तथा शक्तिशाली साधन है। दूसरे शब्दों में व्यक्ति की भांति समाज भी शिक्षा के चमत्कार से लाभान्वित होता है। शिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढी के बालकों को उच्च आदर्शों, आशाओं, आकांक्षाओं, विश्वासों तथा परम्पराओं आदि सांस्कृतिक सम्पत्ति को इस प्रकार से हस्तान्तरित करता है कि उनके हृदय में देश-प्रेम तथा त्याग की भावना प्रज्जवलित हो जाता है। जब ऐसी भावनाओं तथा आदर्शों से भरे हुए बालक तैयार होकर समाज अथवा देश की सेवा व्रत धारण करके मैदान में निकलेंगे तो समाज भी निरन्तर उन्नति के शिखर पर चढता ही रहेगा। इस प्रकार व्यक्ति तथा समाज दोनों के विकास में शिक्षा परम् आवश्यक है।

जहां एक ओर शिक्षा व्यकित का सर्वांगीण विकास करता है वहीं दूसरी ओर वातावरण के साथ समायोजन करने तथा आवश्यकताओं में परिवर्तन करते हुए भौतिक सम्पन्नता को प्राप्त करके चरित्रवान, बुद्धिमान, वीर तथा साहसी और एक उत्ताम नागरिक के रूप में आत्म निर्भर बनकर अपना और अपने समाज व राष्ट्र का विकास कर सकें।

शिक्षा के माध्यम से बालिकाओं को सशक्त बनाने का तात्पर्य है, बालिकाओं को पूरी तरह से औपचारिक शिक्षा और उचित कौशल प्रदान करने में सक्षम हो, ताकि उन्हें रोजगार व जीवन के सभी प्रतिस्पर्धाओं में पुरूषों के समान आगे आ सके।

संयुक्त राष्ट्र शिक्षा और सांस्कृतिक संगठन और महिलाओं के लिए संयुक्त राष्ट्र विकास का मानना है कि शिक्षा के द्वारा महिलाओं को सभी क्षेत्रों में ओग लाने की आवश्यकता है।

महिलाएं जो समाज में अपनी शक्ति को उजागर नहीं कर पाती, उनमें आत्मनिर्भरता की कमी होती है तथा आत्मविश्वास कम होता है, क्योंकि वह पूरी तरह स्वावलम्बी होती है। अपने परविार पर उनके पास अवसरों की कमी, साधनों की कमी के कारण अपना विकास नहीं कर पाती है। पूरे देश में महिलाओं में जागरूकता और सम्मान लाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय बालिकाओं दिवस, जो 24 सितम्बर को मनाया जाता है, जिसे पूरे देश में व्यवसायों, समुदायों समूहों के कार्यक्रमों और नीतियों को अपनाकर महिलाएं सशक्तिकरण की धारणा को अपनाए, जिससे देश का विकास व लाभ प्राप्त किया जा सके।

अध्ययन का औचित्य – हमारे भारतीय संविधान के अनुच्छेद 12 से 35 तक में नागरिकों के मूल अधिकार को स्पष्ट किया गया है, जिसके अनुसार एक अधिकार शिक्षा एवं संस्कृति का है। अत: भारत की पहचान उसकी संस्कृति से की जाती है। संविधान का अनुच्छेद 51 के अनुसार ही अभिभावकों का भी नैतिक जिम्मेदारी है कि अपने बच्चों को शिक्षा के समान अवसर प्रदान करें।

अक्सर ये देखा जाता है कि समाज या समूहों के सदस्यों द्वारा बनाये गये नियमों, कानूनों, भेदवभाव जातियता, धर्म, लिंग आदि के द्वारा ही महिलाएं अपनी शक्ति को उजागर नहीं कर पाती है। इसके साथ-साथ हमारा समाज दो वर्गों में बंटा हुआ है, एक गरीब तो दूसरा अमीर। इस वर्ग विभिन्नता के कारण भी ग्रामीण और सुदूर क्षेत्रों की महिलाएं अपने आप को सशक्त नहीं बना पाती। उनमें आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास की भावना कम होती है, वह चाहकर भी समाज और परिवार के सदस्यों के बीच अपने अधिकारों को उजागर कर पाने में असमर्थ होती है।

पूर्व शोध से यह ज्ञात होता है कि वसिम सय्यद, ए. अशराक और अहमद अय्याज (2012) ने अपने जीवन इतिहास में यह निष्कर्ष निकाला कि मुस्लिम महिलाओं घरेलु महिला बनके रहना चाहती है। बजाए खेती और मजदूरी करने के, मुस्लिम महिलाओं की स्वतंत्रता सीमित कर दी गई है और उनकी सलाह व मशवरा को नजर अंदाज किया जाता है।

मुखोपाध्याय हेमन्ती (2008) ने अपने शोध में यह निष्कर्ष निकाला कि मुस्लिम महिलाओं का समाज में तथा परिवार में विभेदीकरण किया जाता है। मुस्लिम महिलाओं के लिए शिक्षा, विवाह संबंध, घरेलू अत्याचार, नैतिकता, यौन प्रताडना आदि में समाज के द्वारा दोहरी मानसिकता रखी जाती है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सभी समाजों द्वारा महिलाओं और पुरूषों को समतुल्य माना जाता है। पूरे परिवार का कर्णधार तो महिलाएं होती है और उन्हें यदि स्वतंत्र, अधिकार विहिन, आत्मनिर्भर, आत्मविश्वास, आत्मसम्मान नहीं दी जाए तो वह अपना और अपने परिवार का विकास नहीं कर पायेगी। मुस्लिम समाज में यह अंतर पाया जाता है, जो मुस्लिम समाज के पिछडने का मुख्य कारण यही है। अत: जब हमारा भारतीय संविधान महिलाओं तथा पुरूषों को समान अधिकार दे रही है तो मुस्लिम समाज भी अपनी रूढिवादी परम्पराओं को तोडकर एक नई दिशा की ओर अग्रसर हो, महिलाओं और पुरूषों की भांति आगे आये और अपनी आंतरिक शक्तियों को समाज में प्रकट करें। इन सब बातों को ध्यान में रखकर ही शोधकर्ता द्वारा इस विषय को चुना गया ताकि समाज को एक नई दिशा प्रदान की जा

सके।

समस्या कथन – मुस्लिम किशोरियों के समायोजन पर बालिका सशक्तिकरण के प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य :

1. मुस्लिम किशोरियों के समायोजन एवं बालिका सशक्तिकरण के सहसंबंध का अध्ययन करना।
2. मुस्लिम किशोरियों के समायोजन पर बालिका सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. मुस्लिम किशोरियों में समायोजन (उच्च तथा निम्न), पर बालिका सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों के मध्य सार्थक आंतरिक क्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना :

1. मुस्लिम किशोरियों के समायोजन एवं बालिका सशक्तिकरण के मध्य सहसंबंध नहीं पाया जाता है।
2. मुस्लिम किशोरियों के समायोजन पर बालिका सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
3. मुस्लिम किशोरियों में समायोजन (उच्च तथा निम्न), पर बालिका सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों के मध्य सार्थक आंतरिक क्रियात्मक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

अध्ययन का परिसीमान:

1. क्षेत्र – अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा गंगानगर क्षेत्र को लिया गया है।
2. बालिकाएं – अध्ययन हेतु गंगानगर के ग्रामीण व शहरी मुस्लिम किशोरियों को लिया गया है।
3. स्तर – अध्ययन के लिए 10वीं से 12वीं स्तर के ग्रामीण व शहरी मुस्लिम किशोरियों को लिया गया है।
4. शोध विधि
5. शोध अध्ययन में सर्वेक्षविधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या व न्यादर्श – सशक्तिकरण के अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा 600 मुस्लिम किशोरियों को लिया गया है, जिसमें 300 ग्रामीण क्षेत्र के मुस्लिम किशोरियों तथा 300 शहरी क्षेत्र के मुस्लिम किशोरियों का चयन किया गयाहै।

चर :

1. स्वतंत्र चर – सशक्तिकरण
2. आश्रित चर – समायोजन

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण:

1. समायोजन परीक्षण – डॉ. ए.के. सिंह एवं डॉ आर.पी.सिंह
2. किशोरी बालिका सशक्तिकरण परीक्षण – डॉ. देवेन्द्र सिंह सिश्शोधिया एवं अल्पना सिंह

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधि :

1. सहसम्बन्ध
2. टी– टेस्ट
3. एनोवा

निष्कर्ष एवं सुझाव :

1. मुस्लिम किशोरियों के समायोजन एवं बालिका सशकित्करण के मध्य सहसंबंध पाया गया।
2. मुस्लिम किशोरियों के समयोजन पर बालिका सशक्तिकरण के प्रथम आयाम अधिकार एवं अस्तिव के मध्य सार्थक अंतर है।
3. मुस्लिम किशोरियों के समयोजन पर बालिका सशक्तिकरण के द्वितीय आयाम स्वायत्ता एवं आत्मविश्वास/आत्मनिर्भता के मध्य सार्थक अंतर है।
4. मुस्लिम किशोरियों के समयोजन पर बालिका सशक्तिकरण के तृतीय आयाम निर्णय प्रक्रिया के मध्य सार्थक अंतर है।
5. मुस्लिम किशोरियों के समयोजन पर बालिका सशक्तिकरण के चतुर्थ आयाम भागीदारी के मध्य सार्थक अंतर है।
6. मुस्लिम किशोरियों के समयोजन पर बालिका सशक्तिकरण के पंचम आयाम क्षमता विकास के मध्य सार्थक अंतर है।
7. मुस्लिम किशोरियों के समयोजन पर बालिका सशक्तिकरण के के षष्ठम् आयाम सामाजिक, राजनीतिक व कानूनी जागरूकता के मध्य सार्थक अंतर है।
8. मुस्लिम किशोरियों के समयोजन पर बालिका सशक्तिकरण के सप्तम आयाम सूचना माध्यमों की उपयोगिता के मध्य सार्थक अंतर नहीं है।
9. मुस्लिम किशोरियों के समयोजन (उच्च तथा निम्न) पर बालिका सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों के मध्य सार्थक आंतरिक क्रियात्मक प्रभाव नहीं पाया गया है।

सुझाव :

1. महिला प्रतिनिधित्व को एकत्रित होकर इन संस्थाओं में काम करना चाहिए। इन महलाओं से संबंधित मुद्दों पर मतभेद भुलाकर काम करना होगा। उन्हें लैंगिक भेदभाव, कन्या भ्रुण हत्या, घरेलु हिंसा एवं बाल अधिकारों से संबंधित मुद्दों पर एकजुटता का प्रदर्शन करना चाहिए।
2. निर्णय प्रक्रिया में महिलाओं एवं पुरूषों की संतुलित भागिदारी के लिए आम राय बनाने हेतु जन–अभियान चलाया जाना चाहिए।
3. महलाओं का विश्व के अन्य देशों के साथ दल बनाने चाहिए ताकि ये विभिन्न स्तरों पर सहभागिता दे सकें।
4. महिलाओं को संगठित होकर विभिन्न स्तरों पर अपने नेटवर्क स्थापित करने चाहिए ताकि निर्णय, निर्माण एवं क्रियान्वयन में अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर सकें।
5. महिलाओं को व्यवस्थित प्रशिक्षण एवं अभिनवीकरण की आवश्यकता है, ताकि महिलाएं वर्तमान स्थितियों को बदलकर संसाधनों एवं सत्ता के प्रयोग द्वारा महिला सशक्तिकरण को शीघ्र से संभव बना सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. अखण्ड ज्योति, जनवरी (2004), बुद्धि को प्रखर बनाने के कुछ साधन 25–26
2. आर्य हरफूल (2000) रिसर्च पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 96
3. भटनागर, सुरेश (1996) शैक्षिक प्रबन्ध और शिक्षा की समस्याएं, मेरठ, सूर्या पब्लिकेशन 440,
4. भारती शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष 29, जुलाई–दिसम्बर, 2.1. पृ 69–72
5. Indian Journal of Education Research, Vol-28 No. 1 Jan-June 2009pp 111-114
6. Journal of Educational Studies, Education Department, University of Allahabad, Vol-8, No-1 2010 pp-20-26
7. शर्मा, रमा (2009) पी–एच.डी. उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान गांधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर।

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

किशोर न्याय बालकों की देख रेख और संरक्षण अधिनियम

भूमिका छापिया*

* शोधार्थी (विधि) मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – यह लेख किशोर न्याय (बालकों की देखरेख और संरक्षण) अधिनियम, 2015 का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें अधिनियम के उद्देश्यों, मुख्य प्रावधानों, आँकड़ों के आधार पर इसके प्रभाव, और इसके क्रियान्वयन की चुनौतियों का अध्ययन किया गया है। लेख में भारतीय न्यायिक दृष्टिकोण और सुप्रीम कोर्ट के निर्णयों के संदर्भ भी शामिल हैं। अंत में, बच्चों के संरक्षण और पुनर्वास के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए गए हैं।

शब्द कुंजी – किशोर न्याय, बाल संरक्षण, पुनर्वास, जघन्य अपराध, देखरेख, संरक्षण, पुन:समाजिकीकरण।

प्रस्तावना – भारत में बच्चों के अधिकारों की रक्षा और संरक्षण के लिए यह अधिनियम एक बड़ा कदम माना जाता है। 2000 का अधिनियम बच्चों की देखरेख और उनके कल्याण पर केंद्रित था। लेकिन जैसे-जैसे समाज में बदलाव आया, अपराध के स्वरूप में भी बदलाव हुआ। कुछ गंभीर और जघन्य अपराधों में किशोरों की भागीदारी बढ़ने लगी। उदाहरण के लिए, दिल्ली के 2012 के निर्भया कांड के बाद यह बहस तेज हुई कि 16-18 वर्ष के किशोरों के साथ किस तरह का व्यवहार किया जाए। पुराने कानून में सभी 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को समान माना जाता था और उनके खिलाफ कोई भी दंडात्मक कार्रवाई सुधारात्मक दृष्टि से होती थी। उन्हें वयस्क अपराधियों की तरह सजा नहीं दी जाती थी। लेकिन कुछ अपराधों में किशोरों की क्रूरता और अपराध की योजना बनाने की उनकी क्षमता ने समाज में चिंता पैदा कर दी। लोग यह सवाल पूछने लगे कि क्या सिर्फ उम्र के आधार पर उन्हें छूट मिलनी चाहिए? इसी पृष्ठभूमि में 2015 का अधिनियम बनाया गया। इसमें एक बड़ा बदलाव यह किया गया कि 16 से 18 वर्ष के किशोरों द्वारा किए गए जघन्य अपराधों के मामलों में यह जांच की जा सकती है कि उस किशोर की मानसिक और शारीरिक परिपक्वता (Maturity) क्या है। अगर किशोर इतना परिपक्व पाया जाता है कि वह अपराध के परिणाम समझ सकता था, तो उस पर वयस्क के तौर पर मुकदमा चलाया जा सकता है।

अधिनियम का उद्देश्य केवल दंड देना नहीं है। इसका असली लक्ष्य यह है कि अपराध करने वाले बच्चे को समाज से काटा न जाए बल्कि उसे सुधारा जाए, उसका पुनर्वास किया जाए और उसे दोबारा समाज में जिम्मेदार नागरिक बनाया जाए। इसके लिए अधिनियम में कई तरह की व्यवस्थाएँ की गई हैं - जैसे किशोर न्याय बोर्ड (Juvenile Justice Board) और बाल कल्याण समिति (Child Welfare Committee) की स्थापना।

किशोर न्याय बोर्ड का काम यह तय करना है कि बच्चे के खिलाफ मामला कैसे चलेगा। अगर यह पाया जाए कि बच्चा जघन्य अपराध में शामिल है, तो उसकी मानसिक परिपक्वता की जांच होगी। बोर्ड यह देखेगा कि क्या वह यह समझ सकता था कि उसने क्या किया है और उसके परिणाम क्या होंगे।

बाल कल्याण समिति (Child Welfare Committee) उन बच्चों के मामलों को देखती है जिन्हें देखरेख और संरक्षण की जरूरत होती है। इसमें अनाथ, परित्यक्त, या शोषण का शिकार बच्चे शामिल होते हैं। समिति का काम ऐसे बच्चों को संरक्षण देना, उन्हें आश्रय देना और उनके पुनर्वास की व्यवस्था करना है।

इस अधिनियम में दत्तक ग्रहण (Adoption) के मामलों को भी सुव्यवस्थित करने के प्रावधान हैं। पहले दत्तक ग्रहण की प्रक्रिया बहुत जटिल थी और इसमें समय लगता था। इस अधिनियम के तहत केंद्रीय दत्तक ग्रहण प्राधिकरण (Child Adoption Resource Authority) को और सशक्त बनाया गया। इसका उद्देश्य दत्तक ग्रहण प्रक्रिया को पारदर्शी और सरल बनाना है ताकि अधिक से अधिक बच्चों को स्थायी परिवार मिल सके। 2015 के अधिनियम की एक और विशेषता यह है कि इसमें बच्चों के खिलाफ हिंसा, यौन शोषण, तस्करी, और बाल मजदूरी जैसे अपराधों के खिलाफ सख्त प्रावधान हैं। यह सुनिश्चित किया गया है कि ऐसे बच्चों को बचाया जाए और उन्हें काउंसलिंग, शिक्षा और पुनर्वास सेवाएँ दी जाएँ।

इस अधिनियम के बनने के पीछे कई आँकड़े और तथ्य भी थे। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) के आंकड़ों के अनुसार, 2014 में जघन्य अपराधों में 16-18 वर्ष के किशोरों की भागीदारी बढ़ रही थी। इसलिए, संसद ने यह माना कि इस आयु वर्ग में ऐसे मामलों की विशेष जांच की जरूरत है। NCRB के ताजा आँकड़े यह भी बताते हैं कि 2015 के बाद से किशोर अपराध दर में थोड़ी गिरावट भी आई है, लेकिन जघन्य अपराधों में किशोरों की संलिप्तता चिंता का विषय बनी हुई है, इस कानून की आलोचना भी हुई है। कई बाल अधिकार कार्यकर्ताओं का कहना है कि यह अधिनियम किशोरों के सुधार के बजाय उन्हें कठोर दंडात्मक व्यवस्था में डाल सकता है। उनका तर्क है कि किशोरों की सोच और निर्णय लेने की क्षमता अभी पूरी तरह विकसित नहीं होती। ऐसे में उन्हें वयस्क अपराधियों की तरह देखना

सही नहीं है। 2015 के अधिनियम में इन निर्णयों का सम्मान करते हुए व्यवस्था की गई कि जघन्य अपराध में शामिल किशोर की मानसिक परिपक्वता का आकलन विशेषज्ञों द्वारा किया जाएगा। यह सुनिश्चित किया गया कि हर मामला अलग से देखा जाए और केवल गंभीर अपराधों में ही वयस्क न्याय प्रणाली लागू हो। इस अधिनियम का उद्देश्य यह मानना है कि हर बच्चा सुधार योग्य है। कानून यह मानता है कि यदि सही माहौल और संसाधन दिए जाएँ, तो बच्चे अपनी गलतियों से सीख सकते हैं और समाज में उपयोगी नागरिक बन सकते हैं। इसलिए अधिनियम में किशोरों के लिए विशेष सुधार गृहों, पुनर्वास केंद्रों और काउंसलिंग सेवाओं का भी प्रावधान है। इसके अलावा, अधिनियम यह सुनिश्चित करता है कि बच्चे को गिरफ्तारी के समय उसके अधिकारों के बारे में बताया जाए और उसे सम्मानजनक व्यवहार मिले। अधिनियम में यह भी प्रावधान है कि बच्चे को हिरासत में रखने की बजाय उसे परिवार या देखरेख संस्थान में रखा जाए। अदालतों और पुलिस को निर्देश दिए गए हैं कि बच्चों के मामलों में उनकी उम्र और मानसिक स्थिति का विशेष ध्यान रखा जाए। इस अधिनियम में बच्चों की आवाज को भी महत्व दिया गया है। किशोर न्याय बोर्ड और बाल कल्याण समितियों को यह सुनिश्चित करना होता है कि बच्चे की राय और उसकी इच्छाओं को सुना जाए और उसे निर्णय प्रक्रिया में शामिल किया जाए। इस कानून के बेहतर क्रियान्वयन के लिए जरूरी है कि राज्यों के बीच बेहतर समन्वय हो। किशोर न्याय बोर्डों और बाल कल्याण समितियों के सदस्यों के लिए विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था हो। सुधार गृहों की स्थिति सुधारी जाए और बच्चों के लिए शिक्षा और मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवाओं की व्यवस्था की जाए।

किशोर न्याय (बालकों की देखरेख और संरक्षण) अधिनियम, 2015 भारतीय विधिक व्यवस्था में बच्चों के लिए एक प्रगतिशील और मानवीय दृष्टिकोण को दर्शाता है। यह दंड के बजाय सुधार और पुनर्वास पर केंद्रित है। यह समाज की जिम्मेदारी तय करता है कि वह भटके हुए बच्चों को वापस मुख्य धारा में शामिल करे और उन्हें एक सुरक्षित, सम्मानजनक और संभावनाओं से भरा जीवन दे। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) के आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2014 में किशोरों द्वारा किए गए जघन्य अपराधों में वृद्धि देखी गई थी। भारत में 16 से 18 वर्ष के किशोरों की एक ऐसी श्रेणी है जो जीवन के संक्रमण काल से गुजर रही होती है। यह उम्र बच्चों और वयस्क के बीच की होती है जिसमें व्यक्तित्व विकास, सामाजिक और नैतिक समझ, और भावनात्मक स्थिरता अभी पूरी तरह से विकसित नहीं होती।

2014 के आंकड़ों ने यह चिंताजनक तस्वीर सामने रखी कि गंभीर अपराध जैसे हत्या, बलात्कार, डकैती और संगठित अपराधों में भी किशोरों की भागीदारी बढ़ने लगी थी। इन अपराधों की योजना बनाने, उसे अंजाम देने और उसके बाद अपराध छुपाने की क्षमताओं में भी वृद्धि देखी गई। इससे यह सवाल उठा कि क्या केवल सुधारात्मक दृष्टिकोण ही पर्याप्त है, या कुछ मामलों में किशोरों के लिए भी वयस्क जैसी न्यायिक प्रक्रिया की आवश्यकता है। इसी सामाजिक और कानूनी चुनौती के जवाब में भारत सरकार ने किशोर न्याय (बालकों की देखरेख और संरक्षण) अधिनियम, 2015 बनाया। यह अधिनियम पुराने किशोर न्याय अधिनियम, 2000 को संशोधित और प्रतिस्थापित करता है। इसका मुख्य उद्देश्य बच्चों के अधिकारों की रक्षा करते हुए उन मामलों के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाना है जहाँ किशोरों की अपराध में गंभीर भागीदारी पाई जाती है। 2015 के अधिनियम की सबसे चर्चित विशेषता यह है कि इसमें 16 से 18 वर्ष के किशोरों द्वारा किए गए जघन्य अपराधों के मामलों में न्यायालय को यह अधिकार दिया गया है कि वह किशोर की मानसिक और शारीरिक परिपक्वता का आकलन करे। इसका मतलब यह हुआ कि अगर कोई किशोर 16–18 वर्ष का है और उसने ऐसा अपराध किया है जो जघन्य श्रेणी में आता है (जैसे हत्या या बलात्कार), तो अदालत यह देखेगी कि क्या वह अपराध की प्रकृति और परिणामों को समझने में सक्षम था। यदि यह पाया जाता है कि किशोर ने पूरी योजना के साथ, सोच–समझकर अपराध किया और उसके परिणामों को समझ सकता था, तो उसे वयस्क न्याय प्रक्रिया के तहत मुकदमा चलाया जा सकता है। यह प्रावधान इस आलोचना का जवाब था कि कुछ किशोर अपनी उम्र का फायदा उठाकर गंभीर अपराध कर लेते हैं और सुधार गृह में कम सजा पाकर बच निकलते हैं।

2015 के अधिनियम की अन्य प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1. किशोर न्याय बोर्ड (Juvenile Justice Board) और बाल कल्याण समितियों (Child Welfare Committee) की स्थापना। किशोर न्याय बोर्ड अपराध में संलिप्त बच्चों के मामलों की सुनवाई करता है जबकि बाल कल्याण समितियाँ उन बच्चों के मामलों को देखती हैं जिन्हें देखरेख और संरक्षण की जरूरत है।
2. देखरेख और संरक्षण की आवश्यकता वाले बच्चों के लिए पुनर्वास योजनाएँ। इसमें अनाथ, परित्यक्त, तस्करी का शिकार, या शोषित बच्चों के लिए विशेष देखभाल, आश्रय, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं और काउंसलिंग की व्यवस्था शामिल है।
3. दत्तक ग्रहण प्रक्रिया का सरलीकरण और विनियमन। केंद्रीय दत्तक ग्रहण प्राधिकरण (CARA) को अधिक सशक्त बनाया गया ताकि अनाथ और परित्यक्त बच्चों को स्थायी परिवार उपलब्ध कराने की प्रक्रिया अधिक पारदर्शी और त्वरित हो सके।
4. विशेष प्रावधान जैसे बाल तस्करी, यौन शोषण और बाल विवाह से सुरक्षा। यह अधिनियम बच्चों को ऐसे अपराधों से बचाने के लिए सख्त कानूनी प्रावधान करता है और पीड़ित बच्चों के पुनर्वास की जिम्मेदारी राज्य पर डालता है।

2015 के इस अधिनियम का उद्देश्य सिर्फ दंड देना नहीं है, बल्कि यह मानवीय दृष्टिकोण से बच्चों के सुधार, पुनर्वास और समाज में पुन:समाजिकीकरण को प्राथमिकता देता है। कानून यह मानता है कि बच्चों की सोच और समझ विकसित होने की प्रक्रिया में होती है और सही समय पर सही मार्गदर्शन और संसाधन मिलने पर वे अपराध के रास्ते से वापस आ सकते हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) के 2021 के आंकड़े यह संकेत देते हैं कि किशोर अपराध दर में थोड़ी गिरावट आई है। यह इस बात का संकेत है कि सुधारात्मक और पुनर्वासात्मक दृष्टिकोण काम कर रहा है। लेकिन जघन्य अपराधों में किशोरों की संलिप्तता अभी भी एक गंभीर चिंता का विषय बनी हुई है। NCRB के आंकड़े यह भी दिखाते हैं कि इन अपराधों में अक्सर सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक कारण जुड़े होते हैं द जैसे गरीबी, शिक्षा की कमी, पारिवारिक हिंसा और सामुदायिक समर्थन का अभाव।

अधिनियम का उद्देश्य यह भी है कि किशोरों को केवल अपराधी के रूप में न देखा जाए, बल्कि उन परिस्थितियों को समझा जाए जिन्होंने उन्हें अपराध की ओर धकेला। इसके लिए अधिनियम में काउंसलिंग, पारिवारिक

पुनर्मिलन, शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण जैसी योजनाओं की व्यवस्था की गई है।

न्यायिक दृष्टिकोण – सुप्रीम कोर्ट ने डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी बनाम राजू, AIR 2014 SC 2140 में कहा कि किशोर न्याय अधिनियम एक कल्याणकारी विधान है जिसका उद्देश्य बच्चों को सजा देना या प्रतिशोध लेना नहीं है, बल्कि उनका सुधार और पुनर्वास करना है। अदालत ने स्पष्ट किया कि किशोर अवस्था में अपराध करने वाले बच्चों के साथ मानवीय दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए ताकि उन्हें समाज में फिर से जिम्मेदार और उपयोगी नागरिक के रूप में स्थापित किया जा सके। इसी तरह प्रताप सिंह बनाम राज्य झारखंड, AIR 2005SC2731 में सुप्रीम कोर्ट ने यह निर्णय दिया कि किसी भी अभियुक्त की किशोरावस्था अपराध करते समय की उम्र के आधार पर तय की जाएगी। इसका मतलब यह है कि अपराध के समय अगर अभियुक्त की उम्र 18 वर्ष से कम थी, तो उसे किशोर माना जाएगा, चाहे मुकदमे के समय उसकी उम्र ज्यादा हो गई हो। यह फैसला यह सुनिश्चित करने के लिए था कि किशोरों को उनके कानूनी अधिकारों से वंचित न किया जाए और उनके साथ उचित न्याय हो। 2015 के किशोर न्याय अधिनियम ने इन फैसलों को ध्यान में रखते हुए महत्वपूर्ण संशोधन किए। इसमें यह प्रावधान जोड़ा गया कि 16 से 18 वर्ष के किशोरों द्वारा किए गए जघन्य अपराधों के मामलों में उनकी मानसिक और शारीरिक परिपक्वता का न्यायालय द्वारा आकलन किया जाएगा। न्यायालय यह देखेगा कि क्या किशोर यह समझने में सक्षम था कि उसका अपराध कितना गंभीर है और इसके क्या परिणाम हो सकते हैं। अगर अदालत यह पाती है कि किशोर की मानसिक परिपक्वता पर्याप्त थी, तो उसके खिलाफ वयस्क के तौर पर मुकदमा चलाया जा सकता है। यह संशोधन यह सुनिश्चित करता है कि गंभीर अपराध करने वाले किशोरों को पूरी तरह से छूट न मिले, लेकिन साथ ही उनके सुधार और पुनर्वास के अवसर भी बरकरार रहें। इस तरह कानून समाज की सुरक्षा और बच्चों के अधिकारों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव – किशोर न्याय अधिनियम, 2015 बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए एक प्रगतिशील और संवेदनशील कदम माना जाता है। यह कानून इस विचार पर आधारित है कि अपराध में शामिल किशोरों को केवल सजा देने के बजाय उनके सुधार और पुनर्वास को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इसका उद्देश्य बच्चों को एक अवसर देना है ताकि वे अपनी गलतियों से सीखकर समाज के जिम्मेदार सदस्य बन सकें, इस अधिनियम में यह भी प्रावधान है कि 16 से 18 वर्ष की आयु के किशोरों द्वारा किए गए जघन्य अपराधों में उनकी मानसिक परिपक्वता का आकलन करके उन्हें वयस्क न्याय व्यवस्था के अंतर्गत भी लाया जा सकता है। इस व्यवस्था पर कई बाल अधिकार कार्यकर्ताओं ने सवाल उठाए हैं। उनका तर्क है कि किशोरों की मानसिक परिपक्वता पूरी तरह विकसित नहीं होती, और वयस्कों जैसी सख्त सजा उनके सुधार की संभावनाओं को कम कर सकती है। इसके अलावा, सामाजिक पुन:समाजिकीकरण (Social Reintegration) की प्रक्रिया में कई चुनौतियाँ हैं। राज्यों के बीच संसाधनों की कमी और कार्यान्वयन में असमानता से बच्चों के पुनर्वास प्रयास प्रभावित होते हैं। कई जगह सुधार गृहों की स्थिति खराब है और वहां बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। प्रशिक्षित स्टाफ की कमी और मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव भी गंभीर समस्याएँ हैं।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव इस प्रकार हैं:

1. किशोर न्याय बोर्डों और बाल कल्याण समितियों के सदस्यों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं ताकि वे बच्चों की मानसिक स्थिति, विकासात्मक जरूरतों और कानूनी प्रक्रियाओं को बेहतर तरीके से समझ सकें।
2. सुधार गृहों और देखरेख संस्थाओं में मानक सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। इसमें साफ-सफाई, पर्याप्त जगह, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं और मनोरंजक गतिविधियों की व्यवस्था शामिल हो।
3. जघन्य अपराध में संलिप्त किशोरों के लिए वैकल्पिक पुनर्वास मॉडल विकसित किए जाएं। जैसे विशेष परामर्श कार्यक्रम, व्यावसायिक प्रशिक्षण और परिवार के साथ पुनर्स्थापन की योजना।
4. मनोवैज्ञानिक परामर्श और परिवार परामर्श सेवाओं का विस्तार किया जाए। बच्चों को अपराध के पीछे की मानसिक समस्याओं से उबरने में मदद देना और उनके परिवार को समझाना भी जरूरी है।
5. अधिनियम के प्रावधानों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए राज्यों के बीच बेहतर समन्वय बनाया जाए। इसके लिए एक केंद्रीय निगरानी तंत्र भी बनाया जा सकता है जो यह सुनिश्चित करे कि सभी राज्यों में एक समान और उच्च स्तर की सेवाएं उपलब्ध हों।

इस तरह किशोर न्याय अधिनियम, 2015 के उद्देश्यों को और अधिक प्रभावी ढंग से प्राप्त किया जा सकता है, और बच्चों को एक सुरक्षित, सम्मानजनक और आशाजनक भविष्य दिया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. भारत सरकार (2015), किशोर न्याय (बालकों की देखरेख और संरक्षण) अधिनियम, 2015, विधि एवं न्याय मंत्रालय।
2. राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो, (2022) भारत में अपराध – 2021 सांख्यिकी, गृह मंत्रालय।
3. सुब्रमण्यम स्वामी बनाम राजू, AIR 2014 SC 2140
4. प्रताप सिंह बनाम राज्य झारखंड, AIR 2005SC2731
5. यूनिसेफ (2017), दक्षिण एशिया में किशोर न्याय: कानून के साथ संघर्ष में बच्चों के संरक्षण में सुधार, यूनिसेफ प्रकाशन।
6. श्रीवास्तव, वी. के (2018), भारत में किशोर न्याय: एक विश्लेषण। नई दिल्ली: ओरिएंट पब्लिशिंग।
7. सिंह, आर. (2020), भारत में बाल अधिकार और किशोर न्याय प्रणाली, सेज पब्लिकेशंस।

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

Ayurvedic Management of Central Sensitization: Mechanistic Insights in Fibromyalgia Care

Dr. Rajesh Yadav*

***Asst. Prof. (Zoology) Ramabai Govt. Women P.G. College, Akbarpur, Ambedkar Nagar (U.P.) INDIA**

Abstract: Fibromyalgia is a chronic disorder of widespread pain, fatigue, sleep disturbance, cognitive dysfunction, and affective symptoms. Central sensitization is characterized by heightened responsiveness of central nociceptive pathways, impaired descending inhibition, and neuroinflammatory processes, is widely recognized as a core pathophysiological mechanism in fibromyalgia. Conventional pharmacologic and behavioral interventions provide partial relief, leaving many patients to pursue complementary approaches. Ayurveda, an individualized medical system emphasizing dosha balance, detoxification (Panchakarma), tissue nourishment (Rasayana), and lifestyle modulation, offers a multimodal framework that aligns with several mechanistic features of Central sensitization. This review synthesizes contemporary neuroscience and immunology of Central sensitization with classical and contemporary Ayurvedic theory to create a translational model linking Vata aggravation, Ama accumulation, and Majja (nervous tissue) depletion to neurochemical, neuroimmune, autonomic, and gut–brain axis dysfunction observed in fibromyalgia. Evidence from preclinical studies on key medhya (neuroprotective) herbs (Withaniasomnifera, Bacopamonnieri, Centellaasiatica), clinical pilot studies of Panchakarma protocols (including Snehana, Swedana, Basti, and Shirodhara), and emerging biomarker and neuroimaging data are reviewed. Proposed mechanistic pathways include modulation of NMDA/GABA balance, attenuation of microglial activation and pro-inflammatory cytokines, restoration of HPA and autonomic tone, and gut microbiome normalization. We identify key research gaps that need for randomized controlled trials, standardized intervention protocols, biomarker-driven endpoints, and mechanistic neuroimaging and propose a roadmap for integrative clinical trials that can validate Ayurvedic interventions within modern pain science. Integrative care grounded in rigorous research could expand therapeutic options for fibromyalgia patients with central sensitization.
Keywords: Fibromyalgia, Central Sensitization, Ayurveda, Panchakarma, Rasayana Therapy, Neuroinflammation, VataVyadhi.

Introduction - Fibromyalgia is a chronic pain disorder affecting approximately 2–4% of the global population and is characterized by widespread musculoskeletal pain, fatigue, sleep disturbance, cognitive impairment (“fibro fog”), and frequent comorbidity with mood and somatic disorders (Clauw, 2014; Häuser et al., 2015). Central sensitization, defined as enhanced responsiveness of central nervous system (CNS) nociceptive pathways, is widely considered the principal pathophysiological mechanism underlying fibromyalgia symptomatology (Woolf, 2011; Fitzcharles et al., 2023). Central sensitization encompasses maladaptive synaptic plasticity, increased excitatory neurotransmission, impaired descending inhibitory modulation, and neuroimmune activation, resulting in amplified pain perception and multisystem symptom expression (Clauw, 2014; Sluka&Clauw, 2016).

Despite advances in pharmacologic management, including serotonin–norepinephrine reuptake inhibitors, gabapentinoids, and low-dose tricyclic antidepressants, as well as non-pharmacologic interventions such as exercise and cognitive behavioral therapy, therapeutic outcomes remain suboptimal for many patients due to limited efficacy or adverse effects (Häuser et al., 2015). Consequently, there is growing interest in complementary and integrative strategies that address the multidimensional neurobiological, endocrine, immune, metabolic, and psychosocial contributors to Central sensitization. Ayurveda, a personalized and systems-oriented medical tradition, employs multimodal interventions—including Panchakarma procedures, Rasayana herbal formulations, dietary regulation, and mind–body practices—that may align with contemporary mechanistic models of nociplastic pain. This review synthesizes current evidence on Central sensitization in fibromyalgia with Ayurvedic constructs, particularly Vata predominance, Ama accumulation, and Majja depletion, and outlines translational hypotheses and research priorities

bridging traditional knowledge and modern pain science.

Central Sensitization in Fibromyalgia: mechanistic overview

1. Neurophysiology and synaptic plasticity: Central sensitization in fibromyalgia is characterized by maladaptive neurophysiological changes and activity-dependent synaptic plasticity within central nociceptive pathways (Clauw, 2014; Woolf, 2011). Persistent peripheral input enhances excitatory neurotransmission in the dorsal horn through increased glutamatergic signaling and sustained activation of N-methyl-D-aspartate (NMDA) receptors, leading to intracellular calcium influx and kinase-mediated transcriptional modifications that resemble long-term potentiation (LTP) phenomena (Latremoliere& Woolf, 2009; Häuser et al., 2015). Concurrently, diminished inhibitory modulation—particularly involving ã-aminobutyric acid (GABA), serotonin, and norepinephrine—compromises descending pain control systems, thereby amplifying central neuronal excitability (Clauw, 2014). Neuroimmune interactions further contribute to synaptic facilitation, as activated microglia release pro-inflammatory cytokines that modulate receptor sensitivity and ion channel conductance (Ji et al., 2018). Collectively, these neuroplastic alterations lower activation thresholds, expand receptive fields, and sustain aberrant pain processing, forming the neurobiological substrate of chronic widespread pain in fibromyalgia.

2. Descending modulation and neurochemical milieu: Alterations in descending pain modulatory systems and the broader neurochemical environment are central to the pathophysiology of fibromyalgia and central sensitization (Clauw, 2014; Häuser et al., 2015). Under physiological conditions, descending inhibitory pathways originating in the periaqueductal gray and rostroventromedial medulla regulate spinal nociceptive transmission through serotonergic and noradrenergic projections. In fibromyalgia, dysfunction of these monoaminergic systems results in reduced inhibitory tone and impaired endogenous analgesia, thereby facilitating pain amplification (Arnold et al., 2019). Neurochemical studies have demonstrated altered levels of serotonin, norepinephrine, dopamine, glutamate, and substance P in patients, reflecting an imbalance between excitatory and inhibitory signaling (Sluka&Clauw, 2016). Moreover, dysregulation of the hypothalamic–pituitary–adrenal (HPA) axis and altered cortisol secretion patterns contribute to stress sensitivity and persistence of central sensitization (Martínez-Lavin, 2021). Emerging neuroimaging and cerebrospinal fluid analyses further support aberrant connectivity and neurotransmitter metabolism within pain-processing networks (Fitzcharles et al., 2023). Collectively, impaired descending inhibition combined with neurochemical disequilibrium sustains hyperexcitability of central nociceptive circuits in fibromyalgia.

3. Neuroinflammation and glial activation: Neuroinflammation and glial cell activation are increasingly recognized as central contributors to the pathophysiology of fibromyalgia and persistent nociplastic pain states (Fitzcharles et al., 2023; Häuser et al., 2015). Activated microglia and astrocytes within the spinal cord and supraspinal regions release pro-inflammatory cytokines, chemokines, and neuromodulators, including interleukin-1â, interleukin-6, tumor necrosis factor-á, and brain-derived neurotrophic factor, which enhance synaptic transmission and neuronal excitability (Ji et al., 2018). This glial-neuron crosstalk promotes central sensitization by facilitating N-methyl-D-aspartate receptor activity, altering ion channel conductance, and reducing inhibitory signaling. Neuroimaging studies using positron emission tomography have provided preliminary evidence of increased glial activation markers in patients with fibromyalgia, supporting a neuroimmune component to symptom generation (Albrecht et al., 2019). Additionally, peripheral immune dysregulation and altered cytokine profiles may contribute to sustained central neuroinflammatorysignaling (Fitzcharles et al., 2023). Collectively, glial-mediated neuroinflammation represents a mechanistic bridge between immune activation and maladaptive synaptic plasticity underlying chronic widespread pain.

4. Systems interactions: HPA axis, autonomic imbalance, and gut–brain axis: Neuroinflammation and glial cell activation are increasingly recognized as central contributors to the pathophysiology of fibromyalgia and persistent nociplastic pain states (Fitzcharles et al., 2023; Häuser et al., 2015). Activated microglia and astrocytes within the spinal cord and supraspinal regions release pro-inflammatory cytokines, chemokines, and neuromodulators, including interleukin-1â, interleukin-6, tumor necrosis factor-á, and brain-derived neurotrophic factor, which enhance synaptic transmission and neuronal excitability (Ji et al., 2018). This glial-neuron crosstalk promotes central sensitization by facilitating N-methyl-D-aspartate receptor activity, altering ion channel conductance, and reducing inhibitory signaling. Neuroimaging studies using positron emission tomography have provided preliminary evidence of increased glial activation markers in patients with fibromyalgia, supporting a neuroimmune component to symptom generation (Albrecht et al., 2019). Additionally, peripheral immune dysregulation and altered cytokine profiles may contribute to sustained central neuroinflammatorysignaling (Fitzcharles et al., 2023). Collectively, glial-mediated neuroinflammation represents a mechanistic bridge between immune activation and maladaptive synaptic plasticity underlying chronic widespread pain.

Ayurvedic conceptualization of fibromyalgia and central sensitization: Within the Ayurvedicnosological framework, fibromyalgia can be interpreted as a Vata-predominant disorder falling under the broader category of *VataVyadhi*, particularly conditions resembling

Mamsagatavata (involvement of muscle tissue) and *Majjagatavata* (involvement of nervous tissue) (Sharma & Dash, 2018). The hallmark clinical features of fibromyalgia—migratory pain, stiffness, fatigue, sleep disturbance, and cognitive dysfunction—correspond to classical descriptions of aggravated Vata, whose qualities (*ruksha*, *laghu*, *chala*) signify dryness, lightness, and instability. From a mechanistic perspective, Vataaggravation may parallel heightened neuronal excitability and dysregulated signal transmission observed in central sensitization (Clauw, 2014).

Additionally, Ayurveda attributes chronic pain states to the accumulation of *Ama*, a toxic metabolic by-product resulting from impaired *Agni* (digestive/metabolic function). Ama is described as obstructing bodily channels (*srotorodha*), potentially analogous to systemic inflammation and neuroimmune activation implicated in persistent nociplastic pain (Fitzcharles et al., 2023). Progressive Vata aggravation may also lead to *Majjadhatukshaya* (depletion of nervous tissue), conceptually aligning with neurotransmitter imbalance and impaired descending inhibition. Thus, Ayurvedic pathophysiology provides a multidimensional explanatory model integrating neural, metabolic, and systemic dysfunction in fibromyalgia.

1. Vata aggravation and neural hyperexcitability: In Ayurvedic pathophysiology, Vatadosha governs movement, neural conduction, sensory perception, and autonomic regulation. Aggravation of Vata (*Vataprakopa*) is characterized by qualities such as mobility (*chala*), dryness (*ruksha*), lightness (*laghu*), and instability, which collectively reflect dysregulated and excessive physiological activity (Sharma & Dash, 2018). Clinically, fibromyalgia presents with migratory pain, paresthesia, sleep disturbance, anxiety, and variable symptom intensity—features consistent with Vata predominance. From a neurobiological perspective, these manifestations parallel the concept of neural hyperexcitability underlying central sensitization (Clauw, 2014).

Central sensitization involves enhanced synaptic transmission, lowered nociceptive thresholds, and amplification of sensory input due to persistent excitatory signaling within spinal and supraspinal pathways (Woolf, 2011). The dynamic and fluctuating nature of fibromyalgia pain may therefore be interpreted as the clinical correlate of aggravated Vata influencing *Majjadhatu* (nervous tissue). Furthermore, Vata imbalance is associated with autonomic instability, which aligns with documented sympathetic predominance and reduced heart rate variability in fibromyalgia (Sluka&Clauw, 2016). Thus, Vata aggravation offers a conceptual framework analogous to maladaptive neuronal excitability and impaired inhibitory modulation in central sensitization.

2. Ama and neuroimmune activation: In Ayurvedic doctrine, *Ama* denotes incompletely metabolized or improperly processed biological substrates that accumulate due to impaired *Agni* (digestive and metabolic function) and obstruct physiological channels (*srotas*) (Sharma & Dash, 2018). Clinically, Ama is associated with heaviness, fatigue, inflammatory symptoms, and chronic pain states. From a contemporary biomedical perspective, this construct may be interpreted through the lens of systemic low-grade inflammation, altered gut permeability, and immune activation, all of which are implicated in fibromyalgia and central sensitization (Fitzcharles et al., 2023). Emerging evidence indicates that dysregulated immune responses and elevated pro-inflammatory cytokines can promote microglial activation and neuroinflammatorysignaling within pain-processing regions (Ji et al., 2018). Additionally, gut microbiome alterations observed in fibromyalgia may facilitate metabolite-driven immune modulation and nociceptive amplification (Minerbi et al., 2019). Thus, the Ayurvedic concept of Ama provides a plausible translational framework linking metabolic dysfunction and immune activation to persistent neuroinflammation and maladaptive synaptic plasticity in fibromyalgia..

3. Majjadhatu depletion and neurotransmitter imbalance: In Ayurvedic physiology, *Majjadhatu* represents the nervous tissue and marrow components responsible for cognitive integrity, sensory processing, and neuromuscular coordination (Sharma & Dash, 2018). Depletion of Majja (*Majjakshaya*) is described as manifesting through symptoms such as generalized weakness, cognitive impairment, sensory disturbances, and chronic pain—features that overlap substantially with fibromyalgia. From a neurobiological standpoint, these manifestations may correspond to alterations in central neurotransmitter systems implicated in nociplastic pain. Studies in fibromyalgia have demonstrated reduced serotonergic and noradrenergic activity, altered dopaminergic signaling, and increased excitatory neurotransmitters such as glutamate, contributing to impaired descending inhibition and persistent pain amplification (Clauw, 2014; Sluka&Clauw, 2016).

Furthermore, dysregulation of brain-derived neurotrophic factor (BDNF) and other neurotrophic mediators may influence synaptic plasticity and central sensitization processes (Fitzcharles et al., 2023). Conceptually, Majja depletion can be interpreted as diminished neurochemical resilience and impaired neural homeostasis. Thus, restoration of Majja through Rasayana and medhya interventions aligns with therapeutic strategies aimed at rebalancing neurotransmitter systems and enhancing central inhibitory control in fibromyalgia.

Ayurvedic interventions and putative mechanisms relevant to central sensitization: Ayurvedic interventions for fibromyalgia target aggravated *Vata*, accumulated *Ama*, and *Majjadhatu* imbalance. Panchakarma therapies such as *Snehana* and *Basti* may modulate autonomic tone and gut–brain axis signaling, reducing stress-driven nociceptive

amplification. Medhya and Rasayana herbs exhibit antioxidant, anti-inflammatory, and neuroprotective effects, potentially restoring neurotransmitter balance and synaptic stability. Dietary regulation and mind–body practices further attenuate hypothalamic–pituitary–adrenal axis dysregulation, collectively addressing neuroimmune and neuroplastic mechanisms underlying central sensitization thus, ayurvedic care is multimodal. Below we review major categories and their plausible mechanisms in relation to central sensitization and fibromyalgia.

Panchakarma: Snehana, Swedana, Basti, and Shirodhara

1. Snehana and Swedana (therapeutic oleation and fomentation): *Snehana* (therapeutic oleation) and *Swedana* (sudation/fomentation) constitute foundational preparatory procedures within Panchakarma, primarily indicated for pacifying aggravated *Vatadosha* in chronic pain disorders (Sharma & Dash, 2018). Snehana, typically administered through medicated oil massage (*Abhyanga*), is described as alleviating dryness (*rukshata*), stiffness, and neuromuscular instability—features consistent with Vata predominance. Swedana involves controlled application of heat or steam to promote channel clearance (*srotoshodhana*) and facilitate toxin mobilization.

From a biomedical perspective, these interventions may exert analgesic and neuromodulatory effects through multiple mechanisms. Manual oil massage has been associated with enhanced parasympathetic activity, reduced sympathetic tone, and improved heart rate variability, thereby modulating autonomic imbalance implicated in fibromyalgia (Field, 2016). Thermal therapies may increase local blood flow, reduce muscle spindle hyperactivity, and attenuate peripheral nociceptive input, indirectly lowering central sensitization (Clauw, 2014). Furthermore, relaxation responses induced by these therapies may attenuate hypothalamic–pituitary–adrenal axis activation and decrease stress-related amplification of pain (Fitzcharles et al., 2023). Collectively, Snehana and Swedana represent integrative modalities targeting neurophysiological, autonomic, and inflammatory components of chronic nociplastic pain.

2. Basti (medicated enemas): *Basti* (medicated enema therapy) is regarded in Ayurveda as the principal intervention for disorders arising from aggravated *Vatadosha*, particularly those involving neuromuscular and systemic dysregulation (Sharma & Dash, 2018). Classical texts describe Basti as exerting systemic effects beyond the gastrointestinal tract, influencing *Vata* at its primary seat in the colon and thereby restoring physiological homeostasis. In the context of fibromyalgia, which demonstrates features consistent with Vata predominance and central sensitization, Basti may have translational relevance.

From a biomedical standpoint, the colon represents a critical interface within the gut–brain axis. Rectal administration of medicated oils or herbal decoctions may influence enteric nervous system signaling, vagal afferent pathways, and immune modulation (Fitzcharles et al., 2023). Alterations in gut microbiota composition and intestinal permeability—documented in fibromyalgia—suggest that therapies targeting gastrointestinal homeostasis could indirectly attenuate systemic inflammation and neuroinflammatorysignaling (Minerbi et al., 2019). Additionally, lipid-based formulations may facilitate absorption of bioactive phytochemicals with potential anti-inflammatory or neuromodulatory properties. Although high-quality randomized trials remain limited, Basti represents a biologically plausible modality for modulating gut–brain interactions implicated in chronic nociplastic pain.

3. Shirodhara: *Shirodhara* is a classical Ayurvedic therapy involving the continuous, rhythmic pouring of warm medicated oil or decoction over the forehead, traditionally indicated for disorders of the mind (*manovahasrotas*), sleep disturbances, and aggravated *Vata* (Sharma & Dash, 2018). In the context of fibromyalgia, which frequently presents with insomnia, cognitive dysfunction, anxiety, and stress sensitivity, Shirodhara may have mechanistic relevance to central sensitization.

From a neurophysiological perspective, Shirodhara is hypothesized to induce a relaxation response mediated through modulation of the hypothalamic–pituitary–adrenal (HPA) axis and autonomic nervous system activity. Preliminary clinical observations suggest reductions in stress markers, improvements in sleep quality, and enhanced parasympathetic tone following therapy (Rao et al., 2017). Given that autonomic imbalance and stress dysregulation contribute to impaired descending pain inhibition in fibromyalgia, such modulation may indirectly attenuate central nociplastic amplification (Fitzcharles et al., 2023). Additionally, sensory stimulation of the frontal scalp region may influence limbic and cortical networks involved in emotional regulation and pain perception. Although rigorous randomized trials remain limited, Shirodhara represents a plausible adjunctive intervention targeting stress-related neurobiological mechanisms in fibromyalgia.

Medhya and Rasayana herbs: neuroprotective, anti-inflammatory, adaptogenic actions: *Medhya* and *Rasayana* herbs, such as *Withaniasomnifera*, *Bacopamonnieri*, and *Centellaasiatica*, are traditionally indicated for cognitive enhancement and neural rejuvenation. Pharmacologically, they exhibit antioxidant, anti-inflammatory, adaptogenic, and neuroprotective properties, potentially modulating neurotransmitter balance, reducing neuroinflammation, and enhancing synaptic resilience in central sensitization disorders such as fibromyalgia. Above herbs with preclinical and some clinical data relevant to fibromyalgia and central sensitization described below:

1. Withaniasomnifera (Ashwagandha): *Withaniasomnifera* (Ashwagandha) is a prominent

AyurvedicRasayana herb traditionally indicated for Vata disorders, fatigue, and neurocognitive dysfunction (Sharma & Dash, 2018). Contemporary research demonstrates its adaptogenic, anti-inflammatory, and neuroprotective properties, which are mechanistically relevant to fibromyalgia and central sensitization. Experimental studies indicate that Ashwagandha modulates hypothalamic–pituitary–adrenal (HPA) axis activity, reduces cortisol levels, and attenuates oxidative stress and pro-inflammatory cytokines (Lopresti et al., 2019). Preclinical models further suggest its potential to reduce hyperalgesia and improve mitochondrial function, thereby influencing nociceptive processing (Singh et al., 2023). Clinical trials in stress-related conditions report improvements in sleep quality, anxiety, and overall well-being, factors closely linked to pain modulation (Salve et al., 2019). Collectively, Ashwagandha represents a biologically plausible adjunct in managing nociplastic pain syndromes.

2. Bacopamonnieri (Brahmi): *Bacopamonnieri* (Brahmi) is classified in Ayurveda as a *MedhyaRasayana*, traditionally prescribed to enhance cognition, memory, and mental clarity, particularly in conditions associated with aggravated *Vata* and *Majjadhatu* imbalance (Sharma & Dash, 2018). Contemporary pharmacological studies demonstrate that standardized Bacopa extracts exert neuroprotective, antioxidant, and anti-inflammatory effects, modulating cholinergic transmission and synaptic plasticity (Aguiar&Borowski, 2013). Preclinical evidence suggests that Bacopa enhances dendritic branching and supports long-term potentiation, thereby influencing learning and neuronal resilience (Peth-Nui et al., 2012). Clinical trials in healthy adults and elderly populations report improvements in attention, processing speed, and working memory (Kongkeaw et al., 2014). Given that fibromyalgia is frequently associated with cognitive dysfunction ("fibro fog") and altered central processing, Bacopa's multimodal neurochemical actions may offer adjunctive benefits in modulating central sensitization and cognitive impairment.

3. Centellaasiatica, Convolvulus pluricaulis and other medhya plants: *Centellaasiatica* (Mandukaparni) and *Convolvulus pluricaulis* (Shankhapushpi) are classified as *MedhyaRasayana* herbs in Ayurveda, traditionally indicated for cognitive enhancement, stress modulation, and disorders involving *Majjadhatu* and aggravated *Vata* (Sharma & Dash, 2018). Contemporary pharmacological studies demonstrate that *Centellaasiatica* possesses neuroprotective, antioxidant, and anti-inflammatory properties, with evidence suggesting enhancement of brain-derived neurotrophic factor (BDNF) expression and synaptic plasticity (Gray et al., 2018). Clinical trials indicate improvements in cognitive performance and anxiety symptoms (Farooqui et al., 2022). *Convolvulus pluricaulis* has shown anxiolytic, anti-stress, and memory-enhancing effects in preclinical models, potentially through modulation of cholinergic and GABAergic systems (Nahata et al., 2010). Given that fibromyalgia is associated with cognitive dysfunction, stress sensitivity, and central sensitization, these medhya plants may exert adjunctive benefits by attenuating oxidative stress, modulating neuroinflammation, and supporting synaptic resilience.

4. Diet, Agni, Ama, and microbiome modulation: In Ayurveda, optimal health depends upon balanced *Agni* (digestive and metabolic fire), which governs nutrient assimilation and prevents the formation of *Ama*, a pathological metabolic residue implicated in systemic dysfunction (Sharma & Dash, 2018). Impaired Agni leads to Ama accumulation, described as obstructing physiological channels (*srotas*) and contributing to chronic inflammatory states. Translationally, this concept parallels contemporary findings linking altered gut microbiota composition, increased intestinal permeability, and low-grade systemic inflammation to fibromyalgia and central sensitization (Minerbi et al., 2019; Fitzcharles et al., 2023). Dysbiosis-associated metabolites may influence neuroimmunesignaling through vagal, endocrine, and cytokine-mediated pathways, thereby modulating nociceptive processing. Ayurvedic dietary prescriptions (*Pathya*) emphasize easily digestible, anti-inflammatory foods and individualized regimens aimed at restoring Agni and reducing Ama burden. Such approaches may favorably influence microbiome diversity, metabolic homeostasis, and immune regulation. Consequently, dietary modulation represents a plausible mechanistic bridge between Ayurvedic metabolic theory and gut–brain axis–mediated pain amplification in fibromyalgia.

5. Mind-body practices (Yoga, Pranayama, Meditation): Mind–body interventions, including yoga, pranayama, and meditation, are integral components of Ayurvedic lifestyle therapy and are increasingly supported by contemporary pain research. In fibromyalgia, these practices have demonstrated beneficial effects on pain intensity, fatigue, sleep quality, and psychological distress (Cramer et al., 2013; Häuser et al., 2010). Mechanistically, yoga-based interventions enhance parasympathetic tone, improve heart rate variability, and reduce sympathetic overactivation, thereby addressing autonomic imbalance associated with central sensitization (Sluka&Clauw, 2016).

Controlled breathing techniques (pranayama) modulate vagal afferent signaling and hypothalamic–pituitary–adrenal (HPA) axis activity, contributing to improved stress resilience and pain regulation. Meditation practices have been shown to alter functional connectivity in cortical and limbic pain-processing networks, enhancing top-down inhibitory control and reducing affective pain components (Zeidan et al., 2012). Collectively, these interventions may attenuate nociplastic amplification by restoring autonomic equilibrium, reducing neuroinflammatory stress responses, and strengthening descending pain modulation systems in fibromyalgia.

Clinical evidence: what exists and where are

limitations?

1. Trials, pilot studies, and case series: The clinical evidence base for Ayurvedic interventions in fibromyalgia remains emerging and is largely composed of pilot studies, feasibility trials, and case series. A nonrandomized controlled pilot trial evaluating an add-on complex Ayurvedic treatment (KAFA trial) reported improvements in pain intensity, functional disability, and quality of life compared with conventional care alone; however, methodological limitations, including small sample size and lack of blinding, restrict generalizability (Michalsen et al., 2013). Observational studies conducted in integrative settings have similarly documented reductions in symptom burden following multimodal Panchakarma-based protocols incorporating Snehana, Swedana, Basti, dietary modification, and herbal Rasayana therapy (Rasmussen et al., 2012). Individual case reports describe clinically meaningful improvements in pain, stiffness, and sleep following personalized Ayurvedic regimens, though these designs inherently lack control groups and standardized outcome measures. Overall, while preliminary findings suggest potential benefit and feasibility, high-quality randomized controlled trials with standardized interventions and validated outcome measures are necessary to establish efficacy and mechanistic validity in fibromyalgia management.

2. Preclinical support and translational plausibility: Preclinical investigations provide important mechanistic insights supporting the translational plausibility of Ayurvedic interventions in fibromyalgia and central sensitization. Experimental models of chronic widespread pain demonstrate that neuroinflammation, oxidative stress, mitochondrial dysfunction, and altered monoaminergic signaling contribute to persistent nociceptive amplification (Sluka&Clauw, 2016). Several AyurvedicRasayana and *medhya* herbs, including *Withaniasomnifera* and *Bacopamonnieri*, have shown anti-inflammatory, antioxidant, and neuroprotective effects in animal studies, with evidence of reduced hyperalgesia and modulation of stress-responsive pathways (Lopresti et al., 2019; Singh et al., 2023). Additionally, phytochemicals from *Centellaasiatica* have demonstrated enhancement of synaptic plasticity and brain-derived neurotrophic factor expression, potentially counteracting maladaptive central sensitization (Gray et al., 2018). These findings suggest that multimodal Ayurvedic therapies may influence molecular targets implicated in nociplastic pain, including cytokine signaling, NMDA receptor activity, and hypothalamic–pituitary–adrenal axis regulation. Although direct fibromyalgia-specific models remain limited, existing preclinical data provide a biologically plausible foundation for further translational and clinical research.

3. Safety and quality control: Safety and quality assurance are critical considerations in the clinical translation of Ayurvedic therapies for fibromyalgia. Although many herbal formulations are traditionally regarded as safe when administered under qualified supervision, variability in manufacturing practices, contamination with heavy metals, and herb–drug interactions remain documented concerns (Ernst, 2002; Saper et al., 2008). Standardization of botanical extracts, authentication of raw materials, and adherence to Good Manufacturing Practices (GMP) are essential to ensure reproducibility and safety. Additionally, pharmacovigilance systems should be implemented to monitor adverse events and interactions, particularly in patients receiving concomitant pharmacologic therapies for chronic pain or mood disorders. From a regulatory perspective, harmonization of traditional formulations with contemporary quality standards—including quantification of active phytoconstituents and toxicological screening—can enhance credibility and clinical acceptance. Rigorous quality control measures, combined with practitioner oversight and individualized dosing, are fundamental to integrating Ayurvedic modalities safely within multidisciplinary fibromyalgia care.

Integrative mechanistic model: mapping Ayurveda to central sensitization: An integrative mechanistic model mapping Ayurvedic principles onto central sensitization offers a systems-level framework for understanding fibromyalgia. Within this paradigm, aggravated *Vatadosha*—characterized by mobility, instability, and heightened sensitivity—can be conceptually aligned with neuronal hyperexcitability, enhanced synaptic transmission, and impaired descending inhibitory control that define nociplastic pain (Clauw, 2014). The Ayurvedic construct of *Ama*, arising from impaired *Agni* (metabolic dysfunction), parallels contemporary evidence of low-grade systemic inflammation, gut dysbiosis, and neuroimmune activation contributing to persistent pain amplification (Fitzcharles et al., 2023). Additionally, *Majjadhatukshaya* (depletion of nervous tissue) may correspond to neurotransmitter imbalance, altered brain-derived neurotrophic factor signaling, and diminished neuroplastic resilience.

Therapeutically, Panchakarma procedures such as *Snehana* and *Basti* may influence autonomic regulation and gut–brain axis signaling, potentially attenuating stress-induced central sensitization. Rasayana and *medhya* botanicals exert antioxidant, anti-inflammatory, and neuroprotective actions, supporting synaptic stability and stress adaptation. Mind–body practices further enhance parasympathetic tone and hypothalamic–pituitary–adrenal axis regulation. Collectively, this integrative model conceptualizes fibromyalgia as a multidimensional disorder requiring coordinated modulation of neural, immune, metabolic, and psychosocial networks.

This model supports multimodal interventions combining detoxification (to remove systemic drivers of neuroinflammation), tissue nourishment (to restore neural health), and mind-body practices (to re-establish descending inhibition and autonomic balance).

Research agenda and trial recommendations: To rigorously evaluate Ayurvedic interventions for fibromyalgia characterized by central sensitization, a structured and methodologically robust research framework is required. Priority should be given to adequately powered, multicenter randomized controlled trials (RCTs) employing standardized and reproducible Ayurvedic protocols. Comparative designs may assess integrated Panchakarma, Rasayana, and lifestyle-based interventions against active controls such as patient education and supervised exercise, with appropriate allocation concealment and blinding where feasible. Stratification based on validated central sensitization markers, including Central Sensitization Inventory (CSI) scores and relevant comorbidities, would enhance subgroup analyses.

Mechanistic evaluation should incorporate biomarker-driven endpoints, including pro-inflammatory cytokines, brain-derived neurotrophic factor (BDNF), diurnal cortisol patterns, autonomic indices (e.g., heart rate variability), and, where feasible, cerebrospinal fluid levels of substance P or glutamate. Neuroimaging modalities such as resting-state and pain-evoked functional MRI, alongside quantitative sensory testing, may elucidate central nervous system modulation. Longitudinal microbiome and metabolomic analyses could assess gut–brain axis effects of Basti and dietary interventions. Additionally, adherence to Good Manufacturing Practices (GMP) for herbal products and systematic pharmacovigilance are essential. Implementation research examining feasibility, cost-effectiveness, and integration within conventional multidisciplinary care is also warranted.

Practical clinical considerations: Incorporating Ayurvedic interventions into fibromyalgia management requires a cautious, patient-centered, and integrative approach until definitive RCT data are available. Therapies should be individualized based on constitutional assessment (*Prakriti*) and current imbalance (*Vikriti*), particularly evaluating features of Vata predominance. Ayurvedic modalities are best utilized as adjuncts rather than replacements for evidence-based conventional treatments, especially in patients with moderate to severe symptom burden. Collaboration between rheumatologists, pain specialists, and qualified Ayurvedic practitioners can optimize safety and therapeutic coherence. Standardized, quality-controlled herbal preparations should be prioritized to minimize risks of contamination or herb–drug interactions. Gradual introduction of mind–body practices, dietary adjustments, and gentle Panchakarma procedures may improve adherence and tolerability. Monitoring clinical outcomes using validated measures—such as pain intensity scales, sleep indices, and functional assessments—can enhance objectivity. Ultimately, an integrative care model emphasizing multimodal modulation of stress, autonomic balance, inflammation, and neural sensitization may offer practical benefits for patients with chronic nociplastic pain rather than single-modality approaches.

Limitations of the current review: This review has several limitations. First, the clinical evidence supporting Ayurvedic interventions in fibromyalgia is limited by small sample sizes, heterogeneous study designs, and a predominance of pilot trials and case reports, restricting the strength of conclusions. Second, variability in herbal formulations, individualized treatment protocols, and differences in practitioner expertise reduce reproducibility across studies. Third, direct mechanistic studies linking Ayurvedic therapies to validated biomarkers of central sensitization remain scarce. Finally, conceptual mapping between Ayurvedic constructs and biomedical mechanisms is interpretative and requires empirical validation through rigorously designed translational and randomized controlled trials.

Conclusion: Fibromyalgia represents a complex nociplastic pain disorder characterized by central sensitization, neuroimmune dysregulation, autonomic imbalance, and psychosocial vulnerability. Despite advances in pharmacological and behavioral therapies, a substantial proportion of patients continue to experience persistent symptoms, highlighting the need for multidimensional and integrative treatment strategies. Ayurveda offers a systems-based framework that conceptually aligns with contemporary understandings of central sensitization. The constructs of Vata aggravation, Ama accumulation, and Majjadhatu depletion provide a traditional explanatory model that parallels neural hyperexcitability, neuroinflammation, metabolic dysfunction, and impaired descending inhibition.

Multimodal Ayurvedic interventions including Panchakarma procedures, Rasayana and medhya botanicals, dietary modulation, and mind–body practices—demonstrate biological plausibility through potential effects on autonomic regulation, hypothalamic–pituitary–adrenal axis modulation, oxidative stress reduction, and gut–brain axis signaling. While preliminary clinical and preclinical evidence is encouraging, methodological rigor remains essential to validate efficacy and mechanistic pathways. Future biomarker-driven randomized controlled trials and translational research will be critical for integrating Ayurvedic approaches into evidence-based multidisciplinary care. A scientifically grounded integrative model may ultimately expand therapeutic options and improve quality of life for individuals living with fibromyalgia.

References :-

1. Aguiar, S., & Borowski, T. (2013). Neuro-pharmacological review of the nootropic herb *Bacopamonnieri*. *Rejuvenation Research, 16*(4), 313–326.
2. Albrecht, D. S., MacKie, P. J., Kareken, D. A., et al. (2019). Brain glial activation in fibromyalgia—A multi-site positron emission tomography investigation. *Brain, Behavior, and Immunity, 75*, 72–83.
3. Arnold, L. M., Clauw, D. J., &McCarberg, B. H. (2019).

Improving the recognition and diagnosis of fibromyalgia. *Mayo Clinic Proceedings, 94*(3), 493–505.
4. Clauw, D. J. (2014). Fibromyalgia: A clinical review. *JAMA, 311*(15), 1547–1555.
5. Cramer, H., Lauche, R., Haller, H., et al. (2013). A systematic review and meta-analysis of yoga for fibromyalgia. *Rheumatology, 52*(3), 1–10.
6. Ernst, E. (2002). Toxic heavy metals and undeclared drugs in Asian herbal medicines. *Trends in Pharmacological Sciences, 23*(3), 136–139.
7. Farooqui, T., Farooqui, A. A., & Madan, A. (2022). *Centellaasiatica* and its neuroprotective effects: A systematic review. *Phytotherapy Research, 36*(4), 1525–1542.
8. Field, T. (2016). Massage therapy research review. *Complementary Therapies in Clinical Practice, 24*, 19–31.
9. Fitzcharles, M. A., Cohen, S. P., Clauw, D. J., et al. (2023). Nociplastic pain and central sensitization: An update. *The Lancet Rheumatology, 5*(2), e102–e112.
10. Gray, N. E., Alcazar Magana, A., Lak, P., et al. (2018). *Centellaasiatica* phytochemicals enhance neuronal plasticity and BDNF expression. *Scientific Reports, 8*, 10468.
11. Häuser, W., Ablin, J., Fitzcharles, M. A., et al. (2015). Fibromyalgia. *Nature Reviews Disease Primers, 1*, 15022.
12. Häuser, W., Bernardy, K., Arnold, B., Offenbächer, M., &Schiltenwolf, M. (2010). Efficacy of multicomponent treatment in fibromyalgia: A meta-analysis of randomized controlled trials. *Arthritis Care & Research, 62*(10), 1367–1376.
13. Ji, R. R., Donnelly, C. R., &Nedergaard, M. (2018). Astrocytes in chronic pain and itch. *Nature Reviews Neuroscience, 20*(11), 667–685.
14. Kongkeaw, C., Dilokthornsakul, P., Thanarangsarit, P., et al. (2014). Meta-analysis of randomized controlled trials on cognitive effects of *Bacopamonnieri*. *Journal of Ethnopharmacology, 151*(1), 528–535.
15. Latremoliere, A., & Woolf, C. J. (2009). Central sensitization: A generator of pain hypersensitivity. *Journal of Pain, 10*(9), 895–926.
16. Lopresti, A. L., Smith, S. J., Malvi, H., &Kodgule, R. (2019). An investigation into the stress-relieving and pharmacological actions of an ashwagandha extract: A randomized, double-blind, placebo-controlled study. *Medicine, 98*(37), e17186.
17. Martínez-Lavín, M. (2021). Fibromyalgia and stress: The hypothalamic- pituitary - adrenal axis revisited. Current Rheumatology Reports, 23(5), 34.
18. Michalsen, A., Jeitler, M., Brunnhuber, S., et al. (2013). Additive complex Ayurvedic treatment in patients with fibromyalgia syndrome compared to conventional standard care alone: A nonrandomized controlled clinical pilot study (KAFA trial). *Evidence-Based Complementary and Alternative Medicine, 2013*, 751403.
19. Minerbi, A., Gonzalez, E., Brereton, N. J. B., et al. (2019). Altered microbiome composition in individuals with fibromyalgia. *Pain, 160*(11), 2589–2602.
20. Nahata, A., Patil, U. K., & Dixit, V. K. (2010). Anxiolytic activity of *Convolvulus pluricaulis* in rodents. *Pharmacology Biochemistry and Behavior, 95*(1), 100–106.
21. Peth-Nui, T., Wattanathorn, J., Muchimapura, S., et al. (2012). Effects of 12-week Bacopamonnieri supplementation on attention and cognitive processing. *Evidence-Based Complementary and Alternative Medicine, 2012*, 606424.
22. Rao, R. M., Nagendra, H. R., Raghuram, N., Vinay, C., Chandrashekara, S., &Gopinath, K. S. (2017). Influence of Shirodhara on stress and sleep parameters: A pilot study. *Journal of Ayurveda and Integrative Medicine, 8*(3), 160–164.
23. Rasmussen, L. B., et al. (2012). Treatment of fibromyalgia at the Maharishi Ayurveda Health Centre: A pilot study. *Clinical Rheumatology, 31*(4), 673–679.
24. Salve, J., Pate, S., Debnath, K., &Langade, D. (2019). Adaptogenic and anxiolytic effects of ashwagandha root extract in healthy adults: A randomized, double-blind, placebo-controlled clinical study. *Cureus, 11*(12), e6466.
25. Saper, R. B., Phillips, R. S., Sehgal, A., et al. (2008). Lead, mercury, and arsenic in U.S.- and Indian-manufactured Ayurvedic medicines sold via the Internet. *JAMA, 300*(8), 915–923.
26. Sharma, P. V., & Dash, B. (2018). *Charaka Samhita* (English translation). ChaukhambhaOrientalia.
27. Singh, N., Bhalla, M., de Jager, P., &Gilca, M. (2023). An overview on ashwagandha: A Rasayana (rejuvenator) of Ayurveda. *Journal of Ethnopharmacology, 308*, 116276.
28. Sluka, K. A., &Clauw, D. J. (2016). Neurobiology of fibromyalgia and chronic widespread pain. *Neuroscience, 338*, 114–129.
29. Woolf, C. J. (2011). Central sensitization: Implications for the diagnosis and treatment of pain. *Pain, 152*(3 Suppl), S2–S15.
30. Zeidan, F., Grant, J. A., Brown, C. A., McHaffie, J. G., & Coghill, R. C. (2012). Mindfulness meditation-related pain relief: Evidence for unique brain mechanisms. *Journal of Neuroscience, 32*(11), 3819–3828.

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

New Areas of Skill Development and Infrastructure in India

Sh. Harjeet Singh*

***Associate Professor (Economics) S.P.M. Govt College, Bhopalgarh, Jodhpur (Raj.) INDIA**

Abstract: India is the largest populated country in the world now .It has the largest working population in the age group (14-59). It is a challenge to the government to provide jobs over 50 crore population in this age group. Various government programs started to provide employment and self-employment to youth of the country. But these programs less success and temporary nature can't fulfill the life time earnings for the youth. Economic reforms started from 1991 after that the size of manufacturing and service sector growth exponentially seen in India. Increasing various jobs requirements of different skills now is very essential in organized and unorganized sector and they are giving good salary and opportunities for life long earning. But these jobs opportunities require specific skills according to requirement of industries and service sector. But the large population of youth is not skilled in India. Govt. of India identifies this gap and developed national skill policy and other initiatives to skill the youth according the requirement. This research paper is the effort to analysis various skill development program and strategy towards providing lifelong earning by skilling the youth of India. Various secondary data's uses to analysis the present scenario. Analysis the national skill framework, infrastructure, various policy, Skill University, internship etc.
Keywords- National skill framework, Skill structure Govt policies, Skill jobs, Evaluation.

Introduction - India's demographic transition has placed it at a unique historical juncture. With a median age of 28.4 years and over 65% of its population in the working-age bracket (14–59 years), the country possesses a potential labor force of approximately 520 million (World Bank, 2025). Unlike aging economies in Europe, Japan, or North America, India has a window of roughly three decades to harness this dividend before its dependency ratio rises. However, this demographic opportunity can quickly become a demographic liability if the working population remains unemployed, underemployed, or engaged in low-productivity informal work.

The economic liberalization of 1991 transformed India from a predominantly agrarian economy to one driven by services and manufacturing. Yet, the growth in Gross State Domestic Product (GSDP) and Gross Value Added (GVA) has not been matched by proportionate growth in formal, skilled employment. The Periodic Labour Force Survey (PLFS) 2023-24 indicates that while the unemployment rate has moderated, the quality of employment—characterized by wage stagnation, contractualization, and lack of social security—remains precarious. Over 90% of India's workforce is still in the unorganized sector, where skill recognition is minimal and lifelong earnings are uncertain. The central economic problem, therefore, is not merely the absence of jobs but a profound *skill gap*: the mismatch between what the industry requires and what the labor force possesses. The Government of India (GoI) has responded through the National Skill Development Mission, Pradhan Mantri Kaushal Vikas Yojana (PMKVY), Deen Dayal Upadhyaya Grameen Kaushalya Yojana (DDU-GKY), and the establishment of Skill Universities and Indian Institute of Skills. However, evaluations by the Comptroller and Auditor General (CAG) and NITI Aayog have repeatedly highlighted issues of low placement rates, poor infrastructure, and the temporary nature of skill-based employment.

This research paper addresses the following critical questions:

1. What is the current state of skill infrastructure in India, and how does it align with new areas of economic growth (green jobs, AI, logistics, care economy)?
2. How effective have government skill policies been in transforming short-term placements into lifetime earnings trajectories?
3. What economic and institutional barriers prevent the National Skill Framework from achieving its objectives?
4. What novel policy and infrastructure interventions can bridge the skill-employment-lifelong earning continuum?

The paper is organized into six sections. Following the introduction, Section II reviews theoretical underpinnings

linking skill development to lifetime earnings. Section III outlines the research methodology based on secondary data analysis. Section IV presents a detailed evaluation of India's skill infrastructure and new skill areas. Section V discusses key economic challenges and evaluation findings. Section VI concludes with policy recommendations.

Theoretical Framework: Skill, Earnings, and Lifetime Income: To understand the necessity of skill development, one must invoke human capital theory, originally formalized by Gary Becker (1964) and Jacob Mincer (1974). Human capital theory posits that education and training are investments that yield returns over an individual's lifetime in the form of higher wages. However, in developing economies like India, this theory requires two crucial modifications:

1. **Signaling vs. Productivity:** Spence's job market signaling model suggests that without credible skill certification, employers rely on proxies (e.g., general education degrees), which fail to capture vocational competence. Skill development programs, therefore, must provide *verifiable, portable credentials*.
2. **Lifetime Earnings Trajectory:** Unlike one-time placements, *lifetime earnings* depend on skill upgradation, adaptability, and experience. Temporary, low-skill jobs without a career progression pathway lead to flat earnings profiles, trapping workers in a low-level equilibrium.

Furthermore, the **Dual Labor Market Theory** (Doeringer & Piore, 1971) explains why skill programs often fail. In India, a primary sector (formal, high-wage, skilled) and a secondary sector (informal, low-wage, unskilled) exist with limited mobility. Most government skill programs, despite training, channel graduates into the secondary market due to lack of industry linkages, infrastructure, or because they train in saturated skills (e.g., basic stitching, computer literacy) rather than emerging areas.

New Areas of Skill Development must be understood through the lens of *structural transformation* (Lewis, 1954). As India shifts from agriculture to services and Industry 4.0, skill demand moves from general laborers to techno-functional specialists. New areas include:

1. **Green Skills:** Solar PV installation, e-waste management, climate-resilient agriculture.
2. **Digital Skills:** AI-ML basics, cybersecurity, cloud computing support, data annotation.
3. **Care Economy Skills:** Geriatric care, early childhood education, mental health first aid.
4. **Logistics and Supply Chain:** Warehouse automation, cold chain management, last-mile delivery optimization.

Without corresponding physical and digital infrastructure—training centers, high-speed internet, assessment labs, and apprenticeship hubs—these new skill areas remain inaccessible to the rural and semi-urban youth, perpetuating regional and class-based inequalities in lifelong earnings.

Research Methodology: This study employs a qualitative, exploratory research design based on the analysis of secondary data. Given the macroeconomic scope of the topic—covering national policies, infrastructure, and outcomes across 28 states and 8 union territories—primary data collection would be logistically prohibitive within the scope of this paper. The methodology comprises:

Data Sources:

Government Reports: Ministry of Skill Development and Entrepreneurship (MSDE) annual reports (2019–2025); National Skill Development Corporation (NSDC) performance dashboards; CAG audit reports on PMKVY; NITI Aayog's "India's Skill Development Journey" (2024); RBI's KLEMS database for sectoral employment.

International Databases: ILO's World Employment and Social Outlook; World Bank's SKILLS dataset.

Academic Literature: Peer-reviewed articles from JSTOR, Scopus, and EconLit (2015–2025) on skill development, labor economics, and infrastructure planning.

Policy Documents: National Skill Development Policy (2009, 2015); National Education Policy (NEP) 2020 (section on vocational education); State Skill Development Missions (selected states: Gujarat, Kerala, Tamil Nadu, Bihar).

Analytical Framework:

Infrastructure Mapping: Assessment of physical (ITIs, Skill Centers, Skill Universities) and digital infrastructure (Skill India Portal, e-Skill India).

Policy Evaluation Matrix: Using criteria from the World Bank's SABER (Systems Approach for Better Education Results) – workforce development framework: governance, financing, quality assurance, articulation pathways, and labor market alignment.

Indicator Analysis: Placement rates, wage outcomes (short-term vs. 3-year follow-up), certification validity, employer satisfaction, and gender/regional inclusion.

Limitations: Secondary data limitations include reporting biases, non-standardized metrics across states, and a lag in real-time data. Furthermore, most evaluations measure *initial placement* rather than true *lifetime earnings*. This paper addresses this by critically examining tracer study evidence where available.

Analysis of Skill Development Infrastructure and New Areas

The National Skill Framework: Structure and Gaps: The National Skill Qualifications Framework (NSQF), launched in 2012, organizes qualifications according to a series of levels (1 to 10) based on knowledge, skills, and aptitude. It is a laudable attempt to create parity between general education and vocational training. However, empirical evaluation reveals three critical gaps:

1. **Vertical Mobility Illusion:** While NSQF theoretically allows a Level 4 electrician to gain credits for a polytechnic diploma, in practice, articulation is rare. Only 12% of vocational trainees have successfully transferred credits into formal degree programs (UGC, 2024). Consequently, skill training remains a "dead end" rather than a pathway to

lifelong earning.

2. **Infrastructure Deficit:** As of 2025, India has approximately 14,000 Industrial Training Institutes (ITIs) and over 2,500 Pradhan Mantri Kaushal Kendras (PMKKs). However, only 45% of PMKKs have functioning advanced simulators or equipment aligned with Industry 4.0. Rural district skill centers lack even basic internet connectivity, limiting access to online training modules.

3. **Trainer Shortage:** The MSDE estimates a deficiency of over 1.2 million accredited trainers. Most existing trainers themselves have outdated skills, particularly in emerging areas like robotics or renewable energy.

New Areas of Skill Development: Based on sectoral growth projections (NITI Aayog, 2025; RBI, 2024), four new skill areas are critical for lifelong earnings:

Table 1 (see in last page)

Evidence: The Logistics Skill Council reports that trained candidates in cold chain management earn 62% higher lifetime income (over 10 years) compared to untrained warehouse workers. Similarly, green skill certification under Suryamitra (solar PV) shows a wage premium of 45% in the first job, but retention at 3 years drops to 54% due to lack of career progression – highlighting the *lifetime earnings* problem.

Skill Universities and Internship Infrastructure

The establishment of Skill Universities (e.g., Delhi Skill and Entrepreneurship University, Haryana Vishwakarma Skill University) represents a novel infrastructure intervention. These universities offer degree programs integrated with NSQF levels 5-8. Early evaluation (NSDC, 2025) shows:

- **Success:** On-the-job training (OJT) embedded in curriculum; industry-designed capstone projects.
- **Challenge:** Only 6 operational skill universities exist against a target of 25 by 2025. Moreover, internship infrastructure (hostels, transport, stipend mechanisms) is weak, resulting in only 40% of enrolled students completing mandatory industry internships.

The National Apprenticeship Promotion Scheme (NAPS) increased apprentices from 0.3 million (2016) to 1.1 million (2025), but this is still minuscule compared to 500 million working-age population. Additionally, 73% of apprenticeships are concentrated in manufacturing (automotive, textiles), with negligible presence in new skill areas like AI or care economy.

Evaluation of Government Policies and Economic Outcomes

Macroeconomic Impact Assessment: Using a simple pre-post analysis (2014-2025), the share of formally skilled youth (with at least NSQF Level 4 certification) rose from 4% to 27% of the labor force. However, the employment elasticity of skill training remains low: a 1% increase in skill certification leads to only 0.3% increase in formal employment (NITI Aayog, 2024). The reasons are structural:

For PMKVY (flagship short-term training):

1. **Placement rates:** Officially 58% (MSDE, 2025). Independent studies (e.g., Azim Premji University, 2024) place it at 34% after 12 months.
2. **Wage outcomes:** Median monthly wage for PMKVY trained youth is Rs. 9,000-12,000 ($110-145), barely above the minimum wage. After 3 years, wages increase only 7% (inflation-adjusted) because most jobs are in low productivity services (retail, security, hospitality).
3. **Lifetime earnings projection:** A PMKVY-trained retail associate earning Rs.10,000/month with 3% annual real growth will earn a cumulative Rs. 1.68 million over 20 years. In contrast, a degree-holding (or advanced skill-certified) AI data assistant starting at Rs. 25,000/month with 6% growth will earn Rs. 9.2 million. The divergence represents the *skill penalty*.
4. **For DDU-GKY (rural youth):** Stronger placement focus (mandatory 75% placement within 6 months). However, placements are often in high-turnover sectors (security guards, sales promoters). The average job tenure is 11 months. Consequently, *lifetime earnings* are interrupted by frequent unemployment spells.

Infrastructure Evaluation: Digital and Physical: The Skill India Portal (SIP) claims 35 million registered candidates. However, only 12 million have completed any assessment. The e-Skill India digital platform offers 500+ courses, but completion rates are <18% (similar to global MOOC averages). Without proctored assessment centers and offline infrastructure (PMKK libraries, simulation labs), digital skilling excludes rural youth with poor digital literacy.

Regional disparity: Southern and western states (Kerala, Tamil Nadu, Karnataka, Maharashtra) account for 62% of advanced skill infrastructure (Skill Universities, Centers of Excellence). Northern and eastern states (Uttar Pradesh, Bihar, Jharkhand, Odisha) have 25% of the infrastructure but 48% of the working-age population. This infrastructural maldistribution perpetuates internal migration and spatial inequality in earnings.

Institutional Barriers to Lifelong Earnings

1. **Fragmented Governance:** Skill development is divided among MSDE, Ministry of Education (vocational in schools), Ministry of Labour (apprenticeships), and various line ministries (e.g., Ministry of New and Renewable Energy for green jobs). Coordination failures lead to duplicate training, wasted infrastructure, and inconsistent standards.
2. **Financing Mismatch:** Total public expenditure on skill development is 0.1% of GDP, compared to 0.6% in Germany and 0.5% in South Korea. Moreover, 85% of funds are allocated to *supply-side* training (running courses) rather than *demand-side* infrastructure (industry-sponsored internships, wage subsidies for lifelong learning accounts).
3. **Assessment and Certification Weakness:** The majority of assessments are conducted by the same training providers (conflict of interest). Employer trust in NSQF certifications is low (only 44% of employers accept them as equivalent to formal degrees; FICCI-EY survey, 2025).

Discussion: From Short-Term Placement to Lifelong

Earnings: The central argument emerging from this analysis is that India's skill development ecosystem remains *placement-centric* rather than *lifetime earnings-centric*. The political economy favors easily measurable outputs (number trained, short-term placed) over harder-to-measure outcomes (wage progression over 10 years, career switches, upskilling cycles).

To transition to lifelong earnings, three paradigm shifts are needed:

1. **From Static to Dynamic Infrastructure:** Instead of physical PMKKs, India needs "Skill Hubs" co-located with industrial clusters (e.g., automobile, electronics, pharmaceutical zones). These hubs should offer multi-entry, multi-exit pathways, evening and weekend modules for the already employed, and digital credential wallets (secured on a blockchain-like system) that accumulate lifelong learning credits.
2. **From Subsidized Training to Co-financed Lifelong Learning Accounts (LLAs):** Based on Singapore's SkillsFuture model, every Indian youth should receive a government-seeded LLA (e.g., Rs. 50,000) that they can draw upon for re-skilling every 5 years, supplemented by employer contributions. This shifts ownership from government to individual and incentivizes quality training providers to compete for LLA withdrawals.
3. **Mandatory Internship Infrastructure:** The NEP 2020 recommends internships from Grade 6 onwards. This must be extended to all skill training programs with a legal mandate: no skill certificate without a verified industry internship of at least 200 hours. Infrastructure for this includes a national internship exchange portal, transport and risk insurance for interns, and tax credits for SMEs offering internships in new skill areas.

Furthermore, the National Skill Framework must integrate micro-credentials—short, stackable modules in new areas (e.g., "EV two-wheeler repair Level 1") that can be combined into a full qualification. This allows workers to adapt to technological change without starting from zero, protecting lifetime earnings.

Conclusion and Policy Recommendations: India's skill development challenge is not merely about numbers. With over 500 million youth, the government has initiated a robust policy framework (NSQF, PMKVY, Skill Universities, NAPS). However, the gap between training infrastructure and new-area industry requirements remains wide. Short-term placements in low-productivity jobs do not translate into *lifelong earnings*, which require career progression, continuous upskilling, and credible certification.

The demographic dividend will be realized only if skill infrastructure shifts from rural-centric low-level training to industry-integrated, digital-first, regionally balanced centers of excellence. The current evaluation metrics—trained, placed—must be replaced by a 10-year earnings trajectory index.

Key Policy Recommendations:

1. **Establish a National Skill Infrastructure Finance Corporation (SIFC)** with a corpus of Rs. 50,000 crore to fund district-level "Skill Parks" with dynamic labs, hostels for internships, and fiber-optic connectivity.
2. **Enact the Lifelong Learning Account (LLA) Act,** providing every youth (18-35) a government-seeded account for upskilling, requiring co-investment from employers for employees earning above a threshold.
3. **Mandate 8-10% of CSR funds** be directed to skill infrastructure in new areas (green, digital, care economy) with a specific focus on aspirational districts.
4. **Create an independent National Skill Assessment Authority (NSAA)** separate from training providers, using AI-proctored and simulation-based assessments to enhance employer trust.
5. **Integrate skill credits into formal education** by mandating that all universities accept up to 30% NSQF credits for undergraduate degrees, enabling vertical mobility for vocational trainees.

India stands at a crossroads. With appropriate, adaptive, and lifelong-oriented skill infrastructure, the largest working population can become the world's most productive asset. Without it, the same population may fuel unemployment, social unrest, and economic stagnation. The economics are clear: every rupee invested in quality skill infrastructure yields a lifetime earnings return of 8-10, compared to 2-3 for unskilled work. The policy imperative is urgent.

References:-

1. Becker, G. S. (1964). *Human Capital*. University of Chicago Press.
2. Comptroller and Auditor General of India. (2023). *Performance Audit of Pradhan Mantri Kaushal Vikas Yojana (PMKVY)*. Report No. 12 of 2023.
3. FICCI & Ernst & Young. (2025). *Future of Skills in India: Employer Perspectives 2025*. FICCI.
4. Government of India, Ministry of Skill Development and Entrepreneurship. (2024). *Annual Report 2023-24*. MSDE.
5. ILO. (2025). *World Employment and Social Outlook: Trends 2025*. International Labour Office, Geneva.
6. Mincer, J. (1974). *Schooling, Experience, and Earnings*. Columbia University Press.
7. NITI Aayog. (2024). *India's Skill Development Journey: From Policy to Impact*. Government of India.
8. NSDC. (2025). *Tracer Study Report: Placement and Wage Progression of PMKVY Trainees (Cohort 2020-2023)*. National Skill Development Corporation.
9. Periodic Labour Force Survey (PLFS). (2023-24). *Annual Report*. Ministry of Statistics and Programme Implementation, Government of India.
10. Reserve Bank of India. (2024). *KLEMS Database: Sectoral Employment and Productivity*. RBI.
11. Spence, M. (1973). Job Market Signaling. *The Quarterly Journal of Economics*, 87(3), 355–374.

12. University Grants Commission. (2024). *Credit Framework for NSQF: Implementation Status Report*. UGC.

13. World Bank. (2025). *India Development Update: Leveraging the Demographic Dividend*. World Bank Group.

Table 1

New Skill Area	Projected Job Growth (2025-2030)	Key Infrastructure Needed	Current Penetration (States with dedicated policy)
Green Energy & E-mobility	3.4 million	Solar parks, EV charging station training labs	Gujarat, Rajasthan, Tamil Nadu, Maharashtra
AI & Data Services	1.5 million	Cloud labs, AI sandboxes, high-speed broadband	Karnataka, Telangana, Delhi-NCR, Kerala
Care Economy (Elderly/Child)	2.8 million	Simulation centers for caregiving, mobile assessment vans	Kerala, Tamil Nadu, Punjab, West Bengal
Logistics, Warehousing & Cold Chain	4.1 million	Multi-modal logistics parks, virtual reality (VR) training for forklift/cranes	Gujarat, Haryana, Maharashtra, Assam (NE corridor)

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

घरेलू हिंसा समाप्ति में शिक्षा की भूमिका का एक समाशास्त्रीय विश्लेषण

डॉ. अनिता टॉक*

* सहायक आचार्य (समाजशास्त्र) राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा (राज.) भारत

प्रस्तावना – भारतीय समाज एक पुरूष प्रधान समाज है। यही कारण है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता' की अवधारणा होते हुए भी व्यवहार में महिलाओं के स्वाभिमान और उनके जीवन की आहुति दी जाती रही है। यही कारण है कि महिलाओं का उत्पीड़न, अपमान, शोषण, दमन, तिरस्कार एवं यंत्रणा उतनी ही प्राचीन है जितना कि पारिवारिक जीवन का इतिहास। हमारे देश में पति को पत्नी पर हाथ उठाने का अधिकार शादी के बाद ही मिल जाता है। इन्हीं धारणाओं और मान्यताओं का परिणाम महिलाओं के विरूद्ध घरेलू हिंसा के रूप में देखने को मिलता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया भर में हर दस में से छः औरतों की यही कहानी है। जो घरेलू हिंसा की शिकार होती है। ज्यादातर मामलों में वे महिलाऐं अपने पति या करीबी साथी के जरिये की गयी हिंसा की शिकार होती हैं।

भारत सरकार के राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) 2015–16 के अनुसार भारत में करीब 33% महिलाऐं अपने पतियों की वजह से घरेलू हिंसा की शिकार होती हैं फिर चाहे वो हिंसा शारीरिक हो यौनिक हो या फिर भावनात्मक स्तर पर हों। यू.पी., एम.पी, महाराष्ट्र, पं. बंगाल व राजस्थान कुछ ऐसे राज्य जहाँ महिलाओं के साथ सबसे ज्यादा हिंसा की घटनाऐं हुई हैं। 2018 के आँकड़ों के मुताबिक पति और रिश्तेदारों द्वारा महिलाओं पर होने वाले अत्याचार के मामले करीब 33% है। मतलब एक तिहाई।

पुलिस ने 2018 में 103,272 ऐसे मामले दर्ज किये थे। यदि इन आँकड़ों पर नजर डाली जाये तो प्रतीत होता है कि घरेलू हिंसा एक विकराल सामाजिक समस्या है। यह न सिर्फ भारत से ही सम्बन्धित है, अपितु यह एक वैश्विक समस्या है। घरेलू हिंसा को समाप्त करने के लिए घरेलू हिंसा संरक्षण अधिनियम 2005 जैसे विभिन्न कानूनों का निर्माण, महिला जागरूकता, महिला स्वावलम्बन जैसे विभिन्न उपाय किये जा रहे हैं। इन उपायों पर दृष्टिपात करें तो हम पाते हैं कि इन सबका जो मूल आधार है वह है स्त्री शिक्षा का प्रसार। महिला साक्षरता में कमी के कारण ही स्त्री शारीरिक, मानसिक और आर्थिक रूप से शोषित है महिला अपराध व घरेलू हिंसा अशिक्षित समाज व अवसाद ग्रस्त समाज की मानसिकता का परिणाम है। इस अपराध व घरेलू हिंसा के विरूद्ध स्त्री शिक्षा को एक सशक्त हथियार के रूप में अपनाया जा सकता है।

शिक्षा मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण आधार है। शिक्षा के आधार पर व्यक्ति में दक्षता, ज्ञान, कौशल तथा क्षमताओं का विकास होता है इन गुणों से व्यक्ति में परितवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप ढलने की शक्ति तथा लचीलापन उत्पन्न होता है। शिक्षा समाज में व्यापक और सूक्ष्म, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों का प्रभावशाली माध्यम है। विशेष रूप से मजबूत लोकतंत्र में राष्ट्रीय एकता, सामाजिक आर्थिक परिवर्तन तथा न्याय संगत समाज की स्थापना के लिए शिक्षा का प्रसार आवश्यक है। राष्ट्रीय विकास की प्रक्रिया में समुचित योगदान के लिए प्रत्येक नागरिक का शिक्षित होना अनिवार्य है। शिक्षा के माध्यम से वांछित परिवर्तनों को लाया जा सकता है चाहे किसी भी क्षेत्र की महिलाऐं हों, साक्षरता उनके जीवन के संतुलित विकास के लिए आवश्यक है।

प्रस्तुत पत्र के माध्यम से हम शिक्षा व घरेलू हिंसा के मध्य सहसम्बन्ध को प्रकट करने का प्रयास करेंगे। शिक्षा द्वारा पुरूषवादी सोच में परिवर्तन करना होगा। महिलाओं के प्रति हिंसा की जड़ पुरूषवादी सोच है, जिसमें पुरूष के प्रभुत्व को स्वीकृति दी जाती है। इस सोच को शिक्षा के द्वारा ही बदला जा सकता है, जिससे पुरूष और महिला को समान समझने की मानसिकता विकसित हो। समतावादी शिक्षा के प्रसार से पुरूष अपनी पत्नी, प्रेमिका, बहिन या अन्य किसी भी महिला को अपने से हीन या निम्न नहीं समझेगा। विद्यालय एवं कॉलेज के पाठ्यक्रम में परिवार से सम्बन्धित पाठ्यक्रम सम्मिलित किया जा सकता है क्योंकि परिवार ही संस्कृति का मूल है। घरेलू हिंसा पर रोक के लिए बच्चों में ऐसे संस्कार पैदा कर सकते हैं जिससे पुरूष और महिला को समान समझने की मानसिकता विकसित हो। स्कूल व कॉलेज स्तर पर मनोवैज्ञानिक कक्षाओं के संचालन के माध्यम से भी महिलाओं हेय दृष्टि से देखने के नजरिये को परिवर्तित किया जा सकता है। पूर्व शिक्षा मन्त्री वासुदेव देवनानी जी ने कहा था शिक्षा के अभाव के कारण घरेलू हिंसा के मामले अधिक आते हैं। अतः स्त्री शिक्षा का प्रसार घरेलू हिंसा को खत्म करने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। जो नारियां घरेलू हिंसा की शिकार होती हैं, उन्हें स्वावलम्बी बनाया जाये। इससे उनमें आत्मविश्वास भी बढ़ेगा और वे किसी भी घरेलू हिंसा का मुकाबला कर सकेंगी। शिक्षित व स्वावलम्बी नारी ही समाज को शक्तिशाली बना सकती है। नारी शिक्षित होकर अपने अधिकारों के प्रति सजग होगी। शिक्षित महिला ही परिवार तथा देश का विकास कर सकती हैं, बच्चों की पहली शिक्षक माँ होती है जो उन्हें जीवन की अच्छाईयों और बुराईयों से अवगत कराती है अगर नारी शिक्षा को नजरंदाज किया गया तो देश के भविष्य के लिए यह किसी खतरे से कम नहीं होगा। शिक्षित महिलाऐं चुनौतियों का सामना करने

में सक्षम होगी। महिलाऐं अपने अधिकार व कर्त्तव्यों के प्रति जाग्रत हों, इसके लिए सबसे आवश्यक है उनका शिक्षित होना। इसके लिए माता-पिता के साथ घर के सभी सदस्यों को जागरूक होना पड़ेगा। उन्हें यह समझना होगा कि शिक्षा ही अंधकार को प्रकाश में बदल सकती है महज पुलिस की भूमिका को केन्द्र में रखकर महिलाओं के लिए समाज को सुरक्षित नहीं बनाया जा सकता है। प्रधानमंत्री जी का आम जनता से जो बेटी बचाओ, बेटी पढाओ का आह्वान आम जनता से हैं क्योंकि सबको इसका समर्थन करना होगा। केवल न्यायालय, पुलिस या सरकार के भरोसे इसे खत्म नहीं किया जा सकता।

भारतीय समाज अनेक कुरीतियों, रूढ़ियों व कुप्रथाओं से व्यक्त है। इसका प्रमुख कारण अशिक्षा है। जिसके कारण व्यक्ति व समाज इन रूढ़ियों से जकड़ा हुआ है और उन्हें तोड़ नहीं पा रहा है। अशिक्षा के कारण ही स्त्री पुरूष की समता वाले विचारों को ना ही स्वीकार किया गया है और नही लागू किया गया है। अशिक्षा के कारण ही स्त्रियाँ अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं कर पाती है और पुरूषों की तुलना में स्वंय को हीन समझती हैं जबकि पुरूष अशिक्षा के कारण स्त्री को समान नहीं समझते हैं। इस कारण वे स्त्री को पीटना अपना अधिकार समझने लगते हैं। अशिक्षित होने के कारण महिलाऐं सरकार द्वारा दिये गये संरक्षणों व योजनाओं का लाभ लेने व हिंसा का विरोध करने में सक्षम नहीं हो पाती हैं और अपने प्रति हिंसा और दुर्व्यवहार को सहन करती रहती हैं।

स्त्री शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता व चेतना का विकास होता है, इस कारण ससुराल या परिवार में वह समानता की मांग करती है। सामाजिक आर्थिक पारिवारिक निर्णय में अपनी सहभागिता चाहती है तो पति व ससुराल वाले उसको नकारते हैं पुरूष वर्चस्वता वाले भारतीय समाज को पुरूष अपनी पत्नी को समकक्ष मानने से झिझकता है, जिसके कारण पारिवारिक कलह होती है।

निष्कर्ष:

1. महिला साक्षरता व शिक्षा में वृद्धि कर घरेलू हिंसा को रोका जा सकता है।
2. महिलाऐं शिक्षित होंगी तो हिंसा सहन भी नहीं करेगी और हिंसा होने पर न्यायालय की शरण भी लेंगी।
3. स्त्री शिक्षा में वृद्धि के साथ ही पुरूषों को भी समतावादी शिक्षा प्रदान की जाएगी तो स्त्रियों के प्रति उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन होगा। जिससे घरेलू हिंसा पर रोक लगेगी।
4. प्रधानमन्त्री जी के 'बेटी बचाओं- बेटी पढ़ाओं' अभियान उपर्युक्त सब विश्लेषण का सार है। यह अभियान घरेलू हिंसा की समस्या से निपटने में कारगर सिद्ध होगा।

घरेलु हिंसा व उत्पीड़न को समाप्त करने में शिक्षा की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। घरेलू हिंसा और शिक्षा के स्तर के सम्बन्ध को नेशनल फेमिली एण्ड हेल्थ सर्वे के एक सर्वे के अनुसार समझने का प्रयास करते हैं। सर्वे के अनुसार कभी स्कूल न जाने वाली 40 प्रतिशत महिलाओं को शारीरिक हिंसा का सामना करना पड़ता है जिन महिलाओं ने स्कूली पढ़ाई की होती है उनके हिंसा व उत्पीड़न के मामले 18 प्रतिशत ही देखे गए हैं। सर्वे के तथ्य बताते हैं कि शिक्षा का प्रभाव महिलाओं के साथ हिंसा पर भी दिखता है, सर्वे के अनुसार महिलाओं के खिलाफ शारीरिक हिंसा के 80 प्रतिशत से अधिक मामलों में आरोपी पति होता है यहाँ भी शिक्षा की भूमिका अहम् है जिन पतियों ने स्कूली शिक्षा के 12 या अधिक वर्ष पूरे किए हैं, उनमें शादी के बाद शारीरिक, यौन या भावनात्मक हिंसा करने की सम्भावना उन लोगों के मुकाबले आधी 21प्रतिशत होती है जो कभी स्कूल नहीं गए। महिलाओं में ही नहीं पुरूषों में भी जैसे-जैसे शिक्षा और सम्पति के स्तर में बढ़ोतरी होगी। उनके साथ होने वाली हिंसक घटनाऐं भी कम होंगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. आहुजा, राम 2001, सामाजिक समस्याऐं, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
2. बाबेल, बसंतीलाल (2022), अशोका लॉ हाउज्स, नई दिल्ली।
3. https://ncbi.nilm.nih.gov.in
4. https://hi.m.wikipedia.org
5. घरेलु हिंसा से संरक्षण अधिनियम 2005 और घरेलू हिंसा से संरक्षण नियम-2006 कानून प्रकाशक, जोधपुर।
6. https://www.dnaindia.com

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मेवाड़ की लोक-संस्कृति और सांस्कृतिक पहचान: संरक्षण की आवश्यकता और चुनौतियाँ

डिम्पल चावला* डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत**

* शोधार्थी (इतिहास) मेवाड़ विश्वविद्यालय, गंगरार, चित्तौड़गढ़ (राज.) भारत
** सह आचार्य (इतिहास) मेवाड़ विश्वविद्यालय, गंगरार, चित्तौड़गढ़ (राज.) भारत

शोध सारांश – मेवाड़ की लोक संस्कृति और सांस्कृतिक पहचान की झलक यहाँ के स्थापत्य, साहित्य, लोक गीत, लोक नृत्य, और यहाँ की ऐतिहासिक धरोहर में झलकती है। यहाँ की सांस्कृतिक विरासत मेवाड़ की कलात्मक सृजनता के साथ-साथ सामाजिक एकता और मूल्यों का भी प्रतिनिधित्व करती है। पीढ़ी दर पीढ़ी जनसामान्य के जीवन में रच बसकर यह परंपरा निरंतर आगे बढ़ती रही है। परंतु वर्तमान में वैश्वीकरण, तीव्र शहरीकरण और नई पीढ़ी में परंपराओं के प्रति घटते लगाव के कारण इसके संरक्षण में चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। वर्तमान में इसके संरक्षण के लिए ठोस कदम नहीं उठाए गए तो यह अमूल्य धरोहर विलुप्त होने के ख़तरे में है।

शब्द कुंजी – मेवाड़, लोक-संस्कृति, सांस्कृतिक पहचान, संरक्षण, परंपरा, लोकगीत, लोकनृत्य, गवरी, स्थापत्य कला, चित्रकला, लोककथाएँ, सांस्कृतिक विरासत, पर्यटन, शहरीकरण, वैश्वीकरण।

प्रस्तावना – मेवाड़ भारत में अपनी ऐतिहासिक निरंतरता, संस्कृति और अपनी विविधता के लिए विशेष स्थान रखता है। भारत की सांस्कृतिक विरासत में मेवाड़ का अतुलनीय योगदान रहा है। मेवाड़ केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं हैं जिसका अपना राजनीतिक इतिहास है बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक चेतना है। मेवाड़ की लोक संस्कृति, प्रदेश के जनसमूह का सामाजिक और कलात्मक विकास है। मेवाड़ राजस्थान के दक्षिणी पश्चिमी भाग में अवस्थित है जो अपनी परंपराओं और लोक स्मृतियों का जीवंत संगम है। मेवाड़ ने युद्धभूमि में पराक्रम भी दिखाया है और साथ ही साथ लोकगीत, नृत्य, उत्सव, परम्परा व संस्कृति के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक समृद्धि का भी संरक्षण किया है। यहां के लोक जीवन में पहाड़ों की कठोरता और लोकमानस की कोमलता साथ-साथ चलती है।

मेवाड़ का ऐतिहासिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य – मेवाड़ की सांस्कृतिक पहचान के मूल में ऐतिहासिक कारक विद्यमान है क्योंकि यहां की सांस्कृतिक परम्परा की पृष्ठभूमि इसी ने तैयार की है। मेवाड़ में अनेक शासक रहे है जिन्होंने विदेशी आक्रांताओं से अपनी स्वाधीनता की रक्षा की है, साथ ही साथ मेवाड़ की परम्परा का संरक्षण और पोषण भी किया है। मेवाड़ की इस पावन भूमि के रजकणों में कुछ ऐसे स्वाभाविक आधार भूत तथ्य विद्यमान है जिसके कारण यह भूमि दीर्घकाल तक अपनी स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण बनाये रखने में सफल रही। मेवाड़ की कला, धर्म और लोक परम्परा को प्रोत्साहन दिया। मेवाड़ी चित्रकला का पहला उदाहरण महाराणा तेजसिंह के समय का चित्रित ग्रंथ 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि' था। महाराणा कुंभा को जिन्हें राजस्थानी स्थापत्य का जनक कहा जाता है, उनके काल में 'कुम्भलगढ़ किला' और 'विजय स्तम्भ' जैसी इमारतें बनी। वे स्वयं एक महान संगीतकार और विद्वान भी थे। महाराणा प्रताप ने कठिन परिस्थितियों में भी 'मेवाड़ लघुचित्र शैली' के कलाकारों को संरक्षण दिया, जिससे आगे चलकर नाथद्वारा की 'पिचवाई चित्रकला' विकसित हुई।

लोक परम्परा एवं सामाजिक संरचना – मेवाड़ की संस्कृति की पहचान यहां की परम्परा और सामाजिक संरचना में भी निहित है। यहां के सामाजिक जीवन में परंपराएं सामुदायिक एकता, नैतिक मूल्यों और सामूहिक पहचान का अभिन्न हिस्सा बनी हुई हैं। मेवाड़ की लोक परंपराओं में महिलाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही है। प्रत्येक रस्म, रिवाज, परम्परा, सामाजिक आयोजन आदि में महिलाओं की भूमिका अग्रणी रही है। रानी पद्मिनी अपनी अद्वितीय सौंदर्य और साहस के साथ-साथ राजपूत शौर्य और मर्यादा की प्रतीक बनीं। चित्तौड़ के जौहर प्रसंग ने लोकगीतों, चित्रकला और नाट्य में प्रेरणा का स्रोत प्रदान किया। संत कवयित्री मीरा बाई ने भक्ति आंदोलन को अपनी सुगम और मधुर रचनाओं से जीवंत कर दिया। उनके भजनों ने मेवाड़ की संगीत और लोकगायन परंपरा को नया आयाम दिया और आज भी नाथद्वारा, चित्तौड़ व उदयपुर की भक्ति-चित्रकला में मीरा के प्रसंग अंकित मिलते हैं। महलों और मंदिरों की भित्ति चित्रों में रानियों के धार्मिक अनुष्ठान, लोकत्योहार और नृत्य-गीतों के दृश्य दर्शाए गए हैं, जो महिलाओं की सक्रिय सांस्कृतिक भागीदारी को प्रमाणित करते हैं। यहां की चित्रकला में महाकाव्यों जैसे महाभारत और रामायण का चित्रण किया गया है। श्रीनाथ जी की लीलाओं का चित्रण मेवाड़ चित्रकला में महत्वपूर्ण स्थान रहा है इसके अलावा राजदरबार के विभिन्न दृश्यों का भी चित्रण हुआ है। नाथद्वारा में पिछवाई कला बहुत प्रसिद्ध हैं इसमें श्रीनाथ जी के जीवन प्रसंगों को दर्शाया जाता है। लोक संगीत के क्षेत्र में भी मेवाड़ बहुत समृद्ध है। लोक संगीत ने अनेक ऐतिहासिक और पौराणिक कथाओं को जीवित रखा है। इनमें मांड, पिंगल, आणि और ढोला मारु जैसी कहानियां हैं जो आज भी लोक संगीत के माध्यम से जीवित है। लोक संगीत में अनेक लोक वाद्यों का इस्तेमाल किया गया है जैसे रावणहत्था, मोरचंग, इकतारा और भपंग आदि।

मेवाड़ का पारम्परिक नृत्य-नाट्य और संगीत – गवरी केवल नृत्य ही नहीं बल्कि संवाद और अभिनय से युक्त एक लोक-नाट्य शैली है, जिसे 'राई' भी कहा जाता है, जिसमें हास्य, व्यंग्य और धार्मिक संदेश का मिश्रण होता है। यह नृत्य-नाट्य, मुख्यत: भील समुदाय द्वारा सावन-भादों में प्रस्तुत किया जाने वाला, शिव-पार्वती की कथा, लोककथाओं, वीरगाथाओं और पौराणिक प्रसंगों पर आधारित होता है तथा इसमें अभिनय, संवाद और नृत्य का अद्भुत संगम दिखाई देता है। यह एक शुद्ध धार्मिक नृत्य है।

गैर मेवाड़ क्षेत्र का प्रसिद्ध नृत्य है। यह होली के अवसर पर किया जाता है जिसमें केवल पुरुष ही भाग लेते हैं। सभी व्यक्ति नृत्यकार वर्तुलाकार खड़े हो जाते हैं। पुरुष लकड़ी की छड़ियाँ लेकर गोल घेरे में नृत्य करते हैं। गैर नृत्य करने वाले पुरुष 'गैरिये' कहलाते है। गैर नृत्य में ढोल बांकिया और थाली वाद्ययन्त्रों का प्रयोग होता है। इनमें वादक वृत्त के मध्य में रहता है। । यह मुख्यत: भील जाति की संस्कृति को प्रदर्शित करता है। आजादी से पूर्व शासक अपने महलों में गैर नृत्य का आयोजन करवाते थे एवं नृत्य करने वालों को पुरस्कार देते थे।

तेरहताली नृत्य में मंजीरा, तानपुरा व चौतारा वाद्ययन्त्रों का प्रयोग किया जाता है। नर्तकियाँ ध्वनि की लय को सुनने के पश्चात् बैठकर नृत्य करती हैं। इसमें तेरह मंजीरों की आवश्यकता होती है, जिसमें से नौ मंजीरे दायें पाँव पर, दो हाथों की कोहनी के ऊपर और एक-एक दोनों हाथों में होते हैं। हाथ वाले मंजीरे के टकराने से ध्वनि उत्पन्न होती है। यह मुख्य रूप से रामदेव जी के मेले में देखने को मिलता है। कामड़ जाति तेरहताली नृत्य के साथ रामदेवजी का यशोगान करती है।

घूमर नृत्य, नृत्यों का सिरमौर घूमर राज्य नृत्य के रूप में प्रसिद्ध है। स्त्री-पुरुष घेरा बनाकर नृत्य करते हैं, जिससे जातिगत विविधता प्रदर्शित होती है। लहंगे के घेरे को 'घूम्म' कहते हैं। इसमें ढोल, नगाड़ा, शहनाई आदि वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाता है। इस नृत्य में बार-बार घूमने के साथ हाथों का लचकदार संचालन प्रभावकारी होता है। इसका प्रचलन राजपूत समाज में अधिक है।

गरबा बाँसवाड़ा और डूंगरपुर क्षेत्र का प्रसिद्ध नृत्य है। इसमें गीतों की लय भक्तिपूर्ण होती है। यह नवरात्रों में विशेष रूप से किया जाता है, इसमें समाज बिना भेदभाव के नृत्य का आनन्द लेता है। यह तीन स्वरूप में विभक्त होता है- प्रथम में शक्ति की आराधना एवं पूजा, दूसरे में कृष्ण-राधा के प्रणय चित्रण को नृत्य के रूप में प्रस्तुत करना, तीसरे में लोक जीवन का सौन्दर्य प्रस्तुत किया जाता है।

तुर्रा कलंगी ऐसा लोक नाट्य है, जिसमें दर्शकों के भाग लेने की अधिक सम्भावना होती है। मेवाड़ के शाह अली तथा तुकनगीर नामक संत पीरों ने तुर्रा कलंगी ख्याल की रचना की। इसमें 'तुरा' को 'शिव' तथा 'कलंगी' को पार्वती का प्रतीक माना जाता है। इस ख्याल को प्रस्तुत करने के लिए दो मंच आमने-सामने निर्मित होते हैं। जिन पर दो खिलाड़ी आपसी संवादों को मंच पर बोलते हैं। इसमें चंग नामक वाद्य का प्रयोग किया जाता है।

स्वांग लोक नाट्यों में सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इसका शाब्दिक अर्थ है किसी विशेष ऐतिहासिक, पौराणिक, लोक प्रसिद्ध या समाज में मान्य चरित्र तथा देवी-देवताओं की हूबहू वेश-भूषा धारण करते हुए उन के चरित्र की नकल करना। इसके कलाकार को बहरूपिया कहा जाता है। इसके प्रसिद्ध कलाकार जानकी लाल भांड हैं, जिसने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की है ।

संस्कार सम्बन्धी गीत – मेवाड़ की लोक संस्कृति में जन्म से लेकर मृत्यु पर्यत संस्कारों के तेज से प्रदीप है जिनमें गर्भाधान-सस्कार, अन्न प्राशन, चुड़ाकर्म, उपनयन, विवाह संस्कार आदि प्रमुख हैं। वर निकासी के समय घुड़-चढ़ी की रस्म होती है। इस अवसर पर श्घोड़ीश गाई जाती है जो इस प्रकार है-

'घोड़ी म्हारी चन्द्रमुखी, इन्द्रलोक सुँ आई ओ राज।'

विवाह से पूर्व दूल्हा-दुल्हन की प्रेमाकांक्षा की व्यंजना बना-बनी के गीतों में मिलती हैं, जैसे-

'बनड़ो उमायों ए बनी ये थारै कारणै जोड़ी को उमायो ए बड़गौतन थारै रूप नैं।'

वधू के घर की स्त्रियों द्वारा वर की बारात का डेरा देखने जाने का प्रसंग राजस्थान के जला गीतों में मिलता है, जैसे-

'म्हे तो थारा डेरा निरखण आई ओ म्हारी जोड़ी रा जला।'

परिवार में बालक के जन्म के अवसर पर गाये जाने वाले गीत जच्चा कहे जाते हैं। इनमें प्राय: गर्भिणी की प्रशंसा, वंशवृद्धि का उल्लास और शिशु के लिए मंगलकामना की जाती है। एक उदाहरण देखिये-

'होलर जाया ने हुई है बधाई थे म्हारा वंश बदायो रे अलबेली जच्चा।'

त्यौहार पर्व सम्बन्धी गीत- गणगौर का पर्व होलिका दहन के पश्चात् चौत्र मास में सोलह दिन तक कुंवारी कन्याओं व सधवा स्त्रियों द्वारा अनुष्ठानपूर्वक आयोजित किया जाता है। गणगौर का सबसे प्रसिद्ध गीत इस प्रकार है-

'खेलण दो गणगौर भँवर म्हानें खेलण दो गणगौर म्हारी सखियाँ जोवे बाट हो भँवर म्हानें खेलण दो गणगौर।'

गणगौर व तीज के समय का घूमर नृत्य-गीत तो सम्पूर्ण भारत में राजस्थान की पहचान बन गया है। रंग-बिरंगे लहरियों से सुसज्जित स्त्रियों का 'घूमर नृत्य' अनोखा समाँ बाँध देता है, गीत इस प्रकार है-

'म्हारी घूमर छे नखराली ए मा गोरी घूमर रमवा म्हे जास्याँ।'

श्रावणी तीज पर भी गणगौर की भाँति ही तीज माता की सवारी निकाली जाती है और श्रावण मास की प्रकृति का सौन्दर्य-चित्रण करने वाले 'तीज' गीतों का गान किया जाता है, उदाहरणार्थ-

'आई आई सावणिया री तीज गौरी ओ
रमवा नीस जी म्हारा राज।'

ऋतु सम्बन्धी गीत – राजस्थान में ऋतु-गीतों का प्रचलन भी बहुत है। शुष्क मरुधरा पर बसन्त और वर्षा ऋतु सर्वाधिक सुहावनी लगती हैं अत: इनमें हींदा (झूला या हिंडोल), सावण, वर्षा, तीज, गणगौर आदि गीतों द्वारा प्राकृतिक परिवेश का आनन्द लिया जाता है। सावण के अनेक गीत हैं जिनमें से कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं-

'सावण आयो ए म्हारा सोजतिया सरदार, भँवर म्हानै पीवर मेलो ए।'

देवी-देवताओं के गीत – राजस्थान में धार्मिक आस्था भी अत्यधिक है इसलिए सगुण व निर्गुण लोक-भजन व कीर्तन पर्याप्त संख्या में मिलते हैं। विनायक समस्त देवी-देवताओं में अग्रगण्य हैं, इसलिए कोई भी मांगलिक कार्य आरम्भ करते हुए प्रथम उन्हें स्थापित करके उनसे ऋद्धि-सिद्धि की याचना की जाती है। जैसे

'चालो हो गजानन जोशीड़ा रे चाला लगन्या लिखाइ बेगा आवाँ हो गजानन।'

लोक-देवियों में सती माता, सीतला माता, दियाड़ी की आदि माता पूजा अत्यन्त श्रद्धा से की जाती है और इनके भजन बहुत प्रचलित हैं। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

'सती के दरबार में फूल रह्या म्हारी माय।
यो कुण तोड़े फूल या कुण हार गूँथे म्हारी माय।'

लोक देवताओं में तेजाजी, देव जी, पाबू जी, गोगा जी, जुझार जी आदि ऐसे ऐतिहासिक वीर पुरुष माने जाते हैं जिन्होंने परमार्थ के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया। अत: उनका गुणानुवाद करते हुए अनेक भजन अतीव तन्मयता से गाये जाते हैं। रामदेव जी का यह गीत

'खम्मा खम्मा हो अजमाल जी रा कँवरा। थां ने तो ध्यावे आखो
मारवाड़ हो आखो। गुजरात हो, अजमाल जी रा कँवरा।'

मेवाड़ के मेले और पर्व- केसरियानाथजी का मेला उदयपुर जिले के धुलेव गाँव में जैन तीर्थकर ऋषभदेव का भव्य मन्दिर है, जहाँ चौत्र कृष्णा अष्टमी को विशाल मेला लगता है तथा प्रतिवर्ष आश्विन कृष्णा प्रथमा और द्वितीया को भव्य रथयात्रा निकलती है। यहाँ प्रथम जैन तीर्थकर ऋषभदेव के मन्दिर में श्वेताम्बर और दिगम्बर जैन ही नहीं, वैष्णव, शैव, भील एवं मुस्लिम सभी समुदाय की सहभागिता का प्रतीक है। ऋषभदेव की पूजा में केसर का विशेष प्रयोग होने के कारण इन्हें 'केसरियानाथ' कहा जाता है। ऋषभदेव की मूर्ति काले संगमरमर की होने के कारण भील उन्हें 'कालाजी' भी कहते हैं।

जौहर मेला मेवाड़ की वीरता और त्याग का प्रतीक है। यह आयोजन प्रतिवर्ष फाल्गुन मास में चित्तौड़गढ़ के ऐतिहासिक किले में संपन्न होता है। इस मेले का मुख्य उद्देश्य रानी पद्मिनी सहित उन समस्त वीरांगनाओं की स्मृति को सम्मानित करना है, जिन्होंने अपने सम्मान की रक्षा हेतु जौहर की परम्परागत प्रथा का निर्वहन किया। मेले में शौर्य यात्रा, लोकनृत्य, भजन, कवि सम्मेलन एवं ऐतिहासिक झांकियाँ प्रस्तुत की जाती हैं, जो मेवाड़ के सांस्कृतिक गौरव का जीवंत प्रदर्शन करती हैं।

नाथद्वारा का अन्नकूट मेला राजसमन्द जिले में स्थित नाथद्वारा वैष्णवों के वल्लभ सम्प्रदाय का प्रमुख धार्मिक स्थल है। यहाँ दीपावली के दूसरे दिन अन्नकूट का उत्सव मनाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि ब्रह्माण्ड के देवताओं की भूख को संतुष्ट करने के लिए यह त्योहार मनाया जाता है। उबले हुए चावलों का एक ढेर मंदिर प्रांगण में लगा दिया जाता है। भील इसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करने के लिए नाचते गाते आते हैं। इन चावलों को बहुत पवित्र माना जाता है और ऐसी मान्यता है कि इनसे बहुत सी बीमारियाँ दूर होती हैं।

पर्वों की दृष्टि से मेवाड़ के त्योहार जैसे होली, दीपावली, गणगौर, तीज, मकर संक्रांति स्थानीय लोक परम्परा और रीति रिवाजों के अद्भुत संगम का उदाहरण हैं।

गणगौर चौत्र कृष्णा एकम से चौत्र शुक्ला तृतीया तक चलता है। कुवारियाँ श्रेष्ठ पति के लिए और सुहागिनें पति की दीर्घायु के लिए गणगौर का व्रत करती हैं। वे पूरे अठारह दिन तक गौरी पूजन करती हैं। गणगौर शब्द में 'गण' शिव का और 'गौर' गौरी या पार्वती का प्रतीक है। सोलह दिन तक कुमकुम और मेहंदी से दीवार पर एक-एक स्वास्तिक और सोलह-सोलह बिन्दियाँ लगाकर गणगौर की पूजा करती हैं। सोलह दिन बाद गणगौर के दिन सायंकाल ये महिलाएँ गीत गाती हुई 'ईसर और गौर' को किसी नदी या सरोवर में विसर्जित कर आती हैं। गणगौर चौत्र कृष्णा एकम से चौत्र शुक्ला तृतीया तक चलता है। मेवाड़ में यह त्योहार उदयपुर, नाथद्वारा तथा गोगुन्दा में विशेष रंगोल्लास के साथ मनाया जाता है

अक्षय तृतीया वैशाख मास की शक्ल पक्ष की तृतीया को यह त्योहार मनाया जाता है। कई जगह लोग खेतों में हल चलाकर अच्छी वर्षा एवं खेती की कामना करते हैं। घरों के द्वार पर अनाज को बालियों के चित्र बनाये जाते हैं तथा स्त्रियाँ मंगलाचार गाती हैं। अक्षय तृतीया को लोग 'अबूझ सावे' के रूप में मानते हैं। यह दिन शुभ माना जाता है। बिना मुहूर्त निकलवाए ही ग्रामीण अंचलों में इस दिन बड़ी मात्रा में बाल विवाह होते हैं।

तीज श्रृंगार की भावनाओं का त्योहार तीज राजस्थानी स्त्रियों का सर्वप्रिय त्योहार है। श्रावण-भाद्रपद महीने की मनोरम ऋतु में यह त्योहार मनाया जाता है। इस त्योहार पर स्त्रियाँ झूला झलती हैं, गीत गाती हैं व नृत्य करती है। राजस्थान में दो तीजों के पर्व मनाये जाते हैं। छोटी तीज और बड़ी तीज। छोटी तीज श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को और बडी तीज भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की तृतीया को मनाई जाती है। ऐसी मान्यता है कि तीज के दिन शिव और पार्वती का पुनर्मिलन हुआ था। इस दिन स्त्रियाँ रंगीन लहंगे और सतरंगी, पचरंगी ओढ़ने ओढ़े, हाथों पर मेहंदी लगाए, आभूषणों से सुसज्जित होकर यह त्योहार मनाती है।

मकर संक्रांति सूर्य के मकर राशि में प्रवेश और उत्तारायण की शुरुआत का पर्व है, जो कृषि, धार्मिक आस्था और सामाजिक एकता से जुड़ा है। इस दिन प्रात: स्नान कर तिल, गुड़, जल से सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है और तिल-गुड़, गजक, मूंगफली का सेवन किया जाता है। दान की परंपरा के तहत तिल, अनाज, वस्त्र बांटे जाते हैं। पतंगबाजी, मेले और लोकनृत्य माहौल को उत्सवमय बनाते हैं।

मेवाड़ में पारंपरिक हस्तशिल्प एवं चित्रकला - थेवा कला (प्रतापगढ़) काँच पर सोने का सूक्ष्म चित्रांकन है। काँच पर सोने की अत्यन्त बारीक, कमनीय एवं कलात्मक कारीगरी को 'थेवा' कहा जाता है। इसके लिए रंगीन बेल्जियम काँच का प्रयोग किया जाता है। सर्वप्रथम सोने की बारीक चद्दर पर सूक्ष्म चित्रांकन एक नई नक्काशी के साथ किया जाता है। थेवा कला में नारी श्रृंगार के आभूषण, गले का हार, मंगलसूत्र, टीका, अंगूठी, करधनी, पायजेब सभी को कलात्मक रूप दिया जाता है। विभिन्न देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ भी थेवा कला से अलंकृत की जाती हैं। थेवा कला विश्व में केवल प्रतापगढ़ के सोनी परिवार तक ही सीमित है। यह परिवार इस कला को काफी गोपनीय रखता है। यह कला लगभग 500 वर्ष पुरानी है, जिसे राजाओं ने प्रोत्साहन दिया।

दाबू प्रिन्ट (आकोला) चित्तौड़गढ़ जिले का आकोला गाँव दाबू प्रिन्ट के लिए प्रसिद्ध है। रंगाई-छपाई में जिस स्थान पर रंग नहीं चढ़ाना हो, उसे लई या लुगदी से दबा देते हैं। यही लुगदी या लई जैसा पदार्थ श्दाबूश कहलाता है, क्योंकि यह कपड़े के उस स्थान को दबा देता है जहाँ रंग नहीं चढ़ाना होता है। आकोला में रंगाई-छपाई के लिए अनुकूल परिस्थितियों हैं। आकोला के पास बहने वाली बेडच नदी, काली मिट्टी और वनस्पतियों के प्रभाव से कपड़े का रंग गहरा और आकर्षक होता है 'आकोला प्रिंट्स' के नाम से प्रसिद्ध ये वस्त्र विदेशों तक जाते हैं।

काष्ठ कला (कावड़ व खिलौने) राजस्थान में खाती या सुथार जाति के लोग लकड़ी का घरेलु सामान रखने, मांगलिक अवसरों पर काम में आने वाली वस्तुएँ व खिलौने बनाने का कार्य करते हैं। विवाह के अवसर पर काम आने वाला मोर, चौपड़ा, बाजोट, गणगौर, हिंडोला एवं लो के नाट्यों में काम

आने वाली विभिन्न वस्तुएँ जैसे–खांडा, तलवार मुखौटे, विमान एवं कावड़ (मंदिरनुमा आकार) बनाते हैं। कावड़ एक मन्दिरनुमा काष्ठ कलाकृति होती है, जिसमें कई द्वार बने होते हैं। सभी द्वारों पर चित्र अंकित रहते हैं। कावड़ में मुख्यत: महाभारत, रामायण व कृष्ण लीला के विभिन्न चरित्रों व घटनाओं का चित्रण होता है।

पट चित्र या फड़ (शाहपुरा) शाहपुरा के छीपा जाति के जोशी इस पट चित्रण (फड) में सिद्धहस्त हैं। 'फड' कपडे पर बने हुए चित्र होते हैं। जिन के माध्यम से किसी घटना या कथा का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। फड़ की लम्बाई अधिक और चौड़ाई कम होती है। फड़ अधिकतर लोक देवताओं, पाबूजी, देवनारायणजी, रामदेवजी व कृष्ण एवं माता दुर्गा के जीवन की घटनाओं व चमत्कारों पर आधारित विषयों का चित्रण होती है। फड़ का चारण भोपे जो कि राजपूत, गुर्जर, जाट, कुम्भकार व बलाई जाति के होते हैं, लकड़ी पर लपेट कर गाँव–गाँव जाकर पारम्परिक वस्त्र एवं वाद्य यंत्र के साथ थिरकते हुए वाचन करते हैं।

राजस्थानी चित्रशैली का क्षेत्र अत्यंत समृद्ध है। उसकी समृद्धि के अनेक केंद्र है। राजस्थानी चित्रकला की जन्मभूमि मेवाड़ है, जिसने अजंता चित्रण परम्परा को आगे बढ़ाया।

मेवाड़ शैली के प्रारम्भिक नमूनों में श्रावकप्रतिक्रमणसूत्रचूर्णी, सुपार्श्वनाथचरितम् हैं। महाराणा प्रताप के समय छप्पन की पहाड़ियों में स्थित राजधानी चावण्ड में भी चित्रकला का विकास हुआ। इस काल की प्रसिद्ध कृति ढोलामा: (1592 ई.) है, जो राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में सुरक्षित है। महाराणा अमरसिंह के समय में 1605 ई. में चित्रित 'रागमाला' प्रमुख ग्रंथ है। चित्रकला की दृष्टि से महाराणा जगतसिंह प्रथम का काल स्वर्णयुग कहलाता है। इस समय साहबदीन नामक कलाकार ने महाराणाओं के व्यक्ति चित्र बनाये। सत्रहवीं शताब्दी के अन्त तक मेवाड़ शैली में बड़ा निखार आया। मेवाड़ शैली राजस्थानी चित्रकला की प्रमुख शैली रही है और इसे मूल शैली माना जाता है। इन चित्रों में भारत की पन्द्रहवीं शताब्दी तक विकसित होने वाली पश्चिमी चित्रांकन शैली के अवशेषों के दर्शन होते हैं।

नाथद्वारा शैली में श्रीनाथजी आकर्षण के प्रमुख केन्द्र हैं। मेवाड़ के अन्तर्गत नाथद्वारा पुष्टिमार्गीय सम्प्रदाय का भारत प्रसिद्ध प्रमुख पीठ स्थल है जो श्रीनाथ जी की भक्ति का प्रमुख केन्द्र होने के कारण मेवाड़ की चित्र परम्परा में नया इतिहास जोड़ता है। श्रीनाथजी के स्वरूप के पीछे बड़े आकार के कपड़े पर जो पर्दे बनाये जाते हैं, उन्हें पिछवाई कहते हैं, जो नाथद्वारा शैली की मौलिक देन है। इस शैली की पृष्ठभूमि में सघन वनस्पति दर्शायी गयी है जहाँ पर केले के वृक्ष की प्रधानता है।

देवगढ़ शैली जब महाराणा जयसिंह के राज्यकाल में रावत द्वारिका दास चूण्डावत ने देवगढ़ ठिकाना 1680 ई. में स्थापित किया, तदुपरान्त, देवगढ़ शैली का जन्म हुआ। सर्वप्रथम इस शैली को प्रकाश में लाने का श्रेय 'श्रीधर अंधारे' को जाता है। इस शैली में शिकार, हाथियों की लड़ाई, राजदरबार का दृश्य, कृष्ण–लीला आदि के चित्र विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इस शैली के भित्ति चित्र 'अजारा की ओबरी', 'मोती महल' आदि में देखने को मिलते हैं।

संरक्षण की आवश्यकता और संभावनाएँ – शैक्षिक स्थलों जैसे विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में स्थानीय संस्कृति, परम्परा, इतिहास और बोली को शैक्षिक पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना जाना चाहिए। बच्चों को बचपन से अपनी विरासत के बारे में परिचय कराया जाना चाहिए जिससे उनका संस्कृति से जुड़ाव होगा। आज के समय मे बहुत–सी मौखिक रूप से प्रचलित परंपराएँ लोकगीत, किस्से, रीति–रिवाज अब गौण होती जा रही है या होने की कगार पर हैं। इन परंपराओं को डिजिटल माध्यमों में संरक्षित किया जा सकता है जिससे भविष्य में जरूरी होने पर इससे शोधार्थियों को सामग्री मिलेगी और इसके साथ ही युवा पीढ़ी भी तकनीकी माध्यमों के द्वारा इनका उपयोग कर सकेगी। आर्थिक गतिविधियों को संस्कृतिक पहलू से जोड़ कर उसे जीवंत बनाए रखना सुनिश्चित किया जा सकता है। चित्तौड़गढ़ में शुरू हुई 'लोक कला मोबाइल एप्प' ने कई ग्रामीण कलाकारों को सीधे ग्राहकों से जोड़ा है। हस्तशिल्प, लोक–कलाएं, लोक–संगीत आदि को स्थानीय उद्यमिता से जोड़ने से शिल्पकारों को सम्मान, पहचान और आजीविका तीनों मिलती हैं। संस्कृति संरक्षण को सरकारी जिम्मेदारी नही मानकर सामुहिक उत्तरदायित्व के रूप में लेना चाहिए। सरकार, शैक्षिक संस्थाएँ, निजी क्षेत्र और स्वयंसेवी संगठन सभी को मिलकर प्रयास करना चाहिए जिससे कि संस्कृति अतीत न रह जाए अपितु वर्तमान में भी फले–फूले।

निष्कर्ष – मेवाड़ की संस्कृति सिर्फ भौगोलिक क्षेत्रीय विशेषता ना होकर भारतीय बहुलता, सह–अस्तित्व और लोक–जीवन के निरंतर विद्यमान उदाहरणों में से एक है। यहाँ की बोलियाँ, पहनावा, नृत्य, संगीत, शिल्प, त्यौहार और मानवीय व्यवहार सिर्फ मनोरंजन का एक आयाम ना होकर एक जीवनशैली हैं। आधुनिक तकनीक व जीवनशैली ने सांस्कृतिक विविधता के सोपानों को प्रभावित किया है जिससे यह भय वास्तविक प्रतीत होता है कि शीघ्र ही इनके संरक्षण के प्रयास की आवश्यकता है, नहीं तो मेवाड़ की संस्कृति को जानने के लिए भविष्य की पीढ़ी को पुस्तकों या अभिलेखों का ही सहारा लेना पड़ेगा। परंतु आज के उपलब्ध संसाधनों व तकनीक के आधुनिकीकरण से यह सत्य जान पड़ता है कि संरक्षण के अवसर आज पहले से अधिक हैं, सामुहिक प्रयासों के गठजोड़ के द्वारा यह संस्कृति न केवल बचेगी बल्कि पुन: अपनी ऐतिहासिक प्रतिष्ठा को प्राप्त करके जीवंत हो उठेगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :–

1. पुरबिया ममता, मेवाड़ की लोक संस्कृति, पृ.11, रैना बुक सेंटर, 2021
2. वही, पृ.14
3. ठक्कर, महेश, मेवाड़ का इतिहास और संस्कृति, विनायक पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2018, पृ. 56
4. त्रिवेदी, के.सी, नाथद्वारा की पिचवाई चित्रकला, भारतीय कला परिषद, नई दिल्ली, 2004, पृ. 15–18
5. चौधरी, बी.एल, रानी पद्मिनी: इतिहास और किंवदंती, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2008, पृ. 56
6. गुप्ता, मधु, मीरा बाई और भक्ति साहित्य, साहित्य भवन, आगरा, 2010, पृ. 41–45
7. पालीवाल, मदनमोहन, 'मेवाड़ चित्रकला में महाकाव्य चित्रण', भारतीय कला समीक्षा, खंड 20, अंक 3, 2015, पृ. 66–68
8. राणावत, डॉ. मनोहर सिंह, मेवाड़ का सामाजिक एवं साँस्कृतिक इतिहास, पृ. 98, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, 2006
9. वही, 96
10. ठक्कर, महेश, मेवाड़ का इतिहास और संस्कृति, विनायक पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2018, पृ. 94।
11. शर्मा, हरिनारायण, राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, राजस्थान

साहित्य अकादमी, उदयपुर, 2012, पृ. 128।
12. पारीक, गिरिराज, राजस्थान: भूगोल और संस्कृति, विद्यार्थी प्रकाशन, अजमेर, 2015, पृ. 263।
13. पुरबिया ममता, मेवाड़ की लोक संस्कृति, पृ.23
14. जैन, सुरेश, राजस्थान के लोकगीत और लोकसंगीत, साहित्य मंडल, अजमेर, 2011, पृ. 97।
15. शर्मा, कृष्णचन्द्र, राजस्थान के लोकपर्व और मेलों की परंपरा, राजस्थानी साहित्य अकादमी, जोधपुर, 2008, पृ. 57
16. पुरबिया ममता, मेवाड़ की लोक संस्कृति, पृ.39
17. ओझा प्रियदर्शनी, पर्यटन और संस्कृतिक विरासत, पृ, 71
18. पुरबिया ममता, मेवाड़ की लोक संस्कृति, पृ.184
19. शर्मा, के. एल., भारतीय लोक पर्व और संस्कृति, जयपुर: लोकभारती प्रकाशन, 2019
20. गुप्ता मोहनलाल, उदयपुर संभाग का जिलेवार साँस्कृतिक एवं एतिहासिक अध्ययन, पृ. 289
21. वही, पृ 164
22. जोशी, लाल, फड़: एक जीवंत परंपरा, भीलवाड़ा: लोक कला प्रकाशन, 2020
23. भारतीय राष्ट्रीय संग्रहालय, 'मेवाड़ चित्रशैली के प्रारम्भिक ग्रंथ', नई दिल्ली, 2020
24. मिश्रा, वीरेन्द्र, रागमाला और राजस्थानी चित्रकला, वाराणसी: भारतीय कला प्रकाशन, 2015
25. जोशी, हरीश, नाथद्वारा की पिछवाई कला, उदयपुर: लोककला मंडल, 2019
26. सांस्कृतिक मंत्रालय, भारत सरकार: 'डिजिटल लोक-संस्कृति योजना', रिपोर्ट 2022

****

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में चित्रित मानवीय संबंधों का विश्लेषण

डॉ. झेलम चंद्रकांत झेंडे*

* सहयोगी प्राध्यापिका, वीर वाजेकर ए.एस.सी. कॉलेज, फुंडे ता.उरण जि.रायगड (महा.) भारत

शोध सारांश – ईश्वर द्वारा सृष्टि की रचना हुई है जिसके अंतर्गत मानव को सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है। मानव अपनी बुद्धि, विवेक और चेतना के कारण ही अन्य प्राणियों से भिन्न है लेकिन उसकी इन मानसिक शक्तियों का विकास जन्म से नहीं होता है। जन्म के बाद वह परिवार एवं समाज के सदस्य के रूप में धीरे-धीरे ग्रहण करता है। मनुष्य के विकास में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। पहले पहल मानव परिवार में विकसित होता है आगे चलकर वह सामाजिक बंधनों का विकास पाता है। समाज के लिए कहा जा सकता है कि समाज ऐसे व्यक्तियों का समूह है जिन्होंने अपने व्यक्तिगत स्वार्थों की सार्वजनिक रक्षा के लिए विषम आचरणों में साम्य उत्पन्न करने वाले सामान्य नियमों से शासित होने का समझौता कर लिया है। समाज सामाजिक संबंधों से घिरा हुआ है। समाज मानवीय संबंधों की व्यवस्था है। यह संबंध सदैव सहयोगी नहीं बल्कि असहयोगी और संघर्षपूर्ण भी हो सकता है।

परिवार कई संबंधों के समूह के साथ बनता है जैसे पति और पत्नी का संबंध, माता-पिता और बच्चे का, दादा-दादी के साथ पौत्र-पौत्री संबंध, नाना-नानी के साथ नाती-नातिन का संबंध। परिवार भी दो भागों में विभाजित किया जाता है। संयुक्त परिवार एवं एकल परिवार। वर्तमान में आधुनिकता ने हमारे समाज, मूल्यों, सोच तथा मानवीय संबंधों को एक नई दिशा वी है। मोहभंग, अलगाव, अजनबीपन, एकाकीपन आदि शब्द भी आधुनिक युग की देन है। आज मानवीय संबंधों में गहराई और ऊष्मा कम होती जा रही है। समकालीन युग भावहीनता, संस्कारहीनता, मूल्यहीनता, तात्कालिकता, यांत्रिकता और विसंगतियों की पराकाष्ठा का युग है। इस युग के मूल्य-विघटन और चेतना अवमूल्यन से मानव का मानसिक तथा भावात्मक पतन हुआ है। उसके आत्मीय रागात्मक संवेदनाओं के तार ही टूट चुके है। उसके अचेतन में धंसी यांत्रिकता ने उसे यंत्रवत बना दिया है। पति-पत्नी, माता-पुत्र, पिता-पुत्र, व्यक्ति समाज के संवेदनाजन्य संबंधों की अंत्येष्टि हुई है। डॉ. विमलेश शर्मा लिखते हैं- औद्यो गिक सभ्यता तथा शहरीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति से बड़े-बड़े नगरों में आत्मीय मानवीय संबंधी में हास हुआ है। व्यक्तित्ववादी प्रवृत्ति बढ़ने से मध्यम वर्ग में अकेलेपन की समस्या और अधिक बढ़ी है। इस प्रकार पाश्चात्य, औद्योगिक वेर्शी की समस्या भारत के नगरों में भी व्याप्त होती जा रही है। स्वछंद होने के कारण परिवार की आर्थिक समस्याओं के बीच व्यक्ति अकेला पड़ता जा रहा है।

शब्द कुंजी – प्रेमी-प्रेमिका, उपन्यास,विधवा, युवा, माता-पिता, समाज।

प्रस्तावना – उपन्यास हिंदी गद्य साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है। आधुनिक हिंदी उपन्यास का प्रारंभ भारतेंदु हरिश्चंद्र के समय से ही माना जाता है। समकालीन युग में अनेक महिला उपन्यासकार सक्रिय है जो पाठकों को नवीन चेतना के साथ जोड़ने का कार्य बखूबी कर रही हैं। प्रमुख महिला उपन्यासकारों में कृष्णा सोबती, मृणाल पांडे, अलका सरावगी, सुनीता अग्रवाल, सुधा मूर्ति, शशिप्रभा शास्त्री, चित्रा मुद्गल, मधु कांकरिया, कुसुम अंसत एवं मनीषा कुलश्रेष्ठ इत्यादि का नाम उल्लेखनीय रूप से लिया जा सकता है। इन महिला हिंदी उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों मंम बदलते हुए मानवीय संबंधों का भली-भाँति चित्रण किया है।

कृष्णा सोबती ने सामाजिक यथार्थ को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। समय सरगमउपन्यास में लेखिका ने बुजुर्ग, विधुर, विधवा आदि लोगों के मानसिक संघर्ष का चित्रण किया है। वृद्धावस्था के अकेलेपन तथा घुटन की स्थिति तथा अन्य लोगों द्वारा उनके साथ किए दुर्व्यवहार इत्यादि समस्याओं को उपन्यास में प्रस्तुत कर मानवीय संबंधों को बखूबी से प्रस्तुत किया है। मृणाल पाडे द्वारा रचित उपन्यास रास्तों पर मटकते हुएमें नायिका मंजरी के जीवन संघर्ष का चित्रण मिलता है। मंजरी को सारे मानवीय संबंध छूकर निकल गए परंतु कोई भी संबंध उसके साथ चिरस्थायी नहीं रहा। चित्रा मुद्गल द्वारा रचित उपन्यास 'गिलिगडु' संवेदनशील उपन्यास है। यह उपन्यास आज की नौजवान पीढ़ी के बदलते हुए जीवन मूल्यों पर आधारित है। वह अपने बुजुर्ग माता-पिता को सम्मान देने की बजाय उन्हें अकेला छोड़ देते हैं। पीढ़ियों का अंतराल, स्वतंत्र जीवन जीने की ललक एवं आधुनिक जीवन मूल्यों को चित्रा जी ने इस उपन्यास में गहराई के साथ प्रस्तुत किया है। शशिप्रभा शास्त्री द्वारा रचित उपन्यास हर दिन इतिहास में लेखिका ने एक ऐसी युवती के चरित्र का उद्घाटन किया है जो जिम्मेवारियों के बोझ के कारण अपने सपनों और अरमानों का गला घोट देती है लेकिन समय आने पर उसका कोई साथ नहीं देता है। सभी ने उसके माध्यम से अपना स्वार्थ साधा और चलते बने। उषा यादव दवारा रचित कथांतर उपन्यास में मानवीय संबंधों में आ रही गिरावट का चित्रण मिलता है। उषा प्रियवंदा ने अपने

उपन्यास भया कबीर उदास में वर्तमान युग में युवाओं की बदलती हुई जीवन शैली के कारण उनके मानवीय संबंधों के प्रति बदल रहे दृष्टिकोण को चित्रित किया है। महाश्वेता देवी के उपन्यास 'गोह' में वर्तमान युग में माता-पिता द्वारा अपनी संतान की भावनाओं को न समझ पाना और उन्हें समय न दे पाना उनमें कई मानसिक समस्याएं उत्पन्न कर देता है।

महिला हिंदी उपन्यासकारों में मानवीय संबंधों के नियामक तत्व को विभिन्न दृष्टिकोणों के साथ प्रस्तुत किया है जो इस प्रकार है। वर्तमान समय में रक्त संबंध शिथिल पड़ते जा रहे हैं। समकालीन युग की महिला रचनाकारों ने इन परिस्थितियों को बखूबी प्रस्तुत किया है।माता-पिता और संतान का संबंध माता-पिता और संतान का संबंध स्वार्थ से परे है। इस संबंध को विभिन्न उपन्यासों में चित्रित किया गया है परंतु बदलते युग के साथ आज माँ की भूमिका एवं भावनाओं में भी बदलाव आया है। उसमें वात्सल्य की जगह स्वार्थ की भावना पनपने लगी है।

और बकुला गिर गया उपन्यास में श्रीकांत की माँ एक ऐसी भूमिका में है जिसे बेटे की खुशी से ज्यादा धन-दौलत अधिक प्रिय है। मृणाल पांडे के उपन्यास में रास्तों पर भटकते हुए में माँ के प्रति बेटे के उपेक्षापूर्ण व्यवहार एवं बेटी की विवशता को दर्शाया गया है। उपन्यास की नायिका मंजरी कहती है- भाई को जब कभी देखती हूँ, तो चाहते अनचाहते कई बातों के अलावा माँ के मरने के दिनों की मजबूरी याद आती है। आज माँ की दधीचि जैसी अनचाहते हुए बातों के अलावा माँ के मरने के दिनों की मजबूरी याद आती है। आज माँ की दधीचि जैसी उत्सर्गमय जिंदगी का कोई प्रमाण भाई के ऑफिस के इस फुटबाल के मैदान जितने कमरे में नहीं है। यहाँ उसकी विशाल शीशम की मेज पर स्मृति के नाम पर चाँदी के जगर-मगर फ्रेम में सिर्फ भाई की पत्नी और बच्चों का फोटू है।

महाश्वेता देवी के उपन्यास 'गोह' में गोह नामक बालक माता-पिता की व्यस्तता के कारण अधिकांश समय अकेला ही रहता था जिसके कारण वह मानसिक रूप से रुग्ण हो जाता है और अपने काल्पनिक दोस्तों के साथ बातें करने लगता है जो उनके अकेलेपन में उसके संगी है। महाश्वेता देवी लिखती है- वह अपने इन दोस्तों से ही बतियाता रहता है। ये बड़े लोग कितना कम हँसते हैं। कितना कम बोलते हैं। कितना कम हल्ला-गुल्ला करते हैं। आखिर क्यों? गोह बिल्कुल और तरह से बड़ा होगा। अपने दोस्तों से अपने दिल की बातें करने के बाद गोह सो गया। इसके बाद दीवार के दोस्त अपने इर्द-गिर्द उभरे हुए अस्पष्ट धुंधली रेखाओं को आवाज देकर बुलाने लगते थे-आओ, अब स्पष्ट हो उठा। गोह को ढेर ढेर दोस्त चाहिए। गोह अपनी नींद से उस नन्हें शिशु की तस्वीर आंकता रहता था, उसे एक नाम भी देता था। अब गोह के पास ढेरो काम भी थे। अनन्त: असंख्य काम। इस प्रकार बदलते हुए परिवेश में माता-पिता एवं संतान के संबंधों में भी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। जहाँ तहाँ माता-पिता की दयनीय स्थिति है तो संतान भी आज माता-पिता की व्यस्तता के कारण अकेले ही जिंदगी के अनुभव ग्रहण कर रही है जिसमें उचित मार्गदर्शन का अभाव है। संभवत: आज यह संबंध बदलाव की प्रक्रिया से गुजर रहा है जिसका उल्लेख समकालीन हिंदी महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में बखूबी प्रस्तुत किया है।

भाई-बहन का संबंध भाई-बहन के संबंधों को महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में परंपरागत तथा आधुनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। वर्तमान में भाई-बहन के संबंधों में आ रहे परिवर्तनों तथा उनके विभिन्न पहलुओं को अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया है। मृणालपांडे के उपन्यास रास्तों पर भटकते हुए में भाई-बहन के संबंध में प्यार और विश्वास खत्म हो रहा है तथा यह संबंध मी महज दिखावे का बनकर रह गया है, को भली-भाँति चित्रित किया गया है। लेखिका मंजरी और उसके भाई के माध्यम से भाई-बहन के संबंधी को उकेरते हुए वह लिखती है-माई दूज, रक्षाबंधन और माँ की बरसी पर। न मैंने टीका राखी की ठकुरसुहाती भरी परंपरा पूरी की है, न उसके लेन-देन की सहोदर होने के नाते हम एक-दूसरे की इच्छा और गरिमा का कम से कम इतना तो सम्मान कर ही सकते है न? वक्त के साथ हमारे बीच आती दूरी के बावजूद एक महीन समक्ष हममें अभी भी बची हुई है वह बताती है कि हमारे बचे-खुचे रिश्ते की जड़े अब परस्पर दूरी रखने से ही पल सकती है। इसलिए हम भद्र चुप्पी का दामन नहीं छोड़ते। दो नक्षत्रों की तरह हमारी कक्षाएं खास तीज-त्योहार तिथि, वार पर हर साथ कुछ पलों को पास आती है और फिर अपनी राह मापती है। आज हम किसी भी संबंध को आदर्शवाद की परिधि में नहीं रख सकते। यहाँ तक कि भाई-बहन का संबंध भी स्वार्थ जैसी दुर्भावना से नहीं बच सका।

बहन का बहन से संबंध बहन का बहन से संबंधों में भी तीव्रता से परिवर्तन आ रहा है। आज बहन का बहन से संबंध भी परिवर्तित होता हुआ दिखाई पड़ता है लेकिन आज भी कहीं न कहीं इस संबंध में प्यार और सम्मान की भावना मौजूद है। जिसका चित्रण महाश्वेता देवी के उपन्यास 'गोह' में हुआ है। रंजा और उसकी बहन वरुणा के माध्यम से इस खूबसूरत रिश्ते को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया है। वरुणा अपनी बहन रंजा और उसके पति के बीच में आई वरार को भरने की हर संभव कोशिश करती है। वह अपने भांजे गोह का भी पूरा ख्याल रखती है और मौसी होने का दायित्व बखूबी निभाती है।

विवाहगत संबंध-विवाहगत संबंधों में पति-पत्नी संबंध, सास बहू संबंध, ससुर-बहू संबंध इत्यादि आते हैं। प्रत्येक समाज में विवाह को एक पवित्र बंधन माना जाता है परंतु समय परिवर्तित हुआ और अब विवाह एक समझौता बन गया है। समकालीन महिला उपन्यासकारों ने इस संबंध को अपनी कृतियों में प्रस्तुत किया है जो वर्तमान युग के दांपत्य संबंध का बखूबी वर्णन करता है।

'और बकुला गिर गया' उपन्यास में अपनी मर्जी एवं पसंद से शादी करने के बावजूद भी दोनों में विचारगत भिन्नता के कारण दूरियां आने लगती है। उपन्यास में श्री और श्रीमती दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हुए वैवाहिक बंधन में बंध जाते हैं परंतु दोनों की इच्छाएँ अलग-अलग है। श्रीकांत को जब इस बात का एहसास होता है, तब वह उससे अलग होने का निर्णय लेती है। वह श्रीकांत से कहती है-इस विवाह से मेरा क्या अस्तित्व है? तनिक सोचो कि क्या तुमने पति-धर्म का कमी निर्वाह किया है? क्या तुम्हारी माता जी ने घर की स्वामिनी होने का कर्तव्य निभाया है? आज तुम अपनी कम्पनी के प्रति उत्तारदायित्व को निभाते हो, क्योंकि तुम्हें पद और वेतन मिलता है किसी भी दिशा में निर्णय लो। तुम्हारा मेरे प्रति मी कुछ उत्तारदायित्व है यदि तुम उसका परिपालन नहीं करते हो तो मैं इस घर में नहीं रहूँगी। आज पति-पत्नी में वैचारिक साहचर्य एवं संपूर्ण भावना की कमी दिखाई देती है परंतु दांपत्य जीवन के सामंजस्य पूर्ण निर्वाह और सफलता के लिए दोनों का सहयोग आवश्यक है।सास-बहू के संबंधों को भी समकालीन महिला लेखिकाओं ने बखूबी चित्रित किया है। वर्तमान युग में संयुक्त परिवारों के विघटन एवं एकल परिवारों का प्रचलन बढ़ने के कारण सास-बहू को इकट्ठे

रहने का अवसर तो कम ही मिलता है परंतु फिर भी इस संबंध को बहुत महत्वपूर्ण माना गया जिसका उल्लेख उपन्यासकारों ने कर दिया है।

.....और बकुला गिर गया उपन्यास में गंगाक्का सास ऐसी सास है, जो अपनी बहू को नापसंद करती है क्योंकि वह वहेज नहीं लेकर आई। वह उसे परेशान करने का कोई भी मौका अपने हाथ से जाने नहीं देना चाहती थी। लेखिका सुधा मूर्ति लिखती है–उसे श्रीमती से ईर्ष्या होने लगी। अब तक श्रीकांत केवल उसकी जागीर था। लेकिन अब वह श्रीमती का भी था। यह वह बर्दाश्त नहीं कर पा रही थी। गंगाक्का के लिए सीधा सा हिसाब था श्रीमती का सुखी होना उसके लिए सबसे बड़े दु:ख का कारण था। इस तरह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में सास–बहू के संबंध परंपरागत रूप से परिवर्तित दिखाई देते हैं। कहीं न कहीं आज भौतिकवाद इन संबंधों पर भी हावी हो रहा है।

वर्तमान समय में ससुर–बहू के संबंध में भी परिवर्तन आ रहा है। बहू का ससुर के प्रति आदर भाव कम होता जा रहा है। चित्रा मुद्गल के उपन्यास गिलिगडु में इसका उल्लेख मिलता है। बाबू जसवंत सिंह रिटार्यमेंट के बाद बहू–बेटे के साथ रहने आते हैं लेकिन बहू अपने बुजुर्ग ससुर को अपने ऊपर बोझ समझती है। जसवंत सिंह की शारीरिक पीड़ा एवं दवाईयों की जरूरत को भी नजर अंदाज कर दिया जाता है। बाबू जसवंत सिंह कहते है कि उन्हें याद है। कुछ दवाईयाँ एकदम से खत्म हो गई थीं। बहू सुनयना से उन्हें जरूरत बताई तो उसने उन्हें 'अरोड़ा कैमिस्ट' का नंबर पकड़ दिया था कि दवाईयाँ घर पहुँचा जाएंगे और पैसे ले जाएंगे। ठेस लगी थी बापू जसवंत सिंह को। बहू सुनयना को लगता होगा, पेंशन लेते है बाबू जसवंत सिंह खर्च करें। दबाए बैठे रहते हैं। बेटे बाप का खाते होते है, बहू सुनयना का पति उनका बेटा नहीं? अलग बात है। पैसे हैं उनके पास देते भी वही है। नरेन्द्र के जेब में हाथ डालने से पहले उन्हें लगता भी है देना चाहिए। नीचे उतरते हैं तो अपनी मर्जी से मलय–निलय के लिए कुछ न कुछ ले आते हैं। इस तरह वर्तमान समय में ससुर बहू के संबंध में खुलापन आया है। अब बहू बेझिझक उनसे बात करने के अलावा वाव–विवाद एवं खरी–खोटी सुनाने में भी हिचकिचाहट महसूस नहीं करती इससे चाहे ससुर की भावनाओं को ठेस पहुँचे या उन्हें बुरा लगे। इससे बहू को कोई सरोकार नहीं होता है।

अन्य संबंध– प्रेमी–प्रेमिका का संबंध मानव संस्कृति के विकास में नर–नारी के प्रेम का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। सभ्यता एवं जीवन का विकास नर–नारी के संबंधों पर आधारित है। समयानुसार इस संबंध में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। वर्तमान युग में युवाओं की प्रेमी–प्रेमिका के संबंध के बारे में बदल रही अवधारणा को 'अधूरी अभिलाषा उपन्यास में सुनीता अग्रवाल ने प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। उपन्यास में विक्रम पहले माया फिर राबिया और बाद में एक विवाहित स्त्री के साथ प्रेम संबंध बनाने को मामूली बात समझता है। बाद में इन तीनों में से भी किसी के साथ विवाह न करके जिस युवती के साथ विवाह करता है उसे पूरी तरह दबा कर अपने अधीन रखता है। राबिया को जब विक्रम और पड़ोस की शीला नाभी के संबंधों का पता चलता है तो वह सोचती है–'उसके अन्तर्मन से आवाज आई, राबिया जो तू देख रही है। यही सत्य है शीला भाभी और विक्रम चौबारे के एक कोने में चारपाई पर बैठ हँस–हँसकर बातें कर रहे थे। सहसा विक्रम ने शीला भाभी का हाथ अपने हाथ में ले लिया और शीला भाभी की आँखों में भी प्रणय निवेदन स्पष्ट परिलक्षित हो रहा था। राबिया कोई दूध पीती बच्ची तो नहीं थी। जो कुछ समझ न सके। उफ! विक्रम इतना नीच और घटिया किस्म का इंसान है। हे भगवान। मैंने कौनसा पूर्व जन्म में कोई गुनाह किया था जो मैंने स्वप्न में अपने भविष्य को इस व्यक्ति के संग संजोया! क्या यही मेरे प्यार का मूल्यांकन? क्यों मैंने इस चरित्रहीन युवक को चाहा? क्या यही है मेरे भविष्य के सपनों का चितेरा?

संभवत: वर्तमान युग में प्रेमी–प्रेमिकाओं का संबंध अपने मूल आदर्श को खो चुका है। स्वार्थ भावना का समावेश होने लगा है।

निष्कर्ष – कहा जा सकता है कि समकालीन महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों के माध्यम से बदलते हुए मानवीय संबंधों का भली भाँति चित्रण किया है। माता–पिता और संतान का संबंध वर्तमान सदी में अपनी गरिमा खो रहा है। माता अपनी आजादी एवं नौकरी को अपने संतान के लिए दाँव पर नहीं लगाना चाहती है। वहीं आज संतान भी माता–पिता को अपने जीवन में अहम स्थान देने से कतराती है और नये ढंग से जीवन व्यतीत करना ही अपना ध्येय समझती है जिसमें वह माता–पिता की दखल अंदाजी के लिए कोई स्थान नहीं है। भाई–बहन का संबंध भी स्वार्थ से परिपूर्ण हो गया है आज भाई–बहन एक दूसरे से इतनी ईर्ष्या रखने लगे हैं कि दोनों एक दूसरे को देखना तक भी नहीं चाहते हैं। प्रेम, विश्वास और आशा सबको तिलाजली मिलती हुई नजर आ रही है। विवाहगत संबंधों में भी बदलाव आ रहा है। पति–पत्नी के संबंधों में टकरावट, मनमुटाव, तलाक सब कुछ देखने को मिल रहा है। पति परमेश्वर है कि उक्ति अब विपरीत हो गई है। पत्नी के लिए भी देवी शब्द अब डायन में परिवर्तित हो गया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विवाह एक मजाक बनता जा रहा है। सात फेरों का महत्व नहीं रहा है। किसीके लिए विवाह समझौता बनकर रह गया है तो किसी के लिए पूँजी कमाने का साधन है जिसके तहत वर विवाह में खूब दहेज लेता है और अपनी अभिलाषा पूरी करता है ठीक इसके विपरीत वधू विवाह के पश्चात अनबन होने पर तुरंत ही तलाक की माँग कर बदले में बहुत सा धन माँगती है। वर्तमान में पति पत्नी के संबंध में बिखराव और स्वार्थ दिखाई देता है। प्रेमी–प्रेमिका संबंध भी वर्तमान में स्वार्थों से घिरा है। लड़की नासमझ हो तो उसका लड़के दद्धारा खूब फायदा उठाया जाता है। यहाँ तक कि उसकी पढ़ाई–लिखाई, इज्जत सब बर्बाद कर देता है। इसके विपरीत लड़का अगर नासमझ हो तो लड़की के हाथ का वह खिलौना बन कर रह जाता है और उसका भविष्य खराब हो जाता है। स्वार्थ से घिरे मानवीय संबंधों में अब प्रेम, विश्वास, समर्पण, आशा सब कुछ स्वाहा होते नजर आ रहा है। जिनका उक्त समकालीन महिला उपन्यासकारी ने उल्लेख अपने हिंदी उपन्यासों में बखूबी प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. कमलेश्वर के कथा साहित्य में मध्यवर्ग डॉ. विमलेश शर्मा, पृ. 38
2. रास्तों पर भटकते हुए मृणाल पांडे, पृ. 17
3. गोह: महाश्वेता देवी, पृ. 108
4. रास्तों पर भटकते हुए मृणाल पांडे, पृ. 18
5. और बकुला गिर गया सुधा मूर्ति, पृ. 143.
6. वहीं, पृ. 78
7. गिलिगडु: चित्रा मुदगल, पृ. 72
8. अधूरी अभिलाषा सुनीता अग्रवाल, पृ. 58